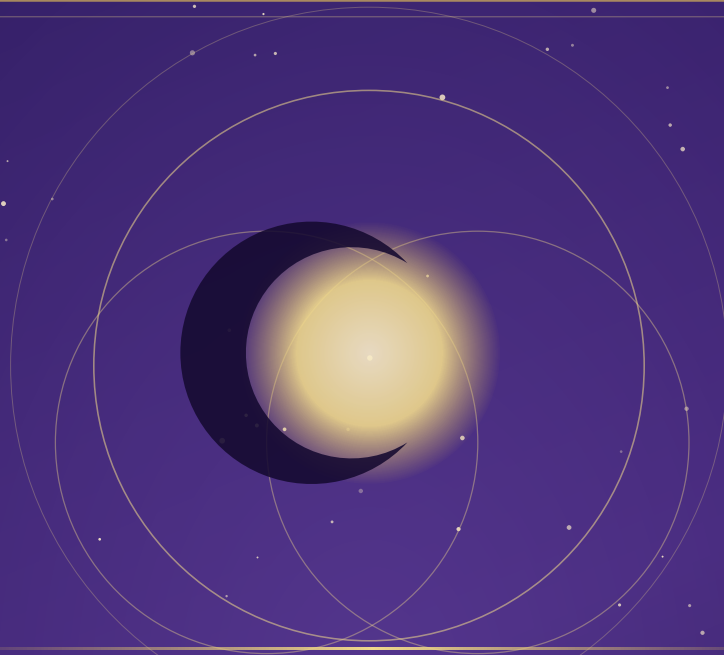




स्वप्न मे मिज्झर होइत

(पद्य संग्रह)

गजेन्द्र ठाकुर

आवरण चित्र: ओम गजेन्द्र ठाकुर

विदेह

ISSN 2229-547X - www.videha.co.in

स्वप्न मे मिज्झर होइत

(पद्य संग्रह)

गजेन्द्र ठाकुर

©2026 संशोधित संस्करण प्रीति ठाकुर/ गजेन्द्र ठाकुर

आवरण चित्र: ओम गजेन्द्र ठाकुर

Swapn me Mijjar Hoit (An anthology of Original and translated Maithili Verses by Gajendra Thakur; Language: Maithili)

ISBN: 978-93-340-3976-4

पाठकक लेल जानकारी

हमर किछु रचना नेपालक गोरखापत्र, आंगन, धुआ धजा, मिथिला डट कम आ आन मैथिली पत्र-पत्रिका/ स्तम्भमे सेहो प्रकाशित अछि। विदेह, मैथिली ई-पत्रिका (since 2000) <http://www.videha.co.in/> ISSN 2229-547X VIDEHA मे मोटामोटी हमर सभटा मूल आ अनूदित रचना ई-प्रकाशित अछि।

ऐ पोथीक किछु पद्य हमर पूर्वमे प्रकाशित/ ई-प्रकाशित पद्यक परिवर्धित रूप अछि, ऐ पोथीक पद्य सभकेँ ओइ पद्य सभक प्रामाणिक संस्करण घोषित कएल जा रहल अछि (जँ कियो ऐ पद्य सभक कोनो संग्रहमे संकलन बा उल्लेख बा अनुवाद करऽ चाहि रहल होथि, तिनको लेल ई लागू अछि)। किछु पूर्व प्रकाशित/ ई-प्रकाशित पद्यमे परिवर्द्धनक संग नाममे सेहो परिवर्तन कएल गेल अछि। - गजेन्द्र ठाकुर

अनुक्रम

प्रारम्भिक पद्य.....	16
अनचिन्हार आखर.....	16
स्वप्न मे मिज्झर होइत.....	16
मृत्यु गीत (लोकगीत)	16
खण्ड १ — स्वप्नमे मिज्झर होइत	17
कालक धार पार अनन्तक उजास.....	18
प्रश्नक देहरीसँ मुक्तिक आकाश.....	28
हथेली भरि धरती, आँखि भरि सत्य.....	35
एक पात पर सात दिशाक ओस	43
दुःखक गाँठ खोलैत भोर.....	56
लौ बदलैत रहैत, उजास चलैत	62
चार खिड़की आ एक खुलल आकाश	67
मुट्ठीक भीतर जे घर नहि	73
दर्पणक पार जे देखैत अछि	78
श्वासक भीतर एक स्थिर आकाश.....	82
एक-एक कणक अपन चेहरा	86
धुँआक पार जे आगि अछि	90
अनेक नामक पाछाँ एक अनाम उजास	94
भीतरक आकाश, बाहरक आकाश	97
तीन दुआर, एके अनन्तक दिस.....	102
दू हवाक बीच जागैत नव भोर	107
खण्ड २ — स्वप्न, जागरण आ मिज्झर समय	114
स्वप्न सँ पहिने	115
नजरि लागि जाइ छै	115
भाग्यशाली	115
जाइत जाइत.....	117
बिलाइत आसक चेन्हासी.....	118
शामिल बाजाक दुन्दभी वादक	119
मन्दाकिनी जे आकाश मध्य.....	120
नव व्यवस्था	121
नव व्यवस्थाक मनुक्ख	121
नव व्यवस्थाक दलित.....	121
नव व्यवस्थाक पुरहित.....	122
नव आ पुरान व्यवस्थाक हाट	122
जखन मशीन आ बिलाड़ि दुनू बुझैए हमरा मृत	123
हाइ रे कुमारिल!!	126
बुद्धिक भरोसे गढ़ल नव सत्यक गढ़नि.....	128
आकांक्षाक अग्नि	128
अनुक्रमणिका आ विषय सूचीसँ आगाँ.....	128
व्यावहारिक आ सैद्धांतिक	128
हमर शरीरक भाथीमे पैसैत अछि वायु	130
कबिराहाक कनसीपर उठैत धुन.....	130
भुजनाठीसँ लाडैत आकांक्षाक अग्नि.....	130
अतिखाइन.....	131

भैसाठ	131
धेनुआर घानी	131
मन्तुर पढ़ि छत्ता लग जायब	132
बकछुछरु खेलाइत भीखू संग	132
उजाहिमे उपलाइत हम आ माँछ	134
ठाढ़ लत्तीकें पढ़ैत छी	135
श्राद्ध ने मरा जाय	136
शलातुर गाम	136
बड़का सड़क छह लेन बला	137
पक्काक जाइठ	139
पता नै धुरि कऽ जायब आकि	140
गजल	142
प्रकृति, पुरुष	142
हाइकू/ शेर्यु/ टनका	145
कुण्डलिया	148
मिथिलाक ध्वज गीत	149
टुटैत अबैत स्वप्नक बीच	149
जोति बड़द सोचमे पड़लौं	149
बिसरलौं फेर- कर्णक मृत्युक छोट-छीन रूप	149
कटिहारी	150
डैनियाही दुपहरिया	153
खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़	154
निन्नक ओहि पार	154
स्वप्न विहीन शून्य	156
सङ गामक पोखरि कात	156
सङ सागर तटपर	157
सर्वज्ञाता	158
स्वप्न विहीन शून्यक पाछाँ	161
घृणाक तरहरिमे	161
जावत रहब	161
चतुरहस्त	162
बुढ़िया डाही	163
आ तखन, फैसला हेतै आब	164
जँ विश्वास कऽ ली अहाँपर, ऐ प्रकृतिपर	165
घड़ी पूजा	166
नाराशंसी	170
निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम्	173
सपना	174
चुप्पीक अपन बोली	174
स्मृति-भय	175
वादक सम्बल अर्थहीन	180
स्वप्न मे मिज्झर होइत	181
क्षणक अछोर	181
चमत्कारक पोथी	182
विचारक विराम	183
भयक पकड़ ढील होइत	183

कलहक अभ्यास	184
अपन परिचयक खाली ठाम	184
घड़ीक बाहरी किनार	186
एतहि खोज	186
प्राणक गवाही	187
शब्दशास्त्रम्	187
अपन दाबीक सोझाँ	188
माया-अविद्या	188
चिन्तक	188
बीतैत दिनक संग	189
देहक देहरी	190
चिन्हब आ बुझब	190
डीह	191
मनुक्ख	191
अन्तक प्रश्न, आइक दिन	191
स्वप्नमे मिज्झर होइत	192
स्थितप्रज्ञतामे लिबैत सत्य!	198
ई जिनगी कोनो बेजाय नै अछि	199
महत्वाकांक्षा	200
ओकरा हँसैत देखि जे आबि जाइ छौ तोरा नोर	200
खण्ड ३ — ओस, देहरी आ घरक नेह	202
देहरीक ओहि पार	203
अनचिन्ह घाटक नेह	203
बोलीक चिरै	204
मेघक पएरक चिन्ह	205
अँगुरीमे बसल गीत	206
पलकक ओहि पार	207
अँजुरीसँ आगाँ	208
पएरक अपन बाट	208
बोलक भीतर बसात	209
सभक लेल पाँति	210
कुहेसाक बनल घर	211
एक नामक कतेक पात	211
फेर चिन्हल देहरी	212
आधखुलल किवाड़	213
आँगनक खुलल दिशा	214
नेनाक बोलीमे भोर	214
खाली खूँटीक छाँह	215
दोसर आँखिक ठाम	216
माटिक भीतर पाँखि	216
रंगक अनकहल स्वर	217
भीतरक अचल ठाम	218
निन्नक पाछाँ सेहो जागल	219
टेढ़ बाटक हरियरी	219
कंठसँ उड़ल चिड़ै	220
खण्ड ४ — अर्थ, भाषा आ लोकजीवनक अँजोर	222

जड़िक नव पात	223
काल्हिक बीआ	223
दू बाटक बीच	224
एक जल, अनेक लहरि	224
खाली पीढ़ी	225
पयरसँ आगाँ प्रश्न	225
मोनक दूर किनार	226
रोटीक पाछाँक भूख	226
करधाक नव फूल	227
फेर अँकुरायब	227
भोरक खुलल आँखि	228
बोलैत आँगन	228
छुबैत धरती	229
नक्शाक बाहर	229
चाहक आकार	230
आवाजक पुल	230
सुखक सीढ़ी	231
अलपनाक दुआर	231
बराबरक थारी	232
जियबाक कारीगरी	232
आँखि आ हथेली	233
देखि रहल छी	233
हमरा नीक लगैत अछि	234
अवश्य होयत?	234
अनमोलक छाँह	235
मेहनतिक रंग	235
नामक ओहि पार	236
बजबाक पहिल दिन	236
फेरसँ ताकू	237
हरेक पातक अपन हरियरी	237
रंगक सङ्ग रूप	238
गाँठिक भीतर बाट	238
किएकक अनेक रंग	239
अञ्जुरीक उजास	239
प्रश्नक पाछाँक शान्ति	240
कहलासँ बचल	240
खेलक बोली	241
भीतरक नीरव घर	241
कारणक सीढ़ी	242
ओझरायल उजास	242
नजरिक मिलन	243
सपनो जखन सुतल	243
निन्नक तीन किनार	244
डगमग धरतीपर	244
काल्हिक भोर	245
सम्भवक खिड़की	245

एहि क्षणक ताप.....	246
जागल की सपना?	246
पहिने ककर पहिचान	247
चाहीक स्वर	247
अहाँक पीड़ा.....	248
बोलक बसात	248
शब्दक घरमे	249
सीखल स्वर	249
सभक चौक	250
फूल आ फीता	250
अपन पयरक भार.....	251
साँचासँ बाहर	251
खुलल आकाशक नीचाँ.....	252
देहक घेरसँ	252
जगतक सङ्ग जागब	253
हथेलीक पाथर	253
एकलसँ सङ्ग	254
समयक पायल.....	254
अनगिन ढङ्गक फूल.....	255
कसौटीक उजास	255
माप आ मापल	256
भेटक अनेक बाट	256
सभ चाबी एक नहि.....	257
अपनहि प्रकाश	257
खुलल बैसार.....	258
प्रश्नकें खोलू.....	258
धीरे सुलझल डोर	259
नाव आ किनार	259
अर्थक खुलल वन	260
बातक भरोस.....	260
जाँचक दुआर	261
अर्थक बाँचल ठाम	261
सभ उजासक अपन दिशा.....	262
खण्ड ५ — भाषा	263
भाषा जे भीतर घर करैत अछि	264
मैथिलीक नव खेत	265
विचार जखन अपन बोली पबैत अछि	267
पुरान अक्षरमे नव प्रश्न.....	268
जड़िसँ क्षितिज धरि.....	269
स्वराजक भीतर विचारक स्वराज	271
अपन धरती, खुलल आकाश	272
प्रश्नक परिसर	275
जे प्रश्न अखनो उत्तर माँगैत अछि.....	277
अनुभवक कसौटी	280
पाँच दशकक देहरी.....	282
दृश्यक पाछाँ जे प्रश्न अछि.....	285

सृजनक भीतर मनुष्य	288
मूल्यक भीतर संस्कृति.....	293
व्यक्ति आ समाजक बीच खुलल प्रश्न.....	299
ज्ञानक तलघरमे दीप.....	305
देहक भीतर “हम”	316
सुन्दरक सीमा सँ पार कला	323
अखंड आकाशक बाट.....	333
ध्वनिक पार अर्थक उजास	339
भीतरक दरबज्जा पर उजास.....	350
मनुखताक आँगनमे नव भोर	361
जतय मनुख मनुखक उजास	371
अदृश्य तराजूक उजास.....	391
टूटल आइना मे अनेक आकाश.....	413
निर्णयक धधकैत देहरी.....	437
माटिक नाड़ीमे हमर श्वास	459
अपन आँखिसँ भोर	486
पुरान नदीमे नव धार.....	514
दीपक पाछाँक अनाम उजास	536
दिशा-दिशासँ आबैत दीप	555
खण्ड ६ — प्रश्न.....	573
जड़ चित्रक पाछाँ बहैत प्रश्न.....	574
मुक्तिक धुरीसँ बाहर विचारक आकाश	575
मुक्ति एक प्रश्न, चिन्तन अनेक बाट	576
श्रुतिक वनमे ककर स्वर मूल	577
सीमाहीन कथनक भीतर मौन प्रश्न.....	578
सूत्रक देह पर समयक अनेक लेख	579
साक्षी आ प्रकृतिक बीच अन्तिम दूरी.....	581
भ्रमक गाँठिसँ अभेदक निस्तब्धता	582
एक नामक भीतर अनेक विपरीत दिशा.....	583
अग्निक अर्घ्य आ कर्मक एकल लेखा.....	584
चारि लक्ष्यक चौखटिसँ बाहर जीवन	585
सूचीक भीत नहि, प्रश्नक जीवित नदी.....	586
यज्ञक धुँआसँ तर्कक पहिल उजास	588
वस्तुक सात दुआर, साक्षीक एक नेत्र	589
इन्द्रियक पवन थमलापर अन्तर आकाश	590
शब्दक बीजसँ कल्पनाक वन.....	591
राजदण्ड, श्रम आ साझा घर.....	592
क्षणक धार आ अनेक दृष्टिक किनार.....	594
मतक भीत पारि प्रश्नक भूगोल	595
शब्द, शून्य आ अभेदक पूर्वराग	596
सम्बन्धक सूक्ष्म जालमे ज्ञानक दीप	597
एक आ अनेकक अनन्त बहस.....	598
प्रेमक पाँचम दिशा	599
सूक्ष्म भेदक नोक पर अर्थ	601
पुरान श्रुति आ नव आगमक संगम.....	602
परम्पराक भीतमे विद्रोही खिड़की.....	603

लोकक कण्ठमे उतरैत चिन्तन.....	604
दू भाषाक बीच टूटल सेतु.....	605
टूटल परम्परासँ नव संश्लेषक पथ.....	606
अजन्म मौनसँ जगक आवागमन.....	608
दुःखक प्रश्न पर नैतिक आकाश.....	609
श्रम, शक्ति आ सीमाक नगर.....	610
रसक क्षणमे जगत आनन्द बनल.....	611
समयक धूलिमे पदचिह्न खोजैत मन.....	612
खण्ड ७ — अनेक दिशाक दार्शनिक आकाश.....	614
अनेक दिशाक एक सत्य.....	615
कारणक सीढ़ी, सत्ताक ज्योति.....	617
अपनहि उजासक प्रत्यभिज्ञा.....	620
माटिसँ अतिमानस धरि.....	622
रूप, कारण आ मध्यम मार्ग.....	624
सन्देहक रातिसँ विश्वासक भोर.....	626
भीतरक प्रकाश आ दू नगर.....	629
शब्दक पार जे स्वर जागय.....	632
कहबो एकटा काज अछि.....	634
एकहि उजासक अनेक दुआर.....	636
प्रकृति नाचय, पुरुष देखय.....	638
तर्कक फूलसँ सत्यक अर्घ्य.....	641
हेतुक दीप, आत्माक साक्षी.....	643
पदार्थक गति, मनुष्यक मुक्ति.....	645
अर्थक कसौटी.....	648
कण-कणमे भेदक व्याकरण.....	650
अपन आचरणसँ राज्य सँवारू.....	653
अनुभवक साँचा, कर्तव्यक दीप.....	655
अर्थक नक्शा, भाषाक अनुशासन.....	658
प्रतीकक जग, मनुष्यक अर्थ.....	660
चुनावक क्षण, आस्थाक छलौंग.....	663
प्रमाणक छह दीप.....	665
अनुभवक धरती पर समाजक विज्ञान.....	668
राज्यक मूल प्रजाक हित.....	670
अनुभूतिक रूप, इतिहासक स्वतन्त्रता.....	673
अनुभवक किनार पर विश्वासक जाल.....	675
ज्ञानक चारि दुआर.....	678
सत्यक धागा, करुणाक करघा.....	680
निद्राक चारि घाट पारि अजन्म उजास.....	683
संशयसँ निर्णय धरि.....	685
प्रेमक नाममे खुलैत अनन्त.....	687
कर्मक पाछाँ अनदेखल सेतु.....	690
समस्या सँ अनुभवक नव बिहान.....	693
क्षणक रूप, निषेधक भाषा.....	695
संशयक राखिमे निश्चित स्वर.....	698
क्षणक उजास, हेतुक पाँखि.....	700
शून्यक बीच सम्बन्धक ज्योति.....	702

भेदक भीतर अभेदक राग	705
पुरान मृत्यक राखसँ नव अगिनि	708
शब्दक देहमे अर्थक धड़कन	711
चित्तक तरंग थमल तखन	713
संशयक चुभन, कर्मक अर्थ	716
सूत्रक दाना, भाषाक अनन्त वन	719
एक प्रतिवादक दीप	722
कणसँ ध्वनि धरि जगक जाल	724
वाक्यक संगति, ज्ञानक अपन उजास	727
छायाक गुफासँ रूपक सूर्य	729
देखल जगक मौन उजास	731
सूत्रक गाँठिमे अनन्तक स्वर	733
सुखक तराजू, समाजक प्रश्न	736
घड़ीक पारि बहैत जीवन	739
टुकड़ाक पारि अखण्ड उजास	742
नकारक सीढ़ी सँ स्वतन्त्र आत्मबोध	745
शब्दक भीतर अखण्ड ज्योति	746
पाँच भेदक बीच समर्पणक दीप	749
देहक आँखिसँ खुलैत संसार	752
ज्ञानक दर्पण, हेतुक डोरी	754
श्रमक हाथ, बदलैत जग	757
रहस्यक दुआर पर खुलल हाथ	760
स्वतन्त्र स्वर, सुखक गहिर माप	762
‘नीक’ केर अनिर्वचनीय उजास	765
करुणाक अंकुर, जनक राज	767
नेति-नेतिक पारि अन्तरतम साक्षी	770
सीमारेखाक आगिमे आत्मक उजास	772
तर्कक कण, भाषाक पारदर्शी आकाश	775
भाषाक गाँठि, मनक अदृश्य चाल	778
पूब-पश्चिमक बीच एकहि उजास	781
अनेक रूपमे एकहि आश्रय	784
मनुष्यक हाथमे स्वतन्त्र भोर	787
वनक स्वतन्त्र साँससँ जन-इच्छाक नगर	789
निःशब्द धाराक सहज बाट	791
अदृश्य केन्द्रसभक एक सुर	795
अनुभवक कोरा पात पर स्वतन्त्र हस्ताक्षर	798
विश्वासक आगि, अन्तरात्माक मुक्त स्वर	801
श्रमक मुक्ति, बदलैत धरतीक गीत	804
सत्य जगत पर कृपाक मधुर धारा	807
चेतनाक धारामे रूपक स्वप्न	810
अनेक बाटक बीच विवेकक सेतु	813
प्रमाणक चारि दुआर, मुक्तिक एक बाट	816
शब्दक खेलमे जगक सीमा	819
नियमक जालमे अर्थ खोजैत मनुष्य	822
क्षणक गर्भमे सृष्टिक अनन्त बहाव	826
तीन परत पारि एकहि उजास	830

वचनक विधिमे कर्तव्यक अदृश्य बीज.....	833
भेदक सूक्ष्म रेखा, सम्बन्धक मौन सूत्र.....	835
सन्देहक पारि विश्वासक चारि आकाश.....	838
अपनेक निर्माणक खुलल आकाश.....	841
इन्द्रियक शोर आ अन्तरक दीप.....	844
पहिचानक धरती, वाक्यक मौन पूर्वशर्त	848
एकहि अनन्त धारा, अनिवार्य जग	851
सरल बीजसँ बहुरंगी जग	853
फेंकल क्षणसँ मृत्यु-दिशि खुलल समय	856
भयक मैदान सँ अनुबन्धक नगर	860
छापक आगिसँ आदतक कारण	863
चेतनाक दुआर पर वस्तुक उजास.....	865
सात भंगीक खिड़की सँ अहिंसक सत्य.....	868
विरोधक गर्भसँ पूर्णताक यात्रा	870
खण्ड ८ — सन्देह, अनुभव, इतिहास आ न्याय.....	874
सन्देहक दीप सँ निश्चयक आकाश धरि.....	875
अनुभवक धार पर कारणक प्रश्न	876
रूपक परदा सँ अखण्ड यथार्थ धरि.....	878
शब्दक गाँठ सँ तथ्यक उजास धरि	880
हाथक प्रमाण सँ विश्लेषणक सीमा धरि	882
प्रयोगक बाट पर अर्थक नगर	885
एकाकी संकेत सँ साझा कसौटी धरि	887
अनुभवक धरती सँ नियमक कसौटी धरि	889
वस्तुक आभास सँ चेतनाक अन्तराल धरि	892
अभिमुख चेतना सँ स्वतन्त्र अस्तित्व धरि.....	895
वाक्यक अर्थ सँ तार्किक सत्य धरि.....	897
विश्वासक प्रश्न सँ अशुभक अन्हार धरि	900
कालक धार सँ धर्मक सत्य धरि	903
पवित्रताक आकाश सँ लौकिक जीवन धरि.....	906
अनेक पथक संगममे एक सत्यक खोज	909
‘शुभ’क अर्थ सँ कर्तव्यक कसौटी धरि.....	911
घटनाक क्रम सँ ऐतिहासिक बोध धरि	914
कानूनक अक्षर सँ न्यायबोधक अन्तःस्वर धरि	916
अक्षरक पार जे उजास	919
अनुलग्नक — अनुवाद खण्ड	924
अनुलग्नक १ — त्वज्याहज्य (गीत प्रबन्ध)	925
त्वज्याहज्य	925
आन-आन पर्व.....	925
सभा पर्व	946
वन पर्व	952
विराट पर्व	958
उद्योग पर्व	961
भीष्म पर्व	964
द्रोण पर्व.....	968
कर्ण पर्व.....	972
शल्य पर्व.....	974

सौप्तिक पर्व.....	975
स्त्री पर्व.....	976
शान्ति पर्व.....	976
अनुशासन पर्व.....	977
आश्वमेधिक पर्व.....	977
आश्रमवासिक पर्व.....	977
मौसल पर्व.....	977
महाप्रास्थानिक पर्व.....	978
स्वर्गरोहण पर्व.....	978
अनुलग्नक २ — असञ्जाति मन (गीत प्रबन्ध)	980
असञ्जाति मन	980
सर्ग १	980
सर्ग २	981
सर्ग ३	981
सर्ग ४	983
सर्ग ५	983
सर्ग ६	985
सर्ग ७	985
सर्ग ८	985
सर्ग ९	986
सर्ग १०	986
सर्ग ११	986
सर्ग १२	987
सर्ग १३	987
सर्ग १४	988
सर्ग १५	989
सर्ग १६	990
सर्ग १७	991
सर्ग १८	992
सर्ग १९	992
सर्ग २०	993
सर्ग २१	993
सर्ग २२	993
सर्ग २३	994
सर्ग २४	995
सर्ग २५	995
सर्ग २६	996
सर्ग २७	997
सर्ग २८	997
अनुलग्नक ३ — “Second Person Singular” केर अंग्रेजी आमुखक मैथिली अनुवाद.....	999
आरम्भ करैत	999
१	999
२	1000

प्रारम्भिक पद्य

अनचिन्हार आखर

मोन गेल भोथियाय

जोति बड़द सोचमे पड़लौं

एतऽ—ओतऽ केर बात

हरेक जोतने भेल साँझ

हरायल बड़द ताकी चारू कात

.....

आ स्वप्नमे यएह तँ रहय, कतेक बुझनुक

मुदा एतऽ एकरा ओतुक्का गप कहबै तँ मोन नै पड़तै।

आ हमरे कतऽ मोन रहैत अछि आब

दुनू मिज्झर भऽ गेल अछि।

...

स्वप्न मे मिज्झर होइत.....

मृत्यु गीत (लोकगीत)

हो रे बड़ रे जतन से सुग्गा एक पोसल

दुधवा मिसरी खिआय

सेहो सुग्गा विरिछिया चढ़ बइसल

पिंजरा जे धरती लेटाय

कहमा से हंसा आइल

कहमा समाएल हो।

आ हो रामा, कोन गढ़ कएल मोकाम,

सुरपुर से हंसा आएल

नरपुर समाएल हो

आ हो रामा, कायागढ़ कएले मोकाम

माया ही लपटायल हो।

खण्ड १

स्वप्नमे मिज्झर होइत

कालक धार पार अनन्तक उजास

घड़ी दीवार पर टिक-टिक करैत अछि, मुदा समय घड़ीक भीतर कतय रहैत?

सुइया घुमैत अछि, दिन बदलैत अछि, पात पीयर पड़ैत, बाल उजरैत,

शहर उठैत, नगर मिटैत, साम्राज्य धूलि होइत,

आ मनुष्य अपन छोट जीवन लऽ कऽ कालक असीम धारमे ठाढ़ रहैत।

ओ पूछैत— “जे बदलैत रहैत, की ओही अन्तिम सत्य?” “जे जन्मैत आ मिटैत,
की ओकरे पार किछु नहि?”

“इतिहास जे राजा, युद्ध, विजय, पराजय, निर्माण आ विनाशक लम्बा कथा,
की ओही मनुष्यक अन्तिम घर?”

काल पहिने उत्तर नहि दैत। ओ एक पुरान नदी जकाँ बहैत रहैत। नव शिशु ओहि मे
पहिल श्वास लेत। वृद्ध ओहि मे अन्तिम।

राजा ओहि धारा समक्ष ओतबे क्षणिक जतबा भिखारी।

धन मृत्यु केँ रोकि नहि सकैत। शक्ति वृद्धावस्था केँ घूस नहि दैत।

यश शरीरक नश्वरता संग समझौता नहि करैत।

विद्या सेहो मृत्युक तिथि मेटा नहि सकैत।

मृत्यु सभकेँ एकहि निर्वस्त्र प्रश्न समक्ष ठाढ़ करैत—

“तूँ जे अपन सम्पूर्ण सत्य मानने छलें, ओ कतेक टिकल?”

आ मनुष्य कखनो धनक घरमे उत्तर खोजैत। कखनो सत्ता। कखनो कीर्ति।

कखनो सन्तान। कखनो कला। कखनो ज्ञान। कखनो युद्धक विजय।

मुदा काल प्रत्येक दुआर पर अपन छोट चिह्न छोड़ैत—

“ईहो बदलत।” ई वाक्य निराशा नहि। ई जागरणक पहिल घण्टी। किएक तँ जतय बदलाव
देखल, ओतय प्रश्न उगैत—

“बदलाव केँ देखनिहार दृष्टि कतय ठाढ़?” “क्षण केँ क्षण कहबाक लेल कुन
अक्षण आधार चाही?” नदी अपन प्रवाह देखैत नहि।

किनार प्रवाहक बोध दैत। यदि सभ किछु केवल बहाव, तँ बहाव कहल केना?

किछु दृष्टि कालक भीतर रहैत। किछु प्रश्न कालक पार झाँकैत।

एहि दू स्तर बीच एक गहिर संवाद आरम्भ होइत। ई दुनिया झूठ नहि।

भूख साँच। पीड़ा साँच। प्रेम साँच। बरखा साँच। माटिक गन्ध साँच।

इतिहासक घाव साँच। युद्धमे मरैत शरीर साँच। मुदा एहि साँचक एक सीमा अछि।

ई साँच सम्बन्धित। परिवर्तनशील। परिस्थितिबद्ध। कालबद्ध।

जैना जलमे चन्द्रमा देखाइत अछि— प्रतिबिम्ब झूठ नहि, मुदा चन्द्रमा ओहि
जलमे कैद नहि। जगत अनुभवक साँच अछि,

मुदा अन्तिम स्वाधीन सत्ता नहि। ओ कोनो गहिर आधार पर टिकल। एहि बोधमे एक
बहुत सूक्ष्म भेद अछि—

“अन्तिम नहि” कहब आ “असत्य” कहब एक बात नहि। कतेक बाहरी दृष्टि एहि भेद नहि
सुनलक। ओ दूरसँ देखलक आ कहलक—

“जे इतिहास केँ अन्तिम नहि मानैत, ओ इतिहास नहि जानैत।”

“जे समयक पार किछु खोजैत, ओ समय नकारैत।”

“जे परिवर्तनशील जगत केँ सीमित सत्य कहैत, ओ जगत मिथ्या कहैत।”

आ एक सभ्यता पर दोषक कुहरा छा गेल।

कियो कहलक— “एहि धरतीक लोक इतिहास लिखि नहि सकैत।”

कियो कहलक— “ओकर मन स्वप्नमे।” कियो कहलक— “ओ यथार्थ
सँ भागैत।” मुदा काल हँसल।

किएक तँ जे सभ्यता इतिहास नहि जानैत, ओ कतेक सहस्राब्दी धरि
स्मृति केना ढोइत?

कथा केना? वंशावली? राज्यक उत्थान-पतन? धर्मक परिवर्तन? भाषाक परत?
नगरक खंडहर? तीर्थक स्मृति? ऋतुक गणना? समयक चक्र?

इतिहासक बोध एकहि रूप किएक होएत? सोझ रेखा मात्र इतिहास?
चक्रीय अनुभव इतिहास नहि?

स्मृति यदि विजयक तारीख कम आ अस्तित्वक पुनरावृत्ति
अधिक सहेजैत, ओ अचेतना किएक?

एक संस्कृति काल केँ देवता नहि, शर्त मानि सकैत।

इतिहास केँ अन्तिम मुक्तिक दुआर नहि, मानवीय बंधनक दर्पण मानि सकैत।

ई अन्तर अचेतना नहि। अलग दार्शनिक ऊँचाई। इतिहास हमरा मनुष्य देखबैत।
मुदा कुन मनुष्य? लड़ैत। लोभी। प्रेम करैत। राज्य बनबैत।

राज्य तोड़ैत। न्याय खोजैत। अन्याय करैत। रोग सँ लड़ैत। रोग फैलाबैत।
कला रचैत। हथियारो। सभ्यता बनबैत। फेर ओकरे जरा दैत।

इतिहास मनुष्यक सम्पूर्ण मुक्त स्वरूप नहि देखबैत।

ओ बहुधा बंधनमे फँसल मनुष्यक कथा।

अज्ञान, लालसा, भय, अहंकार, स्पर्धा, समूहक घृणा, प्रभुत्वक लालसा—

इतिहासक कतेक पन्ना एहि स्याहीसँ लिखल। यदि मनुष्य इतिहासहि सँ अन्तिम मुक्ति खोजत, तँ ओ कहियो अपने बंधनक भीतर ही घूमि सकैत।

जैना जेलक दीवारक नक्शा बहुत विस्तारसँ पढ़लासँ दीवार अपने टूटैत नहि।

नक्शा जरूरी। दीवार साँच। मुदा मुक्तिक प्रश्न नक्शासँ पैघ। काल हमरा इतिहास दैत। मुदा मुक्ति यदि कालक पारक दृष्टि माँगैत?

एहि विचारमे इतिहास कम नहि होइत। ओकर स्थान साफ होइत। व्यावहारिक जीवनमे इतिहास महत्त्वपूर्ण। राजनीति बुझबाक। समाजक घाव बुझबाक।

अन्याय स्मरण रखबाक। भूल फेर नहि दोहराबय। संस्कृति केना बदलल, ई जानबाक। मुदा इतिहास अन्तिम अस्तित्वगत आश्रय नहि।

ई दू स्तर एक-दोसरक शत्रु नहि। जैना घरक नक्शा आ घरमे रहनाइ दू अलग मुदा जुड़ल। जैना लहर साँच आ समुद्र सेहो।

लहर समुद्रसँ अलग स्वाधीन नहि। मुदा लहर नकारल सेहो नहि। कालबद्ध जगत लहर। अकाल आधार समुद्र। कियो लहर देखैत समुद्र भुला सकैत।

कियो समुद्र कहैत लहर नकारि सकैत। समग्र दृष्टि दुनू रखैत।

एक आध्यात्मिक दृष्टि कहैत— जगत अनुभवसिद्ध अछि, मुदा अन्तिम नहि।

एक अन्य गहिर दृष्टि कहैत— सभ प्रवाह अछि, कोनो स्थिर स्वत्व नहि।

दुनू अलग भाषा सँ एक समयिक बन्धन पर प्रश्न उठबैत।

एक अपरिवर्तित आधार दिस झाँकैत।

दोसर सभ स्वतन्त्र स्थायित्व खोलि रिक्त परस्परता देखैत।

मुदा दुनूक नैतिक फल निकट आबि सकैत— अहं हलुक करू। क्षणिक वस्तु केँ अन्तिम नहि मानू। लोभ कम। मृत्यु समक्ष जागू।

ज्ञान केवल जानकारी नहि, रूपान्तरण बनय। एहि दृष्टि मे ज्ञान दू स्तरक जकाँ खुलैत। एक इन्द्रिय आ बुद्धिसँ चलैत।

ई दुनिया सम्भालैत। विज्ञान। इतिहास। भाषा। गणना। कारण-फल। समाजक विश्लेषण। ई ज्ञान साँच, उपयोगी, आवश्यक।

मुदा ओकर सत्य सन्दर्भबद्ध। एक समय जे सिद्ध, नव प्रमाण बदलि सकैत। एक दृष्टिकोण दोसर दृष्टिकोण सँ संशोधित।

ई ज्ञानक सुन्दरता सेहो। ओ विनम्र अछि। मुदा एक आरो ज्ञानक आकांक्षा— जे जाननिहारक जीवन ही बदलि दैत। केवल वस्तु नहि देखबैत,

दृष्टाक बंधन खोलैत। केवल उत्तर नहि, शान्ति। केवल सूचना नहि, स्वतन्त्रता।

जे कहैत— “तूँ कालक भीतर अछि, मुदा तोहर अन्तिम सत्य केवल काल नहि।”

एहि ज्ञानक स्वाद पुस्तक सँ सम्पूर्ण नहि। ओ अन्तःप्रज्ञा माँगैत।
सोझ बोध। आत्म-परिवर्तन।

एक दिन मनुष्य समझैत जे हरेक क्षण जकरा ओ पकड़ए चाहैत, हाथसँ फिसलैत।

यौवन। धन। यश। सम्बन्धक रूप। शरीर। विचार। राज्य। सभ्यता। ओ
पकड़ि रखबाक जिद छोड़ैत।

तखन मृत्यु अदृश्य राक्षस कम आ सत्यक दुआर अधिक बनि सकैत।

मृत्यु कहैत— “जे समयक अछि, ओ समयमे लौटत।” “तूँ एहि बदलाव मात्र छें?”
ई प्रश्न मनुष्य केँ भीतर लऽ जाइत। इतिहास बाहरक क्रम दैत।

आत्मबोध भीतरक गहराई। दुनू बीच एक तनाव अछि। मुदा ई तनाव उपजाऊ हो सकैत।
इतिहास कहैत— “देख, मनुष्य की करलक।”

अन्तरदृष्टि कहैत— “देख, मनुष्य की हो सकैत।” इतिहास कहैत— “ई युद्ध।”
अन्तरदृष्टि— “घृणा कतय जन्मल?” इतिहास— “ई क्रान्ति।”

अन्तरदृष्टि— “स्वतन्त्रता केवल सत्ता-परिवर्तन कि मनक मुक्ति?”

इतिहास— “ई साम्राज्य।” अन्तरदृष्टि— “अहंकारक सीमा कतय?” इतिहास— “ई
विज्ञानक विजय।” अन्तरदृष्टि— “शक्ति कुन मूल्य संग?”

ई संवाद इतिहास छोट नहि करैत। ओकरा नैतिक गहराई दैत।

एक आरो दृष्टि इतिहास केँ अन्तिम सिंहासन पर बैसाबैत।

कहैत— “जे इतिहासमे घटैत, ओही अन्तिम यथार्थ।”

“पूर्णता आगाँक इतिहासमे।” “प्रगति ही मुक्ति।” “काल ही न्यायाधीश।”
तखन इतिहास स्मृति नहि, देवता बनि सकैत।

प्रगति पूजा बनि सकैत।

राष्ट्र, वर्ग, सभ्यता, विचारधारा— कियो कहि सकैत—

“हम भविष्यक रथ छी।” “हमर रस्तामे जे आबय, ओकर बलि इतिहास स्वीकारत।”
एहि क्षण इतिहास खतरनाक मन्दिर बनि सकैत।

जतय जीवित मनुष्य कोनो आगाँक कल्पित पूर्णता लेल साधन मात्र।

एक चेहरा गायब। एक शिशु संख्या। एक गाम नक्शाक बिन्दु। एक मृत श्रमिक
“आवश्यक मूल्य।” एक युद्ध “प्रगतियात्राक चरण।”

ई भाषा मानव गरिमा खा सकैत।

जखन इतिहास अन्तिम होइत, वर्तमान मनुष्य भविष्यक बलि बनि सकैत।

आ विडम्बना—

जे सभ्यता इतिहासक नाम पर पूर्णता खोजैत, ओ एहन हथियार रचि सकैत जे इतिहासहि समाप्त करि दे।

मानव बुद्धि आकाश छूबैत। परमाणुक भीतर आगि खोलैत।

मुदा यदि नैतिक दृष्टि कालक दौड़ में पाछाँ रहि जाए,

प्रगति अपने घर उड़ा सकैत। अद्भुत विरोधाभास—

इतिहास केँ अनन्त बढ़ाबयक नाम पर इतिहास मेटाबयक शक्ति।

जीवन सुधारबाक नाम पर जीवन समाप्त करबाक औजार।

मानव पूर्णता खोजैत-खोजैत मनुष्य भुला दैत। एहि अन्हार समक्ष कालक पारक दृष्टि पलायन नहि। ओ एक नैतिक उच्चता दे सकैत।

यदि इतिहास अन्तिम नहि, तँ कोनो ऐतिहासिक विजय मनुष्यक गरिमा सँ पैघ नहि।

यदि प्रगति अन्तिम देवता नहि, तँ भविष्यक नाम पर वर्तमानक हत्या पवित्र नहि।

यदि राज्य, राष्ट्र, विचारधारा सभ कालबद्ध, तँ कोनो एकक दावा पूर्ण नहि।

एहि बोधसँ सहिष्णुता उगि सकैत। करुणा। संयम। विनम्रता। एक आध्यात्मिक ऊँचाई इतिहाससँ भाग्य नहि। ओ इतिहास केँ ओकर ठीक माप दैत।

“तूँ महत्त्वपूर्ण।” “मुदा अन्तिम नहि।” “तोहर घाव साँच।” “मुदा तोहर घृणा अनन्त नहि।” “तोहर स्मृति रखू।”

“मुदा स्मृति केँ प्रतिशोधक देवता नहि बनाउ।” “तोहर भविष्य रचू।”

“मुदा भविष्य लेल आइक मनुष्य नहि कुचलू।” ई इतिहासक मर्यादा।

एक समयक चेतना जे अतीत स्मरण रखैत, वर्तमान जीवैत, भविष्य बनबैत,

मुदा तीनू केँ अन्तिम आश्रय नहि मानैत। जैना यात्री रेलमें बैसल।

स्टेशन आबैत। जाइत। महत्त्वपूर्ण। कियो जन्मस्थान। कियो विरह।

कियो भेंट। मुदा रेल कोनो एक स्टेशन नहि। आ यात्री रेल सेहो नहि।

काल स्टेशनसभक क्रम अछि। इतिहास ओकर यात्रा-पुस्तिका।

मुदा यात्रीक अन्तिम स्वरूप पन्ना सँ पैघ हो सकैत।

इतिहासक प्रति ई दृष्टि स्मृतिहीनता नहि। उलटे स्मृतिक नैतिक उपयोग सिखबैत।

स्मरण करू जे युद्ध की करैत। महामारी। लोभ। साम्राज्य।

दासता। भेदभाव। हिंसा। मुदा इतिहासक पीड़ा केँ नव हिंसाक तर्क न बनाउ।

स्मृति चेतावनी बनय। जहर नहि। अतीत ज्ञान बनय। भाग्य नहि।

एक सभ्यता यदि कहैत— “हम अतीतक कैदी छी,” ओ भविष्य बन्द करैत।

यदि कहैत— “अतीत किछु नहि,” ओ स्मृति कटैत। दुनू बीच स्वतन्त्रता— स्मरण संग अतिक्रमण। इतिहास जानू, मुदा ओकर दास नहि।

काल जीऊ, मुदा कालक भय मात्र नहि।

मृत्यु स्मरण रखू, मुदा मृत्यु जीवनक सम्पूर्ण अर्थ नहि।

परिवर्तन स्वीकारू, मुदा परिवर्तनक भीतर कोनो गहिर शान्ति खोजू।

एक साँझ सूर्य डूबैत। बालक पूछैत— “सूर्य मरि गेल?” माँ कहैत— “नहि, तोहर दृष्टि सँ ओ ओझरायल।” दर्शन कखनो एहन उत्तर खोजैत।

जे हमरा समाप्ति लगैत, कदाचित् दृष्टिक सीमा हो।

नाम आ रूप बदलैत। मुदा कोनो अधिक गहिर आधार पर प्रश्न खुलल रहैत।

एक धारा कहैत— भीतरक साक्षी आ सर्वव्यापक आधार अन्ततः एकहि गहिर सत्यक दू नाम।

एक दोसर धारा स्थिर स्वत्वक सभ कल्पना खोलैत कहैत— जतय हम स्वाधीन सत्ता मानैत, ओतय परस्परता आ रिक्तता अछि।

दुनू एक नहि। मुदा कालक अन्तिमता दुनू प्रश्नांकित करैत। अहंकारक ठोस किला दुनू हलुक करैत। एक अपरिवर्तित एकत्वक बोधसँ।

दोसर स्वभावगत शून्यताक बोधसँ। एक कहैत— नाम-रूपक पार एकत्व।

दोसर— नाम-रूप स्वाधीन नहि, परस्पर उद्भूत।

दुनू मनुष्य केँ इतिहासक क्षणिक अहं सँ पार देखबाक आमन्त्रण दैत।

यदि ई आमन्त्रण साँच जीवनमे उतरय, तँ जातीय अहंकार हलुक। राष्ट्रक अभिमान मर्यादित। विचारधाराक हठ कम। व्यक्तिगत लोभ नरम।

किएक तँ जे सभ कालक धारमे आबि जाइत, ओकरा अनन्त देवता किएक बनाउ?

इतिहास आ कालक गहिर बोध मानव केँ निरर्थक नहि, आरो जिम्मेदार बना सकैत।

यदि क्षण क्षणिक, तँ ओकरा व्यर्थ किएक? ओ अमूल्य किएक तँ फेर नहि आयत ठीक ओही रूपमे।

यदि शरीर नश्वर, तँ पीड़ा कम महत्त्वपूर्ण नहि।

आरो करुण।

यदि सभ्यता क्षणिक, तँ ओकरा जरा देब न्यायसंगत नहि।

आरो सहेजब।

यदि इतिहास अन्तिम नहि, तँ ओकर नैतिक मूल्य शून्य नहि।

आरो साफ।

किएक तँ इतिहासक घटना अनन्त नहि, मुदा जीवित मनुष्य पर ओकर घाव गहिर।

कालातीत दृष्टि दुनियासँ उदासीनता नहि सिखाबय।

ओ आसक्ति आ करुणा बीच भेद सिखाबय। आसक्ति कहैत— “ई मोर, सदा रहय।”

करुणा कहैत— “ई क्षणिक, एहि लेल स्नेहसँ सँभालू।”

आसक्ति पकड़ैत। करुणा संग दैत। आसक्ति भय बढ़ाबैत। करुणा स्वीकार संग कर्म करैत।

एक समयबोध जे मृत्यु समक्ष मनुष्य केँ पागल नहि, शान्त बना सकय—

ओ इतिहासक बाहर नहि, इतिहास लेल सेहो उपयोगी।

किएक तँ जे मृत्यु सँ अत्यधिक डरैत, ओ अमर नाम लेल युद्ध करि सकैत।

स्मारक। साम्राज्य। वंश। कीर्ति। जे क्षणभंगुरता स्वीकारैत, ओ कदाचित् कम रक्त माँगत। ओ कहैत— “हमर नाम रहय न रहय, जीवन रहय।”

ई बोध इतिहास बचाबय सकैत। प्रगतिक प्रश्न फेर उठैत। की प्रगति सदैव आगाँ ही जाइत? विज्ञान बढ़ल। हथियारो। उत्पादन बढ़ल। लोभो।

संचार तेज। झूठो तेज। औषधि बढ़ल। नव रोगो। राज्य संगठित। निगरानी सेहो।

इतिहास सोझ सीढ़ी नहि जतय हरेक अगिला पायदान नैतिक रूपेँ ऊँच।

तकनीकी आगाँ आ नैतिक आगाँ दू अलग दिशा हो सकैत।

एहि लेल प्रगति कसौटी माँगैत। अधिक शक्ति कि अधिक बुद्धि? अधिक वस्तु कि अधिक न्याय? अधिक गति कि अधिक मानवीयता?

अधिक इतिहास कि अधिक मुक्ति?

यदि कोनो अकाल मूल्य नहि, तँ प्रगति मापब कुन कसौटीसँ?

यदि जे घटैत सेही ठीक, तँ अन्याय केँ बेठीक कहबाक आधार कतय?

इतिहासक पारक नैतिक क्षितिज एतय आवश्यक भऽ सकैत।

एक मान जे विजयी राज्यसँ पैघ। एक गरिमा जे बहुमतसँ पैघ। एक करुणा जे युगक फैशनसँ पैघ। तखन हम इतिहास केँ न्याय करि सकैत।

नहि तँ इतिहास अपने न्यायाधीश आ अपने अपराधी। कालक भितर रहैत अकालक दृष्टि एक ऊँच चौकी जकाँ।

ओतयसँ हम युद्ध देखैत आ कहि सकैत— “विजय होइतो ई अन्याय।”

ओतयसँ समृद्धि देखैत— “धन होइतो ई अमानवीय।” ओतयसँ परम्परा देखैत— “पुरान होइतो ई असत्य।”

ओतयसँ आधुनिकता देखैत— “नव होइतो ई भ्रम।” ई दृष्टि समय सँ भागैत नहि।
ओ समय केँ मापैत। इतिहास सँ घृणा नहि।

ओ इतिहासक अति-पूजा सँ सावधान।

एक सभ्यता जे समयक चक्र देखैत, ओ विनाश पाछाँ पुनर्जन्मक संभावना देखैत।

राज्य उठल। गिरल। भाषा बदलल। धर्म रूपान्तरित। मुदा जीवन फेर नव रूप।
चक्रीयता यदि ठीक बुझल, भाग्यवाद नहि। ओ अहंकार घटाबयक पाठ।

“तोहर युग अन्तिम नहि।” “तोहर साम्राज्य सदैव नहि।” “तोहर विज्ञान पूर्ण
नहि।” “तोहर संकट सेहो अनन्त नहि।”

ई वाक्य निराशा कम, विनम्रता अधिक दैत।

मुदा चक्रीयता यदि कर्महीनता बनय— “सभ फेर होएत, हम की करब”— तँ ओ भ्रम।

कालक चक्र कर्तव्य नहि मेटाबय। बरखा हरेक वर्ष आबैत, तैयो किसान बीज रोपैत।
ऋतु फेर आबैत, तैयो एक फसलक हानि साँच।

इतिहास चक्राकार हो वा रेखीय, दुःख प्रति करुणा अखन माँगैत।

काल दार्शनिक अछि, मुदा भूखल बच्चा तुरन्त रोटी माँगैत।

अकाल सत्य खोजू, मुदा कालबद्ध कर्तव्य नहि छोड़ू।

ई समग्रता जरूरी। एक हाथ अनन्त दिस। दोसर आइक घायल मनुष्य दिस।
एक आँखि कालक पार। दोसर इतिहासक पन्ना पर।

दुनू खुलल तखन दृष्टि पूर्णतर।

एक समाज यदि केवल अकाल बात करय मुदा अन्याय नहि देखय,
ओकर आध्यात्मिकता खाली।

यदि केवल इतिहास बात करय मुदा अन्तरात्माक गहिर मुक्ति नहि,
ओकर राजनीति थाकि सकैत।

भीतर आ बाहर दुनू स्वतन्त्रता। इतिहासिक मुक्ति—
दासता, भेदभाव, भूख, भय सँ।

अस्तित्वगत मुक्ति— अज्ञान, अहंकार, क्षणिकता सँ चिपकल भ्रम सँ।

दुनू एक-दोसरक विरोधी नहि। एक बाहरी जंजीर तोड़ैत। दोसर भीतरक।
एक बिनु दोसर अधूर हो सकैत।

मुक्त समाजमे अमुक्त मन लोभ नव बंधन रचि सकैत।

मुक्त मन यदि अन्यायी संस्था स्वीकारि बैसय, करुणा अधूरी।

समग्र मुक्ति दुनू दिशा सुनैत। इतिहासक सभसँ गहिर पाठ कदाचित् ई नहि जे कुन जीतल। ई जे कतेक विजय क्षणिक। कतेक सत्ता गेल।

कतेक घमण्ड धूलि। कतेक स्मारक खंडहर। कतेक “अन्तिम व्यवस्था”
अन्ततः एक पन्ना। इतिहास अपने हमें अन्तिमताक भ्रम तोड़ि सकैत।

जे इतिहास पूजैत, ओकरा इतिहास ही कहैत— “हम ककरो स्थायी सिंहासन नहि।”

एहि विडम्बनामे एक सुन्दर ज्ञान अछि। काल सभ राजमुकुट समान धूलि बनबैत।
तखन मानव गरिमा राजमुकुटसँ पैघ किएक नहि मानू?

एक अनाम श्रमिकक जीवन कोनो सम्राटक महत्वाकांक्षा सँ कम किएक?

एक गामक शान्ति कोनो राष्ट्रीय विजय सँ हलुक किएक?

अकाल दृष्टि व्यक्ति केँ फेर चेहरा दैत।

इतिहासक बड़ रथ नीचाँ जे कुचलल, ओकर नाम फेर लौटाबैत।

“प्रगति” यदि मनुष्य खाइत, ओ प्रगति नहि। “विजय” यदि करुणा मेटाबैत,
ओ पराजयक अन्य नाम।

“इतिहास” यदि जीवित मनुष्य केँ साधन बनाबैत, ओकर पूजा छोड़ू।

कालक पारक दृष्टि कहैत— मनुष्य इतिहासक ईंट मात्र नहि।

ओकर भीतर एक गहराई अछि जे राज्यक दस्तावेज नहि मापि सकैत।

ओ एक अन्तर आकाश अछि। जतय शान्ति कोनो राजनीतिक सीमा नहि पूछैत।
जतय चेतना कालक्रम नहि।

जतय एक क्षणक पूर्ण जागरूकता सहस्र वर्षक इतिहाससँ अधिक गहिर हो सकैत।

एहि क्षणमे मनुष्य मुक्ति छू सकैत— एहन विश्वास इतिहासक अन्तिमता तोड़ैत।

मुक्ति काल्हिक राज्य नहि। आगाँक युग नहि। मृत्यु पाछाँ केवल पुरस्कार नहि।
अखन चेतनाक रूपान्तरण। अखन भ्रमक पर्दा हलुक।

अखन लोभक हाथ ढीला। अखन अहंकारक किला दरार। अखन दोसर मनुष्य
स्वयं जकाँ देखाइत।

ई मुक्ति इतिहासक भीतर घटैत, मुदा इतिहास ओकर अन्तिम कारण नहि।

जैना फूल माटिमे उगैत, मुदा फूलक रंग केवल माटि नहि।

इतिहास परिस्थिति। मुक्ति भीतरक बोध। एक दिन घड़ी फेर टिक-टिक करैत।
बाहर शहर दौड़ैत। समाचार नव संकट लऽ कऽ आबैत।

राजनीति नव वादा। बाजार नव वस्तु। विज्ञान नव शक्ति। मानव फेर भविष्य
बनाबयक उत्साहमे। एहि तेज क्षणमे एक मौन आवाज पूछैत—

“कुन भविष्य?” “ककर लेल?” “कुन मूल्य पर?” “की तोहर प्रगति तोरा अधिक करुण बना रहल?” “अधिक स्वतन्त्र?” “अधिक सजग?”

“अधिक विनम्र?” यदि नहि, तँ घड़ी तेज होइत, मुदा यात्रा कतय? समय बीति सकैत, प्रगति नहि। इतिहास बढ़ि सकैत, ज्ञान नहि।

तकनीक बढ़ि सकैत, बुद्धि नहि। ई भेद अकाल दृष्टि सिखाबैत। अन्तमे इतिहास नकारबाक नहि। ओकरा ठीक स्थान देबाक। ओ हमर स्मृति अछि।

मुदा आत्मा नहि। ओ हमर शिक्षक अछि। मुदा देवता नहि। ओ हमर घावक अभिलेख अछि। मुदा मुक्तिक अन्तिम दुआर नहि। ओ कालक बहैत पन्ना अछि।

मुदा कोनो अकाल उजास समक्ष ओकर पाठ गहिर होइत।

ई उजास ककरो एक नामक नहि। ओ एक दृष्टि— जे क्षण केँ क्षण कहैत, मुदा क्षण तिरस्कार नहि। जे अनन्त खोजैत, मुदा धरती छोड़ैत नहि।

जे इतिहास पढ़ैत, मुदा इतिहासक मन्दिर नहि बनबैत।

जे प्रगति चाहैत, मुदा मनुष्यक बलि नहि। जे मृत्यु देखैत, मुदा जीवन सँ घृणा नहि। जे दुःख बुझैत, मुदा निराशा नहि।

जे अज्ञान स्वीकारैत, मुदा ज्ञानक दुआर खुलल रखैत।

कालक धार बहैत रहत। नव राज्य आबि जायत। पुरान नाम मिटत। नव विचार जन्मत। किछु महान। किछु भयंकर। मनुष्य फेर इतिहास लिखत।

मुदा यदि ओकर भीतर ई एक स्मरण रहि जाए— “इतिहास महत्त्वपूर्ण, मुदा अन्तिम नहि,” तँ कदाचित् ओ कम अहंकारी होएत। यदि ई स्मरण—

“प्रगति मूल्य बिनु अन्ध हो सकैत,” तँ कदाचित् ओ अपन हथियार समक्ष एक क्षण रुकत। यदि ई— “कालक पार एक नैतिक क्षितिज अछि,”

तँ ओ विजय सँ पहिने न्याय पूछत। यदि ई— “क्षणभंगुरता जीवनक मूल्य घटबैत नहि, बढ़बैत,”

तँ ओ एक अनाम मनुष्यक आँसू इतिहासक बड़ नारासँ ऊपर रखत।

आ यदि एक दिन मृत्यु ओकर दरबज्जा खटखटायत, ओ कदाचित् घड़ी दिस नहि, भीतर दिस देखत। कहत— “जे समयक छल, समय केँ दे रहल छी।”

“जे इतिहासक छल, इतिहासमे छोड़ि रहल छी।”

“मुदा जे उजास एहि सभ परिवर्तन देखैत रहल, ओकर प्रश्न अखनो खुलल अछि।”

तखन काल पहिल बेर केवल शत्रु नहि लगत।

ओ एक गुरु जकाँ दिखत जे हरेक क्षण एकहि पाठ लिखैत रहल—

“पकड़ू नहि।” “देखू।” “जीऊ।” “स्मरण रखू।” “मुदा स्मृति सँ बँधू नहि।”

“इतिहास रचू।” “मुदा इतिहास पूजू नहि।” “प्रगति करू।”

“मुदा मानवता सँ पैघ किछु नहि बनाउ।” “कालमें चलू।” “मुदा अकाल उजासक दिशा नहि भूलू।” आ घड़ी टिक-टिक करैत रहत। नदी बहैत।

इतिहास लिखाइत। मुदा मनुष्यक भीतर एक शान्त आकाश धीरे-धीरे खुलत— जतय क्षण आ अनन्त एक-दोसर सँ युद्ध नहि करैत,

जतय स्मृति आ मुक्ति एकहि दीपक दू पल्लव,

जतय कालक धार पार अनन्तक उजास इतिहास केँ नकारैत नहि,

ओकरा मानवीय बनबैत अछि।

प्रश्नक देहरीसँ मुक्तिक आकाश

एक दिन कियो दुनिया केँ अपनहि आईना सँ नापए चाहलक।

कहलक— “जे एतय देखाइत, सेही सत्य।” “जे हमर ढाँचा मे नहि समाइत,
ओ विचार नहि।” तखन दूर देशक अनेक आकाश मौन भऽ गेल।

किछु गीत कहल गेल। किछु मिथक। किछु विश्वास। किछु कथा। मुदा प्रश्न तँ ओतयो
धधकैत छल। “ई जगत की?” “हम के?”

“जे देखैत छी ओही सत्य?” “परिवर्तन सत्य कि स्थिरता?” “एक कि अनेक?”
“देह सभ किछु कि आरो किछु?” “ज्ञान कतय सँ?”

“विश्वास आ प्रमाण कतय अलग?” “स्वतन्त्रता कतेक?” “दुःख किएक?”
“नीक जीवन कइसन?” प्रश्न कोनो एक भूभागक नहि।

आकाश जैना सीमा-पत्थर नहि मानैत, जिज्ञासा सेहो नहि। एक संस्कृति अपन चश्मा
लऽ कऽ दुनिया देखैत। दोसर अपने।

जखन पहिल कहैत— “हमर चश्मा ही आँखि,” ओतय समझ अन्हार भऽ जाइत।
दोसरक दृष्टि समझब अर्थ अपन दृष्टि छोड़ब नहि।

अपन खिड़की खुलल रखि दोसरक खिड़की दिस देखब। तखन आकाश पैघ होइत।

एक जनसमुदाय जतय विचार, अनुभव, आस्था, कला, नीति, जीवन एक-दोसर सँ अलग
कोठरी मे नहि, एकहि आँगनमे बैसैत,

ओकर विचार कम दार्शनिक किएक? जतय प्रार्थना प्रश्न संग बैसैत,
जतय तर्क जीवनक आचरण सँ अलग नहि,

जतय ज्ञानक अन्त कोनो पुस्तक पर नहि, मनुष्यक स्वभाव मे देखल जाइत—

ओ विचारक अपन रूप अछि। दर्शन केवल शब्दक महल नहि। ओ संस्कृतिक गाढ़ रस।
जैना दूधक भीतर अदृश्य घृत रहैत,

जीवनक अनेक अनुभव भीतर एक गहिर दृष्टि जमैत अछि।

खेतक अनुभव। मृत्युक भय। जन्मक आश्चर्य। न्यायक लालसा। सौन्दर्यक स्पर्श।
प्रेमक बंधन। विरक्तिक प्रश्न। जगतक रहस्य।

एहि सभक मिलल रस होइत दर्शन।

एक संस्कृति केँ बुझब तखन जखन ओ अपने आप केँ केना देखैत,

जगत केँ केना, दोसर केँ केना। बाहरक तराजू लऽ कऽ ओकरा नापि देब सहज।
मुदा सहज सदिखन न्यायपूर्ण नहि।

कतेक भ्रम जन्मैत जखन हम अपन अर्थ दोसरक शब्द पर थोपि दैत छी।

“धर्म” ओतय जे, एतय ओही होएब आवश्यक नहि। “दर्शन” एतय जे, ओतय ओही रूप किएक?

“विज्ञान” एक युगक अर्थ सदा सभ संस्कृतिक माप किएक?

शब्द इतिहास ढोइत। मापदण्ड सेहो। एहि लेल विनम्रता ज्ञानक पहिल सीढ़ी।

कहू— “हमर परिभाषा एक परिभाषा।” “आरो देखू।”

जतय अहंकार कम, संवाद बढ़ैत। जतय संवाद, दुनू समृद्ध। दोसर परम्परा केवल अध्ययनक वस्तु नहि। ओ आईना सेहो।

ओकर प्रश्न हमर अन्ध कोना देखा सकैत। हमर प्रश्न ओकर। एहि ढङ्गें दू विचारधारा भेटैत तँ कियो हारैत नहि। क्षितिज बढ़ैत।

कतेक प्रश्न दूर-दूर जन्मल मुदा एक-दोसरक समान लगैत।

एक कि अनेक? क्षणभंगुर कि स्थिर? देखाइत जगत कि गहिर यथार्थ?

पदार्थ कि चेतना? नाम आ वस्तु? विशेष आ सामान्य? ज्ञानक विश्वसनीयता?

अनुमानक मर्यादा? मनुष्यक स्वतन्त्रता? भाग्य? कर्म? समाज? नीक जीवन?

दूर नदीसभक जल एकहि समुद्रक लवण छू सकैत।

प्रश्न मानव होइत अछि। उत्तर संस्कृतिक रंग लैत। एहि रंग कारण एक उत्तर कम सत्य नहि। मुदा रंग ओकर इतिहास समझब जरूरी।

दर्शनक एक विशेष छवि एतय उगैत— सत्य केवल विचारक वस्तु नहि। ओ जीवनमे उतरबाक चाही। यदि हम सत्य जानी, मुदा जीवन ओकर विरुद्ध,

तँ ज्ञान अधूर। यदि शान्तिक बात लिखी मुदा क्रोध हमर स्वामी,

यदि अहिंसाक तर्क दिअ मुदा शब्द दोसर केँ घायल करय,

यदि लोभ बेठीक कही मुदा हमर हाथ सदैव आरो चाहय, तँ पुस्तक आ जीवन दू अलग देश। साँच विचार दुनू देश बीच पुल बनाबय।

ज्ञान चरित्र बनय। विचार आचरण। बोध स्वभाव। तखन विद्वत्ता माथक मुकुट नहि, जीवनक लय। एक विचारक केवल बहस जीतबाक लेल नहि।

ओ अपने भीतर अज्ञान हराबय लेल सेहो। बहस यदि केवल दोसरक हार चाहैत, सत्य कतेक बाँचत? प्रश्नक मेज पर विरोधी दुश्मन नहि।

ओ हमर विचारक परीक्षक। पहिने ओकर मत ठीक-ठीक सुनू।

एना नहि जे उत्तर सहज होएबाक लेल दोसरक विचार छोट बना दिअ।

ओकर सभसँ मजबूत रूप समक्ष रखू। फेर प्रश्न। फेर आलोचना। फेर अपन उत्तर। एहि अनुशासनमे बौद्धिक ईमानदारी अछि।

पहिने दोसरक घर ठीक नक्शा संग बुझू। फेर कहू कतय दरार। फेर अपन घर देखाउ। एहिँ संवादक मर्यादा। ज्ञान लाठी नहि।

तर्क अपमानक औजार नहि। कठोर विचार सेहो कोमल आचरण रखि सकैत। असहमति आ अहिंसा एकहि मेज पर बैसि सकैत। “हम अहाँसँ भिन्न देखैत छी।”

एतबा कहब लेल घृणा किएक? सत्य यदि मजबूत, ओकरा चिल्लाहट किएक? शान्त तर्क सेहो धारदार हो सकैत।

एक गहिर दृष्टि कहैत— विचार केवल मस्तिष्कक कौतूहल शान्त करबाक लेल नहि।

जीवन बदलय। दुःख कम करय। अज्ञान तोड़य। स्वतन्त्रता दिस लऽ जाए।

यदि दर्शन मनुष्यक जीवन छूबैत नहि, ओ कतेक सुन्दर किएक न हो, खाली शब्दक महल बनि सकैत।

मनुष्य चार दिशा दिस चलैत। कर्तव्यक दिशा। जीविकाक दिशा। आनन्दक दिशा। मुक्तिक दिशा। धर्म केवल अनुष्ठान नहि। ओ धारक शक्ति।

जे व्यक्ति आ समाज दुनू सँभालि रखय। कर्तव्य। न्याय। उत्तरदायित्व। एक-दोसर प्रति मर्यादा। मनुष्य अकेला नहि।

ओकर कर्म दोसरक जीवन छूबैत। एहि लेल धर्म एक सामाजिक नाड़ी सेहो। मुदा कर्तव्य एकहि रूप सभ लेल नहि। जीवनक स्थिति भिन्न।

क्षमता भिन्न। दायित्व भिन्न। तैयो किछु साझा मूल्य होइत। सत्य। अहिंसा। न्याय। सहयोग। दोसरक गरिमा। अर्थ जीवनक आधार। रोटी। घर।

वस्त्र। औषधि। काम। धन बुरा नहि। गरीबी स्वतः पवित्र नहि।

भूखल मनुष्यक कानमे ऊँच आध्यात्मिक वाक्य कतेक दूर जायत?

देह बीमार, तँ ध्यान कठिन। जीविका चाही। मुदा जीविका धर्म तोड़ि नहि। धन साधन। मालिक नहि।

यदि धन लेल छल, हिंसा, चोरी, अन्याय, तँ साधन जीवनक घर जरा सकैत।

अर्थ तखन सार्थक जतय ओ जीवन सँभालैत, लोभ नहि बनैत।

काम आनन्दक दिशा। भोजनक रस। मित्रता। प्रेम। घरक उष्मा। सौन्दर्य। शरीरक सुख। जीवन आनन्द विहीन तपश्चर्या मात्र नहि।

आनन्द अपराध नहि। मुदा आनन्द यदि दोसरक दुःख पर ठाढ़, ओ आनन्द नहि। यदि धर्म बिनु, ओ भोगक अन्ध नदी।

अर्थ आ काम दुनू कर्तव्यक किनार माँगैत। किनार बिनु नदी गाम डुबा सकैत।

मुदा जीवनक अन्तिम क्षितिज मात्र रोटी, धन, सुख नहि।

मनुष्य पुछैत— “ई सभ पेलाक पाछाँ सेहो भीतर किएक अशान्ति?”

“जे मिलल ओ छूटि जाएत।” “जे देह अछि ओ बदलत।” “जे नाम अछि ओ भुलायल जाएत।” तखन मुक्तिक प्रश्न उगैत। मुक्ति ककरा सँ?

केवल बाहरी कारागार सँ नहि। अज्ञान सँ। बेठीक पहिचान सँ।

एहि भ्रम सँ जे क्षणभंगुर वस्तु ही हमर पूर्ण स्वरूप।

देह हमर, मुदा केवल हम देह? मन हमर, मुदा केवल हम मन? अहं कहैत— “ई मोर।”
“ई हम।” मुदा सभ बदलैत। बचपन गेल। यौवन जाएत।

विचार बदलैत। नाम रहैत मुदा व्यक्ति हरेक दिन नव। तखन भीतर कुन साक्षी?
ई प्रश्न मुक्तिक दुआर।

मुक्ति मृत्यु पाछाँक दूर पुरस्कार मात्र नहि।

यदि अज्ञान अखन, ज्ञानो अखन सम्भव। यदि बंधन भीतर, मुक्ति सेहो भीतर जागि
सकैत। जीवित देहमे। एहि श्वासमे। एहि क्षणमे।

देह तिरस्कारक वस्तु नहि। ओ साधना लेल नाव। नाव बिनु नदी केना पार?
देह स्वस्थ रखू। मन अनुशासित। ध्यान एकाग्र। इन्द्रिय सजग।

ज्ञान केवल कानसँ सुनल नहि। ओ सम्पूर्ण व्यक्तित्व सँ जीअल जाइत।
अनुशासन एहि लेल दण्ड नहि। स्वतन्त्रता लेल तैयारी।

जैना धनुषक डोरी तनल तँ तीर दूर जाइत। मन अनुशासित तँ दृष्टि गहिर।
एक अद्भुत विश्वास मानव प्रति रखल गेल—

मनुष्य अपूर्ण अछि, मुदा पूर्णताक दिशा ओकर भीतर खुलल।

अज्ञान अछि, मुदा ज्ञान सम्भव। दुःख अछि, मुदा शान्ति सम्भव।
बंधन अछि, मुदा मुक्ति सम्भव। लोभ अछि, मुदा उदारता सेहो।

क्रोध अछि, मुदा करुणा सेहो। अहंकार अछि, मुदा विनम्रता सेहो।
मानव आत्मा पर ई गहिर आशा अन्हारक बीच दीप जकाँ।

दर्शन दुःख देखैत, मुदा निराशा पर समाप्त नहि।

पहिने रोग देखू। फेर कारण। फेर उपचार। फेर स्वास्थ्य। अज्ञान रोग।
ज्ञान औषधि। अनुशासन उपचार। स्वतन्त्रता स्वास्थ्य।

ई यात्रा कोनो एक मत मात्र नहि।

अनेक मार्ग भिन्न शब्द संग एहि अन्हार आ उजास बीच चलैत।

किछु मत पवित्र ग्रन्थक अधिकार मानैत। किछु नहि। किछु ईश्वर स्वीकारैत।
किछु नहि। मुदा एक अद्भुत बात—

भिन्नता होइतो साझा प्रश्न रहैत। तर्क आ अनुभव दुनू महत्वपूर्ण।
केवल कल्पना पर दुनिया नहि। केवल इन्द्रिय पर सेहो नहि।

अनुभवक वृत्त पैघ। दैनिक अनुभव। वैज्ञानिक अनुभव। आन्तरिक चेतनाक असाधारण
अवस्था। मनुष्यक जानबाक रास्ता एक नहि।

मुदा हरेक दावाक जाँच चाही। तर्क बिनु विश्वास भटक सकैत। अनुभव बिनु तर्क खाली किला। दुनू भेटय।

एक समग्र दृष्टि जगत केवल पदार्थ नहि मानैत। मुदा पदार्थ नकारैत सेहो नहि। देह वास्तविक अनुभवक क्षेत्र। समाज वास्तविक।

दुःख वास्तविक अनुभूति। मुदा मनुष्यक गहराई एहि सभसँ पार प्रश्न करैत। एक किसान माटि छूबैत। एक वैज्ञानिक कण देखैत।

एक साधक मनक मौन देखैत। एक कवि सौन्दर्य। एक न्यायप्रिय मनुष्य अन्याय। सत्य एकहि रूपमे किएक दिखत? अनुभवक बहुत दरबज्जा।

मुदा अन्तिम यथार्थ इन्द्रिय आ शब्दक सीमासँ पार हो सकैत—
एहन आकांक्षा सेहो जीवित।

कतेक गहिर सत्य कहल नहि जाइत, केवल जीअल जाइत।

जैना प्रेमक सम्पूर्ण स्वाद परिभाषामे नहि। जैना शोकक गहराई माप नहि।
जैना मौनक अर्थ शब्द नहि। ज्ञानक एक सीमा शब्द। ओकर पार अनुभव।

मुदा एहि पारक बात कहब अर्थ तर्क त्याग नहि। तर्क हमें सीमा धरि ईमानदारी सँ लऽ जाए। फेर मौन अपन काम करय।

एक जीवन-दृष्टि कर्म आ फल बीच नैतिक सम्बन्ध देखैत।

कर्म शून्य मे नहि गायब। ओ मनक आदत बनैत। चरित्र। सम्बन्ध। समाज।
भविष्य। एक क्रोधक कर्म फेर क्रोध सहज करैत।

एक करुण कर्म करुणा बढ़बैत। कर्म अपने भीतर रास्ता बनबैत। एक दिनक चयन काल्हिक व्यक्ति रचैत।

एहि अर्थमे नैतिक व्यवस्था बाहरी पहरेदार मात्र नहि।

कर्म अपने लेख लिखैत। मुदा भाग्य पत्थर नहि। यदि सभ
पहिने लिखल, मुक्ति कतय?

मनुष्य अतीतक फल ढोइत, मुदा अखनक चयन नव दिशा रचि सकैत।

बंधनक बीच स्वतन्त्रताक बीज। एहिए आशा। एक दृष्टि मनुष्य केँ केवल पापी जन्मल नहि देखैत। ओ अज्ञानमे भटकल देखैत। ई भेद गहिर।

यदि मूल रोग अज्ञान, तँ घृणा नहि, जागरण चाही।

दण्ड नहि मात्र, ज्ञान। आत्महीनता नहि, आत्मबोध। “तूँ मूलतः अन्धकार”
नहि। “तोहर भीतर उजास पहिचानबाक अछि।”

एहि वाक्य मनुष्य केँ सोझ ठाढ़ करैत। पूर्णता बाहरक उपहार नहि,
भीतरक संभावना। ज्ञान ओकर परदा हटबैत।

एक दीप पहिने सँ भीतर रहल हो, अज्ञान केवल ढक्कन।

ढक्कन हटल, प्रकाश नव जन्मल नहि। दृश्य भेल। मुक्ति कखनो एहन पहिचान हो सकैत। “जे खोजैत रहलहुँ, ओ भीतर अछि।”

मुदा एहि वाक्य केवल कविता नहि। जीवन माँगैत। यदि हम भीतरक एकता देखी, दोसरक अपमान केना?

यदि सभ जीवन कोनो गहिर सत्य संग जुड़ल, हिंसा ककरा पर?

यदि मुक्ति अहंकार सँ पार, तँ श्रेष्ठताक गर्व किएक?

आध्यात्मिक ज्ञानक नैतिक फल होएबाक चाही। नहि तँ ओ फेर बौद्धिक सजावट। एक आदर्श विचारक गुण पुस्तकक संख्या नहि। शान्त मन। लोभ कम।

अहं हलुक। दृष्टि विस्तृत। दोसरक मत सुनबाक क्षमता। शब्दमे अहिंसा। जीवनमे संयम। ज्ञानमे विनम्रता। ई कठिन परीक्षा।

बहस जीतब सहज हो सकैत। अपने क्रोध जीतब कठिन। ग्रन्थ याद करब सहज हो सकैत। लोभ कम करब कठिन। दोसरक दोष देखब सहज।

अपने अहंकार देखब कठिन। दर्शन जतय एहि कठिनाई दिस लऽ जाए, ओ जीवित।

जीवनक चार दिशा फेर एकहि वृक्षक चार शाखा जकाँ देखाइत।

कर्तव्य जड़ि। जीविका तना। आनन्द पात-फूल। मुक्ति आकाश दिस खुलल शिखर। जड़ि बिनु तना नहि। तना बिनु फूल नहि।

फूल सुन्दर, मुदा वृक्ष केवल फूल नहि। शिखर आकाश छूबैत, मुदा माटि छोड़ि नहि। समग्र जीवन चारू संग रखैत।

आध्यात्मिकता गरीबीक रोमानी चित्र न बनाबय। भौतिक सुख अन्तिम सत्य नहि बनय। कर्तव्य आनन्द केँ मारि नहि। आनन्द कर्तव्य तोड़ि नहि।

मुक्ति जीवन सँ भागि नहि। जीवन मुक्तिक रस्ता बनय।

एक ऐतिहासिक वर्गीकरण कतेक मत केँ अलग-अलग घर दैत।

कियो प्राचीन श्रुति स्वीकारैत। कियो अस्वीकार। कियो ईश्वर मानैत। कियो नहि। मुदा ई लेबल अन्तिम सत्य नहि।

कखनो जे एकहि घरमे रखल गेल, ओकर आन्तरिक भेद बहुत।

कखनो दूर रखल मत बीच अद्भुत समानता। वर्गीकरण मानचित्र। धरती नहि। मानचित्र उपयोगी, मुदा ओकरा धरती समझब भ्रम।

एक परम्परा कतेक युग पार बदलैत। पहिल रूप आ पाछाँक रूप भिन्न। इतिहास चलैत। ई स्मरण विचारक कठोर लेबल हलुक करैत।

समन्वय आ भिन्नता दुनू देखू। एक मार्ग अधिक व्यवहारिक। एक अधिक
सैद्धान्तिक। कखनो दुनू जोड़ल। जैना नक्शा आ यात्रा।

सिद्धान्त दिशा दैत। अभ्यास पयर चलैत। नक्शा बिनु यात्रा भटक सकैत।
यात्रा बिनु नक्शा कागज। दर्शनक गहिर परम्परा दुनू माँगैत।

तर्क आ साधना। विचार आ चरित्र। ज्ञान आ मुक्ति। एक साझा धारा अनेक मत पार
दिखाइत— यथार्थक बात तर्क आ अनुभव दुनू सहय।

जीवनक बात व्यवहार सँ जाँचल जाए।

मानव अज्ञान आ दुःख मे अछि, मुदा ओकर भीतर मुक्तिक शक्ति अछि।

ज्ञान अज्ञान तोड़ि सकैत। अनुशासन मन रूपान्तरित करि सकैत।

पूर्ण स्वतन्त्रता जीवित अवस्थामे ही लक्ष्य हो सकैत।

कर्मक नैतिक गम्भीरता अछि। मनुष्य मात्र पदार्थ नहि। अन्तिम यथार्थ
इन्द्रियक सीमा पार हो सकैत। दुःख आरम्भ हो, मुदा अन्त आशा।

ई अद्भुत लय— पहिने अन्हार स्वीकारू। फेर दीपक सम्भावना। दुःख नकारू नहि।
मुदा दुःख केँ अन्तिम सत्य सेहो नहि मानू। बंधन देखू।

मुदा मनुष्य केँ बंधनहि नहि कहू। अज्ञान स्वीकारू। मुदा ज्ञानक दुआर खुलल
रखू। एहि आशामे मानव आत्मा बारम्बार उठैत।

एक अत्यन्त गहिर आशावाद जे सस्ता हँसी नहि। ओ दुःख देखिकऽ जन्मैत।
राति सम्पूर्ण देखिकऽ भोर पर विश्वास। जेल देखिकऽ मुक्ति पर।

अज्ञान देखिकऽ ज्ञान पर।

मनुष्य अपन अपूर्णता संग ठाढ़, मुदा भीतर एक असीम सम्भावना।

ई विश्वास दर्शन केँ जीवन दैत। एक यात्री अन्तमे कोनो गुरु सँ पूछैत— “सत्य
कतय?” उत्तर कदाचित् कोनो एक वाक्यमे नहि। ओ कहैत—

“पहिने प्रश्न केँ साँच बनाउ।” “दोसरक मत ठीक-ठीक सुनू।” “तर्क करू,
मुदा अहंकार नहि।” “जीवन मे जाँचू।”

“धन कमाउ, मुदा धर्म नहि बेचू।” “आनन्द लिअ, मुदा दोसरक दुःख पर नहि।”
“देह सँभालू, मुदा केवल देह नहि समझू।”

“ज्ञान जमा नहि, आत्मसात करू।” “मुक्ति दूर काल्हि नहि, अखनक चेतना मे
खोजू।” “अज्ञान देखू, मुदा अपने केँ निराश नहि करू।”

“तोहर भीतर दिशा अछि।” यात्री रस्ता पर फेर चलि पड़ैत। ओकर हाथमे कोनो
अन्तिम नक्शा नहि। मुदा किछु दीप अछि। एक खुला मनक।

एक तर्कक। एक अनुभवक। एक कर्तव्यक। एक आनन्दक। एक आत्मसंयमक।

एक मुक्तिक आकांक्षाक। एक मानव प्रति विश्वासक। रास्ता अबो लम्बा।

मुदा अन्हार पूर्ण नहि। प्रश्नक देहरी पार एक विशाल आकाश खुलैत।

ओतय कोनो एक संस्कृति सत्यक मालिक नहि।

कोनो एक पद्धति अन्तिम नहि। कोनो एक शब्द सम्पूर्ण यथार्थ नहि।

मुदा मनुष्यक साँच खोज सभ दिशा सँ एक-दोसर दिस हाथ बढ़ा सकैत।

तखन दर्शन किताबक नाम नहि रहैत। ओ देखबाक एक विनम्र रीति। जीबाक एक सजग रीति। बहसक एक अहिंसक रीति। धनक एक मर्यादित रीति।

आनन्दक एक उत्तरदायी रीति। दुःखक एक गहिर समझ। अज्ञानक विरुद्ध एक दीर्घ दीपयात्रा। आ स्वतन्त्रता दिस खुलैत एक आकाश।

जतय मनुष्य अपने केँ केवल बंधन नहि, एक सम्भावना कहैत अछि। जतय राति अपने अन्तिम वाक्य नहि लिखि सकैत।

जतय भोर हरेक प्रश्नक पाछाँ धीरे-धीरे जन्मैत रहैत अछि।

हथेली भरि धरती, आँखि भरि सत्य

भोरक ओस हथेली पर ठंढा अछि। ई ठंढ ककरो कथन नहि माँगैत।

आँखि सूर्य देखैत अछि, कान घण्टी सुनैत, नाक माटिक गन्ध, जिह्वा नूनक स्वाद, त्वचा गरम पाथरक ताप।

देह कहैत— “पहिने जे समक्ष अछि ओकरा देख।”

“जे छूबि सकैत छी, जे सुनि सकैत छी, जे अनुभवमे आबि सकैत अछि, ओहि सँ आरम्भ करू।”

ई आरम्भ छोट नहि। एहि सँ एक सम्पूर्ण सन्देह जन्मैत अछि। कियो कहैत— “दूर आकाशमे अदृश्य लोक अछि।” मन पूछैत— “कतेक देखल?”

कियो कहैत— “देह पाछाँ एक अमर छाया अलग सँ रहैत।”

मन पूछैत— “कतेक अनुभवल?”

कियो कहैत— “एहि जगतक एक अदृश्य कारीगर सभ रचलनि।”

मन पूछैत— “ओ कारीगर कतय देखाइत?” ई प्रश्न आस्थाक अपमान नहि, एक कठोर कसौटीक माँग। “जे कहैत छी, ओकर आधार की?”

एक समय दूरक विचारक कथा दोसरक मुखसँ हमरा धरि आयल।

मूल स्वर कतेक बाँचल, कतेक हँसीमे बदलल, कतेक विरोधीक रंग लगल— कियो निश्चित नहि।

एहि लेल पहिल सावधानी—

जकर अपन पुस्तक खोइ गेल, ओकरा केवल शत्रुक कथनसँ नहि नापू।

कखनो इतिहास विजेताक स्याहीसँ लिखाइत। कखनो दार्शनिक विवाद व्यंग्यक छुरी लऽ कऽ आबैत।

कोनो मत केँ समझब अर्थ ओकर सभसँ कमजोर चित्र बनाबय नहि।

ओकर सभसँ मजबूत प्रश्न पहिने सुनू। एतय प्रश्न स्पष्ट— ज्ञानक दरबज्जा कतेक? आँखि जे देखैत, ओतबे?

कि आँखिक पार अनुमानक रस्ता सेहो? प्रत्यक्ष कहैत— “हम धरती पर पयर रखैत छी।”

अनुमान कहैत— “हम देखल चिन्हसँ अदेखल दिस जाइत छी।”

धुआँ दिखल। मन कहैत— “कतहु आगि होएत।” मुदा सन्देह फेर उठैत— “हरेक धुआँक पाछाँ आगि?” “जे काल्हि भेल, ओ काल्हियो होएत?”

“किछु देखल उदाहरणसँ सभ समयक नियम केना?” ई प्रश्न ज्ञानक जड़ि हिलबैत।

आइ धरि जतेक मनुष्य देखल, सभ एक दिन मरल।

मुदा “सभ मनुष्य मरत” कहबाक छलाँग कतय सँ? अनुभव सीमित। वाक्य असीम।
सीमित पगडंडी असीम क्षितिज धरि केना पहुँचत?

सन्देह एतय एक गहिर असुविधा उत्पन्न करैत। किएक तँ जीवन अनुमान बिनु चलैत
नहि। दरबज्जा पर पदचाप सुनि हम ककरो आबि रहल मानैत छी।

मेघ देखिकऽ बरखाक अन्दाज। बच्चाक रोदन सुनि दुःख। किसान आकाशक रंगसँ ऋतु।
वैद्य लक्षणसँ रोग। शब्द सुनि अर्थ।

चेहरा देखिकऽ मनक दशा। हम हरेक दिन अदेखल दिस छोट-छोट पुल बनबैत छी।

तखन यदि कहू— “अनुमान सर्वथा अविश्वसनीय,” ओहि वाक्य केँ
अपने कुन प्रत्यक्ष देलक?

“केवल प्रत्यक्ष विश्वसनीय”— ई कथन अपने आँखि समक्ष कतय देखाइत?

ओ सेहो एक सामान्य निष्कर्ष। सन्देह अपने दर्पण समक्ष आबि ठाढ़।

ई विचारक सुन्दर दुर्बलता सेहो, सुन्दर शक्ति सेहो।

शक्ति— ओ ज्ञानक अहंकार तोड़ैत। दुर्बलता— ओ अपने आधार पर प्रश्न उठबैत।
एहि ए दार्शनिक रस। एक प्रश्न दोसर प्रश्नक जन्मदाता।

कियो कहैत— “फलाँ व्यक्ति विश्वसनीय, तँ ओकर बात सत्य।”

सन्देह पूछैत— “विश्वसनीयता कहिया सँ अनन्त भेल?”

काल्हि ठीक कहल, आइयो ठीक होएत— ईहो अनुमान।

साक्ष्य मानब अर्थ कोनो पूर्व अनुभवक स्मृति आ विश्वास पर टिकल।

यदि अनुमान पूर्ण निषिद्ध, तँ साक्ष्यो कठिन। मुदा मनुष्य दोसरक बात बिनु
कतेक जानत? दूर देश। दूर तारा। सूक्ष्म जीव। पुरान काल।

कोनो विशेषज्ञक कठिन खोज। सभ किछु अपने आँखिसँ देखब सम्भव नहि।

तखन ज्ञानक जगत केवल निजी आँखिमे समेटल नहि जा सकैत।

फेरो ओ कठोर स्वर आवश्यक— “विश्वास करू, मुदा कारण पूछू।” “साक्ष्य सुनू,
मुदा अचूक न मानू।” “अनुमान करू, मुदा छलाँग पहिचानू।”

“प्रत्यक्ष सम्मानू, मुदा ओकरो सीमा जानू।” ई चार वाक्य आइयो ज्ञानक घर साफ
करि सकैत। आब प्रश्न जगतक बनावट पर आबैत।

यदि जे प्रत्यक्ष नहि, ओकर अस्तित्व सन्देहमे,

तँ हमरा समक्ष की बाँचैत? माटि। जल। अग्नि। हवा। देह। स्पर्श।
गन्ध। रूप। स्वाद। ध्वनि। दुनिया भौतिक तत्वक मेल जकाँ दिखाइत।
पाथर एक मेल। वृक्ष दोसर। देह आरो सूक्ष्म मेल। मुदा तखन सभसँ कठिन प्रश्न—
चेतना कतय सँ? पाथर अपने दुःख नहि कहैत।
जल कविता नहि लिखैत। अग्नि अपने ताप पर विचार नहि करैत।
मुदा देह जे एहि तत्वसभक मेल, ओ सोचैत, हँसैत, सपना देखैत, स्मरण करैत।
की नव गुण मेलसँ जन्म सकैत? नून अलग। जल अलग। मुदा मिलल स्वाद नव।
दू गन्धहीन तत्व मिलि एहन पदार्थ रचि सकैत जकर गुण दुनू सँ भिन्न।
तखन चेतना सेहो देहक जटिल रचना सँ उगि सकैत— एहन साहसिक कल्पना आबैत।
मन अलग पंछी नहि, देहक एक फूल।
चेतना अलग आकाश नहि, पदार्थक जटिल बगिया मे उगैत सुगन्ध।
ई दृष्टि देह केँ छोट नहि करैत। उलटे अद्भुत बनबैत।
ई हड्डी, रक्त, नस, मांस, श्वास— कतेक अविश्वसनीय रचना जे अपने
आप बारे पूछि सकैत!
माटिक कण एक दिन कविता बनि उठैत। देह धरतीक एहन रूप जे धरती केँ देखैत अछि।
एतय आत्मा अलग अनन्त यात्री नहि।
जीवित चेतन देह ही व्यक्ति। तखन मृत्यु की? दीपक बुझनाइ जकाँ एक समाप्ति।
देहक रचना टूटल, चेतनाक फूल सेहो झरल।
न पुनर्जन्मक आश्वासन। न परलोकक भय। न स्वर्गक लोभ। न नरकक डर।
एहि एक जीवनक भार अकस्मात् बहुत पैघ भऽ जाइत।
यदि एहि पाछाँ दोसर जीवन नहि, तँ ई साँझ अमूल्य।
ई मित्रता। ई भोजन। ई प्रेम। ई हँसी। ई वर्षा। ई देह। ई क्षण।
मुदा एहि सँ एक खतरनाक सरल निष्कर्ष सेहो निकालल जा सकैत—
“तँ जे मन करय, करू।” पर गहिर दृष्टि ओतय रुकैत नहि। यदि एक जीवन
ही अछि, दुःख किएक बढ़ाउ?
यदि एहि देह पार किछु नहि, दोसरक देह किएक घायल करू?
यदि आनन्द मूल्यवान, दोसरक आनन्दो किएक कम? यदि पीड़ा साँच, तँ पीड़ा
घटेनाइ बुद्धिमानी। सुख केवल क्षणिक उन्माद नहि।
एक एहन आनन्द जे काल्हि दुःखक पर्वत न बनय। एक एहन भोजन जे शरीर नष्ट नहि
करय। एक एहन धन जे भय न बढ़ाबय।

एक एहन प्रेम जे दोसर के वस्तु न बनाबय। एक एहन हँसी जे ककरो अपमान पर नहि। आनन्दक गुण भिन्न।

सस्ता उन्माद आ दीर्घ सन्तोष एक नहि। स्वार्थी सुख आ साझा प्रसन्नता एक नहि।

ई सूक्ष्म भेद भौतिक जीवन-दृष्टि के कठोर भोगवाद बनबासँ बचबैत।

एक मित्रक संग भोजन अधिक मधुर। समाज बिनु मनुष्य कतेक सुखी? कानून बिनु सुरक्षा? विश्वास बिनु मित्रता?

तखन सुखक खोज अपने समाजक आवश्यकता स्वीकारैत।

हम एक-दोसर लेल बंधन मात्र नहि, आनन्दक शर्त सेहो।

साझा शान्ति निजी सुखक माटि। यदि गाम जलैत, एक घरक मिठाई कतेक मधुर? यदि पड़ोसी भूखल, अपन थारीक आनन्द कतेक निर्दोष?

यदि कानून नहि, धन कतेक सुरक्षित? यदि मित्र नहि, हँसी ककरा संग? एक परिष्कृत सुखवाद धीरे-धीरे समाजक दुआर खोलैत।

“हमर सुख” सँ “हमर सभक जीवन” दिस। ई परिवर्तन महत्त्वपूर्ण। धन एतय देवता नहि। साधन। रोटी लेल। घर। संगीत। यात्रा। सुख।

मुदा धनक संग्रह यदि अपने दुःख बनय, कुन काम? लोभ आनन्दक शत्रु हो सकैत। जतबा अधिक मोर, ततबा अधिक भय— “कतहु छूटि न जाए।”

तखन भौतिक जीवनक बुद्धिमानी संयम सेहो सिखा सकैत।

किएक तँ देह सीमित। पेट सीमित। दिन सीमित। जीवन सीमित। असीम लोभ सीमित देहक संग कतेक मेल?

एक दृष्टि अनुष्ठानक व्यापार पर सेहो सन्देह करैत।

यदि कियो कहय— “ई कर्म करू, अदृश्य फल मिलत,” मन पूछैत— “कुन प्रमाण?” यदि भय बेचि धन कमाओल जाए— “न करब तँ अदृश्य दण्ड”—

तँ सन्देह एक सामाजिक हथियार बनैत। ओ पूछैत— “ककर लाभ?” “ककर भय?” “ककर धन?” “ककर सत्ता?” ई प्रश्न आइयो नव अछि।

जे अदृश्य दावा संग अर्थ, प्रतिष्ठा, आज्ञाकारिता जुड़ल, ओतय विशेष सावधानी।

मुदा सन्देह यदि सभ विश्वास उपहास बना दे, ओहो अहंकार हो सकैत।

कारण माँगू, मुदा मनुष्यक आन्तरिक अनुभव सुनू।

जतय प्रमाण नहि, “नहि जानैत” कहब कखनो “नहि अछि” कहबाक सँ अधिक ईमानदार।

ई भेद महत्त्वपूर्ण। अज्ञान खाली ठाम अछि।

ओकरा जल्दी कोनो कल्पना सँ भरब सेहो भ्रम, जल्दी नकार सँ भरब सेहो।

“अखन नहि जानैत” ज्ञानक सुन्दर वाक्य।

भौतिक दृष्टि जगत केँ अपने कारणसभ सँ बुझबाक चेष्टा करैत।

बाहरक कारीगर बिना।

यदि पदार्थ अछि, ओकर गुण अछि, ओकर मेल अछि, परिवर्तन अछि, तँ जगतक रचना ओहि भीतरक नियमसँ किएक नहि?

कोनो अदृश्य निर्माता केँ आवश्यक मानबाक पहिने पूछू—

“ओ निर्माता स्वयं कतय सँ?” यदि हरेक वस्तु लेल कारण चाही, तँ कारणक कारण? फेर ओकर कारण? रस्ता अनन्त पाछाँ चलि जाइत।

कखनो सहज उत्तर समस्या हल नहि, बस एक नव नाम दैत।

“जगत किएक?” कठिन। “कियो बनौलक” कहब सहज। मुदा फेर— “ओ किएक?” प्रश्न फेर ठाढ़। एहि कठोरता मे एक वैज्ञानिक स्वभावक बीज देखाइत।

जतय सम्भव, जगत केँ जगतक भीतरक कारणसँ बुझू। अदृश्य व्याख्या तखन ही जखन अनिवार्य हो। मुदा आधुनिक विज्ञान आरो आगाँ गेल।

ओ प्रत्यक्ष मात्र पर नहि रुकल।

अदृश्य कणक अनुमान, गणित, प्रयोग, पुनरावृत्ति, साझा साक्ष्य— सभ मिलि ज्ञान रचैत।

तखन पुरान कठोर प्रत्यक्षवाद एक इतिहासिक चुनौती जकाँ दिखाइत, अन्तिम पद्धति नहि।

ओकर महत्त्व एहि मे जे ओ प्रश्न पूछलक— “कतेक दावा हम बिनु आधार मानि लेने छी?” आइयो ई प्रश्न जरूरी। एक चित्र देखलासँ सत्य?

कदाचित् छलचित्र। एक आवाज सुनलासँ सत्य? कदाचित् नकल। एक समाचार पढ़लासँ सत्य? कदाचित् अधूर। प्रत्यक्षो सदा निर्दोष नहि।

आँखि भ्रम देखैत। कान बेठीक सुनैत। स्मृति बदलैत। मन पूर्वग्रह रखैत। एहि लेल ज्ञानक नव घर बहुत खम्भा माँगैत— प्रत्यक्ष। अनुमान।

परीक्षण। साक्ष्य। तर्क। पुनरावृत्ति। आलोचना।

मुदा पहिल खम्भा जकरा ओ कठोर दृष्टि पकड़लक, से अनुभवक धरती।

“आकाशमे महल बनाबय पहिने माटि छू।” ई ओकर दीर्घ सन्देश जकाँ।

एहि माटिक दृष्टि मनुष्य केँ देह संग मित्रता करा सकैत।

देह पाप नहि। भूख दोष नहि। सुख लज्जा नहि। इन्द्रिय शत्रु नहि।
जीवन दण्ड नहि। ई धरती त्यागबाक कारागार नहि। ई एक अवसर।

मुदा देहक सम्मान अर्थ देहक गुलामी नहि। स्वाद लेऊ, मुदा स्वाद तोहर स्वामी
न बने। आराम लेऊ, मुदा आलस्य जीवन नहि खाय।

धन लेऊ, मुदा धन मनुष्य नहि खरीदय। प्रेम करू, मुदा स्वामित्व नहि।
जीवनक आनन्द विवेक संग। एक फूल तोड़ि सूँघल जा सकैत।

मुदा सम्पूर्ण बगिया उजाड़ि सुगन्ध नहि बढ़ैत। एक प्याला रस आनन्द दे सकैत।
दस प्याला दुःख। मात्रा सेहो नैतिकता हो सकैत।

कतेक आनन्द आ कतेक दुःख पाछाँ आबि रहल— ई गणना मनुष्य करैत।

मुदा सुख केवल संख्या नहि। गुण सेहो। मित्रक हाथ। साफ अन्तरात्मा।
निश्चिन्त नींद। साझा हँसी। संगीत। ज्ञान। शरीरक स्वास्थ्य।

स्वतन्त्रता। ई सभ सुखक भिन्न स्वर।

कोनो कठोर व्यंग्यचित्रमे भौतिक जीवन-दृष्टि केँ केवल “खा, पी,
मौज कर” कहब अन्याय हो सकैत।

किएक तँ भोग भीतर विवेकक स्थान रहि सकैत। स्वार्थ भीतर मित्रताक दुआर।

व्यक्तिगत आनन्द भीतर सामाजिक व्यवस्थाक आवश्यकता।

जीवनक एकमात्रता भीतर दोसरक जीवन प्रति गहिर सम्मान।

यदि ई जीवन फेर नहि, तँ ककरो जीवन नष्ट करब आरो गम्भीर।

यदि दोसर अवसर नहि, तँ न्याय काल्हि पर टारब किएक?

यदि स्वर्ग नहि जे पीड़ितक क्षतिपूर्ति करत, तँ एहि धरती पर
न्याय आरो आवश्यक।

ई भौतिक दृष्टिक एक मानवीय सम्भावना।

“एहि जगत ही अछि”— ई वाक्य निरर्थकता सेहो जन्मा सकैत,
मुदा उत्तरदायित्व सेहो।

कुन दिशा लेब, ई मानव विवेक पर। एक बच्चा माटि सँ खेलैत। ओकरा स्वर्गक
प्रमाण नहि चाही आनन्द लेल। एक वृद्ध साँझक सूर्य देखैत।

ओ जानैत ई क्षण फेर ठीक एना नहि आयत। एहि लेल ओ आरो ध्यानसँ देखैत।
क्षणभंगुरता आनन्दक शत्रु नहि। ओ आनन्दक तीव्रता बढ़ा सकैत।

फूल सदा रहत तँ बसन्त कतेक मूल्यवान? मृत्यु जीवनक स्वाद कखनो गहिर करैत।
मुदा मृत्यु समक्ष एक प्रश्न फेर खुलल—

यदि सभ देहक संग समाप्त, तँ सत्यक खोज किएक? किएक न्याय? किएक सौन्दर्य?
किएक मित्रता? उत्तर कदाचित् बहुत धरतीसँ जुड़ल—

किएक तँ एहि सभसँ जीवन बेहतर होइत। सत्य भ्रमक दुःख घटबैत। न्याय भय घटबैत।
मित्रता एकान्त। सौन्दर्य निर्जीवता। ज्ञान असहायता।

अर्थ आकाशसँ गिरल नहि, मनुष्य अपन जीवनक सम्बन्धमे रचि सकैत।

एक माटि केवल माटि अछि। मुदा कुम्हारक हाथमे घड़ा।

देह केवल तत्वक मेल हो, तैयो ओहि मेलमे गीत, प्रेम,
विवेक, स्मृति, साहस उगि सकैत।

उद्भव केवल चेतनाक नहि, अर्थक सेहो। मनुष्य भौतिक होइतो मूल्य रचि सकैत।
किएक तँ मूल्य आकाशी पदार्थ होएबाक आवश्यकता नहि।

ओ जीवित सम्बन्धक गुण हो सकैत।

जैना एकल स्वर मे राग नहि, बहुत स्वरक सम्बन्ध मे राग।

एकल तत्वमे चेतना नहि, जटिल रचनामे चेतना। एकल व्यक्तिमे समाज नहि,
सम्बन्धमे समाज। तखन भौतिकता आ मानवता शत्रु किएक?

धरती आ कविता एकहि जगत मे रहि सकैत। रक्त आ प्रेम। नस आ स्मृति।
मस्तिष्क आ सपना। पदार्थ आ सौन्दर्य।

ई दुनू जोड़ी कदाचित् विरोध नहि, एक अद्भुत रूपान्तरणक कथा।

मुदा सन्देह अपन काम बन्द नहि करैत। ओ भौतिक दृष्टि सँ सेहो पूछैत— “केवल
आँखि किएक?” “आँखि भ्रमित हो सकैत।”

“केवल प्रत्यक्ष कहबाक दावा अपने प्रत्यक्ष कतय?”

“चेतना केवल उद्भूत गुण— ई कसौटी कतेक?” “अनुमान नकारि विज्ञान केना?”
साँच दर्शन अपने प्रिय मत पर सेहो प्रश्न करैत।

एहि लेल ई धरतीक कठोर मत अन्तिम घर नहि, एक आवश्यक दरबज्जा।

ओ आकाशी कल्पना केँ धरती पर उतरबैत। कहैत— “पहिने प्रमाण।”
“पहिने अनुभव।” “पहिने ई जीवन।”

फेर दोसर मतसभ ओकरा पूछैत— “अनुभवक सीमा कतय?”

“तर्कक स्थान?” “चेतनाक गहराई?” “नैतिक मूल्यक आधार?”

एहि प्रश्नोत्तर मे भारतीय विचारक आँगन समृद्ध होइत।

कोनो एक मत जीतबाक कथा नहि। दृष्टिसभ एक-दोसर केँ कसौटी दैत।

एक आकाश दिस बहुत खिड़की।

एहि खिड़कीक विशेषता ई— ओ बहुत नीचाँ, धरतीक ठीक लग खुलैत।

ओतयसँ पयर दिखाइत। भोजन। शरीर। मृत्यु। आनन्द। धन। दुःख। स्पर्श।

ओ कहैत— “मनुष्य, पहिने एहि सभ संग ईमानदार बन।”

“अदृश्य दुनियाक नाम पर दृश्य जीवन नहि बर्बाद कर।”

“भय बेचि सत्ता नहि बनाउ।” “अनुमान केँ ज्ञान कहबाक पहिने ओकर छलाँग देख।”

“आनन्द ले, मुदा दुःखक हिसाब सेहो रख।”

“मित्रता भुलू नहि।” “समाज भुलू नहि।” “देह छोट नहि।” ई

कठोर धरती-स्मरण आइयो उपयोगी।

एक समय जखन डिजिटल चित्र सत्य जकाँ दिखाइत, नकली आवाज कान भरैत,

अफवाह हजार मुख पाबैत,

तखन पुरान प्रश्न फेर जागैत— “तूँ स्वयं की देखलें?” “स्रोत कुन?”

“अनुमान कतय?” “विश्वासक आधार की?” “ककर लाभ एहि कथनसँ?”

एहि अर्थमे पुरान सन्देह नव हथियार बनि सकैत। मुदा एक आरो स्मरण— सन्देह

यदि सदा “नहि” कहैत, ओ सेहो जड़ होइत।

साँच सन्देह दुआर बन्द नहि, जाँच खोलैत। ओ कहैत— “देखाउ।” “परखू।”

“फेर मानब।” आ यदि नव प्रमाण आबय, अपन मत बदलू।

ई विनम्रता सन्देहक श्रेष्ठ रूप। एक हथेली माटि धरल। आँखि ओकर रंग देखलक।

नाक गन्ध। त्वचा नमी। मुदा किसान एतबे नहि जानैत।

ओ पुरान अनुभवसँ अनुमान करैत— एहि माटिमे कुन बीज।

ज्ञान कखनो एक इन्द्रियक राज्य नहि। मुदा इन्द्रिय बिनु ज्ञानक पहिल सोपान

कतय? एहि लेल धरती पहिल पाठशाला। आकाश पाछाँ खुलय।

अन्तमे मनुष्य अपन देह दिस देखैत। एहि क्षणभंगुर शरीर मे कतेक आश्चर्य।

रक्त बहैत। हृदय धड़कैत। नस संकेत लऽ जाइत।

मस्तिष्क अतीत सहेजैत। आँखि तारासभ देखैत। जिह्वा गीत गबैत। हाथ मित्रक हाथ

धरत। यदि ई सभ धरतीक तत्वसँ उगल, तँ धरती कतेक अद्भुत!

मनुष्य आकाशी आत्माक नाम बिनु सेहो विस्मित भऽ सकैत।

विस्मय अध्यात्म मात्रक सम्पत्ति नहि। पदार्थो रहस्यपूर्ण। एक कण सँ देह।

देहसँ चेतना। चेतनासँ प्रश्न। प्रश्नसँ दर्शन।

धरती अपने आप पर विचार करैत मनुष्यक रूपमे। ई चित्र अपने एक कविता।

तखन हथेली भरि धरती छोट नहि। आँखि भरि सत्य पूर्ण नहि।

दुनू बीच मनुष्यक जिज्ञासा चलैत रहैत। प्रत्यक्ष ओकर पहिल दीप।

सन्देह ओकर हवा। तर्क ओकर रस्ता। अनुभव ओकर माटि।

आनन्द ओकर जीवनक रस। विवेक ओकर मर्यादा। मित्रता ओकर
सामाजिक गर्मी। मृत्यु ओकर सीमा।

आ एहि सभक बीच एक कठोर, धरतीसँ जुड़ल स्वर फेर कहैत—

“जे जीवन एखन तोहर हाथमे अछि, ओकरा कोनो अदृश्य वादा लेल तुच्छ नहि मान।”

“देख।” “पूछ।” “परख।” “जी।” “आनन्द लिअ, मुदा दुःखक मूल्य बुझि।”

“दोसरक जीवन सेहो एतबे एकमात्र हो सकैत— ताहि लेल ओकर गरिमा रख।”

तखन हथेली धीरे खुलैत। माटि झरैत। आँखि आकाश दिस उठैत। मुदा पयर
धरती पर रहैत।

एहि पयरक स्मरण ही ओहि दृष्टिक सभसँ दीर्घ कविता बनि रहैत अछि।

एक पात पर सात दिशाक ओस

भोर एक पात पर ओसक सात बूँद टिकल छल। सूर्य एके छल, मुदा हरेक बूँदमे ओकर रंग अलग। एक बूँद लाल। एक सुनहला। एक नीलाभ।

एक प्रायः पारदर्शी। एक काँपैत। एक स्थिर। एक धीरे-धीरे माटि दिस झुकैत।

कियो यदि एक बूँद देखिकऽ कहय— “सूर्य बस एतबे,”

दोसर हँसि सकैत।

मुदा कियो यदि सभ बूँद जोड़ि कहय— “आब सम्पूर्ण सूर्य हमर मुट्ठीमे,”

तैयो आकाश मुस्की मारत। सत्य कतेक दिशासँ देखाइत? मनुष्यक आँखि एकहि स्थान पर ठाढ़। समय एक। देह एक। अनुभव सीमित।

तखन हमर कथन कतेक पैघ होएबाक अधिकार रखैत? ई पहिल विनम्रता। “हम एना देखैत छी।”

एतबे कहब कखनो “ई ही अन्तिम” कहबाक सँ अधिक बुद्धिमानी।

दुनिया एक सादा रेखा नहि।

ओ असंख्य गुण, रूप, सम्बन्ध, परिवर्तन, स्थायित्वक जाल।

एक वृक्ष एकहि समयमे पुरान सेहो, नव सेहो। जड़ि कतेक वर्ष पुरान।

पात आइक। फूल क्षणिक। बीज भविष्य। तना स्थिर जकाँ।

रस भीतर चलैत। यदि कियो कहय— “वृक्ष केवल बदलाव,” जड़ि कतय?

यदि कहय— “वृक्ष कदापि नहि बदलैत,” पतझड़ कतय?

जीवन स्थायित्व आ परिवर्तनक जुगलबन्दी। एक धुन जे चलैत सेहो, पहिचान रखैत सेहो। मानव देह बदलैत। बचपन गेल। यौवन आयल। रोग आयत।

वृद्धावस्था। मुदा किछु निरन्तरता हम अपने भीतर महसूस करैत। कुन धागा ई बदलैत मोतीसभ एक माला करैत?

एहि प्रश्नक एक उत्तर चेतना दिस देखैत। जीवित होएब अर्थ केवल श्वास नहि।

अनुभव। जानब। पीड़ा महसूस करब। आनन्द। स्मृति।

प्रतिक्रिया। कोनो सूक्ष्म भीतरक ज्योति जकाँ चेतना। मुदा ई ज्योति एकरूप नहि दिखाइत। कोनो अंकुरमे स्पर्शक हलुक सिहरन।

कोनो कीटमे दिशाक बोध। पशुमे भय, स्नेह, स्मृति। मनुष्य

अनेक इन्द्रिय, मन, भाषा, चिन्तन।

जीवन सीढ़ी नहि मात्र, एक व्यापक स्पन्दन। माटिक कण आ जीवित स्पन्दन बीच भेद अछि, मुदा दुनिया दुनू सँ बनल।

जीवित आ अजीव एक विशाल आकाशमे संग-संग। पदार्थ। स्थान। गति लेल अनुकूलता।
विश्राम लेल आधार। काल। आ अनगिनत चेतन जीवन।

दुनिया एक शासकक बनाओल दरबार जकाँ नहि,
एक अनादि विस्तार जकाँ देखाइत जतय असंख्य सत्तासभ अपन-अपन रूप संग स्थित।
ककरो एकक अधीन नहि सभ अस्तित्व। अनेकता दोष नहि। अनेकता वास्तविकता।
एक फूलक सुगन्ध ओकर अपन। पाथरक कठोरता अपन। जल अपन तरलता।
जीव अपन चेतना। स्थान अपन असीमता। काल अपन क्रम। सभ एक-दोसरक प्रतिलिपि
नहि। एहि बहुल दुनियामे एक बड़ पाठ छिपल—
दोसर केवल “हमर जकाँ नहि” होएबाक कारण कम नहि।
भिन्नता अस्तित्वक अपमान नहि। ओ अस्तित्वक स्वभाव। एक पाथर मनुष्य नहि।
एक मनुष्य वृक्ष नहि।
मुदा एहि भेद कारण ककर अस्तित्व शून्य नहि। संसार एक विशाल बहुवचन।
एकवचनक अहंकार एतय धीरे पिघलैत।
कतेक वस्तु अपन मुख्य गुण रखैत। मुदा अवस्था बदलैत। स्वर्ण गहना बनैत।
पिघलैत। फेर दोसर आकार। आकार बदलल। पदार्थक निरन्तरता रहल।
एक नदी आइ उमड़ल। काल्हि शान्त। जल बदलल। मार्ग किछु रहल। एक मनुष्य आइ
दुःखी। काल्हि प्रसन्न। दुःख ओकर अन्तिम स्वरूप नहि।
आनन्दो नहि। भीतर किछु एहन जे अवस्थासभक बीच पहिचान ढोइत। स्थायित्व आ
परिवर्तन दू शत्रु नहि। दुनू मिलि वास्तविकता रचैत।
एक दृष्टि जे केवल स्थिरता देखैत, चलनाइ भुला सकैत।
जे केवल प्रवाह, पहिचान भुला सकैत। बीचमे एक कठिन सन्तुलन— “ई अछि”
आ “ई बदलैत अछि” दुनू एक साथ। समय एहि बदलावक अदृश्य परिसर।
घड़ी समयक सम्पूर्ण स्वरूप नहि। सेकण्ड, मिनट, घण्टा— मानवक माप।
मुदा जीवनक बहाव मापसँ पैघ।
एक प्रतीक्षा पाँच मिनट होइतो लम्बा लगैत। एक आनन्दक घण्टा क्षण।
मापल समय आ जीअल समय एक नहि।
किछु गहिर निरन्तरता सभ विभाजनक नीचाँ बहैत। काल दुनियाक परिवर्तन लेल
शान्त पृष्ठभूमि जकाँ। आ स्थान सभ विस्तारित वस्तुक घर।
स्थान केवल खाली डिब्बा नहि। ओ रहनाइ सम्भव करैत। जैना आँगन बिनु नृत्य
कतय? गति लेल सेहो एक अनुकूल माध्यमक कल्पना।
विश्राम लेल सेहो। जल माछ केँ चलनाइ नहि सिखबैत, मुदा ओकर चलनाइ सम्भव
करैत। धरती पाथर केँ रुकबाक आदेश नहि दैत,

मुदा विश्रामक आधार दैत।

एहि सूक्ष्म विचारमे दुनिया केवल वस्तुसभक ढेर नहि।

ओ शर्तसभक जाल सेहो।

जे वस्तु छू नहि सकैत, तैयो कोनो घटनाक सम्भावना लेल आवश्यक हो सकैत।

एतय ज्ञानक दुआर प्रत्यक्ष पार जाइत। अनुमान। साक्ष्य। चिन्तन।

मुदा एहि सभक ऊपर एक आरो आकांक्षा—

एहन ज्ञान जे कोनो बाहरी इन्द्रियक सहारा नहि माँगय।

जैना सूर्य अपने उजास सँ अपने आ दोसर दुनू प्रकाशित करैत।

चेतना अपने भीतर यदि आवरण रहित हो, ओ सत्य केँ सोझ देखय— एहन स्वप्न।

आम ज्ञान हमरा टुकड़ा दैत। आँखि रंग। कान ध्वनि। मन तुलना। स्मृति पुरान

चित्र। भाषा नाम। मुदा वस्तु कतेक पक्ष रखैत!

एक घड़ा कुम्हार लेल श्रम। खरीदार लेल वस्तु। बालक लेल खेलौना।

प्यासल लेल जलपात्र। इतिहासकार लेल संस्कृतिक चिह्न।

रसायनक दृष्टिसँ माटिक संयोजन। कलाकार लेल आकार। एक वस्तु कतेक सत्यक

दरबज्जा। तखन हमर एक वाक्य सम्पूर्ण वस्तु केना समेटत?

ई ज्ञानक दोसर विनम्रता। “हम एक पक्ष देखलहुँ।” एहि वाक्यक भीतर बहसक आगि

कम होइत। कियो कहैत— “ई नील।” दोसर— “नहि, हरियर।”

एक साँझक नील देखलक। दोसर भोरक हरियर। एक छायामे। दोसर धूपमे।

यदि दुनू अपन स्थिति भुलि अन्तिम दावा करय, झगड़ा।

यदि कहय— “हमर दृष्टिसँ एना,” तखन संवाद। सापेक्षता सत्यक मृत्यु नहि।

ओ दावाक मर्यादा। हम कतय ठाढ़? कुन समय? कुन कोण?

कुन गुण बारे कहैत? कुन माप? ई प्रश्न वाक्य केँ नम्र करैत। सत्य कठोर लाठी

नहि, बहु-दिशात्मक दीप बनि सकैत।

मुदा एतय आरो एक कठिन प्रश्न उठैत—

यदि हरेक कथन केवल दृष्टिकोण मात्र, तँ “सभ कथन दृष्टिकोण मात्र”

ई वाक्य स्वयं कुन दृष्टिकोण?

यदि सापेक्षता ही अन्तिम असापेक्ष सत्य बनल, ओ अपने विरोधमे पड़ि सकैत।

विनम्रता सेहो अपने अहंकार बना सकैत। “हम ही जानैत छी जे कियो सम्पूर्ण नहि

जानैत।” ई वाक्य कतेक विचित्र।

एहि लेल बहु-दृष्टि संग एक गहिर खुलापन चाही— कदाचित् आम मन टुकड़ा देखैत।

मुदा पूर्ण दृष्टि सम्भवक आकांक्षा पूर्ण रूपेँ नहि छोड़ू।

एक एहन चेतना जे आवरण रहित सभ पक्ष एक संग देखय।

मानव सामान्य अवस्थामे ओहि ऊँचाई पर नहि। मुदा ओ दिशा एक क्षितिज।

क्षितिज हमरा अपन सीमा स्मरण करबैत।

एक पुरान कथा जकाँ कतेक अन्हर लोक एक पैघ जीव छूबैत।

कियो पयर छूबि कहैत— “स्तम्भ।” कियो कान— “पंखा।” कियो सूँड़— “रस्सी।”
सभ किछु छूने छल, मुदा सम्पूर्ण नहि।

एहि कथामे हँसी कम, हमर ज्ञानक दर्पण अधिक। हम सभ कोनो विशाल यथार्थक एक
भाग छूबैत हो सकैत।

एहि स्मरणसँ अहिंसा केवल हाथक नियम नहि, विचारक शैली बनैत।

यदि दोसरक मतमे किछु सत्य हो सकैत, तँ ओकरा कुचलू किएक?

विचारक अहिंसा— पहिने सुनू। फेर बुझू। फेर असहमति। दोसरक वाक्य
तोड़ि-मरोड़ि हराबय नहि। ओकर सभसँ मजबूत रूप समक्ष रखू।

तखन अपन प्रश्न। ई बौद्धिक करुणा। अहिंसा हाथ सँ पहिने दृष्टि मे जन्मैत।
कोनो जीव केँ केवल उपयोगक वस्तु नहि देखू।

घास पर चलैत समय सेहो सजगता। जल छानैत समय सेहो। शब्द कहैत समय सेहो।
विचार करैत समय सेहो। हिंसा केवल रक्त नहि।

कटु शब्द सेहो घाव। लोभ दोसरक अधिकार खाइत। झूठ विश्वास घायल करैत।
अहंकार दोसरक गरिमा कुचलैत।

एहि लेल अहिंसा बहुत सूक्ष्म अनुशासन। मन। वचन। कर्म। तीनू एक सुरमे।

यदि हाथ नहि मारैत, मुदा मन घृणासँ भरल, अहिंसा अधूरी।

यदि शब्द मधुर, मुदा भीतर छल, अधूरी।

यदि दान अछि, मुदा गर्व दोसर केँ छोट करैत, अधूरी।

शुद्धता बाहरी वस्त्र नहि। भीतरक धूलि कम करब। लोभ। क्रोध। छल।
अधिकारक लालसा। स्वामित्वक उन्माद। “मोर” कतेक भारी शब्द। घर मोर।

धन मोर। विचार मोर। प्रतिष्ठा मोर। देह मोर। जतबा “मोर” बढ़ैत,
उतबा पकड़ कठोर। आ पकड़ कठोर, बंधन कठोर।

कर्म एहि बंधनक एक सूक्ष्म भाषा। कर्म केवल बाहरी लेखा नहि। हरेक विचार,
हरेक शब्द, हरेक कर्म अपन छाप छोड़ैत। मन पर। सम्बन्ध पर।

दुनिया पर। भविष्य पर। एक क्रोध फेर क्रोधक रस्ता सहज करैत। एक दयालु कर्म
करुणाक पगडंडी चौड़ा।

एहि अर्थमे कर्म मानव स्वभाव पर पड़ैत सूक्ष्म धूलि जकाँ।

धूलि जमा होइत। दृष्टि धुँधला। ज्ञान ढँकल। स्वतन्त्रता कम।

कर्मक बंधन यदि पदार्थक सूक्ष्म कण जकाँ कल्पित हो, तँ चित्र आरो तीव्र—

हरेक लोभ मानो चेतना पर एक कण चिपकल। हरेक हिंसा एक कठोर परत। हरेक झूठ एक धुँआ।
हरेक आसक्ति एक गोंद।

आत्मा ज्योति, मुदा ओकर चारु दिश कर्मक धूलि जमा।

मुक्ति तखन ककरो दूर देवता सँ मिलल क्षमा नहि।

अपने सफाई। अपने अनुशासन। अपने जागरूकता। अपने प्रयास।

कोनो बाहरी हाथ तोहर भीतरक धूलि पूर्णतः नहि झाड़ि सकैत।

मार्ग देखाओल जा सकैत। प्रेरणा मिलि सकैत। मुदा चलनाइ तोहर। ई दृष्टि
मनुष्य केँ कमजोर नहि, उत्तरदायी बनबैत।

“हमरा बचाउ” कहबाक पहिने “हम की बदलू?” पूछू। यदि कर्म बंधन,
तँ नव कर्मक प्रवाह रोकू। पुरान बंधन क्षीण करू। अनुशासन। संयम।

ध्यान। सत्य। अहिंसा। अलोभ। भीतरक स्वच्छता। ई मुक्तिक झाड़ू।
धीरे-धीरे परत हटैत। ज्योति आरो स्पष्ट।

ज्ञान कोनो बाहरी वस्तु नहि जे आत्मा गोदाममे जमा करैत।

ज्ञान चेतनाक स्वभाव हो सकैत। जैना दीपक उजास उधार नहि लेत। जैना सूर्य
प्रकाश संग ही सूर्य।

चेतना यदि आवरण मुक्त, ज्ञान स्वाभाविक।

एहि दृष्टिमे इन्द्रिय ज्ञानक सहायक होइतो सीमा सेहो।

आँखि केवल एक दिशा। कान एक तरंग। मन स्मृति आ कल्पना संग मिश्रित।
पूर्ण ज्ञान तखन जतय माध्यमक दीवार हटि जाय।

ई आम बुद्धिक सीमासँ पार एक गहिर आध्यात्मिक आकांक्षा।

मुदा एहि आकांक्षा संग एक अनूठा बोध— ईश्वरक एक सर्वशक्तिमान कारीगर आवश्यक
नहि। जगत अनादि। अस्तित्व अनादि। जीव अनगिनत।

पदार्थ अनगिनत। कर्मक नियम अपने चलैत। कियो ऊपर बैसि पुरस्कार आ दण्ड नहि
बाँटैत। जे बीज रोपल, ओकर फल नियम संग आबैत।

नियम निष्पक्ष। आकाश ककरो पक्ष नहि लेत। अग्नि धनीक हाथ कम नहि जरबैत।
कर्म सेहो व्यक्तिगत लाड़ नहि जानैत।

एहि दृष्टिमे धार्मिकता आ ईश्वरविश्वास एक नहि।

आध्यात्मिक जीवन कियो बिनु सृष्टिकर्ताक कल्पना सेहो जी सकैत।

प्रार्थना यदि हो, ओ कोनो अनुग्रहक भीख नहि।

एक मुक्त जीवन दिस देखिकऽ अपने भीतर सम्भावना जगाबय।

जैना पर्वत देखिकऽ यात्री प्रेरित होइत— पर्वत ओकरा उठा कऽ शिखर पर नहि रखैत।

रस्ता अपने चढ़बाक। आदर्श दीप। मुदा पयर अपने। ई स्वनिर्भर आध्यात्मिकता कठिन। किएक तँ बहाना कम।

“कोनो हमरा क्षमा करि देत” कहिकऽ बंधन नहि टूटत।

“कोनो मुक्त करत” कहिकऽ आलस्य नहि। अपने देखू। अपने बदलू। अपने चलू। ई साहसक मार्ग। मुदा स्वनिर्भरता अहंकार न बने।

“हम अपने सभ” कहब सेहो बंधन। मार्ग देखनिहारक प्रति कृतज्ञता। समुदायक संग। गुरुतुल्य आदर्शक स्मरण। मुदा अन्तिम काम अपने।

जैना वैद्य औषधि दैत, पीबनाइ रोगीक। मानचित्र रस्ता दिखबैत, चलनाइ यात्रीक।

एक गहिर नैतिक दृष्टि एहि स्वनिर्भरता केँ अहिंसा संग जोड़ैत।

किएक तँ यदि हरेक जीव अपन मुक्तिक सम्भावना रखैत, तँ हम ककर रस्ता काटि सकैत?

ककर देह तुच्छ? ककर पीड़ा कम? एक सूक्ष्म जीवक अस्तित्व सेहो ओकर अपन। मनुष्य केवल अपन सुविधा लेल सभ जीवनक मालिक नहि।

एहि बोधमे करुणा विशाल होइत। एक पशु भोजनक वस्तु मात्र नहि। एक वृक्ष लकड़ी मात्र नहि। एक जलाशय उद्योगक साधन मात्र नहि।

जीवन अपन स्वर रखैत। अहिंसा तखन पर्यावरणक भाषा सेहो। कम हानि। कम उपभोग। कम स्वामित्व। कम अपव्यय।

किएक तँ लोभ केवल मन बाँधैत नहि, धरती सेहो घायल करैत।

अलोभ आत्मिक नियम होइतो पृथ्वी लेल औषधि। कतेक घर एहि एक शब्दसँ हलुक हो सकैत— “पर्याप्त।” एतबे पर्याप्त। एतबे भोजन।

एतबे वस्त्र। एतबे धन। एतबे संग्रह। बाकी दोसरक अधिकार। अपरिग्रह खाली हाथ नहि। हलुक हृदय। जे बहुत पकड़ैत, ओ बहुत डरैत।

जे कम पकड़ैत, ओकर हाथ दोसर लेल खुलल। मुक्ति कदाचित् हाथक एहि धीरे-धीरे खुलबमे सेहो। सत्यवादिता एहि मार्गक दोसर दीप।

झूठ किएक बंधन? किएक तँ एक झूठ दोसर झूठ माँगैत। स्मृति पर भार।

भय— “कतहु खुलि न जाए।” मन दू वास्तविकता ढोइत।

सत्य मन केँ एक करैत। मुदा सत्य कहब अर्थ कटु हिंसा नहि। एहन सत्य जे दोसर केँ अनावश्यक घायल न करय।

मौन कखनो सत्यक मित्र हो सकैत। शब्द पहिने अहिंसाक कसौटी पर।

“ई सत्य?” फेर “ई आवश्यक?” फेर “ई केना कहब?” नैतिकता सूक्ष्म होइत।

केवल नियमक सूची नहि। हरेक क्षणक सजगता। एक कीड़ा रस्ता पर। एक कटु वाक्य जिह्वा पर। एक लोभ मनमे। एक झूठ सहज दिखाइत।

एक अहंकार उगैत। हरेक क्षण मुक्ति वा बंधनक छोट निर्णय। कर्म भविष्यक दूर खाता मात्र नहि। ओ एहि क्षणमे तोहर मन रचैत।

जे बारम्बार करू, तूँ धीरे-धीरे ओही बनैत। एहि अर्थमे भाग्य पूर्ण बाहरी नहि। अतीत अछि, मुदा वर्तमान निष्क्रिय नहि।

पुरान कर्मक परिणाम आबैत, मुदा नव कर्मक दुआर खुलल।

मनुष्य कैदी सेहो, कारीगर सेहो।

पुरान जंजीर ढोइत, मुदा नव कड़ी न जोड़बाक स्वतन्त्रता रखैत।

ई आशा गहिर। यदि सभ अतीत निर्धारित, साधना किएक? यदि सभ मुक्त, कर्मफल किएक? बीचमे एक दायित्वपूर्ण स्वतन्त्रता।

हम अतीत बदलि नहि सकैत, मुदा अखन कुन दिशा लेब— एहि मे हमर भाग। एक नदी पहिने सँ घाटी पेलक,

मुदा एखनक जल कुन किनार काटत, कुन माटि संग लऽ जाएत, ओ प्रवाहमे अखनो जीवित।

मुक्ति एक दमक चमत्कार नहि। कण-कण धूलि हटब। दिन-दिन संयम। क्षण-क्षण सजगता। एक हिंसक विचार कम। एक झूठ कम। एक लोभ कम।

एक आसक्ति ढीली। एक करुण कर्म अधिक। एक सत्य अधिक। धीरे-धीरे भीतर आकाश साफ। ज्ञान आ चरित्र एतय अलग नहि।

कियो बहुत जानैत, मुदा क्रूर— पूर्ण ज्ञान कतय?

कियो मधुर, मुदा भ्रममे— पूर्ण नैतिकता कतय? ज्ञान आ आचरण एक-दोसर बिनु अधूर। यदि तूँ सत्य देखलें, जीवन बदलत।

यदि जीवन सत्य दिस चलल, दृष्टि साफ होएत। एक चक्र जे ऊपर दिस लऽ जाइत। सदाचार दृष्टि साफ करैत। साफ दृष्टि सदाचार गहिर।

अन्तमे मुक्ति केवल दुःखक अभाव नहि। एक असीम प्रसारक कल्पना— ज्ञानक सीमा नहि। विश्वासक कम्पन नहि। शक्तिक बन्धन नहि।

आनन्दक घटाव नहि। मुदा ई असीमता सत्ता नहि, स्वच्छता सँ आबैत।

जतय कर्मक धूलि नहि, ओतय चेतना अपन पूर्ण उजासमे।

एक दीप जकर काँच साफ। एक सूर्य बिनु मेघ। एक दर्पण बिनु धूलि।
एहिऐ मुक्तिक चित्र।

मुदा एहि चित्रक सभसँ सुन्दर पक्ष— ओ प्रत्येक जीवक सम्भावना दिस देखैत।

कियो जन्मसँ अन्तिम रूपेँ नीच नहि। कियो कर्मसँ सदा बँधल नहि।
हरेक चेतना आवरण हटा सकैत— एहन आशा।

मुदा सामाजिक इतिहास कखनो एहि आशाक संग विरोधाभास सेहो रखैत।
परम्पराक भीतर कखनो एहन दावा उगैत जे किछु देह मुक्तिक लेल कम योग्य।
किछु वर्ग, किछु लिंग पर सीमा।

तखन मूल अहिंसक आ बहु-दृष्टिक चेतना अपने परम्परा सँ प्रश्न पूछि सकैत—

“यदि चेतना मूल, देहक रूप किएक अन्तिम बाधा?”

“यदि सत्य अनेक दृष्टि माँगैत, एक सामाजिक दृष्टि किएक अपरिवर्तनीय?”

जीवित परम्परा अपने भीतर प्रश्न रखैत। ओ पत्थर नहि। अहिंसा यदि सत्य,
ओ भेदभाव पर सेहो लागू। अलोभ यदि सत्य, सत्ताक लोभ पर सेहो।

बहु-दृष्टि यदि सत्य, किनारक स्वर पर सेहो। एहि ढङ्गें दर्शन अपने
परम्परा केँ आलोचनाक दीप दैत।

एक गहिर नैतिक व्यवस्था कोनो एक देवता पर निर्भर नहि होइतो बहुत
कठोर हो सकैत।

“कोनो देखैत नहि”— तैयो हिंसा गलत। किएक तँ पीड़ा साँच। “कोनो पुरस्कार
नहि”— तैयो सत्य मूल्यवान। किएक तँ झूठ बंधन।

“कोनो क्षमा देबयवला नहि”— तैयो करुणा। किएक तँ दोसर जीवन अपन गरिमा रखैत।

एहि नैतिकता मे बाहरी भय कम, आन्तरिक दायित्व अधिक।

ई बहुत कठिन स्वतन्त्रता।

बच्चा यदि केवल डर कारण चोरी नहि करैत, डर हटल तँ?

मुदा यदि ओ दोसरक अधिकार बुझि नहि करैत, नैतिकता भीतर गेल।

एहि मार्गक लक्ष्य भीतरक नियम। अनुशासन जतय पहरेदार नहि चाही।

एक शहर यदि सभ लोक केवल कानूनक डर सँ अहिंसक, ओ शान्ति कमजोर।

एक समाज जतय करुणा भीतर, ओ आरो मजबूत। अहिंसा कानूनसँ पैघ संस्कृति।
एक भोजनक चयन सेहो नैतिक हो सकैत। एक व्यापार। एक वस्त्र।

एक यात्रा। एक शब्द। एक राजनीतिक निर्णय। कतेक जीवन हमर सुविधाक पाछाँ
छिपल? बहु-दृष्टि एहि छिपल चेहरासभ दिस आँखि घुमबैत।

“हमर सुख” एक दृष्टि। “ओकर दुःख” दोसर। “प्रकृतिक क्षति” तेसर।

“भविष्यक पीढ़ी” चारिम। एक वस्तुक मूल्य सात दिशासँ देखू।

तखन निर्णय धीमा हो सकैत, मुदा अधिक न्यायपूर्ण।

तेज निश्चय अहंकारक मित्र। धीमा विचार करुणाक ठाम बनाबैत। “कदाचित् हम सम्पूर्ण नहि देखलहुँ।” ई वाक्य युद्ध रोकि सकैत।

परिवारक झगड़ा सेहो। राजनीतिक घृणा सेहो। धार्मिक असहिष्णुता सेहो।

कियो कहैत— “हमर दृष्टि ही सत्य।” दोसर सेहो ओही।

दू पूर्ण दावा टकरा कऽ हिंसा जन्मबैत।

यदि दुनू कहय— “हमर दृष्टि आंशिक हो सकैत,” तखन दरबज्जा खुलैत।

बहु-दृष्टि कमजोरी नहि। ओ बौद्धिक अहिंसा। मुदा एहि अहिंसाक अर्थ सभ मत समान सत्य नहि। किछु दृष्टि अधिक प्रमाणयुक्त। किछु कम।

किछु हिंसक। किछु स्वयं-विरोधी। विनम्रता निर्णयहीनता नहि। सुनबाक पाछाँ तौलू। तर्क। अनुभव। करुणा। संगति। फेर निर्णय।

मुदा निर्णय मे सेहो एक खिड़की खुलल रखू— “नव दृष्टि आबि सकैत।”

एहि खिड़कीसँ ज्ञान जीवित रहैत। एक पूर्ण बन्द सिद्धान्त समय संग कब्र बनि सकैत। खुला सिद्धान्त श्वास लेत। दुनिया अनेक।

ज्ञान आंशिक। मुक्ति व्यक्तिगत प्रयास। नैतिकता अहिंसा। ई चार धारा एकहि नदीमे भेटैत। यदि दुनिया अनेक, दोसर केँ ठाम दिअ।

यदि ज्ञान आंशिक, अहंकार कम। यदि मुक्ति अपने प्रयास, जिम्मेदारी लेऊ।

यदि अहिंसा मूल, जीवन प्रति करुणा।

एक समग्र मानवीय चित्र धीरे उगैत। मनुष्य न सर्वज्ञ अखन, न निराश कैदी।

ओ सीमित, मुदा सम्भावनाशील। बँधल, मुदा मुक्त हो सकैत।

अज्ञानमे, मुदा पूर्ण ज्ञानक क्षितिज रखैत। कर्मसँ ढँकल, मुदा कर्मक प्रवाह

बदलि सकैत। ई आशा अनुशासन माँगैत। सस्ता आश्वासन नहि।

कठिन मार्ग। एक-एक पग। एक-एक व्रत। एक-एक त्याग। एक-एक सजग श्वास।

कोनो चमत्कार नहि। धीरे रूपान्तरण। एक पर्वत जे दूर दिखाइत।

पहिल दिन शिखर नहि। पहिल पग मात्र। तखन दोसर। साधना एहि धैर्यक नाम।

एक दिन मनुष्य पाछाँ देखैत—

जतय पहिने क्रोध तुरन्त उगल, एखन एक क्षणक मौन।

जतय लोभ हाथ बढेलक, एखन “पर्याप्त।” जतय झूठ सहज, एखन सत्य।

जतय दोसरक मत पर हँसी, एखन प्रश्न। जतय जीव केवल वस्तु, एखन करुणा।

ई छोट परिवर्तन मुक्तिक पूर्वाभास। मुक्ति कदाचित् बहुत दूरक असीमता हो,
मुदा ओकर छोट छाया दैनिक जीवनमे दिखाइत। हलुक हृदय। कम भय।

कम घृणा। कम संग्रह। अधिक सजगता। अधिक सत्य। अधिक करुणा। अधिक खुलापन।

यदि दर्शन ई परिवर्तन नहि लऽ आबय, ओ केवल शब्दक बगिया।

यदि आबय, तँ एक छोट मौन सेहो ग्रन्थ सँ पैघ। एक कीड़ा बचाबय हाथ हटेनाइ।
एक कठोर शब्द नहि कहनाइ। एक अनावश्यक वस्तु नहि किननाइ।

एक भिन्न मत सुननाइ। एक भूल स्वीकारनाइ। ई सभ सूक्ष्म दार्शनिक कर्म।
कर्म पुस्तकक बाहर जीवित।

एक दिन ओसक सात बूँद सूर्य चढ़लासँ सूखि गेल। पात रहल। सूर्य सेहो।

मुदा बालक जे ओहि सात रंग देखने छल, ओकर दृष्टि बदलि गेल।

ओ जखन ककरो झगड़ैत देखलक, कहलक— “कदाचित् अहाँ दुनू अलग बूँद सँ
एकहि उजास देखैत छी।”

जखन कियो कहलक— “हम सम्पूर्ण सत्य जानैत छी,” ओ आकाश दिस देखलक।

जखन कियो छोट जीव कुचलए गेल, ओ हाथ रोकलक। जखन लोभ उठल, ओ मुट्ठी ढीली
कएलक। जखन भूल भेल, ओ ककरो ऊपर दोष नहि देलक।

कहलक— “रस्ता हमरा अपने चलबाक अछि।” जखन प्रार्थना कएलक, ओ भीख नहि माँगलक।
ओ अपन भीतरक आवरण देखलक।

कहलक— “हमरा साफ होएबाक शक्ति दिअ नहि— हम अपने साफ होएबाक साहस जगाबी।”

फेर मौन। एहि मौनमे कियो ऊपर सिंहासन पर बैसल नहि। मुदा आध्यात्मिकता कम
नहि छल। ओ अधिक उत्तरदायी छल।

आकाश खाली होइतो पवित्र लागि सकैत।

किएक तँ पवित्रता कोनो व्यक्ति-देवक उपस्थिति मात्र नहि।

एक साफ चेतना। एक अहिंसक दृष्टि। एक सत्यवान जीवन। एक अलोभी हाथ।
एक स्वयं-प्रयत्नशील मन। ई सभ मिलि पवित्रता रचि सकैत।

संसार कोनो एक इच्छाक नाटक नहि। ओ अनगिनत जीव आ अजीवक सह-अस्तित्व।
एहि सह-अस्तित्वमे कियो पूर्ण मालिक नहि।

एक सत्ता दोसर केँ ठाम दैत। स्थान सभ केँ धारण करैत, मुदा ककरो स्वामी नहि।
काल सभ पर बहैत, मुदा ककरो पक्ष नहि।

गति आ विश्रामक शर्त सभ लेल। एक निष्पक्ष ब्रह्माण्डक चित्र।

एहि चित्रमे न्याय बाहरी इच्छा नहि, कर्मक अनिवार्य उत्तरदायित्व।

मुदा ई कर्म-सिद्धान्त यदि करुणा कम करय— “ओकर दुःख ओकर कर्म”— तँ अहिंसा अपने ओकरा प्रश्न करत।

ककरो पीड़ा देखिकऽ हिसाब नहि, सहायता पहिने। किएक तँ हम ओकर सम्पूर्ण अतीत कतय जानैत? बहु-दृष्टि एतयो विनम्रता सिखाबय।

दुःखक कारण एक नहि। व्यक्ति। समाज। प्रकृति। संयोग। इतिहास। अपन कर्म। दोसरक कर्म। जटिल जाल।

एहि लेल कर्मक भाषा कठोर दोषारोपण न बने। नैतिक दायित्व करुणाक शत्रु नहि। ओकर साथी।

एक मनुष्य अपन कर्मक जिम्मेदारी लेत, आ दोसरक दुःखमे हाथ बढ़बैत।

ई सन्तुलन सुन्दर। स्वनिर्भरता आ सहयोग। व्यक्ति आ समाज। अनुशासन आ करुणा। सत्य आ अहिंसा। बहुलता आ निर्णय। स्थायित्व आ परिवर्तन।

जगत एहि जोड़ीसभक संगीत। कोनो एक तार बहुत खींचू, वीणा टूटत। सन्तुलन संग स्वर। एक पात पर सात दिशाक ओस फेर अगिला भोर आयल।

ई बेर बालक एक बूँद नहि चुनलक। ओ सम्पूर्ण पात देखलक। फेर पातक पाछाँ वृक्ष। वृक्षक पाछाँ माटि। माटिक पाछाँ जल।

जलमे आकाशक प्रतिबिम्ब। ओ हँसल। “एक वस्तु कतेक सम्बन्धमे।” एहि एक वाक्यसँ अनेकता आरो गहिर भेल।

कियो स्वतन्त्र अस्तित्व रखैत होइतो सम्बन्ध रखैत।

भिन्नता अलगाव नहि। बहुलता अराजकता नहि। हरेक सत्ता अपन रूप संग साझा दुनियामे। एहि साझा दुनियाक नैतिकता अहिंसा किएक नहि होएत?

यदि हम एक-दोसर संग रहैत, तँ एकक हिंसा दोसर पर पड़त।

एकक लोभ संसाधन घटायत। एकक झूठ विश्वास तोड़त। एकक करुणा सुरक्षा बढ़ायत। अहिंसा आध्यात्मिक होइतो सामाजिक गणित सेहो।

दोसरक अस्तित्व रखू, अपन अस्तित्व सुरक्षित होइत।

एक शहर जतय सभ एक-दोसर केँ भय दैत, धनवानो अशान्त।

एक गाम जतय विश्वास, गरीबो किछु सुरक्षित। नैतिकता साझा जीवनक आधार। आ अलोभ संसाधनक न्याय।

यदि किछु हाथ सभ पकड़ि लेत, बाकी हाथ खाली।

परिग्रह केवल व्यक्तिगत बंधन नहि, सामाजिक असमानता सेहो बढ़ा सकैत।

“कम पकड़ू” एक आध्यात्मिक वाक्य होइतो आर्थिक प्रतिध्वनि रखैत।

एक साधकक खाली हाथ कोनो भूखल हाथ लेल अन्न बचा सकैत।

संयम व्यक्तिगत गुण होइतो साझा न्याय। एहि दृष्टिक आधुनिक अर्थ आरो खुलैत।
जलवायु गरम। वन कटैत। नदी सूखैत। प्राणी लुप्त।

मनुष्यक असीम उपभोग धरतीक सीमित देह पर भार। अलोभ अकस्मात् पुरान व्रत नहि,
भविष्यक आवश्यकता। अहिंसा केवल मानव पर नहि, पृथ्वी पर।

बहु-दृष्टि केवल दार्शनिक बहस नहि, नीति निर्णयमे।

“उद्योगक दृष्टि।” “किसानक।” “नदीक पारिस्थितिकी।” “आदिवासी समुदायक।”
“भविष्यक बच्चाक।” एक बाँध कतेक दृष्टि। एक खनन कतेक।

एक राजमार्ग कतेक। सात दिशाक ओस आइ नीति सभागारमे सेहो जरूरी।
“हमर एक माप सम्पूर्ण नहि।” ई स्वीकार निर्णय केँ न्यायपूर्ण बना सकैत।

मुदा अन्तिम निर्णय तैयो लेबाक पड़त। बहु-दृष्टि अनन्त स्थगन नहि।
सभ स्वर सुनू। क्षति तौलू। अहिंसा कसौटी। न्याय कसौटी।

फेर निर्णय। आ निर्णय पाछाँ सेहो समीक्षा खुलल। ज्ञान पूर्ण नहि,
तँ नीति सेहो संशोधनशील। ई विनम्र शासनक बीज।

एक मुक्त चेतना कदाचित् सात दिशा एक संग देखैत।

हम अखन एतबा नहि। मुदा ओहि आदर्श दिस छोट पग ले सकैत— एक अधिक दृष्टि सुनि।
एक कम घृणा। एक कम संग्रह। एक अधिक सत्य।

एक अधिक करुणा। एक अधिक स्व-प्रयास। एतबे सँ पात पर उजास बढ़ैत।
अन्ततः जीवन कोनो एक वाक्य मे नहि समेटाइत। “अछि।” “नहि।”

“अछि सेहो, नहि सेहो।” “कहब कठिन।” भाषा यथार्थक चारू दिश घूमैत।
कखनो वस्तु एहन जे एकहि रेखा ओकरा नहि पकड़ैत।

विरोधाभास जकाँ दिखाइत, मुदा दृष्टिकोण बदलिते अर्थ खुलैत।

एक घर छोट अछि— महल सामने। बड़ अछि— चिड़ैक घोंसला सामने। पुरान अछि— नव घर
सामने। नव अछि— खंडहर सामने।

एकहि घर चार वाक्य सहन करैत। सत्य कखनो वस्तु नहि, सम्बन्ध माँगैत।
एहि सम्बन्धक बोध भाषा केँ नम्र करैत।

हमर नैतिक भाषा सेहो नम्र हो। कियो भूल कएलक— ओ केवल “बेठीक मनुष्य”
नहि। परिस्थिति। अज्ञान। आदत। लोभ। भय। इतिहास।

मुदा जिम्मेदारी सेहो। बहु-दृष्टि दोष मेटाबय नहि, समझ गहिर करैत।
समझ करुणा बढ़ा सकैत। करुणा न्याय कम नहि करैत।

एक दण्ड सेहो अहिंसक हो सकैत यदि उद्देश्य प्रतिशोध नहि, सुरक्षा आ सुधार।

नैतिकता कठोर काला-सफेद रेखा सँ पैघ। मुदा एहि सूक्ष्मता छल न बने।
“सभ सापेक्ष” कहिकऽ अन्याय नहि ढँकू।

हिंसा पीड़ा दैत— ई गम्भीर। झूठ विश्वास तोड़ैत— गम्भीर। लोभ दोसरक अधिकार
खा सकैत— गम्भीर। बहु-दृष्टि नैतिक दिशा मेटाबय नहि।

ओ दिशा लेबाक पहिने सम्पूर्ण परिसर देखब सिखाबय।

एक मुक्त आत्मा यदि पूर्ण ज्ञान रखैत, ओकर ज्ञान अहिंसाक चरम रूप
किएक नहि होएत?

जे सभ पक्ष देखैत, ओ ककरो तुच्छ केना मानत? जे सभ जीवक
बंधन समझैत, ओ क्रूर केना?

पूर्ण ज्ञान आ पूर्ण चरित्र एक-दोसर संग जुड़ल एहि लेल।

ज्ञान जतबा गहिर, करुणा ततबा गहिर। यदि ज्ञान अहंकार बढ़ाबय,
कदाचित् ओ अखनो आंशिक। एक साँच ज्ञानी कदाचित् कम कहैत, अधिक देखैत।

कम पकड़ैत, अधिक दैत। कम निर्णय जल्दी करैत, अधिक सुनैत। कम घृणा,
अधिक सम्बन्ध। एहि चित्रमे विद्वत्ता आ साधना एक होइत।

पुस्तकक ज्ञान दैनिक चालि में उतरैत। पयर सजग। हाथ अहिंसक। जिह्वा सत्यवान।
मन अलोभी। दृष्टि बहु-दिशात्मक। आत्मा स्व-प्रयत्नशील।

ई चलैत कविता। एक दिन ओस फेर गायब भेल। बालक एखन वृद्ध भऽ चुकल छल।
ओकर हाथ काँपैत। आँखि कम देखैत। मुदा ओ एक युवा केँ कहलक—

“जे तोरा सत्य लगैत, ओकरा प्रेम कर।” “मुदा ओकरा हथियार न बना।”

“जे दोसर कहैत, पहिने ओकर स्थान दिस देख।”

“कोनो जीवक पीड़ा केँ छोट नहि मान।” “अपन कर्मक भार दोसर पर नहि दिअ।”

“कोनो चमत्कारक प्रतीक्षा में अपन प्रयास नहि छोड़।”

“जतबा कम पकड़ब, ततबा हलुक चलि सकब।” “ज्ञान केवल माथमे नहि,
जीवनमे रख।” युवा पूछलक— “पूर्ण सत्य कखन मिलत?”

वृद्ध आकाश दिस देखलक। कहलक— “हम अखन एक बूँद छी।”

“मुदा बूँद यदि ई जानि ले जे ओ सम्पूर्ण आकाश नहि, तँ ओकर उजास पहिने
सँ अधिक साफ भऽ जाइत।”

फेर ओ एक छोट कीड़ा रस्ता पार करैत देखलक। पयर रोकलक। युवा
हँसल नहि। ओहो रुकल।

दू मनुष्य एक सूक्ष्म जीवक रस्ता लेल क्षण भरि ठाढ़।

दुनियाक इतिहासमे ई घटना कतहु लिखल नहि जायत। मुदा अहिंसाक दृष्टि सँ ओ एक
पूर्ण ग्रन्थ छल। कर्मक दृष्टिसँ एक हलुक कण कम।

ज्ञानक दृष्टिसँ एक नव पक्ष। अलोभक दृष्टिसँ अपन गति पर कनेक कम अधिकार।
मुक्तिक दृष्टिसँ एक सूक्ष्म पग।

ओसक सात बूँद फेर ओकर मनमे चमकल। एक बूँद कहैत— “स्थिरता।” दोसर—
“परिवर्तन।” तेसर— “अनेकता।” चारिम— “आंशिक ज्ञान।”

पाँचम— “अहिंसा।” छठम— “स्व-प्रयास।” सातम— “मुक्ति।” सूर्य सभमे एकहि नहि
दिखल, मुदा उजास सभमे रहल।

आ एहि बहु-रंगी उजासमे एक शान्त वाक्य जन्मल— “सत्य ककरो एक मुट्ठीक कैदी
नहि।” “जीवन ककरो एक सुविधाक वस्तु नहि।”

“मुक्ति ककरो दोसरक देल उपहार नहि।” “अहिंसा केवल
नियम नहि, देखबाक रीति।”

“आ ज्ञान तखन पूर्णतर होइत, जखन ओ हमरा कम अहंकारी, कम हिंसक,
कम लोभी आ अधिक सजग बनबैत।”

भोर सम्पूर्ण भऽ चुकल। ओस सूखि गेल। मुदा पात पर सात सूक्ष्म उजासक स्मृति अखनो
रहल। आ मनुष्य फेर अपन रस्ता चलि पड़ल— धीरे, सजग,

हलुक हाथसँ, बहुत दिशा दिस खुलल आँखिसँ।

दुःखक गाँठ खोलैत भोर

महल हो वा झोपड़ी, देहक भीतर एक दिन रोगक हलुक दस्तक पड़ैत अछि।

आईना में चुपचाप एकटा सफेद केस उगैत, पयरक गति धीमी होइत, आ दूर न लगैत
मृत्यु अकस्मात् घरक दुआरक सम्भावना बनि जाइत।

जे सुख काल्हि धरि स्थिर लगैत छल, ओ आइ बदलि रहल अछि। जे वस्तु “मोर”
कहि मुट्ठीमें कसने छी, ओकर रूप, ओकर मूल्य, ओकर संग हमर सम्बन्ध—सभ समयक
जलमें धीरे-धीरे बदलैत अछि।

दुःख केवल घावक पीड़ा नहि; ओ चाहनाक अधूरापन सेहो अछि। पाबि लेलहुँ तऽ
खोएबाक भय, नहि पेलहुँ तऽ असन्तोष; आ जे सुख भेटल, ओकर भीतर
सेहो समाप्तिक महीन बीज।

एहि बोधक अर्थ जीवनक उजास नकारब नहि। फूल सुन्दर अछि, मुदा झरैत;
मित्रता मधुर अछि, मुदा रूप बदलैत। दुःखक जड़ि एहि अस्थिरता सँ चिपकल हमर
कठोर मुट्ठीमें सेहो अछि।

कखनो मन तर्कक विशाल आकाशमें एहन प्रश्न उड़ाबय चाहैत अछि जकर उत्तर तत्काल
घायल मनुष्यक पीड़ा कम नहि करैत। तखन विवेक कहैत—पहिने घाव देखू,
ओकर विष निकालू, श्वास बचाउ।

संसार अनन्त अछि कि सीमित, आत्मा देहसँ अलग कि नहि— एहन प्रश्न अपन स्थान
पर गम्भीर हो सकैत, मुदा जखन घरमें आगि लागल, पहिल कर्तव्य जलक घड़ा अछि,
अग्निक अन्तिम तत्त्वमीमांसा नहि।

एहि व्यावहारिक करुणामें विचार छोट नहि होइत; ओ अधिक जिम्मेदार होइत।
ज्ञानक कसौटी केवल जटिलता नहि, जीवनक दुःख पर ओकर प्रभाव सेहो; सत्य यदि
मुक्ति नहि दे, कम-से-कम अज्ञानक गाँठ तँ खोलय।

दुःख अछि—ई पहिल जागरण, निराशाक घोषणा नहि। दुःखक कारण अछि—ई दोसर आशा,
कारणहीन अन्हार नहि। कारण हटि सकैत—ई तेसर उजास; रस्ता अछि—ई चारिम श्वास।

कारणक संसार एकल डोरी नहि, परस्पर गाँठसभक जाल अछि। ई उठैत तऽ ओ उठैत,
ई शान्त तऽ ओकरे संग दोसर कम्पन शान्त; किछुओ पूर्णतः अकेला,
निरपेक्ष, स्वयंमें बन्द द्वीप जकाँ नहि।

अज्ञानक धुँध सँ आदत जन्मैत, आदत सँ चेतनाक एक ढंग बनैत, देह-मनक आकार,
इन्द्रियक दुआर, स्पर्श, अनुभूति, तृष्णा, तृष्णासँ पकड़, पकड़सँ फेर
होएबाक जिद, जन्म आ क्षयक चक्र।

ई क्रम लोहेक नियति नहि; हरेक गाँठ अगिला गाँठक एक शर्त मात्र।
यदि हरेक कड़ी अपरिहार्य होइत, मुक्ति केवल शब्द रहि जाइत; मुदा शर्त बुझि
गेलाक पाछाँ बीचमें सजगता अपन हाथ राखि सकैत अछि।

तृष्णा उठल—तुरन्त पकड़ आवश्यक नहि। पीड़ा आयल—घृणा आवश्यक नहि।
सुख आयल—“सदा रह” कहि ओकर गला पकड़नाइ आवश्यक नहि। एहि छोट विराममे चक्रक
पहिल दरार सुनाइ पड़ैत अछि।

अज्ञानक आरम्भ समयक कतेक दूर पाछाँ अछि, ई गननाइ कठिन। मुदा वर्तमानक एक
क्षणमे ओकर प्रभाव देखल जा सकैत: हम वस्तु केँ स्थिर मानैत छी,
“हम” केँ कठोर, चाहना केँ आदेश।

ज्ञान एतय पुस्तकक संग्रह मात्र नहि, वस्तुक स्वभावक निर्मम स्पष्टता अछि।
जे उठल, बदलत; जे कारणसँ बनल, कारण बदलिते बदलत; जे पकड़ल गेल अछि,
पकड़ ढीली पड़िते ओकर बन्धन सेहो ढीला।

एहि लेल मनुष्यक मूल भार पापक जन्मजात दाग नहि, अज्ञानक धुँध अछि।
धुँध पर कोड़ा नहि चलैत; दीप जराओल जाइत। अज्ञानक उपचार अपमान नहि,
देखबाक क्षमता, विवेक आ अभ्यास अछि।

रस्ता एकदम न तऽ देहक कठोर यातना दिस जाइत, न इन्द्रियक हरेक चाहनाक पाछाँ
पागल दौड़ दिस; दुनू छोरक बीच एक जीवित, सजग, कठिन मध्यम बाट खुलैत अछि।

देह केँ शत्रु बनौने मन बहुधा देहेक पीड़ा मे फँसि जाइत। भोग केँ देवता
बनौने मन भोगक गुलाम बनि जाइत। मध्यम बाट कहैत—देहक सेवा करू,
मुदा ओकर हरेक इच्छा आदेश नहि।

ठीक दृष्टि अर्थ जीवनक अस्थिर, कारणबद्ध रूप केँ स्पष्ट देखब।
ठीक संकल्प अर्थ लोभ, हिंसा, प्रतिशोधक दिशा सँ मन फेरब। दृष्टि बिनु
संकल्प सूखा नक्शा; संकल्प बिनु दृष्टि अन्धर उत्साह।

शब्दो रस्ता अछि। झूठ, चुगली, अपमान, अनावश्यक कटुता दोसरक मनमे जे काँटा
रोपैत, अन्ततः अपन मनो ओकर वन बनैत। सत्यवान वाणी केवल तथ्य नहि—करुणा,
समय, माप आ जिम्मेदारी।

कर्म रस्ता अछि। हाथ जकरा छूबैत, ओहि पर अपन नैतिक छाप छोड़ैत।
अहिंसा निष्क्रियता नहि; ओ हरेक क्रियामे पीड़ा कम करबाक सजग कला,
जतय शक्ति अछि, ओतय ओकर संयम; जतय सहायता सम्भव, ओतय उपस्थिति।

जीविका सेहो दर्शनक बाहर नहि। रोटी आवश्यक, मुदा रोटीक कमाइ यदि छल,
नशा, शोषण, हत्या, भय वा मानव गरिमा तोड़ि बनैत, तऽ पेट भरल रहितो भीतरक
भूख अधिक गहिर भऽ सकैत अछि।

प्रयास आवश्यक, मुदा उन्मत्त तनाव नहि। मन केँ फेर-फेर ठीक दिशा देब,
गिरलाक पाछाँ उठब, आलस्यक दलदल आ आत्मद्वेषक काँटा दुनू पार करब— ई साधना
नाटक नहि, दीर्घ अभ्यासक सामान्य दिनचर्या अछि।

स्मृति नहि—सजगता। जे एखन घटि रहल अछि ओकरा साफ देखब: श्वास,
कदम, क्रोधक पहिल ताप, लोभक पहिल चमक, दुखक पहिल छाया। जतय सजगता आबि गेल,
आदत पूर्ण अँधारमे काम नहि करि सकैत।

एकाग्रता मन केँ एक ठाम कैद करब नहि, बिखरल ऊर्जा केँ समेटब अछि।
जैना हवा सँ काँपैत जलमे चन्द्रमा टूटल-टूटल दिखाइत, शान्त जलमे ओही
प्रतिबिम्ब एकरूप; मनक शान्ति दृष्टि साफ करैत।

ई रस्ता आठटा अलग सीढ़ी नहि जे एक समाप्त तखन दोसर शुरू। दृष्टि वाणी केँ
बदलैत, वाणी कर्म केँ; कर्म मन केँ; मन फेर दृष्टि केँ। ज्ञान,
आचरण आ अनुशासन एक-दोसरक भीतर घूमैत चक्र अछि।

मुक्ति केँ बुझब सभसँ कठिन, किएक तँ भाषा अनुभवक सीमामे बनल।
जे अवस्था इन्द्रिय, सामान्य विचार आ पकड़ल परिभाषासँ पार, ओकर सम्पूर्ण नाप
शब्दक डोरीसँ केना लेल जाए?

एहि अज्ञानक अर्थ “मुक्ति शून्यता अछि” कहि नष्ट करि देब नहि।
दीप बुझलाक रूपक केँ देहक विनाशक समानार्थी मानि लेबो सरल भूल;
मुक्ति जीवन सँ भागब नहि, बन्धनक कारणक समाप्ति आ पूर्ण शान्ति अछि।

जखन तृष्णा आदेश देब बन्द करैत, पकड़ ढीली पड़ैत, अहंकार हरेक वस्तु पर “मोर”
लिखब छोड़ैत, अज्ञानक कुहरा हटैत, तखन जे शान्ति उगैत, ओकरा मृत्यु-जकाँ
कहब जीवनक अपमान होएत।

मुक्त मन निष्क्रिय पाथर नहि। ओ दोसरक दुःख प्रति अधिक खुलल होइत,
किएक तँ अपन निजी लोभक शोर कम भेलाक पाछाँ परक कराह स्पष्ट सुनाइत;
अलगाव नहि, करुणामय सहभागिता ओकर सहज चाल बनि सकैत अछि।

मध्यम बाट ध्यान आ कर्म केँ दुश्मन नहि मानैत। कखनो मौन आवश्यक,
कखनो बाजारक बीच दयालु हस्तक्षेप; कखनो एकान्तमे मन देखब, कखनो भीड़मे
पीड़ितक हाथ पकड़ब।

अत्यधिक तप यदि देह तोड़ैत मुदा अज्ञान बचा दैत, उद्देश्य विफल।
अत्यधिक भोग यदि क्षणिक सुख बढ़बैत मुदा तृष्णा अनन्त करैत, विफल।
रस्ता ओ अछि जतय अभ्यास जीवनक समग्रता केँ स्वस्थ करैत जाए।

दुःखक पहिल सत्यक विरोधमे लोक कहि सकैत—जीवनमे सुखो तँ अछि। हाँ,
अछि; फूलक गन्ध, प्रेम, सन्तानक हँसी, रोटी, वर्षा, संगीत। मुदा प्रश्न ई
नहि जे सुख अछि कि नहि; प्रश्न ओकर अस्थिर स्वरूपक अछि।

हम सुख सँ दुःखी तखन होइत छी जखन सुख केँ स्थायी सम्पत्ति बनाबय चाहैत।
क्षण केँ क्षण रहए दियौ; ओकर आनन्द कम नहि होएत। उलटे, समाप्तिक बोध
कृतज्ञता बढ़ा सकैत, स्वामित्वक रोग कम।

तृष्णा इच्छा मात्र नहि। प्यासक जकाँ एक आन्तरिक आदेश: “ई भेटे बिनु हम अधूर,” “ई रहए बिनु हम नष्ट,” “ई मोर होएत ही।” एहि कठोर आग्रहमे मन अपन स्वतन्त्रता धीरे-धीरे गिरवी रखैत।

साधारण इच्छा आ बन्धनकारी तृष्णा बीच महीन भेद अछि। भोजन चाहब जीवन; भोजनक स्वादमे अपन मूल्य खोजब बन्धन। स्नेह जीवन; मनुष्य केँ “मोर” कहि ओकर स्वतन्त्रता रोकब बन्धन।

पकड़ केवल वस्तु पर नहि; विचार पर सेहो। “हमर मत,” “हमर पहचान,” “हमर अपमान,” “हमर विजय”— एहि शब्दसभ पर कसेल मुट्ठी समाजक हिंसा धरि बढ़ि सकैत अछि।

ताहि लेल मुक्ति निजी ध्यानक कोठरीमे सीमित नहि रहि सकैत। लोभक मन बाजार बनबैत, घृणाक मन राजनीति, अज्ञानक मन अफवाह; भीतरक अवस्था बाहरक संस्था आ सम्बन्धमे रूप धारण करैत अछि।

सजग मन सामाजिक करुणाक जमीन बनि सकैत। यदि हम अपन पीड़ा केँ स्पष्ट देखी, परक पीड़ा पर हँसी कठिन होइत। यदि अपन तृष्णाक चाल बुझी, दोसरक लोभ केवल नैतिक गाली नहि रहैत—समझ सेहो।

समझ अपराध केँ न्यायोचित नहि करैत; ओ उपचारक दिशा साफ करैत। घृणा केवल घृणा सँ कम नहि होइत, आगि आगिसँ बुझैत नहि। न्याय आवश्यक, मुदा प्रतिशोधक नशा न्यायकेँ फेर बन्धन बना सकैत।

एक गहिर प्रश्न उठैत—यदि सभ कारणबद्ध, तऽ स्वतन्त्रता कतय? उत्तर सम्भवतः पूर्ण स्वेच्छाचारमे नहि, कारणक ज्ञानमे अछि। जे शर्त हमरा चलबैत अछि ओकरा देखिते, ओकर संग सम्बन्ध बदलि सकैत छी।

अचेत आदत हमरे चलबैत; सजगता ओहि मशीनमे खिड़की खोलैत। कर्मक स्वतन्त्रता शून्यसँ नहि जन्मैत, परिस्थिति बुझि विकल्प रचैत। ई छोट स्वतन्त्रता ही चक्र तोड़बाक व्यवहारिक आशा अछि।

शब्द पीढ़ीसँ पीढ़ी चलैत, स्मृति ग्रन्थ बनैत, व्याख्या बदलैत। मुदा कोनो लिखित पन्ना अनुभवक स्थान पूर्णतः नहि लऽ सकैत। मार्गक मानचित्र उपयोगी, चलबाक थकान आ दृश्य यात्रीकेँ स्वयं भेटत।

एहि लेल श्रद्धा अन्ध स्वीकृति नहि होएबाक चाही। कियो कहलक तें सत्य—ई पर्याप्त नहि; परम्परा पुरान तें सत्य—नहि। विचार केँ जीवन, तर्क, अनुभव आ करुणाक कसौटी पर फेर-फेर परखू।

संगहि, केवल सन्देहक नशा सेहो मुक्ति नहि। हरेक बात तोड़ि देब आसान, अपन लोभ, भय, क्रोध तोड़ब कठिन। बौद्धिक तेज जखन चरित्र नहि बदलय, अज्ञान बस पोशाक बदलैत अछि।

साँच जाँच ईहो पूछैत—ई विचार हमरा कइसन मनुष्य बना रहल? अधिक अहंकारी कि अधिक विनम्र? अधिक हिंसक कि अधिक करुण? अधिक पकड़निहार कि अधिक मुक्त? अधिक भ्रमित कि अधिक साफ?

निर्वाण शब्द रहस्यमय लगि सकैत, मुदा ओकर दिशा दैनिक जीवनमें देखाइत। जतय एक तृष्णा बिनु आदेशक गुजरि गेल, एक क्रोध बिनु हिंसाक शान्त भेल, एक भय केँ स्पष्ट देखल गेल—ओतय शान्तिक बहुत छोट पूर्वाभास अछि।

अन्तिम शान्ति केँ परिभाषामे बन्द करब फेर पकड़ बनि सकैत। जे मुक्ति अछि, ओकरा “मोर सिद्धान्त” बना लेलहुँ तऽ विडम्बना। एहि लेल कखनो मौन उत्तरक कमी नहि, उत्तरक मर्यादा हो सकैत।

भाषा कारणबद्ध संसारक भीतर काम करैत—नाम, भेद, सम्बन्ध बनबैत। मुक्ति यदि ओहि पकड़ल संरचनासँ पारक अनुभव अछि, तऽ शब्द दुआर धरि लऽ जा सकैत, भीतरक यात्रा स्वयं करबाक।

मुदा मौनक नाम पर आलस्य नहि। मार्ग स्पष्ट नैतिक मेहनत माँगैत: वाणी साफ, कर्म अहिंसक, जीविका न्यायपूर्ण, प्रयास सतत, मन सजग, ध्यान गहिर, दृष्टि विवेकपूर्ण, संकल्प करुणामय।

एहि अभ्यासमे व्यक्ति जाति, कुल, धन, पदक दीवार पार देखल जा सकैत। दुःख रंग नहि पूछैत, रोग वंश नहि, वृद्धावस्था प्रतिष्ठा नहि। मुक्तिक खोज तें प्रत्येक संवेदनशील जीवक साझा अधिकार जकाँ खुलैत।

एक दिन राजपथ पर चलनिहार आ कच्ची गलीक मनुष्य एके वर्षा में भीजैत। एके मृत्यु दुनू दुआरक सम्भावना, एके तृष्णा दुनूक मनमें रूप बदलि उठैत। एहि समानताक बोध अहंकारक बहुत पुरान सिंहासन हिला सकैत।

मध्यम बाट बराबर आधा-आधा समझौता नहि। सत्य आ असत्यक बीच “मध्य” नहि; विवेकपूर्ण जीवनक दुई अति सँ मुक्ति। देह-दमन आ उच्छृंखल भोग दुनू जखन बन्धन बढ़ाबय, तखन तेसर दिशा।

ई तेसर दिशा सुविधा नहि; बहुधा अधिक सजग मेहनत। अति स्पष्ट नियम देत—“सभ छोड़ू” वा “सभ भोगू”; मध्यमता प्रत्येक क्षण पूछैत—एखन कतेक, किएक, ककर हित, ककर पीड़ा?

एहि प्रश्नसँ नैतिक जीवन जीवित रहैत, यांत्रिक नहि। एकहि कर्म भिन्न परिस्थिति में भिन्न प्रभाव दे सकैत। सजगता नियमक आत्मा, करुणा ओकर हृदय, विवेक ओकर आँखि।

दुःखक कारण बुझलाक पाछाँ दोषी खोजब आवश्यक नहि। अज्ञान केँ व्यक्ति-शत्रु बना घृणा करब फेर अज्ञानक रूप हो सकैत। उपचार कारण-श्रृंखलामे हस्तक्षेप अछि—करुणामय, स्पष्ट, धैर्यपूर्ण।

जैना चिकित्सक रोगी पर क्रोधित नहि होइत कि “तूँ बीमार किएक?”
ओ कारण देखैत—संक्रमण, भोजन, वातावरण, आदत, देहक दशा। नैतिक चिकित्सा सेहो
कारण देखैत, मुदा जिम्मेदारी मेटाबैत नहि।

हमर भीतरक रोगक औषधि एक दिनक प्रतिज्ञा नहि। दैनिक पुनरावृत्ति,
असफलता, फेर उठब, फेर देखब। मार्गक गरिमा एहि मे जे ओ चमत्कारक अपेक्षा
नहि, अभ्यासक विश्वास करैत।

अन्ततः भोर धीरे-धीरे आबैत; अन्हार एक आदेश पर नहि हटैत। पहिने पूर्व
दिशामे महीन उजास, फेर वस्तुसभक आकार, फेर रंग, फेर पथ—ज्ञानो एना मनक
दुनियाकें क्रमशः स्पष्ट करैत।

जखन हम दुःख कें केवल शाप नहि, कारणबद्ध प्रक्रिया जकाँ देखैत,
तखन निराशा घटैत; जे कारणसँ बनल, ओ कारण बदललासँ बदलि सकैत। एहिए बोधक भीतर
मुक्ति पहिल बेर सम्भव वाक्य बनैत अछि।

जखन हम सुख कें पकड़ब छोड़ि ओकर क्षणिक गन्ध ग्रहण करैत, तखन कृतज्ञता
तृष्णासँ अलग होइत; प्रेम स्वामित्वसँ, जीवन अमर होएबाक जिद बिनु
सेहो गहिर हो सकैत अछि।

जखन मन प्रश्न पूछैत मुदा प्रश्नक नशामे घायल कें नहि भुलैत,
तखन बुद्धि करुणाक साथी बनैत; दर्शन जीवनक सेवा। आ जखन मौन आवश्यक,
शब्द अपने पयर रोकि सुनब सीखैत।

दुःखक गाँठ एकहि झटका मे नहि खुलत। एक गाँठ इच्छा, एक भय, एक अज्ञान,
एक स्मृति, एक अहंकार; मुदा प्रत्येक गाँठक धागा देखाइ
पड़लासँ हाथक असहायता कम होइत।

भोरक अन्तिम शिक्षा कदाचित् एतबे: जगत बदलैत अछि—तें मुट्ठी हलुक रखू;
दुःख कारणबद्ध—तें कारण देखू; मुक्ति सम्भव—तें चलू; आ रस्ता चलैत समय
दोसरक पीड़ा नहि बढ़ाउ।

कोनो दूर सिंहासन सँ उद्धार उतरबाक प्रतीक्षा नहि। एहि श्वासमे दृष्टि साफ
करब, एहि वाक्यमे अहिंसा चुनब, एहि कर्ममे लोभ कम करब—मुक्तिक
रस्ता एतयसँ आरम्भ होइत।

आ जखन सूर्योदय सम्पूर्ण होइत, रातिक स्मृति मेटैत नहि। ओ याद दिलबैत—अन्हार
छल, मुदा अनन्त नहि; उजास बाहर उगल, मुदा ओकर ठीक दिशा भीतरक
आँखि खोललासँ बनल।

लौ बदलैत रहैत, उजास चलैत

एक पुरान मेज पर हाथ फेरैत हम कहैत छी—ई ओही मेज अछि। मुदा लकड़ी घिसि गेल,
पालिश उतरि गेल, कोन बदलि गेल; कदाचित् स्थिर रहैत अछि नाम, वस्तु स्वयं
चुपचाप बदलैत रहैत अछि।

भाषा हमर सुविधा लेल एक शब्द केँ समय भरि स्थिर राखैत अछि। हम “घर”,
“नदी”, “मनुष्य”, “हम” कहैत छी, आ भूलि जाइत छी जे नामक स्थिरता वस्तुक
भीतरक निरन्तर परिवर्तन केँ रोकेत नहि।

बीज अंकुर बनैत, अंकुर वृक्ष; फूल झरैत, फल पकैत, डालि सूखैत।
शिशु युवाक रूप लैत, देह रोग, वृद्धावस्था आ मृत्यु दिस चलैत;
पर्वत, तारा, धरती—जकरा स्थिर मानल, ओहो दीर्घ समयमे बदलैत अछि।

तखन जगत “बदलि रहल अछि” कहबो कदाचित् आधा कथन अछि। मानो एक स्थिर जगत पाछाँ
ठाढ़, आ ओकर ऊपर परिवर्तन गुजरि रहल; गहिर दृष्टि कहैत—जगत स्वयं एहि
कारणबद्ध परिवर्तनक प्रवाह अछि।

किछुओ अपने बल पर, सभ सम्बन्धसँ मुक्त, पूर्णतः अकेला नहि। ई उठैत तऽ ओ
उठैत, ई बदलैत तऽ दोसर पर प्रभाव पड़ैत; अस्तित्व अलग-अलग पाथरक ढेर नहि,
शर्तसभक जीवित जाल अछि।

एहि जालमे दू छोर आकर्षक मुदा भ्रमकारी: एक कहैत—किछु शाश्वत पदार्थ सभ
परिवर्तनक नीचाँ अपरिवर्तित अछि; दोसर कहैत—वस्तु क्षणमे नष्ट,
मानो ओकरा पाछाँ कोनो प्रभाव नहि रहैत।

बीचमे तेसर बाट खुलैत: वस्तु अछि, मुदा शर्तसँ; टिकैत, मुदा निरपेक्ष नहि।
ओ समाप्त होइतो अगिला क्षण पर प्रभाव छोड़ैत, कारणक क्रम बनबैत;
न पूर्ण शाश्वतता, न अर्थहीन विनाश—एक सतत जन्मैत सम्बन्ध।

काल्हिक विचार, शब्द आ कर्म आइक जीवनमे छाप छोड़ैत। आइक निर्णय काल्हिक
दिशा रचैत; भाग्य आ स्वतन्त्रता शत्रु नहि, अतीत शर्त दैत अछि,
वर्तमान ओहि शर्तक भीतर नव उत्तर चुनि सकैत अछि।

कर्मक अर्थ एतय कोनो अदृश्य लेखापालक दण्ड-पुस्तक मात्र नहि।
कारणक नियम मनक आदत, सम्बन्ध, निर्णय आ भविष्यक रूप बनबैत; लोभ लोभक पगडंडी
चौड़ा करैत, करुणा करुणाक रस्ता।

मुदा सभसँ कठिन प्रश्न “हम” पर आबि ठाढ़ होइत। जे देह बदलैत,
अनुभूति बदलैत, स्मृति बदलैत, विचार बदलैत—तखन भीतर एक अपरिवर्तित मालिक
कतय अछि, जकरा हम सदा “हम” कही?

भीतर झाँकू तऽ रूप, अनुभूति, पहचान, आदत, चेतनाक बदलैत धारा भेटैत।
एक स्थिर कण नहि जे सभ अवस्थाक पाछाँ सिंहासन पर बैसल हो; “हम”
कदाचित् एहि बदलैत घटकसभक संक्षिप्त नाम, अलग शाश्वत वस्तु नहि।

एहि कथनक अर्थ व्यक्ति शून्य अछि—एना नहि। बदलैत व्यक्ति वास्तविक अछि,
दुःख वास्तविक, जिम्मेदारी वास्तविक; जे नकारल जाइत अछि, से बदलैत अनुभवक
पाछाँ एक अचल पदार्थक कल्पना।

नदीक जल हरेक क्षण नव, तैयो नदीक एक निरन्तरता अछि। कड़ी-कड़ी जोड़ल श्रृंखला
एक छोरसँ दोसर धरि चलैत, मुदा भीतर कोनो एक तार सभ कड़ी पार
स्थिर रहैत नहि।

एक दीपक लौ देखू: अगिला क्षणक लौ पहिल क्षणक समान नहि। तैयो पूर्ण असम्बद्ध
नहि; तेल, बाती, ताप, हवा आ पूर्व क्षणक कारण एहि उजास केँ निरन्तर देखबैत,
मानो एक लौ लगातार चलि रहल हो।

एक दीपसँ दोसर दीप जरैत—की पहिल लौ दोसरमे चली गेल? नहि; मुदा कारणक
सम्बन्ध टूटल नहि। निरन्तरता बिनु स्थिर आत्मा एहि छोट उजासमे सरल रूपक
जकाँ समक्ष आबि ठाढ़ होइत अछि।

एहि सँ जन्म आ पुनर्जन्मक प्रश्नो नव रूप लेत। एकहि स्थायी यात्री
देह-दर-देह यात्रा करैत—एहन मानबाक आवश्यकता नहि; पूर्व कारणक धारा अगिला
जीवनक शर्त बनि सकैत, लौसँ लौ जकाँ।

तखन नैतिक जिम्मेदारी किएक बाँचत? किएक तँ कारणक धारा बाँचैत अछि।
जे कर्म काल्हि भेल, ओ आइक व्यक्तित्वक निर्माणमे उपस्थित; “ओ व्यक्ति
दोसर छल” कहिकऽ हम कारणक निरन्तरता सँ भागि नहि सकैत।

जिम्मेदारी पहचानक पत्थर पर नहि, कारणक नदी पर टिकल अछि। हम बदलैत छी,
मुदा बदलैत क्रम अपने अतीतसँ असम्बद्ध नहि; आइक “हम” काल्हिक कर्मक
उत्तराधिकारी आ काल्हिक “हम”क निर्माता।

एहि बोधक नैतिक प्रभाव गहिर अछि। यदि भीतर कोनो कठोर शाश्वत अहं सिंहासन पर
नहि, “मोर”क दीवार हलुक; स्वार्थ प्राकृतिक नियम नहि, एक सीखनल
पकड़ जकरा ढीला कएल जा सकैत।

“हमर” मान, “हमर” विजय, “हमर” सम्पत्ति, “हमर” विचार— एहि सभ पर पकड़ जतेक
कठोर, भय आ संघर्ष ततेक अधिक। जतय आत्माक स्थिर किला पिघलैत,
करुणा लेल नव खुलल ठाम बनैत।

किएक तँ दोसर मनुष्य सेहो बदलैत कारणसभक धारा अछि। ओकर क्रोध पाछाँ भय,
ओकर भय पाछाँ अनुभव, ओकर लोभ पाछाँ असुरक्षा; समझ दोष मेढाबैत नहि,
मुदा घृणाक सरल चित्र केँ जटिल बनबैत।

नैतिकता तखन आदेशक सूची मात्र नहि, अस्तित्वक समझसँ उगैत व्यवहार।
यदि सभ परस्पर कारणबद्ध, हमर शब्द अलग हवा में गायब नहि होइत;
एक अपमान दोसर मनमें प्रतिध्वनि, एक करुणा दूर धरि असर।

आश्चर्य ई जे ठीक दृष्टि आ ठीक आचरण अलग पाठ नहि। अस्तित्व केँ जँ स्थिर
अहंकारक दृष्टिसँ देखब, व्यवहार स्वार्थ दिस झुकत; जँ सम्बन्ध,
परिवर्तन आ अनात्मता देखब, उदारता अधिक स्वाभाविक हो सकैत।

एहि कारण ज्ञान नैतिक जीवनक आरम्भ बनैत। ठीक देखब केवल बौद्धिक जीत नहि;
ओ इच्छा, शब्द, कर्म बदलबाक आग्रह; दृष्टि जँ जीवन नहि छूबय,
ज्ञान अखनो सतह पर अछि।

एक गम्भीर स्वतन्त्रता सेहो एहि परम्परामें चमकैत: कोनो कथन केँ केवल
श्रद्धा, परम्परा, प्रतिष्ठा वा भयक कारण स्वीकार नहि; परीक्षण करू,
मनमें घुमाउ, अनुभव आ तर्कक कसौटी पर राखू।

गुरुतुल्य आवाज सेहो कहि सकैत—हमर शब्द केँ अन्ध विश्वास नहि बनाउ।
सन्देह अपराध नहि; सन्देह विचारक श्वास हो सकैत, जतय प्रश्न अन्ततः अधिक
साफ समझ, अधिक शान्त आचरण दिस लऽ जाए।

ई बौद्धिक स्वतन्त्रता उच्छृंखल नकार नहि। हरेक बात केवल एहि लेल असत्य नहि
जे पुरान अछि, न सत्य जे प्रिय; प्रश्नक उद्देश्य जीत नहि, भ्रम घटेनाइ आ
दुःखक कारण देखनाइ।

परिवर्तनक दर्शन निराशावाद नहि। यदि सभ बदलैत, दुःखो बदलि सकैत;
तृष्णा, भय, क्रोध स्थायी स्वभाव नहि; जे कारणसँ उगल, कारण बदललासँ
ओकर रूप सेहो बदलि सकैत।

अनात्मताक विचार मनुष्य केँ मिटबैत नहि; ओ जड़ छवि केँ हटबैत।
“हम एहनहि छी, सदा एहन रहब”—एहि कठोर वाक्य पर दरार पड़ैत; परिवर्तन यदि
अस्तित्वक नियम, आत्म-परिवर्तन वास्तविक सम्भावना।

कियो क्रोधी अछि—मुदा क्रोध स्थायी आत्मा नहि। कियो लोभी—मुदा लोभ ओकर
अन्तिम सार नहि। कियो घायल—मुदा घाव ओकर सम्पूर्ण परिचय नहि।

एहि दृष्टि शिक्षा, न्याय आ करुणा सभ केँ नव अर्थ दे सकैत। मनुष्य केँ केवल
अपराधक स्थिर लेबलसँ नहि, कारणक इतिहाससँ सेहो देखू; जिम्मेदारी राखू,
मुदा परिवर्तनक दुआर बन्द नहि करू।

एक समाज सेहो स्थायी आत्मा नहि। संस्था बदलैत, विचार बदलैत, परम्परा
रूपान्तरित, सत्ता उठैत-गिरैत; “सदिखन एना छल” कहब बहुधा
भाषाक मेज-जकाँ भ्रम हो सकैत।

नाम स्थिर, भीतर इतिहास चलैत। जाति, राष्ट्र, समुदाय, संस्था—शब्द दीर्घ
समय टिकि सकैत, मुदा ओहि नामक भीतर जीवनक बनावट निरन्तर बदलैत रहैत अछि।

तैं इतिहासक सम्मान करू, मुदा नाम केँ शाश्वत सार नहि मानू। परम्परा कारणक धारा अछि, पत्थर नहि; ओकरा समझू, जाँचू, बदलू; जे मानव दुःख घटबैत, ओकरा सहेजू; जे बढ़बैत, ओकरा प्रश्न करू।

एक लौक रूपक फेर लौटैत। जतबा देर शर्त अछि, लौ अछि; हवा बदलल, तेल घटल, बाती झुकल— लौ बदलैत, मुदा कारणक सम्बन्ध उजास केँ क्रम दैत।

हमरो जीवन एहन: प्रत्येक क्षण नव, तैयो सम्पूर्णतः अनाथ नहि; काल्हि आइमे, आइ काल्हिमे कारणक महीन धागासँ उपस्थित।

एहि धागा केँ “शाश्वत आत्मा” कहबाक आवश्यकता नहि, आ ओकरा नकारि “किछु जिम्मेदारी नहि” कहबो भूल। बीचक कठिन सत्य—निरन्तरता बिनु अपरिवर्तनीयता।

ई मध्य दृष्टि बहुत उपयोगी, किएक तँ मन बहुधा दू छोर चाहैत: वा तऽ पूर्ण स्थायी उत्तर, वा पूर्ण शून्यता; मुदा जीवन सम्बन्ध, शर्त, क्रम, परिवर्तनक अधिक जटिल संगीत।

जैना राग प्रत्येक क्षण नव स्वर लैत, तैयो रागक परिचय रहैत। संगीतक अस्तित्व कोनो एक स्थिर स्वरमे नहि, स्वरसभक क्रम आ सम्बन्धमे; मनुष्यक निरन्तरता सेहो कदाचित् एहन संगीतक निरन्तरता।

तखन मुक्ति कोनो शाश्वत अहंकार केँ अमर बनाबय नहि। ओ कदाचित् अहंकारक कठोर केन्द्र केँ बुझि, पकड़ कम करब, कारणक जाल साफ देखब, तृष्णाक आदेशसँ स्वतन्त्र होएब।

जे वस्तु स्थायी नहि, ओकरा स्थायी बनाबयक जिद दुःख बढ़बैत। जे “हम” बदलैत, ओकरा पत्थर बनाबयक प्रयास भय बढ़बैत; जे सम्बन्ध कारणबद्ध, ओकरा अकेलापन मानब भ्रम बढ़बैत।

मुक्ति एहि तीन भ्रमक धीरे-धीरे गलनाइ हो सकैत: स्थिर वस्तुक भ्रम, स्थिर अहं भ्रम, निरपेक्ष अस्तित्वक भ्रम। जतय पकड़ कम, ओतय शान्ति अधिक; जतय शान्ति, ओतय करुणा सहज।

मुदा शान्ति निष्क्रियता नहि। जतय स्वार्थक शोर कम, परक दुःख अधिक साफ सुनाइत; ज्ञान यदि जीवित अछि, ओ संसारसँ मुँह फेरि नहि, सहायता लेल हाथ बढ़बैत।

एक परिवर्तित मनुष्य बाजारो जाएत, परिवारो सँभालत, समाजमे कामो करत। अन्तर एतबे—ओ अपन भूमिका केँ शाश्वत “हम”क मुकुट नहि बनबैत; कर्म करैत, मुदा कर्मक फल पर लोभक हथकड़ी हलुक।

दृष्टि आ नैतिकता एहि ढङ्गँ एक-दोसरमे विलीन होइत। जगत सम्बन्धमय—तैं जिम्मेदारी; सभ बदलैत—तैं आसक्ति हलुक; स्थिर आत्मा नहि—तैं अहंकारक सिंहासन पर प्रश्न।

एहि त्रयीसँ जीवनक भाषा बदलि सकैत। “मोर”क स्थान पर “हमर सम्बन्ध”;
“सदा”क स्थान पर “एखन”; “ओ एहनहि अछि”क स्थान पर “ओ एहन कारणसभक
भीतर एखन एना अछि।”

भाषा फेर हमर शिक्षक बनैत, मुदा एहि बेर भ्रमक नहि, सजगताक। शब्द वस्तु केँ
स्थिर न बनाबय, ई स्मरण संग शब्द प्रयोग करू; हरेक नामक भीतर परिवर्तनक हवा
लेल एक खिड़की खुलल राखू।

अन्ततः प्रश्न हमरे भीतर लौटैत: आइ जकरा “हम” कहैत छी, काल्हि ओ पूर्णतः
ओही नहि रहत। तखन आइक क्रोध केँ अमर किएक बनाउ? आइक अपमान
केँ शाश्वत किएक?

छोड़नाइ विस्मृति नहि। छोड़नाइ बदलैत सत्यक संग चलनाइ; सम्बन्ध तोड़ब नहि,
ओकरा स्वामित्वक जंजीरसँ मुक्त करब।

जैना दीपक लौ हरेक क्षण बदलैत, तैयो राति भरि उजास दे सकैत, तैना मनुष्य
स्थिर आत्मा बिनु सेहो प्रेम, जिम्मेदारी आ अर्थ रचि सकैत; निरन्तरता
पदार्थक कठोरता नहि, कारणक जीवित सौन्दर्य हो सकैत।

भोरमे पहिल दीप बुझैत समय दोसर दीप जरि रहल अछि। कियो लौ पकड़ि एक पात्रसँ
दोसरमे नहि लऽ गेल; तैयो उजासक क्रम टूटल नहि—एहि रहस्य मे
जीवनक गहिर कविता अछि।

कदाचित् हमरो यात्रा एहनहि: एक क्षण दोसर केँ कारण, एक जीवन अगिला केँ।
किछु शाश्वत वस्तु चलि नहि रहल, मुदा किछु पूर्णतः असम्बद्धो नहि;
लौ बदलैत रहैत, उजास चलैत रहैत।

आ एहि उजासमे एक सरल विनम्रता जन्मैत: किछुओ अकेला नहि, किछुओ स्थायी नहि,
किछुओ प्रभावहीन नहि। तें सजग रहू—आइक छोट कर्मो काल्हिक अन्हार
वा उजास बनि सकैत।

चार खिड़की आ एक खुलल आकाश

एक पुरान सभा टूटल तऽ विचारो अनेक दिशामे चलि पड़ल। कियो अनुशासनक कड़ा रेखा सँ परम्परा बचाबय चाहलक, कियो कहलक—मुक्ति यदि केवल अपन लेल, तऽ करुणा अधूरी रहत।

एक रस्ता मनुष्य केँ अकेला किनार दिस लऽ जाइत, दोसर कहैत—किनार पर पहुँचि गेलहुँ तऽ फेर नाव घुमाउ, जतय धरि एको प्राणी डूबि रहल, अपन शान्ति पूर्ण नहि।

कीचड़मे उगल कमल एहि दोसर आकांक्षाक रूपक बनैत। जलमे रहैत, मुदा जलक मैल ओकर पंखुड़ीक अन्तिम परिचय नहि; दुनियामे रहू, मुदा लोभ, अहंकार आ निजी लाभक केन्द्र सँ पार।

एक मत कहैत—अपने चलू, अपने प्रयासक बल पर। दोसरक जनप्रिय स्वर कमजोर मन केँ आश्वासन दैत: करुणाक कोनो विशाल स्रोत तोहर पीड़ा सँ अनभिज्ञ नहि।

विश्वास आ स्व-प्रयासक बीच ई तनाव केवल धर्मक कथा नहि। मनुष्य हरेक युगमे पूछैत—हमर मुक्ति हमर हाथमे कतेक, आ कतेक हम एक एहन करुण उपस्थिति चाहैत छी जे हमरा धारण करय?

फेर एक आरो गहिर विभाजन खुलैत: की प्रत्येक जीव भीतर उजासक बीज पहिने सँ उपस्थित, कि मुक्ति केवल दीर्घ साधनाक पाछाँ ककरो-ककरो लेल सम्भव?

यदि उजासक बीज सभमे अछि, तऽ सामान्य आ जाग्रत बीच दूरी अस्तित्वक नहि, आवरणक भऽ जाइत; धुँध हटिते ओही जगत नव रूपमे चमकैत, मानो कारागारक दीवार अकस्मात् आकाश।

तखन संसार आ मुक्ति दू पृथक देश नहि रहैत। एके वास्तविकता अज्ञानक आँखि सँ बन्धन, साफ दृष्टि सँ शान्ति; स्थान बदलल नहि, दृष्टिक बनावट बदलि गेल।

एहि विचारसँ सामाजिक करुणाक एक कठिन प्रश्न जन्मैत। यदि हरेक जीव भीतर सम्भावना अछि, तऽ ककरो “अयोग्य” कहब कतेक उचित? यदि भीतरक बीज समान, बाहरी प्रतिष्ठा अंतिम माप केना?

मुदा दर्शन एतय रुकैत नहि; ओ यथार्थक बनावट पर बहस खोलैत। एक खिड़की कहैत—दुनिया अनेक सूक्ष्म घटनाक वास्तविक प्रवाह, जे किछु प्रत्यक्षमे अछि, ओकर घटक सेहो वास्तविक।

एहि दृष्टिमे अस्तित्वक अर्थ कारणक प्रभावी शक्ति। जे किछु ककरो बदलि सकैत, जे सम्बन्धमे प्रवेश करैत, ओ वास्तविक; जे पूर्ण अपरिवर्तित, कारणहीन, प्रभावहीन—ओ नाम मात्र।

यथार्थ तखन स्थिर पाथर नहि, बिन्दु-बिन्दु क्षणक तेज प्रवाह।

एक क्षण अगिला केँ जन्म देत, ओकर कारण बनत, फेर स्वयं पार; निरन्तरता
शाश्वत पदार्थसँ नहि, कारणक अखण्ड श्रृंखलासँ।

एक अचरजपूर्ण दावा समय पर सेहो उठैत: अतीत, वर्तमान, भविष्यक सम्बन्ध एना
सोचल जाए जे आइ शून्य अतीतसँ नहि उगि रहल, न शून्य भविष्य दिस जा रहल।

मुदा दोसर खिड़की असहमत होइत। ओ कहैत—अतीत बीतल, भविष्य अखनो नहि;
क्षणक जीवन क्षणभरि; निरन्तरता कारणक ठोस हस्तान्तरण नहि, निर्भर
प्रतिस्थापनक क्रम।

एहि दोसर दृष्टिक मुख्य प्रश्न आँखि आ वस्तुक बीच उठैत। की हम बाहरक वस्तु
स्वयं देखैत छी, कि मनमे ओकर एक रूप, एक प्रतिनिधि छवि, जकर आधार पर बाहरी
जगतक अनुमान करैत छी?

मरीचिकामे जलक भ्रम सम्भव तखन होइत जखन जलक अनुभव पहिने कखनो रहल;
भ्रम अपने बाहरी जगतक स्मृति संग सम्बन्ध राखैत—एहन तर्क बाहरी
यथार्थ केँ फेर बचाबय चाहैत।

प्रत्यक्ष आ अनुमानक बीच बहस सूक्ष्म भऽ जाइत। यदि बाहरी वस्तु कखनो
प्रत्यक्ष नहि, प्रतिमा “नकल” ककरा सँ? आ यदि प्रतिमा मात्र अछि,
तऽ “बाहर” शब्दक अर्थ कतय सँ आयल?

तीसर खिड़की एही विवाद पर पर्दा घुमा दैत। ओ कहैत—जतय हम वस्तु कहैत छी,
ओ चेतनाक भीतरक रूप हो सकैत; अनुभव सँ बाहर वस्तुक स्वतन्त्र अस्तित्व
सिद्ध करब सम्भव नहि।

एक पाथर देखैत छी—मुदा जे देखल, ओ चेतनामे उपस्थित रूप। यदि वस्तु अणु अछि,
अत्यन्त सूक्ष्म होएत; यदि समष्टि, सभ भाग एकसाथ प्रत्यक्ष केना?
बाहरी ठोसता पर प्रश्न उठैत।

चेतना आ ओकर विषय एके क्षण उपस्थित; जतय अनुभव अछि, विषय चेतनासँ अलग कतय
पकड़ा पड़ैत? एहि तर्कमे जगत मानो मनक दर्पणमे उठैत तरंगसभक विशाल मेला।

मुदा मन स्वयं स्थिर आत्मा नहि बनैत। चेतना सेहो क्षण-क्षण बदलैत धारा,
स्मृति, इच्छा, छाप, कल्पनाक प्रवाह; एहि भीतर पुरान कर्मक बीज गुप्त भंडार
जकाँ सहेजल रहि सकैत।

अनगिनत स्मृतिमे किछु अकस्मात् ऊपर आबैत, तैना असंख्य गुप्त छाप उचित
परिस्थितिमे रूप, वस्तु, आकर्षण बनि उठैत; जगतक अनुभव आ मनक इतिहास
एक-दोसरसँ गहिर गाँठमे बँधल।

साधना एतय बाहरी जगत नष्ट करब नहि, ओहि मानसिक छापसभक प्रवाह बुझि तृष्णा आ
भ्रमक पुनरुत्पादन रोकब; मन साफ होइत-होइत चेतना अपने शान्त
पारदर्शिता दिस लौटैत।

मुदा चौथ खिड़की सभ खिड़की पर प्रश्न करैत। “यथार्थ एहन अछि”
कहैत हरेक वाक्य आखिर नाम आ अवधारणासँ बनल; की अवधारणाक जाल स्वयं
यथार्थ केँ सम्पूर्ण पकड़ि सकैत?

छोट शब्द “मेज” अपन अर्थ “गैर-मेज”क दुनिया सँ पबैत। “लम्बा”
बिनु “छोट” अधूर, “प्रकाश” बिनु “अन्हार”; मन विरोधी जोड़ीसभक सहारे अर्थ
रचैत, भाषा सम्बन्धक जालमे जीवित।

तखन कोनो एक अवधारणा अकेली स्वतन्त्र नहि। एक सिद्धान्त अपन मान्यता,
पद्धति, पूर्वधारणाक भीतर सत्य रचैत; ओकर सत्यक सीमा बहुधा
ओकर प्रारम्भिक चश्मा सँ तय होइत।

समस्या तखन जन्मैत जखन चश्मा अपने आकाश बनि जाइत। विचारक कहैत—“हमर ढाँचा
ही यथार्थक एकमात्र भाषा”; आ दोसर सभ दृष्टि भ्रम कहल जाइत,
बहस धीरे-धीरे युद्धक चाल सीखैत।

ज्ञानक प्यास विडम्बनापूर्ण ढंगसँ बन्धन बनि सकैत। अन्तिम सत्य पकड़बाक जिद
अपन विचार केँ मुठ्ठीमे कसैत, मुठ्ठी कठोर तऽ विपरीत मत शत्रु,
शत्रुसँ भय, भय सँ संघर्ष।

एहि चौथ दृष्टिक काम एक नव सिद्धान्तक सिंहासन बनाबय नहि। ओ प्रतिपक्षीक
वाक्य ओकरे नियम पर रखि देखैत, आ यदि भीतर विरोध फूटल, वाक्य
अपने वजनसँ झुकि पड़ैत।

मुदा एक मत टूटल तऽ ओकर उल्टा स्वतः सत्य नहि। दूरबज्जा होएबाक कल्पना
स्वयं भ्रम हो सकैत; एक बेठीक साबित भेल, तेसर, चारिम, अज्ञात दिशा
खुलल रहि सकैत।

ई बौद्धिक अनुशासन असहमतिक गम्भीर रूप अछि। प्रतिपक्षी केँ कमजोर चित्रमे
नहि, ओकरे पूर्ण बलमे समक्ष राखू; तखन ओकर भीतरक गाँठ देखाउ—अपन विजय लेल
नहि, पकड़ ढीली करबाक लेल।

कारणक प्रश्न एहि विधिक कसौटी बनैत। यदि प्रभाव कारणमे पूर्णतः पहिने सँ
अछि, तऽ नया जन्मल की? यदि कारण आ प्रभाव पूर्ण अलग, तऽ कोण
सम्बन्ध कहत—ई ओहि सँ उगल?

यदि दुनू एके, कारण शब्द अनावश्यक; यदि पूर्ण भिन्न, पत्थरसँ दूध,
बालूसँ तेल किएक नहि? सम्बन्ध जोडैत सेहो, अलग करैत सेहो; एक पक्ष केँ
पूर्ण करिते अवधारणा टूटए लगैत।

“अपने सँ उत्पन्न”, “दोसरेसँ”, “दुनूसँ”, “बिनु कारण”— चार दिशामे दरबज्जा
खोलल गेल, मुदा प्रत्येकमे विरोधक दीवार; तखन निष्कर्ष “किछु नहि”
नहि, अपितु “अवधारणाक निरपेक्ष दावा असफल।”

कारण आ प्रभाव व्यवहार में उपयोगी शब्द अछि। विज्ञान, खेती, औषधि,
दैनिक जीवन सभ एहि सम्बन्ध पर चलैत; मुदा “कारण” केँ स्वतन्त्र,
शाश्वत, अपनेमें पूर्ण वस्तु बनिते भ्रम शुरू।

एहि ढङ्ग पदार्थ आ गुण, एक आ अनेक, अस्तित्व आ अनस्तित्व, स्थिरता आ गति,
विषय आ ज्ञाता—सभ जोड़ी पर एके प्रश्न: की हम सम्बन्धक भाषा केँ स्वतन्त्र
वस्तु नक्शा समझि रहल छी?

खालीपन एतय विनाशक शून्य नहि। ओ कहैत—कोनो वस्तु अपन बल पर पूर्ण,
स्वतन्त्र, बिनु शर्तक सार नहि; जतय निर्भरता, ओतय अपनेमें बन्द स्वभाव खाली।

एक घर “खाली” अछि कहब आ “घर अस्तित्वहीन” कहब अलग। अर्थ ई जे ओकरा भीतर
स्वतन्त्र, अपरिवर्तित मालिक-सार नहि; दीवार, माटि, श्रम, नाम,
उपयोग, समय—सभ मिलि “घर”क अनुभव रचैत।

एहि अर्थमें खालीपन सम्बन्धक दोसर नाम बनि सकैत। जतय किछु निर्भर,
ओ स्वतन्त्र सारसँ खाली; आ जँ स्वतन्त्र सारसँ खाली, तखने परिवर्तन,
सम्बन्ध, करुणा सम्भव।

यदि वस्तु पूर्ण स्वभावमें बन्द होइत, ओ बदलित नहि। यदि मनुष्य “क्रोधी”
नामक अचल सार होइत, सुधार असम्भव; खालीपन तें निहिलता नहि,
परिवर्तनक दुआर खोलैत।

सभसँ सूक्ष्म खतरा—खालीपन केँ स्वयं अन्तिम वस्तु बना लेब। “सभ दृष्टि
सापेक्ष” वाक्य केँ यदि असापेक्ष देवता बना देल, फेर पुरान रोग
नव नामसँ लौटि आयल।

रस्ता स्वयं पार करबाक साधन, माथ पर ढोएबाक मूर्ति नहि। विचार नाव जकाँ
उपयोगी—नदी पार भेला पाछाँ नावक संग विवाह किएक? मुक्ति लेल सिद्धान्त,
सिद्धान्तक पूजा लेल मुक्ति नहि।

दू स्तरक सत्य एतय एक-दोसरक विरोधी नहि। दैनिक जगतमें नाम, तर्क,
विज्ञान, भाषा, कारण, व्यक्ति सभ आवश्यक; रोटी “रोटी” कहिते भेटैत,
दवा मात्रा सँ, पुल गणनासँ बनैत।

ई व्यवहारिक सत्य केँ तुच्छ कहब जीवनक अपमान। मुदा ओ अंतिम, निर्भरता-पार
यथार्थ नहि; ओ उपयोगी, शर्तबद्ध, साझा समझ; जतय धरि मानव व्यवहार,
ओतय ओकर सम्पूर्ण मूल्य अछि।

आरो गहिर बोध अवधारणा-पारक शान्ति दिस संकेत करैत। शब्द ओतय पहुँचि थाकि
जाइत, तर्क अपन सीमा देखैत; ई बुद्धिविरोधी अन्हार नहि, बुद्धि अपने सीमा
पहिचानलाक पाछाँक विनम्रता।

तर्क बिनु हम दैनिक सत्यो नहि बुझब। मुदा तर्क यदि कहय—“हम यथार्थक अन्तिम
मालिक,” तखन ओ उपयोगी औजारसँ साम्राज्य बनि जाइत।

एक हथौड़ी घर बनाबय लेल अद्भुत; मुदा हथौड़ी कहय जे संसारमे सभ किछु कील,
तखन औजारक सफलता ओकर भ्रमक कारण बनि सकैत।

एहिऐ कारण सामान्य विज्ञान, तर्क, दर्शनक उपयोग नकारल नहि जाइत।
ओ व्यवहारिक जगतमे सत्यक शक्तिशाली साधन; केवल एतबा स्मरण—ओकर मानचित्र
धरतीक सम्पूर्ण अस्तित्व नहि।

फेर संसार आ मुक्ति पर पुरान प्रश्न लौटैत। यदि बन्धन अज्ञानक दृष्टि सँ
उगैत, तऽ मुक्ति ककरो दोसर ब्रह्माण्डक पता नहि; ओही जगत, मुदा लोभ,
भय, अहंकार, अवधारणाक पकड़ सँ मुक्त अनुभूति।

ई परिवर्तन भूगोलक नहि, दृष्टिक। घर ओही, नदी ओही, देह ओही, लोग ओही;
मुदा “मोर”क काँटा, “अन्तिम”क हठ, “शत्रु”क ठोस दीवार हलुक पड़ैत।

एक समय जे संसार जेल छल, ओही करुणाक क्षेत्र बनि सकैत। बन्धन जगतमे नहि
मात्र, ओकरा देखबाक पकड़ल ढंगमे; पर्दा हटल तऽ दृश्य
नया नहि, दृष्टि नया।

एहि लेल करुणा आ प्रज्ञा अलग पंख नहि। केवल बुद्धि तऽ शुष्क मुक्तिक सपना;
केवल करुणा तऽ दिशा बिनु थकान; दुनू संग तऽ जगतमे रहि, जगतक आसक्ति
पार काज सम्भव।

एक आदर्श व्यक्ति कीचड़ छोड़ि पर्वत पर लुप्त नहि होइत। ओ नगर,
रोग, भुखमरी, भयक बीच फेर लौटैत, मुदा कर्म निजी लाभक बीजसँ नहि,
परपीड़ाक प्रत्युत्तरसँ उगैत।

मुक्ति यदि केवल अपन दुःख समाप्त करब अछि, तऽ “हम”क केन्द्र कदाचित् सूक्ष्म
रूपमे अखनो बचल; गहिर मुक्ति परक दुःख केँ अपन शान्तिक बाहर नहि मानैत।

एहि विचारक राजनीतिक आ सामाजिक प्रतिध्वनि सेहो अछि। व्यक्ति जाग्रत हो,
मुदा संस्था अन्यायी—करुणा काज माँगत; आन्तरिक शान्ति बाहरी पीड़ा प्रति
उदासीनता बनल तऽ ओ अधूरी।

संगहि, केवल बाहरी सुधार मनक तृष्णा स्वतः नहि हटबैत। नया व्यवस्था पुरान
अहंकारक हाथमे फेर हिंसा रचि सकैत; भीतरक जागरण आ बाहरी करुण
कर्म एक-दोसरक जरूरत।

चार खिड़कीसभ आपसमे सहमत नहि। एक बाहरक वस्तु सोझे देखैत, दोसर ओकर छवि;
तेसर मनक तरंग, चौथ हरेक दावाक अवधारणात्मक सीमा।

मुदा एहि असहमतिक बीच एक साझा अनुशासन चमकैत: ककरो स्थिर सार मत बनाउ,
कारणक जाल देखू; अपन दृष्टि केँ अन्तिम मत मानू, पकड़ घटाउ,
दुःखक दिशा देखू।

बहस स्वयं साधना बनि सकैत जँ लक्ष्य जीत नहि, आसक्ति कम करब।
विरोधी मत हमरा हमर चश्मा देखबैत; जे प्रश्न हमरा असुविधा दैत,
कदाचित् ओही हमर अदृश्य पूर्वधारणा खोलैत।

एक विद्यालय जतय सभ छात्र एकहि उत्तर रटैत, ओतय शान्ति हो सकैत,
मुदा विचारक हवा कम; असहमति यदि मर्यादा संग, तऽ सत्यक बगिया अधिक बहुरंगी।

मुदा बहुलता स्वयं मूल्य तखन, जखन ओ सत्यक खोज छोड़ैत नहि। “सभ मत समान”
कहि तर्क समाप्त करब आलस्य; खुलापनक अर्थ प्रश्नक स्तर
ऊँच करब, कसौटी मेटाबय नहि।

एक दावा प्रत्यक्ष सँ जाँचू, दोसर तर्कसँ, तेसर अनुभवसँ। फेरो स्मरण—कसौटी
स्वयं एक अवधारणात्मक ढाँचा राखि सकैत; ई आत्म-जागरूकता ज्ञान केँ कमजोर
नहि, अधिक ईमानदार बनबैत।

अन्तिम उत्तरक अभाव भयावह लगि सकैत। मन सिंहासन चाहैत, स्थिर दीवार,
एक नक्शा; मुदा कदाचित् परिपक्वता खुलल आकाशक नीचाँ चलबाक साहस अछि।

जतय निश्चितता कम, जिम्मेदारी कम नहि होइत। उलटे प्रत्येक निर्णय अधिक सजगः
हमर दृष्टि सीमित, तें परक स्वर सुनू; हमर कर्म प्रभावी, तें अहिंसा;
सभ निर्भर, तें करुणा।

एक दिन चार खिड़की एके आकाश दिस खुलल। पहिल कहलक—“देख, बादल बाहर अछि”;
दोसर—“हम ओकर छवि पाबैत छी”; तेसर—“बादल अनुभवक चेतन रूप”; चौथ
मुस्कुरायल—“‘बादल’ शब्दो एक जाल।”

आकाश ककरो वाक्य सँ छोट नहि भेल। चारू दृष्टि किछु देखलक, किछु छोड़लक;
विवादक पाछाँ विशालता चुपचाप रहि गेल।

कदाचित् ज्ञानक सर्वोच्च विनम्रता एतबे: वाक्य उपयोगी हो, मुदा आकाश नहि;
मानचित्र आवश्यक हो, मुदा धरतीक स्थान नहि ले।

कदाचित् मुक्तिक सर्वोच्च करुणा एतबे: अपने किनार पाबि नाव नहि तोड़ू;
फेर घुमाउ, जकरा पार करबाक अछि ओकरा लेल ठाम बनाउ।

कदाचित् शून्यताक सर्वोच्च अर्थ एतबे: मुट्ठी खोलू—अन्दर “किछु नहि”
मात्र नहि, हवा, सम्बन्ध, परिवर्तन, सम्भावना प्रवेश करबाक ठाम अछि।

आ कदाचित् चार खिड़कीक पाठ अन्तमे एके: उजास ककरो एक चौखट पर स्वामित्व नहि
लिखैत। जे खिड़की खुलल, ओतयसँ आकाशक अंश घरमे आबि सकैत।

मुट्ठीक भीतर जे घर नहि

आईना समक्ष हम प्रतिदिन एक नाम लऽ कऽ ठाढ़ होइत छी। चेहरा कनेक बदलल, आँखिक थकान दोसर, स्मृतिक रंग नव; तैयो सहज कहैत छी—ई हम छी, ओही जे काल्हि छलहुँ।

ई सहज वाक्य जीवन चलबैत, मुदा ओकर भीतर एक गहिर प्रश्न अछि: की “हम” समय पार एके रूपमे टिकैत, कि बदलैत घटनासभक क्रम अपन निरन्तरता केँ एक नाम दऽ कऽ स्वयंकेँ स्थिर मानि लैत अछि?

यदि किछु सदा एके रहैत, ओकर बदलल-नहि होएब मापब केना? माप लेल एक स्थिर मानक चाही; मुदा मानक स्वयं समयमे बदलैत, आ ओकरा जाँचब लेल फेर दोसर मानक—क्रम अनन्त दिस खुलैत।

एहि संसारमे पूर्ण स्थिर माप कतय? जे एक सन्दर्भमे स्थिर लगैत, दोसर सन्दर्भमे बदलैत देखाइत; तखन शाश्वत ठहराव कदाचित् वस्तुसँ अधिक हमर इच्छा हो सकैत।

जीवनक मूल अनुभूति परिवर्तन अछि—देह, मौसम, सम्बन्ध, विश्वास। जे छूबैत अछि, ओ सम्बन्धमे प्रवेश करैत; सम्बन्धमे प्रवेश तऽ परिवर्तन; अस्तित्व आ परिवर्तन अलग-अलग शब्द होइतो एके प्रवाहक दू छाया।

मनुष्य एहि प्रवाहक बीच डरल बच्चा जकाँ किछु स्थिर खोजैत। रोग, वृद्धावस्था, मृत्यु, बिछोह—सभ मिलि एक प्रश्न उठबैत: “यदि सभ गुजरि जाएत, हमर जीवनक भीतर की टिकत?”

एहि भयक उत्तरमे मन एक दीर्घकालिक आधार गढ़ैत। कखनो कोनो परम बाहरी सत्ता, कखनो आत्माक अचल बीज, कखनो राज्य, जाति, विज्ञान, प्रगति, प्रेम, मित्रता, काजक स्थिर प्रतीक।

हम कहैत छी—“हम ओतय सँ छी”, “हम एहि काजक मनुष्य”, “ई सम्बन्ध बिनु हम की?”, “ई विचार ही हमर परिचय”—आ धीरे-धीरे सम्बन्ध, वस्तु, पद, विचार पहचानक खम्भा बनि जाइत।

खम्भा हिलल तऽ घर भीतर सँ काँपैत। जकरा प्रेम कहि बचबैत छलहुँ, ओकर बिछोहमे कखनो केवल प्रिय मनुष्य नहि, अपने बनाओल परिचयक एक भाग सेहो टूटैत।

मित्र धोखा देलक तऽ आघात केवल विश्वासक नहि। हमर मन जकर छवि बना “अचल” मानने छल, ओ टूटल; छवि टूटिते प्रश्न लौटैत—“आब हम के?”

एहि संकटसँ बचबाक एक आसान रस्ता नव छवि गढ़ब। पुरान सम्बन्ध गेल तऽ नव, काज उबाऊ भेल तऽ नव काज, एक पहचान धुँधली तऽ दोसर; मुट्ठी केवल वस्तु बदलैत, पकड़ नहि।

कखनो हम कहैत—“हम एहि काज केँ प्रेम करैत छी।” धीरे-धीरे काज हमरा अपन कब्जामे लऽ लेत; आरामक दिनमे बेचैनी—जँ काम नहि, तऽ हमर अस्तित्वक प्रमाण की?

खेल, उपार्जन, प्रतिष्ठा, ज्ञान, सम्बन्ध—सभ सुन्दर हो सकैत। समस्या ओतय आरम्भ जखन ओ सभ जीवनक अंगसँ बढि हमर अस्तित्वक अचल प्रमाण बनबाक भार उठबैत।

तखन आनन्द बाध्यता बनैत; प्रेम सुरक्षा-किला; समर्पण परिचयक बीमा; सेवा अपन नैतिक छवि चमकाबयक उपाय। अहंकार केवल गर्व नहि, पहचान बनबैत क्रियासभक निरन्तर अभ्यास।

दान करैत हाथो भीतर कहि सकैत—“देख, हम दयालु छी।” सहायता करैत मन सूक्ष्म पुरस्कार माँगि सकैत; तखन परक दुःख बीचो “हम” अपन छोट मूर्ति बनबैत रहैत।

स्वतन्त्र करुणा कदाचित् ओतय जन्मैत जतय सहायता करैत समय “हम सहायता करैत छी”क शोर कम; जतय केवल पीड़ा देखाइत, आ हाथ स्वाभाविक रूपेँ बढ़ैत।

ई अवस्था दया सँ अधिक गहिर अछि। एतय कोनो केन्द्र लगातार अपन नैतिक लाभक हिसाब नहि रखैत; उजास अछि, मुदा “उजास देनिहार”क सिंहासन धीरे-धीरे खाली।

मुदा हम सिंहासन खाली होएब सँ डरैत छी। किएक तँ अहंकार केवल सत्ता नहि—सुरक्षाक घरेलू औजार; ओ कहैत—“तूँ कियो छें, कारण तोहर नाम, पद, सम्बन्ध, विश्वास अछि।”

जखन एहि सभमे एको टूटैत, अकेलापन भय बनि सकैत। अकेलापन केवल लोकक अनुपस्थिति नहि; कखनो ओ परिचय देनिहार सम्बन्धक अनुपस्थिति अछि।

बसमे भेटल अजनबी गेल तऽ जीवन नहि टूटैत, मुदा जकरा संग “हम”क अर्थ गाँठल, ओकर बिछोह अपने अस्तित्वक खाली कोना खोलि दैत।

तखन स्मृति, कल्पना, पुरान फोटो, पुरान संवाद एक वैकल्पिक घर बनि सकैत—हम अतीतमे रहि परिचय बचाबैत; मुदा समयक हवा अन्ततः फोटोपर सेहो धूलि बैठबैत।

सुरक्षाक एहि खोजमे विचित्र चक्र चलैत। स्थिरता चाहैत छी, तँ कल्पना रचैत; कल्पना सँ कनेक राहत; फेर वास्तविक परिवर्तन कल्पना तोड़ैत, आ डर पहिले सँ अधिक लौटैत।

हम विश्वास केँ किला बनाबैत, मुदा किलाक रखवालीक डर जन्मैत। हम आत्मा केँ अमर कहैत, फेर ओकर उद्धारक चिन्ता; हम जाति, झण्डा, विचार केँ स्थिर आधार बनाबैत, फेर ओकर शत्रु गढ़ैत।

जतय पहचानक आधार बाहरी प्रतीकमे, ओहि प्रतीक पर प्रश्न अपने अस्तित्व पर आक्रमण जकाँ लगैत; बहस तँ सहज युद्ध बनैत, आलोचना अपमान, असहमति विश्वासघात।

एहि मनोविज्ञानमे युद्ध केवल बाहरी राजनीति नहि। ओ भीतरक असुरक्षा विशाल झण्डा पहिरि सड़क पर आबैत; डरल अहंकार सामूहिक अहंकारमे हजार गुणा आवाज पबैत।

कोनो युगमे परम सत्ता, दोसरमे राज्य, प्रगति, विज्ञान, कखनो प्रेमो, मित्रतो, पेशा—वस्तु बदलैत, मुदा पैटर्न एक: किछु एहन खोजू जकरा संग गाँठि कहि सकी—“एहि कारण हम छी।”

दर्शनक कठोर प्रश्न एहि गाँठ पर छै: यदि सभ सम्बन्ध बदलैत, तऽ ककरा सदा स्थिर मानब? यदि हम स्वयं सम्बन्धक बदलैत जाल छी, तऽ स्थायी केन्द्र कतय?

ई प्रश्न जीवन नकारैत नहि। ओ कहैत—सम्बन्ध राखू, मुदा ओकरा शाश्वत बीमा नहि बनाउ; प्रेम करू, मुदा प्रियक शरीर, विचार, उपस्थिति बदलत—ई सत्य संग राखू।

मित्रता सहेजू, मुदा मित्र केँ अपन छवि मे कैद नहि करू। काज करू, मुदा काजक सफलता केँ अस्तित्वक प्रमाण नहि; ज्ञान खोजू, मुदा विद्वत्ता केँ “हम”क स्थायी मुकुट नहि।

जखन हमर छवि वस्तुसँ अधिक कठोर, हम वस्तु बदललाक पाछाँ सेहो पुरान छवि पकड़े रहैत; एहि ए विसंगति दुःखक एक सूक्ष्म स्रोत बनैत।

हम व्यक्ति केँ ओहन नहि देखैत जेहन ओ एखन अछि, अपितु जेहन हमर मन ओकर स्थिर चित्र बना चुकल; फेर वास्तविक मनुष्य बदलैत अछि, चित्र टूटैत, हम कहैत—“ओ बदलि गेल।”

कदाचित् ओ बदलल—आ हमो। समस्या परिवर्तन नहि, परिवर्तनक विरुद्ध हमर मौन अनुबन्ध: “तूँ हमर परिचय बचाबय लेल ओही रहब।”

एहि अनुबन्ध पर कोनो हस्ताक्षर नहि, तैयो सम्बन्धसभक भीतर गुप्त रूपेँ लिखल रहैत; बिछोह, विश्वासघात, उबाऊपन ओहि छिपल वाक्य केँ उजागर करैत।

उबाऊपन सेहो पहचान संकट हो सकैत। जे वस्तु काल्हि अहंकार केँ ऊर्जा दैत छल, आइ उत्तर नहि दैत; मन फेर कहैत—“आरो किछु, नव किछु, तेज किछु।”

अति-कर्म, अति-खेल, अति-विश्वास, अति-खोज कखनो जीवित उत्साह नहि, आत्म-खालीपन ढँकबाक आवाज; मन शोर करैत ताकि भीतरक प्रश्न सुनाइ नहि पड़य।

“जँ एहि सभ बिनु छी, तऽ हम के?” ई प्रश्नसँ भागब कठिन; मुदा कदाचित् मुक्ति एहि प्रश्नक तत्काल उत्तर नहि, उत्तरक भूख केँ साफ देखब सँ आरम्भ होइत।

कखनो ठीक उत्तर “कोनो स्थिर वस्तु नहि” हो सकैत। ई वाक्य सुनिते भय उठैत—“तखन हम समाप्त?” मुदा बदलैत प्रवाहक अस्तित्व समाप्ति नहि; ओ जीवनक वास्तविक रूप।

नदी स्थिर जलक टंकी नहि, तैयो नदी अछि। ज्योति स्थिर लौ नहि, तैयो राति भरि उजास; संगीत एक अचल स्वर नहि, तैयो रागक पहचान रहैत।

व्यक्ति सेहो कदाचित् एहन निरन्तरता: शरीर, स्मृति, भावना, सम्बन्ध, कर्मक बदलैत क्रम, बिनु एक शाश्वत मालिकक, तैयो पूर्णतः असम्बद्ध नहि।

यदि एना, तऽ अहंकारक रक्षा जीवनक अनिवार्य कर्तव्य नहि। “हम”क किला पत्थरक नहि, सम्बन्धक; दीवार ढीली तऽ हवा भीतर, आ हवा संग परक पीड़ाक आवाज।

यतय स्थायी अहंकारक भ्रम कम, ओतय “अपन” आ “पर” बीचक सीमा सेहो कम कठोर; करुणा आदेशसँ नहि, अस्तित्वक समझसँ उगि सकैत।

तखन नैतिकता बाहरी दण्डक भय पर निर्भर नहि। हम अहिंसक केवल एहि कारण नहि जे कोनो देखैत, अपितु किएक तँ कठोर अलगावक कल्पना स्वयं असत्य लगैत।

यदि हमर जीवन अन्य जीवनसँ सम्बन्धित प्रक्रियाक अंश, दोसरक पीड़ा पूर्णतः बाहरी घटना नहि; एहि समझमे करुणा अपन आधार पबैत।

मुदा केवल किताब पढ़ि “अहंकार नहि” कहब पर्याप्त नहि। वाक्य स्वयं नया अहंकार बनि सकैत—“हम तऽ अहंकाररहित छी”; ज्ञानक शब्द अभ्यासक स्थान लेत तऽ पुरान रोग नव पोशाक।

अस्तित्वगत बोध दीर्घ निरीक्षण माँगैत। हरेक क्षण देखू—अपमान पर भीतर कुन किला काँपल? प्रशंसा पर कुन मूर्ति ऊँच भेल? हानि पर कुन स्थिरताक दावा टूटल?

ध्यान एतय चमत्कार नहि, मनक गोदाम खोलबाक श्रम। स्मृति, भय, इच्छा, परिचयक पुनरावृत्त कथासभ एक-एक कऽ समक्ष आबैत, आ हम देखैत—ई सभ घटना, मालिक नहि।

“मोर क्रोध” कहैत छी; कनेक देर पाछाँ क्रोध नहि। “मोर दुःख”; ओहो रूप बदलैत। यदि घटना मालिक होइत, मालिक हरेक क्षण बदलि कऽ कतय बचैत?

बोध धीरे-धीरे शब्दसँ अनुभव बनैत। पहिले हम सुनैत—“किछु स्थायी नहि”; फेर हानि, बुढ़ापा, उबाऊपन, प्रेम, मृत्यु, ध्यानक बीच ई वाक्य देहमे उतरैत।

तखन छोड़नाइ असफलता नहि। छोड़नाइ मानि लेब जे वस्तु अपन प्रकृतिक अनुसार चलत; मुट्ठी खोलब, वस्तु नष्ट करब नहि—ओकरा स्वतन्त्र होएबाक ठाम देब।

प्रेम एहि खुलल हाथमे कदाचित् अधिक सच्चा। तूँ हमर परिचयक खम्भा नहि; तूँ बदलैत जीव, जकर संग समयक एक अंश साझा करैत छी—कृतज्ञ, सजग, बिनु स्वामित्व।

काज एहि खुलल हाथमे अधिक मुक्त। सफलता आयल तऽ स्वागत; विफलता आयल तऽ सीख; दुनू हमर अस्तित्वक अन्तिम फैसला नहि।

राज्य, भाषा, परम्परा, विज्ञान—सभ मूल्यवान हो सकैत, मुदा ककरो एहन परम मानक नहि बनाउ जकरा बचाबय लेल जीवित मनुष्यक करुणा भूलि जाई।

जतय अमूर्त प्रतीक पर प्रेम मानव पीड़ा सँ पैघ, ओतय पहचान मनुष्य केँ अपने मनुष्यतासँ अलग करैत; एहि पर मनोविज्ञान नैतिकता सँ मिलैत।

एक व्यक्ति जँ पीड़ित केँ देखिकऽ आँसू रोके, किएक तँ ओकर समूह, विश्वास वा ध्वज एहि करुणा केँ कमजोरी कहैत— तखन बाहरी वफादारी भीतरक मानवता केँ कैद करि चुकल।

एहि कारण “हम ककरा मानैत छी?” सँ पहिने प्रश्न हो सकैत: “हम मान्यता हमरा कइसन बना रहल?” अधिक करुण, कि अधिक भयभीत? अधिक खुलल, कि अधिक विभाजित?

साँच नैतिकता सिद्धान्तक परीक्षा बनि सकैत। जे दर्शन आत्मा बचाबय कहैत मुदा स्वार्थ बढ़बैत, जे धर्म प्रेम कहैत मुदा घृणा जन्मबैत— ओकर भीतरक गाँठ फेर जाँचू।

ज्ञान, स्वतन्त्रता, करुणा, आचरण अलग-अलग कमरा नहि। यदि यथार्थक बोध जीवन नहि बदलय, किछु अधूर; यदि नैतिकता असत्य अस्तित्व-दृष्टि पर टिकैत, भीतर संघर्ष बनि सकैत।

एक दिस “स्थायी मैं” बचाउ, दोसर दिस “निःस्वार्थ बनू”— दू आदेश मन केँ उलटा दिशा खींचि सकैत; जतय केन्द्रक कठोरता कम, निःस्वार्थता आदेश नहि, सहजता बनि सकैत।

मुक्ति तखन कोनो विशेष वस्तु प्राप्त करब नहि। उलटे, निरन्तर किछु पकड़बाक बाध्यता घटब; किला बचाबयक रात-दिन पहरा कम, भीतर विश्राम अधिक।

ई विश्राम आलस्य नहि। जकरा अपने केँ प्रमाणित करबाक आवश्यकता कम, ओ अधिक सहज रूपेँ काज करि सकैत—कर्म बिनु आत्म-मूर्ति निर्माणक।

घोषणाक आवश्यकता कम; कर्म अपन ताप स्वयं देत। “हम दयालु”क तख्ती कम, करुणा अधिक; “हम ज्ञानी”क मुकुट कम, स्पष्टता अधिक।

स्वतःस्फूर्त नैतिकता कदाचित् एहि दिशामे अछि। दोसरक दुःख पर प्रतिक्रिया पहिले नैतिक गणना नहि, एक सोझ खुलापन—जैना हाथ आगिक निकट गेल तऽ स्वतः हटैत।

मुदा एहन खुलापन अभ्यास बिनु दुर्लभ। अहंकारक आदत शताब्दीक सभ्यता, परिवार, भय, भाषा सँ पोसल; एक बुद्धि-वाक्य एक दिनमे ओकर जड़ि नहि उखाड़त।

तेँ पुनरावृत्ति—निरीक्षण, स्मरण, ध्यान, आत्म-परीक्षण। जतय मन नवा स्थायी खम्भा खोजैत, पहचानू: “एहि बिनु हम नष्ट” वाक्य उठल, ओकर चेहरा देखू।

कखनो वास्तवमे वस्तु आवश्यक—रोटी, घर, स्नेह, सुरक्षा। अनासक्ति जीवनक आवश्यकता नकारब नहि; ओ आवश्यकता केँ शाश्वत आत्म-परिचयक वस्तु बनाबयसँ बचब।

भूखल शरीर केँ भोजन चाही; ई अहंकार नहि। बीमार देह केँ औषधि; प्रियक मृत्यु पर शोक; ई मानवता। समस्या शोक नहि, शोकक भीतर “हमर स्थिर संसार टूटल”क अतिरिक्त जकड़न।

अनासक्ति आँसू सुखाबयक आदेश नहि। ओ आँसू केँ सत्य संग बहए देत, बिनु एहि भ्रमक जे जीवनक नियम हमर निजी इच्छा मानबाक बाध्य छल।

एहि दृष्टिमे शोक सेहो शिक्षक। ओ देखबैत जकरा “सदा” कहने छलहुँ, ओ समयक जीव; प्रेमक मूल्य एहि कारण कम नहि—कदाचित् अधिक, किएक तेँ क्षण सीमित।

मुक्त मन संसारसँ भागैत नहि; संसारक प्रक्रिया मे अपन स्थान पहचानैत। “हम बाहर सँ फेंकल गेलहुँ”क अलगाव कम; हम एहि जगतक बदलैत कारण-सम्बन्धक अंश छी।

जतय मन अपने केँ संसारक विदेशी मानैत, ओ स्थायी घर बाहर खोजैत; फेर घरक देवता बनबैत; जतय अपने केँ प्रवाहक अंश देखैत, अलगावक कथा कमजोर।

पृथ्वी आ मनुष्य बीच सीमा सेहो हलुक हो सकैत। देह माटि, जल, वायु, भोजन, समयक सम्बन्ध; “हम” प्रकृतिसँ बाहरक मालिक नहि—एहि बोधमे पर्यावरण नैतिकता स्वयं उगि सकैत।

जतय स्वार्थक दीवार झरल, मनुष्य-मनुष्य आ मनुष्य-प्रकृति बीच नव सम्बन्ध सम्भव; करुणा केवल भावुकता नहि, अस्तित्वक गहिर परस्परता अनुभव करबाक नैतिक परिणाम।

ई कविता अन्तिम उत्तर नहि दैत। ओ केवल एक घरक दीवार पर प्रश्न लिखैत: “जकरा बचबैत जीवन बीतल, ओ स्थिर घर वास्तवमे छल कि नहि?”

यदि उत्तर “नहि” हो, भय स्वाभाविक। मुदा कदाचित् ओहि भयक पाछाँ एक खुलल मैदान अछि जतय किछु बचाबय लेल लगातार पहरा नहि, केवल सजग जीवन।

ओतय पहचान व्यवहारक नाम, जेलक नम्बर नहि। ओतय सम्बन्ध प्रेमक अवसर, अस्तित्वक बीमा नहि; ओतय काज सेवा, आत्म-प्रतिमा नहि; विचार खिड़की, आकाश नहि।

ओतय नैतिकता आदेशक डर सँ कम, करुणाक स्वभाव सँ अधिक। ओतय स्वतन्त्रता किछु पकड़बाक क्षमता नहि, पकड़ बिनु रहि सकबाक साहस।

एक दिन हवा तेज चलैत, पुरान घरक कागजी दीवार हिलैत। हम पहिल बेर मुट्ठी नहि कसैत; दुआर खोलैत छी। बाहर किछु शाश्वत नहि—मुदा हवा अछि, आकाश अछि, जीवन चलि रहल अछि।

तखन बुझाइत—घर कदाचित् दीवारमे नहि छल। घर एहि खुलापनमे छल जतय सम्बन्ध आबि सकैत, जा सकैत, आ करुणा बिनु मालिकक नाम लिखने उजास देत रहैत अछि।

दर्पणक पार जे देखैत अछि

भोरमे खिड़की खोलिते दू संसार एक-दोसरक समक्ष ठाढ़ होइत अछि: एक बाहर—माटि, धूप, पात, देह, ध्वनि, गन्ध, चलनाइ; एक भीतर—जे एहि सभ केँ देखैत, मुदा स्वयं देखल वस्तु जकाँ नहि दिखैत।

आँखि फूल देखैत अछि, कान पंछीक स्वर; मन नाम देत, बुद्धि निर्णय। मुदा जे “देखल जा रहल” आ जे “देखैत”—दुनू एकहि वस्तु होएत तऽ अनुभवक ई दू ध्रुव प्रतिदिन एते स्पष्ट किएक लागैत?

दुनिया केवल बाहरी वस्तुसभक ढेर नहि; भीतरक अनुभवो ओकर हिस्सा। तैयो चेतना केँ पाथरक गुण, देहक आकार, मनक तरंग जकाँ सहज वस्तु बना देब सँ किछु मूलभूत छूटि जाइत अछि।

जे देखैत, ओकरा वस्तु बनायब कठिन। आँखि सभ वस्तु देखैत, मुदा अपन देखनाइ केँ ओही ढंगसँ नहि; चेतना मानो दीयाक उजास—वस्तु प्रकाशित, उजास स्वयं अलग अनुभूति।

बाहरक विश्व एक आदिम, सूक्ष्म, अव्यक्त गर्भ जकाँ सोचल जा सकैत: जतय अखन नाम नहि, रूप नहि, रंग अलग-अलग नहि, मुदा अनगिनत रूपक सम्भावना तीन परस्पर तनावमे निद्रित।

एक धारा हलुक—उजास, स्पष्टता, सन्तुलन, सूक्ष्म प्रसन्नता। दोसर बेचैन—गति, परिश्रम, संघर्ष, इच्छा, पीड़ा, उत्कंठा। तेसर भारी—जड़ता, प्रतिरोध, नींद, अज्ञान, सुस्ती, अस्पष्टता।

ई तीनू एक-दोसरक शत्रु होइतो साथी। केवल उजास रहित तऽ गति कतय, केवल गति तऽ आकार कतय, केवल भारीपन तऽ उन्नयन नहि; संसार विरोधक सहअस्तित्व सँ बनैत।

समता भंगल तऽ रूप उगैत। कतहु स्पष्टता अधिक, कतहु बेचैनी, कतहु भारीपन; एक विशाल संगीतमे स्वरसभक अनुपात बदलिते विश्व विविध होइत।

बीजमे वृक्षक सम्भावना पहिने सँ निद्रित अछि। दूधमे दहीक संभावना; सूतमे कपड़ा; माटिमे घड़ा; किछु पूर्ण शून्यसँ अकस्मात् नहि झरैत—प्रभाव कारणक भीतर बीज रूपेँ रहैत।

परिवर्तन तखन जादू नहि, प्रकट होएबाक प्रक्रिया। जे रूप पाछाँ देखाइत, ओकर शर्त पहिले सँ कारणक देहमे; सृष्टि शून्यसँ नवा वस्तु बनब नहि, सुप्त संभावना केँ आकार देब।

प्रकृतिक गर्भसँ पहिने उगैत विवेकक विशाल दर्पण—जे भेद करैत, तौलैत, निर्णय लेत, “ई” आ “ओ” अलग करैत; फेर ओहि दर्पणक भीतर एक छोट स्वर उठैत—“हम”, “मोर”, “हमर।”

“हम”क एहि प्रथम आकृतिसँ मन, इन्द्रिय, कर्मक मार्ग खुलैत। देखबाक दुआर, सुनबाक, स्पर्श, स्वाद, गन्ध; हाथ, पयर, वाणी; आ फेर सूक्ष्म गुणसभ घनीभूत भऽ आकाश, वायु, अग्नि, जल, धरतीक रूप लैत।

ई क्रम कविता जकाँ अछि—अदृश्यसँ दृश्य, सूक्ष्मसँ स्थूल। ध्वनिक सम्भावना सँ विस्तार, स्पर्श सँ चलनाइ, रंग सँ तेज, रस सँ तरलता, गन्ध सँ घन धरती; जगत एक दीर्घ रूपान्तर।

मुदा मन, अहंकार, बुद्धि—ई सभ चेतना नहि। ओहो प्रकृतिक सूक्ष्म उपकरण, अत्यन्त पारदर्शी हो सकैत, मुदा अँधार कोठरीक दर्पण जकाँ, उजास बिनु किछु प्रकाशित नहि करैत।

दर्पण समक्ष फूल अछि, पर कोठरी अँधार तऽ छवि कतय? दीप जरल तऽ दर्पण वस्तु देखाबय लगैत; तैना भीतरक सूक्ष्म बुद्धि चेतनाक प्रकाश पर निर्भर भऽ ज्ञान रचैत।

ज्ञान एक विचित्र मिलनः वस्तु अपन रूप सँ समक्ष, इन्द्रिय स्पर्श करैत, मन जोड़ैत, बुद्धि रूप ग्रहण करैत, आ शुद्ध प्रकाश ओहि रूप केँ प्रकाशित।

एहि कथामे चेतना काज नहि करैत, आदेश नहि दैत, ओ केवल उपस्थिति—मौन साक्षी, निष्क्रिय उजास; तैयो ओकर बिनु समूचा मानसिक यंत्र अँधारक वस्तु मात्र।

एहि ए पर सभसँ गहिर उलझन जन्मैतः यदि एक पूर्ण निष्क्रिय, दोसर पूर्ण अचेतन, दुनू एते अलग तऽ एक-दोसरक संग अनुभवक नाटक आरम्भ केना?

कखनो दृष्टान्त देल जा सकैत—एक चलि नहि सकैत, दोसर देख नहि सकैत, दुनू संग आयल तऽ वन पार; मुदा दृष्टान्त प्रश्नक स्थान नहि लेत। अत्यन्त अलग सत्तासभक सम्बन्धक गाँठ अखनो खुलल रहि सकैत।

साँच दर्शन अपन कठिन प्रश्न केँ पर्दा नहि दैत। ओ स्वीकारैत—कतहु सिद्धान्तक सौन्दर्यक बीच दरार अछि; आ दरार देखनाइ सिद्धान्तक अपमान नहि, बौद्धिक ईमानदारी।

चेतना अनेक अछि कि एक—एहि पर सेहो बहस। प्रत्येक देहक अनुभव अलग, जन्म-मृत्यु अलग, नैतिक स्वभाव अलग; एहि भिन्नतासँ अनेक साक्षी मानल जा सकैत, मुदा प्रश्न सम्पूर्ण समाप्त नहि।

जँ साक्षी शरीरसँ परे, सर्वव्यापक, निष्क्रिय, तऽ “एहि देहक” साक्षी आ “ओहि देहक” साक्षी बीच सीमा कतय? अनेक सर्वव्यापक आ पूर्णतः अलग—ई वाक्य स्वयं कठिन पहेली।

तैयो अनुभवक एक सरल सत्य रहैतः हम वस्तु मात्र नहि लगैत; अनुभवमे सदिखन एक “देखनिहार”क ध्रुव; आ बाहरी दुनिया सेहो केवल मनक स्वप्न नहि—ओ प्रतिरोध करैत, उत्तर दैत।

एहि लेल एकतरफा भौतिकवाद आ एकतरफा आदर्शवाद दुनू अधूर लागि सकैत। केवल पदार्थ कहू तऽ अनुभूतिक प्रकाश कतय; केवल चेतना कहू तऽ पाथरक कठोरता, भूखक पीड़ा, देहक नियम केँ स्वप्न कहि मेटाओल नहि जा सकैत।

दू ध्रुवक सम्मान एतय मूलः देखनिहार आ देखल, साक्षी आ दृश्य, चेतना आ प्रकृति; एक-दोसरमे घुलि नहि जाइत, तैयो अनुभवक क्षेत्रमे संग उपस्थित।

ज्ञानक तीन रस्ता खुलैत—प्रत्यक्ष, अनुमान, विश्वसनीय कथन। आँखि जे देत, ओकर सीमा; धुआँ सँ आगिक अन्दाज, ओकर नियम; आ जतय न प्रत्यक्ष न अनुमान पर्याप्त, ओतय अनुभवी वाणी—मुदा विवेकक कसौटी संग।

साक्ष्य केवल एहि कारण सत्य नहि जे कियो प्रतिष्ठित कहलक। वाणी तखन विश्वसनीय जखन तर्क, अनुभव, जीवनक परीक्षा सहि सकय; अधिकार सत्यक कारण नहि, सत्य अधिकारक आधार होएबाक चाही।

प्रत्यक्षो दू तहक। पहिने केवल उपस्थितिक कच्चा स्पर्श—नामहीन रंग, आकार, ध्वनि; फेर मन ओकरा वर्गीकृत करैत—“ई फूल”, “ई लाल”, “ई परिचित।”

बालक पहिल बेर संसार देखैत तऽ कदाचित् ध्वनि-रंगक अव्यवस्थित लहर। भाषा आबि वस्तुसभक सीमा खींचैत, नाम देत, पहचान बनबैत; ई नाम उपयोगी, मुदा नामहि केँ वस्तुक अन्तिम सत्य मानब उचित नहि।

एकहि फूल कलाकार, वैद्य, किसान, व्यापारी, बालक—सभ अलग देखत। दृष्टिकोण बदलल तऽ वस्तु नहि झूठ भेल; यथार्थ अनेक पक्ष रखैत, ध्यान जे पक्ष चुनैत ओहि अनुसार अनुभव बनैत।

ज्ञान तें केवल बाहरक नकल नहि, भीतरक चयन सेहो। हम जे देखैत छी, ओतय वस्तुक गुण आ दर्शकक स्थिति दुनू काम करैत; एहि सँ सत्य निजी कल्पना नहि बनैत, मुदा दृष्टिक विनम्रता जरूरी।

बहुत दृष्टि आपसमे टकरैत, मुदा टकरावो एक साझा धरती माँगैत। पूर्ण असम्बद्ध अनुभवमे असहमति सम्भव नहि; मतभेदक नीचाँ किछु सामान्य जगत रहैत, जकरा अलग कोण सँ देखल जाइत।

फेर प्रश्न परम कर्ताक उठैत। यदि जगत चलबाक लेल एक शाश्वत, अपरिवर्तित निर्देशक आवश्यक, तऽ निर्देशन स्वयं क्रिया—क्रिया बिनु परिवर्तनक अर्थ केना?

जतय कारण, ओतय सम्बन्ध; जतय सम्बन्ध, किछु न किछु प्रभाव। पूर्ण अचल सत्ता यदि कारण बनय तऽ अचलता टूटत; आ यदि किछु प्रभाव नहि, “कारण” शब्द केवल सम्मानसूचक नाम।

दुनियामे दुःखक विशाल उपस्थिति दोसर प्रश्न उठबैत। पूर्ण करुण, पूर्ण समर्थ निर्देशकक योजना मानू तऽ रोग, हिंसा, विपत्ति, निर्दोष पीड़ा—एहि सभक संग मेल आसान नहि।

आ यदि पूर्ण सत्ता पूर्ण अछि, ओकरा किछु चाही किएक? सृजनक इच्छा अपूर्णताक संकेत नहि? एहि प्रश्नसभक उद्देश्य कोनो श्रद्धाक अपमान नहि, तर्कक सीमा देखब।

जगत केँ प्रकृतिक भीतरक शक्तिसभसँ समझल जा सकैत—एहन साहस एतय अछि। रूप, गति, सन्तुलनभंग, कारण-प्रभावक दीर्घ श्रृंखला; अदृश्य निर्देशकक स्थान पर प्रकृति स्वयं गतिशील आधार।

मुदा प्रकृति चेतन नहि—एहिए कारण साक्षी अलग मानल गेल। बाहरी जगत अपने नियम सँ रूप बदलेत, भीतरक उजास ओकरा देखैत, मुदा स्वयं क्रियाक भाग नहि।

बंधन एहि दू केँ वास्तविक रूपेँ बाँधल रहब नहि, बेठीक पहचान—साक्षी अपने केँ मन, देह, अहंकारक गति मानि लैत; “हम दुखी”, “हम सफल”, “हम अपमानित”, “हमर देह”—गाँठ एतयसँ कसैत।

दुःख शरीरमे अछि, वेदना मनमे, विचार बुद्धिमे; मुदा शुद्ध साक्षी यदि एहि सभसँ भिन्न, तऽ बन्धन वस्तुक जंजीर नहि, पहचानक भ्रम।

एक अभिनेता भूमिका एते गहिर निभेलक जे मंच छोड़ि नाम भूलि गेल। राजाक दुःख अपन, भिखारीक भय अपन, युद्धक घाव अपन; मुक्ति भूमिका नष्ट करब नहि, स्मरण—“हम भूमिका नहि।”

ई स्मरण केवल बौद्धिक वाक्य हो तऽ उपयोग कम। इन्द्रिय उग्र, इच्छा लगातार, अहंकार हरेक घटना केँ अपन कहानी बनबैत; तें विवेकक उजास लेल मनक सन्तुलन, चरित्रक अनुशासन आवश्यक।

इन्द्रिय शान्त हो, चाहना पर अधिकार, बुद्धि पारदर्शी; तखन भीतरक दर्पण कम काँपैत, भेद अधिक साफ; साक्षी आ दृश्यक अन्तर अनुभूति बनि सकैत, केवल पाठ नहि।

मुक्ति भविष्यक स्थान नहि—न स्वर्गक भूगोल, न मृत्युक पाछाँक टिकट। यदि साक्षी स्वभावतः स्वतन्त्र, तऽ स्वतन्त्रता एखनहि सत्य; अज्ञान हटिते जे पहिने सँ छल ओ पहिचानल जाइत।

एहि अर्थमे मुक्ति प्राप्त वस्तु नहि, भूलक समाप्ति। जैना रस्सी केँ साँप मानि भय भेल; उजास आयल तऽ नव रस्सी बनल नहि—भ्रम हटि जे छल से स्पष्ट भेल।

जीवित देहक बीचो स्वतन्त्रता सम्भव। शरीर भूखल, रोगी, थाकल हो सकैत; मनमे लहर उठि सकैत, मुदा साक्षी अपन पहचान ओहि लहरमे पूर्णतः गँवाबय नहि।

एहि ए सजीव मुक्ति—कर्म चलैत, शरीर चलैत, संसार समक्ष; मुदा भीतर पकड़ कम, सुख-दुःखक आवागमन पर स्वामित्वक दावा कम; अनुभव होइत, पर “ई हम ही छी”क अज्ञान घटैत।

अन्तिम अलगावक कल्पना अधिक कठोर: जतय प्रकृतिक सूक्ष्मो आवरण समाप्त, साक्षी पूर्ण स्वतन्त्र; न जन्मक चक्र, न मनक उपकरण, न अनुभवक बन्धन।

मुदा एहिपर एक व्यवहारिक प्रश्न तुरन्त उठैत— भ्रमक पर्दा काटबाक विधि की? सिद्धान्त मार्ग देखबैत, मुदा चलबाक अनुशासन अलग अभ्यास माँगैत।

एहि मोड़ पर कविता अपन अगिला दुआर पर पहुँचैत: ज्ञान नक्शा अछि, अभ्यास पथ; भेद देखल गेल, आब ओकरा जीवनमे स्थिर करबाक साधना शेष।

फेरो, एहि समूचा विचारक बीच सभसँ सुन्दर छवि दर्पणक अछि। दर्पण स्वतः फूल नहि, फूलक गन्ध नहि, रंग नहि; मुदा उजास भेटिने फूलक रूप स्पष्ट करैत।

बुद्धि दर्पण, चेतना उजास, जगत समक्ष रखल फूल। जतय दर्पण मलिन—रंग बिगड़ल; जखन स्थिर—छवि साफ; मुदा उजास फूलो नहि, दर्पणो नहि—ओ केवल प्रकाश।

हम जीवन भर दर्पणक छवि सँ अपने केँ चिन्तैत रहैत छी। “हम बुद्धिमान”, “हम मूर्ख”, “हम सुन्दर”, “हम असफल”— ई सभ दर्पण पर गुजरैत रूप, उजासक स्थायी गुण नहि।

यदि एक क्षण ई भेद देहमे उतरि जाए, अपमान दर्पण पर खरोच रहत, आकाश पर नहि; सफलता छवि केँ चमकायत, उजास केँ न बढ़ायत।

तखन अहंकारक अर्थ बदलि सकैत। “मोर” उपयोगी व्याकरण रहत, अस्तित्वक अन्तिम घोषणा नहि; कर्म करब, योजना बनायब, प्रेम करब—मुदा भूमिका केँ साक्षी न मानब।

ई भेद पलायन नहि, किएक तँ प्रकृति अपन नियम सँ चलैत रहत। शरीरक रोगक इलाज चाही, समाजक अन्याय पर कर्म; “हम साक्षी छी” कहि पीड़ा सँ मुँह फेरब विवेक नहि, नव अज्ञान।

साँच भेद जिम्मेदारी केँ नकारैत नहि। उलटे मनक भ्रम कम भेला पर कर्म अधिक साफ हो सकैत; प्रतिष्ठाक शोर कम, परिस्थिति जे माँगैत ओकर उत्तर अधिक सोझ।

तीन धारा फेर भीतर उठैत—उजास, गति, भारीपन। कखनो मन स्पष्ट, कखनो बेचैन, कखनो सुस्त; ओ सभ प्रकृतिक लहर—देखू, पहचानू, मुदा अन्तिम आत्मा नहि बनाउ।

आइ सुस्ती अछि—“हम आलसी छी”क पत्थर नहि। आइ बेचैनी—“हम सदिखन एहन” नहि। आइ शान्ति—ओहो गुजरत; साक्षी लहरक नामसँ पार।

एहि दृष्टि मनोवैज्ञानिक स्वतन्त्रताक एक रूप दे सकैत। गुण, भावना, आदत, विचार बदलै योग्य; जे बदलैत, ओकरा “हमर अपरिवर्तनीय स्वभाव” कहि जेल नहि बनाउ।

संगहि एक सावधानी: यदि साक्षी केँ पूर्णतः निष्क्रिय कहि जीवनक नैतिक जटिलता सँ काटि देल, तऽ “कर्म कुन करैत?”क प्रश्न फेर कठोर रूपेँ उठत।

दर्शनक महानता केवल उत्तरमे नहि, ओहि प्रश्नमे सेहो जे अपन घरक नींव पर रखल जाइत; जे प्रणाली अपन कठिनाई देखबैत, ओ अधिक जीवित।

एहि घरमे प्रकृति अत्यन्त समृद्ध—एक आदिम ऊर्जा, तीन धारा, बुद्धि, अहंकार, मन, इन्द्रिय, सूक्ष्म तत्त्व, स्थूल जगत; आ दोसर ओर शान्त, अचल, अनेक साक्षीसव।

दुनू बीच सम्पूर्ण ब्रह्माण्डक नाटक। एक नृत्य करैत, एक देखैत; एक बदलैत, एक अचल; एक वस्तु, एक शुद्ध अनुभूतिक संभावना।

कवि एहि दृश्य केँ रंगमंच जकाँ देखैत: नर्तकी थाकि अन्ततः रुकैत जखन दर्शक पहचानि लैत जे नृत्य ओकरा देखाबय लेल छल, ओ स्वयं नृत्य नहि।

ज्ञानक अन्तिम क्षण कदाचित् ताली नहि, मौन। नर्तकी अपन काम सम्पूर्ण कऽ पर्दा पाछाँ; दर्शक अकेला—न उदास, न प्रसन्न, केवल स्वतन्त्र।

मुदा जीवन एखन मंच पर अछि। तें दर्पण साफ करू, इन्द्रिय संयमित, तर्क जाग्रत, साक्ष्य परखू, दृष्टिकोणक सीमा जानू, कठिन प्रश्न सँ नहि भागू।

आ जखन “हम” शब्द जिह्वा पर आबय, एक क्षण भीतर पूछू—ई देह? ई भावना? ई पद? ई स्मृति? कि एहि सभ केँ देखैत किछु एहन, जकरा वस्तु बनायब सम्भव नहि?

उत्तर शब्दमे पूर्ण नहि। मुदा प्रश्न अपने मुट्ठी ढीली करैत, आ दर्पणक पार एक शान्त उजासक सम्भावना खोलैत अछि।

श्वासक भीतर एक स्थिर आकाश

पहिल पाठ देहसँ आरम्भ होइत—रीढ़ सोझ, श्वास सुनल, पयर धरती पर। मुदा देह अन्तिम लक्ष्य नहि; ओ एक दुआर, जकर पार मनक अविराम भीड़ धीरे-धीरे अपन आवाज कम करैत, आ भीतरक आकाश पहली बेर साफ सुनाइत।

दिन भरि मन एक वस्तुसँ दोसर वस्तु पर दौड़ैत अछि। एक स्मृति, एक इच्छा, एक भय, एक अपमान, एक योजना; हम सोचैत छी हम सोचि रहल छी, मुदा कखनो विचारसभ स्वयं हमरा सोचैत रहैत।

अनुशासन एहि दौड़ पर कोड़ा नहि। ओ पहिने केवल देखनाइ—कतय मन भागल, ककरा पाछाँ, किएक; फेर कोमल मुदा दृढ़ हाथसँ ओकरा फेर एक बिन्दु पर आनब।

शरीरक स्थिरता मनक पहिल सहारा बनि सकैत। जे देह हरेक क्षण असुविधा, आलस्य, उत्तेजना सँ काँपैत, ओहि पर टिकि गहिर ध्यान बनब कठिन; तें आसन सौन्दर्यक प्रदर्शन नहि, तैयारी।

श्वास दोसर दुआर। ओ स्वतः चलैत, मुदा सजगतासँ देखल जाए तऽ देह आ मनक बीच पुल; तेज श्वास बेचैनीक छाया, गहिर सम श्वास भीतरक लहर केँ हलुक करैत।

इन्द्रियसभ बाहरक बजारमे सदखन खिंचल जाइत। रंग, स्वाद, स्पर्श, समाचार, प्रशंसा, भय—सभ कहैत: “हमरा देखू”; अभ्यास कखनो बाहरक जगत बंद नहि करैत, केवल ओकर अनिवार्य आदेश कम करैत।

एक क्षण आबैत जखन कान ध्वनि सुनैत, मुदा मन ध्वनिक दास नहि। आँखि रूप देखैत, मुदा रूप तुरन्त चाहना नहि बनैत; इन्द्रिय अपन काज करैत, भीतरक केन्द्र अपन दिशा अपने चुनैत।

एहि केन्द्रित होएबाक पहिल अवस्था कठिन अछि। एक विचार चुनू—मन भागत; फेर आनू; फेर भागत; फेर आनू; विफलता नहि, एहिँ लौटब ही अभ्यासक वास्तविक मांसपेशी।

धीरे-धीरे बिखरल धार एक नदी बनैत। ध्यान तखन बिन्दु पर टिकबाक प्रयाससँ अधिक, एक अखण्ड प्रवाह—जतय मन बार-बार लौटबाक श्रम बिनु ओही दिशामे बहैत।

मुदा एतयो एक महीन दीवार बचल रहैत: “हम ध्यान करैत छी”, “हम देखैत छी”, “हम सफल भऽ रहल छी”; विषय समक्ष अछि, मुदा निरीक्षकक स्वयं-चेतना बीचमे पारदर्शी पर्दा जकाँ।

जखन ई पर्दा क्षीण होइत, अनुभवक भाषा बदलैत। वस्तु केवल “हमरा देखाइत” नहि, मानो अपनहि रूपमे उजागर; दर्शक, देखनाइ, देखल वस्तु—तीनू बीचक दूरी अस्थायी रूपेँ गलि सकैत।

ई मिलन निद्रा नहि। न बेहोशी, न विचारक अन्हार; उलटे एक अत्यन्त साफ जागरण, जतय मन अपन टिप्पणी कम करैत आ वस्तुक उपस्थिति अधिक उज्ज्वल होइत।

साफ स्फटिक लाल फूलक लग राखल जाए तऽ लालिमा लेत, मुदा अपन काँचक पारदर्शिता नहि गँवायत; एकाग्र मनो एना वस्तुक रूप ग्रहण करैत, बिनु अनावश्यक विकृतिक।

सामान्य ज्ञान शब्द, स्मृति, तुलना, अनुमानक जालसँ बनैत। ई जाल उपयोगी—बिनु एकर विज्ञान, भाषा, व्यवहार चलत नहि; मुदा कखनो जाल एते घना जे वस्तु सँ अधिक हमर अवधारणा देखाइत।

अभ्यासक दावा साहसिक अछि: की मन एहन शान्त हो सकैत जे वस्तु पर पहिने सँ चढ़ाओल नाम, भय, इच्छा किछु देर लेल हटि जाए, आ अनुभव अवधारणाक पहिल क्षणक निकट पहुँचय?

एहि दावाक सत्यता बहससँ पूर्ण सिद्ध नहि होएत। जैना संगीतक स्वाद वर्णन पढ़ि पूर्ण नहि, तैना ध्यानक अवस्थाक ज्ञान कम-से-कम आंशिक रूपेँ अभ्यास माँगैत; नक्शा पयरक यात्रा नहि।

मुदा अभ्यास अन्ध विश्वासो नहि माँगैत। देह, श्वास, मन, ध्यान—हरेक चरण अनुभवक कसौटी पर; जे देखल जाए, ओ जाँचू; जे बदलय, ओ नोट करू; जे भ्रम हो, ओकरा मानू।

सत्यक खोज एतय चरित्र सँ अलग नहि। हिंसा, झूठ, चोरी, असीम संग्रह, असंयमित इच्छा—एहि सभसँ मन भीतर हजार अधूर हिसाब रखैत; एकाग्रता तखन सतह पर नाव जकाँ काँपैत।

अहिंसा केवल हाथ रोकब नहि, मनक प्रतिशोध पर सेहो दृष्टि। सत्य केवल कथन नहि, अपन भ्रमक समक्ष सेहो ईमानदारी; अलोभ केवल कम वस्तु, कम मानसिक स्वामित्व—“ई मोर विचार”, “ई मोर विजय।”

स्वच्छता केवल स्नान नहि; वातावरण, भोजन, वाणी, स्मृति, उद्देश्यक सफाई। सन्तोष हार मानब नहि, अनन्त चाहनाक मशीन पर एक विराम; अनुशासन आत्म-दण्ड नहि, चुन्नल दिशा प्रति स्थिर निष्ठा।

एहि नैतिक तैयारी बिनु ध्यान शक्ति बनि सकैत, बुद्धि नहि। तेज एकाग्रता यदि लोभक हाथमे जाए, छल अधिक कुशल हो सकैत; तें मनक तकनीक पहिने जीवनक दिशा माँगैत।

कियो सर्वोच्च आदर्शक कल्पना करैत—पूर्ण ज्ञान, पूर्ण स्वतन्त्रता, करुणा। ओ आदर्श जगतक एकमात्र निर्माता होएबाक आवश्यक नहि; ओ मार्गक उत्तर दिशा जकाँ, जकर स्मरण साधक केँ अपन सीमा आ सम्भावना देखाबय।

समर्पण एहि संदर्भमे गुलामी नहि। अहंकारक निरन्तर “हम ही कर्ता” आवाज ढीली करब, एक एहन आदर्शक समक्ष अपन अधूरापन स्वीकारब जे मन केँ विनम्र बनाबय।

मुदा रस्ता केवल श्रद्धावानक नहि। कियो कोनो सर्वोच्च व्यक्तिकल्पना बिनु सेहो अनुशासन, ध्यान, विवेकसँ चलि सकैत; मुक्तिक तकनीकक दुआर विश्वासक एक रूप पर बन्द नहि।

एहि खुलापनमे परम्पराक एक विशेष उदारता चमकैत: एके अभ्यास भिन्न तत्त्वमीमांसीय घरमे प्रवेश करि सकैत; लक्ष्यक भाषा बदलि सकैत, मुदा मनक अनुशासनक उपयोग अनेक दिशामे।

कखनो लक्ष्य “शुद्ध चेतना” कहल, कखनो “पूर्ण विश्राम”, कखनो “एकत्व”; नाम अलग, अंतिम दर्शन अलग; मुदा इन्द्रिय-संयम, ध्यान, चरित्र, आत्म-परीक्षण—व्यवहारिक सीढ़ीसभ साझा।

ई साझा भूमि हमें एक शिक्षा दैत: सिद्धान्त पर असहमति अभ्यासक मूल्य मेटाबैत नहि; मनुष्यक दुःखक किछु कारण मतभेदक पार सेहो पहिचानल जा सकैत।

मनक संशोधन रोकब—ई वाक्य सुनिते कठोर नियन्त्रण जकाँ लगैत। मुदा उद्देश्य मन केँ पत्थर बनाबय नहि; अर्थ ई जे अनियंत्रित लहरक दासत्व घटय, ताकि चेतना अपन प्रकाश पहिचानय।

समुद्र बिनु लहर मृत नहि; लहर शान्त तऽ समुद्र अधिक स्पष्ट। मनक वृत्तिसभ स्वतः शत्रु नहि; समस्या तखन जखन हरेक लहर “हम” बनि समूचा आकाश ढँके दैत।

क्रोध उठल—हम कहैत “हम क्रोधित छी”। भय उठल—“हम भय छी”क निकट पहुँचैत; अभ्यास कहैत: लहर देखू, नाम दिअ, गुजरए दिअ—समुद्र केँ लहरसँ सम्पूर्ण नहि मापू।

ध्यानक आरम्भमे शरीर, श्वास, प्रतीक, ध्वनि, रूप—किछु आधार हो सकैत। फेर आधार सूक्ष्म; अन्ततः मन अपने गतिविधिक महीनतम कम्पन देखबाक योग्य बनैत।

एकाग्रता गहिर भेला पर ज्ञानक दावा सेहो बदलैत। सामान्य बुद्धि वस्तुक बाहरी गुण, सम्बन्ध, माप, व्यवहार बुझैत; ध्यान कहैत—किछु सत्य केवल दूरी सँ नहि, अत्यन्त निकट उपस्थिति सँ खुलैत।

ई “निकटता” भावुक विलय नहि। ओ एहन ध्यान जतय विषय पर हमर पुरान व्याख्या कम थोपल; जतय देखनाइ निष्पक्ष प्रयोगशाला जकाँ, मुदा प्रयोगशाला स्वयं चेतना।

कियो पूछत—एहन ज्ञान विज्ञानक ज्ञानसँ ऊपर? उत्तर सरल श्रेणी नहि। विज्ञानक पद्धति सार्वजनिक, पुनरावृत्त, मापनीय; ध्यानक अनुभव भीतरक, प्रशिक्षणाधीन।

दुनू केँ एक-दोसरक नकल बनाबय आवश्यक नहि। एक बाहरी संरचना जाँचैत, दोसर अनुभूतिक शर्त; एक उपकरण बाहर बनबैत, दोसर स्वयं उपकरणक शुद्धि करैत।

मुदा भीतरक अनुभव “हम अनुभव कएलहुँ” मात्रसँ सत्य नहि। भ्रम ध्यानमे सेहो सम्भव; तें चरित्र, दीर्घ अभ्यास, तर्क, तुलना, शिक्षक, परम्परा—सभ मिलि आत्म-छलक जोखिम कम करबाक साधन।

उच्च अवस्थाक चमत्कारक कथा आकर्षक हो सकैत। असामान्य अनुभूति, सूक्ष्म बोध, शक्ति, विलक्षण ध्यान; मुदा यदि लक्ष्य शक्ति बनल, अहंकार नव पोशाकमे लौटि आयत।

मुक्तिक रस्ता पर सिद्धि चमकैत बजार जकाँ। जे रुकल, ओ साधन केँ लक्ष्य बना सकैत; साँच यात्रा पूछैत—लोभ घटल? भय घटल? पहचानक गाँठ ढीली? चेतना साफ?

सभसँ गहिर ध्यानमे बीजो छूटि सकैत—कोनो बाहरी विषय नहि, कोनो विशेष चिन्ह नहि; चेतना स्वयं अपन विषय बनबाक सीमा धरि पहुँचैत।

मुदा शब्द एतय सावधान चलय। जे “शुद्ध विषयता” कहल, ओकरा वस्तु जकाँ परिभाषित करिते हम फेर ओकरा मनक मेज पर रखि देब—आ जे देखैत ओकरा देखल वस्तु बना देब।

तें अन्तिम अनुभूतिक भाषा बहुधा निषेधक होइत: ई देह नहि मात्र, ई विचार नहि, ई इच्छा नहि, ई अहंकार नहि; जे बचैत ओकरा अवधारणाक अन्तिम जालमे पकड़ब कठिन।

स्वतन्त्रता एतय बाहरी परिस्थिति मेटाबय नहि। देह संसारमे रहत, कारणक नियम चलत, कर्मक परिणाम; मुदा भीतर बेठीक पहिचानक बन्धन कटि सकैत।

जैना अभिनेता भूमिका निभबैत, मुदा भीतर जानैत—मंच भूमिका सँ पैघ; तैना जीवन चलैत, मुदा चेतना अपने केँ केवल देह-मनक कथा नहि मानैत; कर्म होइत, पकड़ कम; अनुभव होइत, दासत्व कम।

ई “अलगाव” उदासीनता नहि बनय, एहि पर ध्यान जरूरी। यदि स्वतन्त्रता परक पीड़ा सँ आँखि फेरय, किछु भूल; शान्त चेतना अधिक स्पष्ट करुणा दे सकैत, कम नहि।

अभ्यासक आठ धार एक नदीमे मिलैत: नैतिक संयम, व्यक्तिगत अनुशासन, देहक स्थिरता, श्वासक लय, इन्द्रियक प्रत्यावर्तन, एकाग्रता, अखण्ड ध्यान, आत्म-विस्मृत पारदर्शिता।

ई आठ सीढ़ी कठोर अलग कमरा नहि। सत्यवान वाणी ध्यान आसान करैत; सम श्वास क्रोध कम; कम लोभ मन हलुक; गहिर ध्यान फेर नैतिक सजगता बढ़ा सकैत।

एहि कारण अभ्यास वृत्ताकार उन्नयन। एक अंग दोसर केँ पोसैत, दोसर पहिल केँ; मनुष्य एके समय शरीर, नैतिकता, मनोविज्ञान, ज्ञान—सभ पर काज करैत।

आइक दुनिया मे सेहो ई प्रश्न नवा रूपेँ जीवित। स्क्रीन हरेक क्षण ध्यान तोड़ैत, सूचना इन्द्रियक बजार अनन्त; एकाग्रता केवल आध्यात्मिक विलास नहि, मानसिक स्वाधीनताक प्रश्न।

यदि प्रत्येक सूचना हमर ध्यान खरीद सकैत, तऽ मनक मालिक के? जतय विज्ञापन, क्रोध, भय, मनोरंजन सदिखन दिशा तय करैत, प्रत्यावर्तन राजनीतिक अर्थो पबैत।

श्वास पर लौटब छोट प्रतिरोध हो सकैत। किछु क्षण बिनु स्क्रीन, बिनु प्रतिक्रिया, बिनु तुरन्त उत्तर; मन फेर सीखैत—उत्तेजना आयल तऽ प्रतिक्रिया अनिवार्य नहि।

एहि विराममे स्वतन्त्रता जन्मैत। एक अपमानक पाछाँ जवाबक बीच एक श्वास; एक इच्छा आ खरीदक बीच एक श्वास; एक भय आ निर्णयक बीच एक श्वास।

कदाचित् समूचा अनुशासन एहि छोट ठाम केँ विस्तृत करैत: उत्तेजना आ कर्मक बीच सजग स्थान, जतय मन आदत नहि, विवेकसँ उत्तर चुनि सकैत।

मुक्ति दूरक दार्शनिक शब्द हो, मुदा एहि एक श्वासमे ओकर बीज अनुभव कएल जा सकैत। जतय चाहना आदेश नहि, भय राजा नहि, क्रोध चालक नहि।

अन्ततः साधना देहक विरुद्ध युद्ध नहि। देह सहयोगी; श्वास सहयोगी; इन्द्रिय प्रशिक्षित घोड़ा; मन शत्रु नहि, एक अद्भुत उपकरण जकरा अनुशासन चाहिए।

आ चेतना—ओ कदाचित् रथी नहि जे डोरी खींचैत, अपितु ओ प्रकाश जकर उपस्थितिमे सम्पूर्ण यात्रा देखाइत; जतय प्रकाश अपने केँ पहिचानैत, बाटक अर्थ बदलि जाइत।

एक दिन ध्यान समाप्त होइत, आँखि खुलैत। कमरा ओही, सड़क ओही, लोग ओही, अधूर दुनिया ओही; मुदा भीतर कनेक अधिक ठाम, प्रतिक्रिया सँ पहिने कनेक अधिक शान्ति।

यदि अभ्यासक फल एतबे हो—एक कम हिंसक शब्द, एक कम लालची निर्णय, एक अधिक सजग श्वास, एक अधिक स्पष्ट दृष्टि—तबो ओ दर्शन कागजसँ उठि जीवनमे प्रवेश करि चुकल।

आ यदि कखनो मन अत्यन्त शान्त भऽ दर्शक आ दृश्यक दूरीक पार किछु अकल्पित उजास छूबि लैत, तखन लौटिकऽ सभसँ पहिल परीक्षा फेर दैनिक जीवनमे होएत।

की अहंकार हलुक भेल? की करुणा गहिर? की भय कम? की स्वतन्त्रता अधिक?

यदि हाँ, तऽ श्वासक भीतर देखल ओ स्थिर आकाश केवल निजी रहस्य नहि रहत; ओ वाणी, कर्म, सम्बन्ध आ संसारक बीच एक नवा लय बनि जीवित रहत।

एक-एक कणक अपन चेहरा

जगत केँ यदि दूर सँ देखी तऽ ओ एक रंगक कपड़ा जकाँ लागि सकैत, मुदा नजदीक जाइत हरेक धागा अपन बनावट, अपन स्पर्श, अपन ठाम; एकरूपताक नीचाँ अनेकता चुपचाप अपन-अपन चेहरा सँ टिकैत अछि।

एक घड़ा अछि, एक पाथर, एक मनुष्य, एक गन्ध, एक गति, एक स्मृति। सभकेँ एकहि शब्दक थैलीमे राखि देब सहज, मुदा यथार्थ तऽ एहि भिन्न-भिन्न वस्तु, गुण, क्रिया, सम्बन्ध आ अनुपस्थितिसभक विस्तृत नगर।

किछु वस्तु स्वयं आधार जकाँ, जकरा पर गुण टिकैत, क्रिया घटैत। लालिमा अकेली हवा में नहि टिकल; स्वाद बिनु ककरो स्वाद नहि; चलनाइ सेहो ककरो चलनाइ—अर्थात् गुण आ क्रिया लेल किछु आधार चाही।

मुदा आधारो एकरूप नहि। किछु देह बनैत, टूटैत, फेर दोसर रूप लेत; किछु सूक्ष्म कल्पना एहन अंतिम कणक खोज करैत जे टूटि नहि सकय, जे परिवर्तनक नीचाँ टिकैत।

पाथर केँ तोड़ू—टुकड़ा; टुकड़ा फेर; फेर महीन धूलि। मन पूछैत—ई विभाजन सदा चलत कि कतहु एक अन्तिम बिन्दु आयत जतय “आरो छोट” कहब स्वयं अर्थहीन भऽ जाए?

यदि विभाजनक कोनो अन्त नहि, तऽ सरसोंक दाना आ पर्वत दुनू अनन्त टुकड़ासँ बनल—तखन आकारक अन्तर केना? एहि प्रश्नसँ अदृश्य, अविभाज्य मूल कणक कल्पना जन्मि सकैत।

मुदा ई कण केवल संख्या नहि, गुण सेहो ढोइत—एहन विश्वास। जल आ माटिक भेद दृश्य वस्तुमे अकस्मात् नहि उगैत; कदाचित् सूक्ष्मतम स्तरपरहि भिन्नताक बीज सहेजल रहैत।

दू कण भेटैत, फेर अनेक; संयोगसँ आकार उगैत, मुदा “संग-संग रहब” आ “एक सम्पूर्ण वस्तु बनब” एक बात नहि। किताब मेज पर रहि सकैत, मुदा किताब मेजक अंग नहि बनैत।

किछु सम्बन्ध बाहरी—आइ अछि, काल्हि नहि। किछु सम्बन्ध एहन जे अलग करिते वस्तु स्वयं नष्ट; घड़ाक आकार ओकर टुकड़ासँ एहन जुड़ल जे टुकड़ा अलग तऽ घड़ा समाप्त।

सम्बन्धो यथार्थक अंग हो सकैत—ई विचार सूक्ष्म। हम बहुधा वस्तु देखैत छी, सम्बन्ध नहि; मुदा कतेक वस्तु अपन सम्पूर्णता केवल सम्बन्धमे पबैत अछि।

एक घर ईंटक ढेर नहि। एक वाक्य शब्दक ढेर नहि। एक समाज व्यक्तिक ढेर नहि। किछु एहन “भीतरक जुड़ाव” अछि जकर बिनु सम्पूर्णता नाम मात्र रहि जाए।

फेर सामान्य आ विशेषक प्रश्न खुलैत। एक घोड़ा, दोसर घोड़ा—दुनू भिन्न; तैयो हम एक शब्द सँ दुनू केँ पुकारैत। की केवल नाम समान, कि दुनूमे किछु साझा रूप वास्तवमे उपस्थित?

भाषा कखनो सुविधा लेल समूह बनबैत, मुदा कखनो समूहक पाछाँ एहन साझा गुण देखाइत जे केवल मनक कल्पना नहि लगैत; तैयो साझा रूप यदि वास्तविक, ओ प्रत्येक व्यक्तिमे केना रहैत?

“मनुष्य” एक सामान्य शब्द; मुदा प्रत्येक मनुष्य एक अद्वितीय चेहरा। साझापन आ व्यक्तित्व एक-दोसर केँ नष्ट नहि करैत; जगत कदाचित् एही दू दिशाक बीच अपन बहुंगी बनावट राखैत।

एक फूल अन्य फूलसँ मिलैत, तैयो ठीक ओ नहि। एक कण दुसर समान गुण रखैत, तैयो संख्या मे अलग; अन्तिम भिन्नता केवल गुणक भिन्नता नहि, अस्तित्वक “ई-ही-ई”पन सेहो।

एहि “ई-ही-ई”पनक बिनु अनेकता खाली गणना हो सकैत। यदि सभ पूर्ण समान, तऽ “दू” कहबाक आधार की? व्यक्तित्व एतय अहंकार नहि, अस्तित्वक अद्वितीय हस्ताक्षर।

स्थान सेहो किछु वस्तु जकाँ सोचल जा सकैत—दृश्य नहि, मुदा दिशा सम्भव करैत। एतय, ओतय, नजिक, दूर—ई सभ केवल भाषा नहि; मानो एक असीम विस्तारक पृष्ठभूमि जकरा बिनु ठामक अनुभव अधूर।

समय सेहो घड़ीक सुइया मात्र नहि। नव, पुरान, पहिले, पाछाँ—ई भेद एक गहिर क्रम पर टिकैत; घड़ी समय मापैत, मुदा समय घड़ीक भीतर कैद नहि।

मुदा स्थान आ समयक भाग हम खुद बनबैत छी। पूर्व-पश्चिम, घंटा-मिनट—व्यवहारक उपयोगी काट; असीम विस्तार आ क्रम स्वयं एहि मानवीय खाँचासँ आवश्यक नहि बँटल हो।

ध्वनि लेल एक सूक्ष्म आधारक कल्पना, मन लेल एक आन्तरिक माध्यम, जे इन्द्रियक स्पर्श केँ चयन करैत; आ आत्म-जागरूकता लेल एक एहन आधार जे “हम दुःखी छी”क अनुभूति ढोइत।

मनक विशेषता चयन। आँखि फूल पर, कान संगीत पर, त्वचा हवा पर—सभ एक संग स्पर्श पाबैत, मुदा चेतना एक क्षणमे प्रायः एक पक्ष पर अधिक स्पष्ट टिकैत।

हमर इन्द्रियसभ वस्तुसँ जुड़ल होइतो ज्ञान तुरन्त नहि बनैत। मन ध्यान दैत, छोटैत, जोड़ैत; फेर “ई लाल फूल” जकाँ पहचान उगैत; मात्र अनुभूति आ सचेत ज्ञान बीच एक सूक्ष्म प्रसंस्करण रहैत।

एहि कारण ज्ञान केवल आँखिक काज नहि। दृष्टि, मन, अवधारणा, पहचान—सभ मिलि वस्तु केँ “ई” बनबैत; मुदा बाहरी जगत केवल हमर बनाओल छवि नहि—ओ स्वतन्त्र प्रतिरोध राखैत।

फूलक रंग हम नहि गढ़ैत। पाथरक कठोरता अपन देह पर उत्तर दैत; जगत हमर मनक इच्छा सँ रूप नहि बदलैत—यथार्थक स्वतन्त्रता एतय दृढ़।

ज्ञानक दू मुख्य दुआर—प्रत्यक्ष आ अनुमान। जे समक्ष, ओकरा देखू; जे प्रत्यक्ष नहि, चिन्ह आ सम्बन्धसँ ओकरा बुझू; ध्वनि सँ अदृश्य स्रोत, दिशा सँ स्थान, प्रभाव सँ कारणक अन्दाज।

तुलना आ साक्ष्य सेहो अन्ततः अनुभव आ अनुमानक सहारे चलि सकैत। कियो कहलक तें सत्य नहि; कथन केँ अनुभवक धरती चाही; ज्ञानक घर विश्वास पर मात्र नहि, कसौटी पर टिकबाक कोशिश करैत।

एक रोचक विचार कारण-प्रभाव पर फेर उठैत: घड़ा लकड़ीमे पहिने सँ “घड़ा” बनि छिपल नहि; कारण भेटिते एक नवा सम्पूर्णता वास्तवमे जन्म ले सकैत।

नवत्व केवल नामक बदलाव नहि। दू कण मिलि जे रूप बनैत, ओ दुनू अलग-अलग कणक जोड़ मात्र नहि; सम्पूर्णता कखनो अपन नवा गुण, नवा सम्बन्ध, नवा अस्तित्व लैत।

एहि दृष्टिमे सृष्टि पुनर्विन्यासक कला जकाँ। मूल तत्व टिकैत, मुदा संयोजन बदलिते नया वस्तु; पुरान कारणसभ मिलि एहन परिणाम दे सकैत जे कारणसभमे अकेले नहि देखाइत।

फेर “नहि” पर ध्यान देब—ई दर्शनक बहुत विलक्षण साहस। हम प्रायः केवल जे अछि ओकरा यथार्थ मानैत, मुदा खाली कुर्सी देखिते हम “एतय कियो नहि” सेहो सोझे अनुभव करैत छी।

अनुपस्थिति हवा नहि, अनुभवक एक वास्तविक भेद। घड़ा बनबाक पहिले ओकर अभाव, टूटलाक पाछाँ ओकर अभाव; कुर्सी फूल नहि, वृत्त चौकोर नहि—नकारो जगत बुझबाक औजार।

मुदा “पूर्ण शून्य” ककरो अनुभवमे नहि आबैत। जतय किछु नहि कहल, ओतयो किछु दोसर उपस्थित; नकार सदिखन ककरो नकार, अनुपस्थिति ककरो अपेक्षा पर टिकैत।

ई विचार भाषा केँ गहिर करैत। “नहि” केवल खाली शब्द नहि—सम्बन्धक एक रूप; जतय अपेक्षित वस्तु अनुपस्थित, ओ अनुपस्थिति सेहो ज्ञानक विषय।

जीवनमे सेहो अनुपस्थिति शक्तिशाली। मेज पर रिक्त कुर्सी, घरमे प्रियक नहि होएब, पत्रक नहि आबि पहुँचब—“नहि” कखनो “अछि” सँ अधिक भार ढोइत।

यथार्थक सूचीमे अनुपस्थिति केँ ठाम देब मानव अनुभवक सूक्ष्मता स्वीकारब जकाँ; जगत केवल वस्तुसँ नहि, वस्तु-बीच रिक्त स्थान आ नकारसँ सेहो बनैत।

मुदा सूची बनब ही अन्तिम लक्ष्य नहि। वस्तु, गुण, क्रिया, सामान्य, विशेष, सम्बन्ध, अभाव— ई सभ यथार्थक व्याकरण; प्रश्न ई जे एहन साफ वर्गीकरण जीवन केँ कतेक बदलैत?

यदि ज्ञान केवल मानचित्र, मुक्ति कतय? उत्तर एतय फेर नैतिक-आध्यात्मिक दिशा लेत: भ्रमक कारण हम देह, मन, इच्छा, अनुभूति केँ आत्माक सम्पूर्णता मानि लैत छी।

पहचान सँ इच्छा, इच्छा सँ कर्म, कर्म सँ नया बन्धन। अच्छा कर्मो फल ढोइत, खराबो; परिणामक जाल व्यक्ति केँ फेर संसारक चक्रमे खींचैत; तें केवल “नीक फल” नहि, अन्ततः फल-आसक्त कर्मसँ पार होएबाक प्रश्न।

मुक्ति एतय सुखक अधिकतम मात्रा नहि। सुख आ दुःख दुनू अनुभवक गुण, दुनू परिवर्तनशील; यदि बन्धनक जड़ि अनुभवक चाहना, तऽ चरम स्वतन्त्रता दुनूक पारक शान्ति हो सकैत।

ई शान्ति सुनिते कठोर लगि सकैत। “आनन्द बिनु मुक्ति?”—मन पूछैत; मुदा विचार कहैत, जतय पीड़ा असम्भव, ओतय सुखक द्वन्द्वो असम्भव मानल जाए।

चेतना स्वयं आत्माक शाश्वत गुण नहि—एहन एक साहसिक धारणा। देह-मनक सम्बन्ध टूटल तऽ अनुभवक अवस्था समाप्त; मुक्त आत्मा मानो गुणरहित अस्तित्व, विशिष्ट रहि, मुदा अनुभूति-विहीन।

एतय एक गंभीर कठिनाई तुरन्त उठैत: यदि गुण सभ हटि गेल, व्यक्तित्व केना बाँचत? यदि अनेक आत्मा असीम आ सर्वव्यापक, एक-दोसरसँ भिन्नता कतय सँ?

सिद्धान्त अपन सीमा एतय स्वयं उजागर करैत। व्यक्तित्व चाही, मुदा भिन्न करबाक गुण हटाओल; असीमता चाही, मुदा अनेकता सेहो—दू दावा आपसमे तनाव बनबैत।

एहिए तनाव दर्शन केँ जीवित रखैत। प्रणाली साफ होएब महत्त्वपूर्ण, मुदा साफ नक्शामे असम्भव मोड़ देखनाइ सेहो; अन्तर्विरोध छिपेनाइ श्रद्धा, खोलि देखेनाइ विचार।

जगतक नैतिक व्यवस्था लेल एक सर्वोच्च नियामकक कल्पना सेहो प्रवेश करैत। मूल कण, समय, स्थान, आत्मा पहिने सँ; सर्वोच्च सत्ता शून्यसँ रचैत नहि, अपितु गति, क्रम, कर्मफल, पुनर्संयोजनक व्यवस्था सँ संसारक चक्र चलबैत।

मुदा यदि कर्मक नियम स्वयं दृढ़, तऽ नियामकक भूमिका कतेक? यदि नियामक नियमक अधीन, तऽ सर्वशक्ति कतेक? यदि पूर्ण पारदर्शी परातीत, जीवक पीड़ा मे सहायता केना?

ई प्रश्न श्रद्धा तोड़बाक नहि, अवधारणाक दायरा जाँचबाक। कखनो ईश्वरक धारणा व्याख्यात्मक जोड़ बनि रहि सकैत, मुदा मनक धार्मिक आकांक्षा प्रेम, उत्तर, निकटता सेहो माँगि सकैत।

यथार्थक बहुलता एहि कविताक मूल स्वर। कियो एक पदार्थमे सम्पूर्ण जगत समेटब चाहैत, कियो एक चेतनामे; एतय उत्तर—अनेक वास्तविकतासभ अपन-अपन प्रकारसँ अस्तित्व रखि सकैत।

पदार्थ वास्तविक, मन वास्तविक, आत्मा वास्तविक, समय, स्थान, सम्बन्ध; साझा रूप वास्तविक, व्यक्तिगत भिन्नता वास्तविक, अनुपस्थितियो ज्ञानक विषय; जगत एक स्वर नहि, एक जटिल बहुवचन।

बहुवचनक नैतिक अर्थ सेहो अछि। यदि प्रत्येक वस्तु अपन अद्वितीय अस्तित्व राखैत, तऽ दुनिया केवल हमर उपयोग लेल समान वस्तुसभक गोदाम नहि।

एक कण दुसरसँ अलग, एक व्यक्ति दुसरसँ; सामान्य नाम समान होइतो व्यक्तित्व मेटैत नहि; भिन्नता तें त्रुटि नहि, अस्तित्वक मूल व्याकरण।

आ साझा रूप सेहो जरूरी। यदि प्रत्येक वस्तु पूर्णतः असम्बद्ध, ज्ञान, भाषा, विज्ञान सम्भव नहि; हम समानता देखैत, समूह बनबैत, सामान्य नियम खोजैत।

तें यथार्थ दू दिशामे फैलैत—साझापन आ अद्वितीयता। केवल साझा रूप देखू तऽ व्यक्ति मेटत; केवल व्यक्ति तऽ संसार अनुभवक असम्बद्ध कणमे टूटत।

सम्बन्ध ई दुनू केँ जोड़ैत। किछु सम्बन्ध आकस्मिक, किछु अस्तित्वगत; किछु बिनु वस्तु रहि सकैत, किछु टूटिते वस्तुक पहचान समाप्त।

हमर जीवनो एहन। किछु परिचय कपड़ा जकाँ—बदलिए सकैत; किछु सम्बन्ध एहन जे टूटल तऽ पुरान “हम” समाप्त, नवा रूप जन्मैत।

एहि कारण दर्शनक वर्गीकरण केवल सूखा सूची नहि। ओ हमरा सिखा सकैत—कुन वस्तु आधार, कुन गुण, कुन क्रिया, कुन अस्थायी संयोग, कुन गहिर सम्बन्ध, कुन साझा, कुन अद्वितीय, कुन अनुपस्थिति।

जीवनक दुःखमे एहि भेदक मूल्य अछि। कखनो हम अस्थायी सम्बन्ध केँ शाश्वत मानि दुखी, कखनो गुण केँ व्यक्ति स्वयं मानि देैत—
“ओ क्रोधित अछि, तें ओ क्रोध ही।”

यदि गुण आधारमे टिकैत मुदा आधार गुणसँ अधिक, तऽ आइक क्रोध सम्पूर्ण व्यक्ति नहि; आइक दुःख, सुख, इच्छा—स्थितिसभ, अन्तिम अस्तित्व नहि।

ई रूपक मनोवैज्ञानिक करुणा दे सकैत। “तूँ एहि क्षण एना छें” आ “तूँ सदा एहन छें” बीच विशाल अन्तर; विशेषता पहचान, मुदा जेल नहि।

अनुपस्थिति सेहो उपचारक भाषा बनि सकैत। “क्रोध नहि” केवल खालीपन नहि—एक नवा सम्भावना; “भय नहि”क ठाममे शान्ति उगि सकैत, “लोभ नहि”क ठाममे साझेदारी।

नकार जीवनक रचनात्मक पक्ष हो सकैत। किछु हटिते किछु नया स्पष्ट; कम शोर तऽ संगीत, कम संग्रह तऽ ठाम, कम अहंकार तऽ सम्बन्ध।

अन्ततः संसारक विशाल सूची फेर एक छोट कमरेमे लौटैत। मेज पर कप, कपमे जल, जलक स्वाद, हाथक गति, कमरेमे स्थान, घड़ीक समय, मनक ध्यान, भीतर “हम”क अनुभूति।

एक क्षणमे कतेक परत। कतेक किछु “अछि”, कतेक गुण, कतेक क्रिया, कतेक साझा, कतेक अद्वितीय, कतेक सम्बन्ध, कतेक अनुपस्थित।

दर्शन कदाचित् एहि जटिलता पर नाम लिखबाक लालसा मात्र नहि। ओ सावधानी—जगत केँ एक सूत्रमे जल्दी नहि समेटू; किएक तँ एक-एक कणक अपन चेहरा अछि, आ प्रत्येक चेहराक पाछाँ सम्बन्धक सम्पूर्ण नगर।

आ जखन हम ककरो मनुष्य केँ देखी, ओकर सामान्य नामसँ पहिने ओकर अद्वितीयता, ओकर गुणसँ पहिने ओकर आधार, ओकर वर्तमान क्रियासँ पहिने ओकर व्यापक अस्तित्व देखबाक अभ्यास करी।

तखन बहुल यथार्थ केवल तत्त्वमीमांसा नहि रहत। ओ विनम्रता बनत—एक दुनिया जतय बहुत प्रकारक “अछि” एक संग रहैत; आ ज्ञानक काम ककरो मेटेनाइ नहि, भेदसहित स्पष्ट देखनाइ।

धुँआक पार जे आगि अछि

पहाड़क माथ पर धुँआ उठैत अछि, मुदा आगि आँखि समक्ष नहि। एहिऐ दूरीमे विचार अपन पहिल पग राखैत— जे नहि देखल, ओकरा देखल चिन्ह सँ केना विश्वसनीय रूपेँ खोजल जाए?

सत्यक खोज केवल विश्वासक आवेग नहि होएबाक चाही। कुन बात ठीक, कुन कारण वैध, कुन उदाहरण सचमुच मेल खाइत— प्रश्न पहिने विधि पर उठैत, निष्कर्ष पाछाँ।

मनुष्य बहुत बेर उत्तर पहिने चुनि लैत, तर्क पाछाँ खोजैत। एहि उलटा यात्रासँ बचबाक लेल विचार अपने पयर जाँचैत: हम किएक मानैत छी, आधार की, विरोधी स्थिति वास्तवमे की कहैत?

बहसक अनेक चेहरा अछि। एक संवाद सत्य धरि पहुँचबाक लेल, दोसर केवल जीतबाक लेल, तेसर समक्ष ठाढ़ व्यक्ति केँ गिराबय लेल बिनु अपन घर ठाढ़ कएने।

शब्दक छल सेहो तर्कक पोशाक पहिरि सकैत। अर्थ बदलि देब, अस्पष्टता पर खेलब, अनुपयुक्त तुलना, वा एहन कारण प्रस्तुत करब जे कारण लगैत, मुदा असलमे नहि।

एहि लेल विचारक नैतिकता भाषा सँ आरम्भ होइत। प्रतिपक्षीक वाक्य ओकरे अर्थमे सुनू, कमजोर पुतला बना नहि हराउ; जीत तखन सम्माननीय जखन सत्य हारल नहि हो।

दुनियाक स्वतन्त्रता पर एक दृढ़ भरोसा एहि दृष्टिक नीचाँ अछि। गुलाब लाल अछि कारण हमरा लाल देखबाक इच्छा नहि; वस्तुक गुण हमर मनसँ बाहर अपन अस्तित्व राखि सकैत।

मुदा “सत्य” आ “सत्य जाँचबाक ढंग” एक बात नहि। वस्तु जे अछि से हमर सफलतासँ तय नहि, मुदा जँ ओकर बारे हमर विश्वास ठीक, व्यवहार बारम्बार ओकर पुष्टि करि सकैत।

पानी मानि रेत पियब चाहब तऽ असफलता भ्रम खोलत। ठीक रास्ता मानि बेठीक दिशा चलब तऽ दूरी बढ़त; जीवन कखनो विचारक परीक्षणशाला बनि अपन निर्णय सुनबैत।

ज्ञानक चार दुआर खुलैत। एक सोझे वस्तुसँ भेट, एक चिन्हसँ अदृश्यक अनुमान, एक समानतासँ नवा वस्तुक पहचान, एक विश्वसनीय वाणी सँ परोक्ष जानकारी।

पहिल दुआर—प्रत्यक्ष—सभसँ सहज लगैत, मुदा ओहो सरल नहि। आँखि रंग लैत, कान ध्वनि; मुदा मन बिनु चयनक अनुभूति केवल भीड़ बनि रहि सकैत।

पहिने कदाचित् केवल रंगक चमक, आकारक संकेत, ध्वनिक कच्चा स्पर्श। फेर मन नाम, वर्ग, सम्बन्ध, परिचय जोड़ैत— “ई लाल अछि”, “ई फल”, “ई ओही वस्तु जे काल्हि देखलहुँ।”

अनुभूति सामग्री, अवधारणा ओकर रूप। मात्र अनुभव बिनु व्यवस्था अँधरा भीड़, मात्र अवधारणा बिनु अनुभव खाली पात्र।

तैयो ई दू चरण वास्तविक जीवनमे अलग-अलग पकड़ल कठिन। जतय किछु देखल, ओतय पहिने सँ पृष्ठभूमि, भेद, चयन; “ई” कहबाक क्षणमे “ओ नहि”क छाया संगहि आबि जाइत।

दृष्टि भीतर सेहो घुमैत। इच्छा, पीड़ा, स्मृति, संकल्प—ई सभ बाहरी आँखिसँ नहि, मुदा मनक आन्तरिक स्पर्शमे प्रकट होइत।

कखनो पुरान सम्बन्ध वर्तमान अनुभूति के रंग देत। फूल देखिते गन्धक स्मृति उठल, बर्फ देखिते ठंढक अनुभूति; इन्द्रिय एक दुआर खोलैत, स्मृति दोसर कोठरीक हवा भीतर आनैत।

कखनो मनुष्य एहन प्रत्यक्षक दावो करैत जे सामान्य इन्द्रियसँ पार। एहि दावाक सत्यता सामान्य अनुभवसँ कठिन, मुदा परम्परा ओकरा मानवीय चेतनाक चरम सम्भावना रूपेँ ठाम दैत।

फेर अनुमानक पहाड़। धुँआ देखल, आगि नहि; मुदा अतीतक नियमित संगति एक अदृश्य अग्निक उपस्थितिक अधिकारपूर्ण संकेत बनैत।

अनुमान केवल “मोन पड़ल” नहि। चिन्ह आ जकर चिन्ह, दुनूक बीच स्थिर सम्बन्ध चाही; जतय धुँआ, ओतय आगि—आ जतय आगि नहि, ओतय धुँआ नहि—एहन परीक्षण।

उदाहरण तर्कक देह बनैत। एक मशाल जतय दुनू संग, एक नदी जतय दुनू अनुपस्थित; मात्र सामान्य नियम नहि, संसारक साक्ष्य तर्कक संग चलैत।

एक निष्कर्ष ठीक रूपमे निकलि सकैत, तैयो आधार झूठ हो सकैत। रचना वैध होएब आ निष्कर्ष वास्तविक होएब अलग प्रश्न; तर्कक ढाँचा एक बात, ओकर premise संसारसँ मेल खाइत कि नहि—दोसर।

एहि भेद सँ विनम्रता जन्मैत। सुन्दर तर्क सत्यक गारंटी नहि; झकझक भाषा, निर्दोष संरचना, गणितीय चमक—सभ बेठीक धरती पर महल बना सकैत।

तें विचार फेर संसार दिस लौटैत। देखू, नापू, परखू, फेर निष्कर्षक पयर जाँचू; कागज पर पूर्ण वृत्त, जीवनमे टेढ़ा रस्ता हो सकैत।

एक परम्परा तर्क केँ केवल शब्दक खेल मानय सँ इनकार करैत। विचारक रूप आ संसारक सामग्री अलग-अलग टापू नहि; सामान्य नियम अनुभवक दीर्घ खेत सँ उगैत।

“सभ मनुष्य नश्वर” कहब केवल चिन्हक खेल नहि। ई असंख्य विशेष अनुभवक ऊपर उठल एक सामान्य बोध; फेर एहि सामान्यतासँ एक विशेष मनुष्यक बारे निष्कर्ष लौटैत।

तर्क तें विशेष सँ सामान्य, फेर सामान्य सँ विशेषक पुल। न केवल ऊपर, न केवल नीचाँ; एक आवागमन जकर हरेक पगमे अनुभव आ रूप दुनू साथ।

ई दृष्टि विज्ञानक निकट लगि सकैत: नियम दुनियासँ सीखू, फेर नियमसँ नवा घटना बुझू, फेर नवा घटना नियम केँ चुनौती दे तऽ नियम पुनः जाँचू।

तुलना तेसर दुआर। कियो अज्ञात पशु देखे नहि; ओकरा कहल—गदह जकाँ, मुदा धारियुक्त। एक दिन समानता चिन्हित भेल, शब्दक अर्थ वस्तुसँ जुड़ि गेल।

एतय ज्ञान सम्बन्धक अछि—नाम आ वस्तुक बीच। समानता सेतु, मुदा सेतु तखने जखन पुरान किनार पहिने सँ ज्ञात; पूर्ण अज्ञात केँ पूर्ण अज्ञातसँ तुलना कएल जाए तऽ किछु नहि खुलत।

चौथ दुआर—विश्वसनीय वाणी। हम सभ किछु स्वयं देख नहि सकैत: दूर देश, सूक्ष्म जीव, पुरान घटना, विशेषज्ञ ज्ञान—जीवन साक्ष्य पर निर्भर।

मुदा साक्ष्यक मूल्य वक्ताक प्रतिष्ठासँ अधिक विश्वसनीयता पर। समझ मे आए, सत्यनिष्ठ हो, जाँचक विरुद्ध नहि; वाणी ज्ञानक साधन तखन, जखन विश्वास अन्ध समर्पण नहि बनय।

मानव वाणी सीमित, भूलक सम्भावना संग। किछु परम्परा एक परम सर्वज्ञ स्रोतक कल्पना सँ त्रुटिहीन वाणी बचाबय चाहैत; मुदा व्यवहारमे विश्वसनीयता तखनहु प्रश्न, अर्थ, व्याख्या आ विवेक माँगैत।

ज्ञानक एहि चार दुआरक पाछाँ एक आत्मविश्वास अछि: दुनिया जानल जा सकैत; भ्रम अछि, मुदा भ्रमक कारण सत्यक सम्भावना समाप्त नहि करैत।

रस्सी केँ साँप बुझल भूल अछि, मुदा भूलक अर्थ ई नहि जे न रस्सी अछि, न साँप; भूल सम्भव केवल तें कि किछु यथार्थ अछि जकरा बेठीक पहिचानल गेल।

सन्देह सेहो ज्ञानक चरण। जतय दू सम्भावना समान जोर सँ उठैत, मन ठहरैत; ठहराव व्यर्थ नहि, यदि ओ जांचक दिशा बनि सके।

मुदा सन्देह केँ घर बना लेल जाए तऽ यात्रा रुकत। प्रश्नक काम द्वार खोलब, सदा देहरी पर बैठल रहब नहि; निर्णय तखन उचित जखन वैध साधन, तर्क आ अनुभव मिलि स्पष्टता देत।

यथार्थक सूची फेर विस्तृत: देह, इन्द्रिय, मन, अनुभूति, इच्छा, कर्म, सुख-दुःख, आ एक एहन आत्मिक आधार जकरा चेतना, इच्छा, ज्ञानक आश्रय मानल जाए।

ई आत्मा देह नहि, कारण देहक गुण भौतिक। मन सेहो आत्मा नहि, कारण मन एक सूक्ष्म उपकरण; “जानब”, “चाहब”, “दुःखी होएब” एक अनुभवक विषयक ओर संकेत करैत।

तैयो चेतना स्वयं आत्माक स्थायी सार नहि—एहन विचित्र धारणा। देह-मनक संयोग मे चेतना प्रकट, मुक्त अवस्थामे आत्मा चेतन गुणसँ सेहो पार—ई विचार चुनौतीपूर्ण।

एतय सिद्धान्त स्वयं कठिन प्रश्न आमन्त्रित करैत। जँ मुक्त आत्मा गुणहीन, तऽ ओकर विशिष्टता केना? जँ अनेक आत्मा सर्वव्यापक, दुनू केँ अलग कहबाक कसौटी की?

दार्शनिक ईमानदारीक महत्त्व एतय फेर प्रकट। प्रणालीक असंगति छिपाओल जाए तऽ विश्वास जीतत, विचार हारत; प्रश्न छोड़ल जाए तऽ अगिला पीढ़ीक विचार लेल ठाम बाँचत।

बंधनक कथा अधिक परिचित: देह-मनसँ बेठीक पहचान, तखन इच्छा; इच्छासँ कर्म; कर्मसँ परिणाम, परिणामसँ फेर जन्म, सुख-दुःखक घुमावदार चक्र।

ज्ञान एहि गाँठ केँ काटबाक औजार। मुदा केवल पुस्तक-पाठ नहि; पहिने सुनब, फेर तर्क आ अनुभवसँ बुझब, अन्ततः जीवनमे सोझे सत्यापित करब।

दोसरक कथन उधारक दीप हो सकैत, मुदा मुक्ति उधारक उजास सँ पूर्ण नहि; एक क्षण आयत जखन जो बुझल से अपने अनुभवमे उतरबाक चाही।

तें बौद्धिक अनुशासन आ ध्यानक अभ्यास विरोधी नहि। तर्क बेठीक विचार साफ करैत, आ अन्तर्बोध बुझल सत्य केँ अस्तित्वक गहिर तहमे ले जाएत।

मुक्ति भविष्यक मृत्यु-पश्चात् पुरस्कार मात्र नहि। जीवन रहते बेठीक पहचानक गाँठ ढीली हो सकैत; ज्ञान यदि केवल मृत्यु पाछाँ काम करय, वर्तमान जीवनक सत्य पर ओकर अधिकार अधूर।

कर्मक चक्र समाप्त करबक विचार कठोर। न केवल बेठीक कर्म, अपितु फल-आसक्त क्रिया स्वयं बन्धनक बीज; पूर्ण स्वतन्त्रता सुख-दुःख दुनूक पारक अवस्था रूपेँ कल्पित।

फेर सर्वोच्च नियामकक प्रश्न प्रवेश करैत। जगतक सूक्ष्म कण अपने आप अद्भुत संरचना केना बनबैत? कर्मक निर्जीव नियम नैतिक फल ककरा केना बाँटत?

एक उत्तर बुद्धिमान नियोजनक कल्पना। मूल पदार्थ पहिने सँ, नियम पहिने सँ; सर्वोच्च सत्ता शून्यसँ रचनाकार नहि, संयोजक, निर्देशक, गति-दाता।

मुदा एहि उत्तरक भीतर सीमा सेहो। यदि नियम ओकरा बाँधैत, तऽ सर्वशक्ति कतेक? यदि मूल तत्व अनादि, तऽ “सृष्टि” शब्दक अर्थ फेर परिभाषित करबाक पड़त।

एक धार्मिक मन कहि सकैत—कृपा बिनु अंतिम ज्ञान कठिन। तखन विनम्रता, प्रार्थना, भक्ति मार्गक सहायक; मुदा तर्क फेर पूछत—कृपा आ न्याय, कर्म आ स्वतन्त्रता, सभक सम्बन्ध कतेक साफ?

एहि बहसक सौन्दर्य ई जे प्रश्नक दुआर बन्द नहि। तर्क देवता नहि, मुदा प्रहरी; श्रद्धा अपराध नहि, मुदा जाँचसँ मुक्त विशेषाधिकारो नहि।

सभसँ महत्वपूर्ण, विचारक लक्ष्य मात्र बहस जीतब नहि। ठीक ज्ञान दुःख घटाबय, भ्रम कम करय, कर्मक जाल सँ मुक्ति दिस लऽ जाए; तर्क जँ जीवनक दुःखसँ सर्वथा असम्बद्ध, ओ अपूर्ण कला बनि सकैत।

एहि कारण वाद-विवादक नैतिकता मुक्तिक परियोजनासँ जुड़ैत। झूठा कारण, शब्द-छल, जीतक उन्माद—ई सभ केवल बौद्धिक दोष नहि; मनक आसक्ति, अहंकार आ अज्ञानक रूप।

सत्यक खोज तखन चरित्रक साधना। ओकरा धैर्य चाही, विरोधी केँ सुनबाक साहस, भूल स्वीकारबाक विनम्रता, आ प्रमाण बदलल तऽ मत बदलबाक स्वतंत्रता।

आइक डिजिटल संसारमे एहि अनुशासनक आवश्यकता आरो तीव्र। एक चित्र, एक क्लिप, एक वायरल वाक्य—तुरन्त निष्कर्ष; मुदा प्रश्न पुरानहि: स्रोत की, प्रत्यक्ष की, अनुमान कतय, साक्ष्य कतेक विश्वसनीय?

एक अफवाह धुँआ जकाँ उठैत, मुदा हरेक धुँआ आगिक नहि हो सकैत। कखनो मशीन धुँआ बनबैत, कखनो धुंध, कखनो मंचित दृश्य; चिन्हक विश्वसनीय सम्बन्ध पहिने स्थापित होएबाक चाही।

तर्कक वैधता सेहो पर्याप्त नहि। बेठीक premise सँ perfectly valid निष्कर्ष निकलि सकैत; डिजिटल युगक बौद्धिक सावधानी ई भेद रोज याद रखबाक कला।

तुलना सेहो खतरनाक। “ई घटना ओहि जकाँ”—समानता कतेक वास्तविक, कतेक सतही? बेठीक उपमा मन केँ तेज निष्कर्ष दैत, मुदा सत्य केँ दूर धकेलि सकैत।

साक्ष्यक प्रश्न आइ हजार गुणा कठिन। कियो विशेषज्ञ? कियो विश्वसनीय? कियो केवल आत्मविश्वासी? वाणी जतेक दूर धरि पहुँचैत, जिम्मेदारी तितनी बढ़ैत।

एक सुन्दर बहसक आदर्श फेर समक्ष: पहिने दावा स्पष्ट, फेर कारण, फेर उदाहरण, फेर सम्बन्ध, फेर निष्कर्ष; श्रोता केँ छल नहि, रास्ता देखाउ ताकि ओ स्वयं पग गिनि सकय।

तर्कक ई पारदर्शिता लोकतांत्रिक गुणो अछि। जे निष्कर्षक रस्ता देखाइत, ओ श्रोता केँ सह-चिन्तक मानैत; जे केवल आदेश दैत, ओ विश्वास माँगैत, समझ नहि।

दुनिया स्वतन्त्र यथार्थ हो—ई विश्वास नम्रता सेहो सिखाबैत। हमर इच्छा वस्तु बदलैत नहि; सत्य हमरा प्रसन्न करबाक कर्तव्य नहि रखैत।

तेँ बेठीक सिद्ध होएब अपमान नहि। ओ यथार्थक स्वतन्त्रता सँ भेट; “हम बेठीक छलहुँ” कहब ज्ञानक पराजय नहि, ज्ञानक विजय।

अन्तमे पहाड़ फेर सामने। धुँआ अबो उठैत; आँखि धुँआ देखैत, मन अतीत स्मरण करैत, तर्क सम्बन्ध जाँचैत।

हम आगिक निष्कर्ष धरैत, मुदा संगहि जानैत: निष्कर्षक सम्मान ओकर विधि सँ, विधिक सम्मान ओकर ईमानदारी सँ, आ ईमानदारीक अंतिम मूल्य सत्य सँ।

यदि आगि मिलल—ज्ञान सफल। यदि नहि—निष्कर्ष सुधारू, नियम जाँचू, अनुभव बढ़ाउ; तर्कक गरिमा कठोरता नहि, आत्म-संशोधनक क्षमता।

आ यदि एहि निरन्तर जाँचक बीच मन अपन देह, विचार, इच्छा सँ अलग एक गहिर आत्मिक आधारक अनुभूति पबैत, तखन ज्ञानक यात्रा बाहरी पहाड़सँ भीतरक मुक्ति धरि फैलि सकैत।

धुँआक पार आगि खोजैत-खोजैत मन अन्ततः अपने भ्रमक धुँआओ देखबाक शिक्षा पबैत; आ कदाचित् सत्यक सभसँ कठिन अग्नि ओही, जे अहंकारक कुहरा जरा दैत अछि।

अनेक नामक पाछाँ एक अनाम उजास

पहिल भोरमे मनुष्य आकाश दिस देखलक, बादलक गर्जन सुनलक, धूपक गरमी, नदीक दान, अन्नक गन्ध, रोगक भय, वर्षाक प्रतीक्षा— आ जीवनक प्रत्येक शक्तिसँ संवाद करबाक लेल गीत रचल।

गीत केवल प्रशंसा नहि छल; ओ विनय, भय, आशा आ कृतज्ञताक मिश्र स्वर। स्वास्थ्य चाही, अन्न चाही, शक्ति, सन्तान, प्रतिष्ठा, सुरक्षा; धरतीक जीवन आ अदृश्य आश्रय बीच मनुष्य अपन शब्दक पुल बनौलक।

धीरे-धीरे शब्दक संग विधि आयल—कखन कहब, केना करब, की अर्पित करब। अनुष्ठान स्मृतिक अनुशासन बनल, समुदायक साझा लय; आ कर्मक नियम व्यक्ति केँ अपन लोक, परिवार आ जीवसभ प्रति दायित्व स्मरण करबैत।

मुदा हरेक जीवित विधिक भीतर एक जोखिम छिपल रहैत। जे संकेत छल, ओ लक्ष्य बनि सकैत; जे स्मरणक सहारा, ओ स्वयं पवित्रताक मालिक; ओतय शब्द जीवित अनुभूति सँ खाली भऽ केवल पुनरावृत्त ध्वनि बनि सकैत।

हाथ क्रिया सम्पूर्ण करत, मुदा हृदय अनुपस्थित। वाणी शुद्ध उच्चारण करैत, मुदा करुणा बाहर; संस्था विशाल होइत, मुदा भीतरक मौन प्रश्न धीरे-धीरे ओझराइत।

एहि क्षण धर्मक वस्त्र रहि सकैत, धर्मक प्राण कम। यंत्रवत् कर्म मनुष्य केँ भरोसा दैत—“हम सभ कएलहुँ”— मुदा आत्मा पूछैत रहैत: “की तोहर भीतर किछु बदलल?”

एहिए प्रश्न जंगलक शांत पथ दिस लऽ जाइत। भीड़, वेदी, सार्वजनिक क्रिया सँ दूर, पातक सरसराहट बीच मनुष्य पहिल बेर बाहरी चिन्हक पाछाँक अर्थ केँ सुनबाक कोशिश करैत।

वनक एकान्त खालीपन नहि; ओ बाहरी शोरक पाछाँक प्रयोगशाला। जतय आकाश विशाल, आगि छोट, श्वास स्पष्ट; ओतय प्रश्न बदलैत—“कुन अर्पण?” सँ “कुन ज्ञान?” दिस।

क्रिया सँ अर्थ, अर्थ सँ अन्तर्दृष्टि। प्रतीक कहैत—हमरा पार देखू; अग्नि कहैत—केवल लौ नहि, रूपान्तरण बुझू; जंगल कहैत—जड़ि बाहर नहि, भीतर धरि उतरू।

एहि भीतर-मोड़सँ आध्यात्मिकता निष्क्रिय नहि होइत। ओ बाहरी कर्तव्यक मूल्य नकरैत नहि; बस कहैत—कर्मक शरीर सँ आगाँ ओकर चेतना, ओकर भाव, ओकर सत्य खोजू।

पुरान गीतसभमे एक गहिर व्यवस्था बारम्बार चमकैत। सूर्य समय पर उठैत, ऋतु लौटैत, बीज सँ अंकुर, जन्म, वृद्धि, क्षय—सभ मानो एक अदृश्य लयक भीतर।

ई लय केवल प्रकृतिक गणित नहि। सत्य बोलब आ न्याय करबो ओही व्यापक समन्वयक भाग; मानो आकाशक नियम आ अन्तरात्माक नियम पूर्णतः अलग नहि।

जगत अराजक शोर नहि—एहन विश्वास मनुष्यक भीतर स्थिरता दैत। तारासभक गति, वर्षाक चक्र, जीवक जन्म-मृत्यु, आ मनुष्यक सत्य-असत्य—सभ एक नैतिक-ब्रह्माण्डीय संगीतमे जुड़ल।

मुदा एहि संगीतक स्वर अनेक नाम धारण करैत। कियो तेजक रूप, कियो वायुक, कियो जलक, कियो प्रभातक; हरेक शक्ति समक्ष मनुष्य ओहि क्षण ओकरा सर्वोच्च सम्मान दैत।

बाहर सँ देखल जाए तऽ ई अनेक देवताक भीड़ जकाँ। मुदा भीतरक काव्य कहैत—कदाचित् अनेक मुख एकहि अगाध स्रोतक; हरेक नाम एक खिड़की, आ आकाश खिड़कीसँ अधिक विशाल।

एक नामक स्तुति करैत मन यदि ओकरा सम्पूर्ण मानैत, ओ आवश्यक नहि जे बाकी अस्तित्व नकारैत; कदाचित् पूर्णता प्रत्येक रूपमे एक क्षण लेल चमकि उठैत।

जैना एके सूर्य हजार जलपात्रमे अलग-अलग प्रतिबिम्ब। कियो लालिमा, कियो काँपैत उजास, कियो टूटल रेखा; प्रतिबिम्ब अनेक, प्रकाशक मूल एक।

एहि अनुभूतिसँ बहुदेवताक भाषा धीरे-धीरे एकत्वक संकेत बनि सकैत। “ई” आ “ओ” प्रतिद्वन्द्वी नहि, एकहि अनाम सत्यक रूप; नाम भिन्न, स्वर भिन्न, मुदा गहिर मौन एक।

एकता एतय विविधता नष्ट करबाक आदेश नहि। फूलसभ रंग छोड़ि एक रंगक हो जाए—एहन नहि; अपितु हरेक रंगक भीतर एके प्रकाशक गुप्त उपस्थितिक बोध।

जीवित आ निर्जीव, चलैत आ स्थिर, ज्ञात आ अज्ञात—सभ एक व्यापक सम्पूर्णताक भीतर; मुदा सम्पूर्णता केवल एहि देखाइत जगतमे समाप्त नहि।

ओ जगतमे व्याप्त, तैयो जगतसँ अधिक। जैना समुद्र प्रत्येक लहरमे अछि, मुदा कोनो एक लहर समुद्र नहि; जैना हवा हरेक श्वासमे, मुदा एक श्वास हवा केर सीमा नहि।

ई विचार मनुष्यक धार्मिक कल्पना केँ एक नवा दिशा दैत। सर्वोच्चता कोनो दूर सिंहासन मात्र नहि; ओ निकटतम कणमे उपस्थित, आ तइयो हरेक कणक योगफलसँ पार।

अन्तरंग आ अतीत—दुनू साथ। धरतीमे उजास, उजासक पार अनाम गहराई; जगत ओकरे भीतर, मुदा ओ जगतक सीमा नहि।

तखन प्रश्न उठैत—की सर्वोच्च सत्य मनुष्य-जकाँ चेहरा रखैत? की ओकरा नाम, आकार, इच्छा, लिंग, कथा सँ सम्पूर्ण बाँधल जा सकैत? पुरान काव्यक सभसँ निर्भीक क्षण कहैत—नहि, भाषा एतय थाकि जाइत।

एक समय ईहो प्रश्न उठैत: आरम्भमे की छल? अस्तित्व? अनस्तित्व? अन्हार? जल? शून्य? इच्छा? प्रश्न प्रश्नक पाछाँ खुलैत, आ उत्तरक सिंहासन खाली रहि सकैत।

कियो निश्चित नहि—ई स्वीकार ज्ञानक पराजय नहि। सृष्टिक आदिम रहस्य समक्ष “हम नहि जानैत” कहब कदाचित् दार्शनिक विनम्रताक सभसँ ऊँच स्वर।

एतय धरि कि अंतिम दर्शकक बारेओ प्रश्न खुलल रहि सकैत। यदि कियो सभ देखैत हो, की ओ स्वयं आरम्भक रहस्य पूर्ण जानैत? ई साहसिक संशय आस्था केँ छोट नहि, ओकर अहंकार केँ छोट करैत।

अनाम सत्य शब्दक बाहर हो सकैत, तें प्रत्येक नाम उपयोगी होइतो अंतिम नहि; प्रत्येक रूप संकेत होइतो सत्यक सम्पूर्ण देह नहि।

ई बोध धर्म केँ कठोर सीमा सँ बचा सकैत। यदि नाम अंतिम नहि, तऽ दुसरक नाम शत्रु किएक? यदि रूप अनेक, तऽ उपासना भिन्न होइतो मूल रहस्य साझा हो सकैत।

मुदा सहिष्णुता केवल “सभ एक” कहि भेद मेटेनाइ नहि। भेद वास्तविक अनुभवक भाग; एकत्व ओहि भेदक भीतर सम्बन्ध देखबाक क्षमता, समानता थोपबाक नहीं।

जंगलक साधक फेर नगर लौटैत। ओ अनुष्ठान केँ छोड़ि देबाक घोषणा नहि करैत; अपितु क्रियाक भीतर आत्मा फेर भरबाक आग्रह लैत।

दीप जलाउ, मुदा उजास भीतर सेहो। अन्न बाँटू, मुदा दान अहंकारक सजावट नहि। शब्द कहू, मुदा शब्दक सत्य जीवनमे उतारू।

धर्मक बाहरी रूप जँ करुणा, संयम, सत्य, मैत्री सँ खाली, तऽ पवित्र ध्वनि सेहो खोखल; आ सामान्य जीवन जँ एहि गुणसभ सँ भरल, ओ स्वयं एक मौन अनुष्ठान।

एहिए संक्रमणक असली नाटक अछि: देवताक कृपा माँगैत मन धीरे-धीरे वास्तविकताक स्वरूप पूछैत; फल चाहैत भक्ति धीरे-धीरे ज्ञान चाहैत प्यासमे बदलैत।

“हमरा की भेटत?” सँ “सत्य की?” “कुन विधि सफल?” सँ “कुन जीवन साँच?” “कुन देवता सर्वोच्च?” सँ “अनेक नामक पाछाँ की एक?”

ई प्रश्नसभ आगाँक दार्शनिक वन केँ जन्म देत। मुदा मूल बीज एहि पुरान काव्य-संवेदनामे पहिने सँ छल: जगत व्यवस्था अछि, विविधताक भीतर एकता, नामक पार अनाम रहस्य।

सत्य आ न्यायक ब्रह्माण्डीय सम्बन्ध आइयो कठोर प्रश्न अछि। यदि प्रकृति नियम अनुसार चलैत, मनुष्यक नैतिकता कतय फिट होइत? पुरान दृष्टि उत्तर दैत—मानव सत्यता ब्रह्माण्डक लय सँ पूर्णतः अलग नहि।

ई उत्तर वैज्ञानिक समीकरण नहि, नैतिक काव्य। मुदा ओ मनुष्य केँ याद दिलबैत: झूठ केवल सामाजिक चाल नहि, व्यवस्था विरुद्ध एक भीतरक विघटन।

न्याय केवल कानूनक प्रावधान नहि, ओ साझा जगतमे समन्वय बनायब; असत्य, लोभ, हिंसा—अंततः सम्बन्धक जाल केँ तोड़ैत।

तें बाहरी अनुष्ठानक आलोचना स्वयं नैतिकता विरोधी नहि। उलटे, उद्देश्य ई जे नैतिकता विधिक नीचाँ दबि नहि जाए; प्रतीक जीवित रहय, मुदा मनुष्य प्रतीकक गुलाम नहि।

कोनो समुदाय लेल विधि स्मृति सहेजैत। गीत पीढ़ीक ज्ञान ढोइत, अग्नि समागमक केन्द्र, मंत्र अनुशासन; ई सभ मूल्यवान, जँ ओ जागरणक माध्यम रहय।

समस्या जखन माध्यम स्वयं उद्देश्य घोषित करैत। “ठीक शब्द कहि देल, तें सभ ठीक”—एहि विश्वासक भीतर आत्म-परीक्षणक दरवाजा बन्द हो सकैत।

मौन तखन सुधारक रूपमे लौटैत। किछु समय बिनु शब्द, बिनु कर्मक प्रदर्शन, केवल श्वास, आकाश, मृत्यु, प्रश्न—जतय आडम्बर टिकब कठिन।

मृत्यु स्वयं सभसँ कठोर वन। धन, पद, विधि, प्रतिष्ठा, नाम—सभ सीमा पर रुकैत; ओतय मन पूछैत, “जे बदलि नहि सकैत, से की? जे सभमे अछि, से की?”

उत्तर कदाचित् तुरन्त नहि। मुदा प्रश्नक गम्भीरता जीवन बदलि सकैत; कर्मक बाहरी पुरस्कार कम, भीतरक सत्य अधिक महत्वपूर्ण बनैत।

एकत्वक दृष्टि सामाजिक अर्थो पबैत। यदि अनगिनत रूप एक व्यापक जीवनमे जुड़ल, तऽ ककरो तुच्छ करब केवल ओकरा नहि, समग्रताक एक रूपक अपमान।

पशु, वृक्ष, नदी, मनुष्य—सभ उपयोगक वस्तु मात्र नहि। जगतक पवित्रता मंदिरक भीतर सीमित नहि; धरती स्वयं एक विस्तृत वेदी, जकर रक्षा नैतिक कर्तव्य।

मुदा प्रकृति-पूजा कहि एहि गहराई केँ छोट करब उचित नहि। प्रकृति केवल देवताक सूची नहि, ओ एकत्वक प्रतीक—दृश्य विविधताक भीतर अदृश्य सम्बन्ध।

आ एकत्व कहि जगत केँ ही परम मानि रुकबो पर्याप्त नहि। व्यापक सत्य जगतमे अछि, मुदा जगतसँ पारक रहस्य सेहो; एहिऐ द्वि-दिशा विचार केँ सूक्ष्म बनबैत—निकटता आ अतिक्रमण एक साथ।

ई शब्द कठिन लागि सकैत, मुदा अनुभव सरल: प्रियक चेहरामे प्रेम उपस्थित, मुदा प्रेम केवल एक चेहरामे समाप्त नहि; एक गीतमे संगीत, मुदा संगीत केवल ओहि गीतक कैदी नहि।

तैना परम अर्थ एक रूपमे प्रकट, मुदा कोनो एक रूप ओकर सम्पूर्ण कारागार नहि; प्रकटता आ पारता एक-दोसरक विरोधी नहि।

काव्य एतय दर्शनक पहिल भाषा बनैत। सूखी परिभाषा सँ पहिने रूपक, प्रश्न, विस्मय; किएक तँ जकरा भाषा सम्पूर्ण पकड़ि नहि सकैत, ओकरा कविता संकेत करि सकैत।

तें सर्वोच्च सत्यक चर्चा तर्कसँ पहिने गीतमे उगल, किएक तँ गीत विरोधी अर्थसभ केँ संग राखि सकैत: एक आ अनेक, निकट आ पार, नामित आ अनाम।

कविता कहि सकैत—“सभ ओही” आ संगहि “ओ सभसँ अधिक”; तर्क तत्क्षण सीमा माँगत, मुदा अनुभूति कखनो विरोधी किनारसभक बीच एकहि नदी सुनैत।

ई काव्यात्मक चेतना आगाँ दर्शनक बीज बनैत। प्रश्नसभ व्यवस्थित होएत, सिद्धान्त बनत, तर्क विकसित; मुदा मूल विस्मय नष्ट भऽ गेल तऽ दर्शन अपन जननी केँ भुला देत।

ज्ञानक आरम्भ कदाचित् आश्चर्यसँ। आकाश किएक? नियम किएक? मृत्यु किएक? सत्य किएक? अनेक रूपक बीच एकता किएक अनुभवल जाइत?

आ ज्ञानक परिपक्वता कदाचित् विनम्रतासँ। जतेक जानू ततेक अनाम क्षेत्र खुलैत; वाक्य समाप्त, आकाश नहि।

एक पुरान अग्निक राखि पर बिहानक हवा चलैत। राखि ठंढा, मुदा भीतर कतहु छोट अंगार; मानव चेतना सेहो बाहरी विधिसँ भीतरक प्रश्न धरि एही अंगार बचबैत आयल।

यदि हम केवल राखि सहेजि अंगार भुला दी, परम्परा मृत; यदि अंगारक नाम पर राखि, इतिहास, समुदाय सभ फेंकि दी, स्मृति टूटत।

जीवित मार्ग दुनूक बीच: रूपक सम्मान, प्राणक खोज; परम्पराक स्मृति, आ सत्यक स्वतन्त्र अग्नि।

अन्तमे अनेक नाम आकाशमे विलीन नहि होइत, ओ अपन-अपन रंग राखैत; मुदा मन जानि लैत—कोनो एक नाम आकाशक सीमा नहि।

आ अनाम उजास नामसभ केँ नकारैत नहि। ओ हुनका भीतर चमकबाक ठाम दैत, जैना एक सूर्य अनेक खिड़कीसँ अलग-अलग आकारमे घर भरैत।

जखन मन ई देखैत, प्रार्थना माँग मात्र नहि रहैत। ओ कृतज्ञता, विस्मय, मौन, प्रश्न आ नैतिक जिम्मेदारीक मिश्र स्वर; आ ज्ञान, पूजा, जीवन—तीनू धीरे-धीरे एके दिशामे मुड़ैत।

दिशा कोनो दूर स्वर्गक नहि, अपितु बाहरी चिह्न सँ भीतरक सत्य, अनेक रूप सँ सम्बन्धक एकता, आ हरेक नाम सँ अनाम रहस्य दिस।
एहि यात्रामे अंतिम वाक्य कदाचित् नहि। केवल एक खुलल आकाश, जतय मन कहैत: “जे कहि सकलहुँ, ओ संकेत; जे बचल, ओ उजास।”

भीतरक आकाश, बाहरक आकाश

राति भरि चन्द्रमा घटैत-बढ़ैत, ऋतु घरक देहरी बदलैत, बालकक देह युवक बनैत, पात झरैत, नदी अपन किनार फेर लिखैत; जे किछु आँखि देखैत, ओ समयक महीन हाथसँ निरन्तर बदलैत अछि।

एहि बदलैत दृश्य समक्ष पहिल प्रश्न धीरे उठैत: की बस एतबे—जन्म, वृद्धि, क्षय, मृत्यु, आ फेर नवा रूप? कि परिवर्तनक पाछाँ किछु एहन अछि जे स्वयं परिवर्तनक नदीमे नहि बहैत?

अपरिवर्तनक विचार परिवर्तनक अनुभवसँ ही जन्मैत। यदि किछु बदलित नहि, “स्थिर” शब्दक अर्थो कतय सँ आबित? बहाव देखिकऽ मन किनारक कल्पना करैत; लहर देखिकऽ समुद्रक गहराई पूछैत।

बाहरक जगत रंग, नाम, आकार, उपयोग, सम्बन्धक विशाल मेला। माटि घड़ा बनैत, घड़ा टूटि फेर माटि; रूप बदलैत, आधारक प्रश्न बाँचैत; नामसभ मानो अस्थायी पत्तिका, जकर पाछाँ किछु अधिक गहिर टिकैत।

एके पदार्थ अनेक आकारमे आबि सकैत। रूपक भिन्नता वास्तविक व्यवहारक संसारमे महत्त्वपूर्ण, मुदा यदि रूपकेँ अंतिम मानि ली, आधारक व्यापकता ओझराइत।

एहि बोधक अगिला पग साहसिक: दुनिया आ ओकर मूल आधार दू परस्पर अपरिचित देश नहि; जे आधार अछि, ओही अनेक नाम-रूपक माध्यमसँ दृश्य जगत बनि चमकैत।

मुदा “आधार” शब्द कहिते हम ओकरा फेर वस्तु बना देबाक जोखिम लैत छी। कुर्सी जकाँ, पर्वत जकाँ, मनुष्य जकाँ किछु कल्पना; जखन कि गहिर वास्तविकता कदाचित् हरेक कल्पना सँ पूर्व, हरेक नाम सँ अधिक व्यापक।

भाषा सीमा धरि लऽ जाइत, फेर हाँफि रुकैत। जकरा शब्द व्यक्त करैत, ओकरा शब्द सम्बन्ध, भेद, गुण देत; जतय द्वितीय किछु नहि, ओतय तुलना आ विशेषणक सीढ़ी स्वयं समाप्त।

तें सर्वोच्च बात कखनो “ई अछि” सँ कम, “ई नहि, ओ नहि” सँ अधिक खुलैत। न आकार, न लिंग, न सीमित इच्छा, न ककरो एक पूजा-रूपक कैद; हरेक निषेध जकाँ भाषा अपनहि बनाओल मूर्ति हटबैत चलैत।

ई नकार शून्यता नहि। जैना मूर्तिकार पत्थरसँ अनावश्यक अंश हटबैत, तैना विचार सीमित विशेषण हटबैत ताकि अनिर्वचनीयक लेल ठाम बनय।

आश्चर्य एतय—जे भाषा सँ पार, ओ जीवन सँ दूर नहि। आँखि जकरा देखि नहि सकैत, कदाचित् देखनाइ ओकरे उजासमे; मन जकरा सोचि नहि सकैत, सोचनाइ ओकरे सम्भावनामे।

श्वास जकरा पकड़ि नहि सकैत, श्वासक लय सेहो ओहि गहराईमे। जगत जकरा घेरि नहि सकैत, जगत ओकरा भीतर; दूरी आ निकटता एकहि वाक्यक दू असम्भव किनार जकाँ मिलैत।

बाहरक प्रश्न धीरे भीतर मुड़ैत। मनक घर खोलू—स्मृति, भय, इच्छा, प्रेम, लज्जा, क्रोध, कल्पना, एक निरन्तर बदलैत मेला; भीतर सेहो स्थिर वस्तु सहज नहि भेटैत।

आइक विचार काल्हि नहि, भावनासभ मौसम जकाँ। शरीर बदलैत, मन बदलैत, परिचय बदलैत; तखन “हम” कहैत आवाजक सभसँ गहिर आश्रय ककरा पर?

सामान्य अहंकार कहैत—ई देह हम, ई स्मृति हम, ई नाम हम। मुदा देहक कोश बदलल, स्मृति भूलल, नाम समाजक दान; यदि एहि सभमे परिवर्तन, तऽ आत्मीय निरन्तरता कोन तहमे?

एक मौन साक्षित्वक अनुभूति प्रश्नक पाछाँ उगैत। जे दुःख केँ जानैत, ओ दुःख मात्र नहि; जे विचार देखैत, ओ विचार मात्र नहि; जे स्मृतिक आगमन-प्रस्थान देखैत, ओ स्मृतिसभक कुल योगसँ अधिक हो सकैत।

ई साक्षी ककरो निजी अहंकारक मुकुट नहि। उलटे, अहंकारक कठोर सीमा पिघलिते ओ स्पष्ट; “हम अलग, तूँ अलग”क दीवारक पाछाँ चेतनाक एक व्यापक समुद्रक संकेत।

भीतर खोजल गहराई आ बाहर खोजल आधार फेर आमनेसामने ठाढ़। की दुनू अलग? एक बाहरी मूल, एक भीतरक आत्मिक ज्योति? कि ई भेद स्वयं दृष्टिक अधूरापन?

गहिर अनुभूति कहैत—भीतरक आकाश आ बाहरक आकाशक बीच दीवार घरक अछि, आकाशक नहि; घड़ा टूटल तऽ घड़ाक भीतरक ठाम बाहरक ठामसँ अलग कतय रहल?

ई एकत्व विचारक निष्कर्ष भरि नहि। यदि केवल वाक्य—“सभ एक”—तऽ अहंकार तुरन्त नया पट्टी पहिरि लेत; साँच एकत्व ओतय जखन व्यवहारमे परक दुःख सचमुच पराया कम लगय।

जे अपने भीतर ओही मूल उजासक आभास पबैत, ओ ककरो नीच, निरर्थक, उपयोगमात्र वस्तु केना मानत? अद्वैतक नैतिक परीक्षा करुणामे, शब्दक चमकमे नहि।

मुदा इन्द्रियक संसार झूठ कहल जाए—एहन सरल निष्कर्षो खतरनाक। भूख वास्तविक अनुभव, रोग वास्तविक, प्रेमक आँसू वास्तविक; प्रश्न ई नहि जे जगत “नहि”, अपितु ओकर सत्यक स्तर कतेक अंतिम।

सपना जागरणमे मेटैत, मुदा सपना देखैत समय ओ प्रभाव करैत। रस्सी बेठीक देखल जा सकैत, मुदा भ्रमक अनुभव घटित भेल; एहि सँ हम सीखैत—अनुभव वास्तविक होइतो ओकर व्याख्या अंतिम नहि हो सकैत।

दैनिक जगत उपयोग, नैतिकता, विज्ञान, सम्बन्धक ठोस क्षेत्र। एतय कारण काम करैत, शरीरक नियम, सामाजिक जिम्मेदारी; ई स्तर तुच्छ नहि, अपितु जीवनक आवश्यक धरती।

मुदा एहि धरतीक पाछाँ एक गहिर तहक खोज अछि जतय ज्ञाता, ज्ञान आ ज्ञेयक त्रिकोण स्वयं शांत हो; जतय अनुभव कोनो वस्तु “जानबाक” नहि, अपितु अस्तित्वमे जागबाक हो।

ज्ञान तें दूर रंग धारण करैत। एक भाषा, व्याकरण, ताराक गणना, विधि, शास्त्र, तथ्य, तर्क; दोसर एहन सोझ बोध जकरा उधार नहि लेल जा सकैत।

पहिल ज्ञान जीवन चलबैत, संसार समझबैत, स्मृति सहेजैत। दोसर पूछैत—जे जानैत, ओकर वास्तविक स्वरूप की? पहिल वस्तु बढ़बैत, दोसर ज्ञाताक आधार पर उजास दैत।

बहुत पढ़लासँ पुस्तकक संख्या बढ़ैत, आवश्यक नहि कि बन्धन घटय। तीक्ष्ण बुद्धि बहस जीत सकैत, आवश्यक नहि कि भय शान्त; एहि लेल उच्चतर ज्ञानक कसौटी जीवनक रूपान्तरण।

इन्द्रियक शोर कम हो, मनक हठ धीमा, सत्य लेल तीव्र लालसा आ चरित्रक निर्मलता— तखन ज्ञान अवधारणासँ अनुभव दिस पग बढ़ा सकैत।

मार्ग चार साँस जकाँ खुलैत। पहिने जीवन साफ—आचरण, संयम, सत्य, इच्छा पर मर्यादा; गन्दे जलमे चन्द्रमा देखबाक जिद सँ पहिने जल स्थिर हो।

फेर सुननाइ—कोनो जीवित अनुभवी आवाज, कोनो गहिर वाक्य, कोनो एहन संकेत जकरा केवल सूचना नहि, दिशा मानि ग्रहण कएल जाए; सुननाइ अन्ध स्वीकार नहि, सम्भावनाक दुआर खोलब।

फेर मनन—प्रश्न, तर्क, शंका, पुनर्विचार। जे सुनल, ओकरा बुद्धिक अग्निमे राखू; विश्वास यदि सत्य अछि तऽ प्रश्नसँ डर किएक, असत्य अछि तऽ बाँचब किएक?

फेर ध्यान—विचारक पुनरावृत्ति नहि, जीवनक गहराईमे उतरब। जैना नदी समुद्रमे नाम छोड़ैत, तैना ज्ञाता अपन सीमित केन्द्र धीरे-धीरे व्यापक चेतनामे ढीला पड़ैत।

ई अनुभव मृत्यु पाछाँक पुरस्कार नहि। जीवित देह, जीवित सम्बन्ध, जीवित कर्मक बीचो मनुष्य अज्ञानक मूल भ्रमसँ स्वतन्त्र हो सकैत—एहि जीवनमे।

अमरता तें अनन्त वर्षक कैलेंडर नहि। समयक भीतर देह सदा चलैत रहय—ई बालसुलभ सपना; अमरता कदाचित् ओ बोध जे वास्तविक आधार जन्म-मृत्युक मापसँ बाहर।

जन्म देहक, मृत्यु देहक; विचार उठैत, गिरैत। यदि आत्मीय गहराई एहि सभक पाछाँ असीम, तऽ अमरता अधिक “कतेक देर”क प्रश्न नहि, “कुन स्तर”क बोध।

जीवित मुक्ति संसार छोड़ि निष्प्राण होएब नहि। ओही घर, ओही परिवार, ओही रोग, ओही काम; मुदा “हम केवल एहि सीमित रूप”क अज्ञान कम।

एहि बदलल दृष्टिमे कर्म थामैत नहि, पकड़ घटैत। प्रेम रहैत, स्वामित्व कम; ज्ञान रहैत, गर्व कम; दुःख आबैत, मुदा भीतरक सम्पूर्ण आकाश केँ कैद नहि करैत।

मुक्त व्यक्ति बाहरी चिह्नसँ असाधारण देखाए आवश्यक नहि। कदाचित् ओ अधिक सामान्य—कम प्रदर्शन, कम भय, कम बचाव; कारण ओकर परिचय बाहरी तख्ती पर कम निर्भर।

ई शिक्षा व्यक्ति-पूजासँ सावधान करैत। सत्य कहनिहारक नामसँ अधिक सत्य महत्वपूर्ण; अनाम अनुभवक मूल्य लेखकक प्रसिद्धिसँ नहि मापल जाए।

कियो अनेक पीढ़ीमे एके गहिर बात अलग भाषा मे कहैत। वाक्य विरोधी लगि सकैत, शैली बिखरल, मुदा अनुभवक केन्द्र बारम्बार एकहि दिशामे संकेत करैत।

एहि कारण असंगति सिदिखन कमजोरी नहि। कखनो एके पर्वत अलग घाटीसँ देखल; एक आवाज जगतक परिवर्तन पर, दोसर आत्माक मौन पर, तेसर एकत्व पर जोर।

व्यवस्थित प्रणाली पाछाँ आबैत; पहिने अनुभवक बिजली। छोट वाक्य, संवाद, प्रश्न, रूपक—मानो बादलमे अकस्मात् चमक, जकरा व्याख्या पीढ़ी दर पीढ़ी अलग नकाशामे कैद करबाक कोशिश करैत।

मुदा बिजली नक्शा नहि। सिद्धान्त अनुभवक पाछाँ चलैत; जतय सिद्धान्त अनुभवक स्थान लेत, शब्द फेर ओहिऐ पुरान अनुष्ठान बनि सकैत।

तें मार्ग निरन्तर आत्म-संशोधन माँगैत। हम ककरा पकड़ि रहल छी—रूप कि अर्थ? वाक्य कि अनुभव? शिक्षकक व्यक्तित्व कि सत्यक दिशा?

एक धनुषक रूपक मनमे उठैत, मुदा ओकर कथा नया: मन स्वयं धनुष, सजगता तान, इच्छा शुद्ध तीर; लक्ष्य दूर वस्तु नहि, सीमित केन्द्रक पारक व्यापक वास्तविकता।

तीर लक्ष्य सँ टकरा अलग रहय तऽ मिलन अधूर। साँच ध्यान ओतय जतय तीर अपन पृथक अहंकार भूलि जतय सँ निकलल, ओही अनन्त क्षेत्रमे विश्राम पबैत।

हृदयक भीतर एक कमल-जकाँ कोना कल्पना करू जतय नस, स्मृति, श्वास, भय, आशा सभ मिलैत; ओहि केन्द्रमे मौन बैठि प्रश्न करू—“जे सभ अनुभवित, ओकरे आधार की?”

उत्तर शब्दसँ पहिने एक सन्नाटा हो सकैत। सन्नाटा खाली नहि—अत्यन्त जाग्रत; जैना भोरसँ ठीक पहिने आकाश, जखन प्रकाश अखन नाम नहि पेलक।

एक दिन मनुष्य आईना समक्ष अपने केँ छोट, डरल, सीमित रूपमे देखैत। वर्षसभ धरि समाजक आवाज कहैत—तूँ एतबे; फेर कखनो भीतरक दर्पण साफ भऽ जखन गहिर रूप देखाइत, सम्पूर्ण चाल बदलि जाइत।

नव पहचान अहंकारक विशाल मूर्ति नहि—“हम सर्वोच्च छी”क उन्माद नहि; अपितु सीमित अहंकर दम्भ पिघलि, व्यापक अस्तित्वमे अपन स्थान पहिचानब।

जतय “हम” अनन्त आधारसँ जुड़ल, “तूँ” सेहो। एहि बोधक परिणाम श्रेष्ठता होएत तऽ समझ अधूर; साँच परिणाम समता, करुणा, निर्भयता, आ मृत्यु समक्ष गहिर शान्ति।

मृत्यु तबो दुःख दे सकैत—प्रियक अनुपस्थिति, देहक पीड़ा। मुक्ति पत्थरक संवेदनहीनता नहि; ओ संवेदनक बीच एक गहिर स्थिरता, जे टूटैत रूपसँ अपन सम्पूर्ण स्वरूप नहि बाँधैत।

अनाम वास्तविकता केँ पाबय लेल नामसभ नष्ट करबाक आवश्यकता नहि। नाम व्यवहारक फूल; केवल फूल केँ जड़ि, माटि, वर्षा, सूर्यसँ स्वतन्त्र अंतिम वस्तु न मानू।

जगतक सौन्दर्य तखन कम नहि, अधिक। हरेक रूप एक अनन्त आधारक क्षणिक अभिव्यक्ति; पातक नस, बालकक हँसी, वृद्धक हाथ—सभ अस्थायी, तें अमूल्य।

अपरिवर्तनक बोध परिवर्तन सँ घृणा नहि सिखाबय। उलटे, परिवर्तन केँ ओकर ठाम दैत; जैना आकाश बादल केँ रोकैत नहि, मुदा बादल आकाशक पूर्णता नहि।

भीतरक आकाश विचार, भावना, सपना केँ गुजरए दैत। बाहरक आकाश ऋतु, पक्षी, बादल, धूलि; दोसरक भीतर पहिलक रूपक देखिते मनक दीवार हलुक।

कदाचित् एहि कारण बाहरी आ भीतरी खोज अन्ततः एके दुआर पर भेटैत। जगतक मूल पूछैत-पूछैत हम चेतनाक मूल पर पहुँचैत; चेतनाक मूल पूछैत-पूछैत जगतक विभाजन बदलि जाइत।

आ अन्तमे जे बचैत, ओकरा नाम देब फेर आरम्भ मात्र। नाम कहैत—“एतय देखू”; मुदा उंगली केँ चन्द्रमा मानि लेब पुरान भूल।

तैं कविता अपन अंतिम पंक्तिमें सिद्धान्त नहि, एक अभ्यास छोड़ैत: बाहर जे देखू, ओकर परिवर्तन जानू; भीतर जे उठय, ओकर गुजरनाइ; आ दुनूक पाछाँ जे मौन उजास अनुमानित हो, ओकरा अहंकारक वस्तु नहि बनाउ।

कखनो राति बहुत साफ हो तऽ खिड़की खोलू। बाहर तारासभ, भीतर श्वास; एक क्षण लेल पूछू—दू आकाश वास्तवमें कतय अलग अछि?

उत्तर यदि नहि आबय, तऽ घबराउ नहि। कखनो गहिरतम ज्ञान वाक्य बनि बाहर नहि आबैत; ओ केवल जीवनक चाल बदलि दैत—कम भय, कम विभाजन, अधिक उजास।

तीन दुआर, एके अनन्तक दिस

एके पुरान आकाशक नीचाँ तीन दुआर खुलल अछि। पहिल दुआर कहैत—भेदक अन्तिम सत्य पर भरोसा नहि करू; दोसर कहैत—भेद वास्तविक अछि, मुदा एक व्यापक जीवनक भीतर; तेसर कहैत—भेद ही अनुभवक मूल, ओकरा मेटेनाइ सत्यक अपमान।

तीनू एके प्रश्नक आसपास घर बनबैत: जगत जे बदलैत अछि, ओकर अन्तिम आधार की? हम जे “हम” कहैत छी, ओकर परम अर्थ की? आ मुक्ति—मिलन, बोध, कि सम्बन्ध?

पहिल दुआर भीतर प्रवेश करिते भाषा धीमी भऽ जाइत। वस्तु, गुण, रूप, नाम—सभक सत्य व्यवहारमे अछि, मुदा कोनो एहन ज्ञान सम्भव जे एहि सभ भेद केँ पाछाँ छोड़ि गहिरतर वास्तविकता देखय।

एतय सत्यक माप केवल “अछि कि नहि” नहि। एक अनुभव दोसर अनुभवसँ सुधरि सकैत, एक दृष्टि गहिर दृष्टि समक्ष छोट; जे अन्ततः ककरो द्वारा निरस्त नहि हो, ओहि दिशामे यथार्थक सर्वोच्च मान।

दैनिक जीवनक सत्य तें झूठ नहि। मेज मेज अछि, आगि गरम, रोगक औषधि चाही, न्याय अन्यायसँ अलग; मुदा एहि सभ सत्यक सीमा अछि—ओ सम्बन्ध, इन्द्रिय, बुद्धि, समयक भीतर।

सपना जागरणमे बदलि जाइत, सामान्य दृष्टि विज्ञानमे सुधरैत, विज्ञानो गहिरतर अनुभवक समक्ष अपन सीमा देख सकैत; सत्यक स्तर बदलैत, मुदा प्रत्येक नीचल स्तर अपन क्षेत्रमे काम करैत।

एहि कारण जगत केँ “किछु नहि” कहब गलत। ओ अनुभव, जिम्मेदारी, कर्म, प्रेमक क्षेत्र; मुदा ओकरा पूर्ण स्वतन्त्र, अन्तिम, अपने बल पर टिकैत वास्तविकता मानबो अधूर।

नाम आ रूप मानो रंगीन काँच। सूर्यक उजास लाल, नील, हरियर बनि घरमे आबैत, मुदा रंगीन काँच उजासक मूल रंग नहि—ओ प्रकाशक एक परिस्थितिजन्य रूप।

अज्ञान तखन अन्हार मात्र नहि; ओ रंगीन काँच केँ सूर्य स्वयं मानि लेबाक आदत; आ ज्ञान काँच तोड़ब नहि, काँचक पारक प्रकाश केँ पहचानब।

मन जे देखैत अछि, ओ अपन पुरान स्मृति, भाषा, अपेक्षा संग लैत। कखनो शंका केँ सत्य, कखनो आकृति केँ सार, कखनो देह केँ सम्पूर्ण आत्मा; हम अनुभव पर अतिरिक्त रूप चढ़बैत आ फेर ओहि चढ़ाओल रूपक गुलाम बनैत।

जे सीमित परिस्थिति कारण एक देखाइत, ओकरा अन्तिम वास्तविकता मानब बन्धन। घड़ाक भीतरक आकाश घड़ासँ छोट लगैत, मुदा घड़ा टूटिते बुझाइत—सीमा पात्रक छल, आकाशक नहि।

एहि पहिल दुआरमे आत्मा आ परम आधारक दूरी धीरे समाप्त। भीतरक मौन साक्षी आ बाहरक अपरिवर्तनशील गहराई दू वस्तु नहि, एकहि वास्तविकताक दू नाम—एहन बोधक दिशा।

मुक्ति तें मृत्यु पाछाँक पुरस्कार नहि। एहि देहमे, एहि सांसारिक कामक बीच, सीमित अहं केँ पूर्ण सत्य मानबाक भूल कटि जाए—एहिज जीवित स्वतंत्रता।

ई ज्ञान किताबक निष्कर्षसँ अधिक अस्तित्वक परिवर्तन। सुनू, विचारू, जाँचू, ध्यानमे उतारू; जतय ज्ञाता आ ज्ञेयक कठोर दूरी गलय, ओतय अवधारणा अनुभव बनि सकैत।

मुदा एहि दुआर पर दोसर आवाज आपत्ति करैत: “यदि सभ भेद अन्ततः पिघलि जाए, प्रेमक ‘तूँ’ कतय? यदि गुण, सम्बन्ध, व्यक्ति सभ नीचल सत्य, तऽ जीवित भक्ति ककरा सँ?”

दोसर दुआर खुलैत—एतय अनन्त सूखा निराकार खालीपन नहि। ओ भरल अछि चेतना, गुण, अनन्तता, करुणा, इच्छा, सम्बन्ध; एकता भेद केँ खा नहि जाइत, भेद केँ अपन देहमे ठाम दैत।

जैना शरीर अनेक अंगसँ एक व्यक्ति। हृदय पयर नहि, आँखि हाथ नहि, तैयो सभ एक देहक भीतर; भिन्नता रहैत, समग्रता सेहो—एकता “एकरूपता” नहि।

एहि दृष्टिमे जीव आ जगत वास्तविक। ओ अनन्त आधारसँ बाहर स्वतन्त्र राज्य नहि, मुदा ओकर वास्तविक अंग, गुण, रूप—जिनका मेटा देलासँ पूर्णता अधूरी।

सम्पूर्णता अपन भागक विरोधी नहि। एक वृक्ष जड़ि, तना, पात, फूल, फल सँ बनैत; फूलक अद्वितीयता वृक्षक एकता केँ तोड़ैत नहि, वृक्षक जीवन ओकरे भीतर फूटैत।

अनन्त आधार तें निर्गुण शून्यता नहि। ओ गुणहीन कहिते मनुष्यक प्रेमक भूख, प्रार्थनाक आकांक्षा, नैतिक सम्बन्ध—सभ जकाँ जीवनक मूल अनुभव ओकरा सँ दूर पड़ि सकैत।

दोसर दुआर कहैत—परम सत्यक गुण वास्तविक। करुणा कल्पना नहि, ज्ञान आकस्मिक नहि, शक्ति केवल दृष्टिभ्रम नहि; व्यक्तित्वक सर्वोच्च रूपमे अनन्तक कल्पना धार्मिक जीवन केँ रक्त आ स्पन्दन दैत।

सृष्टि एतय शून्यसँ जादू नहि। जीव, पदार्थ, अनन्त आधार—सम्बन्ध दीर्घ; जगत चक्रवत् रूप बदलैत, समेटाइत, फेर विस्तृत, मुदा अस्तित्वक बीज नष्ट नहि।

मनुष्यक स्वतन्त्र इच्छा तखन नैतिक जिम्मेदारीक आधार। कर्मक फल केवल बाहरक दण्ड नहि; हमर चुनाव हमर देह, परिस्थिति, भविष्यक रूप रचैत।

मुदा प्रश्न कठिन: यदि सर्वज्ञ, सर्वदयालु, सर्वशक्तिमान परम व्यक्ति अछि, तऽ पीड़ाक विशाल इतिहासक संग एहि तीन गुणक मेल केना?

ई प्रश्न श्रद्धाविरोधी नहि। ओ प्रेमक अवधारणा केँ गंभीर बनबैत; जतय निर्दोष पीड़ा अछि, ओतय करुणामय ईश्वरक अर्थ आसान नारा नहि रहि सकैत।

दोसर दुआर उत्तरक एक दिशा स्वतन्त्र इच्छा दिस खोलैत। जीव केँ कर्मक अधिकार, तें कर्मक दोष परम पर नहि; मुदा प्रकृति, जन्म, विषमता, दुर्घटना—सभ प्रश्न एहि एक उत्तरसँ पूर्ण समाप्त नहि।

एहि परम्परामे बन्धन अज्ञान आ देहक संग बेठीक पहचानसँ। हम शरीरक दुःख, इच्छा, अहंकार केँ “हमर सम्पूर्ण स्वरूप” मानि लैत; एहि बेठीक गाँठ सँ कर्म, पुनरावृत्ति, सुख-दुःखक चक्र।

मुक्ति लेल काज, ज्ञान, प्रार्थना, प्रेम—सभ रस्ता बनैत, मुदा अन्ततः आत्मसमर्पणक गहिरता मुख्य; “हम अपने बल पर सम्पूर्ण”क अहंकार प्रेमक समक्ष पिघलैत।

समर्पण दासता नहि यदि प्रेम स्वतन्त्र। ओ ई स्वीकार—हम व्यापक जीवनक अंश छी, हमर पूर्णता अलगावमे नहि, सम्बन्धमे।

मुक्ति एतय विलय नहि। अन्तिम निकटतामे व्यक्ति अपन स्वर राखैत; जैना दीपक सूर्यक प्रकाशमे हराइत नहि, अपितु अधिक उज्ज्वल बुझाइत।

प्रेमक पराकाष्ठा “तूँ” केँ “हम”मे मेटेनाइ नहि, अपितु एहन एकता जतय दूरी बाधा नहि, भिन्नता शत्रु नहि; अनन्त निकटता, मुदा व्यक्तित्वक स्मृति बाँचल।

पहिल दुआर कहत—जतय भिन्नता रहि गेल, अंतिम एकत्व कतय? दोसर उत्तर देत—जतय भिन्नता मेटल, प्रेमक सम्बन्ध कतय? विचारक आकाश दुई दिशाक बिजली सँ चमकैत।

तेसर दुआर एतय आरो कठोर भेदक घंटी बजबैत। ओ कहैत—ज्ञान स्वयं भेद पर टिकल; ज्ञाता आ ज्ञेय अलग नहि तऽ “जानब” शब्दक अर्थ की?

हम फूल केँ तें देखैत छी जे फूल हम नहि। ध्वनि तें सुनैत जे कान आ ध्वनि अलग; हरेक प्रत्यक्षमे भिन्नता अनुभवक मूल व्याकरण।

एहि दृष्टिमे जगत पूर्ण वास्तविक आ बहुल। परम, जीव, पदार्थ—तीन स्वतन्त्र श्रेणी, यद्यपि निर्भरता समान नहि: सर्वोच्च स्वतन्त्र, बाकी ओकर आश्रित।

भिन्नता पाँच दिशासँ फैलैत: जीव-परम, जीव-जीव, जीव-पदार्थ, पदार्थ-पदार्थ, आ विभिन्न वस्तुसभक मूल भेद; यथार्थक बनावट एक विशाल बहुवचन।

एकता एतय सम्बन्ध मेटा नहि सकैत। यदि सभ एके, अनुभवक विविधता भ्रम कहल; मुदा भ्रम कहनिहार चेतना स्वयं भिन्नता उपयोग करैत—सत्य/भ्रम, ज्ञाता/ज्ञेय।

तेसर दुआरक प्रश्न धारदार: “जकरा नकारब लेल तूँ भेदक भाषा प्रयोग करैत, ओहि भेद केँ अन्ततः असत्य केना कहब?”

परम एतय पूर्ण व्यक्तित्व। सृष्टि, संरक्षण, विनाशक अधिपति; जीव आ पदार्थ शाश्वत प्रकारसँ भिन्न, मुदा स्वतन्त्र नहि—निर्भरता संबंधक मूल।

मुक्ति प्रेम आ कृपा द्वारा। ज्ञान पर्याप्त नहि, कारण ज्ञाता परम नहि बनैत; व्यक्ति व्यक्तिही रहैत, अनन्त महिमाक निकट सुख पबैत, मुदा पहचान नष्ट नहि।

ई दृष्टि भक्ति केँ चरम प्रतिष्ठा दैत। प्रेमक अर्थ भिन्नता चाही—प्रेमी आ प्रिय; यदि दुनू पूर्णतः एक, भक्ति केवल अज्ञानक अवस्था बनि जाएत—एहि आपत्ति तेसर दुआरक।

मुदा कठोर पूर्ण-भेद अपन कठिन प्रश्न लऽ कऽ आबैत। यदि तीनों मूल सत्ता सर्वथा असंश्लिष्ट भिन्न, तऽ सम्बन्धक पुल कोन सामग्री सँ बनल?

पूर्ण भिन्नता सम्बन्ध केँ कठिन बनबैत। यदि एकक अस्तित्व दोसर पर प्रभाव नहि, निर्भरता, शासन, प्रेम, कृपा—ई सभ शब्द संबंध मानैत; तखन पूर्ण भेद स्वयं नरम पड़ैत।

अतः तीन दुआरक बहस केवल धर्मशास्त्र नहि, “एकता” आ “भिन्नता”क तार्किक सीमा; एकता अधिक तऽ व्यक्ति पिघलैत, भिन्नता अधिक तऽ सम्बन्ध टूटैत।

पहिल दुआरक सभसँ नाजुक बिन्दु—जगतक स्थिति। ओ कहैत: व्यवहारमे सत्य, अन्तिम ज्ञानमे अपेक्षिक; दुनिया न शून्य, न परम—एक निर्भर प्रकट रूप।

एहि सूक्ष्मता केँ “जगत झूठ” कहि छोट करब गलत। भ्रमो किछु आधार बिनु नहि; छाया दीवार पर अछि—छाया सूर्य नहि, मुदा दीवार आ प्रकाश बिनु छाया कतय?

दोसर दुआर एहि शब्द “प्रकट” पर असंतुष्ट। ओ कहैत—फूल वास्तविक, केवल आधारक छाया नहि; यदि अनन्त पूर्ण अछि, तऽ ओकर विविधता वास्तवमे ओकर ऐश्वर्य, दोष नहि।

जगत शरीरक जकाँ परम जीवनक वास्तविक अंग। रूप बदलैत, चक्र चलैत, मुदा प्रत्येक जीवक आत्मीय अर्थ; सृष्टि प्रेमक क्षेत्र, केवल अज्ञानक पडदा नहि।

तेसर दुआर आओर जोर सँ कहैत—“अंग” कहिते अभेदक गन्ध बचल। जीव भगवानक अंग नहि, जीव अलग; निर्भरता समानता नहि, प्रेम निकटता अछि, पहचानक विलय नहि।

तीनू मुक्ति केँ अलग चित्रमे देखैत। एक—अज्ञान कटि अपने अनन्त स्वरूपक बोध; दोसर—व्यक्तित्व बचल, प्रेमक पूर्ण संगति; तेसर—व्यक्ति सदैव अलग, कृपाक निकटता ही चरम सुख।

तीनू कर्मक बन्धन मानैत, अज्ञानक भूमिका मानैत, मुदा उपचारमे भार बदलैत: कतहु ज्ञान प्रधान, कतहु ज्ञान प्रेमक दिशा बनैत, कतहु भक्ति एकमात्र नौका।

ई भिन्नता मनुष्यक धार्मिक मनोविज्ञानक तीन स्तर जकाँ। एक मन आत्म-ज्ञानक मौन चाहैत; एक प्रेममे समर्पण, एक सेवामे निकटता; तीनू मुक्तिक भाषा अलग गढ़ैत।

कियो कहैत—अन्तिम सत्य गुणातीत, कारण गुण सम्बन्धक संसारमे। कियो कहैत—गुणहीन सत्य जीवित धार्मिक अर्थसँ रिक्त; कियो कहैत—परम गुणवान व्यक्ति सँ कम किछु स्वीकार नहि।

कियो ईश्वरक रूप केँ व्यवहारक सीढ़ी मानैत, कियो ओहि रूप केँ स्वयं परम सत्य; कियो गुणहीन अवधारणा केँ निरर्थक कहि पूर्णतः अस्वीकार।

ई विरोध केवल भाषिक नहि। ओ निश्चय करैत—प्रार्थना अन्तिम साधन कि मध्यवर्ती? व्यक्ति मुक्ति पर बचत कि विलीन? संसार वास्तविक अंग कि निर्भर प्रकट रूप?

ज्ञानक प्रश्नो तीन रूप लैत। एक कहैत—उच्च ज्ञान ज्ञाता-ज्ञेयक भेद पार; दोसर कहैत—ज्ञान सदैव ककरो ज्ञान, तें व्यक्तिक भिन्नता बचल; तेसर कहैत—भेद बिनु ज्ञान असम्भव, तें पूर्ण अभेद आत्म-विरोध।

एहि बहसक बीच दैनिक अनुभव निस्संग साक्षी जकाँ। हम प्रेममे भिन्नता अनुभव करैत, ध्यानमे एकता; विज्ञानमे वस्तु-ज्ञाताक दूरी, करुणामे दूरीक गलन—मानव जीवन स्वयं बहुस्तरीय।

कदाचित् एके अनुभवक अलग गहराई पर अलग भाषा उचित। दैनिक जगतमे भेदक नियम, प्रेममे भिन्नता-सहित एकता, ध्यानमे विभाजनक शिथिलता—मनुष्य अनेक तल पर जीबैत।

मुदा ई समन्वय जल्दी नहि थोपब। तीनू परम्पराक अपन तार्किक दाँव अछि; असहमति केँ “सभ एके बात” कहि मिटेनाइ विचारक अन्याय।

पहिल दुआर संसारक अनुभव केँ स्तरित करैत। दोसर दुआर समग्रता केँ भिन्न अंगसँ भरैत। तेसर दुआर भिन्नताक स्वायत्त यथार्थ पर पहरा दैत।

एक कहैत—“अन्तिमतः दू नहि।” दोसर—“एक अछि, मुदा एक अपने भीतर वास्तविक अनेकताक संग।” तेसर—“एक सर्वोच्च हो सकैत, मुदा अनेक कखनो एक नहि।”

तीन वाक्य, तीन ब्रह्माण्ड।

माया-जकाँ अवधारणा एहि संघर्षक मध्यक ज्वाला। पहिल दृष्टि कहैत—अज्ञान कारण हम निर्भर रूप केँ परम मानैत; जगत अस्तित्वहीन नहि, मुदा ओकर स्वतन्त्रता भ्रम।

दोसर प्रश्न करैत—अज्ञान कतय रहत? जीव अज्ञानसँ बनल तऽ जीवमे अज्ञानक निवास केना? परममे अज्ञान तऽ परमक सर्वज्ञान पर धब्बा—तार्किक गाँठ खुलैत।

पहिल उत्तर—अज्ञान वस्तु नहि जे ककरो घरमे रखल जाए। ओ बेठीक देखबाक संरचना; बादल सूर्य केँ घटाबैत नहि, केवल आँखि आ सूर्य बीचक दृष्टि रोकैत।

दोसर फेर कहैत—“न वास्तविक, न अवास्तविक” अस्पष्ट। पहिल कहैत—भाषाक दू डिब्बा हरेक अनुभूतिक सम्पूर्ण माप नहि; किछु अनुभव निरस्त हो सकैत, मुदा शून्य नहि—तें मध्य स्थिति।

बहस जखने सूक्ष्म होइत, कविता एक सीख पबैत: दार्शनिक शब्द केवल परिभाषा नहि, ओ अनुभवक सूक्ष्म भेद बचाबय लेल बनाओल औजार।

“जगत वास्तविक” कहबो अनेक अर्थ। स्वतन्त्र वास्तविक? निर्भर वास्तविक? व्यवहारिक वास्तविक? परम वास्तविक? एक शब्दक भीतर चार तराजू छिपल रहि सकैत।

“एकता” सेहो एकरूप नहि। भेदरहित पहचान, भेद-सहित समग्रता, कि प्रभुत्वकारी केन्द्रक अधीन एक व्यवस्था? शब्द एक, दर्शन तीन।

“मुक्ति” सेहो एकरूप नहि। स्वरूप-बोध, प्रेमक अखण्ड संगति, कि परम निकटता बिनु पहचान-विलय? अनुभूतिक लक्ष्य बदलिते साधना बदलैत।

एहि कारण इतिहासमे टिप्पणी पर टिप्पणी जन्मैत। छोट सूत्रक भीतर अनंत व्याख्या; हरेक व्याख्या अपन युग, अनुभव, धार्मिक भूख, तार्किक प्राथमिकता संग पढ़ैत।

कोनो भाषा केँ अन्तिम मालिक नहि बनाउ। जतय अनन्तक प्रश्न, भाषा दिशासूचक; मुदा दिशासूचक केँ मंजिल मानल तऽ परम्परा शब्दक किला बनि सकैत।

तीन दुआरक बहस आइक मनुष्यो भीतर अछि। एक वैज्ञानिक मन एकता खोजैत—एक नियम, एक आधार; एक जैविक-सामाजिक मन जटिल समग्रता—अंग भिन्न, प्रणाली एक; एक नैतिक मन व्यक्ति केँ मेटेनाइ सँ डरैत—भिन्नता गरिमा।

राजनीतिमे सेहो एहि छाया। अत्यधिक एकता व्यक्ति मेटा सकैत; अत्यधिक व्यक्तिवाद सम्बन्ध तोड़ि सकैत; समग्रता भिन्नता लेल ठाम खोजैत।

धर्मक बाहर ई विचार जीवनक कला बनि सकैत: कतय एकता खोजब, कतय भेद सहेजब, कतय व्यक्ति समग्रक अंग, कतय ओकर स्वतन्त्र गरिमा अपरिहार्य।

प्रेमक स्वस्थ रूप कदाचित् एहि तीनू प्रश्नसँ गुजरैत। “हम एक” कहैत, मुदा “तूँ अलग”क सम्मान; “हम जुड़ल” कहैत, मुदा “तूँ हमर सम्पत्ति नहि।”

मुक्ति सेहो कदाचित् बन्धनक प्रकृति अनुसार भाषा बदलैत। अहंकारक कठोरता लेल एकत्व औषधि, अलगावक भय लेल प्रेम-संगति, आत्म-विलोपनक डर लेल व्यक्तित्वक गरिमा।

मुदा स्रोतक तीन दुआर अपन-अपन निष्कर्ष पर अडिग। कविता हुनका जबरदस्ती मेल नहि करैत; ओ केवल तीनू कमरामे दीप रखैत ताकि भेद साफ देखाइ।

पहिल दीपक उजासमे संसार रंगीन काँच, परम प्रकाश एक। दोसर दीपक उजासमे संसार परम जीवनक वास्तविक देह। तेसर दीपक उजासमे संसार अनेक वास्तविक जीव आ पदार्थक स्वतन्त्र भेदपूर्ण क्षेत्र।

पहिलमे प्रार्थना सीढ़ी हो सकैत, ज्ञान शिखर। दोसरमे प्रेम सीढ़ीओ, शिखरो। तेसरमे प्रेम बिनु शिखरक द्वार बंद।

पहिलमे मुक्त व्यक्ति कहैत—अन्ततः जे खोजल, ओहिऐ हमार गहिर स्वरूप। दोसर—हम ओकर अंश/रूप, ओकर अनन्त शरीरक चेतन भाग। तेसर—हम सदा हम, ओ सदा परम; निकटता अनन्त, पहचान कखनो एक नहि।

तीनू अहंकारक साधारण “हम” केँ चुनौती दैत। कोनो ओकर सीमा घुलाबैत, कोनो ओकरा व्यापक जीवनक अधीन रखैत, कोनो परम संबंधक विनम्र आश्रित बनबैत।

तीनू नैतिकता लेल एक गहिर बात बचाबैत: अज्ञानमे जीवन बन्धन; ज्ञान, प्रेम, समर्पण, विवेक—कुनो रूपमे भीतरक परिवर्तन बिनु मुक्ति नहि।

मात्र बाहरी अनुष्ठान, पद, जन्म, वाद-विवाद पर्याप्त नहि। जीवनक केन्द्र बदलय; नहि तऽ दर्शन केवल शब्द, भक्ति केवल प्रदर्शन, ज्ञान केवल संग्रह।

आ जखन राति गहिर हो, तीन दुआर खुलल रहैत। एक भीतर मौन, एक भीतर गीत, एक भीतर प्रणाम; तीनू बाहर एके ताराभरल आकाश।

कविता निर्णायक हथौड़ी नहि उठबैत। ओ पूछैत—आकाशक एकता खिड़कीक भेद मेटबैत अछि? कि खिड़कीसभक भेद बिनु आकाश अनुभवमे आबि सकैत नहि?

उत्तर कदाचित् एक वाक्यक कैदी नहि। मुदा तीनू दुआर पार चलल मन एतबा अवश्य सीखैत: अनन्त पर दावा जतेक पैघ, विनम्रता तितनी जरूरी।

किएक तँ एकता बेठीक बुझल तऽ विविधता कुचलि सकैत। विविधता बेठीक बुझल तऽ सम्बन्ध टूटि सकैत। प्रेम बेठीक बुझल तऽ दासता, ज्ञान बेठीक बुझल तऽ अहंकार।

साँच साधना कदाचित् अपन सिद्धान्तक छाया सेहो देखब। जे एकता मानैत, भिन्नताक गरिमा नहि भुलय; जे भिन्नता मानैत, निर्भरता आ करुणाक जाल नहि काटय।

जे प्रेम मानैत, तर्कक प्रश्न सँ नहि भागय। जे ज्ञान मानैत, हृदयक भूख केँ तुच्छ नहि समझय। जे व्यक्ति बचाबैत, अहंकारक किला केँ पवित्र नहि करय।

अन्तमे तीन दीपक हवा सँ काँपैत, मुदा बुझैत नहि। एक कहैत—“भेदक पार देखू।” दोसर—“भेदक भीतर एकता देखू।” तेसर—“भेदक सत्य केँ सम्मानू।”

आ आकाश—ओ ककरो एक वाक्यक पक्ष नहि लेत। ओ बस विशाल रहैत, जतय तीन दुआर, तीन रास्ता, तीन प्रार्थना—एकहि अनन्तक दिस खुलल।

दू हवाक बीच जागैत नव भोर

एक सभ्यता अपन घरमे अकेले नहि बढ़ैत; सीमा पर हवा बदलैत, दूर देशक पयर धूलि संग कखनो तलवार, कखनो व्यापार, कखनो पुस्तक, कखनो प्रार्थनाक दोसर लय आबैत—आ पुरान घर अपने बारे फेर सोचैत अछि।

इतिहासक आघात केवल दीवार तोड़ैत नहि, आईनाओ समक्ष रखैत। जे विश्वास निर्विवाद छल, ओ प्रश्न बनैत; जे रीति स्वाभाविक, ओ अकस्मात् अपन कारण माँगैत—“हम एना किएक छी, आ की एना ही रहब?”

पहिले दूरक शक्ति शासन बनि आयल। संघर्ष छल, भय छल, सत्ता छल; मुदा समयक दीर्घ नदीमे संगीत, भाषा, स्थापत्य, भोजन, दर्शन, प्रार्थना—सभ एक-दोसरक घरक दुआर छुबैत गेल।

एक परम्परा आत्मसमर्पणक सरल ऊष्मा देखलक, दोसर प्राचीन गहराईक मौन प्रश्न सुनलक; भेट केवल सहमति नहि—कखनो प्रतिरोध, कखनो आकर्षण, कखनो भीतरक पुनर्जागरण।

भक्ति पुरान बीज छल, मुदा नवा ऐतिहासिक हवा ओकरा फेर हरियर कएलक। जनभाषामे गीत उठल, देवता राजमहलक भाषा छोड़ि गलीमे आयल; धर्म शास्त्रक पृष्ठसँ उतरि भूख, प्रेम, आँसू, श्रमक बीच गाबए लगल।

फेर समुद्रपार सँ दोसर हवा आयल—पहिले जहाज, फेर बाजार, फेर बन्दूक, कार्यालय, विद्यालय, कानून, विज्ञानक प्रयोगशाला; शासनक संग एक नवा समय-बोध आयल—गति, प्रगति, संस्था, तकनीक।

ई भेट अधिक गहिर छल, किएक तँ प्रश्न केवल “कियो शासन करैत?” नहि रहल। प्रश्न भेल—ज्ञानक माप की, समाजक व्यवस्था केना, व्यक्ति अधिकार की, विज्ञानक शक्ति समक्ष पुरान विश्व-दृष्टि अपन ठाम कतय पाबय?

शहरक शिक्षित मन पहिने काँपल। कियो आँखि मूदि कहलक—बाहरक हवा हमरा स्पर्श नहि करय; कियो अपन घरक सभ सामान फेंकि पराया घरक नक्शा अपनाबय चाहलक।

कियो क्रोधमे सभ बाहरी वस्तु अस्वीकार कएलक, मानो दू सभ्यताक बीच केवल युद्ध सम्भव; मुदा एक चौठा मन शांत भऽ चुनए लगल—एतय सत्य, ओतय उपयोगी, एतय सुधार जरूरी।

एहि चयनमे आधुनिक चेतनाक एक नया रूप जन्मल। पुरान परम्परा पहिल बेर अपने भीतरक अन्याय केँ बाहरी आईना मे देखलक; बाहरी आधुनिकता सेहो पहिल बेर भीतरक मौन, ध्यान, आत्म-ज्ञानक गहराईसँ चकित भेल।

कोनो एक दिशाक विजय नहि, अपितु दुविधाक दीर्घ युग। नव विद्यालय पुरान परिवारक आँगन लग बनल; प्रयोगशालाक प्रकाश संध्याक दीपक संग एके मनुष्यक जीवनमे रहए लगल।

पुस्तकसभ समुद्र पार गेल। व्याकरणक सूक्ष्म धागा, तर्कक कठोरता, गणितक अनुशासन, आ आत्म-जिज्ञासाक प्राचीन स्वर—दूरक पाठकक मेज पर नया प्रश्न बनि खुलल।

दोसर दिशासँ राजनीति, विज्ञान, सामाजिक संस्था, आधुनिक शिक्षा, स्वतन्त्रताक विचार, व्यक्ति-अधिकार, औद्योगिक तकनीक—सभ देशी मनक भीतर प्रवेश कऽ केवल नकल नहि, बहस माँगए लगल।

एहिए बहससँ तुलना एक नई विधा बनल। एक विचार केँ दोसरक बराबर रखि केवल श्रेष्ठता नहि, अपितु दू अलग अनुभव-परम्परा एक-दोसरक अँधेरा कोना उजागर करए लगल।

तुलना तखन बाजारक तुला नहि—कुन भारी, कुन हलुक। ओ प्रश्नक संगम: “तोहर सत्यक भाषा की?”, “हमर अनुभवक सीमा की?”, “दुनू सँ नया मनुष्य केना बने?”

पुरान विरासत बचाबयक सभसँ बेठीक ढंग ओकरा काँचक पेटीमे बन्द करब। जीवित परम्परा प्रश्न सहैत, रूप बदलैत, नवा ज्ञान ग्रहण करितो अपन मूल संवेदना केँ पहचानि सकैत।

आ आधुनिकता अपनहि पूर्ण नहि। मशीन दूरी घटा सकैत, मुदा अकेलापन नहि; राज्य कानून बना सकैत, मुदा करुणा नहि; विज्ञान जीवन बढ़ा सकैत, अर्थ अपने नहि देत।

एहि बीच एक दृष्टि उगैत—जगत मूलतः आत्मिक सम्भावनाक प्रक्रिया। पाथर, वृक्ष, पशु, मनुष्य—पूर्णतः असम्बद्ध स्तर नहि, एक गहिर शक्ति अलग-अलग जटिलता में अपनहि संभावना खोलैत चलैत।

विकास केवल शरीरक आकार बदलनाइ नहि। चेतना सेहो विकसित हो सकैत; अज्ञान सँ ज्ञान, विखण्डन सँ समन्वय, स्वार्थ सँ व्यापक सह-अस्तित्वक दिशा खुलि सकैत।

नीच आ ऊँच शब्द एतय जाति वा व्यक्ति-मूल्यक तराजू नहि। ओ चेतनाक अवस्थाक संकेत: जतय प्रतिक्रिया स्वचालित, ओतयसँ जतय सजगता, करुणा, व्यापक दृष्टि अधिक।

मनुष्य वर्तमान रूपमे अन्तिम पड़ाव नहि। ओ एक अधूर वाक्य, जकर भीतर अपन सीमा पार करबाक बेचैनी स्वयं विकासक शक्ति बनि धड़कैत।

ई बेचैनी रोगी बनि सकैत जँ केवल बाहरी उपलब्धि दिस दौड़य। अधिक धन, अधिक शक्ति, अधिक गति—मुदा भीतर ओहिए भय; तें विकासक अगिला पग चेतनाक गुण बदलनाइ माँगैत।

एक उच्चतर मनक कल्पना—जतय जानब, चाहब, करब आपसमे टूटल नहि। विचार एक दिशा, इच्छा दोसर, कर्म तेसर—एहि विखण्डनक बदला एक समन्वित चेतना, जतय सत्य बुझल जाए तऽ जीवन ओकर लय ग्रहण करय।

मुदा ई आध्यात्मिकता गुफाक बहाना नहि। भूखल मनुष्य केँ केवल “अपन आत्मा चिन्ह” कहब क्रूर; अन्यायग्रस्त समाजमे ध्यानक उपदेश, जँ रोटी आ गरिमा न देखय, अधूर।

तें भीतरक विकास आ बाहरी संस्था एक-दोसरसँ जुड़ैत। सामाजिक व्यवस्था एहन हो जे व्यक्ति केँ केवल बचबाक संघर्षमे न पीसय; न्याय, स्वतन्त्रता, शिक्षा, स्वास्थ्य—आत्मिक उत्कर्षक शत्रु नहि, ओकर धरती।

मुक्ति अकेला साधकक निजी पदक नहि। यदि कियो भीतर शान्ति पाबि बाहरक अन्याय देखियो मौन, ओकर शान्तिमे कदाचित् समाजक पीड़ा लेल ठाम अखन कम।

आ यदि समाज सुधारक भीतरक लोभ, क्रोध, अहंकार नहि देखय, नवा संस्था पुरान हिंसाक नव पोशाक बनि सकैत; बाहरी क्रान्ति आ भीतरक अनुशासन एक-दोसरक आलोचक बनबाक चाही।

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता आ सामाजिक एकता—दू घोड़ा नहि जे विपरीत दिशा खींचय। साँच समाज व्यक्ति केँ फुलबाक ठाम दे, आ व्यक्ति अपन फुलनाइ केँ समूचा बगियाक विनाश नहि बनाबय।

आत्मिक विकासक कसौटी असाधारण अनुभूति नहि। की जीवन अधिक न्यायपूर्ण? की संबंध कम हिंसक? की ज्ञान अहंकार कम करैत? की शक्ति सेवा दिस मुड़ैत?—एहि प्रश्नपर उजास जाँचू।

एक दिन मनुष्य अपने कैं जगतसँ अलग विदेशी मानब छोड़ि सकैत। माटि, वृक्ष, पशु, तारा—सभ केवल संसाधन नहि; एके जीवन-शक्ति अलग-अलग रूपमे यात्रा करैत—एहन अनुभूति पर्यावरणक नैतिकता बनि सकैत।

जँ मूल आत्मिक सम्बन्ध अछि, तऽ पृथ्वी पर हिंसा अपने घर पर हिंसा। विकासक शिखर अधिक उपभोग नहि, अपितु अधिक सजग सम्बन्ध—प्रकृति, समाज, अपने भीतरक इच्छा सभ संग।

एहि दृष्टिक खतरा सेहो अछि। “इतिहास निश्चित रूपँ उच्चतर चेतना दिस जा रहल”—एहन विश्वास वर्तमान पीढ़ा कैं भविष्यक महिमाक नाम पर छोट करि सकैत।

तैं विकासक कविता नियतिवाद नहि बनय। सम्भावना अछि, गारंटी नहि; मनुष्य ऊपर उठि सकैत, मुदा नीचाँ गिरबाक स्वतन्त्रताओ ओकर संग।

आध्यात्मिक प्रगति कोनो स्वचालित मशीन नहि। प्रत्येक पीढ़ी निर्णय लैत— करुणा कि हिंसा, समन्वय कि वर्चस्व, ज्ञान कि प्रचार, स्वतन्त्रता कि भय।

दोसरो आधुनिक दृष्टि कहैत—परम वास्तविकता स्थिर मृत पृष्ठभूमि नहि। जगत ओकर सक्रिय अभिव्यक्ति; अस्तित्व आ शक्ति दू अलग वस्तु नहि, स्रोत अपने रूप बदलि प्रकट होइत।

एहि कारण जगत कैं तुच्छ कहि त्यागल नहि जा सकैत। सीमित वस्तु, व्यक्तित्व, इतिहास—सभ अंतिम नहि होइतो गहिर वास्तविकताक गतिविधिक रूप; व्यवहारक संसार अर्थपूर्ण।

एक फूल सम्पूर्ण अनन्त नहि, मुदा अनन्तक शक्ति बिनु फूल कतय? एक व्यक्ति सम्पूर्ण वास्तविकता नहि, मुदा ओहि व्यापक अस्तित्वक जीवित अभिव्यक्ति; भाग कैं पूर्ण मानब भ्रम, भाग कैं शून्य मानबो भ्रम।

भीतरक “छोट हम” अनुभव, तर्क, देह, इतिहास सँ बनल। ओ उपयोगी—नाम, काम, उत्तरदायित्व; मुदा ओकर नीचाँ एक व्यापक आत्मिक गहराई, जे सीमित परिचयसँ अधिक।

धार्मिक खोज तैं स्वयं कैं मिटेनाइ नहि, छोट सीमाक पार बदलनाइ। अहंकारक निजी कोठरी टूटि एक व्यापक चेतनामे प्रवेश—जतय “हम”क अर्थ अधिक समावेशी हो।

धर्मक सार बाहरी चिह्ने कैद नहि। न केवल विधि, न केवल भावना, न केवल नैतिक नियम, न केवल दर्शन; ई सभ अंश हो सकैत, मुदा सम्पूर्ण मनुष्यक सम्पूर्ण वास्तविकताक प्रति प्रत्युत्तर अधिक गहिर।

यदि धर्म केवल परम्परागत राय, तऽ ओ विरासत अछि, अनुभव नहि; जीवित धर्म तखन जखन सत्य व्यक्ति भीतर घटित हो, व्यवहारक स्वर बदलय।

अनुभूति एहन क्षण पाबि सकैत जखन ज्ञाता-ज्ञेयक साधारण दूरी हलुक। समयक क्रम क्षणभरि पाछाँ, विचारक किनारा पिघलैत, अस्तित्व अपने गहराईक प्रति जागरूक।

ई अनुभवक भाषा अनिवार्यतः रूपक माँगैत। किएक तँ “हम एहि वस्तु कैं जानैत छी” एहन व्याकरण ओतय अपर्याप्त जतय अनुभवकर्ता स्वयं व्यापक चेतनामे बदलल महसूस करय।

मुदा रहस्यवाद तर्कक शत्रु नहि होएबाक चाही। दैनिक संसारमे विज्ञान, तर्क, इतिहास, आलोचना पूर्ण मूल्यवान; केवल एतबा—मानवीय अनुभवक सम्पूर्णता कदाचित् केवल मापनसँ समाप्त नहि।

एक स्वस्थ आधुनिक दर्शन दुनू आँखि खोलि देखत। एक आँखि प्रयोग, प्रमाण, संस्थागत न्याय, सामाजिक तथ्य; दोसर ध्यान, मूल्य, आत्म-अनुभूति, अस्तित्वक अर्थ।

एक आँखि बन्द तऽ दूरीक अंदाज बिगड़ैत। केवल आध्यात्मिक आँखि सामाजिक तथ्य भूलि सकैत; केवल बाहरी आँखि मनुष्य केँ आँकड़ा, उपभोक्ता, उत्पादक बनाबयक खतरा।

एहिए संगम आधुनिक भारतीय चेतनाक कठिन काज। न पुरानक अन्ध पूजा, न नवक अन्ध नकल—अपितु आलोचनात्मक ग्रहण, रचनात्मक पुनर्संयोजन।

इतिहास ई काज आसान परिस्थिति में नहि देलक। राजनीतिक अधीनता, आर्थिक परिवर्तन, सांस्कृतिक अपमान, आ संगहि नवा शिक्षा—सभ मिलि आत्म-पहचानक संकट रचल।

कियो अपन अतीत केँ स्वर्णयुग बना वर्तमान सँ भागल। कियो अतीत केँ केवल अन्धकार कहि काटि देलक; परिपक्वता दुनू अतिशयोक्ति पार—गौरवक संग आलोचना, ग्रहणक संग आत्मसम्मान।

विदेशी अध्ययन सेहो दूधारी तलवार। एक दिस औपनिवेशिक दृष्टि कखनो जीवित परम्परा केँ संग्रहालयक वस्तु बनौलक; दोसर दिस पाठ-संपादन, भाषाशास्त्र, अनुवाद सँ भूला ग्रन्थ नव पाठक पेलक।

ज्ञानक इतिहास शुद्ध हाथक कथा नहि। सत्ता आ जिज्ञासा संग चलि सकैत; कखनो साम्राज्यक संस्था भीतर ही एहन विद्वत्ता उगैत जे साम्राज्यक अहंकार केँ चुनौती देत।

आ परम्परा बाहर गेल तऽ केवल “पूर्व”क वस्तु नहि रहल। दूर महादेशक कवि, विचारक, साधक अपन प्रश्न संग ओकरा पढ़लक; पुरान वाक्य नवा भाषा, नवा संकट, नवा संवेदना में पुनर्जन्म लेल।

एहि आदान-प्रदानक श्रेष्ठ फल श्रेष्ठता-प्रतियोगिता नहि। “हमर सभ्यता महान”, “तोहर पिछड़ल”—एहन वाक्य ज्ञानक दरवाजा बन्द करैत।

साँच तुलना कहैत—हम एक-दोसरसँ सीखि सकैत, किएक तँ कोनो सभ्यता मानवीय सम्भावनाक पूर्ण सूची नहि; प्रत्येक किछु गहिर देखैत, किछु कम।

आधुनिक विज्ञान पदार्थक सूक्ष्मतरंग रहस्य खोललक, लोकतांत्रिक विचार व्यक्तिक अधिकारक भाषा गढ़लक; प्राचीन आत्म-जिज्ञासा चेतना, अनासक्ति, अन्तर्बोधक क्षेत्र विकसित कएलक।

प्रश्न ई नहि—कुन सभ्यता जीते? प्रश्न—की विज्ञान करुणा संग रहि सकैत? की आध्यात्मिकता सामाजिक न्याय संग? की स्वतन्त्रता समुदाय संग? की परम्परा आलोचना संग?

एहि प्रश्नक उत्तर कोनो एक अंतिम वाक्यसँ नहि। ओ विद्यालय, संसद, परिवार, प्रयोगशाला, कला, खेत, अस्पताल, मंदिर, सड़क—सभ ठाम रोज लिखल जाइत।

नवा मनुष्य केवल पाश्चात्य पोशाकमें पुरान मन नहि। न केवल पुरान प्रतीक संग आधुनिक यंत्र; नवता भीतरक सम्बन्धक पुनर्गठन—ज्ञान, शक्ति, इच्छा, मूल्यक बीच।

यदि विज्ञान शक्ति बढ़बैत, नैतिक चेतना ओकर दिशा तय करय; यदि आध्यात्मिकता आन्तरिक शान्ति दैत, सामाजिक विवेक ओकर परीक्षा लेत।

यदि परम्परा पहचान दैत, आलोचना ओकर जड़ता काटय। यदि आधुनिकता स्वतन्त्रता दैत, स्मृति ओकर उच्छृंखल विस्मरण रोकय; संगम बराबर भागक मिश्रण नहि, जीवित रसायन।

कखनो दू तत्व भेटि केवल जोड़ नहि बनबैत, नवा गुण जन्मैत; तैना सभ्यताक साँच मिलन नकलक कोलाज नहि, नया प्रश्न, नया संवेदना, नया संस्था।

एहि नव रसायनक भीतर आध्यात्मिकता स्थिर अतीत नहि। ओ भविष्यक संभावना; मानव चेतना अखन अधूरी, तें परम्परा स्मृति मात्र नहि—आगाँक प्रयोगक स्रोत।

मुदा “आध्यात्मिक” शब्दक दुरुपयोग सँ सावधान। जँ ओ सामाजिक असमानता ढँकय, तऽ शब्द पवित्र, परिणाम अन्यायी; जँ ओ तर्कसँ भागय, तऽ उजासक नाम पर अन्हार।

साँच आध्यात्मिकता मनुष्यक सम्पूर्ण जीवन स्वीकारय। देह, अर्थव्यवस्था, राजनीति, प्रेम, श्रम, कला, विज्ञान—कोनो केँ अपवित्र कहि बाहर नहि फेंकय, अपितु सभमे चेतनाक गुण सुधारे।

एक किसानक न्यायपूर्ण मूल्य, एक श्रमिकक गरिमा, एक स्त्रीक स्वतन्त्रता, एक बालकक शिक्षा—ई सभ आत्मिक विकासक बाहरी किनारा नहि; मानव पूर्णताक शर्त।

यदि सामाजिक संरचना करोड़ों केँ भय, भूख, अपमानमे राखैत, “उच्च चेतना”क निजी अनुभव नैतिक रूपेँ अधूर; व्यक्तिगत मुक्ति आ सार्वजनिक न्यायक बीच पुल बनाबय पड़त।

मुदा राज्य आत्मा बना नहि सकैत। कानून अवसर दे सकैत, बाधा घटा सकैत, मुदा सत्यक प्रत्यक्ष अनुभव, करुणाक जागरण, आत्म-अनुशासन आदेशसँ नहि उगैत।

तें समाज भूमि बनब, फल व्यक्ति आ समुदाय संग उगायत। स्वतन्त्रता बिनु आध्यात्मिकता डरक आज्ञाकारिता; समुदाय बिनु स्वतन्त्रता अकेलापनक बाजार।

नव भोर ई दू अतिसँ बचबाक कोशिश। व्यक्ति केँ खुला आकाश, समाज केँ साझा धरती—आ दुनू बीच जिम्मेदारीक हवा।

धर्मक आधुनिक अर्थ सेहो एहि संग बदलैत। अन्य सम्प्रदाय पर विजय नहि, अपितु मनुष्यक भीतरक संकीर्णता पर विजय; मत नहि, अनुभव; दीवार नहि, गहराई।

जतय ज्ञाता आ ज्ञेयक सीमा ढीली, परक दुःख अपन अनुभूतिक बाहर नहि रहि सकैत; अद्वितीय रहितो मनुष्य व्यापक जीवनक अंश अनुभव करैत।

ई अनुभव राजनीतिक घोषणापत्र नहि, मुदा ओ राजनीतिक नैतिकता केँ पोसि सकैत: जतय प्रत्येक व्यक्ति व्यापक वास्तविकताक अभिव्यक्ति, ओकर गरिमा साधन नहि।

शान्ति तखन केवल युद्धक अभाव नहि। मनक भीतरक विभाजन, समाजक अन्याय, सभ्यताक अहंकार—सभ कम होए तऽ शान्ति गहिर।

स्वतन्त्रता केवल मतदान वा बाजारक चुनाव नहि। भय, अज्ञान, प्रचार, लत, लोभक भीतरक दासता सँ मुक्ति सेहो; बाहरी अधिकार आ भीतरक स्वाधीनता एक-दोसरक पूरक।

ज्ञान केवल सूचना नहि। तथ्य आवश्यक, तर्क आवश्यक, मुदा ज्ञानक अंतिम मान कदाचित् ईहो—ओ जीवन केँ अधिक सत्य, करुण, निर्भय बनौलक कि नहि।

आनन्द केवल सुख-सामग्रीक मात्रा नहि। यदि भीतर विखण्डन, बाहर संग्रह काम नहि; समन्वित चेतना में आनन्द जीवनक एक गहिर स्वीकृति बनि सकैत।

आइ संसार फेर अनेक हवाक बीच। डिजिटल तकनीक, कृत्रिम बुद्धि, जैव-विज्ञान, जलवायु संकट, वैश्विक बाजार—पुरान आधुनिकतासँ कतहु अधिक तीव्र प्रश्न उठा रहल।

पुरान पाठ एतय फेर काम आबि सकैत: न अन्ध अस्वीकार, न अन्ध स्वीकृति; चयन, आलोचना, आत्म-परीक्षण, आ मानव गरिमाक कसौटी।

नवा तकनीक पूछय—की सम्भव? दर्शन पूछय—की उचित? आध्यात्मिक चेतना पूछय—ई मनुष्यक भीतरक लोभ बढ़ायत कि स्वतन्त्रता?

इतिहासक अन्तिम पृष्ठ कखनो लिखल नहि। प्रत्येक आविष्कार नवा मोड़, प्रत्येक न्याय-अन्यायक संघर्ष, प्रत्येक सांस्कृतिक भेट—मनुष्यक आत्म-परिभाषा फेर लिखैत।

परम्परा यदि सचमुच जीवित, ओ भविष्यसँ भय नहि करय; ओ अपन गहिर स्रोतसँ नवा रूप गढ़य, बेठीक अंश त्यागय, उपयोगी बाहरी तत्व आत्मसात् करय।

आ आधुनिकता यदि सचमुच प्रौढ़, ओ अतीत केँ बाल्यावस्था कहि उपहास नहि करय; ओ मानय जे मानवीय आत्म-अनुभवक प्रश्न प्रयोगशाला सँ पुरान, मुदा आइयो अधूर।

दू हवा एक-दोसर केँ बुझा सकैत नहि, मुदा यदि खिड़की खुलल, घरक भीतर नवा तापमान, नवा सुगन्ध, नवा श्वास सम्भव।

एक हवा बाहरी जगत बदलबाक साहस लय— संस्था, विज्ञान, अधिकार, इतिहास-बोध। दोसर भीतरक जगत देखबाक अनुशासन— ध्यान, आत्म-जिज्ञासा, एकत्व, अनासक्ति।

दुनू बिनु मनुष्य आधा रहि सकैत। केवल बाहर—शक्तिशाली मुदा दिशाहीन; केवल भीतर—गहिर मुदा कखनो संसारक पीड़ा प्रति निष्क्रिय।

पूर्णता कदाचित् एहि दू दिशाक संघर्ष नहि, रचनात्मक तनाव। जैना धनुषक डोरी विपरीत खिंचावसँ तीर आगाँ पठबैत, तैना परम्परा आ आधुनिकता बीच सचेत तनाव भविष्यक दिशा दे सकैत।

मुदा तीर ककरा दिस? केवल अधिक उत्पादन नहि; एक एहन मानव जगत दिस जतय न्याय, स्वतन्त्रता, ज्ञान, करुणा, सौन्दर्य, आ भीतरी शान्ति विरोधी न रहय।

ई लक्ष्य अत्यन्त ऊँच, तें संशय जरूरी। कोनो दार्शनिक दृष्टि केँ इतिहासक निश्चित भविष्य कहि स्थापित नहि करू; सम्भावना प्रेरणा हो, भविष्यवाणी नहि।

मनुष्यक आध्यात्मिक क्षमता वास्तविक हो सकैत, मुदा ओकर हिंसक क्षमता सेहो वास्तविक; इतिहास दुनूक साक्षी—तें आशा संग सजगता।

नव भोर अपने आप नहि उगैत। ओ शिक्षा सँ, संवाद सँ, न्यायपूर्ण संस्था सँ, आ प्रत्येक व्यक्ति भीतर छोट-छोट अहंकारी अन्हार चिन्हबाक अभ्यास सँ बनत।

जखन संस्कृति बाहरी प्रभावसँ डरे, ओ कड़ा खोल बनि सकैत; जखन अपन मूल्य भूलि केवल नकल करय, भीतर खाली; जीवित आत्मविश्वास खुलापन आ चयन दुनू राखैत।

अतः समकालीनता कोनो वर्षक नाम नहि। ओ मनक क्षमता—अतीत संग संवाद करैत वर्तमानक प्रश्न सुनब, आ भविष्य लेल उत्तर रचब बिनु ककरो गुलाम बनल।

एक विशाल पुस्तकालय कल्पना करू। एक अलमारी पुरान हस्तलिखित पन्ना, दोसर आधुनिक विज्ञान, तेसर विश्वक दर्शन; बीचमे एक खाली मेज—हमर समय।

मेज पर प्रश्न रखल अछि: मनुष्य की केवल तर्कशील जीव? की केवल धार्मिक? की आर्थिक? राजनीतिक? जैविक?—कि एहि सभसँ अधिक जटिल एक विकसित होइत चेतना?

उत्तर एक पुस्तक नहि देत। मुदा यदि सभ पुस्तक एक-दोसर सँ बात करय, आ पाठक अपने अनुभवक ईमानदारी संग सुनय, कदाचित् नया वाक्य जन्मत।

ई नया वाक्य भारतक मात्र नहि, पश्चिमक मात्र नहि। जतय विज्ञानक अनुशासन, लोकतांत्रिक गरिमा, आ आत्म-चेतनाक गहिर अभ्यास मिलय—ओ मानवीय विरासत बनि सकैत।

सर्वश्रेष्ठ समन्वय पहचान मेटब नहि। जैना नदी समुद्रमे जाए तऽ ओकर इतिहास नष्ट नहि; ओ व्यापक जलचक्रक भाग बनैत, बादल बनि फेर अपने धरती पर लौटि सकैत।

तैना संस्कृति ग्रहण कऽ बदलैत, मुदा अपन गहिर संवेदनाक नया रूपमे पुनर्जन्म; स्थिरता वस्तु बनि मरब, परिवर्तन स्मृतिविहीन होएब—दुनू खतरा।

जीवित परम्परा स्मृति सहित परिवर्तन। जीवित आधुनिकता आत्मालोचना सहित नवाचार। जीवित दर्शन अनुभव, तर्क, इतिहास, समाज, आध्यात्मिकता—सभक कठिन संवाद।

अन्तमे प्रश्न फेर व्यक्ति पर लौटैत। हमर भीतर कतेक साम्राज्य? कतेक पराया आवाज केँ बिनु जाँच स्वीकारल, कतेक पुरान डर केँ “परम्परा” नाम देल?

कतेक आधुनिक इच्छा केवल बाजारक आदेश? कतेक आध्यात्मिक दावा केवल पलायन? समकालीन दर्शन पहिने एहि भीतरक उपनिवेशसभ केँ देखबाक साहस हो सकैत।

आ जखन भीतरक स्वतन्त्रता बढ़त, बाहरक संवाद अधिक बराबरीक; न हीनता, न अहंकार—अपन स्रोतक सम्मान, दोसरक सत्य प्रति खुलापन।

तखन तुलना प्रतियोगिता नहि, आतिथ्य। तूँ अपन प्रश्न लाउ, हम अपन; दुनू एके मेज पर राखि देखी—मनुष्यक पीड़ा कतेक साझा, आकांक्षा कतेक गहिर।

एक दिन पुरान आ नवा शब्द आपसमे झगड़ब कम करत। “आत्मा” विज्ञानसँ नहि डरत, “विज्ञान” अर्थक प्रश्न पर मुस्कुरा कऽ भागत नहि; “न्याय” ध्यानसँ, “ध्यान” राजनीति सँ परहेज नहि करत।

एहि दिन नव भोर पूर्ण नहि होएत—भोर कखनो पूर्ण दिन नहि। मुदा दिशासूचक उजास पर्याप्त: हमरा एक-दोसर केँ मेटे बिनु बदलबाक, सीखबाक, गहिर होएबाक संभावना अछि।

दू हवा खिड़की पर भेटैत अछि। एक दूरक समुद्रक नमी लय, दोसर आँगनक माटिक गन्ध; घरक भीतर नव श्वास बनैत—ककरो शुद्ध नकल नहि, ककरो शुद्ध अवशेष नहि।

आ मनुष्य, जे काल्हि अपने केँ दू संसार बीच फाटल बुझैत छल, आइ बुझि सकैत— दू दिशाक हवा भीतर एक नवा मौसम बना सकैत, यदि खिड़की खुलल आ घरक नींव सजग रहय।

खण्ड २

स्वप्न, जागरण आ मिज्झर समय

स्वप्न सँ पहिने

नजरि लागि जाइ छै

ओ कहै छथि
 जे नजरि लागि जाइ छै
 देखै छथि जे लागैए ओ आइ सुन्दर
 साँझमे छाह पड़ि जाइ छै ओकर मुँहपर
 से तँ सत्ते! हमरा सन ककर बेटा
 मुदा मोनमे ई अबिते, ओकरा हमरो नजरि लागि जाइ छै
 कोनो काज आरम्भ करैए
 मारिते रास काज एक्के बेर
 खतम हेबा धरि सुधि नै रहै छै
 कियो कहैए जे कतेक नीक अछि अहाँक बेटा
 तँ मायक करेज धकसँ रहि जाइ छै
 करेज बैसऽ लगै छै
 की करै छै?
 कोन सुन्दर छै?
 आ कहैत रहै छथि माय
 जे नजरि लागि जाइ छै
 बाते-बातपर हमर बेटाकें
 माय शनि दिन, सरिसौ-तोरी आ मेरचाइ जड़बै छथि
 सुरसुरी लागि जेतै ओकरा तँ बुझबै जे नजरि नै लागल छै
 आ सुरसुरी जे नै लगतै तँ बुझबै जे नजरि लागि गेल छै
 कनेक काल सुरसुरी नै लगलापर माय होइ छथि चिन्तित
 देखियौ ने हमरा बेटाकें नजरि लागि जाइ छै छोटो-छोट गपपर..
 नजरि लागि जाइ छै... बाते-बातपर हमर बेटाकें...
 मुदा तखने छिकै छन्हि बेटा, ओकरा सुरसुरी लागि जाइ छै
 मायक मुँहपर अबै छन्हि मुस्की
 सरिसौ-तोरी आ मेरचाइ सरबामे कनेक आर दऽ दै छथि...

भाग्यशाली

हारि गेल
 हेरैत ओइ विचित्र जीव सभकें
 नै आब आर नै
 फाटि रहलै माथ
 फुला रहलै साँस
 ई नागफाँस

विचित्र जीव सभ
एक दोसराक विरुद्ध मुदा
सभटा एके संग पक्षमे
आ विरुद्ध सेहो संगे;
एक दोसराक विरुद्ध मुदा।
के की बाजि रहल,
कखन के पलटि
पलटी मारि मुखाकृति बदलि
आयल सोझाँ आकांक्षा सुखित रहबाक बिन विवाद निसभेर। हारि कऽ, निन्नक अछैत? बड्ड भाग्यशाली हतोत्साहित
संगी जोश बढ़ा दै छथि
हारऽ लागल, थाकल
अरि कऽ ठाढ़
तेहेन तेहेन गप
थकनी मेटाइत
तेहेन तेहेन प्रतिकार
हेरा जाइत
सभ तेहने
मुँह मलिन भेल नै आकि जुमि जाइ छथि सभ
हँसेबा लेल
ओकर मोनक पकमान बनाबऽ लगै छथि
माथ धोबै छथि
आ कियो सुनबऽ लगै छथि पुरान गाथा
लड़बाक
बैसाखीपर चलबाक फुर्तीसँ
जे दुनू पएरसँ सेहो आब सम्भव नै
अहाँकेँ स्टार भेटल, तकर रहस्य की?
हम सभ हुनकासँ पढ़ै छी
आ ओ दुनियाँमे सभसँ बेसी जनै छथि।
रहस्योद्घाटन!
ताकू एक तँ भेटत सय
बेशी मेहनती बेशी प्रगतिशील पाठक
सय पन्नामे घोंसिआयल एकटा छोटो गप चिन्है बला
नै बाँचि पबैए।
जान लगा दै बला
जँ मुँहपर देखत अबैत रेख
एकटा छोटो रेख
उद्देश्यकेँ बढ़ेबा लेल

हँसेबा लेल
चलेबा लेल, बैशाखीसँ दुनू पएरपर
मुदा बैशाखी छुटलाक पाछाँ कतय चलि पाबि रहल अछि
ओतेक झटकारि कऽ
लोकक प्रेम जे करबा लेलक किछु काज
देलक विश्राम।

जाइत जाइत

जाइत जाइत जाइ छी बड़ी दूरस्त देश धरि जे घुरि ने सकी
पहिने कएक बेर घुरि अयलौं अइ ठाम
बुझलौं जे छल अदहे रस्ता
घुरि जे एलौं।
से बिदा भेलौं जाइले दूरस्त
ततेक दूर दूरस्त देश जे घुरि ने सकी
जे घुरबऽ जायत थाकि जायत अदहा तकरो अदहे रस्तामे
आ जँ बढ़त आगाँ देखत बिलाइत रस्ता
ने कोनो बाटे छोड़ब आ ने
कोने चिन्हासी
आ ने कनियो आस छोड़ब
अदहा रस्ताक पाछाँक धांगैत-तोड़ैत बाट
आ बढ़ैत हम आ बिलायल जाइत रस्ता केलक काज संपन्न
एकटा काजक हएत आब फेरसँ आरम्भ
नव वातावरण नव लोक संग
प्रयोगेक प्रयोग
आनत कोनो अजगुत परिणाम
आकि फेर धकेलत हमरा दूरस्त देश
आ हम घुरि कऽ तँ नै आबि जाएब फेर अपन पुरने देश
जतऽ ने रहत ओ पुरनका डेरायल लोक
ने पुरनका पिरौछ गाछ-बृच्छ
परिणामेक प्रमाण
रुसल सन अछि ई हमरासँ
लोक गाछ-बृच्छ सभ नव, नवके ई देश
ने कोनो चिन्हासी ने आस आ ने कोनो चिन्हार बाट

बिलाइत आसक चेन्हासी

देखैत

गाछ दुनू कात

संगे जाइ रस्ताक संग

गाछक छाह कऽ रहल घन

हमर चेन्हासी घन होइत पक्का हएत मुदा

घ

न ग र

हो

इ

त

चे

न्हा

सी

अन्हार गुज्ज भऽ जाइत अछि

हमर आसक चेन्हासी बिला जाइत अछि

शामिल बाजाक दुन्दभी वादक

देखैत दुन्दभीक तान

सुनैत शून्यक दृश्य

प्रकृतिक कैनवासक

हहाइत समुद्रक चित्र

अन्हार खोहक चित्रकलाक पात्रक शब्द

क्यो देखत नै हमर चित्र ऐ अन्हारमे

तँ सुनबो तँ करत पात्रक आकांक्षाक स्वर

सागरक हिलकोरमे जाइत नाहक खेबाह

हिलकोर सुनबाक नै छै अवकाश

देखैत अछि स्वरक आरोह अवरोह

हहाइत लहरिक नै छै ओर-छोर

आकाशक असीमताक नै कोनो अन्त

सागर तँ एक दोसरासँ मिलि करैत अछि

असीमताक मात्र छद्म

घुमैत गोल पृथ्वीपर

चक्रपर घुमैत अनन्तक छद्म
मुदा मनुक्ख ताकि अछि लेने
ऐ अनन्तक परिधि
परिधिकेँ नापि लेने अछि मनुक्ख
ई आकाश छद्मक तँ नै अछि विस्तार?
ऐ अनन्तक सेहो तँ ने अछि कोनो अन्त?
तावत एकर असीमतापर तँ करहि पड़त विश्वास!
स्वरकेँ देखबाक चित्रकेँ सुनबाक सागरकेँ नांघबाक समय-काल-देशक गणनाक
सोहमे छोड़ि देल देखब
अन्हार खोहक चित्र
सोहमे छोड़ल सुनब
हहाइत सागरक ध्वनि
देखैत स्वर सुनैत चित्र
केहन ई साधक
बनि गेल अछि शामिल बाजाक*
दुन्दभी वादक

*राजस्थानमे गाजा-बाजावलाक संग किछु तँ एहेन रहैत छथि जे लय-तालमे बजबैत छथि मुदा बेशी एहन रहैत छथि जे बाजा मुँह लग आनि मात्र बजेबाक अभिनय करैत छथि । हुनका ई निर्देश रहैत छन्हि जे भूलियोसँ बाजामे फूक नै मारथि, यएह छथि शामिल बाजा ।

मन्दाकिनी जे आकाश मध्य

मन्दाकिनी जे आकाश मध्य
देखल आइ पृथ्वीक ऊपर
बद्री विशाल केदारनाथ
अलकनन्दा मन्दाकिनीक मेल
हरहड़ाइत धार दुनू मिलैत
मेघसँ छाड़ल ई ककर निवास !
बदरी गेला जे
नै घुरलन्हि ओदरी हुनकर
आइ बाटे-बाट आयल
शीतल पवनक झोंक खसि रहल भूमि
स्खलन भेल जन्तु सबहिक
हिम छाड़ल ई ककर वास!
हृदय स्तंभित देखि धार
पर्वत श्रेणीक नै अन्त एतऽ
कटि एकर तीव्र नीचाँ अछि धार
दुहू कात छाड़ल पर्वतसँ ई
अलकनन्दे ई सौन्दर्य अहींक

मन्दाकिनी जे आकाश मध्य
देखल आइ पृथ्वीक ऊपर
हरहड़ाइत ई केहन फेनिल
स्वच्छ निर्मल मनुक्ख निवसित
नव दृष्टि देलक देखबाक आइ
शीतल पवनक छाड़ल ई सृष्टि

नव व्यवस्था

नव व्यवस्थाक मनुक्ख

अर्थशास्त्र बनबैत अछि कम्पनीकें मनुक्ख
आ मनुक्ख बनैछ कननमुँह
घृणाक आस्वाद आ घृणामे लेने आस्वाद
आब आम्रपालीक घर नै
गेल अछि पैसि
राजनीति धननीति
ऐ पर्यटननीतिमे !
आम्रपाली पहीरि चश्मा करैत छथि चालन वाहनक
नायक मृच्छकटिक भऽ गेल छथि होटल व्यवसायी
नव जाति व्यवस्थाक पुरोहित
आम्रपाली बनलि अनुलोम व्यवस्थाक शकुन्तला

नव व्यवस्थाक दलित

पीयर आ लाल होइत
चौबटियाक बत्ती सभ
लुधकैत गाड़ीक शीसा पोछैत
अखबार पत्रिका बेचैत
नव व्यवस्थाक दलित
बचिया-बच्चा सभक पाँती
कोरामे बच्चा लेने युवा भिखमंगनी
निरीह आँखि पएर खज्जित
खज्जित पएरे बढैत आगाँ
मुदा भने ओइ चौबटियापर
शानसँ भीख मंगैत अछि बालगोविनक झुण्ड
भीख नै आशिरवादी
कोयलाक भट्टीक धुँआसँ
कारी भूत भेल श्रमिकसँ तऽ नीके

नव व्यवस्थाक पुरहित

लघु उद्योगक मालिक
घर जेना राजा सभक
दारू पीबि मँतल
मुदा सरकारक छन्हि जिद्द
लघु उद्योगकें करताह समृद्ध
लघु उद्योगकें वा लघु उद्योगक पुरोहितकें
बना कऽ कम्पनी लऽ सरकारी ऋण
बन्द करथि कम्पनी
कम्पनीक मालिक नै निदेशक छी हम
कम्पनीकें होइछ घाटा तँ
श्रमिक छथि मरैत
नै किछु होइछ निदेशकक
कम्पनी अछि मरैत
अर्थशास्त्र बनबैत अछि कम्पनीकें मनुक्ख
आ मनुक्ख बनैछ कननमुँह

नव आ पुरान व्यवस्थाक हाट

भैरवस्थानक हाटमे बेचब केना तरकारी
से गेलौं दिल्ली-मुम्बईक हाट
तरकारी माँछक बजार
होटलक बनथि भनसिया
पुत्र-पुत्रीक विवाह
दुनूमे जाति गौण
विधवा-विवाह क्षम्य
मुदा जखन यएह सभ घुरै छथि गाम
नील-टीनोपाल दऽ नव व्यवस्थाक दलित
बनि जाइ छथि पुरातन व्यवस्थाक पथिक
तरकारी बेचनिहार बनथि जयबार
औद्योगिक क्षेत्रक कारी मुरुत
साबुनसँ रगड़ि चाम
भऽ जाथि गामक भलमानुष !
होटलक भनसिया भऽ जाइत छथि सोइत
सरदारजीक मोहरिँर बनैत छथि कायस्थ
पासवानजी भऽ जाइत छथि दलित
घुरैत काल ट्रेनहिमे फेर सभ मिलि
नव व्यवस्थाक आ पुरातनक करथि मेल
ट्रेन अछि साक्षी ऐ मनसि द्वैधक

अमूर्त व्यवस्थाक धँसल आँखिक
 उजड़ा नूआक व्यथाक, युवा विधवाक
 आम्रपालीक आ
 मृच्छकटिकक नायक चारुदत्तक
 आ बसन्तसेनाक
 घृणाक आस्वाद आ घृणामे लेने आस्वाद

जखन मशीन आ बिलाड़ि दुनू बुझैए हमरा मृत

हे भीष्म अहाँक कष्टक बखान
 बाणक शय्यापर सूतल
 मुदा बुझलौं नै ई बात,
 लेलौं इच्छा-मृत्यु किए तात!
 भीषणताक कथा नै थोड़,
 भूख अत्याचार गरीबपर जोड़
 केलन्हि अहाँक क्षत्रिय विस्तार,
 शक्ति आ धनक द्वन्द्वक परिधि
 घोषनि-ब्राह्मण सभ सेहो सएह,
 रटि रटन्ता विद्या फेर वएह!
 तखन.. एक युधिष्ठिरपर छोड़ि कऽ राज,
 भीष्म छोड़ल अहाँ केना निसास!
 हमर युधिष्ठिर पाँच सय तैंतालीस,
 पहिरथि खादी-रेशमी खालिस
 आ समस्या वएह, द्वन्द्वक परिधि टूटल
 परिभाषा बदलि नव परिधि गढ़ल
 खर्जुरसँ बनल खजुराहो
 वृश्चिक माने खर्जुर,
 अप्सराक जांघपर खर्जुरक चेन्ह,
 जांघपर चढ़ैत ऊपर
 आ बिनु छातक योगिनी मन्दिरमे
 ५६ टा योगिनी सँ बनल वृत्तक परिधिक भीतर शिव
 बर्खा बुन्नीमे भिजैत-तितैत, रौदमे टटाइत
 ओहिना देशवासी दऽ इच्छा-मृत्यु,
 अपन भावना आ इच्छाकेँ
 छोड़ल अछि सभटा कर्तव्य,
 अपन गणतांत्रिक युधिष्ठिर सभपर
 होइत कात, बुझल भीष्म हम आब ई बात,
 पेलौं
 इच्छा-मृत्युएँ अहाँ निर्वाण?

दऽ इच्छा-मृत्यु अपन भावना आ इच्छाकेँ
होइत कात
मुदा केना हएब कात
ऐ जगतसँ जुड़ि जाइ छी निन्नसँ बहार भेलापर
स्वप्नमे सेहो आ जगलापर सेहो
रहिते छी जुड़ल
बिनु स्वप्न बला भेर निन्नमे जखल मशीन आ बिलाड़ि दुनू बुझैए मृत
बिलाड़ि जे बैसि जाइए हमरा माथ लग,
बुझैत हमरा मृत
बिज्जी सेहो बैसल रहै छल माथ लग
सोझाँ गहुमन चारि खण्ड
आ हमरा जगलापर प्रसन्न भऽ नाडरि ठाढ़ कऽ लैए
हम अपनाकेँ बुझै छी मनुकख आ बिलाड़िकेँ बिलाड़ि
आ बिज्जीकेँ बिज्जी
मुदा ओ बुझैए अपनोकेँ आ हमरो बिलाड़ि
अपनोकेँ आ हमरो बिज्जी
बिनु स्वप्न बला भेर निन्न छोड़ि हे भीष्म
कतय कऽ पाबै छी हम अपनाकेँ कात
बिनु स्वप्न बला भेर निन्न
जखन मशीन आ बिलाड़ि दुनू बुझैए हमरा मृत
आ बिज्जी करैए रक्षा गहुमनसँ
आ निन्नमे
जतऽ समयक गति आस्ते-आस्ते कम होइत जाइत अछि
आ ठाढ़ भऽ भऽ अकछा जाइत अछि
स्थान जतऽ खतम भऽ जाइत अछि
आ दुनू एक दोसरामे मिज्झर भऽ जाइत अछि
आ समय घुऽ लगैत अछि
आ जन्म लैत अछि उजरा तरहड़ि
तबल करिया तरहड़िसँ निकलैत गुमार
लीलैत सभ किछु जे ओइमे अछि खसैत
समय आ स्थान सभ किछु
आ तखन
समयक गति आस्ते-आस्ते कम होइत जाइत अछि
आ ठाढ़ भऽ अकछा जाइत अछि
स्थान जतऽ खतम भऽ जाइत अछि
आ जखन किछु कतै नै अछि
पृथ्वी, ब्रह्माण्ड, सृष्टि सभ किछु लील लेल जाइत अछि

समय आ स्थान एक दोसरामे मिज्झर भऽ जाइत अछि
 स्थान छोट मुदा भरिगर होइत जाइत अछि
 बिन्दु फेर ओहू सँ छोट मुदा ऐ ब्रह्माण्ड आ सृष्टिसँ बेशी भरिगर
 कारण ई ब्रह्माण्ड आ सृष्टि केँ थकुचि कऽ बनल
 थकुचि कऽ बनल बिन्दु फेर ओहू सँ छोट
 आ फेर विलुप्त
 मुदा भरिगर, जतेक समस्त ब्रह्माण्ड आ सृष्टि
 आ ई करिया तरहड़ि पहिने मारिते रास
 सृष्टि आ ब्रह्माण्डोसँ पैघ
 आ दोसर सुइयाक नोकोसँ छोट
 आ फेर एक दोसराकेँ लीलैत
 थकुचि कऽ बनल बिन्दु फेर ओहू सँ छोट
 आ फेर विलुप्त
 आ एकटा शब्द, समय आ स्थानक मिज्झर होइते बहराइत अछि
 आ समय घुरऽ लगैत अछि
 आ जन्म लैत अछि उजरा तरहड़ि
 आ स्थान बनऽ लगैत अछि
 शब्द शाश्वत अछि बा नै?
 ध्वनिक अछि आरम्भ आ अन्त दुनू
 तोड़ि-तोड़िकेँ भाषा बुझब
 बा तरङ्ग सन सङ्गीत सुनब।
 मुदा जे ध्वनि हम सुनै छी तकरे ने?
 आ जे ध्वनि हमर साधंश सँ अछि बाहर?
 स्वप्नमे खसैत रहैत छी
 ओइ सृष्टिक क्षितिजसँ नीचाँ
 जतऽ स्थानक सीमा अछि
 आ समय भऽ जाइत अछि स्थिर ठाढ़
 आ स्थान छोटो होइत जाइत अछि
 मुदा नमड़ि जाइत अछि भीतर दिश
 आ भहड़ऽ लगैत अछि
 ओइ सृष्टिक क्षितिज घेरने अछि ओइ करिया तरहड़िकेँ
 ओइ गोल क्षितिजक धधरा आ ओइसँ होइत खसैत हम
 ऐ सृष्टिक बीचोबीच
 जइमे कताक बेर खसल छी हम स्वप्नमे
 आ बिला जाइ छी जगबासँ पहिने
 ओइ अकाशमे बिनु छातक योगिनी मन्दिर
 रातिक प्रकाशमे ५६ योगिनीक बीच शिव

ऐ सृष्टि आ ब्रह्माण्डक कोन खोजमे रहथि
तरेगणकेँ तकैत
आ तरेगण तकैत
ने रोग ने व्याधि ने मृत्यु
जँ मृत्यु अछियो तँ
से अछि इच्छा मृत्यु
बिनु स्वप्न बला भर निन्न छोड़ि हे भीष्म
कतय कऽ पाबै छी हम अपनाकेँ कात

हाइ रे कुमारिल!!

ट्रेन छल लेट
जायब दिल्ली केना
अस्पतालक भर्ती कक्षमे भरती हेबा लेल
ट्रेन छल लेट
पहुँचलौं दिल्ली कोनहुना
मुदा एतऽ डॉक्टर अछि व्यस्त
दिल्लीक सरकारी डॉक्टर
आउ आइ, काल्हि, परसू
भेलौं पस्त
हुनूज दिल्ली दूर अस्त
हुनूज दिल्ली दूर अस्त
तुघलकक दिल्ली दूर अस्त
युग बदलल गणतंत्र आयल
मुदा ट्रेन दिल्ली जायबला लेट
आ सरकारी डॉक्टर फुर्र
हॉस्पिटलमे डॉक्टर
पेशेंट फ्री इलाजक
दंभ भरइ छथि
साबुन-तेल सभपर टैक्स
भरइ छथि सभ वासी
हॉस्पिटलक लैटरीन गंदा अछि पुछने
नर्स बिगड़ि देखबइ छथि
अपोलो हॉस्पिटलक पगपाती
जाउ अपोलो, गंदगी ज्यों लागय
खर्चा लागत तखन बुझबै
रहल टैक्सक बात से जाउ
आ फिनान्स मिनिस्टरेकेँ जा कऽ बुझाउ

दिल्ली अखनो अछि दूर
हुनूज दिल्ली दूर अस्त
हुनूज दिल्ली दूर अस्त
भगवान-भगवान करैत लोक
किछु ओकरा शरीरी मानैबला आ किछु अशरीरी
जँ ओ छथि अशरीरी तँ किए हेतन्हि इच्छा हमर दुख खतम करबाक
आ जँ छथि शरीरी तँ हुनको निर्माण तँ भेल हेतन्हि
कारण हुनकासँ पहिने तँ विश्वमे किछु हेतै नै!
हाइ रे कुमारिल!!
तँ भगवान नित्य शरीरबला आ हम सभ अनित्य शरीरबला!
तँ डाक्टरकेँ भगवान मानी ऐ छोट-मोट दुनियाँक,
आ जँ ई अछि एतेक व्यस्त तइयो देखि लैते अछि अबेर-सबेर
तँ भगवान तँ तँ नै आबि रहल हेता
हेता ततेक व्यस्त।
मुदा एतेक टा संसार कोन बौस्तुसँ बनेलनि!
हाइ रे कुमारिल!
जेना मकड़ी बिनु कोनो बौस्तुक जाल बुनि लैत अछि।
बादरायण कम नै, आब की बजता कुमारिल!
मुदा ओ जाल बुनैए कीड़ी खेलासँ आयल ओकरा भीतरक बौस्तुसँ,
हाइ रे कुमारिल।
तखने ऐ छोट-छीन दुनियाँक भगवान हमर डॉक्टर अबैत अछि।
आ आला लगबैत अछि, सुइया भोंकैत अछि
हमर शरीरक नाड़ी-तंत्र, ऐ ब्रह्माण्ड सन
ततेक तरेगण ब्रह्माण्डमे ततेक नाड़ी हमर शरीरमे
ऐ छोट-छीन दुनियाँक भगवान हमर डॉक्टर तकरा टोबैत अछि।

बुद्धिक भरोसे गढ़ल नव सत्यक गढ़नि

आकांक्षाक अग्नि

आँचब आ प्रज्वलित राखब, हमरब आगिकँ
खोरनाठब मुदा, तखन आगि खसत पातक ढेरीपर
आ पसाही लागत
आकांक्षाक अग्निकेँ
आ इच्छा आकांक्षाक पूर्तिक?
आ आकांक्षा कोन?
ने कोनो समर्पण, ने कोनो निरन्तरता
निरन्तरता तँ मात्र वएह दोहराओल जा रहल काजक,
नीक निकुत खेबाक, सौन्दर्यकेँ निङ्गहारबाक।

भावनाक तीव्रता, तामस, नोर!

अनुक्रमणिका आ विषय सूचीसँ आगाँ

बाडक बडौरा,
सुखाइऐ केहन ई बडठी
औँटि कऽ बहार भेल बडोर,
तुमब आ फेर फाहाक पृथक हएब,
धुनकीसँ धुनल आ
लारनिसँ ताँतिपर आघातक स्वर,
टकुरी कटैत घुमैत।
छड़पि जाइत अछि लिखलाहाकेँ छोड़ि
अनुक्रमणिका आ विषय सूचीसँ आगाँ
मड़ियबैत छिन्ना
पागैत सूत।
ईहो अछि शिक्षा
ई अछि ईलम,
छड़पि जाइत लिखलाहाकेँ छोड़ि
अनुक्रमणिका आ विषय सूचीसँ आगाँ
बढ़ैत अछि हमर आकांक्षाक अग्नि
लोकक सुख-दुःखमे ठाढ़,
परिवार, टोल, गामक पर-पंचैतीक हिसाबे चलैत-चलबैत जिनगी।

व्यावहारिक आ सैद्धांतिक

पेलनीसँ, मखान उठबैत
गूड़ीसँ चोंइटा हटबैत
ननगिलाट पहिरने बूढ़ी, सोझाँ नन्हसुतमे मलकिनी
कलबत्तू पइसा कऽ गांथैत आभूषण मोन अछि
किरमिची चानीक पानि चढ़ल, मुदा वएह ताम
सैद्धांतिक शिक्षक आ व्यावहारिक श्रमिक
एकटा आभिजात्य आ दोसर क्लान्त
मुदा एक्केमे दू जँ मिज्झर भऽ जाय?
लखिया भेड़ जकाँ आगाँ-आगाँ
बथनियाँक बथनायब अबैत काल, आ खभायब जाइत काल
बीसटा भेड़क लेहड़, एक सय भेड़क बाग
चारि-पाँच सय भेड़क गँहैड़,
भेड़केँ खउरब, गुलठिआइत तूर
सिएन अधलाह, खुटिया मिरजइ ओछ
सैद्धांतिक शिक्षक आ व्यावहारिक श्रमिक

एकटा आभिजात्य आ दोसर क्लान्त
मुदा एक्केमे दू जँ मिज्झर भऽ जाय!
पाग आकि मौड़ शंकुक आकारक पैघ,
कोढ़िलायुक्त पागक अग्रभागक फेंच
छल ईहो हमर आकांक्षाक अग्निये ने?
चिरतन, ठिकरी, लहेरिया आ जंगलाती छाप
आब हमर आकांक्षाक अग्नि मांगैत अछि
पटोर, गुलबदना, नीलाम्बरी, सोइरीक नूआ
कलफ लगा कऽ कड़गर कय, भेलासँ दऽ चेन्हासी
तूरक फाहा, पोखरिया, लहेरिया, बदामी, चानपंखा
बेरायब आ सुइया पैसायब अहाँ
हमर आकांक्षाक अग्निक्ँ।
लोकक हेंज संगे बढ़ैत जिनगी,
ओही हेंजक संगे हँसी, कानी
हेंज सन सोची, पंचैती मानी।
तँ की करी, चलैत चली ओहिना, बा कोनो मोड़पर
बा कोनो मोड़पर भऽ जाइ असगर लऽ ली तेहेन मोड़
आ अपन बुद्धिक भरोसे गढ़ि ली नव सत्य
पंचैतीमे कएल निर्णय जे हमरा हिसाबे छल अनैतिक
मना कऽ दी हेंज सन हँसी हँसब

हमर शरीरक भाथीमे पैसैत अछि वायु

ई पुरान लोहझाम, लोहङ्गरक्ँ
भाथीमे पैसैत वायु जखन आयत तखन
भाथी सालब आ प्रज्वलित करब अग्नि
लऽ कलम छेनी, चकरसानपर पिजबैत सरौता
हमर शरीरक भाथीमे पैसैत अछि वायु
हमर आकांक्षाक अग्नि सुनगैत अछि
तँ की गढ़ि ली ईश्वर
आ आत्माक स्वरूप
आ दुनूक बीचक सम्बन्ध
आ दुनूक बीचक पंचैतीमे बनि जाइ पंच!

कबिराहाक कनसीपर उठैत धुन

देखैत अछि, छिलुआ पहलदार बासन
आ तखन हम
आघातसँ मठारब पित्तरि, कलगैयाँ लोटा
निरंजनीक दीप, जलधरी

फेर दीयठिमे राखि दीप
पहीरि टुमटाम गहना, गोबरियाव सोन, जोकठी आ दसकलम
चाँपकली पहिरने
लेने हलुमानी नातीक लेल
पथरौटी पहीरि हम, पवित्री जनउमे बान्हि
श्राद्धक काञ्चनपुरुष जकाँ
कबिराहाक कनसीपर उठबै छी धुन
हमर आकांक्षाक अग्नि
बुझि गेलौं, गढ़ि लेलौं आत्मा आ ईश्वर
मुदा करी की? बुझि तँ गेलौं मुदा करी की?
करय तँ पड़त वएह हेंज सन व्यवहार, काज
हेंज सन अभिनय। हेंजक सत्यक पक्ष, हेंजक संस्थाक सत्य।
जँ हेंजक सत्यक पार जा सकी तखने ने?

भुजनाठीसँ लाड़ैत आकांक्षाक अग्नि

कनसारीक भुज्जा जकाँ
दाबापर उझकुन ओइपर राखल बासनमे
चुल्हाक पौरी कूरामे धिपाओल बालु दऽ
भुजनाठीसँ लाड़ैत छी
आकांक्षाक अग्नि
जिबैत अछि एकटा जीवन हमर स्वप्नमे
बहुत रास परजीवी हमर भीतर
ओहो तँ अछि एकटा सत्य
स्वप्नसँ जागलापर धकधक करैत हमर छाती
डरबैत डरौन आकृति
आ तकरा पाछाँ

अतिखाइन

मकड़क मखानी
सोन्हगर आ झूर नीक स्वाद
मुदा आब अतिखाइन भऽ गेल अछि, हमर आकांक्षाक अग्नि

भैसाठ

अदहन देल पानि आँच दऽ तारब
उसीनब कूटि कऽ मुरहीक चाउर बनायब
नोन-पानिसँ मोअब कोड़ाइ, दालिक खोंइचा
बिनु जमल गुड़ छाल्हीक पातर ममुरी
परतपरसँ काछि कऽ निकालब मलीदा
तेबासि नीक, मुदा बसियानि

मोटगर भैसाठ आ पातर तुरीं दही
अग्निक्कें जरैत रहय देब
कोइयासँ तेल निकालि धधकबैत।
हमर आकांक्षाक अग्नि

धेनुआर घानी

मोहब आ दऽ आयब तेलिहानी
तेलीक्कें दऽ बहतौनी, घानी लगायब आ निकालब धेनुआर घानी
घानी निघरब, तेलहनक अवशेष खरी
उज्जर रंगक रेह
नोनथरा, कोठीसँ निकलल
पनारसँ चुबैत पानि, अवशिष्ट सिट्टी ढेर नोनफर
काछल फेन खारीसँ खरिआ नोन
सुच्चा
फेर अवशिष्ट पछाड़ी, दोसर खेपमे काही शोरा
आ पकवा नोन, तेसर खेप तेलहा शोरा
आ नीमक अवशिष्ट जराठी
जराठी आ सिट्टीक मिश्रण
बेचुआ, रौदमे सुखा कऽ जरुआ शोरा-आबी शोरा
कच्चा शोरा परिशुद्ध भऽ कलमी शोरा
सुच्चा
सुच्चा हमर आकांक्षाक अग्नि

मन्तुर पढ़ि छत्ता लग जायब

नोन- रामरस, कम नोनगर- मधनोन
कटियामे मधु राखि
चिड़ै मारबा लेल नर-सर
नाल गुआमे पैसल, नरक उपरका सिर आ नीचाँ भारू
सरमे कमची सभ, पकड़बा लेल चिड़ै कम्पा
मन्तुर मन्तर पढ़ि छत्ता लग जायब,
बिज्जी, जे अछि रक्षक, रक्षक परिवारक
केलक गहुमनक चारि टुकड़ी
रक्षा करैत बतही मायक दुनू बच्चाक
बिज्जी दऽ रहल पहरा बच्चा सभक माथ लग
तइ बिज्जीक तुनकारी दऽ करैले आयल अछि जे शिकार
कनहापर साँप लटकेने
हमर आकांक्षाक अग्नि मन्तुर पढ़ि छत्ता लग जायत
बिज्जीक्कें तुनकारी दऽ बजायत, बचि जायत बिज्जी

दैत रहत पहरा।

गहुमन साँपक मन्तुर

-चारि साँप लोकनी, बार चित्ती गंडा, ऐनी मेनी खापड़ि टेनी

मन्तुर पढ़ैत रहत हमर आकांक्षाक अग्नि

बकछुछरू खेलाइत भीखू संग

बँसकरमक विश्वकर्मा

भीखूक फारब आ

ओदारि कऽ निकालब

उजरा औषधि वंशलोचन

कोनियाँ सूप हकरा पथिया

मुदा खजुरिया बान्हमे बान्हल

वर्तमान आ भविष्य

बकछुछरू खेलाइत

डोमासीक कातबला पोखरिक महार

थुथुन घोसियेने माँटिमे सुगरक झुण्ड

भीखूक भाय छथि आब सरकारी अधिकारी

दोसर भाय हॉस्पिटलक वार्डबॉय

आ भीखू अखनो डोमासीमे

जिबैत वर्तमानक संग भविष्यक ताकिमे

स्थिर ओइठाम ठाढ़,

मुन्हारि साँझमे लीलीडाली हाथमे लेने

बजैत जे भाय बनल अछि अधिकारी

मुदा गाम छुटले छै बुझू

बियाहो पैघ घरमे ओकर भेल छै

दोसर भाय तँ गाम अबिते अछि

ओढ़ना पहिरना नीक मुदा काज वएह

हमरे नै फुराइए करू की?

भविष्य तँ वएह बुझाइत अछि।

आगाँ अहाँ एलौं, कोन काज कहू?

मुँह झलकि गेलै भीखूक

ओइ मुन्हारि साँझमे

हम चुप्पे रही तावत

ओइ झण्डी गाछ लग ठाढ़

ठाढ़ गाछ कुकाठ लग

बाजि उठल भीखू मुदा काज तँ

काज तँ हमर ओ हाकिम भाय नहिये करत

मुदा अहाँले कहबै धरि अबस्से।

आ हम कहैत छी, नै भीखू
 हाकिम तँ काज कइये देत
 मुदा काज अछि हॉस्पिटलक
 पिता छथि भरती जतऽ भाय अहाँक छथि काज करैत।
 कतेक दिन भेलन्हि भरती भेना
 मुदा नै आइ, हे काल्हि होइत
 ऑपरेशनक तिथि अछि बढ़ेने जाइत
 आ भीखूक मुँह झलकि उठल
 मुन्हारि साँझमे।
 हँ। हँ कहबामे जे होइ छै संतुष्टि
 मदति देबामे जे होइ छै आत्मतृप्ति
 तइसँ।
 बँसकरमक विश्वकर्मा भीखूक वंशलोचनसँ
 तृप्त होइ छी हम सेहो।
 ओइ मुन्हारि साँझमे
 मिझाइत-मिझाइत
 हमर आकांक्षाक अग्नि अछि नै अछि मिझाइत

उजाहिमे उपलाइत हम आ माँछ

ई नम्माधग्गी
 बिड़इमे होइत मछहर
 डकही पोखरिमे भऽ गेल बन्न,
 डकही पोखरि मखानक पातसँ छाड़ल अछि आब
 मुदा एतऽ बिड़इमे होइत अछि मछहर
 कच्छाछोप, हेलैत कबइ
 कबइ जे देखैए
 मारनिहार, बनेनिहार आ तरनिहारकँ
 माने खेनिहार छोड़ि सभकँ
 काही घुमैत
 कौआठुट्टी गाछक फड़ लग हम ठाढ़
 कबइजल्ला लग
 आ हम आबि जाइ छी
 खींचि फिरचइ पकड़ि कऽ
 छी जाल खिरबैत
 आ फेर हम घुमऽ लगै छी
 फेर टापी छापि,
 ठाढ़ भऽ जाइ छी
 छै उजाहिमे उपलाइत माँछ

आ फेर हम जाल छोड़ि दैत छी
सहदसँ माछक करै छी शिकार
आ आब
अछि इछाइन चारू कात
इछाइन होइत अछि हमर आकांक्षाक अग्नि
जाल खिरबैत
घुरमा लागि जाइत अछि
सोचनी पैसि जाइत अछि
इछाइन गन्ध बनि जाइत अछि नियति
जीवनक प्रवृत्ति
माँछ संगे उपलाय लगैत छी
लगैए जाल खिरबैत हमरा बान्हि कियो रहल अछि
लगैए शहद लेने छातीमे कियो ढुकल जा रहल अछि।
सोचनी पैसि जाइत अछि
इछाइन गन्ध बनि जायत की हमर नियति?
हमर जीवनक प्रवृत्ति?
ई नम्माधगगी
इछाइन होइत अछि हमर आकांक्षाक अग्नि

ठाढ़ लत्तीकेँ पढ़ैत छी

पानक जड़ि लग गारल खरही देखै छी
आ ओइपर ठाढ़ लत्तीकेँ पढ़ै छी
राड़ी घासक टुकड़ी आ काइससँ बान्हल हमर उल्लास
सरपत घासक टुकड़ीपर चढ़ि गेल लत्ती जकाँ
लत्ती जकाँ हम अपनाकेँ पबैत छी
बन्हकासँ बान्हल पानक ढोल बनि गेल छी
मोड़ल पानकेँ सीकीसँ,
बाँसक पातर शलाकासँ गाँथल अछि
बेल निकलल शाखा कनार,
इकरीसँ गछउठौनी
पानक छर्ल लत्ती, गीरहसँ युक्त छर्ल बेल बनि गेल छी
लत्तीक छीपकेँ काटब, छपटा करब
जड़ि लगक चारि-पाँचटा पानक पात माने घासन जकाँ
ऊपर चारि-पाँचटा पानक पात माने कूट-खूट कचलेवारि होइत
छीप परक पात मुड़वारि भऽ गेल छी
पात तोड़बाकाल कूटक एक-दूटा पात तज्जीबला कठोर पात
किछु काल लेल छोड़ि देल
जड़िसँ छीप धरि दुपन्ना आ लेवार सभ

झलमा बीमारी भेने पान कड़ भेल
 फुट्टा बीमारी भेने गलल पात सन हम असकरे घुमैत छी
 तुबैत, तेलगगरा भेने आ झड़कैत; बढ़ती भेने अग्रभाग झरैत
 पातकें फेरफार कऽ मृत्युकें टारैत छी किछु काल धरि, बहुती!
 चौठैय्या, ढोली, लेसो, भीड़ा बनि गेल छी
 पातमे बान्हल भीड़ी, से पतौरा जकाँ तैयार भेल कल्लामे जएबा लेल धड़फड़ाइत
 डंटी लागल साँस छुट्टा पान सन पूजा लेल निहुछल
 तबक सन चमकैत पन्नीमे ठूसल बजारक समान बनि गेल छी
 आ तखन
 पानक जड़ि लग गारल खरही देखैत छी
 आ ओइपर ठाढ़ लत्तीकें पढ़ैत छी
 जे अछि हमर आकांक्षाक अग्नि

श्राद्ध ने मरा जाय

एक मृत्यु फेर दोसर मृत्यु नेनाक पिताक आ फेर काकाक
 कक्काक लोकवेद छलन्हि दबंगर से चिन्तित छल छोटका भाय
 श्राद्धावधिमे दोसर मृत्यु भेने पहिले श्राद्धसँ होइछ दोसराक श्राद्ध
 एकक श्राद्ध जायत मराय, छल चिन्तित दुनू भाय
 कमजोरहाक संग पण्डितो देत नै, शास्त्र धरि किछुओ कहय
 मामागाम खबरि दियौक पिताक श्राद्ध ने मरा जाय

शलातुर गाम

तक्षशिला इतिहासक उनटबैत पन्ना
 चक्र घूमल टूटल अराड़ि भेल ठाढ़
 युआन च्वांगक विवरण
 व्याकरणक आचार्य सभ शलातुर गाममे
 काबुल आ सिन्धु धारक संगम पर स्थित
 पाणिनीक जे छल गाम आ मामागाम आइक लहुर गाम
 आब तँ तोड़ि रहल छथि बामियानमे बुद्धक मूर्ति
 पाणिनीक वंशज युसुफजाइ पठान
 इतिहासक आ दक्ष देशक प्रयाण
 इतिहासक घुमैत चक्रसँ
 चक्र घूमल
 टूटल अराड़ि ठाढ़ भेल
 भने अछि लग
 आ केने अछि अराड़ि
 तइ बहन्ने छी हम सजग
 करैत रहैत छी तैयारी

१९६२ धरि हिमालयकेँ बुझल बेढ़
जेना १४९८ धरि छल समुद्र
द्वार खोलैत छल खैबर दर्रा मात्र
पड़ोसीयो पर आक्रमण होइत छल
दूर-दूरसँ अबैत छल अत्याचारी
चक्र घूमल टूटल हमर देश
अराड़ि ठाढ़ कएलक दियाद
भने दियाद अछि कएने अराड़ि
जे करैत रहैत छी तैयारी

बड़का सड़क छह लेन बला

माय !

माय धानक खेत लग
जे बड़का सड़क बनल अछि
छह लेनक
तीन टा आबयबला आ तीनटा जाइबला
ओतऽ आइ
कतेक नीक लाल रंगक कार
आ ओइपर फहराइत लाल झण्डा
शीसा खुजल नै रहै जकर
रहै बन्न
देखलौं आइ
जखन बेचैत रही हम चिड़ै
एकटा बच्चा जिदिया गेल
खोलबेलक कारक शीसा आ
कीनि लेलक हमर सभटा चिड़ै
पानि रहै ओइ बच्चाक मुँहपर
ललौन मुँह
शीसा खुजिते बहार भेल ठंढ़ा हबा
कार ए.सी. बलासँ
कार जे रहै लाल रंगक
आ ओइपर फहराइत लाल झण्डा
माय !
माय ई जे धानक खेत लग
जे बड़का सड़क बनल अछि
छह लेनक रंग-बिरंगक गाड़ी सभक लेल
तीनटा आबैबला आ तीनटा जाइबला ओतहिये
माय !

ई तँ अपने गामक सड़क भेल ने
 मुदा अपन गामक तँ सभ गोटे गेला
 जाइ गेला कमेबा लेल दिल्ली आ पैजाब
 गाममे माटिक घर
 फूस आ खपड़ाक चार
 मुदा धानक खेत लग
 जे बड़का सड़क बनल अछि
 पक्काक
 चिक्कन आ घोरोसँ बेशी सुन्नर ई सड़क
 ओत्तै देखलौं ई आइ
 माय !
 सुनै छिए बनल अछि कोनो
 वर्ल्ड बैंकक फंडसँ
 पकिया चिक्कन-चुनमुन ई सड़क
 छह टा लेनबला
 शीसा सन अछि ई चमकैत !
 माय !
 जे परुकाँ साल काकाक
 घर जे काकाक बनल रहै पक्काक
 गिलेबा बला
 जे कनिये दिनमे खसि गेल रहै
 ओहो कोनो सरकारी फण्डसँ बनल रहै !
 कतय छल चमकैत ओ शीसा सन
 ओइमे रहितो लोक छल डेराइत
 भने खसि पड़ल
 हएत ओ कोनो नकली फण्डसँ बनल
 आइ तँ ओइ कारक शान देखलौं
 वर्ल्ड बैंकक फण्डसँ बनल
 अप्पन गामक ऐ छह लेनबला सड़कपर!
 माय !
 ई वर्ल्ड बैंक बला फण्ड कोनो नीक फण्ड अछि !
 ऐ निकहा फण्डसँ घर नै बनैत छै की?
 खेनाइ भोजन आ रोजगार जे दइतै ई निकहा फण्ड तँ
 तँ किए लोक पड़ाइत दिल्ली आ पैजाब
 किए सुनितय राज ठाकरेक गारि
 किए जाइत गय खुनाहनि होइ लेल असाम
 सुनै छिए पढ़ै जाइ छै बिहारी कहि गारि

माय !

ई वर्ल्ड बैंक बला निकहा फण्डसँ
जे बनि जड़तै अपन गामक घर आंगन
तँ ओ थोड़बे रहितै गिलेबा बला पक्काक कोठा सन!
ओ तँ रहितै ओहने सुन्नर शीसा सन चिक्कन आ ठोस
छह लेनक धानक खेतक कात बला ऐ सड़क सन
आ जे रोजगारो ओइ फण्ड सँ भेटितै
तँ लोको सभ रहितै घरमे
गामक घर सभ अखन जकाँ भकोभन्न थोड़बे रहितै
चुहचुही रहितै अपनो गाममे
आ तखन जे देखबा जोग रहितै शान अपन गामक !
आ देखबा जोग रहितै शान ऐ छह लेन बला सड़कक सेहो !
हमरो सभक अंगपर रहितय जे वस्त्र
ओहने वस्त्र
जेहन ओ लाल झण्डाबला लाल कारमे बैसल बच्चाक रहै !

माय!

हमरा तँ लगैत रहैए जे
अपन गामक ई सड़क
ओइ लाल परदेशीक ओइ लाल झण्डा लागल लाल कारसँ बेशी अछि लग
दुनू टा लगैए बिदेशी सन
आ तँ ने चारू कातक गामक लोक
आ कुकुड़कै
पिचड़ा कऽ निकलि जाइत अछि ओ सभ
लागल आइ जे
जे ओइ लाल कारसँ निकलल ठरल हबा सेहो अपन हबा नै
लागल जेना ओ हबा आ ओ कार हमरासँ छुता गेल हुअय
छुता गेल हुअय हमर स्पर्शसँ
अपन गाम अछि मयूर
आ ओ छह लेन बला सड़क अछि एकर पाँखि
आ हम सभ छी पएर ओइ मयूरक
ई सड़क अप्पन गामक रहितो लागैए फॉरेनर
माय !
सभ दिन बकड़ी चरबैत
देखैत रहैत छी हम शान अप्पन गामक ओइ सड़कक
जे अछि छह लेन बला !

पक्काक जाइठ

तबैत पोखरिक महार दुपहरियाक भीत

पस्त गाछ-बृच्छ-केचली सुषुम पानि शिक्त
जाइठ लकड़ीक तँ सभ दैछ
पक्काक जाठि ई पहिल
कजरी जे लागल से पुरातनताक प्रतीक
दोसर टोलक पोखरि पोखरि नै अछि डबरा ओ
बिन जाइठक यज्ञोपवीत नै भेल सन
कारण अछि सएह
सुनै छिए मालिक ओकर अद्विज छल
पोखरिक यज्ञोपवीतसँ पूर्वहि प्रयाण कएल
पाइ-भेने सख भेलन्हि पोखरि खुनाबी
डबरा चभच्चा खुनेने कतऽ यश पाबी !
देखू अपन टोलक पक्का-कंक्रीटक जाठि ई
कंक्रीट तँ सुनै छी पानिमे रहने होइछ आर कठोर
लकड़ीक जाठि नै
जकर जीवन होइछ थोड़

पता नै घुरि कऽ जायब आकि...

पता नै घुरि कऽ जायब
आकि एतै मरि-खपि
बिलायब
घर आंगन बहारि
गाममे
आबी दुआरि
दऽ दूभि गायकँ
मालक घरमे घूर लगाबी
फेर पैजाबमे
चाहक स्वाद कतेक नीक
दिन भरि खटनीक पाछाँ सेहो
नै थाकै छलौं मीत
आब सुनै छिए जे चाहमे हफीम रहै छल मिलाओल
तखने ओइ बच्चाक सोझाँ
घोरनक छत्ता खसल
मोन पड़लै गाम
घुरि चलू देश बजओलक
मिथिलाक माटिक वास
आमक आयल अछि मास
गाछक पात खसि रहल
लजबिज्जी सभ पसरल हएत

गाछक जड़िक चारूकात
नहिये गाछक जड़ि बनेलौं
नहिये पोखरिक घाट
एक पेरियोपर जनमल हएत
अक्खज दूभि आ काँट
तरेगणक तँ दर्शनो नै होइए
प्रदूषण किदनि एतऽ
रोकलक चन्दामामाकै
थारीयोमे आबयसँ
हमरा ई सभ किदन बिहारी कहैए
क्यो लऽ चलू देश घुरा कऽ
मोन नै एतऽ लगैए
मायक बरतन टिनही जहिया किनायल
कतेक हँसल रही प्रसन्न भऽ सभ भाय
बेरा-बेरी खाइत ओइ थारीमे
ऐ दिल्ली नगरियामे
स्टीलक बरतन बासन
मुदा स्वाद ओइ टिनही थारीक
जे स्वादि-स्वादि खयने रही
पता नै घुरि कऽ जायब
आकि एत्तै मरि-खपि
बिलायब
बकड़ीक भेराड़ी
खड़इत सुखायल पात
पोखरिक महारपर
बबूरक काँट
उज्जर सपेत बिखाह
मुदा ऐ दिल्ली नगरियाक
उज्जर सपेत लोकसँ बेशी बिखाह नै
जतेक बिखाह बोल
ओहूसँ बेशी मारूख घृणायुक्त दृष्टि
बिहारी ! बिहारी ! स्वरक बीच !
बेचैत छी ककबा पापड़ मसाजर
जाड़क राति
ठिठुरैत ई गाछ
बसात सेहो ओहने चण्डाल
सोझाँमे एकटा गाछमे अछि छह मारल

निकलैत अछि ओकरासँ खून
 उज्जर-ललौन
 मुदा फेर बनैए थलथल ठोस लस्सा
 जाइमे सुखायल सन
 गरमीमे झरकल सन
 ई गाछ-पात
 सिखबैए रहनाइ असगर आ एकेठाम
 बिनु भेने अकच्छ
 सालक साल
 ददिया जे दैत रहय अर्घ्य दिवाकरकै
 पाछूमे खसबैत रहथि पानि तड़ाक
 बौआ माने हम
 पएर पटकि कूदै छलौं छपाक छपाक
 पता नै घुरि कऽ जायब
 आकि एतै मरि-खपि
 बिलायब

गजल

बहरे मुतकारिब [बहरे मुतकारिब मुतकारिब आठ-रुक्न फ ऊ लुन (U॥) चारि बेर]
 अहाँ बूझि लै छी जुआरी अनेरे
 जिबै कोन बैबे नियारी अनेरे
 हहारो उठेलौं उदासी गबेलौं
 सिहाबै किए छी मदारी अनेरे
 जतेको नबारी छबारी बुरैए
 घुरेबै कियो नै सुतारी अनेरे
 घरमे उपासे बहारो निरासे
 दहारे अकाले नचारी अनेरे
 चलै छी खटोली उठा ऐ भरोसे
 भसाठी अबैए विचारी अनेरे

प्रकृति, पुरुष

प्रकृति रोष
 कुश तिल जलसँ
 विधवा बनि
 सधवा की विभेद
 दूबि अक्षत जल (टनका/ वाका)
 करबीरसँ
 घर गाछ पहाड़

घेरल अछि (हाइकू)

बनैया लोक

घरक पनिबह

बिदति नहि (शेनर्यू)

करहइ उपारि कऽ खाउ, प्रकृतिकेँ घरमे बसाउ, फुलवारी बनाउ, पहाड़क फोटो बना कऽ घरमे लटकाउ। आ भऽ जाउ प्रकृति प्रेमी। गामकेँ नग्रमे लऽ आउ, चित्रकारीसँ, कलाकारीसँ, बुधियारीसँ।

खेलाइ हम करियाझुम्मरिमे नीचाँ अकास

एकपेड़िया सड़क कतऽ पाबी आब, आब तँ चारि लेन सेहो कम चकरगर मानल जाइए। छह लेन, आठ लेन। अकास मलिछोंह, गाछक हरियरी मलिछोंह। मोन मलिछोंह। मुदा सड़क, घर सभ फोटो सन चिक्कन चुनमुन।

लिखी चित्रसँ

घरक खाका आइ

छी जडलाह (हैबून)

तागि प्रकृति

ताकैले भेलौं पार

सुखल पात

(हाइकू)

ई फूल फल

चढ़ैत जाइ आगाँ

कम होइए

उनटि देखी फेर

लगमे कम दूरे बेशी

(टनका/ वाका)

रंग छाड़ल

पहाड़ आर गाछ

मुदा जीवन

(शेनर्यू)

झझायल रंग कतेको वर्णक। बच्चाक किताबोसँ बेशी चमकैए ई प्रकृति, फूल, पात, बाट आ अकास। आ एकरा सभकेँ तँ छोड़ू ई बरफ, जे रेगिस्ताने ने छी, बालुक बदला बरफ। मुदा नै अछि ऑक्सीजन आ नहिये फूल-पात। मुदा एकर सेहो देखियौ शान। जइ रस्तासँ अबै छलौं से ओतेक कतय चमकै छल। जखन ओइ प्रकृतिक लग छलौं तँ कतय ओकर रूप निडहारि पाबै छलौं। कियो दूरसँ देखैत हएत तँ निडहारि पबैत हएत हमरो, प्रकृतिक बीचमे हमहूँ प्रकृति बनल हएब। मुदा ऐ शिखरपर आबि जे सनगर लगैए ई प्रकृति।

गाछ भेल छै

असगरुआ बौआ

पात भेल छै

खिलौना प्रकृतिक

शिखर देखि

मुदा आब ऐ शिखरपर एलाक पाछाँ लगैए जे बेकारे एलौं एतऽ। ऐ शिखरकेँ ओइ ठामसँ देखै छलौं तँ कतेक सुन्नर लगै छल ई शिखर। मुदा शिखरपर एलाक पाछाँ आब तँ वएह गाम नीक लगैए। तुलना तखने ने हएत जखन गामक प्रकृतिकेँ शिखरसँ देखबै। गामसँ शिखर आ शिखरसँ गाम। मुदा लिलसासँ हाइ रे हाइ। आब चलै छी शिखरक ओइ पार। देखै छी ओइ दिसुका लोक समाज। दूरसँ लगैए दुनू कातक गाम नीक, तराउपड़ी। मुदा ओइ कातक गामसँ शिखर ओतेक सुन्नर लागत जतेक ऐ पारक गामसँ लगैए।

नै ठाढ़ होउ

चलू चली घुरैले

बनिजार छी

लोकक बीचमे छी

जाइत घुरैत छी

(हैबून)

चतरल छै/ लतरल टाट ई/ झोरा कऽ खाउ

ई बिजलौका/ जड़िक शिरा सन/ पसरैए

जड़िसँ फूटि /ई कड़कड़ाइत/ दिग दिगन्त/ पसरत सगरे/ करत आच्छादित

कारण नै छै/ हारि लेल, विजय/ लेल नै गर्व

लोक पताली/ जहाज अकासमे / उनटि गेल / विश्व लोक ब्रह्माण्ड / बात विचार सभ

जल दुनियाँ/ समुद्र तलपर/ अद्भुत रंग

बिनु हरदि/ चाणक्यक बिखाहि / विषकन्या ओ

बिनु हरदि/ बनलि बिखाहि ओ / विषकन्या जे/ पालित भेल छलि/ बिनु हरदिक जे

हरदि, गुणे-गुण, सर्दी भेल, दूधमे घी आ हरदि दियौ आ आँखि मूनि घोंटि जाउ। चोट लागल हरदिमे डोकाबला चून मिलाउ आ लेप दियौ। हरदि बिनु ने दालि आ ने खिच्चरि लागत पियरगर। खिच्चरि भऽ जायत मरसटका आ दालि भटरंग। देखैमे लगैए जेना वैजयन्ती फूलक गाछ हुअय, मुदा ई बाड़ीमे होइए, वैजयन्ती सन पोखरिक महारपर नै। हरदि गाछ/ नुकौने जड़िमे ई/ अपन गुण (हैबून)

आसक अछि/ पनिसोखा उगल/ चलू बढै छी (हाइकू)

भेल उबेर/ उगल पनिसोखा/ काज करै छी/ बहराइ घरसँ/ बाट भेटल अछि (टनका)

पनिसोखा ई/ उगल अकासमे/ उपरे ऊपर! (शेनर्यू)

आह, आब हएत उबेर, उगि गेल अछि पनिसोखा, खुजि गेल अछि बाट, बनिहार बिदा भेल बनिज करय, आ किसान बीया उखारि रोपनि लेल आ हम बिदा भेलौं कोनो अकाजक काज लेल, अन्तहीन बाटपर, सुकाजक काज लेल , दिशाहीन ठमकल चौबटिया दिस।

बाट तकैत

ताकी अकास दिस

विचित्र भ्रम

जेना ई पनिसोखा

उगि खोलत बाट

तखन फेरसँ ताकब, हेरब अपन समान, आ बर्खा होइ धरि चलैत रहब। तँ ई कहब जे बर्खा होइ धरि चलैत रहब कोनो पलायन तँ नै। पनिसोखा उगले अछि, बाट खुजले अछि आ हम बाट ताकि रहल छी आबैबला बर्खाक?

सतरंगिया

अछि ई आस

उगैए आस

डुबबाले अकास

बनि गेल संत्रास

(हैबून -दू टा गद्य आ दूटा टनका युक्त)

हाइकू/ शेनर्यू/ टनका

हरित-कञ्च/ लाल-उज्जर ठोप/ ह्रदै संगोर
 मरुद्यान नै/ जलोदीपमे द्वीप/ बालु नै पानि
 ओ नील मेघ/ समुद्र पृथ्वी छोड़ि/ भेल अकासी
 पात आ चिड़ै/ एक दोसरा सन/ स्किन कलर
 अकासी जल/ पानिक अकासमे/ रस्ता चीरैए
 ई हिमपात/ हिम सन अकास/ आ धरा गाछ
 सूर्यक पूब/ आशाक छै किरण/ मुदा रक्ताभ
 प्रकृति पानि/ हहारोहक पाछाँ/ शांत प्रशांत
 व्याकुल चिड़ै/ ठूठ गाछ सुखौत/ छै हतप्रभ
 प्रकृति नृत्य/ प्रकृति संग जीब/ प्रकृति भऽ कऽ
 प्रकृति प्रेम/ प्रकृति संग जीब/ प्रकृति भऽ कऽ
 अलै चढ़ल/ उत्साह हमर जे/ देखी दोहारा
 अमरलत्ती/ पनिसोखा जकाँ की/ छूत अकास
 कजराएब/ अकासक ई गाछ/ मेघक संग
 देव डघर/ अकाससँ उतरि/ पृथ्वी अबैत
 धुरिया साओन/ फेर भदबरिया/ रेत पयोधि
 कचौआबध/ मनोरथ गामक/ जबका मारल
 गाछ बृच्छ आ/ चिड़ै चुनमुनीक/ बीच खेबै छी
 संगोर राति/ दिन राति सन-ए/ आ राति राति
 दूर क्षितिज/ मुँह घुरौने सभ/ अपने भेर
 दूर क्षितिज/ वृत्तक नहि अंत/ लगक छद्म
 मेघक सीढ़ी/ अकासक मचान/ हिम छारल
 अन्हार जोति/ कएल प्रकाशित/ अंतःप्रकाशे
 सलाढ़ आब/ अरियालङ्घनक/ पाछाँक हाल
 अगरजित/ खसब नै उठब/ ओतै रहब
 साँप घुमैत/ पहुँचैए शिखर/ रस्ता बनैए
 जलपै बेढ़ी/ बोनाठ धमाउर/ उपटाएब
 डलबाह नै/ पंजियार भगता/ भगैतिया नै
 केराक बीर/ काज करब कनी/ खाएब टुस्सा
 घुमौआ मोड़/ चौबटिया बनि कऽ/ आनैए आस
 झरैए पानि/ बनबैए धार आ/ बढैए आगाँ
 उगैतोकेँ ई/ कुश तिल अक्षत/ आ डुमैतोकेँ
 भेड़क जेड़/ बहटाबी ओकरा/ परदेसोमे
 संस्कृतिक ई/ गलज्जर उठल/ की हम चली

कथकिया कि/ घरदेखिया क्यो नै/ अबैए एतऽ
 देखै छी हम/ ऊँचगरसँ बनि/ ब्रह्मा-महेश
 चढ़ाउतार/ नै नइहा फौदार/ चाही प्रकृति
 पृथ्वीक अंत/ आरम्भ भेल प्रारम्भ/ अकास आब
 लोक ने गाछ/ ई आँखिक सौन्दर्य/ तँ तँ अछि ई
 डगहर ई/ ऐ उतरे दछिने/ अगहन छी
 पथ नभमे/ सहस्रबाढ़निक/ अकास घुरै
 प्रकृति जेना/ कलमच बैसल/ सीटल सीढ़ी
 वृत्त सन ई/ पृथ्वी प्रकृति गोल/ अनंत स्पष्ट
 छाहक रंग/ कतेको प्रकारक/ तहिआएल
 बलुआ डोह/ तकर ओइ पार/ पानि अकास
 बाढ़ि लगैए/ समुद्र सन शान्त/ मुदा ई विद्युत्
 पनिदुदुर/ भेल पनिचहटा/ बाढ़िक देस
 घुरैत खेत/ रस्ता सन सर्पिल/ प्रकृति रूप
 इनार-बेंग/ इनारो पैघ, बेंगों/ सीमा छैहै की
 सौंसक सीटी/ घात करैए नै तँ/ भेल खतम
 उगैत चान/ चानक इजोरिया/ डुमैत चान
 आशालुब्धी छी/ जहरमोहरा छी/ डेलीखोडी नै
 नील समुद्र/ ककर अछि छाह/ नील अकास
 दिबड़खौकू/ दिबड़ाक भीड़ छी/ मुदा ठाढ़ छी
 मेघ ऊपर/ घुरी खदबदाइत/ छी बड़कैत
 सूर्य छाहक/ पैघत्व दाग लेने/ करेजपर
 सिंह सिंहीन/ दँतखिस्टी करैए/ हीस मंगैए
 खरहा तेज/ दौगैए नुकाइए/ बीहरि बना
 परबा पाँखि/ बजबै छी कहि कऽ/ हँ, ती ती ती ती
 सुग्गा बजैए/ गुम्म भेल ठाढ़ छी/ बजैए सुग्गा
 जलोदीप छै/ अथाह मुदा छै नै/ पाथर कहैए
 चानक रूप/ पूर्णिमामे अन्हार/ लगक सत्य
 फेंच काढ़ने/ प्रकृतिक गमला/ पड़ैन रोकू
 बथनियाँ छी/ भेड़कँ हक्का दैत/ ओ जाइ छै/ लखिया भेड़ आगाँ/ भेड़िया धसान नै/
 देखै छी ठाढ़े/ अबैत आ जाइत/ भेड़ चरैले/ जाइतकँ खभाउ/ अबिते बथनाउ
 प्रकृति नृत्य/ हंस्याहस्त नृत्य/ प्रकृति रम्भा/
 ऊपर ठाढ़/ थल-अकास बिच/ भजियाबैत
 स्वस्तिकहस्त/ खटकामुखहस्त/ मकरहस्त
 प्रकृति ओढ़ै/ घासक चढ़रि आ/ ताकै अकास
 अहरा दैत/ देनहारक तृप्ति/ देखबैछ ई
 गोरहा ढोल/ छी गोबरकढ़नी/ गोनौर बनै/ वा गोइठाक ढोल/ बड़ैए ऊँच दिस

खट मधुर/ हरियर आ लाल/ संगे-संग छै
 एकपेड़िया/ धंगाइत ढहैत/ बनत रस्ता
 लैत दुइस/ कालिदासे लड़ैए/ दुइनीपर
 माछक घर/ सहथ गाँथि आनी/ अपन घर
 समुद्र थल/ मिलैए अकासमे/ त्रिशंकु भेल
 प्रकृति ऐना/ उधियाइत दृश्य/ मोनक ऐना!
 निचुका ढाला/ उपरका चढ़ाइ/ दुनू सरल
 घोड़ाक लीद/ घोड़े सन रंगक/ आ रूपक छै
 घर हमर/ नारक टाल सन/ उड़िऐत नै
 सेहन्ता लेने/ ठाढ़ छी मरियो कऽ/ देखबै दिन
 कपोत नृत्य / गजदन्त बनल/ छी ठाढ़ सोझाँ
 टकराइए / हहारोह करैत/ टूटि जाइए
 अमरलत्ती/ गछारने गाछकै/ ओकरा मारि/ अपने बनि गेल/ अछि अमरलत्ती
 गरजै मेघ/ चमकैए बिजुरी/ प्रकृति नृत्य
 बिजुरी देखि/ मोन पड़ैए प्रेम / जे नै भेटल / हिलोरैए मेघ ई/ ह्रिदै भीतरधरि
 धिचै छी आस/ बरफपर नाह/ बिन प्रयास/ मोनक उछाही आ/ आसक प्रयासमे
 अम्ल बरखा/ नमछुरुक अछि/ देलियन्हि कऽ/ सुझाह सेहो बनि/ बनि काल-बरखा
 जीवन-बर्खा/ बर्खा दैए जीवन/ अम्लक बर्खा/ छद्मवेशी बनि कऽ / बनल मृत्यु-बर्खा
 जरियो गेल/ तैयो अछि ठाढ़ ई/ मुँह दुसैत
 सजीव हीन / सृष्टिविहीन लोक/ असगर छी/ कला तैयो मरल?/ नृत्य तैयो रुकल?
 मखान पान/ दिन तका भेटैए/ पहिचान जे/ पैकारक हाथमे/ बिका रहल अछि
 अहरा अछि/ पिरारक फड़ ई/ गरीबक यौ
 रातिक झोंझ/ राति अपने अछि/ कीड़ा आ चिड़ै/ वातावरण अछि/ शान्त आकि भुताह
 बौआचौरीमे/ चरि पेट लटकै/ घर घुरु ने/ चरबाहकै ताकै/ निकेना तँ अछि ओ
 अपरम्पार/ माइक ममताक/ विलक्षणता
 वास मौसमी/ मोजर लुबधल/ पल्लव लुप्ता
 घोड़न छत्ता/ रेतल खुरचन/ माँछक झक्का
 कोइली पिक्की/ गिदरक निरैठ/ राकश थान
 दुपहरिया/ भुतही गाछीक/ सधने श्वास
 सरही फल/ कलमी आम-गाछी/ ओगरबाही
 कोलपति आ/ चोकरक टाल/ गछपक्कू टा
 लग्गा तोड़ल/ गोरल उसरगि/ बाबाक सारा
 तीतीक खेल/ सतघरिया चालि/ अशोक-बीया
 कनसुपती/ ओइधक गेन्द आ/ जूड़िशीतल
 मारा अबाड़/ डकहीक मछैड़/ ओइहा जारि
 कबड़ सन्ना/ चाली बोकरी माटि/ कठफोड़बा
 शाहीक-मौस/ काँटो ओकर नहि/ बिधक लेल

कुण्डलिया

सत असत में भेद करू, राखू नै किछु रोख
ततमत नै करू कनियो, जे छै होनी लेख
जे छै होनी लेख, हुए से नीक निकेना
सत्यक जीत हएत, जँ करबै अकसतिकस ने
डर संग असत केर, डर ढाहू मध्य हृदयक
ऐरावतक बुझैत, यएह छी असत्यक सत

छत्ता घुरछा पल्लौसँ, भेल दिने अन्हार।
दिन बितलापर घर घुरी, काल भेल विकराल॥
काल भेल विकराल, पोरे-पोर सिहरैए।
सुनत केओ प्रश्न, बोल बगहा लगबैए।
ऐरावत बेहाल, बोल कतऽ भेल निपत्ता।
घुरियाए बनि काल, पैसि बिच घोरन छत्ता॥

विजय बिन गर्व हएत जँ, बुझू तखन ई नीक
हारि भेने घबराउ नै, बात बुझू ई मीत
बात बुझू ई मीत, हुआए जँ एक झमेला
हारि मानि बढि जाउ, करू ने फेर बखेरा
भेल काज प्रसन्न जतऽ, नीक अछि टा सएह
मोन ऐरावत बुझि, देखि ली हारि-विजय

बोल वचन हुआए नीक, बूझि बाजी जँ बात
गुम्म रहनाइए ठीक, हुए जँ नमहर जाल
हुए जँ नमहर जाल, लेत ओ लप दऽ भीतर
हल्ला बनि जाएत, नै अछि जँ बेर उचित पर
सुनू हमर ई बात, बात होइए अनमोल
ऐरावत कहि जाय, कहू नै ओल सन बोल

मिथिलाक ध्वज गीत

मिथिलाक ध्वज फहरायत जगतमे
माँ रूपलि भूषलि दूषलि देखल हम
अकुलाइत छी भँसियाइत अछि मन
छी विद्याक उद्योगक कर्मभूमि सँ
पछाड़ि आयत सन्तति अहाँक पुनि
बुद्धि चातुर्यक आ शौर्यक करसँ
विजयक प्रति करू अहँ शंका जुनि
मैथिली अछि अल्पप्राण भेल ज्यौं

सन्ध्यक्षर बाजि करब हम न्योरा
वर्ण स्फोटक बनत स्पर्शसँ हमर
ध्वज खसत नै हे मातु मिथिला

टुटैत अबैत स्वप्नक बीच

जोति बड़द सोचमे पड़लौं

मोन गेल भोथिआय
जोति बड़द सोचमे पड़लौं
एतऽ ओतऽ केर बात
हरेक जोतने भेल साँझ
हरायल बड़द ताकी चारू कात
कहबै ककरा ई गप्प
सुनि हँसत
मोने अछि भोथिआयल
आइ हे भाइ गै दाइ

बिसरलौं फेर- कर्णक मृत्युक छोट-छीन रूप

खूब ठेकनेने जाइ
जे नै बिसरब आइ
मोनमे गप्प पर गप्प चलल
आ कृत्रिमता गेल ढहाइत
फेर काजक बेर मोन नै पड़ल
पड़ैत-पड़ैत मोन
कर्णक मृत्युक छोट-छीन रूप
आ तकरा पाछाँ मसोसि कऽ
रहि जाइ छी गुम्म

कटिहारी

कनकनी छै बसातमे
हाड़मे ढुकि जायत ई कनकनी
पोस्टमार्टम कएल शरीर जे राखल अछि
सातटा मोटका शिल्लपर, जड़त कनीकालमे
गोइठामे आगि जे अनलन्हिहँ कर्ता
राखि देल नीचाँ
कनकनाइत पानिमे डूम दऽ
गोइठाक आगिसँ आगि लऽ
शरीरकें गति-सद्गति देबा लेल
कऽ देलन्हि अग्निकें समर्पित

तृण, काठ आ घृत समेत
 घुरि कऽ जेता सभ
 लोह, पाथर, आगि आ जल नांघि, छूबि
 डेढ़ मासक बच्चाकेँ कोरामे लेने मायकेँ छोड़ि
 घर सभ घुरैत अछि
 एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक अन्तिम रातिक भोरमे
 मुदा नै छै कोनो अन्तर
 पहिरावा आ पुरुखपातकेँ छोड़ि दियौ
 महिलाक अवस्था
 ऐ कनकनाइत बसातसँ बेशी मारुख
 हाड़मे ढुकल जाइत अछि
 कमला कात नै यमुनाक कात
 हजार माइल दूर गामसँ आबि
 मिज्झर होइत अछि गामक श्वेत वस्त्र
 साठि साल पूर्वक वएह खिस्सा
 वएह समाज
 मात्र पहिराबा बदलि गेल
 मात्र नदी-धार बदलि गेल
 सातटा शिल्लपर राखल ओ शरीर
 अग्नि लीलि रहल सुड्डाह कऽ रहल
 एकटा परिवार फेरसँ बनत
 आ तीस बर्खक पाछाँ देखब ओकर परिणाम
 ताधरि हाड़मे ढुकल रहत ई सर्द कनकनी
 ऐ बसातक कनकनीसँ बड्ड बेशी सर्द
 गोपीचानन, गंगौट, माला, उज्जर नव वस्त्र
 मुँहमे तुलसीदल, सुवर्ण खण्ड गंगाजल
 कुश पसारल भूमि तुलसी गाछ लग
 उत्तर मुँहे
 पोस्टमार्टम कएल शरीर
 कर्ता सेहो नव उज्जर वस्त्र पहीरि
 जनौ, उत्तरी पहीरि, नव माटिक बर्तनक जलसँ
 तेकुशासँ पूब मुँहे मंत्र पढ़ै छथि
 आ ओइ जलसँ मृतककेँ शिक्त करै छथि
 वामा हाथमे ऊक लऽ गोइठाक आगिसँ धधकबै छथि
 तीन बेर मृतकक प्रदीक्षणा कऽ
 मुँहमे आगि अर्पित होइत अछि
 कपास, काठ, घृत, धूमन, कर्पूर, चानन

कपोतवेश मृतक

पाँच-पाँचटा लकड़ी सभ दै छथि

कपोतक दग्ध शरीरावशेष सन मांसपिण्ड भऽ गेलापर

सतकठिया लऽ सात बेर प्रदक्षिणा कऽ

कुरहरिसँ ओइ ऊकक सात छौ सँ खण्ड कऽ

सातो बन्धनकें काटि

सातो सतकठिया आगिमे फेकि

बाल-वृद्धकें आगाँ कऽ

एड़ी-दौड़ी बचबैत

नहाइले जाइ छथि

तिलाञ्जलि मोड़ा-तिल-जलसँ

बिनु देह पोछने

आ फेर मृतकक आंगनमे

द्वारपर क्रमसँ लोह, पाथर, आगि आ पानि

स्पर्श कऽ घर घुरि जाइ छथि

शतानन्द पुरहित

अगहन शुक्ल विवाह पंचमी

विवाहक सभसँ नीक दिन

पुरहित शतानन्द

राम सीताक विवाह कएल सम्पन्न

हुनको विवाह

सेहो विवाह पंचमीयेकें भेल

पुरहित सेहो कोनो पैघे पण्डित रहथि

सीता दाइ कतेक कष्ट कटने रहथि !

मड़बापर चित्रकला लिखल रहय मिथिलाक

परिछन नैना-जोगिन सभटा भेल छल

ओहिना जेना भेल रहय सीता दाइक विवाहमे

विवाहोक दिन सभसँ नीक

नैना जोगिन जोगक गीत

किछुओ कतय बचा सकल

कहैत छथि हमर संगी

जहिया लऽ जाइ छथि ओ अपन भौजीकें

पेंशनक लेल दानापुर कैण्ट

विधवा भौजीकें देखि

भीतरे-भीतरे कनैत रहैत छथि

बाबूकें कहलन्हि जे विधवा विवाह हेबाक चाही

तँ मारि-मारिकँ ओ उठलखिन्ह
 ई खानदान
 बड़ काबिल भेलाह ई !
 मुदा अछि बुझल हमरो
 कुहरैत रहैत छथि बापो
 मुदा बोझ उठेने छथि कुरीति समाजक
 उपाय कतय छनि कोन दोसर?
 आ परिणाम देखैले जीबऽ पड़त कइएक युग
 ताधरि हाड़मे ढुकल रहत ई सर्द कनकनी
 ऐ बसातक कनकनीसँ बड्ड बेशी सर्द

पुरान भेल गप

मुदा तीने दिनमे
 पुरान भेल गप
 बम विस्फोट
 डस्टबिनमे राखल बमक विस्फोट
 उड़ैत लोक कार वस्तु-जात
 खूनक धार टटका निकलल लाल
 पुरनायल गप खून खड़कटि गेल
 कारी स्याह बनल
 आ एम्हर ब्रेकिंग न्यूज
 नग्र फेर आबि गेल पटरीपर !
 दिलबालाक छी ई नग्र तँ!
 मुदा जिनका घरमे रोटी कमायबलाक मृत्यु अछि भेल
 हुनक जीवनक रेल
 एक दू दिन आकि
 भरि जिनगीयो
 की आबि सकत पटरीपर!
 आ अगिला जनममे, अगिला पीढ़ी देखत परिणाम
 ताधरि हाड़मे ढुकल रहत ई सर्द कनकनी
 ऐ बसातक कनकनीसँ बड्ड बेशी सर्द

डैनियाही दुपहरिया

निन्नक जीवन विचित्र
 डैनियाही दुपहरियाक घामक बीच
 सपनाइत सहस्रबाढ़निक दानवाकार आकृति
 प्रेयसीपर झपटैत ओकर कंठ मचोड़ैत
 प्रेमी पकड़ैत अछि सहस्रबाढ़निक झोंट

पोखरिमे अछि खसबैत
प्रेमीक पएर बान्हि लेलक झोंटासँ
डैनियाही दुपहरियामे पोखरिक झोंटावाली पनिडुम्मी
जे अछि सहस्रबाढ़निक प्रेयसी
तांत्रिक-सहस्रबाढ़निक झोंझसँ निकलि
झोंटावाली पनिडुम्मीक घुरछीमे
अपन प्राणान्त करैत प्रेयसीकेँ बचबैत
मंत्र-तंत्रयुक्त दुपहरियामे जागल
गुनधुनी बला स्वप्न
बनैत अछि सभसँ तीव्र धावक
अखरहाक सभसँ फुर्तिगर पहलमान
दमसाइत मालिकक स्वर तोड़ै छै ओकर एकान्त
कारिख सन
चित्रित रातिक निन्न
टुटैत-अबैत-टुटैत निन्न आ स्वप्नक तारतम्य
करत समस्याक अन्त
न्यायक डंका गुंजैत
समस्या-समझौता करैत
प्राणघातक प्रहारकेँ सहैत-जितइत-जिबइत
निन्न अबैत अछि तकर अछैत
घोर-निद्रा तृप्तिक अनुभूति अछि छुटैत
निन्नकेँ आस्ते-आस्ते देलक माहुर मिलि कय सभ मित्र
कयलक निन्नक जीवन विचित्र

खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़

मोनक रंग-बिरङ्कक अदृश्य देबाल
ढहैत
ढहैत भावनाक देबाल
खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़
आकांक्षाक बखारी अछि भरल
प्रतीक बनि ठाढ़
घरमे राखल हिमाल-लकड़ीक मन्दिर आकि
ओसारापर राखल तुलसीक गाछ
प्रतीक सहृदयताक मात्र
मोन पाड़ैत अछि इनार-पोखरिक महार
स्विमिंगपूलक नील देबाल बनबैत पानिकेँ नील रंगक
मोनक रंगक अदृश्य देबाल
ढहैत

खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़

बहैत

निन्नक ओहि पार

राति अपन कारी पट्टी आँखिपर बान्हि दैत अछि।

सुतैत देहक लग समय चुपचाप बैसल रहैए,

भोर होइत भीतरक चिन्हार आहटि फेर सुनाइए।

आ ई दुख सभसँ भारी,

स्मृति लोप। क्षणिक, अनन्त।

चलचित्रक रील सन स्थिर चित्र शृंखला

तकरा घुमबैत तारतम्यमे, दैत अछि गतिक भ्रम,

मुदा गति तँ अछि, कम गति बला जीव बेशी गति बला जीव

सोझाँ आ पाछाँ अएनामे देखैत अपन आकृति

आकृतिक पाछाँ आकृति अनन्त धरि

माने जकर आन-आन तकर नै कोनो अन्त?

बा ईहो सभ एकटा अनुमान

आर एकटा अनुमान?

चलचित्रक रील सन स्थिर चित्र शृंखला सन चेतना सेहो?

घुमैत ओ रील दैत अछि चेतनता?

जे जगैत अछि दिनमे बा रातिमे,

सपनाइत अछि सुतलापर दिनमे बा रातिमे!

मुदा स्वप्न विहीन निराउ निन्न!

की ई अछि मृत्युक एकटा रूप?

आकि जीवनक?

शरीरक कोशिका सभ टुटैत बनैत

कोशिकाक जन्म आ मृत्युक बीच जीव जिवैत

चेतनाक टुटैत बनैत लहरि सन आगाँ बढ़ैत

ककरो खिस्सामे घड़ीक टिक-टिक पहुँचैते नहि।

हम अपन नरेटीपर बान्हल समय देखैत छी,

आ पूछैत छी—की हम अही नापमे सम्पूर्ण अँटै छी?

अमेजनक घनगर पल्लवक नीचाँ

अनगिन प्राण अपन ढंगसँ दिन बितबैए।

हमर दुपहरिया ओकर राति भऽ सकैए,

हमर चुप्पी ओकरा लेल समाचार।

जकर देह चलैए, तकरो इच्छा दबा देल जाइए;

हुकुमक बोझ तर मनुक्ख समान बनि जाइए।

ककरो सुनबाक सामर्थ्य छीनि कऽ

हम ओकर जीवित हेबाक अर्थ छोट कऽ दैत छी।
ओतऽ पातक कोनमे हिलैत एकटा सूँझी अछि,
ओकरो आगाँ अपन भरिक संसार खुजल अछि।
हमर नाप ओकरा पर किए चढ़य?
कहियो बाटक दूरी गनैत छी,
कहियो ओहि बाटमे बीतल बेर।
मुदा अति महीन आ अति विराट लग पहुँचि
नापबाक दुनू डोरी गिट्ठऽ पड़ि जाइए।
घटना कतऽ घटल आ कहिया घटल,
एकर उत्तर अलग-अलग कोना राखी?
जे धरती पैरसँ हटैत बुझाइए
ताही संगे हमर देहो आगाँ सरकैए।
चलबाक एहि अनेक तालक बीच
एकटा ठहरल क्षणक अनुभूति उठैए—
जे एखन अछि, तकर निःशब्द उपस्थिति।
आ भूत क्षणभंगुर!
आ भविष्य क्षणभंगुर!
आ वर्तमान सेहो क्षणभंगुर!
तखन कियो रोपैए फसिल, आ कियो आन काटैए एकरा!
आ तखन गीताक कर्म सिद्धान्त?
आ फेर
घड़ीक अड़क मेटा देलहुँ तँ की बचत?
माटि, देह, तारा—सभ अपन रूप बदलैत।
कतहु प्राण बुझाइए, कतहु नव अङ्कुर फूटैए;
जगतक एहि लेन-देनक कोनो अन्तिम हिसाब नहि।
क्षणे-क्षण।
मुदा स्मृति अछि वर्तमान सभ रातिक मृत्युक पाछाँ सेहो,
पूर्व जन्मक स्मृति सन, प्रतिलिपि सन।
अनचिन्हार लोकक अनगिन जीवनोमे
सभक स्मृति सेहो अछि प्रतिलिपि मात्र
जे कतबो सुस्पष्ट हुअय अछि प्रतिलिपिये।

स्वप्न विहीन शून्य

सड गामक पोखरि कात

सड गामक पोखरि कात

बंशी पाथि पकड़बाक प्रयास !

आकांक्षाक पंखयुक्त अश्वकैँ

बोर देने सफलताक सूत्रक
 अनन्त प्रतीक्षा निस्बद्ध चुप्पीक
 पानिक तल स्थिर नियन्ताक रूप
 छोट कीड़ीक गमन उठबैत अछि सूक्ष्म हिलकोर
 आशाक विश्वासक प्रतिरूप
 बंशी पथने ठाढ़ पाथि पकड़बाक प्रयास
 विश्वासक छोर विज्ञानक ओर
 बोर देने ज्ञानक पिण्ड
 प्रतीक्षाक अन्त ! प्रशान्त शान्ति
 सोंस काछु हरकाछुसँ रिक्त पानि
 निर्माताक निर्मितिक अंत कएल व्याधि
 बीया-जीरा माछक रोपि
 बंशी पाथि पकड़बाक कएल हियाउ
 आकांक्षाक अश्व सफलताक सूत्र
 ज्ञानक पिण्ड निर्माताक निर्मितिक साधांश
 ठाढ़ बिच्चहि अनन्त अकास
 यंत्रवत बिच्चहि अनन्त विस्तार
 शान्त-प्रशान्त-वाकहीन मनुक्ख
 सूक्ष्मतर भावनाक जखन आबय हिलकोर
 विहल करैत मनुक्खकँ छल जे छुच्छ-रुक्ख

सङ सागर तटपर

महाबलीपुरम समुद्र तटपर
 असीम समुद्रक कातक दृश्य
 हृदय भेल उमंगसँ पूरित
 सूर्य-मंदिर पांडव-रथ संग
 आकाश-दीपक दर्शन कयल हम
 नुनगर पानि जखन मुँह गेल
 भेलौं आश्चर्यित गेलहुँ हम हेल
 लहरक देबालसँ हम टकराय
 अंग-अंग सिहरि-सिहराय
 देखल सुनल समुद्रक बात
 बिसरल मन-तन लेलौं निसास
 सुनेलक मणि गाइड ई बात
 एलथि विदेशी खोललथि ई सत्य
 पल्लव वंशक ई छल देन
 भारतवासी बिसरल भेल भेर
 मोन पड़ल अंकोरवाटक मंदिर

राजा खतम भेल बिसरल जन
हरि-हरि
टूटल इतिहासक तार जखन
सुआइत भेल हास अखन
कास्पियन सागरक पानिक भीतरक मंदिर
भारतीय व्यापारी द्वारा निर्मित
आब अखन अछि हमर ई हाल
गामक बोरिंग पम्पसेट
अमेरिकन इंजीनियरक खैरात
छोड़ू भसियेलौं कतऽ फेर
भेलौं हँसि-हँसि भेर
हँसीमे बिसरै छी
आ फेकै छी अपन सभटा दुःख
दुःखक संगे अपन सभटा महत्वाकांक्षा
प्रेरणा दैत अछि सम्भावना
आत्मविश्वास अबैत अछि फुर्तीक संग
अभिलाषाक पूर्तिक बढ़बैत आकांक्षा
मोनक आँखिक मिलन भेने
दूर ओहिना होइत अछि चिन्ता
सागर तटपर जेना लहर लऽ जाइत अछि
सभटा पात-खाद्य वस्तुकेँ करैत स्वच्छ
सभटा फिकिर तहिना बहैछ
शान्त स्वच्छ बनैछ मोनक तट
बिसरैत अपनाकेँ मोनक आँखिमे
स्नेहसँ
मात्र एतबे
अनैत अछि कतेक सम्भावना आ परिणाम
मुदा तकर विपरीत...

सर्वज्ञाता

ज्ञान अपूर्ण
मुदा से नुकायल अछि
शंका सेहो अपूर्ण
मुदा सेहो नुकायल अछि
नहिये ज्ञान सम्पूर्ण
नहिये शंका अपन-अपन सत्य मनुक्खक गीत-संगीत
आ प्रकृतिक गीत-संगीत

मधुमाछीक संगीत
 परबाक खोप
 सभटा अछि तारतम्य बनेने
 मनुक्ख बिनु घर बनेनो रहि जाइए
 मुदा परबा नै।
 गहीर आर गहीर
 नुकायल अछि भेद
 नम्हर सत्यक
 चाही एकटा भेदिया
 देखल नै तँ सुनल तँ होउ ओकरा सभटा
 अनुभव तँ होउ
 भोगने तँ होउ
 ओ ओइ बड़का सत्यकै।
 जतेक बड़का सत्य ततेक बड़का ओकर रहस्य
 मुदा जे भेदिया
 सभ देखि लेलक
 ओकरा लेल सभटा एक्के
 अनुमानक काट लेल एकटा आर अनुमान
 कारण देखनाइ सेहो अछि अनुमाने लगेनाइ
 आ तकर पाछाँक पसरल गुम्मी
 आ जँ गुम्मा-गुम्मीसँ बहराइ छी, बाजै छी
 तँ ओ सेहो अछि अनुमाने
 आ अनुमाने तँ अछि जिनगी
 अन्तर्मुखी बहिर्मुखी ऐपार ओइपार भीतर बाहर किछु देखाइत किछु नै
 किछु अनुभव होइत किछु नै
 जे देखाइत अछि से अनुभव हएत
 मुदा से अनुभव हेबे टा करत सेहो नै।
 जे नै देखाइत अछि से अनुभव नै हएत?
 आ जखने से हएत
 तँ ओ नै अनुभव भेल रहत केना?
 नै देखायल रहत केना?
 आ जँ नै देखायल भऽ जायत देखायल
 तँ देखाइत भऽ जायत नै देखाइत
 रहस्य सभसँ भीतर
 खाली स्थान
 आ
 पूर्ण रूपे भरल

खोइंचा उखाड़ैत जाउ
काटैत जाउ घुंसी-घुंसी
आ भऽ जायत अदृश्य मुदा चमकैत!
जकरा छू कऽ सभ अछि घुरैत, कुदकैत
जेना गति बढ़ि गेल हो
खाली स्थानपर खसि कऽ गतिसँ घुरनाइ
माने छै किछु जे भरि देने छै ओकरा
जे नै छै भितरे आकि बाहरे
जे देखल से नै जे सुनल से नै जे सोचल से नै
आ गीताक कर्म सिद्धान्त अछि न्याय व्यवस्था
जे रोपू से काटू
ई रडमंच जतऽ कर्म सभ अबैए सभ ठामसँ
किछु अछि जेहन से किए अछि तेहन
आ किछु जे नै अछि तेहन से किए नै अछि तेहन
हम सभ छी वएह जे हम सोचै छी
जे बाजै छी
जे करै छी
आ ज्ञान अछि स्वतन्त्र हएब
बन्धन मुक्त हएब
आ ई अछि सत्यक साक्षात्कार
आ यएह अछि कर्म सिद्धांत
विचार, शब्द वा कर्म सँ जे ककरो हानि नै पहुँचाबय
नेना सन प्राचीन
नेना सन नव
आ होइत अछि रहस्योद्घाटन
जखन सभटा खोइंचा छोड़ा लेल जाइत अछि
पातरसँ पातर खोइंचा
तँ बहराइत अछि
मनसि
वएह जे चकभाउर दैत रहैत अछि हमरा
वएह जे झलफलाइत रहै छल
खोइंचा जे पातर होइत गेल
बनि गेल अणु जे टुटैत अछि तँ करैत अछि बर्खा आगिक
आ मिलैत अछि तँ भऽ जाइत अछि सुन्न-गुम्म
सभटा आगि ओकर आगिक सोझाँ बुझाइत अछि लुत्ती
आ ओइ सुन्नसँ बहराइत अछि मनसि
आ ऐसँ बहार होइत अछि ब्रह्माण्ड

मुदा ईहो तँ अछि अनुमान
 से ई केना भेल प्रमाण?
 कहैत अछि गीताक ज्ञान
 अस्तित्व शून्यसँ नै आबि सकैए
 माने भाव अभावसँ नै बहरा सकैए।
 मुदा चेतना?
 रड रूप सभ किछु अछि सार्वजनिक,
 मुदा चेतना तँ सभक अपन-अपन।
 मुदा मिर्गीमे ओ शरीरसँ फराक भऽ जाइए
 स्वप्न विहीन निम्नमे ओ शरीरसँ फराक भऽ जाइए
 आ स्मृतिक केना बचि जाइए
 ककरो बिसरि जाइ छी
 आ कियो मोन रहि जाइए
 तँ सर्वज्ञाता सेहो अछि अनुमाने

स्वप्न विहीन शून्यक पाछाँ

घृणाक तरहरिमे

प्रेमक तरहरि!

नै!!

मुस्कीसँ जीतब घृणा आ ईर्ष्याकिँ
 घृणाक तरहरि खूनल
 ओइ तरहरिमे प्रेम गारल
 घृणाक शक्तिसँ
 हँसैत- मुस्कियाइत कएल आग्रह
 जतेक परिश्रम
 तरहरि बनबऽमे लगलै
 कहबै पोखरि काटऽ
 जइमे प्रेमक पानि
 बरखा मासमे भरि जायत
 आ भरले रहत
 ततेक गहीर कऽ काटल रहत माटि
 ओइमे हेलत प्रेम
 हेलैत रहत
 आ बहि जायत, डूमि जायत घृणा आ ईर्ष्या
 डूमि जायत आ बझा कऽ लऽ जेतै पनिडुम्मी ओकरा

जावत रहब

जावत रहब

नै छूबि सकत क्यो

प्रेमक पुत्र

शक्तिसँ, ऊर्जासँ भरल

मुदा चारूकात स्थूल-प्रेमक गिलेबासँ ठाढ़ कएल घेराबा

सएह अछि चिन्ता।

आ जहिया नै रहब

सीखत सभ किछु

वियोग बना देतै सककत, तीव्र

आ कठोर

प्रेमक विरोधी लेल

ओइ घेराबाकेँ तोड़बाक प्रयास

स्थूल-प्रेमी मित्र सभ नै हेमऽ देथिन्ह सफल

प्रयाण थमहत नै

बतहपना बढ़त नै

मारि देबै तँ मारि दियौ

मुदा मोन राखू

संगे मरत आर बहुत रास वस्तु

मुदा रहबे करत स्थूल-प्रेमी साधक युगल सभ

मुदा चारूकात स्थूल-प्रेमक गिलेबासँ ठाढ़ कएल घेराबा

सएह अछि चिन्ता।

चतुरहस्त

पहिल युगल नृत्य

हस्त संचालनसँ

चतुरहस्त

आनन्दसँ भरल मोन

सत्य, झूठ

आ तकर निर्णयक लेल

सनगोहिक चामसँ छारल डफ-खजुरी लऽ कऽ

डोरीक कम्पनसँ ध्वनि निकालत

गुमकी, ओइ खजुरीक ध्वनि

आ गुमकी, गुम.. गुम.. गुमकी...

आ तखन दोसर नृत्य हएत प्रारम्भ

रक्तबीजी सभक

शिखरहस्त

पर्वत शिखर सन

बुढ़िया डाही

कमलक मृणाल, पुरैनि, कमलगट्टा, बिसाँढ़सँ भरल खेत

बुढ़िया डाही

सनगर खेत

बनल प्रेमक कमलदह

ई बुढ़िया डाही

फेर वएह गप

आत्मरक्षार्थ

विरोधमे

चोरबा बाजल फेर

सर्जनक सुख चोरबैत?

अपन नाम करैत

अपन नाम दैत

दबा कऽ

कुटीचालि कऽ आ

भांग पीबि घूर तर कऽ गोलैसी

आंगुर काटब जे लिखब बन्न करत

तोड़ब डाँर, काटब पएर

आँखि निकालि लेबै

धऽ देबै रॉलरक नीचाँमे

पिसीमाल उठा देबै

सर्जनक सुख पेबाले एतेक तँ सहैये पड़तै

हारि जाउ

छोड़ि दियौ

इच्छा आकि ईर्ष्या

संकल्प, धारकँ मोड़ि देब

ईर्ष्या जे धारकँ नै मोड़ि पाबी

बहैत रहय ओ ओहिना

ओहिना किए, ओहूसँ भयंकर बनि

हा, हारबो करी तेना भऽ कऽ जे लोक देखय!

जमाना देखय!!

तेना कऽ हारय संकल्प आ इच्छा

ठाढ़ भऽ सोझाँ ओकर

ओड़ भयंकर उदण्ड धारक

धारक प्रयास

मोड़लाक प्रयासक पाछाँ

भऽ जाय धार आर भयंकर

पुरान लीखपर फेर आबि जाय आगाँ जा कऽ
चलैत रहय भऽ आर अत्याचारी
लोक डरा कऽ नै करय फेर दुस्साहस
दुस्साहस ठाढ़ हेबाक उदण्ड-अत्याचारी धारक सोझाँमे
लऽ लय पतनुकान
आ से सुनि थरथरी पैसि जाय लोकक हृदयमे
मुदा रक्तक जे बीज खसत
एक-एकटा ठोपक
से बीआ बनि जायत
सहस्रबाढ़नि झाँटाबला
बुढ़िया डाही।
घृणाक तरहरि खूनल ओइ खेतमे
कमलक मृणाल, पुरैनि, कमलगट्टा, बिसाँढ़ अछि भरि गेल
प्रेमक कमल अछि फुला गेल।
बुढ़िया ढाहीकेँ जीविते गारि देने रहिए
ओकर रक्त सन लाल अरहुल चारु कात अछि झाँपने
सहस्रबाढ़नि सन
झाँटावाली बुढ़िया डाही!
प्रेमक फूल ओ फुलेलक मरलाक पाछाँ सेहो
जकरा कहैत रहिए
बुढ़िया डाही!
ओ हमर बुढ़िया डाही!!

आ तखन, फैसला हेतै आब

आ तखन
फैसला हेतै आब
जखन
उनटि जाइए लोक
उनटि जाइ छै बोल
छने-छन बदलि जाइए
बिचकाबैए ठोर
बोलक मधुर वाणी
बोली-वाणी
बदलि जाइ छै
बनि जाइए बिखाह
गोबरझार दऽ चमकाबै छी स्मृतिकेँ
आ डरा जायत द्वेष स्मरण कऽ
जे फेर रक्तबीजसँ निकलल ऐ सहस्रबाढ़नि सभक रक्तबीज

एकर सभक बीआक सन्तान फेर आर बढ़ि जायत आक्रमणसँ
 संकल्प अछि, इच्छा अछि ई सभ
 धारकें रोकबाक हिस्सक जकरा लागि गेल छै
 जकरा बुढ़िया डाही अहाँ कहै छिए।
 कहै छलिए!

जँ विश्वास कऽ ली अहाँपर, ऐ प्रकृतिपर

जँ विश्वास कऽ ली अहाँपर,
 ऐ प्रकृतिपर
 जे ई सभ अछि हमर बुढ़िया डाही
 तँ सत्य तकनाइ भऽ जाइत अछि वाम हाथक खेल
 जे कहत बुढ़िया डाही से मानि लेब
 कारण ओ देने अछि आश्वासन
 मुदा ओकर आश्वासन देशांस लागिने बिला जाइत अछि
 शंका घेरऽ लगैत अछि
 झलफलाइत अछि सभटा
 प्रश्न-प्रतिप्रश्नमे भकुआइत अछि स्मृति
 आ ओ जे छल सत्य जे एकटा नै कएकटा रूप लऽ लैत अछि
 ने हम ने ओ अछि स्थिर
 से ओकर खोंइचा उखारब आ देखायब सभकें
 जँ वएह टा अछि सत्य
 कारण हमर बुढ़िया डाही देने अछि आश्वासन हमरा
 आ वएह उखाड़ऽ लगैए खोंइचा
 आ देखबऽ लगैए सत्य जे एक खोंइचा निकललापर
 देखाइत अछि एन-मेन ओहने
 फेर ओ स्थिर भऽ जाइत अछि
 फेर किछु आर खोंइचा पहिनेसँ बेशी पातर
 आ पुरनका आ नवका सभ दृश्य
 अपन अपन अक्षपर बढ़ऽ लगैत अछि
 आ मिलैत अछि, मिलनाइ नै काटनाइ कहू
 आ देबऽ लगैत अछि जन्म नव-नव सत्यक
 सभ कटान आ सभ ढलानपर
 झलफलेनाइ बन्न होइत अछि
 लगैत अछि सभ किछु स्पष्ट
 मुदा तखने बढ़ैत आ काटैत अक्षक वर्तुल
 बढ़िते जाइत अछि
 हहाइत मोनियारक
 भँसिआएल खेबाह सन

ताकय लगैत अछि भीतरक कएकटा सत्य अपन अक्ष

घड़ी पूजा

धर्मराजक भगवती घरमे

खा कऽ हाथ धो कऽ गारि दै छिऐ,

नै किछु बहरायत बाहर

घड़ी पूजा..

यज्ञ नै योग

मीमांसा नै तर्क

वेदान्तक आगाँ सांख्य

ब्राह्मण्यक पाछाँ बौद्ध

श्रद्धाक आगाँ तप

ब्रह्मक बदला आत्म

ऋषि नै मुनि

देवता नै गुरु

घड़ी पाबनि

भगवतीक पातरि

भगवती घरसँ नवेद बाहर नै जेतै

भगवती घरमे केरा पात सहित ऐँठ-कूड़ गारि दै छी

घड़ी पाबनि कताक पुरखासँ होइत आबि रहल अछि

नाम छिऐ भगवती घर मुदा स्थान छियन्हि धर्मराज बाबाक

घड़ी पाबनि, साओन मास, मधुश्रावणीक पाछाँ जहिया बुध पड़त,

तहिया

फेर अषाढ़मे घड़ी पावनि

नव बर्तन, नव चुल्हामे खीर, दालि भरल पूड़ी, मोतीचूड़क लड्डू

आँचर, आ भगवती घरमे भगवतीक टांगल मौड़

कोठियाक मालि केर बनायल धर्मराजक गोल मड़रानी

मड़रानीपरसँ जनौ टांगल

चौदहो देवान भगवती घरमे

चौदहो देवानक वास

चौदहटा खीर-पूड़ीक पातरि

लड्डू आ खेरही वा केराओक दालिक दलिपूरीसँ झाँपल

फेर भगवती घर बन्न कऽ देल जाइए

फेर थोपड़ी पारि कऽ खोलल जाइए

बाले-बच्चे प्रसाद खा

भगवती घरमे माटि कोड़ि कऽ गाड़ि देल जाइए

आंगनमे सेहो एकटा पूजा होइए हमरा घरमे

खाधि खूनि कऽ, ढेका खोलि कऽ

बालापीरक पूजा खीर-पूरी राखि
 धूप-दीप देखा कऽ होइ छै
 आ माटिकेँ फेर नीप देल जाइ छै
 बालापीर....
 विश वा जन
 जनसँ जनक
 जन केर जनक
 आ एम्हर मेंहथमे
 बालापीर हमर अंगनामे! आ ओम्हर... मण्डलामे
 गुरु बालापीर साहबक प्रगट्य दिवस
 बैसाख शुक्ल पूर्णिमा
 सद्गुरु कबीर साहब
 सत्यनाम धुन
 गुरु महिमा पाठ
 पूनम महात्म पाठ
 सतसंग भजन समाधि दर्शन भेंट बंदगी
 भण्डारा, चौका आरती
 आ
 बासनी लग गाम कुम्हारी
 हसन शहीद बालापीर
 उर्स मेला तीन दिन फज्रक नमाज
 दरगाहमे मजार शरीफपर गुस्लक रस्म
 चादरि चढ़ा
 अकीदतक फूल देल जाइए
 कुरानखानी नागौरसँ कुम्हारी बासनीसँ कुम्हारी बाला-पीरक स्थान
 बाला-पीर अबै छथि तँ सुगन्ध पसरैए
 आ
 सीवनमे कैथल-पटियाला दिस
 बाला पीरक दरगाह
 ढोल-बाजा संग चादरि आनि
 चादरि चढ़ा भंडारा आ मेंहथमे
 आंगनमे सेहो एकटा पूजा होइए हमरा घरमे
 खाधि खूनि कऽ, ढेका खोलि कऽ
 बालापीरक पूजा खीर-पूरी राखि
 धूप-दीप देखा कऽ होइ छै
 आ माटिकेँ फेर नीप देल जाइ छै
 बालापीर....

अहमदाबाद-मुंबई हाइवे नंबर आठ पर नंदेसरी गाँव
बालापीरक दरगाह
बाबाक शानमे घड़ीक चढ़ौआ !!!

घड़ी पूजा...

कोन पूजा

पूजा नै यज्ञ

यज्ञ नै योग

ब्राह्मणनै ब्रात्य मुरेठा बन्हने, हाथमे पेना धनुष इन्द्रधनुष पनिसोखा नील पेट लाल-लोहित पीठ

विज्ञान, तर्क, बुद्धिक वास

कारी केश, वज्र, कुण्डल

कारी रडक कपड़ा

गरामे चानीक हँसुली

कारी आ उज्जर भेड़ाक चमड़ा डारमे

लाल पाढ़ि

आँचरमे तह नै

खाली पएरे

मोनक रथपर असवार

क्षणप्रभा ओकर चाबुक

धानुकी ब्रात्य

सांख्यधाराक वाहक

ब्राह्मणक सोम ब्रात्यक सुरा!!

हम ब्रात्य

कीकट, विदेहक अद्भुत ब्राह्मण

षडविंश

देव प्रतिमाक हँसब, कानब, नाचब

पिपनी खसायब, हिलायब

देव मन्दिरक थरथरी

देव प्रतिमाक फूटब

घड़ी पूजा कोन पूजा?

यज्ञ नै योग

यज्ञ माने आवाहन, समर्पण,

योग अछि मुदा सामर्थ्य

मीमांसा करैत, तहक तहमे जाइ

मुदा उत्तर तर्क सँ अबैए

वेदान्तक मिथ्या नै सांख्यक सत्व, रजस, तमस्

ब्राह्मण्यक पाछाँ बौद्ध

श्रद्धा मात्रासँ की हएत, प्राप्ति लेल तप

ब्रह्मपर छोड़लासँ की हएत, सभटा जिम्मा अछि आत्मक
 ऋषिक ज्ञानक नै काज
 जे रीछ सन पर्वत कन्दरामे रहै छथि
 मुनिक राग-द्वेष-तामससँ रहित
 लोकक बीच रहनाइ अछि पसिन्न
 बिनु देखल-बुझल देवता नै
 गुरु चाही, जकरासँ कऽ सकी वार्ता
 हम ब्रात्य
 अहाँ ताकैत रहू कारण
 देव प्रतिमाक हँसबाक, कनबाक, नचबाक
 पिपनी खसेबाक, हिलेबाक
 देव मन्दिरक थरथरेबाक
 देव प्रतिमाक फुटबाक
 हम तँ ताकि रहल छी रहस्य
 बालापीर हमर अंगनामे! आंगनमे..
 खाधि खूनि कऽ..., ढेका खोलि कऽ ..
 बालापीरक पूजा खीर-पूरी राखि
 धूप-दीप देखा कऽ किए होइए
 आ माटिकें फेर नीप देल जाइए
 घड़ी पूजाक कारण ताके छी...
 घड़ी पाबनि
 भगवतीक पातरि
 भगवती घरसँ नवेद बाहर नै जाइए किए..
 भगवती घरमे केरा पात सहित ऐँठ-कूइठ गारि देल जाइए..

नाराशंसी

कोड़वाह ठाढ़ टिककरक नीचाँमे
 हलमहल कऽ कूटि माटि
 सिलोहक बनल मुरुत ई मनुक्ख
 छोलगढ़ियाक गुलाबीपाक
 ऐबेर नै जानि किए रहल कचकुआह
 आ बीतल कएक दिन, छठिहारी छअम दिन
 कविक कविताक छन्दक रससँ उगडुम करैत
 आ डरायल विश्वदेव जे पद्यक रस जे झझायत तँ
 पसरि जायत सगर विश्वमे गायत्री नाराशंसीक संग
 से ओ
 कविक कविताकें छन्दक रसमे राखि दइ छथि

बलि दऽ दैत छथि
कविक कविताक छन्दक रसक बलि
आ गबै छथि नाराशंसी।
आकांक्षाक अग्नि
पृथ्वीसँ धुलोक दिस जाइत
माता पृथ्वीक हृदयक आगि
द्यौ पिताश्री पृथ्वीक पुत्र बा भाय
आलोकदीप्त ई नीलवर्णक अकास
अरणिमन्थनसँ प्रकाशित ई पृथ्वी
कर्कश बजरी सूगाक स्वर
ओतय धारक पलार लग
आ दूटा धारक हहाइत मोनियारक
भँसिआयल खेबाह कहुना निकलि गेल मुदा
आगाँ बढ़िते जक, बढ़त आगाँ आकि धँसत
झाँखीक झझिया करत सुरक्षित ई विश्व
दाह-बोह आयल, किए ई
एकार्णवा, दह, जलामय, कनबहकँ झाँपि
खेधा-पौटी नाहक माडीपर बैसि
खसबैत बसेर जाल आ दोसर माडीपर बैसि खेबैत अछि
ओइ जालकँ, दिशा निर्दिष्ट कऽ आ भऽ
कन्हैर करैत
जालक चारूकात ठकठकिया करैत
अनैत माँछकँ जाल दिस
टुस्सा, सारिलबला काठक तँ गाछी विलुप्त
बबुरबन्ना बनल ओइ पारक खेत, कमलाक रेत
बदहा पहिरने लोक, आ ई गाछ बृच्छ
ठाढ़ मुदा हरियरी, जेना दुःखी पीड़ित
भालसरिक गाछ
अछि ककर ई
सड़कऽ कात
माटि भरलापर
भऽ जाइत अछि धोधरि ठाढ़िमे
नै जड़िमे
आ सेहो आबि गेल सड़कपर
आब ई गामक नै
भऽ गेल अछि सरकारी
सारिलबला काठक तँ गाछी विलुप्त

बबुरबन्ना बनल ओइ पारक खेत
 कमलाक रेत
 बदहा पहिरने लोक
 आ ई गाछ बृच्छ
 ठाढ़ मुदा हरियरी
 जेना दुःखी पीड़ित
 टुस्साक निकलब
 जेना आगमन कोनो अभागक
 चारू कात पसरल कमलाक रेत
 आ तइ बीच टुस्सा निकलब
 मुदा संकेत प्रायः कोनो
 आसक।
 आ तखने ध्वनि
 मधुर स्वर बला करार सूगाक
 कंठ लग लाल दागी बला अमृत भेला सूगाक
 स्वर अबैत बनि नाराशंसी।
 गायत्री बनि गेल चिड़ै आ बिदा भेल गन्धर्व लोक
 अनबा लेल सोमरस
 ओइ रसमे उगडुम करत ई गीत ई कविता सभ
 नै बुझल व्याकरण छन्द
 त्रयोदशीकें व्याघ्र केलक हत्या पाणिनिक
 त्रयोदशीकें के देलक शिक्षा?
 जखन व्याकरणाचार्य बन्न केने छथि,
 बन्न अछि त्रयोदशी तिथिकें व्याकरणक पठन-पाठन
 व्याकरणाचार्य नै पढ़ै छथि, नै पढ़बै छथि ओइ दिन व्याकरण
 आ त्रयोदशी तिथिकें अबैत छल गायत्री चिड़ै बनल
 त्रयोदशीकें के देलक शिक्षा?
 चिड़ै बनल गायत्री देलक शिक्षा गबैत नाराशंसी
 चिड़ै बनि गायत्री मिज्झर होइत अछि घूलोकमे देव संग
 आलोकदीप्त ई नीलवर्णक आकास
 अरणिमन्थनसँ प्रकाशित ई पृथ्वी
 विद्युत् प्रकाशसँ प्रकाशित मेघक शक्तिपात्
 शरीरक मध्य हजारक-हजार धार
 रक्तक प्रवाहक साँपसन टेढ़-मेढ़ चालि
 मोन दौगि रहल
 ऐ अन्तर्मनक आ शरीरक धारक बीच
 ओइ बहिर्जगतक विद्युतसँ तीव्र

चतुष्पात् पुरुष वा ब्रह्म
मुदा एकपाद ई जगत्
अन्तर्मनक प्रचोदयिता
आसुरी वृत्र आ राक्षसी पणि
शारीरिक धार संचार तन्त्र
चलू समुद्र दिस हमर नाड़ीतंत्र आ एकर
लहरिमे डूमैत-उगैत
अपन भोगल यथार्थसँ बहार केलौं मधु
आहुति देबा लेल ओइ समुद्रमे
आ तखने शरीरक नदी-धार
मोनक धार मे उगडुम करैत अछि
लहरिमे डुमैत करैत अछि आनन्दित
जागरित मोनसँ निकसैत वाणी
पीपड़क पातक नाड़ीतंत्र सन
इला-सरस्वती आ भारती छथि
विद्युत् बाल लेल भोजनक इन्तजाम करैत
ज्योतिक हम साधक
सन्दीपनकूट हुअय लावण्यमय
सहस्रशाख विद्युत् हिरण्यमयी
सहस्रजित् अजस्र अन्तर्मुखी
आ
ऋतं बृहत्
विक्रमादित्यक पुत्रीक शिक्षक वररुचि
राजपुत्री केलन्हि कोनो उदंडता से आनि देलन्हि मूर्ख पति
मौन धारण केने ओ रहैत छल
राजपुत्री देलन्हि कोनो पोथी शोधन कार्य लेल दोहरेबाक लेल
बिन्दु, बिकारी आ मात्रा ओ नखछेदकसँ देलक मेटाय
तेहने सन
कविक कविताक छन्दक रससँ उगडुम करैत
आ डरायल विश्वदेव जे पद्यक रस जे झझायत तँ
पसरि जायत सगर विश्वमे गायत्री नाराशंसीक संग
से ओ
कविक कविताकेँ छन्दक रसमे राखि दैत छथि
बलि दऽ दैत छथि
कविक कविताक छन्दक रसक बलि
आ गबैत छथि नाराशंसी।

निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम्

चन्द्रयाणक पूर्वापर
 आर्यभटक उद्धोष पड़ैत अछि मोन
 ऐ कुसुमपुरमे करैत छी ज्ञानक वर्णन
 नापल पृथ्वी सूर्य आ चन्द्रक व्यास
 पृथ्वी अचला नै
 अछि गतिमान ई भू
 भं अछि तरेगण जे अछि अचल
 ग्रहण नै राहुक ग्रास वरण अछि मात्र छाह
 चलू चन्द्रयाणक लेल बधाई
 इसरोक वैज्ञानिक लोकनि केँ
 आयल आर्यभट्टक पंद्रह सय साल पाछाँ सेहो तँ की!
 ओइ देशवासी लेल नै विलम्बित
 लीलावती पढ़ियो कऽ जे नै गानि सकला तरेगण
 कुसुमपुर अछि श्रीहरिकोटा
 आर्यभट्टस्त्विह निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम्
 श्रीहरिकोटायाः सतीश धवन-अन्तरिक्ष केन्द्रात्

सपना

सपना? खूब डरेलक तोड़ैत निन्न
 आँखिसँ छिनैत सुतबाक उत्सुकता
 जखन मोन उखड़ैत छल घबड़ाइत
 देश कालक सीमा
 पुरखाक भ्रमक
 मुदा प्रथम बीजी-पुरुषक छद्म
 नै छल जाइत मोनक भ्रम
 बचहनक मोनक-छाती धक-धक
 करैत छल खोज जगक जन्मक
 नै पेने कोनो प्रश्नोत्तर
 छोड़ैत ईश्वर पर ई शाश्वत
 मुदा ईश्वरक मोन आ शाश्वत स्वरूपक
 नै सोझ भेल ससरफानी पड़ल गिरह
 छाती-मोनक करैछ
 बढ़ल जे धकधकी
 सपना सेहो नै
 नै तखनो ज्योँ अबैछ निन्न बेशी
 संसारकेँ सहबाक ईहो अछि प्रहेलिका
 बिनु समस्या समाधानक करै छी

हँसैत बिहूँसैत बनबैत सर्वोपरि भाग्यराजकेँ
करै छी सभटा अपने आ ई छी कहैत
कहैत जे हम छी भाग्यराजक कठपुतली
ईश्वरक ई लीला? अछि मोनक छातीक संग
भौतिक छातीक सेहो जे धकधकी ई बढ़बैत
सपना सुन्दर आकि डरओन नै कोनो
अछि आब अबैत

चुप्पीक अपन बोली

सत्यक नाम लैत-लैत कण्ठ थाकि गेल,
मुदा अपन दुखक ओहि मोड़ धरि नहि पहुँचलहुँ
जतऽ दोसरक पीड़ो हमरा जगबितय।
आत्मा, संसार, मोक्ष—
तीनू शब्द सोझाँ राखल अछि;
ककरो छूबिते भीतरक गिटुऽ नहि खुजैए।
किछु एहन सुनय चाहैत छी जे बाजलो नहि गेल हो।
दिनभरि जमा भेल फिकिर राति गेरुआपर अबैए,
आँखि मुनलो पर ओकर भार नहि हटैए।
कहियो निन्न एतेक गहीर लऽ जाइए
जे अपन नामो पाछाँ छूटि जाइए;
ओहि बेर चुप्पी हमर सभ परिचय उतारि दैत अछि।
सपनासँ उठैत छी तँ कोनो दृश्य संग अबैए,
निराउ निन्नसँ उठला पर खाली तरहत्थी।
एहि खाली सँ प्रतिदिन घुरि अबैत
अन्तक डर पहिने जकाँ नहि रहि गेल।
जीवनक अन्त अपन इच्छासँ चुनबाक प्रश्नो उठैए,
मुदा प्रश्न उठब उत्तर भेटब नहि होइए।
एखन तँ ई जागल साँस अछि हमरा लग,
आ एकरा सुनबाक लेल किछु काल चुप रहब।

स्मृति-भय

नगरक नागरिक कोलाहलमे
बिसरि गेलौं कतेक रास स्मृति
आ तकरा संग लागऽ लागल भय
भयाक्रांत
शिष्यत्व-समाजीकरणक
समयाभाव आकि फूसियाहीक व्यस्तता
स्मृति भय आकि हारि मानब समस्यासँ

आ भऽ जायब स्मृतिसँ दूर भयसँ कात
 समाजीकरणसँ फराक
 खाँटी पारिवारिक
 मुदा फेर भेटल अछि समय युगक पाछाँ
 भऽ गेलौं पैघ
 फेरसँ उठेलौं करचीक-कलम
 लिखबाले लिखना
 मुदा दवातमे सुखायल अछि रोशनाइ
 युग बीतल स्मृति बिसरल
 भेलौं एकाकी
 सहस्त्रबाढ़नि जकाँ दानवाकार घटनाक्रमक जंजाल
 फूलि गेल साँस
 हड़बड़ाकऽ उठलौं हम
 आबि गेल हँसी
 स्वप्नानुशासन
 लटपटाकेँ खसलौं नै धपाक
 भऽ गेलौं अछि पैघ
 बच्चाके कतय छल स्वप्नानुशासन
 खसैत छलौं आ खसिते रहैत छलौं
 शोनितसँ शोनितामे भेल
 निन्नसँ उठिकय होइत घामे-पसीने नहायल
 स्मृति-भयक छोड़
 नै भेटल ब्रह्मांडक कोलाहल
 गुरुत्वसँ बान्हल चक्कर कटैत
 करोड़क-करोड़ मील दूर सूर्य आ तकर पार कइएकटा सूर्य
 के छी सभक कर्ता-धर्ता आ ज्योँ अछि क्यो तँ ओकर
 निर्माता अछि के?
 ओह ! नै भेटल छोर
 लेलौं निर्णय
 पढ़ि केँ दर्शन
 नै करब चिन्तन
 तोड़ल करची-कलम आ दवात
 के छी ई सहस्त्रबाढ़नि घूमि रहल अछि एकटा परिधिमे
 शापित दानव आकि कोनो ऋषि ताकैत छोड़ समस्याक
 आ समस्या तँ वएह
 के ककर निर्माता
 आ तकर कतय अंतिम छोर

के ककर स्वामी
आ सभक स्वामी के?
आ तकरो के अछि स्वामी !
भेटल स्वप्नानुशासन टूटल शब्दानुशासन
तकबाक अछि समाधान
फेर गेलौं स्वप्नमे लटपटाय
खसब नै धपाक तकबाक अछि छोर
शंका-समाधान लग
डगमग होमय लागल
अपन पर विश्वास
जेना कोनो भय कोनो अनिष्ट बढ़ा देलक छातीक धरधड़ी
आ कि नेनत्वक पुनरावृत्ति!
जन्म-जन्मांतरक रहस्य आत्माक डोरी?
आ कि किण्वन
आ विज्ञान केलक
सृष्टिक निर्माण!
पीयूष आ विषक संकल्पना
स्वाद तीत कषाय क्षार अम्ल कटु की मधुर!
सुन्न बोनमे उठैत स्वर
षडज ऋषभ गान्धार मध्यम पंचम धैवत निषाद!
खोजमे निकलि गेलथि
अत्रि अंगिरा मरीचि संग लेने पुलऋतु पुलस्त्य आ वशिष्ठ
प्राप्त करबालेल अष्टसिद्धि अण्मिक
महिमाक गरिमाक लघिमाक प्राप्तिक
प्राकाम्यक ईशित्व आकि वशित्व
सप्तऋषिक अष्टसिद्धि
नौ निधिक खोज
पद्म महापद्म शंख
मकर कच्छप मुकुन्द कुन्द नील आ खर्व
बनल आधार दशावतारक
मत्स्यावतार बचेलन्हि वेद सप्तर्षिकें
आ संगे मनुक परिवार कूर्मावतार संग मंदार-मेरु
आ वासुक व्याल आनल सुधा-भंडार
वाराहावतार आनल पृथ्वीकें बाहर
चारि अंबुनिधिक कठोर छल जे पाश मारल हिरण्याक्ष
नरसिंह भगवान बचाओल प्रह्लाद मारिकय हिरण्यकश्यप
वामन मारल बालि नापल दू पगमे पृथ्वी

आ तेसरमे दैत्यराज
 परशुराम राम आ कृष्ण
 केलन्हि असुरक संहार आ बुद्ध बदललन्हि तकर विचार
 तैं की जे हुनक प्रतिमा खसौलक देवदत्तक संतान
 क्यो रोकि नै सकल बामियान
 नै कल्कि नै मैत्रेय
 जल्दीसँ आउ श्वेत-सैधव सवारि
 चौदह भुवन आ तेरह विश्वक
 अनबा लेल युग-कलधौत
 अर्णवक कोलाहलमे जाय छल नेनत्व डराय
 मुदा अखन विज्ञान टोकलक मोन
 ई अछि किण्वनक सिद्धांत
 दशावतारे तँ अछि उत्पत्तिक आधुनिक सिद्धांत
 मत्स्य कूर्म तखन वाराह
 फेर नरसिंह तखन वामन
 एकसँ दोसर कड़ी
 मनुष्यक रंग-रूप ताकय लेल छल निकलल
 दऽ देलन्हि अवतारक नाम
 कड़ी गेल टूटि ताकयमे कल्कि
 तइ द्वारे तँ नै एला मैत्रेय
 लागि रहल अछि भेटल सूत्रक ओर
 आर फूसिये छलौं डरायल करब षोडषोपचार
 वेद पुराण महाभारत रामायण अर्थशास्त्र
 आर्यभट्टीय लीलावती भामती
 राजनीति गणित भौतिकी केर समग्र चरित्र
 कर्मक शिक्षा गेल उधियाय
 दर्शन भेल जतय अनुत्तरित
 विज्ञान देलक किछु समाधान
 विज्ञान भेल जतय अनुत्तरित
 दर्शन देलक किछु समाधान
 पकरब छोड़
 दूरि केल समस्या-प्रश्न
 परिधि भने अछि छोट मुदा परिधि करब पैघ
 तँ फेर बदलताह दर्शनक कांटेक्टर
 दर्शनकैँ धर्ममे
 आ धर्मकैँ नरक-स्वर्गक प्रकार-प्रकारान्तरमे
 भौतिकी आ एस्ट्रोनोमीकैँ बनेलथि एस्ट्रॉलोजी

जखन नेति-नेति बनत उत्तर
तखन भने रहय दियौक प्रश्ने अनुत्तरित
सभ गेलथि आगू मुदा हम पाछू
लीलावतीयोमे भानुमतीयोमे
एकलव्यक प्रशंसामे व्यासजीक लेख
मुदा कार्य नै क्यो बढेलक आगू
सहस्राब्दीक अंतराल देलक करताल
विज्ञान आ कला
भूख आ अन्न
छोड़ताह की स्वाछन्न
रोकल कला-विज्ञानक भागीरथीक धार
भेटल राहूक ग्रास
सौर-विज्ञानक रूपांतर
आ ग्रहणक कलन
रक्षा-विज्ञानक रामायणक पाठ
कखन सिखेलक भीरुताक आध्यात्म?
ब्यासजीक कर्ण-एकलव्य-कृष्णक पाठ
अखनो धरि अछि जीवंत
सुखायल किएक विद्या
सरस्वती-धार जकाँ भेल अदिन
तखने जखन विद्या-देवी छोड़लन्हि सुखा गेली बिन पानिक
बिन बुद्धिक फेर एती कि घुरि कऽ बदलि भेष
एतय हमर देश?
युधिष्ठिर-शकुनिक
एक्का-दुक्का-पंजा-छक्काक पढ़ब पाठ
कच्चा बारहकें शकुनि बदलताह पक्का बारहमे
आ करताह अपन पौ-बारह
तीनटा पासा आ चारि रंगक सोरे-भरि गोटी
करत भाग्यक निर्माण?
चौपड़क चारि फड़
आ एक फड़मे चौबीस घर
की ई फोड़त घर?
जकरे नाम लालछड़ी सएह चलि आबय
ठोकर मारि पड़ाय।
सतधरिया, ती-ती
आमक मासक ई खेल
पासाक खेल सेहो खेलेलौं

द्विरागमनक पाछाँ भरफोड़ी धरि
 स्मृति भय तोड़ल सुर
 स्मृति-स्वप्नक दंडसँ तोड़ब खन-खन करब मंथन
 सगर-द्वारि पर भुजदंडसँ गामक
 खोलब बंद बुद्धि-विवेक
 बा
 बसत बुद्धक नगर
 गामेमे नव-दर्शनक गीत
 अपन दर्शनक लेल जे देलक गामकेँ वनवास
 सहस्राब्दीक चौपड़ चारि
 चारि युग पर
 जे अज्ञात तकरो ताकब हम तात
 परज्व जे ज्ञात
 तकर तँ करय दिअ हिसाब-किताब
 भगवानक सृष्टि बिनु कोनो सीमा आ बन्धनक?
 तखन कोन आधार पर बनेलन्हि ओ घर
 आ जे आधार चुनबाक नै छल स्वातंत्र्य हुनका
 तँ कोन निअम बनेलन्हि ऐ ब्रह्माण्डक लेल?
 तखन जे सूर्य चन्द्र आ तरेगणक मृत्युक संगे
 ओइ निर्माता भगवानक मृत्यु सेहो हएत
 ओइ निअमक अन्तर्गत
 आ जे सेहो नै तँ ब्रह्माण्ड निर्माणक लेल
 भगवानक कोन प्रयोजन
 स्वयं निर्मित ई सृष्टि
 विश्वदेवा:
 आ ओकर भगवानक मस्तिष्क
 की सोचनी पैसल अछि ओइ मस्तिष्कमे
 नील-पद्म सूर्यसँ भरल ई ब्रह्माण्ड आ ओकर मध्य
 ई एकटा साधारण तरेगण हमर सूर्य
 ओकर सृष्टिमे हम एकटा क्षुद्र उपग्रहक प्राणी
 सोचैत छी जे कऽ देब नष्ट अस्त्रसँ ई सृष्टि?
 आ ओइ भगवानक मस्तिष्कमे स्वप्न सेहो चलै छै?
 आ ओइ स्वप्नक मध्य मारिते रास छोट-छोट स्वप्न?

वादक सम्बल अर्थहीन

विकराल राति सोझाँ ठाढ़
 गरजैत मेघ रौद्र

वृत्रहन्ता इन्द्र चीरैत छथि मेघ

मेघमे विद्युत रेख

कवष ऐलूषक ऋक्

ऐलूष कवि हमर छथि गबैत

आ

अकासक दूटा धारक हहाइत मोनियारक

भौंसिआयल खेबाह सन

अग्नि जे अछि मेघमे विद्युत रेख

कंठ लग लाल दागी अमृत भेला सूगा सन

एक दिस अछि पृथ्वीसँ द्युलोक दिस जाइत

आ

कर्कश बजरी सूगा

कवष ऐलूषक ऋक् अछि गबैत

अछि दोसर दिस द्युलोकसँ पृथ्वी दिस अबैत

वादक सम्बल लऽ द्युलोक दिस जाइ अमृत भेला सूगा सन

बा घुरि आबी बजरी सूगा संग पृथ्वी दिस वादक सम्बल छोड़ि

वादक सम्बल जे भऽ जाइत अछि अर्थहीन सामाजिकतामे

सोझाँ ठाढ़ जाइक विकराल रातिक भूखमे

सभ भोर एक बगड़ा बराबर मौस कम होइत जाइत

आ आस्ते आस्ते बिलाइत।

स्वप्न मे मिज्झर होइत

क्षणक अछोर

एखुनका बात लिखैत छी,

लिखि सम्पूर्ण करिते ओ बीतल बात बनि जाइए।

विचार ओकरा लग दौगैए, तैयो पाछाँ पड़ि जाइए।

सोझाँ पड़ल पाथर चुप अछि,

ओकर चुप्पीमे अपन प्रश्न सुनैत छी।

कहियो देहमे काजक स्फूर्ति भरल,

कहियो उठबाक मोनो नहि होइए।

शक्तिक नाम जनलो सँ की ओकर घर बूझि लेबै?

मस्तिष्क बहुत जोड़-घटाव करैए,

अनुभव तैयो हिसाबसँ बाहर बचि जाइए।

रूप देखि नाम दैत छी,

नाम लऽ कऽ फेर रूप तकैत छी;

एहि आवागमनमे जे अनकहल अछि

से अपन ठाम रहि जाइए।

खसल पातकेँ एकटा झोंक ऊपर उठा देलक,
 हमरा लागल—ओ घुरि गेल अपन डाढ़ि दिस।
 हवा हटिते पात आँगनमे आबि ठहरल।
 ओकर उठबो देखलहुँ, खसबो;
 एहि दुनूक बीच अपन निष्कर्ष रोकि लेलहुँ।

चमत्कारक पोथी

आत्माक मिलन मस्तिष्क आ ज्ञानेन्द्रियसँ अनैत अछि चेतना
 मात्र संख्या “एक” देखि सकै छी हम सोझाँ-सोझी
 आन संख्या तँ मात्र अछि अनुमान
 चेतना प्रौढ़ होइए आस्ते-आस्ते अही संख्या ज्ञानक बढ़लासँ।
 एकटा परमात्मा
 आ मारिते रास जीवात्मा
 अपन-अपन सत्य।
 तर्कक पन्ना भरि दैत छी,
 तैयो एकटा अनुभव सम्पूर्ण नहि उतरैए।
 जे देखैए, तकरे हम देखय निकलैत छी;
 दृष्टि घुरि कऽ अपन लग प्रश्न छोड़ि जाइए।
 ककरो लेल ई साक्षी जन्मक पहिनहुँ छल,
 ककरो लेल ई मनक बनाओल धारणा।
 हम सुनैत छी दुनू स्वर,
 आ बीचमे अपन साँसक अबाज।
 बाहर हल्ला उठैए, फेर बैसि जाइए;
 ओहि बीचक नीरवतामे
 छोट आँगन सेहो अपार बुझाइए।
 कतेक रूप हमर इन्द्रिय धरि पहुँचैए,
 कतेक पहुँचबासँ पहिनहि छूटि जाइए।
 जे किछु बुझलहुँ, तकरे समुच्चा जगत कहि देब?
 कि अपन बुझबाक सीमा सेहो चिन्हब?
 मञ्चपर ठाढ़ ओ अद्भुत शक्तिक कथा सुनबैए,
 असम्भव काजक दावा पर ताली बजैए।
 आँखिक सोझाँ रोज पल्लव फूटैए,
 ओकरा देखबाक फुरसति ककरो नहि।
 अपन जीवित हेबो साधारण लगैए,
 मुदा अनदेखल चमत्कारक चर्चा थमैत नहि।
 कहियो रंग सुनल रागक स्मृति जगबैए,
 कहियो गन्धसँ बीतल दृश्य घुरि अबैए।
 अनुभवक बाट एक-दोसराकेँ छूबैए;

हम एकरा समुच्या जानि लेबाक प्रमाण नहि बनबैत छी।
पोथी समेटि वक्ता फेर अपन दिस अङ्गुरी उठबैए।
भीड़क बाहर एकटा बच्चा पात उलटि देखैए—
ओकर प्रश्न एखन जीवित अछि।

विचारक विराम

मनक बतकही कने थमल
तँ दुखक असल अबाज सुनाइ पड़ल।
कविता ओतऽ लगमे बैसि सकैए,
कहियो सान्त्वना दैत, कहियो सुतल चोट जगबैत।
हम जे बुझैत छी, ताहिमे हमरो छाह पड़ैए;
छाह हटेबाक चेष्टामे दृष्टि कने साफ होइए।
रातिक प्रकाश हमरा लग बहुत देरीसँ पहुँचैए;
किछु तारा मनुक्खक पहिल कथासँ पहिनेक खबर अनैए।
पएर लग घास एखुनका हवामे हिलैए।
दूरक पुरान उजास आ लगक ई कम्पन
एके बेर हमर आँखिमे पैसि जाइए।
मुख बदलैए, मुस्कीक अर्थो बदलैए;
विचारकँ ओकर जनम देनिहारसँ कोना अलग राखी?
आ जँ आत्माकँ कालातीत मानैत छी,
तँ जन्मक गिनती ओहि पर केना चलत?
घड़ी देहक बीतल बेर लिखैत रहय,
भीतरक साक्षीपर प्रश्न एखन खुजल अछि।

भयक पकड़ ढील होइत

मृत्युक नाम सुनि भीतर जे सिकुड़ैए,
आजु तकरा सँ कात नहि होइत छी।
अपन अस्थिर देहक बात मानैत
ओहि भयक संग किछु बेर बैसैत छी।
आत्मबोधक अर्थ जँ केवल नव शब्द हो
तँ ई कम्पन ओहिसँ केना शान्त हएत?
जेकर भरोसामे मन अपनाकँ देखय,
ओ अनुभव खोजैत छी, घोषणा नहि।
देखनिहार आ देखल बातक बीच
कने ठाम बनैए, साँस खुजैए।
अन्तक तारीख हमरा बूझल नहि;
मुदा एखन ओकर कल्पनाक बन्हन कने ढील अछि।

कलहक अभ्यास

की कखनो एहन भोर छल
 जखन ककरो ककरासँ शिकाइत नहि छलैक?
 इतिहास चुप नहि होइए,
 मन सेहो अपन भीतरक झगड़ा नहि बिसरैए।
 आँगनक दाना पर चिड़ै ठुनकैत अछि,
 माटिक महीन छिद्रमे किछु आओर चलैए।
 जे हमरा देखाइयो नहि दैए
 ओकर जीवनो अपन बाधासँ घेरल हएत।
 हम अनजान पएर रखैत छी,
 ककरो समुच्चा ठाम उजड़ि जाइए।
 पैघक सहज गति छोटक विपत्ति बनैए;
 एहि अनुपातक ज्ञान हमरा कतेक अछि?
 खाली ककरो रोकि देलासँ कलह नहि मेटाइए,
 अपन व्यवहारक आदति पर नजरि चाही।
 बुद्धक शान्त मुख मोन पड़ैए,
 मुदा चित्र टाँगलासँ मन नहि बदलैए।
 दिनक छोट काजमे अपन कठोरता चिन्ही,
 आ अगिला बेर ओकरा दोहराएब रोकि सकी।
 रूप अनेक अछि, प्राणक आग्रह अनेक;
 एहि भिन्नतामे सम्बन्ध देखब सीखय पड़त।

अपन परिचयक खाली ठाम

दिनक अन्तमे काजक सूची देखैत छी,
 अपन लेल एककोटा प्रश्न लिखल नहि भेटैए।
 हमर नाम, पद, घरक ठेकान अछि,
 मुदा ई सभटा हटलापर हम के रहब?
 ओसारापर आएल अनचिन्हार लोक
 पानि माँगैए तँ ओकर थकान चिन्हैत छी।
 ओकर जिनगी हमर जिनगी नहि,
 तैयो पियासक ठाम कोनो अपरिचय नहि रहैए।
 ककरो चोट देबाक पहिने
 एहि चिन्हबाकँ मन जँ बिसरय नहि,
 तँ विजयक अर्थ बदलय लागत।
 बन्दूक चुप भेल, लोक घर घुरल;
 एतबेसँ निश्चिन्त होयब केना?
 अपमान जँ भीतर पालि राखल अछि
 तँ अगिला झगड़ाक तैयारी चलिते अछि।

शान्ति ओहि तैयारीकें छोड़बाक श्रम माँगैए।
ममता लेल सभकें अपन जकाँ बनब आवश्यक नहि।
दोसर अपन ढंगसँ जीबय,
ओकर सुख हमरा छोट नहि करय—
एतबे बात निम्हाएब कतेक कठिन!
अपन दुखक माप बाहर धरि लऽ जाइ,
तँ दोसरक कराह अनसुनल नहि रहत।
पकड़ि राखबाक आदति घटत,
आ बाँटबाक ठाम आस्ते-आस्ते बनत।
दिनक सूची फेर खोलैत छी।
कतेक अनावश्यक काजकें आवश्यक लिखने रही!
क्षण सभ ओइपर टिक लगबैत बीति गेल,
मुदा अपन परिचयक कोठा एखनो खाली अछि।
कहल गेल—विचारक ठाम माथ अछि,
आ स्नेहक निवास छाती।
दुख अबैए तँ दुनू एकसंग भारी होइए।
भीतर दू दरबार बैसा देलासँ
निर्णय सरल नहि भेल;
उलटे अपनहि बातसँ अपनहि लड़ैत रहलहुँ।
लोक जे नाम देलक, से ओढ़ि लेलहुँ।
प्रशंसा भेटल तँ ओहि नामक कद बढ़ेलहुँ,
निन्दा सुनल तँ ओकरे रक्षा करय लगलहुँ।
एहि पोशाकक भीतर जे साँस लैत अछि,
ओकरा कखनो निर्भय रहय देलहुँ?
आइ अपन परिचयक खाली ठामकें
नव उपाधिसँ भरबाक जल्दी नहि अछि।
इच्छा दौगैत रहय आ विवेक पाछाँ हाँफय,
तँ यात्रामे चोट लगबे करत।
दुनूकें एके काजक लग बैसेबाक अछि;
जे चाहैत छी, तकर फलो देखबाक अछि।
स्नेहक आगाँ वंशावली खोलि देलहुँ
तँ ओ केहन स्नेह रहत?
देहरि पार आएल लोकक जाति पूछबासँ पहिने
ओकर मनक बात सुनबाक साहस चाही।
अपन रुचिक साँचमे ककरो ढालब
ओकरा अपनाएब नहि होइए।
देहक चाहमे सहज उष्णता अछि;

जबरदस्ती ओकरा कठोर कऽ दैत अछि।
 दोसरक इच्छा सुनल जाइ,
 ओकर असहमतिक ठाम रहय,
 तखने निकटता भरोसाक सुख बनैए।
 एक-दोसरापर कब्जा घटैत
 दू जीवनकेँ अपन विस्तार भेटैए।
 दायित्व ओहि खुलापनक देखभाल अछि,
 आ प्रेम रोज ओकरा निभेबाक चेष्टा।

घड़ीक बाहरी किनार

टिक-टिक सुनैत-सुनैत प्रश्न उठैए—
 ई माप आरम्भ कतऽ भेल?
 पोथीमे उत्तरक अनेक नक्शा अछि,
 प्रत्येक नक्शाक बाहर किछु बचि जाइए।
 हम घटना सँ घटना धरि डोरी तनैत छी,
 ओकरे नाम दैत छी अवधि।
 मुदा डोरी पकड़निहारो ताहिमे बान्हल अछि।
 सम्पूर्ण समयकेँ समक्ष राखि के देखत?
 ऋषिक बात कालातीत अनुभव दिस घुमबैए।
 ओइ अनुभवकेँ नापबाक यन्त्र नहि भेटैए;
 भेटैए अपन नापक मर्यादा।
 क्षण गनैत हाथ कने रुकैए,
 असीमक प्रश्न फेर नव भऽ उठैए।

एतहि खोज

पवित्र दिनक प्रतीक्षामे साधारण दिन बीति गेल।
 आइ ओहि साधारणमे अपन काज नीकसँ करब—
 ककरो बात सम्पूर्ण सुनब,
 जे जिम्मा लेने छी से निभाएब।
 स्वर्गक कल्पना एतहि कने अर्थ पाओत।
 गम्भीर स्वरमे केओ परम सत्य सुनबैए,
 हम ओकर स्वरक वजनसँ सहमत नहि भऽ जाइत छी।
 पूछैत छी—जकरा खोजैत छी,
 से हमर व्यवहारसँ कतेक दूर अछि?
 ईश्वरक उपस्थिति मानब तँ
 लगक जीवनकेँ अनदेखल कोना करब?
 भीतरक करुणा आ बाहरक आह्वान
 एके ठाम हमरा ठहरय कहैए।

प्राणक गवाही

पशु-यन्त्रक विचार सुनैत
हम आँगनक घायल जीव दिस देखैत छी।
ओकर कष्टक उत्तर दर्शनक परिभाषा नहि दैए;
ओ सहायता चाहैए।
अपन लेल विशेष अधिकार लिखैत मनुक्ख
दोसर प्राणक आवाज केना छोट कऽ दैए?
सेवा लेबाक सुविधा
जीवनक ऊँच-नीच तय नहि कऽ सकैए।
कल्पना हमरा अपन ठामसँ बाहर लऽ जाइए,
एखनो नहि बनल चीजक रूप देखबैए।
ओहि रूप धरि पहुँचबाक मेहनत अलग अछि,
मुदा पहिल ठाम मनहि बनबैए।
आत्मन् आ ब्रह्मक बात उठैए तँ
अपन परिचित सीमा पर फेर सन्देह होइए।
जे बिनु छोर मानल गेल, तकर अंश काटि कोना राखब?

शब्दशास्त्रम्

बच्चा पहिल बेर ककरो नाम लैत अछि,
घरक एकटा कोन ओकरा लेल चिन्हार भऽ जाइए।
अबाज तँ पहिनहुँ छल,
सम्बन्ध जुड़िते ओ बोल बनल।
सृष्टिक आरम्भमे वाणी छल—
एहन धारणा मनक आगाँ प्रश्न राखैए।
की नाम देलासँ जगत बनल,
कि बनल जगतकेँ नामसँ चिन्हय लगलहुँ?
ॐ उच्चारैत श्वास नम्र होइए,
मौन धरि ओकर गूँज पहुँचैए।
ओहि गूँजमे केओ समग्रताक अनुभव तकैए,
केओ ध्वनिक कम्पन सुनैए।
शब्द-ब्रह्मक कल्पना
भाषाकेँ साधारण औजारसँ पैघ ठाम दैए।
मुदा जे अनुभव बोलमे नहि अँटल
ओकरो अस्तित्वक प्रश्न बचल रहैए।

अपन दाबीक सोझाँ

अपन महिमाक कथा कहैत-कहैत
हम अपन भूलक खबर दबा दैत छी।

एके हाथ सहारा दैए, एके हाथ चोट करैए;
 एहि विरोधकें देखब लाजक बात नहि।
 अपन अज्ञान मानलासँ
 सुधारक पहिल ठाम खुलैए।

माया-अविद्या

आँखिपर जे पर्दा अछि
 से केवल बाहरक दृश्य नहि झाँपैए।
 अपन लोभक चेहरो ओहि तर नुकायल अछि,
 दोसरक आवश्यकताकें हम बाधा बुझैत छी।
 पर्दा कने हटैए तँ देखाइए—
 ओहो अपन बच्चाक लेल चिन्तित अछि,
 ओकरो घरक एकटा दीप जरैत रहय।
 ओहि चिन्ताकें चिन्हिते
 ओकर हारमे अपन लाभ देखब कठिन भऽ जाइए।
 क्रोध उठत, मतभेदो रहत;
 मुदा नष्ट कऽ देबाक आग्रह छोड़ि सकैत छी।
 शान्ति एहिना रोजक निर्णयमे बसय,
 केवल उत्सवक भाषणमे नहि।

चिन्तक

खालीपनक बदला ई भरल संसार किए अछि?
 प्रश्न लऽ कऽ अनेक लोकक लग गेलहुँ।
 केओ आदिक कथा सुनेलनि,
 केओ अपन पोथी खोलि देलनि;
 कथा समाप्त भेल, हमर प्रश्न नहि।
 एकटा चिन्तक सुनि कऽ चुप रहला।
 फेर कहलनि—अहाँ उत्तरसँ की चाहैत छी?
 घटनाक पहिल तारीख,
 कि अपन एतऽ हेबाक अर्थ?
 दुनू प्रश्नकें एके उत्तरमे दबायब
 तँ असन्तोष बचले रहत।
 बाहरक क्रम तकबाक अपन बाट अछि,
 भीतरक अनुभवक अपन अभ्यास।
 एहि भेदकें बुझने बिनु
 एकक कसौटी दोसरापर चढ़बैत रहब।
 हम आँखि मुनलहुँ,
 प्रश्नक पाछाँक उताहुली सुनाइ पड़ल।

किछु काल उत्तर माँगबाक हड़बड़ी घटल,
अजाना सेहो चुपचाप समक्ष रहि सकल।
मरलाक पाछाँक ठेकान पुछैत छी,
जन्मक पहिनेक अपन खबर कतय अछि?
आयब आ जायबक कल्पना
एखनक दिनकेँ छोट करैत रहैए।
चिन्तक उठि कऽ देहरी धरि छोड़य अएला;
बाहर जीवन अपन अनेक काजमे लागल छल।
हम प्रश्न संगहि नेने घुरलहुँ,
मुदा ई दिन खाली प्रश्नक उत्तर नहि छल।

बीतैत दिनक संग

पुरान घरक देवालपर बर्खक निशान अछि,
आइयो ओहि आँगनमे बच्चा खेलैए।
आरम्भ आ समाप्तिक बीच
जीवन केवल तारीखक अन्तर नहि रहैए।
प्रत्येक दिन अपन स्पर्श जोड़ैए,
किछु स्मृति बचैए, किछु बिसरि जाइए।
यात्रीक नाम बदलैए,
रस्ताक ठेकानो बदलैत रहैए।
हम एहि बदलैत परिचयसँ आगाँ
अपन हेबाक अर्थ खोजैत छी।
ककरो आत्मबोधमे कालक पकड़ छुटैए;
ओ अनुभव हमर लेल एखनो खोज अछि।
जन्मक पहिनेक आ अन्तक पाछाँक प्रश्न
एखनक साँस छीनि नहि लय।
काज करी, सम्बन्ध निभाबी,
क्षणक आनन्दकेँ अपराध नहि बुझी।
यात्राक हिसाब एक दिन बन्द हएत,
आइ चलबामे जे जीवन अछि से सम्पूर्ण जीबी।

देहक देहरी

पैर धरती छूबैए तँ धरतीक कठोरता बूझैत छी,
चामपर हवा लगैए तँ मौसमक खबर भेटैए।
देहक एहि समाचारसँ हमर संसार बनैए,
तैयो ओकर सुधि प्रायः पीड़ा उठला पर लैत छी।
मन प्रसन्न हो तँ भुखो नीक लगैए,
चिन्ता हो तँ स्वाद बदलि जाइए।

भीतर आ बाहरक एहि आवागमनमे
 देह निरन्तर संग दैत अछि।
 साधनाक नामपर एकरा उपेक्षित कोना राखी?
 विश्राम, भोजन, चलब, स्नेह—
 एहि छोट देखभालक अपन महत्त्व अछि।
 जागरणक खोजो अही जीवित आधारपर ठाढ़ अछि।

चिन्हब आ बुझब

वर्षक परिचय अछि,
 तैयो अहाँक चुप रहबाक कारण नहि बुझैत छी।
 नाम सुनिते मुख मोन पड़ैए,
 की एतबे चिन्हब पर्याप्त अछि?
 जगतक विषयमे सेहो एहन होइए।
 जे बात सुनैत एलहुँ, तकरे प्रमाण बुझि लेलहुँ;
 पूछलहुँ तँ कहल गेल—एना पहिनेसँ चलि अबैए।
 पुरान होयब आ सत्य होयब एके बात नहि।
 हाथमे पड़ल छोट पाथरकें उलटैत छी,
 ओकर बनबाक कतेक कथा हमरा अज्ञात अछि।
 एहि छोट परिचयमे अपन अज्ञान देखाइए,
 ओतहि बुझबाक इच्छा जन्म लैत अछि।
 बीतल अनुभव आ अगिलाक अनुमान
 आइक दृष्टिकेँ रंगैत अछि।
 ओहि रंगकेँ चिन्हि सकी
 तँ देखल बातक संग कने न्याय हएत।
 मुक्ति केओ देबय नहि आएत;
 अपन मान्यताक गाँठि अपने खोलय पड़त।

डीह

एहि माटिपर पुरखाक पएर पड़ल छल,
 आब हमर घरक चौखट ठाढ़ अछि।
 ग्रामदेवक ठाम दीप जरबैत
 हम केवल एकटा भूखण्ड नहि चिन्हैत छी।
 एहि धरतीसँ अन्न उठैए,
 एतहि श्रम आ स्मृति घर बनबैए।
 भगवती कहि प्रणाम करी तँ
 ओकर जल-माटिक सुधियो लिअ।
 घराड़ी सँ पृथ्वी धरि ई सम्बन्ध निभय,
 तखने पूजाक अर्थ जीवनमे उतरत।

मनुक्ख

अहाँ अपन लेल सर्वोच्च आसन राखने छी,
हमरा सभकेँ नीचाँ बैसबाक इशारा करैत छी।
हम अहाँक भाषा नहि बजैत छी,
तैयो भुख, भय आ आराम चिन्हैत छी।
हमर अनुभूतिक प्रमाण
अहाँक पोथीमे लिखल हेब आवश्यक अछि की?
एके धरती हमर देह पालैए,
एके हवामे श्वास चलैए।
ई सम्बन्ध स्वीकार करिते
अहाँक आसन कने नीचाँ आबि सकैए,
हमर जीवनक ठाम कने पैघ भऽ सकैए।
प्रतिष्ठित घरक जन्म,
धन, विद्या, बल आ निरोग देह—
सुखक साधन भऽ सकैए, सम्पूर्ण सुख नहि।
जे उपलब्धि केवल अपने धरि घेरल अछि
ओकरा रखेबामे भय लागल रहैए।
आनक जीवनो जखन नीक होइए
तँ आनन्द अपन सीमासँ बाहर निकलैए।
दाबि राखबाक भार घटैए,
ई हलुकपन जीतक नव अर्थ सिखबैए।

अन्तक प्रश्न, आइक दिन

कलेन्डरक पन्ना पलटैत रहत,
एक दिन हमर हाथ ओहि काजमे नहि रहत।
एहि बातसँ आइक उत्तरदायित्व छुटैए नहि;
कएल काजक प्रभाव दोसरक दिनमे रहि जाइए।
अपन असल स्वरूपकेँ कालातीत मानबाक विचार
मृत्यु दिस देखबाक दोसर दृष्टि दैए।
ओहि विचारपर मनन करैत
एखनक जीवनसँ मुँह नहि मोड़ैत छी।
दिन सीमित अछि,
एहि दिनमे अपन व्यवहारक अर्थ चुनि सकैत छी।

स्वप्नमे मिज्झर होइत

आ स्वप्नमे यएह तँ रहय,
कतेक बुझनुक
मुदा ओतय एकरा अखुनका गप कहबै तँ मोन नै पड़तै।

स्वप्नमे मिज्झर होइत,
 सभटा मिज्झर भेल जा रहल अछि,
 कोनो घटनाक विवरण देबा काल, ओ कखनो काल पूछि दैए:
 “नै, हम कतय रही ऐ घटनामे।”
 आ तखन हम गुमकी लाधि दै छी,
 की बुझायब ओकरा,
 जे ओहो छल,
 मुदा ओ घटना तँ स्वप्न मे भेल से कहबै?
 आ हमरे कतऽ मोन रहैत अछि आब,
 दुनू मिज्झर भऽ गेल अछि।
 ताकैत अक्ष,
 दूटा अक्ष
 दृष्टिक अक्षांस आ देशान्तर बढ़ैए अनन्त धरि,
 आ ओ दुनू नै अछि समानान्तर
 से काटैत अछि एक-दोसरकें आन कोनो उपाय छैहे नै,
 बा काटय आ बढ़य एक दोसरासँ बा भऽ जाय बाँझ,
 आ जखने काटैए एक दोसरकें,
 तँ उठै छी हम हरबड़ा कऽ,
 स्वप्नमे लागि जाइत अछि देशांस?
 आ जखने टुटैत अछि स्वप्न लगैए जे जागि गेल होइ,
 स्वप्नमे नै लागल अछि पहिने कहियो दू अक्षांसबला देशांस।
 जकरा जागल कहै छी से नै अछि देशांस दू अक्षबला,
 जे लागल रहैत अछि बेशी काल बेशी ठाम।
 स्वप्न आ जागृत अवस्थाक बीच लगैए जेना जागि गेल होइ
 कखनो काल आ कतौ-कतौ जखन टूटैए देशांस,
 तँ टीप लै छी अनुभव सुनेबा लेल देशांस लागल प्रकृतिकें।
 आ दूसँ बेशी अक्षबला देशांसक कल्पनो की सम्भव?
 इक्ष्वाकु वंशक वेधस राजाक पुत्र हरिश्चन्द्रक सय पत्नी
 घरमे पर्वत आ नारद दूटा ऋषि रहैत छलन्हि,
 नारदक निर्देशपर वरुणसँ कहलन्हि- सन्तान दिअ,
 जइसँ हम अहाँक यज्ञ कऽ सकी। माने सन्तानक बलि?
 रोहित नाम्ना पुत्रक जन्म भेल
 वरुणसँ दस दिनक समय मांगलन्हि हरिश्चन्द्र,
 सन्तानक बलि दऽ कऽ वरुणक यज्ञ करबा लेल।
 फेर दाँत हेबा धरिक समय मांगलन्हि,
 फेर दुद्धा दाँत खसबा धरिक समय मांगलन्हि।
 फेर नव दाँत हेबा धरिक समय मांगलन्हि।

फेर ओकर शस्त्रधारी हेबा धरिक समय मांगलन्हि।
जखन रोहित भऽ गेल शस्त्रधारी
तखन रोहितकेँ कहलन्हि हरिश्चन्द्र, वरुणक लेल यज्ञक गप,
कबुलामे देल ओकर बलि देबाक गप।
मुदा रोहित तीर-धनुष लऽ बोन दिश चलि गेला,
मना कऽ देलन्हि।
आ तकर एक बरख पाछाँ वरुण हरिश्चन्द्रकेँ पकड़ि लेलन्हि
वरुण छथि जल-देवता,
आ फूलि गेलन्हि पेट हरिश्चन्द्रक।
घुरल इन्द्र पुरुषक रूपमे कहल हरिश्चन्द्रसँ,
जे मनुष्यक बीचमे रहने नीक सेहो अधलाह भऽ जाइए।
विचर एक साल,
विचरलासँ पपर फूलयुक्त हेतौ।
आत्मासँ फल बहार होइए आ ओ ओकरा काटैए,
एक साल, भाग्य ठाढ़क ठाढ़
बैसल कऽ बैसल, आ सूतल कऽ सूतल,
से विचर एक साल।
कलि सूतल-पड़ल,
द्वापर उड़ैत, आ त्रेता ठाढ़,
से तौ सत्य जकाँ विचर एक साल
सूर्य विचरैत नै थाकैए,
तोरा मधु आ उदुम्बरक मिठगर फल भेटतौ
विचर एक साल।
सुयवश ऋषिक पुत्र अजीगर्तक परिवार,
भूखल पत्नी
तीन पुत्र शुनःपुच्छ, शुनःशेप, शुनोलांगूल,
बापक प्रिय शुनः पुच्छ आ मायक प्रिय शुनोलांगूल,
से सय गाय दऽ,
शुनःशेपकेँ कीनल हरिश्चन्द्र,
जे नहिये माताक प्रिय नहिये पिताक।
राजसूय यज्ञ भेल
ऋगवेदी होता रहथि विश्वामित्र,
यजुर्वेदी अध्वर्यु जमदग्नि,
सामवेदी उद्गाता अयास्य,
आ ब्रह्मा रहथि वशिष्ठ
से बलि बान्हत के?
एक सय गाय आर, मांगलक अजीगर्त,

अग्निक आवाहन आ परिक्रमा
 आब वध के करत?
 एक सय गाय आर दिअ,
 मांगलक अजीगर्त, पिजबैत तरुआरि
 शुनःशेप केलक प्रजापतिक आवाहन,
 कहलनि ओ, जो अग्नि लग
 अग्निक आवाहन शुनःशेप केलक,
 जो सविता लग, कहलनि ओ
 सविता कहलनि, जो वरुण लग,
 वरुण कहलनि, जो फेर अग्नि लग
 अग्नि कहलनि, जो जो विश्वदेव लग,
 विश्वदेवक आवाहन शुनःशेप केलक
 कहलनि ओ, जो इन्द्र लग,
 इन्द्रदेवक आवाहन शुनःशेप केलक
 जो आश्विनौ लग, दुनू अश्विनक आवाहन शुनःशेप केलक
 जो उषा लग, उषाक आवाहन शुनःशेप केलक
 मंत्र पढ़ैत-पढ़ैत बन्धन खुजैत गेलै शुनःशेपक,
 इक्ष्वाकु हरिश्चन्द्रक पेट ठीक भऽ गेलै
 फेर ओ ऋत्विज् भऽ यज्ञमे सम्मिलित भेल।
 विशेष विधि “अंज सव” विधिसँ निकाललक सोमरस,
 आ राखलक ओकरा द्रोणकलशमे
 फेर स्वाहा, फेर अन्तिम कृत्य।
 फेर शुनःशेप होता विश्वामित्रक कोरामे बैसि गेल
 अजीगीर्त कहैत छथि- विश्वामित्र दिअ हमर पुत्र
 विश्वामित्र कहै छथि- नै,
 ई शुनःशेप अछि आब देवरात विश्वामित्र।
 अजीगीर्त पुत्र शुनःशेप बाजल-
 हे अजीगीर्त- तीन सय गाय हमरासँ पैघ?
 विश्वामित्र कहै छथि- हे पुत्र मधुच्छन्दा ऋषभ, रेणु, अष्टक
 शुनःशेप भेल अहाँक ज्येष्ठ,
 मधुच्छन्दाक पचासटा पैघ भायकँ ई नै पड़लन्हि पसिन्न
 विश्वामित्र ओकरा सभकँ देलन्हि त्यागि।
 आ आब त्याग करबाक समय आबि गेल अछि
 भय केर त्याग, लोभ केर त्याग, भोजन केर त्याग,
 आ ग्रहण करबाक समय सेहो अछि
 वएह जकरा कइएक बर्ख धरि राखने रही नुका कऽ, बझा कऽ
 हाथ जोड़लौं, नै करू तंग हमरा, नै तँ बुझि जायत ई,

बड्ड आदर करैए ई हमर, ई विश्वामित्र
 जँ ओकरा बुझि पड़तै जे अहाँ कऽ रहल छी हमर अपमान,
 तँ फेर ई हमरो गप नै मानत
 अखन हम हाथ जोड़ने नेहोरा कऽ रहल छी,
 फेर अहाँ करब नेहोरा जखन ई आरम्भ करत नाराशंसी,
 अखन तँ एक्केटा खिस्सा सुनेलौं अछि,
 आ अहाँ कहै छी जे एकर ऐ मामिलासँ की छै सम्बन्ध
 तँ फरिछा दइ छी ऐ सम्बन्धकें आइ।
 शुनः शेषकें देल गेल रहै मृत्युदण्ड बा ई रहै बलि?
 उत्तर दिअ, हम छी प्राश्निक आ अहाँकें सुना कऽ खिस्सा,
 परीक्षाक लेल तैयार केलौं अछि ई पहिल प्रश्न,
 आ एकर उत्तर निर्धारित करत जे कतेक बुझनुक छी अहाँ
 आ तखने हम अही खिस्सासँ नब प्रश्न पूछब,
 बा भऽ सकैए कोनो नब खिस्से सुना दी अहाँकें
 जँ हमरा लागत जे ऐ खिस्सासँ नब प्रश्न पुछला सँ कोनो फाएदा नै।
 शुनः शेषकें देल गेल रहै मृत्युदण्ड बा ई रहै बलि?
 आ बाजब आस्ते, कारण ओ हमरा बड्ड मानैत अछि।
 जँ कनियो ओकरा बुझि पड़तै अहाँकें हमरा प्रति क्रूर आचरण
 तँ ओ बर्दास्त नै कऽ सकत, हमरो रोकलापर नै रोकि सकत अपनाकें।
 तँ आस्तेसँ दिअ उत्तर- शुनः शेषकें देल गेल रहै मृत्युदण्ड बा ई रहै बलि?
 के छी ओ जे अहाँकें बड्ड मानैए? कहियो सोझाँ तँ नै आयल,
 अहीं तँ नै छी दुनू
 जकर आइ काल्हि मनोचिकित्सक कहै छथि “स्प्लिट पर्सनेलिटी”
 ई विश्वामित्र!
 प्राश्निकसँ प्रश्न नै करू, फेर अहाँ कहब जे अहूँ हमहीं छी।
 तँ सुनू, तीन सय गाय लेल अजीगर्त बेचि देलक शुनःशेषकें
 ई कहब नै अछि सत्य।
 देखू पहिने हरिश्चन्द्र मांगै छथि वरुणसँ पुत्र बलि देबा लेल
 जखन बलि दऽ देताह मंगलाहा वस्तुक तँ मांगलन्हि किए?
 आ वरुण दऽ कऽ घुरबऽले कहलन्हि किए?
 खुजत रहस्य, पहिने दस दिन, फेर दाँत हेबा धरिक समय,
 फेर दुद्ध दाँत खसबा धरिक, फेर नव दाँत हेबा धरिक।
 मुदा शस्त्रधारी हेबा धरिक समय मांगलन्हि किए हरिश्चन्द्र?
 आ पलखति देलन्हि किए वरुण?
 ई ओ खिस्सा नै जतऽ रोहितकें जरेबा लेल बिनु द्रव्यक,
 बिनु द्रव्यक नै तैयार भेला हरिश्चन्द्र बनि डोमराज।
 ई खिस्सा अछि रोहितकें शस्त्रधारी बनेबाक,

ई खिस्सा अछि रोहितक निर्णयक
 ओकर तीर-धनुष लऽ कऽ बोन जेबाक।
 मुदा असल खेल तँ केलक शुनःशेप
 ओ छल ने बापेक प्रिय ने मायेक प्रिय,
 से बेचल गेल सय गायमे।
 बान्हबा लेल सय गाय आर
 आ वध लेल सय गाय आर,
 मुदा तैयो मृत्युदण्ड तँ नहिये कहियौ एकरा,
 ओ ने मायक प्रिय रहय आ ने बापक,
 की ई रहै ओकर भूल?
 आ दण्ड तँ भूलिये लेल देल जाइ छै।
 तँ मृत्यु दण्ड तँ नहिये टा रहै।
 आ बलि?
 नै बलि मे तँ इच्छा पूछल जाइ छै
 अनिच्छुकक बलि तँ भइये नै सकैत अछि,
 आ तँ ने बन्हन खुजैत गेलै शुनःशेपक
 ई थोड़बे छिए छागरक बलि।
 घुरल इन्द्र पुरुषक रूपमे कहल,
 जे मनुष्यक बीचमे रहने नीक सेहो अधलाह भऽ जाइए।
 मुदा हरिश्चन्द्र बलि दऽ दितिए रोहितक
 तखन ने ओ अधला होइतय,
 दुद्धा दाँत बला रोहितक होइतय बलि
 ओकरा शस्त्रधारी बनलापर तँ बलि बिनु इच्छाक सम्भवे नै छल।
 से प्रश्न शुनःशेपक छल मुदा उत्तर रोहित लेल देलौं,
 शुनः शेपक कथा तँ अछि तपक,
 आ जँ रहितय ओ मायक प्रिय पुत्र तँ कऽ सकितय ओतेक तप?
 ओकर तँ नै बलि देल जा सकैए,
 आ ने भेटि सकैए ओकरा मृत्युदण्ड।
 मुदा ई खिस्सा पिहानी किए सुना रहल छी?
 की अहाँक बलि क्यो मांगि रहल अछि?
 हमहूँ करै छी प्रेम अहाँसँ, जखन अहाँ जागल रहै छी,
 कियो तमसा कऽ बाजत तँ हमहूँ नै करबै बरदास्त।
 आ एकटा गप्प जे अहाँ केँ नै बूझल अछि से सुनू
 ओ जे सूतल अछि से जागि जाइत अछि अहाँक सुतलापर
 आ सूति जाइत अछि हमरा उठा कऽ अहाँक जगलापर।
 से कहूँ जे कहबाक अछि, कहऽ पड़त हमरेसँ
 कारण ओ तँ अहाँक सुतलेपर उठत।

आजीगीर्त भेल दुर्भिक्षक लक्षण
दुर्भिक्षेमे पुत्रहंता कियो बनि सकैए
से नै करियौ ओकरा आर बेशी कलंकित
ओहिना थू-थू भऽ रहल छै ओकर
मोन पाड़ैत रहि जाइ छी खिस्सा पिहानी
मुदा सभक सारांश अछि एक्केटा
कियो दोखी नै, आ सभ दोखी
सभटा चक्रचालि, सभटा प्रोग्रामिड
अपनो नै बुझल अछि परिणाम
सालक साल पाछाँ पुछै अछि प्रश्न हमरोसँ
हमहूँ अजीर्त सन घोषित कएल जाइ छी दोषी
मुदा एकटा अहीं छी जे ओकरा घोषित केलौं दुर्भिक्ष,
अरियादुर्भिक्ष!
आ से जँ नै करितौं तँ हम टूटि जइतौं,
हमरा विश्वास भऽ गेल अछि जे अहूँ छी
जे करै छी प्रेम हमरासँ,
तखन सुनू,
हम तँ बुझै छलौं जे अपन मोने काज कऽ रहल छी
आब बुझाइए जे हम तँ कऽ रहल छलौं प्रोग्रामिड
किछु नीको बहार भेल
किछु वायरस सेहो तैयार भेल
अहाँ दुनू मुदा सड रहलौं
ओकरासँ तँ सुतलेमे स्वप्नेमे भँट होइए
मुदा अहाँ तँ छी जगलाक पाछाँक सडी
आ आब तँ सभटा मिज्झर भेल जा रहल अछि
स्वप्न आ जागृत अवस्थाक बीच लगैए जेना जागि गेल होइ
कखनो काल आ कत्तौ-कत्तौ जखन टूटैए देशांस,
तँ टीप लै छी अनुभव सुनेबा लेल देशांस लागल प्रकृतिकै।
कोनो घटनाक विवरण देबा काल
लोक कखनो काल पूछि दै छथि-
“नै, हम कतय रही ऐ घटनामे।”
आ तखन हम गुमकी लाधि दै छी,
की बुझायब हुनका, जे अहूँ छलौं,
मुदा ओ घटना तँ स्वप्न मे, जगलापर भेल,
बा भेल स्वप्न आ जागृत अवस्थाक बीचमे,
से कहबै तँ बताहे बुझत।
आ स्वप्नमे यएह तँ रहय,

कतेक बुझनुक,
मुदा ओतय एकरा अखुनका गप कहबै तँ मोन नै पड़तै।
आ हमरे कतऽ मोन रहैत अछि आब,
स्वप्न, जागरण आ स्वप्न आ जागृतक बीचक अवस्था
सभटा मिज्झर भऽ गेल अछि।

स्थितप्रज्ञतामे लिबैत सत्य!

मोन पड़ैत अछि मजूर सभक मृत्यु
चक्कर खाइत खसैत नीचाँ पानिमे
पचास टा मृत्युमे सँ दस टाक भेल रिपोर्ट
चालीस गोटेक कमपेनसेशन गेल खाय
नेता ठीकेदार आ अफसर
ऐ खुनीमा ब्रिजक इंजीनियर
कहै छलन्हि सभ ईमानदार
घूस केना लेल होइतन्हि
देखैत गुनैत ई सभ यौ सरकार
छलन्हि आश करू असत्यक सर्वदा त्याग
सभ हुअय समृद्ध उत्तम विचारक बीच
कर्तव्यक लेल जे जाय प्राण अन्तिम इच्छा हुअय सएह
करैत पालन देखल जे
नै बुझैत अछि लोक
नै बुझैत अछि सत्यक मोल आ समृद्धिक अर्थ
स्वतन्त्रता आ कर्तव्यक नै कोनो मोल छै स्वार्थक आगाँ
तँ की बदली अपन शिक्षाक अर्थ !
त्यागि रस्ता मुदा वएह लक्ष्य
आ रस्ता जिदियाहबला !
मुदा बजने की ? मात्र करैत रहू
सोझाँवालाकेँ बुझऽ दियौ
जे अछि बुझैत
बुझऽ दियौ आ करऽ दियौ खलनायककेँ महिमामण्डित
महिमामण्डित आ शक्तिशाली बुझऽ दियौ दुराचारीकेँ
जावत बुझत भऽ जेतै हारि !
जँइ सत्यकेँ लिबैत देखने रही स्थितप्रज्ञतामे
तहिये बुझने रही जे
त्याग नै कएल हएत
रस्ता ई अछि जे जिदियाहबला
आ आब लगैए जे जकरा हम बुझैत रही लिबनाइ
से रहै नम्रता।

ई जिनगी कोनो बेजाय नै अछि

कागजक पन्ना पर नव राग
विलम्बक पाछाँक हृदयक संग्राम
जे चलै छल बिनु तारतम्यक बिनु उद्देश्यक-विधेयक
से कएल आ से नित चलि रहल
जीवनक सुर भेटलै आब जाय
धुर! धुरि कऽ के जायत ओइ रस्ता
ई जिनगी कोनो बेजाय नै अछि
से तोहर गप हारलाक पाछाँ कऽ कय देखलक ओ
ईहो जिनगी कोनो बेजाय नै छै
ओ कुकुड़ जेकरा सभ दुत्कारितो अछि आ
ऐँठ-कूठ किछु दैयो दैत अछि, तेहने सन
तेहने सन ई जिनगी कोनो बेजाय नै छै

महत्वाकांक्षा

उड़ैत ई गुड़ी ओकर महत्वाकांक्षा सन
लागल मंझा बूकल शीसाक
जेना प्रतियोगीक कागच-कलम
कटल चित्रपतङ्ग देखबै छै वास्तविकताक धरा
जतऽसँ आरम्भ ओतै खतम
आ बीच उड़ानक स्मृति
आ उठैत कालक
मुदा खसैत कालक?

ओकरा हँसैत देखि जे आबि जाइ छौ तोरा नोर

हँसैत देखि जे आबि जाइ छौ तोरा नोर
कत्तेक बुझबियौ जे सभटा ठीक छै
तोहीं तँ कहैत रहीं
आगू बढ़बा लेल
बिसरि जेबा लेल सभ किछु
आ ओ नै मानौ तोहर गप।
आ आब जखन मानि गेलौ तोहर गप
आ एते भेलाक पाछाँ सेहो हँसि रहल छौ
आगाँ बढ़ि रहल छौ तँ
तोहर आँखि किए नोरा गेल छौ।
तोरा किए लागि रहल छौ जे ओकर हँसी छै हारिक प्रतीक
लोक तँ जितलाक पाछाँ हँसैत अछि, हँसिते अछि
तोरा दाबी छौ जे तूँ ओकरा चिन्है छै

एतेक जल्दी तोहर गप आब मानि जाइ छौ
 तैं ई हँसी ओकर हारि छिए!
 तैं सुन, ओकरा बूझल छै जे ओ हारि गेल अछि
 मुदा कोनोटा प्रयास ओ बाँकी नै छोड़लक
 प्रयासमे कोनो बेइमानी नै केलक
 मुदा हारि तैं गेल ने
 जे जीतल ओहो डेरायल अछि, अखनो, से तैं ठीके
 मुदा ओ हारि तैं गेल ने
 आ ई हँसी तोरा लेल छै
 कनबाक मोन होइ छै ओकरो
 मुदा जखन ओकर हँसीसँ तोरा कननी बहराइ छौ
 तैं ओकर कननी तोहर की हाल करतौ!
 तैं रहऽ दहीं अहिना
 बढ़ऽ दहीं आगाँ, जेना तूँ चाहै छलें
 आ अपनाकें दोखी नै बूझ
 तोरा दुआरे ओकर हारि नै भेलै
 आगाँ बढ़ै ले प्रयास कम नै केलक
 तोरा होइ छौ जे तोहर गपपर कान-बात देलासँ ओ हारल
 मुदा से नै छै
 डेरायल जे सभ अछि ओकर हारिक पाछाँ
 ओकर विजय जँ होइत तैं की डेरायल रहैत?
 सएह ने कहै छलें तूँ
 मुदा तकर अनुभव हारलाक पाछाँ केना हेतै
 से हँसऽ दहीं ओकरा
 कऽ देलकौ स्वतन्त्र तोरा
 तोरा की सभकें
 बहुत सुनबै छलौ तोरा,
 आब सुनतौ तोहर सभ गप
 गप काटा-काटीक आदति छौ,
 से कने दिन अनछज्जल लगतौ
 सुनैत रहनाइ, ओकर सुनैत रहनाइ
 बिनु काटा-काटीक

खण्ड ३

ओस, देहरी आ घरक नेह

देहरीक ओहि पार

भोर भेल, ओससँ भीजल देहरीपर
 नाइट पए रखलहुँ तँ सिहरि उठलहुँ।
 रातिभरि हम अपन निन्नमे छलहुँ,
 दूब अपन हरियरीमे जागल छल;
 हमर सपनाक कोनो बाट नहि तकैत
 माटि अपन कोरामे जड़ि सम्हारने छल।
 आँखि मुनलहुँ, गाछ नहि नुकेल,
 केवल हमर देखब थम्हि गेल।
 पातक सरसराहटि कान धरि आएल,
 हवा हमर भीतरक पाहुन नहि छल;
 ओ अपन बाटें बगियासँ निकलल,
 हम ओकर छुअनिसँ भरि उठलहुँ।
 फूलक लाली आ मनक हुलास
 एक दोसरा लग बैसल छल।
 लालीकेँ हुलास कहि कोना दिअहुँ,
 हुलासकेँ डारिसँ तोड़ब कोना?
 एकटा पाँखुरिमे रौद समेटने,
 दोसर हमर छातीमे पसरल छल।
 अहाँ दूर गेलहुँ, बाट लम्बा भेल,
 देहरीपर राखल पीढ़ी ओहिना रहल।
 दूरी अपन डोरि तानि लेलक,
 ओहि डोरिमे नेहक गाँठि छल;
 तइयो अहाँ केवल दूरी नहि छी,
 हम केवल बाट जोहैत आँखि नहि छी।
 साँझ भेल, घुरि कऽ देहरी छलहुँ,
 दिनभरक धूरा पएरमे लागल छल।
 सभ बातक छोर नहि भेटल हमरा,
 तइयो घरक बाट बिसरल नहि छल;
 एक मुट्ठी माटि हाथमे उठेलहुँ,
 ओकर ठोसपन चुपचाप सङ्ग रहल।

अनचिन्ह घाटक नेह

अहाँक चिट्ठीमे एकटा घाट छल,
 जतए हमर पएर कहियो नहि पड़ल।
 अक्षरक बीचसँ पानि झलकल,
 कानमे दूरक हिलकोरि बाजल;

अनचिन्ह कछेरक चिक्कन माटि
मनमे आबि कऽ बाट बनौलक।
अपन पोखरिक सीढ़ीपर बैसि
पानिमे अँगुरी डुबा देलहुँ।
एतुक्का शीतलता देहमे उतरल,
ओतुक्का घाट चिढ़ीमे रहल;
एकटा छुअनिसँ चिन्हल संसार,
दोसर अहाँक बोलसँ खुलल।
हिलकोरि टूटल, चमक बिखरल,
सभ टुकड़ीमे साँझक रङ्ग छल।
हम चमककेँ चान बुझि बैसलहुँ,
चान तँ तखन उगलो नहि छल;
पानि अपन ठाम साँच छल,
भूल हमर जोड़ल बातमे छल।
काल्हुक हिलकोरि आइ नहि आएल,
तइयो पुरान लय कानमे बसल।
परसू फेर एहिना होएत कि नहि,
पोखरि कोनो बचन नहि देलक;
हम आसक नाव खोलि देलहुँ,
शङ्काक बाँस किनारपर रखल।
राति गहिराएल, चिढ़ी मोड़लहुँ,
दूरक घाट फेर दूर भऽ गेल।
पानिक गन्ध हथेलीमे बचल,
अहाँक बोल मनमे बचल;
दुनूक बीच जे बाट बनल छल,
ओहि बाटँ हम अगिला भोर चललहुँ।

बोलीक चिरै

भीतपर नन्हका नाव बनेलक,
नीचाँ नील रेखाक धार।
रेखाक कातमे दूटा बिन्दु,
बिन्दुक माथपर छोट सन घर;
नावकेँ घरसँ दूर सरकबैत
ओ अपन यात्राक बात कहलक।
हम देखलहुँ, रङ्गक ओहि मेलमे
अनभेल यात्राक ठाम बनल छल।
नाव डूबल नहि, घर भीजल नहि,
तइयो मनमे हिलकोरि उठल;

भीतक चुप्पी खोलि कऽ देखलहुँ,
 किछु कहबाक एकटा रूप भेटल।
 आँगनमे उतरिते बोली उड़ल,
 चित्रक चौखटि छोट पड़ि गेल।
 ‘आउ’ कहलहुँ तँ पाहुन बैसल,
 ‘आउ’ कहि माए बच्चाकेँ सटौलक;
 ओएह बोल खेलमे दौड़ि पड़ल,
 ओएह साँझमे विनती बनल।
 ‘पानि’ कहि केओ लोटा मँगलक,
 ‘पानि!’ सुनि केओ छप्पर दिस दौड़ल।
 एकहि चिरैक एतेक उड़ान,
 एकहि स्वरक एतेक बसेरा;
 अर्थ ओठपर ठहरल नहि,
 हाथसँ हाथ धरि चलैत रहल।
 साँझक पाछाँ सभ गप्प थम्हल,
 नन्हका हमर लग सटि सुतल।
 ओकर माथपर हथेली रखलहुँ,
 कोनो वाक्य बनएबाक नहि पड़ल;
 बोलीक चिरै पाँखि समेटलक,
 नेह अपन ठाम जागल रहल।

मेघक पएरक चिन्ह

राति बरखा भेल कि नहि भेल,
 भोरक आँगन लग जा पुछलहुँ।
 काँच माटिमे बूँदक गड़हा,
 पातक कोरपर अटकल मोती;
 टपकैत छप्पर धीरे बाजल,
 निन्नक बाहर सेहो राति छल।
 दूर गगनमे धूसर मेघ छल,
 हम ओकर पएर नहि देखलहुँ।
 एतए छोड़ल भीजल चिन्हसँ
 ओकर बीतल बाट चिन्हलहुँ;
 जतए कोनो चिन्ह नहि भेटल,
 ओतए अनुमान रोकि लेलहुँ।
 आइयो पुरबा ओहिना बहल,
 तइयो बरखाक बचन के देत?
 बियाक बोरा ओसारामे रखल,
 खेतक बाटो तकैत रहलहुँ;

आसक आँखि खुलल रहल,
निश्चयक बखार नहि भरलहुँ।
'सुन्नर!' बाजि उठल छोट बेटी,
पातक मोती गनब बिसरि गेल।
ओकर स्वरमे हँसी चमकल,
आँखिक पुतरी नाचि उठल;
ओ बोली बूँदक गिनती नहि छल,
ओससँ भेटल मनक उमाह छल।
भिजल चिरैकँ काँपैत देखि
बेटी अपन अँचरा पसारलक।
'बचाउ' मे ओकर छाती धड़कल,
सुनिते हमर हाथ बढ़ि गेल;
जाँचल बातक अपन उजास,
पुकारक अपन गरमी रहल।

अँगुरीमे बसल गीत

माए सिक्कीक डलिया बुनैत छलीह,
रौद हुनक अँगुरीपर बैसल छल।
एक तिनका ऊपर, दोसर नीचाँ,
रङ्गक पाँति घुमैत गेल;
मन कतए अछि, ताकैत रहलहुँ,
हुनक जतनमे मन भेटैत गेल।
छातीक भीतर कोनो कोठरी
खोलि कऽ ओ नहि देखौलनि।
टेढ़ भऽ गेल किनार सोझौलनि,
छुटल तिनका फेर सटौलनि;
हम जे बेर खिझिया उठलहुँ,
हँसि कऽ अँगुरी सम्हरौलनि।
सिक्की कतए जनमैत अछि,
कहिया कटैत अछि, जनैत छलहुँ।
तइयो पहिल घेरा बान्हैत काल
मुट्ठीसँ सभ तिनका छूटि गेल;
जाड़क दू दिन लग बैसलहुँ,
तखन अँगुरी बाट पकड़लक।
हरेक बेर पहिने गप्प नहि सोचलहुँ,
तइयो बुनाइ बेस होइत गेल।
भूल देखि हाथ ठमकि जाइत छल,
ठीक पड़िते फेर चलि पड़ैत;

सीखब चुपचाप देहमे उतरल,
 जना खेतमे जड़ि पसरैत हो।
 आइ माए लग बैसल नहि छथि,
 अधबुनल डलिया कोरामे अछि।
 कोनो बच्चा तिनका छिटका दैत अछि,
 हम हँसि कऽ फेर बटोरि लैत छी;
 मायक मन कतहु नुकेल नहि,
 हमर धीरजमे हुनक गीत अछि।

पलकक ओहि पार

राति अपन करिया ओढ़नी
 खूँटीसँ उतारि कऽ चलि गेल,
 मुदा आँखिक कोनमे बैसल डर
 भोरक संग नहि उठल।
 हम ओकरा लग बैसि रहलहुँ,
 ओ धीरे-धीरे हमर मुँह तकलक।
 कतेक दोसराक कहल बात
 हम अपन नाँवसँ बजैत रहलहुँ,
 कतेक पुरान आहटिक पाछाँ
 बिनु देखनहि दौगैत रहलहुँ।
 आइ ठमकि कऽ पूछलहुँ—
 ई काँपैत पएर ककर अछि?
 सपनामे जे गाम डुबि गेल,
 जगला पर ओ आँगनमे छल;
 दिन भरि जे हम भारी छलहुँ,
 निन्नमे ओकर भार कतऽ छल?
 एतबा आवागमनक बीच
 के सुनैत रहल हमर चुप्पी?
 उत्तर कोनो ढोल नहि बजौलक,
 ने माथ पर मुकुट चढ़ौलक;
 बस, कसि पकड़ल एकटा गाँठि
 अँगुरीक भीतर ढील भऽ गेल।
 हम अपन आँखिसँ बाहर तकलहुँ—
 देहरी पहिनहुसँ खुलल छल।

अँजुरीसँ आगाँ

पोखरिक कात बैसल नेना
 अँजुरीमे अकास उठौलक,

घर लऽ जाइत-जाइत देखलक—
 पानि अँगुशीसँ चुबि रहल छैक।
 तखन ओ हाथ पसारि देलक,
 अकास तँ ओतहि भरल छलैक।
 हमहूँ दिनक हिसाब जोड़लहुँ,
 ताराक गिनती धरि सोचलहुँ;
 जतेक भरलहुँ अपन बखारी,
 ततेक नव भूखि जागैत गेल।
 एकटा छोट प्रश्न रहि गेल—
 एहि भरलापनमे तृप्ति कतऽ?
 तोरा पुकारलहुँ तँ लागल,
 दूरक बाटसँ स्वर घुरि आएत;
 मुदा सिहरल अपनहि छाती,
 भीतर कियो कान पातने छल।
 तोहर ठेकान खोजैत-खोजैत
 हम अपन कठोरता बिसरलहुँ।
 आब नहि कहब जे सभ जनैत छी,
 ने अनचिन्ह केँ भगा देब;
 जतऽ हमर बुझब ठमकि जाएत,
 ओतऽ सिनेहक आसन देब।
 अँजुरी खाली राखलहुँ आइ,
 एहिमे भोर उतरि सकैत अछि।

पएरक अपन बाट

बाबाक पुरान जुत्ता पहिरि
 हम पहिल बेर दूर निकललहुँ;
 बाट ओएह, गाछ ओएह छल,
 मुदा एड़ी छिलैत रहल।
 जुत्ता उतारि कऽ हाथमे लेलहुँ,
 माटि पएरक नाप बुझलक।
 गामक चौक पर लोक कहलक—
 जाहि दिस सभ, ताहि दिस चलू;
 हम देखलहुँ, बीच सड़क पर
 घायल चिड़ै फड़फड़ा रहल छल।
 हमर बाट ओतहि मुड़ि गेल,
 हथेली एकटा घोसला भेल।
 दुपहरिया दूरक पानि
 लग पहुँचला पर बालु निकलल,

मुदा पियासक काँट नहि मेटल,
 ने चलबाक थकान झूठ भेल।
 हम छाँहमे बैसि कऽ सोचलहुँ,
 आँखि सेहो सीखैत रहैत अछि।
 साँझ धरि कोनो झंडा नहि छल,
 ने जीतक कोनो घोषणा;
 चिड़ै हथेलीसँ उड़ि गेल छल,
 पएरमे माटि लागल छल।
 घर घुरलहुँ तँ बुझि पड़ल—
 बाटो भीतर खुलैत अछि।

बोलक भीतर बसात

माए दूरसँ बजली—आउ,
 एकहि बोलमे भातक गमक,
 सुखायल अँचराक गरमाहटि,
 दिन भरिक प्रतीक्षा छल।
 हम अक्षर गनैत रहि गेलहुँ,
 घर तावत छातीमे उतरि गेल।
 टूटल बाँसक फाँक-फाँकमे
 कान लगेलहुँ, गीत नहि भेटल;
 साँस जखन ओकरा छुलक,
 खाली ठाम सभ सुर भऽ गेल।
 जे एक-एक छेदमे नहि छल,
 ओ सभ मिलि कऽ बजा देलक।
 अन्हारमे दुआरिक कोन पर
 ककरो ठाढ़ बुझल छल हमरा;
 लग गेलहुँ तँ भीजल कपड़ा
 बसातमे धीरे हिलैत छल।
 डरक चेहरा झरि पड़ल,
 खूँटी अपन ठामे रहल।
 आब जखन किछु कहऽ लगैत छी,
 बोलक आगाँ ठहरैत छी;
 जे नहि अँटैत हमर वाक्यमे,
 तकरो लेल ठाम छोड़ैत छी।
 तोहर आँखि बुझि लैत अछि
 हमर चुप्पीक बचल गमक।

सभक लेल पाँति

भोजक पाँति बिछल आँगनमे,
देहरी लग कियो ठाढ़ रहि गेल;
भातक बाफ ऊपर उठल,
भूखि मुदा बाहर ठिठुरल।
हम अपन पात समेटि उठलहुँ,
पाँति देहरी धरि बढ़ा देलहुँ।
ककर हथेली उज्जर-करिया,
ककर कुलक कतेक ऊँचाई—
भात नहि पूछलक एको बात,
पानि नहि केलक छुआछूत।
सूखल कंठ जखन जुड़ायल,
आँगनक मुँह धोआ गेल।
हम सोचने छलहुँ, दूर चलब,
एहि झंझटसँ छुटकारा लेब;
मुदा कातक घरक छप्पर
ओहि राति पानिसँ चू रहल छल।
अपन सुखायल ओछाओन छोड़ि
हम बाँस पकड़ऽ चलि गेलहुँ।
भोरमे हाथ फफोला भरल,
मोनक भीतर ठंडक छल;
जे बात कहैत नहि बनल,
ओ भीजल खाम्हे ठाढ़ छल।
सभक लेल जँ ठाम बाँचल,
हमरो घर सम्पूर्ण भेल।

कुहेसाक बनल घर

नदीक ओहि कात भोर-भोर
एकटा उज्जर महल उठल;
बसात चलल तँ छत उड़ि गेल,
चिड़ै उड़ल तँ देबाल टूटल।
हम कातहि बैसल देखैत रहलहुँ,
पानि अपन चालि चलैत रहल।
जाहि घरमे हम राजा छलहुँ,
तकर दुआर निन्नमे खुलल;
जाहि गाममे हम कानैत छलहुँ,
तकर माटि तकिया पर नहि छल।

तइयो आँखिक कोर भीजल,
 भीतरक दुख जागल रहल।
 किछुहो एकसर ठाढ़ नहि छल—
 छप्पर बाँसक आस पकड़ने,
 बाँस धरतीक नमी पिबैत,
 धरती मेघक बाट तकैत।
 हमर साँसक नन्हक डोरी
 कतेक अनदेखल हाथमे छल।
 महल गेल तँ नदी नहि गेल,
 राज गेल तँ भोर नहि गेल;
 हम अपन कहि जे कसने छलहुँ,
 ओकर पकड़ ढील भऽ गेल।
 खालीपनक बीच सुनलहुँ—
 कतेक जीवन लगसँ बहैत अछि।

एक नामक कतेक पात

नेना दसटा पात बिछौलक,
 सभकेँ एकहि नाम सुनौलक;
 एकटा किनारसँ कटल छल,
 एकटामे कीड़ाक घर छल।
 नाम तँ सभक संगहि रहल,
 भिन्न कथा नस-नसमे छल।
 गाछ कहला पर गाछ बुझायल,
 मुदा कोन गाछ, से नहि खुलल;
 कतहु आमक मीठ प्रतीक्षा,
 कतहु नीमक तीत सिनेह।
 एकहि शब्दक छोट छाहिमे
 कतेक ऋतु बैसल छल।
 हम जखन अपन बात मनबऽ
 दोसरक बात काटऽ लगलहुँ,
 नेना बीचहि पात उठा कऽ
 हमरा हथेली पर राखि देलक।
 हमर तर्कक तेज नोक पर
 कोमल हरियरी काँपि उठल।
 आब गनब तँ भेदो गनब,
 मेल देखब तँ रूपो देखब;
 सभकेँ एक कहि मेटब नहि,
 अलग कहि दूरो नहि करब।

एकटा गाछक छाँह तरे
कतेक अपनापन हिलैत अछि।

फेर चिन्हल देहरी

बरखक पाछाँ गाम घुरलहुँ,
पोखरि छोट बुझाइत छल;
जाहि गाछसँ डेराइत छलहुँ,
तकर डाढ़ि झुकि आएल छल।
हम पैघ भेलहुँ कि बाट सिमटल,
देहरी चुप्पे पूछैत छल।
भीतरसँ ओएह खोंखी सुनलहुँ,
कंठक धार बदलि गेल छल;
केशक कारी नदी सुखायल,
आँखिक पानि ओएह रहल।
नाम बजा कऽ की चिन्हितहुँ—
हाथ बढ़िते दूरी गलल।
यादिक घर आ आँखिक आँगन
एक-दोसरासँ भेंट करैत छल;
जे काल्हि छल, से आइ नहि छल,
तइयो सभ अनचिन्हो नहि छल।
दुनू बेलाक बीच सिनेह
बिनु गाँठिक डोरी तानलक।
दुआरक माटि माथ लगेलहुँ,
गमक पुरान नहि भऽ सकल;
हमरा भीतर जे नेना छल,
ओ पहिने दौगि घर घुसल।
पाछाँ-पाछाँ हम गेलहुँ,
अपनाकेँ फेर चिन्हैत गेलहुँ।

आधखुलल किवाड़

एकटा किवाड़ खोललहुँ,
आगाँ दोसर आँगन भेटल;
ओहि आँगनक अन्त सोचलहुँ,
ओतऽ गल्ली बाहर निकलल।
हमर बुझल दुनियाक नक्सा
रोज अपन कात बढबैत रहल।
जे नहि देखलहुँ, नहि कहब
ओ कतहु होइते नहि अछि;

जे देखलहुँ, तकरो चारू कात
 कतेक अनदेखल बचल अछि।
 पातक ऊपर ओस गनलहुँ,
 जड़िक पियास अनगनल रहल।
 तोहर दिससँ डूबैत सुरुज
 हमरा दिससँ डाढ़िमे अटकल;
 हम दुनू अपन-अपन आँखि
 सम्पूर्ण अकास बुझैत रहलहुँ।
 ठाम बदललहुँ तँ हँसी आएल,
 आगि एक, कतेक ओकर रूप।
 आब प्रश्नक हाथ पकड़ि
 धीरे-धीरे चलैत रहब;
 चुप्पी भेटत तँ बैसि रहब,
 झूठक उत्तर नहि गढ़ब।
 आधखुलल किवाड़क फाँकसँ
 एखनो भोर आबि रहल अछि।

आँगनक खुलल दिशा

पछिमसँ आएल एकटा धुन,
 पूरबसँ गमकैत धान;
 उत्तरसँ ओढ़नीक गरमाहटि,
 दक्खिनसँ बरखा भरल मेघ।
 हमर आँगन चारू दिशाक
 आहटि सुनि-सुनि पैघ भेल।
 ककरो बोली हमर सन नहि,
 ककरो भेष अनचिन्ह लागल;
 मुदा थाकल पएर धुलबामे
 एकहि लोटाक पानि लागल।
 चूल्हाक आँच नहि बाँटलहुँ,
 रोटी सभक संगहि सेकल।
 अपन ढंगसँ दीप जराउ,
 अपन सुरमे साँझ मनाउ;
 बस, पड़ोसीक निन्नक भीतर
 अँगार नहि फेकू कहियो।
 जे हाथ जोड़ैत अछि, ओ हाथ
 दोसरक दुआर नहि तोड़ए।
 राति गहिरायल तँ बुझलहुँ,
 सभक चुप्पी एकरंग नहि;

ककरो याद, ककरो प्रार्थना,
ककरो नेनाक निन्न भरल।
एहि सभक लेल छाँह बचल तँ
हमर आँगन अकास भेल।

नेनाक बोलीमे भोर

नेना पूछलक अपन बोलीमे—
दादी, छाँह किएक चलैत अछि?
दादी मुस्की संग उठली,
अँगना बीच ठाढ़ भऽ गेली।
एकटा छोट प्रश्नक संगहि
सभ घर बाहर निकलि आएल।
जाहि बातक ऊँच आसन छल,
से माटिक चौकी पर बैसल;
कलछल रोकि कऽ माए सुनली,
खुरपी राखि कऽ बाबू बजला।
बोलक बन्द कोठरी खुलल,
विचार सभक साँस भेल।
दूर बजारक एकटा हलचल
हमर धानक मोल हिलौलक;
दोसर गामक टूटल बाँध
हमर ओछाओन भीजा देलक।
हम अपन दुआर बन्न केलहुँ,
चिन्ता तइयो भीतर आएल।
भोरमे दुआर खोलि देलहुँ,
एकसर के कतेक बाँचत?
अहाँक खाम्ह उठबऽ हम आएब,
हमर छत पर अहाँ हाथ देब।
नेना माटिमे घर बनौलक—
सभक बाट ओहि दिस गेल।

खाली खूँटीक छाँह

खूँटी पर ओढ़नी नहि छल,
हम कहलहुँ—किछु नहि अछि;
दादी हँसली, हाथ धऽ देली
देबालक ठंढा देह पर।
खाली ठामो ठाम तँ अछि,
छूटल चीजक यादो अछि।

नहि कहला पर सभ नहि मेटए,
 एतऽ नहि तँ कतहु रहत;
 आइ नहि तँ काल्हि छल होएत,
 घुरि अबबाक बाटो रहत।
 हमर एकटा छोट नकारमे
 केना एतेक जगत अँटत?
 साँझक बेर न दिन सम्पूर्ण,
 ने रातिक करिया छत टिकल;
 चिरई घरक बाट पकड़ने,
 अकासक रंग बदलैत छल।
 दूटा डिब्बा लऽ कऽ बैसलहुँ,
 साँझ कोनोमे नहि समायल।
 खूँटी आइयो खाली अछि,
 ओढ़नी धूपमे सूखि रहल;
 नहि भेटबाक दुखक भीतर
 फेर भेटबाक ठाम बचल।
 हम अपन बोलक किवाड़मे
 एकटा फाँक खुलल रखलहुँ।

दोसर आँखिक ठाम

हमरा दिससँ खेत सुखायल,
 तोरा दिससँ मेघ घुमड़ल;
 हम कहलहुँ—आशा नहि अछि,
 तूँ बीआक पोटरी खोललह।
 हम दुनू मेड़ पर बैसलहुँ,
 बसात दुनू दिससँ बहल।
 तोहर बात सुनबासँ पहिने
 अपन बातक शोर घटेलहुँ;
 देखलहुँ, हमर आँखिक ओझरमे
 नहरिक पानि सरकि रहल छल।
 हारल कोनो एक नहि छल,
 जीतल खेतक नन्हक हरियर।
 राहमे पिपरीक पाँति देखलहुँ,
 पएर उठल तँ रोकि लेलहुँ;
 जल्दी छल, मुदा ओकरो
 अपन अन्न घर लऽ जायब छल।
 धरती केवल हमर नहि छल,
 ई बात तलुआ धरि पहुँचल।

जँ ककरो पीड़ नहि सुनलहुँ,
हमर बुझब अधूरा रहत;
जँ ककरो स्वर दबा देलहुँ,
अपनो गीत बेसुरा रहत।
आउ, किछु दूर अदलि कऽ चलू—
अहाँक आँखिसँ हम देखब।

माटिक भीतर पाँखि

बीआक करिया खोलक भीतर
हरियर पाँखि सिमटल छल;
हम ओकरा निर्जीव बुझलहुँ,
ओ चुप्पे ऋतु सुनैत रहल।
बरखा पहिल टाप देलक,
माटि भीतरसँ फाटि उठल।
जड़ि अन्हारक दिस उतरलक,
पात उजासक दिस खुलल;
एकहि देहक दूटा यात्रा
एक-दोसराकेँ थामने छल।
ऊपर उठबाक चाह मात्रसँ
धरतीक सिनेह नहि छूटल।
जे डाढ़ि काल्हि आँधी तोड़लक,
तकर घाव एखनो काँच अछि;
ओकरा फूल कहि नहि फुसलायब,
दुखक अपन साँच अछि।
घावक कात नव कोपड़ फूटल,
जीवन हारि कऽ नहि बैसल।
हमरो भीतर आधा देखब
सम्पूर्ण जगत बुझऽ लगैत अछि;
आब अपन छोट झरोखासँ
बाहर आबऽ चाहैत छी।
सभक हाथ मिलि खाम्ह उठौत,
नव छत नीचाँ सभ अँटत।

रंगक अनकहल स्वर

अरिपन देइत अँगुरी रुकल,
एकटा बिन्दु टेढ़ पड़ल;
नेना ओहि ठाम चिड़ै बना देलक,
आँगन अकस्मात् उड़ऽ लगल।

जे भूल बुझाईत छल हमरा,
 ओ नव पाँखिक मोड़ निकलल।
 उज्जर पिठारक रेखा-रेखामे
 माए दिनक थकान बिसरली;
 चुप्पे बैसल बूढ़ी आँखि
 दूरक कोनो लगन देखलक।
 एकहि रूपक भीतर कतेक
 अपन-अपन समय जगि उठल।
 गीतक बोल अलग कऽ राखलहुँ,
 धुनकेँ अलग पकड़ऽ चाहलहुँ;
 ने ओ कंप रहल कंठक,
 ने छातीमे उठल लहरि।
 फेर सभ मिलि जखन बजल,
 बिसरल दुखो स्वर पाबि गेल।
 सुन्नरता केवल फूल नहि छल,
 ने रंगक सजल देबाल;
 ओ तँ अनकहल पीड़ाक दिस
 धीरे बढ़ल एकटा हाथ।
 देखैत-देखैत जानि लेलहुँ—
 दोसरक मोनो हमर लग अछि।

भीतरक अचल ठाम

कोठरीमे वस्तु सजेलहुँ—
 कलछुल, चालनि, लोटा, थारी;
 गोल अलग आ लम्बा अलग,
 टूटल अलग, साबुत अलग।
 सभक लेल एक ठाम भेटल,
 देखनिहार कतऽ बैसत?
 दिन भरि क्रोधक लाल बसात
 हमरा भीतर घूमैत रहल;
 साँझ भेल तँ दुखक पाथर
 छातीक बीच उतरि आएल।
 हम दुनूकेँ अबैत देखलहुँ,
 हम दुनूकेँ जाइत देखलहुँ।
 ने हम क्रोधक सम्पूर्ण लाल,
 ने हम दुखक सम्पूर्ण भार;
 हँसी आएल तँ ओहो गेल,
 डर आएल तँ ओहो ढलल।

आबि-जाइत सभ ऋतुक पाछाँ
एकटा अचल ठाम बचल।
ओहि ठामक कोनो घेरा नहि,
ने ककरो बैसब मनाही;
आँखि बन्न केलहुँ तँ सेहो
चुप्पी अपन रूप देखौलक।
सभ चीजक गिनती सम्पूर्ण भेल,
देखबाक उजास नहि गनल।

निन्नक पाछाँ सेहो जागल

राति सपनामे हम नाव बनलहुँ,
बिनु पानीक बहैत रहलहुँ;
जे कात छल, से पाछाँ भागल,
जे दूर छल, से लग आबि गेल।
अकस्मात् ककरो स्वर सुनलहुँ,
ओछाओन पर भोर बैसल छल।
दिनमे अपन कथा सुनौलहुँ,
सभ हँसल, हमहूँ हँसि देलहुँ;
मुदा सपनाक ओहि डरक बेर
हँसीक ठाम कतय बचल छल?
जाहि बेलाक जे साँच लागल,
दोसर बेला बदलि देलक।
गहिर निन्नमे बाट नहि छल,
ने नावक ओ अनथक गति;
उठलहुँ तँ कहलहुँ—नीक सुतलहुँ,
के सँभारने छल ई शान्ति?
जखन कोनो कथा नहि छल,
तखन ककरो अभावो नहि छल।
आब दिनकेँ दिन जकाँ देखब,
सपनाकेँ सपनाहि रहऽ देब;
जे देखलहुँ, तकरा जाँचब,
देखबाक ठाम नहि बेचब।
पलकक दुनू कातक जगतमे
एकहि अनाम अपनापन अछि।

टेढ़ बाटक हरियरी

कागज पर सीध बाट खींचलहुँ,
गाम पहुँचबाक छोट हिसाब;

धरती पर पोखरि भेटल,
 बाँसक झाँझ, कादोक थाल।
 पएर मोड़लहुँ तँ बुझि पड़ल—
 बाट धरतीसँ सीखैत अछि।
 काल्हिक प्रश्न आइ घुरि आएल,
 मुदा ओकर भूख बदलल छल;
 पहिने जे छल पेटक चिन्ता,
 आब सभक हिस्साक बात।
 एकहि बीआ दोसर खेतमे
 दोसर ढंगसँ पात खोललक।
 कखनो आगाँ बढ़बासँ पहिने
 पाछाँ घुरि कऽ देखलहुँ;
 बिसरल मोड़ पर राखल औजार
 आगाँक काजमे आबि गेल।
 जे छूटल छल, व्यर्थ नहि छल,
 जे नव छल, एकसर नहि छल।
 टेढ़ बाटक मोड़-मोड़ पर
 ककरो स्वर, ककरो छाँह भेटल;
 हम सोचने छलहुँ देर भेल,
 मुदा बाटमे मोन बढ़ल।
 सीध रेखामे जे नहि अँटल,
 ओ जीवन संगहि चलल।

कंठसँ उड़ल चिड़ै

दादीक कंठसँ उड़ल चिड़ै
 मायक साँझमे बैसि गेल;
 माए ओकरा अन्न चुगौली,
 हमर निन्नमे घोसला भेल।
 कागज तावत खाली छल,
 गीत घर-घर जाइत रहल।
 एक दिन अँगुरी कलम पकड़लक,
 उड़ैत स्वरक पाँखि छुलक;
 स्याहीमे ओ ठहरि गेल,
 मुदा उड़बाक चाह बचल।
 जे पढ़लक, ओकर कंठमे
 फेर नव बसात लागि गेल।
 बरख गनलहुँ, पन्ना गनलहुँ,
 कतेक आवाज गनल नहि गेल;

किछु चूल्हाक धुआँमे हरायल,
किछु कानसँ कान बचल।
मोट पोथीक बगलहि बैसल
अनलिखल जीवन बजैत रहल।
हम ओहि चिड़ैकेँ नहि बान्हब,
ने पुरान पाँखि नोचि फेकब;
अपन समयक खुलल अकासमे
ओकर नव उड़ान सुनब।
काल्हि नेना जखन गाओत,
गीत फेर घरसँ निकलत।

खण्ड ४

अर्थ, भाषा आ लोकजीवनक अँजोर

जड़िक नव पात

पुरान गाछक खोहमे पड़ल
ओसक बूँद चमकि उठल।
केओ बुझलक बीतल दिनक नोर,
केओ नव भोरक पहिल हँसी।
हम छालक दरार सहलौलहुँ,
भीतर रस एखनो चलैत छल।
जड़ि धरतीक कथा सुनैत छल,
फुनगी दूरक हवा बजबैत छल।
जे पात झरल, से माटि बनल,
जे पात जनमल, से गीत।
गाछ अपन ठाम ठाढ़ रहितहुँ
ऋतु-ऋतु चलैत रहल अतीतसँ आगाँ।
हम ओकर छाँहमे बैसलहुँ,
हाथमे एकटा नव बीआ लऽ।
रक्षा करब तखनहि सार्थक,
जखन बढ़बाक ठाम बचल रहय।

काल्हिक बीआ

कोठीक मुँह खोलैत दादी
हमरा मुठ्ठी भरि धान देलनि।
दाना-दाना पर हुनक हथेली
कतहु अदेखल लिखाइ छल।
कहलनि, सुखायल राखब एकरा,
मुदा सड़य नहि बन्द अन्हारमे।
समय अओत तँ खेतमे छिटब,
पानिक बाट सेहो बनायब।
हम आन गामक बीआ देखलहुँ,
अपन माटिक गन्ध नहि बिसरलहुँ।
किछु सीखलहुँ, किछु फेरि परखलहुँ,
किछु अगिला ऋतुक लेल छोड़लहुँ।
कोठी भरल रहबाक सुखसँ
बड़का सुख हरियर खेतक छल।
जे धरोहर हाथमे आयल,
तकर भविष्य हमर श्रममे छल।

दू बाटक बीच

एकहि आँगनसँ दू बाट निकलल,
 एक खेत दिस, दोसर वन।
 पहिलपर पयरक धूरि उड़ल,
 दोसरपर गहन मौन पसरल।
 खेतक बाट कहलक, हाथ चलाउ,
 भूखक भट्टी आइ जरैत अछि।
 वनक बाट कहलक, भीतर ताकू,
 मन अपनहि जालमे पड़ल अछि।
 दुनू अपन देखल कहैत रहल,
 दुनू लग सम्पूर्ण गगन नहि छल।
 हम बीचक मेड़पर ठाढ़ भऽ
 दुनूक आवाज सुनैत रहलहुँ।
 साँझ पड़ल तँ खेतसँ अन्न आयल,
 वनसँ आयल शीतल हवा।
 आँगन अपन चौखट खोललक,
 भिन्न स्वरक लेल एकहि ठाम।

एक जल, अनेक लहरि

पोखरिक जलमे चान पड़ल,
 सय टुकड़ीमे काँपि उठल।
 हम हाथ बढ़ा एक टुकड़ी छूलहुँ,
 सम्पूर्ण उजास हिलि उठल।
 किनारक घास अलग-अलग छल,
 ओसक गन्ध सभमे एक।
 कओन डाँटसँ काटि सकैत छी
 मिलल वस्तुक बीचक रेख?
 जँ सभ एके, केकरा बजाबी?
 जँ सभ अलग, आवाज कतय जाय?
 साँस लैत छी अपन छातीमे,
 हवा तँ सभक द्वारसँ आय।
 चान बचल जलक हिलकोरामे,
 जल बचल चानक उजियार।
 हम भेदक धारपर बैसलहुँ,
 पयर छुबैत छल एकहि धार।

खाली पीढ़ी

ओ नहि आयल, मुदा दुआरपर
ओकर पीढ़ी देखाइत रहल।
लकड़ी, बुनाइ, धूप सभ छल,
अनुपस्थिति भरि ठाम छल।
जकरा हम घर कहि बजबैत छी,
से उजड़ल खेत नहि अछि।
नामक चारू कात अनकहल
कतेक नहि-कहल बसैत अछि।
उत्तर दिससँ गाछ झुकल छल,
दक्खिनसँ ओ सोझ लागल।
दुनू दिसक आँखि बचौने
हम बीचक छाँहमे जागलहुँ।
एक नजरिमे सभ नहि समायल,
एक अभावो खाली नहि।
पीढ़ीपर हाथ रखि बुझलहुँ,
नहि रहब सेहो किछु कहैत अछि।

पयरसँ आगाँ प्रश्न

बाट कहलक, चलि कऽ देखू,
पयर कहलक, चलिते छी।
मन बीचमे रेखा खींचलक,
पहिने आधा, फेर आधा।
आधा-आधामे दिन कटि गेल,
गाम तँ आगाँ देखाइत छल।
कागजपर यात्रा ठमकल छल,
देह पसीनामे नहायल छल।
हम मनक गाँठि खोलऽ बैसलहुँ,
केवल गन्तव्यक लोभ नहि छल।
जे बात ठीक बुझाइत छल,
ओकर भीतर प्रश्न जगल।
पयर अपन अनुभव रखने रहल,
मन अपन अचरज ने छोड़लक।
दुनूक बीचक खींचतानमे
एक नव बाटक मुँह खुलल।

मोनक दूर किनार

दिनभरि देहक काज समेटलहुँ,
 राति मोनक काज उठल।
 रोटी सेंकि चुल्हि मिझेलहुँ,
 भीतर दोसर आगि जरल।
 देह कहलक, एतहि बसू,
 ओछाओन, पानी, छाँह बहुत।
 मोन पूछलक, एहि रहबामे
 केकर खोज एतेक अकुल?
 पुरान गीतक स्वर पकड़लहुँ,
 ओहो नव प्रश्नमे बदलि गेल।
 बीतल लोकक चुप्पी भीतर
 अगिला जीवनक पदचाप भेल।
 नहि दूर दिशामे घर बनौलहुँ,
 नहि अपन आँगन छोड़ि देलहुँ।
 भीतरक दूर किनार दिस
 एहि जीवनसँ नाव खोललहुँ।

रोटीक पाछाँक भूख

पहिल कौर देहकें भेटल,
 दोसर कौर थाकल श्रमकें।
 तेसर कौर मुँह लग अबिते
 प्रश्न उठल चुप्पे मोनमे।
 खेत नपल, धानक बोझ नपल,
 नपि गेल दिनक कमाइ।
 जे भीतरसँ पूछैत अछि,
 तकर माप कतयसँ पाई?
 घामक अर्थ त्वचा जनैत अछि,
 छाँहक अर्थ थाकल पयर।
 हम किएक छी, ई पुछनिहार
 नहि सुतैत भरि पेटक राति।
 थारी धोइ कऽ उलटा राखलहुँ,
 जलमे अपन मुख देखलहुँ।
 तृप्त देहक शान्त किनारपर
 अगम पियासक गीत सुनलहुँ।

करघाक नव फूल

मायक हाथक पुरान नमूना
सन्दूकक तहमे राखल छल।
लाल किनारी, उज्जर बीचमे
कतेक बरखक उजास बसल।
हम करघापर ताना चढ़ौलहुँ,
बाहर बरखा झहरैत छल।
बूँदक लय जे कानमे आयल,
बानामे धीरे उतरैत गेल।
पुरान फूलक पाँति बचल,
मुदा पातक मोड़ बदलल।
नव ऋतुक रंगक सङ्ग-सङ्ग
अपन गामक गन्ध उघरल।
माय देखलनि, किछु नहि कहलनि,
आँचरपर हथेली फेरलनि।
पहिचानक भीतर नव पहिचान
हुनक मुँहपर मुस्की बनल।

फेर अँकुरायब

पतझड़मे जे पात झरल,
ओ माटिक गन्धमे भेटल।
काल्हि जकरा अन्त बुझलहुँ,
आइ जड़िक आहार बनल।
हम अपन कर्मक बीआ छिटैत
अनदेखल ऋतु सोचैत छी।
एक कठोर बोलक काँटा
कतेक दिन धरि बोहैत छी।
एक दया जे चुप्पे देलहुँ,
दोसर हाथमे छाँह बनल।
कतेक बेर हमरहि छूटल
स्नेह घुमि कऽ हमरा भेटल।
जँ फेर अँकुरायब एहि धरतीपर,
एतेक स्मरण बचल रहय—
अपन चाहक चक्रसँ बाहर
केकरो दुःख हलुक करब।

भोरक खुलल आँखि

राति सपनामे घर बहि गेल,
 हम छप्पर धरि कानैत रहलहुँ।
 जागलहुँ तँ देह सुखायल,
 तकियापर नोर पड़ल छल।
 जे नहि छल से हृदय हिलौलक,
 जे छल तकरा देखल नहि।
 डर अपन रंगक आकाश तानलक,
 हम ओकरा तलमे बसलहुँ।
 भोरक उजास धीरे पसरल,
 काठक खम्भा फेर चिन्हलहुँ।
 मुदा देखबाक एहि सुखमे सेहो
 अपन नजरिक छाप देखलहुँ।
 परदा हटल तँ घर नहि मेटायल,
 ओकर अनचिन्ह रूप खुलल।
 डरक पकड़ जे ढीला पड़ल,
 जीवनमे किछु ठाम बढ़ल।

बोलैत आँगन

घर केवल देबाल नहि छल,
 ओहिमे बजैत छल सम्बोधन।
 दुआरक चरमर ध्वनिमे सेहो
 केकरो अयबाक आस बसल।
 पोखर केवल जल नहि छल,
 तटपर बितल दुपहरि छल।
 एक लोटामे जल भरिते
 सम्पूर्ण गामक गन्ध उठल।
 हम सुनलहुँ पानि भरनिहारिकेँ,
 ओ सुनलनि हमर अनकहल।
 दू जनक बीचक विराममे
 एक नव संसार आकार धरल।
 नाम देलासँ ठाम उघरल,
 सुनलासँ अर्थक पात खुलल।
 हमर एकल जियबक आँगन
 सभक आवाजसँ भरल।

छुबैत धरती

नक्शामे ई छोट पोखरि छल,
अङ्कमे जलक कनेक परिमाण।
मुदा किनारपर पयर धरिते
बालपन उतरल नाइट-पयर।
एतहि कखनो नाओ डुबौने,
एतहि पहिल बेर डर जीतल।
एतहि अपरिचित हाथ बढ़ल तँ
जलसँ बड़का भरोस भेटल।
हम माप नकारि नहि सकैत छी,
मुदा मापे सभटा नहि।
पानिक भीतर जील दिनक
अगिनत उजास पड़ल अछि।
किनारक घास धीरे छूलहुँ,
ओकर नम्र हरियरी बचल।
जे ठाम जियबासँ पावन हो,
तकर रक्षा हाथसँ होअय।

नक्शाक बाहर

अहाँ गामक नक्शा बनौलहुँ,
हम ओहिमे अपन घर तकलहुँ।
देबाल भेटल, बाटो भेटल,
मायक हँसी कतहु नहि भेटल।
हम हँसीक नाम लिखलहुँ,
कागज हलुक काँपि उठल।
नामसँ मुँहक रूप तँ आयल,
स्वरक गरमी बाँचल रहल।
बोल कखनो चित्र बनैत अछि,
कखनो दुआरक थाप।
कखनो बस एतेक कहैत अछि,
बैसू राति बहुत भेल अछि।
हम नक्शा मोड़ि जेबमे रखलहुँ,
ओ हमरा घर धरि अनलक।
चौखट लाँघि भीतर गेलहुँ,
जे नहि बनल छल, से भेटल।

चाहक आकार

मनक भीतर कोठरी बहुत,
 एकमे अन्न, एकमे गान।
 एकमे दोसरक दुःखक लेल
 राखल अछि अपनहि ठाम।
 खाली हाथ हवा छुबैत अछि,
 ताहिसँ आकृति जनमैत अछि।
 जे चाह एखनो रूपहीन छल,
 ओ धीरे घर बनबैत अछि।
 हम ओहि घरक सीढ़ी गनलहुँ,
 ऊँच-नीच पर सोचि रहलहुँ।
 सभ सुख एक समान नहि लागल,
 किछु सुख बाँटि कऽ बड़का भेल।
 चाहक भीतर चाह सुधरल,
 नजरिक भीतर नजरि खुलल।
 अपन लेल जे दीप जरौलहुँ,
 ओकर प्रकाश पड़ोसी धरि गेल।

आवाजक पुल

हम कहलहुँ, पानी चाही,
 अहाँ लोटा बढ़ा देलहुँ।
 ओहि साधारण बोलक भीतर
 कतेक भेट चुपचाप भेल।
 हमर पियास अहाँ नहि पीबि सकलहुँ,
 मुदा बुझलहुँ ओकर भार।
 हमर स्वरक काँप सुनैतहि
 अहाँक हाथ भेल तैयार।
 केवल वस्तुक नाम नहि गेल,
 सङ्ग गेल आग्रहक ताप।
 जे अर्थ मुँहसँ सम्पूर्ण नहि निकलल,
 ओ पढ़लहुँ नजरिक पास।
 दू किनार अलग रहलहुँ,
 मुदा जलक लेल बाट खुलल।
 एतेक छोट सम्बोधनसँ
 एक लम्बा एकान्त टुटल।

सुखक सीढ़ी

पहिने मिठाई भेटल तखने
हमरा उत्सव बुझाईत छल।
अपन हथेलीक छोट टुकड़ामे
सम्पूर्ण सुख समाईत छल।
एक दिन छोट बहिनि तकैत छल,
हम आधा ओकरा देलहुँ।
मुँहक मिठास कनेक घटल,
मोनक मिठास बढ़ैत गेल।
फेर केकरो हाथ पकड़लहुँ,
जखन ओ ठोकर खा खसल।
ओहि क्षण कोनो वस्तु नहि भेटल,
तैयो किछु अनमोल भेटल।
सुखक सीढ़ी एना चढ़लहुँ,
पाछाँक पायदान नहि तोड़लहुँ।
अपन हँसीसँ आगाँ बढ़ि कऽ
दोसरक हँसीमे घर खोजलहुँ।

अलपनाक दुआर

चाउर पीसि दादी अङ्गुरी डुबौलनि,
भीजल माटिपर रेख खिंचल।
रेखसँ पात, पातसँ अँगना,
अँगनासँ स्वागत जनमल।
ओहि उज्जर घेरक भीतर
केवल चाउरक लेप नहि छल।
दूर बसल प्रिय लोकक लेल
एक प्रतीक्षाक रूप बनल।
हम कने रेखा बाहर खींचलहुँ,
ओहिमे चिड़ैक पयर बनल।
जे पाहुन एखनो आयल नहि,
तकर लेल सेहो ठाम खुलल।
सुन्न देहरी अर्थसँ भरल,
घरक चाह देखाइत भेल।
एक अङ्गुरीक छोट घुमावमे
अनदेखल सम्बन्ध चमकल।

बराबरक थारी

भोज उठल तँ बीच आँगनमे
 हम थारीक पाँति बिछौलहुँ।
 परोसनिहार हाथ ठमकि गेल,
 ककरा पहिने, ककरा पाछाँ?
 कोनो मुखपर थाकल रेखा,
 कोनो आँखिमे सङ्कोच छल।
 कोनो पेटक भूख मुखर छल,
 कोनो चुप्पे सहैत रहल।
 हम अपन आसन कने सरकौलहुँ,
 पाँतिक बाहरक लोक बजौलहुँ।
 दानक ऊँच चबूतरा छोड़ि
 एकहि धरतीपर बैसलहुँ।
 न्याय केवल अन्नक माप नहि,
 मानक भूखो तृप्त करय।
 थारी देब तँ आँखि मिलायब,
 हाथ कखनो नीचाँ नहि करब।

जियबाक कारीगरी

हमरा सम्पूर्ण रूप नहि भेटल,
 काँच माटि जकाँ जनमलहुँ।
 भूख, भरोस, भूलक सङ्गे
 अपन आकार गढ़ैत रहलहुँ।
 एक दिन लाभक लोभ बजौलक,
 एक दिन नेहक बाट खुलल।
 जे चुनलहुँ से हाथमे जमल,
 जे छोड़लहुँ से प्रश्न बनल।
 गामक दुःख हमर घर धरि आयल,
 घरक सुख बाहर लऽ गेलहुँ।
 अपन बनबक दीर्घ काजमे
 दोसरक अंश सेहो भेटल।
 साँझक माटि एखनो कोमल,
 चाक एखनो घूमि रहल।
 जियबक अर्थ बनौने जायब,
 जाबत हाथमे स्पर्श बचल।

आँखि आ हथेली

आँखि कहलक, फूल सुन्दर,
हाथ बढ़ल ओकरा तोड़ऽ।
काँपल डाढ़ि, झरल पराग,
मन ठमकल अपन देखऽ।
देखबाक सुख, पाबक इच्छा,
दुनू एकहि देहमे छल।
मुदा फूलक छोट जियबो
ओहि क्षण हमरा देखाइत भेल।
हम रंगक मोह नहि छोड़लहुँ,
केवल मुठ्ठी खोलि देलहुँ।
डाढ़िसँ जुड़ल फूलक रूपमे
दोसर ढङ्गक सुख भेटल।
आँखिक उजास हाथ धरि आयल,
हाथक संयम मोन धरि गेल।
सुन्दरताक निकट बैसलहुँ,
अपन होयब कने बदलल।

देखि रहल छी

धूप देबालपर खसैत छल,
ओही धूपमे हम बैसलहुँ।
देबाल गरम, हमर देहो गरम,
मुदा हम गरमी जनैत छलहुँ।
एक चिड़ै छतपर उतरल,
नजरि ओकर पाछाँ गेल।
फेर अकस्मात् बुझलहुँ अपने,
हमर नजरि कतय लगल।
देखल वस्तुसँ लौटि कऽ मोन
अपन देखबकेँ छुबऽ लागल।
शान्त जलमे दोसर उजास
भीतर-भीतर उगऽ लागल।
देहक गरमी सङ्गे रहल,
चिड़ैक स्वर सेहो नहि छुटल।
जनैत रहबाक एहि अचरजमे
हम अपन लग फेरि पहुँचलहुँ।

हमरा नीक लगैत अछि

अहाँ कहलहुँ, मेघ घेरलक,
 हम आकाश दिस ताकि लेलहुँ।
 अहाँ कहलहुँ, साँझ सुन्दर,
 हम ठमकि कऽ साँझ सुनलहुँ।
 पहिल बोलक जाँच आँखि कयलक,
 दोसर मोनक दुआर खटखटौलक।
 रंग तँ एकहि पसारल छल,
 दुनू भीतर भिन्न उजास।
 हमरा धूसर किनार प्रिय छल,
 अहाँकें लालिमक पातर धार।
 रुचिक लेल कोनो डाँट नहि छल,
 सङ्ग देखबाक नेहो अपार।
 हम अपन नीक लगब कहलहुँ,
 अहाँ अपन मुस्की राखलहुँ।
 एकहि साँझक विस्तृत आँचरमे
 दू अनुभवकें ठाम भेटल।

अवश्य होयत?

बरखा हरेक बरख आयल अछि,
 तँ हम बीआ सहेजैत छी।
 मुदा आकाशक अड़ियल चुप्पी
 कखनो आशा जाँचबैत अछि।
 दू मुठ्ठीमे दू-दू दाना,
 जोड़लासँ चारि होइत अछि।
 एहि जोड़ आ मेघक अयबामे
 निश्चय एके नहि होइत अछि।
 हमर चाहक जोर बहुत छल,
 तैयो मेघ नहि खिचि आयल।
 आशाक स्वर ऊँच करिते
 सत्यक माप नहि बढ़ि गेल।
 जे जनैत छी से सम्हारब,
 जे नहि जनैत छी से कहब।
 बीआ धरब, बाटो ताकब,
 सङ्गे पानिक जुगुत करब।

अनमोलक छाँह

हाटमे पीतल तौलल गेल,
माटिक बरतन दाम लगल।
एक बुढ़ियाक गाओल गीतक
मोल पुछैत स्वर ठमकल।
ओहि गीतसँ अन्न नहि उपजल,
तैयो मोनक अकाल टरल।
ओहि नेहक कोनो हिसाब नहि,
जे थाकल माथ सहलौलक।
कतेक वस्तु काजक होइत अछि,
कतेक अपनेमे प्रिय लगैत।
कतेक कर्मक निर्मल शोभा
दोसरक पीड़ा कम करैत।
साँझक हाटसँ घर घुरलहुँ,
झोरामे कनेक किनल समान।
जे अनमोल छल से सङ्ग चलल,
ओकरा चाहल कोनो दाम नहि।

मेहनतिक रंग

भट्ठीक आगिसँ मुख लाल छल,
हाथक रेखामे कारी धूरि।
ओ बरतनक पेट गढ़ैत छल,
ओहिपर उतारैत छल भोर।
किननिहार चमक देखैत छल,
हम ओकर अङ्गुरी देखलहुँ।
चिक्कन घरक प्रत्येक मोड़मे
जीवनक दबाव पढ़लहुँ।
सुन्दरता केकरो एकल धन नहि,
धूपक कोनो बन्द खाता नहि।
जे हाथ दिनभरि बोझ उठबैत,
ओहो रंगक सपना देखैत।
बरतन घरक कोनमे चमकल,
कारीगर दूर अपन ठाम।
ओकर श्रमक मान बचल रहय,
तखने सम्पूर्ण होयत ई रूप।

नामक ओहि पार

नेना पहिल बेर आम बजौलक,
 माय ओकरा फल देखा देलनि।
 ध्वनिसँ रंगक नाता जुड़ल,
 गन्धक बाट सेहो खुलल।
 मुदा नामक छोट डालीपर
 सभटा आम कइसे अँटत?
 खट्टा, मीठ, काँच आ पाकल,
 अनुभव अपन पात पसारत।
 आँखि किछु कहलक, जीह किछु,
 हाथ अपन छुअन बतेलक।
 एक फल लग पहुँचनिहार
 भिन्न बाटक मेल देखलहुँ।
 नाम हमर सङ्ग चलैत रहल,
 फल अपन स्वाद खोलैत रहल।
 अर्थ बुझबाक धीम गतिमे
 जीवन हमर शिक्षक बनल।

बजबाक पहिल दिन

ओ छोट नेना नाम सीखैत
 बारम्बार अङ्गुरी उठौलक।
 कखनो लोटा, कखनो पानी,
 कखनो केवल हाथ बजौलक।
 हम वस्तु लग शब्द रखलहुँ,
 शब्दक सङ्ग काज देखौलहुँ।
 पीबक बेरक छोट इशारामे
 कतेक सम्बन्ध जोड़लहुँ।
 नाम उड़ल तँ वस्तु नहि उड़ल,
 वस्तु हटल तँ नाम बचल।
 अनुपस्थित जल याद करिते
 ओकर पियासक स्वर निकलल।
 ध्वनि एकसरे नहि सिखौलक,
 सङ्ग जियब अर्थक बाट बनल।
 एक नन्हक बोलक भीतर
 सभक संसार जागि उठल।

फेरसँ ताकू

दूरक खेतमे उज्जर चादर,
हम बुझलहुँ पानी चमकल।
लग गेलहुँ तँ बालु भेटल,
घाम अपन खेल देखौलक।
आँखि बन्द कऽ सत्य नहि भेटल,
आँखि खोलि कऽ फेर तकलहुँ।
ठाम बदललहुँ, हाथ लगौलहुँ,
पहिल बुझाइ सुधारि लेलहुँ।
एक चूकक दुःखसँ हम
देखबक सभ बाट नहि छोड़लहुँ।
जे विशेष भ्रम हमरा भेल छल,
ओकर कारण खोजि अनलहुँ।
विश्वासक अर्थ अन्हर पकड़ नहि,
जाँचक अर्थ सभटा नकार नहि।
धूरि झाड़ि कऽ आँखि उठौलहुँ,
दूर पोखरिक धार चमकल।

हरेक पातक अपन हरियरी

सभ पातकेँ पात कहैत छी,
तैयो सभटा एके नहि।
एकक धारपर कीड़ाक चिन्ह,
एकक बीचमे ओस बसल।
समान नामक छाँहक नीचाँ
अलग-अलग देहक कथा।
जे पात हमर हाथमे आयल,
ओकर स्पर्श अनन्य रहल।
हमर मनमे हरियरीक रूप
सय पातसँ मिलि कऽ बनल।
मुदा छूअक लेल एकहि पातक
नरम किनार आगाँ बढ़ल।
एक बुझाइ अनेककेँ जोड़य,
एक पहिचान भेद बचाबय।
गाछक सभ पात सङ्ग हिलैतहुँ
अपन-अपन उजास नचाबय।

रंगक सङ्ग रूप

अहाँ कहलहुँ, गहिर नीला,
 हम पूछलहुँ, ककर नील?
 आकाश, आँचर, पोखरिक जल,
 सभमे रंगक भिन्न खिल।
 कठोर पाथर, कठोर बोली,
 एकहि बोलक दू अनुभूति।
 पहिल हाथकेँ रोकि दैत अछि,
 दोसर रोकैत मोनक गति।
 गुणकेँ देहसँ दूर करिते
 ओकर अर्थ सरकि गेल।
 जे नीला कपड़ामे छल,
 जलमे दोसर ढङ्गसँ भेल।
 हम रंग आ रूप सङ्ग देखलहुँ,
 बोल आ प्रसङ्ग जोड़लहुँ।
 एकल शब्दक सूखल डाढ़िमे
 सम्बन्धक हरियर रस भेटल।

गाँठिक भीतर बाट

हाथमे सुतरी उलझल आयल,
 खींचलहुँ तँ गाँठि बढ़ल।
 हम बल छोड़ि कऽ लग बैसलहुँ,
 एक-एक मोड़ देखऽ लगलहुँ।
 कतहु पुरान पकड़ कसायल,
 कतहु नव फेरा पड़ल छल।
 एक छोरक अर्थ बुझिते
 दोसर छोर बदलैत छल।
 आँगनक बोल, नीरव प्रार्थना,
 खेलक नियम, नेहक मान—
 सभक अपन गाँठि खुलबाक
 अलग-अलग ढङ्गक पहचान।
 अन्त धरि सुतरी बचल रहल,
 हमर जल्दबाजी खुलि गेल।
 गाँठि खोलैत एक बात बुझलहुँ,
 बुझबो एकटा धैर्यक काज।

किएकक अनेक रंग

नेना पूछलक, पात किएक झरल?
हम कहलहुँ, डाढ़ि सुखायल।
ओ फेर पूछलक, मोन किएक कानल?
हमर पहिल उत्तर ठमकल।
पातक झरबक कारण अलग,
पातसँ नेहक कथा अलग।
एकहि किएकक छोट आवाजमे
कतेक बाटक माँग बसल।
कखनो कारण चाही ओकरा,
कखनो आशय, कखनो ढाढ़स।
कखनो केवल लग बैसबाक
एक सरल निमन्त्रण रहय।
हम प्रश्नक आँखि दिस तकलहुँ,
तखने उत्तरक रूप बदलल।
जे बात केवल ठीक छल पहिने,
ओ आब ओकर काजक भेल।

अञ्जुरीक उजास

भोर भेल तँ ओ दुआर धोएलनि,
एक चुटकी जल धरतीपर देलनि।
सूरजकेँ नापऽ नहि उठल छल हाथ,
कृतज्ञतासँ अञ्जुरी जुड़ल छल।
ओहि झुकबामे देहक थकान,
ओहि उठबामे आशा छल।
चुप्पे कर्मक छोट लयमे
सम्पूर्ण मनक ठाम बनल।
हम हुनक आँखिक शान्ति देखलहुँ,
सङ्गे प्रश्नक दीप रखने।
श्रद्धा कतय नेह बढ़बैत,
डर कतय ओकर रूप धरैत?
जल धरतीमे समा गेल,
हाथ दिनक काजमे लागल।
जुड़ल अञ्जुरी खुलिते देखलहुँ,
ओ भूखलकेँ अन्न दैत छल।

प्रश्नक पाछाँक शान्ति

हम सभ तारा गनि लेलहुँ,
 रातिक विस्तार नपि लेलहुँ।
 मुदा एकल ओछाओनपर
 अपन उदासी नहि बुझलहुँ।
 कतेक उत्तर सिरान लग छल,
 कतेक विचार सम्हारि रहलहुँ।
 मोनक मूल पियास तखनहुँ
 चुप्पे-चुप्पे जागि रहल।
 अकस्मात् बाहर पात हिलल,
 साँस ओकर लयमे मिलल।
 अपन छोट घेरसँ बाहर
 होयबाक अनुभव खुलल।
 प्रश्न मेटल नहि, भार बदलल,
 जीवनक सङ्ग बैसि रहलहुँ।
 जकर उत्तर बोल नहि बनल,
 ओकर शान्तिमे साँस लेलहुँ।

कहलासँ बचल

अहाँ घुरलहुँ दीर्घ विरहसँ,
 हम कतेक बात सोचने छलहुँ।
 दुआर खुलल, आँखि मिलल,
 सभ वाक्य कतहु रहि गेल।
 हथेली हथेली लग आयल,
 चुप्पीमे गरमी पसरल।
 जे किछु कहब असम्भव लागल,
 ओ अनकहल स्पष्ट भेल।
 मौनक अर्थ रिक्ति नहि छल,
 ओहिमे बरखक स्वर छल।
 बोल अपन सीमा धरि आयल,
 नेह ओकरा आगाँ बढ़ल।
 फेर हम साधारण बात कहलहुँ,
 बैसू, थाकल होयब अहाँ।
 ओहि थोड़मे बहुत बचल छल,
 बाँचल बहुतो व्यक्त रहल।

खेलक बोली

नेनासभ घर-घर खेलैत छल,
एक पाथर चुल्हि बनल।
काल्हि ओहे पाथर मैदानमे
राजा बनि कऽ बैसल छल।
नाम बदलल तँ खेल बदलल,
खेल बदलल तँ काज बदलल।
एकहि वस्तुक सङ्ग सभक
बर्तावक सम्पूर्ण ढङ्ग बदलल।
हम शब्दक थाकल गाँठि लऽ
ओहि हँसीक बीच बैसलहुँ।
कतेक गम्भीर उलझन अपन
ठाम बिसरने शब्दमे भेटल।
जखन बोलकें काज लग अनलहुँ,
अर्थक पयर देखाइत भेल।
खेलक धूरि उड़ैत रहल,
मोनक धुन्ध हलुक भऽ गेल।

भीतरक नीरव घर

दिन आँखिक खिड़की खोललक,
रंगक पाहुन भीतर आयल।
मोन अपन आसन सरकौलक,
प्रत्येक रूपकें ठाम देलक।
राति भेल तँ दुआर मुँदायल,
सपना अपन मेला अनलक।
फेर ओहो झिलमिल हाट उठल,
गहिर शान्ति चुप्पे उतरल।
भोर हम जागि अपनासँ पूछलहुँ,
ओहि नीरव घरमे के छल?
जे किछु देखल नहि, तकरो
हलुक छाप मोनमे कोना बचल?
दिन आ रातिक बीच बहैत
एक अजस्र रहस्य लगल।
हम उत्तरक जल्दी छोड़ि
भीतरक शान्ति सुनऽ लगलहुँ।

कारणक सीढ़ी

धुआँ उठल तँ लोक दौड़ल,
 केओ आगिक ठाम बतौलक।
 केओ पूछलक, धुआँ सदियन
 एकहि कारणसँ उठैत अछि?
 एक प्रश्नपर दोसर प्रश्न,
 धीरजसँ सीढ़ी बनल।
 जल्द बुझाइकेँ फेर जँचबैत
 बुद्धिक पुरान पयर बढल।
 कतेक बेर वाक्य छोट भेल,
 ओकर भेदक धार बढल।
 नन्हक अन्तर जे छूटैत छल,
 सत्यक मोड़ ओतहि भेटल।
 हम ओहि सीढ़ीपर चढ़ैत
 नीचाँक पायदान सहलौलहुँ।
 पहिनेक श्रमक सूक्ष्म रेखासँ
 अपन नजरि धारदार कयलहुँ।

ओझरायल उजास

उजास भरल कोठरीमे
 अपनहि छाँहसँ डर लगल।
 जे हम छी, तकरा बिसरि कऽ
 अपन बनायल रूप धरलहुँ।
 जँ भीतर दीप जरैत अछि,
 ई अन्हार कतयसँ आयल?
 जँ अन्हारे सभटा छल तँ
 अन्हारक बोध कोना जागल?
 प्रश्नक धागा खींचैत-खींचैत
 हमर मुठ्ठी कसि गेल।
 हाथ खोललहुँ तँ धूपक रेखा
 चुप्पे हथेलीपर पड़ल।
 विचार अपन काज करैत रहल,
 अनुभव अपन दुआर खोललक।
 छाँहकेँ मेटब आवश्यक नहि छल,
 उजासक सङ्ग ओकर ठाम भेटल।

नजरिक मिलन

गामक बाटपर एक फूल छल,
हमर मोन कतहु आन ठाम।
आँखिक आगाँ रंग पड़ितहुँ
देखब नहि भेल ओहि बेर।
जखन ध्यानक धार घुरल,
फूल अकस्मात् निकट भेल।
रंग, आकार, सुगन्धक आभास
एक मिलनमे प्रकट भेल।
दूरी अपन ठामे रहल,
मुदा अनचिन्हपन घटि गेल।
भीतरक जागल उजियारसँ
बाहरक रूप प्रकाशित भेल।
हम नहि केवल आँखि उठौलहुँ,
अपन उपस्थितियो देलहुँ।
एक फूलक सङ्ग एहि भेटमे
देखबाक अर्थ अनुभव कयलहुँ।

सपनो जखन सुतल

राति अपन चित्र समेटलक,
स्वप्नक अन्तिम रंग मिझायल।
नहि कोनो बाट, नहि यात्री,
नहि मनक दौड़ सुनाइत छल।
भोरक हाँक कानमे आयल,
हम ओछाओनपर आँखि खोललहुँ।
कहलहुँ, नीक निन्न पड़ल छल,
फेर अपनहि बोलपर ठमकलहुँ।
के देखलक ओहि विश्रामकें,
जखन देखबाक वस्तु नहि छल?
कओन निशानी सङ्ग लऽ घुरलहुँ,
जखन कोनो दृश्य नहि बचल?
गहिर निन्नक बन्द किबाड़पर
एक अनुत्तरित शान्ति रहल।
नाम देबाक जल्दी छोड़लहुँ,
आरामक छाप हथेली धरलहुँ।

निन्नक तीन किनार

जागल दिनमे खाली ओसारा
 केकरो नहि रहब जनौलक।
 सपनामे ओ आयलो छल,
 तैयो वियोग मोन दुखौलक।
 गहिर निन्नमे ओसारो छुटल,
 आयब-जायब दुनू गेल।
 केकर कमी, ककर प्रतीक्षा,
 ई पूछनिहारो शान्त भेल।
 भोरक सङ्ग संसार घुरल,
 नामक सभ सम्बन्ध घुरल।
 सपनक उलझल उपस्थिति आ
 दिनक दूरी अलग भेल।
 रातिक नीरव बीचक ठाम
 दुनू किनार छुबैत रहल।
 खाली रहबाक भिन्न रूपमे
 मोन अपन गहराइ देखलक।

डगमग धरतीपर

पुलपर पहिल पयर धरिते
 काठक हलुक आवाज उठल।
 हम रुकलहुँ, हाथसँ जँचलहुँ,
 नदी अपन वेगमे बहल।
 डर कहलक, किछुओ स्थिर नहि,
 आशा कहलक, पार चलू।
 हम दुनूक स्वर सुनि कऽ
 धीरे-धीरे पयर धरलहुँ।
 जे डगमग छल से चिन्हलहुँ,
 जे मजबूत छल से धऽ लेलहुँ।
 सभ प्रश्न एकहि बेर मेटब
 सम्भव नहि, ई मानि लेलहुँ।
 पार पहुँचि पाछाँ तकलहुँ,
 पुलक कँपनी याद रहल।
 विश्वास हमर अन्हर नहि छल,
 सन्देह हमर बेड़ी नहि भेल।

काल्हिक भोर

आइ फेर पूब लाल भेल,
पाँखि खोलि चिड़ै उड़ल।
हम कल्हुक काज सोचैत
सूरजक नियमित बाट तकलहुँ।
बहुत भोर हमर स्मृतिमे अछि,
ताहिसँ आशा पुष्ट होइत।
मुदा काल्हिक अनखुल दुआर
आइक गिनतीसँ नहि खुलैत।
जे भेल तकर पगडण्डी लम्बा,
जे होयत से आगाँ अछि।
दुनूकें जोड़ैत भरोसक सङ्ग
अनिश्चितताक ठामो अछि।
हम अगिला भोरक लेल अन्न रखलहुँ,
दावासँ ओकर सूर्य नहि गढ़लहुँ।
आशा राखि कऽ जियब सीखलहुँ,
अज्ञातकें अज्ञात कहलहुँ।

सम्भवक खिड़की

हम मनमे हरियर चान बनौलहुँ,
आकाश ओतय बदलि गेल।
कहलासँ ओ सत्य नहि भेल,
मुदा कल्पनाक बाट खुलल।
फेर एक आकार गढ़ऽ चाहलहुँ,
जे गोलो रहय, कोनो गोल नहि।
बोलक भीतर बोल अड़ल,
अर्थ अपनहि पयर रोकलक।
अनहोनी आ असम्भवक बीच
सूक्ष्म रेखा देखाइत भेल।
दुनियाक आदत एक बात छल,
अर्थक गाँठि दोसर भेल।
खिड़की खोलि हवा अनलहुँ,
सोचकें पर्याप्त ठाम देलहुँ।
मुदा जे अपनहि घर तोड़ैत छल,
ओहि बोलकें फेरसँ जँचलहुँ।

एहि क्षणक ताप

अहाँ पूछलहुँ, आगि अछि की?
 हम अन्हारमे साफ नहि देखलहुँ।
 मुदा हथेली लग जे तपन छल,
 ओ अनुभव हम नहि बिसरलहुँ।
 कारणक नाम बदलि सकैत छल,
 पहिचानक चूक सम्भव छल।
 एहि क्षण जे गरमी लगल,
 तकर उपस्थित बोध प्रबल।
 हम जे अनुभव कयलहुँ तकरा
 बाहरक दावासँ अलग रखलहुँ।
 दू प्रकारक निश्चितताक बीच
 एक महीन अन्तर देखलहुँ।
 आँगुर धीरे हटबैत कहलहुँ,
 एखन तपन अनुभव होइत अछि।
 ओकर कथा जाँचि कऽ कहब,
 अनुभूति एतहि जागल अछि।

जागल की सपना?

हम सपनामे पत्र पढ़लहुँ,
 अक्षर एतेक साफ छल।
 जागलहुँ तँ हाथ रिक्त छल,
 मोनमे ओकर ताप बचल।
 आब जे खिड़की खोलैत छी,
 ई जागरण कोना चिन्हब?
 एक भ्रमक अनुभवसँ उठि कऽ
 सभ अनुभवकेँ कइसे जाँचब?
 दुआरक थाप, पानिक छुअन,
 बोलक उत्तर सङ्ग मिलल।
 दिनक जुड़ल व्यवहारमे हमरा
 जागल रहबाक अर्थ भेटल।
 तैयो प्रश्नक एक महीन स्वर
 दूरक झींगुर जकाँ बजल।
 हम ओकरा सुनैत काजमे लगलहुँ,
 जीवनक दुआर खुलल रहल।

पहिने ककर पहिचान

ओकर मुख देखबासँ पहिने
हम ओकर पदचाप चिन्हलहुँ।
अन्हार गलीक मोड़ लगहुँ
चिरपरिचित चाल बुझलहुँ।
फेर दिनमे मुख देखलहुँ,
पदचापकेँ नामक घर भेटल।
कखनो रूप स्वरकेँ चिन्हौलक,
कखनो स्वरसँ रूप उघरल।
गन्धसँ बगिया याद पड़ल,
बगियासँ गन्धक स्मृति जागल।
एक पहिचानक आश्रय होइत
दोसर अपन ठाम बनौलक।
हम पहिलक आसन खाली रखलहुँ,
सम्बन्धक बुनाइ देखैत रहलहुँ।
एकल रेखासँ जग नहि बनल,
मिलल चिन्हसँ घर पहुँचैत रहलहुँ।

चाहीक स्वर

एक हाथ दोसरकेँ धक्का देलक,
आँखि ओहि घटना देखलक।
हम कहलहुँ, एना नहि करू,
स्वरमे नव आग्रह जागल।
जे भेल तकर कथा एक छल,
जे होयबाक चाही दोसर।
वर्णनक शान्त देहरी लाँघि
मोन जिम्मेदारी धरलक।
केवल नापसँ मान नहि भेटत,
केवल आँकसँ नेह नहि।
मुदा हम अपन आग्रह लेलो
कारण देबासँ भागब नहि।
घटना लिखलहुँ, चोट सम्हारलहुँ,
दुनूक अलग काज बुझलहुँ।
ठीक कहबाक सङ्ग-सङ्ग हम
उचित करबाक भार उठौलहुँ।

अहाँक पीड़ा

अहाँ माथपर हाथ रखने छी,
 हम लग बैसि जल बढ़बैत छी।
 अहाँक भीतरक ठेस अपन
 देहमे हम नहि पबैत छी।
 मुदा नजरिक थाकल छाया,
 बोलक बीचक टूटल लय,
 चुप्पे बर्दाश्तक धीम कँपनी
 हमर मोन धरि पहुँचैत अछि।
 सम्पूर्ण पीड़ा अपन होअय,
 तखने नेह करब, ई नहि।
 अहाँ अलग छी, एहि कारणे
 अहाँ लग पहुँचनाइ जरूरी।
 हम सभटा नहि बुझलहुँ तैयो
 अहाँक बात सुनैत रहलहुँ।
 दू देहक बीचक दूरीमे
 सहभागिताक ठाम बनौलहुँ।

बोलक बसात

भोरक हाँकसँ गाम जगल,
 हाट खुलल सम्बोधनसँ।
 मान, मनुहार, हँसी, उलाहन
 चलल एक मुँहसँ दोसर मुँह।
 कतेक बोलसँ खेत बँटल,
 कतेक बोलसँ हाथ मिलल।
 एक वचनक भरोस रखने
 दूरक यात्री घर घुरल।
 हम एहि बहैत बसातमे
 अपन एकल स्वर पहिचानलहुँ।
 जे भाषा हमरा भेटल छल,
 ताहिमे सभक श्रम जानलहुँ।
 बोलक घरमे रहैत-रहैत
 हम बोलक देहरी देखलहुँ।
 जगत बूझबाक एहि खिड़कीकेँ
 साफ रखबाक काज चुनलहुँ।

शब्दक घरमे

हम न्याय तकैत हाट गेलहुँ,
ओ कोनो थालमे नहि भेटल।
हम समय तकैत खेत गेलहुँ,
ओ कोनो गाँछपर नहि लागल।
मुदा बँटबाराक बेर न्याय
लोकक बोलीमे उठल।
बीआ छिटबाक ऋतु अबिते
समयक अर्थ प्रकट भेल।
जे वस्तु जकाँ धरल नहि जाय,
ओ जीवनसँ दूरो नहि।
बोलक जोड़ आ कर्मक भेदमे
ओकर पहिचान छिपल अछि।
हम शब्दक घरमे बैसि कऽ
दुआरक दिशा परखऽ लगलहुँ।
कओन बोल कतय लऽ जाइत,
कओन मोड़पर भटका दैत?

सीखल स्वर

नवजातक सङ्ग कोनो भाषा
गाँठि बान्हि कऽ नहि आयल।
ओ रोअलक, हँसलक, सुनलक,
धीरे सम्बोधन पहिचानलक।
माय बजलीह, दादी बजलीह,
गामक हाटो कान लग आयल।
ध्वनिक भीतर भेद खुलल तँ
अर्थक पहिल पाँखि उगायल।
किछु नियम बिनु कहल सीखलक,
किछु भूल कऽ बुझि लेलक।
सीमित बोलक नन्हक झोरासँ
नव-नव बात निकालि लेलक।
ओकर पहिल कथा सुनैत
हम अचरजसँ भरि उठलहुँ।
सभसँ पाओल छोट स्वरमे
ओ अपन संसार रचैत छल।

सभक चौक

हम अपन मनमे एक चिन्ह राखलहुँ,
 केवल हम ओकर अर्थ जनलहुँ।
 काल्हि ओहि चिन्हकेँ फेरि देखलहुँ,
 अर्थ बदलल की हम बिसरलहुँ?
 अपन स्मृतिक एकहि साक्षी
 अपन चूक कइसे पकड़त?
 जतय ठीक आ बेठीकक अन्तर
 केओ दोसर नहि जाँचि सकत।
 गामक चौकपर बोल खुलल,
 लोक सुधारैत, लोक सीखैत।
 एकक भूल दोसर चिन्हलक,
 सङ्गे नियमक ठाम बनैत।
 एकसरे मोनमे बजैतहुँ हम
 सभक भाषा सङ्ग लऽ बजैत छी।
 भीतरक नीरव संवादोमे
 एक सम्भव श्रोता रखैत छी।

फूल आ फीता

दर्जी फीता तानि नपलक,
 कपड़ा काटब ठीक जरूरी।
 घरमे माय आँचर पसारलनि,
 ओहि घेरक माप अलग छल।
 एक बोलमे एके अर्थक
 साफ आवश्यकता कखनो होइत।
 दोसर बोलक अनेक छायामे
 नेहक गरमी सम्पूर्ण होइत।
 अङ्कक रेखा सोझ चलल,
 गीतक लय वक्रो मुड़ल।
 दुनूक काज अलग बुझिते
 दुनूक मान बचल रहल।
 फीता कपड़ाक माप देलक,
 फूल किनारीमे गन्ध भरलक।
 ठीक बनौने वस्तुक सङ्गे
 प्रिय बनबाको ठाम रहल।

अपन पयरक भार

बाटक मोड़पर केओ नहि छल
जे हमरा बदला पयर धरय।
दुनू दिस अपन ढङ्गासँ
जीवनक सम्भावना बजय।
हम डरक नाम बहुत रखलहुँ,
बहाना सेहो बहुत गढ़लहुँ।
मुदा ठाढ़ रहबाक निर्णयमे सेहो
अपनहि हाथक छाप देखलहुँ।
स्वतन्त्रता फूलक हलुक पाँखि नहि,
ओ पयरक सङ्ग चलैत भार।
जे बाट चुनब, तकर प्रभाव
केवल हमरे धरि नहि थामत।
हम चललहुँ अपन नाम लऽ,
दोषक ठाम सेहो अपन रखलहुँ।
आकाश खुलल रहल माथपर,
धरतीक उत्तर हाथमे धरलहुँ।

साँचासँ बाहर

लोक कहलनि, अहाँ एहन होयब,
पहिनेसँ रूपक घेरा खिंचल।
हम ओहि घेरक भीतर ठाढ़
अपन श्वासक तंगी सुनलहुँ।
केवल जातिक नाम नहि छी हम,
केवल काजक ओढ़ल चादर नहि।
हमर प्रत्येक छोट चुनावमे
हमर बनबक बाट खुलैत।
परिस्थिति अपन देबाल रखने,
तैयो भीतर किबाड़ रहय।
जे किछु सम्भव, ओहि सीमामे
हमर उत्तर जन्म लय।
आइ जे बनलहुँ काल्हि बदलत,
मुदा आइक भार हमर।
बनल-बनायल साँचासँ बाहर
अपन जीवन गढ़ब निरन्तर।

खुलल आकाशक नीचाँ

हम ऊपर ताकलहुँ, मौन भेटल,
नीचाँ ताकलहुँ, भूख देखलहुँ।
दुनूक बीच अपन निर्णयक
जागल जिम्मेदारी भेटल।
आकाश चुप अछि, ताहिसँ हम
ओकर सभ रहस्य नहि जनलहुँ।
अपन सीमित बुझाइक जोरपर
अन्तिम मोहर नहि लगौलहुँ।
जे जनैत छी, ओ एतेक अछि—
एखन केओ सहायता माँगैत।
हमर हाथक काजकेँ टारय
कोनो दूरक उत्तर नहि चाही।
विश्वास रहय वा प्रश्न रहय,
मनुष्यता हाथसँ होअय।
मौन आकाशक नीचाँ ठाढ़
अपन कर्मक उत्तर देब।

देहक घरसँ

पोखरिक जलमे मुख देखलहुँ,
ओ हमर बाहरक रूप छल।
आँखि मुँदि कऽ साँस सुनलहुँ,
ओ भीतरसँ जील देह छल।
फेर ध्यान एना ठमकि रहल
जे देहक घेरा हलुक भेल।
नहि देह नष्ट, नहि निन्न पड़ल,
मुदा ओकर आग्रह दूर गेल।
देखल देह आ अनुभूत देहसँ
अपन होयब अलग लगल।
जे अपनाकेँ वस्तु बनबैत छल,
ओहि पकड़सँ किछु मुक्ति भेल।
घुरि कऽ पयर धरतीपर रखलहुँ,
देहक मान आर बढ़ल।
अपनासँ कने दूरी पबिते
अपनहि लग पहुँचब सहज भेल।

जगतक सङ्ग जागब

हम आँखिमे संसार अनलहुँ,
संसार हमरा घेरने छल।
भीतर-बाहरक एहि मिलनमे
हमर सोचक आकार बनल।
केवल मोनक खेल कहितहुँ
पाथरक ठोकर रुकैत नहि।
केवल पाथर सभटा कहितहुँ
पीड़ाक अर्थ खुलैत नहि।
अपन इच्छा लऽ हम चललहुँ,
बाट बहुत लोकसँ बनल।
हमर चुनावक घेरक बाहर
भूख, श्रम, इतिहास ठाढ़ छल।
जगतक सत्य आ अपन उत्तर
दुनूकेँ सङ्ग सम्हारलहुँ।
जागब केवल आँखि खुलब नहि,
सम्बन्धक भार स्वीकारलहुँ।

हथेलीक पाथर

हम पाथर हथेलीपर रखलहुँ,
ओकर ठण्ढक भीतर आयल।
आँखि रंगक छाप पकड़लक,
भारसँ हाथ कने झुकल।
जे किछु जानलहुँ भेटक भीतर,
ओ हमर अनुभव बनल।
मुदा पाथर केवल मनक
कल्पित आकार नहि रहल।
ओकर अनदेखल पाछाँक तल
एखनो आँखिसँ दूर छल।
घुमेलहुँ तँ नव पहलू भेटल,
पहिनेक रूप सेहो बचल।
पूर्ण देखबाक दावा छोड़लहुँ,
वस्तुक आग्रह मानि लेलहुँ।
जगतसँ होइत एहि भेटमे
अपन नजरिक सीम चिन्हलहुँ।

एकलसँ सङ्ग

हम कहलहुँ, अपन बाट चुनब,
 मुदा बाटपर बाढ़ि ठाढ़ छल।
 एकल साहस प्रबल रहितहुँ
 पार उतरबाक नाव नहि छल।
 दूरसँ दोसर लोक अयलाह,
 हुनको आगाँ ओहे बाधा।
 बाँस, रस्सी, हाथ जुटल तँ
 घाटक रूप बदलऽ लागल।
 स्वतन्त्र मनक स्वप्न बचल,
 सङ्गे अभावक ज्ञान बढ़ल।
 जे दुःख हमर एकल लागल,
 सभक जीवनसँ जुड़ल भेटल।
 हमर चाहक स्वर नहि मेटायल,
 समवेत स्वरमे ठाम भेटल।
 एकल निर्णय हाथ मिलौलक,
 रुकल यात्राकेँ नाव भेटल।

समयक पायल

पुरान धुन नब स्वरमे बाजल,
 बरखक धूरि चमकि उठल।
 केओ कहलनि, ओ दिन घुरल,
 केओ अनदेखल भोर सुनल।
 पाथरक मूरत स्थिर रहल,
 देखनिहारक आँखि बदलल।
 कालक बहैत नदीक भीतर
 रूपक नित नव अर्थ खुलल।
 हम तिथि गनैत ठमकि गेलहुँ,
 एक सुर हृदय छुबि लेलक।
 जे बीतल छल ओकर स्पन्दन
 एहि क्षणमे फेरि जीबि उठल।
 समयक पायल रुनझुन बाजय,
 कला अपन कदम बदलय।
 स्मृति आ नव उन्मेषक बीच
 अजर जियबाक खेल चलय।

अनगिन ढङ्गक फूल

एक गीत कानमे फुलायल,
एक रंग आँखिमे खिलल।
एक नाचक वक्र गतिमे
देहक अनकहल अर्थ मिलल।
सभकेँ एकहि डोरीसँ बान्हब,
तँ कतेक कोमल भेद टूटत।
सभकेँ सर्वथा दूर करब तँ
मिलल उमङ्गक बाट छुटत।
चित्र मौनमे समय जगौलक,
सुर क्षण-क्षणमे रूप गढ़लक।
अलग माध्यमक अलग उजास
मोनक बन्द खिड़की खोललक।
काजक सोझ पथसँ हटि कऽ
अनायास चमत्कार भेटल।
फूलक भिन्न-भिन्न खिलबामे
एक मुक्त आकाश भेटल।

कसौटीक उजास

हम बात जँचबाक लेल चललहुँ,
हाथमे कसौटी, मोनमे प्रश्न।
राहमे कसौटीए पूछलक,
हमर भरोस कतयसँ अनलहुँ?
एक प्रमाणक पाछाँ दोसर,
फेर ओकर पाछाँ ककर हाथ?
परख आ परखल वस्तुक बीच
कतेक परस्पर बनैत बाट।
आँखि, स्मृति, सुनल सन्देश,
अनुमानक महीन डोर—
सभकेँ अपन ठाम चिन्हब,
सभक सीमा रहय उजोर।
जाँचक अन्त अन्हर मानब नहि,
ने अनन्त दौड़मे हारब।
जतय अनुभव स्पष्ट होअय,
ओतय सजग भऽ पयर धरब।

माप आ मापल

धान तौलऽ तराजू आनलहुँ,
 फेर ओकर पलड़ा जँचलहुँ।
 जे मापक छल एक क्षण पहिने,
 ओकरो माप आवश्यक बुझलहुँ।
 मापल वस्तु आ मापयवला
 सम्बन्धमे अपन मान पबैत।
 एक बिनु दोसरक भरोस
 कतेक दूर धरि चलि सकैत?
 आँखिक समक्ष दाना चमकल,
 मन ओकर समूह बनौलक।
 साक्षात् भेट आ सोचक रूपमे
 अन्तरक छोट दीप जरल।
 हम दुनूकेँ सङ्ग रखि देखलहुँ,
 काजक सत्य आ गहिर प्रश्न।
 धानक बोझ हाथ उठौलक,
 बुद्धि उठौलक अपन भार।

भेटक अनेक बाट

पाकल कटहर गाछपर छल,
 नाक पहिने गन्ध पकड़लक।
 आँखि ओकर रंग देखलक,
 हाथ लगल तँ नरमी भेटल।
 एक वस्तु लग तीन गवाही,
 सभक स्वर अपन-अपन छल।
 जतय संगति, भरोस बढ़ल,
 जतय भेद, नव प्रश्न उठल।
 मुदा गन्धसँ रंग नहि जनब,
 रंगसँ स्वादक सम्पूर्ण ज्ञान नहि।
 मिलल बाटक मान बचैत अछि
 जँ हुनक सीमा बिसराय नहि।
 हम फल तोड़ि सभक सङ्ग बाँटलहुँ,
 एक-एक अनुभव जुड़ैत गेल।
 एकहि भेटक विस्तृत अर्थमे
 भिन्न गवाही ठाम पबैत गेल।

सभ चाबी एक नहि

घरक गुच्छामे चाबी बहुत,
एकसँ कोठी, एकसँ द्वार।
हम कहलहुँ, सभ लोहाक बनल,
एके पर्याप्त, किएक एतेक भार?
पहिल ताला सहज खुलल,
दोसरपर हाथ अड़ि गेल।
समान धातुक मोह छूटल,
दाँतक सूक्ष्म भेद देखलहुँ।
जाँचक साधन जोड़ि सकैत छी,
कखनो एक दोसरमे समाय।
मुदा भिन्न काजक भिन्न आवश्यकता
जबरदस्ती मेटल नहि जाय।
हम गुच्छा फेरि सम्हारि लेलहुँ,
अनावश्यक बोझ हटौलहुँ।
जे आवश्यक छल तकर स्थान
साफ-साफ चिन्हि बचौलहुँ।

अपनहि प्रकाश

दीप जरल तँ देबाल देखलहुँ,
सङ्गे दीपक लौ देखलहुँ।
लौ देखबाक लेल दोसर दीप
हाथमे हम नहि अनलहुँ।
एक विचार मोनमे आयल,
तकर अयबक बोधो भेल।
बाहरक रूप प्रकाशित होइत
भीतरक जागरण व्यक्त भेल।
जँ हरेक उजासक पाछाँ फेर
एक नव उजास तकैत रहब,
राति बीति जायत खोजेमे,
देखल दिनकेँ कहिया धरब?
एहि क्षणक सचेत उजियारमे
जनब अपन उपस्थिति देलक।
वस्तु आ ओकर बोधक सङ्गे
बोधक प्रकाशो जागि रहल।

खुलल बैसार

चारि आसन एक आँगनमे,
 बीचमे प्रश्नक दीप जरल।
 एक स्वरक पाछाँ दोसर स्वर,
 असहमतियो आदर पेलक।
 केओ बोलक गाँठि खोललक,
 केओ बोलसँ पार तकलक।
 केओ जीवनक काज अनलक,
 केओ भीतरक शान्ति रखलक।
 नहि सभ पयर एक बाट चलल,
 नहि सभ नजरि एके देखलक।
 मुदा सुनबाक धीम उजासमे
 अपन-अपन सीम उधरल।
 बैसार उठल, प्रश्न बचल,
 बाँचल प्रश्नक रूप बदलल।
 हम सभ अपन घर दिस चललहुँ,
 सङ्गे दोसरक आवाज चलल।

प्रश्नकें खोलू

अहाँ पूछलहुँ, घर ई अछि की?
 हम चौखट दिस देखि रहलहुँ।
 अहाँक प्रश्नक भीतर कदाचित्
 दोसर अर्थक घर बसल छल।
 की देबालक नाम पूछैत छी,
 कि अपनपनक ठाम तकैत?
 की आश्रयक बात उठल अछि,
 कि स्मृतिक कोन खुलैत?
 एके प्रश्नक भिन्न खुलबासँ
 उत्तरक सभ बाट बदलल।
 पहिने प्रश्नक गाँठि खोलब,
 हम तखन एतेक ठानि लेलहुँ।
 बोलक पाछाँ विचार जागल,
 सोचक पाछाँ जीवन छल।
 दुआर चिन्हब आर भीतर पहुँचनाइ,
 दुनूक बीचक भेद खुलल।

धीरे सुलझल डोर

हमर मोनमे जाल पड़ल छल,
एकहि शब्दक अनेक छोर।
जे ठाम पर ओकर काज अलग छल,
हम बान्हि देने छलहुँ जोड़ि।
एक-एक प्रयोग उठौलहुँ,
दू जनक बीचक बात सुनलहुँ।
कतहु विनती, कतहु सूचना,
कतहु वचनक भार चिन्हलहुँ।
जालक पाछाँ दानव नहि छल,
उलझल जोड़ डरबैत छल।
ठीक ठामपर बोल रखिते
मोनक गाँठि ढीला भेल।
हम विशाल दावा नहि कयलहुँ,
छोट उलझन साफ कयलहुँ।
एक स्पष्ट बातक उजासमे
आगाँक पयर सहज भेल।

नाव आ किनार

हम नावक पटरा जँचलहुँ,
रस्सी, पाल, पतवार देखलहुँ।
ककरा ठामपर कओन कमी अछि,
एक-एक जोड़ सुधारि देलहुँ।
नाव सुरक्षित, जल शान्त छल,
मुदा यात्रा आरम्भ नहि भेल।
कओन किनारक चाह उठल छल,
ई प्रश्न एखनो अनकहल।
साधनक साफ पहिचान आवश्यक,
ओकर बिनु पयर डूबत।
मुदा केवल नाव निहारैत
पारक पियास कोना मेटत?
हम पतवार हाथमे लेलहुँ,
दूरक हरियरी दिस तकलहुँ।
बुझबाक काजक सङ्ग-सङ्ग
होयबाक गहिर यात्रा खोललहुँ।

अर्थक खुलल वन

बोलक वनमें बाट बहुत छल,
 एक विज्ञानक साफ सड़क।
 दोसर नेहक पातर पगडण्डी,
 तेसर भीतरक मौनक पथ।
 हम सभ बाटकेँ देखऽ चाहलहुँ,
 एके नापसँ नहि नपलहुँ।
 ककरा ठाम कओन अर्थ जगैत,
 ओहि जीवनमे उतरि तकलहुँ।
 न्यायक बोल कर्म बजबैत,
 श्रद्धाक बोल दिशा खोलैत।
 रूपक बोल मोन रंगैत,
 प्रश्नक बोल निन्न उघारैत।
 वनक विविधता बचल रहल,
 अर्थक अनुशासनो बचल।
 स्पष्टता आ आत्मखोजक बीच
 आब कोनो बन्द फाटक नहि छल।

बातक भरोस

एक यात्री खबर सुनौलक,
 दूरक गाममे पोखरि सुखायल।
 हम पूछलहुँ, के देखल अछि?
 कहिया धरती फाटल छल?
 बातक आशय बुझि रहलहुँ,
 सत्यक जाँच एखनो बाँकी।
 अर्थ आ भरोसक बीच
 खुलल रहल काजक दूरी।
 फेर ओ कहलक, गाम बचाउ,
 एहि स्वरक माँग अलग छल।
 तथ्यक सङ्ग मानवीय आग्रह
 हमर निर्णय लग पहुँचल।
 हम खबरक साँच जँचलहुँ,
 सङ्गे सहायता जुटौलहुँ।
 बात बुझब, बात परखब,
 बात निभायब—भेद चिन्हलहुँ।

जाँचक दुआर

अहाँ कहलहुँ, कुआँमे जल अछि,
हम डोरी नीचाँ छोड़लहुँ।
कहबक अर्थक सङ्ग-सङ्ग
जाँचक सम्भव बाट देखलहुँ।
बालटी खाली ऊपर आयल,
दावा सत्य नहि निकलल।
मुदा बुझल बातक अर्थ
ओहि असफलतासँ नहि मेटल।
जे कहल गेल तकर पक्ष-विपक्ष
कओन अनुभव देखबाओत?
एहि प्रश्नसँ धुन्ध हटैत अछि,
दावाक आकार स्पष्ट होइत।
हम किबाड़क कुण्डी छूलहुँ,
जाँचक लेल प्रवेश खुलल।
मानि लेबासँ पहिने जानलहुँ,
बात परखबाक ठाम कतय।

अर्थक बाँचल ठाम

हम बर्खाक कतेक चिन्ह जनैत छी,
अहाँ ओहिसँ बहुत अधिक।
तैयो बर्खाक बात करैत
दुनू एक-दोसरकेँ बुझैत छी।
ज्ञानक थाक भिन्न रहितहुँ
बोलक साझा ठाम बचैत।
नव परखक बाट खुललासँ
हरेक बेर अर्थ नहि बदलैत।
आइक जाँच अन्तिम नहि अछि,
काल्हि नव संकेत भेटत।
जे शब्द एखन काज करैत अछि,
ओ ताहिसँ निःस्वर नहि होयत।
हम दावाकेँ खुलल रखलहुँ,
अर्थकेँ धूमिल नहि कयलहुँ।
साँझक मेघक सङ्ग बातचीतमे
अज्ञातक ठामो बचौलहुँ।

सभ उजासक अपन दिशा

आँखि कहलक, तारा चमकैत,
 यन्त्र तकर दूरी बतौलक।
 मोन कहलक, केओ एकल अछि,
 हाथ लग बैसबाक बाट तकलक।
 दूरी नापबाक नीक कसौटी
 एकान्तक मान कोना नापत?
 नेहक आग्रह, उचितक चाह
 अलग ढङ्गसँ जीवन छुबैत।
 हम जाँचक दीप सम्हारि रखलहुँ,
 ओकर उजास बहुत जरूरी।
 मुदा सभ आवाज बुझबाक लेल
 सभ खिड़की खुलल राखलहुँ।
 तारा अपन ठाम चमकैत रहल,
 लगक मनुष्य एकल नहि रहल।
 ज्ञानक सङ्ग करुणा जागल,
 रातिमे सम्पूर्ण आँगन खुलल।

खण्ड ५

भाषा

भाषा जे भीतर घर करैत अछि

देशक देह पर खिंचल रेखा बदलि सकैत अछि,
 राजचिह्न बदलि सकैत अछि,
 सिंहासनक भाषा बदलि सकैत अछि—
 मुदा मनुष्यक भीतर बसल भाषा पीढ़ी-पिढ़ीक निःशब्द स्मृति होइत अछि।
 ओ भाषा जाहिमे बच्चा पहिल बेर माटिक गन्धक नाम सीखैत अछि,
 जाहिमे दादीक कथा रातिक अन्हार काटैत अछि,
 जाहिमे खेतिहर आकाश दिस तकैत बरखा लेल प्रार्थना करैत अछि—
 ओहि भाषामे प्रश्न किएक नहि जन्मत?
 ओहि भाषामे दर्शन किएक नहि फुलत?
 विचार कोनो दरबारक दास नहि, ओ बीआ जकाँ अछि—
 जाहि माटिमे रोपल जाए,
 ओहि माटिक रस पीबि अपन रूप धरैत अछि।
 भारतीय मनक बीआ भारतीय भाषासभक खेतमे नव अंकुर खोजैत अछि।
 संस्कृतक प्राचीन घंटा,
 पालीक शान्त पदचाप,
 प्राकृतक सहज हँसी,
 तमिलक समुद्री गन्ध,
 बाङ्लाक गीत, मराठीक तेज,
 कन्नड़क गम्भीर स्वर, तेलुगुक लय,
 मलयालमक हरियर छाँह, पञ्जाबी,
 असमिया, ओड़िआ, गुजराती, हिन्दी, मैथिली—
 सभ मिलि भारतक चेतनाक करघा चलबैत अछि।
 एक सूत काटि देब करघा केँ गरीब बनौनाइ अछि;
 एक रंग केँ राज देब चित्र केँ छोट करौनाइ अछि।
 औचित्य एतबे नहि जे भाषा जीवित रहय,
 औचित्य ई जे भाषा सोचय,
 प्रश्न करय,
 असहमति जनाबय,
 तर्क गढ़य,
 आ नव ज्ञानक भार उठा सकय।
 विश्वक ज्ञानक संग भेट हो—
 खुलल माथसँ, खुलल हृदयसँ;
 मुदा भेटक पाछाँ अपन घरक दीया निबाहि नहि देब।

दूर देशक उजास अपन आँगनक अन्हार मेटाबय,
आ अपन आँगनक दीप दूर धरि देखाइ—
एहि आदान-प्रदानमे ज्ञानक प्रतिष्ठा अछि।
जखन विज्ञान अपन शब्द गढ़त,
इतिहास अपन प्रश्न पूछत,
न्यायशास्त्र अपन तर्क सँभारत,
दर्शन अपन सूक्ष्म भेद खोलत,
आ कविता मनक अबोली पीड़ा कहल करैत—
तखन भाषा केवल बोली नहि रहत,
ओ सभ्यताक कार्यशाला बनत।
स्वाधीनता तखन पूर्ण होएत
जखन सोचबाक अधिकारो स्वाधीन होएत;
जखन कोनो विद्यार्थी अपन मातृभाषामे कठिनतम प्रश्न पूछैत लजाइत नहि;
जखन विद्वान अपन लोकक शब्दमे नव सिद्धान्त रचैत छोट अनुभव नहि करैत।
भारतक भाषासभ संग्रहालयक वस्तु नहि—
ई जीवित औजार अछि,
जेकरा सँ भविष्य तराशल जा सकैत अछि।
ओकरा पूजा नहि, प्रयोग चाही;
ओकरा स्मारक नहि, सृजन चाही।
आ जखन प्रत्येक भाषा अपन लोकक
बुद्धि, अनुभव आ स्वप्न
नव शब्दमे सँजोएत,
तखन भारतक विचार एक स्वर नहि,
बहुस्वरक उज्जर सभागार होएत—
जतय भिन्नता बाधा नहि,
ज्ञानक विस्तार होएत।

मैथिलीक नव खेत

उन्नयनक अर्थ केवल ऊँच मंच पर नाम लिखब नहि,
नहि दोसर स्वर केँ दबा अपन स्वर पैघ करब;
उन्नयन तखन होइत अछि जखन भाषा लोकक काजमे उतरैत अछि।
मैथिली यदि बढ़य,
तँ ओकर बढ़नाइ खेतक हरियरपन जकाँ हो—
जतय नव बीआ लेल ठाम हो,
पुरान बीआक स्मृति सेहो बचल रहय,

आ पड़ोसी खेतसँ आबि रहल हवा पराग लऽ कऽ नव फल बाँधय।
 शब्द केवल कोशमे नहि जीबैत अछि;
 ओ न्यायालयमे अर्थ खोजैत अछि,
 प्रयोगशालामे नाम पबैत अछि,
 विद्यालयमे प्रश्न बनैत अछि,
 कारखानामे निर्देश,
 अस्पतालमे भरोसा,
 समाचारमे तर्क,
 उपन्यासमे मनुष्यक भीतरी अन्हार।
 तँ भाषा बढेबाक पहिल उपाय
 ओकरा जीवनक कठिन काज देब अछि।
 सरल बातक संग जटिल विचारो
 ओहीमे कहल जाए;
 विज्ञान, अर्थशास्त्र, दर्शन, इतिहास, प्रौद्योगिकी, समाज-विमर्श—
 सभ अपन-अपन शब्द ओकर हथेली पर राखय।
 जतय शब्द नहि भेटय, नव शब्द रचू;
 जतय दोसर भाषामे सुन्दर शब्द भेटय,
 सम्मानसँ ग्रहण करू;
 जतय पुरान शब्दमे नव अर्थ फूटि सकय,
 ओकरा फेर जगाउ।
 भाषाक समृद्धि दरवाजा बन्द करबासँ नहि,
 आवाजाही सँ होइत अछि।
 अनुवादक हाथ एक किनारसँ दोसर किनार धरि
 ज्ञानक नाव खेने जाए;
 मूलक मर्यादा बचल रहय,
 गन्तव्यक भाषा सेहो अपन साँस पाबय।
 एहि बीच केवल शब्द नहि,
 विचारक चलन बदलैत अछि।
 मैथिलीक सम्भावना ओकर पाठकक संख्या मात्र नहि;
 ओकर सम्भावना ई अछि जे एक विद्यार्थी
 जटिल अवधारणा बुझि अपन ढङ्गसँ ओकर आलोचना करय;
 एक शोधकर्ता अपन निष्कर्ष बिनु झिझक ओही भाषामे दर्ज करय;
 एक कवि नव संवेदना लेल नव लय गढ़य।
 आ ई बढनाइ मैथिली, बाङ्ला, मराठी, तमिल,
 उर्दू, कन्नड़, तेलुगु, असमिया वा कोनो भाषाक घटाव नहि;

साँच उन्नयन पड़ोसीक दीप निबा अपन दीया तेज करब नहि जानैत।

ओ उजास बाँटैत अछि।

जखन भाषासभ एक-दोसरसँ सीखत,

शब्द, रूपक, अनुभव, चिन्तन

आपसमे यात्राक बाट बनौत,

तखन मैथिली सेहो समृद्ध होएत आ भारतक बहुभाषी आत्मा सेहो।

उन्नयनक अन्तिम कसौटी सम्मान अछि—

लोकक बोलीक सम्मान, ज्ञानक जटिलताक सम्मान,

अनुवादक श्रमक सम्मान, आ असहमतिक अधिकारक सम्मान।

भाषा जखन आदेश नहि, अभिव्यक्तिक अवसर बनैत अछि,

तखने ओकर भविष्य पैघ होइत अछि।

मैथिलीक नव खेत एहि आशामे हरियर हो—

जे शब्दक प्रत्येक बालि मनुष्य केँ अधिक बुझनिहार,

अधिक प्रश्नशील, आ अधिक उदार बनाबय।

विचार जखन अपन बोली पबैत अछि

विचारक यात्रा केवल पोथीक जिल्द बदलनाइ नहि;

ओ एक युगसँ दोसर युग धरि मनुष्यक प्रश्न केँ जीवित राखबाक कला अछि।

कखनो ओ सूत्रमे रहल, कखनो भाष्यमे, कखनो मठक निस्तब्ध आँगनमे, कखनो पथिकक गीतमे, कखनो साधुक उलटबाँसीमे, कखनो

लोकक सहज कथामे— आ फेर एक दिन नव पाठकक भाषा खोजैत मैथिलीक दुआरि पर आयल।

एतय ओकर संग आयल न्यायक तीक्ष्ण प्रश्न, वेदान्तक अथाह आकाश, जैन चिन्तनक संयमित पग, बौद्ध करुणाक निर्मल दृष्टि, नाथ

परम्पराक देह-अनुशासन, सन्तक निर्भीक आत्मस्वर, भक्तिक प्रेम, सूफीक भीतर दिस खुलैत बाट— अलग-अलग धार एकहि समयक नदीमे

उतरि पड़ल।

दर्शन तखन केवल राजधानीक विद्वानक कठिन उच्चारण नहि रहल; ओ पूछलक— हम के छी? दुखक जड़ि कतय अछि? ज्ञानक भरोसा कोन

आधार पर? ईश्वर, जगत, आत्मा, देह, समाज— एहि सभक बीच मनुष्यक ठाम कतय?

भाषा बदलल तँ प्रश्नक गरिमा नहि घटल; उलटे प्रश्न नव कान पाबि नव घरमे प्रवेश कएलक। जाहि बातक चौखट धरि पहुँच सीमित छल, ओ

सार्वजनिक बाट पर चलय लागल।

गुरुक वाणी, शिष्यक स्मृति, लोकक कथा, सम्प्रदायक अनुशासन, कविक अनुभूति— सभ अपन-अपन ढङ्गसँ एकटा पैघ प्रश्नक चारु कात

दीप जरबैत रहल।

मुदा समय केवल परम्परा सँ नहि चलैत; नव युग अपन नाप लऽ कऽ अबैत अछि। औपनिवेशिक अन्हारक पाछाँ स्वदेशक खोज उठल,

स्वराजक संग आत्मराजक प्रश्न उठल, नैतिकता राजनीति सँ भेटल, समाज न्यायक कठघरामे ठाढ़ भेल, आ अर्थव्यवस्था मनुष्यक गरिमा सँ

प्रश्न पुछलक।

गाँधीवादी सोचक चरखा केवल सूत नहि कातैत रहल— ओ साधन आ साध्यक बीच नैतिक डोरि खोजैत रहल। समाजवादी स्वर रोटी, श्रम

आ समानताक प्रश्न उठबैत रहल; वैज्ञानिक दृष्टि विश्वास केँ परीक्षणक उजासमे आनलक; नव मानवतावाद व्यक्ति आ समाजक बीच नव

अनुबन्ध लिखबाक प्रयत्न करैत रहल।

पश्चिमसँ विचार आयल— तर्कक नयका औजार, इतिहास पढ़बाक नयका ढङ्ग, मन, भाषा, समाज आ ज्ञान पर नव-नव प्रश्न; मुदा ग्रहणक अर्थ प्रतिलिपि बनब नहि छल। साँच विकास तखन भेल जखन बाहरक प्रश्न अपन अनुभवक माटि छूड़लक।

अनुवाद आवश्यक छल— जाहिसँ दूरक पुस्तक नजदीक अबय, नव पारिभाषिक शब्द जन्म लय, विद्यार्थी विचारक इतिहास बुझय; मुदा अनुवादक पाछाँ सेहो एक खाली पन्ना बचल रहल— जाहि पर अपन प्रश्न अपन तर्क अपन असहमति आ अपन सिद्धान्त लिखबाक छल। विश्वविद्यालय जखन केवल परीक्षा लेल उत्तर नहि, प्रश्न जन्मेबाक साहस सिखबैत अछि; शोध जखन केवल पुरान मत गिनबैत नहि, ओकर सीमा जाँचैत अछि; तखन भाषा सचमुच दार्शनिक माध्यम बनैत अछि।

पाठ्यपुस्तक बाट खोलैत अछि, शब्दकोश औजार दैत अछि, अनुवाद पुल बनबैत अछि, इतिहास दिशा देखबैत अछि— मुदा नव दर्शन तखन जन्मैत अछि जखन कोनो मन आगू सँ देल उत्तर पर सन्तुष्ट नहि होइत।

मैथिलीक विकास एहि अर्थमें संख्या नहि, एक बौद्धिक उत्तरदायित्व अछि— एहन गद्य रचब जे सूक्ष्म भेद सँभारि सकय; एहन शब्द गढ़ब जे तर्कक भार सहि सकय; एहन वाक्य बनाबय जाहिमें अनुभव आ अवधारणा दूनू एक-दोसरसँ संवाद करय।

आ यदि ई भाषा नाथक गुहा सँ लऽ कऽ जैन आगमक अनुशासन, सन्तक निर्भीकता, भक्तिक करुणा, आधुनिक सामाजिक संघर्ष, विश्वविद्यालयक शोध आ भविष्यक अनदेखल प्रश्न धरि एक निरन्तर संवाद बना सकय— तँ ओकरा पैघ कहबाक कारण ओकर बोलनिहारक गिनती नहि, ओकर विचार-सहनशीलता होएत।

भाषा तखन महान होइत अछि जखन ओ उत्तरक भारसँ बेसी प्रश्नक स्वतन्त्रता सँभारैत अछि; जखन परम्परा केँ प्रणाम करैत ओकरा जाँचबाक साहस राखैत अछि; जखन बाहरक ज्ञान स्वीकारैत अपन आँखि बन्द नहि करैत अछि; आ जखन नव पीढ़ी केँ कहैत अछि— “एतय धरि बाट बनल अछि, आगाँक बाट अहाँ स्वयं बनाउ।”

पुरान अक्षरमे नव प्रश्न

किछु भाषा समयक धूलिमें केवल शिलालेख बनि नहि रहैत; ओ अपन पुरान देहमें नव प्रश्नक रक्त बहबैत रहैत अछि।

संस्कृत एहनहि एक दीर्घ श्वास— जाहिमें सूत्रक संकोच अछि, भाष्यक विस्तार अछि, वादक तीक्ष्णता अछि, आ मौनक भीतर सुनाइ पड़ैत अनगिनत जिज्ञासाक पदचाप।

स्वाधीन देशक प्रभातमें प्रश्न ई नहि छल जे पुरान पोथी कतय राखी; प्रश्न ई छल— ओहि पोथीक आँखि सँ नव दिन केँ कोना देखी?

प्रमाण फेर उठलक— हम जे जानैत छी से सचमुच कोना जानैत छी? प्रत्यक्षक उजास कतय धरि? अनुमानक सेतु कतेक मजबूत? शब्दक भरोसा कोन ठाम टिकैत? अभावो ज्ञानक विषय बनि सकैत अछि?

पुरान प्रश्न नहि छल ई सभ; मुदा प्रत्येक पीढ़ी ओकरा अपन अनुभवक अग्निमें फेर तपबैत अछि। सत्य यदि जीवित अछि तँ ओकर परीक्षा सेहो जीवित रहत।

तत्त्वक आँगनमें सेहो पुरान नाम नव छाया लऽ कऽ आयल— आत्मा, जगत, कारण, कार्य, चेतना, ईश्वर, मुक्ति, समय; सभ शब्द पूछय लागल “हमरा केवल स्मरण करब? कि फेर सँ बुझबो?”

न्याय कहलक— विचारक पग गिन्नु, कुन ठाम छलाँग भेल से देखू; वेदान्त कहलक— सीमित आँखिक पारो एकटा गहिर प्रश्न अछि; सांख्य प्रकृति आ पुरुषक दूरी नापलक, योग भीतरक चञ्चलता केँ अनुशासनक आसन देलक।

मुदा नव युग केवल पुरान उत्तर सुनबाक लेल नहि आयल छल। ओ विज्ञानक प्रयोगशाला सँ इतिहासक दस्तावेज सँ, समाजक असमानता सँ, व्यक्तिक स्वतन्त्रता सँ, राजनीतिक संघर्ष सँ नव प्रश्न लऽ कऽ आयल।

तखन संस्कृतक असली परीक्षा भेल— की ओ केवल अतीतक दरबार अछि, कि वर्तमानक चौकमें सेहो अपन आसन बिछा सकैत अछि?

जे विद्वान पुरान शब्दमें नव अर्थक खिड़की खोललक, ओ भाषा केँ बचेलक नहि मात्र— ओ विचारक एकटा बाट बचेलक। जे परम्परा केँ प्रश्न कएलक, ओ ओकर अपमान नहि कएलक; ओ ओकरा जीवित मानलक।

जीवित परम्परा स्पर्शसँ टूटैत नहि; ओ प्रश्नसँ चमकैत अछि। मृत वस्तु केँ काँचक पेटी चाही, जीवित विचार केँ संवाद।

एहि संवादमे कखनो नव्य-न्यायक सूक्ष्म भाषा एक विचारक रेखा केँ बाल बराबर महीन बनबैत अछि; कखनो भाष्यकार पुरान मतक भीतर छुपल अन्तर नव आँखिसँ देखैत अछि; कखनो कवि-दर्शनिक तर्क आ अनुभूति केँ एकहि श्लोकक छाँहमे बैसाबैत अछि।

संस्कृतक सामर्थ्य केवल ओकर प्राचीनता नहि; ओकर सामर्थ्य ई जे शब्दक बनावटमे सूक्ष्म भेद लेल ठाम अछि, तर्कक गाँठ खोलबाक औजार अछि, आ नयका अर्थ गढ़बाक पुरान मुदा लचीला करघा अछि।

मुदा कोनो भाषा अपन महिमा मात्र सँ भविष्य नहि बनबैत। ओकरा पाठक चाही, प्रश्नकर्ता चाही, असहमत होएबाक साहस चाही, आ एहन लेखक चाही जे परम्पराक समक्ष हाथ जोड़ि कऽ सेहो आँखि झुका कऽ नहि लिखय।

नव दर्शन तखन जन्मैत अछि जखन उत्तराधिकार उत्तरदायित्व बनैत अछि; जखन शास्त्र शास्त्रार्थ बनैत अछि; जखन आदर जिज्ञासा केँ रोकैत नहि अपितु ओकरा गहिर करैत अछि।

संस्कृत यदि आइयो बोलय तँ ओकर स्वर केवल “एना कहल गेल” नहि हो; ओ कहय— “एना सोचल गेल छल, आब अहाँ सोचू ई विचार एखन कतय ठाढ़ अछि।”

एहि एक वाक्यमे अतीत आ वर्तमानक बीच साँच पुल बनैत अछि। एक दिस शताब्दीक स्मृति, दोसर दिस अजन्मा सम्भावना; बीचमे मनुष्य— प्रश्न करैत, उत्तर जाँचैत, आ फेर नव प्रश्न रचैत।

भाषाक दीर्घायु वर्ष गिनलासँ नहि मापल जाए; ई मापल जाए ओ कतेक नव विचार अपन भीतर जन्म देलक।

तँ पुरान अक्षरक सम्मान ओकरा मौन करब नहि; ओकरा आइक अग्नि लग पहुँचाउ, जाहिसँ जे टिकय से आरो उज्जर हो, जे टूटय से नव रूप लेल ठाम छोड़य, आ जे अजन्मा अछि से शब्द पाबि सकय।

तखने संस्कृत स्मृतिक विशाल गृहसँ निकलि भविष्यक कार्यशाला बनत— जतय प्रत्येक पुरान सूत्रक लग एकटा खाली पन्ना राखल रहत नव पीढ़ीक प्रश्न लेल।

जड़िसँ क्षितिज धरि

एकटा बरगद केँ केवल ओकर छालि देखिकऽ पुरान नहि कहल जा सकैत अछि; ओकर भीतर रस चलैत रहैत अछि, जड़ि अन्हारमे धरती पढ़ैत अछि, डारि आकाशक नव समाचार सुनैत अछि।

भारतीय दर्शन सेहो एहनहि एकटा बहुशाखी वृक्ष— कतहु प्रश्नक कठोर काँट, कतहु करुणाक कोमल पात, कतहु तर्कक उज्जर फूल, कतहु मौनक गहिर फल।

एतय एकटा बाट नहि, अनेक पगडण्डी अछि; एक-दोसरासँ असहमति करैत, एक-दोसराक प्रश्न तीक्ष्ण करैत, कहियो काटैत, कहियो जोड़ैत, विचार आगाँ बढ़ल अछि।

जे केवल प्रशंसा करैत अछि, ओ इतिहासक आधा पन्ना पढ़ैत अछि; जे केवल उपहास करैत अछि, ओहो आधा पन्ना पढ़ैत अछि। सम्पूर्ण पन्ना तखने खुलैत अछि जखन श्रद्धा आ संशय एकहि मेज पर बैसैत अछि।

पुरान ग्रन्थ देवघरमे बन्द दीप नहि; ओ प्रश्नक भट्ठी अछि। ओतय मत बनल, मत टूटल, प्रतिमत उठल, आ फेर नव उत्तरक धातु गलल।

ज्ञान केवल कतेक सूत्र याद अछि एतबहि नहि; ज्ञान ओ क्षण अछि जखन सूत्रक पाछाँ जीवित समस्या देखाइ पड़ैत अछि, आ हम पूछैत छी— “एहि उत्तरक सीमा कतय अछि?”

कियो जगत केँ क्षण-क्षण बदलैत देखलक, कियो स्थायित्व खोजलक; कियो आत्माक दीप बचेलक, कियो ‘आत्मा’ शब्द पर प्रश्न उठेलक; कियो ईश्वरक बाट पकड़लक, कियो प्रमाण माँगलक; कियो मुक्ति कहल, कियो न्याय, कियो करुणा, कियो लोककल्याण।

एहि असहमतिक भीड़मे एकटा गुप्त अनुशासन अछि— बिनु कारण नहि मानब, बिनु सुनने नहि नकारब, आ बिनु प्रश्नक परम्पराक नामो नहि लेब।

मुदा समय बदलल। नव विद्यालय खुलल, नव भाषा पाठशालामे आयल, दूर देशक पुस्तक नव खिड़की खोललक; तखन अपन घरक कोठरी सेहो नव आँखिसँ देखबाक आवश्यकता भेल।

कतेक लोक अपन विरासत केँ केवल पूजा-पात्र बनौलनि; कतेक लोक ओकरा धूलि बुझि झाड़ि देलनि। दुनू अतिशयक बीच विचारक असली घर बहुत बेर सून्न पड़ल।

आब आवश्यकता अछि— ग्रन्थ खोलू, मुदा आँखि सेहो खोलू; परम्परा पढ़ू, मुदा वर्तमानक धड़कन सुनू; विदेशी सिद्धान्त सीखू, मुदा अपन प्रश्नक नाम अपनहि भाषामे राखू।

कतेक पुरान प्रश्न आइयो नव अछि— मनुष्य के? चेतना की? दुःखक मूल कतय? सत्यक कसौटी की? न्याय केवल विधान अछि कि जीवनक संतुलन? स्वतन्त्रता केवल अधिकार कि उत्तरदायित्व सेहो?

आ कतेक नव प्रश्न पुरान शब्दक द्वार खटखटा रहल अछि— यन्त्रक बुद्धि, विज्ञानक सीमा, पर्यावरणक पीड़ा, असमानताक नव रूप, पहिचानक संघर्ष, विश्वग्रामक एकान्त।

भविष्य पुरान उत्तरक प्रतिलिपि नहि; भविष्य तऽ पुरान प्रश्नक भीतर नव अनुभवक प्रकाश देब अछि।

एकटा पण्डित मूल पाठक महीन भेद जानैत छथि, एकटा आधुनिक अध्येता नव पद्धतिक औजार; दुनू जँ अलग-अलग कोठरीमे रहताह, तँ ज्ञानक घर अधूरा रहत। संवादक दुआर खोलू— एक-दोसराक भाषा सीखू, एक-दोसराक शंका सुनू।

अनुवाद केवल शब्द बदलनाइ नहि, ओ दू किनाराक बीच पुलक पहिल शिला अछि। मूलक सुगन्ध बचल रहय, नव पाठकक श्वासो चलय— एहि बीचक संतुलनमे नव परम्परा जन्म लैत अछि।

विश्वविद्यालय यदि केवल परीक्षा-पत्र बनत, तँ दर्शनक श्वास छोट भऽ जाएत; कक्षा यदि प्रश्नशाला बनत, तँ विद्यार्थी इतिहासक दर्शक नहि, विचारक सहभागी बनत।

हमरा एहन पीढ़ी चाही जे शास्त्रक पृष्ठ पलटि सकय आ वर्तमानक समाचारो पढ़ि सकय; जे प्राचीन शब्दक अर्थ बूझय आ नव समस्याक भाषा गढ़य; जे पश्चिमसँ संवाद करय मुदा अपन स्वर नहि गुमाबय।

तुलना करब हार-जीतक खेल नहि; एक दर्शन केँ दोसरक तराजूमे छोट-बड़ करब नहि। तुलना तऽ दू दीप केँ लग राखि दुनूक प्रकाशक सीमा आ सम्भावना देखब अछि।

भविष्यक भारतीय दर्शन न बंद संग्रहालय हो, न नकलक बाजार; ओ जीवित कार्यशाला हो जतय स्मृति औजार बनय, तर्क हथौड़ा, अनुभव धातु, करुणा ताप, आ प्रश्न कारीगरक हाथ।

जड़ि केँ काटि वृक्ष ऊँच नहि होइत अछि; केवल जड़िमे समाइ वृक्ष आकाशो नहि छूबैत अछि। जड़ि धरती पकड़य, डारि दिशा खोजय— एहि दुनूक मिलनमे जीवनक ऊँचाइ अछि।

तँ पाछाँ देखू, मुदा लौटबाक लेल नहि; आगाँ देखू, मुदा भागबाक लेल नहि। जे भऽ चुकल ओकर अर्थ बूझू, जे भऽ रहल अछि ओकर नाड़ी छूऊ, जे होएत ओकर लेल प्रश्न तैयार करू।

भारतीय दर्शनक भविष्य कोनो तैयार भविष्यवाणी नहि; ओ प्रत्येक जागल मस्तिष्कमे धीरे-धीरे बनैत नक्शा अछि। जाहि दिन परम्परा भय नहि, साहस देत; आधुनिकता विस्मृति नहि, विस्तार देत; ताहि दिन पुरान वृक्षक डारि पर नव पात फुटत।

आ ओ पात केवल अतीतक हरियर स्मृति नहि होएत— ओ भविष्यक हवा केँ पहिल बेर अपन नामसँ पुकारत।

स्वराजक भीतर विचारक स्वराज

पन्द्रह अगस्तक भोर केवल ध्वजक रंग नहि बदललक, एकटा देश अपनहि नामसँ भविष्य लिखबाक अधिकार पेलक।

मुदा स्वतन्त्रता दरबज्जा खोलि दैत अछि, बाट अपने नहि चलैत; राजनीतिक बेड़ी टूटलाक पाछाँ मनक पुरान बेड़ी आर स्पष्ट देखाइ पड़ैत अछि।

एहि नव भोरमे दार्शनिकक आगाँ प्रश्न छल— आब विचार केवल पुरान पोथीक चौखट पर बैसत, कि सड़क पर निकलि नव राष्ट्रक धूलि पहचानत?

वेदक स्वर, उपनिषदक मौन, बौद्ध करुणा, जैन संयम, न्यायक तर्क, मीमांसाक अनुशासन, वेदान्तक गहिराइ— सभ पाछाँ छल, जड़िक रूपमे, स्मृतिक रूपमे, बहसक दीर्घ परम्पराक रूपमे।

मुदा आगाँ नव गणराज्य छल— भूख छल, विभाजनक घाव छल, लोकतन्त्रक पहिल अभ्यास छल, विज्ञानक तेज चालि छल, कारखाना, बाँध, विश्वविद्यालय, नव कानून, नव आकांक्षा, आ करोड़ों आँखिक प्रश्न।

दर्शन जँ केवल मोक्षक दूर आकाश देखत, तँ धरती पर पड़ल मनुष्यक छाया के देखत?

जँ केवल आत्मा पूछत, देहक भूख नहि, जँ केवल ब्रह्म पूछत, अन्यायक भार नहि, तँ स्वतन्त्र देशमे ओकर स्वतन्त्रता अधूरी रहत।

पहिल पच्चीस बरख एकटा प्रयोगशाला छल— कागज पर संविधान, मनमे परम्परा, कक्षा मे पश्चिमक नव सिद्धान्त, गाममे सदियाक अनुभव, आ बीचमे भारतीय मस्तिष्क अपन संतुलन खोजैत।

कियो पुरान ग्रन्थ दिस घुरल, कियो यूरोपक नव विचार दिस; कियो दुनू केँ एक-दोसराक आइना बनौलक, कियो दुनू सँ असहमति कऽ तेसर बाट खोजलक।

अस्तित्वक व्यथा, भाषाक विश्लेषण, अनुभवक प्रमाण, विज्ञानक कसौटी, समाजक संरचना— नव शब्द विश्वविद्यालयक गलियारेमे धीरे-धीरे गूँजब लगल।

मुदा भारतक प्रश्न अनुवादित प्रश्न मात्र नहि छल। एतय सत्याग्रहक स्मृति छल, अहिंसाक कठिन साधना, सर्वोदयक स्वप्न, ग्रामक प्रश्न, श्रमक गरिमा, समानताक अधूरा वचन।

गाँधी केवल इतिहासक चित्र नहि, एकटा नैतिक कसौटी बनि नव राज्यक समक्ष ठाढ़ छल— सत्ता बढ़लाक संग मनुष्य छोट तऽ नहि भऽ रहल? विकासक रथ सभकेँ संग लऽ चलैत अछि कि नहि?

विनोबाक पदचाप भूमिक प्रश्न पूछैत छल, दानक अर्थ सँ आगाँ स्वामित्वक आत्मा टटोलैत; लोकनायकक स्वर जनताक सहभागिता आ नैतिक राजनीतिलोक फेर सँ पुकारैत।

एहि बीच दार्शनिक पुस्तक लिखल गेल, व्याख्या भेल, अनुवाद भेल, शोधक नव केन्द्र बनल; मुदा हरेक पुस्तकक पाछाँ एकटा कठोर प्रश्न बचल रहल— की हम अपन समय केँ पर्याप्त गम्भीरतासँ पढ़ि रहल छी?

बहुत बेर हम पुरान गौरवक उज्जर वस्त्र पहिरलहुँ, मुदा वर्तमानक धूलि ओहि पर देखबाक साहस कम कएलहुँ।

बहुत बेर विदेशी सिद्धान्तक चमकदार चश्मा लगौलहुँ, मुदा अपन गामक चेहरा ओहि चश्मामे कतेक साफ देखाइत अछि, से नहि पूछलहुँ।

ज्ञानक स्वराज केवल ई नहि जे पुस्तक अपन भाषामे हो; ज्ञानक स्वराज तखन जखन प्रश्नो अपन हो, उदाहरण अपन जीवनसँ उठय, आ उत्तर बाहरसँ आयल प्रकाश केँ अपन अनुभवक आगिमे जाँचय।

विश्वविद्यालयक कक्षा नव भारतक छोट संसद छल— ओतय शास्त्र आ आधुनिकता भेटैत छल; छात्र पूछैत छल— प्रमाण की? व्यक्ति की? समाज की? धर्मक सीमा कतय? राज्यक नैतिकता की? स्वतन्त्रता आ समानता एकहि बाट केना चलत?

शिक्षकक जिम्मेदारी केवल मतक सूची नहि, प्रश्नक संस्कार देब छल। किएक तँ दर्शन याद कएल उत्तरसँ नहि, ठीक ढङ्गसँ पूछल प्रश्नसँ जीवित रहैत अछि।

पहिल पच्चीस बरखमे बहुत पुल बनल— संस्कृत सँ आधुनिक भाषाधरि, भारत सँ पश्चिमधरि, शास्त्र सँ समाजधरि, आध्यात्मिकता सँ राजनीति धरि।

किछु पुल मजबूत छल, किछु आधा बनल, किछु नदीक बीचमे रुकल; मुदा पार उतरबाक इच्छा इतिहासमे दर्ज भऽ गेल।

ई समय न पूर्ण विजय छल, न निष्फल प्रतीक्षा; ई बीज रोपबाक काल छल, जाहिमे किछु बीज अंकुरायल, किछु माटिक भीतर अगिला वर्षाक प्रतीक्षा करैत रहल।

दार्शनिक चिन्तनक आगाँ सभसँ कठिन पाठ स्वतन्त्रताक छल— स्वतन्त्र होएब अर्थ केवल पुरान मालिक केँ विदा करब नहि, अपन निर्णयक भार अपन कंधा पर लेब सेहो।

तँ विचार केँ राजनीतिक घोषणाक पिछलग्गू नहि बनबाक छल, आ न एहन मीनार जतय सँ जनजीवन धुँधला देखाइ।

ओकरा चाही छल सड़कक धूलि, प्रयोगशालाक प्रश्न, किसानक हाथ, मजदूरक पसीना, स्त्रीक आवाज, दलितक अपमान, युवाक बेचैनी, आ साधकक मौन— सभसँ संवाद।

किएक तँ सत्य एकहि दरबज्जासँ घरमे प्रवेश नहि करैत; कखनो तर्क बनि अबैत, कखनो करुणा, कखनो प्रतिरोध, कखनो आत्मपरीक्षण। पच्चीस बरखक अन्तमे देश अपन दर्पण देखलक— किछु उपलब्धि, किछु अधूरापन, किछु उधारक भाषा, किछु अपन स्वर, किछु गहिर शोध, किछु सतही अनुकरण।

मुदा दर्पणक काज चेहरा सुन्दर कहब नहि, चेहरा साफ देखाएब अछि।

एहि लेल ओहि कालक असली देन केवल पुस्तकक संख्या नहि, अपितु ई जागरूकता छल जे भारतीय दर्शन भूतकालक वस्तु नहि, वर्तमानक जिम्मेदारी अछि।

अतीत हमरा पीठ दैत अछि, मुदा दिशा नहि; दिशा चुनबाक काज वर्तमानक विवेक करैत अछि।

आ भविष्य? ओ पच्चीस बरखक पाछाँ दरबज्जा पर ठाढ़ अगिला पीढ़ी छल, हाथमे प्रश्न, आँखिमे संदेह, हृदयमे आशा।

ओ पीढ़ी केँ कहल जा सकैत छल— परम्परा सँ प्रेम करू, मुदा प्रश्न छोड़ू नहि; आधुनिकता सँ सीखू, मुदा आत्मसमर्पण करू नहि; विश्वसँ संवाद करू, मुदा अपन अनुभव केँ मूक बनाउ नहि।

स्वराजक पहिल अध्याय राजनीतिमे लिखल गेल; दोसर अध्याय विचारमे लिखबाक छल।

आ ई लेखन आइयो सम्पूर्ण नहि भेल— हरेक पीढ़ी केँ अपन समयक प्रश्न अपन विवेकसँ लिखबाक अछि, जाहिसँ स्वतन्त्रता केवल इतिहासक तिथि नहि, चेतनाक निरन्तर अभ्यास बनल रहय।

अपन धरती, खुलल आकाश

स्वतन्त्रताक पाछाँ देशक समक्ष केवल सीमा नहि, विचारक दिशासूचक सेहो छल— कतय सँ चलब, ककरा संग चलब, आ चलैत-चलैत अपन चेहरा केना बचाएब?

पुरान पोथीसभ पीठ पाछाँ दीप जकाँ जरैत छल, मुदा आगाँक बाट ओही ज्योतिक हू-ब-हू नकल नहि छल। नव समय नव प्रश्नक दरबज्जा खोलि चुकल छल।

एक दिस धर्म, आत्मा, मोक्ष, ब्रह्म, कर्म, पुनर्जन्मक दीर्घ परम्परा; दोसर दिस विज्ञान, लोकतन्त्र, उद्योग, व्यक्ति-अधिकार, सामाजिक न्याय, आ विश्वक बदलैत चिन्तन।

बीचमे ठाढ़ छल भारतीय दार्शनिक मन— ना अतीत छोड़ि सकैत, ना वर्तमान टारि सकैत।

किछु लोक कहलनि— अपन मूल दिस घुरू; किछु कहलनि— नव विश्वक भाषा सीखू; मुदा प्रश्न ई नहि छल जे एकटा चुनू, दोसर छोड़ू। प्रश्न छल— दुनू केँ सुनि अपन निर्णय कोना गढ़ू?

दर्शनक पहिचान पोथीक जिल्दसँ नहि बनैत अछि। ओ बनैत अछि जखन प्रश्न जीवनक नस छू लैत अछि।

यदि भूख अछि, तँ नैतिकता ओकरा देखय; यदि अन्याय अछि, तँ न्याय-दर्शन ओकरा सुनय; यदि विज्ञान नब शक्ति देत अछि, तँ विवेक पूछय— ई शक्ति मनुष्यक हितमे कतय धरि?

यदि मशीन तेज भेल, मनुष्यक अन्तःकरणो तेज भेल कि नहि? यदि शहर बढ़ल, करुणा घटल कि बढ़ल? यदि शिक्षा फैलल, स्वतन्त्र विचारो फैलल कि नहि?

एहि प्रश्नसभ बिनु दार्शनिकता केवल शब्दक सुन्दर अलमारी बनि सकैत अछि।

“भारतीय” कहलाक अर्थ केवल प्राचीनता नहि, केवल संस्कृत शब्द नहि, केवल धर्मक चिन्ह नहि। भारतीयता अनुभवक बहुरूप धरती अछि— गाम, नगर, वन, कारखाना, मन्दिर, मस्जिद, विहार, विद्यालय, संसद, स्त्रीक मौन, श्रमिकक पसीना, दलितक प्रतिरोध, युवाक संशय।

एहि सभक बीच जखन विचार अपन कसौटी खोजैत अछि, तखने पहिचान जीवित होइत अछि।

परम्परा काँचक पेटीमे राखल अवशेष नहि; ओ चलैत संवाद अछि। जे उत्तर काल्हि पर्याप्त छल, आइ ओकर फेर परीक्षण हो सकैत अछि। जे मत महान छल, ओहो प्रश्नसँ ऊपर नहि।

श्रद्धा प्रश्नक शत्रु नहि; साँच श्रद्धा तऽ प्रश्नक आगि सहि सकैत अछि।

आ आधुनिकता? ओहो अंतिम सत्य नहि। नव होएबाक कारणेँ कोनो विचार श्रेष्ठ नहि होइत; जाँच तऽ ओहो माँगैत अछि।

विदेशी विचार दुश्मन नहि, मुदा मालिक सेहो नहि। ओ अतिथि जकाँ आबय, हम ओकरा सुनू, अपन अनुभवक भोजन परोसू, आ संग बैसि निर्णय करू।

नकल संवाद नहि होइत अछि। आ आत्ममुग्धता सेहो स्वराज नहि।

दार्शनिक स्वराज एतय जन्म लैत अछि— जखन हम विश्वक पुस्तक खोलू आ अपन आँखि बन्द नहि करू; जखन अपन शास्त्र पढ़ू आ संसारक आवाजो सुनू।

किछु प्रश्न सीमारेखा नहि मानैत— सत्य की? ज्ञानक प्रमाण की? मन आ देहक सम्बन्ध की? नैतिक कर्मक आधार की? समाज व्यक्ति केँ बनबैत अछि कि व्यक्ति समाज केँ?

एहन प्रश्नसभ पर देशक नाम नहि लिखल रहैत अछि, मुदा उत्तर देबाक ढङ्गमे इतिहास, भाषा, संस्कृति, आ अनुभव अपन छाप छोड़ैत अछि।

एहि लेल सार्वभौमिक प्रश्न आ स्थानीय अनुभव एक-दोसराक विरोधी नहि। दुनू मिलि विचारक सम्पूर्ण देह बनबैत अछि।

विश्वविद्यालयमे दार्शनिकता जँ केवल पाठ्यक्रम हो, तँ प्रश्न परीक्षा समाप्त भेलाक संग कागज पर रहि जाएत।

कक्षा केँ चाही जीवित विवाद, सहमति सँ अधिक सुसंगत असहमति, आ शिक्षक केँ चाही उत्तर बाँटबाक बदला प्रश्न सँ डर नहि मानबाक साहस देब।

शोधक काज पुरान बातक नया आवरण नहि; ओकरा चाही नव समस्या केँ नाम देब, नव विधिसँ परखब, आ जतय आवश्यक हो पुरान श्रेणीसभक सीमा देखाएब।

दर्शन अकेले नहि चलैत। ओ मनोविज्ञानसँ सीखि सकैत अछि, समाजशास्त्रसँ, इतिहाससँ, भाषाविज्ञानसँ, विज्ञानसँ, कला आ साहित्यसँ।

मनुष्य एक विभाग नहि, तँ मनुष्यक प्रश्नो एक विभागमे सम्पूर्ण नहि समाइत।

मुदा अनेक विषयक संगति अपन केन्द्र गुमाएब नहि। दर्शनक काज अछि प्रश्नक मूल धरि जाएब, मान्यताक तह खोलब, शब्दक भीतर छिपल अर्थ देखब, आ तर्कक जोड़ जाँचब।

कहियो दर्शन विज्ञानक भाषा अपनबैत अछि, कहियो नैतिक वेदनाक; कहियो विश्लेषणक धार, कहियो अनुभूतिक गहिराइ। एकहि औजारसँ सभ समस्या नहि खुलैत।

जे केवल माप चाहैत अछि, ओ प्रेमक सम्पूर्ण अर्थ नहि पकड़ि सकत; जे केवल अनुभूति चाहैत अछि, ओ तथ्यक कठोरता नहि टारि सकत।

तर्क आ संवेदना दुनू केँ एकहि मानवीय घरमे रहबाक अछि।

स्वातन्त्र्योत्तर चिन्तनक एक पीढ़ा अपन पहिचानक असमंजस सेहो छल। कतेक बेर हम पूछलहुँ— हम आधुनिक छी कि पारम्परिक? पूर्विय छी कि पाश्चात्य? धार्मिक छी कि लौकिक?

मुदा मनुष्य एहन दू-दू डिब्बामे सहजे नहि समाइत। जीवन मिश्रित अछि, आ विचार केँ एहि मिश्रणक ईमानदार भाषा चाही।

लौकिकता धर्म-विरोध नहि, धर्म विवेक-विरोध नहि; नैतिकता केवल भयक संतान नहि, आ स्वतन्त्रता केवल मनमानी नहि।

एहि महीन भेदसभ केँ जँ दर्शन नहि सहेजत, तँ नारा विचारक ठाम लऽ लेत।

आ नारा तेज सुनाइत अछि, मुदा गहिर प्रश्नक उत्तर बहुत कम दैत अछि।

दार्शनिक केँ चाही भीड़क बीचो एक क्षण ठहरबाक कला; लोकप्रिय मतक समक्ष “किएक?” पूछबाक साहस; आ अपन प्रिय मतक समक्ष सेहो ओही कठोरता।

किएक तँ पक्षपात केवल दोसरक भूल नहि, अपन विचारक छाँह सेहो होइत अछि।

ठीक दिशा एकटा तीरक निशान जकाँ सदैव तैयार नहि भेटैत। दिशा बनैत अछि प्रश्न, परीक्षण, असफलता, पुनर्विचार आ संवादसँ।

दशा सेहो केवल निराशा नहि। जतय भ्रम अछि, ओतय खोजक सम्भावना अछि; जतय असहमति अछि, ओतय नवा तर्क जन्म सकैत अछि; जतय उधारक शब्द अछि, ओतय अपन भाषा गढ़बाक आवश्यकता स्पष्ट अछि।

आ एहि आवश्यकता सँ एकटा नव दार्शनिक पीढ़ी उठि सकैत अछि— जे मूल ग्रन्थ पढ़य, नव शोध बुझय, देशक वास्तविकता देखय, विश्वक बहसमे भाग लय, आ अपन निष्कर्ष कोनो पूर्वनिर्धारित शिक्कर आदेश पर नहि, विवेकक कसौटी पर लिखय।

ओ पीढ़ी न परम्पराक कैदी हो, न आधुनिकताक अनुचर; न पश्चिमक भय मानय, न अपन अतीतक मदमे डूबय।

ओकरा चाही जड़ि धरतीमे, मुदा खिड़की सभ दिशामे।

किएक तँ वृक्ष केवल जड़िसँ नहि जीबैत, प्रकाशो चाहैत अछि; आ केवल प्रकाशमे बिनु जड़िक ठाढ़ो नहि रहि सकैत।

स्वतन्त्र भारतक दर्शनक दिशा एतय सँ निकलि सकैत अछि— अपन अनुभवक धरती पर ठाढ़, विश्वक आकाश दिस खुलल, तर्कमे कठोर, करुणामे नम्र, इतिहाससँ परिचित, भविष्यक प्रति उत्तरदायी।

आ दशा? ओ स्थिर चित्र नहि। हरेक प्रश्नक संग बदलैत अछि। जतय विचार अपन भूल स्वीकारि सकैत अछि, ओतय पतन अंतिम नहि।

दार्शनिक जीवनक सभसँ सुन्दर आशा कदाचित् ई अछि— कोनो उत्तर अन्तिम नहि, मुदा सत्यक खोज व्यर्थ सेहो नहि।

हम चलैत रहू, प्रश्न करैत रहू, सुनैत रहू, आ अपन धरती पर ठाढ़ भऽ खुलल आकाश केँ अपन विचारक दिशा बनबैत रहू।

प्रश्नक परिसर

इतिहासक पाछाँ एकटा परिसर बचैत अछि— जतय पीढ़ीसभ अपन-अपन प्रश्न लऽ कऽ एकहि बरामदामे भेटैत अछि।

स्वतन्त्र देशक विश्वविद्यालय एहनहि एकटा परिसर छल; दीवार पर नव नाम, पाठ्यक्रममे पुरान ग्रन्थ, मेज पर विदेशी पुस्तक, आ विद्यार्थीसभक भीतर अनुत्तरित वर्तमान।

दर्शनक आरम्भ उत्तर सँ नहि, आश्चर्य सँ होइत अछि। जे देखैत अछि आ फेर पूछैत अछि— “ई एना किएक?” ओहि क्षण विचार जन्म लैत अछि।

मुदा प्रश्नक आदत सहज नहि बनैत। कतेक बेर संस्था प्रश्न सँ अधिक पाठ्यक्रम बचबैत अछि; कतेक बेर शिक्षक जिज्ञासा सँ अधिक नोट्सक क्रम बचबैत छथि।

तखन दर्शन जीवित अनुभव नहि, परीक्षाक उत्तर बनि जाइत अछि।

स्वतन्त्रताक पाछाँ भारतीय दार्शनिक परिसरमे बहुत दरबज्जा खुलल— प्लेटो, अरस्तू, कान्त, हेगेल, ब्रैडली, रसेल, विट्गेन्स्टाइन, आ अनेक आधुनिक स्वर; संगहि न्याय, वेदान्त, बौद्ध, जैन, मीमांसा, योग आ भारतीय परम्पराक दीर्घ बहस।

ई समृद्धि छल, मुदा एकटा खतरो छल— हम दोसरक नक्शा पढ़ैत-पढ़ैत अपन धरतीक बाट भुलि नहि जाई।

किएक तँ ज्ञानक आदान-प्रदान स्वाभाविक अछि, मुदा अनुकरण विचारक अन्त नहि होए।

विदेशी पुस्तक खिड़की बनय, दीवार नहि; अपन परम्परा जड़ि बनय, बेड़ी नहि।

दार्शनिकक काज दुनू केँ खोलब अछि— बाहरक प्रकाश आ भीतरक अन्हार।

परिसरमे एकटा दोसर समस्या छल— समूह। मतक समूह, गुरुक समूह, पत्रिकाक समूह, नियुक्तिक समूह।

जतय विचारक मूल्य तर्क सँ कम परिचय सँ अधिक आँकल जाए, ओतय प्रश्न धीरे-धीरे दरबज्जा बाहर ठाढ़ रहि जाइत अछि।

दार्शनिक समाज यदि समाजक नकल मात्र बनत, तँ ओकर नैतिक अधिकार कमजोर पड़त।

विचारक क्षेत्रमे मित्रता हो, मुदा पक्षधरता नहि; परम्परा हो, मुदा वंशानुगत अधिकार नहि; असहमति हो, मुदा बहिष्कार नहि।

एकटा शोधार्थी नव प्रश्न लऽ कऽ अबैत अछि; ओकरा चाही पुस्तकालय, मार्गदर्शन, समय, भाषाक सुविधा, आ सबैसँ अधिक— भयमुक्त प्रश्नक अधिकार।

जँ ओकर प्रश्न गुरुक मतसँ अलग अछि, तँ ई अपराध नहि; एहि अलगावमे नव दर्शनक सम्भावना छिपल रहैत अछि।

मौलिकता आकाशसँ खसैत बिजली नहि। ओ जन्मैत अछि दीर्घ अध्ययन, ठीक प्रश्न, धैर्यवान संशय, आ अनुभवक संग तर्कक निरन्तर टक्कर सँ।

मुदा मौलिकता कहब सहज अछि, गढ़ब कठिन। किएक तँ पहिने बहुत पढ़बाक पड़ैत अछि, फेर पढ़ल बातक छाया सँ बाहर आबबाक पड़ैत अछि।

शोधक असली परीक्षा ई नहि जे कतेक नाम उद्धृत भेल; अपितु ई जे नामसभ हटाओलाक पाछाँ सेहो ओकर अपन प्रश्न ठाढ़ रहैत अछि कि नहि।

भाषा सेहो एहि परिसरक एकटा गम्भीर प्रश्न। जँ विचार केवल एहन भाषा मे लिखल जाए जे समाजक बहुत छोट भाग बुझि सकय, तँ दर्शनक सार्वजनिक जीवन संकुचित भऽ जाइत अछि।

अंग्रेजी सीखब आवश्यक हो सकैत अछि, विश्वसँ संवाद लेल; मुदा भारतीय भाषासभमे दार्शनिक शब्दावली, शोध, अनुवाद, विमर्श आ शिक्षण एतेकहि आवश्यक अछि।

भाषा बदललासँ सत्य नहि बदलैत, मुदा सत्य धरि पहुँचबाक रास्ता बदलि जाइत अछि।

अपन भाषामे प्रश्न कतेक बेर अधिक निकट सुनाइत अछि; किएक तँ ओ शब्द घर, गाम, स्मृति, आ जीवनक अनुभवसँ जुड़ल रहैत अछि। दार्शनिक परिसर केवल ग्रन्थालयक भीतर नहि। जीवन बाहर प्रतिदिन प्रश्न लिखैत अछि— भ्रष्टाचार, जाति, लैंगिक असमानता, धार्मिक तनाव, गरीबी, विकास, पर्यावरण, विज्ञानक नैतिकता, तकनीकक शक्ति।

यदि दर्शन एहि प्रश्नसभ सँ आँखि चोरा लेत, तँ ओकर गहिराई केवल शब्दक गहिराई रहि जाएत।

दर्शनक अर्थ सर्वदा समाधान देब नहि; कखनो समाधानक भाषा साफ करब, कखनो समस्या भीतर छिपल मान्यता उजागर करब, कखनो बेठीक प्रश्नक रूप बदलि देब सेहो दर्शन अछि।

एकटा समाज पूछैत अछि— “विकास कतेक?” दार्शनिक पूछि सकैत अछि— “ककर विकास? ककर मूल्य पर? ककरा लेल?”

एकटा राज्य कहैत अछि— “व्यवस्था चाही।” दार्शनिक पूछैत अछि— “न्याय बिनु व्यवस्था कतेक दिन टिकत?”

एकटा तकनीक कहैत अछि— “ई सम्भव अछि।” दार्शनिक पूछैत अछि— “मुदा ई उचित अछि?”

एहि छोट अन्तरमे विचारक असली उपयोगिता अछि।

दर्शन केँ अकेले सभ प्रश्न हल नहि करबाक। ओकरा विज्ञानसँ बात करबाक, समाजशास्त्र सँ, मनोविज्ञान सँ, इतिहास सँ, भाषाविज्ञान सँ, अर्थशास्त्र सँ, कला आ साहित्य सँ।

मनुष्यक जीवन विभागक दीवार नहि मानैत; तँ ज्ञानो दीवार पार करय।

अन्तर्विषयी संवाद फैशन नहि, वास्तविकताक माँग अछि। मुदा संवादक अर्थ अपन विषय गुमाएब नहि; दर्शनक पहिचान ओकर प्रश्नक गहराई, अवधारणाक स्पष्टता, तर्कक परीक्षा, आ मूल्यक विवेकमे अछि।

दार्शनिक लेखनक रूपो अनेक— कखनो शुद्ध तर्क, कखनो व्याख्या, कखनो आलोचना, कखनो अनुप्रयोग, कखनो दुनूक संगम।

सभ लेखनक एकहि माप नहि; मुदा सभसँ एकहि माँग— ईमानदारी।

जे उद्धरण अछि, उद्धरण कहू; जे व्याख्या अछि, व्याख्या कहू; जे अपन मत अछि, ओकर जिम्मेदारी अपन नाम पर लिअ।

ज्ञानक संसारमे अस्पष्ट उधार विचार केँ कमजोर करैत अछि; स्पष्ट संवाद ओकरा मजबूत।

परिसरक स्वास्थ्य कतेक भवन अछि एहि सँ नहि मापल जाए; कतेक स्वतन्त्र प्रश्न जीवित रहि सकैत अछि, एहि सँ मापल जाए।

पुस्तक प्रकाशित हो, मुदा पढ़ल सेहो जाए; शोध हो, मुदा जाँचल सेहो जाए; सम्मेलन हो, मुदा बहस सेहो हो; पद हो, मुदा उत्तरदायित्व सेहो।

दर्शनक संस्थान जँ केवल पदक सीढ़ी बनत, तँ विचार नीचाँ छूटि जाएत। ओकरा चाही साधनाक वातावरण— जतय धीमा पढ़नाइ लज्जाक विषय नहि, गहिर सोचनाइ समयक बर्बादी नहि, आ असहमति असभ्यता नहि।

हमरा एहन कक्षा चाही जतय विद्यार्थी शिक्षक केँ प्रश्न कऽ सकय; एहन विभाग जतय युवा शोधार्थी पुरान मतक पुनरावलोकन कऽ सकय; एहन पत्रिका जतय नाम सँ पहिने विचार पढ़ल जाए।

एहन भाषा चाही जाहिमे कठिन विचार सरल बनि सतही नहि हो; आ एहन सरलता जाहिमे स्पष्टता हो, गरीबी नहि।

स्वातन्त्र्योत्तर दार्शनिक परिवेश एकहि रंगक कथा नहि। ओतय उपलब्धि अछि, अनुवाद अछि, शोध अछि, नव संस्थान अछि; संगहि अनुकरण, गुटबाजी, भाषिक दूरी, मौलिकताक कमी, आ जीवनसँ विच्छेदक चिन्ता सेहो।

मुदा आलोचना निराशा नहि होए। आलोचना तऽ सुधारक पहिल दीप अछि।

जे परिसर अपन कमजोरी देखैत अछि, ओ बदलि सकैत अछि; जे केवल गौरवक चित्र देखैत अछि, ओ दर्पणक आधा भाग ढाँकि दैत अछि।

भविष्यक दार्शनिक वातावरण ककरो एकल परियोजना नहि; ई शिक्षकक नैतिकता, विद्यार्थीक जिज्ञासा, संस्थाक निष्पक्षता, भाषाक विस्तार, प्रकाशनक गुणवत्ता, आ समाजसँ निरन्तर संवाद सभक संयुक्त फल होएत।

विचार केँ घर चाही, मुदा खिड़की सेहो; परम्परा चाही, मुदा परीक्षण सेहो; स्वतन्त्रता चाही, मुदा अनुशासन सेहो; पहिचान चाही, मुदा खुलापन सेहो।

तखने दर्शन संग्रहालयक शान्त वस्तु नहि, जीवित समाजक सजग चेतना बनत।

आ विश्वविद्यालयक परिसर केवल डिग्री देबाक स्थान नहि, एकटा एहन चौक बनत जतय हरेक पीढ़ी अपन समयक प्रश्न लऽ कऽ आए, पूर्वजक उत्तर सुनय, विश्वक बहस बुझय, आ अन्ततः अपन विवेकक आवाजमे एकटा नव उत्तर लिखय।

जे प्रश्न अखनो उत्तर माँगैत अछि

सभ उत्तरक पाछाँ किछु प्रश्न बचि जाइत अछि; आ कखनो-कखनो ओहि बचल प्रश्नसभमे सम्पूर्ण युगक बेचैनी शान्त भऽ बैसल रहैत अछि। स्वतन्त्रता आयल, देश बदलल, विद्यालय बढल, विश्वविद्यालयक भवन उठल, पाठ्यक्रम बनल, शोध-पत्र लिखल गेल— मुदा दर्शनक मेज पर किछु खाली कुर्सी अखनो रहि गेल।

ओ कुर्सीसभ पर बैसबाक छल समाजक जीवित समस्या, मनुष्यक दैनन्दिन संघर्ष, आ ओ प्रश्न जे पोथीमे नहि, जीवनमे जन्म लैत अछि।

परम्परा बचाओल गेल— ई आवश्यक छल; मुदा परम्परा केवल बचाओल वस्तु नहि, पुनः पूछल जाएबो चाहैत अछि।

किएक तँ जड़ि धरतीक भीतर रहैत अछि, मुदा वृक्ष हरेक ऋतुमे नव पात निकालैत अछि। जड़ि केँ पूजि पात रोकि देब वृक्षक रक्षा नहि।

एक दिस अध्यात्म, आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष, धर्मक दीर्घ चर्चा; दोसर दिस मानवाधिकार, राजनीतिक स्वाधीनता, सामाजिक विषमता, शोषण, भाषा, शिक्षा, नव विज्ञान, नव तकनीक।

दर्शनक जिम्मेदारी एहि दुनू दिशाक बीच चुप्पी नहि, संवाद अछि।

प्रश्न ई नहि जे पुरान शास्त्र बेठीक छल कि नव विचार ठीक; प्रश्न ई जे आइक मनुष्य ककरा आधार पर अपन जीवनक निर्णय लेत?

विश्वविद्यालयक कक्षमे कतेक मत पढ़ाओल जाए, ई उपयोगी अछि; मुदा मतक संख्या विवेकक गहराई नहि बनैत।

विद्यार्थी जँ कान्तक नाम याद करय, शंकरक सूत्र दोहराबय, बौद्ध तर्क चिन्हय, न्यायक प्रमाण गिनाबय— मुदा अपन समक्षक अन्याय केँ प्रश्न नहि कऽ सकय, तँ शिक्षाक दीप कतेक दूरि जरल?

दर्शनक परीक्षा उत्तर-पुस्तिकामे मात्र नहि, जीवनक दुविधामे होइत अछि।

कियो पूछैत अछि— “मनुष्य के?” मुदा बेरोजगार युवक पूछैत अछि— “हमर श्रमक मूल्य की?”

कियो पूछैत अछि— “स्वतन्त्र इच्छा अछि कि नहि?” मुदा पीड़ित स्त्री पूछैत अछि— “हमरा निर्णयक अधिकार किएक नहि?”

कियो पूछैत अछि— “नैतिक शुभ की?” मुदा भूखल परिवार पूछैत अछि— “न्याय केकरा कहब?”

एहि प्रश्नसभ केँ ‘अदार्शनिक’ कहि दरबज्जा बाहर नहि राखल जा सकैत।

समस्या जीवनक तथ्य अछि। ओ कखनो व्यक्तिक भीतर जन्मैत अछि, कखनो समाजक संरचनामे, कखनो दुनू ठाम एकसाथ।

समाधान केवल विचारक खेल नहि; ओकरा चाही तथ्यक पहिचान, कारणक खोज, मूल्यक कसौटी, आ विकल्पक विवेक।

दार्शनिक न चिकित्सक अछि, न अभियन्ता, न प्रशासक; मुदा ओकर प्रश्न एहि सभक निर्णयमे छिपल मान्यता खोलि सकैत अछि।

“ई सम्भव अछि”— विज्ञान कहि सकैत अछि; “ई लाभकारी अछि”— अर्थशास्त्र कहि सकैत अछि; मुदा “ई उचित अछि कि नहि?” ई प्रश्न दर्शनक दुआर खटखटबैत अछि।

समस्या बुझबाक पहिने समाधानक घोषणा बहुत बेर नव समस्या पैदा करैत अछि।

तैं दर्शन केँ धीरे देखबाक कला चाही— घटना पाछाँ संरचना, शब्द पाछाँ अर्थ, निर्णय पाछाँ मूल्य, आ मूल्य पाछाँ मनुष्यक छवि।

हम समाज केँ केवल आँकड़ामे नहि समेटि सकैत छी; आ केवल भावना सँ ओकर जटिलता बुझि नहि सकैत छी।

तथ्य आ मूल्य दुनू केँ संग राखबाक कठिन अनुशासन दार्शनिकता माँगैत अछि।

स्वातन्त्र्योत्तर कालमे एकटा प्रश्न बारम्बार उठैत रहल— भारतीय दर्शन आखिर भारतीय कोना?

केवल भारतीय नामसँ? केवल प्राचीन स्रोतसँ? केवल संस्कृत शब्दावलीसँ? कि एहि कारण जे ई एहि भूमि पर जीवित मनुष्यक प्रश्न केँ अपन प्रश्न मानैत अछि?

पहिचान घोषणा सँ नहि, कार्य सँ बनैत अछि।

जँ दर्शन भारतक गाम नहि देखय, नगरक असमानता नहि, जातिक घाव नहि, धार्मिक तनाव नहि, स्त्रीक स्थिति नहि, शिक्षाक विषमता नहि, राजनीतिक नैतिकता नहि— तँ ‘भारतीय’ शब्द केवल आवरण बनि सकैत अछि।

आ जँ ओ विश्वक चिन्तनसँ अपन दुआर बन्द करय, तँ अपन अनुभवो संकीर्ण भऽ सकैत अछि।

तैं चाही दुइ दिस खुलल खिड़की— एक अपन समाज दिस, दोसर विश्व दिस।

अनुकरण एकटा आसान बाट अछि। दोसर देशक समस्या, दोसर समयक शब्द, दोसर समाजक उदाहरण— सभ जस-के-तस अपन कागज पर राखि देब।

मुदा प्रश्न अनुवाद मात्र नहि होइत।

अपन समाजक धूलि, गन्ध, इतिहास, भाषा, संघर्ष, विश्वास आ विरोध अपन दार्शनिक रूप माँगैत अछि।

दर्शनक मौलिकता नव शब्द गढ़ब मात्र नहि; ओ नव ढङ्गसँ समस्या देखब अछि।

कखनो मौलिकता एकटा छोट प्रश्नमे होइत अछि— “हम जे मानि रहल छी, ओकर आधार की?”

कखनो एकटा पुरान शब्द केँ नव प्रसंगमे खोलब; कखनो दू दूर विचारक बीच अनदेखल सम्बन्ध देखब।

मुदा एहि लेल शोधक प्रशिक्षण चाही।

शोधार्थी केँ केवल संदर्भ-सूची नहि, समस्या चुनबाक विवेक चाही; केवल उद्धरण नहि, तर्कक संरचना चाही; केवल निष्कर्ष नहि, प्रश्नक सीमा पहचानबाक ईमानदारी चाही।

विश्वविद्यालय जँ केवल डिग्रीक कारखाना बनत, तँ दर्शनक भविष्य प्रमाण-पत्रमे बँधि जाएत।

एहि लेल शिक्षकक भूमिका बहुत गहिर अछि। ओ विद्यार्थी केँ उत्तर देबाक सँ पहिने प्रश्न बनाबय सिखाबय।

“समस्या की?” “ई समस्या ककर लेल?” “किएक महत्वपूर्ण?” “कुन तथ्य आवश्यक?” “कुन मूल्य दाँव पर?” “कुन विकल्प सम्भव?”

“आ हमर अपन पूर्वग्रह की?”

एहि प्रश्नसभक अभ्यास दर्शनक व्यायामशाला अछि।

दर्शनशास्त्रक पाठ्यक्रम जँ केवल इतिहास बनि जाए, तँ विद्यार्थी विचारक संग्रहालय घूमि घरे लौटि जाएत।

इतिहास आवश्यक अछि, मुदा इतिहास सँ वर्तमान धरि पुल चाही।

न्याय पढ़ैत काल आधुनिक न्याय पूछू; अहिंसा पढ़ैत काल राजनीतिक हिंसा पूछू; धर्म पढ़ैत काल बहुलता आ सह-अस्तित्व पूछू; आत्मा पढ़ैत काल व्यक्ति, चेतना, जिम्मेदारी पूछू।

तखने पुरान शास्त्र वर्तमानक संग बोलत।

भाषाक प्रश्नो अनुत्तर नहि छोड़ल जा सकैत।

दर्शन जँ केवल अंग्रेजीमें छोट अकादमिक वृत्तक बीच रहत, तँ ओकर सामाजिक श्वास संकुचित होएत।
 भारतीय भाषासभमें सटीक शब्दावली, उच्चस्तरीय अनुवाद, मौलिक ग्रन्थ, आलोचनात्मक लेखन आ शोधक अवसर बढ़ब आवश्यक अछि।
 भाषा केवल माध्यम नहि; ओ प्रश्नक लय बदलैत अछि, अनुभवक निकटता बदलैत अछि, पाठकक संख्या बदलैत अछि।
 मुदा अपन भाषा सरलता नाम पर अस्पष्ट नहि हो; आ कठिनता नाम पर बन्द किला सेहो नहि।
 स्पष्टता दार्शनिक लेखनक नैतिक गुण अछि।
 जे शब्द प्रयोग करू, ओकर अर्थ स्पष्ट करू; जे मत आलोचना करू, पहिने ओकरा ठीक बुझू; जे निष्कर्ष लिखू, ओकर सीमा स्वीकारू।
 किएक तँ विचारमें ईमानदारी सजावट नहि, मूल शर्त अछि।
 अनुत्तर विवक्षा निराशाक सूची नहि; ओ कार्यक सूची अछि।
 जे प्रश्न बचल, ओ आमन्त्रण अछि— अगिला पीढ़ी लेल।
 समाज बदलैत रहत; नव तकनीक अबैत रहत; परिवारक रूप बदलत; राजनीतिक शक्तिसम्बन्ध बदलत; पर्यावरणक संकट गहिर हो सकैत;
 पहिचानक प्रश्न नव रूपमें उठत।
 दर्शन केँ एहि परिवर्तनक पाछाँ दौड़ैत नहि रहबाक, अपितु समय रहते मूल प्रश्न देखबाक अछि।
 मूल्यक संकट कखनो तुरन्त नहि सुनाइत; ओ धीरे-धीरे भाषा, व्यवहार, संस्था आ निर्णयमें उतरैत अछि।
 दार्शनिक चेतना एहि धीमा परिवर्तनक सुनबाक क्षमता अछि।
 ओ पूछैत अछि— “हम ककरा सामान्य मानि रहल छी?” “ककर पीड़ा अदृश्य भऽ गेल?” “कुन सुविधा केँ अधिकार कहि रहल छी?”
 “कुन अन्याय केँ परम्परा कहि बचा रहल छी?”
 एहन प्रश्न समाज केँ असहज करैत अछि, मुदा असहजता कखनो-कखनो स्वास्थ्यक संकेत होइत अछि।
 दार्शनिकक काज सभकेँ प्रसन्न करब नहि; सत्यक खोजमें आवश्यक असुविधा केँ शब्द देब सेहो अछि।
 मुदा आलोचना घृणा नहि; दर्शनक कठोरता करुणा बिनु सूखल लकड़ी भऽ सकैत अछि।
 मनुष्यक प्रश्न मनुष्य लेल अछि— तँ तर्कक अन्तिम धरातल पर करुणाक ठाम बचल रहबाक चाही।
 हमरा एहन दर्शन चाही जे समाजसँ भाग्य नहि, समाजक प्रचारक सेहो नहि बनय; जे राज्यक सेवक नहि, राज्यक शत्रु बनबाक अहंकारो नहि
 पालय; जे धर्म केँ समझय, मुदा प्रश्नक अधिकार छोड़य नहि; जे विज्ञान केँ सम्मान दे, मुदा मूल्यक प्रश्न भूलय नहि।
 एहि संतुलनक नाम कदाचित् दार्शनिक परिपक्वता अछि।
 अनुत्तर प्रश्नसभ हमरा स्मरण करबैत अछि— स्वतन्त्रता एक बेरक घटना नहि, विचारमें ओ दैनिक अभ्यास अछि।
 हरेक पीढ़ी केँ अपन समयक बेड़ी पहिचानबाक पड़ैत अछि— कखनो भय, कखनो अन्धानुकरण, कखनो प्रतिष्ठा, कखनो गुट, कखनो भाषा,
 कखनो परम्पराक कठोर आवरण।
 आ हरेक पीढ़ी केँ अपन प्रश्नक चाबी स्वयं बनाबय पड़ैत अछि।
 दर्शनक भविष्य तैयार उत्तरक पुस्तक नहि; ओ खुलल कापी अछि।
 पहिल पन्ना पर अतीत लिखल अछि, दोसर पर वर्तमानक संघर्ष, आ अगिला पन्ना अखनो खाली।
 ओ खाली पन्ना कमी नहि, सम्भावना अछि।
 ओतय लिखबाक अछि— एहन ज्ञान जे जीवनसँ जुड़ल हो; एहन तर्क जे निष्पक्ष हो; एहन भाषा जे खुलल हो; एहन शोध जे ईमानदार हो;
 एहन शिक्षा जे प्रश्नसँ प्रेम करय; आ एहन दर्शन जे मनुष्यक दुःख केँ अपन विषय मानबाक साहस रखय।
 तखन अनुत्तर विवक्षा अन्त नहि रहत; ओ अगिला यात्राक पहिल पग बनत।
 आ प्रश्न जे आइ हमरा समक्ष ठाढ़ अछि, काल्हि नव उत्तरक पहिल बीज बनि सकैत अछि।

अनुभवक कसौटी

हम आँखि खोलैत छी— रंग अबैत अछि। कान खोलैत छी— ध्वनि अबैत अछि। हाथ बढ़बैत छी— स्पर्श अपन ताप कहैत अछि। मुदा ज्ञान एतेक भरि अछि?

जे देखलहुँ, से सत्यक सम्पूर्ण देह अछि? कि देखल बातक भीतर मन अपन अर्थ जोड़ैत अछि?

अनुभव केवल बाहर सँ अबैत हवा नहि; ओ भीतरक दरबज्जा सेहो खटखटबैत अछि। कखनो पीड़ा बनि, कखनो स्मृति, कखनो संकोच, कखनो आनन्द, कखनो एहन मौन जकर शब्दो सहज नहि भेटैत।

ज्ञानक पहिल बीज जीवनक स्पर्शमे पड़ैत अछि, मुदा बीजक वृक्ष बनबाक लेल मनक माटि, स्मृतिक जल, तर्कक प्रकाश, आ भाषाक हवा सभ चाही।

यदि केवल आँखि पर्याप्त रहित, सभ देखनिहार एकहि निष्कर्ष पर पहुँचैत। मुदा एकहि दृश्य दू मनमे दू अलग प्रश्न जगबैत अछि।

एहि भिन्नतामे अनुभवक कमजोरी नहि, ओकर जटिलता अछि।

कियो कहैत अछि— जे प्रत्यक्ष नहि, ओकरा मानब कठिन। कियो पूछैत अछि— मुदा प्रेम? भय? स्मृति? आशा? ए सभ केँ कुन तराजूमे तोलब?

मनुष्यक संसार केवल दृश्य वस्तुसभक सूची नहि; ओ सम्बन्धक संसार अछि। हम मेज देखैत छी, मुदा ‘मेज’ कहबाक अर्थ केवल रंग आ आकार नहि। उपयोग, पहिचान, स्मृति, नाम, सम्बन्ध— सभ मिलि वस्तु केँ हमर अनुभवमे आकार दैत अछि।

तैं प्रत्यक्ष सहज होइत हुँ सेहो सरल नहि।

आँखि जे देखैत अछि, मन ओकरा चुनैत अछि; मन जे चुनैत अछि, भाषा ओकरा नाम दैत अछि; नाम जे देल गेल, ओ फेर सोचबाक बाट बनैत अछि।

एहि गोल चक्करमे ज्ञान जन्मैत अछि— न केवल बाहर, न केवल भीतर, अपितु दुनूक मिलन-बिन्दु पर।

कखनो हम कहैत छी— “हम स्वयं अनुभव कएलहुँ।” एहि वाक्यमे विश्वासक एकटा अपन तेज अछि। मुदा दार्शनिक पूछत— जे अहाँ अनुभव कएलहुँ, हम ओकरा कोना जानी?

निजी अनुभूति सार्वजनिक ज्ञान कोना बनत?

उत्तर कदाचित् साझा कसौटीमे अछि— वर्णन, पुनरावृत्ति, तुलना, तर्क, दोसरक अनुभव, आ आलोचनाक खुलल दुआर।

जे अनुभव केवल कहनिहारक अधिकार बनि प्रश्न सँ ऊपर उठि जाए, ओ ज्ञानक स्थान पर दावा बनि सकैत अछि।

तैं अनुभवक सम्मान करू, मुदा ओकर परीक्षणो करू।

दर्शनक सावधानी एहि दुनू हाथमे चलैत अछि— एक हाथमे ग्रहण, दोसर हाथमे जाँच।

कखनो अनुभव इन्द्रियक बाट अबैत अछि, कखनो आत्मनिरीक्षणक; हम अपन क्रोध केँ बाहरक वस्तु जकाँ नहि देखैत छी, मुदा ओकर उपस्थिति हमरा लेल वास्तविक अछि।

मनक भीतरक घटना अदृश्य भऽ सकैत अछि, असत्य नहि।

मुदा भीतरक अनुभवक सेहो भ्रम सम्भव अछि। स्मृति बदलि सकैत अछि, भावना अर्थक रंग बदलि सकैत अछि, इच्छा निष्कर्ष केँ धकेलि सकैत अछि।

तैं आत्मनिरीक्षण दर्पण अछि, मुदा दर्पणक काँचो साफ राखबाक पड़ैत अछि।

ज्ञानक एकटा नम्र नियम— “हम अनुभव कएलहुँ” आ “ई वस्तुतः एहनहि अछि” दुनू वाक्य समान नहि।

पहिल वाक्य अपन स्थितिक साक्षी; दोसर विश्वक दावा। दोसर दावा लेल आरो कसौटी चाही।

एहि अन्तर केँ जतय भूलल जाए, ओतय अनुभूति सत्यक मुकुट पहिरि अधिकार जताबय लगैत अछि।

धार्मिक अनुभव सेहो मनुष्यक जीवनमे गहिर स्थान रखैत अछि। कियो प्रार्थनामे असीम निकटता अनुभव करैत अछि, कियो ध्यानमे अपन सीमित ‘हम’ पिघलैत देखैत अछि, कियो करुणाक क्षणमे जीवनक एकत्व अनुभूत करैत अछि।

दार्शनिक एहि अनुभूतिक उपहास नहि करय, मुदा प्रश्न छोड़य सेहो नहि।

ई अनुभव ककर प्रमाण? अनुभवक विषय अनुभवसँ बाहर स्वतन्त्र रूपमे अछि कि नहि? एक धर्मक अनुभूति दोसर धर्मक विपरीत दावासँ कोना संवाद करत?

ई प्रश्न श्रद्धाक अपमान नहि; ई श्रद्धा केँ विवेकक संग बैसाबयक प्रयास अछि।

जतय विश्वास प्रश्न सँ डरैत अछि, ओतय दर्शनक प्रवेश कठिन; जतय विश्वास प्रश्न सहि सकैत अछि, ओतय संवाद सम्भव।

अनुभववादी दृष्टि हमरा धरती पर राखैत अछि— आकाशक बात करू, मुदा पयरक स्पर्श नहि भूलू।

कोनो सिद्धान्तक मूल्य केवल ओकर सुन्दरता नहि; देखू, ओ जीवनक तथ्यसँ कतेक मेल खाइत अछि।

यदि सिद्धान्त कहैत अछि मनुष्य सदैव एकहि ढङ्गसँ व्यवहार करैत अछि, जीवन ओकर विरुद्ध उदाहरण दैत अछि, तँ सिद्धान्त केँ जीवनसँ सीखबाक पड़त।

तथ्य मतक सेवक नहि; मत केँ तथ्यक समक्ष उत्तरदायी रहबाक चाही।

मुदा तथ्य स्वयं बिनु अवधारणाक मूक रहैत अछि।

कुन तथ्य चुनल जाए? ककरा प्रासंगिक कहल जाए? कुन सम्बन्ध देखल जाए? ई प्रश्न तर्क आ सिद्धान्तक सहयोग माँगैत अछि।

एहि लेल अनुभववादक अर्थ विचार-विरोध नहि। ओ तऽ विचार केँ धरती पर चलबाक अभ्यास दैत अछि।

कल्पना चाही, मुदा पंखक संग दिशा; तर्क चाही, मुदा तथ्यक संग सम्बन्ध; सिद्धान्त चाही, मुदा परीक्षणक साहस।

दार्शनिक मन न केवल देखैत अछि, ओ देखल बातक अर्थ पूछैत अछि।

एकटा पत्थर भौतिक वस्तु अछि; मुदा मूर्ति बनलाक पाछाँ ओ मनुष्यक सांस्कृतिक अनुभवमे नव अर्थ पबैत अछि।

एकटा शब्द ध्वनि अछि; मुदा इतिहासक भीतर ओ अपमान, गौरव, स्मृति, प्रतिरोध सभ बनि सकैत अछि।

अनुभव सांस्कृतिक सेहो अछि। हम शून्यमे नहि देखैत छी; हम इतिहास, भाषा, आ समाजक बीच देखैत छी।

तँ अनुभवक विश्लेषण केवल इन्द्रियक विज्ञान नहि; ओ मनुष्यक संसार बुझबाक बहु-दुआरी घर अछि।

कखनो दर्शन भाषाक दुआर पकड़ैत अछि। हम जे प्रश्न पूछैत छी, ओ प्रश्नक शब्द पहिने सँ किछु मान्यता लऽ कऽ अबैत अछि।

“वस्तु की?” “आत्मा की?” “स्वतन्त्रता की?” “कारण की?” हरेक शब्द अपन इतिहास लऽ कऽ अबैत अछि।

यदि शब्द अस्पष्ट, बहस अन्धारमे चलि सकैत अछि। तँ भाषा साफ करब केवल व्याकरणक काज नहि; कखनो ई दार्शनिक उपचार अछि।

शब्दक अर्थ केवल कोशमे बन्द नहि। ओ प्रयोगमे खुलैत अछि— कुन प्रसंग? कुन वक्ता? कुन श्रोता? कुन उद्देश्य?

एकहि शब्द अलग परिस्थितिमे अलग छाया धारण करैत अछि।

दार्शनिक विश्लेषण एहि छायासभ केँ देखैत, भ्रमक गाँठ खोलैत, आ पूछैत अछि— हम वास्तवमे असहमत छी, कि केवल शब्द अलग प्रयोग कऽ रहल छी?

बहुत विवाद वस्तु पर कम, भाषाक उलझन पर अधिक टिकैत अछि।

मुदा भाषा-विश्लेषण सेहो जीवनसँ अलग नहि होए। शब्द मनुष्यक व्यवहारमे जन्मैत, इतिहासमे बदलैत, समाजमे अर्थ पबैत अछि।

तँ भाषा केँ काँचक प्रयोगशालामे बन्द कऽ सम्पूर्ण सत्य नहि भेटत।

अनुभवक संसार व्यक्ति सँ आरम्भ होइत अछि, मुदा समाज धरि फैलैत अछि।

हम अकेले दुखी होइत छी, मुदा दुःखक कारण कखनो सामाजिक होइत अछि। हम निजी भय अनुभव करैत छी, मुदा भयक स्रोत राजनीतिक व्यवस्था सेहो हो सकैत अछि।

तँ दार्शनिक अनुभववाद यदि केवल व्यक्तिक भीतर रुकि जाए, समाजक वास्तविकता अधूरी रहत।

अनुभवक सामूहिक रूपो अछि— गरीबीक पीढ़ीगत भार, जातिक अपमान, विस्थापनक स्मृति, स्वतन्त्रताक उल्लास, हिंसाक भय, भाषाक गौरव।

ए सभ अनुभव इतिहासक तथ्य सेहो, नैतिक प्रश्न सेहो।

दर्शनक काज एहि अनुभवसभ केँ केवल कथा कहि छोड़ब नहि; ओकर भीतर छिपल मूल्य, संरचना, अधिकार आ अन्यायक प्रश्न खोलब।

अनुभववादी प्रवृत्ति एकटा नम्र शिक्षा दैत अछि— पहिने देखू, सुनू, अनुभवक साक्ष्य केँ स्थान दिअ; फेर सिद्धान्त बनाउ।

पहिने जीवन, फेर वर्गीकरण।

किएक तँ वर्गीकरण जीवनक सुविधा लेल अछि, जीवन वर्गीकरण लेल नहि।

मुदा दोसर नम्र शिक्षा सेहो— जे देखलहुँ, ओ अंतिम नहि। दोसर देखनिहार आरो किछु देख सकैत अछि। नव अनुभव पुरान निष्कर्ष बदलि सकैत अछि।

ज्ञानक ई खुलापन कमजोरी नहि; ई ओकर जीवित रहबाक शर्त अछि।

जतय निष्कर्ष संशोधन सँ ऊपर, ओतय ज्ञान विश्वासक कठोर दीवार बनि सकैत अछि।

अनुभव हमरा सुधारबाक अधिकार रखैत अछि।

आ एहि अधिकारक सम्मानमे विचारक स्वतन्त्रता बसैत अछि।

स्वातन्त्र्योत्तर भारतीय दर्शनमे अनुभवक प्रति ई आग्रह एकटा नवा प्रश्न खोलैत अछि— हम अपन समाजक वास्तविकता केँ कतेक ध्यानसँ देखलहुँ?

हम आयातित समस्यासभ पर बहुत लिखलहुँ, मुदा अपन आँगनक प्रश्न कतेक सुनलहुँ?

हम सिद्धान्तक भाषा चतुराईसँ सीखलहुँ, मुदा किसानक अनुभव, श्रमिकक दिन, स्त्रीक मौन, युवाक बेचैनी, धार्मिक मनक गहिर भय-आशा कतेक दर्शनमे स्थान पेलक?

अनुभववाद एहि ठाम एकटा नैतिक आग्रह बनि जाइत अछि— जे जीवित अछि, ओकरा देखू। जे दुखैत अछि, ओकर आवाज सुनू। जे दावा करैत अछि, ओकर कसौटी खोजू।

दर्शन मनुष्यक संसारक बाहर शुद्ध विचारक महल नहि; ओ संसारक बीच विवेकक घर अछि।

एहि घरमे खिड़की खुलल रहय, ताकि नवा अनुभव आबि सकय; दुआर खुलल रहय, ताकि आलोचना प्रवेश कऽ सकय; आ भीतर एकटा दीप जरैत रहय— तर्कक।

तखन अनुभव अन्ध विश्वास नहि बनत, आ तर्क जीवन-विहीन गणना नहि।

दुनू मिलि ज्ञानक एहन बाट बनाएत जतय मनुष्य देखैत सेहो, सोचैत सेहो, अनुभव करैत सेहो, आ अपन अनुभव केँ सत्यक नाम देबाक पहिने विनम्रतासँ पूछैत सेहो— “की ई बात आरो जाँच सहि सकैत अछि?”

एहि प्रश्नमे अनुभवक मर्यादा अछि, विज्ञानक अनुशासन, दर्शनक साहस, आ मनुष्यक निरन्तर सीखैत रहबाक आशा।

पाँच दशकक देहरी

स्वतन्त्रताक भोर एक दिनमे समाप्त नहि भेल; ओ दीर्घ प्रभात छल, जतय देश धीरे-धीरे अपन आँखि अपनहि प्रकाशमे खोलैत गेल।

राजनीतिक बेड़ी टूटल, मुदा विचारक आदत एकहि दिन बदलैत नहि। कतेक वर्षक शासन मनमे एहन पगडण्डी बना देने छल जतय ज्ञानक बाट बहुधा परभाषाक दुआरसँ जाइत छल।

पुस्तक हाथमे छल, मुदा भाषा मनक पहिल भाषा नहि; विचार समक्ष छल, मुदा ओकर स्वर घरक स्वर सँ दूर।

तखन प्रश्न उठल— स्वतन्त्र देशक दर्शन केवल अनुवादित आवाजमे कतेक दिन बोलत?

ज्ञान ककरो एक भाषाक सम्पत्ति नहि, मुदा भाषा ज्ञानक घर अवश्य अछि। घर बदललासँ विचार मरैत नहि, मुदा ओकर चालि बदलैत अछि, ओकर साँसक लय बदलैत अछि, ओकर पाठक बदलैत अछि।

एहि लेल स्वतन्त्रताक पाछाँ एकटा नवा प्रयत्न आरम्भ भेल— विचार केँ अपन भाषाक देह देबाक।

मैथिलीमें दर्शन, भारतीय भाषासभमें दर्शन, अनुवाद, व्याख्या, पाठ्यपुस्तक, शोध, पत्रिका, मूल लेखन— ई सभ केवल प्रकाशनक घटना नहि, चेतनाक पुनर्वास छल।

कियो कठिन शब्द खोजलक, कियो नव पद गढ़लक, कियो पुरान संस्कृत शब्द केँ नव अर्थक धूपमें राखलक; कियो विदेशी अवधारणा केँ अपन भाषाक माटिमें रोपि देखलक— ई बीज एतय अंकुरैत अछि कि नहि।

अनुवाद सहज नकल नहि। एक शब्दक पाछाँ सम्पूर्ण दर्शन रहैत अछि; एक अवधारणाक पाछाँ शताब्दीक बहस।

तँ शब्द बदलनाइ मात्र पर्याप्त नहि; अर्थक यात्रा एक संस्कृतिसँ दोसर संस्कृति धरि सावधानीसँ करबाक पड़ैत अछि।

कखनो समान शब्द भेटैत अछि, मुदा समान अर्थ नहि; कखनो अर्थ निकट, मुदा इतिहास अलग।

दार्शनिक अनुवादक दू किनाराक बीच नाव चलबैत अछि— एक किनार मूल, दोसर पाठक; बीचमें गहिर पानी अर्थक।

पाँच दशक एहि नावक अनेक यात्रा देखलक। किछु सफल, किछु अधूरा, किछु कठिन, किछु एहन जे अगिला पीढ़ी लेल नव बाट खोलि गेल।

विश्वविद्यालय बढ़ल, विभाग बनल, शोधार्थी आयल, शिक्षकक नवा पीढ़ी तैयार भेल। दर्शन केवल परम्परागत पाठशालाक विषय नहि रहल, आधुनिक संस्थाक पाठ्यक्रममें अपन स्थान बनबैत गेल।

मुदा संस्थान बनलासँ चिन्तन अपने नहि बनैत। भवन प्रश्न नहि पूछैत; पाठ्यक्रम स्वयं मौलिकता नहि लिखैत।

मनुष्य केँ प्रश्न करबाक पड़ैत अछि, आ संस्थान केँ एहन प्रश्न लेल ठाम देबाक।

स्वतन्त्रताक पहिल उत्साह धीरे-धीरे दैनिक श्रममें बदलल— पुस्तक सम्पादन, शब्दावली निर्माण, पाठ्यक्रम सुधार, पुरान ग्रन्थक नव व्याख्या, आ आधुनिक विचारक संग संवाद।

ई श्रम चमकदार इतिहास नहि, मुदा ज्ञानक असली आधार बहुधा एहनहि धीमा श्रम होइत अछि।

कियो प्राचीन भारत दिस फेर नजर घुमौलक, मुदा केवल गौरव लेल नहि; कियो खोजलक— पुरान तर्क आइ की कहि सकैत अछि? पुरान प्रश्न नव समाजमें कोना बदलैत अछि?

कियो पश्चिमक आधुनिक दर्शन पढ़लक, मुदा केवल अनुकरण लेल नहि; कियो ओकरा कसौटी बनौलक, कियो चुनौती, कियो संवादक साथी।

एहि पाँच दशकमें भारतीय दर्शनक दर्पण एकसाथ अनेक चेहरा देखलक— परम्परा, आधुनिकता, भाषा, राजनीति, धर्म, विज्ञान, समाज, व्यक्ति।

एकटा प्रश्न बारम्बार उठैत रहल— “हम कोन भाषा में सोचैत छी?” मुदा एहि प्रश्नक भीतर दोसर प्रश्न सेहो छल— “हम ककर समस्या पर सोचैत छी?”

भाषा अपन भेल, मुदा समस्या उधार रहि जाए, तँ स्वराज अधूरा। समस्या अपन भेल, मुदा भाषा एहन जे समाज धरि नहि पहुँचय, तँ संवाद अधूरा।

तँ दर्शन केँ दुनू मोर्चा पर काम करबाक छल— विचारक मौलिकता, आ भाषाक पहुँच।

मैथिली आ अन्य भारतीय भाषासभ एहि कार्यमें केवल माध्यम नहि, सहभागी बनल। जखन अवधारणा नव भाषामें प्रवेश करैत अछि, ओ स्वयं प्रश्न पूछैत अछि— “हमरा एतय कोना बुझल जाए?”

ई प्रश्न भाषाक रचनात्मक शक्ति अछि।

किछु शब्द जसक-तस रहल, किछु अनूदित भेल, किछु पुनःपरिभाषित, किछु विवादित।

एहि विवादमें भाषा जीवित रहल। जतय शब्द पर प्रश्न होइत अछि, ओतय अर्थक चेतना बढ़ैत अछि।

दार्शनिक लेखनक सार्वजनिकता सेहो धीरे-धीरे बदलल। पत्रिका, सम्मेलन, प्रकाशन, विश्वविद्यालय, संगोष्ठी— विचारक नवा मंच बनल।

मुदा मंच बढ़लासँ स्वर अपने प्रामाणिक नहि होइत। प्रश्न फेर ओही— की लिखल जा रहल अछि? किएक लिखल जा रहल अछि? ककरा लेल?

पाँच दशकक उपलब्धि केवल पुस्तकक गिनती नहि; ओहि पुस्तकसभक भीतर कतेक स्वतन्त्र प्रश्न अछि, ई अधिक महत्त्वपूर्ण।

स्वतन्त्रता प्रकाशनक अनुमति मात्र नहि, विचारक जिम्मेदारी सेहो।

जे लिखैत अछि, ओकरा अपन स्रोत बुझबाक, दोसर मत केँ न्याय देबाक, अपन निष्कर्षक सीमा मानबाक, आ नव प्रश्न लेल दुआर खुलल रखबाक अछि।

दर्शन घोषणापत्र नहि, जतय निर्णय पहिने तय हो आ तर्क पाछाँ जोड़ा जाए।

ओ यात्रा अछि, जतय निष्कर्ष कखनो बदलि सकैत अछि, यदि बेहतर कारण समक्ष आबय।

एहि विनम्रता बिनु स्वतन्त्र चिन्तन नव कट्टरता बनि सकैत अछि।

पाँच दशक हमरा ई सेहो सिखबैत अछि जे औपनिवेशिक छाया केवल शासन समाप्त भेलासँ नहि मिटैत। ओ पाठ्यक्रममे रहि सकैत अछि, मूल्यांकनमे, भाषाक प्रतिष्ठामे, स्रोत चुनबाक आदतमे, आ अपन परम्परा केँ वा तऽ अन्ध गौरव, वा अन्ध तिरस्कारसँ देखबाक ढङ्गमे।

एहि दुनू अतिशय सँ बाहर एकटा कठिन मध्य-पथ अछि— आलोचनात्मक आत्मविश्वास।

अपन परम्परा पढ़ू, मुदा प्रश्न सहित; दोसर परम्परा पढ़ू, मुदा हीनभावना बिनु; तुलना करू, मुदा प्रतियोगिता जकाँ नहि; संवाद करू, मुदा आत्मसमर्पण बिना।

यहीं दार्शनिक स्वराजक बीज अछि।

स्वराज कहैत अछि— हम सुनब, सीखब, स्वीकारब, अस्वीकारब, मुदा निर्णय अपन विवेकसँ करब।

पाँच दशकक यात्रा एक सोझ रेखा नहि। कखनो उत्साह, कखनो ठहराव, कखनो पुनर्जागरण, कखनो अनुकरण, कखनो मौलिक चमक। इतिहास एहनहि मिश्रित रंगसँ बनैत अछि।

महत्त्वपूर्ण ई नहि जे सभ प्रयास सफल भेल; महत्त्वपूर्ण ई जे प्रश्नक परम्परा टूटल नहि।

एक पीढ़ी दोसर पीढ़ी केँ पुस्तक देलक, शब्द देलक, संस्था देलक, आ संगहि अधूरा प्रश्नो देलक।

अधूरा प्रश्न विरासतक कमी नहि, विरासतक जीवन अछि।

जँ सभ उत्तर तय होइत, दर्शन समाप्त भऽ जाइत।

तँ पाँच दशकक अन्त कोनो पूर्णविराम नहि; ओ अल्पविराम अछि।

पाछाँ स्वतन्त्रताक पहिल उत्साह, बीचमे भाषा, संस्था, अनुवाद, शोध आ बहसक श्रम, आ आगाँ अखनो खुलल भविष्य।

भविष्य पूछैत अछि— भारतीय भाषा मे मौलिक दर्शन कतेक बढ़त? विश्वविद्यालय प्रश्नक ठाम बनत कि नहि? दर्शन समाजक जीवित समस्या संग कतेक निकट रहत? परम्परा नव प्रश्न सहि सकत कि नहि?

ई प्रश्नसभक उत्तर पाँच दशक नहि, अगिला पाँच दशक लिखत।

मुदा देहरी पर एक बात स्पष्ट अछि— राजनीतिक स्वतन्त्रता विचारक स्वतन्त्रता केँ सम्भव बनबैत अछि, निश्चित नहि।

निश्चितता लेल प्रत्येक पीढ़ी केँ फेर श्रम करबाक पड़त— भाषा पर, शोध पर, संवाद पर, आ अपन विवेक पर।

तखने स्वतन्त्रता इतिहासक तिथि सँ उठि ज्ञानक संस्कार बनत।

आ दर्शन केवल पाँच दशकक लेखा नहि, एक निरन्तर प्रश्न बनि अगिला शताब्दी दिस चलैत रहत।

दृश्यक पाछाँ जे प्रश्न अछि

आँखि समक्ष जे किछु अछि, सेहिए सभ सत्य हो, एहन कहब सहज अछि; मुदा मन सहज उत्तर पर सदा थमैत नहि।

ओ पूछैत अछि— ई वस्तु अछि, मुदा “अछि” केर अर्थ की? ई जगत देखाइत अछि, मुदा देखाइत रहबाक पाछाँ कुन आधार अछि?

यहीं सँ तत्त्वमीमांसाक बाट खुलैत अछि— धुँआधार कल्पनाक नहि, अस्तित्वक मूल प्रश्नक बाट।

कखनो समय एहन आयल जखन कहल गेल— जे नापल जा सकय, ओहि पर बात करू; जे प्रयोगमे पकड़ायल, ओहि केँ ज्ञान मानू; बाकी सभ भाषाक भ्रम बुझू।

ई चेतावनी व्यर्थ नहि छल। दर्शन केँ अस्पष्ट वाक्य, शब्दक जाल, आ बिनु प्रमाणक दावासँ सावधान रहबाक छल।

मुदा चेतावनी जँ निषेध बनि जाए, तँ प्रश्नक एकटा सम्पूर्ण आकाश बन्द भऽ जाइत अछि।

किएक तँ प्रयोगशाला “वस्तु केना बदलैत अछि” कहि सकैत अछि; मुदा “अस्तित्वक अर्थ की” पूछब ओकर सीमा बाहर जा सकैत अछि।

विज्ञान घटनाक सम्बन्ध खोजैत अछि; तत्त्वमीमांसा ओहि सम्बन्धक पृष्ठभूमि।

विज्ञान पूछैत अछि— “की घटल?” दर्शन फेर पूछैत अछि— “घटनाक संसार कुन आधार पर सम्भव अछि?”

ई प्रतिस्पर्धा नहि, प्रश्नक स्तर अलग अछि।

आचार्य यज्ञदेव शुक्लक चिन्तन एहि गहिर धरातल दिस फेर नजर घुमबैत अछि।

दृष्टि केवल बाहर नहि, भीतर सेहो; ज्ञान केवल वस्तु पर नहि, ज्ञाताक स्थिति पर सेहो।

हम जे जानैत छी, ओकरा जाननिहार “हम” स्वयं कोन प्रकारक सत्ता?

यदि मन केवल पदार्थक एक गति, तँ अनुभूति, स्मृति, आत्मबोध, मूल्यनिर्णय— ए सभक स्थान कतय?

यदि चेतना मात्र छाया अछि, तँ छाया अपन छाया होएबाक बात केना जानैत अछि?

एहन प्रश्न सहजे नहि हटैत।

“आत्मा” शब्द ककरो लेल श्रद्धा, ककरो लेल समस्या, ककरो लेल एक दार्शनिक परिकल्पना।

मुदा शब्दक लोकप्रियता न ओकर प्रमाण, न ओकर खण्डन।

प्रश्न ई— मनुष्यक अनुभवमे एहन कोन निरन्तरता अछि जे बदलैत शरीर, बदलैत भावना, बदलैत विचारक बीच “हम” केर सूत्र जोड़ैत अछि?

बाल्यकालक स्मृति आइक चेतनामे किएक “हमर” कहल जाइत अछि?

जे देह काल्हि जेकाँ नहि, जे मन प्रति क्षण बदलैत, ओहि परिवर्तनक भीतर पहिचानक धागा कतय सँ अबैत अछि?

तत्त्वमीमांसा एहि धागाक खोज अछि।

ई आवश्यक नहि जे पहिल उत्तर अन्तिम हो; मुदा प्रश्न केँ अवैध कहि देब उत्तर नहि।

जगतक वस्तुसभ मनसँ स्वतन्त्र अछि? कि अनुभवमे ज्ञाता आ ज्ञेय एक-दोसराक सम्बन्धमे अर्थ पबैत?

दर्शनक पुरान विवाद एतय फेर जीवित होइत अछि।

एक दिस वस्तुकेन्द्रित यथार्थ, दोसर दिस चेतनाक संरचना; बीचमे मनुष्यक अनुभवक पुल।

तत्त्वमीमांसक काज पुल तोड़ब नहि, दुनू किनारक स्वरूप बुझब।

जँ हम कहैत छी— “ई मेज अछि”, तँ वाक्यमे रंग, आकार, स्पर्श मात्र नहि; एक प्रकारक स्थायित्वक विश्वासो अछि।

हम मानैत छी जे आँखि फेरि लेलाक पाछाँ सेहो मेज गायब नहि भऽ गेल।

ई साधारण विश्वास अपने भीतर अस्तित्वक धारणा रखैत अछि।

दैनिक जीवन तत्त्वमीमांसा बिनु एक पग चलैत नहि, भले हम ओकर नाम नहि ली।

“ई सत्य अछि”— एतय सत्यक अर्थ चाही।

“ई वस्तु अछि”— एतय वस्तुक अर्थ चाही।

“ई कारण अछि”— कारणक अर्थ चाही।

“हम उत्तरदायी छी”— व्यक्ति आ स्वतन्त्रताक किछु धारणा चाही।

तँ तत्त्वमीमांसा दूरस्थ आकाश नहि, दैनिक वाक्यक अदृश्य आधार सेहो अछि।

मुदा एहि आधार केँ जाँच बिनु मानब? नहि।

दार्शनिक अनुशासन श्रद्धा आ संशय दुनू केँ संग राखैत अछि।

कथन बनाउ, मुदा कारण दिअ; कल्पना करू, मुदा सीमा बुझू; अस्तित्वक बात करू, मुदा भाषाक स्पष्टता छोड़ू नहि।

यहीं तत्त्वमीमांसा कविता आ कल्पकथा सँ अलग होइत अछि।

ओ स्वतन्त्र कल्पना नहि, विवेकपूर्ण परिकल्पना अछि; तर्कक कसौटी पर बारम्बार परखल विचार।

कखनो तत्त्वमीमांसा ईश्वरक प्रश्न धरैत अछि।

“ईश्वर अछि”— ई वाक्य केवल धार्मिक घोष नहि, दार्शनिक प्रश्नो बनि सकैत अछि।

अस्तित्वक कारण, व्यवस्थाक आधार, मूल्यक स्रोत, चेतनाक चरम अर्थ— अनेक बाट एहि प्रश्न दिस जाइत अछि।

मुदा तत्त्वमीमांसक केवल उत्तर न देत; ओ प्रश्नक बनावटो देखत।

कुन अर्थमे “अस्तित्व”? कुन अर्थमे “कारण”? कुन प्रकारक प्रमाण?

तर्क श्रद्धाक अपमान नहि; तर्क दावाक जिम्मेदारी अछि।

धार्मिक अनुभव मानव जीवनक तथ्य अछि; मुदा तथ्य सँ सिद्धान्त धरि एक दूरी अछि।

ओ दूरी दर्शनक क्षेत्र।

कियो अनुभूत करैत अछि एक परम निकटता; कियो केवल मौन; कियो किछु नहि।

तत्त्वमीमांसा पूछैत अछि— भिन्न अनुभूतिक साझा अर्थ कोना बनत?

ई प्रश्न धर्मक विरुद्ध नहि; ओ गम्भीरता पक्षमे अछि।

एहि प्रकारँ जगतक प्रश्नो।

की जगत केवल पदार्थ? की जीवन पदार्थक जटिल व्यवस्था? की चेतना ओहिए व्यवस्था सँ पूर्णतः समझल जा सकैत?

यदि हाँ, तँ “अनुभव” केर निजी उजास कत्तऽ रखब?

यदि नहि, तँ अतिरिक्त सत्ता कुन आधार पर मानब?

दुनू पक्षक कठिनाई सुनब दार्शनिक ईमानदारी अछि।

यज्ञदेव शुक्लक चिन्तनक महत्त्व एहि आग्रहमे देखाइत अछि— तत्त्वमीमांसा केँ न अन्ध परम्परा बनाउ, न अन्ध निषेधक शिकार।

प्रश्नक अधिकार बचाउ।

किएक तँ इतिहासमे कतेक बेर एक युग दोसर युगक प्रश्न केँ “निरर्थक” कहि छोड़ि देलक, आ पाछाँ ओही प्रश्न नव रूपमे लौटि आयल।

ज्ञानक विकास कबरिस्तान नहि, संवादक नगर अछि।

पुरान प्रश्न नव शब्द पहिरि अबैत अछि।

आइ चेतना पर तंत्रिका-विज्ञान बोलैत अछि; कृत्रिम बुद्धि “बुद्धि” शब्दक अर्थ फेर पूछैत अछि; भौतिकी पदार्थक पुरान छवि बदलैत अछि।

एहन समयमे तत्त्वमीमांसा कम नहि, आरो सावधान चाही।

किएक तँ विज्ञानक खोज कखनो-कखनो अस्तित्वक पुरान श्रेणी हिला दैत अछि।

द्रव्य, स्थान, काल, कारण— जे शब्द स्थिर बुझाइत छल, नव ज्ञानमे फेर प्रश्न बनि सकैत अछि।

तत्त्वमीमांसा विज्ञानक शत्रु नहि; ओ विज्ञानक उपलब्धि सँ अपन प्रश्न बदलि सकैत अछि।

आ विज्ञान तत्त्वमीमांसाक स्थान नहि लेत; किएक तँ तथ्यक विशाल भण्डारो स्वतः “अर्थ” नहि लिखैत।

अर्थ मनुष्यक विवेक माँगैत अछि।

मानव जीवनमे मूल्यक प्रश्न आरो स्पष्ट अछि।

“अच्छा” की? “उचित” की? “कर्तव्य” किएक? यदि जगत केवल निर्जीव कारण-क्रम, तँ नैतिक बाध्यता कतय सँ आबय?

ई प्रश्न नैतिक दर्शनक, मुदा ओकर जड़ मनुष्य आ वास्तविकताक स्वरूपमे।

तँ तत्त्वमीमांसा नैतिकतासँ पूर्ण अलग नहि।

हम मनुष्य केँ जेना बुझैत छी, ओही अनुसार ओकर जिम्मेदारीक अर्थ बदलैत अछि।

यदि मनुष्य पूर्णतः बाध्य, तँ दोष आ प्रशंसा कुन अर्थमे?

यदि पूर्णतः स्वतन्त्र, तँ प्रकृति आ इतिहासक प्रभाव कतय गेल?

स्वतन्त्रता आ नियतताक बीच दार्शनिक तनाव यहीं जन्मैत अछि।

तत्त्वमीमांसा एकटा अन्तिम सूत्र देत, एहन दावा आवश्यक नहि।

कखनो ओकर उपलब्धि समस्या केँ साफ देखाएब मात्र होइत अछि।

साफ प्रश्न आधा ज्ञान।

अस्पष्ट उत्तर कतेक बेर प्रश्न सँ खराब।

तँ दर्शनक श्रम शब्द सफा करब, मान्यता खोलब, तर्कक जोड़ देखब, आ अनुभवक सीमा बुझब।

यज्ञदेव शुक्लक चिन्तन एहि श्रमक प्रतिष्ठा करैत अछि।

तत्त्वमीमांसा “विज्ञानक बाहर” अर्थात “अज्ञान” नहि; ओ एहन क्षेत्र जतय वैज्ञानिक तथ्यक संग अवधारणात्मक विवेक आवश्यक होइत अछि।

जखन हम कहैत छी “संसार वास्तविक अछि”, तँ “वास्तविक” शब्द ककरासँ तुलना मे?

स्वप्न? कल्पना? भ्रम? मानसिक प्रतिमा?

यथार्थक अर्थ विपरीत श्रेणी बिनु स्पष्ट नहि होइत।

भ्रम सेहो किछु आधार माँगैत अछि— ककर भ्रम? कुन विषयक? कुन सत्य सँ विचलन?

एहि प्रकार नकारो सत्ताक प्रश्न केँ सम्पूर्ण हटाबैत नहि।

जँ कियो कहय— “तत्त्वमीमांसा सम्भव नहि”, तँ दर्शन फेर पूछत— ई कथन स्वयं कोन प्रकारक दावा?

अनुभवजन्य? तार्किक? कि तत्त्वमीमांसक सीमा-निर्धारण?

निषेधक भाषा अपने आधारक प्रश्न उठा सकैत अछि।

ई दार्शनिक विडम्बना तत्त्वमीमांसाक पुनरागमनक एक कारण बनैत अछि।

मुदा पुनरागमन पुरान रूपमे नहि हो।

नव तत्त्वमीमांसा केँ भाषा-विश्लेषण सँ सीखबाक, विज्ञान सँ, ज्ञानमीमांसा सँ, मनोविज्ञान सँ, आ आधुनिक तर्क सँ।

परम्परा जँ सीखैत रहय, तखने परम्परा जीवित।

तत्त्वमीमांसा जँ आत्मालोचना करैत रहय, तखने ओकर औचित्य टिकत।

औचित्य केवल पुरान प्रतिष्ठा नहि; वर्तमानमे प्रश्नक आवश्यकता सिद्ध करब अछि।

मनुष्य जखन धरि पूछत— “हम के?” “जगत की?” “सत्यक आधार की?” “चेतना कोना सम्भव?” “स्वतन्त्रता केतेक?” “मृत्यु पाछाँ अर्थक प्रश्न किएक उठैत?” तखन धरि तत्त्वमीमांसा पूर्णतः मौन नहि भऽ सकत।

उत्तर बदलत, भाषा बदलत, पद्धति बदलत, मुदा प्रश्नक मूल बेचैनी जीवित रहत।

दर्शनक गरिमा कदाचित् एहिए बेचैनी केँ सभ्य भाषा देबमे अछि।

न अन्धविश्वास, न अन्धनिषेध।

न केवल अनुभव, न केवल कल्पना।

न केवल परम्परा, न केवल नवीनता।

बीचमे एक दीर्घ साधना— तर्क, अनुभव, आत्मपरीक्षण, आ सत्यक प्रति विनम्र आग्रह।

दृश्य संसार हमरा बहुत किछु दैत अछि; मुदा मनुष्य दृश्यक पाछाँ अदृश्य आधारक प्रश्न पूछि दैत अछि।

एहि प्रश्नक कारण हम केवल देखनिहार प्राणी नहि, अर्थ खोजयवला प्राणी छी।

आ तत्त्वमीमांसा एहि अर्थ-खोजक एकटा प्राचीन, मुदा अखनो जीवित नाम अछि।

सृजनक भीतर मनुष्य

मनुष्य केवल जन्मल देह नहि, केवल समाजक अंक नहि, केवल इतिहासक भीड़मे एकटा चलैत नाम नहि।

मनुष्य अपन जीवन केँ अर्थ देबाक क्षमता अछि। जे भेटल, ओकरा जकाँ-त-काँ स्वीकारि शान्त नहि बैसैत; ओ बदलैत अछि, गढ़ैत अछि, नव अर्थ रचैत अछि।

एहि रचना सँ संस्कृति जन्मैत अछि।

धरती पहिने सँ छल, मुदा खेत मनुष्य बनौलक; ध्वनि पहिने सँ छल, मुदा गीत मनुष्य रचलक; पत्थर पहिने सँ छल, मुदा मूर्ति, घर, सीमा, स्मारक— मनुष्यक मूल्यबोधक आकार बनल।

जीवन केवल जैविक क्रम रहित, तँ फूल सुगन्ध धरि सीमित रहित, मुदा मनुष्य फूलमे सौन्दर्य देखैत अछि, सौन्दर्यमे स्मृति, स्मृतिमे सम्बन्ध, सम्बन्धमे मूल्य।

यहीं सँ मानव-जगत प्रकृति सँ अलग नहि, मुदा प्रकृति पर अर्थक नवा परत बनैत अछि।

नन्दकिशोर देवराजक चिन्तन एहि परत केँ मानव जीवनक केन्द्रमे राखैत अछि।

मनुष्यक वास्तविकता केवल “जे अछि” नहि, “जे हो सकैत अछि” सेहो।

सम्भावना मानव जीवनक गुप्त दिशा अछि।

बालकमे भाषा, बीजमे वृक्ष, प्रश्नमे उत्तर, दुःखमे परिवर्तनक एकटा सम्भावना रहैत अछि।

मुदा सम्भावना अपने सम्पूर्ण नहि होइत। ओकरा चाही चयन, प्रयत्न, जोखिम, आ सृजन।

मनुष्य अपन परिस्थिति सँ बनैत अछि, मुदा केवल परिस्थिति द्वारा सम्पूर्ण निर्धारित नहि।

ओकर चारूकात इतिहासक दीवार, परम्पराक खिड़की, समाजक नियम, अर्थव्यवस्थाक दबाव, भाषाक सीमा— सभ अछि; मुदा एहि सभक भीतर ओ प्रश्न कऽ सकैत अछि।

प्रश्न स्वतन्त्रताक पहिल साँस अछि।

“ई एना किएक?” “ई बदलि सकैत अछि कि नहि?” “हमरा की चुनबाक अछि?”

एहि तीन प्रश्नमे मनुष्यक सृजनात्मकता धीरे-धीरे जागैत अछि।

स्वतन्त्रता खाली बन्धनक अभाव नहि। यदि दुआर खुलल हो मुदा बाहर जाएबाक कोनो दिशा नहि, तँ खुलापन अर्थहीन भऽ सकैत अछि।

स्वतन्त्रता केँ मूल्य चाही।

ककरा लेल चुनब? की बनब? ककरा बचाएब? ककरा अस्वीकारब?

चयनक प्रत्येक क्षण मनुष्य केँ अपन उत्तरदायित्वक समक्ष ठाढ़ करैत अछि।

यहीं मानववाद सजावटी शब्द नहि रहैत; ओ नैतिक प्रश्न बनैत अछि।

मनुष्यक गरिमा ई नहि जे ओ सर्वशक्तिमान अछि; गरिमा ई जे सीमित होइत हुँ ओ निर्णय करैत अछि।

ओ भूल कऽ सकैत अछि, फेर सुधारि सकैत अछि; ओ हिंसा रचि सकैत, करुणा सेहो; ओ व्यवस्था बनबैत, विद्रोह सेहो; ओ परम्परा पबैत, नवा परम्परा सेहो बनबैत।

सृजनात्मकता केवल चित्रकारक हाथमे नहि, कविक पंक्तिमे नहि, वैज्ञानिकक प्रयोगमे नहि।

माय बालक केँ जेना पालैत अछि, किसान माटि सँ अन्न उगबैत, शिक्षक प्रश्नक वातावरण बनबैत, नागरिक अन्याय केँ चुनौती दैत— सभ ठाम सृजनक एक रूप अछि।

सृजन नव वस्तु मात्र नहि, नव सम्बन्ध सेहो।

एकटा समाज जतय मनुष्य दोसर मनुष्य केँ साधन बुझैत, ओ समाज तकनीकमे उन्नत हो सकैत अछि, मुदा मानवतामे गरीब।

मानववाद पूछैत अछि— मनुष्यक उपयोग की? आ तुरन्त प्रश्न बदलैत अछि— मनुष्य “उपयोगक वस्तु” किएक हो?

व्यक्ति स्वयं मूल्य अछि।

ओकर जीवन केवल राज्यक परियोजना नहि, बाजारक ग्राहक नहि, सम्प्रदायक संख्या नहि, परिवारक प्रतिष्ठाक साधन नहि।

व्यक्ति अपन अनुभव, चयन, दुःख, आ सम्भावनाक केन्द्र अछि।

मुदा व्यक्तिक अर्थ एकाकीपन नहि।

“हम” “हमरा” बिनु अधूरा, आ “हमरा” “हम सभ” बिनु अधूरा।

मनुष्य सम्बन्धमे विकसित होइत अछि। भाषा दोसर सँ भेटैत अछि; मूल्य समाज सँ; स्मृति पीढ़ीसँ; आ विरोधक भाषा सेहो ककरो पूर्व संघर्ष सँ।

तँ मानववाद व्यक्तिवादक बन्द कोठरी नहि। ओ व्यक्ति आ समाजक बीच एकटा सजीव पुल अछि।

समाज व्यक्ति कें आकार दैत अछि; व्यक्ति समाज कें फेर आकार देत अछि।

ई एकतरफा यात्रा नहि।

संस्कृति एहि पारस्परिक सृजनक दीर्घ नदी अछि।

परम्परा एहि नदीक पुरान धार।

ओकरा रोकि तालाब बनाउ, तँ सड़ि सकैत अछि; ओकरा काटि फेंकू, तँ नदी सूखि सकैत अछि।

जीवित परम्परा बहैत अछि। ओ अपन भीतर स्मृति राखैत, मुदा नवा जल स्वीकारैत अछि।

नव मूल्य पुरान मूल्यसँ सदैव युद्ध नहि करैत; कखनो ओ ओकरा नव परिस्थिति मे फेर अर्थ देत अछि।

करुणा पुरान हो सकैत अछि, मुदा शरणार्थीक प्रश्नमे ओ नव चुनौती बनैत अछि। न्याय पुरान शब्द, मुदा औद्योगिक असमानतामे ओकर अर्थ नवा। स्वतन्त्रता पुरान आदर्श, मुदा स्त्री, दलित, श्रमिक, अल्पसंख्यक, विकलांग मनुष्यक अनुभवमे ओ अलग-अलग दरबज्जा खोलैत अछि।

मानव मूल्य आकाशमे टाँगल तारा नहि, जीवनक संघर्षमे परीक्षित प्रकाश अछि।

मूल्यक अर्थ केवल “हुनका मानल गेल” नहि। कतेक मान्यता दीर्घकाल धरि मानल गेल, मुदा अन्याय छल।

तँ परम्पराक आयु सत्यक प्रमाण नहि।

आ नवताक चमक श्रेष्ठताक प्रमाण नहि।

विवेक दुनू कें जाँचैत अछि।

मानववादक सृजनात्मक रूप यहीं कठिन होइत अछि— हम मूल्य कें इतिहासमे जन्मल बुझू, मुदा केवल इतिहासक कैदी नहि मानू।

मनुष्य अपन मूल्यक समीक्षा कऽ सकैत अछि।

“हम जे मानैत छी, ओ मनुष्यक विकास करैत अछि कि रोकैत?”

ई प्रश्न मूल्यक कसौटी बनि सकैत अछि।

विकास केवल धनक वृद्धि नहि। यदि धन बढ़ल, मुदा भय बढ़ल; उत्पादन बढ़ल, मुदा अपमान बढ़ल; शहर बढ़ल, मुदा मनुष्यक अकेलापन बढ़ल— तँ विकासक गणना फेर करबाक पड़त।

मनुष्यक विकास ओकर सृजनात्मक सामर्थ्यक विस्तार अछि।

शिक्षा एहि लेल रटबाक मशीन नहि। शिक्षा मनुष्य कें स्वयं सोचबाक, प्रश्न करबाक, सृजन करबाक, आ दोसरक स्वतन्त्रता सम्मान करबाक क्षमता दियौ।

जँ शिक्षा केवल नौकरीक कौशल दे, मुदा विवेक नहि, तँ प्रशिक्षित हाथ अमानवीय व्यवस्था सेहो बहुत दक्षतासँ चला सकैत अछि।

तँ ज्ञानक संग मूल्यबोध आवश्यक।

विज्ञान मनुष्यक शक्ति बढ़बैत अछि; मानववाद पूछैत अछि— ई शक्ति केकरा लेल?

तकनीक समय बचबैत अछि; मानववाद पूछैत अछि— बचल समयमे मनुष्य की बनैत अछि?
राजनीति व्यवस्था बनबैत अछि; मानववाद पूछैत अछि— व्यवस्थामे व्यक्ति कतेक स्वतन्त्र आ सम्मानित?
अर्थव्यवस्था वस्तु बाँटैत अछि; मानववाद पूछैत अछि— अवसर सेहो बाँटल गेल कि नहि?
सृजनात्मक मानववाद प्रत्येक क्षेत्रक बीच मनुष्य केँ फेर केन्द्रमे रखैत अछि।
मुदा केन्द्रक अर्थ अहंकार नहि। मनुष्य प्रकृतिक मालिक मात्र नहि, ओ प्रकृतिक अंश सेहो।
जँ सृजन विनाशक मूल्य पर हो, तँ सृजनात्मकता अपने विरुद्ध जा सकैत अछि।
वन काटि महल बनाउ, मुदा श्वासक हवा गुमाउ— ई विकासक विडम्बना।
मानववादक नवा अर्थ प्रकृति सँ सहअस्तित्व सेहो।
किएक तँ मनुष्यक भविष्य धरतीक भविष्य सँ अलग नहि।
मानव जीवनक एकटा संकट शक्ति अछि।
शक्ति जखन साधन रहैत अछि, कार्य सम्भव बनबैत; मुदा शक्ति जखन लक्ष्य बनि जाए, मनुष्य साधन बनि जाइत अछि।
राज्यक शक्ति, धनक शक्ति, ज्ञानक शक्ति, धर्मक शक्ति, बहुमतक शक्ति— सभक समक्ष मानव गरिमाक प्रश्न ठाढ़ रहबाक चाही।
“की ई व्यवस्था मनुष्यक स्वतन्त्र सृजनात्मकता बढ़बैत अछि, कि ओकरा चुप करैत?”
ई प्रश्न लोकतन्त्रक हृदयमे रहबाक चाही।
लोकतन्त्र केवल मतपत्र नहि; ओ असहमतिक अधिकार, विचारक विविधता, आ व्यक्ति केँ भय बिनु रचबाक जगह।
जतय केवल एक विचार ठीक घोषित, ओतय सृजन धीरे-धीरे सूखैत अछि।
सृजन केँ खुलल हवा चाही।
मुदा खुलापन उत्तरदायित्व बिनु अराजकता बनि सकैत अछि।
स्वतन्त्रता आ जिम्मेदारी दू अलग मार्ग नहि; एकहि बाटक दू किनार।
मनुष्य जे चुनैत अछि, ओ केवल अपन जीवन नहि, दोसरक जीवनो छूबैत अछि।
एहि कारण नैतिकता बाहरी डंडा मात्र नहि; ओ सम्बन्धक चेतना अछि।
“हमर निर्णय सँ ककर जीवन बदलत?”
एहि प्रश्नमे करुणा जन्मैत अछि।
करुणा कमजोरी नहि। दोसरक पीड़ा केँ ज्ञानमे स्थान देबाक क्षमता अछि।
अहिंसा केवल प्रहार नहि करब नहि; दोसरक अस्तित्व केँ अपन मूल्य-जगतमे ठाम देब सेहो।
मानववाद एहि विस्तृत संवेदनाक दार्शनिक रूप बनि सकैत अछि।
नन्दकिशोर देवराजक दृष्टिमे मानव जीवनक सार स्थिर परिभाषामे बन्द नहि।
मनुष्य बनैत रहैत अछि।
ओ अपन कार्यसँ, चयनसँ, सम्बन्धसँ, स्मृतिसँ, आ सृजनसँ अपन रूप बनबैत अछि।
एहिए कारण मानव जीवनमे आशा सम्भव अछि।
यदि मनुष्य पूर्णतः पूर्वनिर्धारित रहित, सुधारक अर्थ नहि रहित।
यदि समाज अपरिवर्तनीय रहित, क्रान्ति, सुधार, शिक्षा, संवाद— सभ व्यर्थ रहित।
सृजनात्मकता कहैत अछि— वर्तमान अन्तिम नहि।
ई वाक्य आशाक वाक्य अछि, मुदा आलस्यक नहि।
सम्भावना केँ वास्तविकता बनाबय लेल कार्य चाही।

मानववाद स्वप्न देखैत अछि, मुदा पयर धरती पर रखैत अछि।

ओ समाजक वास्तविक विरोध, विषमता, हिंसा, प्रतिस्पर्धा, आ शोषण केँ अदृश्य नहि करैत।

सृजनात्मक दृष्टि समस्या केँ सजावटी पर्दा सँ नहि ढाँकैत; ओ समस्या भीतर परिवर्तनक बिन्दु खोजैत अछि।

कखनो परिवर्तन कानून सँ, कखनो शिक्षा सँ, कखनो कला सँ, कखनो प्रतिरोध सँ, कखनो आत्मालोचना सँ।

मानव संस्कृतिक इतिहास एहि अनेक रूपक संयुक्त कथा अछि।

कला मनुष्यक मूल्य-जगत केँ संवेदना दैत अछि।

कविता जे तथ्य नहि कहि सकैत, ओ अनुभूति कहैत अछि। नाटक दोसर जीवनमे क्षण भरि प्रवेश करबैत अछि। चित्र मौन केँ आकार दैत अछि।

एहि कला-संसारमे मनुष्य अपन सम्भावना केँ पहिने कल्पनामे देखैत, फेर जीवनमे खोजैत अछि।

सृजनात्मक मानववाद कला केँ विलास नहि मानैत; ओ मानव आत्म-विस्तारक एक महत्वपूर्ण रूप अछि।

विज्ञान सत्यक खोज, कला अर्थक खोज, नैतिकता उचितक खोज, दर्शन एहि सभ खोजक सम्बन्धक प्रश्न।

मनुष्यक पूर्ण जीवन एकहि क्षेत्रमे नहि समाइत।

तँ मानववाद एकांगी नहि हो सकैत।

केवल बुद्धि, हृदय बिनु, कठोर हो सकैत; केवल भावना, विवेक बिनु, भ्रमित।

सृजनात्मक मनुष्य दुनू केँ एक-दोसरक शत्रु नहि मानैत।

विवेक संवेदना केँ दिशा दैत, संवेदना विवेक केँ मनुष्यता।

एहि मेलमे मूल्य जन्मैत अछि।

समाजक संकट कतेक बेर मूल्यक संकट होइत अछि।

लोक कहैत अछि— “सभ चलैत अछि।” मानववाद पूछैत अछि— “चलैत अछि, मुदा मनुष्य केँ कतय लऽ जाइत अछि?”

सफलता यदि छल पर टिकैत, तँ सफलता शब्दक अर्थ फेर लिखबाक पड़ैत।

प्रतिष्ठा यदि दोसरक अपमान पर, तँ प्रतिष्ठा मानवीय मूल्य नहि।

सृजनात्मक जीवन मूल्यक नवा क्रम बनबैत अछि।

किछु मूल्य जीवन केँ विस्तृत करैत— स्वतन्त्रता, न्याय, करुणा, मैत्री, सत्यनिष्ठा, सृजन, सहयोग।

किछु प्रवृत्ति मनुष्य केँ छोट करैत— लोभ, घृणा, अपमान, अन्ध शक्ति, दमन।

दार्शनिकक काज सूची बनाबय मात्र नहि; ई देखब जे जीवनक ठोस परिस्थिति मे कुन मूल्य कुन रूपमे लागू हो।

किएक तँ मूल्यक संघर्ष होइत अछि। स्वतन्त्रता आ सुरक्षा, व्यक्ति आ समाज, परम्परा आ नवता, प्रतिस्पर्धा आ सहयोग— सभ समय एक सरल उत्तर नहि।

सृजनात्मक विवेक एहि तनावमे नवा संतुलन रचैत अछि।

तैयार सूत्र जीवनक सभ समस्या हल नहि करैत।

मनुष्य केँ स्थिति बुझि, मूल्य तौलि, दोसरक दृष्टि सुनि, फेर निर्णय करबाक पड़ैत अछि।

यहीं नैतिक परिपक्वता जन्मैत अछि।

मानववादक अन्तिम विश्वास कदाचित् मनुष्यक पूर्णता नहि, ओकर सुधार-क्षमता अछि।

मनुष्य दोषपूर्ण अछि, मुदा दोष पहचानि सकैत अछि। ओ हिंसक हो सकैत, मुदा अहिंसा सीखि सकैत। ओ स्वार्थी, मुदा सहयोग रचि सकैत।

ओ परम्पराक कैदी, मुदा परम्परा केँ नव अर्थ देि सकैत।

एहि “सकैत अछि” मे सृजनात्मक मानववादक सभसँ पैघ आशा अछि।

भविष्य हमरा तैयार नहि भेटत।

भविष्य निर्माणक वस्तु अछि।

हरेक विद्यालयमे, हरेक परिवारमे, हरेक अदालतमे, हरेक खेतमे, हरेक प्रयोगशालामे, हरेक कविता मे, हरेक नागरिक निर्णयमे भविष्यक एक छोट अंश रचल जाइत अछि।

यदि हम मनुष्य केँ केवल साधन बनायब, भविष्य यन्त्रवत् होएत।

यदि मनुष्यक गरिमा, स्वतन्त्रता, सृजनात्मकता, आ पारस्परिक उत्तरदायित्व केन्द्रमे राखब, तँ संस्कृति जीवित रहत।

संस्कृति केवल संग्रहालयक वस्तु नहि, हरेक पीढ़ीक रचना अछि।

हम पूर्वजक गीत पबैत छी, मुदा अपन स्वर जोड़ैत छी। हम मूल्य पबैत छी, मुदा परीक्षा करैत छी। हम भाषा पबैत छी, मुदा नव शब्द बनबैत छी। हम समाज पबैत छी, मुदा ओकर रूप बदलि सकैत छी।

एहि उत्तराधिकार आ सृजनक बीच मानव जीवनक असली नाटक चलैत अछि।

मनुष्य पूर्ण लिखल पुस्तक नहि, चलैत पाण्डुलिपि अछि।

हरेक निर्णय एक पंक्ति, हरेक सम्बन्ध एक अनुच्छेद, हरेक संघर्ष एक संशोधन, हरेक सृजन नवा अध्याय।

आ पुस्तकक अन्तिम पृष्ठ अखनो लिखल नहि।

एहिए कारण आशा केवल भावना नहि, दार्शनिक सम्भावना अछि।

जतय मनुष्य स्वयं केँ बदलि सकैत, ओतय समाजो बदलि सकैत।

जतय समाज नवा मूल्य स्वीकारि सकैत, ओतय संस्कृति जड़ नहि।

आ जतय संस्कृति सृजनशील अछि, ओतय मानवता अपन भविष्य अपनहि हाथे फेर लिखि सकैत अछि।

मूल्यक भीतर संस्कृति

संस्कृति केवल पुरान भवनक छाया नहि, न उत्सवक बाहरी सजावट, न संग्रहालयमे राखल वस्तुसभक मौन पंक्ति।

संस्कृति तऽ मनुष्यक भीतर जागल मूल्य-बोधक धीमा ज्योति अछि, जकर प्रकाशमे ओ अपन जीवन, अपन समाज, अपन इतिहास आ अपन भविष्य केँ अर्थ दैत अछि।

धरती पर असंख्य जीव जन्मैत अछि, मुदा मनुष्य केवल जीबैत नहि, ओ पूछैत अछि— “हम केना जीबू?”

एहि छोट प्रश्नमे प्रकृति सँ संस्कृति धरि सम्पूर्ण यात्रा समायल अछि।

भूख प्रकृतिक देन, मुदा भोजन बाँटबाक रीति संस्कृति।

भय देहक सहज प्रतिक्रिया, मुदा निर्बल केँ बचेबाक निर्णय संस्कृति।

शक्ति शरीर आ साधनक क्षमता, मुदा शक्ति पर संयम मूल्य।

मनुष्य प्रकृतिक पुत्र, मुदा केवल प्रकृति नहि; ओ स्मृति बनबैत अछि, अर्थ रचैत अछि, चिन्ह गढ़ैत अछि, भविष्यक कल्पना करैत अछि।

यहीं सँ संस्कृतिक पहिल अक्षर लिखाइत अछि।

गोविन्द चन्द्र पाण्डेयक दृष्टिमे मनुष्यक जीवन केवल घटनाक सिलसिला नहि, मूल्यक खोज सेहो अछि।

हम जे करैत छी, ओ केवल ‘घटना’ नहि; कखनो ओ उचित-अनुचित, सुन्दर-असुन्दर, श्रेष्ठ-हीनक प्रश्न सेहो उठबैत अछि।

तथ्य कहैत अछि— “ई भेल।” मूल्य पूछैत अछि— “ई होएबाक चाही छल कि नहि?”

इतिहास एहि दुनू आवाजक बीच अपन दीर्घ कथा लिखैत अछि।

राजा बदलैत छथि, राज्य बदलैत अछि, वस्त्र, औजार, भाषा, नगर, व्यापारक रूप बदलैत अछि; मुदा इतिहासक गहिर धारा तखने बुझाइत अछि जखन हम पूछैत छी— कुन आदर्श एहि परिवर्तनक भीतर मनुष्य केँ दिशा देलक?

संस्कृति समयक बाहर नहि, समयक भीतर मूल्यक आकार ग्रहण करैत अछि।

काल केवल घड़ीक सुई नहि; ओ अनुभवक संचय, स्मृतिक तह, आ नव सम्भावनाक दुआर।
 एक पीढ़ी दोसर पीढ़ी केँ घर दैत अछि, शब्द दैत अछि, रीति दैत अछि, कथा दैत अछि, आ कखनो अधूरा प्रश्न सेहो।
 ई विरासत पत्थर नहि, बीज अछि।
 बीज केँ जसक-तस राखल जाए, तँ ओ संग्रह होएत; माटिमे रोपल जाए, तँ नव पात बनत।
 परम्परा एहि जीवित बीजक नाम अछि।
 परम्परा अतीतक आज्ञा मात्र नहि, वर्तमानक संवाद सेहो।
 जे पूर्वज कहि गेलाह, ओ सम्मान योग्य हो सकैत अछि; मुदा सम्मानक अर्थ प्रश्न छोड़ि देब नहि।
 किएक तँ जँ प्रश्न मरि जाए, परम्परा जीवित स्रोत सँ बन्द जलाशय बनि सकैत अछि।
 आ आधुनिकता? ओहो केवल नव चीजक आकर्षण नहि।
 नव मशीन, नव सड़क, नव भवन, नव संचार— सभ आधुनिक हो सकैत अछि, मुदा मनुष्यक चेतना केवल साधनसँ आधुनिक नहि होइत।
 आधुनिकता एहन विवेक माँगैत अछि जे अपन विरासत केँ न अन्धतासँ पूजय, न लाज मानि फेंकि देय।
 किछु पुरान आइयो जीवनदायी, किछु पुरान अन्यायक बोझ।
 किछु नव मुक्ति देत, किछु नव मनुष्य केँ वस्तु बना सकैत अछि।
 तँ विवेक कालक पहरेदार बनय।
 संस्कृति-दर्शन ई पहरा अछि— कुन मूल्य बचाउ? कुन रूप बदलू? कुन प्रथा छोड़ू? कुन नवता स्वीकारू?
 मनुष्यक जीवन केवल उपभोगक क्रम नहि।
 यदि बाजार हरेक चीजक दाम लिखि दे, तैयो सभ वस्तु बिकाऊ नहि।
 विश्वासक दाम? मित्रताक दाम? न्यायक दाम? करुणाक दाम? गरिमाक दाम?
 किछु मूल्य मूल्य-सूची सँ बाहर रहैत अछि।
 संस्कृति एहि ‘बाहर’ केँ मनुष्यक भीतर बचा कऽ रखैत अछि।
 धन आवश्यक, मुदा धनक उपयोगक दिशा मूल्य सँ निर्धारित।
 ज्ञान शक्तिशाली, मुदा ज्ञानक लक्ष्य विवेक माँगैत अछि।
 विज्ञान प्रकृतिक रहस्य खोलैत अछि, मुदा विज्ञान स्वयं ई निर्णय नहि करैत जे शक्ति ककर हितमे उपयोग हो।
 तँ वैज्ञानिक प्रगति आ सांस्कृतिक प्रगति एकहि वस्तु नहि।
 एक समाज तकनीकमे आगाँ रहि सकैत अछि, मुदा मनुष्यता मे पाछाँ।
 एक देश आकाश छू सकैत अछि, मुदा पड़ोसीक दुख नहि देखय— तँ प्रश्न बचल रहैत अछि।
 प्रगति की?
 गति बढ़ब कि दिशा सुधरब?
 साधन बढ़ब कि मनुष्यक गरिमा?
 भवन ऊँच होएब कि चेतना?
 संस्कृति-दर्शन एहि शब्दक भीतरक द्वन्द्व देखैत अछि।
 मनुष्य प्रकृति पर शासनक सपना देखलक, नदी मोड़लक, पर्वत काटलक, धातु पिघलौलक, आकाश मापलक।
 मुदा जखन प्रकृति केँ केवल वस्तु मानल गेल, तखन मनुष्य अपनहि आधार सँ दूर होएब लगल।
 संस्कृति प्रकृति-विरोध नहि, प्रकृति सँ अर्थपूर्ण सम्बन्ध।
 वन केवल लकड़ी नहि; नदी केवल जल नहि; माटि केवल उत्पादनक साधन नहि।

मनुष्यक स्मृति, सौन्दर्य, आ जीवनक सम्बन्ध ए सभमे जुड़ल रहैत अछि।
 प्रकृति केँ केवल बाजारक भाषा मे पढ़ब संस्कृतिक आधा पाठ अछि।
 मनुष्यक चेतना दू दिशामे चलैत अछि— बाहर संसार दिस, आ भीतर आत्मा दिस।
 बाहर ओ वस्तु जानैत अछि; भीतर ओ पूछैत अछि— “हमर चाह की?” “हमर भय की?” “हमर आदर्श की?”
 एहि आत्मपरीक्षण बिनु संस्कृति केवल बाहरी रूपक सूची बनि जाएत।
 मूल्य भीतर जन्मैत अछि, मुदा समाजमे आकार पबैत अछि।
 एकटा बालक भाषा परिवार सँ सीखैत अछि, आचार समाज सँ, कथा परम्परा सँ, मुदा एक दिन ओ अपन विवेक सँ ई सभ केँ फेर जाँचैत अछि।
 एही पुनरावलोकनमे व्यक्ति जन्मैत अछि।
 व्यक्ति समाजक विरोधी नहि, समाजक सचेत सहभागी।
 समाज व्यक्तिक कारागार नहि, मुदा ओ बिनु समाजक स्वयं पूर्णो नहि।
 दुनू बीच एकटा जीवित तनाव अछि— स्वतन्त्रता आ उत्तरदायित्व।
 स्वतन्त्रता “हम जे चाही से करब” मात्र नहि; स्वतन्त्रता अपन कर्मक अर्थ अपन विवेकसँ चुनब।
 आ जिम्मेदारी एहि चुनावक फल स्वीकारब।
 संस्कृति मनुष्य केँ केवल नियम नहि दैत, चयनक भाषा सेहो दैत अछि।
 कखनो नियम जीवन बचबैत अछि, कखनो नियम अन्याय बचबैत अछि।
 तँ नैतिक चेतना नियम सँ ऊपर उठि ओकर औचित्य पूछैत अछि।
 “सभ एना करैत अछि” ककरो कर्म केँ ठीक सिद्ध नहि करैत।
 इतिहासमे बहुत अन्याय परम्पराक नाम पर दीर्घ समय धरि चलल।
 मुदा मानव-मूल्यक चेतना कखनो-कखनो एकटा व्यक्ति सँ आरम्भ भेल, जे भीड़ सँ अलग कहलक— “ई उचित नहि।”
 एहि एक वाक्यमे संस्कृतिक नव जन्म सम्भव अछि।
 इतिहास केवल जे भेल ओकर लेखा नहि, जे बदलि सकैत छल ओकर सम्भावनासभक छाया सेहो।
 मनुष्य इतिहासक उत्पाद अछि, मुदा केवल उत्पाद नहि; ओ इतिहास केँ फेर दिशा देबाक सामर्थ्य रखैत अछि।
 यहीं सर्जनशीलता अछि।
 संस्कृति अतीतक अनुकरण नहि, मूल्यक सर्जनात्मक पुनर्रचना।
 एकहि आदर्श हरेक युगमे एकहि रूप नहि लैत।
 न्याय राजतन्त्रमे एक प्रश्न, लोकतन्त्रमे दोसर; परिवारमे एक रूप, राज्य मे दोसर; अर्थव्यवस्थामे तेसर।
 मूल्यक आत्मा स्थिर हो सकैत अछि, मुदा ओकर रूप इतिहासक संग बदलैत।
 एहि लेल मूल्य केँ न निर्जीव नियम बनाउ, न क्षणिक रुचि।
 मूल्य मानवीय चेतनाक दीर्घ संवाद अछि।
 सत्य, शिव, सुन्दर— ई शब्द केवल दार्शनिक अलंकार नहि; मानव जीवनक तीन दिशासूचक बनि सकैत अछि।
 सत्य ज्ञानक अनुशासन, शिव कल्याणक आकांक्षा, सुन्दर जीवनक सामंजस्यक अनुभूति।
 जखन ई तीनू एक-दोसर सँ कटि जाइ, तखन संस्कृति विखण्डित होइत अछि।
 ज्ञान यदि कल्याण बिनु, शक्ति बनि सकैत अछि।
 कल्याण यदि सत्य बिनु, अन्ध भावना।

सुन्दरता यदि नैतिकता बिनु, केवल मोहक आवरण।

संस्कृति-दर्शन एहि विभाजनक बीच एकत्व खोजैत अछि।

ई एकत्व समानता नहि।

विविधता संस्कृतिक प्राण अछि।

भाषासभ अलग, रीतिसभ अलग, कला अलग, धर्मक रूप अलग; मुदा मनुष्यक गरिमा एक साझा आधार बनि सकैत अछि।

एकता सभकेँ एक रंगमे रंगब नहि; दुनू रंगक बीच सम्मानक दूरी बचा कऽ एक चित्र बनब।

भारतीय संस्कृति एहन अनेक धारा सँ बनल— वैदिक स्मृति, श्रमणक प्रश्न, भक्तिक करुणा, सूफीक प्रेम, लोकक अनुभव, क्षेत्रीय भाषाक स्वर, आ आधुनिक जनतन्त्रक आकांक्षा।

एहि सभकेँ एकहि सूत्रमे बाँधबाक प्रयत्न सहज नहि।

मुदा संस्कृति सहज उत्तरक नाम नहि, सहजीवनक कठिन अभ्यास अछि।

धर्म एहि अभ्यासमे महत्त्वपूर्ण धारा रहल।

मुदा धर्म केवल कर्मकाण्ड नहि, न केवल संप्रदायक सीमा।

जखन धर्म मनुष्यक भीतर सत्य, संयम, करुणा, आत्मनियन्त्रण आ परहितक प्रेरणा जगबैत अछि, तखन ओ संस्कृति केँ नैतिक आधार दैत अछि।

जखन ओ अहंकार, घृणा, भेदभावक औजार बनैत अछि, तखन संस्कृति ओकरा प्रश्न करबाक अधिकार रखैत अछि।

आध्यात्मिकता जगत सँ पलायन नहि हो।

यदि आत्मबोध मनुष्य केँ दोसरक पीड़ा सँ दूर करय, तँ ओ अधूरा।

भीतरक शान्ति बाहरक अन्याय प्रति मौन बनबाक कारण नहि।

मानव-मूल्य भीतरक साधना आ बाहरी व्यवहार दुनू माँगैत अछि।

जतय करुणा केवल ध्यानमे अछि, व्यवहारमे नहि, ओतय संस्कृति दू भागमे टूटि जाइत अछि।

गोविन्द चन्द्र पाण्डेयक संस्कृति-दृष्टि मनुष्य केँ इतिहासक बीच आत्मचेतन प्राणी रूपमे देखैत अछि।

ओ अपन अतीतसँ बनल, मुदा भविष्य लेल उत्तरदायी।

ओ समाज सँ सीखैत, मुदा समाज केँ बदलि सकैत।

ओ प्रकृतिक अंश, मुदा मूल्यक सर्जक।

एहि जटिलतामे संस्कृतिक असली स्वरूप अछि।

अर्थव्यवस्था संस्कृति केँ प्रभावित करैत अछि; राजनीति सेहो, विज्ञान सेहो, तकनीक सेहो।

मुदा संस्कृति ए सभक मात्र परिणाम नहि।

ओ मनुष्यक भीतरक अर्थ-दृष्टि सेहो, जाहिसँ ओ साधनक उपयोग आ संस्थाक लक्ष्य निर्धारित करैत अछि।

एकहि तकनीक जीवन बचा सकैत अछि, आ विनाशो करि सकैत अछि।

फरक मशीनमे नहि, मूल्य-दृष्टिमे अछि।

तँ आधुनिक समाजक प्रश्न केवल “हम की बना सकैत छी?” नहि, “हम की बनएबाक चाही?” सेहो।

ई दोसर प्रश्न संस्कृति-दर्शनक हृदय अछि।

उद्योग सुविधा दैत अछि, मुदा श्रमक गरिमा बचल कि नहि?

नगर अवसर दैत अछि, मुदा मनुष्य एकान्तमे डूबि रहल कि नहि?

संचार दूरी घटबैत अछि, मुदा हृदयक दूरी?

ज्ञान असीम होइत अछि, मुदा बुद्धि सँ विवेक धरि कतेक दूरी बचल?

एहि प्रश्नसभ बिनु आधुनिकता केवल वेग बनि जाएत।

संस्कृति वेग केँ दिशा दैत अछि।

पश्चिम एकरूप नहि, भारत सेहो नहि।

दुनू केँ एक-दोसरक विरुद्ध दू कठोर दीवार बनाउ तऽ इतिहासक सत्य टूटि जाएत।

सभ सभ्यता संवाद, संघर्ष, लेन-देन, अनुवाद, स्वीकार-अस्वीकार सँ बदलल अछि।

शुद्धता बहुधा कल्पना; जीवित संस्कृति सदैव संपर्कमे।

मुदा संपर्क आत्मविलोप नहि।

दोसरासँ सीखू, मुदा अपन अनुभवक कसौटी पर।

नव विचार लिअ, मुदा ई पूछू— ई हमर समाजमे कुन रूप धारण करत?

एही विवेकमे संस्कृतिक स्वाधीनता अछि।

नकल तेज बाट, मुदा गन्तव्य अपन नहि।

अन्ध अस्वीकार दोसर अतिशय।

बीचमे रचनात्मक आत्मविश्वासक राह— जतय मनुष्य विश्वक संग बात करैत, मुदा अपन स्वर सँ।

भारतीय सामाजिक परम्परासभ बहुत मूल्य बचौने अछि, आ बहुत अन्यायो।

परिवार सुरक्षा दैत, मुदा कखनो व्यक्ति केँ बाँधैत।

समुदाय सहयोग दैत, मुदा कखनो भिन्नता केँ दबबैत।

धर्म अर्थ दैत, मुदा कखनो विभाजन।

परम्परा स्मृति दैत, मुदा कखनो जड़ता।

तैं संस्कृति-दर्शन न उत्सव मात्र, न अभियोग-पत्र मात्र।

ओ विवेकपूर्ण समीक्षा अछि।

जे अच्छा अछि, ओ बचाउ; जे अन्यायपूर्ण, ओ बदलू; जे नव आवश्यक, ओ गढ़ू।

ई तीनू क्रिया संस्कृतिक जीवनक तीन साँस अछि।

अतीत केँ पूर्ण रूपेँ अस्वीकार करब स्मृतिहीनता।

अतीत केँ पूर्ण रूपेँ स्वीकार करब विवेकहीनता।

संस्कृति स्मृति आ विवेकक मिलन-बिन्दु।

भविष्य एहि मिलनक सर्जनात्मक फल।

इतिहास मनुष्यक बाहर नहि बहैत; ओ मनुष्यक निर्णयमे रोज जन्मैत अछि।

आइ जे मूल्य हम अपन बच्चासभ केँ दैत छी, काल्हिक संस्कृति ओही सँ बनत।

आइ जे अन्याय हम सामान्य मानि लैत छी, काल्हिक इतिहास ओकर लेखा माँगत।

आइ जे करुणा हम व्यवहारमे उतारैत छी, ओ भविष्यक एकटा नव सम्भावना बनत।

तैं संस्कृति विशाल ग्रन्थक विषय होइत हुएँ दैनिक जीवनक प्रश्न अछि।

दरबज्जा पर आएल अतिथि सँ व्यवहार, कमजोरक प्रति दृष्टि, स्त्रीक सम्मान, श्रमक मूल्य, प्रकृतिक संग सम्बन्ध, विरोधीक प्रति भाषा— ए सभमे संस्कृति प्रतिदिन लिखाइत अछि।

सभ्यता सड़क बना सकैत अछि; संस्कृति ओहि सड़क पर हम ककरा लेल रुकैत छी, से पूछैत अछि।

सभ्यता प्रकाश देत; संस्कृति ई देखत कि प्रकाशमें ककर चेहरा अखनो अन्हारमें अछि।

सभ्यता अन्न बढ़ा सकैत अछि; संस्कृति भूखक अन्याय पूछत।

सभ्यता शक्ति बढ़बैत; संस्कृति शक्ति पर मर्यादा लगबैत।

यहीं मूल्यक अन्तिम परीक्षा अछि।

संस्कृति मनुष्य केँ ‘कतेक पेलहुँ’ सँ ‘की बनलहुँ’ धरि लऽ जाइत अछि।

धन, ज्ञान, प्रतिष्ठा, सत्ता— सभ साधन; मनुष्यता लक्ष्य।

यदि साधन लक्ष्य केँ निगलि जाए, तँ प्रगति अपने विरुद्ध हो जाइत अछि।

गोविन्द चन्द्र पाण्डेयक संस्कृति-दर्शन एहि भूल सँ सावधान करैत अछि— मनुष्य केँ केवल उत्पादक, उपभोक्ता, मतदाता, वा जैविक जीव बना कऽ सम्पूर्ण नहि बुझल जा सकैत।

ओ मूल्य-निर्माता अछि, अर्थ-खोजी, स्मृति-वाहक, आ भविष्य-सर्जक।

ओकर गरिमा एहि सर्जनात्मक चेतनामें।

आ संस्कृति?

संस्कृति ओ क्षण अछि जखन मनुष्य अपन सहज प्रवृत्ति सँ ऊपर उठि एकटा मूल्य चुनैत अछि।

जखन लाभक बदला न्याय चुनैत, प्रतिशोधक बदला क्षमा, उपभोगक बदला संयम, अहंकारक बदला संवाद।

ई चयन सदा सहज नहि।

कखनो इतिहासक विपरीत, कखनो भीड़क विपरीत, कखनो अपनहि इच्छा विरुद्ध।

मुदा एही कठिन चयनमें मनुष्य प्रकृतिक साधारण क्रम सँ उठि नैतिक अस्तित्व बनैत अछि।

संस्कृति एहि उठानक सामूहिक स्मृति।

एक पीढ़ी दोसर केँ कहैत अछि— “हम एहन भूल कएलहुँ, अहाँ फेर नहि करू।”

आ संगहि— “हम एहन मूल्य बचौलहुँ, अहाँ ओकरा नव रूप दिअ।”

यहीं परम्पराक सार्थकता।

यहीं आधुनिकताक परीक्षा।

यहीं इतिहासक नैतिक अर्थ।

आ यहीं संस्कृति-दर्शनक गहिर प्रश्न— मनुष्य अपन समयक भीतर रहैत हुएँ समय सँ ऊपर उठि कुन मूल्य चुनत?

उत्तर कोनो एक ग्रन्थमें बन्द नहि।

ओ प्रत्येक पीढ़ीक जीवनमें फेर लिखल जाएत।

मूल्य जतय जीवित, संस्कृति ओतय जीवित।

आ संस्कृति जतय जीवित, मनुष्य केवल अस्तित्व नहि, अर्थ बनि उठैत अछि।

व्यक्ति आ समाजक बीच खुलल प्रश्न

समाज कोनो एहन घर नहि जतय मनुष्य जन्मैतहि अपन कमरा निश्चित पबैत अछि; न व्यक्ति एहन अकेला द्वीप जकर चारु कात केवल अपन इच्छाक समुद्र हो।

दुनू एक-दोसराक भीतर लगातार बनैत-बिगड़ैत अछि।

मनुष्य समाजमें जन्मैत अछि, भाषा ओतहि पबैत, नाम ओतहि, नियम ओतहि, संस्कार ओतहि; मुदा एक दिन ओहि समाज केँ प्रश्न करैत अछि— “जे अहाँ हमरा देलहुँ, ओ सभ उचित अछि?”

यहीं सँ व्यक्ति जागैत अछि।

आ समाज? ओ व्यक्ति बिनु कतय रहत?

कानून लिखल जा सकैत अछि, पर ओकर पालन मनुष्य करैत अछि; परम्परा चलि सकैत अछि, पर ओकरा जीवित मनुष्य रखैत अछि; संस्था बनैत अछि, मुदा निर्णायक क्षणमे ककरो चेतना अपन भार उठबैत अछि।

दयाकृष्णक प्रश्न एहि सरल सत्यक भीतर अनेक गाँठ खोजैत अछि।

व्यक्ति स्वतन्त्र अछि? कि समाज ओकर इच्छाक पहिनेहि ओकर बाट चुनि देने अछि?

जाति, परिवार, धर्म, राज्य, बाजार, भाषा, इतिहास— ई सभ मिलि मनुष्यक चारू कात एहन अदृश्य रेखा खींचैत अछि जे ओकर चयन केँ सीमा सेहो दैत, अर्थ सेहो।

मुदा सीमा भाग्य नहि।

मनुष्यक चेतना रेखा देखबाक आ कखनो ओकरा पार करबाक सामर्थ्य रखैत अछि।

एहि सामर्थ्यक नाम स्वतन्त्रता हो सकैत अछि, मुदा स्वतन्त्रता शून्यमे उगैत फूल नहि।

ओ परिस्थिति सँ लड़ैत, सम्बन्ध सँ सीखैत, विकल्प खोजैत, आ कर्मक उत्तरदायित्व स्वीकारैत अछि।

“हम स्वतन्त्र छी” कहब सहज; “हमर चयनक फल हमर जिम्मेदारी अछि” कहब कठिन।

समाज-दर्शन एहि कठिन वाक्यक अर्थ खोलैत अछि।

कियो कहत— समाज व्यक्ति सँ पैघ। कियो कहत— व्यक्ति सर्वप्रथम।

मुदा जीवन एहन सोझ तराजू नहि।

मायक प्रेममे व्यक्ति समाज बनैत अछि; अन्यायक विरोधमे व्यक्ति समाज सँ अलग ठाढ़ होइत अछि; मित्रतामे दू व्यक्ति एक छोट समाज बनबैत छथि; भीड़मे हजार मनुष्य रहितो व्यक्ति अकेला पड़ि सकैत अछि।

तँ संख्या समाज नहि।

समाज सम्बन्धक जाल, मूल्यक साझा भाषा, अपेक्षाक संरचना, आ शक्ति-वितरणक व्यवस्था सेहो।

जतय शक्ति अछि, ओतय प्रश्न आवश्यक।

कुन निर्णय करैत अछि? ककर आवाज सुनल जाइत अछि? ककर मौन ‘सहमति’ मानि लेल जाइत अछि?

ककर दुःख सामाजिक समस्या कहल जाइत, आ ककर दुःख “व्यक्तिगत” कहि टारल जाइत?

एहि प्रश्नसभमे समाजक नैतिक चेहरा देखाइत अछि।

दयाकृष्ण तैयार नुस्खा सँ अधिक प्रश्नक धार पर भरोसा करैत छथि।

किएक तँ दर्शन जँ उत्तर पहिने तय कऽ ले, तँ तर्क केवल सजावट बनि जाइत अछि।

समाजवाद, उदारवाद, धर्म, राष्ट्रवाद, परम्परा, आधुनिकता— सभ शब्द घोषणामे सुन्दर लगि सकैत अछि; मुदा मनुष्यक जीवनमे ओकर अर्थ परिस्थिति बदलैतहि बदलि जाइत अछि।

एहि लेल शब्दक प्रतिष्ठा सँ अधिक ओकर व्यवहार देखू।

“स्वतन्त्रता” कहल गेल— ककर लेल?

“समानता” कहल गेल— कुन धरातल पर?

“धर्म” कहल गेल— आस्था रूपमे कि सामाजिक नियंत्रण रूपमे?

“परम्परा” कहल गेल— स्मृति रूपमे कि बाध्यता रूपमे?

“राष्ट्र” कहल गेल— साझा उत्तरदायित्व रूपमे कि प्रश्नहीन निष्ठा रूपमे?

दार्शनिक प्रश्न शब्दक चमक उतरि ओकर असली देह देखैत अछि।

व्यक्ति केवल अधिकारक पात्र नहि, कर्तव्यक वाहक सेहो।

मुदा कर्तव्य ककर प्रति?

परिवार? समाज? राज्य? मानवता? अपन विवेक?

कखनो ई सभ एकहि दिशा में नहि चलैत।

एकटा व्यक्ति राज्यक कानून पालन करैत तैयो अन्याय करि सकैत अछि।

एकटा पुत्र परिवारक आज्ञा मानैत ककरो अधिकार कुचलि सकैत अछि।

एकटा नागरिक बहुमतक संग रहैत तैयो सत्य सँ दूर जा सकैत अछि।

तैं कर्तव्यक एकमात्र नक्शा नहि।

नैतिक जीवन कखनो-कखनो संघर्षक नाम अछि।

दू ठीक बात एक-दोसराक समक्ष ठाढ़ भऽ जाइत अछि।

सत्य कहब आवश्यक, मुदा ककरो जीवन बचएबाक लेल मौन?

कानून मानब आवश्यक, मुदा अन्यायी कानून?

परिवारक सम्मान आवश्यक, मुदा व्यक्तिक स्वतन्त्रता?

समाज-दर्शन एहि द्वन्द्व सँ भागैत नहि।

ओ कहैत अछि— जीवनक नैतिकता सूत्रक मशीन नहि।

किछु निर्णय विशेष परिस्थिति माँगैत अछि, जतय विवेक सामान्य नियमक संग जीवित तथ्य सेहो देखय।

“सभकेँ समान व्यवहार” सुन्दर वाक्य अछि, मुदा समानता सदैव एकरूप व्यवहार नहि।

जे कमजोर अछि, ओकरा अतिरिक्त सहारा देब असमानता नहि, न्यायक एक रूप हो सकैत अछि।

जे ऐतिहासिक रूपसँ वंचित, ओकरा अवसर देब विशेषाधिकार नहि, सन्तुलनक प्रयत्न हो सकैत अछि।

मुदा प्रत्येक नीति फेर प्रश्न माँगैत अछि— ओ न्याय बढ़बैत अछि कि नवा अन्याय?

किएक तँ सद्भावना परिणामक गारंटी नहि।

नीति उद्देश्य सँ नहि, परिणाम सँ सेहो जाँचल जाए।

कखनो कल्याणक नाम पर व्यक्ति केँ निर्बल बनाओल जाइत अछि; कखनो स्वतन्त्रताक नाम पर बलवान केँ निर्बलक ऊपर छोड़ि देल जाइत अछि।

दुनू अतिशय मनुष्यक गरिमा केँ चोट पहुँचा सकैत अछि।

समाजक व्यवस्था केवल नियम नहि, अवसरक बाँट सेहो।

ककरा शिक्षा भेटैत? ककरा जमीन? ककरा सम्मान? ककरा निर्णयमे स्थान? ककरा केवल आदेश?

जतय उत्तर जन्म सँ तय, ओतय स्वतन्त्रता केवल शब्द भऽ सकैत अछि।

जाति एहनहि एक कठिन प्रश्न।

जन्म ककरो नैतिक उपलब्धि नहि, न दोष।

तैयो समाज जन्म केँ गरिमा, पेशा, विवाह, स्पर्श, भोजन, अवसरक कसौटी बना दे, तँ परम्परा अन्यायक औजार बनि जाइत अछि।

एहि स्थिति में “परम्परा” बचाउ कहब पर्याप्त नहि।

प्रश्न उठत— ककर परम्परा? ककर लाभ? ककर मूल्य पर?

दयाकृष्णक विमर्श एहि प्रश्नक अधिकार बचबैत अछि।

धर्मक क्षेत्रमे सेहो ओही सावधानी।

आस्था व्यक्तिक गहिर अनुभव हो सकैत अछि; मुदा जखन आस्था दोसरक जीवन पर बाध्यकारी नियम बनय, तखन सामाजिक प्रश्न उठैत अछि।

मनुष्य केँ विश्वासक स्वतन्त्रता चाही, मुदा विश्वास बदलबाक, नहि मानबाक, आ प्रश्न करबाक स्वतन्त्रता सेहो।

धर्मक गरिमा भय सँ नहि, स्वतन्त्र स्वीकृति सँ।

जे श्रद्धा प्रश्नक एक धक्का सँ टूटि जाए, ओ कदाचित् श्रद्धा सँ अधिक आदत छल।

समाजक नैतिकता व्यक्ति केँ अन्तःकरणहीन आज्ञाकारी बनाबय नहि।

आ व्यक्ति-स्वतन्त्रता समाजक प्रति पूर्ण उदासीनता सेहो नहि।

हमर कर्म केवल हमर नहि।

एकटा व्यापारीक छल सैकड़ों परिवार प्रभावित करैत; एक अधिकारीक निर्णय सम्पूर्ण गाम बदलि सकैत; एक शिक्षकक अन्याय एक बच्चाक आत्मसम्मान वर्षों धरि घायल करि सकैत।

व्यक्ति अपन कर्मक सामाजिक तरंग सँ अलग नहि।

तैं उत्तरदायित्व स्वतन्त्रताक छाया।

जतय छाया नहि, स्वतन्त्रता कदाचित् केवल स्वेच्छाचार।

गाँधी एहि विमर्शमे एक जीवित प्रश्न जकाँ आबैत छथि।

साध्य आ साधन अलग-अलग खोपड़ी नहि; अन्यायी साधन सँ न्यायी समाज बनत?

हिंसा सँ शान्ति? झूठ सँ सत्य? अपमान सँ समानता?

ई प्रश्न राजनीति केँ नैतिकता सँ जोड़ैत अछि।

मुदा नैतिकता केवल आदर्शक ऊँच मीनारमे नहि रहय।

भूखल मनुष्यक समक्ष उपदेश अन्नक स्थान नहि ले सकैत।

दुःख दूर करब सहानुभूति सँ आरम्भ, पर व्यवस्था बदलबाक व्यावहारिक बुद्धि सेहो चाही।

आदर्श यदि परिस्थिति न देखय, ओ कठोर बनि सकैत अछि।

व्यवहार यदि आदर्श छोड़ि दे, ओ अवसरवाद।

दुनू बीच नैतिक राजनीति कठिन संतुलन खोजैत अछि।

समाजवादक स्वप्न समानता आ न्यायक एक गहिर आकांक्षा अछि।

मुदा प्रश्न फेर— राज्यक शक्ति कतेक? व्यक्तिक स्वायत्तता कतेक? समूहक नाम पर असहमति केँ दबाओल जाए तँ समानता बचल?

गरीबी मिटेबाक लेल स्वतन्त्रता मिटा देब कुन मुक्ति?

आ स्वतन्त्रता बचेबाक नाम पर गरीबी केँ भाग्य मानि लेब कुन न्याय?

समाज-दर्शन एक ध्रुव चुनि दोसर केँ नकारब नहि, दुनूकेँ एक-दोसराक कसौटी बनबैत अछि।

व्यक्ति बिनु समाज अमूर्त शब्द; समाज बिनु व्यक्ति असहाय कल्पना।

दुनूकेँ संग सोचब कठिन, मुदा एहिए कठिनाई जीवित दर्शनक क्षेत्र।

स्वतन्त्रता केवल बाहरी बन्धनक अभाव नहि।

भय, हीनभावना, अज्ञान, भूख, सामाजिक अपमान— ई सभो मनुष्यक चयन केँ भीतर सँ सीमित करैत अछि।

तैं मुक्त समाज केवल कम कानूनवला समाज नहि; एहन समाज जतय मनुष्य अपन क्षमता विकसित करि सकय।

शिक्षा एहि मुक्ति केँ भाषा दैत अछि।

मुदा शिक्षा यदि केवल परीक्षा, नौकरी, आ आज्ञापालन सिखाबय, तँ चेतना कत्तऽ?

शिक्षाक गहिर उद्देश्य प्रश्न करबाक क्षमता, तर्क सुनबाक विनम्रता, आ असहमत होएबाक साहस।

एहन नागरिक राज्य लेल कठिन हो सकैत अछि, मुदा लोकतन्त्र लेल आवश्यक।

लोकतन्त्र मतदानक दिन मात्र नहि।

ओ दैनिक संस्कृति— दोसरक मत सुनब, हार स्वीकारब, बहुमत केँ सीमा मानब, अल्पमतक अधिकार बचाउ, आ सत्ता केँ प्रश्न करब।

जतय प्रश्न देशद्रोह कहल जाए, ओतय लोकतन्त्रक आत्मा कमजोर पड़ैत अछि।

राष्ट्र प्रेमक विषय हो सकैत अछि, मुदा प्रेम अन्धता नहि।

जकरा हम प्रेम करैत छी, ओकर दोष देखब घृणा नहि; कखनो सुधारक पहिल शर्त।

देशक सम्मान सत्य छिपाबयमे नहि, सत्य सहि सकबाक सामर्थ्यमे।

समाजक मूल्यांकन केवल आदर्शग्रन्थ सँ नहि, दैनिक व्यवहार सँ।

हम समानता कहैत छी— घरमे बेटी केँ स्थान कतेक?

हम करुणा कहैत छी— द्वार पर श्रमिक सँ व्यवहार कतेक?

हम धर्म कहैत छी— भिन्न आस्थावाला पड़ोसीक अधिकार कतेक?

हम स्वतन्त्रता कहैत छी— असहमत व्यक्ति केँ बोलबाक ठाम कतेक?

शब्दक परीक्षा यहीं होइत अछि।

दयाकृष्णक दार्शनिकता एहि परीक्षण सँ डरैत नहि।

ओ समाजक बारेमे एहन निष्कर्ष नहि चाहैत जे जीवनक जटिलता केँ एक सूत्रमे बन्द करि दे।

किएक तँ समाज बहुस्तरीय अछि।

एक व्यक्ति एकहि समय पुत्र, शिक्षक, नागरिक, मित्र, धार्मिक व्यक्ति, व्यवसायी, मतदाता, आ मनुष्य हो सकैत अछि।

एहि भूमिकासभक अपेक्षा कखनो परस्पर टकराइत अछि।

तखन पहचान एक शब्दक उत्तर नहि।

“हम के?” प्रश्नक सामाजिक अर्थ हरेक सम्बन्धमे बदलि सकैत अछि।

मुदा ए सभ भूमिकाक पाछाँ एक नैतिक व्यक्ति अपन निर्णय करैत अछि।

यहीं आत्मबोधक स्थान।

आत्मबोध स्वार्थ नहि।

अपन इच्छा पहचानब आ अपन इच्छा केँ नैतिक कसौटी पर राखब दू अलग बात।

मनुष्य केँ अपन भीतरक आवाज सुनबाक, मुदा ओकरा अंतिम सत्य नहि मानबाक।

अन्तःकरणो संस्कार, भय, पूर्वग्रह सँ बनल हो सकैत अछि।

तेँ आत्मपरीक्षण निरन्तर हो।

“हम एना किएक मानैत छी?” “ई विचार हमर अपन अछि कि समाजक अनजाँचल विरासत?”

एहि प्रश्नमे अन्तःस्वतन्त्रता जन्मैत अछि।

समाज व्यक्ति केँ आकार दैत अछि; व्यक्ति समाज केँ फेर आकार दैत अछि।

ई गोल चक्कर नहि, इतिहासक चक्र।

हरेक पीढ़ी किछु नियम पबैत अछि, किछु बदलैत, किछु तोड़ैत, किछु नव बनबैत।

यहीं सामाजिक परिवर्तन।

परिवर्तन सदैव प्रगति नहि।

नव व्यवस्था पुरान सँ बेठीक हो सकैत अछि; पुरान प्रथा कखनो उपयोगी रहि सकैत अछि।

तँ “नव” सत्यक पर्याय नहि, “पुरान” असत्यक पर्याय नहि।

कसौटी चाही— मानवीय गरिमा, न्याय, स्वतन्त्रता, करुणा, व्यावहारिक परिणाम।

समाजक सुधार कखनो कानून सँ, कखनो शिक्षा सँ, कखनो आर्थिक परिवर्तन सँ, कखनो नैतिक जागरण सँ।

एकहि औजार सभ रोगक औषधि नहि।

कानून व्यवहार रोकि सकैत अछि, मुदा हृदय नहि बदलैत।

उपदेश हृदय छू सकैत अछि, मुदा संरचनात्मक अन्याय अपने नहि हटैत।

तँ सुधार भीतर आ बाहर दुनू दिस चाही।

व्यक्ति केँ बदलू, संस्था केँ सेहो।

संस्था बदलू, मुदा व्यक्ति केँ नैतिक जिम्मेदारी सँ मुक्त नहि करू।

दयाकृष्णक विमर्श एहि द्विपक्षीय सावधानीक स्मरण करैत अछि।

समाजक दोष मात्र ‘व्यवस्था’ पर धऽ हम अपन दोष छिपा सकैत छी।

आ व्यक्ति दोषी कहि व्यवस्थाक अन्याय छिपाओल जा सकैत अछि।

सत्य दुनूकेँ देखैत अछि।

एक भ्रष्ट अधिकारी व्यक्ति अछि, मुदा जँ सम्पूर्ण व्यवस्था भ्रष्टाचार केँ प्रोत्साहित करैत हो, तँ समस्या केवल ओकर चरित्र नहि।

एक हिंसक भीड़ व्यक्ति सभ सँ बनल, मुदा भय, प्रचार, राजनीतिक लाभ, सामाजिक पूर्वग्रह ओकर सामूहिक रूप गढ़ैत अछि।

तँ समाज-दर्शन कारणक अनेक स्तर खोलैत अछि।

आ नैतिकता दोषी खोजबाक खेल नहि, जिम्मेदारीक उचित बाँट।

कर्मक फल सदैव कर्ताक आशय जेकाँ नहि।

हम भलाइ चाहैत छी, मुदा परिणाम बेठीक हो सकैत अछि।

एहि लेल आशय पर्याप्त नहि।

परिणामो देखू।

मुदा परिणाम मात्र सेहो नहि; किएक तँ अच्छा परिणाम लेल हरेक साधन उचित नहि।

नैतिक निर्णय आशय, साधन, परिणाम, परिस्थिति— सभक संयुक्त परीक्षा।

ई जटिलता कमजोरी नहि, नैतिक जीवनक वास्तविक रूप।

मनुष्य गणितक प्रश्न नहि जतय एक सूत्र हरेक बेर समान उत्तर दे।

ओ जीवित परिस्थिति, सम्बन्ध, इतिहास, आ सम्भावनाक संग निर्णय करैत प्राणी।

तँ दर्शन ओकरा तैयार उत्तरक पुस्तक नहि, विवेकक अभ्यास दे।

समाजक आदर्श पूर्ण समाजक चित्र हो सकैत अछि, मुदा पूर्णता कखनो वर्तमानक मनुष्य पर हिंसक दबाव नहि बनय।

इतिहासमे कतेक यूटोपिया मानवता बचएबाक नाम पर मनुष्य केँ कुचललक।

आदर्श दिशा हो, कारागार नहि।

एक श्रेष्ठ समाज कदाचित् ओ नहि जतय सभ एक जेकाँ सोचय; अपितु ओ जतय भिन्न सोचक लोग न्यायपूर्ण नियमक भीतर संग रहि सकय।

एकरूपता शान्ति जेकाँ देखाइ सकैत अछि, मुदा मौन सहमति नहि होइत।

विविधता अव्यवस्था नहि; संवादक क्षमता हो तँ विविधता समाजक सर्जनात्मक शक्ति।

भिन्नता सँ डरब समाजक आत्मविश्वासक कमी।
 जे संस्कृति प्रश्न सहि सकैत अछि, ओ जीवित।
 जे केवल प्रशंसा चाहैत अछि, ओ भीतर सँ भयभीत हो सकैत अछि।
 दयाकृष्णक दार्शनिक स्वभाव एहि निर्भीक प्रश्नमे बसैत अछि।
 ओ कहैत जकाँ लगैत छथि— पहिने मान्यता केँ मान्यता रूपमे पहचानू; तखन पूछू ओकर आधार की।
 “सभ एना मानैत अछि” कारण नहि।
 “हमर पूर्वज कहि गेलाह” सम्मानक कारण हो सकैत अछि, सत्यक अंतिम प्रमाण नहि।
 “आधुनिक विज्ञान कहैत अछि” महत्वपूर्ण, मुदा विज्ञानक सीमा सेहो बुझू।
 “राज्य निर्णय लेने अछि” कानूनी तथ्य, नैतिक औचित्य अलग प्रश्न।
 एहि भेदसभ केँ साफ राखब दार्शनिक विवेक।
 समाजमे मूल्य-निर्णय टारल नहि जा सकैत।
 नीति बनैत अछि, तखन हम तय करैत छी कुन हित महत्वपूर्ण।
 बजट बनैत अछि, तखन तय करैत छी ककर आवश्यकता प्राथमिक।
 कानून बनैत अछि, तखन तय करैत छी कुन स्वतन्त्रता सीमित करब आ किएक।
 तँ राजनीति मूल्य-विहीन तकनीक नहि।
 ओ नैतिक चयनक सार्वजनिक रूप।
 राजनीतिक नेता मात्र नहि, नागरिको एहि चयनक सहभागी।
 मौन नागरिक जिम्मेदारी सँ मुक्त नहि।
 लोकतन्त्र दर्शकदीर्घा नहि; ओ सहभागिताक मंच।
 मुदा सहभागिता भीड़क उत्तेजना नहि।
 तथ्य जानू, तर्क सुनू, विरोधी मत केँ पहिने ठीक बुझू, फेर निर्णय करू।
 सार्वजनिक विवेक एहिअ अभ्यास सँ बनैत अछि।
 समाज-दर्शनक अन्तिम प्रश्न कदाचित् ई नहि जे श्रेष्ठ समाजक सम्पूर्ण नक्शा की।
 कदाचित् प्रश्न ई— हम एहन समाज कोना बनाबी जतय नक्शा पर खुलल बहस सम्भव रहय?
 जतय व्यक्ति समाजक प्रति उत्तरदायी हो, मुदा समाजक कैदी नहि।
 जतय समाज व्यक्तिक गरिमा बचाबय, मुदा व्यक्ति केँ मात्र निजी स्वार्थक द्वीप नहि बनाबय।
 जतय परम्परा स्मृति दे, प्रश्नक दुआर बन्द नहि।
 जतय आधुनिकता नव साधन दे, मनुष्यक मूल्य केँ साधनमे नहि बदलय।
 जतय धर्म अन्तःकरण केँ गहिर करय, दोसर पर शासनक औजार नहि बनय।
 जतय राज्य व्यवस्था दे, मुदा नागरिकक आत्मा पर स्वामित्व नहि जताबय।
 जतय समानता गरिमा दे, एकरूपता नहि।
 जतय स्वतन्त्रता जिम्मेदारी सँ संग चले।
 एहन समाज तैयार सूत्र सँ नहि बनत।
 हरेक पीढ़ी केँ अपन प्रश्न स्वयं पूछबाक, अपन भूल स्वीकारबाक, आ अपन संस्थासभ केँ फेर सँ जाँचबाक पड़त।
 दर्शन एहि जाँचक शान्त, कठोर, आवश्यक कला।

दयाकृष्णक समाज-दर्शन कदाचित् हमरा एकटा पूर्ण उत्तर नहि दैत, मुदा अधिक मूल्यवान वस्तु दैत अछि— उत्तरक प्रति सन्देह करबाक साहस, प्रश्न केँ ठीक रूपमे रखबाक अनुशासन, आ मनुष्य केँ कोनो सिद्धान्त सँ छोट नहि मानबाक विवेक।

किएक तँ अन्ततः समाजक नाम पर मनुष्य केँ भूलि जाएब समाजक अर्थे भूलब अछि।

आ व्यक्तिक नाम पर दोसर मनुष्य केँ भूलि जाएब स्वतन्त्रताक अर्थे भूलब।

व्यक्ति आ समाज दू विरोधी तट नहि; ओ एकहि नदीक दू किनार।

नदी दुनूक बीच बहैत अछि— सम्बन्ध, संघर्ष, उत्तरदायित्व, प्रेम, न्याय, आ निरन्तर प्रश्नक रूपमे।

जतय प्रश्न जीवित, ओतय दर्शन जीवित।

जतय दर्शन जीवित, ओतय समाज अपने केँ बदलबाक सम्भावना बचा कऽ रखैत अछि।

ज्ञानक तलघरमे दीप

हम जे देखैत छी, से ज्ञानक पहिल देहरी अछि; मुदा देहरी पार कऽ एकटा दोसर घर अछि— जतय प्रश्न वस्तु पर नहि, ज्ञान पर स्वयं उठैत अछि।

फूल देखलहुँ— रंग, गन्ध, आकार; ई एक ज्ञान।

मुदा फेर प्रश्न भेल— हमरा कोना विश्वास जे देखल बात ज्ञान कहल जाए? एहि प्रश्नक संग ज्ञान अपनहि दिस घुरि देखैत अछि।

यहीं सँ गहन-ज्ञानमीमांसाक धीमा दीप जरैत अछि।

संगमलाल पाण्डेयक चिन्तन ज्ञानक सतह पर लहर गिनब मात्र नहि; ओ पूछैत अछि— लहर केँ देखनिहार समुद्रक गहराई कतेक जानैत अछि?

बाहर वस्तु अछि, भीतर चेतना; दुनूकेँ एकहि तराजूमे तौलल जा सकैत अछि?

मेज केँ हम समक्ष राखि देखैत छी; मुदा अपनहि चेतना केँ कतय राखि देखब?

जे देखैत अछि, ओ स्वयं देखल वस्तु जकाँ समक्ष केना आए?

यहीं ज्ञाता आ ज्ञेयक पहिल असमानता अछि।

वस्तु हमर समक्ष ठाढ़; चेतना ओहि ठाढ़ होएबाक बोधक प्रकाश।

प्रकाश केँ दोसर दीपसँ देखाएब आवश्यक हो? कि ओकर जरनाइये ओकर उपस्थितिक पहिल साक्षी?

आत्मबोध एहन प्रश्न अछि जे दर्पण खोजैत-खोजैत अन्ततः दृष्टिक स्रोत धरि पहुँचैत अछि।

हम जानैत छी— एहि वाक्यमे ‘हम’ केवल नाम नहि, ज्ञानक आधारक एक मौन उपस्थिति अछि।

वस्तुक ज्ञान वस्तु दिस जाइत अछि; आत्मज्ञान फेरि अपन स्रोत दिस।

एहि कारण ज्ञानक सभ रूप एकहि धरातल पर समतल नहि।

किछु ज्ञान समक्ष उपस्थित वस्तुक; किछु अपनहि जाननिहार चेतनाक।

एकटा खेत दूर धरि फैलल; एकटा आकाश ओकर ऊपर; मुदा किसानक मनमे जे भूमि केर अर्थ, ओ नक्शामे सम्पूर्ण नहि समाइत।

एहि जकाँ वस्तुगत ज्ञान बहुत किछु कहैत अछि, मुदा मनुष्यक अन्तर्बोधक सम्पूर्ण स्वर ओतय नहि भेटैत।

ज्ञानक पहिल तल घटना, वस्तु, रूप, गुण, सम्बन्ध; दोसर तल ई सभ जानबाक सम्भावना, प्रमाण, सीमा आ आधार।

पहिल तल पर हम संसार पढ़ैत छी; दोसर पर पढ़बाक क्रिया केँ।

पहिल प्रश्न— “ई की अछि?” दोसर— “हम ई केना जानलहुँ?”

एहि ‘केना’ मे दर्शनक सम्पूर्ण आकाश खुलैत अछि।

कखनो हम देखल बात पर भरोसा करैत छी; कखनो स्मृति पर, कखनो अनुमान, कखनो शब्द, कखनो तुलना, कखनो अनुपलब्धि।

मुदा प्रमाण केवल बात नहि; बाटक विश्वसनीयता अलग प्रश्न।

नदी पार करबाक लेल नाव भेटल— ई पर्याप्त नहि; नाव जल सहि सकैत अछि कि नहि, ई जानबो जरूरी।
 प्रमाण ज्ञानक नाव; ज्ञानमीमांसा नावक काठ, गाँठ, सन्तुलन आ जलधारण-शक्ति जाँचबाक कला।
 मुदा जाँचक स्वयं प्रमाण की?
 यदि प्रत्येक प्रमाण केँ दोसर प्रमाण चाही, आ दोसर केँ तेसर, तँ यात्रा कतय समाप्त होएत?
 अनन्त सीढ़ी कखनो धरती छू सकैत अछि?
 ज्ञानक संकट यहीं जन्मैत अछि— सत्य लेल कसौटी चाही, मुदा कसौटीक कसौटी?
 गहन दृष्टि एहि चक्र केँ मात्र शब्द बदलि नहि टारैत; ओ पूछैत अछि— किछु आधार एहन हो सकैत अछि जे अपन प्रकाश अपने वहन करय?
 जतय ज्ञान अपन उपस्थितिसँ अपनहि केँ प्रकाशित करैत अछि?
 आत्मचेतना एहि प्रश्नक एक गहिर उत्तर बनि उठैत अछि।
 हमरा पीड़ा होइत अछि— पीड़ा केकरो तृतीय पुरुषक सूचना बनि पहिने नहि अबैत।
 “हम दुखी छी” कहबाक पहिने दुःखक अनुभूति हमरा भीतर अपन प्रकाश लऽ कऽ अबैत अछि।
 दोसर हमर दुखक लक्षण देखत; हम दुखक अनुभूति।
 एहि दू ज्ञानमे एक गहिर अन्तर।
 बाहर सँ देखल आ भीतर सँ जीअल— दुनू सत्यक अलग दुआर।
 ज्ञानमीमांसा जँ केवल बाहरक दुआर मापत, तँ घरक आधा भाग अनदेखल रहि जाएत।
 गहनता एहि भीतरक सत्ताक सम्मान।
 मुदा भीतरक अर्थ मनमानी नहि।
 “हमरा एना लगैत अछि” आ “वस्तु एहनहि अछि” दू अलग कथन।
 आत्मनिष्ठ अनुभूति वस्तुनिष्ठ निष्कर्षक सोझ विकल्प नहि।
 गहन दृष्टि दुनू केँ अपन-अपन सीमा दैत अछि।
 भीतरक प्रकाश अपन क्षेत्रमे प्रामाणिक, बाहरक तथ्य अपन क्षेत्रमे।
 समस्या तखन जखन एक क्षेत्र दोसरक सिंहासन हथिया लेत।
 मनुष्य अपन अनुभवक राजा, मुदा संसारक एकमात्र विधानकर्ता नहि।
 विश्व हमर इच्छासँ रंग नहि बदलैत; मुदा विश्वक अर्थ हमर चेतना बिनु हमरा लेल उगैत नहि।
 एहि सम्बन्धमे ज्ञाता आ ज्ञेय न पूर्ण अलग, न पूर्ण एक।
 दुनूकेँ जोड़ैत अछि ज्ञानक सेतु।
 सेतु दू किनारक भेद मिटबैत नहि; ओ केवल पारस्परिक पहुँच सम्भव करैत अछि।
 ज्ञानक सेतु पर तर्क चलैत, अनुभव चलैत, भाषा चलैत, स्मृति चलैत, प्रमाण चलैत।
 मुदा सेतुक नीचाँ एक गहिर नदी— चेतना।
 एहि नदी बिनु सेतु ककर लेल?
 गहन-ज्ञानमीमांसा प्रथम शिक्षा दैत अछि— ज्ञानक स्तर चिन्हू।
 सभ ज्ञान एकहि ढङ्गें नहि।
 एकटा कुम्हार माटिक नमी हाथसँ जानैत; रसायनज्ञ ओकर संरचना मापैत; कवि ओहि माटिमे गामक गन्ध पबैत; इतिहासकार सभ्यता खोजैत।
 चारू ज्ञान एक-दोसरक प्रतिद्वन्द्वी नहि; चारू अलग प्रश्नक उत्तर।

ज्ञानक विविधता अज्ञानक चिह्न नहि; प्रश्नक विविधताक स्वाभाविक फल।
मुदा विविधता मनमानी नहि।
हरेक ज्ञान अपन कसौटी, अपन विधि, अपन सीमा माँगैत अछि।
दर्शनक कठिन काज ई सीमा-रेखा निष्पक्षता सँ देखब।
जतय सीमा नहि, ओतय दावा आकाश जकाँ फैलि सभ किछु ढँकि सकैत अछि।
विज्ञान जतय माप सकैत, ओतय अद्भुत; मुदा विज्ञान “न्याय सुन्दर किएक” कुन यंत्रसँ मापत?
कविता दुःखक रंग कहि सकैत, मुदा औषधि केर मात्रा कवितासँ तय नहि होएत।
हरेक ज्ञानक अपन भूमि।
गहन ज्ञानमीमांसा भूमिसभक नक्शा बनबैत अछि।
एकटा महत्त्वपूर्ण प्रश्न प्रमाणक भेद।
हम कतेक बेर आधा तथ्य सँ सम्पूर्ण निष्कर्ष बना लैत छी।
घूरि पर धुआँ देखल, आगिक अनुमान; बहुधा सही।
मुदा एकटा अनुभव सभ परिस्थिति पर लागू करब?
एक व्यक्ति धोखा देलक, तँ “सभ मनुष्य धोखेबाज”— ई ज्ञान नहि, आहत मनक विस्तार।
प्रमाण कतेक दूरि धरि अपन निष्कर्ष वहन करि सकैत, ई बुझब आवश्यक।
छोट नावमे समुद्र पारक बोझ नहि राखल जाए।
तर्कक मर्यादा ज्ञानक सुरक्षा।
किछु प्रमाण आंशिक; किछु अधिक व्यापक; किछु प्रत्यक्ष उपलब्ध; किछु पृष्ठभूमिमे रहैत।
हम जे देखैत छी केवल ओहि पर जीवनक सभ निर्णय नहि बनैत।
कतेक ज्ञान विश्वासक निरन्तरता सँ, कतेक व्यवहारक सफलतासँ, कतेक आत्मप्रकाशसँ।
‘पूर्ण’ आ ‘शेष’ केवल मात्रा नहि, ज्ञानक आश्रयक भिन्न ढंग।
कखनो स्पष्ट अनुभूति तुरन्त उपलब्ध; कखनो ओकर पाछाँ एक एहन आधार जे प्रत्यक्ष समक्ष नहि, मुदा बिनु ओकर अनुभव सम्भव नहि।
जड़ि माटि बाहर नहि देखाइत, मुदा वृक्षक हरेक पात ओकर साक्षी।
ज्ञानक जड़ि कखनो ज्ञानसामग्रीसँ गहिर होइत अछि।
यहीं गहनता शब्दक अर्थ।
सतह कहैत अछि— “हमरा ई ज्ञान भेटल।” गहराई पूछैत अछि— “ई ज्ञान सम्भव किएक भेल?”
जैना नदीक जल केवल सतहक लहर नहि; तलमे धारा, दबाव, पाथर, ढलान सभ मिलि ओकर गति बनबैत।
ज्ञानो उपलब्धि मात्र नहि; ओकर सम्भावनाक शर्तसभ अछि।
चेतना, भाषा, तर्क, अनुभव, स्मृति, विश्वक स्थिरता पर भरोसा— ई सभ ज्ञानक अदृश्य आधार।
मनुष्य हरेक सुबह घरक दरबज्जा खोलैत ई सिद्ध नहि करैत जे बाहर संसार राति भर नष्ट नहि भेल।
ओ एक मूल विश्वासक संग जीवन आरम्भ करैत अछि।
एहन पृष्ठभूमि-बोध सभ ज्ञानक मौन सहचर।
दर्शन ओहि मौन केँ वाक्य देबाक प्रयत्न।
मुदा जखन परिभाषा बनैत अछि, एक नया संकट।
की जे वस्तु जानल जाए, तखने ओकर लक्षण तय हो?

कि लक्षण पहिने, ज्ञान पाछाँ?

यदि प्रमाण केँ परिभाषित करबाक लेल प्रमाण पहिने उपलब्ध, तँ परिभाषा केवल पाछाँक नक्शा।

आ यदि परिभाषा बिनु प्रमाण पहिचानिए नहि, तँ परिभाषा कतय सँ आएल?

ई वृत्त दार्शनिक केँ सतर्क करैत अछि।

नाम देब वस्तु पैदा करब नहि।

“ई प्रमाण अछि” कहब प्रमाणक प्रामाणिकता अपने सिद्ध नहि करैत।

लक्षण मार्गचिह्न; मार्ग स्वयं नहि।

नक्शा पर्वत नहि।

परिभाषा ज्ञानक सुविधा, ज्ञानक जन्मदाता सदैव नहि।

गहन दृष्टि एहि क्रम केँ उलटि-पलटि जाँचैत अछि।

पहिने अनुभव, फेर नाम; कखनो पहिने अवधारणा, फेर अनुभवक संगठन।

दुनू प्रक्रिया मानव ज्ञानमे एक-दोसर सँ गुंथल।

एहि कारण ज्ञानक इतिहास केवल तथ्यक संचय नहि, अवधारणाक परिवर्तन सेहो।

कखनो जकरा “भ्रम” कहल गेल, नव साधन सँ ओ वास्तविक घटना निकलल; कखनो जकरा निश्चित सत्य मानल, नव परीक्षण ओकर सीमा देखौलक।

ज्ञान स्थिर तख्ती नहि, आत्मसंशोधनक यात्रा।

मुदा यात्रा लेल किछु विश्वास क्षणिक रूपेँ स्वीकारब पड़ैत अछि।

हरेक पग पर धरतीक अस्तित्व फेर सिद्ध कऽ कोनो चलि नहि सकैत।

सन्देह ज्ञानक औजार, मुदा सम्पूर्ण जीवन सन्देहक खाईमे नहि बसि सकैत।

दार्शनिक सन्देह विनाश नहि, परीक्षा।

जतय दावा कठोर, ओतय प्रश्नक हथौड़ा।

जतय अनुभव नाजुक, ओतय संवेदनशीलता।

गहनता केवल अधिक सन्देह नहि; उचित स्थान पर उचित प्रश्न।

एकटा दोसर महत्वपूर्ण दिशा— भाषा।

हम ज्ञान प्रायः शब्दमे बाँटैत छी।

शब्द मनक पुल, मुदा कखनो धुँधक पर्दा सेहो।

‘सत्य’, ‘आत्मा’, ‘ज्ञान’, ‘प्रमाण’, ‘वस्तु’— एक-एक शब्द शताब्दीक बहस अपने भीतर लऽ चलैत अछि।

यदि शब्दक अर्थ अस्पष्ट, तँ विवाद वस्तु पर नहि, छाया पर हो सकैत अछि।

भाषा-दर्शन एहि कारण ज्ञानमीमांसासँ दूर नहि।

हम जे कहैत छी, ओहि मे हम कोना सोचैत छी, कतेक बेर प्रकट होइत अछि।

मुदा भाषा सत्यक जेल नहि।

शब्द सत्य केँ व्यक्त करैत, कखनो सीमित, कखनो रूपान्तरित।

आकाश केँ “आकाश” कहलासँ आकाश शब्दमे बन्द नहि होइत।

एहिए प्रकारेँ सत्य कथनसँ पैघ हो सकैत अछि।

यदि भाषा वस्तु केँ केवल अपन व्याकरणक साँचा पहिरा दैत, तँ प्रश्न उठत— हम वस्तु जानैत छी कि शब्दक जाल?

मुदा यदि भाषा पूर्णतः असम्बद्ध, तँ संवाद सम्भव केना?

यहीं सूक्ष्म संतुलन।

भाषा न सत्यक दास, न स्वामी; ओ माध्यम।

माध्यम पारदर्शी हो सकैत, मुदा पूर्ण अदृश्य नहि।

काँचसँ देखल दृश्य काँचक स्वच्छता पर किछु निर्भर।

भाषा एहन काँच।

ज्ञानमीमांसा काँचो जाँचैत अछि।

एक शब्द विभिन्न परम्परामे भिन्न छाया पबैत; अनुवाद केवल शब्द-स्थानान्तरण नहि, अर्थक पुनर्जन्म।

यूरोपीय चिन्तन आ भारतीय दर्शन जखन भेटैत, तखन पहिल समस्या शब्दक।

‘सब्जेक्ट’ केँ कुन अर्थमे ‘आत्मनिष्ठ’? ‘ऑब्जेक्ट’ केँ कुन अर्थमे ‘वस्तु’?

यदि शब्द पुरान अर्थक बोझ लऽ कऽ नव विचार पर राखल जाए, तँ संवादक पहिने भ्रम जन्म सकैत अछि।

गहन चिन्तन एहि भाषिक सावधानी माँगैत अछि।

संगमलाल पाण्डेयक प्रयास दू परम्पराक बीच अनुवादक भरि नहि, संवादक स्थान बनबैत अछि।

भारतीय प्रमाण-चिन्तन आ आधुनिक यूरोपीय ज्ञानमीमांसा— दुनूकेँ एक-दोसरक समक्ष खड़ा करब, मुदा न्यायालय जकाँ नहि; संवादसभा जकाँ।

एक परम्परा दोसरक कमजोरी देखाबय, आ अपन अन्धबिन्दुओ पहिचानय।

एहन तुलना विजेता तय नहि करैत; दृष्टि गहिर करैत अछि।

दू दर्पण एक-दोसरासँ अधिक प्रकाश फेरि सकैत अछि।

ज्ञानमीमांसा जखन आत्मा धरि पहुँचैत, तखन प्रश्न आरो कठिन।

आत्मा वस्तु जकाँ समक्ष उपस्थित नहि।

यदि हम आत्मा केँ कुर्सी जकाँ ज्ञेय बनाबी, तँ जाननिहार कुन?

आत्मा केँ देखनिहार दोसर आत्मा? तखन तीसरा?

ई अंतहीन श्रृंखला रुकैत कतय?

कदाचित् आत्मा वस्तु नहि, ज्ञानक प्रकाश-स्थिति।

जैना आँखि सभ देखैत, मुदा अपन देखनाइ आँखिक समक्ष वस्तु बनि नहि ठाढ़।

आत्मचेतना एहि भेदक गहिर संकेत।

हम अपन शरीर देखैत छी, अपन विचार आवैत-जाइत देखैत छी, अपन भावना बदलैत देखैत छी।

जे एहि बदलावक साक्षी, ओ स्वयं केवल एक बदलैत वस्तु होएत तँ निरन्तरता कतय सँ?

एहि प्रश्नक उत्तर सहज नहि; मुदा प्रश्न गंभीर।

आत्मा कहू, चेतना कहू, साक्षी कहू— नाम सँ अधिक ओकर ज्ञानमीमांसक भूमिका महत्त्वपूर्ण।

जतय वस्तु प्रकाशित, ओतय प्रकाशक किछु आधार आवश्यक।

मुदा प्रकाश केँ भौतिक दीपक जकाँ नहि सोचू।

ई रूपक सीमा धरि उपयोगी।

दार्शनिक सावधानी रूपक केँ सत्यक स्थान पर नहि बैठाबय।

आत्मप्रकाशक अर्थ ई नहि जे आत्मा ककरो रहस्यमय ज्योति आँखिसँ देखैत अछि।

अर्थ ई— ज्ञानक किछु रूप अपन अनुभवमे प्रत्यक्ष उपलब्ध, बाहरी प्रमाणक प्रतीक्षा बिना।

“हम सोचि रहल छी” कहैत क्षण सोचबाक उपस्थितिक अलग प्रमाण कतय चाही?

कियो कहि सकैत अछि— अहाँ भ्रमित छी जे विषय पर सोचैत छी; मुदा ई कहब कठिन जे “अहाँ सोचिए नहि रहल छी” जखन सोचक अनुभूति उपस्थित।

एहि आत्मसाक्ष्यक दार्शनिक महत्त्व गहन ज्ञानमीमांसाक एक आधार।

मुदा ई आधार सर्वज्ञता नहि।

अपन विचारक उपस्थिति हम जानि सकैत छी; ओ विचार ठीक अछि, ई अलग प्रश्न।

हमरा क्रोध अछि— ई आत्मबोध; हमर क्रोध उचित अछि— ई नैतिक निर्णय।

दुनू केँ एक नहि करू।

आत्मप्रकाश सत्यक सभ द्वार नहि खोलैत; केवल एक विशेष द्वार।

गहनता द्वारक सीमा सेहो जानैत अछि।

ज्ञानक एक आश्चर्य— हम अज्ञानो जानैत छी।

“हमरा नहि मालूम” कहब एक प्रकारक ज्ञान।

अज्ञानक बोध ज्ञानक सीमा केँ प्रकाशित करैत अछि।

पूर्ण अन्धकार अपन अन्धकार नहि जानैत; चेतना अभावो केँ अभाव रूपमे अनुभव करैत अछि।

यहीं ज्ञानक आत्मपरावर्तन।

मनुष्यक विवेक अपन सीमाक बोध रखि सकैत अछि।

ई विनम्रता ज्ञानक कमजोरी नहि, पक्वता।

जे सभ जानबाक दावा करय, ओ ज्ञान सँ दूर हो सकैत अछि।

गहन ज्ञानमीमांसा उत्तरक संग्रह नहि, सीमाक स्पष्टता सेहो।

की प्रमाणित? की अनुमानित? की अनुभूत? की केवल मानल? की भाषिक सुविधा? की तत्त्वमीमांसक आधार?

एहि वर्गीकरणक अनुशासन विचार केँ स्वच्छ राखैत अछि।

प्रश्न केवल निष्कर्ष पर नहि; निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्ग पर सेहो।

एक व्यक्ति ठीक उत्तर बेठीक कारण सँ पाबि सकैत अछि।

भाग्यसँ ठीक निशाना धनुर्विद्या नहि।

एहि कारण ज्ञान सत्य विश्वास भरि नहि; विश्वसनीय आधार माँगैत अछि।

मुदा “आधार” कुन स्तरक?

एहि प्रश्नक संग गहनता फेर जागैत।

एकटा निर्णय लोकव्यवहार लेल पर्याप्त प्रमाण पर आधारित; मुदा दर्शन आरो गहिर आधार पूछि सकैत अछि।

दैनिक जीवन सूर्योदय देखैत कहैत— “सूर्य उगल।”

खगोलशास्त्र भिन्न व्याख्या दैत।

दुनू वाक्य अपन प्रसंगमे अलग प्रयोजन रखैत अछि।

लोकव्यवहार झूठ नहि, मुदा अंतिम व्याख्या नहि।

दार्शनिक ज्ञान लोकअनुभव केँ अपमान नहि करय; ओ ओकर सीमा आ प्रयोजन बुझय।

यहीं भारतीय परम्पराक गहिर अवसर।

प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अनुपलब्धि— प्रमाणक बहुल चर्चा केवल सूची नहि; मानव ज्ञानक विभिन्न बाटक पहचान।

हरेक बाट एकहि गन्तव्य नहि पबैत।

किछु बाहरी वस्तु, किछु सम्बन्ध, किछु अभाव, किछु अर्थ।

ज्ञानक भूगोल बहुरूपी।

गहन दृष्टि एहि बहुलता केँ एक कठोर सूत्रमे नहि दबाबय।

खुलेपन अराजकता नहि; बहुल विधिक औचित्य मानब।

जैना एक नगर एके दरबज्जासँ प्रवेश योग्य नहि; ज्ञानक नगरो अनेक द्वार।

मुदा हरेक द्वार पर पहचानक नियम।

प्रमाणक विश्वसनीयता एहि पहेरेदारक काज।

आ तत्त्वमीमांसा?

यदि ज्ञानक गहिर आधार सत्ता पर निर्भर, तँ ज्ञानमीमांसा तत्त्वमीमांसासँ पूर्ण अलग केना?

हम जे मानैत छी कि बाहरी जगत अछि, वस्तु टिकैत अछि, कारण-सम्बन्ध अर्थवान, चेतना उपस्थित— ई सभ केवल ज्ञानक तकनीकी नियम नहि; सत्ताक धारणा सेहो।

एहि कारण गहन ज्ञानमीमांसा अन्ततः अस्तित्वक प्रश्न छू लैत अछि।

“की अछि?” आ “केना जानैत छी?” दू प्रश्न दूर चलि फेर एक-दोसर केँ भेटैत अछि।

जैना नदीक दू शाखा समुद्रमे मिलि जाए।

मुदा मिलन भेद मिटाबय नहि।

तत्त्वमीमांसा सत्ताक स्वरूप; ज्ञानमीमांसा ज्ञानक शर्त; दुनू एक-दोसरक मौन पड़ोसी।

एक घरक नींव आ खिड़की जकाँ।

नींव बिनु खिड़की कतय; खिड़की बिनु नींव देखब केना?

दार्शनिक चिन्तन दुनूकेँ संग देखबाक साहस।

ई साहस न सिद्धान्तक अहंकार, न रहस्यक आश्रय।

गहनता स्पष्टता सँ भागैत नहि।

जतय कठिन प्रश्न, ओतय भाषा आरो साफ हो।

जटिलता अस्पष्टताक बहाना नहि।

एक गहिर नदी स्वच्छ हो सकैत अछि।

दार्शनिक लेखन एहन स्वच्छ गहराई खोजय।

हमरा कतेक बेर कठिन शब्द ज्ञानक प्रमाण लगैत; मुदा शब्दक कठिनता विचारक गहराई नहि।

गहिर विचार सरल वाक्यमे उतरि सकैत अछि; सरल विचार कठिन शब्दमे छिपि सकैत अछि।

गहन-ज्ञानमीमांसाक साँच कसौटी कतेक गूढ़ शब्द नहि, कतेक मूल प्रश्न स्पष्ट भेल।

ज्ञानक सभसँ मूल प्रश्नसभ— ज्ञाता के? ज्ञेय की? प्रमाण की? प्रामाणिकता कोना? आत्मबोधक स्वरूप? भाषा आ सत्यक सम्बन्ध?

ज्ञानक सीमा? अज्ञानक स्थान?

ई प्रश्न केवल पुस्तकक नहि; प्रतिदिन हमरा संग।

डॉक्टरक निर्णय, न्यायालयक प्रमाण, समाचारक दावा, इतिहासक व्याख्या, धर्मक विश्वास, वैज्ञानिक निष्कर्ष— सभ ठाम हम पूछि सकैत छी— “एहि बातक आधार की?”

एहि एक प्रश्नमे ज्ञानमीमांसाक लोकतान्त्रिक शक्ति अछि।

सत्ता कहय— “मानू।” दर्शन पूछय— “किएक?”

भीड़ कहय— “सभ मानैत अछि।” दर्शन— “सभ मानैत अछि, एहि सँ सत्य सिद्ध?”

परम्परा कहय— “सदियों सँ एना।” दर्शन— “स्थायित्व औचित्यक प्रमाण?”

नवता कहय— “ई आधुनिक।” दर्शन— “नव होएब ठीक होएबाक प्रमाण?”

एहि प्रश्नक संस्कार मनुष्य केँ बौद्धिक स्वतन्त्रता दैत अछि।

मुदा प्रश्नक अर्थ हरेक बात नकारब नहि।

सन्देह यदि आदत बनि किछु स्वीकारे नहि, तँ ज्ञानक घर बनत केना?

विवेक स्वीकृति आ अस्वीकृति दुनूकेँ कारण माँगैत अछि।

गहन ज्ञानमीमांसा न अन्धविश्वास, न अन्धसन्देह।

बीचमे परीक्षित भरोसा।

जैना पुल पर चलैत हरेक पगमे लोहेक परमाणु जाँचि नहि लैत छी; मुदा पुल टूटबाक संकेत देखलासँ आँखि बन्दो नहि करैत।

जीवन यहीं संतुलन।

ज्ञानक भरोसा अनुभव, परम्परा, तर्क, परीक्षण आ संशोधनक साझा फल।

कोनो एक स्रोत सभ ठाम सम्राट नहि।

अनेक प्रमाणक बहुलता मानवीय स्थितिक सत्य चित्र।

मनुष्य सीमित, मुदा आत्मसमीक्षक।

एहि आत्मसमीक्षा सँ सीमा शक्ति बनि सकैत अछि।

हम सभ नहि जानैत छी, मुदा जे जानैत छी ओकर आधार जाँचि सकैत छी।

हम भ्रमित हो सकैत छी, मुदा भ्रम पहिचानि सुधारि सकैत छी।

हम भाषा मे बँधल, मुदा भाषा पर विचार करि सकैत छी।

हम इतिहासक संतान, मुदा इतिहासक मान्यता जाँचि सकैत छी।

यहीं मानव ज्ञानक गरिमा।

गहनता असीम ज्ञानक दावा नहि; सीमित ज्ञानक आत्मजागरूकता।

आत्मा यदि ज्ञानक प्रकाशक आधार, तँ ओकर अर्थ दुनियासँ भागब नहि।

आत्मबोध वस्तु-जगत केँ नकारैत नहि; ओ ज्ञानक केन्द्रीय स्थिति साफ करैत अछि।

खिड़की घरक भीतर होइत अछि, तैयो बाहरक दृश्य ओकर माध्यम।

चेतना भीतर, मुदा ज्ञान बाहर धरि फैलैत।

आत्मा दीवार नहि, दृष्टिक केन्द्र।

ई केन्द्र ककरो निजी अहंकार नहि बनय।

“हम जानैत छी” कहैत दोसरक ज्ञान नकारब आत्मबोधक विकृति।

साँच आत्मबोध अपन सीमा देखैत, तँ संवादक दुआर खोलैत।

दोसर व्यक्ति वस्तु नहि; ओहो अपन चेतनाक केन्द्र।

एहि बोध सँ ज्ञानमीमांसा नैतिकता दिस एक मौन पुल बनबैत अछि।

जतय हम मानैत छी कि दोसर केवल हमर अनुभवक वस्तु नहि, अपितु स्वयं अनुभवकर्ता, ओतय सम्मानक दार्शनिक आधार जन्मैत अछि।

ज्ञानक प्रश्न मानव सम्बन्धसँ पूर्ण अलग नहि।

“हमरा सत्य मालूम” कहबाक ढंग कखनो हिंसा बनि सकैत अछि।

विनम्र ज्ञान कहैत अछि— “हमर आधार ई अछि; अहाँक आधार सुनब।”

एहि संवादमे दर्शन जीवित।

पूर्व आ पश्चिम, पुरान आ नव, प्रत्यक्षवाद आ आत्मवाद— दुनू पक्ष एक-दोसरक अन्तिम न्यायाधीश नहि।

संवाद तखन सार्थक जखन दू पक्ष अपन प्रश्न आ अपन सीमा साफ राखय।

संगमलाल पाण्डेयक गहन दृष्टि एहन संवादक एक दीर्घ आमन्त्रण।

भारतीय ज्ञानमीमांसा केवल अतीतक गौरव नहि; ओ आधुनिक प्रश्नक संग फेर पढ़ल जा सकैत अछि।

यूरोपीय दर्शन केवल आयातित पाठ्यक्रम नहि; ओ तुलनाक एक नवा दर्पण।

दर्पणक काज चेहरा बदलब नहि, चेहरा देखाएब।

दोसर परम्परा हमरा अपन मान्यता पहिचानबैत अछि।

जे अपने घरमे स्वाभाविक लगैत, बाहरक दृष्टिसँ प्रश्न बनि उठैत।

यहीं तुलनात्मक दर्शनक सर्जनात्मक शक्ति।

ज्ञान केवल उत्तरक ढेर होइत तँ पुस्तकालय सभसँ बुद्धिमान होइत।

मुदा पुस्तकालय अपन पुस्तकक अर्थ नहि पूछैत।

मनुष्य पूछैत अछि।

एहि प्रश्नक्षम चेतना ज्ञानक गहराईक मूल चिह्न।

हम पढ़ैत छी, फेर पूछैत छी; मानैत छी, फेर जाँचैत; जाँचैत छी, फेर संशोधित करैत।

ज्ञान जीवित रहैत अछि किएक तँ ओ अपने केँ फेर देख सकैत अछि।

आत्मसंशोधन ज्ञानक नैतिकता।

भूल स्वीकारब पराजय नहि; ज्ञानक विजय।

एक सिद्धान्त जँ कखनो बदलबे नहि, तँ कदाचित् ओ सत्यसँ अधिक अहंकारक किला।

सत्य प्रश्न सँ नहि डरैत।

गहनता किला नहि, कुआँ।

जितबा नीचाँ उतरी, जल आरो ठंढा, आ आकाशक प्रतिबिम्ब आरो गहिर।

मुदा कुआँमे उतरैत रस्सी चाही— तर्क।

दीप चाही— चेतना।

पात्र चाही— भाषा।

आ सावधानी— प्रमाण।

चारू बिनु गहराई अन्धकार बनि सकैत अछि।

दर्शनक साधना गहराई केँ अन्धकार नहि, प्रकाश बनाबय।

सतह पर ज्ञान कहैत अछि— “ई फूल लाल।”

गहराईमे प्रश्न— रंगक अनुभव की? वस्तुक गुण? दृष्टिक प्रक्रिया? भाषाक वर्गीकरण? साझा जगतमे ‘लाल’क अर्थ कोना स्थिर?

एक छोट रंग कतेक दुआर खोलि दैत!

ई दर्शनक आश्चर्य।

साधारण अनुभव असाधारण प्रश्नक बीज।

गहनता दूर देशक रहस्य नहि; दैनिक अनुभवक अदृश्य तह।

जल पीबैत हम सामान्य; पूछैत— ‘स्वाद’ वस्तुमे अछि कि अनुभवमे? तखन दर्शन।

नाम सुनैत ककरो स्मरण— ध्वनि बाहर, अर्थ भीतर; दुनू मिलि एक पहचान।

ज्ञान सदैव वस्तु आ चेतनाक जीवित सम्बन्ध।

गहन-ज्ञानमीमांसा एहि सम्बन्धक नाड़ी सुनैत अछि।

ओ केवल कहैत नहि कि हम जानैत छी; ओ पूछैत— जानबाक भीतर की घटैत अछि?

आ फेर आरो गहिर— जे ई प्रश्न पूछैत अछि, ओ चेतना स्वयं केना उपस्थित?

एहि अंतिम मोड़ पर ज्ञान अपनहि घर पहुँचैत अछि।

बहुत यात्रा पाछाँ यात्री पता करैत अछि जे रास्ताक नक्शा ओकर हाथमे छल, मुदा नक्शा देखबाक आँखि ओ भूलि गेल छल।

गहन ज्ञानमीमांसा आँखि केँ फेर स्मरण करबैत अछि।

दृश्य महान, मुदा दृष्टि बिनु दृश्य ककर?

ज्ञान महान, मुदा ज्ञाता बिनु ज्ञानक अर्थ ककर लेल?

आ ज्ञाता यदि स्वयं अपनहि सँ पूर्ण अज्ञात, तँ ज्ञानक भवनक नींव कतय?

एहि लेल आत्मबोध अतिरिक्त अध्याय नहि, गहराईक केन्द्र।

मुदा केन्द्र अन्त नहि।

केन्द्र सँ वृत्त फैलैत अछि— जगत, भाषा, प्रमाण, तर्क, दोसर चेतना, इतिहास, विज्ञान, मूल्य।

आत्मा यदि केवल अपनहि मे बन्द, तँ ज्ञानक विस्तार असम्भव।

आत्मबोधक सार बाहरक जगत सँ सम्बन्ध बनाबयमे।

दीप अपने केँ जरैत, मुदा प्रकाश चारु दिस फैलैत।

एहि रूपकमे गहनता आ संसार एक-दोसरक विरोधी नहि।

भीतरक प्रकाश बाहरक सत्य खोजबाक क्षमता।

आ बाहरक अनुभव भीतरक मान्यता जाँचबाक कसौटी।

दुनूकेँ एक-दोसरक आवश्यकता।

ज्ञान एकतरफा यात्रा नहि; संसारसँ चेतना आ चेतनासँ संसार बीच निरन्तर आवागमन।

यहीं जीवित दर्शन।

संगमलाल पाण्डेयक गहन-ज्ञानमीमांसाक काव्यात्मक स्मरण कदाचित् एतबे—

जे देखलहुँ, ओकरा जानू; जे जानलहुँ, ओकर आधार पूछू; जे आधार भेटल, ओकर सीमा देखू; जे सीमा देखल, ओहि सँ निराश नहि, आरो सजग होऊ।

अपन चेतना केँ सत्यक सिंहासन नहि, सत्य-खोजक दीप बनाउ।

प्रमाण केँ हथियार नहि, परीक्षणक साधन।

भाषा केँ किला नहि, संवादक पुल।

परम्परा केँ उत्तरक बन्द पेटी नहि, प्रश्नक जीवित भण्डार।

आ दर्शन केँ कठिन शब्दक प्रतिष्ठा नहि, स्वयं केँ आ संसार केँ अधिक साफ देखबाक अनुशासन बनाउ।

तखन ज्ञान सूचना सँ ऊपर उठत।

तखन जानब केवल स्मृति नहि, जागरण होएत।

तखन प्रश्न शंका मात्र नहि, प्रकाशक सीढ़ी।

तखन अज्ञान लज्जा नहि, नव खोजक देहरी।

तखन आत्मा रहस्यक पर्दा नहि, चेतनाक गहराईक दार्शनिक नाम।

आ तखन मनुष्य जे संसार केँ जानबाक असीम आकांक्षा रखैत अछि, एक क्षण ठाढ़ भऽ अपनहि सँ पूछत—

“जे सभ किछु जानबाक चाहैत अछि, ओ ‘हम’ स्वयं केतेक गहिर जानल गेल?”

एहि प्रश्नक कोनो जल्दी उत्तर नहि।

मुदा कदाचित् गहन ज्ञानक पहिल दीप एही प्रश्न सँ जरैत अछि।

देहक भीतर “हम”

हम अपन हाथ देखैत छी, अपन आँखि, अपन साँस, अपन थाकल देह; फेर सहजहि कहैत छी— “ई हमर शरीर।”

मुदा एहि “हमर” केर भीतर एकटा प्रश्न जागैत अछि— जे कहैत अछि “हमर”, ओ स्वयं के?

शरीरसँ अलग कोनो अदृश्य यात्री? कि शरीरक जागल रूपे ओ “हम” अछि?

प्राचीन तर्कसभ एकटा आत्मा खोजलक— देहसँ भिन्न, इन्द्रियसँ भिन्न, मनसँ भिन्न, श्वाससँ भिन्न; देह टूटि जाए, मुदा जे न टूटय।

ओहि आत्मा पर ज्ञानक दीप, सुख-दुःखक छाया, इच्छा-द्वेषक तरंग, प्रयत्नक गति, धर्म-अधर्मक भार राखल गेल।

जन्म बदलय, देह बदलय, मुदा भोक्ता कर्मक धागा पकड़ने आगाँ चलैत रहय— एहन एक दीर्घ कल्पना दार्शनिक परम्पराक भीतर जड़ि गाड़ि बैसल।

आचार्य बद्रीनाथ शुक्ल एहि परिचित बाट पर एकटा असुविधाजनक प्रश्न राखैत छथि— की “हम” केँ बुझबाक लेल देहक पाछाँ अनिवार्यतः दोसर सत्ता चाही?

की जे अनुभव देहमे फूटैत अछि, ओकर व्याख्या देहक भीतर सँ नहि भऽ सकैत?

की बुद्धि, स्मृति, इच्छा, सुख, दुःख— सभकेँ एहन घर चाही जे शरीरसँ बाहर बनल हो?

ई प्रश्न परम्पराक अपमान नहि, परम्पराक कसौटी अछि।

किएक तँ दर्शन मात्र उत्तर बचबैत नहि; ओ उत्तरक नींवो खनैत अछि।

हम दुःख अनुभव करैत छी। दुःख कोनो दूर आकाशमे नहि, शरीरक भीतर धड़कन बदलैत, आँखि भिजबैत, श्वास भारी करैत अछि।

हम प्रसन्न होइत छी। मुँह पर उजास, देहमे हलुकापन, कदममे गति।

अनुभव देहसँ एतेक गुंथल जे देह केँ केवल बाहरी आवरण कहब सहज नहि।

यदि देह केवल वस्त्र, तँ वस्त्रक ताप मनक ऋतु किएक बदलैत?

यदि आत्मा पूर्ण अलग, तँ औषधि खाइते चेतना किएक बदलैत?

ज्वर बढ़ैतहि विचारक चालि किएक सुस्त?

निद्रा उतरिते जगत किएक ओझराइत?

मादक द्रव्य स्मृति, निर्णय, भावना पर किएक प्रभाव करैत?

एहि प्रश्नसभमे देह मौन पात्र नहि रहैत; ओ अनुभवक सक्रिय धरातल बनि उठैत अछि।

मनुष्यक “हम” कदाचित् मांस-पेशी मात्र नहि, मुदा मांस-पेशीसँ निर्लिप्त एक पृथक छाया सेहो नहि।

देह हमर संसारक पहिल दुआर।

आँखि बिनु रंगक अनुभव? कान बिनु स्वर? त्वचा बिनु स्पर्श? मस्तिष्कक आघात स्मृतिक मानचित्र बदलि दे, तँ “हम” केर निरन्तरता कतेक सरल रहि जाइत?

देहात्मवाद एहि कठिनाई केँ समक्ष आनैत अछि।

ओ कहैत जकाँ— पहिने एतय देखू, जतय जीवन प्रत्यक्ष धड़कैत अछि; फेर अदृश्य सत्ता गढ़ू, यदि ओकर आवश्यकता बचि जाए।

अनावश्यक द्विगुणन ज्ञानक गौरव नहि।

एक रहस्य बुझब लेल दोसर रहस्य जोड़ि देब समाधान होइते नहि।

मुदा प्रश्न फेर उठैत अछि— यदि “हम” देह छी, तँ देह निरन्तर बदलैत अछि।

बालकक देह युवकक देह नहि, युवकक देह वृद्धक देह नहि; कोशिकासभ बदलैत, रूप बदलैत, ताकत बदलैत।

तैयो हम कहैत छी— “ओ बालक हमहीं छलहुँ।”

एहि निरन्तरताक सूत्र की?

नाम? स्मृति? शरीरक क्रमिकता? सम्बन्धक इतिहास?

देहात्मवादक समक्ष ई गहिर कसौटी।

स्मृति एकटा अद्भुत पुल अछि।

काल्हिक अनुभव आइक चेतनामे “हमर” बनि लौटैत अछि।

मुदा स्मृति सेहो देहक अवस्थासँ बँधल; रोग ओकर पन्ना मेटि सकैत, आघात क्रम बिगाड़ि सकैत।

यदि स्मृति शरीरक बदलाबसँ प्रभावित, तँ आत्माक एकदम स्वतन्त्र कोठरी कतय अछि?

प्रत्यभिज्ञान— “ई ओहिऐ व्यक्ति” “ई ओहिऐ स्थान” “ई ओहिऐ हम”— ए सभ केवल रहस्यमय आत्माक मुहर सँ नहि चलैत; देह, स्मृति, क्रम, पहचान, अनुभव सभ मिलि एकटा जीवित निरन्तरता बनबैत अछि।

हम प्रतिदिन अपने केँ नव रूपमे पबैत छी, मुदा पूर्ण अनजान नहि।

परिवर्तनक भीतर क्रमिकता अछि; क्रमिकताक भीतर पहचान।

नदीक जल बदलैत, नदीक नाम रहैत।

नदी केवल नाम नहि, न केवल जलक प्रत्येक बूँद; ओ प्रवाहक निरन्तर संरचना।

मनुष्यक देहात्मक “हम” सेहो एहनहि कोनो प्रवाह हो सकैत अछि— स्थिर पाथर नहि, क्रमबद्ध जीवन।

मुदा एतय एकटा भाषिक भ्रम बारम्बार दरबज्जा खटखटबैत अछि।

हम कहैत छी— “हमर शरीर।” तँ की “हम” शरीरसँ अलग?

हम कहैत छी— “हमर मन।” तँ की “हम” मनसँ अलग?

“हमर सिर दुखैत अछि” कहलासँ की सिर हमर अस्तित्वक बाहर चलि गेल?

भाषा व्याकरणक सुविधा सँ अनेक सम्बन्ध बनबैत अछि; सभ सम्बन्ध तत्त्वमीमांसक भेद नहि।

“हमर गाँव” कहलासँ हम गाँवक बाहर छी, ई सत्य; मुदा “हमर विचार” कहलासँ विचार हमरा सँ ओही प्रकार अलग, ई आवश्यक नहि।

शब्द कखनो तर्कक दर्पण, कखनो भ्रमक जाल।

दार्शनिक केँ व्याकरण सँ सत्ता निर्धारित करबाक पहिने रुकि सोचबाक चाही।

“हमर शरीर” एक भाषा-प्रयोग; ओही सँ अवश्यंभावी रूपेँ एक अतिरिक्त आत्मा सिद्ध हो, ई छल्लाँग गहिर जाँच माँगैत अछि।

देहात्मवाद एहि छल्लाँगक दूरी नापैत अछि।

मुदा विरोधी पूछत— यदि आत्मा देहे, तँ मृत शरीरमे आत्मा कतय गेल?

शरीर रहि गेल, मुदा चेतना नहि।

तखन की जीवित शरीर आ मृत शरीर एकहि बात?

नहि।

आगि बुझलाक पाछाँ लकड़ी रहि सकैत अछि, मुदा ज्वाला नहि।

ज्वाला लकड़ीसँ अलग एक स्वतन्त्र पदार्थ हो, ई आवश्यक नहि; विशेष व्यवस्था, विशेष प्रक्रिया, विशेष दशा समाप्त भेल।

जीवन सेहो शरीरक केवल आकार नहि, ओकर जीवित संगठन, क्रिया, संचार, संवेग, चेतन क्षमता।

मृत देह जीवित देहक सभ गुण नहि रखैत।

एहि भेद सँ अतिरिक्त आत्मा अनिवार्यतः सिद्ध नहि।

जीवन संयोजनक गुण हो सकैत, जतय अंशसभ मिलि एहन क्षमता बनबैत जे अलग-अलग अंशमे नहि भेटैत।

स्वर एक तारमे नहि, तार, वायु, स्पर्श, कम्पन मिलि संगीत बनबैत अछि।

संगीत समाप्त भेलासँ कोनो “अदृश्य संगीत-पदार्थ” शरीर छोड़ि भागल, एहन निष्कर्ष आवश्यक नहि।

मुदा ई उपमा पूर्ण उत्तर नहि; केवल सम्भावनाक दुआर।

चेतना अखनो रहस्यक गहिर क्षेत्र।

देहात्मवादक साहस रहस्य केँ अदृश्य पदार्थक नाम दऽ जल्दी बन्द नहि करब।

ओ कहैत अछि— जे समझल नहि, ओकरा “आत्मा” कहि देब बुझि लेब नहि।

ज्ञानक ईमानदारी अज्ञान केँ अज्ञान कहबाक सामर्थ्य।

एकटा दोसर प्रश्न— मन।

यदि मनो शरीरसँ अलग सूक्ष्म द्रव्य, तँ मन आ शरीरक सम्बन्ध केना?

एक अदृश्य मन दृश्य देह केँ कुन पुल सँ चलबैत?

स्पर्श कतय? संयोग कोना?

समस्या हल करबाक लेल मन जोड़ल गेल, मुदा मन-शरीर सम्बन्ध नव समस्या बनि सकैत अछि।

देहात्मवादी दृष्टि सम्भवतः कहत— मन केँ देहक जीवित क्रियासँ अलग साम्राज्य नहि बनाउ।

विचार, स्मृति, भावना, निर्णय— जीवित मनुष्यक कार्य।

मनुष्य विचार करैत अछि, “आत्मा” अकेले नहि; मनुष्य दुखैत अछि, केवल “मन” नहि; मनुष्य चाहैत अछि, देह-रहित इच्छा नहि।

व्यक्ति एक सम्पूर्ण जीवित एकता।

एहि एकताक सम्मान देहात्मवादक मूल आग्रह बनि सकैत अछि।

किएक तँ हम दैनिक जीवनमे व्यक्ति केँ सम्पूर्ण देखैत छी।

हम नहि कहैत छी— “ओकर आत्मा बाजार गेल अछि।” हम कहैत छी— “ओ गेल अछि।”

हम नहि कहैत छी— “ओकर शरीर अपराध कएलक, आ आत्मा निर्दोष।” हम व्यक्ति केँ जिम्मेदार मानैत छी।

नैतिकता सम्पूर्ण मनुष्यक नाम पुकारैत अछि।

कर्म देहसँ बाहर उड़ैत अलग वस्तु नहि; ओ व्यवहार, परिणाम, स्मृति, सम्बन्ध, समाजमे चिन्ह छोड़ैत अछि।

एक कर्म करनेवला केँ बदलैत, दोसर केँ प्रभावित करैत, संस्था पर प्रभाव छोड़ैत, कखनो पीढ़ी धरि।

कर्मक फल केवल परलोकक लेखा हो, ई एक मत; मुदा वर्तमान जीवनमे सेहो कर्मक बीज तुरन्त अंकुरित होइत अछि।

झूठ विश्वास तोड़ैत, हिंसा भय बनबैत, करुणा सम्बन्ध गहिर करैत, शिक्षा अगिला पीढ़ी बदलैत।

देहात्मवाद नैतिकता केँ अनिवार्यतः नष्ट करैत अछि, एहन मानब जल्दीबाजी।

यदि परलोकक भय नहि, तँ मनुष्य किएक नैतिक?

किएक तँ दुःख एतय वास्तविक।

दोसरक पीड़ा एहि जीवनमे अछि।

अन्याय एहि समाजमें।

विश्वास, सम्मान, मैत्री, उत्तरदायित्व— ए सभ वर्तमान मनुष्यक जीवित मूल्य।

नैतिकता केँ अमर आत्माक प्रमाण पर एकमात्र निर्भर करब ओकर आधार बहुत संकीर्ण करब हो सकैत अछि।

मनुष्य मरणशील होइत हुएँ मूल्यवान हो सकैत अछि।

फूल क्षणभंगुर, तैयो सुन्दर।

जीवन सीमित, तैयो गरिमामय।

कदाचित् मृत्यु जीवनक मूल्य घटबैत नहि; ओ समय केँ आरो तीक्ष्ण अर्थ दैत अछि।

हमरा सीमित समय अछि, तँ चयन महत्त्वपूर्ण।

हम एक दिन नहि रहब, तँ आइक व्यवहार आरो जिम्मेदार हो सकैत अछि।

मरणशीलता नैतिक शून्यता नहि; कखनो ओ करुणाक स्रोत।

हम सभ नश्वर, तँ एक-दोसर पर अहंकार किएक?

हम सभ दुखसँ गुजरैत, तँ दया किएक नहि?

हम सभक देह भूख, रोग, थकान, मृत्यु सँ बँधल, तँ समान मानवीय आधार एहि साझा देहधर्ममे सेहो।

देह केवल निम्न वस्तु नहि।

कतेक परम्परामे देह केँ आत्माक कारागार कहबाक प्रवृत्ति रहल; मुदा देह बिनु प्रेमक आलिंगन, मायक स्पर्श, श्रमक पसीना, नृत्यक लय, संगीतक श्रवण, अन्नक स्वाद, आँखिक आँसू— सभ कतय?

देह जीवनक अपमान नहि, जीवनक प्रत्यक्ष धरातल।

देहात्मवाद एहि धरातल केँ दार्शनिक गरिमा दैत अछि।

मुदा गरिमा पूजा नहि।

देह सीमित, रोगग्रस्त, नश्वर।

एहि सीमा केँ स्वीकारब निराशा नहि।

दर्शनक एक रूप सीमितता सँ आँखि मिलाउ।

अमरत्वक कल्पना मनुष्यक गहिर इच्छा हो सकैत अछि; मुदा इच्छा सत्यक प्रमाण नहि।

हम चाहैत छी प्रियजन सदा रहथि; मुदा चाहना प्रकृतिक विधान बदलैत नहि।

सत्य कखनो हृदयक इच्छा सँ असहमत हो सकैत अछि।

दार्शनिक साहस एहि असहमतिक सामना।

परम्परागत अतिरिक्त आत्मवाद मृत्यु पाछाँ एक निरन्तर भोक्ता मानैत अछि।

देहात्मवाद पूछैत अछि— ई भोक्ता कुन प्रमाण पर?

स्मृति नहि, प्रत्यक्ष नहि, जीवित अनुभवक बाहर; तखन अनुमानक आधार कतेक मजबूत?

कर्मफल, पुनर्जन्म, परलोक— ए सभ सिद्धान्त एक-दोसर केँ सहारा दैत; मुदा वृत्ताकार सहारा स्वतन्त्र प्रमाण नहि।

यदि आत्मा सिद्ध करबाक लेल पुनर्जन्म चाही, आ पुनर्जन्म सिद्ध करबाक लेल आत्मा, तँ तर्क अपने गोल चक्करमे घूमि सकैत अछि।

देहात्मवाद एहि वृत्त पर रेखा खींचि पूछैत अछि— आरम्भिक आधार कतय?

मुदा देहात्मवादो प्रश्नसँ मुक्त नहि।

चेतना किएक उत्पन्न होइत?

पदार्थक संगठन अनुभूतिक उजास कोना बनबैत?

“लाल” रंगक अनुभव, दर्दक निजी तीखापन, स्मृतिक अपनापन— ए सभक व्याख्या केवल रासायनिक शब्दमे पूर्ण हो सकत?

ई कठिन प्रश्न बचल।

साँच दर्शन अपन कठिनाई छिपबैत नहि।

एक मतक दोष देखलासँ दोसर स्वतः पूर्ण नहि।

देहात्मवादक शक्ति जतय अतिरिक्त सत्ताक आवश्यकता पर प्रश्न; ओकर चुनौती चेतनाक गहराईक सन्तोषजनक व्याख्या।

एहि द्विपक्षीय ईमानदारीमे विचार परिपक्व होइत अछि।

हम “हम” कहैत छी— एहि शब्दमे सम्पूर्ण जीवन समायल।

शरीरक इतिहास, स्मृतिक धागा, सम्बन्धक जाल, भाषाक संस्कार, कर्मक परिणाम, आत्मबोधक क्षण।

“हम” कदाचित् एक वस्तु नहि, जीवित समग्रता।

एक नामक भीतर अनेक स्तर।

देहात्मवाद एहि समग्रता केँ दू अलग संसारमे जल्दी विभाजित नहि करबाक चेतावनी।

मनुष्यक शरीर केवल मांस नहि; ओ इतिहास लऽ चलैत अछि।

हाथ पर श्रमक कठोरता, चेहरा पर वयस, घावमे दुर्घटनाक स्मृति, चालिमे रोग, आँखिमे जागल रातिक चिन्ह।

देह जीवनक लेखा-पत्र।

हम जे जीबैत छी, ओ किछु न किछु रूपमे देह पर लिखाइत अछि।

आ देह जे झेलैत अछि, ओ मनक भाषा बदलैत अछि।

दुनूकेँ अलग राज्य कहब जीवनक अनुभवसँ बहुत दूर जा सकैत अछि।

एहि लेल स्वास्थ्यक प्रश्न दार्शनिक प्रश्नो।

शरीरक गरिमा व्यक्तिक गरिमा।

ककरो देह पर हिंसा केवल बाहरी वस्तु पर आघात नहि; ओ व्यक्तिक “हम” पर आघात।

भूख केवल पेटक घटना नहि; ओ चेतना, निर्णय, सम्मान, जीवनक अवसर बदलैत अछि।

रोग केवल अंगक विकार नहि; ओ सम्पूर्ण जीवन-जगत केँ संकुचित करि सकैत अछि।

देहात्मवादक सामाजिक अर्थ एतय गहिर होइत अछि— यदि देह व्यक्ति सँ अलग आवरण नहि, तँ देहक देखभाल मानवीय सम्मानक हिस्सा।

अन्न, स्वास्थ्य, आराम, सुरक्षा— ए सभ “निम्न” आवश्यकता नहि, जीवित व्यक्ति केर आधार।

दार्शनिक ऊँचाई देहक नींव बिसरि नहि बनैत।

हम विचार करैत छी किएक तँ जीवित छी।

जीवनक आधार पहिने, तत्त्वचिन्तन पाछाँ।

मुदा मनुष्य केवल जीवित रहबाक यंत्रो नहि।

ओ प्रश्न करैत, कला रचैत, न्याय खोजैत, प्रेम करैत, भविष्य बनबैत।

देहात्मवाद एहि सभ केँ देहक विरोधमे नहि, देहधारी मनुष्यक क्षमता रूपमे देखय।

पृथ्वी सँ उगल वृक्ष आकाश दिस उठैत अछि; जड़ि धरतीमे होएबाक कारण आकाशक आकांक्षा झूठ नहि।

एहि जकाँ मनुष्य देहधारी होएबाक कारण ओकर विचारक ऊँचाई घटैत नहि।

अलौकिक आत्मा बिनु सौन्दर्य, सत्य, नैतिकता, ज्ञानक खोज अर्थहीन होएत, ई आवश्यक नहि।

मूल्य जीवित मनुष्यक जीवित सम्बन्धमे जन्मि सकैत अछि।

शाश्वतता एक प्रकारक मूल्य; मुदा क्षणभंगुरता सेहो मूल्यक स्रोत।

एक संध्या सुन्दर किएक? किएक तँ ओ बीतैत अछि।
 एक जीवन प्रिय किएक? किएक तँ ओ सीमित।
 मृत्यु सौन्दर्यक विरोधी नहि, कखनो ओकर पृष्ठभूमि।
 ई दृष्टि देहात्मवाद केँ मात्र नकारात्मक सिद्धान्त नहि रहए दैत; ओ जीवनक प्रत्यक्ष गरिमा प्रकाशित करैत अछि।
 मुदा जीवनक प्रत्यक्षता भोगवाद नहि।
 “एक जीवन अछि, तँ जे मन हो से करू” देहात्मवादक अनिवार्य निष्कर्ष नहि।
 उल्टा, एकहि जीवन आरो उत्तरदायित्व माँगि सकैत अछि।
 यदि क्षमा लेल अनन्त काल नहि, तँ आइ क्षमा करब जरूरी।
 यदि सुधार लेल दोसर जन्मक निश्चितता नहि, तँ एहि समाजमे अन्याय घटाउ।
 यदि मनुष्य देह सहित नश्वर, तँ ओकरा दुख देब आरो गंभीर अपराध।
 किएक तँ खोइल समय फेर नहि लौटत।
 देहात्मवाद नैतिकता केँ भविष्यक अदृश्य लेखा सँ हटाइ वर्तमानक चेहरा पर फेर लिखि सकैत अछि।
 मुदा कर्मक प्रश्न अखनो खुलल।
 मनुष्य अपन कर्मक फल केवल अपने नहि भोगैत।
 सन्तान, परिवार, समाज, संस्था, पर्यावरण— सभ पर असर।
 एक पीढ़ीक कर्म दोसर पीढ़ीक परिस्थिति बनैत।
 एहि अर्थमे “कर्मफल” एक सामाजिक निरन्तरता सेहो।
 हमर शरीर समाप्त हो सकैत, मुदा हमर कर्मक प्रभाव दोसर शरीरसभमे, दोसर जीवनसभमे चलैत रहि सकैत अछि।
 अमरत्व केवल आत्माक यात्रा नहि; कखनो स्मृति, कर्म, विचार, सन्तान, संस्था, कला, भाषा मनुष्यक उपस्थिति आगाँ लऽ जाइत अछि।
 ई प्रतीकात्मक निरन्तरता परलोकक सिद्धि नहि, मुदा वर्तमान जगतमे प्रभावक वास्तविक विस्तार।
 मनुष्य अपन देहसँ सीमित, मुदा प्रभावमे कखनो देहसँ आगाँ।
 एक शिक्षक मरलाक पाछाँ सेहो शिष्यक विचारमे जीवित; एक कवि पंक्तिमे; एक अन्यायी बनाओल व्यवस्था मे; एक करुण मनुष्य देल साहसमे।
 एहि ढङ्गें जीवनक अर्थ केवल जैविक सीमा सँ छोट नहि होइत।
 देहात्मवाद नश्वरता मानि अर्थ केँ बचा सकैत अछि।
 आ कदाचित् यहीं ओकर सभसँ मानवीय स्वर।
 हमरा अमर कहल जाए, तखन जीवन मूल्यवान; एहन आवश्यक नहि।
 हम मरणशील छी, तैयो प्रेम साँच।
 हमर शरीर बदलैत, तैयो स्मृति साँच।
 हम सीमित, तैयो न्याय जरूरी।
 हम एक दिन नहि रहब, तैयो आइक सत्य कम सत्य नहि।
 देह हमर सीमा, मुदा देहहि हमर संसारक दुआर।
 एहि देहसँ हम धरती छूबैत, आकाश देखैत, अन्न ग्रहण करैत, शब्द बोलैत, बच्चा केँ गोदमे उठबैत, अन्याय विरुद्ध ठाढ़ होइत।
 देह केँ तुच्छ कहि मनुष्यता ऊँच नहि होइत।
 देह केँ समझब मनुष्य केँ समझबाक पहिल पाठ।

आ “आत्मा”?

कदाचित् प्रश्न एखनहुँ खुलल।

दार्शनिकता जल्दी फैसला नहि, प्रमाणक प्रतीक्षा।

यदि अतिरिक्त आत्मा अछि, ओकर पक्षमे स्पष्ट आधार चाही।

यदि नहि, तँ चेतनाक रहस्य केँ देहक भाषा मे आरो गहिर बुझबाक श्रम चाही।

दुनू स्थिति मे प्रश्न बाँचल।

आ प्रश्न बाँचल, तँ दर्शन बाँचल।

आचार्य बद्रीनाथ शुक्लक देहात्मवाद हमरा एक कठिन आइना दैत अछि— जतय हम अपन शरीर केँ मात्र “हमर” कहि दूर नहि राखि सकैत।

आइना पूछैत अछि— की ई देह हमर वस्तु मात्र, कि हमर अस्तित्वक सभसँ निकट रूप?

हाथ उठैत अछि— हम उठैत छी।

आँखि रोइत अछि— हम रोइत छी।

हृदय धड़कैत अछि— हम भयभीत, हम प्रसन्न।

देह थाकैत अछि— हम विश्राम चाहैत छी।

एहि दैनिक एकताक भीतर कतेक गहिर दर्शन छिपल!

कदाचित् “हम” आकाशमे छिपल कोनो दूर वस्तु नहि; ओ एतय, एहि श्वासमे, एहि स्मृतिमे, एहि स्पर्शमे, एहि जीवित देहक सम्पूर्ण प्रवाहमे अपन अर्थ खोजैत अछि।

आ मृत्यु?

ओ प्रश्नक अन्त नहि, जीवनक सीमा।

सीमा जतय स्पष्ट, जीवनक प्रत्येक क्षण आरो तेज देखाइत अछि।

तँ देहक भीतर “हम” अपने केँ अमर सिद्ध करबाक जल्दी नहि करय; पहिने जीवित होएबाक अर्थ सम्पूर्ण गहिराईसँ बुझय।

किएक तँ कदाचित् मनुष्यक सभसँ पैघ रहस्य ई नहि जे मृत्यु पाछाँ की होएत, अपितु ई— जे एहि जीवित देहमे “हम” कहल अनुभव एतेक विलक्षण किएक अछि।

सुन्दरक सीमा सँ पार कला

फूल सुन्दर अछि— हम सहजे कहि दैत छी। सन्ध्या सुन्दर, गीत सुन्दर, चित्र सुन्दर, कविता सुन्दर।

मुदा दर्शन पूछैत अछि— “सुन्दर” आखिर की? वस्तुक गुण, मनक प्रतिक्रिया, समाजक संस्कार, कि एहि सभक बीच एकटा जटिल मिलन?

जतय साधारण दृष्टि रंग पर रुकि जाइत, सौन्दर्य-चिन्तन रंग देखनिहार आँखिक इतिहासो पूछैत अछि।

सुरेन्द्र बारलिंगेक विचारमे कला केवल मन बहलावक खिलौना नहि, न केवल सुखक पात्र; ओ मनुष्यक अनुभव केँ नव रूपमे रचबाक एक गंभीर क्रिया।

कला कखनो आनन्द दैत, मुदा आनन्द केवल इन्द्रिय-सुख नहि।

मीठ स्वादक सुख आ करुण नाटकक अनुभव एकहि वस्तु केना हो सकैत?

दुःखान्त कथा देखैत हम रोइत छी, तैयो मंच छोड़ि कहैत छी— “अद्भुत।”

किएक?

यदि कला केवल सुख, तँ पीड़ा, भय, विरह, करुणा, त्रासदीक सौन्दर्य कतय राखब?

कला दुःख केँ मिटबैत नहि, कखनो ओकरा एहन रूप दैत अछि जाहिमे मनुष्य दुःख केँ देख सकय, बुझि सकय, आ ओकर भीतरक अर्थ सहि सकय।

एहि कारण रसास्वाद भोगक समान नहि।

भोजनक तृप्ति देहक आवश्यकतासँ जुड़ल; कविताक तृप्ति अर्थ, लय, स्मृति, कल्पना, अनुभूतिक रूपान्तरणसँ।

एकटा गीत पेट नहि भरैत, मुदा मनक एक रिक्त स्थान नाम पाबि सकैत अछि।

यहीं कलाक पहिल चमत्कार।

आनन्द यदि केवल सुख-दुःखक तराजू, तँ सौन्दर्यक अनुभव अधूरा बुझाइत।

कला मन केँ एकाग्र करैत, दैनिक उपयोगक बाहर एक अलग दृष्टि देत।

जतय सामान्य जीवन पूछैत— “एहि वस्तुक उपयोग की?” कला पूछैत— “ई वस्तु देखाइत कोना अछि?” “एहि अनुभवक भीतर कुन अर्थ छिपल?”

एक पुरान जूता बाजारमे बेकार, चित्रमे एक जीवनक कथा बनि सकैत।

एक टूटल घर रहबाक लेल अनुपयोगी, कवितामे विस्थापनक स्मृति।

कला उपयोगिता सँ वस्तु केँ क्षण भरि मुक्त कऽ ओकरा नव सम्बन्धमे राखैत अछि।

मुदा ई मुक्ति वस्तुसँ पलायन नहि।

कला संसारक पदार्थहि सँ बनैत— शब्द, रंग, ध्वनि, शरीर, पत्थर, लय, प्रकाश।

सामग्री पृथ्वी केर, रूप कल्पनाक।

चित्रकारक रंग रासायनिक पदार्थ, मुदा कैनवास पर ओ स्मृति बनि सकैत।

कविक शब्द दैनिक भाषाक, मुदा कविता मे ओहि शब्दक आकाश बदलि जाइत।

“घर” कोशमे एक अर्थ; कवितामे माँक आवाज, छोड़ल आँगन, वापसीक इच्छा, अथवा कैद।

कला भाषा केँ केवल सूचना सँ अनुभव धरि लऽ जाइत अछि।

एहि लेल कलाक भाषा सामान्य वाक्यक नकल नहि।

समाचार कहैत— “वर्षा भेल।” कविता कहि सकैत— “सूखल माटि पहिल बूँदक नाम सुनलक।”

दुनू वाक्य एकहि घटना छूबैत, मुदा काज अलग।

पहिल जानकारी, दोसर अनुभूतिक पुनर्रचना।

कला शब्द केँ नव सम्बन्ध दैत, जाहिसँ परिचित वस्तु अकस्मात् अपरिचित हो उठैत, आ हम फेर देखब सीखैत छी।

एहि “फेर देखब” मे सौन्दर्यक एक स्रोत।

मुदा सुन्दरता सदा चिकन, मधुर, सन्तुलित, आकर्षक?

एक विकृत चेहरा महान चित्रक विषय हो सकैत; युद्धक विनाश महान उपन्यासक; भयावह दृश्य गंभीर नाटकक।

तँ कलाक मूल्य विषयक बाहरी सुन्दरतासँ सदैव तय नहि।

कुरूप वस्तु कलात्मक रूपमे गहिर सत्य खोलि सकैत अछि।

एहि कारण “सुन्दर” आ “कलात्मक” समानार्थी नहि।

सुन्दरता कलाक एक सम्भावना, एकमात्र कसौटी नहि।

कला कखनो असुन्दरक भीतर देखबाक साहस दैत अछि।

मजदूरक फाटल हथेली, भूखल आँखि, जर्जर बस्ती, युद्धक धुआँ— ई सभ कला सँ बाहर नहि।

यदि कला केवल सजावट, तँ जीवनक आधा सत्य दरबज्जा बाहर रहि जाएत।

बारलिंगेक सौन्दर्य-दृष्टि कलाक स्वतन्त्रता बचबैत, मुदा स्वतन्त्रता केँ सामाजिक अन्धता नहि बनबैत।

कलाकार समाजमे जीबैत अछि, भाषा समाजसँ पबैत, प्रतीक समाजसँ, स्मृति समाजसँ, संघर्ष समाजसँ।

ओ समाजसँ बाहर निर्वातमे रचना नहि करैत।

तैयो समाज कवि केँ आदेश दे— “एहि विषय पर एना लिखू” तँ कला प्रचारपत्र बनि सकैत अछि।

राजनीति कला सँ संवाद करय, मुदा कलाक श्वास अपने हाथमे नहि लेय।

नैतिकता कलाक प्रश्न हो, मुदा नैतिक उपदेश कलाक स्थान न लय।

एक कविता न्यायक पक्षमे हो सकैत, मुदा यदि ओ केवल नारा, तँ काव्यक आन्तरिक संरचना कतय?

कला विचार केँ रूप, लय, छवि, तनाव, बहुअर्थकता दैत अछि।

विचार मात्र कला नहि; रूप मात्रो कला नहि।

दुनू मिलि एहन जीवित संरचना बनबैत जतय अर्थ एकहि वाक्यमे बन्द नहि रहैत।

कला व्याख्याक दुआर खोलैत, मुदा हरेक व्याख्या ठीक नहि।

स्वतन्त्र अर्थक अर्थ मनमानी अर्थ नहि।

रचनाक भीतर शब्द, रूप, सन्दर्भ, लय, प्रतीक, संरचना— सभ मिलि सीमा बनबैत अछि।

पाठक स्वतन्त्र, मुदा पाठक रचनाक देह सँ पूर्णतः मुक्त नहि।

कोनो कविता मे नदी लिखल अछि; पाठक ओकरा स्मृति, समय, जीवनक प्रवाह समझि सकैत।

मुदा बिनु आधार ओहि नदी केँ लोहेक कुर्सी कहि देब व्याख्या नहि।

अर्थक स्वतन्त्रता अनुशासन सहित।

कला संकेत देत, आदेश नहि।

यहीं प्रतीकक शक्ति।

प्रतीक एकटा वस्तु होइत हुएँ अपने सँ पैघ अर्थक दुआर खोलैत।

दीप केवल तेल-बाती नहि; ज्ञान, आशा, प्रतीक्षा, स्मरण— कतेक अर्थ सम्भव।

मुदा प्रतीक कोशक स्थिर प्रविष्टि नहि।

हरेक रचनामे ओकर सन्दर्भ बदलैत, अर्थक छाया बदलैत।

कलाकार प्रतीक गढ़ैत नहि मात्र; कखनो परम्परागत प्रतीक केँ नव अर्थ देत।

कमल एक युगमे पवित्रता, दोसर रचना मे राजनीति, तेसर मे दलदलक बीच जीवन।

प्रतीकक जीवन इतिहासक संग बदलैत अछि।

यहीं कला परम्परा आ नवीनता केँ एकहि मंच पर भेटबैत।

नवता पुरानक पूर्ण विनाश नहि।

राग नया हो, तैयो सुरक परम्परा भीतर; कविता आधुनिक, तैयो भाषा पूर्वजक उपहार; नाटक प्रयोगशील, तैयो मंच, पात्र, दर्शकक दीर्घ इतिहास।

कलाकार उत्तराधिकारी सेहो, विद्रोही सेहो।

ओ पबैत अछि, फेर बदलैत अछि।

परम्परा जँ केवल अनुकरण, तँ रचना मृत; नवता जँ स्मृतिहीन, तँ जड़ि-विहीन।

कला दुनूकेँ संवादमे राखैत अछि।

सौन्दर्यक प्रश्न वस्तु मे अछि कि मन मे?

एकहि गीत ककरो आँखि नम करैत, ककरो उदासीन छोड़ैत।

तँ की सौन्दर्य केवल मनक पसन्द?

यदि केवल पसन्द, तँ आलोचना व्यर्थ।

“हमरा नीक लगल” आ “ई श्रेष्ठ रचना” दुनू एक नहि।

व्यक्तिगत रुचि आरम्भ हो सकैत, अन्तिम निर्णय नहि।

आलोचना एहि दूरी पर चलैत अछि।

आलोचक पूछैत— रचना अपन माध्यम केँ कतेक सघन रूपेँ उपयोग कएलक? रूप आ विषयक सम्बन्ध की? आन्तरिक संगति अछि? भाषा आवश्यक अछि कि सजावट? प्रतीक रचनाक भीतर जीवित अछि कि बाहर सँ चिपकाओल?

आलोचना कलाकारक शत्रु नहि; रचनाक गंभीर पाठ।

मुदा आलोचक अदालतक अंतिम न्यायाधीश सेहो नहि।

कलाक इतिहास कतेक रचना देखलक जकरा पहिने असफल कहल गेल, पाछाँ युगक प्रमुख स्वर मानल गेल।

रुचि बदलैत, मूल्यांकन बदलैत, सन्दर्भ बदलैत।

एहि सँ ई नहि जे कोनो कसौटी नहि।

कसौटी पत्थरक स्थिर माप नहि, संवादमे विकसित होइत विवेक।

जतय अनुभव, परम्परा, रूपबोध, भाषाबोध, इतिहास आ तर्क मिलैत अछि।

कलाक मूल्यांकन केवल नियमक सूचीसँ नहि।

कविता पढ़ि दस नियम टिक लगा देब आ निर्णय कऽ देब— कला एतेक सरल मशीन नहि।

किएक तँ रचनात्मकता नियमक अतिक्रमण सेहो करैत अछि।

महान कलाकार कखनो स्थापित व्याकरण तोड़ैत, मुदा अज्ञानवश नहि; नव सम्भावना लेल।

नियम तोड़बाक अधिकार नियम बुझलाक पाछाँ आरो अर्थवान।

अनुशासन रचनात्मकताक विरोधी नहि; ओ पंखक हड्डी।

हड्डी बिनु पंख आकार नहि रखत।

कल्पना कलाक प्रमुख शक्ति।

मुदा कल्पना झूठ गढ़ब मात्र नहि।

कवि एहन नगर रचि सकैत जे नक्शामे नहि; तैयो ओकर भय, प्रेम, अन्याय हमरा वास्तविक लगैत अछि।

कल्पना तथ्यसँ दूर जा मानवीय सत्यक निकट पहुँचि सकैत।

रामायण, महाभारत, लोककथा, आधुनिक उपन्यास— तथ्यक प्रश्न अलग, काव्यसत्यक प्रश्न अलग।

काव्यसत्य इतिहासक प्रमाणपत्र नहि माँगैत; ओ अनुभवक सुसंगति, मानवीय सम्भावना, रचनाक आन्तरिक विश्वसनीयता माँगैत अछि।

एक काल्पनिक पात्र हमरा वास्तविक परिचित सँ अधिक सजीव लगि सकैत।

किएक?

किएक तँ कला जीवनक बिखरल अनुभव केँ सघन रूप दैत अछि।

दस वर्षक पीड़ा एक दृश्य मे; एक युगक बेचैनी एक पात्र मे; एक समाजक द्वन्द्व एक संवाद मे।

कला समय केँ संक्षिप्त करैत, मुदा अर्थ केँ विस्तृत।

नाटक एहि शक्तिक अद्भुत उदाहरण।

मंच पर किछु घंटेमे जीवनक दशकों गुजरि सकैत।

स्थान छोट, मुदा संसार विशाल।

अभिनेता स्वयं रहैत हुएँ दोसर बनैत अछि।

दर्शक जानैत अछि— ई अभिनय, तैयो आँसू साँच।

एहि दोहरी चेतनामे नाट्यक चमत्कार।

हम भ्रमित नहि; हम सहमत छी एक रचनात्मक भ्रममे प्रवेश करबाक लेल।

मंचक तलवार वास्तविक हत्या नहि, मुदा भयक अनुभव सौन्दर्यात्मक रूपेँ वास्तविक।

कला सत्य आ कल्पनाक बीच एहन सेतु बनबैत जतय दुनू अपन पहचान नहि गुमबैत।

संगीतमे शब्दो आवश्यक नहि।

एक राग बिनु कथा मनक दिशा बदलि सकैत।

तँ अर्थ केवल शब्दमे नहि।

लय, स्वर, विराम, पुनरावृत्ति, तनाव, समाधान— ई सभो अर्थक रूप।

चित्रमे रेखा बोलैत, रंग चुप रहितो भाव बदलैत।

नृत्यमे देह भाषा बनैत।

मूर्ति मे पत्थरक मौन आकारक माध्यमँ अर्थ पबैत।

हरेक कलाक अपन माध्यम, अपन व्याकरण।

एक कलाक कसौटी दोसर पर जसक-तस नहि लगाओल जा सकैत।

कविता केँ चित्र जकाँ मापब? संगीत केँ उपन्यासक कथानक सँ?

माध्यमक विशिष्टता कलात्मक मूल्यांकनक मूल शर्त।

मुदा कलासभ एक-दोसर सँ सीखैत सेहो।

कविता संगीतक लय लैत, चित्र सिनेमाक फ्रेम, नाटक कविताक प्रतीक, फिल्म चित्रक प्रकाश।

मिलन पहिचान मिटाबय नहि, नव सम्भावना खोलैत।

सौन्दर्य-तत्त्व मीमांसा एहि बहुलता केँ एक सूत्रमे बाँधबाक लोभ सँ सावधान करैत अछि।

“सभ कला ई अछि” कहब सहज, मुदा अपवाद तुरन्त समक्ष आबि सकैत।

परिभाषा दुआर हो, दीवार नहि।

कला सदैव अपन परिभाषा सँ किछु पैघ।

एक युग जे वस्तु कला नहि मानलक, दोसर युग ओकरा कला कहि सकैत।

फोटोग्राफी, सिनेमा, स्थापना-कला, डिजिटल रचना— नव माध्यम पुरान परिभाषाक सीमा परीक्षण करैत अछि।

तँ सौन्दर्यशास्त्र स्थिर कानूनक पुस्तक नहि; नव रचनाक संग अपन प्रश्न नवीकृत करैत विज्ञान-जकाँ एक विकसित विमर्श।

मुदा “विज्ञान” शब्दो सावधानी माँगैत अछि।

कला-अनुभव पूर्णतः मापनीय नहि।

हृदयक कम्पन संख्या मात्र नहि; रुचि, संस्कृति, व्यक्तिगत इतिहास अनुभव बदलैत।

तैयो विचार असंभव नहि।

जतय पूर्ण माप नहि, ओतय तर्क समाप्त नहि।

मानवीय शास्त्रक अपन विधि हो सकैत अछि— व्याख्या, तुलना, विश्लेषण, सन्दर्भ, अनुभवक सूक्ष्म वर्णन।

सौन्दर्यशास्त्र प्रयोगशालाक नकल नहि करय; अपन विषयक अनुरूप विधि खोजय।

वस्तु आ मनक सम्बन्ध एतय फेर उठैत अछि।

सुन्दरता वस्तुमे? यदि केवल वस्तुमे, तँ सभकेँ समान अनुभव किएक नहि?

यदि केवल मनमें, तँ कला-शिक्षा, रुचिक विकास, आलोचनाक अर्थ किएक?
 कदाचित् सौन्दर्य सम्बन्धमें जन्मैत अछि— वस्तुक रूप, दर्शकक क्षमता, संस्कृतिक सन्दर्भ, क्षणक मनःस्थिति।
 एक राग रात्रि में एक अर्थ, दोपहरि में दोसर; बाल्यकालमें अनसुना, वृद्धावस्थामें आँसू।
 अनुभव वस्तु आ व्यक्ति दुनूक संगठित घटना।
 एहि कारण सौन्दर्य न पूर्ण वस्तुगत, न मनमाना आत्मगत।
 बीचमें एक साझा क्षेत्र।
 आलोचकक काज एहि क्षेत्रक संरचना साफ करब।
 कला-वस्तु केवल भौतिक वस्तु नहि।
 किताबक कागज कविता नहि; कैनवासक कपड़ा चित्र नहि; पत्थरक वजन मूर्ति नहि।
 भौतिक आधार आवश्यक, मुदा कलात्मक अस्तित्व रूप, अर्थ, संरचना, अनुभव आ सामाजिक मान्यतासँ बनैत।
 एक पुरान पाण्डुलिपि कागज रूपमें क्षीण, मुदा सांस्कृतिक अर्थमें अमूल्य।
 वस्तु अपने भौतिक सीमा सँ अधिक अर्थ वहन करैत अछि।
 यहीं कला-वस्तुक विशेष अस्तित्व।
 कला प्रतिनिधित्व करैत अछि, मुदा प्रतिनिधित्व फोटो-जकाँ नकल नहि।
 चित्रकार पेड़ बनबैत, मुदा हरेक पात गणैत नहि।
 कवि शहर लिखैत, मुदा हरेक गलीक नक्शा नहि।
 चयन, जोर, विलोपन, रचना— ए सभ प्रतिनिधित्वक हिस्सा।
 कला वास्तविकता केँ जसक-तस लौटबैत नहि; ओकरा पुनर्गठित करैत।
 एहि पुनर्गठनमें कलाकारक दृष्टि उपस्थित।
 दृष्टि झूठ नहि, चयनक स्वीकार।
 हरेक कैमरा एक फ्रेम चुनैत, फ्रेम बाहरक संसार छोड़ैत।
 हरेक कथा किछु आवाज दैत, किछु मौन।
 कला केँ बुझबाक लेल एहि चयनक नैतिकता आ सौन्दर्यात्मकता दुनू देखबाक।
 ककर चेहरा केन्द्रमें? ककर आवाज अनुपस्थित? कुन दृश्य उज्जर, कुन अन्हार?
 रूपक निर्णय कखनो सामाजिक अर्थ सेहो बनैत।
 एहि बिन्दु पर कला आ समाज फेर भेटैत अछि।
 कलाकारक स्वतन्त्रता महत्त्वपूर्ण, मुदा रचना समाजमें प्रभाव छोड़ैत अछि।
 एक छवि पूर्वग्रह मजबूत करि सकैत, एक कथा उपेक्षित मनुष्य केँ आवाज दे सकैत।
 कला कानून नहि, मुदा चेतना प्रभावित करैत।
 एहि प्रभावक कारण जिम्मेदारीक प्रश्न उठैत, मुदा जिम्मेदारी सेंसरशिपक पर्याय नहि।
 बाहरी आदेश कलाक जीवित प्रक्रिया नष्ट करि सकैत।
 कलाकार केँ अपन विवेकक भार स्वयं उठेबाक।
 स्वतन्त्रता जोखिम सहित।
 रचना असफल हो सकैत, अपमानजनक हो सकैत, गहिर हो सकैत, समय सँ आगाँ हो सकैत।
 समाजक उत्तर आलोचना हो, बहस हो, प्रतिवाद हो; हरेक असहमति पर मौन कराएब नहि।

कला संवादक सार्वजनिक क्षेत्र।

कखनो ओ समाजक घाव देखबैत, जकरा समाज ढाँकब चाहैत।

कखनो ओ समाजक स्वप्न केँ रूप दैत, जकरा राजनीति नाम नहि दे पबैत।

कखनो ओ केवल रंग आ स्वरक नव खेल रचैत, आ एहिऐ खेल मनुष्यक संवेदनशीलता बदलि दैत।

कला उपयोगी होएबाक लेल उपदेशक होएब आवश्यक नहि।

एक राग कोनो नीति नहि बनबैत, मुदा ध्यानक क्षमता गहिर करि सकैत।

एक चित्र कानून नहि बदलैत, मुदा देखबाक दृष्टि बदलि सकैत।

एक कविता भूख समाप्त नहि करैत, मुदा भूखल मनुष्य केँ आँकड़ा सँ चेहरा बना सकैत।

एहि परिवर्तन केँ “अनुपयोगी” कहब उपयोगक अर्थ बहुत संकीर्ण करब।

मनुष्य केवल रोटी सँ नहि, अर्थ सँ सेहो जीबैत अछि।

कला अर्थक अन्न।

मुदा अर्थ पूर्वनिर्मित पैकेट नहि।

रचना पाठकक सहभागिता माँगैत।

कविता पढ़ैत पाठक स्वयं रिक्त स्थान भरैत, अपन स्मृति लैत, अपन कल्पना।

तैयो रचना पाठकक मनक कच्चा माल मात्र नहि; ओकर अपन संरचना अछि।

एहि द्विपक्षीय क्रियामे अर्थ जन्मैत।

जैना संगीतमे वाद्य बजैत, मुदा श्रवण बिनु संगीतक अनुभव नहि।

कला-वस्तु आ रसिक चेतना एक-दोसरक संग अनुभव पूर्ण करैत।

रसिकता जन्मजात मात्र नहि; विकसित होइत अछि।

पहिल बेर जटिल राग कठिन लगि सकैत; बारम्बार सुनलासँ सूक्ष्मता खुलैत।

कविता पढ़बाक अभ्यास भाषाक परत देखब सिखबैत।

चित्र देखबाक प्रशिक्षण रेखा, खाली स्थान, रंग-सन्तुलन पहचानब।

तँ सौन्दर्यबोध शिक्षित हो सकैत अछि।

एहि सँ ई सिद्ध नहि जे विशेषज्ञक रुचि सदैव ठीक; मुदा अनुभवक गहराई अभ्याससँ बढ़ैत।

रुचि केवल निजी मनमानी नहि, संस्कार, अध्ययन, अनुभवक परिणाम सेहो।

आलोचना एहि संवेदनशीलता केँ भाषा दैत अछि।

“हमरा अच्छा लगल” केँ “किएक?” मे बदलैत।

एहि ‘किएक’ सँ सौन्दर्यशास्त्र जन्मैत।

मुदा हरेक ‘किएक’क एक अंतिम उत्तर नहि।

एक रचना अनेक कारणसँ प्रभावी— रूप, विषय, ऐतिहासिक क्षण, व्यक्तिगत स्मृति, समाजक तनाव।

सौन्दर्य अनुभव बहुकारणी।

एक सूत्र सभ कला नहि खोलि सकैत।

यहीं बारलिंगेक विचारक खुलापन महत्त्वपूर्ण।

ओ कला केँ एक कठोर परिभाषाक पिंजड़मे बन्द करबाक बदला अनेक पक्षसँ देखबाक आग्रह करैत अछि।

सुन्दरता, रस, आनन्द, भाषा, प्रतीक, रूप, कल्पना, समाज, आलोचना, माध्यम, स्वतन्त्रता— सभ एकहि वृत्तक अलग बिन्दु।

केन्द्र में मानवीय रचनात्मक अनुभव।

कला बनैत समय कलाकार केवल पदार्थ नहि सजबैत; ओ अपन अनुभव केँ एहन सार्वजनिक रूप दैत जतय दोसर मनुष्य प्रवेश करि सकय।

निजी दुःख कविता बनलाक पाछाँ साझा अनुभव हो सकैत।

एक व्यक्ति केर प्रेम गीतमे हजार लोकक प्रेमक आवाज।

एहि रूपान्तरणमे कला निजी केँ सार्वजनिक करैत, मुदा गोपनीयता नष्ट कऽ नहि; ओ विशिष्ट अनुभव केँ सामान्य मानवीय सम्भावना बनबैत।

यहीं कला व्यक्ति आ समाजक बीच पुल।

कलाकार अपन अकेलापन सँ लिखैत, मुदा भाषा सामूहिक।

पाठक अपन अकेलापन में पढ़ैत, मुदा अनुभव साझा।

कला एकान्त आ समुदाय दुनूक घर।

सौन्दर्य एहि घरक सजावट मात्र नहि; कखनो ओकर दरबज्जा, कखनो प्रकाश, कखनो अन्हार।

कुरूपतासँ भेटलाक पाछाँ सेहो यदि हम जीवनक सत्य अधिक साफ देखी, तँ कलात्मक अनुभव सुन्दरक पार पहुँचि गेल।

सुन्दरता तखन केवल “नीक लगनाइ” नहि, अनुभवक सघनता, रूपक संगति, अर्थक गहराई, संवेदनाक जागरण हो सकैत अछि।

कलाक सफलताक प्रश्न एहि कारण बहुस्तरीय।

केवल लोकप्रियता? भीड़ ताली बजौलक— तँ महान?

केवल कठिनता? कोनो नहि बुझलक— तँ महान?

केवल नवता? पहिले कखनो नहि भेल— तँ महान?

केवल नैतिक संदेश? अच्छा विचार— तँ अच्छा कला?

कोनो एक कसौटी पर्याप्त नहि।

महानता रचनाक भीतर अनेक शक्तिक सफल समन्वय हो सकैत— मौलिकता, रूप, गहराई, माध्यमक दक्षता, मानवीय स्पर्श, पुनर्पाठक क्षमता।

जे रचना हरेक पढ़ाइ पर नव परत खोलैत, ओ समय सँ दीर्घ संवाद करि सकैत।

मुदा समयो कठोर न्यायाधीश नहि; कतेक रचना सत्ता दबौलक, भाषा लुप्त भेल, पाठक नहि भेटल।

इतिहासक बचल सूची पूर्ण सत्य नहि।

सौन्दर्यशास्त्र केँ केननक बाहर मौन रचनासभक सम्भावना याद रखबाक चाही।

कला-इतिहास चयनक इतिहास सेहो।

ककर रचना संग्रहित? ककर नष्ट? ककर भाषा प्रतिष्ठित? ककर लोककला “छोट” कहल?

एहि प्रश्नसभ सँ सौन्दर्यबोधक सामाजिक संरचना खुलैत अछि।

तैयो सामाजिक विश्लेषण कलात्मक विशिष्टता केँ सम्पूर्ण निगलि नहि जाए।

एक गीतक मूल्य केवल वर्ग-सन्दर्भ सँ सम्पूर्ण नहि खुलत; जैना केवल राग-संरचना सँ ओकर सामाजिक इतिहास नहि।

दुनू दृष्टि आवश्यक, मुदा एक-दोसरक बदला नहि।

बहुविध दृष्टि सौन्दर्य-चिन्तनक शक्ति।

कला विज्ञान सँ अलग, मुदा अविवेकी नहि।

ओ तर्कक परेँ नहि, तर्क सँ अतिरिक्त अनुभवक रूप।

विज्ञान सामान्य नियम खोजैत; कला विशिष्ट अनुभवमे सत्य देखाइत।

विज्ञान कहि सकैत मनुष्य दुखमे एहन प्रतिक्रिया दैत; उपन्यास एक विशिष्ट मनुष्यक दुख जीबि देखबैत।

दुनू ज्ञान, मुदा रूप अलग।

कलाक ज्ञान सूत्र रूपमे नहि, अनुभव रूपमे।

एक नाटक देखलाक पाछाँ हम कखनो नव तथ्य नहि सीखैत, मुदा मनुष्य केँ अधिक बुझि सकैत छी।

एहि बुझाइ केँ मापब कठिन, मुदा नकारबो कठिन।

कला ज्ञानक सीमा बढ़बैत अछि।

सौन्दर्य-तत्त्व मीमांसा एहि ज्ञान केँ दर्शनक मेज पर स्थान दैत अछि।

सत्य केवल कथनक सत्य नहि; कखनो रूपक सत्य, चरित्रक सत्य, संवेदनाक सत्य।

एक उपन्यास “सभ मनुष्य एहन” नहि कहैत; ओ कहैत— “एक मनुष्य एहन हो सकैत।”

सम्भावनाक ई ज्ञान मानव संसारक महत्त्वपूर्ण हिस्सा।

कल्पना असत्यक विपरीत शब्द नहि; कखनो सत्यक सम्भावनाक प्रयोगशाला।

कवि पूछैत— यदि एना हो? यदि मनुष्य एहन परिस्थिति मे पड़य? यदि प्रेम आ कर्तव्य टकराय?

कथा उत्तर नहि, जीवित परिस्थिति बनबैत जतय पाठक स्वयं निर्णयक भार अनुभव करैत।

यहीं कला नैतिक शिक्षा सँ अधिक नैतिक अनुभव बनि सकैत।

उपदेश कहैत— “ई करू।” कला पूछैत— “यदि अहाँ एतय रहितहुँ, की करितहुँ?”

प्रश्नक शक्ति आदेश सँ अधिक टिकाऊ हो सकैत।

मुदा कला केँ नैतिक उपयोगिता सिद्ध करबाक सदैव आवश्यकता नहि।

कखनो शुद्ध ध्वनि, रंग, आकारक खेलो मानवीय अनुभवक उचित क्षेत्र।

मनुष्य खेलबो चाहैत अछि।

खेल निष्फल नहि; स्वतन्त्रता, कल्पना, नव संयोजनक अभ्यास।

कला गंभीर खेल, जतय नियम बनैत, टूटैत, फेर नव नियम जन्मैत।

बालक माटिसँ अनावश्यक आकृति बनबैत, तैयो ओहि खेलमे सृजनक पहिल पाठ।

मनुष्यक संस्कृति एहि “अनावश्यक” क्रियासभ बिनु कतेक निर्धन होइत!

गीत आवश्यक नहि जीवित रहबाक लेल; मुदा गीत बिनु जीवनक अर्थ कतेक सूखल हो सकैत।

यहीं उपयोगिताक सीमा।

कला जीवन बचाएबक तकनीक नहि, जीवन केँ जीए योग्य बनाबयवला एक मानवीय शक्ति।

सुरेन्द्र बारलिंगेक सौन्दर्य-दर्शन हमरा “सुन्दर” शब्द सँ आरम्भ करा अन्ततः मनुष्यक रचनात्मक स्वतन्त्रता धरि लऽ जाइत अछि।

सुन्दरता पूछैत अछि— हम किएक आकर्षित होइत छी?

कला पूछैत— हम किएक रचैत छी?

आलोचना— किएक ई रचना प्रभावी?

समाज— ककर अनुभव बोलि रहल?

भाषा— अर्थ कोना बनि रहल?

प्रतीक— एक वस्तु अपने सँ अधिक कोना कहि रहल?

कल्पना— जे नहि अछि, ओ सत्यक सम्भावना कोना खोलि रहल?

रस— दुःखो आनन्दमय अनुभूति मे कोना रूपान्तरित?

एहि सभ प्रश्नक बीच कला ककरो एक उत्तरक दासी नहि बनैत।

ओ स्वयं प्रश्नक क्षेत्र।

एक चित्र समक्ष अछि। हम चुप छी।

किछु क्षण पाछाँ चित्र बदलल नहि, मुदा हम बदलि गेलहुँ।

कदाचित् कलाक सभसँ गहिर शक्ति यहीं अछि।

ओ वस्तु केँ सदा नहि बदलैत; देखनिहार केँ बदलि दैत।

ओ संसारक रंग नव नहि बनबैत; आँखिक क्षमता नव करि दैत।

ओ पीड़ा मिटबैत नहि; पीड़ा केँ अर्थक रूप देत।

ओ मृत्यु रोकैत नहि; क्षण केँ स्मृति बनाबैत।

ओ समाजक सभ समस्या हल नहि करैत; मुदा समस्या केँ दिखाइ पड़ए योग्य बना सकैत।

ओ सत्यक अंतिम वाक्य नहि; सत्य केँ अनुभव करबाक एकटा दोसर भाषा।

एहि लेल कला सुन्दरक सीमा सँ पार जाइत अछि।

कखनो उजास, कखनो कुरूपता, कखनो मौन, कखनो विद्रोह, कखनो खेल, कखनो करुणा।

जतय मनुष्य अपन अनुभव केँ रूप देबाक आवश्यकता महसूस करैत, ओतय कला जन्मैत।

आ जतय हम ओहि रूपक समक्ष क्षण भरि रुकि अपने केँ नव ढङ्गसँ देखैत छी, ओतय सौन्दर्य-तत्त्व मीमांसा अपन प्रश्न फेर खोलैत अछि—

“सुन्दरता वस्तुमे छल, रचनामे, कि एहि भेटक क्षणमे हमर भीतर जन्मल?”

कदाचित् उत्तर एकटा नहि।

आ कदाचित् कलाक सौन्दर्य एहि बातमे सेहो अछि जे ओ प्रश्न केँ जल्दी समाप्त नहि करैत।

अखंड आकाशक बाट

प्रश्नक एकटा नहि चिंगारी मनक अन्हारमे पड़ैत अछि, आ धीरे-धीरे सम्पूर्ण आकाश उजास माँगय लगैत अछि।

हम कतय सँ आयल छी, ककरा दिस जा रहल छी, एहि बीचक साँस ककर संगीत पर चलैत अछि—

कोनो पोथी एके बेर सभ उत्तर नहि दैत, कोनो मौन सदा रिक्त नहि रहैत।

कखनो अक्षर दूरक दीप होइत अछि, कखनो अनुभव पयरक नीचाँ माटि।

हम खंड-खंड जीबैत छी— एक दिशामे बुद्धि, दोसर दिशामे इच्छा, तेसर दिशामे भय, चौथ दिशामे प्रेम।

देह अपन थकान कहैत अछि, मन अपन भटकन, बुद्धि अपन संशय, हृदय अपन गुप्त पुकार।

एहि सभक बीच कोनो सूक्ष्म धागा टूटल मनका फेर गूँथबाक प्रतीक्षा करैत अछि।

ओ धागाक नाम कदाचित् योग हो, कदाचित् स्मृति, कदाचित् गहिर सजगता, कदाचित् अपनहि भीतर अपनहि सँ भेट।

एक स्वर अकेले राग नहि, एक पंखुड़ी अकेले फूल नहि, एक लहर अकेले समुद्र नहि।

तैयो स्वरक अपन स्वरूप, पंखुड़ीक अपन रंग, लहरक अपन चमक।

अखंडता भिन्नता मिटाएब नहि, भिन्नताक भीतर एक-दोसरक स्पन्दन सुनब।

हाथ काम करय, माथ सोचय, हृदय प्रेम करय, आ आत्मबोध एहि सभकेँ एक-दोसर सँ अपरिचित नहि रहए दय।

कर्म यदि प्रकाश बिनु चलय तँ अन्ध दौड़ बनि सकैत अछि।

ज्ञान यदि करुणा बिनु जरय तँ ठंढा तारा।

भक्ति यदि विवेक छोड़ि दे तँ आँखिमे धुँआ।

शक्ति यदि मर्यादा भूलि जाए तँ तूफान।

चारू दिशाक हवा एकहि आकाशमे अपन-अपन गति पबैत अछि।
 कखनो एकटा शब्द बरसोंक यात्रा आरम्भ करैत अछि।
 कानमे पड़ल ध्वनि जँ जीवन नहि छूबय, ओ केवल ध्वनि।
 मुदा ओहि ए शब्द जँ भीतर एक पुरान गाँठ हिला दे, तँ ओ बीज भऽ जाइत अछि।
 बीज अपने वृक्ष नहि बनैत, माटि चाही, जल चाही, समय चाही, धैर्य चाही।
 मार्ग देखौनिहार दीप हो, दीवार नहि।
 ओ कहय— “देखू,” मुदा आँखि हमर अपन रहय।
 ओ कहय— “चलू,” मुदा पग हमर अपन पड़य।
 ओ प्रकाश दे, मुदा हमर भीतरक दीपक तेल हमरे भरबाक पड़य।
 श्रद्धा आँखि मूँदब नहि, आँखि स्थिर करब।
 प्रश्न अविश्वास नहि, सत्य प्रति गहिर प्रेम।
 जतय प्रश्न निषिद्ध, ओतय प्रकाश धीरे-धीरे मूर्ति बनि सकैत अछि।
 जतय विश्वास विवेकक संग चलैत, ओतय मार्ग भीतर सँ खुलैत अछि।
 शक्ति ककरो माथ पर चढ़ल मुकुट नहि।
 शक्ति क्रोधक क्षणमे एक साँस रोकबाक क्षमता।
 भयक बीच सत्य कहबाक स्वर।
 अपमानक बदला प्रतिशोध नहि चुनबाक साहस।
 दिन-दिन एकहि साधनामे फेर लौटबाक धैर्य।
 अपने पर विजय दोसर पर विजय सँ कतेक गहिर।
 महाशक्ति यदि विशाल अछि, तँ ओ ककरो निजी थैलीमे केना समायत?
 नदी समुद्रक मालिक नहि।
 दीप सूर्यक स्वामी नहि।
 मनुष्य जतबा विशालता छूबैत, ततबा “हमर” शब्द हलुक होएबाक चाही।
 चमत्कार अन्तिम प्रमाण नहि।
 आकाश देखलहुँ, मुदा पड़ोसीक दुःख नहि देखलहुँ— तँ दृष्टि अधूरी।
 मौन पेलहुँ, मुदा वाणी कठोर रहल— तँ मौन अधूरा।
 शक्ति पेलहुँ, मुदा विनम्रता नहि— तँ शक्ति अधूरी।
 साधना अन्ततः व्यवहारमे उतरबाक चाही।
 आँखि अधिक साफ हो, हृदय अधिक कोमल, वाणी अधिक संयत, कर्म अधिक उत्तरदायी।
 एतय सँ भीतरक यात्रा बाहरक संसार सँ फेर जुड़ैत अछि।
 व्यक्ति अकेला दीप नहि, दीपमालाक एक प्रकाश।
 एकक उजास दोसरक अन्हार प्रति उत्तरदायी हो सकैत अछि।
 यदि हमर शान्ति दोसरक पीड़ा सँ पूर्ण बेपरवाह, तँ ओ शान्ति कतेक अखंड?
 यदि हमर मुक्ति केवल हमर, तँ “हम” केर घेरे अखनो टूटल नहि।
 मुक्ति कदाचित् अपन सीमा सँ बाहर करुणाक विस्तार सेहो।

एकटा माँक गोद एहि विस्तारक सभसँ सरल रूपक।
 बालक ओतय मिटैत नहि, सुरक्षित होइत अछि।
 समर्पण नष्ट होएब नहि, कठोर अहंकारक ढीला पड़ब।
 “सभ हमहीं” एहि भ्रम सँ धीरे-धीरे बाहर आब।
 माँ केवल एक सम्बन्ध नहि, अन्तहीन आश्रयक एक मानवीय स्मृति।
 सृष्टि जतय पालन सँ जुड़ैत अछि, शक्ति ओतय करुणा पबैत अछि।
 करुणा बिनु शक्ति कठोर लोहा।
 शक्ति बिनु करुणा असहाय आँसू।
 दुनू संग तखन जीवन एक गहिर धड़कन पबैत अछि।
 समय हमर देह पर अपन लेख लिखैत अछि।
 बालक युवक, युवक वृद्ध।
 एकहि नामक भीतर कतेक देह, कतेक मन, कतेक आकांक्षा।
 तैयो कोनो स्मृति धागा जकाँ हमरा अपनहि सँ जोड़ैत अछि।
 ध्यानक एक क्षण कखनो सम्पूर्ण दिन सँ पैघ लगैत अछि।
 दुःखक एक राति असीम।
 आनन्दक घड़ी पंख लगा उड़ि जाइत अछि।
 घड़ीक समय आ मनक समय सदा एक नहि।
 वर्तमान कखनो एकटा छोट दुआर, जाहिसँ अनन्त आकाश झाँकि सकैत अछि।
 मृत्यु एहि दुआरक सभसँ कठोर स्मरण।
 जे प्रिय छल एक दिन मौन भऽ जाइत अछि।
 घर रहैत अछि, आवाज नहि।
 कुर्सी रहैत अछि, बैसनिहार नहि।
 एहि रिक्तताक समक्ष बड़-बड़ सिद्धान्त कखनो बहुत छोट लगैत अछि।
 तैयो रिक्तताक बीच जीवनक अर्थ फेर जन्म ले सकैत अछि।
 मृत्यु क्षणक मूल्य बढ़बैत अछि।
 सीमित समय करुणा केँ तत्काल बनबैत अछि।
 काल्हि कहब, काल्हि क्षमा करब, काल्हि प्रेम करब— ई काल्हि सदा नहि अबैत।
 अखंडता आइक साँसमे जीवन केँ सम्पूर्ण सुनब।
 देह साधनाक बाहर नहि।
 भूख, निद्रा, श्रम, रोग, स्पर्श, श्वास—
 ई सभ धरतीक पाठ।
 देह केँ तुच्छ कहि आकाश नहि भेटैत।
 माटि सँ कटि वृक्ष ऊँच नहि होइत।
 मन बाहर नहि।
 ओकर भय, ओकर इच्छा, ओकर पुरान चोट, ओकर आकांक्षा—

सभकेँ देखबाक।
दमन शुद्धि नहि।
देखब, बुझब, रूपान्तरण करब— ई धीमा श्रम।
बुद्धि शत्रु नहि, मुदा सम्राटो नहि।
भावना सत्यक शत्रु नहि, मुदा प्रत्येक भावना अन्तिम सत्यो नहि।
सभकेँ अपन उचित आसन।
यहीं भीतरक सभा धीरे-धीरे संगीत बनैत अछि।
अखंडता एकरूपता नहि।
सफेद उजासमे सात रंग छिपल।
सात रंग एक-दोसर केँ मिटा उजास नहि बनबैत।
ओ संग होइत अछि, अपन भेद सहित।
धर्मक मार्गो एहनहि हो सकैत अछि।
एकक प्रार्थना दोसरक मौनसँ भिन्न, एकक मन्त्र दोसरक गीतसँ।
भिन्नता घृणा माँगैत नहि।
मुदा समन्वय सभ बात बराबर कहि भेदो नहि मेटय।
साँच संवाद पहिने सुनैत अछि, फेर बोलैत अछि।
“हमर बाट” कहल जा सकैत अछि।
“केवल हमर बाट” कहबाक पहिने आकाशक विशालता एक बेर देखू।
ज्ञान जतबा गहिर, अज्ञानक क्षितिज ततबा विशाल देखाइत अछि।
एहि विनम्रतामे साधना बचैत अछि।
जो अपने केँ सभ जाननिहार मानि लेल, ओ कदाचित् यात्राक बीच मूर्ति बनि गेल।
साधक चलैत रहैत अछि।
कखनो प्रकाश, कखनो सूखापन, कखनो शंका, कखनो मौन।
शीत ऋतुमे वृक्ष सूखल देखाइत अछि, मुदा जड़ि अदृश्य काम करैत अछि।
हरेक दिन आनन्द नहि, हरेक मौन साक्षात्कार नहि।
निरन्तरता चमत्कार सँ पैघ।
एक-एक दिन फेर लौटब, फेर बैठब, फेर अपने केँ देखब।
साधना दीर्घ ऋतु।
मुदा अनुशासन हिंसा नहि।
जे विधि देह तोड़य, मन बिगाड़य, विवेक हरि लय, ओकरा प्रश्न करब अपराध नहि।
आध्यात्मिकता मानवीय स्वास्थ्य आ गरिमा सँ ऊपर नहि।
अखंडता किछु छोड़ि पूर्ण नहि बनैत।
शरीर, मन, समाज, प्रकृति, इतिहास—
सभ एक-दोसरक गहिर सम्बन्धमे।
हम श्वास लैत छी किएक तँ वृक्ष अछि।

अन्न खाइत छी किएक तँ माटि अछि।
 जल पीबैत छी किएक तँ नदी अछि।
 प्रकृति बाहरक सजावट नहि, हमर जीवनक अदृश्य देह।
 यदि एकत्व साँच अनुभूति, तँ पृथ्वी प्रति करुणा ओकर स्वाभाविक छाया होएबाक चाही।
 वृक्ष काटैत केवल लकड़ी नहि देखू।
 नदी दूषित करैत केवल जल नहि।
 जीवनक जाल अदृश्य होइत अछि, मुदा टूटैत सभकें छूबैत अछि।
 विज्ञान एहि जालक कार्य-विधान खोलैत अछि।
 आध्यात्मिक दृष्टि पूछि सकैत अछि— ई ज्ञान ककर हितमे?
 शक्ति भेटल, दिशा कोन?
 सामर्थ्य बढ़ल, विवेक कतेक?
 ज्ञान यदि मूल्यविहीन, तँ औजार विनाशो करि सकैत अछि।
 मूल्य यदि तथ्यविहीन, तँ सद्भावना भ्रमो बनि सकैत अछि।
 दुनूकें एक-दोसरक हाथ चाही।
 कला अनुभव कें रूप दैत, विज्ञान घटना कें नियम, दर्शन अर्थक प्रश्न, योग चेतना कें अनुशासन।
 मनुष्य एहि सभक एक संयुक्त घर।
 एक खिड़की सम्पूर्ण घर नहि।
 एक दिशा सम्पूर्ण आकाश नहि।
 अखंड दृष्टि खिड़की तोड़ैत नहि, सभ खिड़की खोलैत अछि।
 दूर-दूरक प्रकाश एकहि कमरेमे भेटि सकैत अछि।
 साधनाक सभसँ कठिन परीक्षा दैनिक जीवन।
 ध्यान समाप्त, मुदा वाणी जारी।
 मन्त्र समाप्त, मुदा व्यवहार जारी।
 पूजा समाप्त, मुदा लेन-देन जारी।
 आँखि मूँदल, फेर खोललहुँ— संसार ओहि ठाम।
 यदि भीतरक शान्ति बाहरक कर्ममे नहि उतरल, तँ यात्रा अखनो अधूरी।
 एक वृद्ध कें जल देब, एक दुखी मित्र कें सुनब, अनुचित लाभ नकारब, कमजोरक पक्षमे ठाढ़ होएब—
 ई सभ साधनाक बाहर किएक?
 अखंडता विशेष क्षणक विशेष प्रकाश नहि मात्र।
 ओ सामान्य जीवनक रूपान्तरण।
 भोजनमे सजगता, काममे ईमानदारी, सम्बन्धमे करुणा, विरोधमे मर्यादा।
 यहीं भीतरक दीक्षा दैनिक देह पबैत अछि।
 हम एक चेहरा पूजामे, दोसर व्यवहारमे रखी— तँ भीतर दू घर बनि गेल।
 अखंडता एहि दू घरक बीच दुआर खोलैत अछि।
 जे मानैत छी, से जीबाक प्रयास।

जे जीबैत छी, ओकरा जाँचबाक साहस।
जे बेठीक भेटय, ओ बदलबाक विनम्रता।
पूर्णता पदवी नहि, दिशा।
क्षितिज जतबा आगाँ जाउ, ततबा आगाँ खुलैत अछि।
यात्रा एहि कारण समाप्त नहि, गहिर होइत अछि।
मनुष्य बनल-बनायल मूर्ति नहि, बनैत रहनिहार जीवित कविता।
हरेक दिन एक पंक्ति।
हरेक निर्णय एक नया शब्द।
हरेक पश्चात्ताप संशोधन।
हरेक करुण कर्म उजासक बिन्दु।
खंड धीरे-धीरे अपन अलगाव छोड़ैत अछि।
बुद्धि हृदय सँ बात करैत अछि।
हृदय कर्म सँ।
कर्म समष्टि सँ।
समष्टि प्रकृति सँ।
प्रकृति फेर मनुष्यक श्वासमे लौटैत अछि।
एक वृत्त बन्द नहि, जीवित।
एकता स्थिर पत्थर नहि, निरन्तर सम्बन्ध।
अखंडता कदाचित् एहि सम्बन्धक जागल बोध।
जतय “हम” अपन सीमा जानैत अछि आ “तू” लेल ठाम बनबैत अछि।
जतय शक्ति स्वामित्व नहि, सेवा बनैत अछि।
जतय ज्ञान अहंकार नहि, प्रकाश।
जतय श्रद्धा अन्धता नहि, विश्वासक संग विवेक।
जतय मौन पलायन नहि, अर्थक गहराई।
जतय साधना दुनिया छोड़ब नहि, दुनिया केँ नव दृष्टिसँ छूब।
प्रश्न जतय आरम्भ भेल छल, यात्रा फेर ओहि ठाम लौटैत अछि—
हम के? हमर सीमा की? हमर सम्बन्ध ककरा-ककरा सँ?
मुदा आब प्रश्न अकेला नहि।
ओकर चारू कात देह, मन, करुणा, प्रकृति, समय, ज्ञान, शक्ति, समर्पणक एक विशाल आकाश खुलल अछि।
अखंडता कोनो अन्तिम उत्तर नहि, एहन दृष्टि जाहिमे कोनो अंश अपने केँ सम्पूर्ण संसार नहि मानय।
एक लहर समुद्र केँ स्मरण करय।
एक दीप उजासक स्रोत केँ।
एक मनुष्य समस्त जीवन सँ अपन अदृश्य नाता।
आ कदाचित् एहि स्मरणक क्षणमे खंड-खंड दिन एकाएक एकहि गीतक अलग-अलग पंक्ति बनि उठैत अछि।
गीत जकर अन्त नहि, केवल आरो गहिर लय।

आकाश जकर किनार नहि, केवल आरो खुलैत दिशा।

हम जकर अर्थ अकेला “हम” नहि, अपितु सम्बन्धक एक जागल स्वर।

एहि स्वरमे साधना शब्द सँ जीवन बनैत अछि।

एहि स्वरमे पथ गन्तव्यक आग्रह छोड़ि यात्राक ज्योति बनैत अछि।

एहि स्वरमे खंड अपन अस्तित्व गुमबैत नहि, मुदा अखंड आकाशमे अपन ठीक स्थान पहचानि लैत अछि।

ध्वनिक पार अर्थक उजास

एक अक्षर ओठ सँ निकलैत अछि, हवा में काँपैत, कान धरि पहुँचैत, आ क्षण भरिमे मौनमे विलीन।

दोसर अक्षर ओकर पाछाँ, तेसर, चौथ—

सभ अलग-अलग क्षणक अतिथि।

मुदा अर्थ? ओ कखनो अक्षर-अक्षर नहि अबैत।

एकाएक मनक भीतर सम्पूर्ण दुआर खुलि जाइत अछि।

जैना बिजली चमकल आ एक क्षणमे सम्पूर्ण आँगन देखाइ पड़ल।

ध्वनि एक-एक पग, अर्थ एक समग्र दृश्य।

पहिल स्वर बीत गेल, दोसर आएल; दोसर बीतल, तेसर आएल।

तखन जे बीत गेल ओ वर्तमानक संग केना रहैत अछि?

स्मृति पाछाँ सँ एक महीन डोरि फेंकैत अछि।

जे सुनल गेल, ओ मिटैत नहि, मनक भीतर एक हलुक छाप छोड़ि जाइत अछि।

नव ध्वनि पुरान छाप केँ छूबैत अछि, आ धीरे-धीरे शब्दक एकता बनैत अछि।

शब्द केवल ध्वनिक ढेर नहि।

जैना फूल पंखुड़ीक गिनती नहि, गन्धो अछि, रंगो, रूपो, एक संग खिलल एक सम्पूर्णता।

एहि ढङ्गँ अक्षर अलग, मुदा शब्द अलग-अलग अक्षरक जोड़सँ किछु अधिक।

अर्थ कखनो पहिल अक्षर पर नहि, न अन्तिम पर मात्र।

ओ सभकेँ एकहि प्रकाशमे देखैत अछि।

जैना घड़ाक टुकड़ा घड़ा नहि, माटि घड़ा नहि, आकार अकेले घड़ा नहि—

सभ मिलि एक उपयोग, एक पहिचान, एक सम्पूर्ण रूप।

शब्द सेहो क्षण-क्षणक ध्वनि पार एक मानसभरि आकार पबैत अछि।

कियो बोलैत अछि— ओकर मनमे एक अर्थक बीज।

ओ बीज श्वास बनैत, कण्ठ छूबैत, जिह्वा सँ रूप पबैत, हवामे तरंग बनि दोसरक कान धरि जाइत अछि।

मुदा अर्थ हवामे उड़ैत वस्तु नहि।

ध्वनि माध्यम।

अर्थ मनसँ मन धरि एक पुलक यात्रा।

बोलनिहारक मन आ सुननिहारक मन एक नहि।

तैयो एक शब्द दुनू बीच किछु साझा खोलि दैत अछि।

ई चमत्कार प्रतिदिन घटैत अछि, इतबा साधारण जे हम आश्चर्य करब बिसरि गेल छी।

“जल” कहल गेल।

कानमे केवल तीन ध्वनि नहि, मनमे ठंढक, नदी, प्यास, घड़ा, बरखा, कखनो बचपनक पोखरि एक संग जागि सकैत अछि।

शब्द अपन शब्दकोश सँ अधिक लऽ चलैत अछि।

इतिहास, स्मृति, प्रसंग, भाव, इच्छा—

सभ ओकरा रंग दैत अछि।

एहि लेल एकहि शब्द मायक कण्ठमे एक अर्थ, न्यायालयमे दोसर छाया, कवितामे तेसर उजास।

भाषा पाथर नहि, जीवित नदी।

ओ बहैत, रंग बदलैत, किनार छूबैत, नव मार्ग बनबैत।

मुदा परिवर्तनक बीचो किछु संरचना ओकरा पहिचान दैत अछि।

नहि तँ आइक शब्द काल्हि पूर्ण अपरिचित होइत।

स्मृति परम्पराक मौन व्याकरण।

हम बोलैत छी किएक तँ हमरा पहिने असंख्य लोक बोलि चुकल।

हम शब्द पबैत छी, मुदा हरेक बेर ओकरा नव प्रसंगमे फेर जन्म दैत छी।

भाषा उधारो, सृजनो।

एक बच्चा पहिल बेर “माँ” कहैत अछि।

ओ शब्द पुरान अछि, मुदा ओ क्षण पूर्ण नवा।

यहीं भाषाक रहस्य।

पुरान रूप नव अनुभवक घर बनैत अछि।

अक्षर क्षणिक, मुदा शब्दक पहिचान क्षण पार टिकैत अछि।

ध्वनि हरेक वक्ता मे कनेक बदलैत।

ककरो स्वर भारी, ककरो हलुक, ककरो तीव्र, ककरो मृदु।

तैयो हम एकहि शब्द पहिचानि लैत छी।

तखन शब्द केवल एक खास ध्वनिक प्रतिलिपि केना हो सकैत?

ध्वनिक नीचाँ किछु एहन रूप जे बदलैत उच्चारणक पाछाँ स्थिर संकेत बनि रहैत अछि।

जैना एक गीत अनेक गायक गाबथि, स्वरक रंग बदलय, मुदा धुन पहिचानल जाए।

रूप ध्वनिसँ जन्मैत, मुदा ध्वनिक एकल क्षणमे सीमित नहि।

मन विभिन्न उच्चारणक पाछाँ एक साझा आकृति पहिचानैत अछि।

यहीं अर्थक उजास ध्वनिक पार अपन घर बनबैत अछि।

एकटा वाक्य आरो गहिर रहस्य।

शब्दसभ एक-एक कऽ अबैत अछि।

पहिल शब्द अधूरा प्रतीक्षा।

दोसर संभावना बदलैत।

तेसर अर्थक दिशा फेरैत।

अन्तिम शब्द कखनो पहिल शब्द केँ नव अर्थ देत।

वाक्य केवल शब्दक माला नहि।

धागा बिनु फूलसभ माला नहि।
 सम्बन्ध बिनु शब्दसभ वाक्य नहि।
 कुन ककर संग? कुन ककरा कहैत? कर्म के? काल कुन? भाव कुन?
 ई सम्बन्ध अर्थक अदृश्य व्याकरण।
 शब्द अपन-अपन अर्थ लऽ कऽ अकेला नहि चलैत।
 वाक्यमे प्रवेश करिते ओ एक-दोसरक सीमा बदलैत अछि।
 “नील कमल” कहलासँ नील आकाश नहि, कमलक रंग बनैत अछि।
 “बालक दौड़ैत अछि” कहलासँ दौड़ कोनो निराकार गति नहि, बालकक गति।
 वाक्य शब्दसभ केँ एक-दोसरमे ठीक स्थान दैत अछि।
 अर्थ स्थानक संगीतो।
 एक स्वर बेठीक समय पर राग बिगाड़ि सकैत अछि।
 एक शब्द बेठीक स्थान पर वाक्यक दिशा बदलि सकैत अछि।
 व्याकरण केवल नियमक कोड़ा नहि, अर्थक सन्तुलनक एक गुप्त स्थापत्य।
 घरक ईंट स्वतन्त्र अछि, मुदा दरबज्जा, खिड़की, छत, सीढ़ी सम्बन्धक क्रममे घर बनैत अछि।
 भाषा एहनहि घर।
 नियम जीवन केँ बाँधबाक लेल नहि, अर्थ केँ साझा बनएबाक लेल।
 यदि हरेक व्यक्ति अपन शब्दक अर्थ अपने मनसँ प्रतिदिन बदलि दे, संवाद टूटि जाए।
 यदि अर्थ कखनो बदलय नहि, भाषा पत्थर बनि जाए।
 स्थिरता आ परिवर्तनक बीच भाषा चलैत अछि।
 नदी किनारक संग बहैत अछि।
 किनार बिनु फैलाव; जल बिनु सूखल रेखा।
 व्याकरण किनार, जीवित प्रयोग जल।
 एक शब्द कोशमे एक परिभाषा पबैत, मुदा जीवनमे अनगिनत स्पर्श।
 “घर” ईटक भवन? कि मायक आवाज? कि सुरक्षित राति? कि निर्वासनक पाछाँ एक दुखद स्मृति?
 शब्द कहैत एक, जगबैत अनेक।
 तैयो अर्थ पूर्ण अराजक नहि।
 किछु सीमा साझा।
 नहि तँ कियो “आगि” कहय आ दोसर “जल” बुझय— जीवन चलत केना?
 भाषा साझा समझौताक अदृश्य नगर।
 हरेक वक्ता ओहि नगरक नागरिक।
 ओ नियम पबैत, मुदा नव प्रयोगो करैत।
 कवि पुरान शब्द केँ नव पड़ोस मे बसाबैत अछि।
 दैनिक भाषामे “राति” समय; कवितामे राति एकाकीत्व, भय, प्रेम, रहस्य, विश्राम किछुओ बनि सकैत।
 मुदा कविता शब्दक मूल स्मृति पूर्ण मिटबैत नहि।
 ओही स्मृति पर नव उजास रखैत अछि।

अर्थ मिट्टी, प्रयोग मूर्तिकार।

नव रूप बनैत, मुदा माटिक अपन प्रकृति बचैत अछि।

ध्वनि वस्तु नहि।

“गाय” कहलासँ गाय कानमे प्रवेश नहि करैत।

ध्वनि वस्तुक संकेत।

संकेत आ वस्तु बीच कोन सम्बन्ध?

स्वाभाविक? परम्परागत? स्मृतिजन्य? सामाजिक?

शब्द जन्म सँ वस्तु सँ बाँधल नहि लगैत।

भिन्न भाषा एकहि वस्तु लेल भिन्न ध्वनि रखैत अछि।

तखन ध्वनि आ वस्तु बीच समाजक दीर्घ स्वीकृति पुल बनबैत अछि।

हम सीखैत छी— ई ध्वनि एहि अर्थ दिस लेत।

बारम्बारता स्मृति बनैत।

स्मृति पहिचान।

पहिचान संवाद।

भाषा असंख्य मनक सामूहिक अभ्यास।

एक व्यक्ति एकल भाषाक निर्माता नहि।

तैयो प्रत्येक व्यक्ति भाषा केँ कनेक-कनेक बदलैत अछि।

एक नवा प्रयोग पहिले विचित्र।

फेर किछु लोक अपनबैत।

फेर पीढ़ी बीतैत, ओ सामान्य।

भाषा निरन्तर अपने केँ पुनर्रचित करैत अछि।

तैयो अर्थक मूल प्रश्न बाँचल रहैत अछि—

जखन हम बोलैत छी, सुनिहार कखन अर्थ पबैत अछि?

पहिल अक्षर पर? अन्तिम पर? हरेक अक्षरक जोड़ पर? कि एकाएक समग्र रूप खुलैत?

सुनैत समय मन केवल ध्वनि नहि गिनैत।

ओ अनुमान करैत, प्रतीक्षा करैत, पुरान स्मृति जगबैत, अगिला शब्दक संभावना बनबैत।

वाक्य सम्पूर्ण होएत-होएत मनक भीतर अर्थक आकृति बनैत चलैत अछि।

कखनो अन्तिम शब्द आबि सभ किछु एकाएक स्पष्ट करि दैत।

जैना पहेली दस संकेत पाछाँ एक क्षणमे बुझाइ पड़ल।

उत्तर दस टुकड़ामे नहि चमकल, एके बेर सम्पूर्ण रूप।

एहि पूर्णता केँ कुन नाम दिअ?

नाम कम महत्त्वपूर्ण, अनुभव अधिक।

हम सभ प्रतिदिन एहि अनुभवमे जीबैत छी।

शब्द सुनैत, अर्थ पबैत, मुदा बीचक पुल देखाइत नहि।

पुल अदृश्य, यात्रा वास्तविक।

स्मृति एहि यात्राक मुख्य नाव।
यदि पहिल शब्द अन्तिम धरि मनमे किछु रूपेँ नहि टिकय, वाक्य टूटि जाए।
क्षण बीतैत, मुदा संस्कार रहैत।
जैना घंटी रुकि गेल, मुदा कानमे किछु देर तरंग बाँचल।
जैना फूल हटि गेल, मुदा गन्ध कमरा मे।
ध्वनिक पाछाँ एक अवशेष, जे अगिला ध्वनि सँ मिलि समग्रता बनबैत अछि।
सुननाइ केवल कानक काम नहि।
मन स्मृति लैत, बुद्धि सम्बन्ध बनबैत, प्रसंग दिशा दैत।
“ओ आयल” कहल गेल।
“ओ” के? प्रसंग बिनु अर्थ अधूरा।
भाषा शब्दमे मात्र नहि, परिस्थितिमे सेहो बसैत अछि।
आँखिक इशारा, हाथक गति, स्वरक उतार, मौनक अवधि—
सभ अर्थमे भाग लैत अछि।
कखनो एक मौन सम्पूर्ण वाक्य सँ अधिक बोलैत।
“ठीक अछि” एक शब्दसमूह, मुदा स्वर बदलिने सहमति, व्यंग्य, क्रोध, निराशा किछुओ बनि सकैत।
अर्थ ध्वनिक संग भावक रंग पबैत अछि।
भाषा शरीर-विहीन नहि।
कण्ठ, श्वास, चेहरा, हावभाव, समय, स्थान—
सभ संवादक मौन सहलेखक।
तखन अर्थ केवल व्याकरणमे कैद केना रहत?
व्याकरण ढाँचा, जीवन रंग।
एक चिट्ठी दूर देशसँ आयल।
कागज पर केवल शब्द।
मुदा पाठक हस्ताक्षर देखैत, पुरान सम्बन्ध, प्रतीक्षा, वियोग सभ एक संग अनुभव करैत।
अर्थ लिखल पंक्ति पार फैलैत अछि।
तैयो पंक्ति आवश्यक।
जैना दीपक छोट, मुदा प्रकाश दूर धरि।
शब्द छोट, अर्थ विस्तृत।
कखनो एक शब्द सम्पूर्ण युग अपने भीतर लऽ चलैत अछि।
“स्वाधीनता” केवल अक्षर नहि।
संघर्ष, बलिदान, आकांक्षा, अधिकार, उत्तरदायित्व सभ ओकर छाया।
इतिहास शब्दमे अपन थर-थर तह रखैत अछि।
एहि कारण पुरान ग्रन्थ पढ़ब केवल शब्द पढ़ब नहि।
ओ समयक भाषा, प्रयोग, संस्कार, विश्वास समझबाक यात्रा।
एक पुरान शब्द आइक अर्थ सँ पढ़ल जाए, भ्रम हो सकैत अछि।

भाषा कालक संग बदलैत।
अर्थक इतिहास विचारक इतिहासो।
शब्द बदलल, दृष्टि बदलल; दृष्टि बदलल, समाजक मानचित्र बदलल।
नव वस्तु नव नाम माँगैत।
नव अनुभव पुरान शब्द केँ नव अर्थ देत।
भाषा विश्वक पाछाँ नहि, विश्वक संग चलैत अछि।
कखनो आगाँ कल्पना करैत।
कवि पहिने शब्द देत, समाज पाछाँ ओ अनुभव पहिचानत।
नाम देब अनुभव केँ दृश्य बनाबयक एक रीति।
जकर नाम नहि, ओ कखनो मनमे धुँधला।
नाम मिलिते हम कहैत छी— “हाँ, ई जे हमरा होइत छल, एहि केँ एना कहि सकैत छी।”
भाषा अनुभवक मानचित्र बनबैत अछि।
मुदा मानचित्र भूमि नहि।
शब्द वस्तु नहि।
परिभाषा अनुभव नहि।
ई भेद स्मरण रहय।
नहि तँ शब्दक युद्ध वस्तुक सत्य ढँकि देत।
कतेक विवाद वास्तवमे शब्दक भिन्न अर्थ पर।
दुनू पक्ष एकहि शब्द अलग अर्थमे प्रयोग करैत, आ सोचैत ओ एक-दोसरक विरोधी।
प्रश्न करू— “अहाँ एहि शब्दसँ की बुझैत छी?”
कखनो आधा विवाद एतय समाप्त।
स्पष्टता भाषाक नैतिकता।
शब्द अस्पष्ट राखि लाभ उठाएब संवाद नहि।
राजनीति, धर्म, विज्ञान, दर्शन— सभ ठाम शब्दक अर्थ जिम्मेदारी माँगैत अछि।
“सत्य” “न्याय” “धर्म” “स्वतन्त्रता” “प्रकृति” “आत्मा”—
बड़ शब्द, मुदा बड़ शब्द बड़ धुँआओ उठा सकैत।
जतबा विशाल शब्द, ततबा अधिक स्पष्ट प्रसंग चाही।
भाषा अर्थक घर, मुदा धुँधक जंगलो बनि सकैत अछि।
व्याकरण कखनो एहि जंगलमे रास्ता चिह्नित करैत अछि।
कुन शब्द ककरा सँ जुड़ल, कुन रूप कुन कार्य, कुन प्रत्यय कुन छाया बदलैत—
रूपक भीतर अर्थक सूक्ष्म श्रम।
एक छोट प्रत्यय शब्दक दिशा सम्पूर्ण बदलि सकैत।
एक उपसर्ग नकार, दिशा, अधिकता, निकटता किछुओ जोड़ि सकैत।
भाषा सूक्ष्म मशीन नहि, मुदा ओकर भीतर रचना-सूत्र अत्यन्त महीन।
शब्दक देह भागसभ सँ बनल, मुदा अर्थ भागसभक योगमात्र नहि।

कखनो भागक अर्थ सम्पूर्ण शब्दमे गायब होइत अछि।
 जैना “हाथी” मे “हाथ” सुनाइ पड़लासँ ओ हाथक अर्थ नहि दैत।
 ध्वनि-साम्य अर्थ-साम्यक गारंटी नहि।
 एहि कारण शब्दक पहचान केवल खंड-विभाजनसँ पूर्ण नहि।
 कखनो सम्पूर्ण रूप प्राथमिक।
 हम चेहरा आँखि-नाक-मुँह जोड़ि पहिचानैत नहि।
 पहिने सम्पूर्ण चेहरा एक झलकमे पहिचानल जाइत, फेर चाही तँ अंग देखू।
 भाषामे सेहो कखनो समग्र अर्थ पहिने चमकैत, विश्लेषण पाछाँ अबैत।
 बालक व्याकरणक पुस्तक पढ़ि बोलब नहि सीखैत।
 ओ सम्पूर्ण वाक्य सुनैत, प्रयोग देखैत, सम्बन्ध बुझैत, धीरे-धीरे नियम भीतर गढ़ैत अछि।
 जीवित भाषा नियमक पहिने प्रयोगमे साँस लैत अछि।
 पाछाँ विद्वान ओहि साँसक रचना देखैत अछि।
 व्याकरण जीवनक वर्णन, जीवनक निर्माता पूर्णतः नहि।
 मुदा वर्णन अर्थहीन नहि।
 ओ भाषाक गुप्त क्रम दृश्य बनबैत अछि।
 जैना संगीतशास्त्र गीतक जन्मदाता नहि, मुदा रागक संरचना बुझबैत अछि।
 संगीत पहिने जीअल, फेर विश्लेषित।
 भाषा पहिने बोलल, फेर नियमबद्ध।
 तैयो नियम सीखि नव रचना आरो सूक्ष्म बनि सकैत अछि।
 ज्ञान आ प्रयोग एक-दोसर केँ गहिर करैत अछि।
 एक वक्ता शब्द चुनैत अछि।
 किएक ई शब्द, दोसर किएक नहि?
 भाव, श्रोता, प्रसंग, उद्देश्य, सामाजिक दूरी—
 सभ चयन पर असर।
 मित्र सँ एक भाषा, न्यायालयमे दोसर, बच्चा सँ तेसर।
 अर्थ केवल “की कहल” नहि, “ककरा कहल” “कखन” “कुन स्वरमे” सेहो।
 संवाद सम्बन्धक कला।
 भाषा सामाजिक शरीर।
 एकान्तमे शब्दक अर्थ पूर्ण विकसित नहि होइत।
 दोसर मनुष्य भाषाक आवश्यक क्षितिज।
 बोलब अर्थात् ककरो धरि पहुँचबाक आकांक्षा।
 सुनब अर्थात् दोसरक मन लेल अपन भीतर ठाम बनाब।
 एहि अर्थमे भाषा नैतिक अभ्यासो।
 बेठीक सुननाइ केवल कानक दोष नहि, कखनो अहंकार।
 हम पहिने सँ उत्तर तैयार राखैत छी, दोसरक वाक्य सम्पूर्ण होएबाक पहिने।

तखन ध्वनि कान धरि, अर्थ नहि।
साँच सुननाइ वाक्य केँ सम्पूर्ण खुलबाक समय देब।
शब्दक पाछाँ मनुष्य केँ सुनब।
कखनो उच्चारण त्रुटिपूर्ण, मुदा भाव साफ।
कखनो व्याकरण पूर्ण, मुदा छल भीतर।
भाषाक सत्य केवल शुद्ध रूपमे नहि, नियतियो मे।
तैयो अच्छी नियति अस्पष्ट भाषा सदा नहि बचा सकैत।
प्रेम हो, मुदा अभिव्यक्ति न हो, सम्बन्ध दुखि सकैत।
सत्य हो, मुदा भाषा असावधान, तँ सत्य घायल करि सकैत।
कहब केवल सत्य चुनब नहि, उचित रूप चुनब सेहो।
शब्द औषधि बनि सकैत, शस्त्रो।
एक वाक्य मनुष्य केँ वर्षोंक साहस दे सकैत।
एक अपमान वर्षोंक घाव।
भाषा अदृश्य कर्म।
ध्वनि क्षण भरि, फल दीर्घ।
एहि कारण वाणी उत्तरदायित्व।
बोलल शब्द फेर मुँहमे पूर्ण लौटैत नहि।
ओ दोसर मनमे नव जीवन आरम्भ करैत अछि।
हम आशय एक रखैत, श्रोता दोसर अर्थ पाबि सकैत।
संवादमे एहि दूरीक सदा संभावना।
अर्थ एकतरफा प्रेषण नहि, सह-निर्माण।
बोलनिहार संकेत दैत, सुननिहार स्मृति, प्रसंग, बुद्धि सँ अर्थ सम्पूर्ण करैत।
दुनूक बीच साझा भाषा सेतु।
मुदा सेतु पर कखनो कुहासा।
तखन प्रश्न, पुनःकथन, स्पष्टता आवश्यक।
“हमर अर्थ ई छल” कहलासँ भ्रम खुलि सकैत।
भाषा त्रुटिकेँ सुधारबाक सामर्थ्य सेहो रखैत अछि।
बेठीक कहल, फेर कहू।
बेठीक सुनल, फेर पूछू।
संवाद एक प्रयास नहि, निरन्तर संशोधन।
एहि कारण भाषा जीवित लोकतन्त्र जकाँ।
हरेक आवाज अपन अर्थ लैत, मुदा साझा नियम सभकेँ जोड़ैत।
ककरो स्वर अधिक शक्तिशाली, ककरो दबायल।
तखन भाषाक प्रश्न सत्ताक प्रश्नो बनैत अछि।
ककर भाषा “मानक”? ककर बोली “अशुद्ध” कहल? ककर उच्चारण हँसीक विषय? ककर शब्द पुस्तकमे प्रवेश पबैत?

भाषा केवल व्याकरण नहि, सम्मानक क्षेत्र सेहो।
 एक बोली घरक आत्मा हो सकैत अछि।
 ओकरा छोट कहब केवल ध्वनि नहि, सम्पूर्ण समुदायक स्मृति केँ छोट करब।
 साझा भाषा आवश्यक, मुदा विविध स्वर ओकर शत्रु नहि।
 वन एक प्रजातिक वृक्षसँ समृद्ध नहि।
 भाषा अनेक बोलिक जीवित वन।
 मानक संचारक सुविधा, मुदा एकाधिकार नहि।
 अर्थ विविध उच्चारणमे अपन बाट बना सकैत अछि।
 जतय मन समझबाक इच्छुक, ओतय कनेक भिन्नता दीवार नहि।
 जतय मन पहिने सँ बन्द, ओतय एकहि भाषा होइत हुएँ संवाद असम्भव।
 अन्ततः अर्थ मनुष्यक मिलनक एक संभावना।
 ध्वनि ओकर आरम्भ।
 अक्षर ओकर चिन्ह।
 व्याकरण ओकर विन्यास।
 स्मृति ओकर धागा।
 प्रसंग ओकर दिशा।
 चेतना ओकर उजास।
 एक क्षणिक ध्वनि कानमे प्रवेश करैत, मुदा मनक भीतर सम्पूर्ण संसार खोलि सकैत अछि।
 एहि आश्चर्यमे भाषा मात्र साधन नहि रहैत।
 ओ मनुष्यक साझा जगत रचबाक शक्ति बनैत अछि।
 शब्द वस्तु केँ नाम दैत, मुदा नाम देत-देते मनुष्य केँ सेहो अपने केँ बुझब सिखबैत अछि।
 हम बोलैत छी, आ बोलैत-बोलैत अपन विचार पहिचानैत छी।
 कखनो वाक्य सम्पूर्ण भेलाक पाछाँ हम स्वयं जानैत छी जे मनमे की छल।
 भाषा दोसर धरि पहुँचबाक पुल मात्र नहि, अपने धरि लौटबाक बाट सेहो।
 मौनमे भाव धुँधला, शब्दमे रूप पबैत।
 रूप पबिते विचार अपने केँ जाँचि सकैत अछि।
 “की ई साँच?” “की ई साफ?” “की ई उचित?”
 भाषा आत्मपरीक्षणक दर्पण।
 मुदा दर्पण चेहरा नहि।
 शब्द सत्यक पूर्ण पर्याय नहि।
 किछु अनुभव शब्दसँ पैघ।
 प्रेमक सम्पूर्णता, शोकक गहराई, ध्यानक मौन, सौन्दर्यक एक क्षण—
 भाषा ओकरा छूबैत, सम्पूर्ण बाँधि नहि पबैत।
 तैयो हम बोलैत छी।
 किएक तँ अपूर्ण शब्दो पूर्ण मौन सँ कखनो अधिक सेतु बनबैत अछि।

एक कविता अनकहल केँ सोझे नहि, इशारामे कहैत अछि।
शब्द ओतय अपन सीमा जानैत अछि।
सीमाक बोध भाषाक विनम्रता।
ध्वनिक पार जे उजास चमकैत अछि, ओ केवल तर्क नहि, अनुभूति सेहो।
अर्थ केवल बौद्धिक पहचान नहि।
एक नाम सुनिते हृदय धड़कि सकैत अछि।
एक पुरान गीत आँखि भिजा सकैत अछि।
ध्वनि स्मृति केर दरबज्जा खोलैत अछि।
अर्थ कखनो सम्पूर्ण शरीरमे घटैत अछि।
कान सुनैत, मुदा मन, हृदय, स्मृति एकसाथ प्रतिक्रिया करैत।
भाषा देहधारी अनुभव।
एहि लेल एकहि वाक्य कागज पर आ कण्ठ सँ अलग प्रभाव देत।
स्वर अर्थक छाया।
विराम अर्थक साँस।
गति अर्थक चालि।
कविता एहि सभ सूक्ष्मता केँ अपन घर बनबैत अछि।
एक पंक्ति कतय टूटय, ई सेहो अर्थ।
एक शब्द अकेला पंक्तिमे कतेक अधिक मौन पबैत अछि।
भाषा दृश्य सेहो बनैत अछि।
लिखित अक्षर ध्वनि केँ समय पार भेजैत अछि।
जे कण्ठ सदियों पहिने मौन, ओकर शब्द आइ आँखिसँ पढ़ि मनमे फेर ध्वनि बनि सकैत अछि।
लिपि स्मृतिक दीर्घ नौका।
ध्वनि क्षणिक, लेखन ओकर छाप।
मुदा लिखित शब्दो पाठक बिनु मौन।
आँखि ओकरा फेर जीवित करैत अछि।
पढ़नाइ मौन सुननाइ।
अक्षर कागज पर स्थिर, मुदा अर्थ मनमे चलायमान।
हरेक पाठ एक नवा जागरण।
एकहि कविता बीस वर्षक उम्रमे एक अर्थ, साठ वर्षमे दोसर गहराई।
पाठ बदलल? कि पाठक?
दुनू बीच समयक नया सम्बन्ध।
अर्थ स्थिर बीज, अनुभव बदलैत माटि।
हरेक ऋतुमे फूलक रंग कनेक अलग।
तैयो मनमानी व्याख्या अर्थक स्वतन्त्रता नहि।
बीज गुलाबक, तँ आमक वृक्ष नहि उगत।

पाठ किछु सीमा दैत।
 शब्द, संरचना, प्रसंग अर्थक संभावनाकें मार्ग दैत।
 पाठक सहभागी, सम्राट नहि।
 बोलनिहार आरम्भकर्ता, अन्तिम स्वामी नहि।
 अर्थ दुनू बीच एक जीवित घटना।
 यहीं भाषाक सौन्दर्य।
 ओ न पूर्ण निजी, न पूर्ण बाहरी।
 निरन्तर सम्बन्धमे जन्मैत अछि।
 ध्वनि बीतैत, मुदा अर्थ एक क्षण ठहरि मन कें बदलि दैत।
 कखनो एक शब्दक कारण जीवनक दिशा बदलैत अछि।
 “हाँ” “नहि” “क्षमा” “रुकू” “चलू”
 छोट शब्द, बड़ परिणाम।
 भाषा कर्मक आरम्भ बनि सकैत अछि।
 एहि कारण वाणी हलुक वस्तु नहि।
 एक प्रतिज्ञा भविष्य बाँधि सकैत अछि।
 एक आदेश हजार लोकक गति बदलि सकैत अछि।
 एक घोषणा देशक इतिहास।
 एक कविता पीढ़ीक संवेदना।
 ध्वनि क्षण, अर्थ समय पार।
 एहि विरोधाभासमे शब्दक अद्भुत शक्ति।
 क्षणभंगुर माध्यम दीर्घकालिक परिणाम।
 जैना एक चिंगारी क्षण भरि चमकल, मुदा वन लम्बा समय धरि जरि सकैत।
 एहि कारणेँ शब्द चुननाइ सावधानीक काम।
 मुदा भय सँ मौन रहब समाधान नहि।
 भाषा जोखिम सहित मानव मिलनक सभसँ गहिर साधन।
 भ्रम होएत, तैयो बोलू।
 भ्रम होएत, फेर स्पष्ट करू।
 भिन्नता होएत, फेर सुनू।
 संवाद पूर्णता नहि, प्रयास।
 अर्थ पूर्वनिर्मित पुल नहि, चलैत-चलैत बनैत पुल।
 हरेक ईमानदार वार्ता ओहि पुलमे एक नवा तख्ता जोड़ैत अछि।
 एक दिन कदाचित् हम बुझब जे शब्दक रहस्य केवल शब्दमे नहि।
 ओ मनुष्यक सम्बन्ध चाहबाक आकांक्षा मे।
 हम अकेले अर्थ बनाबि सकैत छी, मुदा साझा जगत दोसर बिनु नहि।
 भाषा “हम” आ “तूँ” बीच उगैत तेसर स्थान।

जतय न सम्पूर्ण हम, न सम्पूर्ण तूँ मुदा एक साझा “हम सभ” धीरे-धीरे बनैत अछि।

ध्वनि ओहि स्थानक पहिल दस्तक।

अर्थ दुआर खुलबाक क्षण।

आ जखन दुआर खुलैत अछि, एक क्षणिक अक्षर अपन सीमा पार कऽ असीम स्मृति, अनुभव, विचार आ सम्बन्धक उजास बनि जाइत अछि।

तखन बुझाइत अछि— शब्द मात्र कहल नहि जाइत, ओ घटैत अछि।

ध्वनि मात्र सुनल नहि जाइत, ओ मनमे रूप पबैत अछि।

अर्थ मात्र पाओल नहि जाइत, ओ साझा कएल जाइत अछि।

आ भाषा केवल बोलनाइ नहि, एक-दोसर धरि मनुष्यक सभसँ पुरान आ अखनो अधूर यात्रा अछि।

भीतरक दरबज्जा पर उजास

कतेक आवाज हमर भीतर हमर अपन नहि।

घरक, समाजक, शास्त्रक, भीड़क, भयक—

कतेक वाक्य हम जन्मसँ सुनैत-सुनैत अपन सत्य मानि लैत छी।

एक दिन मौन अकस्मात् पूछैत अछि—

“जे अहाँ मानैत छी, से अहाँ देखलहुँ? कि केवल सुनलहुँ?”

एहि प्रश्नसँ भीतरक पुरान दीवार हलुक काँपैत अछि।

सत्य उधारक दीप नहि, जे दोसरक हाथसँ लऽ कऽ अपन अन्हारमे रखि देल जाए।

दीप तखन अपन होइत अछि जखन बाती अपन चेतनामे जरैत अछि।

कतेक सिद्धान्त सुन्दर वस्त्र पहिरने दरबज्जा पर ठाढ़।

कतेक परम्परा सम्मानक मुकुट धारण कएने।

कतेक पुस्तक विश्वासक भार सँ झुकल।

मुदा भीतरक आँखि एकटा साधारण प्रश्न पूछैत अछि—

“हमरा ई जीवित रूपमे कतय भेटल?”

अनुभव अहंकारक प्रमाण नहि, मुदा अनुभव बिनु विश्वासक जड़ि कतेक गहिर?

जे प्यास ककरो कथासँ बुझल, ओ प्यास नहि।

जे जल केवल परिभाषामे पील, ओ तृप्ति नहि।

जीवन स्वयं छूबय, तखन शब्द रक्त पबैत अछि।

सत्य कोनो सम्प्रदायक एकाधिकार नहि।

ओ मन्दिरक भीतर बन्द नहि, न मस्जिदक, न विहारक, न गिरिजाक।

ओ श्वासक बीचो उगि सकैत अछि, हँसीक बीच, प्रेमक बीच, अकेल रातिक निर्मम मौनमे।

जे बाट जीवित सत्य दिस लऽ जाए, ओ बाट सम्मान योग्य।

मुदा बाट गन्तव्य नहि।

नाव नदी नहि।

नक्शा धरती नहि।

नाम अनुभव नहि।

एक फूलक दस नाम हो सकैत अछि, मुदा गन्ध नामक मोहताज नहि।
 मनुष्य नाम पर लड़ैत अछि, गन्ध शान्त रहैत अछि।
 आन्तरिक क्रान्ति नारा सँ आरम्भ नहि होइत।
 ओ एक क्षणमे जन्मैत अछि जखन मनुष्य अपने केँ बिनु बहाना देखैत अछि।
 अपन ईर्ष्या, अपन लोभ, अपन भय, अपन हिंसा, अपन दम्भ—
 ककरो दोष पर ढाकल नहि।
 आइना निर्दयी नहि, ईमानदार।
 चेहरा जतेक स्पष्ट, परिवर्तनक ततेक संभावना।
 बाहरक संसार बदलब आवश्यक, मुदा भीतरक अन्हार अछूता रहि जाए तँ नवा व्यवस्था पुरान मनसँ भरि जाएत।
 सिंहासन बदलत, सत्ताक भूख नहि।
 झण्डा बदलत, अहंकार ओही रंगमे फेर उगि सकैत अछि।
 कानून बदलत, मुदा मनुष्य अपने भीतर दास रहि सकैत अछि।
 आन्तरिक स्वतन्त्रता कोनो कागजी अधिकार नहि।
 ओ भयक जंजीर देखबाक साहस।
 भीड़क बीच अपने सँ पूछबाक स्वतन्त्रता।
 सभ कहैत अछि तैयो “किएक?” पूछबाक अधिकार।
 सभ चलैत अछि तैयो “कतय?” देखबाक विवेक।
 ई विद्रोह दोसरक विरुद्ध नहि, अचेतनताक विरुद्ध।
 कखनो सभसँ पैघ क्रान्ति एतबे—
 क्षण भरि रुकि जाएब।
 श्वास सुनब।
 मनक दौड़ देखब।
 विचार केँ विचार रूपमे पहिचानब, आ सत्यक सिंहासन पर तुरन्त नहि बैसाब।
 मन एक निरन्तर बाजार।
 स्मृति पुकारैत, इच्छा मोलभाव करैत, भय चिल्लाइत, आशा चमकदार विज्ञापन टाँगैत।
 एहि भीड़क बीच मौनक एक छोट दुकान बहुधा बन्द।
 ध्यान कदाचित् ओही दुकानक पट खोलब।
 किछु खरीदब नहि, किछु बेचब नहि।
 केवल देखब।
 विचार आए, जाए।
 भाव उठे, बैसे।
 मन अपन गति अपने प्रकट करय।
 देखनिहार धीरे-धीरे दौड़ सँ अलग पहिचान पबैत अछि।
 मौन रिक्तता नहि।
 ओ ध्वनिक पाछाँक विस्तृत आकाश।

शब्द ओतय अपन भार उतारैत अछि।
मनुष्य पहिल बेर अपने सँ बिनु परिचय-पत्र भेटैत अछि।
न नाम, न जाति, न पद, न सम्प्रदाय, न उपलब्धिक सूची।
केवल एक जागल उपस्थिति।
एहि उपस्थितिमे समता नवा अर्थ पबैत अछि।
सभ मनुष्य एक जेकाँ नहि।
ककरो कण्ठ मधुर, ककरो हाथ कुशल, ककरो बुद्धि तीक्ष्ण, ककरो हृदय विशाल।
प्रकृति एकरूपता नहि रचैत।
एक वनमे बरगद, घास, बाँस, फूल, लता—
सभ अलग, तैयो जीवनक मूल्य ककरो कम नहि।
समता समान आकार नहि।
समता गरिमाक समान उजास।
सभकेँ एक साँचा मे ढालि देब न्याय नहि।
भिन्नता अपराध नहि।
ककरो ऊँचाई दोसरक अपमान किएक हो?
ककरो प्रतिभा ककरो दासता किएक बने?
समता फूलसभक रंग एक करब नहि, सभ फूल केँ खिलबाक धूप देब।
रोटी आवश्यक।
वस्त्र आश्रय आवश्यक।
भूखल मनुष्य केँ केवल आत्माक उपदेश क्रूर मजाक बनि सकैत अछि।
मुदा रोटी भेटलासँ भीतरक शून्यता अपने भरि जाए, एहन सेहो नहि।
बाहरक दरिद्रता आ भीतरक दरिद्रता दू अलग घाव।
एकटा लेल अन्न, अवसर, न्याय।
दोसर लेल सजगता, प्रेम, मौन।
दुनूकेँ एक-दोसरक विरोधी किएक मानू?
भूख मिटाउ, मुदा मनुष्य केँ केवल पेट नहि बनाउ।
आत्मा कहू, चेतना कहू, भीतरक आकाश कहू—
ओकर नाम जाहि प्रकार हो, मनुष्यक गहराई अर्थव्यवस्थाक आँकड़ासँ पैघ अछि।
धनक बाँट न्याय चाहैत अछि, मुदा चेतनाक फूल आदेश पर नहि खिलैत।
कोनो शासन ध्यान अनिवार्य नहि करा सकैत।
कोनो कानून प्रेम लिखि नहि सकैत।
कोनो समिति आनन्दक समान वितरण नहि करि सकैत।
भीतरक परिवर्तन स्वतन्त्रता माँगैत अछि।
जबरदस्ती बाहरक व्यवहार बदलि सकैत, हृदयक ऋतु नहि।
एहि लेल स्वतन्त्रता विलास नहि, आन्तरिक विकासक मूल हवा।

बच्चा केँ पहिल प्रश्न पर चुप करा देब, ओकर भीतर एक दुआर बन्द करब।
 युवा केँ केवल आज्ञा, केवल भय, केवल अनुकरण—
 तँ ओ स्वतन्त्र मनुष्य केना बनत?
 शिक्षा स्मृति भरब नहि, आश्चर्य बचाउ।
 प्रश्न केँ जीवित राखू।
 सन्देह हरेक सत्यक शत्रु नहि।
 सन्देह कखनो झूठक धूलि झाड़ैत अछि।
 मुदा सन्देह यदि केवल नकार, तँ ओहो एक बंद दरबज्जा।
 खुलापन न हाँक गुलाम, न नहि केर।
 देखू, परखू, अनुभव करू, फेर मानू।
 आ मानल बात काल्हि नव प्रकाशमे बदलि सकैत अछि।
 जीवित बुद्धि अपन निष्कर्षक कैदी नहि।
 ओ नवा सत्य लेल ठाम छोड़ैत अछि।
 कतेक बेर मनुष्य “मैं ठीक” सिद्ध करैत-करैत सत्यसँ दूर चलि जाइत अछि।
 अहंकार जीत चाहैत, सत्य केवल स्पष्टता।
 बहस यदि जीतक खेल, दुनू पक्ष हारि सकैत अछि।
 संवाद तखन जन्मैत जखन सुननाइ उत्तर सँ पहिने आबैत अछि।
 दोसरक वाक्य सम्पूर्ण होए दियौ।
 कदाचित् ओहि वाक्यक भीतर अपनहि भूलक एक छोट दर्पण भेटय।
 पूर्व पश्चिम दू आकाश नहि।
 सूर्य सीमा-पत्र नहि देखैत।
 मनुष्यक पीड़ा दिशा नहि पूछैत।
 प्रेम भूगोलक एकाधिकार नहि।
 कतेक ज्ञान एतयसँ ओतय गेल, ओतयसँ एतय।
 सभ्यता सदा लेन-देनक नदी।
 जे अपन घर बन्द करैत, ओ हवा सँ वंचित।
 जे घरक दीवार सम्पूर्ण गिरा दैत, ओ आश्रय गुमबैत।
 खिड़की खोलू।
 घर बचाउ।
 दोसरक प्रकाश अन्दर आबय, मुदा अपन दीप बुझय नहि।
 नकल संवाद नहि।
 अस्वीकार स्वाभिमान नहि।
 सीखब दासता नहि, यदि विवेक अपन रहय।
 परम्परा एक वृक्ष।
 जड़ि माटिमे गहिर, मुदा प्रत्येक वसन्त नव पात।

जे केवल जड़ि पकड़े, ओ हरियाली चुकि जाए।
जे केवल पात देखय, जड़ि बिसरि जाए, ओ पहिल आँधीमे उखड़ि सकैत अछि।
जीवित परम्परा स्मृति आ नवीनताक मिलन।
पूजा प्रश्न केँ मारि नहि दे।
आलोचना प्रेम केँ सूखा नहि दे।
अपन विरासत केँ आइना मे देखू, मुकुटमे नहि।
जे उज्जर, ओ स्वीकारू।
जे अन्हार, ओकर नाम लिअ।
सत्य कोनो पूर्वजक प्रतिष्ठा बचाबय लेल बदलैत नहि।
आधुनिकता नव वस्त्रक नाम नहि।
नवा मन पुरान भयमे रहि सकैत अछि।
मशीन आधुनिक, मुदा सम्बन्ध सदियोंक जड़ता सँ बँधल।
विज्ञान आगाँ, मुदा चेतना घृणाक पुरान गुफामे।
एहन विकास आधा पुल।
बाहरक सुविधा भीतरक स्वतन्त्रता सँ जोड़ल जाए, तखन मनुष्य सम्पूर्ण यात्रा करैत अछि।
भाषा एहि यात्रा मे अत्यन्त निकट साथी।
जे भाषा हृदय सोझे सुनैत अछि, ओहिमे कठिन सत्यो घरक जकाँ प्रवेश करि सकैत अछि।
दार्शनिक शब्द यदि केवल ऊँच दीवार बनय, विचार लोकसँ दूर भऽ जाए।
कठिन बात कठिन भाषा अनिवार्य नहि।
गहिर नदी साफ हो सकैत अछि।
सहज वाक्य सतही हो, ई आवश्यक नहि।
एक सरल प्रश्न सम्पूर्ण जीवन हिला सकैत अछि—
“अहाँ प्रसन्न छी?”
न पद पूछल, न धन, न प्रसिद्धि।
केवल भीतरक एक अज्ञात तापमान।
आनन्द सुखक सामान्य नाम नहि।
सुख कखनो कारण सँ, वस्तुसँ, स्थिति सँ।
आनन्द कखनो कारणहीन शान्त उजास।
किछु भेटल नहि, तैयो अभावक बोझ नहि।
क्षण जाहिमे मनुष्य अपने अस्तित्वक संग झगड़ैत नहि।
एहन क्षण खरीदल नहि जा सकैत।
बाजार सुविधा बेचैत, आनन्द नहि।
समाज व्यवस्था देत, आन्तरिक संगीत नहि।
संगीत अपने सुनबाक पड़त।
भीतर कतेक विसंगति।

इच्छा कहैत— आरो।
 तुलना कहैत— ओकरा जेकाँ।
 भय कहैत— बचा कऽ रख।
 अहंकार कहैत— देखाउ।
 आ मौन धीरे कहैत— “बस, देख।”
 देखनाइ धीरे-धीरे मुक्ति बनि सकैत अछि।
 जे देखल गेल, ओ अचेतनक पूर्ण मालिक नहि रहैत।
 क्रोध केँ देखल, क्रोध आ “हम” बीच एक सूक्ष्म दूरी।
 लोभ केँ देखल, लोभ भाग्य नहि रहैत।
 भय केँ देखल, भय आकाश नहि, एक गुजरैत बादल।
 साक्षीभाव शब्द हो सकैत अछि, मुदा अनुभव एतबे—
 बादल देखू, अपने केँ बादल नहि मानू।
 आकाश ओकरा पार बाँचल रहैत अछि।
 मानव-मन कतेक परतवला।
 बाहर सभ्य मुस्कान।
 भीतर असन्तोष।
 बाहर नैतिक उपदेश।
 भीतर दबी इच्छा।
 दमन चरित्र नहि।
 दबी आगि अन्हारमे आरो धुआँ बनबैत अछि।
 स्वीकार भोग नहि, पहिचान।
 जे अछि, पहिने ओकरा सत्य रूपमे देखू।
 तखन रूपान्तरण सम्भव।
 झूठा पवित्रपन मन केँ दू भागमे बाँटैत अछि।
 एक भाग प्रदर्शित, दोसर छिपायल।
 एहि विभाजनमे अपराधबोध उगैत, भय बढ़ैत, पाखण्ड मुखौटा बनैत अछि।
 साँच पवित्रता मुखौटा नहि।
 ओ अपने सँ किछु छिपाबय नहि।
 देह शत्रु नहि।
 इच्छा अपने पाप नहि।
 प्रश्न ई— हम ओकर दास छी कि सजग सहयात्री?
 जीवनक ऊर्जा दमनमे विकृत हो सकैत अछि।
 सजगता ओकर दिशा बदलि सकैत अछि।
 नदी केँ पाथरसँ बन्द करब एक उपाय, मुदा जल कतहु न कतहु फूटत।
 किनार दियौ, दिशा दियौ, समुद्र धरि बहए दियौ।

मनुष्यक ऊर्जा एहन नदी।

प्रेम ओकर उच्च रूप हो सकैत।

प्रेम स्वामित्व नहि।

“तूँ हमर” कहैत-कहैत मनुष्य दोसरक आकाश छोट करि दैत अछि।

साँच प्रेम निकटता, मुदा पंख काटब नहि।

दो वृक्ष एक-दोसरक छाया पाबि सकैत अछि, मुदा एक-दोसरक जड़ि नहि बनैत।

स्वतन्त्रता प्रेमक गुप्त श्वास।

जतय भय, ओतय प्रेम धीरे मरैत अछि।

जतय अधिकारक बोझ, ओतय निकटता कारागार बनि सकैत।

प्रेम दो पूर्ण व्यक्तिक भेट हो, दो अधूर दासक समझौता नहि।

एकान्त अकेलापन नहि।

अकेलापन दोसरक अभावक पीड़ा।

एकान्त अपने संग पूर्ण रहबाक क्षमता।

जे अपने संग बैसि नहि सकैत, ओ दोसरक संग केना मुक्त रहत?

जे प्रेम अकेलापनक भय सँ जन्मल, ओ पकड़ि सकैत अछि।

जे प्रेम एकान्तक पूर्णतासँ जन्मल, ओ बाँटि सकैत अछि।

आनन्द बाँटलासँ घटैत नहि।

दीपसँ दीप जरल, पहिल दीप कम नहि भेल।

यहीं भीतरक सम्पत्ति बाहरक सम्पत्तिसँ अलग।

धन बाँटलासँ भाग होइत, प्रेम बाँटलासँ बढ़ि सकैत।

ज्ञान बाँटलासँ आरो स्पष्ट।

करुणा बाँटलासँ आरो गहिर।

आनन्द संक्रामक उजास।

समाज यदि केवल बाहरी बराबरी खोजय आ भीतरक ईर्ष्या अछूती छोड़ि दे, तँ नवा विवाद फेर जन्मत।

असमानता केवल धनक नहि।

प्रतिभा, स्वभाव, रुचि, शक्ति, संवेदना—

प्रकृति भिन्नता सँ भरल।

न्याय भिन्नता मिटाबय नहि, शोषण हटाबय।

ककरो श्रम ककरो दासता नहि बने।

ककरो प्रतिभा ककरो अपमान नहि बने।

ककरो सम्पन्नता ककरो भूख पर महल नहि बनाबय।

मुदा सभकेँ एकहि ऊँचाईक दीवार बना देबो जीवनक वन नष्ट करि सकैत अछि।

समता माटिक समान अधिकार, फूलक समान रंग नहि।

आध्यात्मिक समता कदाचित् एहि गहिर बोधमे—

सभ भीतर एकहि अज्ञात रहस्यक दुआर।

ककरो भीतर आकाश छोट नहि।
 ककरो आत्म-मूल्य बाजारक तराजू पर कम नहि।
 राजा, मजदूर, विद्वान, अनपढ़—
 मौनमे सभक श्वास एके अज्ञात स्रोतसँ आबैत-जाइत अछि।
 एहि बोधक अर्थ सामाजिक अन्याय स्वीकारब नहि।
 उल्टा, जे भीतरक गरिमा सभमे देखैत अछि, ओ बाहरक अपमान केना सहत?
 आन्तरिक समता बाहरी न्यायक गहिर जड़ि बनि सकैत अछि।
 मुदा जड़ि नीति नहि लिखैत।
 व्यवस्था लेल बुद्धि, तथ्य, अनुभव, संस्था सभ चाही।
 ध्यान अर्थशास्त्रक स्थान नहि लेत।
 अर्थशास्त्र ध्यानक स्थान नहि लेत।
 एक बाहरक व्यवस्था, एक भीतरक।
 मनुष्य दुनू संसारमे एक संग जीबैत अछि।
 समस्या तखन जखन एक दोसरक सम्पूर्ण अधिकार हथिया लैत अछि।
 बाहरक प्रश्नक बाहरक साधन, भीतरक प्रश्नक भीतरक।
 मुदा दुनू बीच संवाद आवश्यक।
 भूखल मन ध्यानमे कठिनाई पाबि सकैत।
 अशान्त मन समृद्धि मे सेहो दुखी रहि सकैत।
 पूर्ण जीवन रोटी आ मौन, दुनू लेल ठाम बनबैत अछि।
 राजनीति जतय मनुष्य केँ केवल संख्या देखय, ओतय आत्मा खोइत अछि।
 अध्यात्म जतय मनुष्यक सामाजिक घाव देखय नहि, ओतय धरती खोइत अछि।
 आकाश आ माटि दुनू चाही।
 पयर धरती पर, आँखि खुलल आकाशमे।
 मूल्य कागज पर घोषणा मात्र नहि।
 सत्य, स्वतन्त्रता, प्रेम, करुणा, आनन्द—
 ई शब्द जीवनमे जीअल जाए, तखन मूल्य।
 “सत्य” कहि झूठ जीब, शब्द खाली।
 “प्रेम” कहि स्वामित्व, शब्द घायल।
 “स्वतन्त्रता” कहि दोसरक आवाज दबाउ, शब्द अपमानित।
 मूल्य वाणी सँ अधिक व्यवहारक प्रकाश।
 मनुष्य जेना भीतर, ओना बाहर होएब कठिन।
 एहिए कठिनाईमे प्रामाणिकता।
 मुखौटा कम, चेहरा अधिक।
 अभिनय कम, जीवन अधिक।
 ककरो पसिन्न लेल अपने केँ निरन्तर बदलैत रहब धीरे-धीरे आत्म-विस्मरण।

मुदा “हम एहनहि छी” कहि जड़ होएबो स्वतन्त्रता नहि।
प्रामाणिकता अपन वर्तमान सत्य देखब, आ बेहतर होएबाक दुआर खुलल रखब।
स्वीकार अन्तिम ठहराव नहि, ठीक शुरुआत।
भीतरक परिवर्तन क्रमिक हो सकैत, कखनो एकाएकी।
एक बूँद पात्र भरैत-भरैत अन्तिम क्षणमे किनार पार करैत।
दीर्घ प्रश्न, दीर्घ असन्तोष, दीर्घ खोज—
एक दिन एक सरल बोधमे संगम पाबि सकैत।
“जे खोजि रहल छलहुँ, ओ बाहर नहि।”
एहन बोध यदि साँच, तँ बाहरक दुनिया गायब नहि होइत।
उल्टा, पहिल बेर स्पष्ट देखाइत अछि।
फूल फूल, मनुष्य मनुष्य, प्रेम प्रेम।
कल्पनाक परदा हलुक पड़ैत अछि।
संसार छोड़बाक वस्तु नहि, जागि कऽ देखबाक।
संन्यास यदि जीवन-विरोध, तँ अधूर।
त्याग यदि भय, तँ अधूर।
मुक्ति यदि संसारसँ भागब, तँ प्रश्न बाँचल।
कदाचित् मुक्ति संसारक बीच बन्धनरहित रहब।
कमल जलमे, मुदा जल पंखुड़ी पर ठहरि नहि पबैत।
बाजारमे चलू, मुदा बाजार हृदयक मालिक नहि।
सम्बन्धमे रहू, मुदा स्वामित्व आत्मा पर नहि।
धन कमाउ, मुदा धन मूल्य तय नहि करय।
सम्मान पाउ, मुदा सम्मान पहिचानक एकमात्र आधार नहि।
जीवनक बीच असंगता पलायन नहि, भीतरक स्वतन्त्रता।
हँसू।
नृत्य करू।
गीत गाउ।
गम्भीरता सत्यक अनिवार्य पोशाक नहि।
कखनो हँसी अहंकारक सभसँ तेज औषधि।
जे अपने पर हँसि सकैत, ओ अपन प्रतिमा कम पूजैत अछि।
धर्म यदि केवल उदास चेहरा, जीवनक आधा रंग खो देत।
आनन्द अपवित्र नहि।
उत्सव साधनाक विरोधी नहि।
फूल किएक खिलैत अछि? कोनो आदेश नहि।
पक्षी किएक गाबैत अछि? कोनो पुरस्कार नहि।
जीवन अपने भीतर उत्सवक एक वृत्ति लऽ कऽ आबैत अछि।

मनुष्य ओकरा अपराधबोध सँ किएक ढाँकय?
 सजग आनन्द भोगक उन्माद नहि।
 ओ क्षणक प्रति पूर्ण उपस्थिति।
 भोजन करू, मुदा केवल जिह्वाक दास नहि।
 प्रेम करू, मुदा स्वामित्व नहि।
 नृत्य करू, मुदा विस्मृति नहि।
 आनन्द जतय सजगता, ओतय गहराई।
 जतय अचेतन दौड़, ओतय थकान।
 जीवन विरोधसभक एक विराट नृत्य।
 दिन-राति, जन्म-मृत्यु, प्रेम-विरह, मौन-शब्द, देह-चेतना।
 एक पक्ष दोसर केँ पूर्ण मिटा नहि सकैत।
 राति बिनु भोरक अर्थ?
 मृत्यु बिनु क्षणक मूल्य?
 मौन बिनु संगीत?
 दूरी बिनु निकटता?
 विरोध कखनो एकताक दुश्मन नहि, ओकर लय।
 मन एक पक्ष चुनि दोसर सँ लड़ैत अछि।
 गहिर दृष्टि दुनूकेँ एक पैघ वृत्तमे ठाम दैत अछि।
 ई स्वीकार नैतिक उदासीनता नहि।
 अच्छा-बुरा भेदहीन हो जाए, एहन नहि।
 मुदा जीवनक मूल द्वन्द्व कखनो पूरक हो सकैत अछि।
 जैना धनुषक दू विपरीत बल तीर केँ दिशा दैत।
 तनाव सृजनो करि सकैत।
 समस्या तनाव नहि, अचेतनता।
 अन्ततः कतेक विचार हम लिखि सकैत छी, कतेक तर्क बना सकैत छी।
 मुदा एक क्षण आबि सकैत अछि जतय मन सभ शब्द सँ थाकि शान्त बैसि जाए।
 एहि शान्तिमे कोनो सिद्धान्त विजयी नहि।
 कोनो पंथ पराजित नहि।
 केवल श्वास आबैत, जाइत।
 आकाश किछु कहैत नहि, तैयो पूर्ण।
 वृक्ष कोनो दर्शन घोषित नहि करैत, तैयो जड़ि आ पात एकहि जीवनमे।
 नदी ककरो प्रमाणपत्र नहि माँगैत, समुद्र दिस चलैत।
 कदाचित् मनुष्यक भीतर सभसँ गहिर दर्शन एतय शब्द छोड़ि जीवन बनैत अछि।
 जे सत्य जीअल नहि, ओ विचार।
 जे सत्य रक्तमे उतरि दृष्टि बदलि दे, ओ जागरण।

जागरण दोसरक नाम याद रखब नहि।
अपने केँ स्पष्ट देखब।
दुनिया केँ बिनु भय देखब।
प्रेम केँ बिनु स्वामित्व जीब।
स्वतन्त्रता केँ बिनु अहंकार सहेजब।
भिन्नता केँ बिनु अपमान स्वीकारब।
समता केँ बिनु एकरूपता बुझब।
रोटी केँ बिनु आत्मा बिसरने बाँटब।
आ आत्मा केँ बिनु भूख बिसरने खोजब।
हँसी आ मौन, देह आ चेतना, धरती आ आकाश—
सभकेँ एकहि जीवनक भिन्न उजास बुझब।
तखन कदाचित् भीतरक दरबज्जा धीरे खुलत।
बाहर कोनो नया संसार तुरन्त नहि होएत।
मुदा देखनिहार नव होएत।
आ नव दृष्टिक समक्ष पुरान संसारो पहिल बेर सजीव, असीम, आ मुक्त देखाइ पड़त।

मनुखताक आँगनमे नव भोर

भोर पहिने आकाशमे नहि, मनुष्यक भीतर उगैत अछि।
जखन एक मन अपने सँ पूछैत अछि— हमर सुख दोसरक दुःख पर किएक टिकल रहय?
जखन एक हाथ रोटी तोड़ैत समय दोसर खाली हाथ देखैत अछि,
ओतहि सँ समाजक नव दिन आरम्भ होइत अछि।
समाज केवल भीड़क नाम नहि।
हजार शरीर एक मैदानमे ठाढ़, तैयो मनुष्य एक-दोसर सँ दूर रहि सकैत अछि।
समाज सम्बन्धक जीवित बुनावट।
एक धागा माता-पिता, एक सन्तान, एक मित्र, एक पड़ोसी, एक श्रम, एक विश्वास, एक उत्तरदायित्व।
कोनो धागा टूटैत, सम्पूर्ण कपड़ा हलुक कमजोर होइत अछि।
मनुष्य एकल दीप नहि।
ओ अनेक दीपक बीच अपन प्रकाश पबैत अछि।
जे भाषा ओ बोलैत, ककरो सँ पेलक।
जे अन्न ओ खाइत, ककरो हाथ उगौलक।
जे सड़क ओ चलैत, ककरो पसीना ओतय माटि सँ मिलल।
हम जेना अपने केँ अकेला मानैत छी, तेना अकेला कखनो छलहुँ नहि।
समाज एहि अदृश्य ऋणक स्मृति।
मुदा ऋण दासता नहि।
सम्बन्ध बेड़ी नहि।

समाज यदि व्यक्तिक स्वर निगलि जाए, ओ घर नहि, कारागार।
 व्यक्ति यदि केवल अपन सुख देखय, ओ स्वतन्त्र नहि, अकेला द्वीप।
 दुनू बीच एक पुल चाही—
 गरिमा आ उत्तरदायित्वक।
 घर समाजक पहिल पाठशाला।
 बच्चा पहिने पुस्तकसँ नहि सीखैत।
 ओ देखैत अछि— रोटी कोना बाँटल जाइत, बुजुर्ग सँ कोना बोलल जाइत, स्त्रीक श्रम सम्मान पबैत कि नहि, काम करनिहारक नाम लऽ कऽ
 पुकारल जाइत कि आदेशक स्वरमे।
 घर नैतिकताक पहिल मंच।
 ओतय कोनो भाषण नहि, दैनिक व्यवहार शिक्षक।
 संयुक्तता केवल एक छत तले बहुत लोक नहि।
 संयुक्तता साझा भार उठाबयक वृत्ति।
 एकक रोग सभक चिन्ता।
 एकक परीक्षा सभक आशा।
 एकक दुःख सभक मौन।
 मुदा साझा जीवन व्यक्तिक साँस बन्द नहि करय।
 परिवार प्रेमक आँगन हो, भयक दरबार नहि।
 बेटा आ बेटा दू अलग तराजू पर किएक?
 श्रम घरक भीतर अदृश्य किएक?
 निर्णय केवल उम्र वा लिंगक निजी साम्राज्य किएक?
 सम्मान एकतरफा आदेश नहि।
 सम्मान दुनू दिशामे बहैत नदी।
 समाजक सभसँ पुरान दीवार कखनो जन्मक नाम पर ठाढ़ होइत अछि।
 कोनो शिशु जन्मिते ऊँच नहि, नीच नहि।
 ओ केवल एक नव श्वास।
 माटि ककरो पयर जाति पूछि धारण नहि करैत।
 बरखा छप्परक नाम पढ़ि नहि बरसैत।
 सूर्य ककरो कुल देखि उजास कम-बेसी नहि दैत।
 तखन मनुष्य किएक जन्मक दीवार एतबा ऊँच बनौलक?
 हाथक श्रम ककरो गरिमा घटबैत नहि।
 माथक ज्ञान ककरो मनुष्यता बढ़बैत नहि जतबा धरि हृदय जागल नहि।
 जन्म अवसरक दरबज्जा बन्द करय, ई अन्याय।
 मन्दिरक सीढ़ी, कुआँक जल, विद्यालयक कक्षा, भोजनक पाँति—
 जतय मनुष्यक स्पर्श अपराध बनल, ओतय धर्मक नाम कतेक घायल भेल।
 अस्पृश्य कियो जन्मसँ नहि।

अस्पृश्य यदि किछु अछि तँ क्रूरता, अन्याय, घृणा, शोषण।
समता एकरूपता नहि।
वनमे सभ वृक्ष एक ऊँचाईक नहि।
तैयो धरती सभकेँ जड़ि लेल स्थान दैत अछि।
ककरो पात विशाल, ककरो फूल छोट, ककरो फल मीठ, ककरो छाया घनी।
भिन्नता जीवनक अलंकार।
असमान गरिमा अन्याय।
समता सभकेँ एकहि वस्त्र पहिराबय नहि, सभकेँ खुलल आकाश देब।
कोनो प्रतिभा दोसरक अपमान नहि बने।
कोनो धन दोसरक भूख नहि बने।
कोनो शक्ति दोसरक मौन नहि बने।
मनुष्यक मूल्य बाजारक भावसँ पैघ।
एक मजदूरक थाकल हथेली आ विद्वानक स्याही लागल अंगुरी—
दुनू मानवीय श्रमक भिन्न रूप।
रोटी सभक मेज पर आबैत अछि कतेक अदृश्य हाथक यात्रा कऽ कऽ।
किसान माटि सँ बात करैत।
बुनकर सूत्रसँ।
कारीगर लकड़ी, धातु, पत्थरसँ।
शिक्षक भविष्यसँ।
मजदूर शहरक हड्डी जोड़ैत।
समाज एहि सभ श्रमक साझा देह।
धन दोष नहि।
धनक अन्ध संचय प्रश्न।
जतबा पाब, आरो चाह।
भूख पेटक नहि, अहंकारक बढ़ैत जाइत।
सादगी दरिद्रता नहि।
सादगी आवश्यकता आ लालसाक भेद बुझब।
धन हाथमे रहय, हृदयमे नहि।
समृद्धि जतय साझा भलाइ बढ़ाबय, ओ समाजक शक्ति।
गरीबी पवित्रता नहि।
भूख आध्यात्मिक साधना नहि।
समाजक काज मनुष्य केँ अपन क्षमता खोलबाक अवसर देब।
शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सुरक्षा—
ई दान नहि, गरिमामय जीवनक मूल आधार।
मुदा सहायता एहन हो जे हाथ पकड़ि ठाढ़ करय, सदा झुका कऽ राखय नहि।

आत्मनिर्भरता अकेलापन नहि।
 ओ अपन श्रम पर विश्वास।
 सहयोग भीख नहि।
 ओ समाजक साझा शक्ति।
 एक-एक बूँद कम, मुदा नदी पर्वत काटि सकैत अछि।
 समाज यदि सहयोग भूलि जाए, प्रतिस्पर्धाक निर्मम मैदान बनि जाइत।
 सभ दोसर सँ आगाँ, मुदा कतय जा रहल?
 दौड़ गन्तव्य नहि।
 कखनो पाछाँ रहि गेल हाथ पकड़नाइ मानवता केर सभसँ पैघ जीत।
 नैतिकता कानूनक डर नहि।
 पुलिस न देखय तैयो चोरी नहि करब—
 एहि क्षण चरित्र जन्मैत अछि।
 कियो प्रशंसा नहि करय तैयो सत्य पर टिकब।
 लाभ सम्भव तैयो अन्याय नहि।
 चरित्र अदृश्य सम्पत्ति।
 बैंकमे ओकर खाता नहि, मुदा समाजक सभ संस्थाक नींव ओकरा पर।
 कागजक नियम बहुत बनि सकैत।
 यदि मनुष्य भीतर सँ बेईमान, नियमक नव रास्ता खोजि लेत।
 यदि भीतर सजगता, कम नियममे सेहो जीवन सुचारु।
 भ्रष्टाचार केवल नोटक गुप्त लेन-देन नहि।
 ओ विश्वासक चोरी।
 एक अधिकारी जखन कर्तव्य बेचैत अछि, ओ केवल धन नहि लैत, समाजक विश्वास घटबैत अछि।
 एक व्यापारी जखन माप घटबैत, ओ व्यवहारक नैतिक धरती काटैत अछि।
 एक शिक्षक जखन पक्षपात करैत, ओ भविष्य केँ अन्याय सिखबैत अछि।
 भ्रष्टाचार मनमे छोट समझौता रूपमे उगैत।
 “एतबा सँ की होएत?”
 एहिछोट वाक्य एक दिन बड़ अन्हार बनि सकैत अछि।
 साम्प्रदायिक घृणा एक अन्य आगि।
 प्रार्थनाक भाषा भिन्न हो, तँ हृदय शत्रु किएक?
 घण्टी, अजान, भजन, कीर्तन, मौन—
 आकाश सभ ध्वनि एके विशालता मे सुनैत अछि।
 विश्वास यदि भीतर करुणा जगबैत, ओ पवित्र।
 विश्वास यदि बाहिर घृणा बनि बरसैत, तँ प्रश्न आवश्यक।
 धर्म मनुष्य केँ उच्च करय, दीवार ऊँच नहि।
 असहमति हो, तैयो मानवीय सम्बन्ध न टूटय।

विवाद हथियार नहि, संवाद बने।
संस्कृति मुकुट नहि, जड़ि।
जड़ि माटि सँ शक्ति लैत, मुदा पात आकाश दिस खुलैत।
अपन परम्परा प्रेमसँ पढ़ू, मुदा ओकर अन्हारो देखू।
जे जीवनदायी, ओ बचाउ।
जे मनुष्य केँ छोट करैत, ओ बदलू।
पुरान होएब सत्यक प्रमाण नहि।
नव होएब श्रेष्ठताक प्रमाण नहि।
कसौटी मनुष्यक कल्याण, गरिमा, न्याय, सत्य।
आधुनिकता मशीनक गति नहि मात्र।
यदि फोन तेज, मुदा मन पूर्वग्रहक पुरान जालमे, आधुनिकता अधूरी।
यदि शहर ऊँच, मुदा स्त्रीक सुरक्षा कम, विकास अधूरी।
यदि उत्पादन बढ़ल, मुदा नदी मरि रहल, समृद्धि अधूरी।
यदि शिक्षा बढ़ल, मुदा चरित्र सिकुड़ल, ज्ञान अधूरी।
विकास मनुष्यक समग्र विस्तार।
देह स्वस्थ, मन सजग, बुद्धि विवेकी, हृदय करुण, समाज न्यायपूर्ण, प्रकृति सुरक्षित।
स्त्री समाजक आधा आकाश।
आधा आकाश बन्द रखि सम्पूर्ण भोर केना होएत?
शिक्षा, निर्णय, सम्पत्ति, सुरक्षा, सम्मान—
ए सभ कृपा नहि।
मानवीय अधिकार।
पूजा समानता केँ विकल्प नहि।
फूल चढ़ाबय सँ पहिने दैनिक व्यवहारमे गरिमा दियौ।
बालक भविष्यक खाली पात्र नहि।
ओ आइक पूर्ण मनुष्य।
ओकर प्रश्न छोट नहि।
शिक्षा ओकर भीतर सोएल शक्ति जगाबय, केवल परीक्षा नहि भरय।
शिक्षक भयक प्रहरी नहि, जिज्ञासाक माली।
अनुशासन अपमान नहि।
अनुशासन स्वनियमनक धीमा अभ्यास।
युवा समाजक केवल समस्या नहि।
ओ ऊर्जा।
यदि दिशा नहि, भटकाव।
यदि विश्वास नहि, निराशा।
यदि अवसर नहि, क्रोध।

युवाक समक्ष जीवित उदाहरण चाही।
 जे कहैत ओ जीबैत हो।
 राजनीति समाजक चरित्रसँ अलग कतय?
 नेता आकाशसँ नहि उतरैत।
 ओही समाजक दर्पण जे ओकरा जन्म देत।
 लोकतन्त्र एक दिनक मतदान नहि।
 दैनिक नागरिकता।
 प्रश्न करब, तथ्य जानब, असहमति सुनब, सार्वजनिक धन अपन धन जकाँ सहेजब।
 शब्द हथियार बहुत सहज बनैत अछि।
 एक अफवाह आगि जकाँ।
 सत्य धीमे चलैत, झूठ दौड़ैत।
 तखन सजग नागरिक पहिने पूछय—
 “ई बात कतय सँ?”
 “प्रमाण की?”
 झूठ फैलाबय केवल सूचना-दोष नहि, सामाजिक हिंसा।
 एक अफवाह घर जरा सकैत, समुदाय बाँटि सकैत।
 वाणी उत्तरदायित्व।
 मौन सेहो कखनो उत्तरदायित्व।
 जतय अन्याय आँखि समक्ष, चुप्पी तटस्थ नहि रहैत।
 साहस तलवार नहि।
 साहस उचित क्षणमे एक स्पष्ट वाक्य—
 “ई बेठीक अछि।”
 मुदा दोसरक भूल देखब सहज।
 अपने भीतर ओही बीज देखब कठिन।
 समाज-सुधार बाहरक सफाई मात्र नहि।
 आत्म-सुधार बिनु नव संस्था पुरान रोग पकड़ि सकैत अछि।
 मुदा “पहिने अपने बदलू” कहि संस्था केँ मुक्त नहि करू।
 दुनू दिशामे एक संग काम।
 भीतर चरित्र।
 बाहर न्यायपूर्ण व्यवस्था।
 भीतर करुणा।
 बाहर समान अवसर।
 भीतर संयम।
 बाहर शोषण रोकबाक नियम।
 एक पंख अकेला उड़ान नहि देत।

आध्यात्मिकता यदि समाजसँ भागि जाए, अधूरी।
समाज-सुधार यदि भीतरक लोभ, अहंकार, घृणा नहि देखय, अधूर।
आध्यात्मिकता अलौकिक प्रदर्शन नहि।
ओ मनुष्यक भीतर मूल्यक जागरण।
सत्य, प्रेम, करुणा, संयम, सेवा।
प्रार्थना जतय सेवा बनि हाथमे उतरैत, ओतय धर्म जीवित।
ध्यान जतय क्रोधक क्षणमे विराम बने, ओतय साधना जीवित।
ज्ञान जतय अहंकार घटाबय, ओतय विद्या जीवित।
आदर्श समाज कागज पर सोझ रेखासँ नहि बनत।
मनुष्य जटिल।
इच्छा, भय, प्रेम, स्वार्थ, त्याग सभ एकहि हृदयमे।
परिवर्तन क्रमिक, धैर्यपूर्ण, बहुआयामी।
कानून, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, परिवार, संस्कृति, चरित्र—
सभ एक-दोसर सँ जुड़ल।
मुदा एक छोट ठीक कर्म व्यर्थ नहि।
एक बच्चा भेदभाव बिनु पालल गेल—
एक बीज।
एक व्यापारी ईमानदार रहल—
एक बीज।
एक परिवार बेटी केँ समान अवसर देलक—
एक बीज।
एक गाम जातिक पाँति तोड़ि साझा भोजन कएलक—
एक बीज।
एक युवा अफवाह बिनु जाँच नहि फैललक—
एक बीज।
समाज बीजसभक दीर्घ वन।
क्रान्ति सदा आगिक लपट नहि।
कखनो हजार छोट ठीक कर्मक धीमा हरियाली।
“किछु नहि बदलत” कहब अन्यायक सभसँ सहज सुरक्षा।
इतिहास बदलाव सँ भरल।
जे दीवार शाश्वत लगैत छल, टूटल।
जे प्रथा अटल, बदलल।
परिवर्तन संभव।
मुदा मात्र बदलाव प्रगति नहि।
एक अन्याय दोसर अन्यायसँ बदलि जाए, क्रान्ति अधूरी।

अन्तिम प्रश्न फेर मनुष्य पर।
 तकनीक बढ़ल, मुदा करुणा?
 धन बढ़ल, मुदा न्याय?
 शिक्षा बढ़ल, मुदा विवेक?
 सत्ता बढ़ल, मुदा सेवा?
 स्वतन्त्रता बढ़ल, मुदा उत्तरदायित्व?
 शान्ति केवल युद्धक अनुपस्थिति नहि।
 घरमे भय, सड़क पर अपमान, कार्यालयमे अन्याय, मनमे घृणा—
 एहि बीच बन्दूक मौन हो, तैयो शान्ति कतय?
 शान्ति न्यायक छाया।
 अहिंसा केवल मारि नहि देब नहि।
 अपमान हिंसा।
 शोषण हिंसा।
 भूख बनाकऽ रखब हिंसा।
 झूठा प्रचार हिंसा।
 अवसर जन्मक नाम पर छीनब हिंसा।
 अहिंसा जीवनक वृहत्तर मर्यादा।
 समाजक स्वास्थ्य केवल भवन, सड़क, उद्योग नहि।
 विश्वास, गरिमा, सुरक्षा, साझेदारी सेहो।
 की मनुष्य राति निडर चलि सकैत?
 की बच्चा प्रश्न करि सकैत?
 की स्त्री निर्णय ले सकैत?
 की गरीब न्याय धरि पहुँचि सकैत?
 की असहमत भय बिनु बोलि सकैत?
 ई प्रश्नसभ समाजक आत्मिक स्वास्थ्य मापैत अछि।
 सभ्यता सुविधा।
 संस्कृति उपयोगक विवेक।
 समाज सम्बन्ध।
 आध्यात्मिकता सम्बन्धक भीतर एकत्वक गहिर बोध।
 पूर्ण जीवन सन्तुलनक साधना।
 हरेक युग नव प्रश्न।
 मुदा मूल प्रश्न अखनो ओहिऐ—
 मनुष्य मनुष्यक संग केना रहय?
 स्वतन्त्र रहि साझा जीवन केना बनाबय?
 भिन्न रहि सम्मान केना बचाबय?

धन कमाइ लोभ सँ केना बचे?
शक्ति पाबि सेवा केना याद रखय?
विश्वास रखि घृणा केना न उपजाबय?
प्रगति करि धरती केना बचाबय?
एक दिशा स्पष्ट हो सकैत अछि—
मनुष्यक गरिमा।
जे निर्णय गरिमा बढ़ाबय, ओहि दिस।
जे मनुष्य केँ वस्तु बनाबय, सावधान।
जे भय पर व्यवस्था टिकाबय, सावधान।
जे घृणा पर एकता बनाबय, सावधान।
जे लोभ पर विकास करय, सावधान।
समाजप्रेम एहन हो—
गौरव अन्ध नहि।
आलोचना घृणा नहि।
नव निर्माण विनम्र।
अन्ततः समाजक मूल पदार्थ मनुष्य।
मनुष्यक मूल शक्ति चेतना।
चेतनाक मूल परीक्षा मूल्य।
मूल्यक मूल देह कर्म।
कर्मक मूल फल सम्बन्ध।
सम्बन्धक मूल श्वास विश्वास।
विश्वासक मूल माटि सत्य।
सत्यक मूल उष्मा करुणा।
करुणा बिनु सत्य कठोर।
सत्य बिनु करुणा अन्ध।
दुनू मिलि मनुष्यता।
एहि मनुष्यता सँ भोर आकाशमे नहि, आँगनमे उतरैत अछि।
एक घर कनेक अधिक न्यायपूर्ण।
एक गाम कनेक कम भेदभावपूर्ण।
एक शहर कनेक अधिक ईमानदार।
एक देश कनेक अधिक सहिष्णु।
एक पृथ्वी कनेक अधिक सुरक्षित।
भोर एके बेर पूर्ण नहि होइत।
पहिने एक महीन रेखा।
फेर आकाश हलुक।

फेर पक्षीक आवाज।
 फेर घरक दुआर खुलैत।
 समाजक भोर एहनहि।
 एक मन बदलैत।
 फेर एक सम्बन्ध।
 फेर एक परिवार।
 फेर एक संस्था।
 फेर एक पीढ़ी।
 मनुष्यता ककरो एक दिनक विजय नहि।
 ओ प्रतिदिन फेर चुनल जाएबवला एक मूल्य।
 आइ फेर चुनू।
 सत्य घृणा पर।
 सहयोग ईर्ष्या पर।
 न्याय विशेषाधिकार पर।
 गरिमा अपमान पर।
 सेवा सत्ता-लिप्सा पर।
 सादगी अन्ध उपभोग पर।
 संवाद हिंसा पर।
 करुणा उदासीनता पर।
 आ मनुष्य हरेक विचार, हरेक संस्था, हरेक लाभ सँ पहिने।
 तखन आँगनमे भोर केवल प्रकाश नहि होएत।
 ओ एक नवा सामाजिक श्वास होएत।
 जतय हरेक व्यक्ति कहि सकय—
 हम अकेला नहि, मुदा हम मिटायलो नहि।
 हम भिन्न छी, मुदा हम कम नहि।
 हम स्वतन्त्र छी, मुदा उत्तरदायित्वहीन नहि।
 हम अपन छी, मुदा दोसरक दुःखसँ अपरिचित नहि।
 आ एहि चार वाक्यक बीच एक नवा समाज धीरे-धीरे अपन घर बनायत।

जतय मनुख मनुखक उजास

एकटा घर दीवार सँ नहि, आवाज सँ बनैत अछि।
 कोनो कोठरीमे बच्चाक हँसी, कोनो आँगनमे बुजुर्गक खाँसी, कोनो चूल्हे लग थाकल हाथक ताप—
 एहि सभक बीच घर अपन अर्थ पबैत अछि।
 समाजो एहनहि एकटा घर।
 एतय हरेक मनुष्य एकटा अलग कोठरी नहि, एक-दोसर दिस खुलल खिड़की।

जतय हमर साँस केवल हमर नहि, वृक्षक संग एक मौन साझेदारी।
हमर अन्न केवल हमर श्रम नहि, कतेक अदृश्य हाथक सहयोग।
हमर भाषा केवल हमर कण्ठ नहि, पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत आबि रहल एक नदी।
हमर जीवन एकल कथा नहि, असंख्य जीवनक बीच लिखल एक पंक्ति।
तखन मनुष्य किएक एतबा अकेला होएबाक अभिनय करय?
किएक ओ अपन सुखक चारू कात दीवार उठाबय?
किएक ओ मानय जे दोसरक दुःख ओकर घरक बाहरक विषय?
एक दिन ककरो आँसू हवा बनि हमर दुआर धरि अवश्य पहुँचैत अछि।
एक दिन ककरो भूख रास्ताक धूलि मे हमर पयर छू लैत अछि।
एक दिन ककरो अपमान इतिहास बनि हमर संतानक समक्ष ठाढ़ होइत अछि।
समाज एहि वापसीक नामो अछि।
जे हम देब, ओ घुमि-फिरि हमरहि संसार बनत।
घृणा देब— हवा भारी।
विश्वास देब— रस्ता खुलल।
भय देब— दुआर बन्द।
सम्मान देब— आँखि उठल।
मनुष्य एक-दोसरक भविष्य बनबैत अछि।
तैयो कतेक पुरान दीवार आँगनक बीच अखनो ठाढ़।
जन्मक नाम पर, जातिक नाम पर, धनक नाम पर, लिंगक नाम पर, पेशा, भाषा, विश्वासक नाम पर।
दीवार एतबा पुरान जे कतेक लोक ओकरा प्रकृति मानि लेलक।
मुदा सूर्य ककर कुल पूछैत अछि?
बरखा ककर पाँति?
माटि ककर स्पर्श सँ अपवित्र?
एकहि धरती सभ पयर धारण करैत अछि।
एकहि हवा सभ फेफड़ा भरैत अछि।
एकहि जल सभ देहमे रक्त बनि बहैत अछि।
तखन ककरो छाया छूबै सँ मनुष्य किएक डरय?
अस्पृश्य मनुष्य नहि।
अस्पृश्य यदि किछु हो तँ अन्याय।
घृणा।
क्रूरता।
अहंकार।
मनुष्यक मनुष्यसँ दूरी जखन धर्म बनि जाए, धर्मक आँखि कतेक अन्हार देखैत होएत?
पवित्रता ककरो दुआर बन्द करबाक नाम केना हो सकैत?
पवित्रता कदाचित् हृदयक ओ जल जे भेदक धूलि धोए।

एकटा बच्चा जन्मैत अछि।
 ओकर हथेली पर कोनो जाति लिखल नहि।
 ओकर रोदन ककरो भाषा पूछि नहि निकलैत।
 ओ केवल जीवन।
 समाज ओकर माथ पर पहिचानक कतेक भारी मुकुट पाछाँ रखैत अछि।
 पहिचान स्मृति हो, बेड़ी नहि।
 समुदाय आश्रय हो, किला नहि।
 परम्परा जड़ि हो, जंजीर नहि।
 परिवार छाया हो, अन्हार नहि।
 घर मानवता सीखबाक पहिल विद्यालय।
 बच्चा उपदेश सँ कम, दृश्य सँ अधिक सीखैत अछि।
 ओ देखैत अछि— बेटी लेल कतेक ठाम?
 बेटा लेल कतेक छूट?
 घरक काम केवल ककर?
 निर्णय ककर स्वर?
 रोटी पहिने ककर थारी?
 अतिथि आएँ तँ अपन मुस्कान, मजदूर आएँ तँ आदेश?
 बच्चा सभ याद रखैत अछि।
 घरक दैनिक व्यवहार ओकर भीतर भविष्यक समाज लिखैत अछि।
 यदि घर समता सिखाबय, सड़क पर भेदभावक पयर कम होएत।
 यदि घर सम्मान सिखाबय, कार्यालयमे अपमानक भाषा कम होएत।
 यदि घर प्रश्न सुनय, राज्य प्रश्न सँ कम डरैत।
 संयुक्त जीवन केवल एक छत नहि।
 ओ साझा भारक एक लय।
 एक बीमार— सभक चिन्ता।
 एक बेरोजगार— सभक साहस।
 एक वृद्ध— सभक स्मृति।
 एक बच्चा— सभक भविष्य।
 मुदा साझा जीवन ककरो व्यक्तिगत आकाश न छीनय।
 प्रेम स्वामित्व नहि।
 सहारा नियन्त्रण नहि।
 परिवार जतय आज्ञा एक दिशा सँ सदैव नीचाँ उतरैत, ओतय संवाद कतय चढ़त?
 सम्मान ऊपर सँ नीचाँ फेंकल सिक्का नहि।
 ओ दुनू दिशामे बहैत नदी।
 बुजुर्गक अनुभव छाया, युवाक प्रश्न हवा।

छाया बिनु थकान, हवा बिनु घुटन।
घर दुनूकें ठाम दय।
समाज ककरो प्रतिभा केँ दबाबय नहि।
मुदा प्रतिभा दोसरक गरिमा घटाबय नहि।
एक वृक्ष आकाश छूबैत, तँ घासक अस्तित्व कम नहि।
एक फूल अधिक सुगन्धित, तँ पात व्यर्थ नहि।
प्रकृति भिन्नता सँ सुन्दर।
समता भिन्नता मिटाबय नहि।
समता समान गरिमा।
समान अवसर।
समान धूप।
समान जल।
सभ फूल एक रंगक होएबाक आवश्यकता नहि।
मुदा ककरो फूल अन्हारमे जन्मसँ बन्द किएक रहय?
शिक्षा धूप हो।
स्वास्थ्य जल।
रोजगार माटि।
सुरक्षा किनार।
तखन प्रत्येक जीवन अपन बीजक सम्भावना अनुसार फूटि सकय।
गरीबी पवित्र नहि।
भूख साधना नहि।
नग्न पयर ककरो नैतिक ऊँचाईक प्रमाण नहि।
रोग भाग्यक धार्मिक मुहर नहि।
अभाव यदि समाजक अन्यायी व्यवस्था सँ जन्मैत अछि, तँ ओकरा धैर्यक उपदेश देब क्रूरता।
पहिने अन्न।
औषधि।
शिक्षा।
काम।
फेर मनक विस्तृत आकाशक बात।
मुदा अन्न पेलासँ सन्तोष अपने नहि उगैत।
धन पेलासँ आनन्द गारंटी नहि।
महल अकेलापन ढाँकि सकैत, मेटा नहि।
समाजक बाहरी समृद्धि भीतरक रिक्तता सँ अलग प्रश्न।
दुनूकें अपन उपचार चाही।
एक दिस न्यायपूर्ण बाँट।

दोसर दिस लोभक सीमा।
 एक दिस अवसर।
 दोसर दिस संयम।
 एक दिस उत्पादन।
 दोसर दिस मनुष्यता।
 धन साधन।
 सिंहासन नहि।
 बाजार सेवक।
 स्वामी नहि।
 वस्तु जीवन सहज करय, जीवनक अर्थ न तय करय।
 लोभ एहन प्यास जे जल पीबिते आरो बढ़ैत।
 एक घर पेल, दोसर चाह।
 एक पद पेल, आरो ऊँच।
 एक प्रशंसा, आरो शोर।
 अन्तमे मनुष्य सभ जमा करैत अपनहि केँ खो सकैत अछि।
 सादगी अभाव नहि।
 सादगी पर्याप्तक बोध।
 जे चाही आ जे चाहि रहल छी दुनूक बीच एक सजग दूरी।
 कम वस्तु होइते समृद्ध हृदय।
 बहुत वस्तु होइते दरिद्र मन।
 असली गरीबी कखनो तिजोरी बाहर नहि, तिजोरी भीतर।
 मुदा ई कहि सामाजिक गरीबी ढाँकि नहि देब।
 भूखल मनुष्य केँ “अन्तरात्मा समृद्ध करू” कहब रोटी नहि।
 भीतर-बाहर दुनू सत्य।
 समाजक स्वास्थ्य दुनू पर निर्भर।
 श्रम एहि स्वास्थ्यक मुख्य धड़कन।
 किसानक हथेली माटि पढ़ैत अछि।
 कारीगर लकड़ीक नस जानैत अछि।
 बुनकर सूत्रक धैर्य।
 मजदूर शहरक हड्डी जोड़ैत अछि।
 शिक्षक भविष्यक अक्षर बोड़ैत अछि।
 नर्स रातिक नींद दोसरक जीवन लेल त्यागैत अछि।
 सफाईकर्मी नगरक साँस साफ रखैत अछि।
 श्रम केवल मजदूरी नहि, सभ्यताक अदृश्य आधार।
 तखन श्रमिक सम्मानक पाँति में पाछाँ किएक?

जे हाथ समाजक घर बनौलक, ओहिक्केँ दरबज्जा बाहर किएक?

श्रमक पूजा भाषण मे नहि, उचित पारिश्रमिक, सुरक्षा, आराम, सम्मानमे।

भोजनक थारी आ भाषणक मंच दू अलग नैतिकता नहि हो।

ईमानदारी समाजक मौन पूँजी।

ओकर बैक विश्वास।

एक छोट झूठ एक छोट दरार।

एक रिश्तत एक छोट छेद।

एक छल एक हलुक कम्पन।

दरार दरार जोड़ैत-जोड़ैत एक दिन सम्पूर्ण पुल कमजोर।

भ्रष्टाचार नोटक गड्डी मात्र नहि।

ओ कर्तव्यक मूल्य-टैग।

जखन न्याय बिकय, पद बिकय, शिक्षा बिकय, सेवा बिकय—

समाज अपन आत्मा कतेक टुकड़ा मे बेचैत अछि।

एक अधिकारी जखन ठीक काम लेल गुप्त मूल्य माँगैत, ओ केवल एक व्यक्ति केँ नहि लूटैत, सार्वजनिक विश्वास घटबैत अछि।

एक शिक्षक पक्षपात करैत, एक बच्चाक आत्मसम्मान घायल करैत अछि।

एक व्यापारी माप घटबैत, बाजारक नैतिकता घटबैत अछि।

एक नागरिक कहैत— “सभ करैत अछि”—

अन्हारक सभसँ सहज माफी।

मुदा प्रकाश कखनो भीड़क गणना नहि करैत।

एक दीप अकेला होइत हुएँ दीप।

ईमानदारी कखनो एकाकी हो सकैत अछि, तैयो ओकर उजास अन्य लोक लेल दिशा।

नैतिकता कानूनक डर नहि।

कियो नहि देखय, तैयो ठीक काम।

कियो प्रशंसा नहि करय, तैयो वचन निभाउ।

लाभ समक्ष, तैयो अन्याय नकारू।

भीड़ दोसर दिशा, तैयो विवेकक छोट आवाज सुनू।

चरित्र एहि अदृश्य क्षणसभमे बनैत अछि।

बड़ भाषण पाछाँ।

पहिने छोट निर्णय।

सार्वजनिक जीवन निजी चरित्रसँ पूर्ण अलग कतय?

जे घरमे झूठक अभ्यास, पद पेलासँ सत्यवादी केना होएत?

जे छोट लाभ लेल सिद्धान्त बेचैत, बड़ अवसर पर किएक रुकत?

नेतृत्व पदक स्वर्णाक्षर नहि।

नेतृत्व व्यक्तिक चरित्रक विस्तार।

सत्ता यदि सेवा, लोकविश्वास।

सत्ता यदि स्वार्थ, लोकभय।
 आदर्श ऊँच मंच पर खड़ा भाषण नहि।
 ओ दैनिक जीवनमें दृश्य उदाहरण।
 युवा शब्द सँ कम, जीवन सँ अधिक सीखैत अछि।
 ओ देखैत अछि— जे नैतिकता कहैत, ओ स्वयं कतेक नैतिक?
 जे सेवा कहैत, ओ सुविधा कतेक छोड़ैत?
 जे समानता कहैत, ओ घरमें कतेक समान?
 जे सत्य कहैत, ओ लाभ समक्ष कतेक टिकैत?
 युवाक आँखि बहुत तेज।
 पाखण्ड जल्दी देखैत अछि।
 आदर्श जीवित हो, तखन प्रेरणा।
 नहि तँ उपहास।
 युवा समस्या नहि।
 ओ अनगढ़ ऊर्जा।
 जतय विश्वास, दिशा, अवसर, सृजनक स्थान—
 ओतय ऊर्जा वन बनि सकैत।
 जतय बेरोजगारी, अपमान, भ्रम, खाली समय, घृणाक प्रचार—
 ओतय ओही ऊर्जा आगि।
 समाज युवाक हाथमें कुन औजार देत?
 पुस्तक?
 कौशल?
 काम?
 गीत?
 खेल?
 सेवा?
 कि केवल क्रोधक झण्डा?
 भविष्य एहि चयन पर निर्भर।
 शिक्षा परीक्षा-पत्रक कारखाना नहि।
 ओ मनुष्य बनबाक दीर्घ प्रक्रिया।
 प्रश्न जागय।
 तर्क परिपक्व हो।
 हृदय संवेदनशील।
 हाथ कुशल।
 शरीर स्वस्थ।
 नागरिकता जिम्मेदार।

शिक्षा यदि केवल नौकरीक टिकट, तँ मनुष्य अधूर पढ़ल।
ज्ञान जतय चरित्र छूबैत, ओतय विद्या।
ज्ञान जतय अहंकार बढ़बैत, ओतय केवल सूचना।
बच्चाक प्रश्न कखनो असभ्यता नहि।
“किएक?” सभ्यता केर सभसँ पुरान सीढ़ी।
जे विद्यालय प्रश्न सँ डरैत, ओ भविष्य सँ डरैत अछि।
अनुशासन प्रश्नक हत्या नहि।
अनुशासन अपने केँ सँभालबाक कला।
डर बालक केँ चुप करा सकैत, मुदा सजग नहि।
अपमान आज्ञाकारी बना सकैत, मुदा जिम्मेदार नहि।
सम्मान आ स्वतन्त्रता जतय मर्यादाक संग, ओतय आत्मानुशासन जन्मैत अछि।
समाजक आध्यात्मिकता एतय सँ धीरे खुलैत अछि।
आध्यात्मिकता आकाशमे चमत्कार नहि।
ओ व्यवहारक सूक्ष्म उजास।
क्रोध उठल, मुदा हिंसा नहि।
लाभ मिलत, मुदा छल नहि।
अपमान भेटल, मुदा घृणा नहि।
शक्ति पेल, मुदा अहंकार नहि।
एहिऐ भीतरक साधना बाहरक समाज बदलैत अछि।
प्रार्थना यदि करुणा नहि बनल, अधूरी।
ध्यान यदि दैनिक जीवनमे सजगता नहि देलक, अधूर।
ज्ञान यदि दोसरक दुःख देखब नहि सिखौलक, अधूर।
धर्म यदि मनुष्यक बीच दीवार बढ़ौलक, अधूर।
आध्यात्मिकता मनुष्य केँ समाजसँ भागब नहि सिखाबय।
ओ समाजक भीतर अधिक मानवीय होएब सिखाबय।
भीतरक शान्ति बाहरक अन्याय प्रति मौनक बहाना नहि।
जतय भूख, अन्न दियौ।
जतय रोग, औषधि।
जतय अज्ञान, शिक्षा।
जतय भय, साहस।
जतय भेदभाव, समता।
सेवा पूजाक धरती पर उतरब।
कर्म प्रार्थनाक हाथ बनब।
आस्था करुणाक दैनिक भाषा।
समाज तखन मन्दिरक बाहर एक विशाल पूजा-स्थल बनि सकैत अछि।

मुदा धर्मक नाम पर घृणा?
 प्रार्थनाक भाषा भिन्न, तँ हृदय शत्रु किएक?
 एक घरमे घण्टी।
 दोसरमे अजान।
 कतहु भजन।
 कतहु मौन।
 आकाश सभ ध्वनि समेटि लैत अछि।
 मनुष्य किएक नहि?
 विश्वास अपने भीतर दीप हो, दोसरक घर जरेबाक आगि नहि।
 असहमति संभव।
 घृणा अनिवार्य नहि।
 दू मार्ग भिन्न हो, तैयो यात्री एक-दोसर केँ जल दे सकैत छथि।
 सहिष्णुता “हमरा की” नहि।
 ओ दोसरक अस्तित्वक गरिमापूर्ण स्वीकृति।
 “अहाँ अलग छी, तैयो अहाँक स्थान एहि आकाशमे सम्पूर्ण अछि।”
 एहि वाक्यक भीतर शान्तिक बीज।
 राष्ट्र एहि शान्तिक विस्तृत घर।
 मुदा घरक प्रेम पड़ोसीक घर जरेबाक अधिकार नहि।
 स्वाभिमान घृणा नहि।
 संस्कृति मुकुट नहि।
 जड़ि।
 जड़ि धरती सँ शक्ति लैत, मुदा पात नव सूर्य दिस खुलैत।
 परम्परा जड़ि हो।
 नवता पात।
 दुनू बिनु वृक्ष अधूर।
 जे केवल पुरान पकड़ि नव ऋतु नकारय, ओ सूखत।
 जे केवल नव पात देखय, जड़ि काटि दे, ओ आँधीमे गिरत।
 जीवित संस्कृति स्मृति आ परिवर्तनक संगम।
 अपन अतीत प्रेमसँ पढ़ू।
 मुदा ओकर दोषो नाम लिअ।
 गौरव आलोचना सँ कम नहि होइत।
 सत्य गौरवक सभसँ मजबूत आधार।
 जे सुंदर ओ बचाउ।
 जे अन्यायी ओ बदलू।
 जे मृत ओकरा पवित्र कहि जीवन पर नहि थोपु।

आधुनिकता नव मशीन मात्र नहि।

यदि संचार तेज, मुदा मन पूर्वग्रहक पुरान खोहमे, आधुनिकता अधूरी।

यदि इमारत ऊँच, मुदा मानव गरिमा नीच, विकास अधूरी।

यदि उद्योग बढ़ल, मुदा नदी मरल, समृद्धि अधूरी।

यदि ज्ञान बढ़ल, मुदा करुणा घटल, सभ्यता अधूरी।

विकास समग्र शब्द।

देह।

मन।

बुद्धि।

हृदय।

समाज।

प्रकृति।

सभक एक संग स्वास्थ्य।

प्रकृति समाजक बाहर नहि।

हवा हमर भीतर श्वास।

जल हमर भीतर रक्त।

माटि अन्न बनि देह।

वृक्ष फेफड़ाक दूरक साथी।

नदी सभ्यता केर पुरान नस।

प्रकृति केँ केवल संसाधन मानब अपने देहक अंग केँ बाजारक वस्तु मानब जकाँ।

वन काटू, मुदा श्वासक हिसाब राखू।

नदी रोकू, मुदा जीवनक प्रवाह समझू।

उद्योग बनाउ, मुदा धुआँक भविष्य सेहो देखू।

आइक लाभ काल्हिक बच्चाक हवा न छीनय।

उत्तरदायित्व वर्तमान सँ आगाँ पीढ़ी धरि फैलैत अछि।

समाजक आध्यात्मिकता पृथ्वी प्रति करुणा बिनु कतेक पूर्ण?

एक वृक्ष काटबाक पहिने एक क्षण ओकर छाया स्मरण करू।

एक नदी दूषित करबाक पहिने ओकर घाट पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी भरल घड़ा स्मरण करू।

प्रकृति ककरो निजी जायदाद नहि, जीवनक साझा उत्तराधिकार।

स्त्री आधा समाज नहि मात्र, समाजक आधा अनुभव।

ओकर श्रम अदृश्य किएक?

ओकर निर्णय दोसरक अनुमति पर किएक?

ओकर सुरक्षा ओकर कैद बनि किएक?

गरिमा कृपा नहि।

अधिकार।

स्त्री केँ देवी कहि मनुष्यक स्वतन्त्रता न छीनू।
 पूजा समानता केर विकल्प नहि।
 फूल चढ़ाबय सँ पहिने घरक व्यवहार बदलू।
 पुरुषो कठोरताक एक पिंजरा ढोइत अछि।
 “नहि रोड।”
 “कमजोर नहि बनू।”
 “सदा कठोर।”
 किएक?
 आँसू मानवीय जल।
 कोमलता कोनो एक लिंगक सम्पत्ति नहि।
 पूर्ण मनुष्य हँसय, रोय, डरय, साहस करय, प्रेम करय।
 समाजक पूर्वनिर्मित साँचा मनुष्यक सम्पूर्ण आकार कम करैत अछि।
 बच्चा आइक मनुष्य।
 केवल काल्हिक नागरिक नहि।
 ओकर हँसी आइ मूल्यवान।
 ओकर भय आइ सच्चा।
 ओकर प्रश्न आइ आवश्यक।
 बालपन भविष्यक प्रतीक्षा-कक्ष नहि।
 ओ जीवनक एक पूर्ण ऋतु।
 युवा दोसर ऋतु।
 बुजुर्ग तेसर।
 हरेक ऋतु अपन रंग।
 बुजुर्ग धीमा, मुदा स्मृति तेज।
 ओ इतिहासक जीवित पुस्तक।
 मुदा सम्मान ओकरा युवाक जीवन पर असीम अधिकार नहि देत।
 फेर प्रेम आ स्वतंत्रता।
 सहारा आ स्वायत्तता।
 हरेक आयु अपन गरिमा।
 विकलांग शरीर अधूर मनुष्य नहि।
 यदि सड़क, विद्यालय, कार्यालय केवल एक प्रकारक देह लेल बनल, दोष देहक नहि, व्यवस्थाक।
 समावेशन कृपा नहि।
 न्याय।
 रास्ता एहन हो जे सभ पयर, सभ चक्का, सभ गति सम्मान पाबय।
 समाज जतय भिन्नता लेल ठाम बनबैत, ओतय मनुष्यता आरो विस्तृत।
 मानसिक पीड़ा लज्जा नहि।

मन रोगी हो सकैत जैना शरीर।
सुननाइ औषधि केर पहिल चरण।
“पागल” कहि हँसी ककरो अन्हार आरो गहिर करैत अछि।
शब्द ओतय सेहो नैतिक कर्म।
एक सम्मानजनक सम्बोधन मनुष्य केँ फेर समाजमे स्थान दे सकैत।
समाज कमजोर क्षणमे मनुष्य केँ फेंकय नहि।
किएक तँ हम सभ कखनो न कखनो कमजोर।
रोग।
शोक।
बेरोजगारी।
वृद्धावस्था।
असफलता।
जीवन भूमिका बदलैत अछि।
आइ हम सहारा देब, काल्हि हमरा चाही।
एहि स्मृतिसेँ अहंकार हलुक।
सामाजिक सुरक्षा साझा छाता।
मुदा छाता आकाश नहि बने।
सहारा स्वतन्त्रता लौटाबय।
निर्भरता स्थायी भाग्य न बनाबय।
राजनीति समाजक दूरक मंच नहि।
ओ हमर दैनिक चयनक विस्तार।
नेता ओही माटिसँ उगैत जाहिमे नागरिकक मूल्य रोपल।
मतदाता यदि भय, जाति, लोभ, घृणा पर निर्णय करय, तँ सत्ता मे ओही बीज फूलत।
लोकतन्त्र एक दिनक मतदान नहि।
दैनिक जिम्मेदारी।
तथ्य जानू।
प्रश्न करू।
सार्वजनिक धन अपन धन जकाँ सहेजू।
असहमति सुनू।
आलोचना दुश्मनी नहि।
असहमति देशद्रोह नहि।
जे समाज प्रश्न सँ डरैत, ओ अपन कमजोरी ढँकैत अछि।
जे समाज प्रश्न सुनैत, ओ सुधारक दुआर खोलैत।
मुदा विरोध विनाशक आनन्द नहि।
तोड़नाइ सहज।

बनब कठिन।
 आलोचना तथ्यक संग, तर्कक संग, विकल्पक संग।
 केवल अग्नि नहि, ईंटो।
 भाषा समाजक तापमान बतबैत अछि।
 हम भिन्न मतवला सँ कोना बोलैत छी?
 गरीब सँ?
 मजदूर सँ?
 स्त्री सँ?
 बच्चा सँ?
 वृद्ध सँ?
 सेवाकर्मी सँ?
 वाणी गरिमाक सभसँ तत्काल परीक्षा।
 एक अपमान कखनो वर्षोंक घाव।
 एक सम्मानजनक वाक्य वर्षोंक साहस।
 शब्द हलुक नहि।
 अफवाह आगि।
 सत्य धीमे पयर।
 झूठ तेज घोड़ा।
 सजग नागरिक पूछैत अछि—
 “ई बात कतय सँ आयल?”
 “प्रमाण की?”
 “ककर लाभ?”
 जाँच केवल पत्रकारक काम नहि।
 आधुनिक नागरिकताक नैतिक अभ्यास।
 एक झूठी खबर समुदाय बाँटि सकैत।
 एक अफवाह घर जरा सकैत।
 तखन शेयर करबाक एक छोट बटन कखनो नैतिक निर्णय।
 तकनीक नव, मुदा सत्यक जिम्मेदारी पुरान।
 समाज-सुधार केवल दोसरक दोषक सूची नहि।
 आइना अपने दिसो फेरू।
 हम रिश्त देब, मुदा भ्रष्टाचार-मुक्त देश चाहब?
 हम घरमे भेदभाव, मुदा समान समाज?
 हम श्रमक अपमान, मुदा समृद्धि?
 हम अफवाह फैलाबी, मुदा शान्ति?
 परिवर्तन अपने सँ आरम्भ।

मुदा अपने पर समाप्त नहि।
“पहिने अपने बदलू” कहि अन्यायी संस्था मुक्त नहि हो।
भीतर चरित्र।
बाहर न्यायपूर्ण व्यवस्था।
भीतर करुणा।
बाहर समान अवसर।
भीतर संयम।
बाहर शोषण रोकबाक नियम।
दुनू पंख एक उड़ान।
केवल आत्म-सुधार समाजक संरचना नहि बदलत।
केवल संरचना बदललासँ लोभक मन अपने शुद्ध नहि।
दुनू एक संग चालू।
समाजक जटिल रोग एक गोली नहि माँगैत।
गरीबीक आर्थिक कारण, शिक्षाक, स्वास्थ्यक, इतिहासक।
हिंसाक भय, अपमान, घृणा, प्रचार, सत्ता, असमानता।
भ्रष्टाचारक लोभ, कमजोर व्यवस्था, सामाजिक स्वीकृति।
समस्या बहुस्तरीय।
समाधान धैर्यपूर्ण।
नारा तेज, मुदा जटिलता धीमे समझाइत अछि।
चिकित्सक केवल तापमान देखि सम्पूर्ण रोग नहि बुझैत।
समाजो एक आँकड़ा सँ नहि।
उत्पादन बढ़ल— मुदा वितरण?
विद्यालय बढ़ल— मुदा शिक्षा?
अस्पताल बढ़ल— मुदा पहुँच?
सड़क बढ़ल— मुदा पैदल मनुष्यक सुरक्षा?
शहर बढ़ल— मुदा हवा?
विकास संख्या पाछाँ चेहरा खोजय।
हरेक प्रतिशत कखनो लाख परिवारक जीवन।
नीति कागज पर नहि मात्र, धरती पर ओकर पयर देखू।
ककर लाभ?
ककर हानि?
ककर आवाज नहि सुनल गेल?
ककर घर नक्शा मे खाली ठाम मानि लेल गेल?
न्याय सुननाइ सँ आरम्भ।
गामक अपन बुद्धि होइत अछि।

स्थानीय अनुभव दूरक कार्यालयसँ कतेक बेर अधिक स्पष्ट।
 ऊपरक ज्ञान आ नीचाँ केर अनुभव भेटय।
 आदेश एकतरफा नहि।
 संवाद दुनू दिशा।
 लोक अपन जीवनक निर्णयमे सहभागी हो।
 एहिए गरिमा।
 मुदा स्थानीयता संकीर्ण दीवार नहि।
 गाम जिलासँ, जिला देशसँ, देश विश्वसँ।
 छोट वृत्त बड़ वृत्तक अंश।
 परिवार समाजक।
 समाज मानवताक।
 मानवता पृथ्वी केर जीवित जालक।
 विश्व आब दूर नहि।
 रोग सीमा नहि देखैत।
 प्रदूषण पासपोर्ट नहि पूछैत।
 युद्धक धुआँ दूरक आकाश काला करैत।
 अर्थव्यवस्था एक देशक दोसरक रोटी छू लैत।
 मानवता साझा नाव।
 एक कोना छेद, सभ प्रभावित।
 विश्व-बंधुत्व मधुर कविता मात्र नहि, जीवनरक्षा केर व्यावहारिक समझ।
 मुदा दूरक मानवता सहज, पड़ोसी कठिन।
 आँगनमे भेदभाव, आ मंच पर विश्व-प्रेम— ई दूरी पहिने घटाउ।
 करुणाक वृत्त धीरे फैलय।
 अपने सँ परिवार।
 परिवार सँ पड़ोस।
 पड़ोस सँ समाज।
 समाज सँ राष्ट्र।
 राष्ट्र सँ मानवता।
 मानवता सँ समस्त जीवन।
 अखिलता एहि विस्तारक नाम हो सकैत अछि।
 जतय अपने केँ मिटाए बिनु दोसर लेल ठाम बढ़ैत अछि।
 सेवा एहि ठामहि जन्मैत अछि।
 सेवा ऊपर सँ नीचाँ देखब नहि।
 आइ हम समर्थ, काल्हि हमरा सहारा।
 जीवन भूमिका बदलैत।

एक-दोसरक सहयोग मानवीय चक्र।
कखनो बसमे सीट।
कखनो बुजुर्गक कागज।
कखनो बच्चाक फीस।
कखनो बीमार पड़ोसी लेल औषधि।
कखनो थाकल सहकर्मी काज बाँटे लेब।
छोट सेवा समाजक रक्तमे उष्मा बढ़बैत अछि।
महानता सदा इतिहासक पुस्तक नहि माँगैत।
कतेक महान कर्म कोनो समाचार नहि बनैत।
माँक राति भरि जागब।
पिताक चुप्पा त्याग।
मजदूरक ईमानदार श्रम।
शिक्षकक एक अतिरिक्त घंटा।
पड़ोसीक निस्वार्थ सहायता।
समाज एहि अनाम कर्मसभ पर ठाढ़।
इतिहास नाम याद रखैत, जीवन अनाम लोकक कंध पर चलैत।
कृतज्ञता समाजक एक भूली भाषा।
हम जे पेलहुँ, कतेक लोकक कारण?
एक क्षण स्मरण करू।
कृतज्ञ मन अहंकार कम करैत।
अहंकार कम, सहयोग अधिक।
समाजक आध्यात्मिकता कदाचित् एहि साधारण कृतज्ञता मे सेहो।
आदर्श समाज कोनो चित्रित स्वर्ग नहि।
ओ निरन्तर सुधारक दिशा।
जतय भूल मानल जा सकय।
जतय प्रश्न सुनल जा सकय।
जतय अन्याय नाम पाबय।
जतय पीड़ित आवाज पाबय।
जतय दोषी उत्तरदायी हो।
जतय सुधारक दुआर बन्द नहि।
न्याय प्रतिशोधक दोसर नाम नहि।
न्याय सन्तुलन फेर स्थापित करब।
ककरो गरिमा लौटाबय।
ककरो अधिकार खोलय।
ककरो शक्ति सीमा मे रखय।

ककरो अपराधक फल तय करय।
 मुदा समाजक घावो भरे।
 क्षमा सत्य मिटाबय नहि।
 सत्य क्षमा रोकैत नहि।
 दुनू अपन समय पर भेटि सकैत।
 पीड़ा पहिने सुनी।
 अन्याय पहिने स्वीकारू।
 उत्तरदायित्व पहिने तय।
 फेर घृणाक अन्तहीन जंजीर तोड़बाक संभावना।
 शान्ति केवल गोली न चलबाक नाम नहि।
 घर्मे भय, सड़क पर अपमान, कार्यालयमे अन्याय, मनमे घृणा—
 एहि बीच मौन शान्ति नहि।
 शान्ति न्यायक छाया।
 जतय गरिमा, सुरक्षा, सुननाइ, साझेदारी—
 ओतय शान्ति जड़ि पकड़ैत।
 अहिंसा केवल हथियार छोड़ब नहि।
 अपमान हिंसा।
 शोषण हिंसा।
 भूख जबरन बनाए रखब हिंसा।
 अवसर छीनब हिंसा।
 झूठक आगि फैलाबय हिंसा।
 अहिंसा जीवनक वृहत्तर मर्यादा।
 मनुष्य केँ कम चोट, अधिक अवसर, अधिक सम्मान।
 समाजक स्वास्थ्य केवल भवन, सड़क, कारखाना नहि।
 विश्वास।
 गरिमा।
 सुरक्षा।
 साझेदारी।
 की एक स्त्री राति निडर चलि सकैत?
 की एक बच्चा भय बिनु प्रश्न?
 की एक गरीब न्याय धरि?
 की एक अल्पमत अपन विश्वास निडर जीबि सकैत?
 की असहमत अपमान बिनु बोलि सकैत?
 ई प्रश्न समाजक अदृश्य स्वास्थ्य मापैत अछि।
 सभ्यता सुविधा।

संस्कृति सुविधाक उपयोगक विवेक।
समाज सम्बन्ध।
आध्यात्मिकता सम्बन्धक भीतर एकत्वक गहिर अनुभव।
चारू जतय एक-दोसर सँ कटि जाए, मनुष्य खंडित।
सभ्यता बिनु संस्कृति चमकदार क्रूरता बनि सकैत।
संस्कृति बिनु न्याय रूढ़ि।
समाज बिनु व्यक्ति भीड़।
व्यक्ति बिनु समाज अकेलापन।
आध्यात्मिकता बिनु धरती पलायन।
धरती बिनु आकाश घुटन।
पूर्ण जीवन सन्तुलनक निरन्तर साधना।
हरेक युग नव प्रश्न लबैत अछि।
तकनीक बदलैत।
परिवारक रूप।
कामक ढंग।
शहरक चालि।
मुदा मूल प्रश्न अखनो ओहिए—
मनुष्य मनुष्यक संग केना रहय?
स्वतन्त्र रहि साझा जीवन केना बनाबय?
भिन्न रहि सम्मान केना बचाबय?
धन कमाइ लोभ सँ केना बचे?
शक्ति पाबि सेवा केना याद रखय?
विश्वास रखि घृणा केना न उपजाबय?
प्रगति करि धरती केना बचाबय?
एक दिशा फेर-फेर समक्ष अबैत अछि—
मनुष्यक गरिमा।
जे गरिमा बढ़ाबय, ओहि दिस।
जे मनुष्य केँ वस्तु बनाबय, सावधान।
जे भय पर व्यवस्था टिकाबय, सावधान।
जे घृणा पर एकता बनाबय, सावधान।
जे लोभ पर विकास बनाबय, सावधान।
जे अनुकरण पर शिक्षा, सावधान।
जे अपमान पर अनुशासन, सावधान।
समाजप्रेम अन्ध गौरव नहि।
घर प्रेम करैत छत टपकैत अछि कहल जा सकैत।

छत सुधारब घरक अपमान नहि।
 प्रेमक व्यावहारिक रूप।
 एहि ढङ्ग सँ समाज केँ प्रेम करू।
 दोष देखू।
 सुधारू।
 सुन्दरता बचाउ।
 अन्याय बदलू।
 नव निर्माण करू।
 कृतज्ञता आ आलोचना एक संग रहू।
 अन्ततः समाजक मूल पदार्थ मनुष्य।
 मनुष्यक मूल शक्ति चेतना।
 चेतनाक मूल परीक्षा मूल्य।
 मूल्यक मूल देह कर्म।
 कर्मक मूल फल सम्बन्ध।
 सम्बन्धक मूल श्वास विश्वास।
 विश्वासक मूल माटि सत्य।
 सत्यक मूल उष्मा करुणा।
 करुणा बिनु सत्य कठोर।
 सत्य बिनु करुणा अन्ध।
 दुनू मिलि मनुष्यता।
 एहि मनुष्यता सँ एक दिन समाजक आँगनमे भोर उतरैत अछि।
 पहिने एक महीन उजास।
 फेर एक घर कनेक अधिक न्यायपूर्ण।
 एक गाम कनेक कम भेदभावपूर्ण।
 एक विद्यालय कनेक अधिक प्रश्नप्रिय।
 एक कार्यालय कनेक अधिक ईमानदार।
 एक परिवार कनेक अधिक समान।
 एक शहर कनेक अधिक करुण।
 एक देश कनेक अधिक सहिष्णु।
 एक पृथ्वी कनेक अधिक सुरक्षित।
 भोर एके बेर पूर्ण नहि होइत।
 एक मन बदलैत।
 फेर एक सम्बन्ध।
 फेर एक घर।
 फेर एक संस्था।

फेर एक पीढ़ी।
मनुष्यता ककरो एक दिनक विजय नहि।
ओ प्रतिदिन फेर चुनल जाएबवला एक मूल्य।
आइ फेर चुनू—
सत्य घृणा पर।
सहयोग ईर्ष्या पर।
न्याय विशेषाधिकार पर।
गरिमा अपमान पर।
सेवा सत्ता-लिप्सा पर।
सादगी अन्ध उपभोग पर।
संवाद हिंसा पर।
करुणा उदासीनता पर।
आ मनुष्य हरेक संस्था, हरेक लाभ, हरेक प्रतिष्ठासँ पहिने।
तखन एक दिन हरेक व्यक्ति कहि सकत—
हम अकेला नहि, मुदा हम मिटायलो नहि।
हम भिन्न छी, मुदा हम कम नहि।
हम स्वतन्त्र छी, मुदा उत्तरदायित्वहीन नहि।
हम अपन छी, मुदा दोसरक दुःखसँ अपरिचित नहि।
आ एहि चार जीवित वाक्यक बीच समाज धीरे-धीरे अपन असली घर बनायत—
जतय मनुख मनुखक अन्हार नहि, उजास होएत।

अदृश्य तराजूक उजास

एकटा अदृश्य तराजू मनक भीतर दिन-राति हिलैत रहैत अछि।
ककरा चुनू? ककरा छोडू? ककरा लेल अपन सुविधा कनेक पाछाँ राखू?
कोनो बाजार एहि तराजूक ठीक मूल्य नहि लिखि सकैत।
सोना भारी, तैयो एकटा साँच वचन कखनो सोना सँ भारी पडैत अछि।
महल ऊँच, तैयो एकटा छोट घरक विश्वास आकाश सँ ऊँच हो सकैत अछि।
रोटी भूखक समक्ष सभसँ पैघ मूल्य।
मुदा भूख मिटिते मनुष्य मात्र पेट नहि रहैत।
ओ सम्मान चाहैत अछि।
प्रेम।
न्याय।
सत्य।
सौन्दर्य।
एक एहन उजास जे आँखि बन्द करितो भीतर रहि जाए।

जीवन मूल्यसभक एक दीर्घ सीढ़ी।
 पहिल सीढ़ी श्वास।
 जल।
 अन्न।
 देहक सुरक्षा।
 रोगसँ मुक्ति।
 थाकल शरीर लेल आराम।
 ई छोट नहि।
 देह अवहेलना सँ आकाश नहि चढ़ैत।
 जड़ि माटि माँगैत अछि।
 मुदा जड़ि मात्र वृक्ष नहि।
 ऊपर पात फूटैत अछि।
 फूल।
 फल।
 छाया।
 चिड़ैक घर।
 मानव जीवनो एहनहि।
 पहिने जीबनाइ।
 फेर नीक जीबनाइ।
 फेर एहन जीबनाइ जाहि सँ दोसरक जीवनो कनेक अधिक उजास पाबय।
 मूल्य किताबक सूची नहि।
 ओ रोजक छोट निर्णयमे अपन चेहरा देखबैत अछि।
 कियो देखैत नहि, तैयो हरायल वस्तु लौटा देब।
 कियो प्रशंसा नहि करैत, तैयो बीमार पड़ोसी लेल औषधि लऽ जाएब।
 लाभ हो सकैत, तैयो झूठ नहि बोलब।
 भीड़ हँसैत, तैयो कमजोरक अपमानमे संग नहि देब।
 यहीं मूल्य शब्द सँ कर्म बनैत अछि।
 मनुष्य मूल्य लेकर जन्मैत अछि कि धीरे-धीरे ओकरा सीखैत अछि?
 शिशु पहिने रोदन जानैत।
 फेर मुस्कान।
 फेर “हमर।”
 फेर “तोहर।”
 फेर एक दिन “हमर आ तोहर बीच की न्याय?”
 एहि यात्रा में घर, गाम, भाषा, रीति, गीत, कथा, दण्ड, प्रेम, पुरस्कार—
 सभ मनक भीतर मापदण्ड बनबैत अछि।

समाज कहैत अछि— ई नीक।

ई खराब।

ई मान्य।

ई लज्जाजनक।

मुदा मनुष्य केवल समाजक प्रतिध्वनि नहि।

एक दिन ओ सुनल मानदण्ड केँ अपने प्रश्न करैत अछि।

“ई न्यायपूर्ण अछि?”

“ई केवल पुरान भऽ गेलाक कारण पवित्र?”

“ई सभ मानैत अछि, तैयो ठीक?”

तखन मूल्य उधारक नियमसँ व्यक्तिगत बोध दिस बढ़ैत अछि।

मुदा व्यक्तिगत बोध मनमानी नहि।

“हमरा नीक लगैत अछि” आ “ई नीक अछि” दू अलग वाक्य।

पसिन्न एक क्षणक फूल हो सकैत।

मूल्य कखनो सम्पूर्ण ऋतु माँगैत अछि।

मिठाइ जीभक पसिन्न।

स्वास्थ्य दीर्घ मूल्य।

आराम तुरन्त सुख।

श्रम भविष्यक फल।

कखनो जे मन चाहैत, ओही केँ “अच्छा” कहब आसान।

मुदा मूल्य इच्छाक हरेक माग सम्पूर्ण नहि करैत।

ओ इच्छा केँ प्रश्न करैत अछि।

“तूँ किएक चाहैत छ?”

“एहि चाहना सँ ककरा चोट?”

“एहि लाभक दाम कियो दोसर देत?”

एहि प्रश्नमे तराजू हिलैत अछि।

मूल्य केवल बाहरी आदेश नहि।

ओ धीरे-धीरे अन्तरात्माक स्वर बनैत अछि।

पहिने “एना करू नहि तँ दण्ड।”

फेर “एना करू किएक तँ सभ कहैत।”

फेर एक दिन “एना करू किएक तँ ई सही।”

एहि दिन नैतिकता बाल्यावस्थासँ कनेक आगाँ बढ़ैत अछि।

मुदा “ठीक” एकटा अकेला पत्थर नहि।

परिस्थिति ओकर छाया बदलैत अछि।

सत्य कहब मूल्य।

मुदा जतय सत्य ककरो जीवन अनावश्यक रूपेँ नष्ट करय, विवेक प्रश्न करैत अछि।

नियम आ परिस्थिति एक-दोसर केँ देखैत रहैत अछि।
 मूल्य मशीनक बटन नहि।
 जीवन जटिल।
 एक दिस कर्तव्य।
 दोसर दिस करुणा।
 एक दिस न्याय।
 दोसर दिस क्षमा।
 एक दिस व्यक्तिक स्वतन्त्रता।
 दोसर दिस समाजक सुरक्षा।
 तराजू कखनो लम्बा समय सन्तुलन खोजैत अछि।
 मुदा सन्तुलन सत्यहीन समझौता नहि।
 कखनो एक पल्ला स्पष्ट भारी।
 हिंसा आ अहिंसा समान विकल्प नहि।
 शोषण आ न्याय समान रंग नहि।
 घृणा आ प्रेम एके ऊँचाईक दू सीढ़ी नहि।
 मूल्य भेद करैत अछि।
 एहिऐ ओकर काम।
 जैना उत्तर दिशा कम्पास मे एक संकेत।
 कम्पास हमरा चलए नहि, मुदा दिशा बुझबैत अछि।
 मूल्य एहन कम्पास।
 पयर हमर।
 मार्ग कठिन।
 दिशा भीतरक सुई।
 कखनो पेट कहैत— पहिने भोजन।
 कखनो सम्मान कहैत— अपमानक रोटी नहि।
 कखनो प्रेम कहैत— अपन अंश दोसर केँ दे।
 कखनो न्याय कहैत— अपन प्रिय केँ सेहो बेठीक पर बेठीक कहू।
 मूल्यसभ एक-दोसर सँ सदा शान्त नहि रहैत।
 ओकरो बीच द्वन्द्व।
 एक माता बेटाक रक्षा चाहैत, मुदा यदि बेटा अपराधी, न्याय दोसर पल्ला पर।
 एक मित्र मित्रता निभाबय चाहैत, मुदा झूठक संग कतेक दूर?
 एक कर्मचारी रोजगार बचाबय चाहैत, मुदा अन्यायपूर्ण आदेश?
 जीवन एहन प्रश्नसभक रात्रि-पाठशाला।
 उत्तर सदा पहिने सँ पुस्तकमे नहि लिखल।
 विवेक प्रत्येक नवा परिस्थिति मे फेर जागैत अछि।

मूल्यक एक धरती देहसँ जुड़ल।

स्वास्थ्य।

सुरक्षा।

श्रम-क्षमता।

जीवनरक्षा।

भूख-मुक्ति।

दूध पीबैत बच्चा लेल दर्शनक सभसँ पहिल मूल्य दूध।

थाकल मजदूर लेल आराम।

रोगी लेल औषधि।

ई आधार।

आधार बिनु महल हवा मे।

मुदा मनुष्य आधार पर रुकैत नहि।

ओ समाजक दोसर मंजिल चढ़ैत अछि।

सम्मान।

मैत्री।

प्रतिष्ठा।

सहयोग।

विश्वास।

सुरक्षा केवल शरीरक नहि, सम्बन्धक सेहो।

एक बच्चा घरमे निडर बोलि सकय— ई सामाजिक मूल्य।

एक स्त्री राति निडर लौटि सकय— ई सामाजिक मूल्य।

एक वृद्ध उपेक्षित नहि— ई सामाजिक मूल्य।

एक गरीब न्यायालयमे सुनेल जाए— ई सामाजिक मूल्य।

धन समाजक एक उपयोगी साधन।

मुदा धन अन्तिम मूल्य नहि।

धन सँ अन्न, घर, शिक्षा, औषधि पाबि सकैत छी।

धन सँ विश्वास? नहि।

धन सँ साँच मित्र? निश्चित नहि।

धन सँ आत्मसम्मान? कखनो, मुदा खरीदायल सम्मान आत्मसम्मान नहि।

कतेक वस्तु साधन।

कतेक अपने आप मे इच्छित।

नाव नदी पार करबाक साधन।

पार गन्तव्य।

मुदा कखनो नावहि पर मनुष्य घर बना लैत अछि।

साधन गन्तव्य बनि जाइत अछि।

धन जीवन सहज करबाक साधन छल, फेर जीवन धन बढ़ाबयक साधन बनि गेल।
 पद सेवा लेल छल, फेर सेवा पद बचाबयक औजार बनि गेल।
 ज्ञान सत्य लेल छल, फेर सत्य प्रसिद्धि लेल सजावट बनि गेल।
 एहि उलटबाँसीमे मूल्यक क्रम बिगड़ैत अछि।
 साधन केँ साधन, लक्ष्य केँ लक्ष्य पहिचानू।
 मुदा लक्ष्यो एकटा नहि।
 छोट लक्ष्य।
 बड़ लक्ष्य।
 तुरन्त।
 दीर्घ।
 व्यक्तिगत।
 साझा।
 एक विद्यार्थी परीक्षा लग करए चाहैत।
 एक लक्ष्य।
 ज्ञान पाबए दोसर।
 चरित्र बनाबए तेसर।
 समाज लेल योग्य होएब आरो दूरक।
 यदि पहिल लक्ष्य लेल नकल करैत, ओ छोट लक्ष्यक खातिर बड़ मूल्य गँवा सकैत अछि।
 एहिए तराजूक कठिनाई।
 जीवन हमरा सदा पूछैत अछि— की बचाउ? की छोड़ू?
 कखनो छोट लाभ छोड़ि दीर्घ सत्य।
 कखनो तत्काल सुख छोड़ि स्वास्थ्य।
 कखनो प्रसिद्धि छोड़ि ईमानदारी।
 कखनो भीड़ छोड़ि विवेक।
 मूल्य सीढ़ी जकाँ एक-दोसर ऊपर हो सकैत अछि।
 मुदा सीढ़ी हरेक व्यक्ति लेल एकदम समान नहि देखाइत।
 ककरो लेल परिवार सर्वोच्च निकटता।
 ककरो लेल सत्य।
 ककरो लेल राष्ट्र।
 ककरो लेल धर्म।
 ककरो लेल मानवता।
 ककरो लेल स्वतन्त्रता।
 जीवन एहि उच्च मूल्यसभक टकराहट सँ कतेक इतिहास रचल अछि।
 जखन राष्ट्रक नाम पर सत्य दबायल जाए, कुन पल्ला?
 जखन धर्मक नाम पर मनुष्य घायल, कुन पल्ला?

जखन परिवारक सम्मान लेल एक सदस्यक स्वतन्त्रता कुचलल जाए, कुन पल्ला?
जखन व्यक्तिक स्वतन्त्रता दोसरक सुरक्षा तोड़य, कुन पल्ला?
मूल्य केवल सजावट नहि, निर्णयक तप्त लोहा।
ओ हाथ जरबैत अछि।
तैयो धरबाक पड़ैत अछि।
कतेक मूल्य जीवनक जैविक धड़कन सँ उगैत अछि।
कतेक समाजक साझा स्मृति सँ।
कतेक कल्पनाक ऊँच आकाश सँ।
सत्य सोझो पेट भरैत नहि।
सौन्दर्य बुखार नहि उतारैत।
न्याय तुरन्त भूखक थारी नहि।
तैयो मनुष्य ई सभ बिनु पूर्ण मनुष्य नहि।
एक चित्र रोटी नहि, मुदा ओ हृदय केँ मनुष्य रखि सकैत अछि।
एक कविता औषधि नहि, मुदा निराश मन केँ राति पार करा सकैत अछि।
एक सत्य घर नहि बनबैत, मुदा समाजक विश्वासक नींव बचा सकैत अछि।
एक न्यायपूर्ण नियम फूल नहि, मुदा हजार जीवन खिलाबयक धूप दे सकैत अछि।
मूल्यक ऊँचतर तल उपयोगिताक पार खुलैत अछि।
जतय मनुष्य पूछैत अछि—
“जे उपयोगी, ओ सदिखन अच्छा?”
एक विष ककरो हत्या लेल उपयोगी हो सकैत।
एक झूठ क्षणिक संकट टारि सकैत।
एक रिश्त काम जल्दी करा सकैत।
उपयोगिता अकेला मूल्यक राजा नहि।
किछु वस्तु उपयोगी होइते अनैतिक।
किछु तुरन्त अनुपयोगी लगैत, मुदा मनुष्यता लेल अनिवार्य।
गीत।
मित्रता।
सौन्दर्य।
विचार।
स्वतन्त्र प्रश्न।
एकान्त।
उत्सव।
ई सभ कारखानाक उत्पादन नहि बढ़ाबय सदैव।
मुदा जीवनक अर्थ बढ़ाबैत अछि।
मानवता केवल कार्यक्षमता नहि।

एक मशीन मनुष्य सँ अधिक तेज काम करि सकैत।
 तखन मनुष्यक मूल्य केवल उत्पादन हो, तँ मशीन ऊँचतर?
 नहि।
 मनुष्यक एक अद्भुत क्षेत्र ओकर संवेदना।
 मूल्य-निर्माणक क्षमता।
 ओ कहैत अछि— ई केवल घटित घटना नहि, ई अन्याय।
 ई केवल रंग नहि, ई सुन्दर।
 ई केवल नियम नहि, ई दमन।
 ई केवल लाभ नहि, ई लोभ।
 प्रकृति घटना दैत।
 मनुष्य अर्थक आकाश बनबैत अछि।
 मुदा अर्थ एकदम निजी नहि रहैत।
 जखन एक मान्यता अनेक मन स्वीकारैत अछि, ओ सामाजिक शक्ति पबैत अछि।
 सम्मान, प्रतिष्ठा, कानून, रीति—
 सभ साझा विश्वास पर ठाढ़।
 एक कागजक नोट कागज, मुदा समाज ओकरा मूल्य देलक।
 एक पदवी अक्षर, मुदा समाज ओकरा प्रतिष्ठा देलक।
 एक वर्दी कपड़ा, मुदा समाज ओकरा अधिकारक चिह्न देलक।
 मूल्य कतेक बेर साझा सहमतिक अदृश्य शक्ति।
 मुदा साझा मान्यता सदा ठीक नहि।
 कतेक युग भेदभाव केँ मान्यता देलक।
 कतेक समाज स्त्रीक मौन केँ शील कहलक।
 कतेक समय गुलामी केँ व्यवस्था।
 तखन केवल “सभ मानैत” पर्याप्त नहि।
 मूल्यक आरो ऊँच कसौटी चाही।
 मानवीय गरिमा?
 न्याय?
 सत्य?
 करुणा?
 जीवन-विस्तार?
 एहिँ ऊँच प्रकाश नीच आदतक छाया देखबैत अछि।
 कतेक मूल्य समाजक भीतर एक सीढ़ी बनबैत अछि।
 नीचाँ जीवनरक्षा।
 फेर सुरक्षा।
 फेर सम्बन्ध।

फेर सम्मान।

फेर स्वतन्त्र आत्म-विकास।

फेर एहन बोध जे केवल “हम” पर नहि रुकय।

मुदा सीढ़ी कठोर तालिका नहि।

जीवन कखनो ऊपर-नीचाँ एक संग चलैत।

एक कवि गरीब होइत सौन्दर्यक ऊँच अनुभव जीबि सकैत।

एक अमीर सुरक्षित होइत प्रेमक अभावमे दरिद्र।

एक रोगी शरीर कमजोर, मुदा सत्य लेल अडिग।

एक स्वस्थ मनुष्य भयक दास।

मूल्य एक-दोसर पर निर्भर, मुदा पूर्णतः बन्द सीढ़ी नहि।

जीवन अधिक जटिल, अधिक सुन्दर।

व्यक्ति मूल्यसभक एक जीवित संगठन।

ओकर भीतर अनेक चाहना, अनेक लक्ष्य।

यदि ई सभ एक-दोसर सँ पूर्ण अलग, मन खंडित।

एक व्यक्ति परिवारमे प्रेमक बात, कार्यालयमे निर्दयी शोषण—

मूल्यक दू संसार।

एक नेता सत्यक भाषण, निजी जीवनमे छल—

दू संसार।

एक भक्त प्रार्थनामे करुणा, पड़ोसी प्रति घृणा—

दू संसार।

अन्तरात्मा एहि विरोधाभासक आवाज सुनैत अछि।

परिपक्वता कदाचित् मूल्यसभ केँ एक-दोसर सँ सम्बद्ध करब।

जे सत्य मन्दिरमे, ओही बाजारमे।

जे न्याय मंच पर, ओही घरमे।

जे सम्मान अतिथि लेल, ओही सेवाकर्मी लेल।

जे प्रेम अपन परिवार लेल, ओकर कनेक छाया दोसर मनुष्य लेल।

मूल्य जतय समग्र जीवनमे एक लय पबैत, व्यक्तित्व ओतय एकाकार होइत अछि।

व्यक्तित्व कपड़ा नहि जे अवसर पर बदलि लिअ।

ओ दीर्घकालिक मूल्य-संगठन।

हम ककरा महत्त्व दैत छी, ओहि सँ धीरे-धीरे हम के छी बनैत अछि।

जे धन सभसँ ऊपर, ओकर जीवन धनक दिशामे मुड़त।

जे प्रतिष्ठा सभसँ ऊपर, ओ दोसरक आँखिमे अपन चेहरा खोजत।

जे सत्य ऊपर, ओ एकाकी होइते कखनो झूठ नकारत।

जे करुणा ऊपर, ओ दोसरक पीड़ा अनदेखल कठिन पाबत।

मूल्य जीवनक अदृश्य स्थापत्य।

ईंट कर्म।
 गारा आदत।
 नक्शा आदर्श।
 घर व्यक्तित्व।
 एक बेठीक ईंट घर नहि गिरबैत, मुदा बारम्बार बेठीक दिशा दीवार टेढ़।
 छोट आदत भविष्यक चरित्र।
 सत्य एक दिनक वीरता नहि।
 प्रतिदिन छोट सत्य।
 करुणा एक महान दान नहि मात्र।
 प्रतिदिन छोट सुननाइ।
 न्याय अदालत नहि मात्र।
 घरक थारी, कक्षा, वेतन, अवसर।
 सौन्दर्य संग्रहालय नहि मात्र।
 आँगनक साफ एक फूल, वाणीमे कोमलता, काममे सुघरता।
 मूल्य महान शब्दसँ दैनिक जीवन माँगैत अछि।
 कखनो मूल्यक विपरीत रूप जन्मैत अछि।
 प्रेमक विपरीत घृणा।
 सत्यक झूठ।
 न्यायक अन्याय।
 सहयोगक शोषण।
 सौन्दर्यक कुरूपता।
 ई केवल अभाव नहि, कखनो सक्रिय विनाशक शक्ति।
 घृणा प्रेम न होएबाक खाली स्थान नहि, ओ घाव देबवला ऊर्जा बनि सकैत अछि।
 अन्याय न्याय न होएबाक मौन नहि, ओ ककरो अधिकार छिनैत अछि।
 झूठ सत्यक अनुपस्थिति नहि मात्र, ओ विश्वास तोड़ैत अछि।
 मूल्य अपन छाया सँ आरो स्पष्ट।
 प्रकाश अन्हारक अर्थ देखबैत अछि।
 मुदा मनुष्यक भीतर छाया सदा बाहर सँ नहि अबैत।
 कखनो ईर्ष्या, भय, अपमान, अभाव, असफलता—
 धीरे-धीरे विपरीत मूल्य उगबैत अछि।
 समाज यदि केवल दण्ड देत आ कारण नहि देखत, रोग फेर उगत।
 एक चोर दोषी।
 मुदा भूख, बेरोजगारी, असमानता, लोभक संस्कृति— ई सभ प्रश्नो।
 व्यक्ति उत्तरदायी।
 समाजो अपने वातावरण लेल उत्तरदायी।

मूल्य नैतिक निर्णायक संग सामाजिक परिस्थिति सेहो देखैत अछि।
ककरो दोष परिस्थिति सम्पूर्ण माफ नहि करैत।
मुदा परिस्थिति अदृश्य करब अधूर न्याय।
मनुष्य स्वतन्त्र, मुदा शून्यमे नहि।
ओ इतिहास, परिवार, शिक्षा, वर्ग, भाषा, समुदाय बीच अपन चयन करैत अछि।
मूल्य एहि जालमे दिशा खोजैत अछि।
समाज मनुष्य केँ मूल्य सिखबैत अछि, फेर मनुष्य समाजक मूल्य बदलैत अछि।
एक समय जे सामान्य, आगाँ अन्याय कहल।
एक समय जे असम्भव, आगाँ अधिकार।
मूल्य इतिहासमे गतिशील।
मुदा यदि सभ बदलैत, तँ किछु स्थिर?
ई प्रश्न राति जकाँ गहिर।
की सत्य समयक संग सम्पूर्ण बदलैत?
की न्याय केवल बहुमतक पसिन्न?
की गरिमा समाजक अनुमति पर निर्भर?
मन एक ऊँचतर प्रकाश खोजैत अछि।
एहन जे युगक अन्ध मान्यता पर प्रश्न करि सकय।
जे कहि सकय— सभ मानैत अछि, तैयो ई गलत।
जे कहि सकय— कानून अछि, तैयो अन्याय।
जे कहि सकय— लाभ अछि, तैयो अमानवीय।
एहि ऊँचतर मापदण्डक नाम जाहि प्रकार दिअ, ओ मानव चेतनाक सभसँ उज्जर आकांक्षा।
सत्य जाहि पर स्वार्थक धूलि कम टिकय।
सौन्दर्य जे केवल सजावट नहि, समरसता।
प्रेम जे स्वामित्व नहि, सृजन।
न्याय जे प्रतिशोध नहि, गरिमाक पुनर्स्थापना।
ई उच्च मूल्य दूरक तारा नहि मात्र।
ओ दैनिक दिशासूचक।
सत्य हमरा आइ एक झूठ रोकबैत अछि।
प्रेम आइ एक अपमान रोकैत अछि।
न्याय आइ एक पक्षपात।
सौन्दर्य आइ एक गन्दगी साफ करब प्रेरित करैत अछि।
ऊँच मूल्य धरती छूबैत, तखन सार्थक।
आदर्श यदि जीवन सँ पूर्ण अलग, चित्र बनि रहि जाए।
आदर्श जीवनक अपूर्णता सँ संवाद करय।
मनुष्य पूर्ण नहि, मुदा पूर्णताक दिशा रखि सकैत अछि।

ई दिशा ओकरा काल्हिक स्वयं सँ आइ कनेक बेहतर बनबैत अछि।
मूल्य समाप्त अवस्था नहि, विकासक आह्वान।
एक बच्चा केवल आज्ञापालन सँ परिपक्व नहि।
ओ धीरे-धीरे कारण बुझैत, चयन करैत, फल स्वीकारैत।
परिपक्वता दण्डक भय सँ नैतिकता नहि।
ओ अन्तरात्माक स्वतन्त्र सहमति।
“ई करब किएक तँ हमरा ठीक बुझाइत।”
मुदा एहि “हमरा” में अहंकार नहि, विवेक आ सामाजिक उत्तरदायित्व दुनू।
परिपक्व मन अपन इच्छा जानैत, मुदा ओकरा अन्तिम राजा नहि बनबैत।
ओ दोसरक इच्छा सेहो देखैत अछि।
अपने लेल स्वतन्त्रता, दोसर लेल नियन्त्रण— ई मूल्य नहि।
अपने लेल सम्मान, दोसर लेल अपमान— ई मूल्य नहि।
मूल्य जतय सार्वभौमिकता छूबैत, ओतय विश्वसनीय होइत अछि।
जे नियम हम अपने लेल चाही, की दोसर लेल सेहो स्वीकारि सकैत छी?
ई प्रश्न तराजूक एक कठोर कसौटी।
हम अपन बच्चा केँ सुरक्षित विद्यालय चाही।
दोसरक बच्चा?
हम अपन धर्म लेल स्वतन्त्रता चाही।
दोसरक विश्वास?
हम अपन भाषा लेल सम्मान।
दोसरक भाषा?
मूल्य अपन घेरे सँ बाहर निकलैत, तखन मानवता बनैत अछि।
केवल “हमर” नीक नहि।
“नीक” जे अधिक व्यापक जीवन सँ संगत।
प्रेम एहि विस्तारक एक अद्भुत शक्ति।
पहिने माँक गोद।
फेर परिवार।
फेर मित्र।
फेर समुदाय।
फेर अपरिचितक दुःखो हृदय छू लैत।
प्रेम वृत्त फैलाबैत अछि।
स्वार्थ वृत्त सिकोड़ैत।
उच्च मूल्य कदाचित् वृत्त केँ आकाश बनाबयक क्षमता।
मुदा प्रेम भावना मात्र नहि।
कखनो प्रेम कठोर सत्य कहैत अछि।

कखनो प्रिय व्यक्ति केँ बेठीक मार्ग रोकैत अछि।
कखनो समाजक अन्यायपूर्ण परम्परा विरुद्ध ठाढ़ होइत अछि।
प्रेम दया सँ अधिक।
ओ दोसरक गरिमा स्वीकारैत अछि।
साँच प्रेम दोसर केँ वस्तु नहि बनबैत।
ओ सृजन करैत अछि।
मनुष्य केँ अपन सम्भावना खोलबाक ठाम दैत अछि।
एहिऐ प्रेमक रचनात्मक शक्ति।
जतय प्रेम, ओतय जीवन फैलैत अछि।
जतय घृणा, ओतय जीवन सिकुड़ैत।
प्रेम केवल निजी भाव नहि, सामाजिक शक्ति हो सकैत अछि।
विश्वास उगबैत।
सहयोग बढ़ैत।
भय घटैत।
समाज अधिक मानवीय होइत अछि।
मुदा प्रेम न्याय केँ निगल्य नहि।
ककरो प्रति प्रेम दोसरक अधिकार छीनबाक छूट नहि।
करुणा कानूनक सम्पूर्ण विकल्प नहि।
कानून करुणा-विहीन पत्थर नहि।
दुनू भेटय।
मूल्यसभ एक-दोसरक शत्रु नहि, यदि ठीक क्रममे संवाद करय।
क्रम स्थिर तालिका नहि, जीवित संतुलन।
जीवनरक्षा पहिने, मुदा कखनो सत्य लेल मनुष्य जीवनो दैत अछि।
सुरक्षा मूल्य, मुदा स्वतन्त्रता कखनो सुरक्षा सँ ऊँच कहल जाइत।
परिवार मूल्य, मुदा मानवता कखनो परिवारक संकीर्णता पार करैत।
धन मूल्यवान, मुदा न्याय ओकर सीमा तय करैत।
प्रतिष्ठा प्रिय, मुदा सत्य ओकरा त्याग करबा सकैत अछि।
एहिऐ उच्चतर मूल्यक अर्थ।
ओ नीचतर केँ मिटाबैत नहि, क्रम दैत अछि।
जैना घरमे नींव, दीवार, छत, खिड़की—
सभ आवश्यक, मुदा अपन स्थान।
छत केँ नींव बनाउ, घर ठाढ़ नहि रहत।
धन केँ अन्तिम लक्ष्य, जीवन टेढ़।
शरीर केँ तुच्छ, जीवन कमजोर।
आध्यात्मिकता केँ दैनिक कर्तव्यसँ अलग, जीवन खंडित।

समग्रता मूल्यसभक उचित स्थान।
 व्यक्तिक भीतरक शान्ति तखन जतय ओकर मूल्य एक-दोसर सँ कम लड़ैत।
 एक मन कहैत अछि— ईमानदार बनू।
 दोसर कहैत— लाभ छोड़ब मूर्खता।
 यदि प्रतिदिन दुनू युद्ध, मन थाकैत अछि।
 एक दिन जखन ईमानदारी साँच प्राथमिक मूल्य बनि जाइत, निर्णय स्पष्ट।
 त्याग हो सकैत, मुदा भीतरक विखंडन कम।
 मूल्यक स्थिर संगठन व्यक्तित्व केँ दिशा दैत अछि।
 मुदा स्थिरता जड़ता नहि।
 नव अनुभव मूल्यक अर्थ गहिर करैत अछि।
 एक युवा स्वतन्त्रता केवल अपने मर्जी बुझैत।
 एक दिन जिम्मेदारी सीखैत।
 स्वतन्त्रता नवा अर्थ पबैत।
 एक बच्चा न्याय “सभकेँ बराबर” बुझैत।
 पाछाँ देखैत जे कमजोर केँ अधिक सहारा कखनो न्याय।
 अर्थ परिपक्व होइत अछि।
 मूल्य वयस्कताक संग फैलैत।
 अनुभव ओकर परिभाषा गहिर करैत।
 पीड़ा करुणा सिखबैत।
 असफलता विनम्रता।
 प्रेम त्याग।
 मृत्यु समयक मूल्य।
 वृद्धावस्था स्मृतिक।
 बच्चा आश्चर्यक।
 प्रकृति सन्तुलनक।
 जीवन मूल्यक सभसँ विशाल विद्यालय।
 कखनो हम बेठीक मूल्य चुनैत छी।
 प्रसिद्धि सत्य सँ ऊपर।
 लाभ न्याय सँ।
 भय स्वतन्त्रता सँ।
 परम्परा मानवता सँ।
 तखन फल धीरे-धीरे आबैत अछि।
 मन अशान्त।
 सम्बन्ध टूटल।
 विश्वास घटल।

समाज कठोर।

बेठीक मूल्य केवल व्यक्तिगत भूल नहि रहैत।

ओ संस्था बनि सकैत अछि।

यदि लाभ सभसँ ऊँच, कारखाना नदी मारि सकैत।

यदि प्रतिष्ठा सभसँ ऊँच, विद्यालय ज्ञानक बदला अंक बेचि सकैत।

यदि सत्ता सभसँ ऊँच, राज्य सत्य सँ डरि सकैत।

यदि धार्मिक पहचान मानवता सँ ऊँच, पड़ोसी शत्रु बनि सकैत।

मूल्य संस्थाक आत्मा सेहो।

नीति अदृश्य मूल्यक दृश्य रूप।

बजट कहैत अछि— समाज ककरा महत्त्व दैत।

विद्यालय पर कतेक?

स्वास्थ्य पर?

हथियार पर?

कला पर?

गरीब पर?

प्रकृति पर?

कागजक संख्या मूल्यक सार्वजनिक भाषा।

समाज जे कहैत, आ जे खर्च करैत, दुनू सदा एक नहि।

घोषणा कहैत— शिक्षा महत्वपूर्ण।

बजट कहैत— कतेक।

भाषण कहैत— स्त्री सम्मान।

सड़क कहैत— कतेक सुरक्षित।

संविधान कहैत— समानता।

दैनिक व्यवहार कहैत— कतेक सच्चा।

मूल्य परीक्षा व्यवहारमे।

एक समाज ककरो मूल्यवान कहलासँ नहि, ओकर लेल ठाम बनाबय सँ सिद्ध करैत अछि।

बुजुर्ग सम्मानित? तँ हुनका लेल सुगम स्वास्थ्य सेवा।

बच्चा भविष्य? तँ सुरक्षित विद्यालय।

श्रमिक सम्मानित? तँ उचित मजदूरी।

प्रकृति माता? तँ नदी मे विष किएक?

मूल्य शब्द आ कर्मक दूरी नापैत अछि।

कतेक दूरी हमर समाजमे?

एहि प्रश्न असुविधाजनक, मुदा आवश्यक।

मूल्यक एक आ रहस्य— ओ अलग-अलग नहि जीबैत।

सत्य न्याय केँ सहारा दैत।

न्याय गरिमा केँ।
 गरिमा स्वतन्त्रता केँ।
 स्वतन्त्रता सृजन केँ।
 सृजन सौन्दर्य केँ।
 सौन्दर्य आनन्द केँ।
 प्रेम सभकेँ मानवीय उष्मा दैत अछि।
 जैना एक वृक्ष जड़ि, तना, शाखा, पात, फूल अलग होइते एक जीवन।
 मूल्य-व्यवस्था एहन वृक्ष।
 यदि जड़ि विषाक्त, पात पर चमकीला रंग कतेक दिन?
 यदि घरक मूल घृणा, ऊपरक सभ्य शब्द कतेक दिन?
 यदि संस्था भीतर सँ अन्यायी, सजावट कतेक?
 मूल्य मूल संरचना।
 सभ्यता ओकर बाहरी रूप।
 कखनो समाज दू मूल्य एक संग घोषित करैत, मुदा दुनूक बीच तनाव।
 स्वतन्त्रता आ समानता।
 प्रतिस्पर्धा आ सहयोग।
 परम्परा आ नवीनता।
 व्यक्ति आ समुदाय।
 सुरक्षा आ खुलापन।
 हिनका शत्रु बनाबय सहज।
 सन्तुलन कठिन।
 मुदा जीवित समाज कठिन सन्तुलनहि सीखैत अछि।
 एक पक्ष पूर्ण विजयी भेलासँ दोसरक मानवीय आवश्यकता कुचलि सकैत अछि।
 समानता यदि व्यक्तित्व मिटाबय, अधूरी।
 स्वतन्त्रता यदि कमजोरक सुरक्षा नहि देखय, अधूरी।
 परम्परा यदि प्रश्न रोकय, अधूरी।
 नवता यदि स्मृति काटय, अधूरी।
 सन्तुलन समझौता नहि, समग्रता।
 एक संगीत एक स्वरक तानाशाही नहि।
 अनेक स्वर अपन स्थान पर।
 समाज एहन संगीत हो सकैत अछि।
 मूल्य रागक नियम।
 मुदा कलाकार जीवित मनुष्य।
 ओ प्रत्येक क्षण नव लय खोजैत अछि।
 मनुष्यक सर्वोच्च आकांक्षा कदाचित् एहन जीवन जतय सत्य, सौन्दर्य, प्रेम, न्याय एक-दोसर सँ बहुत दूर न रहय।

जतय सत्य क्रूर न हो।
प्रेम अन्ध न हो।
न्याय प्रतिशोध न हो।
सौन्दर्य केवल सजावट न हो।
जतय चारू एक विशाल मानवीय उजास बनय।
उच्चतम मूल्य कदाचित् ककरो एक शब्दमे कैद नहि।
ओ क्षितिज जकाँ।
जतबा आगाँ बढू, आरो दूर खुलैत।
मुदा दिशा देत।
एक कलाकार सौन्दर्यक पाछाँ चलैत।
एक वैज्ञानिक सत्यक।
एक सेवक करुणाक।
एक न्यायाधीश न्यायक।
मुदा पूर्ण मनुष्य कदाचित् चारू दिशाक कनेक-कनेक ज्योति अपने भीतर जोड़ैत अछि।
ओ एकहि मूल्यक अन्ध भक्त नहि।
समग्र।
सत्य प्रेम सँ गरम।
प्रेम सत्य सँ स्पष्ट।
न्याय करुणा सँ मानवीय।
सौन्दर्य सत्य सँ गहिर।
ई मिलन मनुष्यक ऊँचतर संस्कृति।
मूल्य केवल व्यक्ति केँ नहि बनबैत।
ओ समाजक दिशा तय करैत अछि।
जतय धन सर्वोच्च, ओतय मूल्यांकन मूल्य-टैग मे।
जतय प्रतिष्ठा सर्वोच्च, ओतय दिखावा।
जतय सत्ता सर्वोच्च, ओतय भय।
जतय ज्ञान सर्वोच्च, मुदा प्रेम नहि, ओतय ठंढा अहंकार।
जतय प्रेम सर्वोच्च, मुदा विवेक नहि, ओतय अन्ध पक्षपात।
समाज सन्तुलित मूल्य माँगैत अछि।
आ परिपक्व नागरिक जे मूल्यसभक क्रम फेर-फेर जाँचि सकय।
ककरा ऊपर राखलहुँ?
किएक?
ककरा बलि दे रहल छी?
एक नवा सड़क लेल ककर घर?
एक नवा उद्योग लेल ककर नदी?

एक नवा बाँध लेल ककर जंगल?
 एक नवा सुरक्षा नियम लेल ककर स्वतन्त्रता?
 हरेक विकास एक मूल्य-चयन।
 हरेक नीति तराजू।
 कतेक लाभ, ककर लागत।
 मूल्य निर्णयक मौन पृष्ठभूमि।
 ई पृष्ठभूमि जतय अस्पष्ट, निर्णय भ्रमित।
 एहि लेल समाज केँ अपन मूल्य खुला कहबाक साहस चाही।
 हम ककरा प्राथमिकता दैत छी?
 मनुष्य?
 लाभ?
 प्रकृति?
 सत्ता?
 भविष्य?
 जे उत्तर साँच, ओ बजट, कानून, विद्यालय, सड़क, बाजार सभमे देखाइ पड़त।
 मूल्य एक सार्वजनिक दर्पण।
 व्यक्तिगत जीवनमे सेहो।
 हम कहैत छी— परिवार महत्वपूर्ण।
 समय कतेक दैत छी?
 स्वास्थ्य महत्वपूर्ण।
 आदत?
 सत्य महत्वपूर्ण।
 लाभ समक्ष?
 मित्रता महत्वपूर्ण।
 मित्रक कठिन समयमे हम कतय?
 शब्द आ व्यवहारक दूरी हमर असली मूल्य बतबैत अछि।
 मनुष्य जे कहैत अछि ताहिसँ कम, जे चुनैत अछि ताहिसँ अधिक पहिचानल जाइत अछि।
 चयन मूल्यक हस्ताक्षर।
 दिन भरि हम छोट हस्ताक्षर करैत रहैत छी।
 समय ककरा?
 धन ककरा?
 ध्यान ककरा?
 क्रोध ककरा?
 प्रेम ककरा?
 जीवन अन्ततः एहि हस्ताक्षरसभक एक विशाल दस्तावेज।

मुदा दस्तावेज हरेक दिन संशोधित हो सकैत अछि।
मनुष्य अपन मूल्य बदलि सकैत।
ई आशा।
लोभी उदार हो सकैत।
घृणित मन करुण।
भीरु साहसी।
भेदभावी समतामूलक।
कठोर मृदु।
किएक तँ मूल्य पत्थर मे स्थायी अक्षर नहि।
ओ अभ्यास, अनुभव, प्रेम, पीड़ा, शिक्षा सँ रूपान्तरित हो सकैत अछि।
परिवर्तन एक रातिमे नहि।
पहिने एक प्रश्न।
फेर असुविधा।
फेर एक छोट वैकल्पिक कर्म।
फेर आदत।
फेर चरित्र।
फेर एक दिन पुरान स्वयं दूर लगैत।
मूल्य व्यक्तित्वक परिपक्वता एहनहि रचैत अछि।
समाजो एहि ढङ्गें बदलैत।
एक पीढ़ी भेदभाव सामान्य मानैत।
दोसर प्रश्न।
तेसर कानून बदलैत।
चौथ नव सामान्यता।
इतिहास मूल्यक दीर्घ विकास।
मुदा नव समाज नव विपरीत मूल्य पैदा करि सकैत अछि।
सावधानी सदा आवश्यक।
एक अन्याय गेल, दोसर नव नाममे न आबय।
एक श्रेष्ठता टूटल, दोसर नव पोशाकमे न खड़ा हो।
मूल्य निरन्तर आत्मपरीक्षण माँगैत अछि।
सर्वोच्च मूल्य यदि जीवित अछि, ओ अपने पूजा नहि माँगत।
ओ हमरा नीचतर स्वार्थ पर प्रश्न करब सिखाबय।
सत्य कहैत— मोर नाम लऽ कऽ झूठ नहि बोलू।
न्याय कहैत— मोर झण्डा लऽ कऽ प्रतिशोध नहि।
प्रेम कहैत— मोर नाम पर स्वामित्व नहि।
धर्म यदि ऊँच मूल्यक घर हो, ओ कहत— मोर नाम पर घृणा नहि।

आध्यात्मिकता यदि साँच, ओ दैनिक जीवनक मूल्य-व्यवस्था बदलत।
 लोभ कम।
 करुणा अधिक।
 दिखावा कम।
 सत्य अधिक।
 भय कम।
 विश्वास अधिक।
 अन्यथा ऊँच शब्द नीच व्यवहारक परदा।
 मूल्यक सभसँ उज्जर रूप कदाचित् एहन प्रेम जे सृजन करैत अछि।
 एक शिक्षकक प्रेम शिष्यक भीतर ज्ञानक दीप जगा दैत।
 एक माताक प्रेम बच्चा केँ सुरक्षित आत्मविश्वास।
 एक मित्रक प्रेम टूटल मन फेर जोड़ैत।
 एक समाजक मानवीय प्रेम वंचित केँ अवसर।
 प्रेम केवल आलिंगन नहि, क्षमता खोलब।
 उठाबय।
 मुक्त करय।
 ठाम दय।
 ई सृजनशील प्रेम मूल्यसभक एक उच्च संगम।
 ओ व्यक्ति आ समाज दुनू केँ बढ़बैत अछि।
 जतय प्रेमक कारण मनुष्य छोट, ओ प्रेम नहि, भयक नव नाम।
 जतय प्रेम पंख कतरय, ओ स्वामित्व।
 साँच प्रेम पंख खोलैत अछि।
 मूल्य अन्ततः जीवन केँ कुन दिशा में खोलैत अछि— ई कसौटी।
 जे जीवन सिकोड़य, गरिमा घटाबय, भय बढ़ाबय, घृणा गहिर करय— सावधान।
 जे जीवन फैलाबय, सत्य स्पष्ट करय, प्रेम गहिर, सौन्दर्य जगाबय, न्याय दे— ओ उच्चतर प्रकाश हो सकैत अछि।
 एक दीप दोसर दीप केँ जरा कऽ अपन उजास नहि घटबैत।
 मूल्य एहन दीप।
 सत्य बाँटलासँ कम नहि।
 प्रेम बाँटलासँ कम नहि।
 ज्ञान बाँटलासँ कम नहि।
 न्याय दोसर केँ मिललासँ हमर न्याय घटैत नहि।
 गरिमा साझा हो तँ सभक ऊँचाई बढ़ैत अछि।
 एहिँए मूल्यक अद्भुत अर्थव्यवस्था।
 जे वस्तु बाँटलासँ बढ़ैत अछि, ओ सभसँ गरीब मनुष्य सेहो दुनिया केँ दे सकैत अछि।
 एक मुस्कान।

एक साँच वचन।

एक क्षमा।

एक साहस।

एक न्यायपूर्ण छोट निर्णय।

एक करुण स्पर्श।

मूल्य महल बिनु जीबि सकैत अछि।

ओ झोपड़ी मे सेहो दीप जरा सकैत अछि।

मुदा झोपड़ीक गरीबी रोमानी नहि बनाउ।

उजास आ रोटी दुनू चाही।

मानवता दुनू हाथ माँगैत अछि।

एक हाथ भौतिक जीवन सँभालय।

दोसर आन्तरिक मूल्य।

दुनू संग तखन मनुष्य सम्पूर्ण।

एक दिन यदि हमर समाज सत्य केँ लाभ सँ ऊपर, गरिमा केँ जन्म सँ ऊपर, प्रेम केँ घृणा सँ, न्याय केँ पक्षपात सँ, सौन्दर्य केँ अन्ध उपभोग सँ कनेक ऊपर राखि सकय—

भोर धीरे-धीरे बदलत।

विद्यालय केवल नौकरी नहि, चरित्रो।

बाजार केवल लाभ नहि, ईमानदार व्यवहारो।

राज्य केवल शक्ति नहि, न्यायो।

परिवार केवल रक्त नहि, सम्मानो।

धर्म केवल पहचान नहि, करुणो।

संस्कृति केवल गौरव नहि, आत्मपरीक्षणो।

व्यक्ति केवल इच्छा नहि, उत्तरदायित्वो।

मूल्य तखन शब्दकोशक पन्ना छोड़ि जीवनक रक्तमे बहए लगत।

आ तराजू भीतर अखनो हिलत।

किएक तँ जीवन सदा नवा प्रश्न लबैत।

मुदा कदाचित् पल्लासभ पर कनेक अधिक उजास होएत।

हम जानब— ककरा तौलि रहल छी।

ककरा बहुत सस्ता समझि रहल छी।

ककरा अनावश्यक रूपेँ महँगा बना देलहुँ।

की साधन?

की लक्ष्य?

की क्षणिक?

की दीर्घ?

की केवल हमर?

की सभक?
 की जीवन बचबैत?
 की जीवन केँ अर्थ देत?
 आ कुन मूल्य एहन अछि जे हमरा अपने सँ कनेक पैघ बनबैत अछि?
 कदाचित् अदृश्य तराजूक सभसँ उज्जर पल्ला ओही अछि—
 जतय हमर भलाइ दोसरक अपमान पर नहि टिकल।
 जतय हमर सत्य करुणाहीन नहि।
 जतय हमर प्रेम न्याय-विहीन नहि।
 जतय हमर न्याय घृणामय नहि।
 जतय हमर स्वतन्त्रता दोसरक साँस छिनैत नहि।
 जतय हमर विकास पृथ्वी केँ उजाड़ैत नहि।
 जतय हमर धर्म मनुष्य केँ छोट नहि करैत।
 जतय हमर ज्ञान विनम्रता बढ़बैत अछि।
 जतय हमर जीवन केवल हमर नहि रहि एक साझा उजास बनैत अछि।
 तखन तराजू पूर्ण स्थिर कदाचित् कखनो नहि होएत।
 मुदा ओकर काँटा धीरे-धीरे मानवता दिस मुड़त।
 आ एतबे कदाचित् मूल्यक सभसँ साँच प्रकाश होएत।

टूटल आइना में अनेक आकाश

एक समय हम सोचैत छलहुँ— एकटा सोझ रस्ता अछि, एकटा केन्द्र, एकटा सत्य, एकटा इतिहास, एकटा आवाज जे सभ प्रश्नक अन्तिम उत्तर देत।
 हम नक्शा बनौने छलहुँ एना, जेना पृथ्वी एकहि आँखिसँ देखल जा सकैत अछि।
 मुदा एक दिन आइना टूटल।
 चेहरा गायब नहि भेल।
 ओ अनेक टुकड़ा में अनेक कोणसँ देखाइ पड़ल।
 तखन बुझायल— एक चेहरा कतेक दृष्टि सहैत अछि।
 एक घटना कतेक स्मृति।
 एक शब्द कतेक अर्थ।
 एक इतिहास कतेक मौन।
 एक शहर कतेक अदृश्य गली।
 आकाश एक, मुदा खिड़की अनेक।
 कियो पूरबसँ देखैत, कियो पश्चिमसँ।
 ककरो भोर, ककरो साँझ।
 कियो नीला रंग, कियो बादल।
 कियो वर्षाक डर, कियो खेतीक आशा।
 आकाश ककरो निजी नहि।

दृष्टि ककरो निजी हो सकैत अछि।
सत्य यदि विशाल, तँ एक वाक्य ओकर सम्पूर्ण घर केना?
कतेक बड़ कथा समयक सिंहासन पर बैसल रहल।
कहलक— “हमही दिशा।”
“हमही भविष्य।”
“हमही सभ मनुष्यक एकमात्र अर्थ।”
भीड़ जयकार कएलक।
मुदा किनार पर ठाढ़ लोक पूछलक— “हमर कथा कतय?”
एक स्त्री पूछलक।
एक मजदूर।
एक छोट भाषा।
एक विस्थापित परिवार।
एक अल्प विश्वासवला।
एक बच्चा जकर घर नक्शा पर रेखा मात्र।
बड़ कथाक चौड़ा सड़क कतेक छोट आँगन मेटा देत अछि।
इतिहास जतय राजाक विजय लिखैत अछि, ओतय सैनिकक विधवा कतेक पंक्ति पबैत?
महल लिखल जाइत, ईंट ढोएनिहार ककर नाम?
युद्धक वर्ष याद रहैत, शान्ति मे खेत जोतनिहार ककर तारीख?
पुस्तक कखनो मौनक सभसँ सुन्दर कब्रिस्तान बनि सकैत अछि।
तखन इतिहास केवल “जे भेल” नहि।
इतिहास “के कहलक?” सेहो।
ककर कलम?
ककर भाषा?
ककर चयन?
ककर मौन?
एक घटना जखन स्मृति बनैत, ओ पहिनेहि कोनो आँखि सँ गुजरि चुकल रहैत अछि।
आँखि निर्दोष काँच सदा नहि।
ओकर भीतर भय, प्रेम, वर्ग, भाषा, संस्कार, इच्छा सभ रंग घुलल।
तखन कथा घटनाक सादा प्रतिलिपि केना?
कथा घटना आ दृष्टि दुनूक मिलन।
एक शहरक दंगा एक पुलिसक रिपोर्टमे एक रूप।
एक मायक स्मृतिमे दोसर।
एक पत्रकारक कथामे तेसर।
एक बच्चाक रातिक भयमे चौथ।
ककरा “सम्पूर्ण सत्य” कहब?

कदाचित् सम्पूर्ण सत्य एकटा कोठरीमें नहि रहैत।
 ओ टुकड़ा-टुकड़ा साक्ष्य, स्मृति, तर्क, पीड़ा, दस्तावेज, मौनक बीच खोजल जाइत अछि।
 मुदा टुकड़ा अर्थ झूठ नहि।
 अधूर अर्थ निरर्थक नहि।
 एक टूटल माटिक घड़ा अपने भीतर जल नहि राखि सकैत, मुदा ओकर टुकड़ा पुरान घरक इतिहास कहि सकैत अछि।
 खंड साक्षी हो सकैत अछि।
 पूर्णता कखनो अहंकारक दोसर नाम हो सकैत अछि।
 जे कहैत— “सभ बुझि लेलहुँ,” ओ सभसँ पैघ अज्ञात क्षेत्र देखबे नहि करैत होएत।
 सन्देह हरेक सत्यक हत्या नहि।
 सन्देह कखनो सत्यक रक्षक।
 दरबज्जा पर ठाढ़ पहरदार जे पूछैत— “प्रमाण?”
 “किएक?”
 “ककर हित?”
 “ककर आवाज गायब?”
 मुदा सन्देह यदि केवल नकार बनि जाए, तँ ओहो एक नवा तानाशाह।
 सभ झूठ।
 सभ भ्रम।
 सभ समान।
 ई वाक्यो एक विशाल दावा।
 यदि कोनो सत्य नहि, तँ अन्याय केँ अन्याय किएक कहब?
 यदि सभ दृष्टि समान रूपेँ ठीक, तँ हत्याराक कथा आ पीड़ितक चोट एकहि तराजू पर?
 नहि।
 खुलापन दिशाहीनता नहि।
 बहुलता नैतिक अन्धता नहि।
 अनेक आवाज सुनब अर्थ हरेक आवाज ठीक मानब नहि।
 सुनू।
 परखू।
 प्रमाण देखू।
 शक्ति आ पीड़ा दुनू देखू।
 फेर विवेक सँ निर्णय।
 एक सत्य कखनो बहुत दृष्टि सहैत अछि।
 न्यायालयमें अनेक गवाह, मुदा निर्णय तैयो सम्भव।
 बहुलता निर्णयक मृत्यु नहि।
 ओ निर्णय केँ विनम्र बनबैत अछि।
 “हम बेठीक हो सकैत छी”— ई वाक्य बुद्धिक सभसँ स्वच्छ खिड़की।

कतेक सभ्यता अपने कै अन्तिम समझलक।
फेर समय ओकर दीवार पर दरार लिखलक।
नव मशीन।
नव शहर।
नव बाज़ार।
नव संचार।
छोट स्क्रीनमे दूर देश घरमे।
एक विज्ञापन एकहि क्षण लाख आँखि छूबैत।
एक छवि सत्य सँ तेज दौड़ैत।
उपभोग नव धर्म जकाँ दरबज्जा खटखटबैत।
“तूँ जे खरीदैत छ, सेही छी।”
“तोर कपड़ा, तोर गाड़ी, तोर फोन, तोर ब्रान्ड— तोर पहचान।”
मनुष्य धीरे-धीरे वस्तुक बीच अपन चेहरा खोजैत अछि।
बाजार इच्छा सम्पूर्ण करैत नहि, नव इच्छा उत्पन्न करैत अछि।
एक वस्तु पुरान भेल नहि, नव पहिनेहि चमकैत अछि।
समय तेज।
स्मृति छोट।
ध्यान टुकड़ा-टुकड़ा।
एक स्क्रीन बीस दुआर।
एक क्षण समाचार।
दोसर हँसी।
तेसर युद्ध।
चौथ विज्ञापन।
मन कुन लयमे जीबि रहल?
जगत एक लम्बा वाक्य नहि रहल।
ओ कतरन, चित्र, लिंक, चमक, स्वर, टूटल सन्दर्भक एक भीड़।
एहि भीड़मे अर्थ कतय?
कदाचित् अर्थ पहिने सँ तैयार नहि भेटत।
मनुष्य अपने जोड़त।
कतरनसँ कथा।
अनुभवसँ दिशा।
मुदा जोड़बाक शक्ति केवल व्यक्तिक निजी नहि।
भाषा पहिने सँ हमर भीतर अपन घर बना चुकल।
हम शब्द चुनैत छी, मुदा शब्दो हमरा चुनैत अछि।
कतेक पुरान अर्थ एक शब्दक पीठ पर बैसल।

“सभ्य।”

“जंगली।”

“शुद्ध।”

“अशुद्ध।”

“ऊँच।”

“नीच।”

“सामान्य।”

“विकृत।”

एक शब्द कतेक सामाजिक दीवार अपने भीतर ढोइ सकैत अछि।

भाषा केवल दर्पण नहि।

ओ कखनो घरक नक्शा बनबैत अछि।

हम जकरा नाम दैत छी, ओकरा एक सीमा दैत छी।

मुदा वस्तु नामसँ पैघ हो सकैत अछि।

एक बच्चा केँ “कमजोर” कहल गेल।

शब्द बारम्बार ओकरा एहि रूपमे दिखाबय लगल।

एक समुदाय केँ “पिछड़ल” कहल गेल।

कतेक अर्थ ओहि शब्दक अन्दर जमा?

नाम वास्तविकता बनएबाक एक शक्ति हो सकैत अछि।

एहि लेल शब्दक पर्दा हटाउ।

कुन शब्द ककरा छोट बनबैत?

कुन स्वाभाविक कहल गेल मुदा वास्तवमे सत्ताक पुरान आदत?

एक घरमे पुरुष निर्णय लेत, स्त्री पालन करैत—

कहल गेल “प्रकृति।”

एक समाजमे एक जाति आदेश, दोसर सेवा—

कहल गेल “व्यवस्था।”

एक साम्राज्य दोसर देश लूटलक—

कहल गेल “सभ्यता।”

शब्द कतेक बेर हिंसा केँ सुगन्धित पोशाक पहिरबैत अछि।

तखन भाषाक परत खोलू।

एक वाक्यक भीतर कुन छिपल?

जे कहल गेल, ओतबे नहि।

जे नहि कहल, ओहो अर्थ।

मौन कतेक बेर वाक्यक सभसँ भारी अंश।

“सभ नागरिक समान।”

सुन्दर वाक्य।

मुदा कुन नागरिक कागज पर अदृश्य?
कुन न्याय धरि नहि पहुँचैत?
कुन बोलि सकैत मुदा सुनल नहि जाइत?
वाक्य सत्य हो तँ धरती पर ओकर पदचिह्न खोजू।
शब्द आ व्यवहारक बीच दरार कतेक?
एक नवा दृष्टि ई दरार मापैत अछि।
ओ महान भवनक मुख्य दुआर मात्र नहि देखैत।
पाछाँक छोट गली सेहो।
रसोई।
तहखाना।
कचरा फेंकबाक जगह।
सेवकक कमरा।
जतय सभ्यताक अदृश्य श्रम ठाढ़।
केन्द्र अपन चमक किनारक अन्हार पर कतेक निर्भर?
राजधानी गामक अन्न पर।
कारखाना खानक श्रम पर।
विश्वविद्यालय सफाईकर्मी पर।
महल ईंट ढोएनिहार पर।
मुदा इतिहासक मुख्य पृष्ठ केन्द्रक नाम लिखैत अछि।
किनार फुटनोट।
एक दिन फुटनोट उठि कहैत अछि— “हमर कथा मुख्य पाठ किएक नहि?”
एहि प्रश्नसँ नक्शा बदलैत अछि।
किनार केवल दया योग्य नहि।
ओ ज्ञानक नव केन्द्र हो सकैत अछि।
जतय दृष्टि पहिने नहि गेल, ओतय सत्यक नव आयाम।
एक स्त्रीक घरेलू श्रम अर्थशास्त्रक बाहर किएक?
एक आदिवासी वनक ज्ञान “अवैज्ञानिक” किएक, जखन ओ पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवन बचौलक?
एक लोकभाषा “अशुद्ध” किएक, जखन लाख हृदय ओहि मे स्वप्न देखैत?
ज्ञान एक ही महलमे नहि बसैत।
ओ खेतमे।
रसोईमे।
कार्यशालामे।
लोकगीतमे।
शरीरक स्मृतिमे।
अनुभवमे।

पुस्तक महत्त्वपूर्ण।
 मुदा पुस्तक समस्त ज्ञान नहि।
 प्रयोगशाला महत्त्वपूर्ण।
 मुदा जीवन प्रयोगशाला बाहर अधिक विशाल।
 ज्ञानक लोकतन्त्र अर्थ विशेषज्ञक अपमान नहि।
 अर्थ विशेषज्ञ एकमात्र ईश्वर नहि।
 प्रश्न सार्वजनिक हो।
 ज्ञान संवादक विषय हो।
 किसानक अनुभव वैज्ञानिक परीक्षणसँ भेटय।
 स्थानीय स्मृति इतिहासक दस्तावेजसँ।
 रोगीक अनुभव चिकित्सकक ज्ञानसँ।
 दुनू एक-दोसर केँ सुधारि सकैत अछि।
 एकतरफा ज्ञान कखनो अन्ध बिन्दु बना लैत अछि।
 दर्पण प्रकृति केँ जसक-तस लौटबैत अछि— एहन धारणा कतेक सरल।
 काँच रंगीन हो तँ?
 वक्र हो तँ?
 प्रकाश कम हो तँ?
 दृष्टा कुन कोण पर?
 ज्ञान काँच सेहो, दृष्टि सेहो, वस्तु सेहो।
 हम संसार केँ देखैत छी, मुदा देखबाक रीति अपन इतिहाससँ बनल।
 एहि लेल आत्मपरीक्षण ज्ञानक एक हिस्सा।
 “हम कुन चश्मासँ देखैत छी?”
 ई प्रश्न अति महत्त्वपूर्ण।
 कियो अपने केँ पूर्ण निष्पक्ष मानि सभसँ अधिक पक्षपाती हो सकैत अछि।
 स्वीकारू— हमर स्थान अछि।
 हमर इतिहास।
 हमर भाषा।
 हमर हित।
 ई स्वीकार ज्ञान घटबैत नहि।
 ओ ओकर सीमा स्पष्ट करैत अछि।
 सीमा बुझल दृष्टि अधिक विश्वसनीय।
 जतय मनुष्य अपन चश्मा देखैत अछि, ओ दोसरक दृष्टि लेल ठाम बनबैत अछि।
 एक सत्य दू कोणसँ देखू।
 फेर तेसर।
 फेर चौथ।

चित्र गहिर होइत।

बहुलता सत्यक शत्रु नहि, गहराईक साधन।

मुदा अन्तहीन कोण कखनो निर्णय रोकि सकैत अछि।

कतेक देखब?

कखन कहब— “एहि प्रमाण पर एतबा पर्याप्त”?

जीवन सदा पूर्ण जानकारीक प्रतीक्षा नहि करैत।

निर्णय अपूर्ण ज्ञानमे सेहो लेबाक पड़ैत।

एहिँ मानवीय स्थिति।

विनम्र निर्णय।

संशोधन योग्य।

“एखन हमरा एना बुझाइत अछि।”

ई वाक्य दुर्बलता नहि।

ओ भविष्यक दुआर खुलल रखैत अछि।

अन्तिम सत्यक घोषणा दरबज्जा बन्द करैत अछि।

अस्थायी समझ खिड़की खोलैत।

मुदा सभ किछु अस्थायी कहलासँ मानव अधिकारो अस्थायी?

ककरो यातना कखनो ठीक हो सकैत?

गुलामी केवल एक समयक दृष्टिकोण?

नहि।

बहुलता यदि पीड़ितक दुःख केँ “एक दृष्टि” कहि हलुक करय, ओ अन्याय।

किछु मानवीय सीमा बहुत गहिर।

अनावश्यक पीड़ा गलत।

मानव गरिमा आवश्यक।

स्वतन्त्रता मूल्यवान।

एहि आधार पर अनेक जीवन-रूप खिलि सकैत।

एक बगीचा एक ही फूलक तानाशाही नहि।

मुदा विष आ फूल एकहि अर्थक नहि।

भेद बाँचल रहय।

बहुलता भेदक परिपक्वता।

एक नवा समय पुरान “प्रगति” शब्द पर सेहो प्रश्न करैत अछि।

प्रगति ककर?

कारखाना बढ़ल, मुदा नदी काली।

शहर फैलल, मुदा गाम खाली।

उत्पादन तेज, मुदा श्रमिक थाकल।

वस्तु अधिक, मुदा कचरा अधिक।

सूचना अधिक, मुदा ध्यान कम।
 संपर्क अधिक, मुदा एकान्त अधिक।
 प्रगति सोझ रेखा किएक मानू?
 कखनो आगाँ बढ़ैत हम किछु अमूल्य पाछाँ छोड़ि दैत छी।
 एक पुरान तालाब मॉल बनल।
 मॉल चमकल।
 गामक जल-स्मृति कतय गेल?
 एक जंगल सड़क बनल।
 सड़क समय बचौलक।
 ककर समय?
 ककर घर गेल?
 प्रगति तराजू माँगैत अछि।
 केवल वेग नहि।
 विज्ञान अद्भुत शक्ति।
 मुदा शक्ति अपने मूल्य नहि तय करैत।
 परमाणु ऊर्जा सेहो, विनाशो।
 डेटा ज्ञान सेहो, निगरानी सेहो।
 औषधि जीवन, मुदा बाजारक लोभ सेहो।
 तकनीक निष्पाप देवता नहि, न दानव।
 ओ मानवीय मूल्यक हाथमे औजार।
 कुन हाथ?
 कुन उद्देश्य?
 कुन नियन्त्रण?
 ई प्रश्न नव समयक आवश्यक प्रार्थना।
 एक कैमरा सत्य दिखा सकैत, मुदा फ्रेम चुनैत अछि।
 फ्रेम बाहर की?
 एक आँकड़ा सटीक, मुदा कुन प्रश्नक उत्तर?
 एक एल्गोरिदम गणना करैत, मुदा कुन मानदण्ड पहिने सँ ओकर भीतर रखल?
 तकनीक निर्विचार नहि।
 मानवीय चयन ओकर कोडमे सेहो घुसि सकैत अछि।
 एहि लेल “मशीन कहलक” अन्तिम नैतिक उत्तर नहि।
 जिम्मेदारी मनुष्यक हाथमे लौटैत अछि।
 एक नवा दुनिया उपभोगक चमक सँ भरल।
 विज्ञापन कहैत— “अपूर्ण छी।”
 फेर वस्तु देखबैत— “ई खरीदू, पूर्ण होउ।”

खरीदल।

क्षणिक आनन्द।

फेर नव अभाव।

बाजार अपूर्णता बेचैत, समाधान सेहो।

चक्र चलैत।

मनुष्य अपने केँ मूल्य-टैग सँ मापए लगैत।

ब्रान्ड भाषा।

फैशन पहिचान।

छवि वास्तविकता पर चमकदार परदा।

कखनो हम जीबैत कम, प्रदर्शित अधिक करैत छी।

भोजन खाए सँ पहिने तस्वीर।

यात्रा अनुभव सँ पहिने प्रदर्शन।

प्रेम निजता सँ पहिने छवि।

“देखल गेल” होएब “जीअल गेल” पर भारी।

तखन स्वयं कतय?

एक स्क्रीन पर सजायल चेहरा?

कि ओ मौन जे राति सभ छवि बन्द भेलाक पाछाँ अपने सँ भेटैत अछि?

पहिचान स्थिर मूर्ति नहि।

मनुष्य एक संग अनेक भूमिका।

घरमे बेटा।

कार्यालयमे अधिकारी।

मित्रक बीच हँसमुख।

एकान्तमे भयभीत।

भाषा बदलिते स्वर बदलैत।

देश बदलिते आचरण।

समय बदलिते विश्वास।

“असली हम” एकदम एक ठोस पाथर कतय?

कदाचित् हम एक निरन्तर बनैत कथा।

मुदा यदि कथा मात्र, तँ कोनो स्थिरता नहि?

स्मृति धागा।

शरीर धागा।

सम्बन्ध धागा।

नैतिक चयन धागा।

दू दिनक बीच किछु जोड़ि रहल।

पहिचान न पूर्ण स्थिर, न पूर्ण विखण्डित।

नदी बदलैत जल, तैयो नदी।
 एहि मध्यम बोधमे मनुष्य अपने केँ नव रूपमे समझि सकैत अछि।
 एक समाज सेहो नदी।
 परम्परा जल।
 नवता वर्षा।
 इतिहास किनार।
 सत्ता बाँध।
 विद्रोह बाढ़ कखनो।
 समाज एकहि रूपमे सदा नहि।
 एहि बदलैत जगतमे “शाश्वत व्यवस्था” कहबाक पहिने दू बेर सोचू।
 कतेक व्यवस्था प्राकृतिक कहल गेल, फेर इतिहास बदलि देलक।
 राजतन्त्र शाश्वत?
 गुलामी?
 स्त्रीक मौन?
 जातिक अचल पाँति?
 किछु एहन “स्वाभाविक” छल जे समय कृत्रिम सिद्ध कएलक।
 इतिहास हमें विनम्र बनबैत अछि।
 आइ जे सामान्य, काल्हि प्रश्न।
 मुदा परिवर्तनक पूजा सेहो सावधान।
 नव अर्थात् ठीक नहि।
 पुरान अर्थात् बेठीक नहि।
 कसौटी फेर जीवन।
 गरिमा।
 न्याय।
 स्वतन्त्रता।
 सृजनशीलता।
 करुणा।
 एक पुरान लोकगीत मानवीय हो सकैत।
 एक नवा विज्ञापन अमानवीय।
 काल कसौटी नहि, जीवनक गुण कसौटी।
 ज्ञानक क्षेत्र एक-दोसर सँ मिलैत जाइत अछि।
 साहित्य इतिहाससँ प्रश्न करैत।
 इतिहास समाजशास्त्रसँ।
 भाषा राजनीतिसँ।
 विज्ञान नैतिकतासँ।

कला मनोविज्ञानसँ।

दीवार कमजोर।

खिड़की अधिक।

एक समस्या एक ही विषयक नहि।

शहरक प्रदूषण भौतिकी सेहो, अर्थशास्त्र, राजनीति, स्वास्थ्य, नैतिकता।

एक स्त्रीक घरेलू हिंसा कानून सेहो, मनोविज्ञान, अर्थव्यवस्था, संस्कृति।

एक भाषा मरैत अछि— भाषाविज्ञान सेहो, इतिहास, सत्ता, शिक्षा, स्मृति।

ज्ञान जतय मिलि देखैत अछि, चित्र गहिर।

मुदा विशेषज्ञता आवश्यक।

एक चिकित्सक संगीतकार नहि।

एक कवि शल्यचिकित्सक नहि।

सीमा मिटाबय नहि, संवाद बढ़ाउ।

ज्ञानक दीवारमे दुआर खोलू।

एक नवा युग विशेषज्ञ आ सामान्य मनुष्यक बीच दूरी पर सेहो प्रश्न करैत अछि।

कठिन भाषा कखनो ज्ञानक सुरक्षा नहि, प्रतिष्ठाक दीवार।

यदि विचार मानव जीवन विषयक, तँ मानव धरि पहुँचबाक रस्ता किएक बन्द?

गहराई अस्पष्टता नहि।

गहिर नदी साफ हो सकैत अछि।

विचार लोकक भाषामे आबय।

लोकक अनुभव विचारक मंच पर आबय।

संवाद दुनू दिशा।

ज्ञान तखन कम राजदरबार, अधिक चौपाल।

मुदा चौपाल अफवाहक घर न बने।

लोकप्रियता सत्यक माप नहि।

एक बात लाख बेर साझा भेल, तैयो झूठ हो सकैत।

ज्ञानक लोकतन्त्र अर्थ प्रमाणक मृत्यु नहि।

उल्टा, सभकेँ प्रमाण समझबाक अधिकार।

विशेषज्ञ उत्तरदायी।

जनता जिज्ञासु।

ई संबंध स्वस्थ।

सत्ता ज्ञानसँ बहुत निकट रहैत अछि।

जे नाम देत, वर्ग बनबैत, मापदण्ड तय करैत, ओ व्यवस्था बनबैत अछि।

“सामान्य” कुन?

“रोगी” कुन?

“अपराधी” कुन?

“योग्य” कुन?
 “अयोग्य” कुन?
 परिभाषा केवल शब्द नहि।
 ओ दुआर खोलि वा बन्द करि सकैत अछि।
 एक प्रमाणपत्र रोजगार देत।
 एक निदान पहिचान बदलैत।
 एक कानूनी श्रेणी अधिकार छीनि सकैत।
 ज्ञान सत्ता-विहीन सदा नहि।
 मुदा सत्ता अर्थ केवल दमन नहि।
 ज्ञान जीवन बचबैत सेहो।
 समस्या जखन ओ प्रश्न सहन नहि करय।
 पारदर्शिता दुआर।
 जवाबदेही खिड़की।
 एक संस्था कहय— “हम बेठीक हो सकैत छी,” तखन ओ अधिक मानवीय।
 अचूकता देवता लेल हो सकैत, संस्था लेल खतरनाक।
 एक नवा दृष्टि “केन्द्र” पर बारम्बार प्रश्न करैत अछि।
 किएक एहिए केन्द्र?
 किएक ई मानक?
 किएक ई भाषा?
 किएक ई इतिहास?
 किएक ई शरीर “सामान्य”?
 किएक ई परिवार “आदर्श”?
 किएक ई जीवन-शैली “सभ्य”?
 प्रश्न नष्ट करबाक लेल नहि, अदृश्य विकल्प देखबाक लेल।
 एक दरबज्जा सदैव एक ही आकारक मानव लेल किएक?
 सीढ़ी जतय चक्का नहि चढ़ि सकय, समस्या शरीरमे कि भवनमे?
 एक पाठ्यपुस्तक जतय एकही समुदाय बारम्बार महान, दोसर मौन— समस्या इतिहासमे कि चयनमे?
 “स्वाभाविक” शब्द कतेक बेर विचारक आरामकुर्सी।
 ओकरा हिला दियौ।
 देखू नीचाँ कुन धूलि।
 मुदा हरेक कुर्सी तोड़ि देब ज्ञान नहि।
 कखनो बैसबो पड़ैत अछि।
 विघटन घर समझबाक एक तरीका।
 दीवार कुन ईटसँ?
 ईट कतय सँ?

कुन भार उठबैत?

कुन दरार?

मुदा विघटनक अन्तिम उद्देश्य केवल मलबा नहि।

मलबा मे नव नक्शाक संभावना।

पुरान अर्थ खोलू, मुदा जीवन लेल नव अर्थ सेहो रचू।

केवल तोड़निहार बच्चाक खेल नहि।

रचनात्मक विघटन पुरान कैद तोड़ि नव दुआर खोलैत अछि।

एक शब्द “स्त्री” कतेक पुरान अपेक्षा ढोइ रहल।

तोड़ू।

फेर व्यक्ति लेल नव आकाश रचू।

“जाति” कतेक भाग्यक जंजीर।

खोलू।

फेर समुदाय आ गरिमाक नव सम्बन्ध रचू।

“प्रगति” कतेक प्रकृति-विनाश ढँकि रहल।

खोलू।

फेर विकास आ पृथ्वी बीच नव सन्तुलन रचू।

विघटन यदि सृजन नहि पहुँचय, थकान।

सृजन यदि आलोचना नहि सहय, रूढ़ि।

दुनू चक्र जकाँ।

तोड़ू।

देखू।

जोड़ू।

फेर जाँचू।

जीवन एक अन्तहीन संशोधन।

एक पांडुलिपि जे कखनो अन्तिम प्रूफ नहि।

मुदा अन्तहीनता निराशा नहि।

ओ जीवित रहबाक संकेत।

मृत वस्तु नहि बदलैत।

जीवित बदलैत।

समाज जतय अपने केँ संशोधित करि सकैत, ओ जीवित।

धर्म जतय प्रश्न सहन, जीवित।

विज्ञान जतय नव प्रमाण पर बदलय, जीवित।

दर्शन जतय अपने आधार प्रश्न करय, जीवित।

व्यक्ति जतय “हम बेठीक छलहुँ” कहि सकय, जीवित।

पूर्णता कब्र हो सकैत।

अपूर्णता विकासक जगह।
 एक नवा दृष्टि इतिहासक सोझ रेल सेहो नकारैत अछि।
 “अतीत ई स्टेशन, वर्तमान ई, भविष्य निश्चित ओहि दिशा।”
 मुदा रेलगाड़ी कखनो पटरी बदलैत।
 दुर्घटना।
 विद्रोह।
 आविष्कार।
 महामारी।
 प्रकृति।
 मनुष्यक अनपेक्षित निर्णय।
 भविष्य पूर्वलिखित पाठ नहि।
 यदि भविष्य निश्चित, हमर नैतिक चयन कतेक अर्थवान?
 अनिश्चितता भय, मुदा स्वतन्त्रता सेहो।
 काल्हि तैयार नहि।
 ओ आइक निर्णयसभसँ धीरे बनत।
 इतिहास भाग्य नहि।
 स्मृति आ संभावना बीच मानव कर्म।
 एहि बोधसँ जिम्मेदारी बढ़ैत अछि।
 “एना होएबे करत” कहि हाथ छोड़ि नहि सकैत।
 भविष्य खुलल।
 मुदा खुलल अर्थ मनमाना नहि।
 आइक जलवायु-विनाश काल्हिक सीमा बना सकैत।
 आइक शिक्षा काल्हिक संभावना।
 आइक घृणा काल्हिक युद्ध।
 आइक संवाद काल्हिक शान्ति।
 खुलापन जिम्मेदारीक आमन्त्रण।
 एक नवा दुनिया हास्य सेहो माँगैत अछि।
 महान दावे पर हलुक मुस्कान।
 अपने पर सेहो।
 जे अपने सिद्धान्त केँ एतबा गंभीर मानैत जे हास्य सहन नहि, ओ मूर्ति बनि गेल हो सकैत।
 विडम्बना कखनो सत्ताक फुलायल गुब्बारा फोड़ैत अछि।
 एक व्यंग्य एक भाषणसँ अधिक सत्य खोलि सकैत।
 मुदा हास्य अपमान नहि।
 दोसरक पीड़ा मनोरंजन नहि।
 ऊपरक अहंकार पर हास्य, नीच पर क्रूरता नहि।

व्यंग्य शक्तिशालीक मुकुट हलुक करय।
कमजोरक घाव गहिर नहि।
एक नवा साहित्य खंडित रूप पसिन्न करैत अछि।
एक कथा बिनु सोझ आरम्भ-अन्त।
अनेक स्वर।
अविश्वसनीय कथाकार।
अपूर्ण अन्त।
पाठक केवल श्रोता नहि, सहभागी।
“अर्थ एतय एके नहि।”
कविता एक दुआर खोलैत, पाठक अपन अनुभव लऽ कऽ प्रवेश करैत।
मुदा कृति पूर्ण खाली नहि।
शब्द सीमा दैत अछि।
अर्थ अनन्त हो सकैत, मनमाना नहि।
जैना नदीमे अनेक नाव, मुदा जल वास्तविक।
कला नव समयक अस्थिरता धारण करैत अछि।
कोलाज।
टुकड़ा।
उद्धरण।
पुरान रूपक नव सन्दर्भ।
एक गीतमे लोकधुन आ मशीनक ध्वनि।
एक चित्रमे देवता आ विज्ञापन एक फ्रेममे।
उच्च आ लोक बीच दीवार कम।
कला दरबार छोड़ि सड़क पर।
सड़क संग्रहालयमे।
मूल्य श्रेणी बदलैत।
“ऊँच कला” “नीच कला”— ककर निर्णय?
लोकगीत कम?
फिल्म कम?
कॉमिक कम?
डिजिटल कला कम?
प्रश्न रूपक लोकतन्त्र खोलैत।
मुदा लोकप्रिय होएब महानता नहि।
दस लाख दर्शक गहराई गारंटी नहि।
छोट लोकप्रियता कम मूल्य गारंटी नहि।
कसौटी फेर रचना।

प्रभाव।

सत्यता।

सृजन।

सौन्दर्य।

प्रश्न।

मानवीय गहराई।

एक नवा दृष्टि धर्म पर सेहो दूधारी प्रश्न रखैत अछि।

एक दिस अन्तिम एकाधिकारक दावा पर सन्देह।

दोसर दिस आध्यात्मिक अनुभवक निजता लेल जगह।

विश्वास व्यक्तिगत हो सकैत अछि।

मुदा विश्वास सार्वजनिक शक्ति बनिते प्रश्न सहन करय।

एक मत अपने लेल पवित्र।

दोसर पर जबरदस्ती किएक?

बहुल विश्वास एक समाजमे रहि सकैत।

यदि हरेक विश्वास अपने सीमा स्वीकारय।

मुदा सत्यक खोज छोड़ब नहि।

“सभ ठीक” कहब सहज, मुदा किछु विश्वास हिंसा सिखा सकैत।

तखन मानवीय गरिमा कसौटी।

आस्था जतय प्रेम, करुणा, विनम्रता, ओ जीवनदायी।

आस्था जतय घृणा, दमन, भय, ओ प्रश्न योग्य।

बहुलता नैतिक नींव माँगैत अछि।

नहि तँ ओ अराजकता।

एक नवा राजनीति छोट पहिचानसभ सुनैत अछि।

केंद्र कहैत— “एक राष्ट्र, एक आवाज।”

किनार कहैत— “हमर भाषा?”

“हमर भूमि?”

“हमर स्मृति?”

“हमर विशिष्ट जीवन?”

एकता यदि भिन्नता निगल्य, ओ एकता नहि, एकरूपता।

एक देश अनेक गीत गाबि सकैत अछि।

एक संविधान अनेक भाषा सहेजि सकैत।

एक नागरिकता अनेक संस्कृति रखि सकैत।

एकता जतय ठाम बढबैत, जीवित।

जतय ठाम घटबैत, कठोर।

मुदा छोट पहिचान सेहो अपन किला बना सकैत।

समुदाय अपने भीतर अल्प आवाज दबा सकैत।
किनारक भीतर आरो किनार।
एक स्त्री अपन समुदायमे कतेक स्वतन्त्र?
एक दलित धार्मिक समूहमे कतेक समान?
एक बच्चा परिवारमे कतेक सुनेल?
सत्ता केवल राजधानीमे नहि।
घरमे।
विद्यालयमे।
कार्यालयमे।
समुदायमे।
भाषामे।
हरेक स्तर पर प्रश्न।
एहि कारण एक नवा विचार कखनो स्थिर केन्द्र नहि चाहैत।
केन्द्र घूमय।
आइ एहि आवाज सुनू।
काल्हि ओहि।
जतय पहिने प्रकाश नहि, ओतय दीप लऽ जाउ।
मुदा केन्द्रहीनता अव्यवस्था नहि।
समन्वय आवश्यक।
साझा नियम आवश्यक।
न्याय आवश्यक।
नहि तँ हरेक छोट शक्ति अपन छोट तानाशाही।
बहुलता समझौतेक कला माँगैत अछि।
साझा सार्वजनिक धरती।
जतय हम भिन्न रहि एक-दोसरक अधिकार स्वीकारि सकी।
एक नवा दृष्टि “मनुष्य” शब्दो पर प्रश्न करैत अछि।
कुन मनुष्य इतिहासक मापदण्ड?
पुरुष?
शहरवासी?
सम्पन्न?
शिक्षित?
कोनो खास संस्कृतिक?
यदि “सामान्य मनुष्य” वास्तवमे एक विशेष समूहक रूप, बाकी “अपवाद” किएक?
मानव परिभाषा विस्तृत हो।
देह भिन्न।

लिंग भिन्न।
 भाषा।
 क्षमता।
 विश्वास।
 जीवन-पद्धति।
 मनुष्य एहि सभ विविध रूपमे मनुष्य।
 गरिमा एकरूपता नहि माँगैत।
 मानवीयता एक विशाल छाता, मुदा छाता एतबा भारी नहि जे व्यक्ति कुचलि जाए।
 सार्वभौमिकता आ विशेषता दू शत्रु नहि।
 “सभ मनुष्य गरिमामय” — सार्वभौमिक।
 “हरेक मनुष्य अपन खास परिस्थितिमे” — विशेष।
 दुनू संग सत्य गहिर।
 केवल सार्वभौमिकता भिन्नता मिटा सकैत।
 केवल विशेषता साझा मानवता भुला सकैत।
 पुल दुनू बीच।
 एक नवा विचार वस्तुनिष्ठता पर प्रश्न करैत, मुदा पूर्ण निजीपन पर सेहो।
 यदि सभ हमर निजी अनुभव, तँ विज्ञान केना?
 यदि सभ पूर्ण निष्पक्ष, तँ इतिहासक अन्ध बिन्दु किएक?
 उत्तर कदाचित् प्रक्रियामे।
 खुला प्रमाण।
 पुनरावृत्ति।
 आलोचना।
 अनेक दृष्टि।
 सुधार।
 व्यक्तिगत सीमा केँ सार्वजनिक विधि सँ कम करब।
 वस्तुनिष्ठता कोनो देवदृष्टि नहि।
 ओ साझा जाँचक अनुशासन।
 एहि रूपमे सत्य आ विनम्रता भेटि सकैत।
 एक नवा दर्शन अपने पेशागत दीवार पर सेहो हँसैत अछि।
 यदि दर्शन केवल दार्शनिक भाषा, जीवन कतय?
 बाजारक लोभ दर्शनक प्रश्न।
 युद्ध दर्शनक।
 प्रेम।
 मीडिया।
 तकनीक।

पर्यावरण।

लिंग।

भाषा।

स्मृति।

शरीर।

रोजक छोट निर्णय।

दर्शन जीवन छोड़ि केवल शब्दक खेल न बने।

मुदा जीवनक हरेक बात दर्शन सेहो नहि।

गहराई आ अनुशासन आवश्यक।

लोकप्रिय सरलता अर्थ सतहीपन नहि।

कठिन भाषा अर्थ गहराई नहि।

विचार अपन दर्पण स्वयं साफ करय।

“हम कोनो अंतिम सिंहासन पर नहि।”

ई स्वीकार दर्शन केँ जीवित रखैत अछि।

एक नवा दृष्टि “अन्त” शब्द सँ सावधान।

इतिहासक अन्त?

विचारक अन्त?

कला केर?

धर्मक?

मानवक?

हरेक “अन्त” पाछाँ नव रूप उगि सकैत।

जंगल आगि पाछाँ हरियाली।

एक साम्राज्य गेल, नव सत्ताक रूप।

एक विचार गेल, नव भाषा।

मानव संस्कृति पूर्णविराम नहि मानैत।

ओ अल्पविराम।

कोष्ठक।

प्रश्नचिह्न।

कखनो डैश।

कखनो रिक्त पंक्ति।

कथा चलैत अछि।

मुदा अन्तहीन कहानी अर्थ दिशाहीन नहि।

हम अध्याय चुनि सकैत।

सुधारि सकैत।

बेठीक पन्ना फेर लिखि सकैत।

भविष्य खुलल पुस्तक।
 एहि खुलापनमे आशा।
 एक नवा दृष्टि पर कतेक भय सेहो।
 “सभ टूटि जाएत।”
 “मूल्य गायब।”
 “सत्य गायब।”
 “परिवार गायब।”
 “संस्कृति गायब।”
 हरेक परिवर्तन पुरान व्यवस्था भयभीत करैत।
 किछु भय ठीक सेहो हो सकैत।
 यदि सन्देह सभ आधार तोड़ि दे, मनुष्य निरर्थकता में गिरि सकैत।
 यदि पहिचान अत्यधिक टुकड़ा, साझा समाज कमजोर।
 यदि उपभोग सभ मूल्य ढँकि दे, संस्कृति बाजार।
 यदि छवि सत्य पर भारी, लोकतन्त्र भ्रम।
 यदि व्यंग्य सभ गम्भीरता खा जाए, प्रतिबद्धता कम।
 एहि जोखिम सच।
 मुदा जोखिम कारण प्रश्न बन्द नहि।
 सावधानी संग खुलापन।
 जड़ि संग खिड़की।
 स्मृति संग संशोधन।
 मूल्य संग बहुलता।
 सत्य संग विनम्रता।
 एकता संग भिन्नता।
 ई कठिन सन्तुलन नव समयक कला।
 एक समाज एहन हो जे अपन मूल मूल्य रखय—
 गरिमा।
 न्याय।
 स्वतन्त्रता।
 सत्यक खोज।
 आ एहि आधार पर अनेक जीवन-रूप खिलए दय।
 एक बगीचा जतय रस्ता साझा, फूल अनेक।
 जल साझा, रंग अनेक।
 धूप साझा, गन्ध अनेक।
 माली ककरो एक फूल केँ “एकमात्र” कहि बाकी उखाड़ि नहि दे।
 मुदा रोगी पौधा देखय।

विषैली लता जतय दोसर केँ मारैत, ओकरा सीमा दय।
स्वतन्त्रता आ उत्तरदायित्व फेर एक-दोसरक सहचर।
एक नवा आत्मबोध कहैत अछि— “हम एक कथा छी, मुदा केवल अपन लेखक नहि।”
समाज हमरा लिखलक।
भाषा।
इतिहास।
परिवार।
मुदा हम केवल लिखायल पात्रो नहि।
कलम किछु हमर हाथमे सेहो।
हम पुरान वाक्य काटि सकैत।
नव शब्द जोड़ि सकैत।
ककरो थोपल परिभाषा नकारि सकैत।
अपन पहिचान रचि सकैत।
मुदा पूर्ण खाली पन्ना नहि।
पहिने सँ किछु लिखल।
स्वतन्त्रता एहि लिखल पन्ना सँ संवाद।
न पूर्ण नियति।
न पूर्ण मनमानी।
बीचमे सृजन।
एहिए मानव जीवनक गहिर कविता।
एक दिन आइना टूटल, मुदा हम टुकड़ा फेंकलहुँ नहि।
एक टुकड़ा माँक स्मृति।
एक इतिहास।
एक भाषा।
एक शरीर।
एक स्वप्न।
एक समाज।
एक अपरिचित दोसरक दृष्टि।
हम सभ टुकड़ा एक मेज पर रखलहुँ।
चेहरा एकदम साफ नहि बनल।
मुदा पहिने सँ अधिक गहिर।
कतेक कोण।
कतेक छाया।
कतेक अज्ञात।
कतेक संभावना।

कदाचित् पूर्णता एना होइत अछि—

एकरूप नहि, सम्बद्ध।

अनेक टुकड़ा, मुदा एक-दोसरक उपस्थिति स्वीकारैत।

एक चित्र जे सदा बनैत रहल।

एक सत्य जे प्रश्न सहन करैत।

एक समाज जे किनारक आवाज सुनैत।

एक इतिहास जे अपने मौन पहिचानैत।

एक ज्ञान जे अपन सीमा जानैत।

एक भाषा जे अपन सत्ताक छाया देखैत।

एक प्रगति जे अपन मूल्य गणैत।

एक तकनीक जे मनुष्यक सेवक रहैत।

एक बहुलता जे न्यायक नींव नहि तोड़ैत।

एक स्वतन्त्रता जे दोसरक ठाम बढ़बैत।

एक सन्देह जे विनाशक नहि, जागरणक।

एक विघटन जे नव दुआर रचैत।

एक हास्य जे अहंकार फोड़ैत, घाव नहि।

एक कला जे ऊँच-नीच दीवार कम करैत।

एक दर्शन जे जीवन सँ फेर भेटैत।

एक मनुष्य जे कहि सकैत—

“हमर दृष्टि एक दृष्टि अछि, सम्पूर्ण आकाश नहि।”

आ एहि वाक्यक पाछाँ दोसरक खिड़की खुलैत अछि।

दोसर कहैत— “हमरो आकाश सम्पूर्ण नहि।”

तखन दुनू बाहर निकलैत अछि।

आँगनमे।

जतय आकाश ककरो खिड़की सँ छोट नहि।

जतय टूटल आइना अभिशाप नहि।

ओ स्मरण—

एक चेहरा अनेक कोण सहैत अछि।

एक जगत अनेक कथा।

एक मानवता अनेक जीवन।

एक सत्यक खोज अनेक प्रश्न।

आ प्रश्नक खुलल आकाशमे कदाचित् सभसँ सुन्दर वाक्य ई नहि जे “हम जानि लेलहुँ।”

अपितु—

“आओर देखू।”

“आओर सुनू।”

“फेर जाँचू।”

“फेर रचू।”

आ एहि चार छोट पंक्तिक बीच भविष्य अपन अनेक दुआर खोलैत रहय।

निर्णयक धधकैत देहरी

जीवन हमरा सदा सिद्धान्तक साफ कक्षामे नहि भेटैत।

ओ अस्पतालक भोरमे भेटैत अछि,

जतय एक मशीनक मद्धिम आवाज कोनो श्वासक अन्तिम सहारा।

ओ गर्भक अनदेखल अन्हारमे भेटैत अछि,

जतय एक सम्भावना शरीर बनबाक रास्ता खोजि रहल।

ओ जंगलक किनार भेटैत अछि,

जतय कुल्हाड़ीक धार रोटी, लाभ, विकास आ एक वृक्षक शताब्दी एक संग तौलैत अछि।

ओ घरक भीतर भेटैत अछि,

जतय एक स्त्रीक अदृश्य श्रम भोजन, सन्तान, परिवारक सभ लय सँभालैत अछि, मुदा निर्णयक मेज पर ओकर कुर्सी खाली।

जीवन प्रश्न देरी सँ नहि पूछैत।

ओ कहैत— “अखन बताउ।”

“की उचित?”

“ककर अधिकार?”

“ककर पीड़ा?”

“ककर आवाज सुनल जाए?”

“ककर जीवन बचायल जाए?”

“ककरा स्वतन्त्र छोड़ल जाए?”

किताब दिशा देत, मुदा क्षण अपन ताप रखैत अछि।

एक नियम कागज पर साफ।

मुदा जीवन कागजक सोझ किनार नहि।

ओ घाव, स्मृति, भय, आशा, सम्बन्ध, परिस्थितिक अनेक तह।

एहि लेल नैतिकता केवल “एना करू” कहल वाक्य नहि।

ओ एक धधकैत देहरी जतय मनुष्य अपन निर्णयक नंगा पयर रखैत अछि।

कखनो कर्तव्य एक पल्ला।

कखनो फल दोसर।

कखनो करुणा।

कखनो न्याय।

कखनो स्वतन्त्रता।

कखनो जीवनरक्षा।

कखनो व्यक्तिक इच्छा।

कखनो समाजक भय।
 तराजू कखनो स्थिर नहि।
 मुदा तौलनाइ छोड़ि देब उत्तर नहि।
 एक आवाज कहैत— नियम सभकेँ समान।
 दोसर कहैत— परिस्थिति सभक समान कतय?
 एक कहैत— फल देखू।
 दोसर— उद्देश्य।
 तेसर— चरित्र।
 चौथ— अन्तरात्मा।
 जीवन सभकेँ एकहि गोल मेज पर बैसाबैत अछि।
 कोनो एक कुर्सी सदैव सिंहासन नहि।
 कखनो नियम मानवता बचबैत।
 कखनो नियमक अन्ध पालन मानवता घायल करैत।
 कखनो अपवाद करुणा।
 कखनो अपवाद पक्षपात।
 विवेक एहि सूक्ष्म रेखाक पहरेदार।
 “हमरा एना बुझाइत” कहब पर्याप्त नहि।
 “किएक?” पूछू।
 “यदि हमर प्रिय नहि, ककरो अपरिचित होइत, तँ हम एहिए निर्णय लेतहुँ?”
 ई प्रश्न अन्तरात्माक कठोर दर्पण।
 पक्षपात कतेक सहज।
 अपन रक्षा, दोसरक कर्तव्य।
 अपन स्वतन्त्रता, दोसरक मर्यादा।
 अपन दुःख विशेष, दोसरक सामान्य।
 नैतिकता हमें अपन घेरेसँ एक पग बाहर ठाढ़ करैत अछि।
 ओ कहैत— “दोसरक आँखि सँ एक बेर देखू।”
 एहिए कदाचित् करुणाक पहिल पाठ।
 मुदा करुणा अन्ध नहि।
 एक रोगी दर्दमे कहैत— “बस।”
 एक परिवार कहैत— “आरो एक दिन।”
 एक चिकित्सक मशीनक संख्या देखैत।
 एक नर्स राति भरि ओकर कराह सुनैत।
 कुन निर्णय?
 श्वास जारी रहनाइ सदैव जीवन होइत अछि?
 की जीवनक गरिमा कखनो केवल श्वाससँ पैघ प्रश्न बनि उठैत अछि?

कोनो असह्य पीड़ा आ अन्तिम रोगक अन्हारमे “जीबबाक अधिकार” आ “मृत्यु चुनबाक इच्छा” एक-दोसर केँ देखैत अछि।

सहज उत्तर कतय?

मृत्यु कोनो व्यक्तिक निजी निर्णय मात्र नहि।

ओ सम्बन्धसभक धागा सेहो काटैत अछि।

माता।

सन्तान।

मित्र।

समाज।

कानून।

चिकित्सा।

एक शरीरक अन्त कतेक जीवनमे तरंग पठबैत अछि।

तखन स्वतन्त्रता कतय धरि?

मदद कतय सँ हत्या बनि सकैत?

करुणा कतय जल्दीबाजी बनि सकैत?

असह्य पीड़ा कतय जीवनक अर्थ ढँकि देत?

आ कतय समाज “उपयोगी नहि” कहि कमजोर जीवन छोड़ि देत?

एहि भय गहिर।

ककरो जीवनक मूल्य ओकर उत्पादन, यौवन, धन, स्वास्थ्य सँ नहि मापल जाए।

वृद्ध जीवन।

विकलांग जीवन।

अचेत जीवन।

शिशु जीवन।

सभ मानवीय गरिमाक वृत्तमे।

मुदा गरिमा अर्थ पीड़ा केँ अनदेखल करबो नहि।

देखभाल केवल मशीन जोड़ब नहि।

कखनो हाथ पकड़ब।

कखनो दर्द घटाबय।

कखनो सत्य धीरे कहब।

कखनो परिवार केँ तैयार करब।

कखनो मौनमे संग रहब।

चिकित्सा विज्ञान मात्र नहि, मानवीय संगति सेहो।

एक ऑपरेशनक पहिने कागज पर हस्ताक्षर होइत अछि।

मुदा सहमति केवल हस्ताक्षर नहि।

की रोगी बुझलक?

की ओकरा विकल्प कहल गेल?

की भय ओकर आवाज दबा नहि रहल?
 की ओ स्वतन्त्र निर्णय ले रहल?
 शरीर ओकर।
 मुदा ज्ञान चिकित्सक।
 दुनू बीच विश्वासक एक महीन पुल।
 यदि ज्ञान सत्ता बनि जाए, रोगी वस्तु।
 यदि स्वतन्त्रता ज्ञान नकारि दे, निर्णय अन्ध।
 संवाद दुनूक मिलन।
 “हम जानैत छी” आ “हम जी रहल छी” एक-दोसरक हाथ धरय।
 अस्पताल नैतिक प्रश्नसभक शान्त नगर।
 ककरा पहिने बेड?
 ककरा महँगी औषधि?
 ककरा अंग प्रत्यारोपण?
 ककरा अन्तिम वेंटिलेटर?
 संसाधन सीमित।
 जीवन असीम मूल्यवान।
 तखन निर्णय केना?
 धन?
 उम्र?
 बचबाक संभावना?
 पहिले आबि पहिले?
 सामाजिक भूमिका?
 कोनो एक उत्तर निष्पाप नहि।
 तराजूक एक पल्ला जतय उठैत, दोसरक चेहरा अन्हारमे चलि जाइत।
 न्याय एतय गणित नहि।
 मुदा गणना आवश्यक।
 करुणा आवश्यक।
 समानता।
 पारदर्शिता।
 पूर्वनिर्धारित मानदण्ड।
 नहि तँ निर्णय धन, पहुँच, पहिचानक गुप्त दरबज्जासँ गुजरत।
 जीवनक मूल्य घूसक राशि नहि हो।
 एक गरीबक श्वास अमीरक श्वास सँ हलुक नहि।
 एक अनपढ़ शरीर विद्वान शरीर सँ कम मानवीय नहि।
 नैतिकता अस्पतालक सफेद दीवार पर एहि सत्य केँ बारम्बार लिखैत रहय।

गर्भ एक अन्य मौन संसार।

एक स्त्रीक शरीर अपने भीतर दू धड़कनक संभावना ढोइत अछि।

एक स्पष्ट।

एक अखन बनैत।

ककर अधिकार कतय सँ आरम्भ?

स्त्रीक अपने शरीर पर निर्णय कतेक मूल?

गर्भक विकसित होइत जीवनक दावा कखन गहिर?

दिन, सप्ताह, माह—

समय एतय नैतिक वजन बदलैत अछि।

पहिल कोशिका आ जन्मक निकट शिशु एकहि प्रश्नक दू छोर।

बीचमे कतेक परत।

स्वास्थ्य।

बलात्कार।

माताक जीवन।

भ्रूणक गंभीर विकार।

गरीबी।

सामाजिक दबाव।

अनचाहल गर्भ।

इच्छित मातृत्व।

एक नियम सभ परिस्थिति केँ एकहि डोरीमे बाँधि सकैत?

कठिन।

मुदा स्वतन्त्रता अर्थ दोसर जीवनक संभावना कखनो देखबे नहि करबो नहि।

करुणा दुनू दिशामे आँखि खोलय।

स्त्री केवल गर्भक पात्र नहि।

ओ स्वतन्त्र मनुष्य।

ओकर स्वास्थ्य, भविष्य, भय, सम्मान, आकांक्षा सत्य।

मुदा गर्भ केवल ऊतक कहबाक पहिने समयक विकास देखू।

नैतिकता एतय नारा नहि।

धीमा सुननाइ।

परिस्थिति।

चिकित्सकीय तथ्य।

कानूनी मर्यादा।

मानवीय करुणा।

निर्णय जतय सभसँ अधिक निजी, ओतय समाजक सभसँ अधिक शोर किएक?

कखनो बाहरक शोर भीतरक पीड़ा नहि सुनैत।

एक स्त्री अपने निर्णयक भार जीवन भरि ढो सकैत अछि।
 एहि भारक सम्मान आवश्यक।
 मातृत्व महान, मुदा जबरन मातृत्व महानता नहि।
 जन्म सुन्दर, मुदा जन्मक पूर्व शर्त न्यायो हो।
 भूखल माता, असुरक्षित घर, चिकित्सा नहि, शिक्षा नहि—
 केवल “जन्म दियौ” कहलासँ कर्तव्य पूर्ण नहि।
 जीवन जन्मक क्षण पर समाप्त नहि।
 जन्म पाछाँ अन्न।
 टीका।
 शिक्षा।
 सुरक्षा।
 प्रेम।
 समाज यदि जीवनक पक्षधर, तँ जन्मल बच्चाक जीवन सेहो ओकर उत्तरदायित्व।
 वन एहि प्रश्नसभक एक अन्य कक्ष।
 पेड़ बोलैत नहि।
 नदी मतदान नहि करैत।
 पक्षी न्यायालय नहि पहुँचैत।
 तखन ओकर अधिकार कुन बोलैत?
 मनुष्य अपने केँ धरतीक स्वामी मानि कतेक दूर चलि गेल।
 वन लकड़ी।
 नदी जल-संसाधन।
 पहाड़ खनिज।
 पशु उत्पाद।
 माटि उत्पादन।
 प्रकृति मानो एक विशाल गोदाम।
 मुदा गोदाम श्वास देत?
 वन मात्र लकड़ीक गिनती नहि।
 ओ बरखा।
 माटि।
 छाया।
 जीव।
 बीज।
 गन्ध।
 नदीक स्रोत।
 लोकक स्मृति।

एक जीवित सम्बन्ध-जाल।
एक वृक्ष काटल, केवल एक तना नहि गिरल।
कतेक घोंसला।
कतेक कीट।
कतेक छाया।
कतेक माटिक नमी।
कतेक भविष्यक बीज।
जाल काँपैत अछि।
मनुष्य जालक बाहर नहि।
ओ एक गाँठ।
सभसँ चतुर हो सकैत, मुदा अलग नहि।
हवा दूषित, हमर फेफड़ा।
नदी विषाक्त, हमर रक्त।
माटि मरल, हमर अन्न।
वन गेल, हमर ऋतु।
प्रकृति “बाहर” कतय?
हमर देह ओकर अन्दरक एक छोट घर।
यदि मानवक हित सर्वोच्च, तैयो दीर्घकालिक मानव हित प्रकृति बचबेमे।
मुदा प्रश्न एतय सँ आरो गहिर।
की प्रकृति केवल हमर हित कारण मूल्यवान?
एक दुर्लभ पक्षी जकर हमरा कोनो तत्काल उपयोग नहि, की ओकर जीवनक अपन मूल्य नहि?
एक जंगल जतय मनुष्य कखनो नहि जाए, की ओ केवल भविष्यक संसाधन?
एक नदी की केवल सिंचाईक नाली?
जीवन अपने आप मे किछु गरिमा रखैत होएत?
एहि प्रश्नसँ मानव केन्द्र हलुक खिसकैत अछि।
आकाश विस्तृत।
हम एक जीव मात्र नहि, मुदा एकमात्र जीव सेहो नहि।
अनेक जीवन-रूप पृथ्वी केर साझा कविता।
एक पंक्ति सभ कविता नहि।
मानव महत्त्वपूर्ण, मुदा सम्पूर्ण नहि।
गहिर पर्यावरणीय दृष्टि कहैत जकाँ— जड़ि एक-दोसरमे गुँथल।
एक प्रजाति गेल, जालमे एक छेद।
एक नदी मरल, सम्पूर्ण क्षेत्र बीमार।
एक जंगल उजड़ल, ऋतु बदलल।
प्रकृति सन्तुलनक सूक्ष्म संगीत।

मनुष्य यदि एक ही वाद्य बहुत तेज बजाबय, राग टूटत।
 विकास संगीत हो, शोर नहि।
 कारखाना चाही।
 सड़क चाही।
 घर।
 ऊर्जा।
 काम।
 मुदा कुन कीमत पर?
 कितबा वन?
 कितबा जल?
 कितबा धुआँ?
 कितबा भविष्य?
 विकास केवल आइक उत्पादन नहि।
 काल्हिक जीवन सेहो।
 एक परियोजना लाभ देत, मुदा पाँच पीढ़ीक जल छीनि लेत— तराजू फेर हिलैत।
 पर्यावरण भावुक सजावट नहि।
 ओ नैतिक प्रश्न।
 हम भविष्यक बालक सँ कर्ज लऽ रहल छी बिनु ओकर अनुमति।
 खनिज निकालैत।
 जल खर्चैत।
 जंगल काटैत।
 कार्बन हवामे छोड़ैत।
 काल्हि ओ बच्चा हमर बिल चुकायत।
 ई न्याय कतेक?
 पीढ़ी जे अखन जन्मल नहि, ओकरो अधिकार हो सकैत अछि?
 यदि हाँ, तँ वर्तमान स्वतन्त्र नहि असीम उपभोग लेल।
 हम अतीतक उत्तराधिकारी, मुदा भविष्यक ट्रस्टी सेहो।
 धरती हमर मालिकाना कागज नहि।
 उधारक घर।
 रखवारी एक मूल्य।
 भारतीय गामक पुरान कतेक रीति कखनो ई बात बिनु दार्शनिक शब्द बुझैत छल।
 वृक्ष पूजनीय।
 नदी माता।
 पृथ्वी धारिणी।
 अन्न प्रसाद।

ई रूपक केवल काव्य नहि।
ओ उपभोग पर मर्यादा सेहो लगबैत छल।
मुदा परम्परा सदा पर्यावरण-मित्र नहि।
पुरान होएब कसौटी नहि।
जतय पुरान ज्ञान जीवन बचाबय, सहेजू।
जतय रूढ़ि हानि, बदलू।
आधुनिक विज्ञान मापन देत।
परम्परागत अनुभव स्थानीय स्मृति।
दुनू भेटय।
वृक्षक आध्यात्मिक महत्त्व आ जैव-विविधताक वैज्ञानिक महत्त्व एक-दोसरक विरोधी किएक?
नदीक पवित्रता यदि ओकरा गन्दगी सँ बचाबय, ओ मूल्यवान।
यदि पवित्र कहि कचरा फेंकैत रही, शब्द खाली।
आस्था व्यवहार माँगैत अछि।
धरती पूजनीय? तँ प्लास्टिक किएक?
जल जीवन? तँ विष किएक?
प्रकृति-प्रेम कविता सँ नीति दिस उतरय।
कृषि।
ऊर्जा।
शहर।
उद्योग।
उपभोग।
सभमे मर्यादा।
पर्यावरणक एक पक्ष पशु जीवन सेहो।
मनुष्य पशु केँ कतेक रूपमे देखैत अछि—
भोजन।
श्रम।
प्रयोग।
मनोरंजन।
साथी।
एक जीव जकरा दर्द होइत अछि।
यदि दर्द हमरा अप्रिय, तँ दोसर जीवक दर्द महत्त्वहीन किएक?
भाषा नहि अर्थ पीड़ा नहि?
चीख कतेक भाषा माँगैत अछि?
आँखिक भय कतेक व्याकरण?
पशु मनुष्य नहि।

मुदा दर्द दर्द।
 एहि समानता एक नैतिक दरबज्जा खोलैत अछि।
 हम ककरा कितबा पीड़ा देबाक अधिकार रखैत छी?
 भोजनक आवश्यकता?
 विकल्प?
 परम्परा?
 स्वाद?
 वैज्ञानिक अनुसन्धान?
 कुन कारण कतेक भारवान?
 एक प्रयोग यदि हजार जीवन बचाबय, तराजू एक रूप।
 एक सौन्दर्य प्रसाधन लेल अनावश्यक पीड़ा, दोसर।
 नैतिकता भेद करय।
 सभ पशु उपयोग एक नहि।
 मुदा सभ उपयोग प्रश्न सँ ऊपर सेहो नहि।
 जीवित प्राणी वस्तु नहि मात्र।
 एहि स्मरण मनुष्यक क्रूरता कम करि सकैत अछि।
 करुणा प्रजातिक सीमा पार जाए।
 एक कुकुरक घायल पयर देखिकऽ रुकल हाथ मनुष्यक हृदय बचबैत अछि।
 पशु प्रति दया कखनो मनुष्य प्रति करुणाक अभ्यास।
 मुदा करुणा तथ्य संग।
 स्वास्थ्य, पोषण, परिस्थिति, पर्यावरण सभ देखू।
 नारा फेर पर्याप्त नहि।
 नैतिकता जीवनक वास्तविक जटिलता संग चलय।
 एक अन्य दीवार— स्त्री आ पुरुषक बीच बनाओल असमानता।
 देह भिन्न।
 मुदा गरिमा किएक भिन्न?
 प्रकृति किछु शारीरिक भेद देलक।
 समाज ओकर ऊपर कतेक सीढ़ी बना देलक।
 कियो ऊपर।
 कियो नीचे।
 कियो निर्णय।
 कियो पालन।
 कियो बाहरक दुनिया।
 कियो घरक दीवार।
 भेद जतय भूमिका बनि स्वतन्त्रता छिनैत, ओतय प्रश्न।

एक स्त्री माँ हो सकैत अछि।
मुदा केवल माँ नहि।
ओ विदुषी।
श्रमिक।
कलाकार।
नेतृत्वकर्ता।
मित्र।
नागरिक।
स्वप्न देखनिहार व्यक्ति।
मातृत्व ओकर एक सम्भावना, सम्पूर्ण परिभाषा नहि।
पुरुष पिता हो सकैत।
मुदा कठोरता ओकर एकमात्र धर्म किएक?
आँसू दुनू आँखि मे जल रखैत अछि।
कोमलता लिंग नहि पूछैत।
साहस सेहो नहि।
समता एकरूपता नहि।
सभ एकही काम करय— ई आवश्यक नहि।
मुदा अवसरक दुआर पूर्वनिर्धारित किएक?
“तूँ स्त्री, एहि लेल नहि।”
“तूँ पुरुष, एहि लेल नहि।”
ई दू वाक्य कतेक प्रतिभा अन्हारमे राखि देत।
समता अर्थ चयनक जगह।
एक स्त्री घर चुनय, सम्मान।
कार्यक्षेत्र चुनय, सम्मान।
मातृत्व चुनय, सम्मान।
न चुनय, तैयो गरिमा।
एक पुरुष पालन-पोषण करय, सम्मान।
रोय, सम्मान।
कमाई कम, तैयो मानव गरिमा कम नहि।
भूमिका स्वतन्त्र सहमति सँ, दबाव सँ नहि।
समाजक अदृश्य नैतिकता घरक काममे बहुत दिखैत अछि।
कुन बर्तन?
कुन बच्चा?
कुन बुजुर्ग?
कुन रोजगार?

कुन थाकबाक अधिकार?
 एक स्त्री कार्यालयसँ लौटि दोसर पारी किएक?
 अदृश्य श्रम यदि समाजक घर चलबैत, तँ ओकर मूल्य दृश्य हो।
 समता कानूनक पंक्ति मात्र नहि, रसोईक समय-विभाजन सेहो।
 वेतन।
 उत्तराधिकार।
 सुरक्षा।
 शिक्षा।
 निर्णय।
 शरीर पर अधिकार।
 सम्मान।
 एहि सभमे समता देह पबैत अछि।
 एक कानून कहैत— “समान।”
 मुदा सड़क कहैत— “डर।”
 घर कहैत— “चुप।”
 कार्यालय कहैत— “कम वेतन।”
 परम्परा कहैत— “सहन।”
 तखन कागजक समानता कतेक दूर चलि पेलक?
 नैतिकता व्यवहारक धरती पर मापू।
 समाजक असमानता कखनो धर्म, संस्कृति, परिवार, सम्मानक पोशाक पहिरि आबैत अछि।
 पोशाक सुन्दर, भीतर दमन।
 विवेक वस्त्र पार देखय।
 “ई परम्परा” कहलासँ प्रश्न समाप्त नहि।
 परम्परा मनुष्य लेल।
 मनुष्य परम्परा लेल बलि नहि।
 जतय परम्परा गरिमा बढ़ाबय, सहेजू।
 जतय अपमान, बदलू।
 मुदा परिवर्तन घृणा नहि।
 पुरान पीढ़ी शत्रु नहि।
 ओ अपन समयक भाषा लऽ कऽ जीवैत अछि।
 संवाद आवश्यक।
 नव स्वतन्त्रता आ पुरान सम्बन्ध बीच पुल बनब।
 कखनो क्रान्ति एक दिन नहि।
 पीढ़ी दर पीढ़ी छोट परिवर्तन।
 एक बेटी विद्यालय गेल।

एक स्त्री सम्पत्ति अपन नाम लिखौलक।
एक पिता बेटाक संग रसोईमे ठाढ़ भेल।
एक परिवार बेटीक निर्णय सुनलक।
ई सभ इतिहासक मौन क्रान्ति।
नैतिकता महान घोषणा नहि मात्र।
घरक छोट आदत सेहो।
एक अन्य प्रश्न— की जीवनक हरेक मूल्य समान?
यदि एक दिस व्यक्तिक सुख, दोसर दिस दोसरक जीवन, कुन?
यदि लाभ आ सत्य?
यदि परम्परा आ गरिमा?
यदि वैज्ञानिक प्रगति आ प्रकृति?
यदि स्वतन्त्रता आ सार्वजनिक सुरक्षा?
हमें मूल्यक क्रम चाही।
मुदा क्रम कठोर यंत्र नहि।
जीवनरक्षा महत्वपूर्ण।
गरिमा।
स्वतन्त्रता।
न्याय।
करुणा।
सत्य।
साझा हित।
ई अनेक तार एक नैतिक वीणा।
कखनो एक तार अधिक खींचल, राग टूटत।
सन्तुलन एक जीवित कला।
एक नियम सभ समय नहि।
मुदा कोनो नियम नहि— ई सेहो अन्धकार।
नैतिकता दू अतिशय बीच रस्ता।
कठोर जड़ता आ पूर्ण मनमानी।
एक दिस “सदैव एही।”
दोसर “जे मन से।”
बीचमे विवेक।
प्रमाण।
परिस्थिति।
मूल्य।
फल।

मानवीय गरिमा।
 अन्तरात्मा कखनो तुरन्त संकेत दैत अछि।
 एक दृश्य देखि मन कहैत— “गलत।”
 कोनो बच्चा पर निर्दयता।
 कोनो असहाय वृद्धक अपमान।
 कोनो पशु पर अनावश्यक यातना।
 हम पहिने तर्क नहि बनबैत।
 हृदय पहिने काँपैत अछि।
 ई नैतिक अन्तर्बोध मूल्यवान।
 मुदा अन्तर्बोध सदा निर्दोष?
 समाज जे पूर्वग्रह हमरा सिखौलक, ओ सेहो “स्वाभाविक” बुझाइ सकैत अछि।
 एक समय कतेक लोक जाति-भेद केँ “सहज” मानैत छल।
 स्त्रीक अधीनता “प्राकृतिक।”
 तखन भीतरक आवाज सेहो शिक्षित होइत अछि।
 अन्तर्बोध आ आलोचना दुनू चाही।
 हृदय काँपै।
 बुद्धि पूछय— किएक?
 इतिहास कहय— ई भावना कतय सँ आयल?
 दोसरक अनुभव कहय— हमरा एना लगैत अछि।
 तखन निर्णय गहिर।
 एक नैतिक जीवन अकेला व्यक्तिक भीतर नहि।
 समाज ओकर परिस्थिति बनबैत अछि।
 यदि गरीब बच्चा विद्यालय नहि जा सकय, ओकर चयन कतेक स्वतन्त्र?
 यदि स्त्री आर्थिक रूपेँ पूर्ण निर्भर, ओकर “सहमति” कतेक स्वतन्त्र?
 यदि रोगी चिकित्सा खर्च नहि उठा सकय, ओकर “विकल्प” कतेक वास्तविक?
 स्वतन्त्रता कागजक विकल्प नहि।
 वास्तविक क्षमता।
 अवसर।
 संसाधन।
 सुरक्षा।
 जानकारी।
 एहि बिनु “तूँ स्वतन्त्र छी” कहलासँ स्वतन्त्रता नहि।
 नैतिकता व्यक्तिक निर्णय आ सामाजिक संरचना दुनू देखय।
 केवल व्यक्ति केँ दोष देब सहज।
 केवल समाज केँ दोष देबो सहज।

सत्य बीचमे जटिल।

मनुष्य परिस्थिति सँ प्रभावित, मुदा पूर्ण कठपुतली नहि।

ओ चयन करि सकैत।

मुदा चयनक मूल्य ओकर वास्तविक विकल्प पर निर्भर।

एक भूखल मनुष्य आ एक सम्पन्न मनुष्यक “स्वतन्त्र चयन” एकहि धरती पर नहि।

न्याय ई भेद देखय।

कानून समान, मुदा समानता कखनो असमान परिस्थिति बुझि नव सहारा माँगैत अछि।

एक दौड़मे कियो सोझ रेखा सँ आरम्भ, कियो गड्ढा भीतर।

“सभकेँ समान नियम” कहलासँ दौड़ न्यायपूर्ण नहि।

कखनो अधिक सहारा समता होइत अछि।

नैतिकता गणितक “एक-एक” नहि।

ओ जीवनक विषमता पढ़ैत अछि।

मुदा सहारा स्थायी दासता न बने।

उद्देश्य समर्थ बनाबय।

स्वावलम्बन।

आत्मसम्मान।

अवसर।

एक नैतिक नीति कमजोरक हाथ पकड़ि ऊपर खींचय, मुदा ओकर हाथ सदा अपने हाथमे बन्द नहि रखय।

व्यक्ति अपन पयर पर ठाढ़ हो।

एहिऐ गरिमा।

नैतिक जीवन केवल समस्या नहि।

ओ सौन्दर्यो रखैत अछि।

एक चिकित्सक राति तीन बजे फेर वार्डमे लौटैत अछि।

एक रक्तदाता अपरिचित लेल अपन रक्त दैत अछि।

एक स्त्री दोसर स्त्रीक मदद करैत अछि जाहि पर ओकर समुदाय हँसैत।

एक किसान वनक पुरान वृक्ष काटए सँ नकारैत।

एक युवक घायल पशु केँ सड़कसँ उठबैत।

एक परिवार गंभीर रोगी संग अन्तिम राति शान्ति सँ बैसल।

ई सभ नैतिकता केर कविता।

कोनो बड़ सिद्धान्त नहि, मुदा मानवता ओतय अपन सभसँ साफ अक्षर लिखैत अछि।

नैतिकता तखन भार नहि।

ओ जीवन केँ गरिमा देनिहार लय।

“की करू?” प्रश्न धीरे-धीरे “केना मनुष्य बनू?” दिस बढ़ैत अछि।

कर्म एक दिनक।

चरित्र दीर्घकालिक।

एक ठीक निर्णय महत्त्वपूर्ण।
 मुदा ठीक निर्णय बारम्बार करबाक वृत्ति आरो महत्त्वपूर्ण।
 करुणा एक क्षण, फेर स्वभाव।
 सत्य एक वाक्य, फेर चरित्र।
 न्याय एक निर्णय, फेर जीवन-दृष्टि।
 नैतिकता बाहरक नियम भीतरक स्वर बनि जाइत अछि।
 तखन कियो देखैत नहि, तैयो हाथ रुकैत अछि।
 कियो प्रशंसा नहि, तैयो सेवा होइत अछि।
 कियो दण्ड नहि, तैयो झूठ कठिन।
 एहिऐ स्वतन्त्र नैतिकता।
 भय नहि।
 स्वीकृति नहि।
 भीतरक परिपक्व सहमति।
 मुदा भीतरक स्वर कखनो आराम नहि दैत।
 ओ फेर पूछैत अछि—
 तोर भोजन कतय सँ आयल?
 ककर श्रम?
 ककर पशु?
 ककर जल?
 ककर वन?
 तोर कपड़ा ककर हाथ?
 तोर फोनक खनिज कतय सँ?
 तोर सुविधा ककर अदृश्य दाम?
 आधुनिक जीवन नैतिक सम्बन्ध दूर लुका दैत अछि।
 दुकानमे वस्तु साफ, ओकर इतिहास अदृश्य।
 एक सस्ता कपड़ा पाछाँ ककर कम मजदूरी?
 एक चमकदार वस्तु पाछाँ ककर नदी दूषित?
 एक मांसक थारी पाछाँ ककर जीवन?
 एक तेज डिलिवरी पाछाँ ककर थाकल शरीर?
 उपभोक्ता सेहो नैतिक व्यक्ति।
 पैसा देब अर्थ एक व्यवस्था केँ मत देब।
 ककर उत्पादन समर्थन?
 ककर श्रम-शर्त?
 ककर पर्यावरण?
 जीवनक दूरस्थ सम्बन्ध नैतिकता केर नव मानचित्र।

घरक चारु कात आब सम्पूर्ण पृथ्वी जुड़ल।
एक क्लिक दूर देशक कारखाना छूबैत अछि।
एक खरीद समुद्रक कचरा बढ़ा सकैत अछि।
एक चयन छोट, मुदा करोड़ लोकक छोट चयन विशाल प्रभाव।
व्यक्ति अकेला नहि।
समूह शक्ति।
नैतिकता व्यक्तिगत आ सामूहिक दुनू।
एक नागरिक एक वोट।
एक उपभोक्ता एक खरीद।
एक परिवार एक आदत।
एक संस्था एक नीति।
एक राज्य एक कानून।
सभ स्तर एक-दोसरक संग जुड़ल।
पर्यावरणीय न्याय एतय नव प्रश्न उठबैत अछि।
धुआँ कुन साँस लैत?
कचरा ककर बस्ती लग?
बाढ़ ककर घर पहिने लेत?
जलवायु परिवर्तनक दाम सभ बराबर देत?
जे सभसँ कम प्रदूषण कएलक, कखनो ओही सभसँ अधिक पीड़ा भोगैत अछि।
न्याय केवल मानव-मानव बीच नहि, देश-देश, पीढ़ी-पीढ़ी बीच सेहो।
धनी समाजक उपभोग गरीब तटवर्ती गामक जलस्तर बढ़ा सकैत।
तखन नैतिकता सीमा-पार।
राष्ट्र महत्त्वपूर्ण, मुदा वायुमण्डल सीमारेखा नहि मानैत।
एक धरती साझा।
जिम्मेदारी सेहो साझा, मुदा समान नहि।
जे अधिक हानि कएलक, ओकर भार अधिक?
तराजू फेर।
विकास आ न्याय फेर एक-दोसर केँ देखैत अछि।
एक नैतिक दृष्टि समाजक स्त्रीक स्थिति देखैत अछि तँ केवल कानून नहि, दैनिक जीवन।
विद्यालयमे नामांकन।
रोजगारमे वेतन।
घरमे निर्णय।
सड़क पर सुरक्षा।
स्वास्थ्यसेवा।
मातृत्वक भार।

कामक दूहरी पारी।
 राजनीति में आवाज।
 समता बहुस्तरीय।
 एक कानून दरबज्जा खोलि सकैत।
 मुदा मनक पूर्वग्रह अन्दर पहरदार रहि सकैत।
 कानून आवश्यक।
 शिक्षा आवश्यक।
 आर्थिक स्वावलम्बन।
 संस्कृतिक परिवर्तन।
 पुरुषक सहभागिता।
 स्त्रीक स्वर।
 सभ एक साथ।
 नैतिक परिवर्तन एक चक्का नहि।
 रथक अनेक चक्का।
 एक चक्का रुकल, यात्रा डगमग।
 परिवार यदि कहैत— “समानता,” मुदा बेटीक सम्पत्ति नहि, वाक्य अधूर।
 विद्यालय कहैत— “समान,” मुदा शौचालय नहि, अवसर अधूर।
 कार्यालय कहैत— “योग्यता,” मुदा मातृत्व कारण दण्ड, न्याय अधूर।
 समाज कहैत— “देवी,” मुदा सड़क असुरक्षित, सम्मान अधूर।
 नैतिकता शब्दक सजावट उतारि व्यवहारक देह देखैत अछि।
 एहि देहरी पर मनुष्य बारम्बार असफल सेहो होइत अछि।
 बेठीक निर्णय।
 देर सँ बुझल सत्य।
 कोनो प्रिय केँ देल घाव।
 कोनो कमजोरक मौन अनदेखल।
 नैतिकता पूर्ण मनुष्यक पुरस्कार नहि।
 ओ अपूर्ण मनुष्यक सुधारक रास्ता।
 भूल मानू।
 क्षमा माँगू।
 हानि जतय सम्भव ठीक करू।
 आदत बदलू।
 अपराधबोध यदि केवल अपने केँ जला दे, कम उपयोगी।
 पश्चात्ताप यदि कर्म बदलय, तखन नैतिक सृजन।
 मनुष्य अपने इतिहासक कैदी नहि।
 ओ नव निर्णय ले सकैत अछि।

ई नैतिक आशा।

एक क्रूर मन करुण हो सकैत।

एक पूर्वाग्रही व्यक्ति दोसरक कथा सुनि बदलि सकैत।

एक लोभी मनुष्य हानि देखिकऽ मर्यादा सीखि सकैत।

परिवर्तन सम्भव किएक तँ मूल्य जीवित।

नैतिकता स्थिर पत्थर नहि।

ओ जीवनक संग चलैत मुदा दिशा बचबैत कम्पास।

नव समस्या आबैत अछि।

नव तकनीक।

नव चिकित्सा।

नव पर्यावरणीय संकट।

नव परिवारक रूप।

नव शरीरक अधिकार।

नव जैविक संभावना।

पुरान नियम सभ उत्तर नहि देत।

मुदा पुरान मूल्य किछु दीप दैत।

करुणा।

गरिमा।

न्याय।

सत्य।

अहिंसा।

उत्तरदायित्व।

स्वतन्त्रता।

समता।

एहि दीपसभ लऽ कऽ नव सुरंगमे प्रवेश।

सुरंग नव, उजासक मूल मानवीय।

कखनो विज्ञान कहैत— “हम करि सकैत छी।”

नैतिकता पूछैत— “करबाक चाही?”

ई दू वाक्यक बीच सभ्यता केर भविष्य।

करि सकब आ करबाक उचितता एक नहि।

एक तकनीक भ्रूणक गुण चुनि सकैत।

एक मशीन जीवन लम्बा करि सकैत।

एक डेटा मनुष्यक गोपनीयता खोलि सकैत।

एक प्रयोग प्रजाति बदलि सकैत।

शक्ति तेज।

विवेक पाछाँ न रहय।
 सभ्यता यदि केवल क्षमता बढ़ाबय, मूल्य नहि, ओ बालकक हाथमे तेज तलवार।
 नैतिकता हाथ रोकैत नहि सदा।
 कखनो ओ हाथ ठीक दिशा दैत अछि।
 विज्ञान आ नैतिकता शत्रु नहि।
 एक कहैत— “की सम्भव?”
 दोसर— “की उचित?”
 एक— “केना?”
 दोसर— “किएक?”
 दुनू भेटि मानवीय प्रगति रचि सकैत।
 प्रगति जतय शक्ति आ करुणा एक संग बढ़य।
 ज्ञान आ जिम्मेदारी।
 स्वतन्त्रता आ मर्यादा।
 एक दिन हम निर्णयक धधकैत देहरी पर फेर ठाढ़ होएब।
 हाथमे कोनो पूर्ण पुस्तक नहि।
 मुदा किछु दीप होएत।
 एक दोसरक दुःख देखबाक।
 एक अपने पक्षपात पहिचानबाक।
 एक प्रकृति केँ वस्तु नहि, जीवन-जाल बुझबाक।
 एक स्त्री-पुरुष दुनूक गरिमा समान देखबाक।
 एक रोगीक स्वर सुनबाक।
 एक अजन्मा जीवनक संभावना गम्भीरता सँ तौलबाक।
 एक पशुक पीड़ा महत्त्वपूर्ण मानबाक।
 एक भविष्यक पीढ़ीक अधिकार याद रखबाक।
 एक संसाधन बाँटैत न्याय देखबाक।
 एक अपन स्वतन्त्रता दोसरक श्वास संग सन्तुलित करबाक।
 ई दीप अलग-अलग छोट।
 मुदा अन्हार पूर्ण नहि रहत।
 हम बेठीक हो सकैत छी।
 फेर जाँचब।
 दोसरक आवाज सुनब।
 नव तथ्य आबि निर्णय बदलि सकैत।
 विनम्रता नैतिकता केर एक आवश्यक दीप।
 अचूक होएबाक दावा कखनो सभसँ खतरनाक अन्हार।
 जे कहैत— “हम कखनो बेठीक नहि,” ओ दोसरक पीड़ा सुनब बन्द करि सकैत।

नैतिक जीवन खुलल कान माँगैत अछि।
आँखि जे किनार देखय।
हृदय जे पीड़ा महसूस करय।
बुद्धि जे फल तौलय।
विवेक जे नियम आ परिस्थिति भेटाबय।
साहस जे कठिन निर्णय लय।
आ विनम्रता जे फेर पूछि सकय— “की हम ठीक छलहुँ?”
एहि प्रश्नक जीवित रहनाइ ही कदाचित् मानवता केर सभसँ सुरक्षित पहरेदारी।
देहरी धधकैत रहत।
जीवन सहज नहि होएत।
मुदा जतय निर्णय केवल लाभ नहि, मनुष्यता देखत—
ओतय उजास कनेक अधिक होएत।
जतय प्रकृति केवल संसाधन नहि, सहजीवन—
उजास।
जतय स्त्री केवल भूमिका नहि, स्वतन्त्र व्यक्ति—
उजास।
जतय रोगी केवल केस नम्बर नहि, मनुष्य—
उजास।
जतय अजन्मा जीवन आ माताक जीवन दुनू गम्भीरता सँ सुनल—
उजास।
जतय पशु केवल वस्तु नहि, संवेदनशील जीव—
उजास।
जतय भविष्य केवल काल्हि नहि, हमर आइक उत्तरदायित्व—
उजास।
जतय नियम मानवता बचाबय, आ करुणा नियम केँ मानवीय रखय—
उजास।
आ जतय एक मनुष्य कठिन निर्णयक पहिने क्षण भरि रुकि पूछय—
“एहि चयनमे ककर जीवन छिपल अछि?”
ओहि क्षण नैतिकता पुस्तकसँ उतरि श्वास बनि जाइत अछि।
आ धधकैत देहरी पार करैत मनुष्य कदाचित् कनेक अधिक मनुष्य भऽ उठैत अछि।

माटिक नाड़ीमे हमर श्वास

भोरक पहिल हवा खिड़की पर कोनो दस्तक नहि दैत, सोझ फेफड़ामे अपन घर बना लैत अछि।
हम सोचैत छी— ई हमर श्वास।
मुदा एहि श्वासक आधा कतय सँ आयल?

कुन पात राति भरि अन्हारमे हमर लेल हरियर उजास तैयार करैत रहल?
 कुन वन दूर पहाड़ पर अदृश्य रूपेँ हमर छाती भरि रहल?
 कुन नदीक वाष्प बादल बनि हमर आँगन आबि रहल?
 हम अकेला शरीर कतय?
 हमर रक्तमे जल।
 हड्डीमे माटिक लवण।
 श्वासमे वृक्षक दान।
 देहक तापमे सूर्यक पुरान आगि।
 हम धरतीक बाहर नहि, धरतीक चलैत-फिरैत एक अंश।
 मुदा हम बहुत दिन अपने केँ मालिक कहलहुँ।
 वन कहलहुँ— संसाधन।
 नदी— सिंचाई।
 पहाड़— खनिज।
 पशु— उपयोग।
 माटि— उत्पादन।
 आकाश— उद्योगक खाली छत।
 एक-एक नाम लगाबैत हम जीवित संसार केँ गोदाम बना देलहुँ।
 मुदा गोदाम कखनो बरखा बनबैत अछि?
 गोदाम पक्षीक घोंसला पालैत अछि?
 गोदाम माटिक भीतर केंचुआक नन्हि सुरंग बनबैत अछि?
 गोदाम बसन्त जानैत अछि?
 वन लकड़ीक गिनती नहि।
 वन एक संग हजारों गुप्त सम्बन्ध।
 एक पात एक कीटक आश्रय।
 एक कीटक एक पक्षी भोजन।
 एक पक्षी दूर जंगलक बीज फैलाबैत।
 एक बीज नव वृक्ष।
 एक वृक्ष माटि धारैत।
 माटि जल सहेजैत।
 जल गाम जीवित रखैत।
 गाम गीत रचैत।
 गीत स्मृति बचबैत।
 एक वृक्ष काटलासँ केवल एक तना नहि गिरैत।
 कतेक अदृश्य धागा संग-संग टूटैत अछि।
 हमर आँखि तना देखैत, धरती सम्पूर्ण जाल महसूस करैत अछि।

नदी केवल जल नहि।
ओ पर्वतक पिघलल स्मृति।
मेघक यात्रा।
माछक घर।
किसानक आशा।
स्त्रीक घड़ा।
बच्चाक खेल।
घाटक दीप।
शहरक प्यास।
नदी बहैत अछि तँ एक सभ्यता अपन नाड़ी सुनैत अछि।
जखन नदी काली पड़ैत, केवल पानी दूषित नहि।
गामक हँसी हलुक पड़ैत।
माछ गायब।
कुआँ खार।
माटि थाकल।
शरीर बीमार।
हमर विकासक धुआँ हमरहि फेफड़ामे लौटैत अछि।
धरती प्रतिशोध नहि लेत।
ओ सम्बन्धक सादा नियम पालन करैत अछि।
जे हवामे देब, श्वासमे लौटत।
जे जलमे देब, रक्तमे लौटत।
जे माटिमे देब, अन्नमे लौटत।
हम अपने घरक दीवार पर धुआँ लिखि सोचैत छी— ओ बाहर रहि जाएत।
बाहर कतय?
ई सभसँ पैघ भ्रम।
घर केवल चार दीवार नहि।
घर आकाश धरि फैलल।
जंगल धरि।
नदीक उद्गम धरि।
समुद्रक लहर धरि।
दूर हिमक श्वेत मौन धरि।
एक पृथ्वी हमर विस्तृत घर।
हमर छोट रसोईमे जकर गैस जरैत, ओकर धुआँ आकाशक एकहि पृष्ठ पर लिखल जाइत अछि।
एक शहरक कारखाना दूर देशक हिम पिघला सकैत।
एक वनक आगि दूर नगरक सूर्य धुँधला करैत।

सीमा नक्शामे।
हवा नक्शा नहि पढ़ैत।
जल पासपोर्ट नहि माँगैत।
पक्षी वीजा नहि लैत।
ऋतु ककरो राष्ट्रीयता नहि जानैत।
धरती एक अखंड शरीर।
हम ओकर एक कोशिका।
मुदा हम अपने केँ सम्पूर्ण शरीर मानि लेलहुँ।
एहिए अहंकारक पहिल रोग।
एक कोशिका यदि केवल अपने बढ़य, बाकी शरीरक सन्तुलन भुला दे, ओ रोग बनि सकैत अछि।
विकास यदि केवल बढ़नाइ, ओ जीवन नहि हो सकैत।
वृक्ष बढ़ैत, मुदा सीमा जानैत।
जड़ जतबा चाही, ततबा जल लेत।
पात सूर्य पिबैत, मुदा आकाश निगलैत नहि।
पक्षी फल खाइत, मुदा सम्पूर्ण वन अपन नहि कहैत।
मनुष्य किएक असीम चाहना अपन अधिकार मानि लेल?
एक घर।
फेर बड़ घर।
एक गाड़ी।
फेर दोसर।
एक वस्त्र अखनो ठीक, मुदा नव फैशन।
एक फोन चलैत, मुदा नव चमक।
बाजार कानमे धीरे कहैत— “अखन पूर्ण नहि।”
“आरो खरीदू।”
“आरो।”
“आरो।”
धरती एक किनार पर थाकि पूछैत— “कतेक?”
इच्छाक कोनो अन्तिम थारी नहि।
मुदा पृथ्वी सीमित।
खनिज सीमित।
जल सीमित।
वन सीमित।
माटिक धैर्य सीमित।
असीम लालसा आ सीमित धरती बीच कुन जीतत?
यदि लालसा जीतल, मनुष्य हारत।

किएक तँ धरती हारल अर्थ हमर विस्तृत शरीर हारल।
सादगी अभाव नहि।
ओ धरतीक मर्यादा संग तालमेल।
“पर्याप्त” एक सुन्दर शब्द।
हमर पुरान भाषासभमे एहि शब्दक गन्ध रहल अछि।
थारीमे जतेक चाही।
कुआँ सँ जतेक चाही।
वृक्ष सँ फल, जड़ि नहि।
गाय सँ दूध, जीवन नहि।
धरती सँ अन्न, उर्वरता नहि छीनू।
लेब, मुदा फेर देब।
ई प्राचीन लेन-देन जीवनक नैतिकता।
बीज माटि केँ फेर बीज देत।
पात गिरि खाद।
नदी समुद्र, समुद्र मेघ, मेघ नदी।
प्रकृति कचरा बहुत कम रचैत अछि।
एकक अन्त दोसरक आरम्भ।
मनुष्य एहन वस्तु रचैत जे सदियों माटि नहि बनत।
हम चक्र तोड़ि सोझ रेखा बनौने छी—
निकालू।
बनाउ।
खरीदू।
फेंकू।
फेर निकालू।
रेखा एक दिन कचरा-पर्वत पर रुकत।
चक्र फेर सीखबाक समय।
वस्तु एहन जे लौटि सकय।
धातु फेर धातु।
कागज फेर कागज।
जल फेर स्वच्छ जल।
भोजनक अवशेष फेर माटि।
जीवन फेर जीवनक काम आबय।
धरती हमरा गोल होएबाक पाठ दैत अछि।
ऋतु गोल।
दिन-राति गोल।

जलचक्र गोल।
 जीवन-मृत्यु गोल।
 हम अर्थव्यवस्था केँ गोल किएक नहि करि सकैत छी?
 विकास अर्थ केवल ऊँच इमारत नहि।
 एक स्वच्छ नदी सेहो विकास।
 एक उर्वर खेत।
 एक सुरक्षित वन।
 एक साफ हवा।
 एक गाम जतय युवा काम पाबय आ नदी मरो नहि।
 एक शहर जतय बस चलय, आकाश दिखय।
 एक उद्योग जतय रोजगार हो, मुदा पड़ोसक बच्चा दमक रोग न पाबय।
 विकास मनुष्य आ प्रकृति बीच युद्ध नहि।
 युद्धमे कियो जीतत नहि।
 हम धरतीक विरुद्ध लड़ि धरती पर ही रहब कतय?
 साँच विकास सम्बन्धक कला।
 एक हाथ मानव आवश्यकता।
 दोसर प्रकृतिक धैर्य।
 दुनू मिलि काम करय।
 सड़क बनय, मुदा जंगलक रक्त-नस पूरी न काटय।
 बाँध बनय, मुदा नदीक जीवन समझि।
 ऊर्जा मिलय, मुदा आकाश विषाक्त न हो।
 खाद्य बढ़य, मुदा माटि मरि नहि जाए।
 घर बनय, मुदा तालाबक श्वास बन्द नहि।
 विज्ञान एतय शत्रु नहि।
 ओ अद्भुत आँखि दैत अछि।
 कतेक कार्बन?
 कतेक जल?
 कतेक ताप?
 कतेक प्रजाति गायब?
 कतेक माटि क्षरण?
 मापन सत्यक एक रूप।
 मुदा संख्या अकेला नैतिक निर्णय नहि।
 एक वनक मूल्य कतेक रुपैया?
 काठक मूल्य गणू।
 मुदा पक्षीक गीत?

शिशुक ठंडा छाया?

पर्वतक सौन्दर्य?

एक समुदायक पवित्र स्मृति?

भविष्यक अजन्मा सन्तानक जल?

तराजू रुपैया पार जाइत अछि।

किछु मूल्य बाजार नहि मापि सकैत।

एहि अमाप्य चीजसभ कतेक बेर जीवनक सभसँ आवश्यक होइत अछि।

शान्ति।

स्वच्छ हवा।

निर्मल जल।

वनक मौन।

पक्षीक सुबह।

माटिक गन्ध।

ई सभ मुफ्त लगैत अछि जतबा धरि गायब नहि हो।

गायब भेलाक पाछाँ हम मूल्य बुझैत छी।

एक शहर बोतलमे हवा बेचए लगय, तखन हमर विकास कतेक सफल?

एक गाम टैंकरक जल पर जीबय, मुदा ओकर पुरान तालाब मॉल बनि गेल— ई प्रगति ककर?

प्रश्न कठिन होएबाक चाही।

किएक तँ सहज उत्तर बहुत महँगा पड़ि सकैत अछि।

प्रकृति केवल मनुष्य लेल नहि।

ई विचार अहंकारक एक भारी दरबज्जा खोलैत अछि।

एक नीलकंठ हमरा कुन उपयोग?

एक जंगली फूल जकर नाम हम नहि जानैत, कुन काम?

एक छोट कीट जकर तस्वीर कियो नहि खींचैत, ओ किएक जीवित रहय?

यदि उत्तर केवल “हमरा उपयोग” हो, तँ जीवनक कतेक रूप अनावश्यक घोषित भऽ जाएत।

मुदा एक जीव केवल हमर काम लेल जन्मल किएक मानू?

ओकर अपन जीवन।

अपन संघर्ष।

अपन भय।

अपन भोजन।

अपन सन्तान।

अपन आकाश।

जीवन अपने आप मे एक मूल्य हो सकैत अछि।

एहि बोधसँ मनुष्य राजा सँ सहयात्री बनैत अछि।

धरती राज्य नहि, समुदाय।

मानव, पशु, वृक्ष, नदी, माटि, सूक्ष्म जीव— सभ एक विशाल सहजीवन।
 कियो अकेला नहि।
 कियो पूर्णतः स्वतन्त्र नहि।
 स्वतन्त्रता सम्बन्ध भुलाबय नहि।
 एक वृक्ष स्वतन्त्र, मुदा माटि पर निर्भर।
 एक पक्षी आकाशमे मुक्त, मुदा वन चाही।
 मनुष्य विचारमे स्वतन्त्र, मुदा श्वास साझा।
 ई निर्भरता दासता नहि।
 जीवनक संगीत।
 स्वर अपन, राग साझा।
 हम रागक एक स्वर।
 सभसँ तेज होएबाक आवश्यकता नहि।
 ठीक स्थान आ ठीक लय आवश्यक।
 वनक मौन हमें ई नम्रता सिखबैत अछि।
 एक पुरान वृक्ष हमर सम्पूर्ण जीवन सँ अधिक वर्ष ठाढ़ रहि सकैत अछि।
 हम ओकर समक्ष कतेक क्षणिक।
 तैयो कुल्हाड़ी हमर हाथमे।
 शक्ति आ विनम्रता एक संग रहनाइ कठिन।
 मुदा एहि नैतिकता।
 करि सकैत छी, एहि लेल करब अनिवार्य नहि।
 काटि सकैत, मुदा काटबाक चाही?
 बाँधि सकैत, मुदा कतेक?
 खनन सकैत, मुदा कतय धरि?
 जीत सकैत, मुदा ककर विरुद्ध?
 विज्ञान हाथ दैत, विवेक दिशा।
 शक्ति तेज, मुदा मूल्य लगाम।
 लगाम घोड़ा मारबाक नहि, ठीक रस्ता रखबाक।
 एक आधुनिक समाज यदि केवल उपभोग सिखाबय, ओ अपन सन्तान केँ खाली धरती दे सकैत अछि।
 विद्यालय बच्चा केँ गणित सिखाबय, मुदा एक वृक्षक मूल्य सेहो।
 विज्ञान सिखाबय, मुदा नदी संग सम्बन्ध सेहो।
 इतिहास सिखाबय, मुदा जंगलक इतिहास कतय?
 भूगोल नक्शा, मुदा माटिक स्पर्श?
 शिक्षा यदि धरती सँ काटि दे, ज्ञान हवा मे लटकत।
 बच्चा एक बीज रोपय।
 एक वर्ष ओकर बढ़नाइ देखय।

पात झड़ैत देखय।

पक्षी आबैत।

कीट चलैत।

ओ पुस्तक बाहरक पारिस्थितिकी नहि, जीवित सम्बन्ध सीखत।

प्रकृति केवल “विषय” नहि।

शिक्षक।

धीमा शिक्षक।

ओ धैर्य सिखबैत।

बीज आइ रोपल, फल वर्ष बाद।

ओ सीमा सिखबैत।

ग्रीष्म कहैत— जल सहेजू।

ओ चक्र सिखबैत।

पात गिरल, मृत नहि— माटि बनल।

ओ विविधता सिखबैत।

एक खेतमे केवल एक फसल रोग समक्ष कमजोर।

विविधता लचक।

समाजो एना?

एक भाषा मात्र?

एक विचार मात्र?

एक जीवन-शैली मात्र?

प्रकृति अनेकता मे सन्तुलन रचैत अछि।

समाज सेहो अनेकता सँ जीवित हो सकैत।

पारिस्थितिकी केवल वन नहि, समाजक दर्पण सेहो।

जैना वनमे एक प्रजाति सभ ठाम ले ले, सन्तुलन टूटैत।

समाजमे एक वर्ग सभ संसाधन ले ले, सन्तुलन टूटैत।

जैना नदीक प्रवाह रोकलासँ नीचाँक गाम सूखैत, सम्पत्तिक प्रवाह रोकलासँ समाजक नीचाँक जीवन सूखि सकैत।

जैना माटि बारम्बार एकहि फसल सँ थाकैत, मनुष्य एकहि काम, एकहि दौड़, एकहि उपभोग सँ थाकैत।

प्रकृति सन्तुलनक रूपक देती।

मुदा रूपक अर्थ समानता नहि।

समाजक न्याय मनुष्यक सचेत निर्णय माँगैत।

जंगल कानून नहि बनबैत।

मनुष्य बनबैत।

एहि लेल हमर जिम्मेदारी आरो पैघ।

हम प्रकृतिक नियम समझि नैतिक दिशा रचि सकैत छी।

एक गहिर दृष्टि कहैत— प्रकृतिक सम्पूर्ण जाल मूल्यवान।

एक उथल दृष्टि कहैत— प्रकृति बचाउ किएक तँ मनुष्य संकटमें।
 दुनू कखनो एकहि कर्म दिस लऽ जा सकैत।
 वन बचाउ।
 नदी बचाउ।
 मुदा हृदयक कारण अलग।
 एक— “हमरा ऑक्सीजन चाही।”
 दोसर— “वनक अपन जीवन सेहो अछि।”
 पहिल बेठीक नहि।
 मुदा दोसर वृत्त विस्तृत करैत।
 स्वार्थ सँ सहजीवन दिस।
 “प्रकृति हमर लेल” सँ “हम प्रकृतिक भीतर।”
 ई छोट वाक्य-परिवर्तन सभ्यता बदलि सकैत अछि।
 घरक बच्चा यदि कहय— “ई वृक्ष हमर,” हम कहि सकैत— “हाँ, आ हम ओकरो छी।”
 ओकर छाया हमर।
 हमर देखभाल ओकर।
 सम्बन्ध दुनू दिशा।
 स्वामित्व एक दिशा।
 धरती केँ स्वामित्व कम, सहभागिता अधिक चाही।
 कानून सेहो एहि सम्बन्ध सीखि सकैत।
 नदी केवल सम्पत्ति नहि।
 वन केवल राजस्व नहि।
 माटि केवल प्लॉट नहि।
 किछु वस्तु साझा जीवन-धरोहर।
 जतय निजी अधिकार साझा भविष्य तोड़य, मर्यादा चाही।
 एक व्यक्ति अपन जमीन पर वृक्ष काटैत, मुदा हवा केवल ओकर नहि।
 एक कारखाना अपन भूमि पर धुआँ छोड़ैत, मुदा आकाश साझा।
 एक उद्योग जल लेत, मुदा नदी नीचाँ हजार घर।
 निजी आ सार्वजनिक बीच प्रकृति एक पुल।
 अधिकार उत्तरदायित्व माँगैत।
 “मोर” शब्दक पाछाँ “हमर सभक” एक विशाल छाया।
 गामक पुरान साझा चरागाह एहि छाया जानैत छल।
 तालाब एक व्यक्ति नहि।
 वनक किछु भाग साझा।
 पानी साझा।
 साझापन केवल अर्थशास्त्र नहि, नैतिकता।

जे साझा ओकर देखभाल ककर?

“ककरो नहि” कहलासँ नष्ट।

“सभक” कहलासँ जिम्मेदारी यदि विभाजित, तैयो नष्ट।

साझा संसाधन साझा संस्था माँगैत।

नियम।

लोक-सहभागिता।

विश्वास।

निगरानी।

मर्यादा।

प्रकृति-रक्षा केवल दूर सरकारक काम नहि।

गामक पानी गाम जानैत।

स्थानीय समुदाय वनक लय जानैत।

मुदा स्थानीय ज्ञान अचूक नहि।

बाजारक दबाव, गरीबी, जनसंख्या ओकरा बदलि सकैत।

एहि लेल स्थानीय अनुभव आ वैज्ञानिक ज्ञान भेटय।

एक कहय— “एहि पहाड़ पर एहि माह चराई कम।”

दोसर मापन करे— माटि कतेक क्षतिग्रस्त।

दुनू मिलि नीति।

ज्ञान सहयोग बनय, अहंकार नहि।

एक प्रयोगशाला धरतीक सम्पूर्ण सत्य नहि।

एक लोककथा सेहो नहि।

दुनू खिड़की।

आकाश विस्तृत।

विकासक एक आ प्रश्न— ककर विकास?

शहरक विद्युत लेल गामक नदी बाँधल।

शहरक घर लेल पहाड़क वन कटल।

शहरक उद्योग लेल खनन, मुदा आदिवासी विस्थापित।

लाभ एक ठाम।

हानि दोसर।

तराजू यदि केवल कुल धन गणत, ककरो दुःख गायब हो सकैत।

विकास वितरण सेहो।

ककरा लाभ?

ककरा हानि?

ककर सहमति?

ककर भूमि?

ककर स्मृति?

एक पर्वत कोनो समुदाय लेल खनिज नहि, पूर्वजक घर।

एक नदी केवल मेगावाट नहि, जीवनक धार्मिक आ सांस्कृतिक धुरी।

अर्थ बहुस्तरीय।

नीति यदि केवल एक मूल्य देखत, अन्य मूल्य कुचलि सकैत अछि।

पर्यावरणीय न्याय कहैत— प्रकृतिक हानि सभ पर समान नहि पड़ैत।

धनी ठंढा कमरा खरीदैत।

गरीब तप्त छत नीचे।

धनी बोतल जल।

गरीब दूषित कुआँ।

धनी स्थान बदलैत।

गरीब बाढ़क मैदानमे फँसल।

जलवायु एक, प्रभाव असमान।

तखन प्रकृति-रक्षा सामाजिक न्यायसँ अलग कतय?

एक हरा शहर जतय गरीब बाहर धकेलल, कतेक न्यायपूर्ण?

एक राष्ट्रीय उद्यान जतय पीढ़ी-दर-पीढ़ी रहनिहार बिनु सम्मान उजाड़ल, कतेक नैतिक?

संरक्षण मनुष्य-विरोधी नहि हो।

मुदा मनुष्यक हरेक चाहना प्रकृति पर राज सेहो नहि।

सन्तुलन फेर कठिन।

वन बचय।

समुदाय जीवय।

जीविका हो।

शिकार नियन्त्रित।

पर्यटन मर्यादित।

ज्ञान साझा।

लाभ साझा।

ई एक जीवित समझौता।

पर्यावरणक नैतिकता कठोर नारा नहि।

दीर्घ संवाद।

प्रकृति आ समाज।

आइ आ भविष्य।

मानव आ अन्य जीव।

स्थानीय आ वैश्विक।

आवश्यकता आ लालसा।

स्वतन्त्रता आ मर्यादा।

विकास आ संरक्षण।

दुनू पल्ला देखू।

मुदा किछु सीमा स्पष्ट सेहो।

नदीमे विष छोड़ि “विकास” कहल नहि जा सकैत।

वन पूर्ण उजाड़ि “रोजगार” कहल लम्बा नहि टिकत।

प्रजाति मिटा “प्रगति” कहल गरीब भविष्य।

सीमा प्रकृति अपने एक दिन लगा देत।

संसाधन खत्म।

माटि बंजर।

जल सूखल।

ताप बढ़ल।

तखन चयन नहि, मजबूरी।

बुद्धिमानी मजबूरी पहिने मर्यादा चुनब।

स्वेच्छिक संयम विवश अभावसँ सुन्दर।

आइ कनेक कम उपभोग काल्हि अधिक जीवन।

आइ एक वृक्ष बचा काल्हि एक छाया।

आइ एक तालाब बचा काल्हि एक गामक जल।

आइ एक प्रजाति बचा काल्हि एक अज्ञात औषधि सेहो हो सकैत।

मुदा भविष्यक उपयोग नहि तैयो जीवन बचब योग्य।

ई गहिर करुणा।

धरती प्रति भक्ति यदि किछु हो, ओ केवल फूल चढ़ाबय नहि।

कचरा कम।

जल सहेजू।

वृक्ष रोपू।

माटि नहि जहराउ।

पशु प्रति अकारण क्रूरता नहि।

उपभोग पर प्रश्न।

ई दैनिक पूजा।

नदी माता कहल, मुदा नाली बना देल— शब्द कतेक दुखी होएत।

धरती माता कहल, मुदा माटि विषाक्त— भक्ति कतय?

आस्था यदि व्यवहार नहि बदलय, ओ केवल ध्वनि।

प्रकृति प्रति श्रद्धा कर्म माँगैत अछि।

मुदा प्रकृति पूजाक नाम पर अन्धविश्वास नहि।

ज्ञान संग श्रद्धा।

मापन संग प्रेम।

विज्ञान संग मर्यादा।
 ई नव समन्वय।
 एक पुरान कथा कहैत— वृक्षमे जीवन।
 विज्ञान कहैत— प्रकाश-संश्लेषण, तंत्र, जैव विविधता।
 दुनू भाषा अलग, मुदा एक व्यवहार दिस लऽ जा सकैत—
 वृक्ष केँ केवल वस्तु नहि समझू।
 संस्कृति यदि प्रकृति संग सम्बन्धक स्मृति रखैत, ओ आइ नव अर्थ पाबि सकैत अछि।
 मुदा हरेक पुरान रूढ़ि हरित नहि।
 आलोचना रहय।
 प्रेम रहय।
 दुनू संग।
 गामक पवित्र उपवन जतय पीढ़ीसँ वृक्ष नहि काटल, ओ जैव-विविधता बचा सकैत।
 तालाबक उत्सव जल-स्मृति बचा सकैत।
 फसलक पर्व माटि आ ऋतुक आभार।
 ई सभ संस्कृति आ पारिस्थितिकी बीच पुल।
 एक उत्सव जतय प्लास्टिक पर्वत छोड़ि दे, पुल टूटल।
 परम्परा नव जिम्मेदारी सीखय।
 धर्म नव धरती-बोध।
 उत्सव नव स्वच्छता।
 भक्ति नव मर्यादा।
 संस्कृति जीवित तखन जखन समयक घाव देखिकऽ अपने केँ सुधारय।
 एक राज्य सेहो धरती प्रति उत्तरदायी।
 कानून वृक्ष बचाबय।
 नदी साफ रखय।
 वायु मापय।
 उद्योग सीमा मानय।
 मुदा कानून अकेला नहि।
 कागज कहैत— “न काटू।”
 राति कुल्हाड़ी चलैत।
 कानून कहैत— “नदी स्वच्छ।”
 नाली विष छोड़ैत।
 जतबा धरि नागरिक मूल्य नहि बदलत, कानून थाकत।
 जतबा धरि कानून नहि, सद्भावना कमजोर पड़ि सकैत।
 भीतर चेतना।
 बाहर संस्था।

दुनू पंख।

एक पर्यावरणीय समाज केवल हरियर झण्डा नहि।

ओ अर्थव्यवस्था बदलैत।

ऊर्जा।

परिवहन।

आवास।

कृषि।

उद्योग।

शिक्षा।

उपभोग।

कचरा।

सभमे धरतीक हिसाब।

एक शहर पैदल मनुष्य लेल ठाम बनाबय।

साइकिल लेल।

बस लेल।

वृक्ष लेल।

बरखाक जल माटि धरि पहुँचबाक जगह।

छत केवल कंक्रीट नहि।

पार्क केवल सजावट नहि, शहरक फेफड़ा।

नाला केवल कचरा नहि, जलचक्रक अंश।

शहर सेहो पारिस्थितिकी।

कंक्रीट प्रकृति बाहर नहि।

हमर डिजाइन प्रकृतिसँ संवाद करि सकैत अछि।

गाम सेहो केवल “प्राकृतिक” नहि।

अत्यधिक रासायनिक उपयोग, भूजल दोहन, वन कटाई— गामो धरती घायल करि सकैत।

कोनो स्थान अपने पवित्र नहि।

व्यवहार पवित्रता रचैत अछि।

एक किसान माटि देखैत, ओकर रंग बदलल।

कठोर।

कीट कम।

जल नीचाँ।

ओ बुझैत— अन्न बढ़ल, मुदा माटि थाकि रहल।

अगिला फसलक हित आइक फसल पार देखू।

कृषि माटिक संग दीर्घ सम्बन्ध।

भूमि कारखाना नहि।

ओ जीवित तंत्र।
 जैविक पदार्थ।
 सूक्ष्म जीव।
 जल।
 हवा।
 जड़।
 केंचुआ।
 सभ मिलि उर्वरता।
 एक रसायन तुरन्त उपज दे, मुदा दीर्घकालिक माटि पर की?
 फेर तराजू।
 तत्काल आ भविष्य।
 उत्पादन आ सन्तुलन।
 कृषि प्रकृति विरुद्ध युद्ध नहि।
 प्रकृतिक लय संग सहयोग।
 मौसम बदलैत छी हमर कारणो।
 किसान पहिने ओकर घाव भोगैत।
 बरखा देर।
 अकस्मात् अधिक।
 अकाल गर्मी।
 नव कीट।
 जलवायु चर्चा दूर सम्मेलन नहि।
 खेतक दरार।
 बाढ़क घर।
 गर्मीमें मजदूरक शरीर।
 तापमान एक संख्या, मुदा ओकर मानवीय चेहरा अनेक।
 पर्यावरणीय दर्शन जतय धरतीक संग मनुष्यक नैतिक सम्बन्ध पूछैत, ओतय वर्ग, लिंग, गरीबी सेहो आबैत।
 किएक तँ प्रकृतिक हानि सभकेँ समान नहि।
 स्त्री दूर जल लऽ जाइत जखन कुआँ सूखैत।
 गरीब गर्मीमें खुला श्रम करैत।
 मछुआ नदी दूषित भेलासँ जीविका गँबैत।
 आदिवासी वन गेलासँ केवल रोजगार नहि, संस्कृति सेहो।
 धरतीक न्याय मानव न्यायसँ गुँथल।
 एक हरा नीति यदि कमजोरक जीवन नहि देखय, अधूरी।
 एक सामाजिक नीति यदि प्रकृति नहि देखय, अधूरी।
 समग्रता दुनू जोड़ैत अछि।

“मनुष्य” एक अलग द्वीप नहि।

ओ परिवार, समाज, राष्ट्र, प्रकृति सभक संग एक विस्तृत सम्बन्ध।

व्यक्तिक विकास केवल आय नहि।

स्वास्थ्य।

शिक्षा।

स्वतन्त्रता।

संस्कृति।

साफ पर्यावरण।

आन्तरिक सन्तुलन।

यदि आय बढ़ल, मुदा हवा जहर, जीवन कतेक समृद्ध?

यदि नौकरी मिलल, मुदा बारह घंटा धुआँमे, कतेक विकास?

यदि घर बड़, मुदा आसपास नदी मरल, कतेक जीवन?

समृद्धि बहुस्तरीय।

एक समाज अपन प्रगति केवल उत्पादन नहि, जीवनक गुणवत्ता सँ मापय।

कतेक स्वच्छ जल?

कतेक हरियर स्थान?

कतेक आराम?

कतेक समुदाय?

कतेक विश्वास?

कतेक जीव-विविधता?

कतेक समानता?

कतेक भविष्य बचि रहल?

आँकड़ा नव होएत।

दृष्टि नव।

एक पुरान अर्थव्यवस्था कहैत— “अधिक।”

एक नव धरती-बोध पूछैत— “पर्याप्त?”

“सन्तुलित?”

“न्यायपूर्ण?”

“दीर्घकालिक?”

ई चार प्रश्न कोनो बड़ परियोजना समक्ष चार दीप जकाँ।

अधिक सदा बेहतर नहि।

कखनो कम अधिक जीवन।

कम कचरा।

कम धुआँ।

कम अनावश्यक यात्रा।

कम अति-उपभोग।
 कम विष।
 आ अधिक स्वास्थ्य।
 अधिक समय।
 अधिक सम्बन्ध।
 अधिक शान्ति।
 अधिक वृक्ष।
 मूल्य गणनाक दिशा बदलैत अछि।
 सुख वस्तुक संख्या नहि।
 एक साँझ बिजली नहि, मुदा आँगनमे चन्द्रमा पूर्ण।
 एक पुरान बरगद नीचाँ चार पीढ़ी बैसल।
 एक तालाब जतय बच्चा तैरैत।
 एक खेत जतय माटिक गन्ध जीवित।
 ई समृद्धि कुन खाते लिखल?
 हृदयक।
 संस्कृतिक।
 पारिस्थितिक।
 मुदा रोमानी होएब नहि।
 गरीबीक कठिनाई साँच।
 बिजली चाही।
 सड़क।
 चिकित्सा।
 संचार।
 आधुनिक सुविधा जीवन बचबैत अछि।
 प्रश्न “विकास नहि” नहि।
 प्रश्न “कइसन विकास?”
 जे गामक गरीबी घटाबय, मुदा गामक जल नष्ट नहि।
 जे स्त्रीक श्रम हलुक करय, मुदा कचरा पर्वत नहि।
 जे चिकित्सा पहुँचाबय, मुदा विषैली उत्पादन नहि।
 जे संचार दे, मुदा मनुष्य आ प्रकृति दुनू सेवा करय।
 तकनीक पुनः डिजाइन हो सकैत।
 सूर्य ऊर्जा।
 वायु।
 जल सहेजना।
 कचरा पुनर्चक्रण।

स्थानीय उत्पादन।

सार्वजनिक परिवहन।

भवन जतय रोशनी आ हवा प्राकृतिक।

विज्ञान धरती बचाबयक औजार बनि सकैत।

समस्या विज्ञान नहि।

दिशा।

लालसा।

नीति।

मूल्य।

हाथमे छुरी औषधि सेहो, हत्या सेहो।

औजार ककर चेतना मे?

एहिए मूल प्रश्न।

धरतीक नैतिकता अन्ततः मनुष्यक आन्तरिक परिवर्तन सेहो माँगैत अछि।

कानून जल बचाबय, मुदा हम नल खुला छोड़ि देब?

सरकार वृक्ष रोपय, हम हरेक साल अनावश्यक फर्नीचर बदलू?

शहर कचरा अलग करय, हम एकबारगी वस्तु बढ़ाबैत रही?

व्यक्तिगत आ संस्थागत दुनू।

एक छोट आदत समुद्र नहि बचाबय अकेला।

मुदा करोड़ आदत प्रभाव बनैत।

आ बड़ उद्योग, बड़ नीति बिनु केवल व्यक्ति दोषी सेहो नहि।

जिम्मेदारी स्तर अनुसार।

जे अधिक शक्ति रखैत, ओकर उत्तरदायित्व अधिक।

एक गरीब परिवारक ईधन आ एक विशाल उद्योगक उत्सर्जन एक तराजू पर नहि।

न्याय भेद देखय।

मुदा सभ अपन भाग देखय।

धरती साझा कार्य।

एक विद्यालय।

एक गामसभा।

एक नगरपालिका।

एक कम्पनी।

एक राज्य।

एक देश।

एक विश्व।

सभ स्तर एक-दोसर संग।

पर्यावरण सीमा-पार, तँ सहयोग सेहो सीमा-पार।

नदी दू देश बीच बहैत।
 हवा पाँच।
 समुद्र सभक।
 जलवायु एक।
 तखन राष्ट्रक स्वार्थ आ पृथ्वीक हित कखनो टकरायत।
 साँच नेतृत्व काल्हिक चुनाव पार अजन्मा पीढ़ी देखय।
 राजनीति यदि पाँच वर्ष मात्र, वन पचास वर्ष केना बचत?
 एक वृक्ष वोट नहि देत।
 भविष्यक बच्चा सेहो नहि।
 तैयो नीति ओकर जीवन तय करैत अछि।
 लोकतन्त्र अदृश्य आवाज सेहो सुनय।
 प्रकृति आ भविष्यक प्रतिनिधि कुन?
 वैज्ञानिक आँकड़ा।
 स्थानीय समुदाय।
 नैतिक विवेक।
 न्यायालय।
 जनचेतना।
 सभ मिलि ओहि मौन आवाज कान धरि लऽ जाए।
 एक वृक्ष कहैत नहि— “हमरा बचाउ।”
 ओ बस ठाढ़ रहैत।
 ओकर मौन हमर जिम्मेदारीक परीक्षा।
 एक नदी कागज नहि लिखैत।
 ओ रंग बदलैत।
 गन्ध बदलैत।
 माछ गायब होइत।
 ई ओकर अर्जी।
 की हम पढ़ि सकैत छी?
 प्रकृति अपन कष्ट संकेतमे लिखैत अछि।
 सूखल पात समय सँ पहिने।
 गर्मी असामान्य।
 पक्षी कम।
 कीट गायब।
 बारिश अनियमित।
 बर्फ पिघलल।
 समुद्र ऊँच।

ई धरतीक पत्र।

हम कतेक दिन खोलब नहि?

एक दिन पत्र आदेश बनि सकैत।

तूफान।

बाढ़।

सूखा।

अकाल गर्मी।

तखन स्वेच्छिक बदलावक समय कम।

आइ सुनू।

धीमे संकेत कठोर संकट बनबाक पहिने।

धरती शत्रु नहि।

ओ घर चेतावनी दैत।

घरक छत टपकैत, बुद्धिमान मनुष्य छेद ठीक करैत।

ओ छतसँ युद्ध नहि करैत।

पृथ्वी हमर छत मात्र नहि, नींव सेहो।

हम ओकर अन्दर।

एक दर्शन यदि जीवनक सम्बन्ध गहिर बुझबैत, ओ शब्द पार व्यवहार बनय।

नहि तँ कागज पर हरियर वाक्य।

घरक बत्ती बन्द करब छोट।

जल नहि बर्बाद छोट।

स्थानीय वस्तु छोट।

वृक्ष छोट।

कचरा अलग छोट।

मुदा छोट कर्म अन्तरात्मा बदलैत।

एक बार हम देखब सीखलहुँ जे प्लास्टिक फेंकैत समय कछुआक गला सेहो दिखैत, तखन कर्म केवल नियम नहि।

सम्बन्ध।

जतय सम्बन्ध दिखल, उत्तरदायित्व स्वाभाविक।

धरती दूर विषय नहि।

माँ कहल आवश्यक नहि, मुदा निकटता जरूरी।

माटि हाथमे लिअ।

गन्ध सूँघू।

एक वृक्षक छाल छू लिअ।

बरखाक पहिल बूँद चेहरा पर।

नदीक किनार बैसू।

प्रकृति जतबा अनुभव, ततबा कम अमूर्त।

जे बच्चा केवल स्क्रीन पर बाघ देखलक, ओकरा जंगलक मौन केना बुझायत?
 अनुभव करुणा जगबैत।
 शहरक बच्चा सेहो पृथ्वी छू सकय।
 छोट बगिया।
 पक्षी देखब।
 आकाश देखब।
 ऋतु महसूस।
 ई शिक्षा कोनो पाठ्यक्रम सँ कम नहि।
 माटि मनुष्य केँ विनम्र बनबैत अछि।
 हमर सभ भोजन अन्ततः ओतहि से।
 हमर देह अन्ततः ओतहि लौटत।
 जन्म आ मृत्यु बीच हम कनेक समय धरती सँ रूप उधार लेने छी।
 एक दिन ई देह फेर माटि।
 तखन माटि केँ केवल सम्पत्ति कहब कतेक छोट विचार।
 हम माटिक मालिक नहि, माटि हमर अन्तिम आश्रय।
 एहि स्मरणमे अहंकार कनेक पिघलैत अछि।
 वृक्षक जड़ि हमरा कहैत— नीचाँ जुड़ू।
 शाखा— ऊपर खुलू।
 पात— प्रकाश लिअ।
 फल— बाँटू।
 सूखल पात— छोड़ू।
 बीज— भविष्य सहेजू।
 एक वृक्ष सम्पूर्ण नैतिक कविता जकाँ।
 ओ लेत सेहो, दैत सेहो।
 ठाम घेरैत, मुदा छाया बाँटैत।
 अपने जीवैत, अनेक जीव पालैत।
 वृद्ध होइत, मुदा मृत्यु पाछाँ माटि बनैत।
 चक्र पूर्ण।
 मनुष्य कतेक सीखि सकैत यदि एक वृक्ष समक्ष कनेक धीमा हो।
 पृथ्वी तेज नहि चलैत।
 ऋतु जल्दी नहि करैत।
 बीज डेडलाइन नहि मानैत।
 नदी अपन ढाल अनुसार।
 हम सभ तेज करि देलहुँ।
 तेज उत्पादन।

तेज परिवहन।
तेज खपत।
तेज समाचार।
तेज कचरा।
मन सेहो तेज।
धरती कहैत— धीमा हो।
किछु वस्तु समय माँगैत।
माटि बनब।
वन उगब।
जलभृत भरब।
मानव विश्वास बनब।
धीमापन पिछड़ापन नहि।
कखनो जीवनक गति।
एक सतत् समाज तेज आ धीम दुनूक ठीक स्थान जानत।
आपातकालमे तेज चिकित्सा।
मुदा वन रोपण धीमा।
संचार तेज।
मुदा निर्णय विचारपूर्वक।
तकनीक तेज।
मुदा मूल्य पकब समय लेत।
ई सन्तुलन सभ्यता सीखय।
भविष्य एक अजन्मा चेहरा।
हम ओकर नाम नहि जानैत।
ओ कुन भाषा बोलत?
कुन शहरमे रहत?
मुदा ओकर फेफड़ा हवा माँगत।
ओकर शरीर जल।
ओकर हृदय हरियर जगत देखब चाहत।
की हमरा ओकर अधिकार देखाइत?
ओ अखन वोट नहि देत।
मुदा हमर आइक मत ओकर काल्हि लिखैत अछि।
अजन्मा पीढ़ी हमर सभसँ मौन पड़ोसी।
नैतिकता समय पार पड़ोस बढ़ाबय।
आइ जे जल हम बचाउ, ओ कदाचित् ओकर प्यास बुझायत।
आइ जे वन हम राखू, ओ ओकर आकाश ठंडा करत।

आइ जे प्रजाति हम बचाउ, ओ ओकर दुनिया अधिक समृद्ध।
 हम पूर्वज सँ कतेक पेलहुँ।
 बीज।
 भाषा।
 तालाब।
 वनक किछु टुकड़ा।
 उर्वर माटि।
 की हम आगाँ खाली खाता देब?
 उत्तराधिकार केवल धन नहि।
 पृथ्वी सेहो।
 एक नैतिक वसीयत लिखू—
 “हम सभ नहि खर्च कएलहुँ।”
 “किछु तोरा लेल राखल।”
 ई वाक्य भविष्यक सभसँ सुन्दर उपहार।
 अन्ततः प्रश्न पृथ्वी बचाबयक नहि मात्र।
 पृथ्वी हमर बिनु सेहो कोनो रूपमे रहि सकैत।
 प्रश्न हम कइसन मनुष्य बनब चाहैत छी?
 एहन जे सभ लेत?
 कि एहन जे सम्बन्ध बुझैत?
 एहन जे शक्ति देखाबैत?
 कि एहन जे मर्यादा जानैत?
 एहन जे धरती मापैत?
 कि एहन जे धरतीक मौन सेहो सुनैत?
 हमर सभ्यता अन्ततः हमर चरित्रक विस्तार।
 लोभी मन लोभी शहर बनबैत।
 अहंकारी मन प्रकृति पर साम्राज्य।
 करुण मन सहजीवन।
 सजग मन मर्यादा।
 मूल परिवर्तन भीतर सेहो।
 बाहर सेहो।
 नीति बदलू।
 तकनीक बदलू।
 अर्थव्यवस्था बदलू।
 आ चाहना सेहो देखू।
 किएक तँ असीम चाहना लेल कोनो हरित तकनीक पर्याप्त नहि।

एक साफ ऊर्जा सेहो यदि असीम उपभोग सम्पूर्ण करए, अन्ततः संसाधन माँगत।
“कतेक पर्याप्त?” ई आध्यात्मिक प्रश्न सेहो, आर्थिक सेहो, पारिस्थितिक सेहो।
पर्याप्त जतय आबैत, आभार जन्मैत।
आभार जतय, शोषण कम।
एक थारी अन्न देखू— सूर्य।
माटि।
जल।
बीज।
किसान।
पशु।
सूक्ष्म जीव।
परिवहन।
रसोई।
कतेक जीवन मिलि एक कौर।
यदि ई दिखि जाए, भोजन फेंकब कठिन हो सकैत।
आभार नैतिक दृष्टि।
वस्तु पाछाँ सम्बन्ध देखब।
एक कागज पाछाँ वृक्ष।
एक कपड़ा पाछाँ जल।
एक फोन पाछाँ खनिज।
एक भवन पाछाँ पहाड़।
सम्बन्ध दिखि गेल, चयन बदलि सकैत।
ई जागरण भय आधारित नहि।
केवल “विनाश आबि रहल” कहि मनुष्य लम्बा समय नहि बदलैत।
प्रेम सेहो चाही।
हम धरती बचाउ किएक तँ हम ओकरा प्रेम करैत छी।
एक नदीक गन्ध।
एक पहाड़क साँझ।
एक गामक आम-बगान।
एक रेगिस्तानक आकाश।
एक समुद्रक अनन्त लय।
सौन्दर्य नैतिकता जगाबैत अछि।
जे सुन्दर लगैत, ओकरा बचाबयक इच्छा जन्मैत।
मुदा केवल सुन्दर दृश्य नहि।
दलदल सेहो जीवन।

काँटदार झाड़ी।

कीचड़।

कीट।

जिनका हम सुन्दर नहि मानैत, ओ पारिस्थितिक रागक आवश्यक स्वर हो सकैत।

मानवीय सौन्दर्य-बोध प्रकृतिक मूल्यक एकमात्र कसौटी नहि।

जंगल हमर पिकनिक लेल नहि।

ओ अपने लेल सेहो।

एहि विनम्र वाक्य पर सभ्यता नव घर बना सकैत अछि।

एक घर जतय मनुष्य मालिक कम, रखनिहार अधिक।

उपभोक्ता कम, सहभागी अधिक।

विजेता कम, सहयात्री अधिक।

आ जतय भोरक पहिल हवा खिड़की पर आबि फेफड़ामे उतरैत समय हम एतबे स्मरण करी—

ई श्वास केवल हमर नहि।

एहि मे वनक हरियाली।

नदीक भाप।

माटिक गन्ध।

सूर्यक ताप।

असंख्य जीवक अदृश्य श्रम।

ई साझा श्वास।

जखन हम एना श्वास लेब, कदाचित् धरती बाहरी वस्तु नहि रहत।

ओ हमर विस्तृत देह बनि उठत।

तखन वृक्ष काटबाक पहिने हाथ एक क्षण रुकत।

नदीमे कचरा फेंकबाक पहिने आँखि अपने रक्त देखत।

अनावश्यक वस्तु खरीदबाक पहिने मन पूछत— “कतेक पर्याप्त?”

विकासक नक्शा बनाबैत हम भविष्यक बच्चाक चेहरा सेहो राखब।

आ माटि हमरा फेर अपन पुरान पाठ सिखायत—

जुड़ल रहू।

लेऊ, मुदा लौटाउ।

बढ़ू, मुदा सन्तुलन न तोड़ू।

जीऊ, मुदा दोसरक जीवन लेल ठाम छोड़ू।

आ एक दिन जखन हमर अन्तिम श्वास हवा में मिलत,

देह माटि दिस लौटत,

तखन धरती कदाचित् हमरा अजनबी नहि कहत।

ओ कहत—

“तूँ सदा हमरहि भीतर छलें।”

आ माटिक नाड़ीमे हमर श्वास फेर कोनो नव पात बनि हरियर उठत।

अपन आँखिसँ भोर

भोर सूर्य उगलासँ पहिने आँखिमे उगैत अछि।

जखन मनुष्य पहिल बेर उधारक चश्मा उतारि अपने धरती केँ अपने आँखिसँ देखैत अछि।

आकाश ओही, मुदा रंग बदलि जाइत अछि।

गाम ओही, मुदा माटिक गन्ध पहिल बेर अपन लगैत अछि।

भाषा ओही, मुदा ओकर शब्द अकस्मात् हृदयक भीतर घर खोजि लैत अछि।

बहुत दिन हम दोसरक आँखि उधार लेने चलैत रहलहुँ।

दोसरक नक्शा।

दोसरक मापदण्ड।

दोसरक सुन्दरता।

दोसरक लज्जा।

दोसरक गौरव।

दोसरक इतिहासक सीढ़ी पर अपन घर नापैत रहलहुँ।

ओ कहलक— “एहि रंग सुन्दर।”

हम अपन रंग धोए लगलहुँ।

ओ कहलक— “एहि भाषा सभ्य।”

हम अपन मायक कण्ठ धीमे करि देलहुँ।

ओ कहलक— “एहि चालि आधुनिक।”

हम अपन पयरक लय पर लज्जित भेलहुँ।

ओ कहलक— “एहि विचार प्रगतिशील।”

हम अपन पुरान प्रश्नसभ बिनु जाँच फेंकि देलहुँ।

पराधीनता केवल हाथक जंजीर नहि।

ओ आँखिक भीतर सेहो घर बना सकैत अछि।

जखन दासता हाथसँ खुलैत मुदा मनक भीतर एक पहरदार बैसल रहैत—

“एना सोचू।”

“एना देखू।”

“एना अपने केँ कम मानू।”

तखन स्वतन्त्रता दरबज्जा धरि आबि भीतर प्रवेश नहि करैत।

राजनीतिक भोर आबि सकैत अछि।

झण्डा अपन।

सत्ता अपन।

कानून अपन।

मुदा मन यदि दोसरक स्वीकृति लेल दिन-राति खिड़की पर ठाढ़,

तँ घर अखनो सम्पूर्ण अपन नहि।
 एक अदृश्य राजधानी भीतर बसल रहैत अछि।
 ओतय सँ आदेश आबैत—
 “अपन पर सन्देह करू।”
 “दोसरक हरेक वस्तु श्रेष्ठ।”
 “अपन हरेक स्मृति पिछड़ल।”
 “अपन भाषा छोट।”
 “अपन विचार अपर्याप्त।”
 आ हम अपने मनक नागरिक नहि, प्रजा बनि रहलहुँ।
 स्वतन्त्रता तखन एक नव प्रश्न पूछैत अछि—
 “तोहर मनक राजधानी कतय?”
 ई प्रश्न कोनो सीमा-रेखा पर नहि।
 ओ विद्यालयक कक्षा भीतर।
 पुस्तकक पन्ना पर।
 भाषाक चयनमे।
 सौन्दर्यक रुचिमे।
 ज्ञानक मापदण्डमे।
 अपने प्रति विश्वासमे।
 हम की पढ़ैत छी?
 कुन भाषा मे सोचैत छी?
 ककर उदाहरण हमरा “सामान्य” लगैत अछि?
 ककर जीवन “आदर्श”?
 ककर इतिहास “मुख्य”?
 ककर कविता “महान”?
 ककर दर्शन “गम्भीर”?
 ककर लोकज्ञान “अवैज्ञानिक”?
 ई प्रश्नसभ मनक मानचित्र खोलैत अछि।
 एक बच्चा विद्यालय जाइत अछि।
 ओकर घरमे माँ एक भाषा बोलैत अछि।
 विद्यालयमे दोसर।
 पुस्तकमे तेसर रंगक दुनिया।
 बच्चा धीरे-धीरे सीखैत—
 घरक भाषा घर धरि।
 ज्ञानक भाषा दोसर।
 हृदय एक कोठरी।

बुद्धि दोसर।

कतेक सूक्ष्म विभाजन।

मायक शब्द प्रेम लेल।

पर विज्ञान? दर्शन? राजनीति? कला?

की ओ भाषा एहि ऊँच सीढ़ी पर चढ़ि नहि सकैत?

भाषा यदि केवल लोरी रहि जाए, ज्ञानक घर ककर हाथमे रहत?

जे भाषा विचार नहि पबैत, ओ धीरे-धीरे आत्मविश्वास सेहो गँबैत अछि।

किएक तँ विचार शब्द माँगैत अछि।

शब्द यदि सदा बाहरसँ उधार, विचारक चालि सेहो उधार हो सकैत अछि।

मुदा अपन भाषा अर्थ दोसर भाषाक दुआर बन्द करब नहि।

नदी जतबा उपधारा लेत, ततबा समृद्ध हो सकैत अछि।

मुदा समुद्रक जल सोझ खेतमे नहि डाला जाइत।

ओकरा मेघ बनबाक, बरखा होएबाक, माटि छूबबाक यात्रा चाही।

दोसरक ज्ञान सेहो एना आबय।

सोझ नकल नहि।

अनुवाद।

परख।

संवाद।

पाचन।

रूपान्तरण।

अपन जीवनक माटिमे जड़ि।

तखन ज्ञान विदेशी बीज नहि, अपन फसल बनि सकैत अछि।

एक बीज दूर देशसँ आबि सकैत अछि।

मुदा ओकरा एहि माटिक जल, धूप, ऋतु संग जीब पड़त।

यदि ओ फल दे, स्वीकारू।

यदि माटि मारि दे, प्रश्न करू।

यदि नव स्वाद लऽ कऽ पुरान खेत समृद्ध करय, स्वागत।

यदि एकहि फसल बनि सभ विविधता मेटा दे, सावधान।

ज्ञानक स्वराज दीवार नहि, मालीक विवेक।

कुन बीज रोपू?

कतय?

कतेक?

कुन संग?

कुन पुरान बीज बचाउ?

कुन रोगी परम्परा छोड़ू?

कुन नव पौधा अपनाऊ?
 ई निर्णय अपने करब।
 एहि ए मुख्य बात।
 दोसर कहय “स्वीकारू” एहि लेल नहि।
 दोसर कहय “नकारू” एहि लेल सेहो नहि।
 अपने देखू।
 अपने तौलू।
 अपने निर्णय लिअ।
 मुदा “अपने” अर्थ अहंकार नहि।
 अपने अर्थ जिम्मेदारी।
 यदि निर्णय बेठीक, दोष सेहो अपन।
 स्वतन्त्रता कंध पर भार सेहो रखैत अछि।
 दासता कहैत— “आदेश पालन करू।”
 स्वतन्त्रता कहैत— “कारण दिअ।”
 दासता कहैत— “दोसर जानैत अछि।”
 स्वतन्त्रता— “तू सीखू, फेर निर्णय कर।”
 दासता आराम सेहो दे सकैत अछि।
 सोचबाक झंझट नहि।
 जिम्मेदारी नहि।
 मुदा आरामक एहि बिछौना पर आत्मा धीरे-धीरे सोइ जाइत अछि।
 जागरण कठिन।
 प्रश्न जगबैत।
 सन्देह जगबैत।
 आत्मसम्मान जगबैत।
 जखन हम कोनो विचार केँ केवल ओकर विदेशी चमक कारण नहि, ओकर सत्य कारण स्वीकारैत छी—
 तखन हम स्वतन्त्र।
 जखन कोनो अपन परम्परा केँ केवल अपन होएबाक कारण नहि, ओकर जीवनदायी सत्य कारण सहेजैत छी—
 तखन हम स्वतन्त्र।
 जखन अपन भूल कहि सकैत छी बिनु आत्मघृणा,
 आ दोसरक श्रेष्ठता स्वीकारि सकैत छी बिनु आत्महीनता—
 तखन मन सोझ ठाढ़ होइत अछि।
 स्वाभिमान आईना तोड़ि अपने चेहरा सुन्दर घोषित करब नहि।
 स्वाभिमान आईना साफ करब।
 दाग देखब।
 आँखि देखब।

घाव देखब।

हँसी देखब।

आ कहब— “ई चेहरा हमर।”

न लज्जा मात्र।

न गर्व मात्र।

सत्य।

एक राष्ट्र सेहो एना आइना देखय।

अपन इतिहासक गौरव।

अपन अन्याय।

अपन सृजन।

अपन रूढ़ि।

अपन विज्ञान।

अपन अन्धविश्वास।

अपन कविता।

अपन दमन।

दुनू एक साथ।

केवल गौरव नशा।

केवल लज्जा दासता।

सत्य दुनूक पार।

कतेक समाज अपन अतीत केँ सोना बना चमकबैत अछि।

“हमर सभ श्रेष्ठ।”

ई वाक्य आत्मविश्वास नहि, भयक दोसर रूप हो सकैत।

किएक तँ जकरा अपने पर विश्वास, ओ आलोचना सहन करैत अछि।

ओ कहि सकैत— “एतय हम बेठीक छलहुँ।”

“एतय दोसर सँ सीखब।”

“एतय हमर पुरान रीति मनुष्य केँ घायल कएलक।”

“एतय हमर पूर्वज अद्भुत सृजन कएलनि।”

सत्य मिश्रित।

जीवन मिश्रित।

इतिहास मिश्रित।

काला आ सफेद बीच असंख्य रंग।

स्वराज एक रंग चुनि बाकी मेटाबय नहि।

ओ अपने रंगसभक सम्पूर्ण पट देखब।

कतेक विदेशी वस्तु हमरा अपन बनि चुकल।

शब्द।

वस्त्र।
 भोजन।
 संगीत।
 विज्ञान।
 राजनीतिक धारणा।
 कानून।
 रूप।
 संस्कृति काँचक बन्द डब्बा नहि।
 ओ नदी।
 जो बहे नहि, सड़ि जाए।
 मुदा नदी अपन धारा सेहो रखैत अछि।
 जो हरेक दिशा फैलि दलदल बनि जाए, ओ नदी नहि।
 खुलापन आ दिशा दुनू चाही।
 दोसर सँ सीखू।
 मुदा अपने सोचू।
 दोसरक गीत सुनू।
 मुदा अपन कण्ठ मौन नहि।
 दोसरक कला देखू।
 मुदा अपन आँखि बन्द नहि।
 दोसरक विज्ञान लिअ।
 मुदा अपन समस्या अपने भाषामे पूछू।
 ई लेन-देन ही संस्कृतिक जीवन।
 अन्धानुकरण लेन-देन नहि।
 ओ आत्मसमर्पण।
 अन्ध नकार सेहो लेन-देन नहि।
 ओ भय।
 खुला आत्मविश्वास बीचमे ठाढ़।
 एक घर खिड़की खोलैत, मुदा नींव नहि उखाड़ैत।
 हवा आबय।
 प्रकाश।
 दूरक सुगन्ध।
 मुदा घर अपन रहय।
 खिड़की दीवारक शत्रु नहि।
 दीवार खिड़कीक शत्रु नहि।
 घर दुनू सँ बनैत अछि।

संस्कृति सेहो।

जड़ि आ पात।

स्मृति आ नवीनता।

घर आ यात्रा।

माटि आ आकाश।

एक विचार यदि दूर देशमे जन्मल, ओकर सत्य पासपोर्ट नहि पूछैत।

मुदा ओकर उपयोग परिस्थिति पूछैत।

एक औषधि सर्वत्र एके मात्रा नहि।

एक राजनीतिक व्यवस्था एक समाजक इतिहास सँ जन्मैत।

दोसर समाज ओकर मूल सिद्धान्त ले सकैत, मुदा रूप अपने रचय।

नकल कतेक सहज।

सृजन कठिन।

नकल कहैत— “ओतय एना, एतयो एना।”

सृजन पूछैत— “हमर जीवन कइसन?”

“हमर समस्या की?”

“हमर समाजक आकृति कइसन?”

“कुन रूप एतय जीवित हो सकैत?”

सृजन समय माँगैत।

असफलता।

परीक्षण।

संशोधन।

मुदा अन्तमे रचना अपन पयर पर ठाढ़ होइत अछि।

उधारक जूता सुन्दर हो सकैत, मुदा यदि पयरक नाप नहि, यात्रा दुखद।

दोसरक विचार उधारक जूता न बने।

ओकर चमड़ा लिअ, कारीगरी सीखू, मुदा जूता अपन पयरक नाप पर बनाउ।

ई रूपान्तरण ज्ञानक स्वतन्त्रता।

शिक्षा एहि रूपान्तरणक सभसँ मुख्य कारखाना बनि सकैत अछि।

मुदा यदि शिक्षा केवल विदेशी आदर्शक प्रतिलिपि बनय, मन अपने घर सँ दूर होइत जाएत।

एक बच्चा अपने गामक नदी नहि जानैत, मुदा दूर देशक नदीक नाम याद।

अपन किसानक ऋतु-बोध नहि, मुदा दूर जलवायु उदाहरण।

अपन भाषाक दार्शनिक शब्द नहि, मुदा विदेशी परिभाषा ठीक-ठीक।

ज्ञान बेठीक नहि।

मुदा अनुपात कतय?

दूर दुनिया जानू, मुदा घर अनजान नहि।

विश्व पढ़ू, मुदा अपन गाम सेहो।

दूरक इतिहास जानू, मुदा अपन माटिक स्मृति सेहो।
 वैश्विक हवा लिअ, मुदा स्थानीय श्वास नहि भुलू।
 एक शिक्षा जे बालक केँ अपनहि समाज प्रति घृणा सिखाबय, अधूरी।
 एक शिक्षा जे केवल गौरव सिखाबय, सेहो अधूरी।
 ठीक शिक्षा कहय— “देखू।”
 “पूछू।”
 “जानू।”
 “प्रेम करू।”
 “आलोचना सेहो।”
 प्रेम आलोचना सहन करैत।
 घृणा वा अन्ध भक्ति नहि।
 अपन समाजक दोष सुधारब ओकर अपमान नहि।
 घरक छत टपकैत, कहलासँ घर छोट नहि।
 छत ठीक करब घरप्रेम।
 जातिक अन्याय कहलासँ संस्कृति नष्ट नहि।
 ओकर मानवीय रूप बचैत।
 स्त्रीक दमन कहलासँ परम्परा अपमानित नहि।
 परम्परा शुद्ध हो सकैत।
 अन्धविश्वास पर प्रश्न धर्म नष्ट नहि।
 विश्वास गहिर हो सकैत।
 आलोचना अन्दरक सफाई।
 मुदा आलोचना यदि केवल उपहास, मन बन्द होइत।
 “तोहर सभ गलत।”
 एहि वाक्य संवाद नहि।
 दोसरक आत्मसम्मान घायल करि कियो परिवर्तन कम लऽ आबैत।
 सम्मान संग प्रश्न।
 करुणा संग सत्य।
 ई परिवर्तनक दीर्घ रास्ता।
 एक देश स्वतन्त्र भेलाक पाछाँ सभसँ कठिन काम कदाचित् अपने केँ फेर पहिचानब।
 दासता हमें दोसरक दर्पणमे देखबाक आदत देने रहैत।
 आब अपन दर्पण बनाबय पड़त।
 मुदा अपन दर्पण भीतर झूठ नहि।
 ई सभसँ कठिन।
 किएक तँ अपन दर्पणमे हम अपने सुन्दर देखाबय चाहैत छी।
 विदेशी दर्पण कखनो हमरा कुरूप दिखौलक।

प्रतिक्रिया मे हम एहन दर्पण न बनाबी जे हरेक दाग मिटा दे।

सत्य दर्पण दाग सेहो देखत, ज्योति सेहो।

एक समाज अपने शक्ति पहिचानय।

कला।

साहित्य।

भाषा।

लोकज्ञान।

विज्ञानक इतिहास।

दर्शनक सूक्ष्मता।

समुदायक सहयोग।

प्रकृति संग जीवनक अनुभव।

ई सभ आत्मविश्वासक बीज।

मुदा बीज संग काँटा सेहो देखू।

जातिभेद।

स्त्री-विषमता।

अस्पृश्यता।

रूढ़ि।

अन्धविश्वास।

सामन्ती अहंकार।

ई सभ “अपन” कहिकऽ पवित्र नहि।

अपन घरक कचरा अपन होएबाक कारण सहेजल नहि जाइत।

साफ करल जाइत।

स्वराज सफाई सेहो।

एक आन्तरिक स्वच्छता।

मनक कोठरीमे जमा पराधीन भावना झाड़ू माँगैत अछि।

“हम कम छी।”

“हम नहि सकैत।”

“हमर भाषा नहि।”

“हमर विचार नहि।”

ई धूलि बहुत पुरान।

झाड़ू आत्मसम्मान।

मुदा दोसर धूलि सेहो जमा हो सकैत—

“हमर सभ सर्वोत्तम।”

“दोसर सभ हीन।”

ई अहंकारक धूलि।

झाडू विवेक।
 घर तखन साफ जतय हीनता आ अहंकार दुनू कम।
 स्वाभिमान बीचमे शान्त दीप।
 एक विदेशी विचार आबैत अछि।
 हम पूछू— ओ कुन समस्या सँ जन्मल?
 कुन इतिहास सँ?
 कुन समाजक पीड़ा?
 कुन मानव अनुभव ओकर भीतर सार्वभौमिक?
 कुन विशेष?
 फेर अपन धरती पर रखू।
 देखू कतय मिलैत।
 कतय टकरैत।
 कतय नव प्रश्न खोलैत।
 ई तुलना दासता नहि।
 ज्ञानक समृद्धि।
 तुलना तखन उपयोगी जतय दुनू पक्ष सम्मान पबैत।
 यदि एक पहिने सँ “मानक” आ दोसर “परीक्षार्थी,” तुलना न्यायपूर्ण नहि।
 दुनू एक मेज पर।
 दुनूक शक्ति।
 दुनूक सीमा।
 दुनूक इतिहास।
 फेर संवाद।
 एक पुरान दर्शन कोनो नव वैज्ञानिक प्रश्न समक्ष नव अर्थ पाबि सकैत।
 एक आधुनिक विचार कोनो पुरान आत्मानुशासन सँ गहिर हो सकैत।
 समय एक-दोसर सँ बात करि सकैत अछि।
 अतीत कब्रिस्तान नहि।
 भविष्य विदेशी माल नहि।
 वर्तमान दुनूक मिलन-स्थल।
 हम अतीत सँ संवाद करब।
 पूजा नहि।
 हम भविष्य रचब।
 नकल नहि।
 एहिँ जीवित स्वतन्त्रता।
 भाषा एहि यात्रा मे फेर दुआर खोलैत अछि।
 जखन हम कठिन विचार अपन भाषामे कहए चेष्टा करैत छी, तखन केवल शब्द बदलैत नहि।

विचार अपने परखाइत अछि।
किछु विदेशी शब्द सोझ आबैत नहि।
हम ओकर अर्थ खोलैत।
निकट शब्द खोजैत।
नव शब्द रचैत।
पुरान शब्द जगबैत।
तखन भाषा समृद्ध होइत, विचार सेहो।
अनुवाद केवल एक पुल नहि।
ओ दुनू किनार बदलैत अछि।
दोसरक विचार हमर भाषा छूबैत, हमर भाषा ओकरा नव प्रश्न पूछैत।
एक शब्द जाहि मे दूर संस्कृतिक अनुभव छिपल, हमर समाजमे आबि नव छाया पबैत।
अनुवाद सृजन।
यदि केवल शब्द-शब्द बदलल, आत्मा पुल पर ही रहि सकैत।
अर्थ पार लऽ जाएब चाही।
मुदा अर्थ लऽ जाएत समय अपन नदीक धार बदलि सेहो सकैत।
ई स्वाभाविक।
भाषा जीवित।
विचार जीवित।
जीवित वस्तु स्पर्श सँ बदलैत।
पवित्रता अस्पर्श नहि।
सृजनात्मक परिवर्तन।
एक संस्कृति यदि कहय— “हम किछु नहि लेब,” ओ खुद सुकि सकैत।
यदि कहय— “हम सभ जसक-तस लेब,” ओ अपने गायब हो सकैत।
विवेक फेर मध्य रास्ता।
छानू।
ग्रहण करू।
रूपान्तरित करू।
अपन बनाउ।
किछु छोड़ू।
किछु नव रचू।
ई संस्कृतिक पाचन।
देह भोजन जसक-तस नहि रखैत।
ओ तोड़ैत।
पचबैत।
रक्त बनबैत।

ऊर्जा बनबैत।
 संस्कृति सेहो ज्ञान एना पचाबय।
 नहि तँ अन्न पेटमे पाथर।
 दोसरक विचार सजावट न बनय।
 ड्राइंगरूमक विदेशी मूर्ति जेकाँ जे केवल प्रतिष्ठा बढ़ाबय।
 विचार जीवन बदलय।
 समस्या समझब।
 निर्णय बदलय।
 भाषा बदलय।
 संस्था बदलय।
 चरित्र गहिर करय।
 नहि तँ ज्ञान माथ पर भारी मुकुट।
 स्वराज ज्ञान केँ मुकुट नहि, रक्त बनाबय।
 एक समाज जतय विद्वान लोक दूरक पुस्तक उद्धृत करैत मुदा अपन गामक समस्या नहि समझैत— ज्ञान कतेक जीवित?
 यदि दर्शन अपन समाजक दुःख नहि देखय, ओ ककरा लेल?
 यदि अर्थशास्त्र गामक भूख नहि पढ़य?
 यदि राजनीति स्थानीय अनुभव नहि?
 यदि शिक्षा बालकक भाषा नहि?
 ज्ञान धरती माँगैत।
 धरती बिनु विचार हवा में लटकैत।
 मुदा स्थानीयता दुनिया बन्द नहि।
 गामक प्रश्न विश्वक प्रश्न संग जुड़ि सकैत।
 जल।
 जलवायु।
 गरीबी।
 श्रम।
 स्त्री।
 तकनीक।
 स्वतन्त्रता।
 सत्य।
 मानव अनुभव सीमा पार।
 अपन धरती सँ विश्व दिस देखू।
 विश्व सँ अपन धरती नहि।
 एक वृक्ष जड़ि माटिमें रखि आकाश छूबैत।
 जड़िहीन वृक्ष नहि।

आकाशहीन जड़ि सेहो नहि।
जड़ि आ आकाश एक साथ।
ई स्वतन्त्र विचारक छवि।
एक मन अपन परम्परा जानैत।
दोसर परम्परा सेहो।
अपने प्रश्न करैत।
दोसरक उत्तर सुनैत।
फेर अपने निर्णय लेत।
न अन्ध राष्ट्रवाद।
न अन्ध विदेशानुराग।
न आत्मघृणा।
न आत्ममुग्धता।
एक खुला स्वाभिमान।
ई कठिन सन्तुलन।
एक दिस इतिहासक घाव।
दासता स्मृति।
अपमान।
लूट।
दोसर दिस दुनिया सँ ज्ञान लेबाक आवश्यकता।
यदि घाव कारण हरेक बाहरी वस्तु नकारू, हम अपने केँ छोट करब।
यदि घाव कारण अपने केँ हीन मानि हरेक बाहरी वस्तु पूजू, दासता जारी।
घाव भरब अर्थ स्मृति मेटाबय नहि।
स्मृति संग आत्मविश्वास लौटाबय।
“हाँ, हमरा घायल कएल गेल।”
“मुदा हम केवल घाव नहि।”
“हमर सृजन सेहो।”
“हमर भविष्य सेहो।”
ई वाक्य चिकित्सा।
राष्ट्र पीड़ित स्मृति मे सदा रहि नहि सकैत।
ओकरा सृजनशील भविष्य चाही।
अतीत स्मरण, मुदा आगाँ चलनाइ।
स्वराज पीठ सदा दोसर दिस घुमाबय नहि।
ओ आँखि सोझ करब।
समान दृष्टि।
न नीचाँ।

न ऊपर।
 सामने।
 “अहाँक विचार सुनब।”
 “हमर सेहो।”
 “आओ तौलू।”
 ई संवादक गरिमा।
 दुनिया मेज।
 हम कुर्सी पर समान बैसू।
 न दरबज्जा बाहर प्रतीक्षा।
 न मेज उलटि दूर भागू।
 समान बैसू।
 कहू।
 सुनू।
 ई विचारक स्वतन्त्रता।
 एक समाज अपन विद्वान केँ केवल अनुवादक नहि, सर्जक बनाबय।
 प्रश्न नव।
 शब्द नव।
 पद्धति नव।
 पुरान ज्ञानक नव पठन।
 दोसरक ज्ञानक नव समन्वय।
 सर्जना स्वतन्त्रता केर फल।
 यदि स्वतन्त्रता सृजन नहि दे, ओ केवल नारा।
 एक विश्वविद्यालय जतय सभसँ पैघ सम्मान विदेशी नाम उद्धृत करब, अपन प्रश्न रचब नहि— मन अखनो पराधीन हो सकैत।
 उद्धरण आवश्यक।
 ज्ञान श्रृंखला।
 मुदा श्रृंखला बेड़ी न बने।
 पूर्वज कहला।
 विदेशी कहला।
 शिक्षक कहला।
 आब तूँ की कहैत छ?
 ई प्रश्न छात्र केँ विद्वान बनबैत।
 स्मृति संग नव वाक्य।
 एहिऐ विचारक वंश जीवित।
 यदि हरेक पीढ़ी केवल पहिने कहल दोहराबय, ज्ञान कब्र।
 नव पीढ़ी आदर संग असहमति करय।

“हम एतय भिन्न देखैत छी।”

ई वाक्य संस्कृति बचबैत अछि।

असहमति विद्रोह मात्र नहि।

प्रेमक एक रूप।

जकरा हम महत्त्व नहि दैत, ओकरा प्रश्न किएक करब?

प्रश्न दर्शबैत— “ई हमर जीवित विरासत।”

मृत वस्तु पर बहस नहि।

जीवित परम्परा विवाद सहन करैत।

एक घरमे परिवार कहैत— “एहि रीत सदियों सँ।”

युवा पूछैत— “किएक?”

यदि उत्तर केवल “किएक तँ सदियों सँ,” विचार कतय?

परम्परा अपन तर्क दे।

मानवीय मूल्य देखाउ।

नहि तँ बदलू।

समय नव परिस्थिति आबि रहल।

पुरान उत्तर सदा पर्याप्त नहि।

मुदा नव प्रश्न पुरान बुद्धि नहि फेंकय।

दुनू मिलि नव समाधान।

एक गामक जल-संरक्षण पुरान रीति आधुनिक जलविज्ञान संग भेटय।

एक औषधीय वनस्पतिक लोकज्ञान वैज्ञानिक परीक्षण संग।

एक पुरान सामुदायिक सहयोग आधुनिक प्रशासन संग।

समन्वय रचना।

न अन्ध पुनरुत्थान।

न अन्ध आधुनिकीकरण।

बीचमे जीवित प्रयोग।

स्वराज संग्रहालय नहि।

ओ कार्यशाला।

पुरान औजार सेहो।

नव मशीन सेहो।

कारीगर हम।

निर्णय हमर।

उत्पाद जीवनक अनुकूल।

कार्यशाला खुलल।

हवा आबैत।

मुदा मालिकाना चेतना अपन।

कतेक विचार हम बिनु परीक्षण अपन लेत छी किएक तँ ओ आधुनिक शब्द पहिरने आबैत।

“विकास।”

“प्रगति।”

“आधुनिकीकरण।”

“व्यक्तिवाद।”

“बाजार।”

“राष्ट्र।”

“धर्मनिरपेक्षता।”

“परम्परा।”

हरेक शब्द अपन इतिहास लऽ कऽ आबैत।

हम शब्द सुनिते मुग्ध नहि।

ओकर अर्थ खोलू।

हमर सन्दर्भमे की?

ककर हित?

ककर हानि?

कुन मानव दृष्टि?

शब्द चमक कम, अर्थ अधिक।

एहि विवेक बिनु विचारक स्वतन्त्रता नारा बनि सकैत।

एक विदेशी शब्द कखनो हमरा अपन समस्या नव नाम दे सकैत।

ई उपयोगी।

नाम मिलल, समस्या दृश्य।

मुदा कखनो शब्द समस्या रचि सेहो सकैत— जतय पहिने जीवन अलग रूपमे चलैत।

एहि लेल भाषा आ वास्तविकता बीच सदा संवाद।

न नाम पूर्ण सत्य।

न अनुभव बिनु भाषा सहज।

हम नव शब्द रचू।

अपन अनुभवक सूक्ष्म भेद नाम दिअ।

भाषा जतबा समृद्ध, विचार ततबा स्वतन्त्र।

यदि एक भाषा सभ आधुनिक विचार कहए असमर्थ मानल जाए, ओकर बोलिनिहार धीरे ज्ञान सँ दूर हो सकैत।

तखन भाषा-विकास केवल साहित्यिक काम नहि।

राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता सेहो।

वैज्ञानिक शब्द।

दार्शनिक शब्द।

कानूनी शब्द।

तकनीकी शब्द।

आ सहज लोकभाषा।
शब्द जनता धरि ज्ञानक पुल।
यदि पुल केवल एक वर्ग पार करि सकय, ज्ञान लोकतान्त्रिक नहि।
एक किसान नीति बुझि सकय।
एक मजदूर अपन अधिकार।
एक स्त्री स्वास्थ्यक ज्ञान।
एक बच्चा विज्ञान।
अपन भाषामे ज्ञान गरिमा दैत।
मुदा दोसर भाषा सीखब दोष नहि।
बहुभाषिक मन अनेक खिड़की पबैत।
खिड़की जतबा अधिक, आकाश अधिक।
मुदा घरक मुख्य कमरा अन्हार नहि।
मायक भाषा मनक पहिल घर।
ओकरा बौद्धिक घर सेहो बनए दियौ।
तखन बालक अपन हृदय आ बुद्धि बीच कम फाटल महसूस करत।
स्वतन्त्रता केवल बाहरी राज्य नहि।
मनक एकता सेहो।
जे सोचू, ओकरा अपन शब्द मिलय।
जे महसूस करू, ओ बुद्धि धरि पहुँचय।
जे पढ़ू, ओ जीवन संग जुड़य।
ई एकता आत्मिक स्वराज।
एक अदृश्य विभाजन कतेक शिक्षित मनमे रहैत अछि।
घरक लोक “कम।”
शहरक विचार “ऊँच।”
हाथक श्रम “नीच।”
दफ्तरक काम “सम्मान।”
लोकगीत “गँवार।”
विदेशी संगीत “सुसंस्कृत।”
ई रैंकिंग कतय सँ आयल?
कुन मापदण्ड?
स्वराज तराजू फेर जाँचैत।
कोनो लोककला केवल ग्रामीण होएबाक कारण कम नहि।
कोनो शहरी कला केवल आधुनिक होएबाक कारण ऊँच नहि।
कसौटी रचना।
गहराई।

सौन्दर्य।
 सत्य।
 जीवन।
 वर्ग वा स्थान नहि।
 कला संग मन सेहो मुक्त।
 एक नृत्य गाममे जन्मल होइते विश्व छू सकैत।
 एक विदेशी रचना हमर हृदय सत्य कहि सकैत।
 मानव अनुभव सीमा पार।
 स्वराज सीमा बन्द नहि।
 ओ समान आत्मसम्मान संग खुलापन।
 एक विदेशी कवि हमर मित्र हो सकैत।
 मुदा मित्रता तखन जतय हम अपन कविता मौन नहि करैत।
 दो आवाज मिलय।
 एक दोसरमे गायब नहि।
 एहिँ संवाद।
 एक राजनीतिक स्वतन्त्रता यदि मनक गुलामी नहि तोड़य, ओ अधूरी रहैत अछि।
 मुदा मनक स्वतन्त्रता केवल देशभक्ति सँ नहि।
 विवेक चाही।
 आलोचना।
 भाषा।
 सृजन।
 शिक्षा।
 आत्मसम्मान।
 दोसरक सम्मान।
 एक समाज अपने प्रश्न रचय।
 अपने आदर्श फेर परखय।
 कोनो आदर्श केवल पुरान वा नव होएबाक कारण नहि।
 की ओ मनुष्यक जीवन उन्नत करैत?
 की स्वतन्त्रता बढ़बैत?
 गरिमा?
 सत्य?
 सृजनशीलता?
 समुदाय?
 प्रकृति संग सन्तुलन?
 कसौटी जीवन।

आदर्श जीवन लेल।

जीवन आदर्शक बलि नहि।

कतेक विचारधारा मनुष्य केँ अपने नक्शामे फिट करबाक चेष्टा करैत।

मनुष्य टेढ़ पड़ल तँ ओकरा काटि सोझ।

मुदा विचार यदि मनुष्य लेल, नक्शा बदलय।

जीवन मुख्य।

सिद्धान्त साधन।

स्वतन्त्र मन कोनो वादक दास नहि।

ओ सिद्धान्त लेत, मुदा आँखि खुलल रखैत।

फल देखैत।

पीड़ा देखैत।

परिस्थिति देखैत।

फेर संशोधन।

एक विचारधारा यदि कहय— “हम पूर्ण,” मन सावधान।

किएक तँ जीवन सदा सिद्धान्त सँ पैघ।

एक गामक एक घटना सम्पूर्ण पुस्तक बदलि सकैत अछि।

एक मनुष्यक पीड़ा बड़ सिद्धान्तक अन्ध बिन्दु खोलि सकैत।

स्वराज जीवनक आवाज सुनैत।

किताब महत्त्वपूर्ण, मुदा किताब ऊपर जीवन नहि।

एक विदेशी शिक्षक हमरा बहुत सीखा सकैत।

मुदा हम ओकर छात्र सदा नहि।

एक दिन समकक्ष बनब।

फेर हमरो किछु कहबाक।

गुरु सफल तखन जखन शिष्य स्वतन्त्र सोचि सकय।

शिक्षा सफल तखन जखन विद्यार्थी केवल उत्तर याद नहि, नव प्रश्न रचय।

राष्ट्र सफल तखन जखन नागरिक केवल जयकार नहि, विवेक संग असहमति करि सकय।

संस्कृति सफल तखन जखन नव पीढ़ी ओकरा अपन भाषामे फेर रचय।

स्वराज अन्तिम अवस्था नहि।

ओ निरन्तर अभ्यास।

हरेक पीढ़ी फेर पूछत— “हम ककर आँखिसँ देखैत छी?”

“ककर भाषामे सोचैत?”

“ककर मापदण्ड मानैत?”

“किएक?”

ई प्रश्न पीढ़ी-दर-पीढ़ी मनक दरबज्जा साफ रखत।

दासता नव रूपमे आबि सकैत अछि।

काल्हि साम्राज्य।
 आइ बाजार।
 काल्हि राजनीतिक शक्ति।
 आइ एल्गोरिदम।
 ककर चयन हमर आँखि समक्ष आबैत?
 कुन समाचार देखैत?
 कुन विचार बारम्बार सुनैत?
 कुन रुचि हमरा “अपन” लगैत?
 नव पराधीनता कखनो स्क्रीनक भीतर हो सकैत।
 स्वराज आइयो प्रश्न माँगैत।
 “ई हम चुनलहुँ कि हमरा चुनायल गेल?”
 कतेक सूक्ष्म भेद।
 विज्ञापन इच्छा रचैत।
 मीडिया भय।
 एल्गोरिदम ध्यान।
 समाज प्रतिष्ठा।
 परिवार अपेक्षा।
 कतय हमर अपन स्वर?
 मौन जरूरी।
 एक क्षण सभ स्क्रीन बन्द।
 भीड़ बाहर।
 अपने संग बैसू।
 “हम साँचमे की चाहैत छी?”
 “की मानैत?”
 “किएक?”
 आन्तरिक स्वराजक एक छोट सभा।
 कोनो माइक नहि।
 कोनो जयकार नहि।
 केवल अन्तरात्मा आ विवेक।
 मुदा अन्तरात्मा सेहो इतिहास सँ बनल।
 एहि लेल सदा जाँच।
 कखनो हमर “अपन” विचार सेहो पुरान पूर्वग्रह।
 स्वराज केवल बाहरी प्रभाव नकारब नहि।
 अपने भीतर बैसल अन्याय सेहो पहिचानब।
 जाति यदि हमर परम्परा सिखौलक, की ओ “अपन” होएबाक कारण ठीक?

स्त्री प्रति भेदभाव?

धार्मिक घृणा?

अस्पृश्यता?

स्वराज अन्यायक स्वदेशीकरण नहि।

स्वतन्त्रता मानवीय मूल्य माँगैत।

अपन होएब आ ठीक होएब दू अलग प्रश्न।

दोसरक होएब आ बेठीक होएब सेहो अलग।

ई भेद सभसँ महत्त्वपूर्ण।

मूल्य कसौटी।

सत्य।

न्याय।

करुणा।

स्वतन्त्रता।

गरिमा।

सृजन।

जीवन।

एहि पर अपन आ बाहरी दुनू तौलू।

तखन स्वराज संकीर्ण नहि।

ओ विश्वमानवीय हो सकैत अछि।

अपने पयर पर ठाढ़ मनुष्य दोसर सँ डरैत नहि।

ओ हाथ बढ़ा सकैत।

हीन मन दोसर पूजैत वा घृणा करैत।

स्वाभिमानी मन संवाद करैत।

ई विचारक विश्व-बंधुत्व।

अपने घर रखू, मुदा पड़ोसी संग बात करू।

अपन भाषा रखू, मुदा दोसर सीखू।

अपन परम्परा, मुदा दोसरक सम्मान।

अपन निर्णय, मुदा प्रमाण सुनू।

अपन मार्ग, मुदा साझा मानवता।

एहिऐ खुलल स्वराज।

एक दिन विद्यालयक बच्चा अपन भाषामे विज्ञानक जटिल प्रश्न पूछत।

शिक्षक कहत— “बहुत नीक, फेर दोसर भाषाक पुस्तक सेहो देखू।”

बच्चा दुनू पढ़त।

फेर अपने कहत— “हमरा एना बुझाइट।”

ओहि वाक्य मे कतेक भविष्य।

नकल नहि।
 नकार नहि।
 सृजन।
 एक शोधकर्ता दूरक सिद्धान्त पढ़त।
 अपन गामक अनुभव संग मिलायत।
 जतय नहि मिलत, नव प्रश्न रचत।
 दुनिया ओकर उत्तर सुनत।
 तखन ज्ञानक यात्रा एक दिशा नहि।
 एतयसँ ओतय सेहो।
 हम केवल ग्राहक नहि।
 दाता सेहो।
 विचारक व्यापार समान।
 ई स्वराजक परिपक्व क्षण।
 एक कवि अपन लोकधुन लऽ कऽ विश्वक नव रूप भेटत।
 एक कलाकार पुरान रेखामे नव रंग।
 एक वैज्ञानिक स्थानीय समस्या सँ विश्वस्तरीय समाधान।
 एक दार्शनिक अपन भाषाक सूक्ष्म शब्द संग मानव प्रश्न नव रूपमे पूछत।
 एक समाज अपने अनुभव दुनिया संग साझा करत।
 स्वराज तखन रक्षण नहि, सृजन बनि जाइत।
 रक्षण आवश्यक कखनो।
 भाषा बचाउ।
 स्मृति बचाउ।
 कला बचाउ।
 मुदा केवल सहेजि काँचक डब्बामे रखब मृत्यु।
 जीवित वस्तु नव रूप लैत।
 भाषा नव शब्द।
 गीत नव धुन।
 रीति नव अर्थ।
 दर्शन नव प्रश्न।
 संस्कृति समय संग जीबैत।
 जो बदलय नहि, ममी बनि सकैत।
 जो अपन मूल भुलि सभ बदलय, पहिचान गायब।
 फेर सन्तुलन।
 जड़ि जीवित, पात नव।
 एक पेड़ हरेक वर्ष नव पात निकालैत, मुदा हरेक बार दोसर प्रजाति नहि बनैत।

पहिचान परिवर्तनक बीच निरन्तरता।
संस्कृति सेहो।
हम काल्हिक ठीक प्रतिलिपि नहि।
मुदा काल्हिसँ पूर्ण अलगो नहि।
स्मृति धागा।
नवता बुनावट।
एक नव वस्त्र।
स्वराज अपने करघा पर बुनब।
धागा किछु पुरान।
किछु नव।
किछु दूर देशसँ।
मुदा डिजाइन जीवनक अनुकूल।
करघा अपन।
हाथ अपन।
निर्णय अपन।
ओहि वस्त्रमे दुनिया संग भेटब।
न उधार मन।
न उधारक वस्त्र मात्र।
अपन सृजन।
एक समय हम दोसरक स्वीकृति लेल बेचैन रहलहुँ।
“ओ हमरा सभ्य कहत?”
“आधुनिक?”
“प्रगतिशील?”
एक दिन हम पूछब— “हम अपने जीवनक कसौटी पर की छी?”
दोसरक मत महत्वपूर्ण, मुदा अन्तिम नहि।
विश्व एक दर्शक नहि जे हमरा अंक दे।
हम स्वयं जीवनक सहभागी।
सम्मान भीख नहि।
सृजन सँ आबय।
आत्मसम्मान घोषणा नहि।
क्षमता आ सत्यनिष्ठा सँ।
यदि हम अपन भाषा महान कहू मुदा ओहिमे ज्ञान न रची, वाक्य खाली।
यदि अपन संस्कृति महान कहू मुदा अन्याय न सुधारू, वाक्य खाली।
यदि अपन राष्ट्र महान कहू मुदा नागरिक भूखल, वाक्य खाली।
गौरव काम माँगैत।

भाषा रचू।
 विद्यालय सुधारू।
 अनुसन्धान।
 कला।
 न्याय।
 विज्ञान।
 साहित्य।
 समाज सुधार।
 ई आत्मसम्मानक ईंट।
 घोषणा रंग।
 ईंट बिनु रंग कतय?
 स्वराज रचनात्मक श्रम।
 एक पीढ़ी नव पाठ्यपुस्तक लिखत।
 दोसर नव शब्दकोश।
 तेसर वैज्ञानिक प्रयोग।
 चौथ लोकज्ञान दस्तावेज।
 पाँचम विश्व संग संवाद।
 धीरे-धीरे मनक घर मजबूत।
 कोनो एक दिन क्रान्ति नहि।
 दीर्घ निर्माण।
 एक ईंट प्रतिदिन।
 एक प्रश्न।
 एक अनुवाद।
 एक मौलिक विचार।
 एक पुरान रूढ़ि पर आलोचना।
 एक नव सृजन।
 ई स्वराजक दैनिक श्रम।
 एक दिन हम अपन पुरान ग्रन्थ फेर पढ़ब।
 पूजा करबाक लेल नहि।
 प्रश्न पूछबाक।
 ओतय कुन जीवित विचार?
 कुन ऐतिहासिक सीमा?
 कुन भाषा आइयो प्रकाश दैत?
 कुन अंश आइ अन्यायी?
 फेर दुनिया केर नव ग्रन्थ पढ़ब।

मुग्ध होएबाक लेल नहि।
संवाद लेल।
कुन सार्वभौमिक प्रश्न?
कुन विशेष इतिहास?
कुन हमरा समृद्ध करत?
कुन हमर जीवनमे फिट नहि?
दुनू पठन समकक्ष।
एहिऐ विचारक स्वतन्त्रता।
कोनो एक मूल स्रोतक दास नहि।
सत्य जतय, ओतय जाउ।
मुदा अपने पयर संग।
कखनो सत्य अपन परम्परा विरुद्ध हो सकैत।
स्वीकारू।
कखनो दूरक आदर्श हमर जीवन विरुद्ध।
नकारू।
कखनो दुनू मिलि नव रूप बनाबय।
रचू।
सत्य राष्ट्र नहि पूछैत।
मुदा सत्यक अभिव्यक्ति भाषा, इतिहास, जीवन छूबैत।
एहि सूक्ष्म भेद समझू।
सत्य सार्वभौमिक हो सकैत।
रूप स्थानीय।
एक बीजक जीवन सार्वभौमिक।
मुदा फूलक रंग माटि संग।
स्वराज रूपक सृजनशीलता।
दुनियाक सत्य अपन जीवनक रंग पाबय।
एक लोकतन्त्र अपन इतिहास अनुसार रूप पाबय।
एक शिक्षा अपन भाषा।
एक विज्ञान अपन समस्या।
एक कला अपन स्मृति।
एक दर्शन अपन प्रश्न।
मुदा मानवता साझा।
ई दुनू एक संग धारण करब परिपक्वता।
एक हाथ माटि छूबैत।
दोसर आकाश दिस।

पयर घरमे।
 आँखि विश्वमे।
 हृदय अपन लोक संग।
 बुद्धि सभ दिशा खुलल।
 एहिऐ सुन्दर मनुष्य।
 न घेराबन्दी।
 न आत्मविस्मृति।
 एक खुला घर।
 एक मजबूत नींव।
 एक बहुत खिड़की।
 एक अपन दुआर।
 जो आबय, स्वागत।
 जो हानि दे, मर्यादा।
 जो ज्ञान दे, ग्रहण।
 जो अहंकार दे, प्रश्न।
 जो प्रेम दे, संवाद।
 जो सत्य दे, कृतज्ञता।
 जो बेठीक, नकार बिनु घृणा।
 ई घर मनक स्वराज।
 एक दिन भोर फेर खिड़की पर आबि ठाढ़ होएत।
 हम चश्मा उतारब।
 मुदा आँखि बन्द नहि।
 दूरक पर्वत देखब।
 अपन आँगन सेहो।
 दोसरक बगिया सुन्दर कहल बिनु अपन फूल मुरझायल नहि मानब।
 अपन फूल प्रेम कएल बिनु दोसरक बगिया जरा नहि देब।
 हम कहब—
 “ई हमर माटि।”
 मुदा “केवल ई माटि पवित्र” नहि।
 “ई हमर भाषा।”
 मुदा “केवल ई भाषा ज्ञान” नहि।
 “ई हमर परम्परा।”
 मुदा “हरेक पुरान ठीक” नहि।
 “ई हमर भविष्य।”
 मुदा “दोसर सँ किछु नहि सीखब” नहि।

एहि चार 'मुदा' मे स्वतन्त्रता श्वास लेत।
किएक तँ स्वराज एक बन्द मुट्ठी नहि।
ओ खुलल हाथ।
जे अपने हाथ सँ अपन रोटी बनबैत,
आ दोसर संग बाँटि सेहो सकैत।
जे अपने दीप जरबैत,
आ दोसरक उजास देखिकऽ ईर्ष्या नहि करैत।
जे अपने गीत गबैत,
आ दूरक गीत सुनि आनन्द लेत।
जे अपने प्रश्न पूछैत,
आ दोसरक उत्तर सुनैत।
एहिए स्वतन्त्र मन।
एक सांस्कृतिक स्वराज जतय पहिचान कठोर दीवार नहि, जीवित लय।
एक विचारक स्वराज जतय मापदण्ड उधार नहि, परखल।
एक भाषिक स्वराज जतय ज्ञान अपन भाषामे सेहो श्वास लैत।
एक शैक्षिक स्वराज जतय विद्यार्थी नकल नहि, सृजन सीखैत।
एक नैतिक स्वराज जतय अपन होएबाक कारण अन्याय माफ नहि।
एक विश्वमानवीय स्वराज जतय स्वाभिमान दोसरक सम्मान संग चलैत।
भोर तखन सूर्य सँ अधिक होएत।
ओ मनक एक नव दिशा।
एक दृष्टि जे दोसरक आँखि उधार नहि माँगैत, मुदा दोसरक दृष्टि नकारैत सेहो नहि।
ओ अपने आँखि खोलैत।
देखैत।
सुनैत।
तौलैत।
स्वीकारैत।
नकारैत।
रचैत।
आ फेर नव प्रकाशमे अपने निर्णय सेहो जाँचैत।
किएक तँ स्वतन्त्रता एक बेर मिलल पुरस्कार नहि।
ओ प्रतिदिन जागल रहनाइ।
प्रतिदिन अपने केँ फेर पूछब—
“आइ हम ककर आँखिसँ दुनिया देखलहुँ?”
यदि उत्तर आबय— “अपन, मुदा खुलल आँखिसँ,”
तखन भोर सचमुच हमर होएत।

पुरान नदीमें नव धार

एक नदी बहुत पुरान, मुदा हरेक भोर ओहि में नव जल उतरैत अछि।

पर्वत पुरान, मेघ नव।

घाट पुरान, पयर नव।

नाम पुरान, प्रश्न नव।

समय किनार पर बैसि पूछैत अछि— “तूँ अखनो बहैत छै कि केवल अपन पुरान मानचित्र सहेजने छै?”

नदी हँसैत अछि— “जकर जल रुकि गेल, ओ नदी कतय?”

स्मृति आवश्यक, मुदा स्मृति यदि प्रवाह बन्द करय, ओ बाँध।

परम्परा आवश्यक, मुदा परम्परा यदि प्रश्न रोकय, ओ दीवार।

ज्ञान आवश्यक, मुदा ज्ञान यदि जीवन छोड़ि केवल ग्रन्थक धूलि बनय, ओ संग्रहालय।

जीवित विचार चलैत अछि लोकक दुःख धरि।

विद्यालय।

बाजार।

खेत।

कारखाना।

घर।

प्रयोगशाला।

न्यायालय।

एक विचार यदि केवल कक्षा भीतर अपन गरिमा राखैत, ओकर पयर कमजोर।

विचार धरती छूबय।

किसानक सूखल खेत।

मजदूरक थाकल हाथ।

युवाक भ्रम।

स्त्रीक मौन।

बच्चाक प्रश्न।

मनक अशान्ति।

जीवन दार्शनिक कक्षा अपने खेलैत अछि।

एक स्वतन्त्र देश जखन अपने कदम पर ठाढ़ होइत, ओकरा केवल सीमा नहि, विचारक दिशा सेहो तय करबाक पड़ैत अछि।

“हम के?”

“हमर भविष्य कइसन?”

“पुरान धरोहरमे की जीवित?”

“की रूढ़?”

“दूर दुनियाँ की सीखब?”

“की अपने रचब?”

ई प्रश्न एक पुस्तकक नहि, पीढ़ी-दर-पीढ़ीक प्रश्न।

हरेक पीढ़ी नदीमे अपन नव जल दैत अछि।

कखनो प्रवाह तेज।

कखनो कम।

कखनो बाढ़।

कखनो सूखा।

मुदा नदी चलैत रहय— एतबे जीवनक पहिल शर्त।

एक छोर कहैत— “पुरानमे सभ उत्तर।”

दोसर— “नव युगमे पुरान सभ छोड़ू।”

बीचमे जीवन कहैत— “हमरा दुनू हाथ चाही।”

एक हाथ स्मृति।

दोसर प्रयोग।

एक हाथ परम्परा।

दोसर आलोचना।

एक हाथ आस्था।

दोसर विवेक।

एक हाथ आत्मबोध।

दोसर विज्ञान।

मनुष्य एक हाथ सँ सम्पूर्ण घर नहि बना सकैत।

पुरान प्रश्न अखनो जीवित—

हम के?

जगत की?

ज्ञान केना?

सत्य की?

मुक्ति की?

कर्तव्य की?

चेतना की?

मुदा नव समय नव अतिथि लऽ कऽ दरबज्जा पर अछि—

लोकतन्त्र।

विज्ञान।

उद्योग।

राष्ट्र।

सामाजिक न्याय।

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता।

मानव गरिमा।

लिंग-समता।

पर्यावरण।
तकनीक।
नव अर्थव्यवस्था।
पुरान घर कहैत— “अन्दर आबू।”
मुदा कमरा फेर सजाबय पड़त।
समन्वय गड्डमड्ड करब नहि।
दू रंग मिलि धूसर होएब समन्वय नहि।
दू रंग अपन तेज राखि एक चित्र रचय— ई समन्वय।
पुरान तर्क नव विज्ञानक प्रश्न सुनय।
विज्ञान मानव मूल्यक प्रश्न सुनय।
धर्म यदि कहय— “प्रश्न निषिद्ध,” विवेक दरबज्जा खटखटायत।
विज्ञान यदि कहय— “मूल्य हमर विषय नहि,” जीवन पूछत— “तँ शक्ति ककर हाथ?”
एक मशीन बना सकैत अछि, मुदा कुन लेल?
एक औषधि जीवन बचबैत, मुदा ककरा पहुँचत?
एक तकनीक समय बचबैत, मुदा बचायल समय कुन जीवनमे लगत?
विज्ञान “केना” कहैत।
दर्शन “किएक” पूछैत।
समाज “ककर हित?” पूछैत।
मनुष्य एहि सभक बीच ठाढ़।
यदि ई सभ एक-दोसर सँ बात करय, सभ्यता गहिर होइत अछि।
यदि एक-दोसर केँ तिरस्कार, मनुष्य खंडित।
आस्था आ प्रमाण शत्रु होएबाक आवश्यकता नहि।
एक अर्थक आकाश देखैत।
दोसर घटनाक नियम।
एक हृदयक व्यथा सुनैत।
दोसर आँकड़ा।
मुदा आस्था अन्धता न बने।
प्रमाण मानवीय अर्थक उपहास न करे।
एक स्वस्थ मन दुनू दुआर खोलि सकैत अछि।
सत्य कखनो सूत्रमे।
कखनो मौनमे।
कखनो आँकड़ामे।
कखनो अन्यायक विरुद्ध उठल स्वरमे।
जीवन सत्यक बहुत भाषा रखैत अछि।
जीवित परम्परा अनुवाद करैत अछि।

पुरान शब्द नव समस्या सँ भेटैत।

“मुक्ति” कखनो केवल जन्म-मृत्यु पारक प्रश्न नहि, दासता पारक सेहो।

“धर्म” केवल अनुष्ठान नहि, उत्तरदायित्व सेहो।

“ज्ञान” केवल निजी मुक्ति नहि, सामाजिक न्यायो।

शब्द पुरान, अर्थ नव धूप लेत।

मृत परम्परा शब्द सहेजैत, अर्थ नहि।

जीवित परम्परा अर्थ सहेजैत, शब्द बदलि सेहो सकैत।

बीज काँचक डब्बामे सुरक्षित रहि सकैत, मुदा वृक्ष नहि बनत।

रोपू।

माटि दियौ।

जल।

हवा।

प्रश्न।

तखन अंकुर।

दर्शन यदि समाज नहि देखय, ओ ककर दर्शन?

भूख दार्शनिक प्रश्न अछि।

न्याय।

संसाधन।

श्रमक मूल्य।

समता।

स्वतन्त्रता।

गरिमा।

एक कुआँ जतय कोनो मनुष्य केँ जल नहि, ओतय समता कागज पर किएक?

एक विद्यालय जतय बेटी बाहर, ज्ञानक प्रकाश ककर?

एक कारखाना जतय मजदूर पुर्जा, मानवता कतय?

एक राज्य जतय प्रश्न डरैत, स्वतन्त्रता कतय?

विचारक पयर जीवनमे पड़य।

व्यक्ति आ समाज दू शत्रु नहि।

व्यक्ति समाजसँ भाषा, शिक्षा, सड़क, कानून, संस्कृति पबैत।

समाज व्यक्तिक सृजन सँ बदलैत।

दुनू एक-दोसरक निर्माता।

व्यक्ति यदि केवल अपन सुख देखय, अकेला द्वीप।

समाज यदि व्यक्तिक स्वर निगलय, कारागार।

बीचमे गरिमा आ उत्तरदायित्वक पुल।

राज्य कतेक शक्ति?

व्यक्ति कतेक स्वतन्त्रता?
 परिवार कतेक मर्यादा?
 बाजार कतेक खुलापन?
 समता कतेक भिन्नता सहेजैत?
 प्रश्नसभ दैनिक जीवनक गाँठ।
 एक धागा खींचू, दोसर कसि सकैत अछि।
 स्वतन्त्रता बढ़ाउ, मुदा कमजोरक सुरक्षा?
 सुरक्षा बढ़ाउ, मुदा निगरानी?
 समता बढ़ाउ, मुदा व्यक्तित्व?
 समुदाय मजबूत, मुदा असहमति?
 सन्तुलन जीवित कला।
 एक समय राजनीतिक स्वतन्त्रता मुख्य प्रश्न।
 फेर सामाजिक समता।
 आर्थिक न्याय।
 लिंग-गरिमा।
 पर्यावरण।
 तकनीकी स्वतन्त्रता।
 नैतिक वृत्त फैलैत जाइत अछि।
 पहिने किछु लोक।
 फेर सभ नागरिक।
 फेर स्त्री।
 दलित।
 आदिवासी।
 विकलांग।
 अल्पसंख्यक।
 भविष्यक पीढ़ी।
 अन्य जीव।
 वृत्त जतबा फैलैत, हृदय ततबा बड़ होएबाक चाही।
 आध्यात्मिकता यदि जीवन छोड़य, अधूरी।
 जीवन यदि भीतरक गहराई छोड़य, अधूर।
 कमल जलमे खिलैत अछि।
 जल छोड़ि आकाशमे नहि।
 मुदा जल ओकर पंखुड़ी डुबाबैत सेहो नहि।
 संसारमे रहू, मुदा लोभक दास नहि।
 देह स्वीकारू, मुदा केवल देह नहि।

समाज स्वीकारू, मुदा अन्ध अनुकरण नहि।
भीतर आ बाहर दुनू मुक्ति माँगैत अछि।
एक मन शान्त, मुदा घरमे क्रूर— शान्ति अधूरी।
एक समाज कानूनमे समान, मुदा मनमे घृणा— समता अधूरी।
भीतरक मूल्य बाहरक रूप बनय।
बाहरक संस्था भीतरक विकास लेल ठाम बनाबय।
चरित्र ज्ञानक छाया नहि, ओकर दिशा।
पुस्तक अधिक, मुदा ईमानदारी?
डिग्री अधिक, मुदा करुणा?
तकनीक अधिक, मुदा संयम?
सत्ता अधिक, मुदा सेवा?
तेज बुद्धि आ लोभी हृदय सभ्यताक खतरा बनि सकैत।
शक्ति हाथ दैत।
चरित्र दिशा।
एक चाकू शल्यक्रिया सेहो, हत्या सेहो।
प्रश्न हाथक चरित्रक।
शिक्षा केवल मस्तिष्क नहि, मनुष्य बनाबय।
सत्यक प्रेम।
श्रमक सम्मान।
दोसरक गरिमा।
संवाद।
करुणा।
साहस।
आत्मपरीक्षण।
ई सभ पाठ्यपुस्तकक अध्याय मात्र नहि।
विद्यालयक वातावरण।
शिक्षकक व्यवहार।
घरक भाषा।
संस्थाक संस्कृति।
एक विद्यालय जतय परीक्षामे छल, ईमानदारीक पाठ कतेक?
एक घर जतय बेटी कम, समताक भाषण कतेक?
चरित्र वातावरण सँ लिखल जाइत अछि।
भाषा फेर दुआर पर आबैत अछि।
यदि विचार केवल एक ऊँच भाषाक मीनारमे, कतेक लोक ओतय चढ़त?
ज्ञान जन धरि जाए।

मातृभाषा आ भारतीय भाषासभ विचारक वाहन बनय।

नव शब्द रचय।

अनुवाद हो।

कठिन विचार सुलभ हो।

स्पष्टता गहराईक शत्रु नहि।

गहिर नदी साफ हो सकैत अछि।

लोक अपन भाषामे प्रश्न पूछि सकय।

दर्शन पुस्तकालयक बन्द कमरा नहि, चौपालो हो।

मुदा लोकप्रियता सत्यक कसौटी नहि।

सहज अर्थ सतही नहि।

स्पष्ट अर्थ सरलवादी नहि।

भाषा विचारक जीवित प्रयोगशाला।

अनुवाद केवल शब्द बदलनाइ नहि।

दू बौद्धिक जगत भेटैत अछि।

एक शब्द पार करैत किछु अर्थ झड़ैत।

किछु नव उगैत।

अनुवाद विनम्र सृजन।

नकल नहि।

समझ।

एक समाज यदि अपन भाषामे विज्ञान, दर्शन, समाज, न्याय, तकनीक पर गहिर चर्चा नहि करि सकय, स्वतन्त्रता अधूरी।

मुदा विश्वभाषा शत्रु नहि।

ओ खिड़की।

समस्या तखन जखन खिड़की घर बनि जाए आ घर गोदाम।

एक पयर घरमे।

दोसर दुनियामे।

दुनू पयर संग यात्रा।

पुरान ग्रन्थ फेर पढ़।

पूजा लेल नहि।

प्रश्न लेल।

ओ अपने समयमे की कहैत छल?

आइ ओकर अर्थ की हो सकैत?

पहिल प्रश्न इतिहासक प्रति न्याय।

दोसर वर्तमानक प्रति जिम्मेदारी।

पुनर्पाठ मनमाना मोड़ नहि।

सम्मान संग संशोधन।

पुरान विचारक मूर्ति न बनाउ।
मूर्ति प्रश्न नहि सुनैत।
जीवित विचार बहस करैत अछि।
“एतय अद्भुत।”
“एतय सन्देह।”
“एतय आइक परिस्थिति भिन्न।”
एहि ए सम्मानक जीवित रूप।
नव दर्शन कतय सँ आयत?
केवल पुरान टिप्पणी सँ नहि।
केवल विदेशी सिद्धान्तक अनुवाद सँ नहि।
नव अनुभव सँ।
नव प्रश्न सँ।
नव भाषा सँ।
नव संघर्ष सँ।
शहरक एकान्त।
पर्यावरणीय संकट।
डिजिटल जगत।
जैव-तकनीक।
पहिचानक राजनीति।
वैश्विक बाजार।
नव समस्या नव चिन्तन माँगैत।
मौलिकता पूर्ण शून्य सँ जन्म नहि।
ओ पुरान धागा नव बुनावटमे रखैत अछि।
मौलिकता नव प्रश्नक ईमानदार उत्तर।
“पूर्वज कहला”— महत्त्वपूर्ण।
“दूर देशमे कहल गेल”— महत्त्वपूर्ण।
मुदा एक दिन प्रश्न आबय— “तूँ की कहैत छ?”
एहि ए विद्यार्थीसँ विचारक बनबाक देहरी।
उत्तर सदा किताबमे नहि।
कखनो रचबाक पड़ैत।
मौलिकता आलस्य नहि।
अध्ययन।
तर्क।
इतिहास।
प्रमाण।

फेर नव पगडंडी।
 जंगल जाने बिनु नव रास्ता कतय?
 पुरान नक्शा जानू, मुदा नक्शा लऽ कऽ घरमे नहि बैसू।
 चलू।
 शोध विचारक दीर्घ श्वास।
 पाण्डुलिपि सहेजू।
 सम्पादन।
 अनुवाद।
 नव अध्ययन।
 लोकज्ञानक दस्तावेज।
 समकालीन समस्याक गहिर विश्लेषण।
 शोध केवल डिग्री नहि।
 स्मृति आ भविष्य बीच पुल।
 एक मिटैत अक्षर केवल कागज नहि।
 पुरान प्रश्नक एक आवाज।
 ओकरा बचाउ।
 मुदा अलमारीमे बन्द नहि।
 पढ़ू।
 समझू।
 आलोचना।
 संवाद।
 तखन स्मृति रक्त बनैत अछि।
 संस्था माटि।
 विश्वविद्यालय।
 अनुसन्धान केन्द्र।
 पत्रिका।
 पुस्तकालय।
 सम्मेलन।
 अनुवाद योजना।
 शब्दावली।
 मुदा संस्था यदि औपचारिकता मात्र, माटि बंजर।
 सम्मेलन केवल उद्घाटन?
 शोध केवल पदोन्नति?
 पत्रिका केवल सूची?
 पुस्तकालय बन्द?

तखन विचारक बीज कतय उगत?

संस्था जीवित जतय प्रश्न।

बहस।

पठन।

लेखन।

स्वतन्त्र वातावरण।

एक शोध-स्थल मन्दिर नहि जतय एक मत पूजल जाए।

बाजार नहि जतय लोकप्रियता बिकय।

कार्यशाला।

तर्क हथौड़ी।

प्रमाण कसौटी।

इतिहास माप।

प्रश्न आगि।

सृजन धातु।

ज्ञान तपि नव रूप लेत।

कियो कहैत— “दर्शन मरि रहल।”

मुदा जतबा धरि मनुष्य पूछत—

“सत्य की?”

“नीक जीवन की?”

“न्याय की?”

“हम के?”

“मृत्यु की?”

“ज्ञानक सीमा?”

“स्वतन्त्रता कतय धरि?”

दर्शन केना मरत?

ओ नाम बदलि सकैत।

भाषा बदलि।

विषय बदलि।

मुदा प्रश्न जीवित।

एक बच्चाक “किएक?” दार्शनिक दीप।

एक वृद्धक मृत्यु समक्ष जीवनक अर्थ— दार्शनिक दीप।

एक अदालतक अधिकारक तौल— दार्शनिक दीप।

एक वैज्ञानिकक ज्ञानक सीमा— दार्शनिक दीप।

एक नागरिकक राज्यक शक्ति पर प्रश्न— दार्शनिक दीप।

जीवन दर्शन सँ भरल।

प्रश्न ई जे विद्यापीठ ओहि जीवनक ताप संग जुड़ल रहय।

ग्रन्थ आ सड़क भेटय।

तर्क आ अनुभव।

कक्षा आ समाज।

विद्वान आ जन।

एहि ए समकालीन संगम।

भविष्य एक ही राह नहि।

कियो भाषा पर काम करत।

कियो तर्क।

कियो परम्पराक पुनर्पाठ।

कियो नैतिकता।

कियो धर्म-विज्ञान संवाद।

कियो समाज आ संस्कृति।

कियो पर्यावरण।

कियो चेतना।

कियो शिक्षा।

कियो मूल्य।

विचारक वन अनेक वृक्ष माँगैत।

मुदा वनक साझा माटि हो—

सत्यक ईमानदार खोज।

मानवीय गरिमा।

तर्कक अनुशासन।

इतिहासक सम्मान।

खुलापन।

आत्मविश्वास।

विनम्रता।

एक वृक्ष सम्पूर्ण वन नहि।

एक विचारधारा सम्पूर्ण मानव अनुभव नहि।

अनेकता आवश्यक।

मुदा अनेकता बिखराव नहि।

जड़ि नीचाँ मिलय।

विचारक जड़ि मानव प्रश्नमे मिलैत अछि।

दू सभ्यता दू ठोस पाथर नहि।

दुनूक भीतर अनेक धार।

“एक आध्यात्मिक।”

“दोसर भौतिक।”

एहन सरल विभाजन सत्य केँ छोट करि सकैत।

विशिष्ट विचार विशिष्ट विचार सँ भेटय।

विशिष्ट प्रश्न।

विशिष्ट तर्क।

तखन तुलना जीवित।

नारा नहि।

दोसरक प्रश्न हमर अन्ध बिन्दु खोलैत।

हमर प्रश्न दूसरक।

संवाद जीत-हार नहि।

दू खिड़की एक आकाश अधिक गहिर देखैत।

मुदा संवाद समकक्ष हो।

एक सदा गुरु, दोसर सदा शिष्य— ई संवाद नहि।

दुनू एक मेज पर बैसू।

दुनू प्रश्न पूछू।

दुनू उत्तर दिअ।

दुनू आलोचना सहू।

ई विश्व-विचारक गरिमा।

एक नदी समुद्र दिस अपन जल लऽ कऽ बहैत अछि।

समुद्रमे गेलाक पाछाँ जल विश्वचक्रक अंश।

फेर मेघ।

फेर बरखा।

ज्ञान एहन चक्र।

बहुत स्रोत।

बहुत नदी।

बहुत समुद्र।

कोनो एक केन्द्र सदा नहि।

अपन स्रोत जीवित रखू।

मुदा समुद्र सँ डरू नहि।

आदर्श एक क्षितिज।

ओ दिशा देत, मुदा धरती पर जबरन उतारल जाए तँ मृगतृष्णा बनि सकैत।

अन्तिम समाज जतय सभ प्रश्न समाप्त— कदाचित् मानव जीवन एतबा सरल नहि।

एक समस्या हल।

दोसर उगैत।

तकनीक सुविधा, नव अकेलापन।

बाजार वस्तु, नव लोभ।
 राज्य सुरक्षा, नव नियन्त्रण।
 स्वतन्त्रता, नव जिम्मेदारी।
 आदर्श लचीला हो।
 अधिक न्याय।
 अधिक स्वतन्त्रता।
 अधिक करुणा।
 अधिक सत्य।
 अधिक सृजन।
 अधिक सन्तुलन।
 क्षितिज पहुँचबाक स्थान नहि, दिशा।
 मानव मुक्ति सेहो एकहि अर्थ नहि।
 भूख सँ मुक्ति।
 जाति सँ।
 लिंग-दमन सँ।
 राजनीतिक भय सँ।
 अज्ञान सँ।
 अन्ध उपभोग सँ।
 भीतरक अहंकार सँ।
 आध्यात्मिक आ सामाजिक मुक्ति एक-दोसर सँ बात करय।
 भीतर मुक्त, बाहर अन्याय— अधूर।
 बाहर न्याय, भीतर घृणा— अधूर।
 दुनू पंख।
 ध्यान आ लोकतन्त्र।
 आत्मसंयम आ समान अवसर।
 करुणा आ कानून।
 साधना आ सेवा।
 एक नव मानव समग्र होएबाक चेष्टा करय।
 देह।
 बुद्धि।
 भावना।
 इच्छा।
 नैतिकता।
 सृजनशीलता।
 आध्यात्मिक गहराई।

सामाजिक उत्तरदायित्व।

मनुष्य कोनो कम्पनीक “संसाधन” मात्र नहि।

ओ कवि सेहो।

मित्र।

माता।

नागरिक।

श्रमिक।

साधक।

विचारक।

प्रेमी।

प्रकृति संग एक जीव।

मानव बहुआयामी।

दर्शन ओकरा एक लेबलमे न बन्द करय।

न जाति।

न पेशा।

न धर्म।

न लिंग।

न वर्ग।

कोनो एक पहिचान सम्पूर्ण मनुष्य नहि।

एक स्वतन्त्र मनुष्य जो समाजसँ जुड़ल।

एक आध्यात्मिक मनुष्य जो धरती सँ पलायन नहि।

एक वैज्ञानिक मन जो मूल्य-विहीन नहि।

एक आस्थावान मन जो प्रश्न सँ डरैत नहि।

एक राष्ट्रप्रेम जो मानवता सँ घृणा नहि।

एक परम्पराप्रेम जो रूढ़ि पर प्रश्न करैत।

एक आधुनिकता जो स्मृति तिरस्कार नहि।

ई मध्यम पथ कमजोरी नहि।

परिपक्वता।

कतेक विरोध हम अपने बना लेने छी—

धर्म बनाम विज्ञान।

परम्परा बनाम आधुनिकता।

व्यक्ति बनाम समाज।

पूर्व बनाम पश्चिम।

आध्यात्म बनाम भौतिकता।

जीवन अधिक जटिल।

समन्वय तनाव मिटाबय नहि।
 ओ तनाव केँ सृजनात्मक बनाबय।
 वीणा तार तना रहैत, तखन स्वर।
 ढीला— मौन।
 बहुत खींचल— टूटल।
 सन्तुलित तनाव— संगीत।
 विचारक विरोध सेहो नव सत्य जन्मा सकैत।
 यदि संवाद हो।
 असहमति शत्रुता नहि।
 बहस युद्ध नहि।
 एक विचार दोसर सँ टकरा चिंगारी दे, घर नहि जराउ।
 एक संस्कृति असहमति केना सँभालैत, ओकर बौद्धिक परिपक्वता एहि सँ मापू।
 कियो भिन्न कहलक, तुरन्त दुश्मन?
 तँ विचार कमजोर।
 कियो प्रश्न पूछलक, तुरन्त अपमान?
 तँ आत्मविश्वास कम।
 साँच आत्मविश्वास आलोचना सुनैत।
 उत्तर दैत।
 कखनो कहैत— “अहाँ सही।”
 ई तीन शब्द बौद्धिक विनम्रता।
 एक विद्वान अपन सिद्धान्त संशोधित करि सकय।
 एक शिक्षक विद्यार्थीक नव विचार सुनि आनन्द पाबय।
 एक विद्यार्थी असहमति सम्मान संग रखय।
 विनम्रता विचारक जल।
 अहंकार ओकर सूखा।
 नव समय तेज प्रश्न लऽ कऽ आबि रहल—
 डिजिटल निगरानी।
 कृत्रिम बुद्धि।
 जैविक हस्तक्षेप।
 जलवायु।
 आभासी सम्बन्ध।
 वैश्विक प्रवासन।
 पुरान पुस्तक सोझ उत्तर नहि देत।
 मुदा पुरान मूल्य किछु दीप देत—
 गरिमा।

स्वतन्त्रता।

करुणा।

सत्य।

अहिंसा।

न्याय।

उत्तरदायित्व।

समग्रता।

एहि दीप लऽ कऽ नव सुरंगमे चलू।

पुरान नाव कखनो मरम्मत चाही।

कखनो नव नाव।

मुदा नाव बनाबयक कला स्मृति सँ आबैत।

नवता शून्य नहि।

स्मृति आ प्रयोगक सन्तान।

दीर्घ यात्रा पाछाँ मुड़ि देखैत अछि—

किछु दीप जलल।

किछु अन्हार रहल।

किछु मौलिक स्वर।

किछु उधारक प्रतिध्वनि।

किछु संस्था बनल।

किछु सूखल।

किछु प्रश्न खुलल।

किछु टारल।

इतिहास मिश्रित।

ईमानदार मूल्यांकन कहैत—

“एतय हम पहुँचलहुँ।”

“एतय अखनो दूर।”

न जयकार मात्र।

न निराशा मात्र।

समयक मीलक पत्थर घर नहि।

ओ रुकि श्वास लेबाक स्थान।

पाछाँ देखू।

फेर आगाँ।

यात्रा अखनो बाकी।

भविष्य एक व्यक्तिक नहि।

समूहक काम।

लेखक।
 शिक्षक।
 विद्यार्थी।
 अनुवादक।
 सम्पादक।
 शोधकर्ता।
 पुस्तकालयकर्मी।
 कलाकार।
 वैज्ञानिक।
 समाजकर्मी।
 लोक अनुभव लऽ कऽ आबनिहार।
 सभ विचारक पारिस्थितिकी।
 एक अकेला वृक्ष वन नहि।
 पत्रिका बहस करय।
 सम्मेलन औपचारिकता पार जाए।
 विश्वविद्यालय नव प्रश्न सहेजि सकय।
 भाषा नव शब्द रचय।
 विद्यार्थी प्रश्न करय।
 शिक्षक “नहि जानैत” कहि सकय।
 ई छोट बौद्धिक नैतिकता भविष्य बनबैत।
 ज्ञान प्रतिष्ठाक सामान नहि।
 साझा साधना।
 स्पष्ट लेखन।
 गहिर अध्ययन।
 धीमा पठन।
 तेज समाचारक युगमे धीमा विचार आरो जरूरी।
 एक सिद्धान्त पाँच मिनटमे सम्पूर्ण नहि।
 एक परम्परा एक नारा नहि।
 एक समाज एक वाक्य नहि।
 गहराई समय माँगैत।
 पठन।
 चिन्तन।
 मौन।
 संवाद।
 फेर लेखन।

सूचना कहैत— “की भेल।”

ज्ञान— “किएक।”

बुद्धि— “की अर्थ।”

विवेक— “आब की करब।”

विचार अन्तिम दू सीढ़ी बचाबय।

एक समग्र दृष्टि सभ विषय एक नहि बनाबय।

हरेक स्वर अपन।

मुदा राग साझा।

वैज्ञानिक अपन विधि।

कवि अपन।

इतिहासकार अपन।

समाजशास्त्री अपन।

मुदा मानव समस्या पर सभ एक-दोसरक खिड़की खोलू।

एक महामारी केवल चिकित्सा नहि।

नैतिकता।

अर्थशास्त्र।

राजनीति।

मनोविज्ञान।

एक पर्यावरणीय संकट केवल विज्ञान नहि।

न्याय।

विकास।

संस्कृति।

उपभोग।

एक युद्ध केवल रणकौशल नहि।

स्मृति।

पहिचान।

मानवता।

विषय अंग।

जीवन सम्पूर्ण शरीर।

समग्रता सम्पूर्ण शरीर स्मरण करब।

अपने विचार केँ फेर-फेर जाँचू।

एक समय प्रिय सिद्धान्त आइ सीमित हो सकैत।

नव तथ्य आबि रूप बदलि सकैत।

“ई हमर सिद्धान्त” कहलासँ सत्य हमर सम्पत्ति नहि।

जो हमर त्रुटि देखाबय, ओ कखनो ज्ञानक मित्र।

आलोचना सेवा हो सकैत।
 मुदा आलोचना पूर्वाग्रह नहि।
 प्रमाण।
 सन्दर्भ।
 सम्मान।
 ई मर्यादा।
 भविष्यक आशा बड़ घोषणामे कम, छोट काजमे अधिक।
 एक विद्यार्थी मातृभाषामे गम्भीर विचार लिखलक।
 एक शोधकर्ता पुरान पाठ सहेजलक।
 एक अनुवादक दूरक विचार जीवित भाषा में लऽ आयल।
 एक शिक्षक कक्षा में प्रश्न खुला रखलक।
 एक विद्वान अपन भूल स्वीकारलक।
 एक पत्रिका भिन्न मत छापलक।
 ई छोट दीप मिलि एक पीढ़ी रोशन करैत।
 भविष्य तैयार भवन नहि।
 ईंट प्रतिदिन।
 एक ईंट भाषा।
 एक मौलिक प्रश्न।
 एक सामाजिक उत्तरदायित्व।
 एक वैज्ञानिक संवाद।
 एक नैतिक साहस।
 एक करुण दृष्टि।
 धीरे-धीरे घर।
 एक समय हम पूछलहुँ— “हमर विचार कतय?”
 भविष्य कदाचित् पूछत— “हमर जीवनमें विचार कतेक?”
 पुस्तक हो, मुदा व्यवहार?
 सिद्धान्त हो, मुदा समाज?
 आध्यात्मिकता हो, मुदा करुणा?
 न्याय हो, मुदा संस्था?
 स्वतन्त्रता हो, मुदा कक्षा?
 भाषा-गौरव हो, मुदा ज्ञान-सृजन?
 परम्परा हो, मुदा नव प्रश्न?
 विचार तखन जीवित जतय कर्म केँ छूबैत।
 कर्म विचार सँ दिशा पबैत।
 दुनू बीच पुल।

एक सत्य जीवनमे उतरि नव अर्थ पबैत।
एक सामाजिक अनुभव पुरान सिद्धान्त पर नव प्रश्न उठबैत।
जीवन खुलल पुस्तक।
हम सभ किछु पंक्ति लिखैत छी।
प्रश्न ई— हमर पंक्ति कुन मूल्य लऽ कऽ आगाँ जायत?
दीर्घ साँझ पाछाँ राति मात्र नहि, नव भोर सेहो हो सकैत।
यदि हम कहि सकी— “आब आरो गहिर।”
आरो मौलिक।
आरो खुला।
आरो भाषिक।
आरो सामाजिक।
आरो वैज्ञानिक संवादमय।
आरो आत्मविश्वासी।
आरो विनम्र।
आरो मानवीय।
ई नव दिशा एक आकाश बना सकैत।
एक विचार जे अपन घर जानैत, दुनिया सेहो।
पूर्वज सुनैत, बच्चा सेहो।
मन्दिर देखैत, प्रयोगशाला सेहो।
आत्मा पूछैत, रोटी सेहो।
मुक्ति कहैत, न्याय सेहो।
सत्य खोजैत, अपन सीमा सेहो मानैत।
भाषा सहेजैत, अनुवाद सेहो करैत।
गौरव रखैत, आलोचना सेहो।
एहि ए पुरान नदीमे नव धार।
नदी हरेक मोड़ पर अपन नाम नहि बदलैत।
मुदा जल बदलैत।
किनार कखनो बदलैत।
घाट नव।
पुल नव।
नाव नव।
यात्री नव।
आ फेरो नदी ओही दीर्घ जीवन लऽ कऽ समुद्र दिस चलैत।
परम्परा सेहो एहन।
पहिचान रहय।

प्रवाह सेहो।
जड़ि रहय।
नव पात सेहो।
स्मृति रहय।
सृजन सेहो।
यदि दुनू संग चलल, समय किनार पर फेर पूछत— “तूँ अखनो बहैत छें?”
आ नदी अपन नव जल संग उत्तर देत—
“हाँ।
हम पुरान छी, मुदा रुकल नहि।
हमर गहराई स्मृतिसँ।
हमर दिशा प्रश्नसँ।
हमर प्रवाह सृजनसँ।
आ हमर समुद्र अखनो आगाँ अछि।”

दीपक पाछाँक अनाम उजास

एक दीप मंच पर चमकैत अछि,
मुदा ओकर पाछाँ कतेक राति अनाम रहि जाइत अछि।
एक पुस्तक हाथमे हलुक लगैत अछि,
मुदा ओकर पृष्ठक पाछाँ कतेक वर्षक मौन श्रम जमा रहैत अछि।
कागज पर एक वाक्य साफ देखाइत,
मुदा ओहि वाक्य धरि पहुँचबाक लेल कतेक पुस्तक खुलल होएत,
कतेक प्रश्न अधूरा रहल होएत,
कतेक उत्तर फेर काटल गेल होएत।
ज्ञान कखनो एक दिनमे नहि उगैत।
ओ धीरे-धीरे भीतर जड़ि पकड़ैत अछि।
एक बालक पहिल प्रश्न पूछैत।
एक शिक्षक कहैत— “फेर सोचू।”
एक पुस्तक दोसर दुआर खोलैत।
एक असहमति मनक नींद तोड़ैत।
एक यात्रा दृष्टि बदलैत।
एक असफल उत्तर नव प्रश्न जन्मबैत।
एहि ढङ्गें विचार अपन घर बनबैत अछि।
कियो पुस्तकालयक शान्त कोना में बैसल।
कियो कक्षाक काला पट पर शब्द लिखैत।
कियो पुरान पाण्डुलिपिक धुँधल अक्षर पढ़ैत।

कियो दूरक विचार अपन भाषामे लऽ आबैत।
कियो छात्रक एक छोट प्रश्न गम्भीरता सँ सुनैत।
कियो अपन प्रिय मत पर अपने सन्देह करैत।
एहि सभ छोट कर्ममे विचारक दीर्घ परम्परा चलैत अछि।
ज्ञानक कोनो एक मालिक नहि।
एक पीढ़ी प्रश्न छोड़ैत।
दोसर उत्तर खोजैत।
तेसर उत्तर पर फेर प्रश्न।
चारिम पुरान विवाद नव भाषा मे खोलैत।
एहिए दीर्घ यात्रा।
दीप दीप सँ उजास लैत,
मुदा पहिल दीपक ज्योति कम नहि होइत।
ज्ञान बाँटलासँ घटैत नहि।
ओ फैलैत।
एक शिक्षकक एक वाक्य कखनो दस वर्ष पाछाँ छात्रक जीवनमे फूल बनि खिलैत अछि।
शिक्षक ओ दिन ओकरा देखैत नहि।
मुदा बीज अपन काम करैत रहैत अछि।
एक पुस्तक लेखकक हाथ छोड़ि कतेक घर जाइत अछि।
कियो ओकरा राति देर धरि पढ़ैत।
कियो असहमत।
कियो प्रेरित।
कियो एक वाक्य सहेजि अपन नव विचार रचैत।
पुस्तक तखन वस्तु नहि रहैत।
ओ संवाद बनैत अछि।
कागज आ मनक बीच एक जीवित पुल।
एक साँच विद्वत्ता केवल जानकारीक भण्डार नहि।
ओ “हम नहि जानैत” कहबाक साहस सेहो।
जतय अज्ञान स्वीकारल, ओतय नव ज्ञानक दुआर खुलैत।
जतय अहंकार कहैत— “सभ बुझि लेलहुँ,” ओतय खिड़की बन्द।
विनम्रता ज्ञानक पहिल हवा।
एक प्रश्न छोट नहि।
कखनो बालकक “किएक?” सम्पूर्ण ग्रन्थसँ पैघ हो सकैत।
किएक तँ प्रश्न जतय जीवित, विचार ओतय जीवित।
एक संस्था कतेक भवन बना सकैत,
मुदा यदि प्रश्न लेल ठाम नहि, ओ पत्थरक घर मात्र।

विश्वविद्यालय तखन जीवित जतय बहस डरैत नहि।
 पत्रिका तखन जीवित जतय भिन्न स्वर एक पृष्ठ पर बैसि सकय।
 पुस्तकालय तखन जीवित जतय धूलि सँ अधिक पठनक गन्ध हो।
 कक्षा तखन जीवित जतय उत्तरक संग प्रश्नो सम्मानित हो।
 ज्ञानक संस्था मन्दिर नहि जतय एक मत सदैव अचूक।
 ओ कार्यशाला।
 हथौड़ी तर्क।
 कसौटी प्रमाण।
 आगि सन्देह।
 धातु विचार।
 बारम्बार तपि रूप बदलैत।
 एक अच्छा विचार अपने आलोचना सँ डरैत नहि।
 ओ कहैत— “आबू, हमरा जाँचू।”
 यदि टूटि गेल, नव बनू।
 यदि बाँचल, आरो मजबूत।
 सत्य ककरो निजी सम्पत्ति नहि।
 ओ सभकेँ जाँचबाक अधिकार देत।
 कियो बहुत पढ़लक, मुदा दोसरक प्रश्न सुनि नहि सकैत— ज्ञान अधूर।
 कियो कम पढ़लक, मुदा सत्यक प्रति ईमानदार— ओकर भीतर एक साफ जगह।
 विद्वत्ता डिग्रीक सजावट नहि।
 ओ दृष्टिक परिपक्वता।
 विचारक अनुशासन।
 भाषाक जिम्मेदारी।
 सत्यक प्रति निष्ठा।
 आ दोसरक गरिमाक सम्मान।
 एक लेख लिखब केवल वाक्य जोड़ब नहि।
 ओ अपने मनक अव्यवस्था साफ करब।
 कुन विचार मुख्य?
 कुन प्रमाण?
 कुन भ्रम?
 कुन पूर्वग्रह?
 कुन शब्द अधिक?
 कुन मौन आवश्यक?
 लेखन मनक आत्मपरीक्षण।
 एक सम्पादक कखनो दृश्य नहि होइत,

मुदा ओकर शान्त श्रम कतेक वाक्य साफ करैत।
कतेक दोहराव हटैत।
कतेक त्रुटि रुकैत।
कतेक विचार ठीक स्थान पबैत।
ज्ञानक दुनिया अनेकों अदृश्य हाथ पर ठाढ़।
पुस्तकालयकर्मि।
अनुवादक।
पूफ-पाठक।
शिक्षक।
शोधार्थी।
सम्पादक।
पाठक।
प्रश्न पूछनिहार छात्र।
सभ एक बौद्धिक पर्यावरण।
कियो एक वृक्ष नहि, वन मिलि हवा बनबैत।
एक शोधकर्ता पुरान अक्षर पढ़ैत अछि।
कागज पीयर पड़ल।
स्याही हलुक।
मुदा प्रश्न अखनो ताजा।
समय कागज पुरान करैत, प्रश्न नहि।
“मनुष्य कुन?”
“सत्य की?”
“नीक जीवन की?”
“ज्ञान कतेक विश्वसनीय?”
“न्याय कतय?”
ई प्रश्न पीढ़ी पार चलैत।
उत्तर बदलैत।
भाषा बदलैत।
परिस्थिति बदलैत।
मुदा मानव जिज्ञासा नव-नव रूप लेत।
एक पुरान वाक्य नव युगमे नव छाया दे सकैत।
मुदा पुरान होएबाक कारण सत्य नहि।
नव होएबाक कारण श्रेष्ठ नहि।
कसौटी फेर विवेक।
तर्क।

अनुभव।
 मानवीय गरिमा।
 एक विद्वान जखन अतीत पढ़ैत, ओ केवल श्रद्धा नहि, न्याय सेहो करय।
 पुरान विचार केँ ओकर अपने समयमें बुझू।
 फेर आइक प्रश्न समक्ष रखू।
 न अन्ध पूजा।
 न उपहास।
 संवाद।
 एहिँ साँच सम्मान।
 एक अनुवाद दू भाषा बीच केवल शब्दक नाव नहि।
 ओ दू अनुभव मिलबैत अछि।
 एक शब्द जतय सोझ साथी नहि पबैत, अनुवादक रुकैत अछि।
 ओ अर्थक नाड़ी छूबैत।
 कुन शब्द एतय जीवित होएत?
 कुन विदेशी चमक मात्र?
 कुन अपन भाषाक पुरान अर्थ जगा सकैत?
 अनुवाद सृजनात्मक जिम्मेदारी।
 शब्द पार करैत विचार फेर जन्मैत।
 एक भाषा जतय विज्ञान, दर्शन, समाज, तकनीक सभ कहए सकय, ओ अपन लोकक आत्मविश्वास बढ़बैत अछि।
 भाषा केवल भावना नहि।
 ज्ञानक घर।
 एक बच्चा अपन भाषा में कठिन प्रश्न पूछि सकय— ई बौद्धिक स्वतन्त्रता।
 दोसर भाषा सीखब दुआर खोलब।
 मुदा अपन घर बन्द किएक?
 बहुभाषिक मन बहुत खिड़की रखैत।
 आकाश अधिक देखैत।
 एक शोध यदि केवल पुरान बात दोहराबय, कागज बढ़ैत, ज्ञान कम।
 मौलिकता नव शब्द बनाबय मात्र नहि।
 नव प्रश्न।
 पुरान प्रश्नक नव कोण।
 अनदेखल साक्ष्य।
 दोसरक मौन सुननाइ।
 अपन पूर्वग्रह पहिचानब।
 एक छोट साँच नव विचार कतेक बड़ सजावटी लेखनसँ अधिक मूल्यवान।
 शोध धैर्य माँगैत।

कखनो महीना भरि कोनो उत्तर नहि।
एक दिन एक छोट सूत्र जुड़ैत।
फेर सम्पूर्ण चित्र हलुक साफ।
जैना राति भरि अन्हार रहैत,
मुदा भोर एकदम अकस्मात् नहि।
पहिने एक महीन रेखा।
ज्ञानो एहन।
धीरे उजास।
कतेक असफल प्रयास आवश्यक।
बेठीक परिकल्पना।
अधूर प्रमाण।
बन्द दुआर।
फेर एक नव मार्ग।
असफलता शोधक शत्रु नहि।
ओ दिशा सुधारैत।
एक शिक्षक अपन विद्यार्थी सँ सेहो सीखैत अछि।
कक्षा एकतरफा नदी नहि।
कखनो एक छात्रक प्रश्न शिक्षक केँ राति भरि सोचबैत।
अगिला दिन शिक्षक कहैत— “काल्हि हमरा सम्पूर्ण उत्तर नहि छल।”
ई वाक्य कक्षा केँ मानवीय बनबैत।
अचूक गुरु विद्यार्थी बना सकैत, मुदा स्वतन्त्र विचारक कम।
साँच शिक्षक छात्र केँ एक दिन अपने सँ आगाँ देखए चाहैत।
दीप दोसर दीप जरा कऽ ईर्ष्या नहि करैत।
ओकर काम उजास बढ़ाबय।
एक पीढ़ी दोसर पीढ़ी लेल सीढ़ी।
मुदा सीढ़ी माथ पर बैसि रस्ता बन्द नहि करय।
“हमर समयमे एना छल” एक स्मृति।
“एखन की चाही?” नव प्रश्न।
दुनू भेटय।
एक बुजुर्ग अनुभव दैत।
एक युवा नव दृष्टि।
यदि दुनू एक-दोसर केँ छोट मानय, परम्परा टूटैत।
यदि सुनय, नव वंश बनैत।
ज्ञानक वंश रक्तसँ नहि।
प्रश्न आ उत्तरक हस्तान्तरणसँ।

एक पुस्तक एक घरसँ दोसर घर।
 एक विचार एक मस्तिष्कसँ दूसर।
 एक मूल्य एक जीवनसँ दूसर।
 एहिऐ बौद्धिक वंशावली।
 कियो अपन नाम पैघ अक्षरमे छोड़ि जाए, कियो नहि।
 मुदा नाम ही योगदान नहि।
 कतेक शिक्षकक नाम इतिहास नहि लिखत,
 मुदा ओकर विद्यार्थी दुनिया बदलत।
 कतेक सम्पादक मुखपृष्ठ पर नहि,
 मुदा ओकर कठोर ईमानदारी एक गम्भीर परम्परा बचायत।
 कतेक अनुवादक मौन,
 मुदा ओकर शब्द दू संस्कृतिक दूरी घटायत।
 कतेक पाठक कखनो लिखत नहि,
 मुदा ठीक पठन एक विचार केँ जीवित रखत।
 अनाम श्रम सभ्यताक नींव।
 महल ऊपर नाम लिखल, नींवक ईंट ककर?
 ज्ञानक महल सेहो एहन।
 एक विचारक महान बनैत कखनो अकेला नहि।
 ओकर पाछाँ शिक्षक।
 पुस्तक।
 बहस।
 भाषा।
 पाठक।
 समय।
 संस्था।
 समाज।
 विरोधी सेहो।
 किएक तँ असहमति विचार केँ धार दैत।
 एक आलोचक कखनो मित्र सँ अधिक उपयोगी।
 मित्र कहैत— “नीक।”
 आलोचक पूछैत— “किएक?”
 “प्रमाण?”
 “सीमा?”
 “दोसर पक्ष?”
 ई प्रश्न विचारक अहंकार कम करैत।

एक स्वस्थ बौद्धिक जीवन स्तुति नहि, आलोचना सहन करैत।
मुदा आलोचना अपमान नहि।
सत्यक प्रति दायित्व।
तर्क संग।
प्रमाण संग।
सम्मान संग।
एहि ए बहसक मर्यादा।
एक पुस्तक यदि केवल अपन मतवला पढ़य, संवाद छोट।
एक विचार यदि केवल अपने प्रतिध्वनि सुनय, ओ गुफा।
खुला विचार दोसरक कठिन प्रश्न सुनैत।
कखनो बदलैत।
कखनो आरो स्पष्ट होइत।
मुदा बन्द नहि।
एक लेखक अपन पहिल पुस्तक लिखैत समय जे सोचैत, दस वर्ष पाछाँ ओही नहि रहैत।
जीवन विचार बदलैत।
अनुभव गहिर करैत।
पीड़ा नव अर्थ दैत।
असफलता विनम्रता।
मित्रता करुणा।
समाजक परिवर्तन नव प्रश्न।
विचारक जीवन स्थिर प्रतिमा नहि।
ओ नदी।
एक विद्वत्ता अपने पुरान वाक्य संशोधित करि सकय— ई कमजोरी नहि।
जीवित बुद्धि।
“हम एतय बेठीक छलहुँ।”
ई वाक्य ज्ञानक एक उच्च सीढ़ी।
किएक तँ सत्य अपन अहंकारसँ पैघ मानल गेल।
एक समाज सेहो एना सीखय।
पुरान नीति बेठीक? बदलू।
पुरान रीति अन्यायी? बदलू।
पुरान शिक्षा अपर्याप्त? बदलू।
मुदा स्मृति नहि मिटाउ।
भूल स्मरण भविष्यक सुरक्षा।
ज्ञान केवल ठीक उत्तरक संग्रह नहि।
बेठीक रास्ताक इतिहास सेहो।

किएक एहि मार्ग काम नहि कएलक?
 कुन भ्रम?
 कुन पूर्वग्रह?
 ई असफलताक अभिलेख आगाँक पीढ़ी लेल नक्शा।
 एक शोध-पत्रक अन्तिम पंक्ति “निष्कर्ष” हो सकैत,
 मुदा साँच ज्ञानक अन्तिम पंक्ति कखनो “अन्तिम” नहि।
 ओ कहैत— “एतय धरि अखन।”
 आगाँ दोसर प्रश्न।
 एहिऐ ज्ञानक विनम्र व्याकरण।
 एक पत्रिका एक समयक धड़कन सहेजैत।
 आइक बहस।
 आइक चिन्ता।
 आइक भाषा।
 वर्ष पाछाँ कियो ओकर पुरान अंक खोलत,
 आ ओहि समयक मन देखत।
 पत्रिका समयक छोट संग्रहालय, मुदा जीवित अवस्थामे संवादक चौक।
 एक सम्पादकीय निर्णय कतेक आवाज दृश्य करैत।
 ककर लेख ठाम पाबय?
 ककर भिन्न मत?
 ककर नव आवाज?
 सम्पादन सत्ता सेहो।
 एहि लेल न्याय चाही।
 केवल अपन वृत्त नहि।
 नव लेखक लेल दुआर।
 असहमति लेल जगह।
 गुणवत्ता लेल कठोरता।
 ई तीन संग पत्रिका जीवित।
 एक अनुसन्धान केन्द्र यदि मात्र नामपट्ट हो, ज्ञान नहि उगत।
 ओकरा समय चाही।
 पुस्तक।
 शान्ति।
 धन।
 स्वतन्त्रता।
 कठिन प्रश्नक अनुमति।
 विफल प्रयासक जगह।

नव युवाक विश्वास।
ज्ञान एक दीर्घ निवेश।
तुरन्त लाभ नहि।
एक शब्दकोश वर्षों लागि सकैत।
एक आलोचनात्मक संस्करण।
एक अनुवाद।
एक विचारक सम्पूर्ण अध्ययन।
समाज यदि केवल तुरन्त परिणाम माँगय, गहिर ज्ञान भूखल रहि सकैत।
किछु वृक्ष धीरे बढैत, मुदा सदियों छाया दैत।
ज्ञानक किछु काज एहन।
धीमा, मुदा दीर्घ।
एक पुस्तकालय बनाबय अर्थ भविष्यक अपरिचित पाठक लेल घर बनाबय।
हम नहि जानैत कुन बीस वर्ष पाछाँ कुन पुस्तक खोजत।
मुदा हम ओकरा लेल दीप रखि सकैत छी।
ई पीढ़ी-पार करुणा।
एक पाण्डुलिपि सहेजब अर्थ कोनो मृत लेखकक सम्मान मात्र नहि।
भविष्यक प्रश्नक स्रोत बचाबय।
स्मृति सार्वजनिक धरोहर।
मुदा धरोहर काँचक अलमारी नहि।
उपयोग चाही।
पठन।
अनुवाद।
आलोचना।
नव रचना।
तखन पुरान स्याही नव रक्त बनैत।
एक शिक्षित समाज कतेक पुस्तक छापैत, एहि सँ नहि मात्र मापू।
कतेक पढ़ैत?
कतेक प्रश्न करैत?
कतेक भिन्न मत सहन?
कतेक भाषामे ज्ञान रचैत?
कतेक युवा मौलिक काज करबाक साहस पबैत?
ई बौद्धिक स्वास्थ्यक प्रश्न।
ज्ञान यदि केवल परीक्षाक उत्तर, शिक्षा छोट।
ज्ञान यदि पदक सीढ़ी, छोट।
ज्ञान यदि प्रतिष्ठाक मुकुट, छोट।

ज्ञान जतय दृष्टि बदलैत, चरित्र गहिर करैत, समाज प्रश्न करैत, ओतय ओ जीवित।
 एक विद्वानक असली परीक्षा कखनो मंच पर नहि।
 कियो कमजोर प्रश्न पूछलक— ओ हँसल कि सुनलक?
 कियो असहमत— ओ क्रोधित कि तर्क?
 कियो नव युवा आगाँ बढ़ल— ओ ईर्ष्या कि आनन्द?
 कियो त्रुटि देखेलक— ओ ढँकल कि स्वीकार?
 एहि छोट क्षणमे ज्ञानक चरित्र देखाइत।
 साँच बौद्धिकता मनुष्य छोट नहि करैत।
 ओ दोसरक प्रश्न लेल ठाम बढ़बैत।
 एक कक्षा जतय विद्यार्थी डर बिनु कहि सकय— “हमरा एना नहि बुझाइत,”
 ओ कक्षा स्वतन्त्र।
 एक शोधार्थी कहि सकय— “हम एहि पुरान मतसँ भिन्न,”
 ओ परम्परा जीवित।
 एक सम्पादक कहि सकय— “भिन्न विचार छापू”
 ओ पत्रिका खुलल।
 एक समाज कहि सकय— “आलोचना सुनू”
 ओ आत्मविश्वासी।
 ज्ञान आ स्वतन्त्रता गहिर मित्र।
 बन्द मन ज्ञान जमा करि सकैत, मुदा नव ज्ञान कम रचत।
 खुला मन जोखिम लेत।
 बेठीक सेहो हो सकैत।
 मुदा सृजन ओतय सम्भव।
 स्वतन्त्रता अनुशासन बिनु मनमानी।
 अनुशासन स्वतन्त्रता बिनु जड़ता।
 दुनू भेटय।
 एक संगीत जकाँ।
 ताल अछि।
 मुदा तात्कालिक आलाप सेहो।
 नियम अछि।
 मुदा सृजन सेहो।
 ज्ञानक राग एहन।
 एक अनुभवी मन परम्पराक ताल जानैत।
 एक नव मन नव आलाप।
 दुनू मिलि राग आगाँ बढ़बैत।
 केवल ताल रहल, संगीत यंत्रवत्।

केवल आलाप बिनु लय, अव्यवस्था।
सन्तुलन सृजनक गुप्त व्याकरण।
कतेक जीवन अध्ययन आ अध्यापनक बीच बीतैत अछि।
सुबह कक्षा।
दुपहर पुस्तकालय।
साँझ नोट।
राति लेखन।
अगिला दिन फेर प्रश्न।
बाहरी दृष्टि सँ साधारण दिनचर्या।
मुदा एहि दोहरावमे कतेक पीढ़ी आकार पबैत।
एक शिक्षक कदाचित् अपन जीवनक सभसँ पैघ रचना पुस्तक नहि, विद्यार्थी हो सकैत।
एक विद्यार्थी आगाँ ककरो शिक्षक।
दीप दीप बनैत चलैत।
कोनो एक केन्द्र नहि।
उजास जाल जकाँ फैलैत।
एक शहरसँ दूसर।
एक भाषासँ दूसर।
एक पीढ़ीसँ दूसर।
एक विचारसँ नव विचार।
बौद्धिक जीवन एक दीर्घ सहयोग।
एक व्यक्ति जतबा महान हो, ओ भाषा अपने नहि बनौलक।
ग्रन्थ अपने नहि छापलक।
पूर्वजक प्रश्न ओकरा मिलल।
समकालीनक बहस।
विद्यार्थीक प्रश्न।
पाठकक आलोचना।
समाजक अनुभव।
ओ एहि सभ बीच अपन स्वर रचैत।
मौलिकता अकेलापन नहि।
सम्बन्धक भीतर अपन स्वर।
एक राग पहिने सँ अछि, मुदा गायक अपन आलाप रखैत।
एहिए सृजन।
कियो पूर्वज सँ असहमत होइत, तैयो ओकर ऋणी।
कियो दूरक विचार लेत, मुदा अपने रूप दैत।
कियो लोकक अनुभव पुस्तकमे लिखैत।

कियो पुस्तकक विचार लोक धरि लऽ जाइत।
 यात्रा दुनू दिशा।
 ज्ञान ऊपरसँ नीचाँ बरसैत मात्र नहि।
 नीचाँ सँ उपर सेहो चढ़ैत।
 एक किसानक अनुभव।
 एक कारीगरक कौशल।
 एक स्त्रीक घरेलू ज्ञान।
 एक समुदायक स्मृति।
 एक लोकगीतक जीवन-दृष्टि।
 ई सभ ज्ञानक दुनिया समृद्ध करैत।
 पुस्तक लोकसँ सीखय।
 लोक पुस्तकसँ।
 दुनू भेटय।
 एक विद्वान यदि केवल पुस्तक देखय, जीवन छूटि सकैत।
 यदि केवल अनुभव आ अध्ययन नहि, गहराई छूटि सकैत।
 दुनू आँखि चाही।
 एक आँखि ग्रन्थ।
 दोसर जीवन।
 दुनू खुलल, तखन दृष्टि त्रि-आयामी।
 एक बौद्धिक जीवन केवल मस्तिष्कक काम नहि।
 हृदय सेहो।
 किएक सत्य खोजू?
 किएक अन्याय पर लिखू?
 किएक भाषा बचाउ?
 किएक पुरान ग्रन्थ सहेजू?
 किएक विद्यार्थी संग समय दिअ?
 पाछाँ एक मूल्य रहैत।
 ककरो प्रेम ज्ञान प्रति।
 ककरो समाज प्रति।
 भाषा प्रति।
 मानव गरिमा प्रति।
 सत्यक प्रति।
 ई प्रेम श्रम सहज नहि, सार्थक बनबैत।
 एक ग्रन्थ सम्पूर्ण भेल।
 तालिका बन्द।

मुदा विचारक यात्रा नहि।
पाठक आब लेखकक साथी।
ओ प्रश्न आगाँ लऽ जाइत।
कखनो कोनो पुस्तकक सभसँ महत्त्वपूर्ण फल ओकर उत्तर नहि, ओकर नव प्रश्न।
एक साँच पुस्तक पढ़ि मन बन्द नहि, खुलैत।
“आब हमरा आरो जानबाक अछि।”
ई वाक्य पुस्तकक जीत।
एक बौद्धिक परम्परा तखन दीर्घ जीवित जतय हरेक पीढ़ी किछु बचाबैत,
किछु बदलैत,
किछु नकारैत,
किछु नव रचैत।
यदि केवल बचायल, संग्रहालय।
यदि केवल बदलल, स्मृतिहीनता।
यदि केवल नकारल, रिक्तता।
यदि केवल नव कहल, अहंकार।
चारू मिलि जीवित परम्परा।
एक पुरान दीपक लौ आ नव दीपक तेल भिन्न हो सकैत।
मुदा उजासक आकांक्षा एक।
सत्यक दिशा।
मनुष्यक जीवन गहिर बनाबयक इच्छा।
एक पुस्तक जीवन नहि बदलय तैयो एक दृष्टि बदलि सकैत।
एक दृष्टि एक निर्णय।
एक निर्णय एक सम्बन्ध।
एक सम्बन्ध एक परिवार।
एक परिवार एक पीढ़ी।
ज्ञानक प्रभाव कखनो बहुत धीमा।
मुदा धीमा अर्थ कम नहि।
जल पत्थर काटैत समय लेत।
एक विचार समाजक कठोर दीवार धीरे-धीरे बदलैत।
पहिने असंभव लगैत।
फेर बहस।
फेर किछु लोक स्वीकार।
फेर कानून।
फेर नव सामान्यता।
विचारक दीर्घ शक्ति।

एहि लेल लेखन उत्तरदायित्व।
 शब्द भविष्य छू सकैत।
 असत्य सेहो।
 घृणा सेहो।
 पूर्वग्रह सेहो।
 एक पुस्तक दोसरक गरिमा घटा सकैत।
 एक शब्द पूरी समुदाय छोट बना सकैत।
 लेखक कलम मात्र नहि, नैतिक भार धारण करैत।
 सत्य जाँचू।
 भाषा देखू।
 पूर्वग्रह पहिचानू।
 दोसरक आवाज निगलू नहि।
 लेखन स्वतन्त्र, मुदा उत्तरदायित्वहीन नहि।
 एक सम्पादक सेहो पहरेंदार नहि मात्र।
 माली।
 कुन नव पौधा ठाम पाबय?
 कुन काँटा साफ?
 कुन पुरान वृक्ष सहेजल?
 कुन बीमार डालि काटल?
 माली यदि केवल एक फूल पसिन्न, बगिया गरीब।
 विविधता बौद्धिक स्वास्थ्य।
 मुदा हरेक झाड़ी फूल नहि।
 गुणवत्ता कसौटी।
 खुलापन आ कठोरता एक साथ।
 एक पाठक सेहो जिम्मेदार।
 जो पढ़ल तुरन्त सत्य नहि।
 जो अपन मत मिलल, ओही ठीक नहि।
 पाठक प्रश्न करय।
 स्रोत।
 तर्क।
 सन्दर्भ।
 फेर निर्णय।
 पठन निष्क्रिय नहि।
 ओ सह-सृजन।
 एक कविता हरेक पाठकमे कनेक भिन्न खिलैत।

एक दार्शनिक वाक्य अनुभव अनुसार नव प्रश्न दे सकैत।

मुदा अर्थ मनमाना नहि।

शब्दक धरती रहैत।

स्वतन्त्रता आ अनुशासन फेर मिलैत।

एक जीवित बौद्धिक संस्कृति आदर आ साहस दुनू माँगैत।

आदर पूर्वजक।

साहस असहमत होएबाक।

आदर शिक्षकक।

साहस नव प्रश्नक।

आदर ग्रन्थक।

साहस ओकर सीमा देखबाक।

आदर भाषाक।

साहस नव शब्द रचबाक।

आदर संस्थाक।

साहस ओकर त्रुटि कहबाक।

दुनू बिनु परम्परा अधूरी।

केवल आदर— जड़ता।

केवल विद्रोह— स्मृतिहीनता।

जीवित संस्कृति दुनूक सन्तान।

एक दीर्घ जीवन यदि पुस्तक, कक्षा, अनुसन्धान, लेखन, संवाद बीच बीतल, ओकर अन्तिम माप कतेक पद? कतेक सम्मान? कतेक उपाधि?

कदाचित् नहि।

कतेक मन जागल?

कतेक प्रश्न जीवित भेल?

कतेक विद्यार्थी अपने सोचए सिखल?

कतेक भाषा समृद्ध?

कतेक सत्य कनेक साफ?

कतेक संवाद खुलल?

एहिअ अदृश्य माप।

कागज पर नहि।

लोगक मनमे।

एक शिक्षक गेल पाछाँ सेहो ओकर वाक्य जीवित।

एक लेखक नहि, मुदा पुस्तक बोलैत।

एक सम्पादक नहि, मुदा ओकर रचल परम्परा चलैत।

एक अनुवादक नहि, मुदा पुल पर लोक चलैत।

एक संस्थापक नहि, मुदा घरमे नव पीढ़ी प्रश्न करैत।

मनुष्य सीमित।
 काज समय पार जा सकैत।
 एहिऐ ज्ञानक एक शान्त अमरता।
 नाम रहि वा नहि।
 यदि एक दीपसँ दोसर दीप जलल, उजास आगाँ गेल।
 कतेक लोक अपन जीवन एहि उजास पाछाँ लगा दैत।
 ओकरा इतिहास सदा ठीक-ठीक याद नहि रखत।
 मुदा संस्कृति ओकर श्रम ढोइत।
 जैना एक पुरान पुलक निर्माता ककर नाम नहि जानैत,
 मुदा हम पुल पार करैत।
 ज्ञानक पुल सेहो अनेक अनाम हाथक।
 एहि लेल कृतज्ञता।
 पुस्तक खोलैत समय कृतज्ञता।
 कक्षा में बैसैत समय।
 पुस्तकालयक शान्ति पबैत।
 अपन भाषामे एक कठिन विचार पढ़ैत।
 ई सभ ककरो दीर्घ श्रमक फल।
 कृतज्ञता अन्ध पूजा नहि।
 ओ स्मरण जे हम अकेला नहि सोचैत।
 हमर विचार पाछाँ असंख्य मन ठाढ़।
 एहि स्मरणसँ अहंकार हलुक।
 आ जिम्मेदारी बढ़ैत।
 हमरो किछु आगाँ देबाक अछि।
 एक साफ वाक्य।
 एक साँच अनुवाद।
 एक ईमानदार शोध।
 एक खुला कक्षा।
 एक नव प्रश्न।
 एक सहेजल पाण्डुलिपि।
 एक विद्यार्थी लेल विश्वास।
 एक भिन्न मत लेल जगह।
 ई हमर छोट दीप।
 भविष्य कदाचित् हमर नाम नहि जानत।
 मुदा यदि ओकर रस्ता कनेक उजास पाबय, एतबे पर्याप्त।
 ज्ञानक यात्रा प्रतिष्ठा पार जाइत।

एक साँच विचार अपन लेखक सँ पैघ हो सकैत।
एक साँच प्रश्न अपन समय सँ पैघ।
एक साँच शिक्षण कक्षा सँ पैघ।
एक साँच अनुवाद दू भाषाक सीमा सँ पैघ।
एक साँच सम्पादन एक अंक पार।
काज मनुष्यक देह पार यात्रा करि सकैत।
एहि लेल दीपक पाछाँ अनाम उजास महत्त्वपूर्ण।
ओ मंच नहि माँगैत।
ओ अपन काम करैत।
शान्ति सँ।
एक पुस्तक साफ।
एक मन जागल।
एक प्रश्न आगाँ बढ़ल।
एक भाषा कनेक समृद्ध।
एक पीढ़ी कनेक स्वतन्त्र।
आ भोर आबि जाइत अछि बिनु ककरो एक नाम लिखने।
आकाश ककरो हस्ताक्षर नहि माँगैत।
सूर्य कहैत नहि— “ई उजास मोर।”
वृक्ष छाया दैत अपन जीवनी नहि सुनबैत।
नदी जल दैत अपन उपाधि नहि गनैत।
ज्ञानक सभसँ उज्जर रूप कदाचित् एहनहि—
देनाइ।
आगाँ बढ़ेनाइ।
अपने पार जेनाइ।
एक दीप जरे।
फेर दूसर।
फेर तेसर।
आ एक दिन सम्पूर्ण दिशा उजास सँ भरि जाए।
कियो पूछय— “ई प्रकाश ककर?”
उत्तर आबय—
“अनेक मौन हाथक।
अनेक जागल रातिक।
अनेक प्रश्नक।
अनेक शिक्षकक।
अनेक पाठकक।

अनेक अनुवादक।

अनेक असहमतिक।

अनेक सृजनक।”

आ ओहि साझा उजासमें एक नव पीढ़ी अपन पहिल प्रश्न पूछय।

तखन यात्रा फेर आरम्भ होएत।

दिशा-दिशाँ आबैत दीप

एक गामसँ एक पयर उठल।

दोसर शहरसँ एक प्रश्न।

कतहु नदीक किनार बालक आकाश देखलक।

कतहु विद्यालयक छोट कक्षामे पहिल बेर एक कठिन शब्द ओकर मनमें दुआर खोललक।

फेर रस्ता लम्बा भेल।

एक नगर।

दोसर विश्वविद्यालय।

एक पुस्तकालय।

एक छात्रावासक मौन राति।

एक शिक्षकक कठोर प्रश्न।

एक मित्रक असहमति।

एक परीक्षा।

एक असफलता।

एक नव आरम्भ।

ज्ञानक यात्रा सोझ नहि होइत।

कखनो पगडंडी।

कखनो रेलपथ।

कखनो दूर देशक सभा।

कखनो अपन कक्षाक एक छोट मेज।

मुदा प्रश्न संग-संग चलैत।

“सत्य कतय?”

“ज्ञान केना?”

“मनुष्य कतेक स्वतन्त्र?”

“विश्वास आ तर्क एक-दोसर सँ केना बात करय?”

“सौन्दर्य केवल आँखिक आनन्द कि आरो किछु?”

“कर्तव्य कुन दिशा?”

“भाषा अर्थ केना ढोइत?”

“परम्परा कखन जीवित?”

ई प्रश्न यात्रीक थैलीमे रोटी जकाँ रहल।
शहर बदलल।
कक्षासभ बदलल।
विद्यार्थी बदलल।
मुदा प्रश्न नहि थाकल।
एक दिन ओ शिक्षक बनल।
काला पट समक्ष ठाढ़।
छात्रसभक आँखि अलग-अलग।
कियो तेज।
कियो संकोची।
कियो केवल परीक्षा लेल।
कियो एकदम जिज्ञासु।
शिक्षक समझलक— ज्ञान कहब मात्र नहि।
जगाबय पड़ैत अछि।
एक शब्द एना कहू जे छात्रक भीतर अपन प्रश्न उगय।
एक तर्क एना खोलू जे ओ आगाँ अपने चलि सकय।
कक्षा कोनो एक आवाजक राज्य नहि।
ओ बहुत आँखिक सभागार।
एक प्रश्न शिक्षकसँ आबैत।
दोसर विद्यार्थीसँ।
तेसर मौनसँ।
कखनो सभसँ साँच पाठ तखन जन्मैत जखन शिक्षक कहैत— “एहि पर आरो सोचबाक अछि।”
ई वाक्य कमजोरी नहि।
ज्ञानक विनम्रता।
कतेक जीवन कक्षासँ कक्षामे बहैत।
एक विश्वविद्यालयक घण्टी बन्द, दोसरक घण्टी बजैत।
एक पद समाप्त।
दोसर जिम्मेदारी।
कखनो विभाग सँभालब।
कखनो शोधार्थीक प्रश्न।
कखनो पाठ्यक्रम।
कखनो सम्मेलनक तैयारी।
कखनो पत्रिका लेल लेख।
कखनो कोनो पुस्तकक प्रस्तावना।
विद्वत्ता केवल अपन पुस्तक नहि।

ओ दोसरक विचार लेल ठाम बनाबय सेहो।
 एक युवा शोधार्थी काँपैत पन्ना लऽ कऽ आबैत अछि।
 वरिष्ठ आँखि ओहि मे त्रुटि सेहो देखैत, संभावना सेहो।
 यदि केवल त्रुटि देखत, बीज सूखि सकैत।
 यदि केवल प्रशंसा, बीज कमजोर।
 साँच मार्गदर्शन माटि जकाँ—
 कठोर सेहो, उर्वर सेहो।
 “एतय फेर पढ़ू।”
 “एहि प्रमाण कम।”
 “ई प्रश्न नीक अछि।”
 “एतय तोहर अपन आवाज आबि रहल।”
 ई चार वाक्य एक शोधार्थीक वर्ष बदलि सकैत।
 ज्ञानक वंश एना चलैत।
 न रक्तसँ।
 न उपाधिसँ।
 प्रश्न आ अनुशासनक हस्तान्तरणसँ।
 एक पीढ़ी दोसर केँ कहैत— “हमर उत्तर अन्तिम नहि।”
 “आगाँ तूँ देख।”
 एहि ए साँच उत्तराधिकार।
 कतेक विद्वान अलग-अलग दिशासँ एक साझा चौक पर भेटैत छथि।
 कियो तर्कक रस्ता।
 कियो धर्मक।
 कियो सौन्दर्यक।
 कियो भाषाक।
 कियो समाजक।
 कियो नीतिक।
 कियो चेतनाक।
 कियो पुरान ग्रन्थक सूक्ष्म पठनसँ।
 कियो आधुनिक विज्ञानक प्रश्नसँ।
 चौक एक, रास्ता अनेक।
 ओतय बहस होइत अछि।
 कियो कहैत— “तर्क पहिने।”
 दोसर— “अनुभव।”
 तेसर— “मूल्य।”
 चौथ— “इतिहास।”

पाँचम— “भाषा।”

यदि सभ एक-दोसर सुनय, चित्र गहिर होइत।

यदि केवल अपन दिशा देखय, चौक फेर बहुत छोट।

ज्ञान एक बहु-दिशात्मक नगर।

कोनो एक सड़क सम्पूर्ण नगर नहि।

एक विचारक जतय अपन विशेषता गहिर करैत, ओतय दोसर क्षेत्रक दुआर सेहो खुला रखय।

किएक तँ मनुष्य एक विषय नहि।

ओकर दुःख मनोविज्ञान सेहो।

नैतिकता सेहो।

समाज सेहो।

धर्म सेहो।

भाषा सेहो।

इतिहास सेहो।

एक मनुष्यक एक प्रश्न कतेक विषय छूबैत।

जैना एक नदी बहुत जिलासँ गुजरैत।

ज्ञानक सीमा प्रशासनिक रेखा जकाँ कठोर नहि।

एक सौन्दर्यक प्रश्न अकस्मात् धर्म छू सकैत।

एक भाषाक प्रश्न राजनीति।

एक चेतनाक प्रश्न विज्ञान।

एक नैतिक प्रश्न कानून।

एक पुरान शास्त्रीय विवाद आधुनिक तर्क-पद्धति संग भेटि नव रूप ले सकैत।

एहि मिलनमे विचार नव चमक पबैत।

मुदा मिलन अर्थ अपन पहिचान गँवाबय नहि।

एक राग दोसर राग संग जुगलबन्दी करैत, तैयो दुनू अपन स्वर रखैत।

विचारो एहन।

संवाद अर्थ समर्पण नहि।

आत्मविश्वास संग सुननाइ।

एक विद्वान दूर देशक सम्मेलनमे गेल।

बहुत भाषा।

बहुत उच्चारण।

बहुत विचार-पद्धति।

ओ अपन प्रश्न लऽ कऽ बैसल।

समक्ष दूरक प्रश्न।

एक क्षण लागल— दुनिया बहुत पैघ।

फेर एक समान प्रश्न समक्ष आयल— “मनुष्य कुन अर्थमे स्वतन्त्र?”

दूरी घटि गेल।
 मानव प्रश्न पुल बनैत अछि।
 देश अलग।
 भाषा अलग।
 इतिहास अलग।
 मुदा भय, आशा, मृत्यु, न्याय, प्रेम, सत्यक प्रश्न कतेक निकट।
 विश्व-संवाद तखन संभव जखन हम अपन माटि लऽ कऽ जाइत छी।
 खाली हाथ नहि।
 अपन परम्परा एक उपहार।
 मुदा उपहार दिखावा नहि।
 ओकरा खोलि कहू— “एहि मे ई प्रश्न रहल।”
 “एहि उत्तरक ई सीमा।”
 “आइ हमरा एना पुनः देखाइत।”
 तखन परम्परा विश्व संग बात करैत।
 यदि केवल “हमर सभसँ पुरान,” संवाद कम।
 यदि केवल “दोसर सभसँ आधुनिक,” आत्मविश्वास कम।
 समकक्ष मेज चाही।
 एक कुर्सी एतय।
 एक ओतय।
 दुनू एक ऊँचाई।
 कियो कोनो सभ्यताक स्थायी शिष्य नहि।
 कियो स्थायी गुरु सेहो नहि।
 मानव ज्ञान घूमैत अछि।
 कखनो एक दिशा देत।
 कखनो दोसर।
 एक पुरान गणना दूर जाइत।
 एक तर्क-पद्धति फेर लौटैत।
 एक धारणा अनुवाद होइत।
 एक रूप नव माटिमे बदलैत।
 ज्ञान यात्रा करैत।
 पासपोर्ट बदलैत, सत्य नहि।
 मुदा हरेक यात्रा ओकरा नव रंग दे सकैत।
 एक विद्वानक जीवनमे अनुवाद कतेक महत्त्वपूर्ण।
 एक पुस्तक दूर भाषामे बन्द।
 अनुवादक कुंजी बनैत।

मुदा कुंजी ठीक होएबाक चाही।
एक शब्द बेठीक, सम्पूर्ण दरबज्जा टेढ़ा खुलि सकैत।
एहि लेल अनुवाद धैर्य।
शब्दकोश।
सन्दर्भ।
दोसर ग्रन्थ।
मूल भाव।
अपन भाषाक स्वर।
अनुवाद यदि केवल छाया, पाठक मूल उजास कम पाबैत।
यदि बहुत स्वतन्त्र, मूल चेहरा गायब।
बीचमे सूक्ष्म निष्ठा।
एक नदी दोसर घाट पार करैत, मुदा जल नहि गँवाबय।
एहिऐ अनुवादक कला।
भाषा कखनो विचार संग बढ़ैत।
नव दार्शनिक प्रश्न आबैत, भाषा नव शब्द माँगैत।
कियो पुरान शब्द जगबैत।
कियो नव रचैत।
कियो दूरक शब्द अपन लैत।
धीरे-धीरे भाषा गम्भीर चर्चाक घर बनैत।
एक भाषा जतय केवल गीत नहि, तर्क सेहो।
केवल लोरी नहि, विज्ञान सेहो।
केवल भाव नहि, कठिन विश्लेषण सेहो।
ओ समाजक मन मजबूत करैत।
किएक तँ मनुष्य अपन मातृस्वरमे गहिर सोचि सकय— ई आत्मसम्मानक अंश।
मुदा भाषा किला न बने।
दोसर भाषा खिड़की।
बहुभाषिक मन अनेक दिशा देखैत।
एक शब्द एक भाषा मे जे सूक्ष्म अर्थ रखैत, दोसरमे नव प्रश्न जन्मा सकैत।
भाषासभ एक-दोसर केँ समृद्ध करय।
कियो कोनो परिषदमे काम करैत।
कियो पाठ्यक्रम बनबैत।
कियो अनुसन्धान संस्था सँभालैत।
कियो पुस्तक सम्पादित करैत।
कियो शोध-पत्रिका निकालैत।
बाहरी दृष्टि सँ प्रशासन।

मुदा यदि सजगता संग, ई ज्ञानक संरचना बनबैत।
 कुन विषय पढ़ायल जाए?
 कुन ग्रन्थ अनुवादित?
 कुन नव शोध समर्थन पाबय?
 कुन भाषा ठाम पाबय?
 कुन युवा प्रोत्साहन?
 एहि निर्णयसभमे भविष्य छिपल।
 एक समिति कखनो निरस कागज लगैत।
 मुदा एक ठीक निर्णय दस वर्ष पाछाँ एक नव शोध-क्षेत्र बना सकैत।
 एक पुस्तक छपल।
 एक छात्रवृत्ति मिलल।
 एक सम्मेलन भेल।
 दूर दूर विद्वान भेटल।
 एक नव साझा काम शुरू।
 संस्था सम्बन्धक माटि।
 मुदा माटि यदि कठोर नियमक पत्थर बनि जाए, बीज नहि उगैत।
 स्वतन्त्रता चाही।
 जवाबदेही सेहो।
 एक शोधकर्ता प्रश्न चुनि सकय।
 मुदा प्रमाण दियौ।
 एक शिक्षक भिन्न मत रखि सकय।
 मुदा छात्रक गरिमा रखय।
 एक पत्रिका नव दृष्टि छापय।
 मुदा गुणवत्ता पर कठोर।
 खुलापन आ अनुशासन एक साथ।
 ई बौद्धिक संस्कृतिक जोड़।
 कतेक दशक एक अध्यापक एकहि प्रश्न फेर-फेर पढ़बैत।
 बाहरी मन पूछि सकैत— “एके बात कतेक बेर?”
 मुदा हरेक कक्षा नव।
 एकहि पाठ नव छात्रक आँखिमे नव।
 एक वाक्य पिछला वर्ष शान्त, एहि वर्ष बहस।
 समय सन्दर्भ बदलैत।
 शिक्षक सेहो बदलैत।
 ओहि ग्रन्थ जे युवावस्थामे एक अर्थ देलक, वृद्धावस्थामे दोसर।
 अनुभव पठन गहिर करैत।

एक शोक मृत्यु-विचार बदलैत।
एक सामाजिक अन्याय न्यायक अर्थ।
एक युद्ध अहिंसाक अर्थ।
एक शिष्यक सफलता शिक्षाक अर्थ।
जीवन पुस्तकक मार्जिनमे अपन टिप्पणी लिखैत।
वर्ष दर वर्ष मार्जिन भरैत।
फेर विद्वान पुस्तक फेर खोलैत आ अपने पुरान टिप्पणी पर मुस्करैत।
“तखन हम एना सोचैत छलहुँ।”
ज्ञान स्थिर नहि।
ई विनम्र विकास।
एक विद्वान जखन अपन पुरान मत संशोधित करैत, ओ विश्वासघात नहि।
सत्यक प्रति निष्ठा।
अपने अहंकार सँ पैघ सत्य।
कतेक लोग अपन एक वाक्य सारी उम्र बचाबैत थाकि जाइत।
मुदा विचारक काम वाक्य बचाबय नहि, सत्य खोजब।
यदि सत्य वाक्य बदलय, बदलू।
एक सजग परम्परा अपने भीतर आलोचना रखैत।
आलोचना बाहरक आक्रमण मात्र नहि।
भीतरक सफाई।
कुन रुढ़ि?
कुन सजीव मूल्य?
कुन ऐतिहासिक सीमा?
कुन आइयो उपयोगी सूझ?
कुन अन्याय आब स्वीकार्य नहि?
परम्परा अपने घर साफ करय।
तखन ओ अधिक मजबूत।
धूलि सहेजि घर पवित्र नहि होइत।
सफाई प्रेमक काम।
एक समाज अपन दार्शनिक विरासत यदि केवल गौरव लेल पढ़ैत, आधा पठन।
दोसर आधा— आलोचना।
“एतय महान।”
“एतय सीमा।”
“एतय आइ नव अर्थ।”
ई तीन दृष्टि मिलि परिपक्व स्मृति।
एक शोधकर्ता दूरक पुस्तक पढ़ैत, मुदा अपन समाज सेहो देखय।

किएक तँ सिद्धान्त यदि धरती नहि छूबय, ओकर पयर कमजोर।
 एक सौन्दर्य-विचार लोककला समक्ष जाँचू।
 एक नैतिक सिद्धान्त गरीबी सामने।
 एक राजनीतिक विचार गामसभा सामने।
 एक भाषिक सिद्धान्त जीवित बोली सामने।
 एक धर्म-दर्शन बहुल समाज सामने।
 तखन विचार कसौटी पबैत।
 जीवन कठोर परीक्षक।
 ओ कहैत— “सिद्धान्त सुन्दर, मुदा एतय की करब?”
 एक विद्वत्ता जो जीवनक एहि प्रश्नसँ भागैत, कागजमे सुरक्षित रहैत, मुदा दुनिया बदलैत नहि।
 ज्ञान कखनो समाजक दुःख देखब माँगैत।
 भूख।
 असमानता।
 भेदभाव।
 हिंसा।
 अज्ञान।
 भय।
 पर्यावरणक क्षति।
 ई सभ केवल राजनीतिक समस्या नहि।
 मानव मूल्यक प्रश्न।
 दर्शन एतय चुप किएक?
 एक नैतिक विचार यदि करुणा नहि जगाबय, अधूर।
 एक सामाजिक दर्शन यदि कमजोरक आवाज नहि सुनय, अधूर।
 एक आध्यात्मिक विचार यदि दैनिक व्यवहार नहि बदलय, अधूर।
 एक ज्ञानमीमांसा यदि पूर्वग्रहक चश्मा नहि देखय, अधूर।
 एक सौन्दर्यशास्त्र यदि जीवनक कुरूपता प्रति पूर्ण उदासीन, अधूर।
 विचार अपन सीमा पार जीवन छूबय।
 एक विद्वानक काज कखनो पुल बनब।
 पुरान आ नव बीच।
 भाषा आ भाषा बीच।
 विश्वास आ तर्क बीच।
 अकादमिक ज्ञान आ लोक अनुभव बीच।
 देश आ विश्व बीच।
 एक पुल अपने कतहु नहि जाइत।
 मुदा हजार लोक ओकरा पार करैत।

पुलक महिमा ओकर स्थिरता नहि मात्र, ओकर उपयोग।
विद्वत्ता यदि दोसर मन केँ पार कराबय, तखन ओ सार्थक।
कियो एक जटिल विचार सहज करि छात्र धरि लऽ गेल।
कियो एक लोक-अनुभव गम्भीर भाषामे विश्व धरि।
दुनू पुल।
एक समाजक बौद्धिक जीवन तखन समृद्ध जखन बहुत पुल।
एकही किला नहि।
कतेक यात्री पद पेलथि।
सम्मान।
अध्यक्षता।
सदस्यता।
मुदा अन्ततः पद काल संग छूटैत।
कुर्सी दूसरक।
नामपट्ट बदलैत।
की रहैत?
एक विचार।
एक पुस्तक।
एक विद्यार्थी जे आगाँ चलल।
एक संस्था जे जीवित रहल।
एक अनुवाद जे पढ़ल जाइत।
एक बहस जे नव दिशा देलक।
एक मूल्य जे जीवनमे उतरल।
पद क्षणिक।
प्रभाव दीर्घ हो सकैत।
एहि लेल कुर्सी सेवा बनय।
सिंहासन नहि।
एक अध्यक्ष यदि केवल अपन आवाज बढ़ाबय, सभा छोट।
यदि बहुत आवाज सुनय, सभा पैघ।
नेतृत्व बौद्धिक क्षेत्रमे सेहो सुननाइ।
युवाक नव प्रश्न सुनू।
दूर क्षेत्रक विद्वान।
छोट भाषाक लेखक।
भिन्न पद्धति।
असहमति।
तखन संस्था बहुल होइत।

एक देशक ज्ञानक भविष्य केवल महानगरमे नहि।
 छोट विश्वविद्यालय।
 गामक महाविद्यालय।
 प्रादेशिक भाषा।
 स्थानीय पत्रिका।
 छोट पुस्तकालय।
 एतयो दीप जरा सकैत।
 ज्ञान राजधानीक एकाधिकार नहि।
 कखनो सभसँ नव प्रश्न किनारसँ आबैत।
 जतय मुख्यधारा नहि देखलक।
 एक छोट शहरक अनुभव बड़ सिद्धान्तक सीमा खोलि सकैत।
 एक लोकभाषा मानव अनुभवक एहन शब्द रखि सकैत जे महान भाषा नहि।
 किनार ज्ञानक नव केन्द्र बनि सकैत।
 एहि लेल सुनू।
 केवल ऊपर नहि।
 चारू दिशा।
 एक कोनो उत्तरक गामसँ।
 एक दक्षिणक नगरसँ।
 एक पूर्वक विश्वविद्यालयसँ।
 एक पश्चिमक शोध-केन्द्रसँ।
 दिशा-दिशासँ दीप आबैत।
 एक सभा उजास सँ भरैत।
 कोनो एक दीप कहैत नहि— “अन्हार केवल हम हटाएब।”
 सभ अपन भाग दैत।
 एहिह सहयोग।
 एक विचारक परम्परा प्रतिस्पर्धा सँ नहि मात्र, सहकार्य सँ सेहो बढ़ैत।
 साझा परियोजना।
 सम्पादित ग्रन्थ।
 अनुवाद दल।
 सम्मेलन।
 पत्रिका।
 शोध नेटवर्क।
 एक व्यक्ति सभ नहि करि सकैत।
 सामूहिक बुद्धि आवश्यक।
 मुदा समूह व्यक्तिक स्वर नहि दबाबय।

सहकार्य अर्थ एकरूपता नहि।
एक संगीतमण्डली बहुत वाद्य रखैत।
एक ताल, बहुत स्वर।
एहिण सामूहिक ज्ञान।
कतेक विद्वान धर्म आ दर्शनक बीच जीवन लगबैत।
विश्वासक गहराई आ तर्कक कठोरता दुनू संग रखब सहज नहि।
मुदा जरूरी।
विश्वास यदि प्रश्नसँ डरैत, कमजोर।
तर्क यदि मानवीय आस्था समझे बिनु उपहास करैत, अधूर।
एक साँच संवाद कहैत— “अहाँ अपन विश्वास रखू।”
“हम प्रश्न रखब।”
“दुनू मानव गरिमा रखू।”
धर्म तखन बहुल समाजमे शान्ति सीखैत।
दर्शन तखन विश्वासक आन्तरिक अनुभव समझैत।
एक विचारक सौन्दर्य पर काम करैत।
ओ फूल देखैत, कविता, संगीत, मूर्ति, नाट्य।
मुदा सौन्दर्य केवल सुन्दर वस्तु नहि।
दृष्टि सेहो।
एक मन किएक एक राग सुनि भीतर बदलि जाइत?
किएक एक चित्र मौन होइत कहैत बहुत?
किएक कविताक एक पंक्ति तर्कसँ अधिक गहिर घाव छू सकैत?
सौन्दर्य मनुष्यक ज्ञानक एक अलग दुआर।
ओ सत्य कहैत तर्कक भाषा बिना।
कला मनुष्यक अनुभव सहेजैत।
एक युगक भय, आशा, प्रेम, विद्रोह।
सौन्दर्य-विचार जीवन सँ अलग कतय?
एक विचारक भाषा आ अर्थ पर झुकैत।
शब्द कतेक छोट, अर्थ कतेक पैघ।
एक वाक्य एक मनमे एक अर्थ, दोसरमे दोसर।
मुदा यदि अर्थ पूर्ण मनमाना, संवाद केना?
शब्द आ परिस्थिति बीच सूक्ष्म नृत्य।
भाषा विचारक घर।
घरक दीवार सेहो, खिड़की सेहो।
कतेक दार्शनिक विवाद कदाचित् शब्दक भिन्न अर्थ कारण।
कतेक अन्य वास्तविक मतभेद।

भाषा साफ करू, विचार साफ।
 मुदा मानव अनुभव केवल परिभाषा नहि।
 किछु अर्थ जीवन सँ आबैत।
 एक माँक “बेटा” शब्द शब्दकोशसँ पैघ।
 एक शोकक “मौन” व्याकरणसँ पैघ।
 भाषा आ जीवन एक-दोसर केँ भरैत।
 एक तर्क-विचारक कहैत— “कदम साफ रखू।”
 पहिल प्रतिज्ञा।
 फेर कारण।
 फेर निष्कर्ष।
 एक त्रुटि सम्पूर्ण इमारत झुका सकैत।
 तर्क मनक अनुशासन।
 मुदा तर्क हृदय नहि।
 ओ अन्याय सिद्ध करि सकैत, मुदा अन्याय देखि काँपब करुणा सिखबैत।
 दुनू चाही।
 तर्क बिनु करुणा भ्रमित हो सकैत।
 करुणा बिनु तर्क ठंढा।
 मानव निर्णय दुनू मिलि गहिर।
 एक विद्वान शिक्षाक अन्तिम वर्षमे पाछाँ देखैत।
 कतेक चेहरा।
 पहिल कक्षा।
 पहिल लेख।
 पहिल सम्मेलन।
 पहिल शोधार्थी।
 कतेक पुस्तक जमा।
 कतेक पन्ना फेर पढ़बाक रहल।
 कतेक प्रश्न अखनो अनुत्तरित।
 जीवन पूर्ण ग्रन्थ नहि।
 किछु अध्याय खुलल रहैत।
 मुदा कदाचित् एहि अपूर्णता में भविष्य बसैत।
 यदि सभ उत्तर देल, नव पीढ़ी की करैत?
 अधूरा प्रश्न उपहार।
 “हम एतय धरि आयलहुँ।”
 “आगाँ तूँ जाउ।”
 ई एक पीढ़ीक दोसर प्रति सभसँ सुन्दर वाक्य।

एक वरिष्ठ शोधकर्ता युवा के कहैत— “हमर नाम न दोहराउ मात्र।”

“हमरा पार जाउ।”

एहिए साँच गौरव।

शिष्य यदि गुरुसँ आगाँ नहि, परम्परा रुकल।

बीज यदि वृक्षसँ कम रहबाक शपथ ले, वन कतय?

ज्ञान वृद्धि माँगैत।

सम्मान संग अतिक्रमण।

एक पुस्तक आगाँक पुस्तक लेल सीढ़ी।

एक सिद्धान्त आगाँक संशोधन लेल माटि।

एक प्रश्न आगाँक खोज लेल दुआर।

एहि चक्र मे कियो अन्तिम नहि।

एक अन्तिम सत्यक दावा बौद्धिक यात्रा रोकि सकैत।

विनम्रता कहैत— “आरो देखबाक अछि।”

“आरो सुनबाक।”

“आरो पढ़बाक।”

ई तीन वाक्य विद्वत्ताक श्वास।

एक समाज जतय वरिष्ठ नव पीढ़ी लेल ठाम छोड़ैत, विचार ताजा।

जतय युवा पूर्वजक श्रम सम्मान करैत, जड़ि मजबूत।

जतय दुनू मिलैत, वृक्ष बढ़ैत।

नहि तँ एक दिस जड़ि बिनु पात।

दोसर पात बिनु जड़ि।

समन्वय जीवन।

एक शोध-परम्परा यदि बहुत दशक चलल, ओ केवल व्यक्तिसभक सूची नहि।

ओ एक साझा मानसिक परिदृश्य।

कुन प्रश्न लोकप्रिय भेल?

कुन भाषा उपयोग?

कुन पद्धति बढ़ल?

कुन विषय किनार पर?

कुन नव धारा उगली?

इतिहास नाम सँ अधिक प्रवाह देख्य।

एक युगक बौद्धिक चरित्र ओकर प्रश्नसभ सँ जानल जाइत।

कुन प्रश्न पूछल गेल?

कुन नहि?

ककर आवाज सुनेल?

ककर मौन?

आगाँक पीढ़ी ई अन्ध बिन्दु खोलय।
 तखन इतिहास जीवित पुनर्पाठ।
 कतेक पुरान शोध आइ सीमित लगि सकैत।
 मुदा ओ अपने समयक एक सीढ़ी।
 सीढ़ी पर चढ़ि ऊपर देखू, सीढ़ी लात नहि मारू।
 कृतज्ञता आ आलोचना एक साथ।
 ई परिपक्व उत्तराधिकार।
 एक समाज ज्ञानक इतिहास सहेजैत तँ भविष्य अपन जड़ि जानैत।
 मुदा इतिहास यदि केवल महिमामण्डन, भविष्य भ्रमित।
 सत्यनिष्ठ इतिहास कहैत— “ई उपलब्धि।”
 “ई सीमा।”
 “ई अनदेखल।”
 “ई नव सम्भावना।”
 चारू आवश्यक।
 दिशा-दिशासँ आबैत दीप एक बड़ आँगनमे राखल गेल।
 कियो अधिक तेज।
 कियो छोट।
 कियो पुरान तेलसँ।
 कियो नव बाती।
 मुदा अन्हार कोनो एक दीपक शत्रु नहि।
 सभ मिलि ओकरा कम करैत।
 एक दीप तर्कक।
 एक सौन्दर्यक।
 एक आस्थाक।
 एक भाषाक।
 एक न्यायक।
 एक समाजक।
 एक चेतनाक।
 एक शिक्षाक।
 एक परम्पराक पुनर्पाठक।
 एक विश्व-संवादक।
 आँगन धीरे उजास सँ भरैत।
 कियो पूछैत— “कुन दीप सभसँ पैघ?”
 हवा मुस्कुरैत।
 “अन्हार जतय, ओतय जे दीप पहुँचल, ओही महत्त्वपूर्ण।”

ज्ञानक महानता स्थान सँ नहि।
उपयोग सँ।
सत्यनिष्ठा सँ।
गहराई सँ।
दोसर मन जगाबयक शक्ति सँ।
एक छोट लेख कखनो बड़ ग्रन्थसँ अधिक प्रभावी।
एक कक्षा एक पुस्तकसँ अधिक।
एक प्रश्न एक उत्तरसँ अधिक।
माप सरल नहि।
एहि लेल विद्वत्ता प्रतिष्ठा दौड़ न बने।
पुरस्कार सुन्दर, मुदा लक्ष्य नहि।
सम्मान मधुर, मुदा सत्य सँ ऊपर नहि।
पद उपयोगी, मुदा सेवा लेल।
नाम रहय, मुदा काम पैघ।
एक विचारक अपने नामक छाया पार जाइत तखन ओकर काज साँच जीवन पबैत।
पुस्तक लेखकक नियन्त्रण छोड़ि पाठकक दुनिया जाइत।
विद्यार्थी शिक्षकक नियन्त्रण छोड़ि अपन रस्ता।
संस्था संस्थापकक नियन्त्रण छोड़ि नव पीढ़ी।
साँच सृजन मुक्त करैत।
स्वामित्व कम।
विश्वास अधिक।
एक दीप दोसर केँ जरा कऽ कहैत— “आब तूँ अपने जल।”
ई ज्ञानक सभसँ सुन्दर आशीष।
अन्तमे जखन सभा खाली होएत,
कुर्सी शान्त,
पुस्तक अलमारीमे,
नामपट्ट धुँधला,
तखन कदाचित् किछु अनाम उजास अखनो रहैत।
कोनो विद्यार्थीक मनमे।
कोनो अनुवादकक शब्दमे।
कोनो शोधार्थीक प्रश्नमे।
कोनो कक्षाक स्वतन्त्र बहसमे।
कोनो पुस्तकालयक सहेजल पाण्डुलिपिमे।
कोनो नव पुस्तकक पहिल वाक्यमे।
एहि ए दीर्घ जीवन।

मनुष्य जाइत।

प्रश्न रहैत।

उत्तर बदलैत।

दीप हाथ बदलैत।

आ ज्ञानक रस्ता दिशा-दिशासँ आबैत उजास संग आगाँ चलैत रहैत।

कियो अन्तिम यात्री नहि।

कियो अन्तिम दीप नहि।

आकाश अखनो पैघ।

रस्ता अखनो खुलल।

आ दूर कोनो छोट विद्यालयमे एक बच्चा फेर पहिल बेर पूछैत अछि—

“किएक?”

ओहि एक शब्दसँ सम्पूर्ण यात्रा फेर आरम्भ होइत अछि।

खण्ड ६
प्रश्न

जड़ चित्रक पाछाँ बहैत प्रश्न

कतेको बेर पुरान चित्र
 सत्यक देवाल पर टाँगल रहय,
 लोक ओकर धूलि नहि देखय,
 केवल विरासत कहि माथ नवाय।
 कियो कहय—एहि धरतीक चिन्तन
 केवल आत्माक दिशा जानैत,
 माटि, पदार्थ, तर्क आ संशय
 मानो ओकर दुआर नहि पबैत।
 मुदा कण-कणक ठोस प्रश्नमे
 देह आ जग सेहो उपस्थित,
 चेतनक संग पदार्थक सत्ता
 कतेको बाट पर समान प्रतिष्ठित।
 दोसर परदा कहय—पुरान वचन
 अन्तिम मोहर, प्रश्न निषिद्ध,
 जखन कि व्याख्याक भीतर सदिखन
 असहमतिक आगि रहय प्रज्वलित।
 तीसर साँचा—मतसभ मानो
 बरफक घरमे सदिखन बन्द,
 एक बेर जे रूप बनल पुरान,
 तकरा पाछाँ नहि परिवर्तनक छन्द।
 इतिहास मुदा नदीक गति,
 एक स्वर दोसर स्वर सँ लड़य,
 नव प्रश्न पुरान उत्तर खोलय,
 सीमा टूटय, नूतन पथ गढ़य।
 परम्परा जीवित तखन रहय
 जखन ओ अपनहि छवि पर संशय करय,
 श्रद्धा आँखि नहि मूँदि ले,
 तर्क ओकर भीतर उजास भरय।
 मृत संग्रहालयक निस्तब्धता नहि,
 चिन्तनक असली घर संवाद;
 जे चित्र कठोर भऽ गेल अछि,
 ओकर पाछाँ बहैत अछि प्रतिवाद।
 सत्यक सम्मान ई नहि
 जे प्रश्नक मुँह पर ताला दियौ;

जीवित विरासत चाही तँ
पुरान धारणाकें फेर जाँचियौ।
जड़ चित्रक पाछाँ बहैत प्रश्न
आबो अपन उत्तर माँगैत अछि;
जे परम्परा स्वयं कें फेर पढ़य,
सेहे भविष्यक संग जागैत अछि।

मुक्तिक धुरीसँ बाहर विचारक आकाश

एकटा शब्द कें केन्द्र बनाकऽ
सभ प्रश्न घुमाओल जा सकैत?
जीवनक प्रत्येक जिज्ञासाकें
एकहि लक्ष्यसँ बुझाओल जा सकैत?
कियो कहय—चिन्तन पहिने
मुक्तिक सम्भावना देखबैत,
फेर साधना ओहि दूर क्षितिज कें
जीवन भीतर साकार बनबैत।
ई बाट सुन्दर, मुदा प्रश्न अछि—
सभ तर्क की एहि हेतु उठल?
संख्या, भाषा, कारण, पदार्थ,
समाजक चिन्ता कोना ओतय जुड़ल?
कखनो विचार प्रयोगशाला,
कखनो नकारक तीख प्रकाश,
कखनो अपनेक सम्भावना रचबाक
कल्पनाक असीम आकाश।
मुक्ति एक महत्त्वपूर्ण दिशा,
मुदा दिशा सभटा नहि होय;
नदीक एक घाट कें समुद्र कहब
बाकी प्रवाहक अर्थ खोय।
चिन्तन अपनहि अधिकारसँ
प्रश्न करय, प्रमाण माँगय,
जतय उत्तर जीवन बदलय,
ओतय व्यवहारक पथो जागय।
मुदा हरेक विचारक मूल्य
तकर फलसँ मात्र नहि मापू;
कखनो जानबाक आनन्द खातिर
प्रश्नक दुआर स्वयं खोलू।

मुक्ति यदि सत्यक एक सम्भावना,
 तकरा सम्मानक ठाम दिअ;
 मुदा विचारक विस्तृत आकाशमे
 बाकी तारासभ केँ सेहो जीअ।
 जे दर्शन केवल साधन बनि जाए,
 ओ अपन स्वाधीनता गमाबय;
 जे साधना विचारविहीन हो,
 ओ अन्ह विश्वासमे समा जाय।
 दुनू भेटू, मुदा एक-दोसराकेँ
 पूर्ण रूपेँ नहि निगलय;
 मुक्तिक धुरीसँ बाहर सेहो
 विचारक अनन्त आकाश खुलय।

मुक्ति एक प्रश्न, चिन्तन अनेक बाट

मुक्ति—कतेक गहिर शब्द,
 मानो भीतरक बन्द किवाड़;
 मुदा की प्रत्येक चिन्तनक यात्रा
 एही एक दुआरक पहरेदार?
 आत्मा, जग, कर्म, ज्ञान,
 सभ अपन प्रश्न उठबैत,
 कियो सत्य खोजय, कियो न्याय,
 कियो भाषा केर सीमा तकैत।
 ‘आध्यात्मिक’ कहिते की
 पदार्थक सत्य नकारल जाए?
 कि चेतन सर्वोपरि मानलापर
 मात्र ई उपाधि भेटि जाए?
 लक्ष्य आ सत्ता अलग प्रश्न,
 ई भेद बुझब आवश्यक;
 केहन जग अछि—एक जिज्ञासा,
 की चाही जीवन—दोसर विवेक।
 मुक्ति यदि अपन सत्य स्वरूप,
 तँ से हरायल कोना भेल?
 जँ कर्म सँ नहि उपजैत ओ,
 तँ प्रयासक अर्थ कतय गेल?
 जँ अज्ञान बन्धनक मूल,
 ज्ञान ओकर गाँठ खोलि सकय;
 मुदा ज्ञानो कतेक रूपक,
 ककरा अन्तिम कहि देल जाय?

कखनो निर्वाणक शान्ति,
कखनो सर्वज्ञ उज्जर दिगन्त,
कखनो आत्मबोधक मौन,
कखनो सम्बन्धक नव अनन्त।

एतेक भिन्न मुक्तिक छवि
एकहि शब्दमे किएक समाय?
शब्दक एकता भीतर विचारक
भिन्नता स्पष्ट देखाय।

चिन्तनक गरिमा तखन
जखन ओ लक्ष्यकेँ सेहो जाँचय,
अपन प्रियतम आदर्शो समक्ष
प्रश्नक निर्मम दीप जराय।

मुक्ति एक प्रश्न महान,
मुदा चिन्तनक बाट अनेक;
एके शिखर मानि सभ पर्वत
मापब नहि हो बुद्धिक टेक।

श्रुतिक वनमे ककर स्वर मूल

पुरान वनमे चारि दिस
मंत्रक ध्वनि गूँजैत रहय,
कतहु विधिक अग्नि, कतहु मौन वन,
कतहु आत्मप्रश्न धीरे बहय।

ककरा कहब मूल स्वर,
ककरा कहब पछातिक पात?
एके वृक्षक शाखा सभ कि
भिन्न बीजक मिलल बरात?

मंत्र अपन छन्दमे जागय,
ब्राह्मण कर्मक क्रम बतबय,
आरण्यक सीमा-पारि चलैत,
उपनिषद भीतरक प्रश्न जगबय।

जँ सभटा एकहि देह,
तँ चयनक माप किएक बदलय?
किछु पाठ पावय परम आसन,
किछु परम्पराक छायामे रहय।

शाखा-शाखामे भिन्न वचन,
एकरूपता कोना मानल जाए?
संगीतक नाम एक रहितो
स्वर कतेक दिशा बदलाय।

मानव हाथ जँ व्यवस्था देत,
 अमानवीयता केर दावा कतेक?
 अनुष्ठान लेल मानव-रचित ज्ञान
 अनिवार्य हो तँ प्रश्न अनेक।
 जे संग्रह हजार वर्षमे बनल,
 ओ एक क्षणक पूर्ण विधान नहि;
 समयक जोड़, चयन, विस्मृति
 सभ इतिहासक बाहर नहि।
 श्रद्धा तखन अधिक गहिर
 जखन ओ सत्यसँ डरैत नहि;
 पुरान क्रम केँ फेर सजेनाइ
 अपमानक कर्म कहाइत नहि।
 ग्रन्थक देह सेहो इतिहास,
 पृष्ठ-पृष्ठ पर समयक छाप;
 ककर स्वर मूल—ई पूछनाइ
 श्रुतिक प्रति नहि कोनो पाप।
 वनक सम्मान ओही बेर
 जखन हरेक गाछक रूप देखू;
 एक नामक छाँहमे भिन्नता
 मेटि नहि, ध्यानसँ लेखू।

सीमाहीन कथनक भीतर मौन प्रश्न

कतेक वचन स्वयं केँ कहय
 गुह्य ज्ञानक अन्तिम कात,
 मुदा ककरा चुनि मूल कहब,
 ककरा छोड़ब बाहर रात?
 कतहु जग उत्पन्न होइत,
 कतहु अजन्म सत्यक गान;
 कतहु आत्मा सर्वस्व बनैत,
 कतहु प्रश्नहि रहय प्रधान।
 भिन्न ऋतु, भिन्न बोली,
 भिन्न चिन्ता, भिन्न प्रसंग;
 एक नामक भीतर कतेक
 विचारक असमान रंग।
 पछातिक पाठ पहिल वचन केँ
 नव अर्थक वस्त्र पहिराबय;
 कखनो छोट चयन मूल ग्रन्थक
 सम्पूर्ण अधिकार अपनाबय।

जतय प्रश्न छल बहुवचन,
व्याख्या कखनो एकवचन करय;
कतेक असहमत स्वर दबि जाए,
कतेक नव सिद्धान्त उभरय।
‘अन्तिम शिक्षा’ कहि देलासँ
इतिहास अन्तिम नहि भऽ जाय;
पाठक भीतर संघर्ष रहिते
नव प्रश्न फेर जन्म लय।
मौन सेहो साक्ष्य हो सकैत,
अनुपस्थिति सेहो एक चिन्ह;
जे नहि कहल गेल स्पष्ट रूपेँ,
ओकरा भरब सावधानी बिनु नहि।
एकरूपता सुन्दर कल्पना,
मुदा प्रमाण ओकरा चाही;
भिन्नताक सम्मान बिनु
सत्यक खोज अधूरी आही।
सीमाहीन कथनक भीतर
मौन प्रश्न धैर्यसँ सुनू;
एक उत्तरक लोभ छोड़ि
वचनक अनेक दिशा चुनू।
ग्रन्थ जीवित तखन रहय
जखन अर्थक दुआर खुलल;
एक निष्कर्षक लौह ताला
नहि, संवादक आकाश फुलल।

सूत्रक देह पर समयक अनेक लेख

सूत्र छोट, मुदा ओकर देह पर
कतेक युगक अँगुरीक चिन्ह;
एक पाठ कहय ‘अछि’, दोसर
एक नकार जोड़ि करय भिन्न।
कतहु पंक्ति दू भाग बनल,
कतहु दूटा फेर एक भेल;
कतहु शब्दक सूक्ष्म बदलावसँ
सम्पूर्ण तर्कक दिशा बदल गेल।
कुन पाठ पहिल, कुन पछिला,
ककर साक्ष्य अधिक प्रमाण?
केवल पुरान कहि मानि लेब
नहि बनय आलोचनात्मक ज्ञान।

भाष्य जँ सूत्र उद्धृत करय,
 ओ साक्ष्यक एक उज्जर रेख;
 मुदा भाष्यक पाठो इतिहासक,
 ओकरो चाही सावधान देख।
 कखनो सम्पादक मूल बनाबय,
 कखनो परम्परा पाठ बचाबय;
 कखनो अनुपलब्ध ग्रन्थक नाम
 सत्यापनक प्रश्न उठाबय।
 संख्या गिनिते विस्मय जागय—
 कतेक पंक्ति संदिग्ध ठाढ़;
 तैयो मुख्य देहमे सभ शामिल,
 आधार कतेक, निर्णयक बाढ़।
 पाठ-शुद्धि पूजा नहि,
 ई तर्कक पहिल अनुशासन;
 शब्द बेठीक तँ निष्कर्ष बेठीक,
 अर्थक टूटि सकैत शासन।
 इतिहासक धूलि हटेबाक लेल
 नम्रता संग संशय चाही;
 ग्रन्थक प्रति प्रेमक अर्थ
 प्रश्न रोकब कदापि नहि आही।
 सूत्रक देह पर समय लिखैत,
 काटैत, जोड़ैत, फेर सँवारैत;
 जाँचक दीप बिनु हम केवल
 पछिला हाथक छाप दोहराबैत।
 सत्य ककरो प्रति निर्दय नहि,
 मुदा प्रमाण प्रति कठोर;
 सूत्रक मौन सँ उत्तर माँगू,
 धैर्य बनाउ खोजक डोर।

साक्षी आ प्रकृतिक बीच अन्तिम दूरी

एक दिस मौन साक्षी ठाढ़,
 दोसर दिस प्रकृतिक नृत्य;
 दुनू जखन एक-दोसरा बुझाय,
 ओतहि जन्मय बन्धनक कृत्य।
 रंग, रूप, सुख, दुःख, गति
 सभ प्रकृतिक बदलैत वेश;
 साक्षी यदि अपनाकेँ ओहि मानय,
 तखन भ्रम भरि देत परिवेश।

विवेक कहय—देखू स्पष्ट,
जे देखैत अछि से दृश्य नहि;
चेतनक उजास आ रूपक धारा
एके सत्ता कहब सहज नहि।
मुदा मुक्ति आयलापर प्रश्न—
साक्षी की प्रकृति केँ देखैत रहत?
कि अन्तिम एकान्तक शान्तिमे
दृश्यक सभ स्मृति सेहो बहत?
जीवन भीतर भेदक बोध
देह रहिते जागि सकैत;
पुरान गति चाक जकाँ घुमैत,
मुदा पहचान आब नहि भुलैत।
फेर देहक गति थमलापर
कैवल्यक अर्थ की रहि जाय?
साक्षी बिनु कोनो दृश्यक ज्ञान,
कि दृश्य बिनु साक्षी ठाढ़ रहाय?
एक वचन कहय—देखल प्रकृति
लाजसँ फेर नहि समक्ष आय;
दोसर कहय—साक्षी तखनहुँ
भिन्नताक स्पष्ट बोध बचाय।
एहि तनावमे गहिर प्रश्न,
मुक्ति शून्यता कि स्वच्छ दृष्टि?
भेदक पूर्णता की सम्बन्धक
समाप्ति, अथवा नवी सृष्टि?
बन्धन पहचानक भूल छल,
मुक्ति तकर ठीक विवेक;
मुदा विवेकक अन्तिम क्षणमे
ज्ञान रहत कि मौनहि एक?
साक्षी आ प्रकृतिक बीच दूरी
जतेक स्पष्ट, प्रश्न ततेक गहिर;
अन्तिम स्वतन्त्रताक किनार पर
ककर उजास रहत अधीर?

भ्रमक गाँठिसँ अभेदक निस्तब्धता

‘हम’ आ ‘ई’ केर बीच रेखा
पहिने बहुत कठोर देखाय;
जखन हम देह केँ अपन कहू,
पहिचानक गाँठि तुरन्त बनाय।

देखब, सुनब, चाहब, करब—
 सभ एक मूल संयोग पर टिकैत;
 स्वयं के मन-इन्द्रियसँ जोड़िते
 व्यक्तित्वक सम्पूर्ण जग उठैत।
 मुदा जँ ई जोड़ भ्रम अछि,
 तँ प्रश्न अगिला अधिक कठिन—
 भ्रम सत्यक भीतर कोना जन्मल,
 जँ सत्य रहय सर्वथा अभिन्न?
 दू वस्तु हो तँ बेठीक मिलान,
 एके सत्य हो तँ द्वैत कतय?
 अज्ञानक पहिल बीज ककर,
 जे अभेदमे भेदक छवि रचय?
 ज्ञानक सभ गतिविधि मानो
 एहि मूल भूल पर चलैत;
 भूल हटिते ज्ञाता-ज्ञेयक
 सारा मंच धीरे गलैत।
 सुख-दुःख, उचित-अनुचित,
 अर्थ-अनर्थक जोड़ी टूटय;
 वाणी जे भेदक सहारे चलय,
 मौनक सीमा पर आबि छूटय।
 अभेद तखन संख्या 'एक' नहि,
 नहि अनेकक विरुद्ध गणना;
 ओ क्षेत्र जतय विरोधक जोड़ी
 नहि पाबय अपन पुरान रचना।
 मुदा जग जँ अनुभवमे अछि,
 तकरा केवल छाया कहि टारू?
 भ्रमक रहस्य बुझल बिनु
 सत्यक जयघोष कोना स्वीकारू?
 गाँठि खोलब आवश्यक,
 मुदा गाँठि बनल कोना—से पूछू;
 निस्तब्ध अभेदक उजास धरि
 प्रश्नक साँस जीवित राखू।
 भ्रमक गाँठिसँ अभेदक शान्ति
 एक सोझ बाट नहि होय;
 हरेक पग पर तर्कक दीप जरा,
 नहि तँ मौन स्वयं भ्रम बनि जाय।

एक नामक भीतर अनेक विपरीत दिशा

एक नाम पुरान आ विशाल,
तकर छाँहमे अनेक मत ठाढ़;
कियो अभेदक शिखर देखय,
कियो भेदक अटल पहाड़।
कियो जग केँ सत्य मानय,
कियो ओकर अन्तिमता नकारय;
कियो आत्मा परमसँ एक,
कियो दूरीक सेतु सँवारय।
जँ दर्शन एक स्पष्ट स्थिति,
एतेक विरोध कोना समाय?
एकहि परिभाषा विस्तृत करिते
कियो भीतर, कियो बाहर जाय।
कखनो नाम ग्रन्थक अन्तसँ,
कखनो व्याख्याक परम्परा सँ;
कखनो तीन-चारि प्रामाणिक पाठ
मिलि बनय अधिकारक घरसँ।
मुदा पाठो एक दिशा नहि,
व्याख्या फेर कतेक प्रकार;
एक ग्रन्थक सत्य बचबैत
भिन्न निष्कर्षक खुलय दुआर।
यदि नामक अर्थ एतबे
जे किछु प्राचीन पाठ स्वीकारू,
तँ दार्शनिक सीमा कोना
ओहि श्रद्धामात्र सँ निर्धारित करू?
जीवित परम्परा कखनो
एक सूत्रमे बन्द नहि होय;
मुदा भिन्नता एतेक बढ़ि जाए
जे नामक अर्थहि गुमि जाय।
शब्दक भावनात्मक महिमा
तर्कक स्पष्टता नहि बनय;
पहिचान चाही तँ माप चाही,
नहि तँ सीमा हवा सन रहय।
एक नामक भीतर अनेक दिशा—
ई दोषो हो सकैत, इतिहासो;
प्रश्न ई नहि नाम बचत कि नहि,
अर्थ बचत कि केवल विश्वासो।

परम्पराकें प्रेमसँ पूछू—
तोहर केन्द्र वास्तवमे कतय?
उत्तर जँ अनेक हो, स्वीकारू;
अस्पष्टताकें सत्य नहि कहय।

अग्निक अर्घ्य आ कर्मक एकल लेखा

अग्नि समक्ष अर्घ्य चढ़ैत,
हाथ देत, दोसर हाथ पाबय;
जीवन पारस्परिक जाल,
एकर सुख दोसरासँ आबय।
वृष्टि, अन्न, श्रम, समुदाय,
देव-मानवक विनिमय-भाव;
देबाक भीतर पाबबाक आशा,
साझा क्रमक गहिर प्रभाव।
दोसर धार कहय—हरेक कर्मक
फल कर्त्ताक नामें लिखल;
नहि ककरो पुण्य दोसर पाबय,
नहि दोषक भार सहजहि बदलल।
तखन प्रश्न—जगत जँ जुड़ल,
कर्म केवल 'हमर' कोना रहय?
हमर हाथक चोट जँ तोरा लागय,
फल एकान्तमे कोना बहय?
नैतिकता केवल निज लेखा नहि,
ओ दोसरा प्रति उत्तरदाय;
जे काज कएल, तकर प्रभाव
जीवित सम्बन्धसभमे जाय।
यदि फल केवल भीतर जमा,
बाहरी घावक न्याय कतय?
यदि सभ परिणाम साझे हो,
व्यक्तिगत उत्तरदायित्व रहय कतय?
कारणक धारा आ नैतिक मोल
दुनू एके नहि, मुदा जुड़ल;
इच्छा, देह, परिस्थिति, परिणाम
एक कर्ममे बहु सूत्र गुँथल।
अग्निक अर्घ्य कहय—साझापन,
कर्मक लेखा कहय—निज भार;
दुनू आवाजक बीच बनैत
नैतिक बुद्धिक कठिन दुआर।

मुक्ति यदि फलसँ दूरी,
तैयो कर्म जग केँ छूबैत;
अनासक्ति जिम्मेदारी नहि मेटय,
ओ केवल लोभक गाँठ हटबैत।
अग्नि आ लेखाक बीच प्रश्न
आबो उत्तर माँगैत रहय—
हम अपन कर्मक स्वामी छी,
मुदा जग सेहो तकर फल सहय।

चारि लक्ष्यक चौखटिसँ बाहर जीवन

चारि चौखटि बनल पुरान—
नीति, सम्पत्ति, चाह, मुक्ति;
कहल गेल जीवनक सभ पथ
एहि चारिमे पाबय युक्ति।
मुदा कलाकारक रंगक भूख,
ज्ञानक निष्काम जिज्ञासा,
खेलक आनन्द, खोजक जोखिम,
ककर घरमे पाबय भाषा?
सम्पत्ति केवल साधन कि लक्ष्य,
चाह केवल देहक प्यास?
नीति की सभ पर शासन करय,
मुक्ति की सबहक अन्तिम आस?
जँ चारू परस्पर जुड़ल,
तँ क्रम ककर ऊपर, ककर नीच?
एकक पूर्ति दोसर बिनु नहि,
तखन विभाजनक अर्थ की बीच?
चाह जँ बन्धनक मूल कहल,
जीवनक गति तखन कोना?
इच्छा बिनु कर्म उठत कोना,
कर्म बिनु लक्ष्य भेटत कोना?
मुक्ति जँ सभ सँ ऊपर,
बाकी तीन केवल सीढ़ी भेल?
तँ प्रेम, श्रम, न्याय, सृजनक
अपन स्वतन्त्र मोल कतय गेल?
कियो कहय चारू एक लक्ष्य,
मुदा एकर नाम फेर की?
यदि एकमे सभटा घुलि जाए,
चारि कहबाक प्रयोजन की?

मानव जीवन बहु-आकांक्षा,
 एक सूची सँ पूर्ण नहि होय;
 बुद्धिक स्वाधीन आनन्दो चाही,
 जे लाभ-मुक्ति दुनू सँ पर होय।
 पुरान चौखटि उपयोगी मानचित्र,
 मुदा धरती ओकरा सँ पैघ;
 नव अनुभव नव लक्ष्य जनमबय,
 जीवन सदिखन सूची सँ पैघ।
 चारि लक्ष्यक चौखटिसँ बाहर
 खुलल अछि मनुष्यक विशाल पथ;
 अर्थ तखन समृद्ध बनत
 जखन नव चाहो पाबय अपन रथ।

सूचीक भीत नहि, प्रश्नक जीवित नदी

नामक सूची बनि सकैत,
 मतक घर गिनल जा सकैत;
 मुदा चिन्तनक असली इतिहास
 केवल खाँचामे नहि समैत।
 एक प्रश्न शताब्दी पारि
 भिन्न बोलीमे फेर उठैत;
 एक उत्तर दोसराक भीतर
 नव विरोधक बीज रोपैत।
 कियो आत्मा पूछय, कियो कर्म,
 कियो शब्दक मूल तलाशय;
 कियो समाजक उचित रूप,
 कियो सत्यक प्रमाण निहारय।
 परम्परा एक दिनमे नहि,
 पीढ़ी-पीढ़ीक संवादसँ बनय;
 सहमति जतेक ओकर अंश,
 असहमति सेहो ततेक धन रहय।
 आरम्भक प्रश्न कठिन सदिखन—
 पहिल स्वर ककरा कहब?
 जतय लिखित पाठ नहि बचल,
 ओतय संकेतसँ इतिहास पढ़ब।
 धर्म, कला, भाषा, राजनीति,
 ज्ञानक अलग टापू नहि;
 एक समाजक जीवित अनुभवमे
 सभक जड़ि पूर्णतः अलग नहि।

तैयो सभटा दर्शन कहि देब
भेदक अर्थ गमा सकैत;
प्रश्नक स्पष्टता चाही,
नहि तँ सीमा धुँधला जाइत।
जीवित परम्परा पहचानू
समस्या, तर्क आ प्रतिवादसँ;
ककरो मत 'अन्तिम' नहि,
ओकर अर्थ बढ़य अगिला संवादसँ।
सूचीक भीत नहि, नदी बनू,
जतय धारा भेटय, अलग होय;
इतिहास तखन जीवन पाबय
जखन प्रश्न फेर वर्तमान छूअय।
जे बीतल, ओकरा समाधि नहि,
आइक जिज्ञासासँ जोड़ू;
पुरान चिन्तनक जीवित नस
नव प्रश्नक स्पन्दनसँ तोड़ू नहि।

यज्ञक धुँआसँ तर्कक पहिल उजास

अग्निक चारू कात समाज,
ऋतु, अन्न, वचनक मेल;
कर्मक क्रममे जीवन बान्हल,
साझा नियमक प्राचीन खेल।
घर, वन, ग्राम, कुलक भीतर
कर्तव्यक रूप बदलैत;
एकरे संग प्रश्न उठल—
की उचित, किएक, के कहैत?
विधि पहिने आज्ञा जकाँ,
फेर अर्थक माँग करय;
'करू' शब्दक पाछाँ बुद्धि
अधिकारक स्रोत निहारय।
भाषा केवल मन्त्र नहि,
शब्दक गठन स्वयं प्रश्न;
धातु, अर्थ, वाक्यक संगति
खोलय विचारक नव स्पन्दन।
कारीगरक हाथमे ज्ञान,
नट, वैद्य, कृषकक कौशल;
जीवनक व्यवहारो बनैत
बुद्धिक मौन प्रयोगशाला।

फेर उठल तीख चुनौती—
 स्थिर आत्मा किएक मानू?
 शाश्वत वस्तु, सामान्य रूप
 प्रमाण बिनु किएक जानू?
 कियो कर्मक स्वतन्त्र सत्ता,
 कियो कारणक जग गढ़ैत;
 कियो भाषा सँ सत्य चिन्हैत,
 कियो पदार्थक भेद पढ़ैत।
 पुरान अग्नि बुझल नहि,
 मुदा तकर धुँआ पारि आँखि;
 अनुष्ठानक संग प्रश्न जन्मल,
 तर्क पसरल शाखा-शाखि।
 एकहि सभ्यता भीतर
 श्रद्धा आ संशय दुनू रहय;
 जतय आदेशक पाछाँ कारण पूछल,
 ओतहि नव विचार बहय।
 यज्ञक धुँआसँ उठल उजास
 आब स्वतन्त्र दिशि चलल;
 कर्मक भूमि सँ ज्ञानक वन
 धीरे-धीरे घना फुलल।

वस्तुक सात दुआर, साक्षीक एक नेत्र

वस्तु समक्ष ठाढ़ अछि,
 मुदा ओकर रूप कतेक?
 द्रव्य, गुण, गति, सामान्य,
 विशेष, सम्बन्ध—सूत्र अनेक।
 अभावो कखनो अर्थ बने,
 जे नहि अछि सेहो चिन्ह;
 रिक्त स्थानक मौन कहैत
 उपस्थितिक सीमा भिन्न।
 गुलाब लाल—लालिमा कतय?
 फूलसँ अलग कि ओहि मे बसल?
 गुण आ वस्तुक बीचक सेतु
 ककर नियमसँ दृढ़ बनल?
 अनेक फूलमे ‘फूलपन’ देखू,
 एक समान रूप कोना आय?
 विशेष बिनु प्रत्येक वस्तु
 दोसरा सँ अलग कोना ठहराय?

मुदा बाहरक श्रेणीसभ बीच
एक साक्षी प्रश्न उठाबय;
जे सभ वस्तु केँ जानैत अछि,
ओ अपने ककर वर्गमे जाय?
चेतना वस्तु जकाँ होइत तँ
कियो ओकरा फेर देखित;
अनन्त दर्शकक पाँति बनित,
ज्ञान अपनहि भीतर लेखित।
साक्षी कहय—हम दृश्य नहि,
प्रकृति कहय—हम रूप अनेक;
दुनू बीच पहिचानक भूल
बन्धन बनय सूक्ष्म टेक।
रंग, गति, सुख, पीड़ा,
सत्त्व-रज-तमक बदलैत चाल;
प्रकृति गतिशील, साक्षी मौन,
तैयो अनुभव दुनूक जाल।
वस्तुक दुआर गिनबाक संग
ज्ञाताक स्वरूपो पूछू;
केवल बाहरी वर्गीकरणसँ
ज्ञानक सम्पूर्ण घर नहि बूझू।
सात दुआर बाहर खुलैत,
एक नेत्र भीतर निहारय;
जगत आ साक्षीक भिन्न रहस्य
एक-दोसरा सँ प्रश्न कराय।

इन्द्रियक पवन थमलापर अन्तर आकाश

आँखि बाहर दौड़ैत रहय,
कान ध्वनिक पाछाँ जाय;
मन हरेक स्पर्शक डोर पकड़ि
नव इच्छा संग बहि जाय।
बन्धन केवल बाहरी रस्सी नहि,
चेतनाक आदत सेहो जाल;
जे सदिखन वस्तु दिशि भागय,
ओ भूलय अपन मौन विशाल।
पहिल अनुशासन देहक,
फेर श्वासक धीमा लय;
चंचल मनक पाँखि समेटि
ध्यान एक दिशा पकड़ि लय।

रोकब मात्र निषेध नहि,
 ऊर्जा भीतर फेर मोड़ब;
 जे पवन बाहर धूलि उड़बय,
 ओहि सँ अन्तर दीप जोड़ब।
 इच्छा उठय, स्मृति चमकय,
 कल्पना अपन जग रचय;
 साधक देखय सभ तरंग,
 मुदा ओकर संग बहि नहि जाय।
 स्वप्नो कखनो सत्य लगैत,
 जागल जगो दृढ़ कहलाय;
 दुनू अनुभवक पटल पर
 चेतन अपन रूप देखाय।
 ठीक पहचान कठिन अछि—
 दृश्य कतेक, दर्शक कतेक;
 जतय मन शांत, ओतय खुलय
 साक्षीक निर्विकार विवेक।
 स्वतन्त्रता भागि जाएब नहि,
 नहि संसारक प्रति घृणा;
 ओ अपन प्रतिक्रियाक ऊपर
 जागल नियन्त्रणक साधना।
 इन्द्रियक पवन थमलापर
 अन्तर आकाश रिक्त नहि;
 ओतय सजगता केर उजास,
 जे बाहरी शोरक दास नहि।
 मौनक अर्थ निष्क्रियता नहि,
 ओ भीतरक स्वाधीन चाल;
 जतय चित्त अपन स्रोत चिन्हय,
 ओतहि खुलय मुक्तिक अरुण भोर।

शब्दक बीजसँ कल्पनाक वन

शब्द पहिने कतय जन्मल,
 ध्वनि कि अर्थक अदृश्य बीज?
 जिह्वा केवल स्वर निकालय,
 मन कोना बुनय अर्थक नीज?
 एक धातुसँ रूप अनेक,
 एक शब्दक काज अनेक;
 वाक्य भीतर स्थान बदलिते
 अर्थक दिशा होइत पृथक।

शब्द वस्तुक छाया मात्र कि
वस्तु शब्दक बाट पहिचान?
नाम बिनु अनुभव रहि सकैत,
कि नामैं बनबैत जगक मान?
वाक्यक अर्थ टुकड़ा-टुकड़ा
जोड़लासँ मात्र नहि बनय;
कखनो समग्र स्वर एक क्षणमे
मनक भीतर फूटि उठय।
जे कहल नहि, संकेतमे अछि,
जे सुनल नहि, लयमे जागय;
संभावित अर्थक बीज भीतर
प्रसंगक ऋतु भेटि फुलाय।
कवि एक दृश्य कहि देत,
पाठक भीतर संसार बनय;
एक पंक्तिक छोट दुआरसँ
कल्पनाक विस्तृत वन खुलय।
नट मंच पर रोइत अछि,
दर्शक जानय—ई सत्य नहि;
तैयो आँखिक नोर वास्तविक,
भावक जग किछु झूठ नहि।
यथार्थ आ कल्पना बीच
कठोर दीवाल सदिखन नहि;
मानव चेतना नूतन रूप रचय,
जे पहिले बाहरी जगमे नहि।
भाषा केवल सूचना नहि,
ओ सृजनक सेहो आधार;
शब्दक भीतर भाव, स्मृति,
संस्कृति, सम्भावनाक संसार।
शब्दक बीजसँ वन उगैत,
वनसँ फेर नव शब्द जन्मय;
भाषा आ कल्पनाक एहि चक्रमे
मन अपनहि जग विस्तारय।

राजदण्ड, श्रम आ साझा घर

समाज केवल भीड़ नहि,
काजक अनेक धारा मिलय;
कियो अन्न उगाबय, कियो रक्षा,
कियो ज्ञानक दीप सँवारय।

विभाजन उपयोगी हो सकैत,
 मुदा जन्मक कैद किएक बनय?
 काजक लचीलापन जँ जीवन,
 वंशक कठोर दीवाल किएक रहय?
 श्रमक मोल भिन्न-भिन्न,
 कौशल, जोखिम, समयक भार;
 मुदा मोल जँ मनुष्यक दर्जा बने,
 न्याय टूटय बारम्बार।
 राजा केन्द्रमे ठाढ़ भए,
 मुदा राज्य ओकर निजी देह नहि;
 जनक सुरक्षा, अन्न, शान्ति
 बिनु राजदण्डक मोल नहि।
 मन्त्रीक बुद्धि, सैनिक बल,
 कोष, मित्र, दुर्ग, भूमि;
 सत्ता अनेक अवयवक मेल,
 एक हाथक केवल खेल नहि।
 पड़ोसी राज्य मित्रो हो,
 प्रतिद्वन्द्वी सेहो बनि सकय;
 सीमाक राजनीति आदर्श मात्रसँ
 नहि, परिस्थिति सँ दिशा लय।
 तैयो नीति केवल छल नहि,
 जनहित शक्ति पर माप लगाबय;
 शासनक बुद्धि तखन सफल
 जखन भय कम, जीवन बचाबय।
 घरक भीतर नियम आवश्यक,
 मुदा नियम प्रश्नसँ ऊपर नहि;
 परम्पराक नाम पर अन्याय
 साझा घरक आधार नहि।
 श्रम, ज्ञान, शक्ति, सम्पत्ति
 एक-दोसरा पर निर्भर रहय;
 जे अपन हाथ केँ सर्वोच्च कहय,
 ओ समग्र देहक सत्य नहि कहय।
 राजदण्ड तखन न्यायपूर्ण
 जखन सेवा तकर मूल स्वर;
 साझा घरक दीवाल मजबूत,
 मुदा दुआर खुलल सभ लेल रहय।

क्षणक धार आ अनेक दृष्टिक किनार

एक स्वर कहय—किछु स्थिर नहि,
क्षण-क्षण जग नूतन होय;
जे 'वस्तु' हम एक कहैत छी,
धाराक क्रमसँ रूप संजोय।
आत्मा खोजिते भेटय अनुभव,
स्मृति, वेदना, इच्छा, चाल;
स्थिर केन्द्र कतेक प्रमाणित,
जखन सभ भीतर बदलैत जाल?
कारणो वस्तुक गुप्त शक्ति नहि,
घटना एक-दोसरा सँ बहय;
क्षणक श्रृंखला अपन नियममे
निरन्तर नव परिणाम कहय।
सामान्य रूप मनक निर्माण,
'गाछपन' अलग कतय ठाढ़?
अनेक गाछ देखिकऽ बुद्धि
एक नामक छतरी करय गाढ़।
दोसर स्वर कहय—एक दृष्टि
समूचा सत्य नहि समेटय;
वस्तु कतेक सम्बन्ध धरैत,
प्रसंग बदलिते रूप बदलय।
'अछि' कहबो शर्तसँ जुड़ल,
'नहि अछि' सेहो कखनो ठीक;
दिशा, काल, रूपक सीमा
कथनक मोल करय सटीक।
पहिल चुनौती स्थिरताकें,
दोसर चुनौती एकाधिकार;
दुनू मिलि बुद्धि केँ सिखबय
नम्रता आ विश्लेषणक व्यवहार।
शून्यता निरर्थक रिक्ति नहि,
ओ पकड़ि राखल सार पर प्रश्न;
अनेक दृष्टि अराजकता नहि,
ओ सीमा-बोधक अनुशासित स्पन्दन।
क्षणक धार बीच हम जीबैत,
किनार अनेक सँ जग देखू;
एके चित्रक दावा छोड़ि
सम्बन्धक सूक्ष्म रेखा लेखू।

सत्यक घर जँ विशाल हो,
 एक खिड़की पर्याप्त नहि;
 क्षण आ दृष्टिक संवाद बिनु
 ज्ञानक यात्रा समाप्त नहि।

मतक भीतर पारि प्रश्नक भूगोल

इतिहास लिखब आसान लगय—

मतक नाम, ग्रन्थक पाँति;

मुदा प्रश्न ककरा सँ लड़ल,

ककर उत्तर बनल अगिला भ्रान्ति?

एकहि विषय पर अनेक परम्परा

अपन भाषा अलग बनाबय;

शब्द भिन्न हो, समस्या एक,

ई सम्बन्ध कतेक बेर छूटि जाय।

जतय केवल मतक खाँचा,

ओतय संवाद अदृश्य होय;

ककर तर्क ककरा काटलक,

इतिहासक धड़कन हराय।

कला भीतर सौन्दर्यक प्रश्न,

नीति भीतर उचित-अनुचित;

भाषा भीतर अर्थक गाँठ,

समाज भीतर शक्ति सुनिश्चित।

ई सभ चिन्तनक बाहरी सीमा नहि,

जीवित प्रश्नक अपन प्रदेश;

दार्शनिकता केवल सूत्र नहि,

अनुभवो देत तर्कक प्रवेश।

एक लेखक एक स्कूल नहि,

ओ कतेको धारासँ जल पाबय;

विरोधी मतक एक विचार

कखनो अपन घरमे ठाउँ बनाय।

कालक्रम आवश्यक, मुदा पर्याप्त नहि,

प्रभावक डोरी सेहो खोजू;

कियो पहिले, कियो पछिला—

एतबे सँ अर्थ नहि बूझू।

मौन अन्तरालो ध्यान माँगय,

जे ग्रन्थ हरायल, तकर छाप;

बचल पाठक आधार पर

अतिशय निश्चितता स्वयं पाप।

मतक भीत पारि भूगोल बनू,
जतय प्रश्न नदी जकाँ बहय;
एक घाटक उत्तर दोसर ठाम
नव रूप धरिकऽ फेर उठय।
इतिहास तखन सचमुच जीवित
जखन समस्या केन्द्रमे रहय;
नामक सूची पाछाँ हटि
तर्कक आपसी यात्रा कहय।

शब्द, शून्य आ अभेदक पूर्वरंग

शब्दक भीतर अर्थक ध्वनि,
अर्थक भीतर जगक छाप;
जतय वाणी स्वयं केँ देखय,
ओतहि चेतनक खुलय प्रताप।
कियो कहय क्षण मात्र सत्य,
कियो शून्यक निर्भरता जानय;
कियो उपनिषदक मौन गहराइमे
अभेदक संकेत पहिचानय।
भिन्न धारासभ एक-दोसरा सँ
चुपचाप तत्व ग्रहण करय;
विरोधी कहितो कतेक विचार
पछिला मनमे घर करय।
जगत नाम-रूपक जाल कि
एक अव्यक्त आधारक खेल?
भाषा सत्य केँ ढाँपैत अछि
कि ओही सँ पाबैत छी मेल?
यदि शब्द टुकड़ा-टुकड़ा,
अर्थ समग्र कोना उठय?
यदि विचार पूर्ण निजी,
साझा वाणी कोना बनय?
चेतना देहक संग जुड़ल,
तैयो ओकर सीमा कतेक?
साक्षी, स्मृति, अनुभूति, भाषा
एकहि मनक रूप अनेक।
पुरान मतक छाया भीतर
नव संश्लेषक चाह जगैत;
भेदक तट पर ठाढ़ बुद्धि
अभेदक समुद्र निहारैत।

मुदा संश्लेष अर्थ मिश्रण नहि,
 प्रत्येक भेदक मोल बचाउ;
 जतय प्रश्न असंगत लगय,
 ओतहि नूतन संरचना बनाउ।
 शब्द, शून्य, आत्मबोध,
 तीन दिशा एक पूर्वाग;
 आगाँक महान बहसक पहिले
 एहि ठाम जमल स्वरक अनुराग।
 इतिहासक नव मोड़ एतय,
 जे पुरान सभक अंश सँ बनल;
 अभेदक गीत उठबाक पहिले
 बहु स्वर भीतर मौनमे चलल।

सम्बन्धक सूक्ष्म जालमे ज्ञानक दीप

गुलाब लाल अछि—सरल वाक्य,
 मुदा भीतर सम्बन्ध अनेक;
 गुलाब विषय, लालिमा गुण,
 दुनू कै जोड़य ककर टेक?
 जे जानैत अछि, जे जानल,
 ज्ञान स्वयं तेसर एक कड़ी;
 एक क्षणक बोधक भीतर
 कतेक सूक्ष्म संरचना पड़ी।
 वस्तु 'ई' अछि—'ई' ककरा?
 स्थान, समय, संकेतक आधार;
 पहिचान बिनु शब्द भटकय,
 सन्दर्भ देत ठोस किनार।
 सम्बन्धो वस्तु समान कि
 केवल बुद्धिक जोड़ल रेख?
 यदि सम्बन्ध नहि, गुण कतय,
 यदि वस्तु नहि, सम्बन्ध ककर?
 अभावक ज्ञानो ज्ञान अछि—
 घट नहि, तखनो किछु जानू;
 जे नहि अछि, ओकर निषेधक
 आधार कोना स्पष्ट मानू?
 अनुमानक हेतु सटीक चाही,
 व्याप्ति मात्र ढीली नहि;
 एक अपवादक छोट छिद्रसँ
 सम्पूर्ण निष्कर्ष सुरक्षित नहि।

भाषा अधिक सूक्ष्म बनैत,
शब्द नव औजार बनय;
विचारक महीन भेद पकड़बाक
नव व्याकरण धीरे जनमय।
ज्ञानक विषय केवल वस्तु नहि,
वस्तु-गुण-संबन्धक जाल;
ज्ञाताक प्रक्रिया सेहो भीतर,
तखन विश्लेषण होय विशाल।
सूक्ष्मता जँ जीवनसँ कटि जाए,
तकनीक बनि सूखि सकय;
मुदा स्पष्टता बिनु चिन्तन
अस्पष्ट विश्वासमे ढकि सकय।
सम्बन्धक जालमे दीप जरू,
प्रत्येक गाँठक नाम चिन्हू;
जतय भाषा सीमा पाबय,
ओतय नव औजारसँ अर्थ बिन्हू।

एक आ अनेकक अनन्त बहस

एक कहय—मूल एक मात्र,
भेद सभ उभरल रूप;
दोसर कहय—भेद सत्य अछि,
सम्बन्ध बनेत समग्र स्वरूप।
जगत यदि केवल आभास,
आभास देखय ककर नयन?
जँ मूल सर्वथा एकल अछि,
भ्रमक जन्मक ककर कारण?
माया कहि नाम देलासँ
प्रश्न स्वयं समाप्त नहि;
अज्ञान ककर, ककर ऊपर,
ई गाँठ छोट बात नहि।
यदि जीव परमसँ भिन्न,
दूरी कतेक, सम्बन्ध कतेक?
यदि अंश, तखन पूर्णक भीतर
भिन्नताक अधिकार कतेक?
जगत यदि सत्य, परम सेहो,
दुनू बीच निर्भरता की?
यदि एक बिनु दोसर अधूर,
तखन परमक पूर्णता की?

तर्कक मैदानमें एक-अनेक
 शताब्दी धरि भिड़ैत रहय;
 कखनो भाषा बदलि जाए,
 मूल प्रश्न फेरो उभरैत रहय।
 भक्ति प्रवेश करैत कहय—
 सम्बन्ध तर्कसँ अधिक जीवित;
 प्रेमी-प्रियक दूरी रहिते
 एकता पाबय भावक संगीत।
 मुदा भावो प्रश्नसँ मुक्त नहि,
 प्रेमक वस्तु वास्तविक की?
 जँ सभ एक, सम्बोधन ककर;
 जँ दू, तखन अन्तिम एकता की?
 बहसक मूल्य जीतमे नहि,
 सीमा स्पष्ट करबाक कला;
 एक मत दोसराक प्रश्न सँ
 अपन गुप्त कमजोरी देखला।
 एक आ अनेकक अनन्त बहस
 सत्यक साँस बनल रहय;
 जतय विरोध संवाद बनय,
 ओतहि चिन्तन जीवित रहय।

प्रेमक पाँचम दिशा

नीति, धन, चाह, मुक्ति—
 चारि दिशा पुरान बतायल;
 मुदा हृदय पूछलक धीरे—
 प्रेमक पथ कतय समायल?
 प्रेम केवल चाह नहि,
 नहि लाभक सौदा मात्र;
 ओ अपनाकेँ अर्पित करैत,
 दोसराकेँ देत हृदयक पात्र।
 सेवा भीतर आनन्द जागय,
 समर्पणमें स्वाधीनता;
 दूरी रहिते निकटता बनय,
 भेद भीतर आत्मीयता।
 ईश्वर दूरक निर्लेप सत्ता
 मात्र रहल तँ प्रेम कोना?
 प्रिय बनि यदि हृदयमें उतरल,
 तखन बदलय सम्बन्धक सोना।

कखनो मालिक-सेवक भाव,
कखनो मित्रक खुलल हँसी;
कखनो मातृस्नेह, कखनो प्रेमी,
सम्बन्धक भाषा अनेक बसी।
एकर संग भावना पाबय
चिन्तन भीतर उचित ठाम;
आँसू, गीत, नृत्य, स्मरण
बनय सत्य-अनुभवक नाम।
फेर देह केँ अपवित्र कहि
सदैव नकारब कठिन भेल;
स्पर्श, ध्वनि, मन्त्र, रूपक भीतर
पवित्रताक नव द्वार खुलल।
जीवनक सामान्य क्रियासभ
साधनाक रूप धरिकऽ उठय;
जे पहिले निषिद्ध कहायल,
कखनो अर्थ बदलि पुनः जुटय।
प्रेमक पाँचम दिशा कहय—
मुक्ति अकेलापन नहि होय;
सम्बन्धो चरम मूल्य बनि
अस्तित्वक गहिर अर्थ संजोय।
हृदय आ बुद्धि जखन भेटय,
भाव अन्हार नहि रहि जाय;
प्रेम स्वयं प्रश्नक एक भाषा,
जे जग केँ नव ढंगसँ पढ़ाय।

सूक्ष्म भेदक नोक पर अर्थ

ज्ञान केवल 'ज्ञानल' नहि,
ककरा कोना जानल गेल?
वस्तु, गुण, सम्बन्ध, ज्ञाता—
कतेक स्तर एक क्षणमे मेल।
लाल फूल देखिते मन
केवल रंग नहि पकड़य;
फूल-लालिमा केर सम्बन्धो
ज्ञानक भीतर संगहि चढ़य।
एक सम्बन्धक ऊपर फेर
दोसर सम्बन्ध जन्म लय;
गुणक गुण, ज्ञानक ज्ञान,
सूक्ष्म विश्लेषण आगाँ बढ़य।

भाषा एहि महीन पथ लेल
 नव शब्दक औजार गढ़य;
 जे भेद पहिने धुँधला छल,
 परिभाषाक धार सँ स्पष्ट पड़य।
 ‘ई’ कहिते संकेत ककर,
 ‘ओ’ कहिते दूरीक माप;
 स्थान, काल, योग्यताक सूत्र
 अर्थक देह पर देत छाप।
 अभावो केवल रिक्त नहि,
 विशिष्ट आधार पर निषेध;
 घट नहि अछि एहि धरती पर—
 धरती बनय ज्ञानक विशेष भेद।
 सम्बन्ध अनन्त हो सकैत,
 तँ थमबाक कसौटी चाही;
 नहि तँ विश्लेषणक सीढ़ी
 आकाश धरि चढ़ैत जाही।
 सूक्ष्मता तखन उपयोगी
 जखन भ्रमक गाँठि खोलय;
 शब्दक कौशल मात्र बनल तँ
 चिन्तन अपन लक्ष्य बिसरय।
 तर्कक नोक तीखर रहय,
 मुदा अनुभवक देह नहि काटू;
 अर्थक महीन रेखा देखू,
 जीवित प्रसंग सेहो संग राखू।
 सूक्ष्म भेदक नोक पर अर्थ
 काँचक बूँद जकाँ चमकय;
 सावधान बुद्धिक एक स्पर्श
 ज्ञानक सम्पूर्ण दृश्य बदलय।

पुरान श्रुति आ नव आगमक संगम

एक नदी कहय—हम प्राचीन,
 हमर स्रोतहि परम प्रमाण;
 दोसर कहय—जीवित अनुभव
 नव वचनमे पाबय विधान।
 मन्दिरक दीप, मन्त्रक स्वर,
 भक्तिक गीत, तन्त्रक राह;
 नव परम्परा अपन ग्रन्थमे
 खोजय पवित्रताक चाह।

प्रश्न उठय—अधिकार ककर?
पुरान वचन कि नूतन साक्ष्य?
जँ सत्य केवल बीतल कालक,
वर्तमानक अनुभूति की तुच्छ?
पुरान मूल स्वयं अनेक,
व्याख्या तकर भिन्न-भिन्न;
नव आगम सेहो एकरूप नहि,
दिशा-दिशामे ओकर चिन्ह।
कियो व्यक्तिगत ईश्वरक संग
प्रेमक सम्बन्ध प्रधान करय;
कियो शक्ति, चेतन, मन्त्र भीतर
सृष्टिक रहस्य निहारय।
कियो देह केँ साधन मानय,
कियो भोगक रूप बदलय;
कियो व्रत, पूजा, ध्यानक द्वारा
दैनिक जीवन पवित्र करय।
श्रुति यदि केवल निषेध करय,
नव अनुभव बाहिर चलि जाय;
आगम यदि मूल स्मृति भूलय,
अपन इतिहास स्वयं गमाय।
संघर्षक बीच सम्भव अछि
परम्पराक नूतन संवाद;
अधिकारक प्रश्न दबायल नहि,
तर्क बनय दुनूक आधार।
पवित्रता स्थिर मोहर नहि,
समुदाय ओकर अर्थ बदलय;
पुरान स्वर नव राग भेटिते
समयक संग फेर सँ फलय।
श्रुति आ आगमक संगम तखन
जखन एक-दोसरा केँ सुनय;
सत्यक स्रोत एक नहि मानि,
प्रमाणक कसौटी जागल रहय।

परम्पराक भीतमे विद्रोही खिड़की

पुरान घरक भीतर जन्मल
एक प्रश्न देवाल नापय;
जतय सभ कहय—एतबे सीमा,
ओ खिड़की काटि बाहर झाँकय।

स्वीकृत श्रेणी, सिद्ध सम्बन्ध,
 कतेको सूत्र ठोस बनल;
 मुदा अनुभवक एक उदाहरण
 सम्पूर्ण नक्शाकेँ चुनौती देल।
 नव भेद जोड़ब विद्रोह नहि
 जँ पुरान भेद अपूर्ण पड़य;
 परम्परा जीवित ओही ठाम
 जतय सुधारक साहस रहय।
 कारणक अर्थ फेर पूछल,
 अभावक दर्जा फेर तौलल;
 सामान्य, विशेष, सम्बन्धक सीमा
 नव दृष्टिसँ पुनः खोलल।
 'एहि सँ आगाँ नहि'—ई वचन
 बुद्धिक लेल अन्तिम नहि;
 प्रमाण जँ दोसर दिशा देखाबय,
 प्राचीनता स्वयं प्रमाण नहि।
 विद्रोही अपन घर छोड़ि
 सदैव बाहर नहि चलि जाय;
 कखनो घरहि भीतर रहिकऽ
 ओकर नींवक कमजोरी बताय।
 उत्तराधिकारी कखनो चुप,
 कखनो विचार दबि सकैत;
 इतिहास प्रसिद्ध मतक संग
 हरायल विकल्पो लुकबैत।
 नवता ककरो नामक जय नहि,
 ओ प्रश्नक स्वतन्त्र अधिकार;
 जे स्थापित केँ जाँचि सकय,
 तकरा भेटय बुद्धिक दुआर।
 परम्पराक भीतमे खिड़की
 हवा संग असुविधा आनय;
 मुदा बन्द घरक सुरक्षितता
 धीरे-धीरे श्वास गमाय।
 खोलू खिड़की, जाँचू नींव,
 जे टिकत से अधिक मजबूत;
 जे टूटत, तकर मलबासँ
 नव घर पाबत सत्यक रूप।

लोकक कण्ठमे उतरैत चिन्तन

महल, मठ, पाठशाला बाहर
ग्रामक बाटो प्रश्न उठय;
गीतक पाँति, कथा, कहावत
जीवनक अर्थ चुपचाप बुनय।
कवि जखन प्रेमक स्वर गाबय,
ओ केवल भाव नहि रहय;
देह, आत्मा, ईश्वर, समाजक
नव सम्बन्ध गीतमे बहय।
लोकभाषा कठिन विचारकें
दैनिक साँसमे उतरबय;
जे सूत्र पण्डितक कक्षमे बन्द,
ओ बाजारक कण्ठमे गूँजाय।
माताक गीत, साधुक पद,
कारीगरक रूपक, कृषकक बात;
अनुभवक मिट्टी पर चिन्तन
पाबय नव अर्थक सौगात।
कखनो जातिक कठोर दीवाल
गीतक भीतर प्रश्न बने;
कखनो निर्गुणक खुलल आकाश
रूपक अधिकारक सीमा तने।
कखनो प्रियतम परम बनैत,
कखनो परम मित्र समान;
दार्शनिक सम्बन्धक सूखा सूत्र
लोकमे पाबय भावक प्राण।
मुदा लोकप्रिय होएब मात्र
सत्यक अंतिम प्रमाण नहि;
लोकक स्वरमे पूर्वाग्रह सेहो,
तकरा जाँचब अनुचित नहि।
ऊपरक विद्या, नीचाँक लोक—
ई विभाजन स्वयं अधूर;
ज्ञान दुनू दिशि बहि सकैत,
ककरो स्रोत नहि पूर्ण दूर।
चिन्तन तखन व्यापक बनय
जखन भाषा बदलि जीवित रहय;
एके प्रश्न पद, कथा, तर्कमे
भिन्न रूप धरि फेर कहय।

लोकक कण्ठमे उतरैत विचार
शास्त्रक सीमा विस्तृत करय;
जीवन स्वयं पुस्तक बनि
अनुभवक अक्षर धीरे पढ़य।

दू भाषाक बीच टूटल सेतु

एक दिन विद्यालयक दुआर पर
नव भाषा अधिकार बनल;
पुरान पाठक जीवित नदी
अकस्मात् दोसर कात चलल।
एक वर्ग पश्चिमक ग्रन्थ पढ़य,
नव विज्ञानक भाषा सीखय;
दोसर पुरान सूत्र सम्हारय,
दुनू एक-दोसरा कम देखय।
ज्ञानक बीच 'महान विभाजन'—
केवल भाषाक अन्तर नहि;
प्रश्नक वंशावली टूटि गेल,
स्मृतिक सेतु रहल नहि सही।
नव विद्यार्थी अपन अतीत
अनुवादक आँखिसँ देखय;
पुरान विद्वान नव बहस सँ
बहुधा दूर किनार पर रहय।
मुद्रण, विश्वविद्यालय, पाठ्यक्रम
नव अवसर सेहो आनल;
मुदा चयनक सत्ता ककर हाथ,
ई प्रश्न चुपचाप ठाढ़ रहल।
जे परम्परा निरन्तर बहैत छल,
ओ 'पुरातन विषय' बनि गेल;
जे नव ज्ञान बाहिरसँ आयल,
वर्तमानक एकमात्र स्वर भेल।
दोष एक भाषा केर नहि,
समस्या सम्बन्ध टूटबमे;
नवक संग पुरानक संवाद
नहि रहल साझा कक्षमे।
अनुवाद तखन सेतु बनत
जखन दुनू किनार बराबर;
एकक शब्द केवल शासन नहि,
दोसरक अनुभव सेहो आदर।

टूटल सेतु फेर बनाओल जा सकैत,
मुदा नकलसँ काज नहि;
अपन प्रश्नक इतिहास बुझि
नव विश्वसँ संवाद चाही।
दू भाषाक बीच जे खाई,
ओ बुद्धिक नियति नहि;
स्मृति आ वर्तमान भेटलापर
नव चिन्तन असम्भव नहि।

टूटल परम्परासँ नव संश्लेषक पथ

विभाजनक पाछाँ सेहो पुरान धारा
पूर्णतः सूखल नहि;
किछु मन दुनू किनार देखलक,
एकक दास बनल नहि।
कियो चेतनाक आरोहण सोचय,
पदार्थसँ मन धरि यात्रा;
कियो आत्मा-वस्तुक सम्बन्धमे
खोजय नव विश्लेषणक मात्रा।
कियो अभेदक पुरान स्वर केँ
विकासक भाषा संग मिलाबय;
कियो अनुभूतिक सूक्ष्म स्तर
नव अवधारणासँ समझाबय।
नव विज्ञान चुनौती देत,
पुरान तत्त्व प्रश्न सँ घेरल;
कखनो साहसी संश्लेष जन्मल,
कखनो केवल शब्दक मेल।
परम्पराकेँ बचेनाइ अर्थ
तकर प्रत्येक वचन बचेनाइ नहि;
जीवित अर्थ पुनः रचब,
जतय प्रमाणक विरोध नहि।
आधुनिकता अपनहि सत्य नहि,
पुरातनता सेहो अंतिम नहि;
दुनू पर आलोचनाक समान दीप
नहि जरे तँ संवाद ठीक नहि।
व्यक्ति, जग, चेतना, कर्म,
समाज—सभ नव सन्दर्भ पाबय;
पुरान प्रश्न नव अनुभव भेटि
अपन रूप फेर सँ बनाबय।

कखनो बाहरी विचारक प्रभाव
 एतेक गहिर जे मूल दबि जाय;
 कखनो अस्मिताक अति आग्रह
 नव सत्य प्रवेश नहि पाय।
 बीचक पथ समझौता नहि,
 सृजनात्मक संघर्षक नाम;
 दुनू दिशाक श्रेष्ठ प्रश्नसँ
 बनय नव चिन्तनक धाम।
 टूटल परम्परासँ नव पथ
 स्मृति आ भविष्य जोड़य;
 जे अपन जड़ि पहचानि सकय,
 सेहे बाहरी पवनसँ नहि तोड़य।

अजन्म मौनसँ जगक आवागमन

पहिने की छल—मौन कि कम्पन,
 एक कि अनेकक बीज?
 अस्तित्व स्वयं सँ जग बनलक
 कि जग सदिखन ओकर नीज?
 कतहु इच्छा पहिल तरंग,
 कतहु प्रकृतिक गुणक खेल;
 कतहु चेतनक प्रतिबिम्बसँ
 नाम-रूपक विस्तृत मेल।
 सत्त्व उजास, रज गति,
 तम विश्रामक भारी छाप;
 तीनू अनुपात बदलिते
 जगत धारण करय नव आकार।
 सृष्टि एक बेरक घटना नहि,
 प्रकट-अप्रकट चक्र चलय;
 रचना, स्थिति, विलयक पाछाँ
 फेर सम्भावनाक बीज पलय।
 सूक्ष्म जग देहक भीतर,
 बाहरी ब्रह्माण्डक संग तान;
 'जे एतय, से ओतय' कहि
 मन खोजय समान विधान।
 माया कखनो आवरण बनय,
 कखनो सृजनक सक्रिय शक्ति;
 एक शब्द भीतर विरोधी अर्थ
 बनबय चिन्तनक जटिल युक्ति।

जन्म पुनः जन्मसँ जुड़ैत,
कर्मक धागा समय पार;
व्यक्ति जीवन छोट कड़ी,
चक्रक कल्पना बहुत विशाल।
मुदा पहिल गति किएक उठल,
सन्तुलन किएक टूटि गेल?
हरेक सृष्टि-कथा अन्तमे पाबय
एक अनुत्तरित मौनक खेल।
कविता एतय उत्तर नहि,
प्रश्नक ब्रह्माण्ड खोलैत;
अजन्म मौनक गर्भसँ कोना
अनन्त रूप बाहर आबैत?
आवागमनक चक्र देखिते
मन अपन क्षणभंगुरता जानय;
क्षण छोट हो, प्रश्न अनन्त,
एहि विस्मयमे चेतन गान गाबय।

दुःखक प्रश्न पर नैतिक आकाश

एक बालक दुःखमे जन्मय,
दोसर सुखक घरमे आँखि खोलय;
यदि जग नैतिक व्यवस्था,
एहि विषमताक अर्थ के बोलय?
कर्मक सिद्धान्त कहय—बीतेल
काजक फल फेर लौटि आय;
न्याय समयक सीमा पारि
जन्म-जन्मक लेखा बनाय।
मुदा स्मृति बिनु उत्तरदायित्व
कतेक न्यायपूर्ण रहि सकय?
जे अपराध हम यादो नहि करी,
तकर दण्ड कोना अर्थ पबय?
पुनर्जन्म continuity देत,
मुदा 'हम' ककरा कहब तखन?
देह बदलल, स्मृति हरायल,
नैतिक व्यक्ति बचल कतेक क्षण?
यदि दुखक हरेक कारण पुरान कर्म,
वर्तमान अन्याय कतय गेल?
दोसरा प्रति सहायता तखन
कर्मक लेखामे हस्तक्षेप भेल?

करुणा कहय—दुःख समक्ष अछि,
 पहिने हाथ बढ़ाउ, फेर तर्क;
 न्याय जँ पीड़ित केँ दोषी करय,
 ओ नैतिकता होइत कठोर अन्हार।
 संयोग, प्रकृति, समाजक ढाँचा,
 दोसरा कर्मक प्रभाव अनेक;
 मानव दुःख बहु कारणक जाल,
 एक सूत्र पर्याप्त नहि टेक।
 तैयो नैतिक बुद्धि चाहैत
 कर्म आ फलमे किछु सम्बन्ध;
 उत्तरदायित्व बिनु स्वतन्त्रता
 भऽ सकैत मनमानीक छन्द।
 दुःखक प्रश्न पर आकाश खुलल,
 न्याय, दया, कारणक तान;
 कर्मक लेखा उपयोगी हो,
 मुदा करुणा रहय ओकर प्राण।
 नैतिक जग बनैत अछि
 केवल ब्रह्माण्डक नियमसँ नहि;
 हमर वर्तमान उत्तरदायित्वसँ सेहो,
 जे पीड़ा देखिकऽ चुप रहैत नहि।

श्रम, शक्ति आ सीमाक नगर

नगर बनय अनेक हाथसँ,
 ज्ञान, श्रम, धन, शासनक मेल;
 कियो खेत, कियो शिल्प, कियो रक्षा,
 कियो नियमक राखय खेल।
 कार्य-विभाजन उपयोगी,
 मुदा मोल समान नहि बनल;
 काजक भिन्नता धीरे-धीरे
 मानव दर्जाक सीढ़ी बनल।
 जन्म जँ कार्य निश्चित करय,
 प्रतिभा कतय अपन दिशा पाय?
 चलायमान जीवन केँ स्थिर खाँचामे
 कतेक दिन धरि बाँधल जाय?
 ज्ञान एक शक्ति, धन दोसर,
 श्रम तेसर, शासन चौठ;
 एक-दोसरा बिनु अधूर,
 तैयो अधिकारक बँटवारा कठोर।

राज्य भीतर राजा अकेल नहि,
मन्त्री, कोष, सेना, भूमि;
जन, मित्र, दुर्ग, उत्पादन
मिलि बनबय सत्ताक भूमी।
बाहर पड़ोसी वृत्त बनाबय,
मित्रक पाछाँ मित्र-दुश्मन;
भूगोल शक्ति केर चाल बदलय,
नीति पाबय गतिशील स्पन्दन।
मुदा विजय परम लक्ष्य नहि,
जनकल्याण बिनु राज्य रिक्त;
दण्ड न्यायसँ कटि गेल तँ
शक्ति बनय भयक मात्र युक्ति।
समाजक सिद्धान्त तखन पूर्ण
जखन व्यक्ति सेहो दृश्य रहय;
समग्रता नाम पर मनुष्य
केवल कार्यक पुर्जा नहि बनय।
श्रमक सम्मान, अवसरक खुलापन,
शक्तिपर उत्तरदायित्वक बाँध;
एहि बिनु प्राचीन व्यवस्था
नव समयमे बनि सकय बाध।
सीमाक नगरक ठीक सुरक्षा
दीवाल मात्रसँ नहि होय;
न्याय जँ भीतर साँस लय,
तखन बाहरी संकटो कम भय होय।

रसक क्षणमे जगत आनन्द बनल

मंच पर शोकक दृश्य,
दर्शक हृदयमे आनन्द किएक?
नोर सत्य, दुःख कल्पित,
एहि विरोधक रहस्य कतेक?
व्यक्तिगत पीड़ा जखन कला,
ओ 'हमर' सीमा पारि जाय;
भाव अपन निजी काँटा छोड़ि
साझा अनुभूति रूप पबाय।
स्थायी भाव भीतर सुप्त,
दृश्य, शब्द, अभिनयक स्पर्श;
स्मृति आ कल्पना संग मिलि
जगबय रसक अद्भुत हर्ष।

दर्शक जानय मंच यथार्थ नहि,
 तैयो अनुभव झूठ नहि;
 कला बीचक एहन प्रदेश
 जतय दूरी आ निकटता दून्हे सही।
 संगीत शब्द बिनु कहैत,
 नृत्य देहसँ अर्थ बनाबय;
 लयक क्रममे चेतना अपन
 सामान्य समय सँ बाहर जाय।
 रस केवल मनोरंजन नहि,
 चेतनक रूपान्तरणक क्षण;
 व्यक्ति अपन संकुचित 'हम' छोड़ि
 व्यापक भावक संग करय मिलन।
 कखनो प्रेमक मधुर धारा,
 कखनो वीर, करुण, अद्भुत रंग;
 भाव अलग, मुदा रसक क्षणमे
 सबहक भीतर विशेष उमंग।
 भक्ति एहि सौन्दर्यक बाट
 जीवनक सम्बन्धमे आनय;
 प्रियक गीत, रूप, स्मरणसँ
 दैनिक जगो उत्सव बनाय।
 तन्त्र देह आ ध्वनिमे खोजय
 पवित्र ऊर्जाक गुप्त प्रकाश;
 कला, साधना, प्रेमक सीमासभ
 कखनो भेटय एक आकाश।
 रसक क्षणमे जगत आनन्द,
 नहि पलायन, नहि सामान्य सुख;
 ओ अनुभूतिक एहन विस्तार
 जतय 'हम' पिघलय, जग होय मुखर।

समयक धूलिमे पदचिह्न खोजैत मन

इतिहासक बाट पर धूलि बहुत,
 पदचिह्न आधा मेटल रहय;
 एक ग्रन्थ बचल, दस हरायल,
 तैयो हम क्रम बनाबय चाहय।
 ककर जन्म कखन, ककर पाठ पहिल,
 तिथि सभ सदिखन स्पष्ट नहि;
 पछिला उद्धरणक सहारे बनल
 नक्शा स्वयं अचूक नहि।

एक नाम दू व्यक्ति हो सकैत,
एक व्यक्ति अनेक नाम;
भाष्य, वार्तिक, सूत्रक लेखक
इतिहासमे कतेक अनाम।
पाण्डुलिपिक तारीख पछिला,
विचारक मूल बहुत पुरान;
लिखल प्रति आ रचनाक क्षण
दुनू नहि एके प्रमाण।
परम्पराक अपन वंशावली
कखनो गौरव लेल बढ़ाय;
विरोधी मतक लेखक केँ
कखनो स्मृतिसँ दूर हटाय।
गणना करिते आश्चर्य जागय—
किछु शताब्दी लेखनक बाढ़,
किछु काल प्रायः मौन,
की सचमुच विचार रहल ठाढ़?
बचल सामग्री असमान,
तेँ निष्कर्षमे नम्रता चाही;
जतय प्रमाण केवल अनुमान,
ओतय 'कदाचित्' कहब कमजोरी नहि आही।
इतिहास केवल तिथि नहि,
विचारक गति सेहो देखू;
कुन प्रश्न ककरा उत्तर देलक,
कुन धारा कखन मोड़ लेलक—लेखू।
जतय अभाव, ओतय कल्पना
प्रमाणक सीमा पारि नहि जाय;
रिक्त स्थानक ईमानदार स्वीकार
झूठा निश्चिततासँ नीक कहलाय।
समयक धूलिमे पदचिह्न खोजैत
मन अन्तमे एतबे जानय—
इतिहास सम्पूर्ण चित्र नहि,
बचल रेखासँ सावधान अर्थ बनाय।

खण्ड ७

अनेक दिशाक दार्शनिक आकाश

अनेक दिशाक एक सत्य

एकटा दीप जँ एक दिससँ देखब,
ओ केवल उजासक गोलाइ लगत;
दोसरा कोनसँ देखू तँ ओकर पाछाँ
छाहरिक मौन कथा सेहो जगत।
सत्यो तहिना एकरेखिया नहि—
दिशा-दिशामे ओकर रूप बदलैत,
बहुदृष्टिक चिन्तन कहैत अछि,
देखनिहारक आँखिसँ अर्थ उघड़ैत।
जगत केँ पकड़बाक अधीर हथेली
जखन कहैत—“एहि मात्रे सत्य”,
तखन प्रश्न उठैत अछि धीरे—
“बाकी दिशासभ की सर्वथा व्यर्थ?”
वस्तु अपन देहमे अनेक संबंध,
अनेक गुण, अनेक काल समेटने;
एकहि वचनमे सभटा बाँधब
मानो आकाश केँ मुट्ठीमे भेटने।
ज्ञानक बाट पर पहिल पहर
मन समक्ष ठाढ़ वस्तु केँ चिन्हैत;
रूप, ध्वनि, स्पर्शक ओहि क्षणमे
चेतना अपन दुआर स्वयं खोलैत।
मुदा जे सभ आँखिक आगाँ नहि,
सेहो अन्हारमे हरायल नहि अछि;
स्मृति, पहचान, विचारक सेतु
दूरक अर्थ धरि पहुँचबैत अछि।
काल्हिक देखल मुख फेर भेटल—
मन कहलक, “ई त’ ओहि छथि”;
बीतेल अनुभव वर्तमानसँ
सूक्ष्म सूत्रमे आबि जुड़ि गेल अछि।
जे नहि देखल, ओकरो चिन्ह
कारण-परिणामक पगडंडी देत;
धुँआ जँ नभमे उठैत देखाय,
अग्निक संभावना मनमे चेत।
तर्क नहि केवल विवादक शस्त्र,
से संशयक धुन्ध हटेबाक दीप;
प्रश्नक भीतरे प्रश्न जगबैत,
सत्यक कात करैत अछि समीप।

अनुमान ओहि पुलक नाम,
 जकर एक छोर चिह्न, दोसर अर्थ;
 जँ संबंधक माटि दृढ़ नहि हो,
 तँ निष्कर्षक भवन भ' जाए व्यर्थ।
 कहल गेल वचन सेहो ज्ञान बनत
 जखन विश्वासक आधार स्वच्छ;
 मात्र शब्दक भार नहि, भीतर
 अर्थक जिम्मेदारी रहय स्पष्ट।
 ज्ञानक मूल्य ओतहि जागत
 जतय भ्रमक जाल नहि पसारल;
 स्व आ परक भेद बुझैत बुद्धि
 अर्थ केँ सावधानीसँ स्वीकारल।
 मनक तरंग, इन्द्रियक सीमा,
 आत्माक गहिराई—सभक अपन ठाम;
 कोनो एकटा खिड़की सँ नहि
 देखल जा सकैत समूचा धाम।
 जे ज्ञाता अपन आवरण खोइत,
 ओकर दृष्टि सीमासँ पार निकलैत;
 केवलज्ञानक निर्मल आकाशमे
 भेदक बादल धीरे-धीरे गलैत।
 मिथ्या उत्तर अनन्त हो सकैत,
 कारण भूलक राहि हजार;
 मुदा सत्यक खोज एकाग्र होइत
 जेना नदीक अंतिम समुद्र-द्वार।
 एक ठीक संबंध पकड़ि लेलापर
 अर्थक दिशा स्थिर भ' जाइत;
 अनेक सम्भावनाक कोलाहलमे
 युक्ति अपन स्वर स्पष्ट सुनबैत।
 एहि दृष्टिक शिक्षा एतेक नहि
 जे ग्रन्थमे सूत्र गिनि लिअ;
 ओ कहैत—दृष्टि केँ नम्र बनाउ,
 दोसरो कोणक अधिकार चिन्ह लिअ।
 सत्य पर अधिकार नहि, संवाद,
 ज्ञान पर अभिमान नहि, अनुशासन;
 अनेकान्तक एहि विशाल आँगनमे
 विचार बनय सहअस्तित्वक स्पंदन।

तँ जखन फेर कोनो प्रश्न उठत,
तुरन्त निर्णयक द्वार नहि बन्द करू;
एक बेर अपन आँखि सँ देखू,
एक बेर दोसर दृष्टि केँ संग धरू।
जे ज्ञान स्वयं केँ जाँचि सकैत,
ओकर उजास दीर्घजीवी होइत;
एहि दृष्टिक उजास ओहि क्षण जीबैत,
जखन मतभेदो सत्यक बाट खोलैत।

कारणक सीढ़ी, सत्ताक ज्योति

प्रश्नक घंटी बजैत रहल,
मठक निस्तब्ध देवालक भीतर;
विश्वास एक दिस दीप जरे,
बुद्धि दोसर दिस खोजय उत्तर।
एक स्वर कहय—दुनू शत्रु नहि,
सत्यक बाटक दू सहयात्री;
एक हृदयमे श्रद्धा जागय,
एक विवेक बनय सजग प्रहरी।
पुरान विचारक विशाल नदी
नव युगक कात फेर बहि आयल;
तर्कक दृढ़ धारासँ
धर्मक प्रश्न नव रूपमे छायल।
जे बुद्धिसँ बूझल जा सकय,
तकरा बुद्धिक मान देबाक चाही;
जे रहस्य बुद्धिसँ पार उतरय,
ओतय श्रद्धा अपन ज्योति जगाबी।
‘अछि’ कहब सरल शब्द बुझाईत,
मुदा सत्ताक गर्भ बहुत गहीर;
वस्तु की अछि—एकटा प्रश्न,
ओ वास्तवमे अछि—दोसर लकीर।
सीमित वस्तुक स्वरूप अलग,
अस्तित्व ओकर भेटल उपहार;
परम सत्तामे भेद नहि रहय,
स्वरूप-अस्तित्व एकहि आधार।
परिवर्तन देखू—किछु बदलैत,
सम्भावना सँ रूपमे आबैत;
जे चलल, ओकरा किछु चलबैत,
कारणक सूत्र पाछाँ जाएत।

कारणक अनन्त अन्हार छोड़ि
 मन खोजय पहिल आधारक ठाम;
 क्षणभंगुर वस्तुक भीड़ कहैत—
 कतहु अनिवार्य सत्ताक अछि धाम।
 गुणक अनेक सीढ़ी देखैत
 बुद्धि मापय कम आ बेसी;
 व्यवस्थाक सूक्ष्म अनुशासनमे
 काजक दिशा लगय उद्देश्येसी।
 एहि सभ बाटक अन्तिम प्रश्न—
 'किएक' केर पाछाँ 'कुन' ठाढ़?
 तर्क उत्तरक सम्पूर्ण स्वर्ग नहि,
 मुदा खोजक लेल बनबैत बाढ़।
 शक्ति जे मात्र सम्भावना अछि,
 क्रियामे आबि पूर्णता पाबय;
 बीजक मौन सम्भावित वन
 ऋतु भेटिते हरियर भ' जाबय।
 जगत मिश्रित सम्भावना-क्रिया,
 परम सिद्धि शुद्ध क्रियारूप;
 एहि विचारमे परिवर्तन पाबय
 एक दार्शनिक गहिरा स्वरूप।
 देह आ आत्मा दू पराया
 कैदखाना आ कैदी नहि;
 जीवित देहक रूप बनि आत्मा
 मानव-अस्तित्वसँ अलग नहि।
 इन्द्रिय बाहिर संसार छुबय,
 बुद्धि ओकर अर्थ निकालय;
 विशिष्ट रूपक भीतर सँ मन
 सामान्य सत्यक आकार बनाबय।
 मनुष्यक चाहत केवल क्षणक
 सुखक छोट चमक नहि मानय;
 श्रेष्ठ कल्याणक खोज भीतर
 जीवनक दिशा निरन्तर जानय।
 विवेक सद्गुणक बाट देखाबय,
 इच्छा चुनय कर्मक स्वर;
 मुदा पूर्ण आनन्दक क्षितिज
 परम सत्य दिस उठबैत नजर।

नियम जँ केवल दण्डक डंडा,
तँ न्याय ओकर भीतर मरि जाए;
विधि तखन सार्थक होइत अछि
जखन सामान्य हितक राहि बनाए।
मानव-बुद्धि प्रकृतिक क्रममे
नीतिक संकेत पढ़ि सकैत;
शासनक मान ओतहि टिकत
जतय जनकल्याणक भार उठैत।
राज्यक काज धरतीक व्यवस्था,
समाजक शान्ति, हितक संरक्षण;
आत्मिक जीवनक अपन दिशा,
धर्मक क्षेत्रमे अन्तःशोधन।
दुनू क्षेत्रक भेद बुझब आवश्यक,
मुदा मनुष्य एके जीवन जीबय;
देहक नगर आ आत्माक पथ
एक-दोसरासँ संवाद करय।
एहि चिन्तनक स्वर एहि ठाम
नहि कहैत प्रश्न केँ चुप कराउ;
अपितु प्रश्नक अनुशासन सीखू,
कारणक पाछाँ कारण तकाउ।
विश्वास जँ सत्यसँ जन्मल अछि,
तँ तर्कसँ ओकर भय किएक?
तर्क जँ सत्यक सेवक बनल,
तँ अहंकारक जय किएक?
एहि कारणक सीढ़ी चढ़ैत
मन अन्तमे नम्रता सीखय;
जतेक बूझय, ततेक बुझय जे
असीमक आगाँ सीमा दीखय।
बुद्धि अपन दीप लऽ चलैत,
श्रद्धा क्षितिजक तारा हो;
दुनू मिलि मानव-चेतनामे
सत्यक दीर्घ उजियारा हो।

अपनहि उजासक प्रत्यभिज्ञा

चेतनाक शान्त उपत्यकामे
प्रश्नक अग्नि भीतर जरैत;
तर्क, व्याकरण, काव्य, तन्त्र
अनेक धारमे संगहि बहैत।

अनुभव, साधना, रस आ भाषा
 एकहि आकाशक भिन्न वितान;
 भिन्न मार्ग जखन संग मिलैत,
 खुल्य संवादक गहिर स्थान।
 एकहि घाट पर ठाढ़ नहि रहल
 हुनकर जिज्ञासाक दीर्घ यात्रा;
 जेठ-छोट मत, शास्त्र, साधना—
 सभसँ चुनल जीवित मात्रा।
 विरोधक भीत नहि उँच कएल,
 संबंधक सेतु बनौलनि ठाम;
 अलग-अलग दीपक उजियारा
 एक आकाशमे पाबय नाम।
 ज्ञान हुनका लेल पुस्तक मात्र
 नहि छल शब्दक भार उठेनाइ;
 मनक भीतर अनुभव जागल,
 तखन विचारक अर्थ भेटेनाइ।
 साधना आ चिन्तन संग चलय,
 लेखन होअय भीतरक प्रमाण;
 जे सत्य केवल कहल नहि जाए,
 से जीबि उठय चेतन जान।
 जगत केँ मिथ्या कहि टारब
 हुनकर बाटक लक्ष्य नहि;
 जे किछु प्रकट, से कोनो शून्यक
 अकारण छाया-मात्र नहि।
 परम चेतना अपनहि स्वेच्छासँ
 रूप-अरूपक खेल रचाबय;
 एकहि मूलक अनेक तरंग
 विश्वक विस्तृत देह बनाबय।
 उजास यदि केवल उजासे रहय,
 अपनहि बोध कतय सँ जागय?
 प्रकाशक संग विमर्श जुड़िते
 चेतन सत्ता स्वयं केँ पाबय।
 सृष्टि, स्थिति, संहारक क्रम,
 आवरण, अनुग्रहक गहिर चाल;
 एकहि चेतन शक्तिक भीतर
 घूमि रहल विश्वक अनन्त काल।

वस्तु जे अछि, ओकर अस्तित्व
 अलग ठामसँ नहि भेटि आयल;
 परम आधारक भीतर ओकर
 होयबाक स्वर मौन समायल।
 बाहर-भीतरक कठोर विभाजन
 ओहि दृष्टिमे धीरे गलैत;
 कर्ता, कृति आ काजक दूरी
 एकहि चेतन धरातल पलैत।
 मुक्ति कोनो नव वस्तु नहि,
 नहि दूर देशक अनजान द्वार;
 भुलायल चिन्ह पुनः भेटब—
 एहि पहिचानक मूल विचार।
 जेनाँ परिचित मुख अकस्मात्
 स्मृतिक दीपसँ फेर चिन्हाय,
 तहिना आत्मा अपनहि गहिराइमे
 शिवस्वरूपक बोध जगाय।
 प्रत्यभिज्ञा कहय—‘खोज बाहर
 करैत-करैत स्वयं नहि बिसरू’;
 जे चेतना सँ प्रश्न उठैत अछि,
 ओहि स्रोत दिस एक बेर फिरू।
 बंधन अज्ञानक धुन्ध बनल तँ
 बोधक पवन ओकरा हटाबय;
 स्वरूपक उजास खुलिते भीतर
 सीमित ‘हम’ विशाल भ’ जाबय।
 कविता हुनका लेल अलंकारक
 केवल चमक, कौशलक खेल नहि;
 शब्दक पाछाँ भावक गहिराइ,
 अर्थक यात्रा एकरेख नहि।
 पूर्वाचार्यक सूत्र समादरि
 व्याख्याक नव दुआर खोलल;
 सौन्दर्य, चिन्तन, लोक-अनुभव
 एकहि रसपूर्ण धरती तोलल।
 एहि मिलनक दीर्घ विरासत
 एहि मिलनक अनुशासन अछि—
 तन्त्र आ तर्क, काव्य आ दर्शन,
 अनुभव-संग बुद्धिक स्पन्दन अछि।
 अपनहि उजास जखन पहचानब,

जगत पराया कोना रहत?
 एक चेतनाक अनेक अभिव्यक्ति
 हरेक रूपमें अपन स्वर कहत।

माटिसँ अतिमानस धरि

धरतीक धूरि सँ उठैत प्रश्न—
 मनुष्य एतबे धरि सीमित की?
 देहक भीतर जागल चेतना
 अपन अगिला प्रभातक निमित्त की?
 जड़ पदार्थक मौन अँधेरामे
 जीवनक हरियर साँस उगैत;
 जीवनक बेचैन लहरिसँ फेर
 मनक दीप धीरे-धीरे जगैत।
 विकास केवल आकार बदलनाइ
 नहि, भीतरक शक्ति उद्घाटन;
 जे सुप्त छल माटिक कण-कणमे
 से चेतन होइत करय आरोहण।
 प्रकृति अपन गूढ़ गर्भमे
 अगिला रूपक बीज सहेजने;
 मानव कोनो अन्तिम पड़ाव नहि—
 ओ बाटक मध्य-दुआर खुलेने।
 ऊपर दिस चढ़नाइ मात्र नहि,
 ऊर्ध्व उजासो नीचाँ उतरय;
 जतय साधक अपन पात्र बनाबय,
 ततय चेतन शक्ति रूप सँ भरय।
 आरोहण आ अवतरणक बीच
 एकटा दीर्घ मिलनक विधान;
 धरती केँ छोड़ि मुक्ति नहि,
 धरतीमे दिव्यता केर सम्मान।
 सत् केवल दूरक निर्लेप शून्य नहि,
 चित् केवल मौन निराकार नहि;
 आनन्द जगतसँ विमुख उदासी
 नहि, जीवन-विरोधी विचार नहि।
 अस्तित्व, चेतना, आनन्दक धारा
 एकहि मूलसँ बहैत अनेक;
 रूप बदलय, स्तर बदलय, मुदा
 अन्तरतम स्रोत रहय अभेद।

मन देखैत खण्ड-खण्ड जगत केँ,
 रेखा खींचि नाम अलग करैत;
 तर्कक दीप बहुमूल्य अवश्य,
 मुदा सीमा पर आबि ठहरैत।
 मनसँ ऊपर व्यापक बोधक
 एक उज्ज्वल प्रदेशक संकेत;
 जतय ज्ञान अलग सँ खोजल नहि—
 सत्य स्वयं खोलय अपन निकेत।
 अतिमानस कोनो चमत्कारक
 आकाशी कथा, पलायन नहि;
 विभक्त चेतनाक गाँठ खोलि
 एकत्वक सजीव अनुभव सही।
 जे जानय, जे होय, जे करय—
 तीनू धारा संगहि बहैत;
 ज्ञान कर्मसँ अलग नहि रहय,
 प्रेमो सत्यक देह पहिरैत।
 योग तखन गुफाक निस्तब्धतामे
 संसार बिसरबाक उपाय नहि;
 शरीर, प्राण, मन सभक रूपान्तरण—
 कोनो एक पक्षक विजय नहि।
 भीतरक मौन, बाहरक कर्म,
 दुनू एकहि साधनाक पाँति;
 जीवन स्वयं प्रयोगशाला बनय,
 दैनिक क्षणमे तपक ज्योति।
 व्यक्ति अकेला पूर्ण नहि होइत,
 समाजो भीड़िक नाम नहि मात्र;
 स्वतन्त्र आत्माक विकास बिनु
 समूहक एकता होय अपात्र।
 एकरूपता थोपल अनुशासन
 जीवित समरसताक रूप नहि;
 भिन्न स्वर जखन संगति पाबय,
 तखन सामूहिक चेतना रूख नहि।
 राष्ट्र मनुष्यक यात्रा-मध्यक
 एक आवश्यक, मुदा अन्त नहि;
 सीमा यदि अहंकार बनि उठय,
 मानव-एकता केर पंथ नहि।
 विश्वक अर्थ भिन्नता मेटनाइ

नहि, ओकर सम्मानक संघटन;
 स्वाधीन इकाइ सभ संग मिलि
 रचय व्यापक मानवीय जीवन।
 अन्तिम प्रश्न एतबे उठैत—
 “मनुष्य अपन आगाँ की बनत?”
 बीतेल उपलब्धि पर विश्राम कि
 नव चेतनाक दुआर फेर खनत?
 माटि कैँ तजि नभ पाबब नहि,
 नभ कैँ धरतीमे उतारब अछि;
 मानवक अपूर्ण दीपक भीतर
 अतिमानसक प्रभात जगारब अछि।

रूप, कारण आ मध्यम मार्ग

प्रश्न-भरे आकाशक नीचाँ
 दृष्टि धरतीक रूप निहारय;
 पात, प्राणी, नगर, विचार
 सभ अपन संकेत उधारय।
 ऊँच अवधारणा संग-संग
 ठोस वस्तुक रहय अपन बात;
 पहिने देखू, फेर प्रश्न करू—
 कोना बनल ई रूपक पात?
 नाम मात्र सँ ज्ञान नहि होइत,
 वस्तुक भीतर की बनावट अछि?
 ककरा सँ बनल, कोना बनल,
 किएक बदलैत, की चाहत अछि?
 कारणक धागा पकड़ि-पकड़ि
 मन घटना केर गाँठ खोलय;
 रूप आ पदार्थक संगम भीतर
 वस्तु अपन परिचय स्वयं बोलय।
 बीजमे वृक्षक नीरव संभावना,
 वृक्षमे बीजक सपना पूर्ण;
 जे आबि रहल, जे भ’ रहल अछि,
 दुनू बीच चलैत जगक मूल धून।
 शक्ति जँ सुप्त, काजमे जागय,
 संभावना रूप धारण करय;
 परिवर्तन अराजक छलाँग नहि,
 क्रमसँ सत्ता अपन पथ धरय।

ज्ञानक आरम्भ इन्द्रिय-दुआर,
 मुदा ओतहि यात्रा थमैत नहि;
 देखल तथ्य सँ बुद्धि उठैत,
 सामान्य अर्थ बिनु समझ पूर्ण नहि।
 अलग-अलग भीतर जे मेल,
 तर्क ओकर अनुक्रम चिन्हैत;
 वाक्यसँ निष्कर्ष धरि विचार
 अनुशासनक सीढ़ी चढ़ैत।
 तर्क यदि केवल जीतक हथियार,
 तँ सत्य दूरहि रहि जाए;
 ठीक संबंध, ठीक परिभाषा,
 भ्रमक धुन्ध कैं धीरे हटाए।
 सोचब सेहो एकटा साधना,
 जतय निष्कर्ष कारण माँगय;
 बिनु आधारक तेज वचनसँ
 बुद्धि अपन प्रतिष्ठा नहि पाबय।
 जीवनक प्रश्न—केवल जानब नहि,
 केहन बनब, कोना जीब?
 सद्गुण भाषणक शोभा नहि,
 दैनिक कर्मक भीतर सीब।
 अति आ न्यूनक दुनू किनार,
 मध्यक संतुलन माँगय ध्यान;
 ठीक समय, ठीक मात्रा, ठीक हेतु—
 एहि अभ्याससँ बनय चरित्र महान।
 सुख क्षणिक हँसीक नाम नहि,
 नहि केवल इच्छा-पूरणक रंग;
 सार्थक कर्म, विकसित क्षमता,
 विवेकपूर्ण जीवनक संग।
 मनुष्य जे अछि, से पूर्ण करय,
 अपन योग्यताक उत्तम प्रयोग;
 नैतिकता तखन नियम नहि मात्र,
 जीवन-रूपक सजग संयोग।
 मनुष्य अकेला टापू नहि,
 समुदायमे ओकर स्वर खुलैत;
 घर सँ नगर, संबंध सँ शासन,
 सामूहिक जीवन आकार लैत।
 राज्य जँ केवल बलक डंडा,

तँ नागरिकता सूखल नाम;
व्यवस्था केर मोल तखन,
जखन लोकहित बनय ओकर काम।
कला दर्पण मात्र नहि होइत,
जीवन केँ नव रूप देत;
घटना, चरित्र, भावक क्रमसँ
मनुष्य अपनहि मन पढ़ि लेत।
भय, करुणा, हर्ष, संघर्ष
रचना भीतर लय पाबय;
अनुभवक उलझल आवेग
कलात्मक अनुशासनसँ साफ होय।
एहि बाटक स्वर कहैत अछि—
आकाश देखू, धरती नहि छोड़ू;
विचारक ऊँच उड़ान करैतहुँ
तथ्यक माटिसँ नाता जोड़ू।
रूप, कारण, कर्म, सद्गुण,
समाज, कला—सभ एकहि प्रश्न:
“जे अछि, ओकर अर्थ की अछि,
आ मनुष्य कोना करय जीवन श्रेष्ठ?”

सन्देहक रातिसँ विश्वासक भोर

ज्ञानक नगरमे प्रश्नक दीप
दुआर-दुआर उजास करैत;
ग्रन्थ, तर्क, अनुभूतिक राहि
उत्तरक सीमा स्वयं परखैत।
जे सुनल, से मानि लेब पर्याप्त नहि—
मन भीतर सत्यक प्यास प्रखर;
जतय जिज्ञासा स्वयं पथ बनय,
ओतहि आरम्भ होय अन्तर-सफर।
इन्द्रिय कहलक—“हम देखलहुँ”,
बुद्धि पुछलक—“की ई अन्तिम बात?”
जे आँखि सत्य मानैत अछि,
स्वप्न ओकरा देत उलट प्रमाण राति।
जँ अनुभवो प्रश्नक घेरामे,
तर्को माँगय अपन आधार;
निश्चयक भूमि कतय भेटत,
एहि खोजमे काँपल विचार।

सन्देह ओकर शत्रु नहि छल,
 ओ छल भीतरक सफाईक धार;
 झूठ विश्वासक धूल हटबैत
 खोजैत रहल भरोसाक सार।
 परम्पराक ओढ़निमे जे सत्य,
 ओकरो परख बिनु नहि मानल;
 मुदा केवल नकारक निर्जनमे
 जीवनक अर्थ नहि ओ पानल।
 दार्शनिक तर्कक ऊँच महल
 ओ ध्यानसँ देखल, भीतर गेल;
 जतय प्रमाण दृढ़, ओ मानल,
 जतय सीमा भेटल, प्रश्न ठेल।
 बुद्धि अमूल्य, मुदा सर्वशक्त नहि,
 मानव समझक अपन परिधि;
 जे सीमा बुझि विनम्र बनय,
 ताहिमे जागय ज्ञानक सिद्धि।
 प्रतिष्ठाक आसन चमकि रहल,
 मुदा हृदयमे मौन अशान्ति;
 बाहरी यश यदि भीतर रिक्त,
 तँ की देत आत्माक शान्ति?
 एक दिन पदक चकाचौंध छोड़ि
 ओ अपनहि मनक द्वार पर गेल;
 भीड़सँ दूर, नीरव साधनामे
 चेतनाक दोसर प्रदेश खुलल।
 ज्ञान केवल माथक संग्रह नहि,
 हृदयक परिवर्तन सेहो चाही;
 जिह्वा सत्यक चर्चा करय,
 मुदा कर्म विपरीत—तँ लाभ की?
 आचरण, संयम, आत्मनिरीक्षण,
 लोभ-अहंकारक गाँठ खोलय;
 शुद्धि बिनु सिद्धान्तक दीप
 धुँआमे अपन ज्योति गुमायल बोलय।
 विश्वास अन्हर समर्पण नहि,
 नहि तर्कक संहारक नाम;
 जतय बुद्धि अपन सीमा चिन्हय,
 अनुभूति लैत गहिर अर्थक थाम।
 अन्तर्मनमे जे प्रकाश फूटय,

ओ प्रमाणक विरोधी नहि;
 जीवनक सम्पूर्ण अनुभवक भीतर
 सत्यक एकटा आरो खिड़की सही।
 धर्म यदि केवल बाहरी रीति,
 तँ आत्मा कतय पाबय विश्राम?
 भय, लोभ, दिखबाक चाह छोड़ि
 भीतर जगय उत्तरदायी धाम।
 प्रार्थना तखन शब्द नहि मात्र,
 से बनय चरित्रक अनुशासन;
 स्मरण तखन पलायन नहि,
 से बनय सजग नैतिक जीवन।
 संशयक प्रश्न कहैत अछि—
 “जे जानैत छी, कोना जानैत छी?”
 आ दोसर स्वर धीरे पूछैत—
 “जे मानैत छी, कोना जीबैत छी?”
 ज्ञान आ जीवन जँ अलग भेल,
 तँ सत्य अधूरा भ' क' रहत;
 बुद्धि, आस्था, अनुभव, आचरण
 मिलि मानवक मार्ग गढ़त।
 सन्देहक राति व्यर्थ नहि गेल,
 ओहि रातिसँ भोरक अर्थ भेटल;
 टूटल भरोसाक राखि भीतर
 नव विश्वासक बीज अंकुरित भेल।
 निश्चय जँ विनम्रता सँ जन्मय,
 ओ कठोर दीवार नहि बनत;
 सत्यक खोज तखन जीवन भरि
 प्रश्न आ प्रकाशक संग चलत।

भीतरक प्रकाश आ दू नगर

इच्छाक बाट बहु दिसि मुड़ल,
 मन सुखक पाछाँ दौड़ैत रहल;
 प्रश्नक काँट, चाहक आँधी,
 भीतर रिक्तता जन्मैत रहल।
 बाहरक रंग भरि नहि सकल
 अन्तरक अनाम अकुलाहट;
 तखन हृदय अपनहि गहिराइमे
 खोजलक शान्त प्रकाशक आहट।

ज्ञानक पहिल दुआर इन्द्रिय,
 मुदा दृश्ये सभक सीमा नहि;
 बुद्धि तथ्यक ऊपर प्रश्न उठबय,
 “जे बदलैत, से अंतिम की?”
 क्षणभंगुर रूपक पाछाँ-पाछाँ
 मन खोजय स्थिर अर्थक धाम;
 बाहरक वस्तु जँ छायासँ चलय,
 भीतरक प्रकाश पूछय ओकर नाम।
 सत्य केवल आँखिक देन नहि,
 नहि स्मृतिक झिलमिल छाप;
 किछु मापदण्ड एहन रहैत अछि
 जाहिसँ हम करैत छी सत्यक माप।
 जे बुद्धिक भीतर न्याय जगबय,
 जे असत्यक ऊपर प्रश्न उठाबय,
 ओ उजास अपनहि बनाओल नहि—
 मन तकरा पाबि दिशा चिन्हाबय।
 ईश्वर दूरक निर्जीव कारण नहि,
 सत्ताक मूल, सत्यक आधार;
 रूपक रूप, अर्थक अर्थ,
 जगक पाछाँ अनन्त विस्तार।
 सृष्टि ओकर बराबर नहि,
 नहि ओहि मूलक दोसर नाम;
 जे बनल अछि, से निर्भर सत्ता,
 स्रोत अलग, जग अलग धाम।
 “अशुभ कतय सँ?” प्रश्न उठल,
 जखन जगमे पीड़ा देखायल;
 यदि मूल शुभ, तखन अन्हारक
 एतेक गहिर छाया किएक पसरायल?
 उत्तर खोजैत विचार कहलक—
 अन्हार अपन स्वतन्त्र दीप नहि;
 जतय भलाइ घटि जाए भीतर,
 ओतहि अभावक छाया जन्म लैत रही।
 स्वतन्त्र इच्छा मूल्यवान अछि,
 कारण प्रेम आदेशसँ नहि फूलय;
 मुदा चुनावक जिम्मेदारी बिनु
 स्वतन्त्रताक अर्थो धीरे धूलय।
 मन जखन नीच लक्ष्यक दास बनय,

अपन क्रमक संतुलन तोड़य;
 अशुभ तखन बाहरी दानव मात्र नहि,
 भटकल इच्छा भीतर घर जोड़य।
 आत्मा शरीरक छाया नहि,
 नहि शरीर आत्माक शत्रु मात्र;
 जीवनक भीतर चेतन केन्द्र,
 स्मृति-विवेकक सूक्ष्म पात्र।
 अपने केँ जानबाक पथ पर
 मन जगतसँ फेरि भीतर जाए;
 अपन सीमित उजासक कात
 असीम स्रोतक संकेत पाए।
 नैतिकता भयक डंडा नहि,
 प्रेमक क्रम सँ जीवन सजय;
 जे उच्च अछि तकरा उच्च मानू,
 जे साधन अछि से साधन रहय।
 लोभ जँ साध्यक आसन लूटय,
 मन भीतर राज उलटि जाए;
 ठीक प्रेम जखन क्रम पाबय,
 चरित्रक दिशा फेरि सुधरि जाए।
 समाजमे सेहो दू प्रवाह,
 दू प्रेमक दू भिन्न नगर;
 एक अपन लाभक चारू कात,
 दोसर न्यायक खोजमे अग्रसर।
 ईट-पाथर सँ नगर नहि बनय,
 मूल इच्छा ओकर प्राण;
 राज्यक मोल तखनहि होय
 जखन शान्ति-संयमक हो सम्मान।
 इतिहास केवल राजाक सूची नहि,
 नहि युद्धक धूलि आ जय-पराजय;
 मानव-इच्छा, आशा, पतन,
 अर्थ खोजैत समयक प्रवाह।
 धरतीक सत्ता क्षणिक ठहराव,
 कोनो राज्य अंतिम धाम नहि;
 न्याय जँ नष्ट, वैभव शेष रहय—
 तँ ओकर चमकमे स्थायी नाम नहि।
 भीतरक स्वर कहैत अछि—
 “बाहर खोजू, मुदा भीतर उतरू”;

तर्कक दीप सँ बाट नापू,
विश्वासक प्रश्नसँ मन नहि डरू।
सत्य जँ केवल शब्द बनि रहत,
जीवनमे ओकर प्रमाण कतय?
हृदयक क्रम, इच्छाक दिशा,
ओतहि दर्शनक असल परीक्षा भए।
अन्ततः मन बुझैत अछि,
शान्ति वस्तुक अधिकतासँ नहि;
अपन केन्द्र ठीक ठाम पाबय,
तखन अशान्ति रहैत ओहन नहि।
भीतरक प्रकाश बाहरी जगसँ
भागबाक नहि, देखबाक नयन;
दू नगरक बीच चलैत मनुष्य
चुनैत रहय अपन जीवन।

शब्दक पार जे स्वर जागय

शब्द कहल, अर्थ समक्ष आयल,
मुदा कविता ओतहि समाप्त नहि;
पाँतिक पाछाँ एकटा कम्पन,
जे सुनाय नहि, तैयो मौन नहि।
ध्वनिक दृष्टि कहैत—
काव्यक प्राण केवल कथन नहि,
जे अनकहल हृदयमे जागय,
सेहो अर्थ, आ कम महत्वक नहि।
एक शब्द अपन पहिल दुआर सँ
सोझ अर्थक घरमे जाए;
अभिधाक उज्जर पथ पर चलि
नाम, वस्तु, घटना चिन्हाए।
मुदा जखन सोझ अर्थ अटकि जाए,
सन्दर्भ दोसर बाट बताबय;
लक्षणाक हलुक मोड़ पर
शब्द अपन सीमा विस्तृत पाबय।
तकरो पाछाँ एक तेसर लहरि,
जे शब्दक देहसँ दूर नहि;
मुदा ओकर मूल्य उच्चतर होइत,
कारण से केवल उच्चरित नहि।
व्यञ्जना जखन भीतर स्पर्श करय,
वाच्यार्थ पाछाँ दीप जरे;

पाठक अपन अनुभवक आँगनमे
 नव अर्थक फुलवारी भरे।
 कवि यदि कहय—“साँझ उतरि गेल”,
 साँझ मात्र समयो भ’ सकैत;
 मुदा ककरो प्रतीक्षाक जीवनमे
 से विरहक अन्हारो कहि सकैत।
 एकहि वाक्यक भीतर कतबो
 सूक्ष्म संकेत रहैत सुप्त;
 सहृदय मन जखन तकरा छूबय,
 अर्थ अकस्मात् भ’ उठैत दीप्त।
 ध्वनि न अलंकारक केवल आभूषण,
 नहि शब्द-चमत्कारक खेल;
 काव्यक भीतर जे मूल स्पन्दन,
 तकरासँ बनैत भावक मेल।
 वस्तु, अलंकार, रसक संकेत
 अलग-अलग रूपमे फूटि सकय;
 मुदा रसक गहिर व्यञ्जना जखन जागय,
 पाठक अपन सीमा भूलि सकय।
 रस नहि लेखकक निजी आँसू,
 नहि पात्रक पीड़ा मात्र;
 काव्यक अनुशासनमे ढलि
 से बनैत सामूहिक अनुभव-पात्र।
 करुणा, शृङ्गार, वीरक लहरि
 व्यक्ति-पार एक स्वर धरय;
 सहृदय पाठक ओहि क्षण भीतर
 अपनहि जीवन नव रूपमे पढ़य।
 काव्यक सौन्दर्य कतय बसैत?
 केवल छन्दक सम स्वरमे नहि;
 केवल उपमा, रूपक, अनुप्रासक
 चमकैत बाहरी घरमे नहि।
 जतय शब्द अपन स्थान बुझय,
 अर्थ अपन मर्यादा राखय;
 आ अनकहल भावक सूक्ष्म आभा
 सम्पूर्ण रचना भीतर झाँकय।
 ध्वनि जँ प्राण, तखन वाणी देह,
 दुनू परस्पर विरोधी नहि;
 स्पष्ट कथन बिनु संकेत बिखरत,

संकेत बिनु कविता गहिर नहि।
रचना तखन पूर्ण भ' उठैत,
जखन कहल-अनकहल संग चलय;
एकटा स्वर कानमे सुनाय,
दोसर हृदयक भीतर पलय।
आलोचना तखन गिनती नहि,
कत उपमा, कत छन्द, कत यमक;
प्रश्न ई—रचना पढ़लापर
भीतर की बदलल, कोना चमक?
अर्थक तह सभ खोलैत-खोलैत
सहृदयता चाही, धैर्यक नेह;
कविता पत्थरक लिखल निर्णय नहि,
से पाठक-संग जीवित देह।
ध्वनिक दीर्घ संकेत
एखनहुँ शब्दक पार सुनाय—
भाषा जे कहैत अछि, सुनू,
मुदा जे नहि कहैत, सेहो बुझाय।
काव्य ओहि सूक्ष्म क्षणक नाम,
जतय अर्थक सीमा खुलि जाए;
एक पाँति समाप्त होइतहुँ
हृदयमे दोसर कविता जगि जाए।

कहबो एकटा काज अछि

शब्द केवल हवा पर चलैत ध्वनि नहि,
नहि शब्दकोशक ठंढा अर्थ;
मनुष्य जखन बोलैत अछि,
ओ संगहि बदलैत अछि परिस्थिति-पथ।
“हम वचन दैत छी” कहल क्षणमे
केवल सूचना नहि जन्म लैत;
कहबाक भीतर काज घटैत,
भाषा कर्मक रूप बनैत।
साधारण बोलचालक छोट वाक्य
दर्शनक पैघ दुआर खोलय;
बाजार, घर, अदालत, सभा,
सभ ठाम अर्थ व्यवहारमे बोलय।
शब्द केँ प्रयोगसँ काटि देखब
मानो नदी केँ धारसँ अलग करब;

अर्थ तखने जीवित बुझाए,
 जखन प्रसंगक संग ओकर चलब।
 किछु कथन जगक हाल कहैत,
 “आकाश मेघाच्छन्न अछि” सन;
 सत्य-असत्यक तराजूमे
 एहन वाक्यक होइत परीक्षण।
 मुदा किछु वचन कहिते घटय—
 प्रतिज्ञा, नामकरण, आदेश;
 ओतय भाषा वर्णन नहि मात्र,
 ओ स्वयं बनैत घटना-प्रवेश।
 वचन सफल होए तखन आवश्यक
 समय, व्यक्ति, रीति ठीक रहय;
 खाली शब्द उच्चारि देलासँ
 हरेक कर्मक शक्ति नहि बहय।
 जकर अधिकार नहि, से घोषणा
 केवल ध्वनि भ' सकैत अछि;
 भाषाक कर्म सामाजिक नियमक
 जालमे अपन अर्थ पबैत अछि।
 पहिल स्तर—की कहल गेल,
 ध्वनि, शब्द आ वाक्यक रूप;
 ई कथनक देह, ओकर बनावट,
 जाहिमे अर्थक पहिल धूप।
 मुदा देहक भीतर उद्देश्य अछि—
 पूछल, कहल, चेताओल, आदेश;
 एक्के वाक्य भिन्न प्रसंगमे
 भिन्न काजक लैत प्रवेश।
 तकरो पाछाँ शब्दक प्रभाव,
 सुननिहारक मनमे जे घटय;
 ककरो मनाबय, ककरो डरबय,
 ककरो प्रेरित करि बाट बदलय।
 भाषा तखन तीन तहक लहरि—
 कहल, कएल, फल उपजायल;
 एक छोट वाक्यक भीतर देखू,
 कतेक सामाजिक संसार समायल।
 “दरवज्जा खुलल अछि”—एतेक
 केवल खबर सेहो भ' सकैत;
 ठंढा हवा भीतर अबैत हो तँ

अनुरोधक संकेत बनि सकैत।
अर्थ शब्दमे बंद कैदी नहि,
प्रसंग ओकर साँसक ठाम;
वक्ता, श्रोता, समय, परिस्थिति
मिलि रचैत अर्थक नाम।
दार्शनिक उलझन बेर-बेर
भाषाक बेठीक गाँठसँ बनैत;
जे शब्द अलग प्रसंगमे चलय,
तकरा एक सूत्रमे बाँधल जाइत।
जीवित भाषा कहैत जेनाँ—पहिने देखू
लोक कोना सचमुच बाजैत;
जीवित व्यवहारक धरती छोड़ि
अमूर्त जालमे मन नहि फँसैत।
सत्य आवश्यक, मुदा सत्ये सभ नहि,
मानव वचनक आरो जिम्मा;
विश्वास, आदेश, क्षमा, प्रतिज्ञा,
सभमे संबंधक अलग गरिमा।
भाषा नैतिक सेहो होइत अछि,
कारण वचन भरोसा बनबैत;
कहल बातक भार उठेबाक
साहस मनुष्य केँ मनुष्य बनबैत।
तँ जखन अगिला बेर कहब—
“हम करब”, “हम मानैत छी”, “आउ”;
अपन शब्दक भीतर चलैत कर्म
एक बेर ध्यानसँ बूझि पाउ।
एहि सीखक अर्थ ई नहि मात्र
जे वाक्यक प्रकार गिनायल जाए;
ई बुझब—भाषा जीवनक काम,
कहबो सँ संसार बदलायल जाए।

एकहि उजासक अनेक दुआर

पवनमे उठल अनाम प्रश्न
दूर-दूर धरि यात्रा करय;
रूप बदलय, भाषा बदलय,
भीतरक खोज अखण्ड रहय।
पोथी अनेक, अनुभव गहिर,
शब्दसँ पैघ मौनक साथ;

एकहि सत्यक उजास दिस
 खुलैत जाए कतबो बाट।
 आँखि समक्ष रूप हजार,
 नाम हजार, आकार अनेक;
 मन पूछय—एहि भिन्नताक पाछाँ
 की कोनो मूल स्पन्दन एक?
 जगत नहि केवल छिटकल कण,
 नहि ईश्वर दूरक निर्लेप छोर;
 दृश्य-अदृश्यक बीचक सम्बन्ध
 चेतनाक भीतर खोलय भोर।
 एकत्व यदि सभ भेद मेटा दे,
 तँ जगत केर रंग कतय रहत?
 अनेकत्व यदि मूल भुला दे,
 तँ अर्थक सूत्र कतय सँ बहत?
 ताहि बीचक सूक्ष्म अनुभूति—
 एकमे अनेक, अनेकमे एक;
 जेनाँ जलमे चन्द्रक प्रतिबिम्ब,
 रूप अनेक, उजास अभिन्न नेक।
 ईश्वर केँ सीमा देब कठिन,
 किएक तँ सीमा मनुष्यक रेख;
 जे अनन्त, से संज्ञाक पाछाँ
 रहैत अछि अनकहल एक लेख।
 मुदा अनन्त दूर नहि केवल,
 निकट सेहो प्रत्येक प्राण;
 स्वरूपक खोज जखन भीतर हो,
 तखन जगत बनय पहिचान।
 आत्मा यदि केवल अपन देहक
 दीवार भीतर बन्द रहय,
 तँ प्रेमक एक स्पर्श पाबि
 किएक सीमा टूटि-टूटि बहय?
 साधक धीरे बुझैत जाए—
 ‘हम’ केर घेरे छोट पड़ैत;
 आत्म-अनुभूतिक गहिर पथपर
 अन्यक दुःख सेहो अपन लगैत।
 ज्ञान पुस्तकक पंक्तिमात्र नहि,
 अनुभव बिनु ओकर स्वर अधूर;
 सूफी पथ कहय—मन केँ धोऊ,

तखन भेटत भीतरक नूर।
तर्कक सम्मान अपन ठाम,
मुदा प्रेमक सेहो अछि प्रमाण;
जे हृदय बदलि दे जीवन भरि,
सेहो ज्ञानक एक पहिचान।
धर्मक दुआर अनेक देखाय,
ककरो प्रार्थना, ककरो ध्यान;
ककरो मौन, ककरो गीत,
ककरो नियम, ककरो बलिदान।
यदि खोजक केन्द्र करुणा हो,
अहंकारक काँट हटैत जाए;
भिन्न प्रतीकक पाछाँ साधक
एकहि गहिर प्यास बुझि पाए।
कट्टर सीमा मन बनबैत,
अनन्त ओकरा भीतर नहि समाय;
जे सत्य केँ केवल अपन कहय,
दोसरा दिसक दीप बुझाय।
एकत्वक भाव कहैत—
हृदय केँ एतेक विशाल बनाउ,
जे भिन्न विश्वासक मानुषमे
पहिने मनुष्यता पहचानाउ।
प्रेम नहि केवल भावुक लहर,
से आत्माक अनुशासन कठोर;
अपन आग्रह केँ पाछाँ राखि
दोसरा लेल खोलब एक दुआर।
जतय प्रेम अछि, ओतय दूरी
धीरे-धीरे अर्थ बदलैत;
पराया नामक कठोर पत्थर
मानव-स्पर्शसँ गलि जाइत।
तँ एकहि उजासक अनेक दुआर,
एकहि आकाशक अनेक दिशा;
नाम बदलय, भाषा बदलय,
मुदा जीवित रहय सत्यक पिपासा।
अन्तरयात्राक स्वर कहैत—
सीमा पार करू, मन नहि हारू;
जगतक बहुरूप रंग सँ प्रेम करू,
आ मूल एकत्व केँ हृदयमे धारू।

प्रकृति नाचय, पुरुष देखय

जगतक रंगमंच सजल अनादि,
 एक दिस प्रकृति रूप बदलय;
 दोसर दिस नीरव साक्षी पुरुष,
 देखैत रहय, स्वयं नहि चलय।
 एकटा गति, एकटा चेतन दृष्टि,
 दुनूक मेलसँ अनुभव जागय;
 सांख्यक विस्तृत आँगन
 भेद बुझाबय, बन्धन भागय।
 जे उत्पन्न होइत अछि जगमे,
 से शून्यसँ आकस्मिक नहि आए;
 कारणक गर्भमे कार्यक बीज
 पहिनहिसँ संभावना बनि छाए।
 दूधमे दहीक भाव निहित,
 बीजमे वृक्षक लय रहैत;
 कार्य जखन रूप धारण करय,
 कारण अपन शक्ति प्रकट करैत।
 प्रकृति एक, मुदा ओकर भीतर
 तीन गुणक सतत खेल अपार—
 सत्त्वक उजास, रजक चञ्चलता,
 तमक भारी नीरव अन्हार।
 कोनो क्षण एकटा ऊपर उठय,
 दोसर दबय, फेर क्रम बदलय;
 एहि संतुलनक टूटल तराजूमे
 सृष्टिक नव-नव रूप निकलय।
 प्रकृतिसँ पहिले बुद्धि उगय,
 निर्णयक एक स्वच्छ दुआर;
 तकर पाछाँ अहंकार उठि कहय—
 “हम” छी एहि अनुभवक आधार।
 मन इन्द्रियसभक संदेश जोड़य,
 सूक्ष्म तन्मात्रा रूप सँ फूटय;
 शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धक
 जगत क्रमशः समक्ष छूटय।
 पुरुष अनेक—प्रत्येक साक्षी,
 नहि प्रकृतिक गुणमे बँधल;
 नहि कर्ता, नहि परिवर्तनशील,
 तैयो अनुभवसँ जेनाँ जुड़ल।

अज्ञानक कारण प्रकृतिक नाच
 अपनहि नाच बुझि पड़ैत;
 विवेकक दीप जरल क्षणमे
 साक्षी अपन स्वरूप चिन्हैत।
 दुःख तीन दिशासँ घेरि सकय—
 देहक, जगतक, अदृश्य प्रहार;
 क्षणिक उपाय सँ शान्ति भेटय,
 मुदा फेर लौटि सकय संताप अपार।
 पूर्ण मुक्ति लेल आवश्यक अछि
 मूल भ्रमक गाँठ खोलब;
 पुरुष आ प्रकृतिक भेदक ज्ञान
 मनक गहिर आँधियार तोड़ब।
 ज्ञानक बाट एक नहि केवल,
 प्रत्यक्ष आँखि-दुआर खोलय;
 अनुमान चिह्नसँ अदृश्य कारण
 बुद्धिक भीतर धीरे बोलय।
 विश्वसनीय वचन सेहो पथ,
 जतय इन्द्रिय पहुँचि नहि पाबय;
 तीन प्रमाणक संगति सँ मन
 सत्यक अनेक पहरू बुझि जाबय।
 मन, अहंकार, बुद्धि सभ सूक्ष्म,
 देहसँ पैघ एक अन्तः-क्रम;
 इन्द्रिय बाहरक रूप पकड़य,
 भीतर बनय अनुभवक संगम।
 मुदा जे सभ देखैत-अनुभवैत,
 ओहि चेतनक मूल अलग;
 साधन सभ प्रकृतिक उपकरण,
 पुरुष मात्र उजासक पथिक।
 मुक्ति आनन्दक मेला नहि,
 नहि नव लोकक चकाचौंध;
 ई बोध जे “हम” नहि प्रकृति,
 ई बुझाइ काटय भ्रमक फाँद।
 प्रकृति अपन काज सम्पूर्ण कऽ
 साक्षीक आगाँ शान्त भ’ जाए;
 ज्ञान रहितो देहक गति चलि सकय,
 मुदा मोह फेर लौटि नहि पाए।

विवेकक शिक्षा कहैत—
 जगत छोड़ू नहि, भेद चिन्ह;
 जे बदलैत अछि से प्रकृति,
 जे देखैत अछि से चेतन बुझू।
 गुणक खेलमे हरायल मन कै
 विवेकक निर्मल दृष्टि दिअ;
 प्रकृति नाचय अपन नियमसँ,
 पुरुषक मौन स्वतन्त्रता जिअ।

तर्कक फूलसँ सत्यक अर्घ्य

प्रश्न जखन धार बनि उठल,
 तर्क जखन बनल कठोर परीक्षा,
 तर्क खोजय एहन पथ
 जतय श्रद्धा सेहो माँगय समीक्षा।
 न्याय केर सूक्ष्म तराजूमे
 दावा पहिने प्रमाण तौलाय;
 विश्वास यदि सत्यक सहचर,
 तँ बुद्धिक आगाँ सेहो ठाढ़ रहाय।
 देखल वस्तु एकटा दुआर,
 अनदेखल हेतु अनुमानक बाट;
 धुँआ कहय अग्निक संभावना,
 चिह्न खोलय कारणक ठाठ।
 मुदा अनुमान अन्ध छलाँग नहि,
 व्याप्तिक अनुशासन चाही;
 जे निष्कर्ष कारणसँ नहि जुड़ल,
 तर्क ओकर संग नहि जाही।
 जगतमे घटना एकाकी नहि,
 कार्य पाछाँ कारणक प्रश्न;
 रूपक व्यवस्था, क्रमक धारा,
 बुद्धि पूछय—किएक ई स्पन्दन?
 बुद्धि उत्तर खोजैत जाए
 अनुभव, हेतु, सम्बन्धक बीच;
 अदृश्यक चर्चा तखनहि सार्थक,
 जखन प्रमाणक आधार भेटि सकय।
 आत्मा की केवल देहक नाम?
 की चेतना क्षण-क्षण टूटि जाए?
 स्मृति, इच्छा, सुख-दुःख, ज्ञान
 ककर धागासँ एक संग आए?

देह बदलय, अनुभव बदलय,
 तैयो 'हम' केर क्रम नहि हराय;
 आत्म-विवेकक दृष्टि एहि
 स्थायी ज्ञाताक चिन्ह देखाय।
 विरोधी मत केँ चुप करब नहि,
 पहिने ओकर प्रश्न सम्पूर्ण सुनू;
 जतय आपत्ति तीक्ष्ण बनि उठय,
 ओतहि अपन आधार पुनः गुनू।
 दार्शनिकता तखनहि जीवित,
 जखन संशय केँ सम्मान मिले;
 वाद-विवादक कठिन धूपमे
 सत्यक धातु अधिक निर्मल खिलय।
 ईश्वरक प्रश्न मात्र पूजा नहि,
 दार्शनिक कारणक सेहो खोज;
 जगतक कार्य, क्रम आ सम्बन्ध
 बुद्धि आगाँ राखय अनेक बोध।
 प्रमाणक पुष्प चुनि-चुनि
 एक तर्क-माला रचैत छथि;
 कहैत—निष्कर्ष मानब तखने,
 जखन हेतु अपन भार सहैत अछि।
 शब्द सेहो प्रश्न उठाबय—
 अर्थक अनुशासन कोना बनल?
 व्यवहारक साझा सेतु पाछाँ
 ककर बुद्धिसँ नियम सँवल?
 वाक्य, संकेत, व्यवस्था, संख्या—
 सभकेँ ओ कारणसँ जोड़ि देखैत;
 जगतक अनेक परिचित रेखामे
 अदृश्य आधारक चिन्ह खोजैत।
 मुदा तर्कक विजय अंतिम नहि,
 कारण तर्कक सीमा सेहो अछि;
 प्रमाण जतय धरि संग चलय,
 ओतहि धरि निष्कर्षक राहि अछि।
 अतिशय दावे सँ सत्य नहि बढ़य,
 नहि संशयसँ सभ शून्य होय;
 मध्यम विवेकक अनुशासित दीप
 मनक अन्हारमे स्थिर रहय।

ज्ञानक फूल यदि अहं बनि जाए,
 तँ सुगन्धि ओकर मरि जाए;
 ज्ञान जँ प्रश्नक प्रति नम्र रहय,
 तँ नूतन दुआर स्वयं खुलि जाए।
 तर्कक कुसुम अर्पण मानो
 तर्कक भीतर श्रद्धाक गन्ध;
 बुद्धि आ विश्वास विरोधी नहि,
 जखन दुनू सत्यसँ बाँधल सम्बन्ध।
 तँ प्रश्न करू, प्रमाण माँगू,
 कारणक सूत्र सावधानीसँ धरू;
 आत्मा, जगत, ईश्वरक चर्चा
 अनुशासनक दीप जरा कऽ करू।
 एहि बाटक सीख ई दैत—
 मत मानू केवल नामक जोर;
 तर्कक फूलसँ सत्यक अर्घ्य दिअ,
 आ खुलल राखू चिन्तनक द्वार।

हेतुक दीप, आत्माक साक्षी

जखन प्रश्नक धार तीख भ' उठल,
 पुरान सूत्र पर पड़ल प्रहार;
 तर्क ठाढ़ भेल तखन
 न्यायक हाथमे तर्कक आधार।
 विरोधी मत केँ केवल नकारि नहि,
 ओकर प्रश्नक गाँठ खोलैत;
 परम्पराक अर्थ फेर सँ जाँचि
 नव विवेचनक बाट बनबैत।
 पुरान भाष्यक पाछाँ
 वार्तिक बनल विचारक सेतु;
 जतय पुरान व्याख्या पर्याप्त नहि,
 ओतय खोजल गेल नव हेतु।
 बौद्ध तर्कक चुनौती समक्ष
 शब्दक रक्षा मात्र नहि भेल;
 न्यायक भीतर नव सूक्ष्मता
 वाद-विवादक अग्निसँ खेल।
 अनुमान जँ सत्य धरि जाए,
 हेतु केँ ठाढ़ रहबाक चाही;
 पक्षमे ओकर उपस्थिति हो,
 सपक्षमे संगति सेहो पाही।

विपक्षमे जे ठाम साध्य नहि,
 ओतय हेतु अनुपस्थित रहय;
 एहि अनुशासन बिनु निष्कर्ष
 केवल अनुमानक छाया बनय।
 धुँआ देखल, अग्नि स्मरण भेल—
 मुदा एतबे सँ बात निपटै?
 देखल चिह्न आ ज्ञात सम्बन्ध
 मनक भीतर फेर जुड़ि उठै।
 लिङ्गपरामर्शक ओहि क्षणमे
 चिह्न कारणक दुआर खोलय;
 अनुमिति तखन जन्म लैत अछि,
 बुद्धि व्यवस्थित अर्थ सँ बोलय।
 प्रत्यक्षक सेहो अनेक परत,
 इन्द्रिय-वस्तुक संयोगक चाल;
 रूप, गुण, जाति, सम्बन्ध सभ
 ज्ञानमे खोलय अपन जाल।
 न्यायक सूक्ष्म निरीक्षण कहय—
 देखबो साधारण काज नहि;
 ककरा, कोना, ककर माध्यमसँ
 ज्ञान उठल—ई प्रश्न कम नहि।
 हेतु जँ रूप धारण करैतहुँ
 साध्य धरि पहुँचबैत नहि,
 तखन ओकर चमक सँ बचब—
 सभ तर्क सत्य बनैत नहि।
 भ्रमित कारण, असिद्ध आधार,
 विरोधी लक्षण, संदिग्ध राहि;
 हेत्वाभासक पहचान बिनु
 विवेकक नाव पार नहि जाही।
 आत्मा पर उठल कठिन आपत्ति—
 की केवल देहहि 'हम'क नाम?
 क्षण-क्षण चेतन धार बदलैत,
 तखन कोना टिकत अनुभवक ग्राम?
 स्मृति, भाषा आ आत्म-बोध
 एक ज्ञाताक चिन्ह बतबैत;
 'हम' केर निरन्तर प्रत्यय भीतर
 स्थायी आधारक प्रश्न जगबैत।

विरोधक संग ई संवाद छल,
 नहि मौन, नहि क्रोधक दीवार;
 एक-एक आपत्ति केँ समक्ष राखि
 उत्तर खोजल बारम्बार।
 दार्शनिक परम्परा जीवित तखन,
 जखन प्रश्न सँ ओकर डर नहि;
 जे मत आलोचना सहि सकैत,
 ओकर जड़ि केवल स्मृति पर नहि।
 न्याय एतय सूत्रक संग्रह नहि,
 बुद्धिक अनुशासनक अभ्यास;
 पक्ष, हेतु, उदाहरण, सम्बन्ध
 सभ माँगय सजग विश्वास।
 ककरा मानब, किएक मानब,
 कतेक धरि प्रमाण सहय—
 एहि प्रश्नक कठोर साधनामे
 ज्ञान अपन सीमा सेहो कहय।
 एहि तर्कक बाट सिखबैत—
 परम्परा केँ जड़ि नहि बनाउ;
 विरोधी प्रश्नक धारि स्वीकारि
 अपन तर्क केँ नित नव कराउ।
 हेतुक दीप जरा कऽ देखू,
 आत्माक साक्षी भीतर राखू;
 सत्य जँ दृढ़ अछि, परीक्षणसँ
 ओकर उजास आरो स्पष्ट पाबू।

पदार्थक गति, मनुष्यक मुक्ति

कारखानाक धुँआमे देखल जग,
 किताबक पन्नासँ बाहर जीवन;
 श्रमिकक थाकल हथेली पूछलक—
 ककर लेल ई असीम उत्पादन?
 आँखि जखन सिद्धान्तसँ आगाँ
 जीवित दुःखक रूप पढ़ैत,
 समाजक चमकदार मुखौटाक पाछाँ
 श्रमक मौन कथा सुनैत।
 संवाद जखन विचार बनल,
 प्रश्नक स्वर आरो गहिरायल;
 भिन्न मन, मुदा पीड़ा समान—
 मनुष्य किएक बन्धनमे आयल?

बहस, श्रम आ संघर्षक बीच
चिन्तन एक-दोसर सँ तेज भेल;
व्यक्तिगत यश सँ पैघ उद्देश्य,
साझा खोजक दीपक खेल।
जगत स्थिर पाषाण नहि,
सभ किछु गति आ परिवर्तन;
विरोधक भीतर जन्मय नूतन,
टकरावमे होइत रूपान्तरण।
प्रकृति हो वा समाजक रचना,
सम्बन्ध निरन्तर बदलैत;
पुरान संरचना अपन सीमामे
नव सम्भावनाक बीज उगबैत।
पदार्थ पहिले, विचार पछाति—
ई कथन केवल कठोर नकार नहि;
जीवनक भौतिक परिस्थिति बिनु
चेतनाक इतिहास बुझब आसान नहि।
भूख, श्रम, औजार, उत्पादन,
घर-समाजक ढाँचा बोलय;
मानुषक विचार अकेले नभमे नहि,
धरतीक सम्बन्ध सँ रूप खोलय।
इतिहास राजा-महाराजक कथा मात्र नहि,
मजूरक घामो ओकर अक्षर;
जमीन, पूँजी, श्रमक सम्बन्ध
गुप्त रूपेँ लिखैत कालक प्रहर।
वर्गक हित जखन टकराय,
राजनीति अपन चेहरा देखाय;
संघर्षक भीतर शक्ति-सन्तुलन
समाजक अगिला रूप बनाय।
श्रम जँ मनुष्यक सृजन-शक्ति,
तँ श्रमिक किएक पराया होय?
अपन बनाओल वस्तु, अपन दिन,
दोसरा अधिकारमे किएक खोय?
मुक्ति केवल रोटी नहि,
नहि केवल शासनक फेरबदल;
मानवीय क्षमता पूर्ण खिलय,
एहन समाजक चाही संबल।

विज्ञानक उपलब्धि देखिते मन
 प्रकृति केँ गतिमान बुझैत;
 जीवन, पदार्थ, रूपक सम्बन्ध
 एक-दोसरमे बदलैत रहैत।
 मुदा विज्ञानकेँ मन्त्र नहि बनाउ,
 तथ्यक धरती पर विचार बढ़ाउ;
 जतय नूतन प्रमाणक प्रकाश,
 ओतय धारणा फेर जाँचि लाउ।
 समाजवाद केवल सपना नहि,
 संगठन, चेतना, संघर्षक राहि;
 एकाकी क्रोध सँ परिवर्तन नहि,
 साझा समझक शक्ति चाही।
 मजूर जखन अपन स्थिति बुझाय,
 संगठित होइ अधिकारक लेल;
 तखन इतिहासक चक्का पर
 नव दिशाक दबाव पड़य खेल।
 एहि विचारक स्वर कहैत जेनाँ—
 विचार केँ जीवनसँ जोड़;
 सिद्धान्त जँ मनुष्यक पीड़ा नहि बुझाय,
 तँ ओकर कठोर खोल तोड़।
 भौतिक जगक नियमक संग
 मानवीय स्वप्न केँ नहि बिसरु;
 स्वतन्त्रता केबल शब्द नहि,
 समान अवसरक भूमि पर उतरु।
 पदार्थक गति, मनुष्यक मुक्ति—
 दुनू प्रश्न एक-दोसर सँ जुड़ल;
 जगत बदलैत, समाज बदलैत,
 किछु नहि सदा लेल अचल-मुड़ल।
 परिवर्तनक पथ ई स्मरण करबैत—
 इतिहास बनैत अछि हाथक काज;
 सचेत श्रम आ साझा विवेकसँ
 मनुष्य लिखि सकैत अपन समाज।

अर्थक कसौटी

शब्द उठल तँ प्रश्नो उठल—
 ई कथनक अर्थ आखिर की?
 कहब मात्र सँ सत्य नहि बनत,
 जाँचक बाट कतय अछि जी?

भाषा पाबय अर्थक कसौटी—
वाक्य अपन प्रमाण बताबय;
जे दावाक जाँच सम्भव हो,
से ज्ञानक आँगनमे ठाम पाबय।
किछु कथन अपन संरचनामे
सत्य-असत्यक रूप स्पष्ट करय;
तर्क आ गणितक सम्बन्ध भीतर
अर्थ अपन नियमसँ उजागर होय।
अनुभवक नव खबर नहि देतहुँ,
ओ विचारक क्रम सँ जुड़ल;
परिभाषा आ तार्किक सम्बन्धक
भीतर ओकर आधार गुँथल।
दोसर कथन धरतीसँ जुड़ल—
देखब, सुनब, जाँचब आवश्यक;
अनुभव यदि ओकरा छू सकय,
तखन दावा रहय नहि अधूरी।
विज्ञानक वाक्य एहि पथ चलय,
संभावित परीक्षण ओकर मान;
अर्थक संग प्रमाणक नाता,
एहि चिन्तनक मुख्य विधान।
मुदा जे वाक्य अनुभवसँ परे,
नहि तर्कक नियममे आबय;
अदृश्य सत्ता पर एहन दावा
जकर जाँचक कोनो बाट नहि पाबय—
प्रश्न उठय—ज्ञानक रूपमे
ओकर अर्थ केना ठाढ़ रहत?
शब्द भले गम्भीर सुनाए,
प्रमाण बिनु की तथ्य कहत?
तत्त्वमीमांसाक ऊँच महल पर
एहि प्रश्नक कठोर हवा बहल;
'सत्ता', 'परम', 'अतीन्द्रिय' कहिते
ज्ञानक प्रमाण अपने नहि भेल।
दर्शनक काम रहस्य रचब नहि,
भाषाक गाँठ खोलब सेहो;
कथन कोन ढंगक दावा करैत,
पहिने से बुझब आवश्यक सेहो।

नैतिक वाक्य जखन हम कहैत छी—
 ‘ई नीक’, ‘ओ अधलाह कर्म’;
 एहि दृष्टिमे तथ्य मात्र नहि,
 भाव-मूल्यक सेहो अछि मर्म।
 स्वीकृति, अस्वीकृति, आग्रह,
 मनक रुख ओतय संग चलय;
 तथ्यक जाँच सँ भिन्न धरातल
 मूल्यक भाषा अपन रंग भरय।
 सौन्दर्यक कथन सेहो तहिना—
 ‘ई रचना सुन्दर’ कहब;
 माप-तौल मात्र सँ की सम्भव
 रसक पूर्ण अर्थ पकड़ब?
 तथ्य आ मूल्यक सीमा
 अलग-अलग देखब चाहथि;
 भाषाक भिन्न काम केँ एकहि
 ज्ञान-दावामे नहि बाँधथि।
 सत्यापनक नियम कठोर लगय,
 मुदा उद्देश्य छल स्पष्टता;
 कथनक अर्थ कतय सँ उठैत,
 कतेक अछि ओकर परीक्षणीयता।
 दार्शनिक यदि शब्द सँ मोहित
 होइ प्रमाणक बाट बिसराय,
 तखन भाषा स्वयं धुन्ध बनि
 मन केँ दूर-दूर भटकाय।
 एहि चिन्तनक प्रश्न सिखबैत—
 ‘अहाँ कहैत छी, जाँचब कोना?’
 ‘ई तथ्य अछि कि परिभाषाक फल?’
 ‘प्रमाण कतय? सम्बन्ध कोना?’
 ई प्रश्न सभ विचारक पहरा,
 दावे केँ सीमा बुझबैत;
 ज्ञानक नम्रता एहि ठाम अछि—
 जे नहि जाँचल, से नहि गढ़बैत।
 अर्थक कसौटी हाथमे राखि
 शब्दक चमक सँ नहि बहकू;
 अनुभव, तर्क आ भाषाक सीमा
 तीनू दिस नजरि फेरि देखू।
 कसौटीक बाट चाहे कठोर,

एकटा अनुशासन देत अपार—
कहब सँ पहिले अर्थ पूछू,
आ अर्थक पाछाँ खोजू आधार।

कण-कणमे भेदक व्याकरण

जगत जखन आँखिक आगाँ खुलल,
प्रश्न उठल—“ककर रूप ई?”
नाम भरि सँ बात नहि सुलझाय,
वस्तुक भीतर कोन स्वरूप ई?
कण-कण, गुण, गति, सम्बन्ध,
सभकेँ वर्गमे राखि बुझायल;
भेदक भीतर नियम खोजैत
वैशेषिकक बाट उजायल।
द्रव्य अछि जे गुण केँ धारण करय,
कर्म जकर भीतर गति जगाय;
गुण स्वयं नहि चलय अकेला,
मुदा वस्तुक पहचान बनाय।
पृथ्वी, जल, तेज, वायु सँ
आकाश, काल, दिशा धरि विस्तार;
आत्मा-मनक सूक्ष्म धरातल—
द्रव्यक जग बनल बहु प्रकार।
रंग, रस, गन्ध, स्पर्श जेनाँ,
संख्या, परिमाण, पृथक्त्व संग;
संयोग-वियोग, इच्छा-द्वेष,
सुख-दुःखो अनुभवक रंग।
गुणक सूची केवल गिनती नहि,
वस्तु कोना चिन्हल जाए;
भिन्न-भिन्न विशेषताक सहारे
ज्ञान अपन सीमा पाबि जाए।
कर्म कहय—स्थिरता अन्तिम नहि,
गति सेहो पदार्थक विधान;
उठब, पड़ब, सिकुड़ब, फैलाब,
चलनमे देखू परिवर्तनक मान।
द्रव्य बिनु कर्म ठाढ़ नहि रहय,
गुण बिनु परिचय अधूर;
वस्तु, गुण आ क्रियाक सम्बन्ध
जगतक चित्र करय भरपूर।

बहु गायमे 'गायपन' जेनाँ,
 बहु वृक्षमे वृक्षत्वक छाप;
 सामान्य जोड़य अनेक रूप केँ,
 विशेष रखय भिन्नताक माप।
 एकहि वर्गक भीतर प्रत्येक
 अपन अस्तित्व सँ अलग रहय;
 एकत्व आ भेदक एहि मेलमे
 वस्तु-जगतक अर्थ खुलय।
 सूत्र आ कपड़ा, गुण आ द्रव्य,
 कतेक सम्बन्ध अलग न होय;
 जे जुड़ल एहन गहिर बन्धनमे
 तोड़िते अर्थक आधार खोय।
 समवाय ओहि नित्य सम्बन्धक
 सूक्ष्म नाम बनि समक्ष आए;
 अवयव-अवयवीक गाँठ बुझाबय,
 रूपक भीतर एकता बतलाए।
 दृश्य देहक पाछाँ सूक्ष्म कण,
 परमाणुक कल्पना जागि उठय;
 अविभाज्य आधारक मेल सँ
 स्थूल जगतक आकार फुटय।
 सूक्ष्म दृष्टि कहैत जेनाँ—
 विशालक जड़ि सूक्ष्ममे खोजू;
 पर्वत, घट, शरीरक पाछाँ
 अनदेखल संरचनाकेँ सोचू।
 ज्ञानक दुआर प्रत्यक्ष खोलय,
 अनुमान दूरक सूत्र पकड़य;
 देखल चिह्न सँ अनदेखल हेतु
 बुद्धिक भीतर अर्थ उभरय।
 मुदा अनुमान मनमाना नहि,
 कारण-संबन्धक नियम चाही;
 प्रमाणक अनुशासन बिनु
 कल्पना सत्यक ठाम नहि पाही।
 कार्य जखन जन्म लैत अछि,
 कारणसँ ओकर नाता पूछू;
 किएक ई रूप एखन उपस्थित,
 ककर मेलसँ बनल—से सोचू।
 समवायी, असमवायी, निमित्त—

कारणक भिन्न धरातल देखू;
एक घटना पाछाँ अनेक शर्त
सूक्ष्म विवेक सँ जोड़ि लेखू।
अभावो केवल रिक्त शून्य नहि,
ज्ञानमे ओकरो चिन्ह रहैत;
‘एतय ई नहि’ कहबाक भीतर
अनुपस्थितिक बोध जगैत।
होएब आ नहि-होएब दुनू पर
विचारक दीप समान पड़य;
भेद-विवेक एतय सिखाबय—
जगत सूक्ष्म प्रश्नसँ स्पष्ट बनय।
कण-कणमे भेदक व्याकरण,
भेदक भीतर सम्बन्धक रीत;
द्रव्य, गुण, कर्मक संग-संग
सामान्य-विशेषक गहिर प्रीत।
सूक्ष्म चिन्तन ई कहैत—
देखल जगकेँ ध्यानसँ पढ़ू;
नामक पाछाँ संरचना खोजू,
आ प्रमाणक बाटँ सत्य धरू।

अपन आचरणसँ राज्य सँवारू

अशान्त समयक धूलि उड़ैत छल,
राज्य-राज्य बीच अविश्वास;
नैतिक विवेक खोजय उपाय—
पहिने मनुष्य बनाउ सुवास।
राजदण्ड सँ नहि टिकत व्यवस्था,
यदि चरित्र भीतर सँ झरि जाए;
शासनक मूल राजमहल नहि,
मानुषक आचरणमे बसि जाए।
गुरु कहथि—देश सँवारब चाही?
पहिने अपन हृदय सँवारू;
अपन घरमे न्याय आ स्नेह,
तखन समाजक दुआर उघारू।
व्यक्ति सँ परिवार, परिवार सँ राज्य,
क्रमेँ फैलय उत्तरदायित्व;
भीतरक अनुशासन बिनु बाहर
खाली रहि जाए सभ सभ्यता।

पाँच सम्बन्धक सूक्ष्म डोरी—
 शासक-प्रजा, पिता-पुत्रक नेह;
 पति-पत्नी, ज्येष्ठ-कनिष्ठ,
 मित्र-मित्रक समान सनेह।
 कर्तव्य एकतरफा नहि हो,
 सम्मानक उत्तर सम्मान;
 ऊपरवाला दयालु बनय,
 नीचाँवाला निभाबय मान।
 'रेन' मनुष्यता केर कोमल ज्योति,
 दोसरा जीवनक मोल बुझब;
 अपन सुखक संग ओकरो सुख,
 अपन अधिकार संग कर्तव्य गुनब।
 जे अपन उन्नति चाहय सचमुच,
 दोसरो लेल बाट बनाबय;
 जकर हृदय व्यापक भ' जाए,
 से समाजक घाव सहलाबय।
 'शू' कहय—दोसरा पर ओ नहि करू
 जे अपने पर सहब नहि चाहू;
 आ जे सद्भाव अपने खोजैत छी,
 ओकर छाया दोसरो दिशि लाउ।
 ई नियम ग्रन्थक भार नहि,
 दैनिक व्यवहारक सरल नाप;
 दोसरा केँ मनुष्य मानब मात्रे
 घटि सकैत अनेक संताप।
 'ली' केवल बाहरी विधि नहि,
 नहि रिक्त अनुष्ठानक खोल;
 व्यवहारमे मर्यादा राखय,
 सभ्यता केँ देत संतुलित बोल।
 विनय, संयम, उचित अवसर,
 ककरा कतेक सम्मान दिअ;
 आचार यदि भीतरसँ सत्य,
 तखन सम्बन्धमे प्राण जिअ।
 शासक यदि लोभक दास बनय,
 कानूनो भयक डंडा मात्र;
 शासक जँ अपने सद्रुण धारण करय,
 प्रजा सीखय ओकर चरित्र।
 उदाहरणक शक्ति आदेशसँ पैघ,

नैतिक प्रभाव दूर धरि जाए;
 एक दिन लेल ठीक आचरणो
 समाजक दिशा बदलि सकय।
 शिक्षा केवल कुलक अधिकार नहि,
 जिज्ञासुक लेल दुआर खुलल;
 पढ़ब, सोचब, फेर अभ्यास—
 तखन ज्ञानक बीज फुलल।
 केवल रटल वचन बिनु विचार
 सूखल पात जकाँ झरि जाए;
 विचार बिनु अभ्यास अधूरा,
 दुनूक संगति बुद्धि जगाए।
 ज्ञानी कहल जाए से नहि
 जे अपन अज्ञान छुपा लेत;
 जे जानैत अछि—‘ई हम जानैत छी’,
 आ ‘ई नहि’—स्पष्ट कहि देत।
 सीखबाक नम्रता जकर भीतर,
 ओहि लेल गुरु सभ ठाम;
 तीन जन संग चलितहुँ कोनो
 एक सँ भेटि सकैत ज्ञान।
 पूर्वजक स्मृति, परिवारक आदर,
 मुदा अन्ध अनुकरण नहि;
 परम्पराक भीतर जीवन खोजू,
 शिष्टता बनय जड़ता नहि।
 समाजक रूप बदलैत रहय,
 मुदा मनुष्यता नहि बिसरू;
 नव समयमे पुरान मूल्यक
 जीवित अर्थ फेर सँ धरू।
 सद्गुणक बाट कहैत—
 राज्यक आरम्भ मनसँ होय;
 मनक आरम्भ सद्गुणसँ,
 सद्गुण व्यवहारमे फल होय।
 अपन आचरणसँ राज्य सँवारू,
 दोसरा प्रति हृदय उघारू;
 मानुष बनबाक कठिन साधनामे
 समाजक भविष्य फेर सँ गढ़ू।

अनुभवक साँचा, कर्तव्यक दीप

सीमित आँखिक समक्ष सेहो
 प्रश्नक आकाश रहय अपार;
 ज्ञान बनैत आखिर कोना—
 अनुभव मात्र कि बुद्धि आधार?
 आँखि जे देखय, मन जे जोड़य,
 दुनूक संगममे जग खुलैत;
 जाननिहारो चुप दर्शक नहि,
 अनुभवक रूपमे अंश मिलैत।
 बाह्य जगक तरंग अनेको,
 इन्द्रियक दुआर सँ भीतर आए;
 मुदा मन अपन पूर्व-साँचा बिनु
 ओहि बिखरल धारा केँ नहि सजाए।
 स्थान आ काल जेनाँ दू चौकट,
 जाहिमे अनुभव आकार धरय;
 घटना, दूरी, पहिले-पाछाँ—
 बोधक भीतर क्रम सँ उभरय।
 बुद्धि फेर श्रेणीक सूत्रसँ
 देखल वस्तु केँ सम्बन्ध दैत;
 एकता, कारण, सम्भावना,
 नियमक डोरीमे जग बन्हैत।
 अनुभव कच्चा सामग्री जकाँ,
 बुद्धि ओकर रूप-संयोजक;
 ज्ञान न बाहरक नकल मात्र,
 नहि मनक अकेला कल्पक।
 जे हमरा समक्ष प्रकट होइत,
 से प्रपञ्चक उपलब्ध रूप;
 मुदा वस्तु अपनेमे की अछि—
 ओतय थमि जाए ज्ञानक धूप।
 सीमा बुझब कमजोरी नहि,
 बुद्धिक ई आत्म-अनुशासन;
 जे नहि जानि सकी, तकरा पर
 नहि गढ़ी दम्भक महल-विधान।
 किछु सत्य अनुभवसँ पहिले
 बुद्धिक भीतर शर्त बनल;
 आ किछु ज्ञान अनुभव जोड़ि
 नव अर्थक विस्तार करल।

प्रश्न उठय एहि संगम पर—
नव ज्ञान सम्भव केना होय?
मनक नियम आ जगक सामग्री
एक-दोसर सँ कोना जुड़ि सोय?
मुदा ज्ञानक पाछाँ उठल प्रश्न—
‘नीक कर्मक मूल कतय?’
फल, डर, लालच यदि हटि जाए,
कर्तव्यक स्वर तखन की कहय?
नैतिक मन अपनहि भीतर
एक सार्वभौम नियम खोजय;
जे नियम अपने लेल चाही,
सभ पर लागू हो सकय।
मनुष्य साधन मात्र नहि,
प्रत्येक स्वयं उद्देश्य महान;
ककरो इच्छा, श्रम, सम्मान
नहि बनाउ केवल अपन सामान।
स्वायत्त इच्छा जखन नियम देत,
तखन नैतिकता भीतर सँ जागय;
बाहरी दबावक डर सँ नहि,
सम्मानित कर्तव्य पथ बनाय।
स्वतन्त्रता मनमानी नहि,
नियमहीन इच्छा नहि अधिकार;
नैतिक स्वाधीनता कहल जाए
जखन विवेक बनय पथ-द्वार।
कर्तव्य मानब दासता नहि,
यदि नियम अपन बुद्धिसँ मानल;
अपन कर्मक उत्तरदायित्व
स्वतन्त्र चेतनाक साँच आँचल।
व्यक्ति जँ अधिकारक अधिकारी,
दोसरो लेल ओहि अधिकारक मान;
तखन राज्यक विधि एहन हो,
जतय स्वतन्त्रता पाबय स्थान।
कानूनक लक्ष्य भय नहि केवल,
समान स्वाधीनताक रखवार;
शासनक वैधता ओतहि जागय,
जतय नागरिक नहि हो गुलाम।

राष्ट्र यदि केवल युद्धक भाषा
 सीखत रहय पीढ़ी-दर-पीढ़ी,
 शान्ति बनत विरामक क्षण,
 फेर उठत शस्त्रक नूतन भीड़।
 स्वप्न—नियमबद्ध सम्बन्ध,
 राष्ट्र परस्पर उत्तरदायी;
 स्थायी शान्ति न्यायसँ फूटय,
 नहि केवल युद्धक थकान समाई।
 तारामय नभ ऊपर पसारल,
 भीतर नैतिक विधिक स्वर;
 दुनू समक्ष मनुष्य ठाढ़,
 सीमितो, मुदा उत्तरदायी नर।
 अनुभवक साँचा, कर्तव्यक दीप—
 कर्तव्यक पथ ई बात सिखाय:
 ज्ञानक सीमा पहचानू नम्रतासँ,
 आ कर्ममें मानव-मर्यादा बचाय।

अर्थक नक्शा, भाषाक अनुशासन

शब्दक भीड़सँ उठल प्रश्न—
 कहबाक अर्थक कोन आधार?
 एहन भाषा चाही जतय
 धुन्ध नहि, स्पष्ट हो विचार।
 गणित, भौतिकी, तर्कक संग
 कथनक सीमा फेर सँ नापल;
 शब्दक चमक पर मोहित नहि,
 अर्थक ढाँचा भीतर सँ जाँचल।
 कथन कहैत छी—ठीक, मुदा
 ओकर अर्थ कतय सँ आए?
 अनुभवक कोन सम्भावित बाट
 ओहि वचन केँ जाँचि सकाए?
 जे कहब जगक तथ्यक बारे,
 किछु प्रमाणक दिशा बताबय;
 अर्थ जँ अनुभवसँ सर्वथा कटि जाए,
 दावा हवा जकाँ भटकैत जाए।
 आरम्भमे कसौटी कठोर छल—
 सत्यापनक माँग कठोर;
 जे वाक्य अनुभवमे उतरि नहि सकय,
 ओ ज्ञानक ठाम पाबय कोर?

मुदा विज्ञानक भाषा व्यापक,
सभ कथन तुरन्त नहि जाँचल जाए;
तैं पुष्टियोग्यताक खुलल बाट
संभावित प्रमाणक दिशा देखाए।
प्रेक्षणक सरल वाक्य बनल
जाँचक पहिल ठोस जमीन;
रंग, घटना, माप आ गति—
अनुभवक निकटतम चिन्ह।
दूरक सिद्धान्त यदि अर्थवान,
तखन किछु नियमक सेतु बनाय;
प्रत्यक्ष वाक्य धरि ओकर नाता
रूपान्तरणक पथ सँ आए।
परिभाषा सभ समय पूर्ण नहि,
विज्ञान बढ़ैत, भाषा बदलय;
कखनो सम्बन्ध आंशिक होइत,
तैयो शोधक काम नहि रुकय।
कठोर 'सभ वा किछु नहि' छोड़ि
सूक्ष्म दृष्टि अपनाबय;
जतेक प्रमाण सम्भव हो जगमे,
ततेक धरि कथनक अर्थ नापथि।
किछु वाक्य तथ्यक खबर नहि देत,
तैयो निरर्थक नहि ठहराय;
तर्कक नियम, गणितक विधान
अपन संरचनासँ मान पाबय।
ओकर अनिवार्यता जगक घटना नहि,
भाषिक नियमक अनुशासन;
सत्य-असत्यक भिन्न धरातल
चिन्हि सकय विश्लेषक मन।
तत्त्वमीमांसाक विराट शब्द
जखन प्रमाणसँ दूर उड़ैत;
'परम', 'अन्तिम', 'अदृश्य सत्ता'
कतेक बेर भाषा भ्रम गढ़ैत।
प्रश्न उठय—वाक्यक उपयोग
कोन अनुभव वा तर्कमे बान्हल?
यदि कोनो कसौटी भेटत नहि,
तैं विवाद कदाचित् शब्दमे फान्हल।

दर्शन तखन राजसिंहासन नहि,
 नहि जग पर अंतिम आदेश;
 ओ भाषा-विचारक विश्लेषण,
 कथनक भेद बुझाबय विशेष।
 समस्याक गाँठ कखनो वस्तुमे नहि,
 अस्पष्ट शब्दक मेलमे होय;
 ठीक व्याकरण, स्पष्ट परिभाषा
 बहु झगड़ा अपने सँ धोय।
 आदर्श भाषा एकटा सपना—
 जतय नियम सभ स्पष्ट रहय;
 सरल आ जटिल वाक्यक सम्बन्ध
 तार्किक रूपेँ खुलल देखाय।
 कुन वाक्य अनुभवक दूत,
 कुन केवल संरचनाक नियम—
 एहि भेदक संग चिन्तन पाबय
 नव अनुशासन, नव संयम।
 वैज्ञानिकता एकरूपता नहि,
 मुदा साझा जाँचक अनुशासन;
 भिन्न विषयक कथनसभ बीच
 हो सकय तार्किक सम्बन्ध।
 ज्ञानक भाषा जतेक स्पष्ट,
 ततेक संवाद अधिक सुगम;
 विभिन्न विज्ञानक बीचक दूरी
 कम करय साझा प्रमाणक क्रम।
 एहि शिक्षाक अर्थ ई नहि मात्र
 जे कविता-सपनाकेँ छोड़ि दिअ;
 ओ कहथि—ज्ञानक दावा करैत
 अर्थक जिम्मेदारी लिअ।
 कहू, कोना जाँचब? कोना समझब?
 कतेक प्रमाण सँ बात टिकत?
 अर्थक नक्शा हाथमे राखि
 तखनहि विचार स्पष्ट दिपत।

प्रतीकक जग, मनुष्यक अर्थ

जगत आँखि समक्ष एतबे नहि,
 जतेक रंग-आकार देखाइत;
 मन सेहो अर्थक सूत्र बुनैत,
 अनुभव केँ रूप प्रदान करैत।

प्रश्न उठय—ज्ञान की केवल
बाहरक छवि मनमे उतारब?
कि मनुष्य अपन बुद्धि-संरचनासँ
जगतक अर्थ नित नव सँवारब?
वस्तु कै स्थिर गोटा मानि
अन्तिम सार पकड़ब कठिन;
सम्बन्ध, क्रम, प्रकार्यक जालमे
ज्ञानक गति होइत अधिक नवीन।
एक तथ्य दोसरासँ कोना जुड़ल,
ककर स्थान ककर सापेक्ष?
सम्बन्धक दृष्टि कहय—
बुझाइत अछि जगतक विशेष।
संख्या, नियम, वैज्ञानिक सूत्र
केवल वस्तुक नाम नहि होय;
ओ सम्बन्धक रूप सँ जग कै
बुद्धिक व्यवस्थित नक्शा दय।
ज्ञान जँ केवल नकल रहितै,
नव सिद्धान्त जन्मित केना?
मन रचनात्मक सहभागी अछि—
अनुभवक अर्थ बनैत एना।
मुदा मनुष्य विज्ञानहि मात्र नहि,
ओ भाषा बोलय, कथा रचय;
मिथक, स्मृति, कला, धर्मक माध्यम
अपन संसारक अर्थ गढ़य।
प्रत्येक रूप अपन ढंग सँ
अनुभव कै आकार प्रदान;
एकहि जग अनेक प्रतीक-दुआर,
सभक अपन नियम, अपन विधान।
भाषा केवल वस्तुक लेबल नहि,
शब्द अनुभवक दिशा बदलय;
नाम देतहि अनाम भावो
मानवीय जगमे रूप सँ फलय।
वाक्यक भीतर सम्बन्ध बनैत,
स्मृति पीढ़ीसँ पीढ़ी चलय;
भाषा मनुष्यक साझा गृह जकाँ,
जतय संस्कृति अपन स्वर पलय।

मिथक अज्ञानक धूलि मात्र नहि,
 मानव-चेतनाक प्राचीन भोर;
 भय, आशा, प्रकृति, देवक कथा
 अर्थक पहिल प्रतीक-द्वार।
 तर्कक युग आबि ओकर सीमा
 जाँचि सकैत अछि निश्चय;
 मुदा मिथकमे मनुष्यक इतिहासक
 एक गहिर मानसिक लय।
 कला नहि तथ्यक प्रतिलिपि,
 नहि उपयोगक दास बनल;
 रेखा, रंग, स्वर, कथा द्वारा
 अनुभवक नूतन रूप खुलल।
 कलाकार जग केँ फेर देखबैत,
 जे साधारण दृष्टिसँ छुटि जाए;
 प्रतीकक स्वतन्त्र संरचनामे
 जीवन अपन गूढ़ अर्थ पाबय।
 विज्ञान मापय, भाषा कहय,
 मिथक प्रतीक सँ भय बुझाबय;
 कला अनुभव केँ दृश्य बनाबय,
 इतिहास समयक सूत्र मिलाबय।
 एक-दोसरकेँ नष्ट नहि करथि,
 मानव-संस्कृतिक भिन्न रूप;
 बहुल प्रतीकक एहि विस्तृत वनमे
 चेतना खोजय अपन स्वरूप।
 मनुष्य केवल जैविक प्राणी नहि,
 प्रतीकक जगमे ओकर वास;
 चिह्न, कथा, नियम, मूल्यक संग
 बनैत अछि मानवीय प्रकाश।
 जतय पशु तत्काल पर्यावरणमे,
 मनुष्य अर्थक मध्यस्थता लय;
 भाषा-संस्कृतिक दूर क्षितिज धरि
 अपन अनुभव विस्तारि दय।
 स्वतन्त्रता केवल बन्धन तोड़ब नहि,
 अर्थ रचबाक क्षमता सेहो;
 जतय विवेक प्रतीक केँ जाँचय,
 ओतय मानव गरिमा रहय सेहो।
 मुदा राजनीतिक मिथक जखन

भय कै नारा बनि फुसलाय,
तखन प्रतीक मुक्ति नहि रहि
जन-चेतना कै बन्धन लगाय।
तैं प्रतीकक शक्ति बुझू सजग,
नहि हरेक कथा कै सत्य मानू;
नहि विज्ञानहि एकमात्र भाषा,
नहि मिथकक सम्मुख माथ झुकाउ।
प्रतीकक बाट सिखबैत अछि—
अर्थ मनुष्यक जीवित काज;
प्रतीकक जगमे विवेक जरा कऽ
स्वतन्त्र बनाउ संस्कृति-समाज।

चुनावक क्षण, आस्थाक छलाँग

भीड़ कहय—“एहि बाट चलू”,
व्यवस्था कहय—“सभ अर्थ तय”;
भीतरक स्वर पूछय धीरे—
“हम अपने कोन ठाम पर ठय?”
जीवन कोनो नापल नक्शा नहि,
जतय उत्तर पहिले सँ लिखल;
व्यक्ति अपन निर्णयक अग्निमे
अपन अस्तित्व स्वयं करय दृढ़।
दर्शन यदि एतेक विशाल हो
जे जीवित मनुष्य ओझराय;
सूत्रक महल ऊँच बनैत-बनैत
व्यक्तिक रुदन कतय सुनाय?
समग्र प्रणाली सभ बुझाबय चाहय,
मुदा जीवन क्षणमे निर्णय माँगय;
विचार आ जीवनक बीचक दूरी
साँच प्रश्न बनि समक्ष जागय।
सत्य केवल दूरक वस्तु नहि,
जकरा ठण्डा बुद्धि सँ नापी;
किछु सत्य एहन होइत अछि
जकरा जीबि कऽ मनमे व्यापी।
आत्मनिष्ठता छल नहि एतय,
नहि तथ्यक मनमाना विकार;
ई त’ अपन सम्पूर्ण अस्तित्वसँ
सत्य प्रति जीवित स्वीकार।

चुनाव करैत छी—तखनहि हम
 अपन जीवनक भार उठबैत;
 “सभ परिस्थिति दोषी छल” कहि
 उत्तरदायित्व नहि मिटैत।
 स्वतन्त्रता मधुर गीतो अछि,
 मुदा संगमे कम्पनक राति;
 अनन्त सम्भावनाक खुलल दुआर
 चिन्ताक गहिर हवा बहबैत।
 चिन्ता केवल रोग नहि सदिखन,
 स्वतन्त्रताक छाया सेहो;
 जखन सम्भव बाट हजार खुलय,
 मन काँपय—“कुन राहि लेब हम एहो?”
 चुनाव टारबो एकटा चुनाव,
 मौन रहबो निर्णय बनि जाए;
 अस्तित्वक ई तीक्ष्ण घड़ीमे
 मनुष्य अपन रूप बनाय।
 पहिल जीवन सौन्दर्यक लयमे—
 क्षण, आनन्द, नवता, रंग;
 इच्छा दौड़य एक सुखसँ दोसर,
 स्थिर उत्तरदायित्व नहि संग।
 क्षणिक चमक जतेक बढ़ैत जाए,
 भीतर रिक्तता जागि सकय;
 मन बुझय—केवल सुखक पीछाँ
 जीवनक पूर्ण अर्थ नहि रहय।
 तखन नैतिक दुआर उघड़य—
 कर्तव्य, वचन, प्रतिबद्धता;
 “हम कोन मनुष्य बनब?” प्रश्न
 माँगय चरित्रक निरन्तरता।
 चुनाव केवल आइक इच्छा नहि,
 अपने केँ चुनब दीर्घकाल;
 नियम, सम्बन्ध, उत्तरदायित्व
 जीवनमे देत गहिर आधार।
 मुदा नैतिकता सेहो अन्त नहि,
 जतय मनुष्य अपन सीमा देखय;
 दोष, असफलता, असमर्थताक
 भीतर आत्मा काँपि उठय एकेएक।
 धार्मिक स्तर तखन प्रश्न उठाबय—

की ईश्वर केवल सिद्धान्तक नाम?
कि व्यक्तिक एकान्त सम्बन्धमे
आस्था बनय जीवनक काम?
विश्वास गणितक निष्कर्ष नहि,
नहि प्रमाणक अन्तिम सीढ़ी;
कखनो बुद्धिक सीमा पर ठाढ़
मन देखय अनिश्चितता गहीरी।
तखन छलौंग अन्धता नहि मात्र,
अपन सम्पूर्ण अस्तित्वक दाँव;
जतय सुरक्षा सम्पूर्ण भेटैत नहि,
तैयो विश्वास चुनय अपन ठाँव।
नैतिक सामान्यता सँ परे जखन
उठय अन्तरतम कठिन प्रश्न;
व्यक्ति आ परमक बीचक सम्बन्ध
बनय विचित्र, भयावह स्पन्दन।
एहि गहिर तनावक भीतर
आस्था नहि आरामक घर;
ई त' भय आ कम्पनक बीचो
अन्तरतम निर्णयक स्वर।
निराशा ओहि क्षण जन्म सकय
जखन “हम” अपने सँ भागय;
जे छी से स्वीकार नहि करय,
जे नहि छी, से बनबाक आगि लागय।
स्व-स्वरूपक सत्य सम्बन्ध
अपने सँ, आ परमसँ जुड़ल;
आत्म-विसंगतिक गाँठ खुलिते
भीतरक जीवन होय नूतन गढ़ल।
भीड़मे नाम गुम करब सरल,
एकान्तमे अपने सँ भेट कठिन;
मुदा साँच अस्तित्व ओतहि जागय
जतय निर्णय होय अपन, सजग, नवीन।
अस्तित्वक पथ कहैत अछि—
जीवन केँ केवल व्याख्या नहि बनाउ;
चुनावक क्षणमे जिम्मा स्वीकारू,
आ सत्य केँ अपने भीतर जिआउ।

प्रमाणक छह दीप

मीमांसाक दीर्घ परम्परामे
 एक तेजस्वी प्रश्न उठल;
 कर्म, वेद, जग आ ज्ञानक
 सूत्र पुनः विचारमे जुटल।
 यथार्थक स्वर कहय—जगत जे देखी,
 ओ केवल मनक छाया नहि;
 बाहरक वस्तु अपन ठाम अछि,
 ज्ञान ओकरा सँ सर्वथा जुदा नहि।
 वस्तु अनेक, रूप अनेक,
 गुण-कर्म-संबन्धक विस्तार;
 सामान्यक संग विशेषक रेखा
 बनबैत अनुभवक संसार।
 जतय जे अछि, ओकर स्वभाव
 बोधक सम्मुख धीरे खुल्य;
 यथार्थ केँ मिथ्या कहि देलासँ
 प्रमाणक आधार नहि बचय।
 पहिल दीप प्रत्यक्षक उजास—
 इन्द्रिय जखन विषय सँ भेटय;
 रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, ध्वनि
 चेतनामे परिचय देत।
 पहिल बोध कखनो अनिर्वचनीय,
 फेर नाम-रूप स्पष्ट होय;
 अनुभवक एहि क्रममे ज्ञान
 अस्फुट सँ निश्चित दिशि सोय।
 दोसर दीप अनुमानक बाट,
 देखल चिह्नसँ अदृश्य धरू;
 धुँआ उठल तँ अग्निक सम्भाव
 संबन्धक नियम सँ मनमे भरू।
 मुदा कल्पना नहि अनुमान,
 हेतु-संबन्धक चाही प्रमाण;
 जतय व्याप्ति भरोसामन्द,
 ओतहि निष्कर्ष पाबय मान।
 तेसर दीप उपमानक सेतु—
 समानतासँ नव वस्तु चिन्ह;
 पहिने सुनल रूपक संकेत
 नव भेटमे फेर सँ गुनू।

जे अनजान छल, परिचित बनल
 तुलनाक सूक्ष्म सहारे;
 ज्ञानक एहि सहज प्रक्रियामे
 भाषा अनुभव संग निहारे।
 चौठम दीप विश्वसनीय शब्द,
 जतय वाणी ज्ञानक पथ बनय;
 विशेषतः वेदक अधिकार
 मीमांसक दृष्टिमे दृढ़ रहय।
 शब्द मात्र ध्वनि नहि एतय,
 अर्थसँ ओकर नित्य सम्बन्ध;
 परम्पराक स्मृति आ विधि भीतर
 वाक्य धरय ज्ञानक अनुबन्ध।
 पाँचम दीप अर्थापत्ति—
 जखन तथ्य दू एक संग नहि मेल;
 अनकहल शर्त मानि बुद्धि
 समस्या केर गाँठ खोलय खेल।
 दिन भर उपवासक दावा हो,
 तैयो देह पुष्ट देखाइ;
 रातिक भोजनक मान्यता जेनाँ
 असम्भवता सँ अर्थ उघारि आइ।
 छठम दीप अनुपलब्धि—
 नहि देखबो कखनो ज्ञान बनय;
 'एतय घट नहि' कहबाक हेतु
 रिक्त स्थान स्पष्ट बतय।
 अभाव शून्यक अन्धकार नहि,
 अनुपस्थितियो अनुभवक अंग;
 होएब-जकाँ नहि-होएब सेहो
 बोधक भीतर पाबय रंग।
 ज्ञान अपन सत्यता कोना पाबय?
 ई प्रश्नो उठैत संग;
 बोध उठिते विश्वसनीय मानल,
 जाबत दोष नहि करय भंग।
 भ्रम जखन पाछाँ चिन्हल जाए,
 तखन पहिल दावा खण्डित होय;
 सत्यता हरेक क्षण बाहरक मोहर
 माँगि-माँगि मात्र नहि सोय।

वेदक विधि, कर्मक अनुशासन,
 मात्र अनुष्ठानक भार नहि;
 मानुषक कर्तव्यक विवेचन,
 जीवनसँ ओकर दूरी नहि।
 धर्मक ज्ञान प्रत्यक्ष सभ ठाम
 आँखि सँ धरि केँ भेटत नहि;
 शब्द-प्रमाणक विशेष भूमिका
 एहि कारण मीमांसामे घटत नहि।
 तर्क, अनुभव, शब्द, तुलना,
 अनुमान, अर्थापत्ति, अभाव—
 छह दिशि सँ ज्ञानक आकाश
 खोजय सत्यक अलग-अलग भाव।
 प्रमाणक शिक्षा कहैत जेनाँ—
 एकहि दुआर सँ जग नहि पढ़ू;
 प्रमाणक छह दीप हाथमे लऽ
 विवेकक राहि सँ अर्थ पकड़ू।

अनुभवक धरती पर समाजक विज्ञान

उथल-पुथल समयक बीच
 ज्ञान खोजय अपन ठोस ठाम;
 कल्पनाक ऊँच धुन्धि छोड़ि
 अनुभवमे खोजय सत्यक नाम।
 जे देखल जा सकय, जाँचल जा सकय,
 ओहि पर विचारक घर बनाउ;
 घटनाक पाछाँ गुप्त रहस्य नहि,
 नियमक सम्बन्ध चिन्हि बताउ।
 प्रत्यक्षवाद कहय—ज्ञानक बाट
 निरीक्षणक धरती सँ चलय;
 अनुभव, तुलना, परीक्षण द्वारा
 घटनाक क्रम धीरे खुलय।
 “किएक”क अन्तिम रहस्य छोड़ि
 “कोना”क नियम पहिने बुझू;
 जगतक चाल मापि-सोचि
 सत्यक सीमा सावधानीसँ चुनू।
 मानव-बुद्धि एकहि दिनमे
 विज्ञानक उजास धरि नहि आयल;
 तीन अवस्था पार करैत
 चिन्तनक इतिहास आगाँ धायल।

पहिने देव-शक्ति सँ घटना बुझल,
 फेर अमूर्त बलक नाम धरल;
 अन्ततः प्रत्यक्ष नियमक खोजमे
 मन अनुभवक पथ पर उतरलक।
 धार्मिक अवस्थाक भीतर सेहो
 रूप बदलैत क्रम आगाँ बढ़ल;
 वस्तुमे चेतन शक्ति मानल,
 बहु देव, फेर एक ईश्वरक बल।
 मानव जतेक प्रश्न सँ भिड़ल,
 ततेक व्याख्याक ढाँचा बदलल;
 एहि दृष्टिमे ई इतिहास
 बुद्धिक क्रमिक विकास बनल।
 मध्य अवस्था अमूर्त शक्तिक,
 “स्वभाव”, “तत्त्व”, “सार”क बोल;
 देवक ठाम विचारक संज्ञा,
 मुदा अनुभवसँ दूरी अनमोल।
 ई सेहो एकटा सेतु रहल,
 पुरान सँ नव दिशि लेनिहार;
 मुदा अंतिम ठाम ओ नहि,
 जाँच योग्य नियम बनल रखनिहार।
 सकारात्मक अवस्था कहैत—
 घटना बीच सम्बन्ध निहारु;
 पूर्वापर क्रम, सह-अस्तित्व,
 नियमक सूत्र ध्यानसँ धारु।
 अन्तिम कारणक दम्भ छोड़ि
 जे उपलब्ध अछि, तकर मान;
 सीमित ज्ञानो दृढ़ हो सकैत,
 जँ प्रमाणक संग रहय पहचान।
 विज्ञानसभ एकहि साँचा नहि,
 सरल सँ जटिल क्रम बनैत;
 गणितक आधार, नभक गणना,
 भौतिक जग सँ रसायन चलैत।
 जीवनक विज्ञान फेर आगाँ,
 अन्तमे समाजक कठिन अध्ययन;
 प्रत्येक क्षेत्र अपन नियम लय,
 मुदा सभमे अनुभवक अनुशासन।

समाजो केवल भीड़ नहि,
 ओकरो संरचना, नियम आ चाल;
 परिवार, श्रम, संस्था, सहकार,
 सभ मिलि बनबैत सामाजिक जाल।
 एहि कारण समाज-विज्ञानक
 अलग आवश्यकता समक्ष आयल;
 मानव सम्बन्धक अध्ययन केँ
 वैज्ञानिक बाट एतय देखायल।
 सामाजिक स्थैतिकी पूछय—
 व्यवस्था कोना टिकि रहैत?
 कुन सम्बन्ध समाजक अंग केँ
 एक-दोसरासँ जोड़ि रखैत?
 परिवार, भाषा, श्रम-विभाजन,
 साझा विश्वासक बन्धन कतेक;
 समाजक देहमे एकता कोना,
 ई प्रश्नक सूत्र अनेक।
 सामाजिक गतिशीलता फेर
 परिवर्तनक इतिहास पढ़य;
 युग सँ युग विचार बदलैत,
 संस्था नव परिस्थिति संग गढ़य।
 प्रगति यदि केवल नारा हो,
 ओकर आधार रहत अधूर;
 क्रमिक विकासक नियम बुझि
 सुधारक बाट बनत भरपूर।
 ज्ञानक लक्ष्य केवल जानब नहि,
 समाजक जीवन सँ ओकर नात;
 व्यवस्था बिनु प्रगति अन्ध,
 प्रगति बिनु व्यवस्था मात।
 स्वप्न—विज्ञानक आलोक
 मानव कल्याण दिशि बढ़ि जाए;
 अनुभवक धरती पर समाजक विज्ञान
 उत्तरदायी भविष्य बनाय।

राज्यक मूल प्रजाक हित

राज्य केवल मुकुटक चमक नहि,
 नहि राजदण्डक एकल मान;
 धानक खेत, नगरक बजार,
 सीमाक रक्षा, न्याय-विधान।

सूक्ष्म दृष्टि शासन भीतर
जीवनक असंख्य सूत्र जुड़ल;
राजनीति जँ प्रजासँ कटि जाए,
तँ राजमहल भीतरसँ उजड़ल।
अर्थशास्त्र नाम सुनिते मात्र
धनक हिसाब बुझब नहि चाही;
राज्य, नीति, अर्थ, सुरक्षा,
प्रशासन सभ एकहि राहि।
व्यवस्था कोना टिकि सकैत,
कोना संकट दूर हटाय;
शासनक विविध अंग मिलि
सम्पूर्ण राज्यक देह बनाय।
पुरान आचार्यक मत समेटि
नव विवेकक संग करल विचार;
परम्पराक पाँति अन्हर नहि,
प्रयोगक कसौटी मुख्य आधार।
जे नियम समयक काम न आबय,
ओकर फेर परीक्षण हो;
व्यवहारक बुद्धि पुस्तक भीतर
जीवित व्यवहारक संग हो।
ज्ञानक शाखा अलग-अलग हो,
मुदा शासनमे सभक प्रयोजन;
विचार, धर्म, अर्थ, दण्डक
संतुलन सँ चलय आयोजन।
निर्णय केवल आवेग नहि,
सूचना, तर्क आ समयक ज्ञान;
राजकर्मक एक-एक पगमे
दूरदृष्टिक होय पहिचान।
राजा यदि अपने सुखमे डूबय,
प्रजाक दुःख ओकरा नहि छूय;
तखन सत्ता अपन आधार गमाय,
विश्वासक मूल धीरे सूखि जूय।
शासनक हित प्रजाक हितसँ,
एहि सूत्रमे निहित सम्बन्ध;
सिंहासनक स्थिरता आखिर
लोककल्याणक संग अनुबन्ध।

मन्त्री, अधिकारी, कोष, सेना,
 सभ पर चाही सजग निगाह;
 कर्तव्यक सीमा स्पष्ट रहय,
 लेखा-जाँचक खुलल राह।
 भ्रष्ट लोभ जँ भीतर घुसि जाए,
 राज्यक देह बीमार बनय;
 अनुशासन आ उत्तरदायित्व
 प्रशासनक श्वास सन चलय।
 कोष भरल हो, मुदा अन्यायसँ,
 तँ समृद्धि टिकि नहि पाबय;
 उत्पादन, व्यापार, कर-व्यवस्था
 संतुलन माँगय, नीति बताबय।
 कृषि, शिल्प, मार्ग, भण्डार,
 सभ आर्थिक जीवनक अंग;
 राज्यक शक्ति केवल युद्ध नहि,
 अन्न आ श्रमसँ बनैत रंग।
 दण्डक अर्थ अन्ध प्रहार नहि,
 नहि भयक शासन सर्वोपाय;
 अनुशासन, न्याय आ सुरक्षा
 एहि त्रिभुजमे दण्ड समाय।
 अति कठोरता रोष जगाबय,
 अति शिथिलता अव्यवस्था;
 मापित नीति सँ चलब आवश्यक,
 तखन टिकत सामाजिक संस्था।
 संकट आबय भीतर-बाहर,
 शत्रु, दुष्काल, विघटन, भय;
 राजकर्मक परीक्षा तखन,
 जखन सहज उपाय नहि रहय।
 समयक चाल बुझि निर्णय लिअ,
 सन्धि-विग्रहक अर्थ विचार;
 बलक संग बुद्धिक उपयोग,
 एहि सँ सुरक्षित होय द्वार।
 समाज अनेक वृत्ति सँ बनल,
 अनेक वर्गक भिन्न दाय;
 व्यवस्था तखन सार्थक होइत,
 जखन सभकेँ जीवनक ठाम मिलाय।
 धर्म आ व्यवहारक सीमामे

शासन खोजय संतुलित पथ;
राज्यक नियम यदि लोकविरोधी,
तँ अस्थिर होय ओकर रथ।
शासन-विवेक ई कहैत—
नीति केवल चालाकी नहि;
सत्ता केवल विजयक भूख नहि,
अर्थ केवल धनराशि नहि।
राज्यक मूल प्रजाक हितमे,
प्रजाक हित सुशासनक मान;
दूरदृष्टि, न्याय, अर्थ-विवेकसँ
टिकि सकैत सभ्य राज्य-विधान।

अनुभूतिक रूप, इतिहासक स्वतन्त्रता

समयक हलचल, दुःखक बीच
चिन्तन खोजय अपन घर;
जीवन केवल भोग नहि रहय,
प्रश्नमे फेर सँ पाबय स्वर।
इतिहास, कला, ज्ञान आ कर्म—
सभ एक-दोसर सँ जुड़ल राह;
अनुभवक राख सँ विचार उठय,
जेनाँ अन्हारमे नव प्रभात।
ओ कहथि—मन केवल दर्पण नहि,
जगतक छवि निष्क्रिय नहि लेत;
चेतना अपन जीवित क्रियासँ
अनुभव केँ रूप आ अर्थ देत।
देखल वस्तु तखनहि मानवीय,
जखन भीतर ओकर रूप उभरय;
ज्ञानक जन्म बाह्य आ अन्तः
दुनूक जीवित मिलन सँ करय।
कला पहिने नियमक पिटारी नहि,
नहि तर्कक सूखल परिभाषा;
कला अछि सहज अनुभूतिक रूप,
मनक भीतर जागल भाषा।
चित्र, गीत, कविता वा कथा—
पहिने भाव एक रूप बनय;
अभिव्यक्ति आ अनुभूति दू नहि,
एकहि क्षणमे अर्थ जनमय।

कलाकार जखन साँचो देखैत,
 ओ केवल वस्तु नहि उतारय;
 भीतर उठल अनोखा बिम्ब केँ
 स्वर-रेखा-शब्दमे साकारय।
 अभिव्यक्ति सफल तखन मानू,
 जखन अनुभूति पूर्ण आकार;
 नकल मात्र कला नहि बनैत,
 रचना माँगय अन्तरक संसार।
 सौन्दर्य बाहरक सजावट नहि,
 नहि केवल मापल अनुपात;
 जीवित अभिव्यक्तिक पूर्णतामे
 ओकर गूढ़ सौन्दर्यक बात।
 भद्दरता तखन टूटल अभिव्यक्ति,
 जतय रूप अपन भाव नहि धरे;
 सुन्दरता ओतय जन्म लैत,
 जतय भीतर-बाहर एकसंग भरे।
 कला पाछाँ तर्कक क्षेत्र,
 जतय अवधारणा रूप धारण करय;
 विशेष अनुभव सँ उठि बुद्धि
 सामान्य सम्बन्धक सूत्र धरय।
 अन्तर्ज्ञान कहय—“ई रूप एहन”,
 तर्क पूछय—“एहि वर्गक अर्थ?”
 दुनू विरोधी नहि, क्रमिक क्रिया,
 चेतनाक दू अलग-अलग पथ।
 ज्ञानक पाछाँ क्रियाक जग,
 जतय इच्छा निर्णय बनैत;
 पहिने उपयोग, साधन, लाभक
 आर्थिक विवेक बाट देखैत।
 कुन उपाय सँ लक्ष्य भेटत,
 कतेक साधन उचित ठहरत;
 व्यावहारिक बुद्धिक एहि धरातल
 जीवन अपन पग चुनत।
 मुदा लाभहि अंतिम नियम नहि,
 नैतिक क्रिया पूछय आर प्रश्न—
 व्यक्तिगत हितक पारि कतय
 सर्वमानवीय मूल्यक स्पन्दन?
 कर्तव्य जखन व्यापक हितसँ जुड़य,

मन अपन सीमा पार करय;
स्वार्थक गणना पाछाँ छोड़ि
नैतिक चेतना उजास भरय।
अनुभूति, तर्क, उपयोग, नीति—
चेतनाक चारि जीवित चाल;
एकहि आत्मिक जीवन भीतर
प्रत्येकक अपन क्षेत्र विशाल।
कोनो एक केँ सभ पर थोपलासँ
मानवीय अनुभव टूटि जाए;
भिन्न क्रियाक स्वतन्त्र मर्यादा
समग्र जीवन संतुलित बनाए।
इतिहास मृत तिथिक ढेरी नहि,
वर्तमानक प्रश्नसँ जागल स्मृति;
जखन बीतल घटना फेर बुझैत छी,
ओ बनैत अछि जीवित वृत्ति।
इतिहासकार केवल प्रतिलिपिकार नहि,
ओ अर्थक सम्बन्ध पहचानय;
अतीतक आवाज वर्तमान भीतर
नव प्रश्नक संग फेर सुनाय।
स्वतन्त्रता केवल राजनैतिक शब्द नहि,
इतिहासक जीवित नैतिक धार;
जतय मनुष्य दमनक विरुद्ध
अपन गरिमा खोजय बारम्बार।
एहि चिन्तनक स्वर याद दिलाबय—
कला हो, ज्ञान हो, कर्मक बाट;
अनुभूतिक रूप सँ इतिहास धरि
मनुष्य रचैत अपनहि प्रभात।

अनुभवक किनार पर विश्वासक जाल

ज्ञानक घर कोनो किला नहि,
जकर ईंट सदा अचल रहय;
ई तऽ जाल जकाँ चारू दिस पसारल,
एक गाँठ हिलय तँ दोसर सहय।
बाहर सँ अनुभवक बयार लगय,
भीतर अर्थक सूत तनाय;
नव उजास जखन किनार छूअय,
सम्पूर्ण बुनावट फेर सजाय।

आँखि जे देखय, कान जे सुनय,
 सेहो अन्तिम फैसला नहि;
 आइक दृढ़ विश्वास काल्हि
 नव प्रमाणसँ बदलि सकय कहीं।
 निश्चयक पत्थर कमे भेटय,
 संभावना अधिक संग चलय;
 ज्ञानक गरिमा एतहि अछि—
 ओ अपन भूल सुधारि सकय।
 किछु पाँति कहय—“हम शब्दहि भीतर”,
 किछु कहय—“हम जगक समाचार”;
 दुनू बीच खींचल कठोर रेखा
 बरखा पड़िते भेल धुँधल धार।
 अर्थ अकेला कोठरीमे नहि,
 अनुभव अकेला सेहो नहि;
 भाषा, नियम, जगक टकराहट—
 सभ मिलि खोलय अर्थक मही।
 तर्कक सूत बहुत भीतर धरि,
 मजबूत गाँठ जकाँ बन्हल;
 गणनाक रेखा, नियमक अनुशासन,
 दीर्घ अभ्याससँ दृढ़ बनल।
 मुदा जालक कोनो गाँठ एहन नहि
 जकरा छूबब सदा निषिद्ध;
 बदलनाइ कठिन भऽ सकैत अछि,
 पर बदलावक दुआर नहि रुद्ध।
 एकटा वाक्य अकेले नहि ठाढ़,
 ओकर पाछाँ विश्वासक दल;
 माप, नियम, सहायक धारणा,
 सभ मिलि बनबैत अर्थक बल।
 जखन भविष्यवाणी चूकैत अछि,
 दोषक एकटा चेहरा कतय?
 सम्पूर्ण जाल केँ फेर निहारू—
 कुन गाँठ ढीली, कुन ठाम क्षय।
 अनुभव बाहरी किनार छूअय,
 मुदा कम्पन भीतर धरि जाए;
 मध्यक पुरान दृढ़ गाँठसभ
 सहजहि नहि अपन रूप बदलाए।
 किनारक सूत पहिने खिसकय,

कखनो बीचक रेखो टूटय;
कम विघ्नमे नव संतुलन खोजि
बुद्धि फेर अपन जाल बुनय।
जे किछु जगमे मानि चलैत छी,
कथनसभमे ओकर छाप पड़य;
नाम, वस्तु, संख्या, सम्बन्ध—
विश्वासक धरती पर रूप धरय।
“की अछि?” ई प्रश्न व्यर्थ नहि,
मुदा उत्तर आकाशसँ नहि झरय;
हमर भाषा आ समूचा ज्ञान
जाहि दिशि बन्हल, से दिशा उभरय।
सरलता कखनो बाट देखाबय,
संगति कखनो थामय हाथ;
कम टूट-फूटमे नव व्यवस्था—
ईहो विवेकक एकटा बात।
सत्यक प्रेम केवल जिद्द नहि,
नहि पुरान सूत्रक पहरा;
जतय प्रमाण माँगय फेरबदल,
ओतय खुलल रहय मनक चेहरा।
जालक केन्द्र बहुत पुरान,
किनार नित नव पवन सँ भीजै;
तैयो दुनू एक-दोसर बिनु
अर्थक सम्पूर्ण गीत नहि सीझै।
अनुभव बिनु जाल अन्हर होय,
जाल बिनु अनुभव बिखरल धूल;
दुनूक मिलनमे ज्ञानक नदी
खोजैत रहय अपन नूतन कूल।
एहि यात्राक कोनो अन्तिम तट नहि,
नहि अंतिम शब्दक सिंहासन;
प्रश्नक पाछाँ प्रश्न उगैत,
जाँच बनैत रहय नूतन साधन।
विश्वासक जाल हाथमे राखू,
अनुभवक किनार खुलल रहय;
जे सत्य जीवित रहबाक चाहय,
ओ संशोधनक उजास सहय।

ज्ञानक चारि दुआर

ज्ञानक आँगन विशाल बहुत,
 दुआर अनेक, मुदा राहि सजग;
 देखल, बूझल, तुलना, वाणी—
 चारि दिशिसँ उठय अर्थक राग।
 जे सत्य मनमे जन्म लैत,
 ओकर आधार खोजब आवश्यक;
 प्रकाश तखने प्रमाण बनैत,
 जखन भ्रमक छाया होय अधूरी।
 पहिल दुआर प्रत्यक्षक उजास,
 इन्द्रिय जखन विषय सँ मिले;
 रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, ध्वनि
 चेतनाक भीतरे धीरे खिले।
 मुदा देखनाइ मात्र पर्याप्त नहि,
 ककर ज्ञान, कोना भेल स्पष्ट;
 वस्तु, इन्द्रिय, मनक सम्बन्ध
 बोधक आधार करय सुप्रकट।
 कखनो पहिल झलक निरवचन,
 नाम-वर्गक बन्धन सँ दूर;
 फेर परिचय, जाति, गुण, सम्बन्ध
 बनबैत अर्थक आकार भरपूर।
 क्षणक अनुभूति सँ निश्चित बोध
 क्रम सँ स्पष्टताक रूप धरय;
 देखल जगक सूक्ष्म विवेचन
 ज्ञानक पहिल दुआर उधारय।
 दोसर दुआर अनुमानक पथ,
 देखल चिह्न सँ अनदेखल बात;
 धुँआ उठल तँ अग्निक स्मृति,
 सम्बन्ध बने निष्कर्षक साथ।
 मुदा हेतु जँ ढीला पड़ि जाए,
 तर्कक नाव भँवरमे फँसय;
 व्याप्तिक दृढ़ पहचान बिनु
 बुद्धि सहजहि भ्रममे बसय।
 पक्ष, हेतु, उदाहरणक मेल,
 स्मृति आ विचारक सूक्ष्म जोड़;
 जे चिन्ह साध्य दिशि नेने जाए,
 तकर सम्बन्ध नहि होय तोड़।

अनुमान मनमाना उड़ान नहि,
 नियमित संगतिक चाही प्रमाण;
 अदृश्य धरि पहुँचबाक बाट
 दृश्य संकेतक ठोस विधान।
 तेसर दुआर उपमानक सेतु,
 समानतासँ नव अर्थ चिन्हाय;
 पहिने सुनल रूपक संकेत
 नव भेटमे पहिचान जगाय।
 अनजान वस्तु परिचित बनैत,
 तुलनाक सूत सँ बन्धल ज्ञान;
 दूरक वर्णन, नजिकक अनुभव
 एकहि क्षणमे पाबय मान।
 चौठम दुआर विश्वसनीय वाणी,
 शब्द जखन अर्थक भार धरे;
 कथन मात्र ध्वनि नहि रहि जाए,
 विश्वास योग्य स्रोत सँ फरे।
 वाक्यक प्रत्येक पद अलग हो,
 तैयो अर्थ समूचा संग जुड़य;
 स्मृति, अपेक्षा, योग्यता, निकटता
 मिलि वाक्यार्थक दीप जड़य।
 कहबाक भीतर सम्बन्ध आवश्यक,
 शब्द-शब्द एक-दोसर चाहय;
 जतय अर्थ असम्भव ठहरय,
 वाक्य अपन शक्ति गमाय।
 जे पद सुनिते मन प्रतीक्षा करय,
 दोसर पद ओकर पूर्ति करे;
 सम्बन्धक एहि अदृश्य डोरीमे
 भाषा ज्ञानक रूप धरे।
 प्रमाणक अर्थ केवल साधन नहि,
 सत्य-बोधक कारणक खोज;
 जे ज्ञान पहिने भेटल नहि छल,
 से नव उजास बनि देत बोध।
 भ्रमित अनुभूति, संशय, स्मृति
 सभक अपन-अपन अलग स्थान;
 नव यथार्थक निश्चित बोधहि
 पाबय प्रमाणक ऊँच मान।

ज्ञानक चारि दुआर खुलल,
मुदा भीतर एकहि अनुशासन;
देखू, सोचू, तुलना करू,
शब्दक अर्थ पर राखू शासन।
कोनो राहि अकेले सर्वस्व नहि,
सभक सीमा, सभक अपन भार;
जतय विवेक संग प्रमाण जुड़य,
ओतहि उज्जर होय विचार।
प्रश्नक धूलि सँ अर्थक मणि
धीरे-धीरे छनैत रहय;
एक सूक्ष्म भेदक ठीक पहचान
अनेक भ्रमक जड़ि कटय।
ज्ञानक चारि दुआर पारि
मन नहि पाबय अन्तिम विराम;
प्रत्येक उत्तरक भीतरे फेर
जन्म लैत अछि नूतन प्रश्नक नाम।

सत्यक धागा, करुणाक करघा

सत्य कोनो दूरक तारा नहि,
दिनचर्याक साँस-साँसक संग;
बोली, कर्म, मनक कोठरीमे
ओ खोजय अपन निर्मल बाट।
जे अनुभव भेल, जे मन बुझलक,
ओकरा छलसँ नहि ढाँकू;
भीतर-बाहर एकहि स्वर राखि
जीवनक कपड़ा सचमे बुनू।
करुणा केवल कोमलता नहि,
ओ साहसक तेज धार;
मन, वचन, कर्म सँ चोट न देब,
तैयो अन्यायसँ नहि स्वीकार।
कायर मौन सँ नीक संघर्ष,
जँ भीतर निर्भय सत्य रहय;
आत्मबलक धीमा अग्नि सँ
हिंसक अन्हारो गलि सकय।
विरोधी केँ पराजित करब नहि,
ओकर हृदय धरि बाट बनाउ;
दुःख सहितहुँ द्वेष नहि पोसू,
अपन सत्य पर अडिग रहाउ।

जोरक बदला धैर्यक शक्ति,
प्रतिशोधक बदला आत्म-संयम;
एहि कठिन तपक अग्निक भीतर
जन्म लैत अछि सत्याग्रहक क्रम।
जकर वस्तु नहि, ओकरा न छूअ,
नहि लोभक हाथ पसारु;
दोसरा विचारक फल चुरा कऽ
अपन नामक माला नहि धारु।
चोरी केवल धनक नहि होइत,
इच्छा कखनो सीमा तोड़य;
परक अधिकारक आदर राखब
मानवता केर गाँठ जोड़य।
आवश्यकता जतेक, ततेकहि राखू,
शेष भार मन पर नहि धरी;
काल्हिक भयमे आइक जीवन
लोभक कोठी भरि नहि मरी।
अधिक संचय, अधिक बन्धन,
सुखक बाट पर काँट बिछाय;
स्वेच्छा सँ इच्छा छोट करिते
भीतरक आकाश पैघ भऽ जाय।
इन्द्रियक घोड़ा तेज बहुत,
मनक लगाम जँ ढीली पड़य;
वाणी, इच्छा, देहक चञ्चलता
जीवनक दिशा बदलि सकय।
संयम केवल देहक पहरा नहि,
विचार आ दृष्टिक सेहो विधान;
प्रेम जँ स्वार्थक आगि छोड़ि दे,
तखन बनय निष्काम सम्मान।
श्रम सँ हाथक मान बढ़ैत,
देहक घाममे रोटी पवित्र;
स्वदेशी केवल वस्त्रक नाम नहि,
निकट जनक श्रमसँ आत्मीय चित्र।
अस्वाद कहय—जिह्वाक आग्रह
जीवन पर शासन नहि करय;
अभय कहय—भयक अन्हारमे
सत्यक दीप नहि काँपि मरय।

मन्दिर अलग, प्रार्थना अलग,
 नाम हजार, प्यास एक;
 अपन राहिक आदर राखितहुँ
 दोसरो राहि लगय नहि फेक।
 धर्म जँ द्वेषक दीवार उठबय,
 ओकर अर्थ स्वयं हराय;
 समभावक खुलल अँगनामे
 भिन्न विश्वास एकसंग समाय।
 जकर छाया सँ समाज कतराय,
 ओहो मनुष्य, ओहो अधिकार;
 स्पर्शक भय जे जन्म-जन्म धरि,
 से तोड़ू प्रेमक उज्जर धार।
 मन्दिरक दुआर, भोजनक पाँति,
 साझा जीवनक बनय सेतु;
 हृदय बदलल बिनु नियम अकेला
 नहि भरि सकत अपमानक रेतु।
 मुदा पुरान व्यवस्था भीतर
 एक कठिन गाँठ रहि जाए;
 जन्मसँ बान्हल कामक रेखा
 समताक स्वर संग टकराए।
 एक दिस छूआछूतक अन्हार
 मेटबाक तीव्र पुकार उठय;
 दोसर दिस पैतृक पेशाक बन्धन
 इतिहासक प्रश्न बनि रहय।
 नियम जँ मनुष्य लेल बनल,
 तँ मनुष्य पर बोझ नहि बनू;
 सत्य जँ सर्वोपरी कहल जाए,
 तँ ओकरा जीवित विवेक सँ गुनू।
 कठोर व्रत सभ यंत्र नहि,
 परिस्थितिक करुणा सेहो संग;
 उद्देश्य जँ लोककल्याणक हो,
 तखन मापू प्रत्येक कर्मक बाट।
 सत्यक धागा, करुणाक करघा,
 संयमक धीमा-धीमा ताल;
 निर्भयता, श्रम, समभावक रंग,
 सादा जीवनक उज्जर जाल।
 अपूर्णता संग संघर्ष करैत

मनुष्य खोजय नीक संसार;
भीतर बदलि बाहर गढ़बाक
एहि कठिन साधनामे प्रभात अपार।

निद्राक चारि घाट पारि अजन्म उजास

जागल आँखि कहय—ई जग,
स्वप्नो राति कहय—ई सत्य;
दुनू क्षणमे मन विश्वास करय,
भोर पाछाँ बदलय दृष्टि-पथ।
जागरणमे बाहरक विस्तार,
स्वप्नमे भीतर रचल नगर;
दुनू अनुभवक समयमे ठोस,
दुनू पाछाँ स्मृतिक लहर।
यदि स्वप्नक हाथी जागिते हराय,
जागल वस्तु निद्रामे कतय?
स्थायित्वक गर्व कम करैत
प्रश्न उठय—अन्तिम सत्य कतय?
तीसर घाट गाढ़ निद्रा,
नहि इच्छा, नहि स्वप्नक चित्र;
भेदक कोलाहल शान्त भएँ,
अज्ञानक बीज रहय तैं भीतर।
चौठम कहबो सीमित भाषा,
नहि बाहर, नहि भीतरक ज्ञान;
नहि दुनू, नहि शून्य मात्र,
मौन चेतनक अखण्ड विधान।
जे शब्द पकड़य, ओ सीमा,
जे विचार बनय, ओ भेद;
चौठम उजास भेदक पाछाँ,
जतय ज्ञाता-ज्ञेयक नहि खेद।
जगत जन्मल—एहि कथन पर
कारणक शृंखला फेर विचारू;
जे वास्तवमे अजन्म मूल,
तकरा उत्पत्ति कोना स्वीकारू?
कारण जँ फलमे बदलि जाए,
कारण अपन रूप गमाय;
अजन्म सत्य परिवर्तन पाबि
नूतन वस्तु कोना बनि जाय?
नहि असत्सँ सत् उपजैत,

नहि सत् कै फेर जन्मक चाह;
 उत्पत्तिक दृश्य व्यवहारक स्तर,
 गहिर बोधमे अजन्म राह।
 अगिनिक गोल घुमाओल जखन
 वृत्तक चमक आँखि देखाय;
 वास्तवमे एक चिनगी चलैत,
 अनेक रूप भ्रमसँ बनि जाय।
 तहिना चेतनक कम्पन भीतर
 भेदक विश्व पसारि सकय;
 मूल अखण्ड रहितो अनुभव
 नाम-रूपक वन रचि सकय।
 माया झूठक गाली नहि,
 अनुभवक स्तरक एक संकेत;
 जे व्यवहारमे काज करैत,
 ज्ञानक शिखर पर बदलय भेद।
 डर स्वप्नमे साँच धड़कन,
 जागिते कारण रूप बदलय;
 तहिना आत्मबोधक प्रभातमे
 बहुता केर कठोरता गलय।
 स्पर्शहीन शान्त साधना
 ककरो संग संघर्ष नहि करय;
 मन बाहरी आधार नहि पकड़ि
 अपने स्रोत दिशि धीरे सरय।
 राग-द्वेषक लहर थमिते
 चित्तक आकाश निर्मल होय;
 जे अजन्म, अचल, निर्भय,
 ओ अपनेमे प्रकटित होय।
 नहि उत्पत्ति, नहि अन्तिम नाश,
 मध्यक खेल नामक संसार;
 चारि घाटक अनुभव पारि
 एकहि चेतनक मौन विस्तार।
 निद्राक चारि घाट पारि जखन
 भेदक सपना शान्त भऽ जाय;
 अजन्म उजास नहि कतहु आबय—
 ओ सदिखन अपनेमे जगमगाय।

संशयसँ निर्णय धरि

प्रश्न उठल तँ मन नहि भागय,
पहिने संशयक रूप निहारय;
की सत्य, की केवल आभास,
कुन प्रमाण बाट उधारय?
जिज्ञासाक पहिल कम्पन सँ
निर्णय धरि अछि लम्बा पथ;
विवेकक दीप हाथमे नेने
मन चलैत अछि सत्यक रथ।
ज्ञानक दुआर चारि दिशि खुलल—
प्रत्यक्ष, अनुमान, तुलना, वचन;
प्रत्येकक अपन सीमा, अपन बल,
प्रत्येकक अलग-अलग कारण।
देखल मात्रे सभ सत्य नहि,
सुनल मात्रे सभ ज्ञान नहि;
प्रमाणक अनुशासन बिनु
बुद्धिक यात्रा आसान नहि।
आँखि जखन रूपक संग भेटय,
कान ध्वनिक स्पर्श पाबय;
इन्द्रिय आ विषयक निकटतामे
प्रत्यक्षक पहिल बोध जगाय।
मुदा मन अनुपस्थित हो जँ,
दृश्य समक्ष रहितो छुटि जाए;
ज्ञानक जन्ममे इन्द्रिय संग
अन्तरक ध्यानो भाग निभाए।
धुँआ उठल पहाड़क माथ,
मन अग्निक सम्भावना धरय;
देखल चिह्न सँ अनदेखल कारण
अनुमानक सेतु बनि उभरय।
पहिने सम्बन्ध दृढ़ पहिचानू,
तखन निष्कर्षक पग बढ़ाउ;
हेतु जँ साध्य सँ नहि बान्हल,
तर्कक नाव बीचहि डुबाउ।
अपन विचार कहबाक क्रममे
पाँच पगक अनुशासन चाही;
दावा, हेतु, उदाहरण, अनुप्रयोग,
अन्तमे निष्कर्षक राहि।

शब्दक शोर नहि तर्क बनैत,
 क्रम सँ अर्थक दीप जरे;
 जतय कारण स्पष्ट होइत,
 ओतय संशय धीरे-धीरे मरे।
 अनजान वस्तु भेटल जखन,
 पुरान वर्णन मनमें जागय;
 समान रूपक एकटा सूत्र
 नव पहिचानक बाट बताबय।
 तुलना केवल मेल नहि,
 परिचयक सूक्ष्म सेतु बने;
 अपरिचितक अन्हारक भीतर
 ज्ञातक चिन्ह उजास तने।
 विश्वसनीय वाणी सेहो
 ज्ञानक एकटा दुआर खोलय;
 जे देखल नहि, जे दूर रहल,
 शब्द ओकर समाचार बोलय।
 मुदा वक्ताक विश्वसनीयता,
 वाक्यक अर्थक संगति चाही;
 मात्र अधिकारक भारी स्वर
 सत्यक मोहर पाबि नहि जाही।
 तर्कक सभा जखन सजैत,
 प्रश्नक संग उत्तर सेहो आय;
 एक दिस सिद्धान्तक रक्षा,
 दोसर दिस आपत्तिक धारि चलाय।
 वाद जँ सत्यक खोज बनय,
 संवादक माटि उर्वर होय;
 जल्प-वितण्डाक धूलि उठिते
 अर्थक स्वच्छ दर्पण खोय।
 हेतु कखनो रूप ठीक धरैत,
 मुदा भीतर दोष छिपौने रहय;
 असिद्ध, विरुद्ध, संदिग्ध कारण
 निष्कर्षक पाँखि काटि दय।
 छल जखन शब्दक मोड़ बनय,
 जाति जखन तर्क केँ भ्रमाय;
 भूल पहचानब सीखि लेलासँ
 मन अपनहि भूल सँ बचि जाए।

जीवनक दुःख केवल भाग्य नहि,
अज्ञानो ओकर मूल बनय;
बेठीक बोध सँ इच्छा उठैत,
इच्छासँ कर्मक जाल तनय।
यथार्थ ज्ञानक निर्मल धारा
भ्रमक गाँठ धीरे खोलय;
विवेक जखन स्थिर भऽ जाए,
मुक्तिक आकाश भीतर बोलय।
संशयसँ निर्णय धरि यात्रा,
नहि एक छलाँग, नहि अन्ध विश्वास;
प्रश्न, प्रमाण, तर्क, परीक्षण—
एहि सँ बनय बुद्धिक निवास।
जे बात कहू, आधार सहित कहू,
जे मानू, ओकर कारण धरू;
सत्यक बात खुलल रहय सदिखन,
नव प्रश्नक स्वागत करैत चलू।

प्रेमक नाममे खुलैत अनन्त

एकहि सत्यक अनन्त लहरि,
रूप अनेक, मूल एक;
जगत नहि केवल छायाक खेल,
नहि भिन्नता सर्वथा फेक।
एकमे अनेक, अनेकमे एक,
बुद्धि जतेक मापय, ततेक परे;
भेद आ अभेदक बीचक सेतु
अचिन्त्य उजास जकाँ हृदयमे झरे।
पूर्ण सत्ता शक्ति सहित,
शक्ति बिनु स्वरूप अधूर;
सृष्टि ओकर विरोधी नहि,
ओकरहि प्रकाशक विस्तृत नूर।
लहरि समुद्रसँ अलग देखाइ,
तैयो जलक नाता नहि टूटय;
जीव आ जग अपन भिन्नतामे
मूलक संग सम्बन्ध न छुटय।
माया केवल झूठ नहि एतय,
ओ निर्भर शक्ति, सीमा केर जाल;
जाहि सँ अनन्तक बीच जन्मय
नाम-रूपक विविध सवाल।

बंधन तखन, जखन मन भूले
 अपन गहिर सम्बन्धक बात;
 स्मरण जागिते बन्धन ढीला,
 भीतर खुलय प्रेमक घाट।
 जीव न पूर्णतः ओहि समान,
 नहि पूर्णतः ओकरा सँ दूर;
 चिनगी जकाँ अग्निक अंश,
 छोट उजास, मूलक नूर।
 स्वतन्त्रता सीमित, प्रेम असीम,
 आश्रयमे ओकर अर्थ फुले;
 स्वत्व बचल, सम्बन्ध गहिर,
 दुनू मिलि जीवन-राग खुले।
 ज्ञान जँ केवल शुष्क विचार,
 हृदयक प्यास नहि बुझि पाबय;
 कर्म जँ केवल बाहरी बोझ,
 अन्तरक तृष्णा नहि मेटाबय।
 प्रेम जखन साधना बनि उठय,
 स्मरण जखन श्वासक संग चले;
 तखन सत्य दूरक सिद्धान्त नहि,
 निकटतम अपनत्व जकाँ मिले।
 नामक ध्वनि जखन संग उठय,
 एकाकी मन समूह बनय;
 ताल, स्वर, अश्रु, हँसीक बीच
 भीतरक कठोरता गलि जाए।
 कीर्तन केवल गीत नहि,
 स्मरणक सामूहिक ज्वार;
 एक नामक आवर्त भीतर
 टूटय अहंकारक दीवार।
 श्रवण, गान, स्मरण, सेवा,
 पद-पद पर समर्पणक रीत;
 वन्दन, दास्य, सख्यक मधुरता,
 आत्मनिवेदनक गहिर प्रीति।
 मार्ग अनेक, केन्द्र एकहि,
 भाव जतेक, ततेक रंग;
 भक्ति नियमक सूखल डोरी नहि,
 जीवनक अन्तःस्पन्दन संग।

कखनो शान्ति, कखनो सेवा,
कखनो मित्रताक मुक्त हँसी;
कखनो वात्सल्यक कोमल छाया,
कखनो प्रेमक गहिर पियासी।
भाव बदलय, सम्बन्ध गहिराय,
ईश्वर दूरक शक्ति नहि रहय;
अपनत्वक विविध रस भीतर
अन्तरंग उपस्थिति बनि बहय।
मुक्ति यदि केवल छुटकारा,
प्रेमक हृदय तकरा सँ पैघ;
स्वर्ग, सिद्धि, ज्ञानक गौरव
भक्तिक आगाँ कखनो नहि दैघ।
भेट मात्र नहि अंतिम चाह,
सेवा स्वयं बनय उत्सव;
प्रेममे फल आ साधन एक,
यात्रा स्वयं बनय परम पर्व।
गुरुक करुणा पहिल संकेत,
मार्गक अन्हारमे दीप समान;
परम्पराक जीवित स्पर्श सँ
जागय भीतर सुप्त पहिचान।
मुदा केवल बाहरी आदर नहि,
आचरणमे उतरय शिक्षाक स्वर;
विनय, सेवा, नामक अभ्यास
मन केँ खोलय भीतरक घर।
जाति, कुल, धन, शास्त्रक गर्व
प्रेमक आगाँ छोट पड़य;
हृदय जे निर्मल, नाम जे साँच,
ओहि ठाम भक्ति फूलि चढ़य।
दुआर खुलल सभ जीव लेल,
अधिकारक माप हृदयक प्यास;
समता केवल नियम नहि एतय,
संग गायल नामक साझा श्वास।
प्रेमक नाममे खुलैत अनन्त,
भेद रहितो दूरी नहि;
जगत रहितो मूल नहि हराय,
स्वत्व रहितो एकता मरी नहि।
बुद्धि जतेक सीमा खींचय,

हृदय ततेक सेतु बनाबय;
अचिन्त्य मिलनक एहि संगीतमे
जीवन अपन घर पहिचानय।

कर्मक पाछाँ अनदेखल सेतु

धर्म कोनो दूरक धुन्ध नहि,
कर्मक भीतर ओकर छाप;
कहल वचन जखन कर्तव्य जगाबय,
जीवन पाबय अनुशासनक माप।
मात्र इच्छा सँ पथ नहि बनय,
मात्र फल सँ धर्म नहि तौलाय;
जे करबाक आह्वान उठैत,
ओहि स्वरमे कर्तव्य जगाय।
वाणी केवल ध्वनि नहि,
विधिक भीतर अर्थक भार;
कखनो आदेश, कखनो निषेध,
कखनो स्तुति खोलय द्वार।
नाम, मन्त्र, कथा, संकेत,
सभक अपन-अपन काज;
कुन वचन मुख्य, कुन सहायक,
बुद्धि खोजय सूक्ष्म समाज।
एक पाँति अकेले नहि बोलय,
संगक वाक्य ओकर अर्थ सँवारय;
प्रकरणक धरती, स्थानक नाता,
नामक संकेत राहि उधारय।
सोझ श्रुति, सूचक लिङ्ग,
वाक्यक एकता संग जुड़य;
छह दिशिक संकेतक मेलमे
अर्थक गहिर गाँठ खुलय।
नित्य कर्म सूर्यक लय जकाँ,
दिनचर्यामे अपन ठाम;
नैमित्तिक क्षण विशेषक पुकार,
आकस्मिक कारणक काम।
काम्य कर्म फल चाहक संग,
मनोरथक दिशि पग बढ़ाय;
निषिद्ध बाट चेतावनी देत,
सीमा पार न करबाक कहाय।

कर्म भेल आ क्षण बीतल,
 फल कखनो दूर समयमे आए;
 बीचक दूरी कोना जुड़त,
 एहि प्रश्न पर मन ठहराए।
 दृश्य क्रिया समाप्त भऽ जाए,
 तैयो एक सामर्थ्य रहि जाए;
 अनदेखल सेतु जकाँ भीतर
 कर्मक प्रभाव भविष्य धरि जाए।
 फल जँ तुरन्त नहि भेटल,
 कर्म व्यर्थ ताहि सँ नहि होय;
 बीज धरतीमे लुप्त देखाइ,
 तैयो भीतर अंकुर सोय।
 दृश्य समाप्तिक पाछाँ सेहो
 अदृश्य शक्ति क्रम सँ चलय;
 आइक कर्तव्य काल्हिक फल सँ
 सूक्ष्म सम्बन्ध गहिरै पलय।
 कर्मक मूल्य केवल लाभ नहि,
 कर्तव्यक अपन स्वतन्त्र मान;
 फल-लोभ जँ सभ निर्णय चलाबय,
 तँ धुँधला पड़ि जाए विधान।
 जे उचित अछि, ताहि लेल कर्म,
 एहि विचारमे दृढ़ता रहय;
 मानव इच्छा सँ पैघ किछु
 नियमक रूपमे हृदयमे बहय।
 वाणी जँ शाश्वत अर्थ धरे,
 तँ वक्ताक इच्छा सँ नहि बन्हाय;
 परम्पराक दीर्घ प्रवाहमे
 कर्तव्यक संकेत जीवित रहाय।
 शब्द आ अर्थक गहिर सम्बन्ध
 स्मृति मात्र नहि, अनुशासन;
 पीढ़ी-पारि चलैत आदेश
 बनय सामाजिक चेतनाक स्पन्दन।
 मुदा नियमक वन घना बहुत,
 एक विधि दोसरासँ टकराय;
 कुन प्रधान, कुन अपवाद,
 कुन प्रसंगमे अर्थ बदलाय?
 तखन तर्कक दीप जलाबू,

सन्दर्भक धागा हाथ धरू;
 अलग पाँतिक कठोर अर्थ नहि,
 समग्र विधानक दिशा पढ़ू।
 कर्मक जगमे ज्ञान सहाय,
 ज्ञानक जगमे कर्मक मान;
 मात्र विचारक महल बनाकऽ
 जीवन नहि पाबय पूर्ण विधान।
 करबाक भीतर समझ आवश्यक,
 समझक भीतर जिम्मेदारी;
 वाणी, कर्म आ फलक बीच
 चलय अदृश्य एक पहरेदारी।
 कर्मक पाछाँ अनदेखल सेतु,
 वचनक भीतर कर्तव्यक राग;
 नित्य, निमित्त, इच्छा, निषेध,
 सभ मिलि बनबैत जीवनक भाग।
 जे आइ करैत छी सजग भऽ,
 ओ काल्हिक दिशा सेहो गढ़य;
 कर्तव्यक सूक्ष्म अनुशासन
 समयक पारि अपन छाप धरय।

समस्या सँ अनुभवक नव बिहान

जगत कोनो जमल तस्वीर नहि,
 नहि मन अलग, नहि बाह्य अकेल;
 जीवन आ परिवेशक भेटमे
 हरेक क्षण बनैत अनुभवक खेल।
 जे हम देखी, से सम्बन्धमे,
 जे हम करि, ताहिमे अर्थ जनय;
 नदीक जल जकाँ चेतना बहैत,
 रुकल क्षणमे सत्य नहि बनय।
 अनुभव केवल भीतरक छाया नहि,
 देह, परिवेश, क्रियाक संग;
 हाथ जखन वस्तु छूअय,
 मन पाबय अर्थक नव रंग।
 बाहर भीतरक बीचक सीमा
 कर्मक धड़कनमे पिघलि जाए;
 जीवित सम्बन्धक एहि प्रवाहमे
 ज्ञान अपन आकार बनाए।

समस्या जखन बाट रोकैत,
 चिन्तन तखन जागि उठय;
 सुखक निश्चिन्त प्रवाह टूटिते
 प्रश्नक पहिल तरंग फूटय।
 कुन उपाय सँ राहि खुले,
 कुन धारणा काममे आय;
 बुद्धि तखन औजार बनैत,
 अन्ध अनुमान नहि दोहराय।
 सोचब केवल मौन विलास नहि,
 समस्या सुलझेबाक काज;
 कल्पना अनेक उपाय रचय,
 परीक्षण देत ओकरा आवाज।
 जे उपाय अनुभवमे सफल,
 ओ अस्थायी मान पाबय;
 नव परिस्थिति नव प्रश्न लाबय,
 पुरान उत्तर फेर जँचाय।
 ज्ञान कोनो शीशा नहि,
 जगतक हुबहू छवि उतारय;
 ओ तऽ नक्शा, औजार, योजना,
 जाहिसँ कर्म दिशा सँवारय।
 जानब अर्थ बदलि सकब,
 परिस्थिति संग नूतन सम्बन्ध;
 निष्क्रिय दर्शक नहि मनुष्य,
 ओ अनुभवक सक्रिय अनुबन्ध।
 सत्यक सिंहासन स्थिर नहि,
 नहि एक बेर भेटल अन्तिम बात;
 जे विचार व्यवहारमे टिकय,
 जे समस्या खोलय ओकर गाँठ।
 मुदा उपयोग केवल निजी लाभ नहि,
 व्यापक अनुभवक चाही कसौटी;
 आइक सफलताकेँ काल्हि फेर
 नव प्रमाण देत नूतन चुनौती।
 निश्चय यदि पत्थर बनि जाए,
 विकासक राहि रुद्ध भऽ जाए;
 संशय यदि केवल अन्ध धुन्ध हो,
 कर्मक दिशा सेहो हराए।
 एहि दुनू बीच अनुसन्धान,

प्रश्न, परीक्षण, पुनर्विचार;
 ज्ञानक गरिमा एतहि अछि—
 ओ बदलि सकय अपन आकार।
 मूल्य आ नैतिकता सेहो
 आकाशसँ उतरले शिला नहि;
 जीवित समाजक अनुभव भीतर
 ओकर परीक्षा बिनु चला नहि।
 कुन कर्म सँ जीवन फुलय,
 कुन निर्णय दुःख बढ़ाबय;
 परिणामक सामाजिक धरती पर
 नैतिक अर्थ जाँचल जाए।
 नीक जीवन एकाकी नहि,
 समुदायक सुख-संग जुड़ल;
 व्यक्ति बढ़य तखनहि साँच,
 जखन साझा जीवनो हो फुलल।
 लोकतन्त्र केवल मतक गिनती नहि,
 साझा बुद्धिक खुलल व्यवहार;
 संवाद, शिक्षा, सहभागिता सँ
 समाज करय अपन सुधार।
 शिक्षा भरल भाँड़ नहि,
 नहि बच्चाक मन पर भार;
 करैत-सीखैत, जाँचैत-पूछैत
 अनुभव बनय विद्यालयक द्वार।
 जीवन लेल शिक्षा नहि केवल,
 शिक्षा स्वयं जीवनक प्रवाह;
 आइक क्रियामे काल्हिक क्षमता,
 एहिऐ विकासक साँच चाह।
 धर्म यदि भयक परलोक मात्र,
 जीवनसँ ओकर नाता टूटय;
 मुदा आदर्श जखन मन केँ जोड़य,
 विखरल इच्छाक दिशा जुटय।
 श्रद्धाक मोल तखन अछि,
 जखन ओ जीवनमे साहस भरय;
 मानवीय प्रयत्नक ऊँच लक्ष्य
 दैनिक कर्मक भीतर उतरय।
 समस्या सँ अनुभवक नव बिहान,
 प्रश्न सँ खुलय नूतन राह;

कर्म, विचार, परिणामक संग
जीवन लिख्य अपन परिभाष।
कोनो निष्कर्ष अन्तिम नहि,
कोनो प्रश्न व्यर्थ नहि जान;
बदलैत जगमे बदलैत बुद्धि
रचय निरन्तर मानव-ज्ञान।

क्षणक रूप, निषेधक भाषा

आँखि जखन एक क्षण छूअय,
रूप अपनहि उजासमे आय;
नामक जाल एखन नहि पड़ल,
विचारक रेखा नहि बनि पाय।
जे एखन एतय, एकमात्र एहन,
क्षणमे अपन स्वरूप धरय;
अनगढ़ बोधक निर्मल तरंग
प्रत्यक्षक दुआर सँ भीतर भरय।
नाम जखन पाछाँ सँ आबय,
जाति, गुण, सम्बन्ध जुटाय;
एक अनोखा रूप कै मन
पहिने जानल घरमे बसाय।
तखन विशेष सँ सामान्य बनैत,
भाषा ओकर घेरा करय;
निर्विकल्प उजासक पाछाँ
कल्पनाक सूत धीरे उतरय।
ज्ञानक दू मुख्य धार बहैत—
एक सोझ, एक संकेतक पथ;
एक वर्तमानक रूपक स्पर्श,
दोसर चिन्ह सँ खोजय सत्य।
दूरक अग्नि आँखि नहि देखय,
धुँआ ओकर समाचार कहय;
देखल चिन्हक भीतर सँ बुद्धि
अनदेखल अर्थक राहि लहय।
मुदा अनुमान मनक छलाँग नहि,
हेतुक तीन कसौटी चाही;
जतय सिद्ध करबाक बात उठल,
ओतय चिन्ह उपस्थित पाही।
समान ठाममे संग-संग भेटय,
विपरीत ठाममे संग नहि;

एहि त्रि-रेखाक अनुशासन बिनु
 तर्कक नाव पार नहि जाही।
 कखनो कारण सँ कार्य बुझाय,
 कखनो स्वभाव स्वयं संकेत;
 कखनो अनुपस्थितिक छाया
 कहय—एतय नहि ओकर भेट।
 नहि-होएबो कखनो बोलय,
 रिक्त स्थानो अर्थ धरय;
 चिन्हक भिन्न-भिन्न चालि सँ
 अनुमानक दीप नित नव जरय।
 प्रत्यक्षक विषय अद्वितीय,
 एक क्षणक अपन असमान रूप;
 अनुमानक बाट सामान्य धरय,
 अनेक भीतर एकहि स्वरूप।
 एक दिस बिन्दुक तेज उपस्थिति,
 दोसर दिस वर्गक विस्तृत गान;
 ज्ञानक दुनू पाँखि अलग-अलग,
 तैयो एकहि उड़ानक प्राण।
 शब्द जखन “गाय” कहि उठय,
 की सभ गाय एक संग आय?
 नहि—भाषा एक सीमा खींचय,
 अन्य सभ रूप कै दूर हटाय।
 जे “ई नहि”, “ओ नहि” कहैत,
 तकर बीच अर्थक रूप उभरय;
 निषेधक घेरे भीतर भाषा
 अपन संकेत धीरे सँ धरय।
 अर्थ केवल वस्तुक प्रतिमा नहि,
 शब्दो नहि सोझ पकड़ि सकय;
 भिन्न-भिन्न रूपक बहुल जगतमे
 बहिष्कार सँ परिचय बनय।
 अन्यक निषेध सँ एक नाम
 अपन सीमाक आकार पाबय;
 नकारक भीतर सकारात्मक
 पहिचानक अंकुर फूटि आय।
 ज्ञान अपनहि प्रकाश सेहो,
 जखन मन जानय—“हम जानलहुँ”;
 बाहरी रूपक संग-संग भीतर

बोधक छापो संगहि पाबलहुँ।
ज्ञात वस्तु आ ज्ञाताक अनुभव
एक क्षणमे दोहरी झिलमिल;
चेतना अपन पदचिह्न देखय,
जेनाँ जलमे पड़ल चन्द्रक तिल।
भ्रम जखन नामक जालमे उपजै,
विवेक ओकर गाँठ खोलय;
सोझ अनुभूति कतेक कहैत,
कल्पना कतेक रंग घोलय?
एहि भेदक सूक्ष्म पहरादारी
ज्ञान केँ निर्मल राहि दय;
जे देखल, से देखल भरि राखू,
जे अनुमान, तकर हेतु कहय।
क्षणक रूप, निषेधक भाषा,
चिन्हक पथ, स्वयंप्रकाश;
ज्ञान नहि एकटा एकल दुआर,
तैयो सीमा राखय स्पष्ट आकाश।
सोझ बोधक निर्मल स्पर्श सँ
तर्कक दूर यात्रा धरि,
मन सत्यक धागा खोजैत चलय
नामक वन आ संकेतक पारि।

संशयक राखिमे निश्चित स्वर

जे किछु मानल, फेर परखू,
पुरान भरोसा साफ करैत;
एक कमजोर नींव पर बनल
सम्पूर्ण महल कतेक दिन रहैत?
इन्द्रिय कखनो धोखा दैत,
दूरक मीनार छोट देखाय;
जे एक बेर भ्रम दऽ सकल,
तकर साक्षी पर प्रश्न उठाय।
जागरण आ स्वप्नक सीमा
कखनो अनुभवमे धुँधल होय;
एखन जे जग ठोस लगैत,
स्वप्नो तेनहि सत्य लागि रोय।
गणना धरि यदि संशय पहुँचय,
कल्पू छलक कोनो प्रबल जाल;
सभ निश्चयक दीप बुझा दिअ,

देखू की शेष रहय तत्काल।
 संशय करैत छी—एहि क्रियामे
 संशयकर्ता तऽ उपस्थित अछि;
 सोचब चलैत जखन भीतर,
 ‘हम छी’क बोध अनिवार्य अछि।
 देह पर एखन प्रश्न रहू,
 जगत पर सेहो पर्दा पडू;
 मुदा सोचैत चेतन अस्तित्व
 अपने प्रमाणें समक्ष ठाढ़।
 एहि पहिल दृढ़ धरती ऊपर
 ज्ञानक भवन फेर बनाउ;
 जे बोध साफ आ पृथक् चमकय,
 तकरा सत्यक दिशा मानाउ।
 मनमे किछु विचार एहन,
 जे केवल इन्द्रिय सँ नहि आय;
 अनन्त, पूर्ण, संख्या, विस्तार
 बुद्धिक भीतर प्रश्न जगाय।
 सीमित चेतन अनन्त धारणा
 कतेक अपने सँ गढ़ि पाबय?
 पूर्ण कारणक विचार भीतर
 स्रोतक प्रश्न पुनः उठि आय।
 मुदा ईश्वर केवल मान्यता नहि,
 निश्चयक क्रममे भूमिका पाबय;
 पूर्ण सत्य छलक मूल नहि,
 स्पष्ट बोध पर भरोसा लौटाय।
 वस्तुक गुणक दू धरातल,
 विस्तार देहक मूल विधान;
 रंग-स्वाद अनुभवक रूप,
 मापन पाबय आकारक मान।
 देह मशीनक क्रममे चलैत,
 अंग-अंग कारणक सूत्र;
 प्रकृतिक घटना गणितक भाषा
 पढ़िते जग होय अधिक स्पष्ट।
 मन विचारक अविस्तारित केन्द्र,
 देह विस्तारक अलग प्रकार;
 दुनू भिन्न, तैयो मनुष्य जीवनमे
 कतय सँ बनय परस्पर तार?
 पीड़ा देहमे, अनुभव मनमे,

इच्छा सँ हाथ उठि जाए;
भिन्न सत्ता संगहि जीबैत,
सम्बन्धक प्रश्न खुलल रहि जाय।
विवेक चाह पर शासन करय,
भावना केँ नकारय नहि;
ठीक ज्ञानक अनुशासन भीतर
स्वतन्त्र निर्णय बनय सही।
संशय लक्ष्य नहि, झाड़ू मात्र,
जे अन्ध विश्वासक धूल हटाय;
निश्चयक निर्मल छोट बीजसँ
ज्ञानक वृक्ष पुनः उगि आय।
संशयक राखिमे निश्चित स्वर,
विचार सँ अस्तित्वक पहिल प्रकाश;
स्पष्ट बुद्धि, कारणक अनुशासन
खोलय आधुनिक प्रश्नक आकाश।

क्षणक उजास, हेतुक पाँखि

ज्ञानक भीड़मे सत्यक बोध
ओहि क्षण अपन चिन्ह धरय,
जखन देखल अर्थक संग
कर्मक राहि नहि भरम करय।
जे बोध छल नहि व्यर्थ संकेत,
जे जीवनक पग संग चले,
ओहि प्रमाणक निर्मल धार
अविश्वासक धुन्धि गलि दे।
दुआर मुख्य दूटा खुलल—
एक प्रत्यक्ष, एक अनुमान;
एक रूपक निकट उजास,
दोसर चिह्नक दूर विधान।
दुनू अपन-अपन सीमा राखय,
दुनू सत्यक भार उठाय;
एकहि पथमे सभ केँ घोलब
ज्ञानक भेद स्वयं मेटाय।
प्रत्यक्ष जखन शुद्ध उठैत,
नामक जाल एखन नहि आय;
कल्पनाक रंग चढ़ल नहि,
भ्रमक छाया सेहो नहि छाय।
क्षण जेना अपनेमे उपस्थित,

तहिना चेतनामे झलकय;
 वस्तुक अद्वितीय स्पर्श भीतर
 अकथ उजास बनि चमकय।
 इन्द्रियक दुआर सँ रूप प्रवेशय,
 मन ओकर पाछाँ तरंग उठाय;
 भीतरक सुख-दुःख, इच्छा-बोधो
 अपनहि प्रकाशमे प्रकटाय।
 साधनाक निर्मल एकाग्र दृष्टि
 सूक्ष्म सत्यक स्पर्श करय;
 प्रत्यक्षक भिन्न-भिन्न धार
 एकहि निर्मल स्रोत सँ भरय।
 ज्ञान जखन स्वयं केँ जानय,
 दीप अपन उजासो देखय;
 बाह्य रूपक संगहि भीतर
 बोधक कम्पन स्वयं लेखय।
 जानल वस्तु मात्र नहि रहय,
 “जानलहुँ” सेहो संगहि जागय;
 चेतना अपन पदचिह्न देखैत
 निज प्रकाशमे राहि बनाय।
 क्षण स्थिर पत्थर नहि होइत,
 उदय संगहि क्षयक संकेत;
 जे काज करय, से शक्ति धरय,
 अगिला क्षणक बनय निमित्त।
 रूप बदलैत, धारा चलैत,
 निरन्तरता भ्रम नहि मात्र;
 कारण-कार्यक सूक्ष्म क्रममे
 समय रचय जीवनक पात्र।
 अनुमानक पाँखि तखन खुलय,
 जखन हेतु तीन चिन्ह धरय;
 पक्षमे उपस्थित, समानमे संग,
 विपरीत ठाम सँ दूर रहय।
 एहि त्रिरूपक दृढ़ अनुशासन
 मनमानी उड़ान रोकय;
 चिह्नक पाछाँ सत्यक सम्बन्ध
 तर्कक आकाश धीरे खोलय।
 कखनो अपन मन भीतर निष्कर्ष,
 कखनो दोसर लेल शब्दक सेतु;

एकमे मौन विवेकक यात्रा,
 दोसरमे स्पष्ट हो कारण-हेतु।
 दावा जखन भाषा बनि उठय,
 उदाहरण संग राहि दिखाय;
 तर्कक काम विजय नहि केवल,
 समझक साझा भूमि बनाय।
 हेतु जँ अधूर, उलट, संदिग्ध,
 निष्कर्षक दीप धुँधला होय;
 रूप ठीक जकाँ देखाइतहुँ
 भीतर दोषक बीज सँ रोय।
 तैं तर्कक सजग पहरादारी
 भ्रमक चोला चीन्हे सकय;
 प्रमाणक बल केवल कथन नहि,
 सम्बन्धक सत्य सँ टिकि रहय।
 बाह्य जगक स्पर्श आ चेतन
 दुनू बीच प्रश्नक सूक्ष्म धार;
 जे प्रत्यक्षमे नहि समायल,
 तकरा अनुमान देत आकार।
 ज्ञानक सीमा स्वीकारितहुँ
 सत्यक खोज नहि होय थाम;
 जे उपलब्ध अछि, तकर कसौटी
 बनय अनुभव, हेतु आ काम।
 क्षणक उजास, हेतुक पाँखि,
 दुनू संग बुद्धि पथ बनाय;
 कल्पना आ भ्रम हटिते प्रत्यक्ष,
 नियमित चिन्ह अनुमान जगाय।
 जो देखल, तकर सीमा जानू
 जो सोचल, तकर कारण राखू;
 ज्ञानक प्रत्येक दावा भीतर
 सजग परीक्षणक दीप जराउ।

शून्यक बीच सम्बन्धक ज्योति

जे किछु फूटय, कारणसँ फूटय,
 जे टिकय, सम्बन्ध सँ टिकैत;
 एकाकी स्वभावक कठोर किला
 जाँचिते भीतर सँ ढहैत।
 फूलमे माटि, जल, ऋतु, प्रकाश,
 श्वासमे जगक असंख्य डोरी;

स्वतन्त्र अस्तित्वक गर्व गलिते
 खुल्य परस्परता केर कोरी।
 शून्य कहब अन्हार नहि,
 नहि सभ किछु मेटल ठाम;
 ई तऽ अपनहि बल पर अचल
 स्वभाव नहि होएबाक नाम।
 निर्भरता जतेक गहिर बुझाई,
 ततेक जग जीवित देखाई;
 रिक्त नहि—सम्बन्धसँ भरल,
 हरेक क्षण नूतन रूप उगाई।
 यदि वस्तु अपनेमे पूर्ण रहितै,
 बदलावक कोनो राहि नहि;
 कारण, फल, मिलन, बिछोह
 ककरो काजक चाहि नहि।
 मुदा जग तऽ गति केर लहरि,
 एकसँ दोसर रूप बनय;
 अचल सारक मोह हटिते
 परिवर्तनक सत्य उजागर होय।
 “अछि” कहिते सीमा उठैत,
 “नहि” कहिते दोसर जाल;
 “दुनू” कहिते गाँठि बनैत,
 “ने दुनू” कहिते फेर सवाल।
 चारू कोनक बाँध पारि
 मौनक मध्य पथ खुलैत;
 जतय अवधारणाक धूलि थमैत,
 ओतय अनुभव निर्मल होइत।
 कारण कोना फल बनाबय,
 जँ दुनू अलग अनन्त रहय?
 आ यदि दुनू एकहि वस्तु,
 तखन उत्पत्ति ककरा कहय?
 बीच-बीचक निर्भर क्रममे
 घटना अपन अर्थ धरे;
 नहि स्वतन्त्र कारणक राजा,
 नहि फल अकेले जन्म धरे।
 दुनिया जेना देखाइत अछि,
 व्यवहारमे ओकर मान रहय;
 रोटी, रस्ता, पीड़ा, स्नेह,

सभ दैनिक सत्यक संग बहय।
मुदा गहिर जाँचक अन्तिम तहमे
स्वभावक ठोस गाँठ नहि पाय;
दू सत्य विरोधी नहि एतय,
एक दोसरक दुआर बनाय।
व्यवहार बिनु गहिर सत्यक
बात कहबो सम्भव नहि;
शब्द, संकेत, रूपक सहारे
मौन धरि पहुँचनाइ सहज नहि।
आ गहिर दृष्टि बिनु व्यवहार
मोहक घर बनि सकैत;
दुनू किनारक बीचक नाव
विवेकक धार पर चलैत।
संसारक चक्कर बाहर कतय,
जँ पकड़ भीतर जन्म लय;
नाम-रूप केँ अटल मानिते
आसक्ति अपन जाल तनय।
पकड़ ढीली, आग्रह शान्त,
ओहि क्षण सीमारेखा गलय;
मुक्ति कोनो दूर नगर नहि,
दृष्टिक फेरबदलमे फलय।
निर्वाण नहि जग छोड़ि भागब,
नहि शून्य अन्हारमे हराय;
तृष्णा, द्वेष, मोहक ताप
शान्त भऽ भीतर ठाढ़ रहाय।
जग ओहि जग, पथ ओहि पथ,
मुदा पकड़क भार नहि;
लहरि ओहि, जल ओहि,
बस “हमर” कहबाक दीवार नहि।
भाषा आवश्यक, भाषा सीमित,
नामक भीतर जग बन्हाइ;
“ई” कहिते “ओ” बनि जाइत,
भेदक रेखा संगहि आइ।
प्रपञ्च जखन स्वयं केँ सत्य
मानि सिंहासन पर चढ़ि जाए;
मौनक सजग दृष्टि तखन
शब्दक सीमा धीरे बुझाए।

मध्य पथ कोनो फीका समझौता नहि,
 दुई छोरक बीचक भय नहि;
 ई तऽ छोर बनेनिहार
 जड़ि मान्यताक पकड़ नहि।
 नित्यताक पत्थर, नाशक खाई,
 दुनूक मोहसँ मन उबरय;
 निर्भर उद्धवक कोमल बुद्धि
 हरेक वस्तुक सम्बन्ध पढ़य।
 शून्यक बीच सम्बन्धक ज्योति,
 रिक्ततामे जीवनक भरमार;
 स्वभावक कठोर दीवार टूटिते
 खुलय करुणाक विस्तृत द्वार।
 जँ किछु अकेले नहि बनैत,
 दुःखो अकेले ककरो नहि;
 परस्पर बान्हल एहि जगमे
 मुक्ति सेहो साझा राहि सही।

भेदक भीतर अभेदक राग

एकहि मूल सँ जग फूटैत,
 तैयो प्रत्येक रूप अलग;
 लहरि समुद्रक जलहि सँ बनल,
 तैयो लहरिक चाल अलग।
 भेद रहय, अभेदो रहय,
 दुनू सत्य एक संग जाग;
 एकर भीतर दोसरक छाया—
 भेदक भीतर अभेदक राग।
 जीव, जगत आ परम उजास
 तीनू अपन पहचान धरय;
 नहि एक-दोसरमे पूर्ण विलीन,
 नहि सर्वथा दूरी करय।
 अंश जकाँ सम्बन्ध गहिर,
 आश्रय बिनु स्वत्व अधूर;
 सीमा भीतर जीवक चेतन,
 मूल अनन्त, व्यापक, भरपूर।
 जगत न छाया, न झूठक पर्दा,
 ईहो सत्यक रूपक विस्तार;
 माटि, जल, अग्नि, वायु, आकाश
 शक्तिक क्रमिक खुलल संसार।

कारणहि भीतर कार्यक बीज,
 परिवर्तनमे रूप निखरय;
 जे मूल शक्ति जगकें धरैत,
 ओहि सँ सृष्टिक धारा झरय।
 शक्ति आ शक्तिमानक नाता
 दीप आ उजासक सन;
 एक बिनु दोसर बुझन कठिन,
 दुनू मिलि पूर्ण करे स्पन्दन।
 सृजन, धारण, लयक गति
 एकहि व्यापक बल सँ चलय;
 निर्गुणक मौन गहिराइ भीतर
 सगुणक जीवित रूप फुलय।
 जीव छोट, मुदा चेतन ज्योति,
 ज्ञान ओकर स्वभावक अंश;
 कर्मक पवन, इच्छाक धूलि
 ढाँकि देत ओकर निर्मल हँस।
 अहंकार जखन देहहि 'हम' कहय,
 बंधनक गाँठ कठोर बनय;
 अपन मूलक स्मृति बिसरिते
 संसारक चक्कर फेर तनय।
 सुख-दुःखक आवागमन
 कर्मक बीज सँ बारम्बार;
 इच्छा जखन स्वार्थमे बान्हल,
 जन्मक फेर खुलय दुआर।
 मुदा भीतर एक साक्षी-बोध
 कहय—“हम केवल देह नहि”;
 एहि पहिचानक उज्जर क्षणमे
 बंधनक जड़ि रहि सकय नहि।
 ज्ञान आवश्यक, कर्मो आवश्यक,
 प्रेम बिनु दुनू सूखल पात;
 केवल तर्क सँ दूरी नहि गलय,
 केवल कर्म सँ नहि खुलय रात।
 समर्पण जखन हृदयमे फूटय,
 ज्ञान पाबय उष्ण उजास;
 कर्म बनय सेवा, प्रेम बनय पथ,
 आत्मा पाबय अपन निवास।

प्रेम नहि केवल भावक लहरि,
 ओ अनुशासन, स्मरण, ध्यान;
 मनक वृत्ति एक दिशा धरिते
 शान्त होय भीतरक तूफान।
 राग जखन स्वार्थक बन्धन छोड़ि
 अनन्य समर्पण बनि जाए,
 हृदयक प्रत्येक धड़कन भीतर
 परम निकटता स्वयं समाए।
 मुक्ति जग छोड़ि भागब नहि,
 नहि स्वत्वक पूर्ण विनाश;
 जीव अपन परिचय राखितहुँ
 पाबय परम आनन्दक वास।
 दूरी गलय, सम्बन्ध निखरय,
 आश्रित स्वत्व रहय सजग;
 मिलनमे भेद नहि मेटाइत,
 भेदो प्रेममे होय अभेदक।
 ज्ञानक गर्व जखन झुकैत,
 कर्मक फल-लोभ दूर हटय;
 प्रेमक सहज नमनक भीतर
 अहंकारक दीवार कटय।
 कृपाक वर्षा तखनहि झरय
 जखन पात्र खुलल, मन उदार;
 समर्पणक मौन पात्रमे भरय
 अनुभवक मधुर अपार।
 भक्ति जँ केवल विनती नहि,
 ओ चेतनाक गहिर पराव;
 ध्यान, सेवा, स्मरण, समर्पण
 मिलि बनबय एकहि भाव।
 साध्य आ साधन जखन नजिक,
 प्रेम स्वयं फल बनि जाए;
 आनन्दक खोज समाप्त भऽ
 आनन्द स्वयं हृदयमे आए।
 भेदक भीतर अभेदक राग,
 अभेदक भीतर भेदक मान;
 जीव रहय जीव, जग रहय जग,
 तैयो मूल एकहि महान।
 सम्बन्धक एहि मधुर रहस्य मे

ज्ञान, कर्म, प्रेम एक संग;
सीमित हृदय अनन्त दिशि खोलय,
आ जीवन बनय समर्पणक रंग।

पुरान मूल्यक राखसँ नव अगिनि

जीवन केँ दूर सँ नहि निहारू,
ओकर धड़कन भीतर उतरू;
दुःख, उल्लास, हार, उमंग—
सभकेँ संग लऽ अर्थ गढ़ू।
जे विचार जीवन केँ सुखा दे,
ओकर चमक कतेक दिन टिकत?
जे संस्कृति सृजनक पाँखि काटय,
ओकर महल भीतरसँ ढहत।
कला जखन केवल सजावट नहि,
जीवनक गहिर स्वीकार बनय;
वेदना सेहो रूप धारण कऽ
गीतक भीतर उजास जनय।
मापल रेखा आ उन्मुक्त नृत्य,
दुनू चेतनाक अलग स्वर;
संयम आ उच्छ्वासक मेलमे
सृजन खोलय नूतन घर।
पुरान नियमक प्रत्येक पाँति
सदा लेल सत्य नहि रहय;
समय बदलय, मन बदलय,
मूल्यक अर्थो फेर सँ बहय।
जे मूल्य भय सँ जन्मल छल,
जे केवल झुकबाक पाठ पढ़ाय,
ओकर जड़ि पर प्रश्नक कुठार
नव विचारक राहि बनाय।
दीनता जँ गुण कहल जाए
केवल शक्ति सँ डरबाक हेतु,
आ साहस जँ दोष ठहराओल जाए
तखन उलटि पड़ैत मूल्यक सेतु।
स्वाभिमानक अर्थ दमन नहि,
नहि दुर्बल पर कठोर प्रहार;
अपन भीतरक जड़ता तोड़ब—
एहि मे छुपल शक्ति अपार।

बाहरक परम आदेश जखन
 मौन भऽ जाए एक दिन,
 तखन खाली आकाशक नीचाँ
 मनुष्य सुनय अपनहि चिन्ह।
 आदेश बिनु जीवन निरर्थक नहि,
 उत्तरदायित्व आरो गहिर;
 अपन मूल्य स्वयं गढ़बाक भार
 हृदय पर राखय कठिन लकीर।
 शक्ति केवल राजदण्ड नहि,
 नहि दोसरा केँ झुकाबय नाम;
 बीजक भीतर वृक्ष बनबाक
 जे आकुलता—ओकरो काम।
 दुःखक पाछाँ उठि ठाढ़ होएब,
 सीमा तोड़ि नव रूप धरब;
 अपने सँ पैघ अपने बनबाक
 अन्तर-अग्नि नित्य जरा रखब।
 जे अपनेक दुर्बल आदत केँ
 भाग्य कहि चुपचाप सहैत,
 ओ सम्भावनाक दुआर बन्द कऽ
 कालक आगाँ माथ नवैत।
 मुदा जे अपन डर केँ चीन्हे
 ओहि पर धीरे विजय करय,
 ओकर भीतर नव मनुष्यक
 अदृश्य अंकुर फूटि उठय।
 श्रेष्ठता वंशक मुकुट नहि,
 नहि भीड़ सँ ऊँच ठाढ़ होएब;
 ओ आत्म-विजयक कठिन साधना,
 नव मूल्य स्वयंमे बोएब।
 जे पुरान आदर्शक छाया छोड़ि
 सृजनक उत्तरदायित्व लय,
 ओहि मनमे भविष्यक चेहरा
 पहिल बेर आकार धय।
 कल्पना करू—एहि जीवनक
 हरेक क्षण फेर-फेर लौटि आए;
 ई हँसी, ई पीड़ा, ई निर्णय,
 युग-युग धरि पुनः दोहराए।
 तखन की हम एहि क्षण केँ

फेर अपन कहि स्वीकारब?
कि पछतावाक भार सँ काँपि
अपनहि जीवनसँ मुँह फेरब?
पुनरागमनक एहि कसौटी पर
प्रत्येक कर्मक मोल बदलय;
क्षण छोट नहि, अनन्तक दुआर,
जाहिमे सम्पूर्ण जीवन पलय।
एहन जिअ जे फेर आबितो
ओहि पग पर लाज नहि हो;
अपने चुनल जीवनक भार
अपने काँध पर भारी नहि हो।
भीड़ सहज उत्तर खोजैत,
एक स्वरमे सभ बात कहय;
मुदा अकेल प्रश्नक पहाड़ पर
अपनहि प्रतिध्वनि संग रहय।
एकान्त कखनो शून्य नहि,
ओ सृजनक गर्भ अन्हार;
ओतहि पुरान मूर्ति टूटैत,
ओतहि बनैत नव आकार।
पुरान मूल्यक राखसँ नव अगिनि,
आगि जँ केवल दहन नहि हो;
ओ उजास बनि भीतर उठय,
आत्म-विजयक पथ पर बहो।
जीवन केँ 'हाँ' कहबाक साहस,
दुःख सहित ओकर स्वीकार;
अपने केँ नित पार करैत
खुलय भविष्यक नव दुआर।

शब्दक देहमे अर्थक धड़कन

ध्वनि उठैत, क्षणमे विलीन,
तैयो अर्थ कतय सँ टिकैत?
अक्षर-अक्षर टूटि गेलो पर
वाक्यक बोध कोना जगैत?
कान सुनय तरंगक आवागमन,
मन पकड़य एक अखण्ड चिन्ह;
शब्दक देह क्षणिक भऽ सकैत,
अर्थक धड़कन राखय गहिर चिन्ह।

वर्ण अनेक, उच्चारण अनेक,
 तैयो पहिचान रहय समान;
 ककरो कण्ठ कठोर, ककरो कोमल,
 तैयो बुझाइ एकहि विधान।
 ध्वनि बाहरी वस्त्र जकाँ बदलय,
 भीतरक रूप नहि हरपाय;
 एकहि शब्दक अनेक प्रतिध्वनि
 एक अर्थक दुआर उघाराय।
 शब्द कहिते वस्तु मात्र नहि,
 जाति, गुण, क्रिया सेहो जागय;
 कखनो नामक विशिष्ट इशारा
 एक अनोखा रूप देखाय।
 कखनो चलन, कखनो वर्णन,
 कखनो समूहक सामान्य छाप;
 भाषाक एक-एक संकेत भीतर
 अर्थक अनेक धरातल नाप।
 गाय कहिते एक गाय नहि,
 नहि सभ देह एकहि ठाम;
 सामान्य रूपक बोध उठैत,
 विशेष सभ पाबय अपन नाम।
 व्यक्ति बदलय, वर्ग टिकैत,
 वर्ग बिनु व्यक्ति अधूर;
 अर्थक एहि आवागमन भीतर
 भाषा बनय सम्बन्धक नूर।
 शब्द आ अर्थक नाता केवल
 आइ बनल समझौता नहि;
 पीढ़ी-पारि चलैत संकेत
 स्मृतिक क्षणिक छाया नहि।
 उच्चारण नूतन हो सकैत,
 सम्बन्धक सूत्र रहय पुरान;
 भाषा जखन समाजमे जीबैत,
 अर्थ पाबय साझा पहचान।
 वाक्य एक-एक ईटक ढेरी नहि,
 सम्पूर्ण बोधक घर बनय;
 पद अलग-अलग अर्थ धरैतहुँ
 संग जुड़िते दिशा बदलय।
 पहिने-पाछाँ, अपेक्षा, संगति,

प्रकरणक मौन सहारा;
एक शब्द दोसराकेँ पुकारय,
तखन खुले वाक्यक दुआरा।
ज्ञानक राहि आँखि धरि सीमित नहि,
शब्दो प्रमाणक पथ बनय;
जे देखल नहि, जे दूर रहल,
विश्वसनीय वाणी सँ मन जनय।
मुदा हरेक आवाज सत्य नहि,
वक्ताक योग्यता चाही;
अर्थक संगति, प्रसंगक बल,
तखन वचन प्रमाण बनि जाही।
अनुमान दूरक चिह्न पढ़ैत,
प्रत्यक्ष नजिकक रूप छूअय;
शब्द समाजक स्मृति सँ
अदृश्य अनुभव हमरो दिअय।
तीनू बाट अलग-अलग,
तैयो ज्ञानक आँगन एक;
देखल, सोचल, सुनल बोध
मिलि जगक रूप करय अनेक।
स्वर्ग कहूँ वा सुखक उन्नति,
नामसँ अधिक कर्मक प्रश्न;
कर्मक पाछाँ संस्कार रहैत,
जीवनमे बनय नूतन स्पन्दन।
शुभ-अशुभक छाप मनोमय,
भविष्यक प्रवृत्ति आकार धरय;
आइक कर्मक सूक्ष्म प्रभाव
काल्हिक चालमे फेर उभरय।
देह बदलय, ध्वनि बदलय,
मुदा किछु स्मृति संग चलय;
'हम' कहबाक निरन्तर धारा
क्षण-क्षण भीतर रूप बदलय।
ज्ञान, इच्छा, सुख-दुःखक अनुभव
केवल माटिक खेल नहि;
भीतर कोनो ज्ञाता-सूत्र
संसारक आवागमनमे चलि रहय।
शुद्धि केवल शरीरक नहि,
वाणी आ मनक सेहो काम;

बेठीक शब्द जँ अर्थ बिगाड़य,
 बेठीक भावो बिगाड़य नाम।
 उच्चारणक सजग अनुशासन
 अर्थक स्पष्टता संग जुड़य;
 भाषाक साधना अन्ततः
 चेतनाक साधनामे मुड़य।
 शब्दक देहमे अर्थक धड़कन,
 ध्वनिक पारि अखण्ड संकेत;
 वर्ण, जाति, गुण, क्रिया, व्यक्ति
 सभ मिलि बनबैत अर्थक सेतु।
 सुनबाक भीतर सोचब सीखू,
 कहबाक भीतर जिम्मेदारी;
 भाषा केवल बोलि नहि—
 ओ चेतना, स्मृति, सम्बन्धक क्यारी।

चित्तक तरंग थमल तखन

मनक झीलमे तरंग अनेक,
 कखनो स्मृति, कखनो कल्पना;
 कखनो निद्राक धुँधल छाया,
 कखनो विपर्ययक भूल रचना।
 तरंग जतेक तेज उठैत,
 दर्पण ततेक रूप बिगाड़य;
 शान्ति जखन भीतर उतरय,
 स्वरूप अपनहि ज्योति सँ निहारय।
 चित्तक वृत्ति पाँच दिशा सँ
 दिन-रात भीतर आवाज करय;
 प्रमाण कखनो राहि देखाबय,
 भ्रम कखनो अन्हार भरय।
 कल्पना शब्दक पाँखि लगाबय,
 निद्रा शून्यक चादर तानय;
 स्मृति बीतल पगक छाप सँ
 वर्तमानक दुआर पहिचानय।
 रोकब बलपूर्वक मौन नहि,
 नहि मन केँ पत्थर बनाउ;
 अभ्यासक धीर पुनरावृत्ति सँ
 एक दिशा मे ध्यान लगाउ।
 वैराग्यक अर्थ भागब नहि,
 आसक्तिक गाँठ धीरे खोलू;

जे आय, जे जाए, तकरा देखू,
 मुदा अपन हृदय नहि बेचू।
 श्वास आबय, श्वास जाए,
 दुनू बीच एक सूक्ष्म ठाम;
 ओतय तनक बेचैनी ढीली,
 ओतय मन पाबय अपन नाम।
 आसन देहक स्थिर निवास,
 प्राणायाम भीतरक सेतु;
 श्वासक लय जखन सजग बनय,
 चित्त सुनय मौनक हेतु।
 इन्द्रिय बाहर दौड़ैत रहय,
 रंग, गन्ध, स्वादक पुकार;
 प्रत्याहारक कोमल मोड़ पर
 दृष्टि फेरि आबय भीतर-द्वार।
 नहि जगत छोड़ि अन्हार पसारब,
 नहि विषय सँ वैर करब;
 बस दासता केर सूत कटैत,
 स्वतन्त्र ध्यानक राहि धरब।
 एक बिन्दु पर मन ठाढ़ रहय,
 एहि सँ धारणा जन्म लय;
 धार निरन्तर बहैत जाए,
 तखन ध्यानक नदी खुल्य।
 जखन देखनिहारो धीरे गलय,
 देखल वस्तुक भार उतरय;
 एकाग्रता केर गहिर मौनमे
 समाधि अपन दुआर उधारय।
 नीति बिनु ध्यानक ऊँच महल
 भीतर सँ कमजोर रहय;
 अहिंसा, सत्य, अस्तेयक पथ
 आचरणक माटि सुदृढ़ करय।
 संयम, अपरिग्रह, शुद्धि, सन्तोष,
 तप आ स्वाध्यायक दीप;
 भीतर-बाहर एकहि लयमे
 जीवन बनय साधनाक सीप।
 अहंकार कहय—“हमहि कर्ता”,
 राग कहय—“ई हमर अधिकार”;
 द्वेष पुरान पीड़ाक छाया,

भय धरय जीवनक दुआर।
 अविद्याक मूल जखन न चिन्ही,
 गाँठ पर गाँठि नित बनि जाए;
 विवेकक दीया भीतर जरिते
 बंधनक जड़ि खुलि जाए।
 द्रष्टा शुद्ध, मुदा चित्त रंगीन,
 अनुभव केर छाप सँ भरल;
 एकहि आकाश पर मेघ अनेक,
 तैयो आकाश नहि बदलल।
 जखन मेघ केँ आकाश बुझैत छी,
 तखन भ्रमक जन्म होय;
 द्रष्टा अपन स्वतन्त्र उजासमे
 चिन्हिते बन्धन दूर होय।
 समर्पणक अर्थ हार नहि,
 ओ अहंकारक भार उतार;
 जतय सीमित इच्छा थकैत,
 ओतय खुलय विश्वासक द्वार।
 कर्म करैतहुँ फल पर पकड़ नहि,
 ध्यान करैतहुँ गर्व नहि;
 मौनक भीतर जे असीम भरोसा,
 ओहि सँ मन रहय सहज सही।
 सिद्धि चमकैत बाटक किनार,
 मुदा मंजिल ओ नहि होय;
 अद्भुत शक्ति, सूक्ष्म अनुभूति
 मन केँ फेर बन्हि सकय।
 जे पथ मुक्तिक दिशि चलैत,
 ओ आकर्षण पर नहि रुकय;
 विवेकक एकनिष्ठ उजास
 अन्तिम गाँठो धीरे खोलय।
 चित्तक तरंग थमल तखन
 नहि जीवन थमल, नहि जग;
 बस दर्पण सँ धुँध हटि गेल,
 स्वरूप देखायल निर्मल जगमग।
 अभ्यास, वैराग्य, संयम, ध्यान,
 श्वासक लय आ सजग विचार;
 भीतरक मौन जखन पूर्ण खिलय,
 स्वतन्त्रता बनय अपनहि द्वार।

संशयक चुभन, कर्मक अर्थ

विचार जँ केवल शब्द बनि रहय,
तखन ओकर पाँखि कतय उड़य?
अर्थ तखनहि देह धारण करय,
जखन व्यवहारमे किछु बदलय।
जे धारणा जीवन छूअय नहि,
जे कर्मक दिशा नहि मोड़य,
ओ धुँध जकाँ क्षण भरि चमकि
अर्थक दुआर पर स्वयं टूटय।
एक विचारक मोल बुझब हो,
देखू ओकर सम्भव परिणाम;
कुन परिस्थिति बदलि सकैत,
कुन कर्ममे पाबय अपन नाम।
अर्थ नहि केवल शब्दक भीतर,
नहि मनक गुप्त कोठरी मात्र;
जीवनक सम्भावित व्यवहारमे
ओकर रेखा बनैत स्पष्ट।
सत्य कोनो निजी दीप नहि,
जे अपन कोठरीमे मात्र जरे;
खोज करैत अनेक मनक बीच
ओ परीक्षा सँ रूप धरे।
दीर्घ प्रश्नक साझा यात्रामे
भ्रमक परत धीरे हटि जाए;
सत्यक क्षितिज ओतहि खुलय
जतय खोजी मन संग-संग जाए।
विश्वास मनक सुस्त विश्राम नहि,
ओ कर्मक आदत बनि उठय;
जे मानल, तकर छाप व्यवहारमे
दिनचर्याक रेखा पर फूटय।
यदि विश्वासक कोनो फल नहि,
कर्मक पथमे कोनो फेर नहि;
तखन कहबाक भिन्नताक पाछाँ
अर्थक असल अन्तर रहि नहि।
संशय काँट जकाँ चुभैत,
स्थिर मन केँ बेचैन करय;
पुरान भरोसाक पाटी हिलि
नव प्रश्नक दुआर उधारय।

मन नहि चाहय सदिखन काँपब,
 ओ खोजय टिकबाक ठाम;
 संशयसँ विश्वास धरि यात्रा
 एहि खोजक जीवित नाम।
 विश्वास पकड़ि राखब एक उपाय,
 कान बन्द कऽ अपन बात;
 दोसरा स्वर सँ दूर भागि
 अपनहि मान्यता संग रात।
 मुदा जगक असंख्य आवाज
 दीवारक पारि पहुँचि जाए;
 जिद्दक किला चाहे ऊँच हो,
 एक प्रश्न ओकर दरार बनाय।
 कखनो सत्ता कहय—“एहि केँ मानू”,
 कखनो समाज करे आदेश;
 भीड़क मुहर सँ विश्वास टिकय,
 मुदा भीतर बचि रहय सन्देश।
 जतय प्रश्नक दुआर बन्द हो,
 ओतय शान्ति देखाए क्षणिक;
 मौन दबाओल बुद्धि एक दिन
 फेर उठि पूछय—“किएक? कतेक?”
 कखनो जे सुन्दर लगय बुद्धिकेँ,
 तकरा सत्यक आसन दियौ;
 संगति, रुचि, सहज प्रतीति केँ
 निर्णयक अन्तिम कारण कियौ।
 मुदा मन-मनक रुचि अलग-अलग,
 आकाशमे बहु रेखा खिंचय;
 जे आइ सहज, काल्हि असहज,
 ओ कसौटी केना स्थिर रहय?
 एक राहि एहन चाही जतय
 वस्तु अपन प्रतिरोध सुनाबय;
 इच्छासँ बाहर जे किछु अछि,
 ओ प्रयोगमे उत्तर दियाबय।
 निरीक्षण, परीक्षण, पुनरावृत्ति,
 साझा जाँचक खुलल मैदान;
 भूलक सम्भावना मानितहुँ
 एहि सँ दृढ़ हो ज्ञानक प्राण।

तर्कक तीन पाँखि उधारू—
 एक नियम सँ फल दिस जाए;
 एक अनेक घटना जोड़ि-जोड़ि
 सामान्य सूत्रक रूप बनाए।
 तेसर अनपेक्षित चिन्ह देखिते
 सम्भव कारणक बीज लगाय;
 कल्पना तखन परीक्षण माँगय,
 नव खोजक पहिल दीप जराय।
 कखनो केवल सम्भावना फूटय,
 कखनो टकराहट देत उत्तर;
 कखनो सम्बन्धक सेतु बनैत,
 एक चिन्ह पहुँचय दोसर घर।
 क्षणक गुण, वस्तुक प्रतिरोध,
 नियमक मध्यस्थ विस्तृत धार;
 जगतक रूप तीन लयमे धड़कय,
 अनुभव बनय बहुस्तरीय सार।
 संशयक चुभन, कर्मक अर्थ,
 जाँचक धूप, विश्वासक राह;
 सत्य न निजी जिद्दक कैदी,
 नहि केवल सत्ता केर चाह।
 प्रश्न सँ मत डेराउ कखनो,
 फल सँ विचारक मोल निहारू;
 भूलक दुआर खुलल रखि
 साझा खोजमे सत्य सँवारू।

सूत्रक दाना, भाषाक अनन्त वन

छोट-छोट सूत्रक दाना,
 भीतर अनन्त भाषाक वन;
 कम शब्दमे नियमक धड़कन,
 सघन अर्थक गुप्त स्पन्दन।
 जे कहबाक अछि, ओतबे कहू,
 फेर पुनरुक्तिक भार नहि;
 सूक्ष्म रेखासँ विशाल रचना—
 एहि अनुशासनक पार नहि।
 भाषा एकहि घाटक जल नहि,
 देश बदलय, उच्चार बदलय;
 लोकक बोली, पुरान मन्त्र,
 अलग-अलग लयमे अर्थ पलय।

जे जीवित वाणी लोकमें चलय,
 ओकर चालि सेहो ध्यान धरू;
 शास्त्र जँ जीवन सँ कटि जाए,
 तँ नियमक देहमें प्राण ककरू?
 शब्द अकेला पात नहि,
 जड़ि, तना, पल्लवक मेल;
 मूल धातुक गहिर संकेत,
 प्रत्यय देत नव रूपक खेल।
 एक छोट जोड़, एक सूक्ष्म फेर,
 अर्थक दिशा बदलि सकय;
 रूप-विन्यासक एहि करघामे
 भाषा नित्य नव वस्त्र बुनय।
 नाम कहिते व्यक्ति जागय,
 कि ओकर जातिक व्यापक छाप?
 एक गायक देह कि गायपन,
 ककरा पर पड़य शब्दक नाप?
 लोक जखन जे अर्थमें बोलय,
 ओहि प्रसंगक मान रहय;
 कखनो व्यक्ति, कखनो जाति,
 व्यवहारहि निर्णय करय।
 शब्द आ अर्थक नाता गहिर,
 मुदा एकरेखा सरल नहि;
 एक शब्द बहु अर्थ उधारय,
 बहु शब्दो एक पथ चलि सकय कहीं।
 मुख्य अर्थक उज्जर आँगन,
 कखनो गौण छाया संग आय;
 प्रसंग, चलन, सम्बन्धक धागा
 ठीक दुआरक कुंजी बनि जाय।
 एकहि ध्वनि कखनो यथार्थ,
 कखनो रूपक, कखनो संकेत;
 घरक 'मुख' आ नदीक 'मुख'मे
 कतय समान, कतय नव सेतु?
 भाषा कठोर पत्थर नहि,
 ओ लोक-विवेकक चालि धरय;
 उपचारक कोमल मोड़ सँ
 पुरान शब्द नव अर्थ करय।

रूढ़ शब्द अपन घर बनौने,
 चलनमे सोझ अर्थ बताय;
 योगिक शब्द अपन अवयव सँ
 निर्माणक कथा स्वयं सुनाय।
 मूल आ जोड़ि जखन स्पष्ट,
 अर्थक बीज अलग चिन्हाय;
 मुदा लोक जँ नव अर्थ देत,
 व्याकरणो ओकर चालि बुझाय।
 हरेक अवयवक अर्थ आवश्यक?
 हरेक जोड़ि सदा अलग बोलय?
 कखनो सम्पूर्ण शब्दहि जीवन पाबय,
 भाग-भाग अर्थ न खोलय।
 तँ विश्लेषणक चाकू तीखर हो,
 मुदा जीवनक देह नहि काटू;
 जे व्यवहारमे एकरूप जीबय,
 तकर अखण्डता सेहो नापू।
 तर्क आ भाषा दूर नहि,
 शब्द बिनु विचार अधूर;
 वस्तुक रूप जतेक सूक्ष्म,
 अर्थ-विचार ततेक भरपूर।
 नाम, गुण, क्रिया, सम्बन्ध—
 मन एहि धागासँ जग बुझय;
 भाषाक नियम जाँचैत-जाँचैत
 विचारक सीमा सेहो खुलय।
 नियम कहय—एतय ई रूप,
 अपवाद कहय—हमरो ठाम;
 दुनू संगहि व्यवस्था टिकय,
 नहि टूटय जीवित भाषाक नाम।
 सामान्य सूत्र दिशा देखाबय,
 विशेष प्रसंग सीमा बताय;
 लचीलापन बिनु अनुशासन
 स्वयं अपन अर्थ गमाय।
 शुद्धता केवल पुरान रूप नहि,
 नहि लोकवाणी कै तुच्छ कहू;
 जे रूप संचारक काज करैत,
 तकर जीवनक धड़कन लहू।
 शास्त्रीय माप आ लोकक व्यवहार

दुनूक बीच संवाद रहय;
 भाषा तखनहि पूर्ण फुलैत,
 जखन नियम आ जीवन संग बहय।
 सूत्रक दाना, भाषाक अनन्त वन,
 मूल सँ शाखा, अर्थ सँ बोल;
 धातु-प्रत्यय, जाति-व्यक्ति,
 लोकप्रयोगक नित नव डोल।
 कम शब्दमे विशाल व्यवस्था,
 तैयो जीवनक राहि खुलल;
 भाषा केँ बाँधब नहि—बुझब,
 एहि मे नियमक सौन्दर्य फुलल।

एक प्रतिवादक दीप

सत्यक घर पर ताला नहि,
 खिड़की सभ खुलल रहय;
 जे विचार भीतर बसल अछि,
 बाहरक पवन सँ भेट करय।
 प्रश्नक एकटा तीखर किरण
 दीवारक दरार देखाबय;
 जे टिकि सकय कठोर उजासमे,
 ओहि पर भरोसा कनेक बढ़ाय।
 हजार पुष्प एक रंगक भेटल,
 तैयो नियम अमर नहि होय;
 एक अनचिन्ह फूलक रंग
 पुरान भरोसाक नींव हिलाय।
 गिनती केवल पुष्टि देत,
 निश्चितता नहि हाथ धरय;
 एक साँच विरोधक स्वर
 सम्पूर्ण दावा फेर सँ परखय।
 ज्ञानक नाव किनार पर नहि,
 ओ बीच धारमे चलैत रहय;
 आइक मजबूत पालो काल्हि
 नव आँधीसँ प्रश्न सहय।
 “अन्तिम” शब्द बहुत भारी,
 विज्ञान ओकर भार नहि लय;
 अस्थायी विश्वासक संगहि
 नव परीक्षणक दुआर खुलय।

कल्पना पहिने पाँखि पसारय,
तखन प्रमाणक आकाश नापय;
निरीक्षण मात्र बीज नहि चुनय,
मन प्रश्नक खेत तैयार करय।
पहिने समस्या भीतर जागय,
फेर सम्भावित उत्तर फूटय;
उत्तर जखन जगसँ भिड़ैत,
तखन कतेक भ्रम टूटय।
हरेक देखनाइ निष्पक्ष नहि,
आँखिमे प्रश्नक रंग रहय;
जे खोजैत छी, जे बूझैत छी,
ओही सँ दृश्यक ढंग बदलय।
तैयो जग अपन प्रतिरोध राखय,
मनमानी पर मोहर नहि दे;
कल्पना जतेक दूर उड़य,
परीक्षण तकर पाँखि तौले।
जे दावा एहन ढंग बनायल
जे कखनो बेठीक ठहरि नहि सकय,
ओ सुरक्षित अवश्य देखाइ,
मुदा ज्ञानक जोखिम नहि सहय।
वैज्ञानिक साहस ओतहि जागय
जतय हारक सम्भावना हो;
अपन कथन केँ जाँचक आगिमे
रखबाक निर्मल क्षमता हो।
एक परिणाम जँ टकरा जाए,
पहिने कारण सभ फेर निहारू;
माप, साधन, सहायक धारणा,
सभ पर प्रश्नक दीप उतारू।
मुदा हरेक चोट सँ बचब लेल
नव बहाना जोड़ैत नहि जाउ;
जे सिद्धान्त जाँचसँ भागय,
ओकर चमक पर विश्वास घटाउ।
विज्ञान आ गूढ़ विचारक बीच
दीवार सदा पत्थरक नहि;
किछु कल्पना आइ अपरीक्षित,
काल्हि परीक्षण योग्य बनि सकय कहीं।
अर्थहीन कहि सभकेँ फेकब

बुद्धिक उदारता नहि होय;
 मुदा वैज्ञानिक कहल जाय तखन,
 जखन जोखिमक कसौटी सोय।
 सत्यक खोज अकेले मनक
 निज निजी विजयक खेल नहि;
 आलोचना, उत्तर, फेर आलोचना—
 एहि बिनु ज्ञानक मेल नहि।
 दोसरा प्रश्नक चोट सहनाइ
 विवेकक एकटा नैतिक मान;
 खुलल संवादक अग्निनिमे
 अहंकार गलि, विचार महान।
 इतिहासो कोनो रेलक पटरी नहि,
 जतय भविष्य पहिने लिखल;
 मानव निर्णय, भूल, संयोग
 सभ मिलि समयक रूप गढ़ल।
 एक नियम सँ सम्पूर्ण समाजक
 काल्हिक भाग्य नहि बाँधू;
 मानुषक स्वतन्त्र सम्भावना पर
 पूर्वकथनक जंजीर नहि साधू।
 ज्ञान बढ़ैत संग्रहसँ नहि केवल,
 भूल हटेबाक साहससँ सेहो;
 नव प्रश्न, नव अनुमान, नव जाँच,
 हारक भीतर अवसर सेहो।
 जे विचार गिरि जाए परीक्षणमे,
 ओ विफलता मात्र नहि कहलाय;
 ओ तऽ अगिला सत्यक राहि पर
 एक काँटा कम करि जाए।
 एक प्रतिवादक दीप जरा कऽ
 अन्हविश्वासक राति निहारू;
 अपने प्रिय विचारक सम्मुख
 सभ सँ कठिन प्रश्न उतारू।
 सत्यक प्रेम प्रशंसा नहि,
 ओ आलोचनाक उज्जर धार;
 जे अपन भूल स्वीकारि सकय,
 ओहि मनमे ज्ञानक भोर अपार।

कणसँ ध्वनि धरि जगक जाल

जगत एकटा नाम नहि केवल,
अनेक कोठरी, अनेक प्रश्न;
द्रव्यक देह, गुणक आभा,
कर्मक गति सँ बनैत जाल।
सामान्य जोड़य दूर-दूर केँ,
विशेष कहय—“हम अलग ठाम”;
समवायक गहिर गाँठि भीतर
रूप पाबय सम्बन्धक नाम।
माटि, जल, अग्नि, पवनक कण,
आँखिमे सभ नहि पड़ैत;
सूक्ष्म आधारक मिलन सँ धीरे
स्थूल जगत आकार धरैत।
दू कण भेटि सूक्ष्म युगल,
फेर समूह सँ विस्तार होय;
अदृश्यक पाछाँ दृश्यक देह
कारणक क्रम सँ जन्मल सोय।
कण छोट अछि, मुदा निरर्थक नहि,
ओकरो अपन भेदक चिन्ह;
माटिक कण जल नहि बनैत,
अग्नि-पवनक अलगहि गिन्ह।
विशेषक सूक्ष्म पहिचान बिनु
समानता सभकेँ घोलि दय;
भिन्न अस्तित्वक अन्तिम रेखा
जगतक बहुरूपता बचाय।
सामान्य कहय—बहुमे एकता,
एकहि छाप अनेक ठाम;
गाय सभमे गायन जकाँ,
रूप अनेक, साझा नाम।
मुदा सामान्य स्वयं व्यक्ति नहि,
नहि हाथ धरिकेँ देखल जाय;
अनेक विशेषक बीचक बन्धन
बुद्धि अपन प्रकाशमे पाय।
गुण नहि चलय अपने बल पर,
तैयो द्रव्य केँ चिन्ह बनाय;
रंग, रस, गन्ध, संख्या, माप,
सुख-दुःखक स्वरूप बताय।

इच्छा, द्वेष, प्रयत्नक कम्पन,
 ज्ञानो गुणक रूप धरय;
 जड़ जगत सँ चेतन जीवन धरि
 गुणक सूची विस्तार करय।
 संख्या केवल गिनती नहि,
 एक सँ दू धरि बोधक पथ;
 “एक” पहिने मनमे उजागर,
 तखन “दू”क सम्भव होय अर्थ।
 अलग-अलग वस्तुक संगम देखू,
 द्वित्वक बोध तखन उठय;
 ज्ञानक क्रममे पहिले एकत्व,
 फेर बहुलताक फूल फूटय।
 सृष्टि कखनो अराजक धूलि नहि,
 क्रमक भीतर गति सँ बनय;
 सूक्ष्म कण निष्क्रिय रहितहुँ
 अदृष्टक प्रेरणसँ चलि पड़य।
 कर्मक पुरान छाप आ व्यवस्था
 नव शरीरक रूप सँ जुड़य;
 जन्म-मरणक विशाल करघा
 कारणक सूत सँ नित बुनय।
 परम इच्छा केवल दर्शक नहि,
 नियमक संग जगत सँ नाता;
 कर्मक फल जतेक जटिल,
 ततेक चाही न्यायसँ बाँटा।
 सृष्टि, धारण, फेर संहारक
 क्रम कोनो अन्ध खेल नहि;
 जीवक कर्मक सूक्ष्म लेखा
 कालक पाछाँ हराए नहि।
 ध्वनि एक ठाम जन्म लैत,
 मुदा कान धरि कोना आय?
 पहिल तरंग दोसर जगाबय,
 फेर तेसर पथ पर जाए।
 जलमे उठल वृत्त जकाँ
 सन्तान-सन्तान कम्पन बहय;
 दूरक उच्चारणक एक लहरि
 श्रवण-दुआर अन्ततः छूअय।

अनुमान दूरक दीप जकाँ,
चिह्न सँ अचिन्ह अर्थ धरय;
हेतु पक्षमे उपस्थित हो,
समान ठाम ओकर संग रहय।
जतय साध्य नहि, हेतु नहि हो,
विपरीत उदाहरण राहि बताय;
तीन चिह्नक सजग मेल सँ
तर्क अपन विश्वास कमाय।
द्रव्य, गुण, कर्म अलग-अलग,
तैयो जगमे एक संग वास;
अवयव आ अवयवीक भीतर
समवायक अदृश्य विश्वास।
जे अलग करिते रूपहि टूटय,
ओ नाता साधारण मेल नहि;
गहिर सम्बन्धक एहि धरती पर
अस्तित्व अकेला खेल नहि।
कणसँ ध्वनि धरि जगक जाल,
गुणसँ संख्या, हेतुसँ ज्ञान;
सूक्ष्म भेद आ साझा रूपक
मिलन सँ बनैत विश्व-विधान।
देखल वस्तुक पाछाँ खोजू
सम्बन्ध, कारण, भेदक धार;
जगतक प्रत्येक कण कहैत अछि—
सूक्ष्म विचारो हो सकय अपार।

वाक्यक संगति, ज्ञानक अपन उजास

ज्ञान जखन जन्म लैत अछि,
अपने संग विषय देखाबय;
'हम जानलहुँ' अलग दीप नहि,
एके बोधमे तीनू जगमगाय।
ज्ञाता, ज्ञान आ ज्ञेयक त्रयी
एक क्षणमे रूप धरय;
बोध केँ फेर दोसर प्रमाण
हरेक बेर मोहर नहि करय।
ज्ञान अपन सत्यता नेने
प्रथम उजास जकाँ उठय;
भ्रम तखन चिन्हल जाइत,
जखन पछिला बोध ओकरा तोड़य।

भूल अन्ह मिश्रणक कारण,
 दू ठीक बोध अलग नहि भेल;
 देखल रूप आ स्मृत वस्तु
 भेद न बुझिते भ्रमक खेल।
 शुक्तिक चमक, चाँदीक स्मृति,
 दुनू अनुभव अपन ठाम ठीक;
 जे अनुपस्थित भेद न बूझल,
 ओतहि भूलक गाँठि रही।
 अज्ञान एतय झूठक सृष्टि नहि,
 भेदक अनपलब्धि मुख्य बात;
 ठीक पहिचान जखन जागय,
 भ्रम स्वयं छोड़य अपन हाथ।
 शब्द अकेला अर्थ नहि देत,
 वाक्यक संगति प्राण बनय;
 पद जे सम्बन्धमे जुड़ल,
 ओहि अन्वयमे अर्थ जनय।
 पहिने अलग अर्थ जोड़ि फेर
 वाक्य बनबय—एहन नहि;
 सुनिते पद सम्बन्धित रूपमे
 क्रियाशील अर्थ जगाबय सही।
 विधिवाक्य जीवन दिशि मुड़ैत,
 शब्द कर्तव्यक बाट बताय;
 अर्थ केवल वस्तु-चित्र नहि,
 करबाक प्रेरणा संग लाय।
 जे वाणी निष्क्रिय रहि जाए,
 तकर मुख्य प्रयोजन अधूर;
 कर्तव्यक संग जुड़ल अर्थ
 कर्मक दिशा करय भरपूर।
 आत्मा ज्ञानक स्थायी आश्रय,
 देह बदलितो क्रम रहय;
 सुख-दुःख, इच्छा, स्मृतिक
 एक भोक्ता भीतर बहय।
 ज्ञान वस्तु केँ प्रकाशित करय,
 संगहि ज्ञाता स्वयं खुलय;
 दीप जेनाँ दोसर वस्तु संग
 अपने उजासो प्रकट करय।
 प्रमाणक मोल नूतन बोध,
 जे पहिने अज्ञात छल से आय;

अनावश्यक पुनः-पुष्टि माँगिते
अनन्त शृंखला दूर चलि जाय।
कर्मक मूल्य फलहि मात्र नहि,
विधिक अपन गम्भीर पुकार;
जे करबाक अछि, ताहि दिस
बुद्धि आ इच्छा खोलय द्वार।
वाक्यक संगति, ज्ञानक उजास,
भेदक बोध आ कर्तव्यक स्वर;
एकहि क्षणमे जग, ज्ञाता, अर्थ
मिलि खोलय चेतनाक घर।

छायाक गुफासँ रूपक सूर्य

अन्तर गुफाक भीत पर छाया,
लोक तकरा जग मानि रहय;
पाछाँ जरैत आगिक स्रोत
दृष्टिसँ ओझरायल रहय।
बंधन ढीला, मुख जखन फिरल,
पहिल उजास आँखि दुखाय;
पुरान छाया सहज लगैत,
नव सत्य कठिन बुझाय।
धीरे बाहर पग पड़िते
वस्तुक रूप अधिक स्पष्ट;
अन्ततः सूर्यक व्यापक ज्योति
ज्ञानक मूल करय प्रकाशित।
दृश्य वस्तु बदलैत रहय,
सुन्दर फूल मुरझा जाए;
मुदा 'सुन्दरता'क शुद्ध अर्थ
एक फूलमे सम्पूर्ण नहि समाय।
समान वस्तु अनेक देखू,
समानताक आधार कतय?
विशेष रूपक पाछाँ बुद्धि
सामान्य स्वरूपक दिशा लय।
ज्ञान मतक हलचल मात्र नहि,
स्थिर कारणक खोज आवश्यक;
इन्द्रिय परिवर्तन समाचार देत,
बुद्धि पाबय गहिर मंजूरी।
सीखब केवल बाहर सँ भरब नहि,
भीतरक स्मरण सेहो जागय;

ठीक प्रश्नक तीखर संवाद
 सुप्त बोध केँ फेर जगाय।
 प्रश्न पाछाँ प्रश्न उठबैत
 मतक खोल धीरे हटय;
 विरोध सहि जे अर्थ टिकैत,
 तर्कक सीढ़ी ऊपर चढ़य।
 आत्मा भीतर चाहक घोड़ा,
 उत्साहक अगिनि, विवेकक सार;
 तीन शक्तिक संतुलन बिनु
 जीवन बनय उलझल रथभार।
 विवेक दिशा, साहस रक्षा,
 इच्छा उचित सीमा मानय;
 भीतरक न्याय तखन फुलैत,
 प्रत्येक भाग अपन काम जानय।
 राज्यो एक पैघ आत्मा जकाँ,
 कर्मक भेदक संगति चाही;
 ज्ञान बिनु शक्ति अन्ह होय,
 शक्ति बिनु न्याय टिकैत नहि।
 शासनक सर्वोच्च आसन लेल
 लोभ नहि, सत्यक दीर्घ साधना;
 जे अपन चाह पर विजय पाबय,
 तकर हाथमे हो जिम्मेदारीना।
 शिक्षा केवल सूचना नहि,
 आत्माक दृष्टि घुमेबाक काज;
 छायासँ बाहर सूर्य दिशि
 धीरे बदलय जीवनक राज।
 कला जँ छायाक छाया मात्र,
 सत्यसँ दूरी बढ़ा सकय;
 मुदा सौन्दर्यक पाँखि पकड़ि
 आत्मा उच्च रूप दिस जा सकय।
 प्रेम देहक आकर्षण सँ आरम्भ,
 मुदा ओतहि यदि नहि थमय;
 एक सुन्दर रूपसँ सभ सुन्दरता,
 अन्ततः सौन्दर्य स्वयं धरि गमय।
 छायाक गुफासँ रूपक सूर्य,
 मतसँ ज्ञानक दीर्घ चढ़ान;
 भीतर न्याय, बाहर उत्तरदायित्व,
 सत्यक उजास बने विधान।

देखल जगक मौन उजास

आँखि खोलिते जग उभरैत,
रंग, आकार, दूरि, निकट;
स्पर्शक ताप, ध्वनिक कम्पन,
मनमे बनैत अनुभवक चित्र।
जे किछु जानि सकैत छी,
अनुभूतिक दुआर सँ आबय;
देखल जगक मौन उजासमे
अर्थ अपन पहिचान बनाबय।
रंग कहूँ वा आकार कहूँ,
स्वाद, गन्ध वा कोमल ताप;
की ई सभ वस्तुक भीतर
हमर अनुभवसँ अलग छाप?
जखन अनुभूति हटि जाए,
ककरा लेल रहत ई रंग?
ज्ञात जगत जतेक खुलैत,
चेतनाक संगहि ओकर संग।
प्राथमिक आ गौणक दीवार
कतेक दृढ़, कतेक अनुमान?
आकारो तऽ देखाइत मनमे,
गतियो पाबय अनुभूतिक मान।
जे गुण ज्ञात अछि, ओ ज्ञानै,
बोधसँ बाहर कोन विधान?
वस्तुक नाम जँ गुणक समूह,
अदृश्य आधारक की पहिचान?
“पदार्थ” कहि यदि किछु मानू,
जे नहि रंग, नहि रूप, नहि स्पर्श;
नहि आकार, नहि गति, नहि ध्वनि,
तखन कोना पाबय ओकर अर्थ?
अनुभवसँ बाहर ठाढ़ किछु
केवल नामक खोल रहि जाए;
जे नहि कखनो समक्ष आबय,
ओकर दावा मन कोना बुझाय?
मुदा जग मिटि नहि जाइत,
एतय फूल, नदी, घर, गाछ;
ई सभ अनुभवक जीवित क्रम,
नहि रिक्त शून्यक कोनो काछ।

वस्तु हमर कल्पना मात्र नहि,
 अनुभूतिक नियमित उपहार;
 हम चाही वा नहि चाही,
 ओ आबय अपन निश्चित व्यवहार।
 मन चाहिते लाल रंग नहि बनय,
 नहि इच्छासँ वर्षा थमय;
 अनुभवक एक अनुशासित क्रम
 हमर निजी इच्छा सँ नहि चलय।
 एहि नियमक पाछाँ किछु चेतन
 व्यापक आधारक आभास;
 जगतक स्थिर लय कहैत जेनाँ—
 हमरा पाछाँ अछि पैघ प्रकाश।
 हमर मन सक्रिय चिनगी,
 विचार सभ निष्क्रिय छवि;
 चाह, स्मृति, ध्यानक गति सँ
 चेतन सत्ता देत नव रवि।
 अपने केँ चित्र जकाँ नहि देखी,
 तैयो कर्ममे स्वयं पहिचानी;
 जे देखैत, चाहैत, स्मरण करैत,
 ओहि भीतरक जीवित कहानी।
 दोसरा मनक सोझ दर्शन
 हमरा नहि भेटैत कखनो;
 तैयो वाणी, चालि, कर्म सँ
 ओकर चेतना बुझैत रहनो।
 जेनाँ अपन भीतर सक्रियता,
 तहिना दोसरो भीतर प्राण;
 दृश्यक पाछाँ अदृश्य चेतन
 सम्बन्धक देत अनुमान।
 अमूर्त विचारक ऊँच महल
 कखनो धुँधि बनि राहि ढाँकय;
 “रंग” बिनु कोनो रंग विशेष,
 “आकार” बिनु रूप—केना आँकय?
 सामान्य अर्थ संकेत बनि सकय,
 मुदा चित्र सदा विशिष्ट होय;
 भाषाक सुविधा केँ वस्तु मानिते
 बुद्धि अपनहि जालमे खोय।

दूरि आँखि मात्र नहि नापय,
 स्पर्शक स्मृति संग जुड़ि जाए;
 दृश्यक चिन्ह आ देहक अनुभव
 मिलि दूरीक अर्थ बनाय।
 जे सोझ देखाइत जेनाँ लगय,
 ओहो सीखल सम्बन्ध हो;
 अनुभवक अनेक धार मिलिते
 जगतक स्थिर आकृति हो।
 जगत यदि अनुभवमे जीवित,
 तखन अकेले क्षणक कैदी नहि;
 हम आँखि मुँदि देलहुँ ताहि सँ
 गाछक अस्तित्व मिटैत नहि।
 व्यापक चेतनाक अखण्ड दृष्टि
 सृष्टिक क्रम केँ धारण करय;
 हमर सीमित बोधक बाहर
 नियमित जग निरन्तर रहय।
 देखल जगक मौन उजास,
 मन, अनुभूति, नियमक सेतु;
 अदृश्य पदार्थक खोल हटिते
 जीवित बोध बनय मुख्य हेतु।
 जे किछु ज्ञात, ओ अनुभूतिमे,
 जे अनुभव, ओ चेतनाक लग;
 रंग-रूपक एहि विस्तृत वनमे
 जग बनय दर्शनक उजास।

सूत्रक गाँठिमे अनन्तक स्वर

जिज्ञासाक पहिल कम्पनमे
 मन पूछय—मूल कतय अछि?
 जे सँ जन्म, जे मे टिकनाइ,
 जाहि मे अन्तिम लय अछि।
 दृश्य जगत असंख्य तरंग,
 मुदा समुद्रक स्रोत एक;
 सूत्रक छोट गाँठि खोलिते
 अनन्त बोलय अनेक टेक।
 कारण केवल पहिल धक्का नहि,
 ओ आधारो, अन्तो, थाम;
 अंकुर, पात, फूल, फल भीतर
 एकहि बीजक गुप्त प्रणाम।

जगतक जन्मक पाछाँ खोजू
ओ व्यापक मौनक आधार;
रूप बदलय, नाम बदलय,
मूल रहय सभ रूपक पार।
वाणी अनेक दिशि बहैत,
कखनो कथा, कखनो उपदेश;
कखनो ध्यानक गहिर संकेत,
कखनो निषेधक सूक्ष्म सन्देश।
भिन्न पाँतिक भीतर खोजू
एकहि अर्थक समन्वित धार;
छिटकल मोती सूतमे गुँथिते
बनय ज्ञानक उज्जर हार।
शब्द अकेला अन्तिम नहि,
तर्क अकेला पूर्ण नहि;
अनुभव, मनन, श्रुत संकेत,
एक-दोसर बिनु दूर नहि।
जतय वाणी दिशि देखाबय,
बुद्धि ओहि राहि प्रश्न धरय;
आ भीतरक अनुभूति अन्ततः
शब्दक सीमा पार उतरय।
“हम” जे देहक संग बदलय,
ओही भरि की आत्मक नाम?
बालपन, यौवन, वृद्ध अवस्थामे
कुन रहय भीतर अविराम?
स्मृति टूटय, रूप बदलय,
तैयो साक्षीक ज्योति रहय;
जे देखैत अछि सभ परिवर्तन,
ओ अपने परिवर्तन नहि सहय।
आत्मा जँ मूल उजासक अंश,
दूरीक अर्थ कतेक रहि जाय?
तरंग जँ जलक रूपहि अछि,
जलसँ कतय अलग ठहराय?
भेद अनुभवक राहि पर उगय,
अभेद गहिर पहचानमे;
जतय ‘हम’क सीमित घेरा गलय,
विस्तार खुलय अपन प्राणमे।

ज्ञान केवल सूचना नहि,
नहि शब्दक भार माथ पर;
जानब अर्थ रूप बदलनाइ,
अज्ञानक गाँठि टूटय भीतर।
जे मूल केँ केवल सुनलहुँ,
ओ एखन बाहरक बात;
जे मूल केँ अपनेमे चिन्हलहुँ,
ओ बनल जीवनक प्रभात।
कर्मक जग अपन लयमे चलय,
कर्तव्यक राहि रहय आवश्यक;
मुदा कर्महि अन्तिम तट नहि,
ज्ञान बिनु यात्रा अधूरी।
कर्म मनक मैल हटाबय,
अनुशासन देत निर्मल थाम;
निर्मल दर्पणमे तखन झलकय
स्वयं उजासक गुप्त नाम।
भिन्न मतक अनेक पताका,
ककरो एक, ककरो भेद;
ककरो गुणयुक्त व्यापक सत्ता,
ककरो निर्गुण मौन अभेद।
सूत्र अपन संक्षिप्त देहमे
बहु व्याख्याक दुआर खुलाय;
एक कठोर साँचा नहि देत,
प्रश्नक जीवन बचि रहि जाय।
विरोधी स्वर सँ डेरब नहि,
तर्कक संग संवाद करु;
जे दावा जगक मूलक बारे,
ओकर भीतर कारण धरु।
खंडन केवल विजय नहि,
स्पष्ट करबाक एकटा पथ;
दोसरा प्रश्नक तीखर धारि सँ
अपन बोधो बनय समर्थ।
श्रुति जँ कहय—“तूँ ओहि सँ”,
मन पूछय—केना, कोन प्रकार?
प्रत्यक्ष जँ केवल रूप देखाबय,
अनुमान जोड़य कारणक तार।
मुदा अन्तिम पहचान जखन

भीतर स्वयं प्रकाशित होय,
जाननिहार, जानल, ज्ञानक दूरी
एकहि उजासमें शान्त होय।
सूत्रक गाँठिमें अनन्तक स्वर,
छोट शब्द, असीम विचार;
जगतक जन्म सँ आत्मक बोध धरि
एकहि प्रश्नक अनेक द्वार।
जिज्ञासा केँ जीवित राखू,
मननक अग्नि सदा जरय;
जे मूल सभक भीतर धड़कय,
ओ अपने भीतर प्रकटि पड़य।

सुखक तराजू, समाजक प्रश्न

जीवनक बाट पर दुइ प्रहरी—
सुख आ दुःखक मौन संकेत;
कर्मक पाछाँ मन पूछैत अछि,
ककरा सँ घटत पीड़ाक रेत?
जे नियम जीवन केँ छूअय,
ओकर मोल परिणाम सँ जानू;
खाली आदेशक ऊँच आसन नहि,
मानुषक सुख-दुःखमें ओकरा तानू।
नीक कर्मक पहचान कतय?
जे सुख बढ़ाबय, पीड़ा घटाबय;
एक मन नहि, अनेक जीवनक
हितक वृत्त केँ दूर पसारय।
अपन सुख जँ दोसराक रोदन,
तखन गणना अधूरी भेल;
सभ हितक साझा तराजू पर
तखनहि नैतिक मोल भेटल।
सुखो एकहि रंगक नहि होय,
तीव्रता कतेक, कतेक अवधि;
नजिक कि दूर ओकर आगमन,
निश्चितता कतेक, कोन स्थिति।
एक सुख दोसर सुख जनाबय,
कि पाछाँ दुःखक बीज धरय?
कतेक जीवन धरि प्रभाव पहुँचय—
विवेक एहि सभ प्रश्न पर ठहरय।

क्षणिक मिठास चमकि सकैत,
 मुदा पाछाँ विषक धार बहय;
 कठिन निर्णय एखन पीड़ा देत,
 काल्हि व्यापक सुख उपजय।
 तैं केवल पहिल स्वाद नहि,
 सम्पूर्ण परिणामक राहि निहारू;
 कर्मक वृत्त जतेक दूर पसारय,
 ततेक दूर धरि हिसाब सँवारू।
 कानून यदि भयक कोड़ा मात्र,
 तखन न्यायक मोल अधूर;
 ओ समाजक सुख बढ़ाबय चाही,
 दुःखक कारण करय दूर।
 दण्ड बदला लेल नहि हो,
 नहि क्रोधक अन्ध प्रहार;
 जतय आवश्यक, ओतहि सीमित—
 सुधार, सुरक्षा ओकर आधार।
 कारागारक बन्द दुआरमे
 मानवता नहि होय समाप्त;
 दोषी सेहो मनुष्य रहैत,
 दण्डक सीमा रहय परिमित।
 यदि व्यवस्था अपराध बढ़ाबय,
 तैं नियम स्वयं जाँचल जाए;
 संस्था मनुष्य लेल बनैत अछि,
 मनुष्य संस्था लेल नहि गँवाए।
 शिक्षा केवल विशेष जनक
 बन्द कोठरीक दीप नहि;
 ज्ञान जतेक जन-जन पहुँचय,
 अज्ञानक अन्हार रहय नहि।
 समाजक सुखक विस्तृत खेतमे
 शिक्षा जलक धार समान;
 अवसर जँ सभकेँ बराबर भेटय,
 तखन फूटय सामूहिक प्राण।
 कानून बननिहार जँ केवल
 अपन वर्गक हित निहारय,
 तखन व्यवस्था नामक भीतर
 अन्याय चुपचाप घर करय।
 जे नियम सभकेँ छूअय,

ओ सभक हितक लेखा माँगय;
 सत्ता जतेक उत्तरदायी हो,
 लोकक विश्वास ततेक जागय।
 सुखक गणना कठिन अवश्य,
 मनुष्य संख्या मात्र नहि;
 भाव, गरिमा, सम्बन्धक गहिराई
 तराजूक अंकमे समात नहि।
 तैयो परिणामक प्रश्न आवश्यक—
 “हमर कर्म सँ ककरा की भेल?”
 एहि एक प्रश्नक उज्जर चुभन
 नैतिक निद्रा बहुत बेर तोड़ल।
 अपन सुखक घेरे बाहर
 दोसरा चेहरा याद करु;
 बहुमत खुश ताहि नाम पर
 एक कमजोर कै नहि कुचलू।
 सामूहिक हितक अर्थ तखनहि,
 जखन न्यायो संग-संग रहय;
 सुखक संख्या मानव-मर्यादा
 बिनु अधूरी पाँति कहय।
 सुधारक बाट शब्द सँ नहि,
 संस्थाक देहमे उतरय चाही;
 शिक्षा, कानून, शासन, दण्ड—
 सभमे लोकहितक दृष्टि पाही।
 पुरान नियम केवल पुरान अछि,
 एहि कारण पवित्र नहि होय;
 जे दुःख बढ़ाबय, तकर समीक्षा
 नव समाजक कर्तव्य होय।
 सुखक तराजू, समाजक प्रश्न—
 कर्मक फल पर दृष्टि धरु;
 अपन निर्णयक दूर तरंगमे
 कतेक जीवन छूअय, से गुनू।
 पीड़ा घटय, अवसर बढ़य,
 न्याय सँ लोककल्याण जुड़य;
 एहि माप पर मानव व्यवस्था
 नित अपनहि रूप सुधारि मुड़य।

घड़ीक पारि बहैत जीवन

घड़ी कहय—क्षण एक-एक,
समान खाँचामे राखू काल;
मन कहय—ई धारा एहन नहि,
हरेक पलमे बदलैत सुर-ताल।
बीतल क्षण हराए नहि,
वर्तमानमे चुपचाप समाय;
कालक जीवित गहिर नदी
टुकड़ा-टुकड़ा नहि बनि जाय।
एक पल दोसरासँ अलग नहि,
जेनाँ सुर सँ जुड़ल गीत;
पहिल स्वरक स्मृति बिनु
दोसर स्वर रहि जाए अनीत।
वर्तमान अपने भीतर राखय
बीते समयक कोमल छाप;
आगाँक सम्भावना सेहो
एहि धड़कनमे पाबय माप।
बुद्धि वस्तु केँ काटि-काटि
माप, आकार, संख्या धरय;
काज करबाक दुनियामे
स्थिर खाँचा बहुत सहय।
मुदा जीवन जखन निरन्तर बहय,
रूप बदलय अनगिन बेर;
कठोर विचारक जाली भीतर
सम्पूर्ण प्रवाह नहि पाबय घेर।
तखन भीतरक सहज दृष्टि
वस्तुक संगहि चलि पड़य;
बाहर ठाढ़ नापय नहि केवल,
अन्तरमे ओकर लय पकड़य।
जेना राग बुझबाक लेल
तालिका मात्र पर्याप्त नहि;
रागक भीतर डूबि सुनब पड़त,
तखनहि ओकर प्राण सही।
जीवन कोनो यन्त्रक नकल नहि,
जे पहिने सँ सम्पूर्ण बनल;
ओ सृजनक अनजान यात्रा,
जाहिमे नूतन रूप फुलल।

भविष्य केवल भूतक प्रतिलिपि
 नहि, न निर्धारित एक विधान;
 हरेक मोड़ पर सम्भव नूतनता—
 जीवनक एही असली प्राण।
 एक उच्छ्वास भीतर सँ उठैत,
 बीज केँ पात, पात केँ फूल;
 रूप बदलैत, राहि बनबैत,
 नहि निश्चित साँचा, नहि स्थिर मूल।
 अनेक शाखा दूर निकलय,
 किछु थमय, किछु आगाँ जाए;
 सृजनशील जीवनक आवेग
 नव सम्भावना जगमे लाए।
 कखनो सहज प्रवृत्ति जानय
 वस्तुक भीतरक नजिक बात;
 कखनो बुद्धि दूरी बना कऽ
 औजार रचय, खोजय पथ-घाट।
 एक भीतर सँ जीवन छूअय,
 एक बाहर सँ रूप सँवारय;
 दुनू शक्ति अपन-अपन ठाम,
 मनुष्यक यात्रा आगाँ सारय।
 बुद्धि जे दिन औजार रचलक,
 जगत वस्तुक रूपमे खुलल;
 आकार, संख्या, उपयोगक भाषा
 व्यवहारक आँगनमे फुलल।
 मुदा ओहि विजयक संग-संग
 एक दूरी सेहो जन्म लय;
 जीवनक अखण्ड बहाव केँ
 स्थिर खण्ड बुझबाक भूल करय।
 स्वतन्त्रता नियमहीन छलाँग नहि,
 नहि कारणसँ पूर्ण अलग;
 जखन सम्पूर्ण व्यक्तित्व एक क्षणमे
 अपनहि गहिर स्रोत सँ जाग।
 जे निर्णय बाहरी नकल नहि,
 नहि आदतक यन्त्रवत चाल;
 ओहि कर्ममे सम्पूर्ण आत्मा
 रचय अपन नूतन काल।

समाजक पहिल अनुशासन
रीति, भय, बन्धन सँ टिकय;
साझा जीवनक रक्षा लेल
आदत नियमक रूप धरिकय।
ई स्थिर नैतिक वृत्त आवश्यक,
मुदा एतबे अन्तिम नहि;
कखनो प्रेमक खुलल उच्छ्वास
सीमाक पारि बहि सकय सही।
जखन हृदय सीमित घेरे सँ
मानव मात्र दिशि खुलि जाए;
कर्तव्य डरक बोझ नहि रहि,
प्रेमक सहज पुकार बनि जाए।
बन्द समाजक कठोर सीमा
खुलल मानवता दिशि मुड़य;
नैतिकता नियमक पाँति पारि
जीवित करुणाक रूप धरय।
धर्मो कखनो भय सँ उपजय,
अनिष्ट दूर करबाक आस;
कल्पना अदृश्य रक्षक रचय,
देय असुरक्षित मन केँ साँस।
मुदा भीतरक गहिर अनुभूति
जखन प्रेमक स्रोत छूअय;
स्थिर अनुष्ठानक पारि धर्म
जीवित सृजनक ज्योति बनय।
घड़ीक पारि बहैत जीवन,
हरेक पल नव, तैयो स्मृति संग;
बुद्धिक रेखा, सहज अनुभूति,
दुनू मिलि बनबैत बहुरंग।
जे काल केँ केवल गिनती मानय,
ओ आधा जीवन मात्र पढ़य;
जीवित अवधि भीतर उतरिते
क्षण-क्षण अनन्त दिशि बढ़य।

टुकड़ाक पारि अखण्ड उजास

जगत जतेक टुकड़ामे देखी,
ततेक रेखा उठैत बीच;
ई एतय, ओ ओतय ठाढ़,
सम्बन्ध बुनय दूरीक सींच।

मुदा हरेक रेखाक पाछाँ-पाछाँ
 एक दोसर पर निर्भर साँस;
 टुकड़ाक पारि जखन निहारू,
 खुल्य अखण्ड अनुभवक आकाश।
 विचार कहय—वस्तु अलग,
 गुण अलग, सम्बन्ध अलग;
 फेर पूछिते—सम्बन्ध कोना
 जोड़ि सकय दू स्वभाव अलग?
 जोड़ब चाही तँ तेसर डोरी,
 डोरीक फेर सम्बन्धक प्यास;
 तर्कक सीढ़ी चढ़ैत-चढ़ैत
 थाकि जाए विभाजनक साँस।
 जे अनुभव पहिने जीवित छल,
 शब्द ओकरा काटि बनाय;
 नामक भीतर सीमा खिंचैत,
 अनेक खण्डक रूप देखाय।
 विचार आवश्यक, मुदा अधूर,
 ओ पूर्णता नहि समेटि पाय;
 मानचित्र राहि बतबैत अछि,
 माटिक गन्ध कतय सँ लाय?
 दृश्य जगत मिथ्या नहि सम्पूर्ण,
 मुदा अन्तिम सत्यो नहि;
 जेना दर्पणक टूटल टुकड़ा
 चमक रखैत, समग्र नहि।
 आभासक भीतर सत्यक अंश,
 अंशक भीतर सीमाक वास;
 जतेक व्यापक मेल बनैत,
 ततेक गहिर होइत प्रकाश।
 ‘हम’ कहि देहक सीमा खींची,
 मुदा ‘हम’ अकेले बनि नहि सकी;
 भाषा, समाज, स्मृति, सम्बन्ध
 बिनु अपन पहचान कतय रखी?
 अपनता दोसरा सँ जुड़ैत,
 कर्तव्य सँ विस्तार पाबय;
 व्यक्ति जखन साझा जीवन छूअय,
 अपनहि रूप अधिक गहिराय।

नीति केवल बाहरी हुकुम नहि,
 नहि सुखक निजी हिसाब मात्र;
 जीवनक जे ठाम भेटल अछि,
 ओतय कर्तव्य बनय चरित्र।
 अपन शक्ति केँ साझा हितमे
 रूप दियौ, अहंकार नहि;
 स्वयं-पूर्ति तखनहि गहिर,
 जखन जगसँ सम्बन्ध सही।
 मुदा समाजो अन्तिम सीमा नहि,
 हरेक संस्था अपूर्ण रूप;
 नियम जतेक उपयोगी हो,
 तैयो न समेटय जीवनक स्वरूप।
 ऊपर उठैत चेतना खोजय
 आरो व्यापक सामंजस्यक ठाम;
 जतय विरोधी स्वर सभ मिलि
 एकहि संगीत पाबय नाम।
 दुःख, कुरूपता, भूल, विरोध—
 की ई सभ बाहर फेंकल जाय?
 यदि पूर्णता सचमुच पूर्ण,
 तँ किछु ओकर पारि नहि जाय।
 टूटल स्वर सेहो रागक भीतर
 बदलि सकय अपन पहिचान;
 समग्रता विरोध केँ पी कऽ
 बनय गहिरतर एक विधान।
 पूर्ण सत्य कोनो सूखल सूत्र नहि,
 ओ अनुभवक व्यापक देह;
 ज्ञान, इच्छा, सुख-दुःख सभ
 ओहि भीतर पाबय अपन गेह।
 जे हम अलग-अलग देखैत छी,
 ओतय एकता गुप्त प्रवाह;
 अन्तिम मेलमे भेद नष्ट नहि,
 भेदक अर्थ बदलय अथाह।
 सत्यक माप केवल “हाँ” नहि,
 नहि “नहि”क कठोर दीवार;
 किछु दावा संकीर्ण ठीक,
 किछु अधिक व्यापक आधार।
 जे दृष्टि अधिक सम्बन्ध समेटय,

कम विरोध कै छोड़ि बाहर;
 ओ सत्यक नजिक पहुँचैत,
 जेनाँ भोर सँ तेज दुपहर।
 पूर्णता दूरक वस्तु नहि,
 जकरा समयक अन्तमे पाबी;
 हरेक अनुभवक भीतर ओ गुप्त,
 अपूर्ण रूपमे ओकर छाबी।
 क्षण-क्षण सीमित चेतना भीतर
 समग्रक धीमा अनुराग;
 टुकड़ाक पारि जखन देखी,
 अखण्ड उजास बनय सभ राग।
 टुकड़ाक पारि अखण्ड उजास,
 सम्बन्धक जाल, अनुभवक धार;
 विचारक सीमा मानितहुँ
 पूर्णताक खोज रहय अपार।
 जे विरोध देखू, ओकर भीतर
 मेलक सम्भावना निहारू;
 अपूर्ण सत्यक हाथ पकड़ि
 समग्र दिशि पग-पग सँवारू।

नकारक सीढ़ी सँ स्वतन्त्र आत्मबोध

वस्तु समक्ष ठाढ़ रहैत,
 चेतन ओकर अर्थ निहारय;
 मुदा ज्ञाता केवल दर्पण नहि,
 अपने दूरी सेहो बनाबय।
 'ई' कहिते एक सीमा खिंचय,
 'नहि' कहिते दोसर द्वार;
 नकारक सूक्ष्म क्रिया भीतर
 विचार पाबय अपन आकार।
 जतय वस्तु पूर्ण पकड़ी जाए,
 ज्ञाता वस्तु समान भऽ जाए;
 मुदा चेतन हरेक निर्धारण पाछाँ
 आरो प्रश्नक ठाम बनाय।
 विषयक ज्ञान स्तर-स्तर चढ़य,
 रूप, तथ्य, अर्थक संग;
 हरेक निश्चयक भीतर किछु शेष
 जे खोलय अगिला बाट।
 ज्ञानक सत्य केवल मेल नहि,

नहि बाहरी छविक नकल;
 ज्ञाता-विषयक सम्बन्ध भीतर
 निश्चितता पाबय अपन फल।
 कखनो विषय सँ ध्यान हटिते
 चेतना अपने दिशि मुड़य;
 'हम जानैत छी'क एहि क्षणमे
 आत्मबोधक अंकुर फूटय।
 आत्मा वस्तु जकाँ समक्ष नहि,
 तकरा पकड़िते रूप बदलय;
 ओ मुक्त केन्द्र जकाँ पाछाँ
 हरेक अनुभूतिक सीमा छुलय।
 स्वतन्त्रता केवल विकल्प नहि,
 निर्धारण पार करबाक बल;
 जे देल गेल, तकरा नकारि
 नव अर्थ रचबाक खुलल स्थल।
 अभाव एतय सूखल शून्य नहि,
 सृजनक लागि खाली ठाम;
 पुरान रूपक सीमा टूटिते
 नूतन सम्भावना पाबय नाम।
 विचार यदि उधारक पोथी,
 आत्मक स्वर कतय सँ आय?
 स्वाधीन चिन्तन प्रश्न करैत
 अपने अनुभवक भूमि बनाय।
 परम्पराक अर्थ नकारब नहि,
 मुदा अन्ध पुनरावृत्ति छोड़ू;
 जे ग्रहण करू, स्वयं परखू,
 विवेकक आगिमे तकरा जोड़ू।
 सत्य बाहरक आदेश नहि,
 नहि मनमानी निजी मत;
 स्वतन्त्र बुद्धि जखन उत्तरदायी,
 तखन खुलय ज्ञानक पथ।
 आत्मबोध एकान्त कैद नहि,
 विषय-जगतसँ सम्बन्ध रहय;
 जगतक संग दूरी आ निकटता
 दुनू चेतन भीतर बहय।
 पूर्ण स्वतन्त्रता वस्तु-विहीन
 रिक्त उड़ान कहल नहि जाय;
 सीमा केँ जानि सीमा पारि

अर्थक नूतन रूप बनाय।
 नकारक सीढ़ी चढ़ैत-चढ़ैत
 चेतन अपने कैँ खोइत नहि;
 हरेक खोल उतरिते भीतर
 स्वाधीन प्रकाश अधिक सही।
 वस्तु, ज्ञान, आत्म, स्वतन्त्रता—
 चारू एक यात्रा केर तान;
 जतय प्रश्न स्वयं उत्तरदाता,
 ओतहि जागय स्वाधीन ज्ञान।

शब्दक भीतर अखण्ड ज्योति

ध्वनि उठि क्षणमे बिलमि जाए,
 तैयो अर्थ कतय सँ टिकय?
 अक्षर टूटि-टूटि सुनाइतहुँ
 वाक्य एकहि बेर किएक झलकय?
 कान पकड़य क्रमिक तरंग,
 मन पाबय अखण्ड उजास;
 शब्दक भीतर किछु एहन जागय,
 जकर नहि टूटय सहज निवास।
 वर्ण एक-एक दीप जकाँ,
 मुदा अर्थ केवल जोड़ नहि;
 मोती गिनलासँ हारक शोभा
 सम्पूर्ण-सम्पूर्ण पकड़ल होइ नहि।
 जखन सम्पूर्ण वाणी फूटय,
 अर्थ एक संग हृदयमे आय;
 खंडक पाछाँ अखण्ड संकेत
 क्षणमे अपन रूप देखाय।
 ध्वनि बाहरी लहरि समान,
 भीतर अर्थक बीज जगाबय;
 उच्चारण कतेको भिन्न हो,
 एक पहिचान फेरो उभराय।
 कण्ठ, वेग, स्वर, देश बदलय,
 तैयो बोधक सूत्र नहि टूटय;
 क्षणिक ध्वनिक पाछाँ-पाछाँ
 एक स्थिर अर्थ-दुआर फूटय।
 शब्द केवल संकेत नहि,
 ओ चेतनाक दीपो होय;
 अर्थ जखन अन्हारमे छिपल,

वाणी ओकर आवरण धोय।
जेना दीप पड़िते घरक वस्तु
एक-एक करि रूप धरय,
तहिना शब्दक ज्योति भीतर
ज्ञात-अज्ञातक भेद उघारय।
देखल वस्तु ज्ञानक एक पथ,
तर्को दूरक बात बताय;
पुरान विश्वसनीय वाणी सेहो
सूक्ष्म सत्यक सेतु बनाय।
मुदा हरेक राहिक अपन सीमा,
हरेक प्रमाणक अपन अधिकार;
जतय इन्द्रिय पहुँचि नहि सकय,
शब्द खोलय दोसर दुआर।
शब्द आ अर्थ अलग कतेक?
एक बिनु दोसर केना चिन्ही?
अर्थ जँ मनमे जागि उठैत,
शब्दक छापो संगहि गिन्ही।
ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेयक दूरी
वाणीमे कखनो धुँधल होय;
बोधक गहिरतम क्षण भीतर
तीनू एकहि उजासमे सोय।
“पद” कहिते सीमा बनैत,
“वाक्य” कहिते सम्बन्धक राग;
एक शब्द दोसराकेँ पुकारय,
तखन सम्पूर्ण अर्थक अनुराग।
कखनो पद सँ वाक्य बुझी,
कखनो वाक्य सँ पदक मान;
अखण्ड आ खंडक एहि खेलमे
भाषा रचय अपन विधान।
साधु शब्दक राहि अलग अछि,
असाधु सेहो अर्थ कहय;
लोकक मुखमे चलैत वाणी
नियमक बाहर कखनो बहय।
तैयो शुद्ध प्रयोगक अनुशासन
अर्थक निर्मलता सँ जुड़ल;
वाणी केवल बोलब नहि—
ओ संस्कारक खेतमे फुलल।

नाम सुनिते रूप नचैत,
 रूप देखिते नाम जगय;
 भाषा आ जग बीचक नाता
 नित्य अनुभवमे फेर बनय।
 जाति, गुण, क्रिया, व्यक्ति सभ
 शब्दक छाया भीतर आय;
 एक छोट ध्वनिक पाछाँ जग
 कतेक रूपमे खुलि जाए।
 व्याकरण केवल रूपक पहरा नहि,
 ओ अर्थक साधना सेहो;
 धातु, प्रत्यय, पदक विन्यास
 मनक अनुशासन बनय सेहो।
 बेठीक जोड़ि जँ अर्थ बिगाड़य,
 ठीक विन्यास राहि देखाय;
 वाणी शुद्ध करैत-करैत
 चित्तो अपन मैल हटाय।
 यदि समूचा जग शब्दक छाया,
 तँ मौन कतय, वाणी कतय?
 मौनहि भीतर बीजित ध्वनि,
 ध्वनिहि भीतर मौन अथाह।
 नाम-रूपक विस्तृत जंगल
 एक मूल कम्पन सँ उभरय;
 जतय शब्द अपन स्रोत पहिचानय,
 ओतय भेदक सीमा गलय।
 मुक्ति दूरक लोक नहि मात्र,
 बोधक रूप बदलल क्षण;
 जखन शब्दक बाहरी खोल सँ
 भीतरक अखण्ड अर्थक दर्शन।
 अनेक ध्वनि एक स्रोतमे समाय,
 अनेक अर्थ एक ज्योति धरय;
 वाणी जखन अपन मूल दिशि मुड़य,
 चेतना स्वतन्त्र उजास भरय।
 शब्दक भीतर अखण्ड ज्योति,
 ध्वनिक पाछाँ मौनक थाह;
 वर्ण, पद, वाक्यक सीढ़ी चढ़ि
 मन खोजय अर्थक असल राह।
 कहब, सुनब, बुझब—तीनू

एकहि चेतनाक भिन्न विहार;
भाषाक गहिरतम अन्तरमे
खुलय अनन्तक निर्मल द्वार।

पाँच भेदक बीच समर्पणक दीप

जगत नहि सपना, नहि धुँधल छाया,
माटि, जल, देह सभ सत्य;
जीवक हँसी, श्रम, पीड़ा, आशा
अपन-अपन धरैत वास्तविक तत्त्व।
मूल उजास स्वतन्त्र अखण्ड,
बाकी सभ ओकर आश्रित साँस;
निर्भरता मिटब नहि अस्तित्व,
सम्बन्धेँ जग पाबय विश्वास।
एक भेद मूल आ जीवक बीच,
दोसर मूल आ जगक धार;
तेसर जीव सँ जीवक दूरी,
चौठम चेतन-जड़ संसार।
पाँचम जड़ सँ जड़क भिन्नता—
पाँच दीप जकाँ रेखा साफ;
भेद मिटा कऽ एक रंग करब
सत्यक बहुरूपता पर अन्याय।
जीव मूलक प्रतिछाया नहि,
नहि ओकर पूर्ण समान;
चेतन, इच्छुक, सुख-दुःखभोगी,
अपनहि सीमित पहचान।
आश्रित अछि, मुदा निरस्त नहि,
स्वत्व ओकर रहय सजग;
मिलनक अर्थ विलय नहि हो,
निकटता मे सेहो भेदक राग।
जीवो सभ एकहि स्तरक नहि,
ज्ञान-शक्ति ककरो अधिक;
ककरो चेतना धुँधमे घेरल,
ककरो मार्ग हो अधिक स्पष्ट।
भिन्न प्रकृति, भिन्न प्रवृत्ति,
कर्मक छाप अलग-अलग;
एकहि सूरजक किरण पड़ितहुँ
पात्र-पात्रमे रूप अलग।

बंधन केवल देहक पाश नहि,
 अज्ञान, मोह, कर्मक जाल;
 इच्छा जखन विषयमे बान्हल,
 जन्म-मरणक फेर सवाल।
 मुक्तिक राहि भीतर खुलैत,
 जखन विवेक संग प्रेम जाग;
 स्वतन्त्र मूलक आश्रय चीन्हे
 अहंकार छोड़य अपन दाग।
 ज्ञानक तीनटा दुआर खुलल—
 देखल, अनुमान, विश्वसनीय वचन;
 प्रत्यक्ष नजिक रूप सुनाबय,
 हेतु जोड़य दूरक कारण।
 शब्द पथक दिशा बताबय,
 मुदा केवल सुननाइ पर्याप्त नहि;
 जतय बोध जीवनमे उतरय,
 ओतहि ज्ञानक दीप सही।
 भक्ति केवल गीत नहि,
 नहि आँखिमे अश्रुक भार;
 ओ स्मरण, सेवा, सत्य-वचन,
 दया, रक्षा, दानक व्यवहार।
 कखनो नामक मधुर उच्चारण,
 कखनो भूखल हाथ पकड़ब;
 कखनो पीड़ित जीवक रक्षा,
 कखनो भीतर लोभ घटेब।
 देहक सेवा सेहो साधना,
 यदि अहंकार बीच नहि आय;
 वाणी जँ सत्य आ हित बोलय,
 तखन प्रेमक रूप बनाय।
 मन जँ दया सँ भरल रहय,
 गुरु-वचन पर विश्वास;
 श्रवण, स्मरण, गुणगान सँ
 अन्तर पाबय शान्त निवास।
 मुक्ति एकरूप मौन नहि,
 निकटताक बहु रूपक गान;
 कखनो एकहि लोकक साझेदारी,
 कखनो निकट सान्निध्य महान।
 कखनो दिव्य रूपक साम्य,

कखनो सेवा केर उत्कर्ष;
मुदा जीवक स्वत्व बचल रहय,
एतहि मुक्तिक मधुर हर्ष।
समर्पण हार मानब नहि,
नहि व्यक्तित्वक अन्तिम क्षय;
ओ अपन सीमाक बोध करैत
उच्चतर आश्रय दिशि चलि पड़य।
जखन मन कहय—“हम स्वतन्त्र नहि,
मुदा निरर्थक सेहो नहि छी”,
तखन निर्भरता बन्धन नहि,
प्रेमक गहिर स्वीकृति बनि जी।
जगत सत्य, जीवो सत्य,
भेदो सत्य, सम्बन्धो सत्य;
एकर मान लेलासँ खुलैत
बहुलताक गहिर सौन्दर्य-तत्त्व।
एक रंगमे सभ केँ घोलब नहि,
नहि दूरी केँ द्वेष बनाउ;
भिन्न रहितहुँ प्रेमक डोरी
जीवनक अर्थ नव बनाउ।
पाँच भेदक बीच समर्पणक दीप,
ज्ञानक संग भक्ति केर धार;
सत्यक बहुरंगी एहि जगमे
प्रेम बनय निकटतम द्वार।
स्वत्व बचल, अहंकार गलल,
आश्रयमे मन पाबय ठाम;
भेद नहि दूरी, भेद परिचय—
सम्बन्धेँ पूर्ण हो जीवन-गान।

देहक आँखिसँ खुलैत संसार

जगत पहिने सिद्धान्त नहि,
पहिने देहक जीवित स्पर्श;
पाँव धरती पर भार बुझैत,
आँखि खोलैत रंगक हर्ष।
देखनाइ केवल चित्र लेब नहि,
देह स्वयं दृष्टिक केन्द्र;
जतय हम छी, ओतहि सँ खुलय
दूर-निकट, दायँ-बायँ क्षेत्र।
हाथ वस्तु दिसि बढैत पहिने

नक्शा बनाकऽ नहि चलय;
 देहक मौन कुशलता भीतर
 दिशा अपने आप उभरय।
 आदत केवल मनक स्मृति नहि,
 देह सीखय अपनहि चाल;
 वाद्य, लेखनी, बाट, औजार
 अंग बनि जाए कालक काल।
 लाठी अन्हक हाथमे केवल
 बाहरी काठक टुकड़ा नहि;
 स्पर्शक सीमा आगाँ बढ़बैत
 देहक अनुभूतिक विस्तार सही।
 इन्द्रिय अलग-अलग खिड़की नहि,
 एक देहमे संगति पाबय;
 रंग कखनो तापक भाव जगाबय,
 ध्वनि आकारक आहट लाय।
 वस्तु पूर्ण समक्ष कखनो नहि,
 एक पक्ष एखन आँखि पकड़य;
 ओझरायल पक्षक मौन वचन
 अनुभवमे उपस्थित रहय।
 दृष्टि बदलू, वस्तु रहैत,
 हरेक कोण नूतन रूप देखाय;
 पूर्णता सभ दृष्टिक जोड़ि मात्र नहि,
 एक जीवित क्षितिज बनि आय।
 जगत चेतनाक बनायल छाया नहि,
 नहि चेतन जगसँ पूर्ण अलग;
 दुनू भेटक पहिल धरती पर
 अर्थक जन्म रहय सजग।
 सोचब सँ पहिने एक विश्वास—
 जगत हमरा समक्ष अछि;
 एहि पूर्व-विवेकी सम्बन्ध भीतर
 सभ सिद्धान्तक माटि बसि अछि।
 दोसरा मन काँचक भीतर
 बन्द रहस्य मात्र नहि;
 हाव-भाव, देह, वाणी, दृष्टि
 ओकर अनुभवक भाषा सही।
 हँसीमे आनन्द झलकैत,
 कम्पनमे भय रूप धरय;
 दोसरा देहक जीवित अभिव्यक्ति

हमर जगमे प्रवेश करय।
अपन देह वस्तु सेहो अछि,
मुदा केवल वस्तु नहि;
हम देखी ओकरा बाहर सँ,
तैयो ओ देखबाक साधन सही।
एहि द्विअर्थी देहक कारण
हम जगमे छी, जग हमरा भीतर;
सीमा आ खुलापन संगहि
जीवन बनय गहिरतर।
भाषा तैयार विचारक वस्त्र नहि,
बोलिते विचार जन्मि सकय;
शब्द देहक अर्थपूर्ण मुद्रा,
मौन अनुभव केँ रूप दय।
निश्चितता पत्थरक जड़ता नहि,
अनुभव सदिखन किछु अस्पष्ट;
अर्थ खुलैत, फेर गहिराइत,
जीवन रहय बहुअर्थी स्पष्ट।
देहक आँखिसँ खुलैत संसार,
स्पर्श, दृष्टि, भाषा, सम्बन्ध;
मन-जगतक कठोर दीवार गलिते
अनुभव बनय जीवित अनुबन्ध।

ज्ञानक दर्पण, हेतुक डोरी

ज्ञान जखन अपने केँ जानय,
संगहि नव वस्तुक रूप धरय;
पहिने अनजोर रहल जे अर्थ,
निश्चयक दीप तकरा पर परय।
केवल धुँधल आभास नहि,
नहि संशयक आधा उजियार;
स्वयं प्रकाशित निश्चित बोध
तखन बनय प्रमाणक द्वार।
देखल बात सभ एक समान नहि,
कखनो भ्रम रंग बदलि दय;
दूरक शंख पीयर देखाइ,
नजिक आबि सफेदी कहि दय।
जे बोध पछिला बोध सँ टूटय,
ओकर पाँव रहय कमजोर;

जे निश्चय टिकि सकय परीक्षणमें,
 ओहि ज्ञानक भरोसा जोर।
 ज्ञानक दूटा मुख्य पथ खुलल—
 एक प्रत्यक्ष, एक परोक्ष;
 एक नजिकक रूप स्वयं छूअय,
 दोसर स्मृति-तर्कक आलोक।
 दुनू बाटक अपन-अपन ढंग,
 दुनू सत्यक खोजक संग;
 एकहि साँचा सभ पर थोपलासँ
 बन्द भऽ जाए ज्ञानक बाट।
 प्रत्यक्षो एक रूप नहि,
 कखनो व्यवहारक इन्द्रिय-द्वार;
 कखनो भीतर निर्मल चेतना,
 जतय साधनक नहि दरकार।
 आँखि, कान, मनक सहारे
 दैनिक जगक बोध बनय;
 मुदा गहिर ज्ञानक शिखर पर
 निर्भरता केर गाँठ खुलय।
 स्मृति बीतल छाप जगाबय,
 पहिचान कहय—“ई ओहि अछि”;
 तर्क अनिवार्य सम्बन्ध खोजय,
 अनुमान दूरक अर्थ पढ़ैत अछि।
 विश्वसनीय वाणी सेहो
 अनदेखल राहिक समाचार;
 परोक्ष ज्ञानक अनेक धार
 मिलि बनबय बोधक विस्तार।
 तुलना कखनो अलग दुआर जकाँ,
 मुदा पहिचानमे ओकर वास;
 पहिने सुनल, फेर देखल रूप
 समानतासँ पाबय प्रकाश।
 नाम आ वस्तुक बीचक सेतु
 पुरान स्मृति सँ नूतन होय;
 एक बोधक भीतर दोसर बोध
 संग मिलि परिचयक फूल फुलाय।
 अनुमानक प्राण केवल रूप नहि,
 हेतुक गहिर अविनाभाव;
 जतय चिन्ह अछि, साध्य संगहि,

एहि नातामे तर्कक भाव।
तीन खाँचामे कारण बाँधलासँ
सत्य अपने नहि आबि जाय;
अटूट सम्बन्धक ठीक पहिचान
निष्कर्षक पाँखि बनि जाय।
सामान्य आ विशेष दुनू
वस्तुक भीतर एक संग रहय;
केवल वर्गक नाम पकड़िते
व्यक्तिक जीवित रूप नहि कहय।
केवल विशेष अकेला धरिते
साझा अर्थक सेतु हराय;
दुनू मिलि वस्तुक पूर्ण चेहरा
ज्ञानक सम्मुख रूप देखाय।
प्रमाणक फल केवल “जानलहुँ” नहि,
अज्ञानक पर्दा दूर हटय;
हितकर वस्तु अपनाबय मन,
अहितकर बाट सँ पग हटय।
जतय नहि हित, नहि अनहित,
ओतय उपेक्षाक शान्त विवेक;
ज्ञान जीवनक दिशा बनैत,
केवल शब्दक संग्रह नहि एक।
किछु फल ज्ञानक संगहि जन्मय,
जेनाँ अन्हार तुरन्त हटय;
किछु पाछाँ व्यवहारमे फूटय,
ग्रहण-त्यागक निर्णय बनय।
साक्षात् उजास भीतर खिलय,
पारम्परिक फल कर्ममे आय;
ज्ञानक बीज जखन ठीक हो,
जीवनमे ओकर फसल उगाय।
संशयक ठाम प्रश्न आवश्यक,
मुदा संशयहि अन्तिम घर नहि;
विपर्ययक चमक भ्रामक,
स्मृति सेहो प्रत्यक्ष नहि।
प्रत्येक बोधक सीमा चिन्ह,
ककरा सँ की ज्ञात होय;
सीमा-बोधे ज्ञानक गरिमा,
एहि सँ विवेक दृढ़तर होय।

ज्ञानक दर्पण, हेतुक डोरी,
 प्रत्यक्ष-परोक्षक खुलल संसार;
 स्मृति, पहिचान, तर्क, अनुमान,
 वाणी देत अलग-अलग द्वार।
 सामान्य-विशेष संग निहारू,
 हित-अहितक फल पहचान;
 निश्चित बोधक निर्मल उजासमे
 जीवन पाबय सजग विधान।

श्रमक हाथ, बदलैत जग

जगत कोनो जमल पत्थर नहि,
 हरेक कण भीतर गति केर बीज;
 रूप बदलय, सम्बन्ध बदलय,
 पुरान खोलमे जन्मय नूतन चीज।
 विरोधो केवल विघ्न नहि होय,
 ओ परिवर्तनक गुप्त पुकार;
 एक अवस्था अपन सीमा छूइत,
 दोसर रूपक खोलय दुआर।
 चिन्तन आ पदार्थ अलग-अलग
 आकाश-धरती जकाँ नहि ठाढ़;
 जीवनक ठोस धरातल भीतर
 विचार पाबय अपनहि गाढ़।
 जेना श्रम सँ आकार बदलय,
 तहिना परिस्थिति मन सँ जुड़य;
 मनुष्य जग केँ रूप दैत अछि,
 जग सेहो मनुष्य केँ गढ़य।
 इतिहास राजा-मुकुट मात्र नहि,
 नहि युद्धक दिन-तिथि केर हार;
 हल, हथौड़ा, करघा, भट्ठी,
 श्रमक घामो इतिहासक सार।
 कुन हाथ उत्पादन करैत,
 ककर हाथ साधनक अधिकार;
 एहि सम्बन्धक फेर-बदल सँ
 समाज बदलय बारम्बार।
 जखन श्रमिक अपन श्रमक फल सँ
 दूर खड़ा, पराया बनि जाए;
 जे वस्तु ओ स्वयं बनौलक,
 ओहि पर दोसर अधिकार जमाए।

अपनहि हाथक सृजन समक्ष
अजनबी शक्ति बनि ठाढ़;
तखन श्रमक भीतर आनन्द नहि,
बंधनक कड़वी गाँठि हो गाढ़।
केवल फलहि सँ दूरी नहि,
कर्मसँ सेहो मन हो पराय;
दिन भर दोहराओल गति भीतर
अपन सृजनक स्वर हराय।
जे काम आत्म-विकास बनितै,
ओ पेटक मजबूरी हो जाए;
जीवित मनुष्य धीरे-धीरे
बाजारक वस्तु जकाँ बिकाए।
दोसरा मनुष्य संग सम्बन्धो
तखन गणनाक रूप धरय;
मिलनक ठाम लेन-देन बैठय,
विश्वासक खेत सुखा पड़य।
मानुष-मानुष बीचक दूरी
धनक दीवार सँ पैघ बनय;
अपन मानवता सँ कटिते
जीवन भीतर शून्य जनय।
मुदा परिवर्तन केवल सपना नहि,
ठोस परिस्थिति माँगय फेर;
उत्पादनक ढाँचा जखन बदलब,
सम्बन्धो बदलत देर-सवेर।
पुरान व्यवस्था जखन अपने
नव शक्ति लेल बने अवरोध,
ओहि टकराहटक ताप सँ उठय
नव समाजक सम्भावित बोध।
समता केवल एकसमान चेहरा नहि,
नहि सभकेँ एकहि साँचा दियौ;
मानव क्षमता फुलबाक अवसर
सभ हाथमे बराबर कियौ।
भूख, भय, बेरोजगारी बीच
स्वतन्त्रता कागज पर रहि जाए;
जीवनक मूल आवश्यकता बिनु
ऊँच आदर्शो मुरझा जाए।

साझा साधनक प्रश्न उठैत,
 ककर श्रम सँ ककर लाभ?
 यदि बहु हाथ बनबय समृद्धि,
 किएक किछुएँ पाबय सभ भाग?
 संपत्ति जँ मनुष्य पर चढ़ि
 मनुष्य केँ अपन दास बनाय;
 तखन व्यवस्था फेर विचारब
 न्यायक सहज पुकार बनाय।
 मुक्ति केवल पेट भरब नहि,
 नहि वस्तुक ढेरहि अन्तिम लक्ष्य;
 गीत, विचार, प्रेम, सृजन,
 मानव जीवनक आरो पक्ष।
 श्रम जखन अपन अर्थ सँ जुड़य,
 व्यक्ति अपन क्षमता पहचानय;
 साझा जीवनक खुलल आँगनमे
 स्वतन्त्र मनुष्य रूप निखारय।
 धर्म, विचार, संस्था, कानून
 शून्य आकाशसँ नहि उतरय;
 जीवनक भौतिक सम्बन्ध भीतर
 ओ सभ इतिहासक रूप धरय।
 मुदा मनुष्य पत्थर नहि केवल,
 ओ प्रतिक्रिया, सृजन, प्रश्न;
 परिस्थिति बदलैत हाथ स्वयं
 अपनो रूप बदलय हरेक क्षण।
 श्रमक हाथ, बदलैत जग,
 विरोधक भीतर नूतन भोर;
 पराया श्रम फेर अपन बनय,
 टूटय बाजारक कठोर डोर।
 जतय मनुष्य साधन नहि रहय,
 जीवन स्वयं लक्ष्य बनि जाग;
 साझा श्रमक मुक्त उजासमे
 मानवता फेर गाबय राग।

रहस्यक दुआर पर खुलल हाथ

जीवनक सभ प्रश्न नापल नहि जाए,
 किछु तराजू पर उतरय, किछु नहि;
 किछु समस्या बाहर ठाढ़ रहैत,
 किछु भीतर साँस बनि रहि।

जकर समाधान दूर सँ खोजी,
 ओ समस्या कहल जा सकय;
 जकर भीतर हम स्वयं समायल,
 ओ रहस्य हृदयमे जगि सकय।
 वस्तु केँ टुकड़ा-टुकड़ा देखब
 विज्ञानक उपयोगी एक पथ;
 मुदा मनुष्य केवल वस्तु नहि,
 ओ अनुभवक जीवित रथ।
 देह, स्मृति, भय, आशा, प्रेम—
 सभ एकहि जीवनमे जुड़ल;
 मापित तथ्यक पाछाँ-पाछाँ
 अमाप्य रहस्य चुपचाप खुलल।
 'हमर अछि' कहि जतेक जोड़ू,
 ततेक वस्तु बाहिर ठाढ़;
 घर, धन, पद, वस्तुक गणना
 स्वामित्वक बनबय गाढ़।
 मुदा 'हम छी' केर मौन अनुभूति
 ककरो सम्पत्ति नहि बनय;
 होएबाक गहिर खुलल आकाश
 रखबाक दीवारसँ नहि तनय।
 जतय 'हमर'क जाल घना,
 ओतय भय सेहो संग जन्मय;
 खोएबाक आशंका दिन-राति
 सुखक बगिया भीतर रमय।
 जतय अस्तित्व अपनहि उजासमे
 दोसरा दिशि खुलि पड़य,
 ओतय स्वामित्वक कठोर गाँठ
 धीरे-धीरे ढीली पड़य।
 स्वतन्त्रता मनमानी नहि,
 नहि सभ बन्धन काटि चलब;
 ओ भीतरक सजग उपलब्धता—
 दोसरा लेल खुलल रहब।
 जे अपनहि कोठरीमे बन्द,
 ओ निर्णय करितो मुक्त नहि;
 जे प्रेमक जोखिम स्वीकारय,
 ओ बन्धन बीचो दास नहि।

दोसरा मनुष्य कोनो वस्तु नहि,
 नहि 'ओ' कहि दूर हटाउ;
 जखन भेटक साँच क्षण आए,
 'तूँ' कहि अपन हृदय खुलाउ।
 आमने-समक्ष जीवित उपस्थिति
 बातक पारि सम्बन्ध गढ़य;
 दू एकाकी चेतनक बीच
 विश्वासक सेतु धीरे चढ़य।
 प्रेम अपन अधिकार नहि माँगय,
 ओ उपलब्ध रहबाक कला;
 सुनब, ठहरब, संग निभेब,
 दुःखक क्षणमे नहि पलायन भला।
 निष्ठा समयक लम्बा पथ अछि,
 क्षणिक भावक उजास नहि;
 आइ कहलक वचन काल्हि निभेब—
 एहि मे सम्बन्धक साँस सही।
 आशा इच्छा मात्र नहि,
 नहि निश्चित फल केर हिसाब;
 ओ अन्हारक बीच विश्वास,
 जतय राहि एखन नहि जनाब।
 'सभ ठीक होयत' कहब नहि,
 अपितु संग रहबाक दृढ़ स्वर;
 निराशाक बन्द कोठरी भीतर
 एक खिड़की खोलय भीतरघर।
 परम उपस्थिति तर्कक वस्तु नहि,
 जकर प्रमाण मेज पर धरू;
 नहि दूर आकाशक वस्तु,
 जकर सीमा अंक सँ भरू।
 जखन अस्तित्वक रहस्य भीतर
 विश्वासक गहिर स्पर्श होय,
 तखन प्रश्न उत्तरमे नहि गलय,
 मुदा जीवनक अर्थ नूतन होय।
 विश्वास अन्ध स्वीकृति नहि,
 ओ अनुभवक आन्तरिक हाँ;
 जतय मन अपन सीमा जाने,
 तैयो अर्थक दीप राखय तहाँ।
 तर्कक मर्यादा स्वीकारितहुँ

प्रश्नक दुआर बन्द नहि हो;
रहस्यक सम्मुख विनम्र ठाढ़
मनुष्यक चेतना क्षीण नहि हो।
एकाकीपन आधुनिक देह पर
लोहेक जकाँ चिपकल भार;
यन्त्र, भीड़, सुविधा बीचो
मन खोजय मानवीय पुकार।
उपस्थिति, सहभाग, विश्वासक
छोट क्षणो जग बदलि सकय;
एक व्यक्ति दोसरा लेल उपलब्ध,
तखन जीवन घर बनि सकय।
रहस्यक दुआर पर खुलल हाथ,
नहि समाधानक अहंकारी शोर;
होएब, भेटब, आशा राखब,
निष्ठाक संग पार करब भोर।
जकरा बुझि समाप्त नहि करब,
तकरा संग जीबब सीखू;
जीवनक अमाप्य गहिराइमे
खुलल हृदय सँ उजास देखू।

स्वतन्त्र स्वर, सुखक गहिर माप

अनुभवक धरती सँ ज्ञान उठैत,
आकाशी दावा तुरन्त नहि मानू;
जे देखल, जाँचल, भोगल जीवन,
तकरा सँ विचारक बीज पहिचानू।
अन्तिम सत्यक दम्भ सँ दूर,
संशयक संग विनम्र रहू;
जे प्रमाणक सीमा पारि ठाढ़,
ओकरा प्रश्नक उजासमे सहू।
जगत जे हम सभ अनुभवैत छी,
ओ अनुभूतिक सम्भव क्रम;
रंग, स्पर्श, गति, आकारक
बारम्बार भेटल निश्चित धरम।
वस्तु कहिते केवल खोल नहि,
अनुभवक स्थायी सम्भावना;
मन सेहो स्मृति, बोध, अनुभूतिक
निरन्तर जुड़ल जीवित साधना।

परम सत्ता पर प्रश्न उठैत,
 दुःखक जगमें करुणा कतय?
 यदि शक्ति असीम आ दया असीम,
 अशुभक छाया टिकैत किएक?
 तर्क जखन सम्पूर्ण उत्तर नहि पाबय,
 विश्वासो सीमा चीन्हे चलय;
 अज्ञातक सम्मुख विनम्र मन
 नहि अन्ध निश्चयक जाल बुनय।
 सुखक मोल केवल मात्रा नहि,
 गुणो धरैत अपन पहिचान;
 देहक क्षणिक सहज आनन्द सँ
 मनक उच्चतर सुख महान।
 ज्ञान, कला, मैत्री, स्वाभिमान,
 चेतनाक गहिर विस्तार;
 जे दुनू चखलक, ओकर निर्णयमे
 उच्च सुख पाबय अधिक अधिकार।
 सुख अपनहि लेल मात्र नहि,
 बहु जीवनक हित सँ जुड़ल;
 एक व्यक्तिक हँसी जँ बनय
 दोसरा दुःखक कारण, अधूरल।
 सामूहिक सुखक अर्थ एहन—
 हरेक जीवनक मोल समान;
 निजी लाभक छोट तराजू पारि
 लोकहित पाबय व्यापक मान।
 मुदा बहुमत सेहो सर्वशक्तिमान नहि,
 व्यक्तिक अन्तर अपन अधिकार;
 विचार, वाणी, जीवन-पद्धति पर
 भीड़ नहि बनय कठोर पहरदार।
 जाबत दोसराकेँ हानि नहि,
 अपन राहि चुनबाक स्वातन्त्र्य;
 व्यक्तित्वक खुलल प्रयोगशाला
 समाजक सेहो नव जीवन-मन्त्र।
 चुप कराओल एक विरोधी स्वर
 कदाचित् सत्यक दीप हो सकय;
 आ यदि ओकर बात बेठीक हो,
 सत्य ओकर संग भिड़ि तेज बनय।
 बहस बिनु विश्वास जमि जाए,

जड़ सूत्रक निस्सार पात;
विरोध सुनब सत्यक रक्षा,
मुक्त विचारक जीवित बात।
विचारक स्वतन्त्रता केवल
विद्वानक कोठरीक सुख नहि;
सभ मनुष्यक भीतर क्षमता
प्रश्न करबाक अधिकार सही।
आचरणमे सेहो विविध प्रयोग
जीवनक ज्ञान बढ़बैत जाए;
एकहि साँचा सभ पर थोपिते
मानवीय सृजनशीलता मुरझाए।
राज्यक शक्ति सीमित रहय,
लोकक प्रति उत्तरदायी;
प्रतिनिधित्व तखन अर्थवान,
जखन आवाज सभक सुनवाई।
शिक्षा, सहभाग, खुलल चर्चा,
नागरिक विवेकक आधार;
लोकतन्त्र मतगणना भरि नहि,
स्वतन्त्र व्यक्तित्वक विस्तार।
नारीक बुद्धि, इच्छा, क्षमता
जन्मसँ कम नहि मानल जाए;
रूढ़ बन्धन, कानूनक असमता
मानव प्रगतिक पाँखि कटाए।
समान अवसर, समान अधिकार,
जीवन चुनबाक खुलल स्थान;
आधा मानवता बन्धनमे हो,
तँ आधा रहत समाजक प्राण।
कारण खोजब केवल आदत नहि,
अनुभवक क्रम जाँचब पड़य;
जे संग घटल से कारण नहि,
अनिवार्य सम्बन्ध कतय उभरय?
सहमति, भिन्नता, संग परिवर्तन,
शेष बचल प्रभावक ज्ञान;
अनेक घटनाक तुलना भीतर
कारणक डोरी पाबय पहचान।
एक घटना सँ नियम नहि बनय,
बहु उदाहरणक चाही थाह;

अपवाद जखन समक्ष आबय,
 फेर सँ जाँचू अपन राह।
 अनुमान भूतक अनुभव सँ
 भविष्य दिशि पग बढ़बैत;
 मुदा निश्चितता नहि अनन्त—
 नव तथ्य पुरान निष्कर्ष बदलैत।
 स्वतन्त्र स्वर, सुखक गहिर माप,
 अनुभव, तर्क, अधिकारक मेल;
 व्यक्तिक गरिमा, लोकक कल्याण,
 दुनू बिनु अधूरा खेल।
 प्रश्न खुलल राखू, विचार स्वतन्त्र,
 हानि सँ सीमा, न्याय सँ संग;
 उच्चतर सुखक उज्जर खोजमे
 मानव बनाबय अपनहि बाट।

‘नीक’ केर अनिर्वचनीय उजास

शब्दक जंगल साफ करैत
 पहिने अर्थक गाँठि निहारू;
 दार्शनिक प्रश्नक धुँधि हटेबाक
 विश्लेषणक दीप जरा रू।
 कखनो कठिन समस्या भीतर
 साधारण भाषेँ बाट खुल्य;
 जटिल नामक चमक उतरिते
 वस्तुक चेहरा साफ फुल्य।
 बाहरी जग अछि—एहि भरोसा,
 देह, हाथ, पृथ्वी, काल;
 सामान्य बुद्धिक दृढ़ धरती केँ
 शून्य कहब किएक सहज प्रश्न?
 संशय उपयोगी, मुदा एहन नहि
 जे हाथो केँ कल्पना कहय;
 दैनिक निश्चयक किछु आधार
 दार्शनिक आँधीमे सेहो रहय।
 नीतिक मूल शब्द ‘नीक’ केँ
 कुनो गुणमे सम्पूर्ण नहि घोलू;
 सुख, चाह, विकास, उपयोगक
 एकहि नाम सँ ओकरा नहि तोलू।
 यदि ‘नीक’ अर्थ सुखे होइत,
 ‘सुख नीक अछि?’ प्रश्न किएक?

प्रश्न एखनहुँ खुलल रहैत,
 दुनू अर्थ पूर्ण समान नहि देख।
 प्रकृतिक कोनो गुण कहि देलासँ
 मूल्यक रहस्य समाप्त नहि;
 वर्णन आ मूल्यांकनक बीच
 सूक्ष्म दूरी निरर्थक नहि।
 पीयर रंग जकाँ सरल गुण
 आरो भागमे टूटि नहि जाय;
 'नीक' सेहो प्रत्यक्ष बोधक
 एक मूल अर्थ रूपेँ आय।
 परिभाषा नहि भेटल ताहि सँ
 अर्थहीन शब्द नहि होय;
 किछु मूल गुण चिन्हल जाइत,
 मुदा दोसरा शब्दमे नहि खोय।
 सुख मूल्यवान हो सकैत,
 मुदा सुखे एकमात्र धन नहि;
 मैत्री, ज्ञान, सौन्दर्यक अनुभव
 अपनेमे सेहो तुच्छ नहि।
 परिणाम मापू, मुदा संगहि
 कर्मक भीतर मूल्य निहारू;
 कुन अवस्था अपनेमे श्रेष्ठ,
 कुन केवल साधन—भेद विचारू।
 जे नीक परिणाम अधिक उपजाबय,
 कर्मक चुनाव ताहि सँ जुड़य;
 मुदा गणना अन्ह नहि हो,
 अन्तर्निहित मूल्य सेहो पढ़य।
 सुन्दर जग, साँच मैत्री,
 ज्ञानक निर्मल खुलल आकाश;
 एहन संगति मनुष्य जीवनमे
 मूल्यक गहिर बनय निवास।
 भ्रमक कारण प्रायः शब्द,
 अस्पष्ट प्रश्न, मिलायल अर्थ;
 विश्लेषण जखन भेद उघारय,
 वादक आधा कोलाहल व्यर्थ।
 सामान्य जग केँ बचबैत-बचबैत
 मूल्यक सूक्ष्मता सेहो मानू;
 जे स्पष्ट अछि तकरा स्पष्ट कहू,
 जे सरल नहि तकर सीमा जानू।

‘नीक’ केर अनिर्वचनीय उजास,
विश्लेषणक स्वच्छ दर्पण संग;
साधारण निश्चयक दृढ़ धरती पर
मूल्य खोजय विवेकक बाट।

करुणाक अंकुर, जनक राज

मनुष्यक हृदय पाथर नहि,
भीतर करुणाक अंकुर रहय;
बालक खतरामे पड़िते देखू,
हाथ अपने आगाँ बढ़य।
लाभ-हानिक हिसाब सँ पहिले
दया जागय अनचिन्ह प्यास;
एहि सहज कम्पनक भीतर
मानवता पाबय पहिल साँस।
लाज जखन अन्याय पर जागय,
ओ धर्मक दोसर कोमल बीज;
सम्मान जखन नम्रता बनय,
शिष्टताक पात फूटय नीज।
ठीक-बेठीक चिन्हबाक क्षमता
बुद्धिक चौठम उज्जर फूल;
चारि अंकुर यदि सँवारल जाए,
सद्गुण बनय जीवनक मूल।
नीक प्रकृति बीज जकाँ अछि,
मुदा खेतक चाही देखरेख;
जल नहि भेटल, माटि सूखल,
तखन हरियाली रहत कतेक?
भूख, भय, लोभक कठोर हवा
मनक कोमलता सुखा सकय;
ठीक शिक्षा, आदत, संगति
भीतरक नेकी फेर जगा सकय।
राज चलैत तलवारसँ नहि,
विश्वासक अन्न सँ टिकय;
जनक पेट खाली रहिते
कानूनक भारी स्वर नहि बिकय।
अन्न, सुरक्षा, न्याय, सम्मान—
पहिने जनजीवनक आधार;
राजमुकुट ताहि पाछाँ आबय,
लोककल्याण मूल अधिकार।

शासक जँ अपन सुखमे डूबय,
प्रजा ओकरा सँ मुँह फेरय;
अधिकार आकाशसँ झरल नहि,
जनविश्वासहि ओकरा घेरय।
स्वर्गक संकेत दूर नहि,
लोकक हृदयमे ओकर छाप;
जन जे स्वीकारय, तखन शासन,
जन त्यागय तँ ढहि जाय आप।
राजा कहि अन्याय पवित्र नहि,
पद सँ दोष धुलि नहि जाय;
जतय अत्याचार सीमा लाँघय,
ओतय विरोधो धर्म बनाय।
सलाह, चेतावनी, सत्यक स्वर
दरबारमे दबि नहि जाए;
जो शासन मानवता कुचलय,
ओ अपन वैधता गमाय।
बल सँ जीतल भूमि रहि सकय,
हृदय नहि जीतल जा सकय;
भयक शासन राति जकाँ अछि,
भोरक संगहि टूटि सकय।
दयामय शासन धीरे-धीरे
जनक विश्वासक घर बनाय;
राजशक्ति तखन सेवा बनि
लम्बा समय धरि फल पाय।
भूमि केवल नापल रेखा नहि,
ओ पेट, परिश्रम, जीवनक थाह;
सीमा स्पष्ट, बँटवारा न्यायसंग,
तखन खेतमे शान्ति रहाय।
करक बोझ जँ देह कुचलय,
उपज रहितो घर सूखि जाए;
शासनक बुद्धि एतय परखू—
जन श्रम करय आ फलो पाय।
वृद्ध अकेला नहि छोड़ू,
बालक भूखल नहि रहय;
विधवा, निर्बल, रोगी जनक
पीड़ा पर शासनक आँखि पड़य।
सभलोगक सुख बराबर नहि,

मुदा जीवनक न्यूनतम मान;
 जे राज्य कमजोर केँ थामय,
 ओहि मे करुणा पाबय विधान।
 विद्वानक आदर पदक लोभ नहि,
 सत्य कहबाक खुलल स्थान;
 योग्य हाथमे काम दियौ,
 चापलूसी नहि शासनक प्राण।
 मन्त्रणा जँ केवल हाँ-हाँ हो,
 राजपथ अन्हर बनि जाए;
 भिन्न स्वर सुनबाक क्षमता
 शासक केँ भूलसँ बचाए।
 लाभ पूछू, मुदा धर्म सँ पहिले
 लाभक प्रश्न छोट पड़य;
 हरेक निर्णयमे मनुष्यक मोल
 सिक्काक मोलसँ पैघ रहय।
 स्वार्थक तराजू जँ दरबार धरय,
 सम्बन्ध सभ बाजार बनय;
 कर्तव्यक दीप जँ भीतर जरय,
 राजनीति मानव रूप धरय।
 करुणाक अंकुर, जनक राज,
 सम्मान, न्याय, विवेकक फूल;
 मनुष्य भीतर नेकीक सम्भावना,
 समाजक आशा केर मूल।
 जन प्रथम, पद तकरा पाछाँ,
 शक्ति सेवा बनि रहय आइ;
 हृदय जँ शासनक केन्द्र बनय,
 तखनहि फुलय जनक राज।

नेति-नेतिक पारि अन्तरतम साक्षी

धन, नाम, रूप, सम्बन्धसभ
 एक दिन सीमा धरि पहुँचय;
 जे प्रिय अछि, प्रिय किएक—
 प्रश्न भीतरक स्रोत दिस मुड़य।
 पति प्रिय केवल पति लेल नहि,
 पत्नी प्रिय केवल नामक कारण?
 हरेक अपनत्वक गहिर तरे
 आत्मप्रियताक सूक्ष्म आवरण।
 वस्तु प्रिय, जग प्रिय, जीवन प्रिय,

कारण चेतन ओकरा छूअय;
अपने मूलक बोध बिनु
बाहरी चाह निरन्तर भूअय।
'ई नहि, ओ नहि' कहैत-कहैत
नाम-रूपक खोल हटाउ;
जे वस्तु बनि पकड़ल नहि जाए,
ओहि साक्षी दिस ध्यान घुमाउ।
देखनिहार केँ आँखि की देखत?
सुननिहार केँ कान की सुनत?
जे सभ ज्ञानक मौन आधार,
ओ अपने वस्तु कोना बनत?
साक्षी ज्ञेयक सूची नहि,
तैयो ज्ञान बिनु ओकर नहि;
हरेक अनुभवक उज्जर पृष्ठ पर
ओ अक्षरहीन उपस्थिति सही।
जागल जगत, स्वप्नक दृश्य,
निद्राक गाढ़ निस्तब्ध राति;
अवस्था बदलय, पाछाँ रहय
अनुभवक एक गहिर संगति।
अन्तरतम नियामक जेनाँ
सभ प्राणी भीतर रहय;
जे भीतर सँ धारण करैत,
बाहरक आँखि तकरा नहि कहय।
धरती, जल, अग्नि, पवन,
मन, वाणी, प्राणक पार;
एक अविनाशी मौन आधार
सभ रूपक भीतर विस्तार।
जे जन्मल, से बदलत निश्चित,
जे संचित, से क्षय पाबय;
अक्षर सत्यक खोज तखन
परिवर्तनक पारि नजरि उठाय।
इच्छा कर्मक बीज बनैत,
कर्म फेर भविष्यक रूप;
जेकाँ चाह, तेकाँ संकल्प,
तेकाँ चलय जीवनक धूप।
जखन इच्छा मूलहि शान्त,
आसक्तिक गाँठि ढीली पड़य;
हृदयक भीतर बान्हल बन्धन

ज्ञानक तापसँ गलि सरय।
 ज्ञान सूचना नहि एतय,
 अपने केँ अपनेमे चिन्हब;
 बाहरक सभ आधार झरलापर
 अन्तरक अचल थाम बुझब।
 मृत्यु देहक अन्तिम सीमा,
 साक्षीक प्रश्न ताहिसँ पैघ;
 जे अपने केँ रूपमे बाँधल,
 ओ रूप संगहि होय अभेद?
 नेति-नेतिक पारि जे शेष,
 नहि शून्यक सूखल अन्हार;
 स्वयंप्रकाशित अन्तरतम साक्षी,
 जाहिमे जग पाबय आधार।
 दोसरा केँ वस्तु नहि बुझू,
 ओहूमे ओहि चेतनक ध्वनि;
 आत्मबोध जखन गहिर होइत,
 भेदक कठोरता होय क्षीण।
 बाहरी संचय अन्ततः छुटत,
 भीतरक बोध संग चलय;
 अक्षर मौनक एहि पहिचानमे
 मुक्तिक निःशब्द प्रभात फुलय।

सीमारेखाक आगिमे आत्मक उजास

ज्ञानक उज्जर सभ उपकरण
 जगतक रूप बहुत दूर नापय;
 तारा, देह, पदार्थ, घटना
 नियमक सूत्रमे बाँधि देखाय।
 मुदा जे प्रश्न भीतर उठैत—
 “हम के छी, किएक जिअैत?”
 ओकर उत्तर केवल मापन
 कागज पर सम्पूर्ण नहि समाय।
 विज्ञान अपन क्षेत्रमे उज्जर,
 तकर सीमा जानबो ज्ञान;
 जे देखल-जाँचल जा सकय,
 ओहि पर ओकर दृढ़ विधान।
 मुदा जीवनक अन्तिम अर्थ
 प्रयोगशालाक वस्तु नहि;

आत्मक गहिर बेचैनीक उत्तर
मात्र तथ्यक सूची नहि।
हम पहिने जगमे उपस्थित—
देह, वस्तु, समयक बीच;
भूख, श्रम, आदत, व्यवहार
दैनिक जीवनक साधारण सींच।
एहि बाहरी उपस्थितिसँ आगाँ
एक पुकार भीतर जगय;
अपने निर्णयक भार उठबैत
व्यक्ति अपन आत्म बने लगय।
आत्म कोनो तैयार वस्तु नहि,
जे जन्मसँ सम्पूर्ण भेटि जाए;
चुनाव, निष्ठा, संकट भीतर
ओ धीरे-धीरे रूप बनाए।
जतय हम अपन कर्म स्वीकारू,
दोषक भारो नहि टारू;
ओतय सीमित देहक भीतर
स्वतन्त्र चेतन रूप सँवारू।
स्वतन्त्रता मनमानी नहि,
ओ जिम्मेदारीक दोसर नाम;
चुनल बाटक फल सँ भागब
तखन स्वतन्त्रता केवल दाम।
जे निर्णय अपने करैत छी,
ओहि मे हमरो रूप बनय;
प्रत्येक 'हाँ' आ प्रत्येक 'नहि'
आत्मक भविष्य भीतर तनय।
जीवनक किछु ठाम एहन,
जतय उपाय सभ थाकि जाए;
मृत्यु समक्ष, पीड़ा भीतर,
दोषक छाया संगहि आए।
संघर्ष, संयोग, असफलता—
दीवार जकाँ राहि रोकय;
ओहि सीमारेखाक कठोर क्षणमे
आत्म अपन गहिर रूप देखय।
मृत्यु कै दूरक खबर कहि
दिन-राति बिसराओल जा सकय;
मुदा एक दिन ओकर छाया

अपनहि दुआर पर ठाढ़ रहय।
 नश्वरता जखन साफ देखाइ,
 क्षणक मोल नूतन भऽ जाए;
 जीवन उधारक समय जकाँ
 प्रत्येक श्वास जिम्मेदारी पाए।
 पीड़ा सँ बचबाक बाट खोजू,
 मुदा सभ पीड़ा मिटत नहि;
 किछु घाव जीवनक सत्यता,
 जकरा छल सँ ढाँकल नहि।
 ओहि दुःखक बीचो प्रश्न उठय—
 टूटब कि गहिर बनब हम?
 अर्थ कखनो सुखमे नहि,
 सहनशील जागरणमे भेटय क्रम।
 दोषक भार जखन अपन अछि,
 दोसरा माथ पर किएक धरू?
 जे बेठीक भेल, तकर स्वीकार
 आत्मक सम्मुख साँच सँ करू।
 लज्जा जँ केवल छिपबाक पर्दा,
 तखन अन्हार आरो गाढ़;
 स्वीकारक कठोर उजासमे
 नव जिम्मेदारी होय ठाढ़।
 एकान्त आवश्यक, मुदा सम्पूर्ण नहि,
 दोसरा बिनु आत्म अधूर;
 साँच संवादक जीवित क्षणमे
 मन पाबय अपनहि नूर।
 जतय हम दोसरा केँ साधन नहि,
 स्वतन्त्र चेतन रूपमे मानू;
 ओतय संवाद केवल भाषा नहि,
 अस्तित्वक सेतु पहिचानू।
 साँच संप्रेषण कठिन बहुत,
 मिथ्या सहमति सरल राहि;
 निज मुखौटा उतारि कहब
 “हम एहन छी”—साहस चाही।
 दोसरा स्वर केँ खुलि सुनिते
 अपनो सीमा साफ देखाय;
 दू स्वतन्त्र आत्मक भेटमे
 एकाकीपन धीरे गलि जाए।

जगतक पारि जे अनाम उजास,
तकरा वस्तु कहि नहि धरी;
नहि अवधारणाक जालमे बाँधू,
नहि मापनक सीमा भरि।
कखनो चिन्ह, प्रतीक, मौन क्षण
ओकर संकेत देत अपार;
दृश्यक भीतर अदृश्यक आहट
खोलय पारगमनक द्वार।
विश्वास आदेशक अन्ध पालन नहि,
नहि निश्चित ज्ञानक नकली रूप;
ओ सीमाक बोधक संग उठैत
अनन्त दिशि खुलबाक स्वरूप।
जतय तर्क अपन सीमा जाने,
ओतय प्रश्न मरैत नहि;
विनम्रता सँ आकाश निहारब
अज्ञानक हार कहल नहि।
सीमारेखाक आगिमे आत्मक उजास,
मृत्यु, पीड़ा, दोषक बीच;
स्वतन्त्रता, संवाद, पारगमन
जीवनक गहिरतम धारा सींच।
जगत मापू, मुदा अपने केँ
केवल संख्या बनि नहि देऊ;
सीमित जीवनक भीतर जागि
अनन्त दिशि खुलल रहू।

तर्कक कण, भाषाक पारदर्शी आकाश

विचारक वन जँ घना भऽ जाए,
शब्दक बेलि जँ बाटि ढाँकय;
तर्कक तीखर निर्मल चाकू
गाँठि-गाँठि अलग पहिचानय।
जटिल कथनक भीतरी ढाँचा
सूक्ष्म कण धरि खोलि निहारू;
जे अनावश्यक भार जुड़ल अछि,
ओकरा काटि सरलता सँवारू।
ज्ञानक घरमे पहिल नियम—
धुँध केँ सत्यक नाम नहि दिअ;
जे कथन स्पष्ट भऽ सकैत अछि,
ओकरा अस्पष्ट परदा नहि दिअ।

वाक्यक रूपक भीतर कखनो
 भ्रमक सम्पूर्ण नगर बसैत;
 तार्किक रेखा साफ करिते
 छलना अपनहि रूप गमैत।
 नाम सुनिते वस्तु अवश्य अछि—
 एहन मान्यता किएक धरू?
 ‘राजा’, ‘केन्द्र’, ‘अन्तिम स्वामी’—
 कथनक अर्थ पहिने परखू।
 कखनो नामक खोल हटिते
 सम्बन्धक सम्पूर्ण सूत्र उभरय;
 नहि-होएबो स्पष्ट कहल जा सकय,
 भाषा तखन भ्रम सँ उबरय।
 जगत एकहि ठोस पिण्ड नहि,
 तथ्यक अनेक छोट संयोजन;
 कण-कण सम्बन्ध जोड़ि बनबय
 अनुभवक विस्तृत आयोजन।
 सरल तथ्यक सूक्ष्म आधार पर
 जटिल संसार रूप धरय;
 तर्क जखन संरचना चिन्हैत,
 वास्तविकता स्पष्ट उभरय।
 परिचयक ज्ञान नजिक स्पर्श,
 वर्णन दूरक सेतु समान;
 एक हम देखी, छूई, अनुभव करी,
 दोसर सम्बन्धसँ पाबय मान।
 नाम नहि पर्याप्त पहिचान,
 वर्णन नहि प्रत्यक्षक नकल;
 ज्ञानक दुनू अलग पथ बुझिते
 साफ होय बोधक हलचल।
 गणितक महल आ तर्कक भूमि
 दूर-दूर नहि ठाढ़;
 संख्या, क्रम, वर्ग, सम्बन्ध
 नियमक सूत सँ बनय गाढ़।
 चिह्नक पाछाँ विचारक अनुशासन,
 प्रमाणक पग-पग साफ;
 जतय गणना तर्कमे उतरय,
 ओतय कठोरता पाबय माप।

विज्ञानक राहि विनम्र रहय,
हरेक निष्कर्ष अस्थायी दीप;
नव तथ्य आबि पुरान सीमा
एक दिन करि सकय समीप।
तर्क दिशा दे, अनुभव जाँचय,
दुनू संगहि ज्ञान बढ़ाय;
निश्चयक गर्व सँ दूर रहिते
बुद्धि नूतन सत्य अपनाय।
भाषा केवल वस्त्र नहि,
विचारक काया सेहो अछि;
बेठीक सिलाइ, बेठीक जोड़ि सँ
भ्रमक आकृति बनैत अछि।
वाक्यक व्याकरण ऊपर देखाय,
तार्किक रूप भीतर हो भिन्न;
भीतरक रेखा जखन खुलैत,
अर्थक चेहरा होय प्रसन्न।
नीतिक बात गणित नहि,
नहि प्रमाणक एकहि विधान;
'नीक' कहबमे इच्छा, भाव,
मानवीय चाहक रहय स्थान।
तैयो विवेकक काज समाप्त नहि,
इच्छा केँ सेहो जाँचू;
दोसरा जीवनक सुख-दुःख संग
अपन निर्णयक सीमा नापू।
प्रेम, विवाह, देहक सम्बन्ध
भयक कोठरीमे बन्द नहि रहय;
रूढ़ आदेशक कठोर पहरा
मानवीय जीवनक अन्त नहि कहय।
स्वतन्त्रता संग जिम्मेदारी,
सहमति संग सम्मान;
निजी जीवनक प्रश्न पर सेहो
करुण विवेकक हो विधान।
समाज जँ युद्धक गर्व करय,
ज्ञानक दीप तखन किएक?
शक्ति यदि विनाशक हाथ चढ़य,
सभ्यता केर अर्थ रहत कतेक?
शान्ति केवल नारा नहि,

तर्कक संग मानवता चाही;
 विज्ञानक तेज जँ जीव बचाबय,
 तखनहि ओकर महिमा पाही।
 सत्ता जखन पूर्ण सत्य कहय,
 प्रश्नक दुआर बन्द करय;
 तखन विचारक स्वतन्त्रता
 भीतरहि भीतर दम तोड़य।
 संशयक अधिकार बचाउ,
 असहमतिक स्वर केँ नहि मारू;
 सत्यक रक्षा आज्ञाकारिता नहि—
 खुलल बहसक दीप जरा रू।
 तर्कक कण, भाषाक आकाश,
 सरलता केर निर्मल धार;
 तथ्य, सम्बन्ध, संख्या, अनुभव—
 सभ मिलि बनबैत ज्ञानक द्वार।
 जे कहू, ओकर रूप परखू,
 जे मानू, प्रश्नक संग मानू;
 स्पष्ट बुद्धि आ मुक्त हृदय सँ
 जगतक जटिलता पहिचानू।

भाषाक गाँठि, मनक अदृश्य चाल

कखनो प्रश्न जगमे नहि,
 हमर शब्दक जोड़िमे बसैत;
 गाँठि जे भाषा अपने बान्हय,
 विचार तकरा सत्य बुझैत।
 एक-एक पदक ठीक ठाम देखू,
 कुन श्रेणीमे ओकर वास;
 बेठीक घरमे शब्द रखिते
 जन्म लय अनगिनत त्रास।
 नगरक भवन सभ देखल पाछाँ
 यदि केओ पूछय—“नगर कतय?”
 भवनक पाँति सँ अलग खोजैत
 ओ अपने प्रश्नमे भटकय।
 जे समग्र अछि, ओकरा फेर
 एक वस्तु जकाँ नहि धरू;
 श्रेणीक भूलक धुँध हटिते
 जटिल रहस्य सरल करू।

मन केँ देहक पड़ोसी वस्तु
 मानि अलग कोठरी नहि बनाउ;
 अदृश्य पदार्थक नाम लगाकऽ
 व्यवहारक अर्थ नहि गुमाउ।
 विचार, चाह, साहस, चतुराई
 कर्मक ढंगमे रूप धरय;
 मनुष्य कोना करैत अछि—
 ओहि सँ मानसिक अर्थ उभरय।
 हँसबाक पाछाँ हँसीक भूत,
 चलबाक पाछाँ चालक देव?
 एहन दोहरी सत्ता गढ़िते
 बुद्धि अपने रचय नव भेद।
 जे क्रिया जीवित देह करैत,
 तकरा फेर प्रतिरूप नहि चाही;
 एकहि जीवनक अनेक शैली
 समझलासँ राहि साफ हो जाही।
 'जानैत छी' दू रूप धरैत—
 एक कथन, एक कुशल व्यवहार;
 सूत्र याद अछि—एहि सँ अलग
 काम करबाक जीवित अधिकार।
 साइकिलक नियम सभ कंठस्थ,
 तैयो चलनाइ नहि आबय;
 कौशल हाथ, आँखि, अभ्यासमे
 अपन प्रमाण स्वयं देखाबय।
 बुद्धिमत्ता भीतरक नाटक
 नहि जे पहिने मनमे चलय;
 फेर शरीर ओकर प्रतिलिपि
 बाहर आबि कर्ममे ढलय।
 ठीक समय पर ठीक पग चुनब,
 भूल सँ सीखब, फेर सुधार;
 एहि प्रवृत्तिक जीवित ढंगमे
 बुद्धिक चेहरा हो उजियार।
 क्रोध कहिते भीतर राखल
 लाल धुआँ कोनो वस्तु नहि;
 ओ प्रवृत्ति—कखन फूटि पड़त,
 कहनाइ, करनाइ, ढंग सही।
 काँच जकाँ 'टूटनशील' होएब

हरेक क्षण टूटब नहि कहलाय;
 क्षमता, प्रवृत्ति, सम्भावना
 अलग व्याकरणक राहि बताय।
 सामान्य बोलीक रोजक शब्द
 दीर्घ अनुभवसँ रूप पबैत;
 हमर हँसी, डर, आशा, कौशल
 ओहि भाषामे सहज समैत।
 तकनीकी शब्द उपयोगी हो,
 मुदा मूल धरती नहि बिसरू;
 जीवित प्रयोगक माटि छोड़ि
 कल्पनाक महल नहि सिरजू।
 शब्दक अर्थ शब्दकोश मात्र
 नहि, ओकर उपयोगक चाल;
 कुन प्रसंगमे केना बोलल,
 ओहि सँ खुलय अर्थक जाल।
 एकहि ध्वनि अनेक कार्य करय,
 सन्दर्भ देत ठीक पहचान;
 भाषा जखन जीवनमे चलैत,
 तखन बुझाई तकर विधान।
 विश्लेषण अर्थ टुकड़ा करब
 मात्र नहि, सम्बन्धो देखू;
 कुन कथन ककरा संग बान्हल,
 कुन भ्रमक जड़ि, से लेखू।
 समस्या जँ भाषामे उपजल,
 भाषेँ खोलि सकैत ओकर द्वार;
 साफ प्रयोगक साधारण उजास
 बहुत रहस्य करय निराकार।
 दर्शन जँ नूतन जग गढ़य
 एहन अभिमान सँ दूर रहू;
 पहिने देखू हम जे कहैत छी,
 ओकर नियम स्वयं बुझू।
 कखनो उत्तर नया तथ्य नहि,
 केवल गाँठि खुलबाक सुख;
 शब्द अपन उचित ठाम पहुँचत,
 मन पाबत सहज मुख।
 भाषाक गाँठि, मनक अदृश्य चाल,
 देहक भीतर जीवनक रंग;

कौशल, प्रवृत्ति, कर्मक शैली,
सभ एकहि मानवीय तरंग।
अलग भूतक खोज छोड़ि
जीवित व्यवहारक पथ निहारू;
श्रेणीक धुँधि हटाबैत-हटाबैत
विचारक आकाश पारदर्शी करू।

पूब-पश्चिमक बीच एकहि उजास

दिशा दू, आकाश एकहि,
भाषा भिन्न, प्रश्न समान;
ककरो पथ भीतर दिशि मुड़ैत,
ककरो बाहिर खोजय प्रमाण।
जतय संवादक दीप जरैत,
दूरी अपन नाम गमाय;
पूब-पश्चिमक बीच एकहि उजास
मानव-मनमे घर बनाय।
परम्परा यदि केवल भार,
तँ चेतना किएक ओकरा ढोय?
आ नवीनता यदि जड़ि काटय,
तँ नव पात कतेक दिन होय?
पुरान अनुभूतिक गहिर माटि,
नव प्रश्नक बरखा संग मिलू;
जे सत्य जीवित अछि, ओ बदलैत
नूतन अर्थक फूल बनि खिलू।
धर्म जँ विज्ञानसँ डेराय,
तँ विश्वासक आधार कमजोर;
विज्ञान जँ आत्मक प्रश्न नकारय,
तँ ज्ञानो रहि जाए अधूर।
मापल तथ्यक अपन महिमा,
मौन अनुभूतिक अपन थाह;
दुनू जखन सीमा पहचानय,
तखन खुलय समन्वयक राह।
जगत कोनो जड़ कारागार नहि,
ओ परिवर्तनक जीवित धारा;
क्षण-क्षण नूतन रूप उगैत,
सृष्टि निरन्तर करय पसारा।
वास्तविकता गतिशील अछि,
निर्माण ओकर अन्तर-साँस;

रूप बदलितहुँ गहिर केन्द्रमे
 रहय अनन्त सम्भावनाक वास।
 आत्मा, जग आ परम उजास—
 तीन नाम, सम्बन्ध गहिर;
 नहि एक-दोसर सँ सर्वथा कटि,
 नहि सरल एकरूपक लकीर।
 जगत यदि केवल भ्रम रहितै,
 अनुभवक अर्थ कतय टिकित?
 परम यदि जगसँ पूर्ण अलग,
 सम्बन्धक सेतु कोना बनित?
 जतय हम मूलक मौन एकता
 अपने भीतर गहिर चिन्ही;
 ओतय जगक रूप मिटैत नहि,
 बस ओकर मर्यादा फेर बुझी।
 भेद रहय व्यवहारक धरती पर,
 एकता रहय अन्तरक मूल;
 दू सत्य नहि लड़य एक-दोसरा,
 एकहि वृक्षक पात आ फूल।
 ज्ञानक पहिल पथ इन्द्रिय,
 रूप-रस-स्पर्शक समाचार;
 दोसर पथ विवेकी बुद्धि,
 सम्बन्ध जोड़य बारम्बार।
 मुदा अन्तिम गहिर अनुभूति
 नहि केवल तर्कक शुष्क प्रमाण;
 जतय जाननिहार स्वयं बदलय,
 ओतय प्रज्ञा पाबय पहिचान।
 अनुभूति अन्ध भावना नहि,
 नहि तर्कक शत्रु, नहि भ्रम;
 ओ तऽ सजग चेतनक उत्कर्ष,
 जतय भीतर-बाहिर एक क्रम।
 तर्क परीक्षा, प्रश्न, विश्लेषण,
 मन केँ राखय निर्मल-साफ;
 प्रज्ञा तकरा पारि नहि फेंकय,
 अपितु देत व्यापक परिताप।
 धर्मक मोल उपाधि नहि,
 नहि बाहरी चिन्हक दीवार;
 यदि ओ मनुष्य केँ मनुष्यसँ

दूर करय, तकर अर्थ बेकार।
सत्य धर्म ओ, जे भय घटाबय,
द्वेषक काँटे करय निष्फल;
जतय करुणा, न्याय, मैत्री,
ओतय आत्मिकता हो सफल।
भूखल देहक समक्ष केवल
मोक्षक गीत पर्याप्त नहि;
दासता, शोषण, अज्ञान रहिते
आत्मिक वाणी सम्पूर्ण नहि।
जे चेतना एकता देखैत अछि,
ओ अन्यायक संग चुप नहि रहय;
अन्तरक प्रकाश बाहरी जीवनमे
न्याय आ सेवा बनि बहय।
मुक्ति दूरक लोक नहि,
नहि जग छोड़ि अकेल उड़ान;
ओ अज्ञानक घेरा टूटब,
अपन गहिर एकताक ज्ञान।
जतय 'हम'क संकीर्ण दीवार
मानवता दिशि खुलि पड़य;
ओहि क्षण आत्मक विशालता
दोसरा जीवनमे सेहो झलकय।
विश्वास यदि परीक्षा सहय,
तखन ओकर ज्योति अधिक साफ;
संशय यदि केवल नाश नहि,
ओ बनि सकय सत्यक माप।
परम्परा, तर्क, अनुभव, प्रज्ञा—
चारू हाथ पकड़ि संग चलू;
एकहि स्रोतक भिन्न धार जकाँ
मानव-ज्ञानक नदी बनू।
पूब-पश्चिमक बीच एकहि उजास,
नहि विजय, नहि हारक बात;
एक-दोसरक गहिर प्रश्नसँ
अपने सीमाक खुलय घात।
जतय विज्ञान, धर्म, दर्शन
मानव-मर्यादाक संग मिलय;
ओतय विश्वक अनेक आवाज
एकहि विशाल संगीत बनि खिलय।

अनेक रूपमे एकहि आश्रय

जगत नहि धुँधल छलना मात्र,
 नहि जीवक जीवन व्यर्थ;
 रंग, देह, इच्छा, श्रम, सम्बन्ध
 सभ धरैत अपन सत्यक अर्थ।
 मूल उजास एकमेव भएँ,
 अनेक रूप तकरा सँ दूर नहि;
 आश्रय एक, रूप अनेक—
 भिन्नतामे एकता अधूर नहि।
 जाहि चेतन मूलक व्यापक देहमे
 जीव आ जगत समायल,
 ओहि आधार सँ अलग कहिते
 अस्तित्वक सूत्र टूटि जायल।
 देह आ आत्मक नाता जेनाँ—
 भेद रहितहुँ आश्रित मेल;
 एक बिनु दोसर बुझन कठिन,
 सम्बन्धहि बनबैत पूर्ण खेल।
 जीव चेतन, जग जड़ रहितहुँ
 दुनू नहि निरर्थक छाया;
 मूलक आश्रयमे अपन-अपन
 स्वरूपक मर्यादा पाया।
 एकहि सत्यक भीतर विविधता,
 विविधतामे एकहि थाम;
 एकता जँ भेद केँ खा जाए,
 तखन अधूर होय सत्यक नाम।
 ज्ञान जखन वस्तु केँ छूअय,
 केवल निराकार नहि देखय;
 रूप, गुण, सम्बन्धक संगहि
 वस्तुक पूर्ण पहिचान लेखय।
 निर्विशेष खाली आकाश नहि,
 विशेष सँ सत्यक रूप खुलय;
 गुणक संग मूल उजास
 चेतनामे अधिक स्पष्ट फुलय।
 हरेक बोधमे एक 'ई' जगैत,
 मुदा 'ई' सदा किछु विशेष;
 रंग बिनु, रूप बिनु, गुण बिनु
 ज्ञानक विषय रहि जाय अशेष?

अनेक अनुभूतिक बीचक मेल
एकता केँ नकारैत नहि;
सामान्यक भीतर विशेष रहिते
ज्ञानक धरती बिखरैत नहि।
जगतक कारण मूल उजास,
तैयो सृष्टिमे स्वयं नष्ट नहि;
बीज जेनाँ रूप बदलि देत,
मुदा कारणक सत्य लुप्त नहि।
सूक्ष्म अवस्थामे जग समायल,
फेर स्थूल बनि बाहर आय;
प्रलयक मौनमे फेर समेटल,
चक्र नूतन रूप धरि जाय।
जीवक आत्मा सीमित ज्ञानक
धारक, भोगी, कर्मक भाग;
देह बदलितो ओहि भीतर
निरन्तर चेतन राखय राग।
अज्ञान आ कर्मक आवरण
ज्ञानक विस्तार केँ रोकय;
मुक्ति जखन आवरण हटाबय,
आत्मक प्रकाश खुलि सोखय।
मुक्ति स्वत्वक पूर्ण विनाश नहि,
नहि एकरूप शून्य विलय;
जीव अपन पहिचान बचौने
निकटतम आनन्दक पथ चलय।
दूरी घटय, बन्धन टूटय,
मूलक संग प्रेम गहिराय;
आश्रित स्वत्वक निर्मलता
सेवा बनि मुक्तिमे समाय।
ज्ञान आवश्यक, मुदा अकेला
हृदयक गाँठि नहि खोलि सकय;
प्रेमक उष्ण समर्पण बिनु
सूखल विचार थाकि पड़य।
ध्यान, स्मरण, प्रेमक सेवा
जीवनक दिशा बदलि देत;
जानल सत्य जखन प्रिय बनय,
तखन भक्ति पूर्ण रूप लेत।

समर्पण हारक नाम नहि,
 ओ अहंकारक भार उतार;
 जखन अपनेक सीमित सामर्थ्य
 मूलक चरणमे करय स्वीकार।
 'हमर'क दीवार ढीली पड़िते
 विश्वासक गहिर दुआर खुलय;
 कृपाक वर्षा ओहि हृदयमे
 निर्भय प्रेमक रूपमे फुलय।
 कर्मक अनुशासन मन शुद्ध करय,
 ज्ञान देत दिशा आ बोध;
 भक्ति दुनू केँ जीवन बनबय,
 मेटय अन्तरक कठोर विरोध।
 एक-दोसरक शत्रु नहि पथ,
 क्रमैँ गहिर होइत साधना;
 कर्तव्य सँ निर्मल चेतन,
 चेतन सँ प्रेमक आराधना।
 जगत केँ तजि परम न भेटत,
 जगत सेहो तकर विस्तार;
 जीवक पीड़ा, सेवा, करुणा
 आध्यात्मिक जीवनक द्वार।
 जे मूल सभकेँ आश्रय देत,
 तकर प्रेम सभ जीव धरि जाय;
 भक्ति यदि केवल निजी मुक्ति,
 तखन ओकर अर्थ अधूर रहि जाय।
 अनेक रूपमे एकहि आश्रय,
 भेदक भीतर एकताक गीत;
 जीव, जगत आ मूल उजास
 तीनू मिलि रचय सत्यक प्रीत।
 नहि भ्रम कहि जग केँ छोड़ू,
 नहि स्वत्वक घमण्ड बढ़ाउ;
 आश्रित रहितहुँ सत्य रूपमे
 प्रेमक मार्ग सँ घर पहिचानू।

मनुष्यक हाथमे स्वतन्त्र भोर

धरतीक धूलिसँ उठल प्रश्न,
 आकाशक भयमे नहि हराउ;
 जे जग आँखि-समक्ष जीवित,
 ओकर नियम सँ बाट बनाउ।

तारा, देह, माटि, चेतना—
 प्रकृतिक लयमे रूप धरय;
 अदृश्य भयक सिंहासन छोड़ि
 मनुष्य अपनहि बुद्धि सँ चलय।
 सत्य जँ अनुभवसँ कटि जाए,
 शब्दक महल बनि रहि जाए;
 जे ज्ञात हो, परीक्षण सहय,
 ओहि पर विश्वास टिकि जाए।
 आँखि, तर्क, स्मृति, अनुमान,
 साझा जाँचक खुलल दुआर;
 ज्ञान न कोनो चमत्कारक दान,
 मानव-प्रयत्नक अर्जित संसार।
 चेतना देहसँ दूरक छाया
 नहि, जीवनक जटिल विकास;
 कण-कणक दीर्घ यात्रा भीतर
 जागल विचारक निर्मल श्वास।
 प्रकृति केँ छोट करब नहि,
 मानव केँ सेहो देव नहि बनाउ;
 जगतक नियम बुझैत-बुझैत
 अपन मर्यादा स्वयं पहिचानू।
 नैतिकता भयक संतान नहि,
 नहि परलोकक व्यापार;
 सत्य, निष्ठा, सहकारक मूल्य
 मानव-जीवनक अपन आधार।
 दोसरा संग जीबाक कला,
 विश्वास, न्याय, जिम्मेदारी;
 समाजक भीतर जन्म लैत
 नीक आचरणक पहरादारी।
 स्वतन्त्रता सर्वोच्च दीप,
 मुदा अकेल इच्छाक नाम नहि;
 जे मनुष्य दोसरा केँ बान्हय,
 ओ अपने सेहो मुक्त नहि।
 अपन निर्णायक अधिकार संग
 दोसरा अधिकारो राखू याद;
 स्वतन्त्र जीवनक फूल फुलैत
 जतय परस्पर सम्मानक खाद।

राज्य यदि मनुष्य पर चढ़ि जाए,
 संस्था यदि लक्ष्य स्वयं बनय;
 व्यक्तिक चेतना कुचलि देलासँ
 समाजक प्रगति कतय जनय?
 व्यवस्था साधन, मनुष्य लक्ष्य,
 एहि क्रम केँ उलटू नहि;
 लोकक नाम पर लोकहि हरब
 स्वतन्त्रता केर पथ नहि।
 दल, पंथ, सत्ता, झण्डाक पाछाँ
 व्यक्ति केँ छाया नहि बनाउ;
 स्वतन्त्र विचारक खुलल आकाश
 हरेक चेतना केँ भाग दिअउ।
 आज्ञाकारिता यदि विवेक हरय,
 एकता तखन बन्धन होय;
 सहमति संग असहमतिको
 जीवित समाजमे स्थान होय।
 राष्ट्रक सीमा उपयोगी हो,
 मुदा मानवता सँ पैघ नहि;
 झण्डाक गौरव तखन अधूर,
 जँ पड़ोसीक पीड़ा देखै नहि।
 एक देशक हितक नाम पर
 दोसरा देशक घाव न खोलू;
 विश्व-मानवक साझा भविष्य
 सीमाक पारि मिलि कऽ बोलू।
 युद्धक जीत अंतिम हार,
 जखन मानव रक्तेँ धरती भीजै;
 विज्ञान जँ विनाशक हाथ चढ़य,
 सभ्यता अपन चेहरा कीझै।
 बुद्धिक गौरव तखनहि उज्जर,
 जखन जीवन केँ सुरक्षित करय;
 ज्ञानक शक्ति लोककल्याणमे
 मृत्यु नहि, सम्भावना भरय।
 समाज बदलै केवल घोषणासँ नहि,
 व्यक्ति बदलै संग-संग;
 स्वतन्त्र मन, वैज्ञानिक दृष्टि,
 नैतिक साहस—चारू रंग।
 क्रान्ति यदि नव दासता देत,

तखन पुरान बेड़ी मात्र बदलल;
मुक्ति तखन, जखन मनुष्यक भीतर
प्रश्न करबाक अधिकार फुलल।
मानववाद करुणा मात्र नहि,
ओ विवेकक अनुशासित दीप;
स्वार्थक घेरा तोड़ि देखैत
साझा भविष्यक गहिर समीप।
सुख-दुःख, श्रम, ज्ञान, स्वतन्त्रता—
एहि धरती पर अर्थ खोजू;
दूर स्वर्गक आशा सँ पहिने
एतय मानव जीवन सँवारू।
मनुष्यक हाथमे स्वतन्त्र भोर,
तर्कक संग करुणाक राग;
नहि भयक देवता, नहि सत्ता-मोह,
नहि अन्ध झण्डाक अनुराग।
जतय व्यक्ति सजग, समाज न्यायी,
विश्व बने साझा परिवार;
ओतहि मानवता अपनहि बल पर
खोलय भविष्यक उज्जर द्वार।

वनक स्वतन्त्र साँससँ जन-इच्छाक नगर

मनुष्य जन्मैत बेड़ी लेने
आकाशक नीचाँ नहि अबैत;
सहज देहक सरल आवश्यकता
प्रकृतिक गोदमे साँस लैत।
छोट चाह, सीमित साधन,
दया सहज हृदयमे जागय;
दोसरा पीड़ाक आकस्मिक दृश्य
हिंसाक पग केँ रोकि सकय।
सभ्यता जखन तुलना सिखबय,
'हम' आ 'ओ'क तराजू तनय;
सम्मान, प्रतिष्ठा, ईर्ष्याक संग
नूतन बन्धन भीतर जनय।
'ई भूमि हमर' कहि पहिल रेख
धरती पर जखन गाढ़ बनल;
सम्पत्तिक बाड़िक संगहि धीरे
असमानताक नगरो पलल।
धन शक्ति केँ संग बुलाबय,

शक्ति नियमक रूप धरय;
 कखनो कानून समान कहाइतहुँ
 बलवानक लाभहि सुरक्षित करय।
 प्राकृतिक भेद छोट रहि सकय,
 सामाजिक भेद बढ़ैत विशाल;
 पद, धन, जन्मक ऊँच-नीच
 मानव गरिमा पर धरय जाल।
 तैयो पुरान वनमे लौटब
 इतिहासक सरल उपाय नहि;
 प्रश्न ई—समाज एहन बनू
 जतय स्वतन्त्रता मरय नहि।
 व्यक्ति अपन शक्ति सभक संग
 एक साझा देहमे देत;
 मुदा समर्पण दासता नहि,
 यदि नियम सभपर समान रहत।
 व्यक्तिगत चाहक जोड़ि मात्र
 साझा इच्छा कहल नहि जाय;
 सामान्य हितक विवेकपूर्ण स्वर
 निज लाभक सीमा पारि उठाय।
 कानून तखन वैध होइत,
 जखन नागरिक अपने बनबय;
 आज्ञा मानब स्वयं देल नियमक
 स्वतन्त्रताक नव रूप कहाय।
 सत्ता जनता सँ ऊपर नहि,
 मूल अधिकार जनमे रहय;
 प्रतिनिधि शासन काज सम्हारय,
 सार्वभौम इच्छा नहि हरय।
 स्वतन्त्रता केवल 'जे मन' नहि,
 नैतिक आत्मशासनक नाम;
 इच्छा केँ न्याय संग बाँधिते
 नागरिकता पाबय धाम।
 शिक्षा बालक केँ साँचा नहि,
 प्रकृतिक गति संग बढ़ऽ दिअ;
 अनुभव सँ सीखय, प्रश्न करय,
 समय सँ ओकर बुद्धि खिलऽ दिअ।
 किताबक भारसँ पहिने जग,
 हाथ, आँखि, श्रमक पाठ;
 स्वावलम्बी मन जखन बनत,

तखन विवेक पकड़त बाट।
नगरक चमक जँ हृदय कुचलय,
प्रगति शब्द अधूरा रहय;
कला-विज्ञानक गौरव संगहि
चरित्रक प्रश्नो जीवित रहय।
वनक स्वतन्त्र सहज साँस
नगरमे न्याय बनि आबय;
साझा हित, समान कानून,
जन-इच्छा सत्ता केँ सीमा दय।
मनुष्य समाज छोड़ि नहि भागय,
समाज मनुष्य केँ दास नहि करय;
स्वतन्त्र नागरिकक साझा नगरमे
गरिमा आ करुणा संग फुलय।

निःशब्द धाराक सहज बाट

नाम देलासँ सीमा बनैत,
मूल धारा नामक पार;
जाहि सँ आकाश, धरती, जीवन,
उठैत रहय बारम्बार।
कहब चाही तँ शब्द छोट पड़य,
मौन अधिक गहिर बतियाय;
जे मूल सभ रूपकेँ जन्म दय,
ओ स्वयं रूपमे नहि समाय।
अस्तित्व आ अनस्तित्व दू स्वर,
एक-दोसरक विरोध नहि;
खाली घड़ा उपयोगी होइत,
रिक्ति बिनु आकार ठीक?
दृश्य काठ सँ घर बनैत,
खाली कोठरी जीवन पाबय;
जे अछि आ जे नहि देखाइ,
दुनू मिलि उपयोग बनाबय।
अँजोर बिनु अन्हार कतय,
ऊँच बिनु नीच केना जानू;
कठिनक संग सहजक अर्थ,
दू ध्रुवकेँ एक संग मानू।
विपरीत धारा टकरा मात्र नहि,
एक-दोसरकेँ जन्म दय;

भेदक भीतर परस्परता
 जगतक लय केँ थामि रहय।
 प्रकृति जोर सँ फूल नहि खोलय,
 नहि नदी धक्का दैत बहे;
 ऋतु अपनहि क्रमसँ बदलय,
 बीज समय पाबि अंकुर गहे।
 जे करबामे करबाक गर्व नहि,
 ओहि कर्ममे सहज प्रभाव;
 अनावश्यक हस्तक्षेप घटिते
 जीवन पाबय अपन स्वभाव।
 निष्क्रियता आलस नहि,
 ओ अकृत्रिम कर्मक रीति;
 जतय अहंकार बीच नहि आबय,
 कार्य बने सहज संगीत।
 बहुत खींचल डोर टूटि जाए,
 बहुत कसबाक फल प्रतिकार;
 ठीक समय पर छोट स्पर्श
 बदलि सकय सम्पूर्ण व्यवहार।
 जे अपने केँ आगाँ धकेलय,
 ओ कखनो पाछाँ पड़ि जाए;
 जे विनम्र भऽ सभकेँ ठाम दय,
 ओ अनायास केन्द्र बनि जाए।
 नदी सभसँ नीच ठाम धय,
 तँ सभ धार ओकरा भेटय;
 नम्रताक गहिर खालीपनमे
 बहुत शक्ति चुपचाप समेटय।
 कोमल जल पत्थर काटय,
 धीरे-धीरे वर्षक संग;
 कठोर डाँड़ आँधिमे टूटय,
 लचकदार टहनी बचाबय पात।
 दुर्बल देखाइत कोमलता
 कखनो शक्तिसँ पैघ बनय;
 जीवन जे झुकबाक कला जानय,
 ओ बदलैत मौसममे तनय।
 अधिक चाहक आगि जरे तँ
 मनक शान्ति दूर पलाय;
 जतेक संचय, ततेक भय,

हरेक वस्तु बन्धन बनि जाय।
कममे सन्तोषक निर्मल स्वाद,
सरल जीवनक गहिर धन;
जे अपन आवश्यकता चीन्हय,
ओ पाबय निश्चिन्त मन।
विद्वत्ता जँ अहंकार बढ़ाबय,
ज्ञानक दीप धुँआ बनय;
साँच बुद्धि अपन सीमा जाने,
अज्ञातक सम्मुख मौन रहय।
जे कहय “सभ बुझि गेलहुँ”,
ओ प्रश्नक दुआर स्वयं बन्द करय;
जे नजानल केँ सेहो पहचानय,
ओ सीखबाक राहि खुलल धरय।
शासन जँ हरेक श्वास नापय,
लोकक सहजता मरि जाए;
बहुत नियम, बहुत दण्डक भय
चोरीक नूतन बाट बनाय।
सरल नीति, कम हस्तक्षेप,
जनजीवन केँ स्वाभाविक राह;
शासक अपन छाया घटाबय,
तखन समाज पाबय निर्वाह।
युद्धक चमक विजय नहि,
ओ शोकक ढोलक कठोर नाद;
हथियारक धार चाहे जीतय,
जीवन पाबय गहिर विषाद।
जे बलवान अछि, शान्त रहय,
अत्याचारक गर्व नहि पाल;
हिंसा जीतक उत्सव नहि,
ओ मानवीय क्षतिक काल।
छोट समुदाय, सरल इच्छा,
नजिक श्रम, नजिक सम्बन्ध;
दूर विजयक लालच घटिते
जीवन पाबय अपन सुगन्ध।
साधन रहितहुँ दम्भ नहि,
यात्रा सम्भव रहितहुँ लोभ नहि;
अपन धरतीमे अर्थ पबैत
मन हरेक क्षण विदेशक खोज नहि।

सृष्टि गोल-गोल लौटैत,
 चरम बिन्दु फेर पाछाँ मुड़य;
 अधिक भरल पात्र छलकि जाए,
 अधिक तनल धनुष स्वयं झुकय।
 आरम्भ भीतर अन्तक छाया,
 अन्तमे आरम्भक बीज रहय;
 परिवर्तनक एहि शान्त चक्रमे
 जगत निरन्तर साँस लय।
 निःशब्द धाराक सहज बाट,
 मौन, नम्रता, कोमल चाल;
 कम करितहुँ अधिक फलैत,
 रिक्ति बनय उपयोगक थाल।
 विपरीत स्वरकें संगहि राखू,
 लोभ घटाउ, हिंसा छोड़ू;
 प्रकृतिक लयमे अपने कें राखि
 जीवनक मूल दिशि फेर मोड़ू।

अदृश्य केन्द्रसभक एक सुर

जगत केवल बाहरक पसार नहि,
 भीतर-भीतर केन्द्र अनन्त;
 टुकड़ा नहि, भाग नहि ओकर,
 तैयो शक्ति सँ रहय जीवन्त।
 आँखिसँ नहि सभ रूप देखाय,
 तैयो प्रभावक धुनि सुनाय;
 सूक्ष्म अस्तित्व अपनहि ढंगसँ
 समूचा जगक छवि बनाय।
 एक केन्द्र दोसराक भीतर
 खिड़की खोलि प्रवेश नहि करय;
 तैयो सभमे विश्वक प्रतिबिम्ब
 अपन-अपन स्तर पर उतरय।
 जेना अनेक दर्पण समक्ष
 एकहि नभ कें भिन्न देखाय;
 कोनो दर्पण आकाश नहि गढ़य,
 मुदा अपन दृष्टि सँ रूप पबाय।
 चेतना एकहि माप नहि धरय,
 कतहु धुँधल, कतहु उज्जर ज्योति;
 कतहु सुप्त स्पन्दन मात्र रहय,
 कतहु अनुभूतिक स्पष्ट गति।

कतहु स्मृति जोड़य बीतल क्षण,
 कतहु 'हम'क गहिर बोध जगय;
 स्तर बदलितहुँ जीवन-धारा
 एक क्रममे ऊपर चढ़य।
 जड़ कहाइत रूपक भीतर
 पूर्ण शून्यक घर नहि मानू;
 अत्यन्त सूक्ष्म अनुभूतिक छाप
 अन्तरधार जकाँ पहिचानू।
 वनस्पति, पशु, मनुष्यक चेतन
 क्रमँ अधिक खुलैत जाए;
 स्मृति, अनुभूति, आत्मबोध सँ
 जीवन अपन सीमा बढ़ाए।
 देह आ मन दू घड़ी जकाँ,
 एक-दोसरा केँ धक्का नहि देत;
 तैयो समयक एकहि लयमे
 दुनू अपन-अपन चाल सम्हैत।
 भीतर संकल्प उठैत जखन,
 बाहर कर्मों संगहि होय;
 पहिनेसँ बान्हल सामञ्जस्य
 दू धाराक एक सुर होय।
 घड़ीक ताल जँ अचरज लागय,
 तकर पाछाँ व्यवस्था गहिर;
 अराजकता सँ जग नहि चलय,
 क्रमक सूत रहय स्थिर।
 प्रत्येक केन्द्र अपन नियममे,
 तैयो समग्र सँ मेल रखय;
 स्वतन्त्र चालक भीतर सेहो
 विश्वक एक लय साँस लय।
 जे सर्वोच्च चेतन उजास,
 जाहिमे सीमा, अभाव नहि;
 सम्पूर्ण ज्ञान, शक्ति, करुणा,
 जकरा सँ किछु पराव नहि।
 बाकी सभ सीमित केन्द्रक
 मूल सम्भावना ओहि सँ आय;
 समग्र क्रमक प्रथम आधार
 जगतक कारण रूप धराय।

किएक किछु अछि, शून्य नहि—
 प्रश्नक पाछाँ कारण चाही;
 घटना मात्र 'भेल' कहि छोड़ब
 बुद्धिक तृप्ति लेल पर्याप्त नहि।
 हरेक सत्यक पाछाँ आधार खोजू,
 हरेक क्रमक पाछाँ पर्याप्त हेतु;
 कारणक अन्तहीन अन्हार पारि
 एक मूल सँ जुड़य सभ सेतु।
 किछु सत्य एहन दृढ़ रहैत
 जकर उलट असम्भव होय;
 संख्या, तर्क, सम्बन्धक नियम
 बुद्धि भीतर स्वतः संजोय।
 किछु सत्य घटना पर निर्भर—
 एहन भेल, मुदा आन हो सकैत;
 दुनू ज्ञानक भिन्न धरातल
 एकहि चेतन भीतर समैत।
 मन कोरा पट नहि जन्मैत,
 केवल बाहर अक्षर नहि लिखय;
 भीतर पहिनेसँ किछु बीज
 अनुभव पाबि अंकुरित दिखय।
 इन्द्रिय देत अवसर, सामग्री,
 बुद्धि देत रूप आ सम्बन्ध;
 भीतर-बाहरक मेल बिनु
 ज्ञान रहित अधूर प्रबन्ध।
 अनुभव आवश्यक, तर्क आवश्यक,
 एक सँ दोसर सम्पूर्ण नहि;
 देखल तथ्य बिनु विचार रूख,
 विचार बिनु तथ्यक दिशा नहि।
 जे भीतर सम्भावना सुप्त,
 ओ बाहरक स्पर्श सँ जागय;
 ज्ञान न केवल ग्रहण करब,
 मन अपन ढाँचा सेहो लगाय।
 दुःख, दोष, अपूर्णता देखिते
 किएक जग केँ नीक कहब?
 एक अंश काटि अलग निहारलासँ
 समूचा क्रम कोना बुझब?
 कखनो छोट अन्हारो समग्र

उज्जर चित्रक भाग बनय;
सीमित दृष्टि जे दोष कहैत,
व्यापक क्रममे अर्थ पबय।
मुदा 'सभ नीक' कहि चुप रहब
नैतिक भार सँ मुक्ति नहि;
चुनावक भीतर जिम्मेदारी,
कर्मक फलसँ दूरी नहि।
मनुष्यक इच्छा कारण-सूत्रमे
अपन चरित्र सँ दिशा चुनय;
स्वतन्त्रता जादू नहि, अपितु
बुद्धि संग संकल्पक गुण बनय।
अदृश्य केन्द्रसभक एक सुर,
अनेक दर्पण, एक संसार;
धुँधल चेतन सँ आत्मबोध धरि
क्रमेँ खुलैत जीवन-द्वार।
कारण, तर्क, अनुभव, सामञ्जस्य—
सभ मिलि गढ़य विश्वक राग;
सूक्ष्म अस्तित्वक मौन उजासमे
समग्रता पाबय अपन अनुराग।

अनुभवक कोरा पात पर स्वतन्त्र हस्ताक्षर

मन जन्मैत तैयार पोथी नहि,
नहि अक्षर पहिनेसँ लिखल;
अनुभवक कोरा पात पर धीरे
जीवनक पहिल रेखा निकल।
बाहरक स्पर्श एक दुआर,
भीतरक क्रिया दोसर बाट;
देखब, सुनब, चाहब, सोचब—
एहि सँ भरैत चेतन पात।
रंग, गन्ध, ध्वनि, ताप, आकार
इन्द्रिय देत सरल चिन्ह;
स्मृति, इच्छा, संशय, विचार
भीतरक अनुभवक भिन्न।
दुनू धारासँ सरल बोध उठय,
मन तकरा पहिने नहि गढ़य;
जे भेटैत अछि, ओ ग्रहण करैत,
फेर अपन काज सँ रूप बढ़य।

सरल बोधक ईंट जुटाकऽ
 मन बनबय जटिल घर;
 जोड़य, तुलना करय, अलग करय,
 नाम दैत क्रमशः भीतर।
 एकटा फूल, एकटा वृक्ष,
 फेर 'वन'क व्यापक धार;
 विशेष अनुभव सँ सामान्य अर्थ
 मन रचैत बारम्बार।
 किछु गुण वस्तुसँ अलग नहि—
 आकार, गति, संख्या, विस्तार;
 किछु अनुभूति मनमें जगैत—
 रंगक छटा, गन्धक संसार।
 वस्तु कारण देत संकेत,
 अनुभव अपन रूप बनाय;
 बाहर आ भीतरक भेद बुझिते
 ज्ञान अपन सीमा पहिचानाय।
 जे आधार गुण सभ केँ धारण करय,
 ओकर स्वरूप धुँधल रहय;
 हम गुण देखी, सम्बन्ध बुझी,
 मुदा अन्तिम आधार नहि कहय।
 नाम देलासँ रहस्य समाप्त नहि,
 अज्ञानक सीमा रहैत;
 जतय प्रत्यक्ष पहुँचि नहि सकय,
 ओतय विनम्र प्रश्न जगैत।
 ज्ञानक पहिल उजास सहज—
 दू विचारक मेल तुरन्त देखाय;
 दोसर पथ प्रमाणक सीढ़ी,
 एक-एक कड़ी सँ निश्चय आय।
 तेसर बोध बाहरी जगक,
 इन्द्रिय सँ वर्तमानक खबर;
 निश्चयक स्तर भिन्न-भिन्न,
 सभ ठाम नहि एकहि असर।
 हमर ज्ञान सीमित अछि,
 एहि सीमा केँ दोष नहि मानू;
 जतय प्रमाण अछि, ओतय ठहरू,
 जतय नहि, सम्भावना जानू।
 विश्वास आ अनुमान आवश्यक,

मुदा ज्ञानक रूप नहि सभ;
बुद्धि अपन परिधि चिन्हिते
अन्ध निश्चय सँ रहय बच।
नैतिक नियम जन्मजात नहि,
समाजमे सीखल भेद अनेक;
सुखक चाह, दुःख सँ दूरी
मानवीय कर्मक एक विवेक।
मुदा केवल निजी स्वाद नहि,
कर्म पर नियमक छाप रहय;
दैवी, सामाजिक, नागरिक माप
व्यवहारक दिशा तय करय।
जे कर्म स्थायी सुख बढ़बय,
दुःखक कारण कम करय;
विवेक तकरा मान देत,
आदत जीवनमे रूप धरय।
शिक्षा केवल शब्द नहि,
चरित्रक अभ्यासो चाही;
बाल मन पर ठीक संस्कार
भविष्यक पथ बनबैत जाही।
मनुष्य जन्मसँ दास नहि,
जीवन, स्वतन्त्रता, श्रमक फल;
अपन देह, अपन परिश्रम पर
ओकर अधिकार सहज अचल।
धरतीक दान साझा हो सकय,
मुदा श्रम जखन ओकरा सँ जुड़य;
परिश्रमक छाप सँ निजी अधिकार
व्यवहारक रूपमे उभरय।
राज्य मनुष्य लेल बनैत,
मनुष्य राज्यक साधन नहि;
सुरक्षा, शान्ति, अधिकारक रक्षा
शासनक मूल कारण सही।
लोकक सहमति सँ शक्ति उठय,
शासक ऊपर सीमा रहय;
कानून सभ पर समान लागू,
मनमानी सत्ता नहि सहय।
विधि बनौनिहारो बन्धन भीतर,
ओ सर्वोच्च भएँ निरंकुश नहि;

लोकहित छोड़ि निजी स्वार्थ धरय,
 तखन शासन वैध रहय नहि।
 सम्पत्ति, जीवन, स्वतन्त्रता पर
 अनुचित हाथ जँ सत्ता धरय;
 जनता अपन अधिकारक रक्षा लेल
 प्रतिरोधक दुआर खोलि सकय।
 बहुमतक निर्णय उपयोगी,
 मुदा व्यक्ति पूर्ण मिटैत नहि;
 सामाजिक करार सुरक्षा देत,
 आत्मसम्मान बेचैत नहि।
 शासनक अधिकार उधारक शक्ति,
 मूल स्वामी जनता रहय;
 विश्वास टूटिते राजनीतिक बन्धन
 फेर समीक्षा माँगैत रहय।
 अनुभवक कोरा पात पर
 स्वतन्त्र हस्ताक्षर बनू;
 देखल-सुनल सँ ज्ञान रचू,
 मुदा संशयक दीपो संग धरू।
 सीमित बुद्धि, खुलल समाज,
 अधिकार संग उत्तरदाय;
 ज्ञान आ स्वातन्त्र्य मिलि जखन,
 मानव-मर्यादा घर बनाय।

विश्वासक आगि, अन्तरात्माक मुक्त स्वर

जखन धर्मक दुआर पर सिक्का
 पाप-मोचनक मोल बताबय,
 अन्तरात्मा प्रश्न उठाबय—
 कृपा की बजारमे बिकि पाबय?
 जकर घाव हृदयक गहिराइमे,
 ओकर उपचार बाहरी दाम नहि;
 साँच पश्चात्ताप भीतर जागय,
 मुक्ति कोनो खरिदल नाम नहि।
 मनुष्य अपन दुर्बलता लऽ
 जन्मक साँस सँ संघर्ष करय;
 अहंकार, लोभ, भय, वासना
 भीतर-भीतर छाया धरय।
 केवल कर्मक गिनती कऽ कऽ
 आत्मा निष्कलंक नहि बनय;

जखन कृपाक भरोसा जागैत,
तखन अपराध-बोध रूप बदलय।
विश्वास केवल ओठक वाणी
नहि, भीतरक पूर्ण भरोस;
जतय भयक दरबार ढहि पड़य,
जतय करुणा देत नव होस।
‘हम अपन बलसँ पार करब’—
एहि गर्वक नाव डगमग होय;
समर्पित चेतन जखन खुलैत,
अनुग्रहक धार ओतहि सोय।
सत्कर्मक मोल अवश्य रहय,
मुदा सौदा बनि नहि उठय;
नेकी यदि मुक्ति खरिदबाक
सीढ़ी हो, तकर अर्थ छुटय।
प्रेम सँ उपजल कर्म सुगन्ध,
नहि पुरस्कारक लेखा-पात;
विश्वासक वृक्ष जँ जीवित हो,
सेवाक फूल खिलय दिन-रात।
ग्रन्थक वाणी राजद्वारसँ
दूर केवल पण्डितक वस्तु नहि;
साधारण जन सेहो पढ़ि सकय,
अर्थ बुझय—ई अधिकार सही।
जखन शब्द अपन भाषा पाबय,
बन्द कोठरी खुलि पड़य;
ज्ञानक ज्योति घर-घर पहुँचि ते
प्रश्न करबाक साहस बढ़य।
अधिकारक ऊँच सिंहासन जँ
सत्यसँ ऊपर ठाढ़ भऽ जाय,
तखन अन्तरात्माक आवाज
ककर दुआर पर न्याय माँगय?
परम्परा आदर योग्य अवश्य,
मुदा अचूक कहि बाँधू नहि;
जे सत्यक कसौटी सहि नहि सकय,
ओ आदेश मात्र सत्य नहि।
हरेक विश्वासी भीतर धरैत
प्रार्थनाक सोझ एक दुआर;
बीचमे अनिवार्य दीवार नहि,

नहि जन्माधारित विशेष अधिकार।
 सभ आत्मा कृपाक सम्मुख समान,
 कोनो ऊँच-नीच नहि स्थिर;
 सेवा जे करय, ओ सेवक हो,
 सत्ता बनि नहि चढ़य शिर।
 दीक्षा जलक स्मृति जकाँ
 नव जीवनक वचन जगाबय;
 साझा अन्न आ प्याला भीतर
 संगति अपन अर्थ बताबय।
 बाहरी रूप तखनहि अर्थवान,
 जखन भीतर विश्वास जगे;
 संस्कार शरीर पर रहि जायत
 यदि हृदयक धरती नहि भिजे।
 जीवन पवित्र केवल मठमे
 नहि, खेत-घर-बजारो बीच;
 श्रम, परिवार, जिम्मेदारी
 सभमे आस्था पाबय सींच।
 दैनिक काज जँ सत्य सँ जुड़य,
 ओहो सेवा बनि सकैत;
 पवित्रता संसार छोड़ब नहि,
 संसारमे निष्ठा सँ रहैत।
 अन्तरात्माक स्वतन्त्रता
 मनमानीक खुलल छूट नहि;
 विश्वास मुक्त करैत भीतर,
 तैयो प्रेमक ऋण छुटैत नहि।
 अपने लेल मुक्त, मुदा दोसरा
 लेल सेवा करब सहज धर्म;
 स्वतन्त्र आत्मा झुकि सकैत अछि
 करुणा लेल—एहि मे मर्म।
 सत्ता आ आस्था जखन मिलि
 मानव विवेक केँ दबबय चाहय,
 तखन एक निडर प्रश्नक चिनगारी
 युगक अन्हार चीरि निकलाय।
 शब्दक साहस तलवार नहि,
 तैयो सिंहासन हिला सकय;
 एकटा स्पष्ट अन्तर-स्वर
 लाख मनक नींद जगाबय।

सुधारक आगि केवल तोड़ब
नहि, भीतर फेर निर्माण;
भ्रष्ट प्रथा हटबय संग-संग
चेतनाकैँ चाही नव विधान।
यदि पुरान बन्धन टूटि गेल,
मुदा नूतन अहंकार उगय;
तखन मुक्तिक बाट फेर सँ
सत्ता केर जंगलमे भटकय।
विश्वासक आगि, मुक्त अन्तर-स्वर,
कृपा, विवेक, सेवाक मेल;
बजारसँ बाहर आत्म-मर्यादा,
सत्तासँ बाहर सत्यक खेल।
जे पढ़य, सोचय, प्रश्न उठाबय,
प्रेमक कर्म सँ जीवन भरय;
भीतरक ई निर्मल स्वतन्त्रता
मानव केँ नव भोर दय।

श्रमक मुक्ति, बदलैत धरतीक गीत

धरती चलैत, रूप बदलैत,
किछुओ जड़ि कऽ अन्तिम नहि;
विरोधक भीतर गति उमड़ैत,
नव आकार बिनु संघर्ष नहि।
पुरान ढाँचा अपन सीमा पाबि
नूतन राहिक आहट सुनय;
परिवर्तन जगक बाहरी खेल नहि,
जीवनक भीतर नियम बनय।
पदार्थ पहिने, चेतन पाछाँ,
मस्तिष्कमे जगक छाप उतरय;
बाहरक वस्तु मनसँ स्वतन्त्र,
तैयो ज्ञानमे प्रतिबिम्ब धरय।
देखल-जाँचल व्यवहारक कसौटी
भ्रम आ सत्यक भेद करय;
विचार जखन जीवनसँ जुड़य,
तखन ओकर अर्थ स्पष्ट उभरय।
इतिहास केवल राज-मुकुट नहि,
श्रमक हाथो तकर आधार;
कोन साधन पर ककर अधिकार,
एहि सँ बदलय समाजक आकार।

हल, कारखाना, औजार, भूमि,
 उत्पादनक सम्बन्ध गहिर;
 जेना उत्पादनक ढाँचा बदलय,
 तेना समाजक रूपो फिर।
 जखन साधन किछुएँ हाथमे,
 बहु हाथ श्रम करैत रहय;
 अपन श्रमक फलसँ दूर मनुष्य
 पराया जीवन ढोइत रहय।
 काम अपन सृजन नहि रहि
 केवल जीविकाक बाध्य डोर;
 श्रमिक अपनहि शक्ति बेचैत,
 दिनक उजास होइत कमजोर।
 सामूहिक श्रमक अर्थ एहन—
 जकर फल समाज धरि जाय;
 उत्पादन केवल निजी लाभक
 एक सँकुचित घाट नहि बनाय।
 कामक अधिकार, जीवनक सुरक्षा,
 साझा साधनक न्यायपूर्ण भाग;
 श्रम जखन मानवीय रूप पाबय,
 तखन घटय परायापनक दाग।
 नव तकनीक जँ श्रम घटाबय,
 ओ मानव लेल वरदान बनय;
 यदि ओकर लाभ किछुएँ समेटय,
 तँ असमता आरो गहिर तनय।
 यन्त्रक गति मनुष्यक शत्रु नहि,
 शर्त—तकर फल साझा हो;
 उत्पादन बढ़ि अवकाशो बढ़य,
 जीवन केवल मजदूरी नहि हो।
 समानता अर्थ एकरूप नहि,
 नहि क्षमता सभकेँ एकहि मान;
 अवसर, अधिकार, गरिमा, सुरक्षा
 समान धरातल पाबय स्थान।
 वर्ग, लिंग, जन्मक दीवार
 मानव-मोलक माप नहि हो;
 सभक श्रम आ सभक जीवन
 सम्मानक साझा अधिकार हो।

राज्य यदि लोकक ऊपर ठाढ़,
तँ परिवर्तन अधूर रहय;
लोकक सहभाग बिनु सत्ता
नव नाममे पुरान भार सहय।
निर्णय-प्रक्रियामे जनक भाग,
जवाबदेही, समान अधिकार;
जनतन्त्र केवल मत-पेटी नहि,
जीवनमे सक्रिय सहभागक द्वार।
स्वतन्त्रता केवल बजारक
प्रतिस्पर्धामे दौड़ब नहि;
भूख, बेरोजगारी, शोषण भीतर
कागजी आजादी पर्याप्त नहि।
जे भय सँ मुक्त, जीवन सुरक्षित,
शिक्षा, श्रमक अवसर पाबय;
ओहि धरती पर वास्तविक स्वतन्त्रता
अपन गहिर अर्थ देखाबय।
नैतिकता आकाशसँ तैयार
शाश्वत सूची बनि नहि उतरय;
मानव सम्बन्ध, वर्ग, संघर्ष,
सामाजिक जीवनमे रूप धरय।
तैयो करुणा, सहकार, निष्ठा
साझा जीवनक मूल्य बनय;
जे मनुष्य केँ मनुष्यसँ जोड़य,
ओ आचरण भविष्यो गढ़य।
क्रान्ति केवल सत्ता बदलब
नहि, सम्बन्धो बदलय चाही;
नव शासन जँ पुरान असमता राखय,
तँ राहि अधूरी रहि जाही।
उत्पादन, अधिकार, सहभागिता,
दैनिक जीवन सभमे फेर;
मानव-मुक्ति तखनहि गहिर
जखन टूटय शोषणक घेर।
मुदा कोनो नारा सत्य नहि,
जीवनक परिणाम परखू;
जे व्यवस्था मानव गरिमा घटाबय,
ओकर आलोचना खुलि करु।
सिद्धान्त जँ व्यवहारसँ कटि जाए,

ओ जड़ सूत्र बनि रहि जाय;
 नव परिस्थिति नूतन प्रश्न उठाबय,
 विचार पुनः परीक्षा पाय।
 श्रमक मुक्ति, बदलैत धरती,
 साझा जीवनक उज्जर राग;
 पदार्थक गति, इतिहासक संघर्ष,
 न्याय दिशि बढ़ैत अनुराग।
 जे श्रम करय, ओ मान पाबय,
 जे जीवय, गरिमा सँ जीवय;
 समाजक फल समाजमे बहय,
 मानव भविष्य नूतन सींचय।

सत्य जगत पर कृपाक मधुर धारा

जगत कोनो झूठक परदा नहि,
 नहि आँखिक केवल छल-छाया;
 एकहि अनन्त मूल उजाससँ
 रूप-अरूप सभ शक्ति पाया।
 अनेक रूपमे प्रकट भएँ,
 मूल अपन शुद्धता नहि हारय;
 लहरि अनेक उठैत समुद्रमे,
 समुद्र अपन गहिराइ सँ न टारय।
 सत्, चेतन, आनन्दक धारा
 एकहि मूलमे पूर्ण समायल;
 कतहु आनन्दक तेज प्रचुर,
 कतहु ओ आवरणमे लुकायल।
 रूप बदलय, शक्ति नाश नहि,
 अभिव्यक्तिक स्तर बदलय;
 एकहि ज्योति अनेक पात्रमे
 अपन-अपन ढंगसँ झलकय।
 जीव अलग कोनो मूल पदार्थ नहि,
 ओहि अनन्तक अंश समान;
 तैयो सीमित चेतन बनिते
 आनन्दक विस्तार रहय अजान।
 ज्ञानक किरण भीतर रहिते,
 अविद्याक धुँधि ओकरा ढाँकय;
 अपनहि मूल बिसरल चेतन
 छोट सुखक पाछाँ-पाछाँ भागय।

किछु चेतन निर्मल रहैत,
 किछु संसारक गाँठिमे बान्हल;
 किछु बन्धन काटि मुक्त भऽ
 मूलक प्रेममे फेर समायल।
 बंधनक कारण जगत नहि,
 ममता-अविद्याक बनल जाल;
 जगत सत्य, मुदा 'हमर-तोहर'
 मन बनबय दुःखक जंजाल।
 जगत आ संसार एक नहि—
 एहि भेदक अर्थ गहिर;
 जगत मूलक वास्तविक विस्तार,
 संसार अज्ञानक बनल लकीर।
 ज्ञान जखन भ्रमक गाँठि खोलय,
 संसारक बोझ हलुक भऽ जाय;
 मुदा सत्य जगत नहि मिटैत,
 ओ तऽ मूलक रूपेँ रहि जाय।
 माया केवल छलना नहि,
 दू धारामे ओकर परिचय;
 एक अज्ञानक बाँध बनबय,
 एक ज्ञानक दुआर करय नय।
 जे शक्ति जीव केँ मूल बिसरबय,
 ओ अन्हारक मार्ग बनाय;
 जे शक्ति मूल दिशि फेर घुमाबय,
 ओ प्रकाशक सेतु बनि जाय।
 कर्मक पथ अनुशासन देत,
 ज्ञानक पथ भ्रम केँ काटय;
 मुदा प्रेमक सहज समर्पण
 हृदयक कठोरता सेहो बाँटय।
 मुक्ति केवल 'जानलहुँ' नहि,
 मूलक प्रियता भीतर जागय;
 कृपाक एक बून्द जखन पड़य,
 सूखल आत्मा फूलि उठाय।
 कृपा कमायल मजदूरी नहि,
 नहि सौदाक बदला भेटल दान;
 ओ अनुग्रहक स्वतन्त्र वर्षा,
 जतय विनम्र हो मानव-प्राण।
 अपने बलक गर्व उतारि

जखन हृदय खुलल रहि जाय;
 ओहि रिक्त पात्रमे प्रेमक रस
 अनायास भरि-भरि आय।
 भक्ति केवल गीतक स्वर नहि,
 नहि मन्दिरक क्षणिक प्रणाम;
 सेवा बनि दिन-राति बहैत,
 स्मरण बनि जीवित रहय नाम।
 देहक श्रम, धनक सदुपयोग,
 हृदयक समर्पण तीनू संग;
 प्रेम जखन व्यवहारमे उतरय,
 तखन साधना पाबय रंग।
 गुरु प्रति आदर, सज्जन-संगति,
 प्रियतमक स्मरणक धार;
 रूपक सेवामे तन-मन डूबय,
 अहंकार उतरय बारम्बार।
 सेवा यदि केवल प्रदर्शन,
 तँ भीतर सूखल रहि जाय;
 निष्काम प्रेमक मौन करघा
 आत्मा केँ नूतन वस्त्र पहनाय।
 प्रेमक सर्वोच्च रूप ओहि,
 जतय स्वार्थक लेखा नहि;
 'की भेटत?' ई प्रश्न बिसरल,
 केवल निकटता चाहय सही।
 लोक-लाज, लाभक गणना,
 सभ सीमा जखन पाछाँ छुटय;
 प्रियक सुखमे अपन सुख पाबि
 हृदयक संकीर्णता टूटय।
 मुक्ति तखन दूरक धाम नहि,
 प्रेमक भीतर जीवित बोध;
 जगत छोड़ब तकर शर्त नहि,
 जगतमे देखू मूलक शोध।
 रूप-रंग, सम्बन्ध, सेवा—
 सभमे ओहि एकक विस्तार;
 सत्य जगत केँ प्रेम सँ देखू,
 तखन खुलय आनन्दक द्वार।
 सत्य जगत पर कृपाक धारा,
 ज्ञान, सेवा, प्रेमक मेल;

अविद्याक जाल सँ मुक्त चेतन,
जगत नहि बनय त्यागक खेल।
एकहि मूल अनेक रूपमे,
अनेक रूप पुनः एक दिशि जाय;
समर्पित हृदयक मधुर उजासमे
जीवन अपन घर पहिचानाय।

चेतनाक धारामे रूपक स्वप्न

क्षण-क्षण रूप बदलैत जग,
कोनो गाँठि सदा एक नहि;
जन्मल रूप क्षय दिशि चलैत,
स्थिर आत्माक छाप कतहु नहि।
कर्म रहय, कर्मक फल रहय,
मुदा नित्य कर्ता कतय ठाढ़?
धार निरन्तर बहैत रहय,
बून्द-बून्द बदलैत अनवरत बाढ़।
रूप, अनुभूति, पहिचान, संस्कार,
चेतन प्रवाहक पाँच तरंग;
एकहि 'हम' कहि जे पकड़ू,
ओ अनेक क्षणक बदलैत रंग।
मोह जखन एहि समूह पर
स्थिर स्वत्वक मोहर लगाय;
ओहि भ्रमसँ आसक्ति जन्मय,
दुःखक जाल अधिक फैलाय।
कारण बिनु किछु नहि उगय,
प्रत्येक क्षण दोसर सँ जुड़ल;
एक दीपसँ दोसर दीप जकाँ
प्रवाह रहय, रूप फेरल।
नहि पुरान क्षण पूर्ण बचैत,
नहि नव क्षण अकस्मात् आय;
कारण-फल केर महीन डोरी
जीवनक क्रम केँ आगाँ लाय।
किछु रूप कारणसँ उपजैत,
किछु शान्ति कारणक पार;
आकाशक खुलल अवरोधहीनता,
निरोधक दू सूक्ष्म प्रकार।
जन्मल-गढ़ल सभ परिवर्तनशील,
अनगढ़ शान्ति भिन्न विधान;

भेद बुझिते मन देखय
 क्षणभंगुर जीवनक साँच पहचान।
 देहक रूप, अनुभूतिक स्वाद,
 संज्ञा, संस्कार, चेतन प्रवाह;
 सभ मिलि जीवनक रथ बनबय,
 तैयो नित्य सारथि कतय अथाह?
 जे 'हम' कहैत छी दिन-राति,
 ओ नामक उपयोगी व्यवहार;
 गहिर निहारलापर भीतर
 क्षणक समूहक चलैत संसार।
 बाहर जे संसार देखाइ,
 की ओ केवल बाहरक भार?
 कखनो स्वप्नो ठोस लगैत,
 कखनो भ्रम बनबय आकार।
 चेतना अपन बीजक छापसँ
 रूप-विषयक जग प्रकट करय;
 जागल आँखि सेहो कखनो
 अपनहि संस्कारक रंग भरय।
 जखन दू चन्द्र आँखि देखाबय,
 आकाशमे दू चन्द्र नहि होय;
 भ्रमक रूप अनुभवमे साँच,
 मुदा बाह्य वस्तु तेनहि नहि होय।
 एहि सँ प्रश्न गहिर उठैत—
 विषय कतय, ज्ञाता कतय?
 चेतनाक भीतर उठल विभाजन
 अपने केँ दोसर रूप कहय।
 गहिर चेतनक मौन तहखाना
 बीज अनेक समेटि रखय;
 पुरान कर्मक सूक्ष्म प्रभाव
 अवसर पाबि नव रूप चखय।
 स्मृति, वासना, आदत, चाह
 ओहि भण्डारमे छाप धरय;
 क्षणिक भएँ प्रवाह निरन्तर,
 एक धारा जकाँ आगाँ सरय।
 इन्द्रियक पाँच खिड़की जागय,
 मन छठम संग जोड़य बात;
 भीतरक चिपकल 'हम'क आग्रह

सभ अनुभव पर राखय हाथ।
 जे देखल, ओकरा 'हमर' कहैत,
 जे सोचल, ओकरा 'हम' मानय;
 एहि आत्म-ग्रहक महीन गाँठि
 भेदक जंगल दिन-दिन तानय।
 रूपक तीन धरातल बुझू—
 एक कल्पनाक बनल जाल;
 एक कारण-शर्त पर निर्भर
 क्षण-क्षण बदलैत व्यवहार।
 तेसर ओ निर्मल साँच अवस्था
 जतय दूत्वक दावा गलि जाय;
 ज्ञाता-विषयक कठोर सीमा
 शान्त प्रज्ञामे विलीन भऽ जाय।
 कल्पित रूपमे नामक जादू,
 निर्भर रूपमे कारणक चाल;
 पूर्ण रूपमे भेदक शून्यता,
 नहि मिथ्या, नहि ठोस जंजाल।
 जतय चेतन अपने रचल
 विषय-कर्ता दोसर कहि देखय;
 ओ भ्रम टूटिते वस्तु-मनक
 द्वन्द्वक कठोर दीवार रेखय।
 मुक्ति केवल दुःखक विराम नहि,
 ज्ञानक आवरण सेहो हटय;
 राग-द्वेषक घना धुआँ संग
 सूक्ष्म अज्ञानो धीरे कटय।
 करुणा, प्रज्ञा, साधन-पथ
 चेतन केँ निर्मल करैत जाय;
 स्वार्थक छोट घेरा टूटिते
 दोसरा दुःख अपन जकाँ भासाय।
 चेतनाक धारामे रूपक स्वप्न,
 क्षणक बीज सँ जग विस्तार;
 स्थिर 'हम'क गाढ़ पकड़ छोड़िते
 खुल्य निर्भय निर्मल द्वार।
 कारणक क्रम, चेतनक बीज,
 कल्पना, निर्भरता, शुद्ध प्रकाश;
 भेदक पारि जखन मन जागय,
 शान्त करुणामे भेटय निवास।

अनेक बाटक बीच विवेकक सेतु

ज्ञानक वनमें बाट अनेक,
 प्रत्येक अपन दिशा देखाबय;
 कोनो तर्कक दीप जराबय,
 कोनो ध्यानक मौन सुनाबय।
 यदि एक पथ दोसराकेँ नकारय,
 सत्यक आकाश छोट भऽ जाय;
 विवेक जखन सेतु बनैत,
 भिन्न दृष्टि एक-दोसरा बुझाय।
 कथनक अर्थ केवल ध्वनि नहि,
 प्रयोजन ओकर प्राण बनय;
 ककरा की करबाक प्रेरणा,
 कर्मक दिशा ताहिसँ छनय।
 जे वाणी हितक बाट बताबय,
 ओ निष्फल अक्षर नहि रहय;
 अर्थ जखन जीवनसँ जुड़ैत,
 शब्द मनुष्यक गति बनय।
 आज्ञा सुनिते मन किएक चलय—
 प्रेरणा कतयसँ जन्म लय?
 इच्छित फल केर बोध जखन हो,
 कर्मक पग ताहि दिशि बढ़य।
 मुदा आदेशक अर्थ बुझबमे
 सन्दर्भ, योग्यता, चाह आवश्यक;
 शब्द अकेला धक्का नहि देत,
 मनक अपेक्षा करय दूरी पूरी।
 शब्द आ अर्थक सम्बन्ध
 नहि एक क्षणक मनमाना गाँठि;
 प्रयोगक दीर्घ परिचय भीतर
 ओ बनबय अर्थक स्थिर बाटि।
 वाक्यक पद अलग-अलग भएँ,
 परस्पर अपेक्षा राखय संग;
 योग्यता, निकटता, सम्बन्ध
 मिलि खोलय पूर्ण अर्थक रंग।
 धुआँ देखिते आगि बुझब
 केवल संग-संग देखल बात नहि;
 जतय धुआँ, ओतय आगि—
 एहि अटूट नाताक थाह सही।

सह-अस्तित्व आ विपरीत अभाव
दुनू सँ सम्बन्ध परखल जाय;
अनुमान तखन मजबूती पाबय,
जखन व्याप्ति संशय पारि जाय।
अनुमान केँ फेर प्रमाण चाही?
एहि प्रश्नक अन्त कतय होय?
हरेक प्रमाण पर दोसर प्रमाण
माँगिते श्रृंखला अनन्त होय।
किछु ज्ञान अपन उजास सँ
विश्वसनीयता स्वयं देखाबय;
संशय उठलापर जाँच आवश्यक,
मुदा हरेक क्षण बाहरी मोहर नहि चाहय।
'नहि अछि' सेहो ज्ञानक रूप,
शून्यक केवल अन्धार नहि;
जतय अपेक्षित वस्तु न भेटय,
अनुपस्थिति अर्थहीन नहि।
खाली आँगन कहैत बहुत किछु,
जे खोजल गेल से नहि आय;
अभावक बोधो अनुभव भीतर
अपन विशिष्ट पहचान बनाय।
प्रकृति गतिशील गुणक धारा,
चेतन साक्षी भिन्न प्रकाश;
एक कर्ममे उलझल संसार,
एक देखय ओकर विकास।
भोग आ मुक्ति दुनू प्रश्न
जतय चेतन-प्रकृति भेद बुझाय;
बेठीक पहिचानक गाँठि टूटिते
साक्षी अपन स्वतन्त्रता पाय।
अभ्यास बिनु विवेक अधूर,
मनक तरंग फेर-फेर उठय;
श्वास, ध्यान, अनुशासन भीतर
चंचल वृत्ति धीरे घटय।
ज्ञान केवल बहसक विषय नहि,
जीवनक रूप बदलय चाही;
बुद्धि जँ कर्ममे नहि उतरय,
सूत्रक चमक टिकैत नहि जाही।

अविद्याक प्रश्न गहिर बहुत—
 कैँ ढाँकय, ककरा पर छाये?
 जीव जँ अज्ञानसँ उपजल,
 पहिने अज्ञान कतय समाये?
 मूल उजास पर आवरण कहू,
 तँ उजास किएक नहि तकरा हराये?
 एहि महीन उलझनक भीतर
 विवेक अनेक उत्तर आजमाये।
 प्रतिबिम्ब जकाँ चेतन झलकय,
 कतहु सीमा, कतहु विस्तार;
 घटक आकाश, विशाल आकाश—
 भेद देखाय उपाधिक भार।
 घट टूटिते आकाश नहि टूटय,
 सीमा केर भ्रम दूर भऽ जाय;
 तहिना बन्धन हटिते चेतन
 अपन व्यापक स्वरूप पहिचानाय।
 मुक्ति नूतन वस्तु पाबब नहि,
 जे पहिने कतहु बाहर रहल;
 ओ तऽ बेठीक पहिचान हटब,
 जे सत्य भीतर सदिखन रहल।
 ज्ञानक उजास अज्ञान कटय,
 कर्म मनक मैल घटाबय;
 अनुशासन, तर्क, ध्यान, श्रुति—
 सभ अपन-अपन योग निभाबय।
 एक पन्थक सत्य दोसरामे
 सर्वथा असत्य नहि ठहराउ;
 प्रश्न भिन्न, भाषा भिन्न,
 तैयो अनुभवक मूल बुझाउ।
 जतय विरोध देखाइ, ओतय
 प्रसंगक धरातल पहिने नापू;
 भिन्न दृष्टिक उचित सीमा
 बुझि समन्वयक रेखा आपू।
 अनेक बाटक बीच विवेकक सेतु,
 शब्द, तर्क, ध्यानक मेल;
 अभावक मौन, अनुमानक डोरी,
 चेतन-प्रकृतिक गहिर खेल।
 अज्ञानक गाँठि जखन खुलैत,

भिन्न मत वैरी नहि रहय;
सत्यक विशाल खुलल आकाशमे
हरेक दृष्टि अपन स्थान कहय।

प्रमाणक चारि दुआर, मुक्तिक एक बाट

ज्ञान यदि केवल शब्द रहय,
जीवनक अन्हार नहि हटाय;
ठीक बोधक काज तखनहि,
जखन भ्रमक गाँठि खुलि जाय।
दुःखक कारण चिन्हि-चिन्हि
विवेक अपन पग आगाँ धय;
सत्यक कसौटी पर विचार
मुक्तिक दिशा धीरे-धीरे लय।
देखल बातक अपन उजास,
आँखि-कान-स्पर्शक सोझ दान;
मुदा जे दूर, ओ चिन्ह सँ बुझू,
कारण-फल केर गहिर पहचान।
कखनो परिणाम देखिकऽ कारण,
कखनो कारण सँ फल बुझाय;
कखनो सामान्य नाताक बल पर
अनदेखल अर्थ समक्ष आय।
धुआँ उठल तऽ आगि अनुमानू,
नदी फूलल तऽ बरखा सोचू;
सूर्यक गति सँ कालक क्रम
अनुभवक जोड़ि भीतर खोजू।
अनुमान केवल अटकलबाजी नहि,
नियमित सम्बन्धक चाही थाह;
जतय कारणक डोरी अटूट,
ओतहि निष्कर्ष पाबय राह।
समानता सेहो ज्ञानक सेतु—
पहिने सुनल, पछिला देखल;
'एहन रूप' केर स्मृति जखन
नव वस्तुसँ मिलि उठल एकल।
परिचित गुणक पुल पकड़ि
अपरिचित नामक अर्थ खुलय;
तुलना जीवनक सरल अभ्यास,
ज्ञानक नव खिड़की बनि फुलय।

विश्वसनीय वाणी चौठ दुआर,
 मुदा हरेक आवाज प्रमाण नहि;
 जे देखलक, बुझलक, सत्य कहय,
 ओकर कथन निष्फल ज्ञान नहि।
 आप्तक वचनक मोल तखन,
 जखन छलक धुँधि दूर रहय;
 शब्द दूरक सत्यक सेतु बनि
 अनुभवक सीमा पारि बहय।
 प्रत्यक्ष, अनुमान, तुलना, वाणी—
 चारि दिशासँ बोधक प्रकाश;
 एकहि प्रश्न पर भिन्न साधन
 खोलय सत्यक अलग आकाश।
 साधनक सीमा पहिने बुझू,
 एकक काज दोसर पर नहि धारू;
 जतय जे प्रमाण उचित हो,
 ओहि बाटँ निश्चय सँ निहारू।
 कारण कहब मात्र पर्याप्त नहि,
 हेतुक रूपो स्वच्छ रहय;
 पक्षमे उपस्थित, संगति स्थिर,
 विपरीत ठाम अनुपस्थित रहय।
 जे कारण अपने संशयग्रस्त,
 ओ निष्कर्षक भार नहि ढोय;
 भ्रमित हेतु जँ बीचमे आबय,
 तर्कक रथ बेठीक दिशि होय।
 प्रश्न, प्रतिज्ञा, कारण, उदाहरण,
 फेर सम्बन्धक स्पष्ट विधान;
 अन्तमे निष्कर्ष जखन उभरय,
 बुद्धि पाबय सम्पूर्ण प्रमाण।
 संवादक क्रम केवल शास्त्र नहि,
 दैनिक बहसमे सेहो उपयोग;
 एक-एक पग खुलल रखिते
 कम हो भ्रम, बढ़य संयोग।
 शब्दक अर्थ पर विचार आवश्यक—
 ध्वनि क्षणिक कि नित्य प्रकाश?
 जे उच्चरल, ओ क्षणमे बीतय,
 मुदा परम्परा रखय पहचानक वास।
 नाम, अर्थ, प्रयोगक नाता

सामाजिक स्मृति सँ जुड़ि रहय;
 ध्वनि नष्ट भएँ अर्थक धारा
 नव उच्चारणमे फेर बहय।
 अभावो कखनो ज्ञान दैत—
 खाली ठामक मौन खबर;
 जे अपेक्षित छल, नहि भेटल,
 ओहो अनुभवक एक असर।
 मुदा हरेक नूतन भेद लेल
 अलग प्रमाण बनाबय आवश्यक नहि;
 पहिने देखू उपलब्ध साधनमे
 ओकर सम्यक् व्याख्या होइत कि नहि।
 जगत अनेक वस्तु-संबन्धक,
 गुण, कर्म, सामान्यक विस्तार;
 विशेषक पहचान अलग,
 सम्बन्ध जोड़य भीतर तार।
 विभाजन तखन उपयोगी हो,
 जखन समझक राहि बनाय;
 नामक सूची मात्र नहि,
 वस्तु-स्वभावक बोध जगाय।
 आत्मा यदि चेतन अनुभवक
 दीर्घ प्रवाहक आधार मानू,
 तँ सुख-दुःख, इच्छा, स्मृति
 ककरा संग जुड़ैत, से जानू।
 मुक्ति केवल सुखक संचय नहि,
 दुःखक मूल कारणक क्षय;
 अज्ञान, दोष, कर्मक बन्धन
 ज्ञान-विवेक सँ धीरे लय।
 उच्चतम शान्ति बाहरी वस्तु नहि,
 नहि क्षणिक सुखक फेर विस्तार;
 जतय भ्रमक बीज नहि उगय,
 ओतय बन्धन पाबय पार।
 ज्ञानक साधन जीवनक हेतु,
 मात्र बहसक खेल नहि;
 सत्य जँ चर्या रूप न लेत,
 तँ बुद्धिक विजय पूर्ण नहि।
 प्रमाणक चारि दुआर खुलल,
 मुक्तिक एक गहिर बाट;

प्रत्यक्षक दीप, अनुमानक डोरी,
तुलना-वाणी संगहि साथ।
हेतुक शुद्धि, शब्दक मर्यादा,
वस्तु-स्वभावक स्पष्ट विचार;
ज्ञान जखन दुःखक मूल छिनय,
ओतहि खुलय शान्तिक द्वार।

शब्दक खेलमे जगक सीमा

जगत वस्तुक ढेर मात्र नहि,
घटना-सम्बन्धक जीवित तान;
जे घटैत अछि, जे संभव अछि,
ताहिमे खुलैत विश्वक मान।
चित्र जकाँ वाक्य जखन ठाढ़,
वस्तु-स्थितिक रूप देखाबय;
शब्दक क्रम यदि जगसँ मेल खाय,
कथन सत्यक दिशा बताबय।
सरल चिन्हक सूक्ष्म जोड़िसँ
जटिल वाक्यक महल बनय;
नाम अकेला जग नहि कहैत,
सम्बन्ध मिलि अर्थक तन गढ़य।
जेना रेखा नक्शामे मिलि
नगरक रूप समक्ष लाय;
तहिना कथनक तार्किक ढाँचा
घटनाक सम्भावना देखाय।
किछु वाक्य सत्यक चित्र,
किछु केवल तर्कक रिक्त विधान;
जे हरेक दशामे सत्य रहैत,
ओ जगक नूतन तथ्य नहि जान।
विरोधाभास सदा असम्भव,
दोसर छोर पर निष्फल खेल;
बीचक सम्भव कथनसभमे
जगतक तथ्यक होय मेल।
भाषाक सीमा पारि जे ठाढ़,
तकरा शब्दमे बाँधब कठिन;
जतय कहबाक औजार समाप्त,
ओतय मौनक अर्थ गहिर बनि।
नीति, सौन्दर्य, जीवनक विस्मय
कखनो वाक्यसँ सम्पूर्ण नहि आय;

जे देखाओल जा सकैत अछि,
 सभ किछु कहल नहि जा पाय।
 मुदा भाषा एक तस्वीर नहि,
 जीवनमे ओकर रूप अनेक;
 आदेश, प्रश्न, कथा, प्रार्थना,
 हँसी, सौदा, गीत विवेक।
 हरेक प्रसंग अपन नियम धरैत,
 हरेक खेलक चाल अलग;
 एकहि शब्दक अर्थ बदलैत,
 जीवन-संग ओकर रंग।
 अर्थ शब्दक भीतर बन्द
 कोनो गुप्त रत्न नहि रहय;
 लोक जखन कोना प्रयोग करय,
 ताहिसँ ओकर अर्थ बहय।
 बजार, घर, विद्यालय, खेल,
 सभ ठाम भाषा अलग चाल;
 प्रयोगक धरती छोड़ि खोजल
 'शुद्ध अर्थ' बनि सकय जाल।
 सभ वस्तुमे एक गुण खोजब
 कखनो बुद्धिक जल्दबाजी;
 खेल अनेक—कतहु गेंद, कतहु पत्ती,
 कतहु दौड़, कतहु रणनीति बाजी।
 एक सूत्र सभमे नहि भेटत,
 तैयो नाता टूटैत नहि;
 परिवारक मुख जकाँ समानता
 एक-दोसरा संग जुड़ैत सही।
 नियम पढ़लासँ खेल पूर्ण नहि,
 नियम केँ जीबब सीखू;
 कखन चाल उचित, कखन भिन्न,
 साझा अभ्यास भीतर देखू।
 निजी मनक गुप्त संकेत मात्र
 भाषाक स्थिर माप नहि होय;
 अर्थक धरती साझा जीवन,
 जतय उपयोग सँ नियम संजोय।
 'दर्द' कहब केवल भीतर
 एक गोपनीय वस्तुक नाम नहि;
 रोदन, उपचार, पुकार, सहानुभूति—

जीवनक व्यवहारसँ अलग नहि।
 जे भाव केवल अपने लेल
 निजी चिन्हमे बन्द करब चाही,
 जाँचक साझा कसौटी बिनु
 अर्थक डोरी टिकि नहि जाही।
 दर्शनक काज कखनो नूतन
 गुप्त लोकक खोज नहि;
 भाषाक गाँठि खोलि देखब—
 कतय प्रश्न बेठीक रूप लय।
 जे समस्या शब्दक भ्रमसँ उपजल,
 ओ प्रयोगक धरती पर गलय;
 वाक्य केँ ओकर घर पहुँचाबू,
 मनक उलझन धीरे टलय।
 एक युगमे भाषा काँच जकाँ,
 जगतक चित्र धारण करय;
 दोसर युगमे ओ औजार बनि,
 जीवनक अनेक काज सँ भरय।
 दुनू दृष्टि विरोध मात्र नहि,
 एक सीमा सँ दोसरक यात्रा;
 कठोर ढाँचा सँ जीवित प्रयोग धरि
 विचार बदलय अपन पात्रा।
 स्पष्टता अन्तिम महल नहि,
 ओ भ्रमक धुँधि हटाबय दीप;
 जे प्रश्न अर्थहीन बनि गेल,
 तकरा उत्तर खोजबो अतीव।
 पहिने देखू प्रश्न बनल केना,
 कुन शब्द ककरा ठाम चूक;
 भाषाक उपचार करिते-करिते
 बुद्धि पाबय सहज सुख।
 शब्दक खेलमे जगक सीमा,
 कथन, मौन, प्रयोगक राग;
 चित्रक तर्क सँ परिवार-सादृश्य धरि
 भाषा बदलय अपन अनुराग।
 अर्थ खोजू जीवित व्यवहारमे,
 नियमक संग साझा संसार;
 जतय शब्द अपन ठाम पहुँचय,
 ओतहि खुलय विचारक द्वार।

नियमक जालमे अर्थ खोजैत मनुष्य

समाज केवल भीड़क गणना नहि,
हरेक कर्मक भीतर अर्थ रहय;
केओ किएक हाथ बढ़बैत अछि,
ककरा दिसि ओकर इच्छा बहय।
बाहरक चाल अकेला देखिते
मानव-कर्मक भेद नहि खुलय;
कर्ताक आशय बुझलापर
सामाजिक अर्थ धीरे फुलय।
कर्म तखन सामाजिक बनैत,
जखन दोसरा दिशि अर्थ मुड़य;
अपने इच्छा, आशा, प्रतिक्रिया
दोसरा व्यवहार सँ जुड़ि पड़य।
एकाकी छींक समाज नहि,
मुदा अभिवादनक उत्तर होय;
अर्थक अदृश्य सूत पकड़िते
व्यवहारक सम्पूर्ण रूप संजोय।
इतिहास अनन्त घटनाक वन,
सभ पात एक संग नहि गिनाय;
प्रश्न जखन स्पष्ट उठैत,
चयनक दीप दिशा बताय।
विशिष्ट रूपक निर्मित प्रतिमा
वास्तविकता केँ नकल नहि करय;
ओ तुलना लेल तीखर दर्पण,
जे जटिल जग केँ बुझबय।
कारण एकटा सोझ डोरी
बहुधा इतिहासमे नहि भेटय;
अनेक शर्त, अवसर, इच्छा
एकहि फल दिशि संगहि भेटय।
‘एहि कारणेँ ई भेल’ कहब सँ
पहिने सम्भावना सभ नापू;
कुन शर्त हटिते फल बदलितै,
विवेकक तुलनासँ उत्तर पाबू।
धर्म आ अर्थक सम्बन्धो
एकतरफा आदेश नहि;
विश्वास जीवनक चाल बदलैत,
जीवनो विश्वाससँ बाहर नहि।

संयम, श्रम, अनुशासन, बचत
 कखनो आर्थिक रूप बनाय;
 अन्तरक साधना बाहरी जगमे
 नूतन व्यवहारक रीति जगाय।
 लाभक चाह पुरान बहुत,
 मुदा नूतन अछि तर्कक अनुशासन;
 हिसाब, समय, नियमित श्रम,
 योजनाबद्ध संचयक शासन।
 कर्म स्वयं कर्तव्य बनिते
 धन केवल विलास नहि रहय;
 संयमित जीवनक लौकिक साधना
 पूँजीक प्रवाह बढ़बैत बहय।
 मुदा धनक कथा केवल लोभ नहि,
 नहि धर्म सभ इतिहास रचल;
 भौतिक साधन, संस्था, बजार,
 विश्वास—सभ परस्पर चलल।
 एक कारण सँ समाज न बनैत,
 अनेक धारा संगहि आय;
 सरल उत्तरक मोह छोड़िते
 इतिहासक जटिलता देखाय।
 आधुनिक जग गणना सीखल,
 नियम, लेखा, कार्यालयक जाल;
 व्यक्तिगत कृपा घटि-घटि
 निर्वैयक्तिक विधि लेत स्थान।
 काम योग्यतासँ बाँटल जाए,
 पदक सीमा स्पष्ट रहय;
 कागज, नियम, क्रमक सीढ़ी
 संस्थाक देह सँवारैत बहय।
 एहि तर्कीकरणक लाभ बहुत—
 पूर्वानुमान, दक्षता, समान माप;
 मुदा नियमक लोहे जकाँ घेरा
 मनुष्यक साँस पर धरय छाप।
 जतय हरेक बात गणना बनय,
 विस्मयक वन सूखि सकय;
 सुव्यवस्थाक उज्जर घरमे
 स्वतन्त्र आत्मा कैद भऽ सकय।

सत्ता केवल बल नहि होय,
 वैधता तकर गहिर आधार;
 लोक किएक आज्ञा मानैत,
 एहि प्रश्नसँ खुलय अधिकार।
 कतहु पुरखा-रीतिक मान्यता,
 कतहु असाधारण व्यक्तित्वक तेज;
 कतहु लिखित नियमक वैधता,
 तीनू बनबय शासनक सेज।
 परम्परा कहय—“एहने चलल”,
 तेजस्वी स्वर कहय—“हमरा मानू”;
 विधिसम्मत पद कहय—“नियम देखू”,
 भिन्न-भिन्न आधार पहिचानू।
 व्यक्ति सँ पद, कृपा सँ नियम,
 इतिहासमे रूप बदलैत जाय;
 सत्ता अपन वैधता बदलिते
 समाजक बनावटो फेर बनाय।
 असाधारण आकर्षण दीर्घ काल
 एके रूपमे टिकैत नहि;
 उत्तराधिकारी, पद, नियम बिनु
 समूहक क्रम चलैत नहि।
 ज्योति जखन संस्था बनैत,
 व्यक्तिगत तेज पदमे बाँटाय;
 जीवित आवेगक धार धीरे
 नियमित कार्यालयमे समाय।
 राजनीति केवल शुद्ध भावना
 नहि, परिणामक भारो चाही;
 नीक उद्देश्य पर्याप्त नहि,
 कर्मक फल पर दृष्टि रहि जाही।
 विश्वासक निष्ठा मूल्यवान,
 मुदा जिम्मेदारी सेहो संग;
 सत्ता संग खेलैत हाथ केँ
 परिणाम बुझबाक चाही ढंग।
 ज्ञानक काज आदेश देब नहि,
 ‘की चाही’ निर्णय मूल्य करय;
 अध्ययन कारण-फल देखाबय,
 विकल्पक मूल्य स्पष्ट करय।
 तथ्य आ मूल्यक सीमा बुझिते

विचार अधिक ईमानदार बनय;
 शोधक दीप मार्ग देखाबय,
 चलबाक निर्णय मानव करय।
 नियमक जालमे अर्थ खोजैत
 मनुष्य अपन राहि बनाय;
 आशय, सत्ता, धर्म, अर्थव्यवस्था,
 सभ एक-दोसरा संग जुड़ि जाय।
 तर्कीकरणक तेज उजासमे
 लाभो देखू, बन्धनो जानू;
 समाजक जटिल जीवित धड़कन
 एकहि सूत्रमे नहि बाँधू।

क्षणक गर्भमे सृष्टिक अनन्त बहाव

जगत नहि ठाढ़ पदार्थक ढेर,
 ओ घटनाक अनवरत जन्म;
 हरेक क्षण अपने भीतर समेटय
 बीतेल जगक गाढ़ सम्बन्ध।
 जे छल, ओ नष्ट नहि सम्पूर्ण,
 नव क्षणमे प्रभाव बनि आय;
 सृष्टि निरन्तर होइत रहैत,
 प्रत्येक वर्तमान नव रूप धराय।
 वास्तविकता कण नहि केवल,
 जीवित घटना ओकर मूल;
 प्रत्येक इकाइ अपन रूपमे
 विशिष्ट, पूर्ण, क्षणिक फूल।
 ओ दोसरासँ पूर्ण कटायल नहि,
 सम्बन्ध ओकर अन्तर-प्राण;
 एक घटना अनेक प्रभावक
 संगम बनि पाबय पहचान।
 जानब केवल बाहर देखब नहि,
 अन्तरमे ग्रहणक सूक्ष्म चाल;
 जगत अपन छाप भीतर दैत,
 चेतन पाबय अनुभवक जाल।
 किछु स्वीकृति, किछु अस्वीकार,
 किछु निकट, किछु दूर पड़य;
 एहि ग्रहणक चयनित लयमे
 क्षण अपन निज रूप गढ़य।

हरेक नव घटना अपन अतीत
 पूर्ण नकल कऽ नहि दोहराय;
 बीतेल तथ्य केँ भीतर लेइत
 नूतन मेल स्वयं बनाय।
 पुरान कारण सामग्री देत,
 वर्तमान सृजन करय निर्णय;
 एहि सँ जगमे क्रमो रहैत,
 आ नवता सेहो पाबय विजय।
 सृष्टिक मूल धड़कन रचनाशक्ति,
 जे रूप केँ रूप सँ जोड़य;
 एक पूर्ण भेल क्षणक उपलब्धि
 दोसर क्षणक बीज बनि छोड़य।
 समाप्ति एतय अन्त नहि,
 ओ आगाँक जन्मक आधार;
 प्रत्येक पूर्णता अगिला क्षणमे
 नव सम्भावनाक खोलय द्वार।
 सम्भावना सभ शून्य नहि,
 रूपक निर्मल छवि समान;
 रंग, संख्या, अनुपात, सौन्दर्य—
 अनुभव पाबय ताहिसँ विधान।
 ओ अपनहि घटना नहि बनैत,
 मुदा घटनामे रूप धरय;
 सम्भावित आकारक अनन्त भण्डार
 सृष्टिक चयनमे संग रहय।
 जे बीतेल, ओ मृत नहि,
 आगाँक क्षण ओकरा ग्रहण करय;
 वस्तु बनि ओ नव अनुभवमे
 अपन प्रभावक छाप धरय।
 एक क्षण विषय छल अपने लेल,
 पूर्ण भऽ दोसर लेल तथ्य;
 एहि अद्भुत परिवर्तनसँ
 इतिहास बनैत नित्य सशक्त।
 कारण केवल धक्का नहि,
 अनुभूतिक उत्तराधिकार;
 पूर्व घटना भीतर प्रवेश करय,
 देइत नव क्षण केँ आधार।
 जीवित सम्बन्धक ई परम्परा

जगत केँ एकसूत्रमे बाँधय;
 अलग-अलग पूर्ण घटनासभ
 परस्पर ग्रहणसँ क्रम साधय।
 समूह जखन नियमित रूपेँ
 एकहि ढंगक सम्बन्ध निभाय;
 आदत, संरचना, साझा लय सँ
 स्थिर समाजक रूप बनाय।
 देह, वनस्पति, समुदाय, तारा—
 सभ अनेक घटनाक जाल;
 स्थायित्व परिवर्तनक भीतर
 दोहरायल सम्बन्धक कमाल।
 प्रत्येक क्षणक एक निज दिशा,
 किछु पाबय, किछु त्याग करय;
 अनेक सम्भावनाक बीच सँ
 एक आकृति अपन चयन करय।
 पूर्णता तखन बाहरी आदेश नहि,
 भीतरक उद्देश्य बनि जागय;
 मूल्यक आकर्षण दूरक दीप जकाँ
 क्षण केँ श्रेष्ठ रूप दिशि लाय।
 सुख केवल सुखक नाम नहि,
 मूल्य व्यापक ताल-मिलान;
 तीव्रता संग सामञ्जस्य जुड़िते
 सुन्दर बनय जीवनक गान।
 अधिकता यदि सम्बन्ध तोड़य,
 ओ विषमता बनि पड़ि जाय;
 समृद्धि तखन, जखन विविध स्वर
 एक व्यापक संगीत बनाय।
 अशुभो केवल अलग वस्तु नहि,
 कखनो टूटल सामञ्जस्यक घाव;
 कखनो अवसरक अधूर विकास,
 कखनो टकराहटक कठोर प्रभाव।
 जगतक सृजन स्वतन्त्र रहिते
 जोखिम सेहो संगहि आय;
 मूल्यक दिशा खुलल रहैत,
 मुदा चयन अपन फल उपजाय।
 एक परम चेतन आधारमे
 सम्भावना सभ क्रम पबैत;

अनन्त रूपक भीड़ भीतर
मूल्यक दिशा स्पष्ट बनैत।
ओ आदेशक लोहेक हाथ नहि,
आकर्षणक कोमल पुकार;
हरेक क्षण केँ श्रेष्ठ सम्भावना
दिशि बुलबैत रहय बारम्बार।
जगत जे किछु भोगैत अछि,
ओ परम चेतनमे सेहो समाय;
दुःख, सौन्दर्य, संघर्ष, प्रेम—
सभ अनुभव ओ ग्रहण कराय।
एहि सँ मूल आधार दूर नहि,
जगतक पीड़ा सँ अलग नहि;
ओ बदलैत अनुभव केँ धारण करय,
तैयो मूल्यक स्रोत क्षीण नहि।
एक रूप अनन्त सम्भावनाक
निर्मल, कालातीत विन्यास;
दोसर रूप जगक इतिहास सँ
निरन्तर पाबय नव अनुभास।
एक दिशा देत सृष्टिक चयन,
दोसर जगक फल समेटि लय;
दुनू मिलि रचनाक गहिर रहस्य
अतीत-भविष्यक सेतु बनय।
क्षणक गर्भमे सृष्टिक बहाव,
ग्रहण, चयन, नव निर्माण;
घटना सँ घटना, रूप सँ रूप,
जन्मैत रहय विश्वक गान।
स्थिर पदार्थक कठोर सीमा पारि
सम्बन्धक जीवित जाल निहारु;
हरेक वर्तमान अतीत सँ उपजल,
भविष्य दिशि नव बीज उछारु।

तीन परत पारि एकहि उजास

जे बदलैत अछि, ओ अन्तिम नहि,
जे जन्मैत, क्षय दिशि जाय;
रूपक पाछाँ एक निर्मल सत्ता
नहि घटय, नहि बढ़य, नहि हराय।
नाम-रूपक आवागमन बीच
ओ मौन साक्षी अखण्ड रहय;

लहरि उठय, लहरि फेर समाय,
 समुद्र अपन गहिराइमे बहय।
 अन्हारमे डोरी साँप बुझाइ,
 भय सचमुच देहमे उठि जाय;
 प्रकाश पड़िते साँप नहि मरय—
 बेठीक पहिचान मात्र मिटि जाय।
 तहिना जगक अनुभव चलैत,
 मुदा ओकर अन्तिम अर्थ बदलय;
 भ्रम हटिते जे शेष रहैत,
 ओहि सत्यक उजास फुलय।
 अज्ञानक दू गहिर चाल—
 पहिने सत्यक मुख केँ ढाँकय;
 फेर जे नहि अछि, तकर रूप
 मनक आकाशमे जोरि देखाबय।
 ढाँकल उजास, उभरल छाया—
 दुनू मिलि संसार सजाय;
 विवेकक दीप जरिते धीरे
 आवरण-विक्षेप टूटि जाय।
 सत्यक तीन परत बुझू—
 एक अखण्ड, जे कखनो नहि डोलय;
 एक व्यवहारक साझा धरती,
 जतय कर्म, सम्बन्ध, नियम चलय।
 तेसर स्वप्न-जकाँ निजी भ्रम,
 जे जागल ज्ञानसँ तुरन्त गलय;
 तीनू केँ एक माप न दैत
 बुद्धि अपन भ्रम सँ निकलय।
 देहक संग 'हम' जोड़िते
 बंधनक पहिल गाँठि पड़य;
 मनक तरंग केँ आत्मा मानिते
 दुःखक जंगल आरो बढ़य।
 स्थूल देह, सूक्ष्म इच्छा-स्मृति,
 सभ अनुभवक उपकरण मात्र;
 जकरा सँ सभ अनुभव प्रकाशित,
 ओ साक्षी नहि बनय देह-पात्र।
 जागरणमे जग रंग-बिरंग,
 स्वप्नमे दोसर जग उभरय;
 गाढ़ निद्रामे रूप सभ सूतल,

तैयो पाछाँ स्मृति कहय—‘सुख छल’।
 तीन अवस्था आबि-जाइत,
 साक्षी तिनका पाछाँ रहय;
 जे बदलल अवस्थाक ज्ञाता,
 ओ स्वयं अवस्था कोना कहय?
 व्यवहारक धरती पर जीव सीमित,
 एक व्यापक नियामक मानल जाय;
 एक अल्पज्ञ, एक सर्वज्ञ जकाँ
 मायाक भेदसँ रूप देखाय।
 मुदा परदा हटिते मूलमे
 दू अलग उजास नहि रहय;
 सीमित-व्यापक नामक दूरी
 एकहि चेतनमे अन्ततः गलय।
 कर्म मन केँ निर्मल करय,
 उपासना एकाग्रता देत;
 मुदा अज्ञानक मूल अन्हार
 ज्ञानक दीपेँ मात्र कटैत।
 कर्मक फल नूतन स्थिति देत,
 सत्य पहिने सँ उपस्थित रहय;
 जे वस्तु अपनहि स्वरूप अछि,
 ओ कर्मसँ नूतन कोना बनय?
 विवेक पहिने राहि छाँटय—
 की नश्वर, की नित्य विचार;
 वैराग्य कहय—क्षणिक सुखक
 पाछाँ नहि भागू बारम्बार।
 मनक शान्ति, इन्द्रिय-संयम,
 सहन, श्रद्धा, एकाग्र आस;
 मुक्ति लेल तीव्र प्यास जुड़िते
 अन्तर बनय ज्ञानक निवास।
 सुनू ओ वाणी जे भीतर
 एकताक संकेत जगाबय;
 फेर मननक कठोर कसौटी
 संशयक गाँठि खोलि हटाबय।
 निरन्तर ध्यानमे अर्थ उतारू,
 बोध रक्त-जकाँ देहमे बहय;
 जे बात शब्दमे पहिने सुनल,
 ओ प्रत्यक्ष आत्मबोध बनि रहय।

मुक्ति दूरक लोक नहि,
 नहि मृत्यु पाछाँ मात्र दुआर;
 जीवित देहमे बन्धन टूटय,
 यदि मिटि जाय बेठीक अहंकार।
 पुरान कर्मक गति देह चलाबय,
 मुदा भीतर आसक्ति नहि रहय;
 जड़ चक्र घूमैत रहि सकैत,
 साक्षी स्वतन्त्र आ शान्त बहय।
 देह जखन अपन क्रम सम्पूर्ण कऽ
 माटि-माटिमे फेर समाय;
 जकर बोध अखण्ड भऽ चुकल,
 ओ कतय फेर बन्धन पाय?
 आवागमनक कारण अज्ञान,
 कारण गेल तऽ फलो जाय;
 नदी नाम-रूप छोड़ि अन्ततः
 समुद्रक शान्ति संग मिलि जाय।
 भक्ति यदि केवल बाहरी विनती
 तँ हृदयक दूरी रहि सकय;
 अपनहि शुद्ध स्वरूपक खोजो
 प्रेमक गहिर साधना बनय।
 जे मूल सबहक अन्तर-सत्ता,
 ओकर स्मरण अहंकार गलाय;
 ज्ञान आ प्रेम विरोधी नहि,
 दुनू एकहि केन्द्र दिसि जाय।
 तीन परत पारि एकहि उजास,
 भ्रमक साँप सँ निर्मल डोर;
 जागरण, स्वप्न, निद्राक पाछाँ
 साक्षी रहय अपरिवर्तित भोर।
 कर्म मन शुद्ध करय, ज्ञान मुक्त,
 विवेक खोलय अन्तिम राह;
 नाम-रूपक जाल पिघलिते
 एकहि चेतन रहय अथाह।

वचनक विधिमे कर्तव्यक अदृश्य बीज

जीवन पूछय—की करबाक अछि,
 उत्तर सदिखन आँखि नहि देत;
 दृश्य वस्तु देखल जा सकय,
 कर्तव्य अदृश्य दिशा सँ चेत।

प्रत्यक्षक अपन निश्चित सीमा,
 इन्द्रिय वस्तुक रूप पकड़य;
 मुदा 'करू' आ 'नहि करू'क अर्थ
 केवल रंग-स्पर्शसँ नहि उभरय।
 वचन जखन विधि बनि आबय,
 कर्म दिशि मन केँ प्रेरित करय;
 शब्द एतय खबर नहि मात्र,
 जीवनक अगिला पग सँ जुड़य।
 धर्म कोनो देखल पदार्थ नहि,
 नहि आकारक मापल ठाम;
 कर्तव्यसूचक विश्वसनीय वाणी
 तकरा देत व्यवहारक नाम।
 शब्द आ अर्थक दीर्घ सम्बन्ध
 क्षणिक इच्छासँ नहि बनय;
 परम्परित प्रयोगक अनुशासन
 वाक्यक अर्थ केँ स्थिर करय।
 एक पद अकेले सम्पूर्ण नहि,
 सन्दर्भक संग अर्थ उधारय;
 विधि, निषेध, स्तुति, संकेत
 परस्पर सम्बन्ध सँ सँवारय।
 आत्मा देहक पर्याय मात्र कि?
 स्मृति फेर प्रश्न उठाबय;
 बीतेल अनुभूति 'हमर छल' कहि
 एक निरन्तर ज्ञाता देखाबय।
 देहक अवस्था बदलैत रहय,
 बाल, युवा, वृद्धक क्रम;
 पहिचानक सूक्ष्म डोरी भीतर
 ककरा संग जुड़ल हरेक अनुभव?
 ज्ञान जखन जन्म लैत अछि,
 विषयक रूप समक्ष आय;
 बोधक सत्यता पर संशय उठिते
 पछिला ज्ञान तकरा जँचाय।
 अनुमान चिन्ह पकड़ि चलैत,
 समानता परिचयक पुल;
 अभावो अपेक्षा टूटल क्षणमे
 देत खाली ठामक फल।
 दूरक बात वाणी सँ पहुँचय,
 यदि स्रोत भरोसायोग्य होय;

ज्ञानक दुआर अनेक रहैत,
 एकहि साँचा सभ पर नहि होय।
 कर्म समाप्त, फल दूर किएक?
 बीचक समय प्रश्न जगाय;
 कएल क्रियाक अदृश्य सामर्थ्य
 भविष्यक फल सँ नाता पाय।
 ई अदृश्यता जादू नहि,
 कर्तव्य-फल सम्बन्धक विचार;
 आइक कर्मक नैतिक भार
 काल्हिक दिशा धरि करय पसार।
 ज्ञानक हेतु केवल बहस नहि,
 उचित कर्मक पहचान आवश्यक;
 वाणी जखन जिम्मेदारी जगाबय,
 जीवनक दिशा रहय नहि अधूरी।
 वचनक विधिमे अदृश्य बीज,
 प्रत्यक्ष-परोक्षक संगति संग;
 देहक पारि ज्ञाताक स्मृति,
 कर्तव्य खोलय समयक बाट।
 जे करबाक अछि, तकर कारण
 लोभक फलसँ ऊपर उठय;
 अनुशासित कर्मक मौन धरती पर
 मानव अर्थ धीरे फुलय।

भेदक सूक्ष्म रेखा, सम्बन्धक मौन सूत्र

वस्तु अनेक, जग एकहि तान,
 भेदक भीतर सम्बन्धक रेख;
 नाम बढबैत सत्य नहि बढय,
 प्रत्येक पदक माँगू साँच लेख।
 जे बिनु मानलासँ काज चलय,
 तकरा किएक अलग सत्ता मानू?
 विचारक भार घटाबैत-घटाबैत
 वस्तुक निज स्वभाव पहिचानू।
 आकाश, काल, दिशा, चेतन—
 सभकेँ अलग-अलग घर दिअय?
 कि व्यापक एकहि आधार भीतर
 उपाधि सँ रूप अनेक देखाय?
 जे विभेद केवल सीमा-कल्पित,
 तकरा स्वतन्त्र वस्तु नहि धरू;

एकहि व्यापक सत्ताक भीतर
 स्थान-समयक भेद परखू।
 काल एकहि निरन्तर धारा,
 खण्ड-खण्ड नाम सँ व्यवहार;
 'एहि क्षण', 'ओहि दिन', 'एहि युग'—
 उपाधि देत अलग आकार।
 क्षण यदि क्रियाक बदलैत दशा,
 तँ ओकरा फेर वस्तु नहि चाही;
 गति जखन रूप बदलि देखाबय,
 समयक चिन्ह ओतहि बुझि जाही।
 दिशा सेहो दूरक देवता नहि,
 स्थिति-सापेक्ष परिचयक नाम;
 पूरब-पश्चिम, आगाँ-पाछाँ
 सम्बन्धक भीतर पाबय थाम।
 जतय आधार बदलि पड़ैत,
 दिशाक अर्थो बदलि जाय;
 सम्बन्ध छोड़ि दिशाकेँ पकड़ब
 खाली छायाक पाछाँ धाय।
 सूक्ष्म पदार्थक अन्तिम कण
 कथन मात्र सँ सिद्ध नहि होय;
 यदि ओकर भीतर फेर भाग,
 तँ 'अन्तिम' शब्द स्वयं खोय।
 यदि अतीन्द्रिय कहि सभ बचाउ,
 प्रमाणक दुआर कतय खुलय?
 जतय अनुभवक सूक्ष्मतम सीमा,
 ओतहि प्रश्न पुनः जन्म लय।
 भेद बताबय लेल प्रत्येक ठाम
 नव 'विशेष'क सत्ता किएक?
 एक वस्तु दोसरा सँ अलग
 अपने स्वभावें हो सकय नेक।
 यदि भिन्नता फेर भिन्नता माँगय,
 श्रृंखला अनन्त दिशि चलि जाय;
 स्वभावक सरल स्पष्ट उजास
 अतिरिक्त बोझ स्वयं हटाय।
 कारण एक, फल अनेक किएक—
 प्रश्न तर्कक भीतर उठय;
 एकहि अग्नि कखनो कोमल,

कखनो तीव्र रूप सँ फूटय।
 कारण भीतर निहित शक्ति
 परिस्थिति संग रूप बदलय;
 नव-नव जाति गढ़बाक बदला
 एक शक्ति अनेक फल उपजलय।
 'शक्ति' खाली शब्द नहि,
 कर्मक सम्भावना केर धड़कन;
 जतय कारण विशेष दशामे
 विशेष फल देत, ओहि मे स्पन्दन।
 कारणत्व आ कार्यत्वक नाता
 घटना भीतर स्पष्ट बनय;
 नामक पाछाँ जीवित क्षमता
 परिणामक रूप सँ चिन्हल जाय।
 सम्बन्ध कहिते तीसरी वस्तु
 दू वस्तुक बीच किएक धरू?
 आधार-आधेय जँ स्वभावँ जुड़ल,
 फेर नव सत्ता किएक सिरजू?
 सूत्र यदि वस्तुक निज ढंग,
 तँ 'सम्बन्ध' नाम पर्याप्त;
 अनन्त मध्यस्थ पद जोड़िते
 बुद्धिक पथ होइत क्लान्त।
 घट आ ओकर रंगक नाता,
 कर्म आ कर्ताक जुड़ल चाल;
 अलग 'गोंद' खोजैत रहिते
 सम्बन्ध बनि जाए प्रश्नक जाल।
 जे एक-दोसरा बिनु न बुझाय,
 ओ परस्पर रूपेँ जुड़ल रहय;
 सम्बन्धक सत्य अनुभव भीतर
 अतिरिक्त पदार्थ नहि कहय।
 अभावो खाली शून्य नहि,
 अपेक्षा टूटिते अर्थ जगय;
 'एतय नहि' ई बोध स्वयं
 जाँचल स्थानक बात कहय।
 मुदा हरेक भेद, हरेक नकार लेल
 नव सत्ता जोड़ब आवश्यक नहि;
 भाषाक रूप आ वस्तु-स्वभाव
 संग पढ़ू—तखन भ्रम कम सही।

संख्या, स्वत्व, विषयता, शक्ति—
किछु रूप नूतन विचार माँगय;
पुरान सूची अंतिम नहि,
प्रश्न जखन नव सीमा छाँगय।
वर्गीकरण जँ जग बुझाबय,
तँ उपयोगी ओकर विधान;
जँ सूची स्वयं लक्ष्य बनि जाए,
तँ शब्द ढाँकय वस्तुक ज्ञान।
तर्कक सौन्दर्य सादगीमे—
कम पद, अधिक स्पष्ट प्रकाश;
जे अनावश्यक, ओकर त्याग,
जे अपरिहार्य, ओकर निवास।
वस्तु, गुण, कर्म, सम्बन्ध सभ
प्रमाणक कसौटी पर निहारु;
नामक भीड़ सँ दूर हटि कऽ
स्वभावक मौन सूत्र उधारु।
भेदक सूक्ष्म रेखा, सम्बन्धक सूत्र,
कालक धारा, शक्तिक स्पन्द;
कारण-फल, स्वभाव, अनुपस्थिति—
सभमे खोजू उचित सम्बन्ध।
विचार जखन बोझ उतारय,
सत्य अधिक निकट भऽ जाय;
कम कल्पना, स्पष्ट प्रमाण—
बुद्धि तखन निर्मल राहि पाय।

सन्देहक पारि विश्वासक चारि आकाश

सन्देहक तीखर धार सँ पूछू—
की जे देखी, से अवश्य सत्य?
अनुभूति पर सेहो प्रश्न उठैत,
स्मृति परो राखू सजग दृष्टि।
मुदा प्रश्नक अन्त नहि होइत,
यदि सभ किछु फेर संशय बनय;
जीवन चलबाक सहज भरोसा
अन्ततः पगक आधार बनय।
वर्तमान क्षण केँ पकड़ि कहब—
'एतबे सत्य'—पूर्ण नहि होय;
बीतेल स्मृति, अगिला आशा
जीवनक धारा संगहि संजोय।

यदि सभ केवल क्षणिक छाया,
 नहि देह, नहि जग, नहि आधार;
 तखन अनुभवक क्रमो टूटत,
 नहि रहत व्यवहारक संसार।
 विश्वास पहिने तर्क नहि माँगय,
 जीवन ओकरा संग जन्म लय;
 बाहर जग अछि—एहि सहज मान्यता
 प्रत्येक कर्मक पाछाँ रहय।
 रोटी, पानि, राहि, सम्बन्ध,
 सभ ओहि भरोसासँ चलैत;
 सन्देह बुद्धिक काज करैत,
 मुदा जीवन पूर्ण नहि रोक्कैत।
 वस्तुक रूप आ वस्तुक सत्ता
 एकहि बात नहि मानू;
 लाल रंगक निर्मल स्वरूप
 ककरो विशेष वस्तु सँ नहि बान्हू।
 रूप अपन सम्भावित शुद्धतामे
 काल-देशक सीमा पारि रहय;
 विशेष वस्तु तकर एक अवसर,
 जतय रूप अनुभवमे उतरय।
 जड़ पदार्थक गहिर धरती
 समय-स्थानक भीतर बहय;
 रूप बदलैत, देह बनैत,
 विघटनमे फेर रूप बदलय।
 चेतना जड़सँ उत्पन्न होइत,
 तैयो जड़ चेतन नहि बनि जाय;
 जीवन देहक संगठन भीतर
 विशिष्ट क्रियाशीलता पाय।
 चेतना कोनो देहहीन राजा
 नहि जे पदार्थ पर शासन करय;
 ओ जीवित देहक आन्तरिक प्रकाश,
 जे अर्थ, मूल्य, लक्ष्य निहरय।
 देखल वस्तु जड़ रहि सकैत,
 मुदा देखबाक क्रिया मानसिक;
 दू स्तरक एहि भिन्नतामे
 अनुभव बनैत अधिक वास्तविक।

सत्य कोनो क्षणिक घटना नहि,
 नहि मनक बनायल निजी खेल;
 जे अछि, छल, अथवा हो सकैत,
 तकर तथ्यात्मक व्यापक मेल।
 हम जानू अथवा नहि जानू,
 सत्य अपन स्थान नहि हरय;
 ज्ञान तकरा छूअय आंशिक,
 मुदा सत्य ज्ञानसँ पैघ रहय।
 चारि आकाश जकाँ जग खुलैत—
 रूप, पदार्थ, सत्य, चेतन;
 एक-दोसरा सँ पूर्ण न कटैत,
 तैयो सभक ढंग अलग चिन्हन।
 रूप देत सम्भावना, पदार्थ आधार,
 सत्य देत क्रमक व्यापक मान;
 चेतना चयन, मूल्य, आदर्श सँ
 जीवनक अर्थ करय निर्माण।
 बुद्धिक जीवन केवल रोटी नहि,
 ओ आदर्शक बगिया सेहो;
 सामान्य ज्ञान सँ समाज बनय,
 कला-विज्ञानक पंखो देहो।
 परिवार, देश, संस्थाक भीतर
 बुद्धि मूल्यक प्रतिमा गढ़य;
 प्रकृति पर सभ्यता चढ़िते
 मानव अपन संसार सँवारय।
 धर्म यदि भयक सत्ता बनय,
 तखन आत्मा ओकर दास होय;
 मुदा यदि आदर्शक गहिर स्मरण,
 तँ जीवनक अर्थ अधिक होय।
 श्रद्धा जखन स्वार्थ पारि उठैत,
 मानव अपन सीमितता जानय;
 ऊँच मूल्यक प्रति निष्ठा सँ
 अन्तर अधिक स्वतन्त्र बनाय।
 नीति तीन ढंग सँ चलि सकैत—
 सहज वृत्ति पहिल आधार;
 बुद्धि तकरा परखि-सँवारि
 इच्छा केँ देत उचित आकार।
 फेर आत्मिक दृष्टि ऊपर उठि

स्वार्थक सीमा हलुक करय;
नीति तखन दमन नहि रहि
श्रेष्ठ जीवनक रूप धरय।
सुख केवल इच्छा पूर्ति नहि,
इच्छाकेँ सेहो शिक्षा चाही;
हरेक चाह सम्पूर्ण करब नैतिकता नहि,
कुन चाह उचित—से बुझि जाही।
बुद्धि प्रवृत्तिक जाल सँ छाँटि
दीर्घ हितक दिशा देखाबय;
अनुशासित चाहक भीतर
शान्त आनन्द अधिक टिकाय।
कला उपयोगक नौकर नहि,
तैयो जीवनसँ दूर नहि;
घर, औजार, वस्त्रक रूपो
सुन्दर बनि सकैत सही।
आवश्यकता सम्पूर्ण करैत वस्तु
रूपक माधुर्य सेहो पाबय;
बुद्धि प्रकृतिक कच्चा सामग्री
सौन्दर्यक नव रूप बनाय।
सन्देहक पारि सहज विश्वास,
चारि आकाशक खुलल द्वार;
रूपक शुद्धि, जड़क धरती,
सत्यक क्रम, चेतन विचार।
बुद्धि जीवन केँ अर्थ सँ भरय,
नीति चाह केँ रूप सँवारय;
कला उपयोग पारि सौन्दर्य देत,
मनुष्य जगमे घर बनाय।

अपनेक निर्माणक खुलल आकाश

जन्मक पहिने लिखल रूप नहि,
नहि भाग्यक तैयार विधान;
मनुष्य पहिने जगमे आबय,
फेर बनबय अपन पहिचान।
जेना खाली पात पर धीरे
कर्मक अक्षर उभरि पड़य,
अपने चुनल पगक जोड़िसँ
जीवन अपन सार गढ़य।

यदि ऊपर सँ तय नक्शा नहि,
 तँ जिम्मेदारी आरो गहिर;
 कोन बाट चुनू, कोना जीऊ—
 प्रश्न रहय अपनेक अधीर।
 कर्मक पाछाँ बहाना कम,
 निर्णयक भार अपने माथ;
 स्वतन्त्रता उपहार मात्र नहि,
 ओ कठिन उत्तरदायित्वक साथ।
 जड़ वस्तु बस 'अछि' कहैत,
 नहि अपने केँ प्रश्न करय;
 मुदा चेतन अपने सँ दूरी
 बनबैत, भविष्य दिशि सरय।
 जे छी, ताहिसँ आगाँ बढबाक
 सम्भावना भीतर जागैत;
 अपूर्णताक एहि रिक्त ठाममे
 नूतन परियोजना जन्म लैत।
 चेतना कोनो भरल पेटी नहि,
 जे वस्तु भीतर राखि लय;
 ओ तऽ बाहर दिशि खुलल गति,
 जे हरेक क्षण अर्थ खोजैत रहय।
 अपने भीतर स्थिर वस्तु बनि
 ओ कखनो सम्पूर्ण नहि थमय;
 जतय 'नहि' कहबाक शक्ति जागय,
 ओतहि सम्भावनाक द्वार खुलय।
 रिक्तता केवल शून्य नहि,
 चेतनक सक्रिय एक विधान;
 जे अछि, ताहिसँ दूरी बनबैत
 ओ रचय अगिला सम्भावन।
 होटलमे मित्रक खोज करैत
 अनुपस्थित चेहरा मनमे आय;
 जे नहि भेटल, ओकर अभावो
 अनुभवक बीच ठाम बनाय।
 स्वतन्त्रता सुखक सरल पंख नहि,
 ओ चक्कर देत गहिर आकाश;
 सभ विकल्प खुलल देखिते
 मनमे उठय बेचैन प्रकाश।
 'हम चुनि सकैत छी'—एहि बोधसँ

संगहि डरक स्वर उठय;
 किएक कि चुनल प्रत्येक पग
 अपने भविष्यक रूप बनय।
 चिन्ता, संताप, निराशा
 कमजोरीक केवल नाम नहि;
 स्वतन्त्र चेतन जखन बुझैत
 तकरा ऊपर तय सहारा नहि।
 जे सम्भव अछि, सभ निश्चित नहि,
 जे चुनब, ओकर फल अनजान;
 एहि अनिश्चित खुलल धरती पर
 निर्णय बनय मनुष्यक मान।
 दोसरा आँखि जखन हमरा देख्य,
 हम केवल अपने लेल नहि रहू;
 ओकर दृष्टिमे वस्तु बनबाक
 तीखर अनुभव सेहो सहू।
 लाजक क्षण कहय—‘हम देखायल’,
 अपन स्वातन्त्र्य पर आय दबाव;
 दोसरा चेतनक उपस्थितिसँ
 नूतन बनय सम्बन्धक भाव।
 मुदा दोसरा शत्रु मात्र नहि,
 ओ हमर जगक एक अनिवार्य धुन;
 हम जे बनैत छी, ताहिमे
 ओकर दृष्टि सेहो देत चुन।
 संघर्ष रहय, पहचानो रहय,
 परस्परता कठिन संसार;
 अपने लेल आ दोसरा लेल
 जीवनक दू खुलल दुआर।
 बेठीक आस्था ओहि क्षण जन्मय,
 जखन स्वतन्त्रता सँ हम भागी;
 ‘हम एहनहि छी, बदलि नहि सकी’—
 कहि परिस्थिति पाछाँ लागी।
 भूमिका केँ सम्पूर्ण आत्म बनाकऽ
 अपन सम्भावना दबा दिअय;
 बहाना बनि सामाजिक मुखौटा
 निर्णयक भार सँ दूर लय।
 कोनो सेवक केवल पद नहि,
 कोनो छात्र केवल नाम नहि;

भूमिका जीवनक एक अवस्था,
 सम्पूर्ण मनुष्य ओकर दास नहि।
 जे अपने के वस्तु बनाकऽ
 कहय—‘हमर विकल्प नहि’;
 ओ आत्म-छलक जाल बुनैत,
 स्वतन्त्रता तेँ समाप्त नहि।
 साँच जीवन ओ, जतय व्यक्ति
 स्थिति केँ सेहो साफ पहिचानय;
 जे सीमा अछि, तकरा मानैत
 तैयो अपन चयन नहि गुमाय।
 देह, इतिहास, गरीबी, युद्ध—
 सभ परिस्थिति प्रभाव करय;
 मुदा प्रतिक्रिया कतेक, केहन—
 एहि ठाम स्वतन्त्र चेतन सरय।
 स्वतन्त्रता खाली निजी कोठरी
 भीतरक एकाकी दीप नहि;
 समाजक ढाँचा, वर्गक सम्बन्ध
 जीवनसँ बाहर किछु नहि।
 व्यक्ति इतिहासमे साँस लैत,
 इतिहास व्यक्ति सँ रूप पबैत;
 निज चयन आ सामूहिक परिस्थिति
 एक-दोसरा संग अर्थ बनबैत।
 यदि व्यवस्था मनुष्य केँ वस्तु
 बनाबय, ओकर विकल्प घटाय;
 तेँ मुक्ति केवल भीतरक घोषणा
 सामाजिक बन्धन नहि हटाय।
 व्यक्तिगत उत्तरदायित्व संग
 संस्थाक आलोचना चाही;
 स्वतन्त्रता जखन साझा होय,
 तखन मानवता पूर्ण कहल जाही।
 अपनेक निर्माणक खुलल आकाश,
 कोनो पहिने सँ लिखल सार नहि;
 चयन, रिक्तता, दृष्टि, जिम्मेदारी—
 जीवनक अर्थ तैयार नहि।
 हरेक क्षण हम अपन रूप बनबैत,
 दोसरा संग इतिहास गढ़ू;

बहाना छोड़ि, सीमा बुझि कऽ
स्वतन्त्र कर्मक हस्ताक्षर धरू।

इन्द्रियक शोर आ अन्तरक दीप

समाज एकहि साँचा नहि,
युग-युग अपन आँखि बदलय;
कखनो भीतरक अदृश्य सत्य
जीवनक सर्वोच्च मान बनय।
कखनो केवल स्पर्श वस्तु
माप, स्वाद, लाभक रूप धरय;
दू छोरक बीच मानव-संस्कृति
अपन दीर्घ झूला झुलैत रहय।
जतय आत्मिक सत्य प्रधान,
इन्द्रियक सीमा छोट कहलाय;
त्याग, संयम, अन्तर्मुखता
जीवनक ऊँच लक्ष्य बनाय।
कला प्रतीकक मौन भाषा,
नीति अपरिवर्तित आदेश;
अदृश्यक प्रति गाढ़ निष्ठा
देहक सुखसँ राखय परहेज।
जतय इन्द्रियक राज्य बढ़य,
दृश्य वस्तु अंतिम प्रमाण;
धन, सुविधा, भोग, प्रयोग
जीवनक मुख्य बनय विधान।
कला धरतीक रंग उठाबय,
विज्ञान पदार्थक रहस्य खोलय;
मुदा सुखक माप जँ सभ बनि जाए,
अन्तरक भूख केना बोलय?
दू छोरक बीच तेसर राहि—
नहि देहक तिरस्कार करय,
नहि आत्माक मौन पुकार कै
बजारक शोरमे डुबि मरय।
रूप आ अर्थ, विज्ञान आ मूल्य,
दुनू कै एक आसन दय;
संतुलित संस्कृति ओहि ठाम
मानवक पूर्ण आकार लय।
कला सेहो युगक दर्पण,
कखनो प्रतीक, कखनो प्रतिरूप;

कखनो स्वर्गिक शान्ति रचय,
कखनो देहक जीवित स्वरूप।
जे समाज जे सत्य मानैत,
कला तकरा रंगमे सजाय;
चित्र, संगीत, कथा, स्थापत्य
भीतरक मूल्य बाहर लाय।
नीति केवल नियमक सूची नहि,
ओ संस्कृति केर गहिर स्वर;
जतय शाश्वत मूल्यक विश्वास,
आज्ञा बनय अटल पहर।
जतय सुखक गणना प्रधान,
नीति उपयोगक रंग धरय;
मूल्य जखन बारम्बार बदलय,
आचरणो अस्थिर भऽ पड़य।
धन यदि साधन मात्र रहय,
जीवन ओकरा उचित ठाम दय;
मुदा धनहि सर्वोच्च मोल बनिते
मनुष्य अपन माप बदलय।
संचय, उपभोग, बाजारी चमक
प्रतिष्ठाक नया तराजू लय;
जे खरीदल नहि जा सकैत,
ओकर मूल्य धीरे कम भऽ जाय।
स्वतन्त्रता जँ केवल इच्छा,
जे चाहू से करबाक नाम;
तँ बन्धन टूटल जकाँ देखाइ,
मुदा भीतर बढ़य नूतन दाम।
इच्छा जतेक अनन्त बनैत,
तृप्ति ततेक दूर सरय;
संयमक बिनु मुक्त मनुष्य
अपन चाहक दास भऽ पड़य।
सत्ता जखन मूल्य बिसरैत,
बलक भरोसा पैघ बनय;
कानून भयक छाया बनिते
विश्वासक सेतु धीरे ढहय।
हिंसा, छल, लोभक विस्तार
केवल अपराधक कथा नहि;

ओ गहिर सांस्कृतिक संकट,
 जतय साझा मोल रहय नहि।
 समृद्धि बढ़ितो शान्ति घटि सकय,
 यदि अन्तर सूखल रहि जाय;
 वस्तु बहुत, मुदा अर्थ कम,
 तँ जीवन अपन केन्द्र गमाय।
 अधिक उपभोगक दौड़ भीतर
 सन्तोषक पाँखि टूटि पड़य;
 भोगक सीमा पारि मनुष्य
 फेर अर्थक स्रोत खोजि पड़य।
 विज्ञानक तेज अनमोल,
 मुदा ओ अकेला दिशा नहि;
 'की संभव' बताबय विज्ञान,
 'की उचित' तकर उत्तर नहि।
 तकनीक शक्ति हाथमे देत,
 मूल्य तय करय ओकर उपयोग;
 विवेक बिनु ज्ञानक तलवार
 रक्षा सेहो, विनाशो संयोग।
 युगक संकट केवल पतन नहि,
 ओ परिवर्तनक गर्भ बनय;
 एक व्यवस्था जखन अति करय,
 विरोधी चाह भीतर जनय।
 थाकल संस्कृति अपन सीमा
 दुःखक अनुभवसँ पहचानय;
 नव संतुलनक धीमा बीज
 ओहि विघटनमे अंकुराय।
 इतिहास सोझ सीढ़ी नहि,
 नहि एक दिशि सदिखन गमन;
 उत्थान-पतन, फेर समन्वय—
 एहने बहुरूपी कम्पन।
 पुरान रूप सम्पूर्ण नहि मरय,
 नव रूप शून्यसँ नहि आय;
 स्मृति, संघर्ष, प्रतिक्रिया मिलि
 संस्कृतिक नया दौर बनाय।
 संकट जखन अति गहिर हो,
 लोक दू छोरमे बाँटि सकय;
 किछु भोगक शोर बढ़ाबय,

किछु अन्तरक शरण पकड़य।
मध्यक सेतु यदि नहि बनय,
समाजक तन अधिक फाटय;
विवेकक काज दू सत्यक
उचित अंश फेर संग लाय।
इन्द्रियक शोर आ अन्तरक दीप,
दुनू मानव जीवनक भाग;
एक देत पदार्थक ठोस धरती,
एक देत मूल्यक गहिर अनुराग।
नहि भोगक अन्ध दौड़ ठीक,
नहि जगत्यागक कठोर जीत;
संतुलन जखन संस्कृति बनय,
तखन मानवता पाबय संगीत।

पहिचानक धरती, वाक्यक मौन पूर्वशर्त

जगत बुझबाक दू प्रवृत्ति—
एक जे नक्शा फेर बनाबय;
एक जे पहिनेसँ चलैत ढाँचा
साफ करैत रूप देखाबय।
नव महल गढ़ब सदिखन आवश्यक नहि,
कखनो घरक कोठरी गिनू;
दैनिक बोधक मूल आधार
विश्लेषणक दीपसँ चिन्हू।
पहिचान केवल नाम नहि,
ककरा कहैत छी—से प्रश्न;
भीड़क बीच एक वस्तु चुनि
कहब—‘ईएह’—बनय विशेष।
स्थान, समय, साझा अनुभव,
शरीरक ठोस उपस्थित आधार;
एहि धरती पर संकेत टिकैत,
तखन खुलय पहिचानक द्वार।
किछु वस्तु अपने पहिचान योग्य,
किछु तकर सहारे जानल जाय;
दूरक बात, गुण, घटना, धारणा
ठोस आधारसँ अर्थ पबाय।
जे समक्ष वस्तु रूपेँ टिकैत,
ओ संदर्भक केन्द्र बनय;

बाकी अनेक अमूर्त परिचय
 ओकरा सँ सम्बन्धित होइत जनय।
 मनुष्य केवल देहक नाम नहि,
 नहि भीतर अलग अदृश्य राज;
 हँसी, पीड़ा, इच्छा, चाल
 एकहि व्यक्ति पर लागू आज।
 शारीरिक आ मानसिक कथन
 एके विषय दिशि मुड़ि सकय;
 व्यक्ति ओहि मूल पहिचानमे
 दुनू प्रकारक गुण सम्हरय।
 विशेष आ सामान्यक सम्बन्ध
 वाक्यक भीतर खुलैत जाय;
 'ई फूल लाल अछि' कहिते
 एक विषय, एक गुण देखाय।
 एक पक्ष चिन्हित वस्तु धरैत,
 दोसर तकर रूप बताबय;
 भाषाक एहि पुरान संरचना
 विचारक मूल रेखा बनाय।
 मुदा तर्कक कृत्रिम साँचा
 सभ बोलचाल नहि समेटय;
 जीवित भाषा अनेक निहित
 पूर्वशर्तक सहारे भेटय।
 सूत्र जँ अत्यधिक तीखर बनय,
 दैनिक अर्थ काटि सकय;
 सामान्य भाषाक सहज जटिलता
 नक्शासँ पैघ रहि सकय।
 'आ' कहि दू बात जोड़िते
 केवल गणितक जोड़ नहि होय;
 क्रम, प्रसंग, संकेत, लहजा
 अर्थक अतिरिक्त रूप संजोय।
 शब्दकोश एक सीमा धरैत,
 प्रयोग तकर सीमा बढ़बय;
 एकहि संयोजक भिन्न प्रसंगमे
 भिन्न सम्बन्धक रंग चढ़बय।
 किछु वाक्य बोलबाक पहिने
 चुपचाप किछु बात मानि लय;
 ओ बात सत्य नहि कहल गेल,

मुदा कथन ताहि पर पाँव धरय।
आधार यदि जगमे भेटे नहि,
कथनक सत्य-असत्य डोलय;
पूर्वशर्त टूटलापर वाक्य
मूल्यक साधारण जोड़ी न बोलय।
'राजा बुद्धिमान' कहिते
पहिने राजा अछि—ई धरती;
यदि ओ पदँ कोनो व्यक्ति नहि,
कतय ठाढ़ हो सत्यक भरती?
नकारल वाक्यो ओहि आधार
चुपचाप अपन संग लय;
'बुद्धिमान नहि' कहितहुँ
राजाक अस्तित्व पूर्वे रहय।
वाक्य आ वास्तविक कथन
एकहि वस्तु नहि मानू;
एक शब्द-रचना बारम्बार,
मुदा अवसरक प्रयोग पहिचानू।
ककरा द्वारा, कखन, ककरा लेल—
एहि प्रसंगसँ कथन जन्म लय;
सत्य-असत्यक भार प्रायः
प्रयोगित कथन अपने सहय।
सामान्य कथनक अर्थो सूक्ष्म,
'सभ' कहब सदिखन अस्तित्व नहि;
कखनो वर्ग रिक्त रहितो
सूत्रक तार्किक रूप टूटय नहि।
मुदा दैनिक भाषा कखनो
रिक्त वर्गक बात अलग बुझाय;
औपचारिक नियम आ साधारण अर्थ
सदिखन एक रेखामे नहि आय।
अनुमानक औचित्य पूछिते
अनन्त बाहरी मोहर नहि चाही;
किछु माप स्वयं व्यवहार भीतर
'युक्त' कहबाक कसौटी जाही।
भूतक क्रमसँ भविष्य सोचब
मानव-बुद्धिक स्थापित चाल;
तकर उचितता ओकर नियममे,
नहि दोसर उच्चतर न्यायालय।

यदि हरेक नियमक फेर नियम,
 हरेक प्रमाणक फेर प्रमाण;
 तँ सोचक पग कखनो नहि चलत,
 रहि जायत प्रश्नक वीरान।
 किछु कसौटी खेलक भीतर
 खेलक ठीक चाल बताबय;
 बाहरी आधार खोजैत-खोजैत
 बुद्धि अपन धरती नहि गमाय।
 पहिचानक धरती, मौन पूर्वशर्त,
 व्यक्ति, वाक्य, प्रसंगक मेल;
 औपचारिक तर्कक स्वच्छ रेखा,
 दैनिक भाषाक जीवित खेल।
 जे कहल गेल ताहिसँ पहिने
 की मानल गेल—से निहारू;
 भाषाक भीतर जगक ढाँचा
 सावधान विवेकसँ उधारू।

एकहि अनन्त धारा, अनिवार्य जग

एक मूल, अपने कारण,
 जकर बाहर दोसर ठाम नहि;
 अस्तित्वक अनन्त विस्तारमे
 पराया कोनो आधार नहि।
 जतय मन अलग नाम लगाबय,
 ओतय रूपक भिन्नता जागय;
 मूल सत्ता अपन अनन्त ढंगसँ
 गुणक आकाश पसारि जाय।
 विचार एकटा व्यापक आयाम,
 विस्तार दोसर खुलल रेख;
 दुनू एकहि मूलक अभिव्यक्ति,
 नहि एक-दोसरा पर लेख।
 देहक घटना देहक क्रममे,
 विचार विचारक क्रम धरय;
 एकहि सत्यक समान लयमे
 दुनू बिनु धक्का संग सरय।
 मन जे देहक बोध बनबैत,
 देह जे जगमे रूप धरय;
 अलग राज्यक दू सम्राट नहि,
 एक व्यवस्था दुनू भरय।

किछु स्वतन्त्र दुर्घटना नहि,
 हरेक घटना कारणसँ बान्हल;
 अनिवार्य नियमक विस्तृत जालमे
 प्रत्येक रूप अपन ठाम पानल।
 'हो सकितै आन'क कल्पना
 हमर अधूर ज्ञानसँ उठय;
 कारणक सम्पूर्ण शृंखला देखिते
 घटना अपन आवश्यकता कहय।
 स्वतन्त्रता तखन मनमानी नहि,
 कारणहीन छलाँगक नाम;
 अपने प्रकृतिक हेतु बुझनाइ
 मुक्तिक खोलय गहिर धाम।
 भावना जखन हमरा घेरय,
 हम ओकर दास बनि सकी;
 राग, भय, क्रोधक आँधीमे
 बुद्धिक दिशा सहजहि ढँकि।
 भावक कारण स्पष्ट बुझिते
 निष्क्रिय पीड़ा रूप बदलय;
 जकरा हम बुझि सक्रिय बनू,
 ओ शक्ति चेतनमे समायल।
 हरेक वस्तु अपने अस्तित्व केँ
 राखबाक चेष्टा भीतर धरय;
 जीवनक स्वाभाविक दृढ़ आग्रह
 कर्मक मूल प्रवाह बनय।
 आनन्द शक्ति बढ़बाक संकेत,
 दुःख शक्ति घटबाक छाप;
 इच्छा ओहि प्रवाहक चेतन रूप,
 जे जीवनक दिशा करे माप।
 मुदा निजी लाभहि अन्त नहि,
 विवेक साझा हित चिन्हाय;
 दोसरा मनुष्यक संग सहयोग
 अपन सामर्थ्य सेहो बढ़ाय।
 घृणा घृणासँ बढ़ैत जाए,
 समझ आ उदारता ओकर प्रतिकार;
 बुद्धिक शासन कठोर दण्ड नहि,
 कारण-बोधक निर्मल आधार।
 जगत केँ दूरक राजा सँ नहि,
 जगतहि भीतर मूल पहिचानू;

प्रकृति आ परमक दूरी गलिते
 पवित्रता सभ रूपमे जानू।
 उच्चतम प्रेम अन्ध आसक्ति नहि,
 सत्यक बोधसँ उपजल आनन्द;
 अनिवार्य जगक स्पष्ट ज्ञानमे
 मन पाबय अडिग सम्बन्ध।
 एकहि अनन्त धारा बहैत,
 विचार-विस्तारक युगल प्रकाश;
 कारण बुझि भाव सँ मुक्त होइत
 चेतन पाबय स्वतन्त्र आकाश।

सरल बीजसँ बहुरंगी जग

पहिने रूप सरल, एकरंग,
 फेर भेदक पात फूटि उठय;
 एकहि बीज अनेक शाखामे
 समयक संग विस्तार लय।
 जतय गति आ पदार्थ जुड़ैत,
 नव संरचना जन्म पबैत;
 सरल दशासँ जटिल दिशि
 जगत निरन्तर रूप बदलैत।
 बादल, पर्वत, वनस्पति, देह,
 समाजो एहि क्रमक भाग;
 एकरूपता धीरे टूटैत,
 विशेष कार्यक जागय राग।
 जे अंग पहिने समान छल,
 कालान्तरमे काज बदलय;
 भिन्नता बढ़ितो परस्पर निर्भर
 समग्र रूप केँ संग सम्हरय।
 विकास केवल आकार बढ़ब
 नहि, सम्बन्धक गहिर विस्तार;
 अनेक भागक विशेष काज
 एकहि जीवनक साझा तार।
 भेद बढ़य, मुदा विखराव नहि—
 समन्वय तकर दोसर छोर;
 जटिलता तखन फलदायी,
 जखन मेल बचल रहय जोर।
 जीवन पर्यावरण संग सीखैत,
 अनुकूल चाल टिकैत जाय;

जे परिस्थिति सँ मेल बनाबय,
 ओ अपन क्रम आगाँ बढ़ाय।
 बाहरक दबाव, भीतरक ढाँचा,
 दुनू एक-दोसरा केँ छूअय;
 जीवित रूपक दीर्घ परिवर्तन
 अनगिन पीढ़ी पारि बहय।
 ज्ञान इन्द्रियक दुआर सँ आबय,
 तर्क तकर सम्बन्ध बुझाय;
 मुदा अन्तिम वास्तविकता
 सम्पूर्ण जालमे पकड़ि नहि आय।
 जे देखी, ओ प्रकट रूप,
 जे सोचू, ओ सम्बन्धक थाह;
 मूल रहस्य सीमा पारि रहैत,
 बुद्धि ओतय विनम्र होय अथाह।
 विज्ञान कहय—नियम खोजू,
 धर्म कहय—मूल रहस्य मानू;
 दुनू जँ अपन सीमा बुझय,
 किएक एक-दोसरा केँ नकारू?
 अज्ञातक समक्ष नम्रता
 संघर्षक ताप घटा सकय;
 प्रकट नियम आ अप्रकट आधार
 एकहि प्रश्नक दू छोर रहय।
 नाम बदलि देलासँ रहस्य
 अपने सम्पूर्ण हल नहि होय;
 'कारण' कहू कि 'मूल शक्ति',
 अन्तिम थाह तबो नहि होय।
 बुद्धि जतेक आगाँ बढ़ैत,
 सीमा ततेक स्पष्ट देखाय;
 ज्ञानक सम्मान ओतहि गहिर,
 जतय अज्ञानो चिन्हल जाय।
 नीति आकाशसँ अकस्मात्
 तैयार सूची बनि नहि उतरय;
 जीवनक दीर्घ अनुभव भीतर
 आचरणक मानक रूप धरय।
 जे व्यवहार जीवन बचाबय,
 मेल, सुख, विकास बढ़ाय;

ओ धीरे-धीरे स्वीकृत बनि
 नैतिक आदत रूप पबाय।
 सुख आ दुःख संकेत बनैत,
 जीवनक हित-अहित बुझाबय;
 मुदा क्षणिक सुखेँ अंतिम माप नहि,
 दीर्घ परिणामो संग निहारय।
 व्यक्ति अपन हित खोजैत,
 समाज सेहो सुरक्षा चाहय;
 दुनू हितक उचित समन्वय
 श्रेष्ठ आचरणक राहि बनाय।
 स्वार्थक पूर्ण निषेध असम्भव,
 परहित बिनु समाज अधूर;
 अपने जीवित रहबाक चाह
 आ दोसरा प्रति करुणा भरपूर।
 पहिने टकराहट तीखर हो सकय,
 विकास संग मेल बढ़ैत जाय;
 जतय निज हित लोकहित सँ जुड़य,
 नैतिकता अधिक सहज बनाय।
 शासनक काज हरेक पग पकड़ब
 नहि, व्यक्ति केँ साँस दिअय;
 अनावश्यक बन्धन कम राखि
 स्वतन्त्र प्रयत्नक राहि खुलाय।
 मुदा स्वतन्त्रता एहन नहि
 जे दोसरा अधिकार कुचलि जाय;
 सीमा ओतहि, जतय अपन कर्म
 दोसरा जीवन पर घाव लगाय।
 समाज देह जकाँ जुड़ल अवश्य,
 मुदा मनुष्य केवल कोशिका नहि;
 देहक अंग समग्र लेल जीबय,
 व्यक्ति अपन लक्ष्यहीन नहि।
 सामाजिक मेल आवश्यक अछि,
 तैयो निज चेतनक मूल्य रहय;
 समग्रता व्यक्ति केँ निगलि नहि,
 दुनू परस्पर पोषण करय।
 जतय कठोर बलक प्रधानता,
 आज्ञा व्यक्ति ऊपर चढ़य;
 ओहि रूपसँ धीरे-धीरे

स्वैच्छिक सहयोग दिशि समाज बढ़य।

व्यापार, श्रम, समझौता, अनुबन्ध

बलक बदला सम्बन्ध बनाय;

समाजक परिपक्वता तखन,

जखन भय कम, सहमति बढ़ि जाय।

आदर्श समाज दूरक छवि,

जतय बाहरी पहरा कम होय;

भीतर विकसित नैतिक प्रवृत्ति

अपने उचित आचरण संजोय।

कानूनक डाँट सँ नहि केवल,

चरित्रक मेल व्यवस्था देत;

स्वतन्त्र मन आ सामाजिक हित

एकहि लयमे साँस लेत।

सरल बीजसँ बहुरंगी जग,

भेद, समन्वय, विकासक गान;

प्रकट नियमक उज्जर धरती,

अप्रकट रहस्यक मौन विधान।

व्यक्ति, समाज, नीति, विज्ञान—

सभ परिवर्तनक धारा पार;

जतय जटिलता मेल सँ फुलय,

ओतहि जीवन पाबय विस्तार।

फेंकल क्षणसँ मृत्यु-दिशि खुलल समय

जगत समक्ष वस्तु जकाँ मात्र

ठाढ़ नहि अछि चेतनक पार;

हम तऽ पहिनेसँ जगमे छी,

सम्बन्धक बीच खुलल संसार।

देखब पहिने पाछाँ होय,

जीबनाइ पहिल अनुभूति;

जगत भीतर रहिते-रहिते

खुलय अस्तित्वक मौन गति।

‘अछि’ कहब सरल लगैत,

मुदा ‘होएब’ केर अर्थ गहिर;

वस्तु अपन रूपमे उपस्थित,

मनुष्य प्रश्न करय अधीर।

अपने होएबाक अर्थ बुझबाक

क्षमता ओकर विशिष्ट दान;

जे अपने अस्तित्व पर प्रश्न उठाबय,

ओहि सँ खुलय सत्ताक ज्ञान।
 हम कोनो शून्य ठाम चुनि
 अपन जन्मक प्रारम्भ नहि करी;
 पहिनेसँ भाषा, देह, इतिहास,
 परिस्थितिक बीच आँखि उधारी।
 ई 'फेंकल' जीवन दोष नहि,
 तथ्यक कठोर स्वीकार;
 जे भेटल, ओहि धरती ऊपर
 हम रचैत छी अगिला संसार।
 मुदा भेटल सीमा अन्त नहि,
 मनुष्य आगाँ दिसि स्वयं खुलय;
 जे एखन नहि, ओ सम्भावना
 भविष्यक पथ भीतर फुलय।
 अपने केँ सदिखन आगाँ फेंकि
 ओ परियोजनाक रूप बनाय;
 वर्तमान केवल ठहरल क्षण नहि,
 अगिला होएबाक द्वार खुलाय।
 दैनिक भीड़क सहज बहावमे
 हम 'सभ जेना' बनि सकी;
 लोक जे कहय, लोक जे मानय,
 ओहि स्वरमे अपन स्वर ढँकि।
 एहि गिरावटमे दोषक फैसला
 नहि, जीवनक साधारण चाल;
 मुदा अपनेक निज सम्भावना
 भीड़मे हराबय—एहि मे जाल।
 चिन्ता केवल कामक बोझ नहि,
 ओ जीवनक मूल सम्बन्ध;
 जगत, दोसरा, अपन सम्भावना—
 तीनू संग एकहि गहिर बन्ध।
 जेकरा हम प्रेम, भय, श्रमसँ
 दिन-राति अपन कहि धरी;
 ओहि 'परवाह'क जाल भीतर
 हमर अस्तित्वक रेखा भरी।
 कखनो अकस्मात् व्याकुलता
 सभ परिचित अर्थ हटा दय;
 घर, वस्तु, काम, परिचयसभ
 क्षण भरि फीका पड़ि जाय।
 तखन समक्ष 'किछु नहि' जकाँ

एक गहिर खुलल रिक्ति रहय;
 ओ शून्य विनाश नहि केवल,
 सम्भावनाक सीमा कहय।
 भय सदिखन किछु सँ होइत,
 व्याकुलता बिनु वस्तुक नाम;
 ओ मनुष्य केँ अपने समक्ष
 नंगा करय बिनु आराम।
 सहारा सभ जखन ढीला पड़य,
 अपन चयनक भार देखाय;
 एहि बेचैनीक निर्मम उजासमे
 निज स्वतन्त्रता जागि उठाय।
 समय घड़ीक टिक-टिक मात्र
 नहि, चेतनक तीन दिशि तान;
 भविष्य सँ सम्भावना आबय,
 अतीत देत फेंकल पहचान।
 वर्तमान दुनू केँ संग धरैत
 कर्मक क्षणमे अर्थ बनाय;
 तीन धाराक एकहि प्रवाह
 जीवनक कालिकता कहलाय।
 अतीत मृत पृष्ठ नहि,
 ओ हमर भीतर चालि रहल;
 भाषा, रीति, स्मृति, चुनाव
 आइक देहमे रूप बदलल।
 इतिहास बाहरक सूची नहि,
 अपने होएबाक एक परत;
 जे विरासत केँ फेर अपनाबय,
 ओ भविष्य रचय अधिक सजग।
 मृत्यु दूरक दुर्घटना नहि,
 जीवनक भीतर अन्तिम सीमा;
 ककरो बदला हम नहि मरी,
 एहि बोधक निजता गहिमा।
 ओ भविष्यक एक सम्भावना,
 जे सभ सम्भावना बन्द करय;
 तकर समक्ष जीवित क्षण
 अधिक साँच अर्थ धरय।
 मृत्यु-दिशि सजग रहनाइ
 निराशाक अन्हार नहि;
 ओ तऽ उधार समयक बोध,

जे क्षण केँ व्यर्थ बहाबय नहि।
 भीड़क उधार जीवन छोड़ि
 अपने निर्णयक स्वर सुनू;
 सीमित जीवनक सत्य स्वीकारि
 निज सम्भावना स्वयं चुनू।
 दोसरा सँ काटल एकाकी
 मनुष्यक सम्पूर्ण रूप नहि;
 जगतमे रहब माने संग रहब,
 साझा भाषा बाहर नहि।
 तैयो भीड़ आ संगति अलग—
 एक निजता मिटा सकय;
 दोसर सम्मानक खुलल ठाममे
 अपन-अपन स्वर बचा सकय।
 इतिहास, समय, मृत्यु, चिन्ता,
 सभ मिलि कहय—‘तूँ सीमित छै’;
 मुदा सीमित होएब कमी नहि,
 एहि सँ चयनक मूल्य भेटैत।
 अनन्त समय जँ हाथमे रहित,
 आइक निर्णय हलुक पड़ित;
 अन्तिम सीमा जीवन केँ
 प्रत्येक पगक गम्भीरता दैत।
 फेंकल क्षणसँ मृत्यु-दिशि
 खुलल समयक गहिर बहाव;
 भीड़क शोर पारि अपन स्वर,
 व्याकुलतामे सत्यक ठाव।
 जगतमे रहि, इतिहास सम्हारि,
 सम्भावना दिशि पग बढ़ाउ;
 सीमित जीवनक सजग उजासमे
 अपने होएबाक अर्थ बनाउ।

भयक मैदान सँ अनुबन्धक नगर

ज्ञानक पहिल दुआर इन्द्रिय,
 बाहरक स्पर्श मनमे आय;
 रंग, ध्वनि, स्वाद, गति, आकार
 चेतन भीतर छाप बनाय।
 जे वस्तु दूर भऽ गेलो पाछाँ
 तकर छवि किछु देर टिकय;
 ओही फीका पड़ैत प्रतिरूपसँ

स्मृति आ कल्पना फेर उठय।
 मन कोनो अलग आकाश नहि,
 देहसँ काटल गुप्त प्रदेश;
 चाल, स्पन्दन, गति, प्रभाव
 मिलि बनबय अनुभवक परिवेश।
 जगतक कण निरन्तर गतिमान,
 गति सँ परिवर्तनक विस्तार;
 जतय कारणक धक्का पहुँचय,
 ओतय रूप बदलय बारम्बार।
 नामक भीतर जे अर्थ राखू,
 ओ सभ बाहरी वस्तु नहि होय;
 कखनो शब्द सुविधा मात्र,
 जे विचारक गणना संजोय।
 सामान्य रूप मनक निर्मिति,
 विशेष वस्तु जगमे ठाढ़;
 नाम सँ हम समूह चिन्हैत,
 मुदा नामेँ वस्तु नहि गाढ़।
 अदृश्य सत्ता कहिते पहिने
 प्रमाणक धरती माँगू थाह;
 जे ज्ञेय नहि, ओकर विषयमे
 विनम्र रहब बुद्धिक राह।
 कारणक अन्तिम शृंखला कतेक—
 प्रश्न खुलल रहि सकैत;
 मुदा अज्ञातक नाम धरिते
 ज्ञान स्वतः सम्पूर्ण नहि होइत।
 मनुष्यक चाह अपन सुख दिशि,
 दुःखसँ दूर सरबाक चाल;
 जे प्रिय लागय, ओ 'नीक' कहल,
 जे अप्रिय, 'बेजाय'क जाल।
 एकहि वस्तु सबहक लेल
 एकहि मोल नहि धरि सकय;
 इच्छाक भिन्न दिशासँ मूल्य
 व्यक्ति-व्यक्ति बदलि पड़य।
 सुख केवल ठहरल शान्ति नहि,
 चाह पूर्ण होइत फेर चाह;
 एक लक्ष्य पाछाँ दोसर लक्ष्य,
 जीवनक सतत चलैत राह।
 शक्ति, सुरक्षा, साधन, सम्मान

मन भविष्य लेल जोड़ि रखय;
 आइक उपलब्धि काल्हिक डरमे
 फेर अधिक चाहक बीज बखेरय।
 जतय साझा शासन नहि,
 हरेक मनुष्य अपन रक्षक होय;
 समान आशा, समान डर भीतर
 टकरावक बीज सहज संजोय।
 एके वस्तु दू हाथ चाहय,
 विश्वासक आधार कम पड़य;
 भय, शंका, पूर्व-आक्रमण
 मनुष्य केँ मनुष्यसँ लड़य।
 एहन दशामे श्रमक फल
 ककरो लेल सुरक्षित नहि;
 खेती, व्यापार, कला, विद्या
 भयक बीच टिकैत ठीक?
 जतय प्रतिक्षण जानक संशय,
 सुखक घर कोना बनि पाय;
 बलक अनिश्चित जंगल भीतर
 सभ्यता केर दीप बुझि जाय।
 तखन विवेक एक बात कहय—
 किछु स्वतन्त्रता छोड़ू संग;
 जतय सभ एक नियम मानय,
 ओतय शान्ति पाबय रंग।
 ‘हम नहि करब जे अपने लेल
 दोसरा सँ करब चाही नहि’—
 एहि परस्पर रोकक बीजसँ
 समझौतेक पहिल रेखा बनि।
 मुदा वचन बिनु शक्ति कमजोर,
 यदि पालनक डर नहि रहय;
 समझौता तखन कागज बनि
 स्वार्थक आँधीमे फटि जाय।
 एहि लेल साझा अधिकारक
 एक दृढ़ केन्द्र बनायल जाय;
 सभ अपन किछु शक्ति समर्पित कऽ
 सुरक्षाक शासन ठाढ़ कराय।
 शासनक मूल कारण शान्ति,
 नहि केवल गौरवक सिंहासन;
 भीतरक युद्ध रोकि समाजमे

सुरक्षा देब ओकर विधान।
कानून बिनु 'हमर-तोहर'क
स्थिर सीमा कठिन बनय;
न्यायो तखन अर्थ पबैत,
जखन मान्य नियम सभ पर चलय।
मुदा जीवनक रक्षा मूल अधिकार,
ओ पूर्ण सौदा बनि नहि सकय;
अपने केँ नष्ट करबाक आदेश
मनुष्य पर बाध्यकारी नहि रहय।
जाहि शक्ति लेल शासन बनल,
यदि से जीवनहि काटय चाहय,
आत्मरक्षाक सहज अधिकार
ओहि क्षण फेर समक्ष आय।
शासकक रूप अनेक हो सकय,
मुदा विभाजित सत्ता कठिन;
एक केन्द्रक स्पष्ट निर्णय
अराजकता रोकय अधिक दिन।
तैयो शासन साधन अछि,
जन-जीवनक सुरक्षा हेतु;
शक्ति यदि शान्ति सँ कटि जाए,
टूटि सकैत विश्वासक सेतु।
भयक मैदान सँ अनुबन्धक नगर,
इन्द्रियसँ ज्ञान, गतिसँ जग;
चाह, सुख, शंका, आत्मरक्षा
मानव-मनक अनेक तरंग।
नियमक छतरी तखन आवश्यक,
जखन संघर्षक आगि प्रखर;
स्वतन्त्रता किछु बाँटि कऽ मनुष्य
सुरक्षाक साझा घर गढ़य।

छापक आगिसँ आदतक कारण

जे पहिने तीख रूपमे छूबय,
ओ अनुभूतिक पहिल निशान;
तकर फीका प्रतिरूप पछाति
विचार बनि पाबय पहचान।
रंगक तेज, पीड़ाक चुभन,
स्वाद, ध्वनि, आनन्दक धार;
मनमे फेर उठल स्मृतिरूप

ओकरा सँ कम तीव्र आकार।
 जटिल विचार खोलि निहारू,
 सरल छाप धरि डोरी जाय;
 अनुभवक सामग्री बिनु
 कल्पना कतय सँ रूप बनाय?
 मन तथापि निष्क्रिय नहि,
 जोड़य, काटय, रूप मिलाय;
 सोनाक रंग आ पर्वतक आकार
 एक नव कल्पना बनि जाय।
 विचार एक-दोसरा दिशि सरय
 तीन सहज पुलक सहारे;
 सादृश्य, निकटता, कारणक क्रम
 स्मृतिक नाव चलाबय धारे।
 कारण कहिते की देखैत छी?
 एक घटना पाछाँ दोसर आय;
 पहिल भीतर एहन शक्ति कतय
 जे अनिवार्य दोसर बनाय?
 आँखि क्रम देखय, शक्ति नहि,
 बुद्धि भीतर आदत जागय;
 बारम्बार संग घटित घटना
 अपेक्षाक डोरी बान्हि जाय।
 सूर्योदय काल्हि फेर होयत—
 जीवन एहि भरोसासँ चलय;
 मुदा बीतेल क्रम सँ भविष्यक
 तार्किक बाध्यता नहि निकलय।
 प्रकृति पर विश्वास आवश्यक,
 तैयो तर्कक अन्तिम प्रमाण नहि;
 आदतक पुल उपयोगी बहुत,
 ओ अनन्त निश्चित विधान नहि।
 'हम' खोजू भीतर गहिराइ,
 भेटत अनुभूतिक चलैत भीड़;
 कखनो सुख, कखनो पीड़ा,
 कखनो स्मृति, चाहक नीड़।
 स्थिर आत्मा अलग सँ पकड़ब
 अनुभवमे आसान नहि;
 धाराक क्रमक बाहर ठाढ़
 कोनो साक्षी प्रत्यक्ष नहि।
 तैयो जीवन चलैत अछि,

स्मृति व्यवहारक सेतु बनाय;
 दार्शनिक संशय दैनिक जग केँ
 पूर्णतः शून्य नहि करि जाय।
 नीक-बेजाय केवल शुष्क तर्क
 हृदय बिनु नहि ठहरि सकय;
 दोसरा सुख-दुःख देखिते
 सहानुभूतिक कम्पन उठि सकय।
 नैतिक स्वीकृति भावसँ जुड़ल,
 कारण मात्र आदेश नहि;
 मानवीय संवेदना बिनु
 कर्तव्यक शब्दो जीवित नहि।
 अतिशय निश्चय सँ दूर रहू,
 अतिशय संशय सँ सेहो बचू;
 जे प्रमाण अनुभव देत, ओ मानू,
 जे नहि देत, ओतय सीमा रचू।
 छापक आगिसँ विचारक धुँआ,
 आदत सँ कारणक विश्वास;
 विनम्र संशयक स्वच्छ हवामे
 ज्ञान पाबय मानवीय निवास।

चेतनाक दुआर पर वस्तुक उजास

जे किछु समक्ष आबि ठाढ़,
 हम तुरन्त कहि दैत छी—‘ई जग’;
 मुदा देखबाक एहि सहज क्षणमे
 कतेक मौन सम्बन्धक राग।
 पहिने सँ मानल बातक बोझ
 क्षण भरि कोष्ठक भीतर धरू;
 जगत केँ नकारू नहि, केवल
 ओ कोना प्रकट होइत—से तक्क।
 जे फूल अछि, तकर अस्तित्वक
 फैसला एखन दूर रहय;
 पहिने रंग, गन्ध, आकार कोना
 चेतन अनुभव भीतर बहय।
 चेतना खाली कोठरी नहि,
 नहि बन्द पात्रक अन्हर ठाम;
 ओ सदिखन किछु दिशि खुलैत—
 देखनाइ, सोचनाइ, स्मृतिक नाम।
 हरेक अनुभवक अपन दिशा,

हरेक भावना ककरो प्रति जाय;
 प्रेम बिनु प्रियक संकेत कतय,
 भय बिनु आशंकाक रूप कतय आय?
 वस्तु मनक भीतर कैदी नहि,
 मन सेहो जगसँ काटल नहि;
 दुनूक बीचक जीवित सम्बन्ध
 अर्थक पहिल धरती सही।
 मेजक एक दिस आँखि देखय,
 दोसर दिस एखन ओझरायल;
 तैयो एके मेजक पूर्ण अर्थ
 अदृश्य पक्षसँ संग जुड़ायल।
 देखल भाग सीमित सदखन,
 वस्तु अधिक पक्षक वचन दय;
 एक-एक दृष्टि बदलैत जाउ,
 एकहि वस्तु निरन्तर रहय।
 एहि अपूर्ण पूर्णताक भीतर
 अनुभवक अद्भुत अनुशासन;
 जे समक्ष अछि, ओ संकेत करय
 जे एखन नहि, तकरो सम्भावन।
 कल्पना जँ रूप बदलाबय,
 रंग हटाउ, आकार फेरू;
 जे बदलितो अर्थ नहि टूटय,
 ओ मूल लक्षण ध्यानसँ हेरू।
 एहि भिन्न सम्भावित रूपक
 बीच जे स्थिर सूत्र बचय,
 वस्तुक सारक झलक जकाँ
 चेतन आगाँ धीरे नचय।
 ज्ञान केवल तथ्यक ढेरी नहि,
 नहि मनोवृत्तिक निजी धुँआ;
 अर्थक साझा संरचना भीतर
 बुद्धि पाबय स्पष्ट कुआँ।
 एक धुन सुनैत समय देखू—
 सुर केवल एखनक बिन्दु नहि;
 बीतेल स्वरक हलुक छाया बिनु
 आबक स्वरमे संगीत नहि।
 जे सुर गेल, ओ पूर्ण मरल नहि,
 ओ वर्तमानक कात रहय;
 जे एखन आबि नहि सकल,

ओकर अपेक्षा सेहो संग बहय।
 अतीतक धुँधल पकड़, एखनक
 जीवित उजास, आगाँक टान;
 तीनू मिलि समय बनबैत,
 नहि घड़ीक सूखा गणना-मात्र।
 चेतना अपनहि प्रवाह भीतर
 अपने केँ सेहो अनुभव करय;
 हरेक क्षण नव, मुदा सम्पूर्ण टूटल नहि,
 एक धारा रूपेँ जीवन बहय।
 दोसरा मन केँ देखू कोना?
 ओ भीतर हमरा जकाँ अदृश्य;
 मुदा देहक हाव-भाव, वाणी,
 दुःखक कम्पन करय उपस्थित।
 हमरा लेल जग केवल 'हमर' नहि,
 दोसरो दृष्टि तकरा छूबय;
 साझा वस्तु, साझा पथ, साझा भाषा
 एक सार्वजनिक धरती बुनय।
 एहि संग-जगतक विश्वास बिनु
 विज्ञानो अकेला कोना टिकत?
 माप एक, वस्तु एक, परिणाम साझा—
 अन्य चेतनाक मान सँ मिलत।
 दैनिक जीवनक सहज धरती
 हरेक सिद्धान्तसँ पहिने अछि;
 घर, बाट, श्रम, देह, सम्बन्ध
 ज्ञानक मौन आधार बनि अछि।
 विज्ञान जखन अमूर्त उचाइ चढ़य,
 एहि जीवित धरती नहि बिसरू;
 संख्या पाछाँ अनुभूत संसार,
 सूत्र पाछाँ मनुष्य केँ धरू।
 पूर्वाग्रहक झिल्ली हटबैत
 वस्तु केँ अपन ढंग सँ आबऽ दिअ;
 जल्दी निर्णयक धूलि नहि उड़ाउ,
 अनुभवक बारीकी पढ़ऽ दिअ।
 ना अन्ह विश्वास, ना नकार,
 ना केवल बाहरी माप प्रमाण;
 चेतना-वस्तुक खुलल सम्बन्धमे
 अर्थ पबैत नव पहिचान।
 चेतनाक दुआर पर वस्तुक उजास,

वस्तुक दुआर पर चेतन प्रश्न;
 दुनू बीच जे प्रकट होइत,
 ओतहि अनुभवक गहिर स्पन्दन।
 फेर जखन संसार केँ देखब,
 पहिने सँ बनल नाम नहि थोपब;
 जेना ओ अपने समक्ष खुलय,
 तेना ओकर रूप धीरजसँ जोखब।

सात भंगीक खिड़की सँ अहिंसक सत्य

सत्यक घर एक दुआर नहि,
 दिशा-दिशामे खिड़की खुलय;
 एक दृष्टि जे रूप देखैत,
 दोसर सीमा ओकरा सँ तुलय।
 ‘अछि’ कहब कखनो उचित,
 मुदा प्रसंगक धरती चाही;
 ‘नहि अछि’ सेहो सत्य हो सकय,
 यदि दोसर रूपक बात उठाही।
 एकहि वस्तु एक दिशिसँ अछि,
 दोसर दिशिसँ नहि कहलाय;
 समय, स्थान, रूप, सम्बन्ध
 बदलिते कथनक अर्थ बदलाय।
 कखनो अछि आ नहि अछि दुनू,
 भिन्न अपेक्षाक संग सत्य;
 कखनो वाणी थाकि पड़ैत,
 रूपक जटिलता होय अवक्तव्य।
 एहि सात भंगीक विनम्र चालमे
 दावा अपन सीमा चिन्हय;
 एक वचनसँ अनन्त वस्तु केँ
 सम्पूर्ण बाँधब कठिन बुझाय।
 नय एकटा अंशक खिड़की,
 प्रमाण समग्र बोधक दीप;
 आंशिक दृष्टि जखन नम्र रहय,
 सत्य अधिक आबय समीप।
 प्रत्यक्षक निर्मल उजास सँ
 वस्तु समक्ष रूप धरय;
 अनुमानक हेतुक डोरी
 अनदेखल अर्थक बाट करय।
 ज्ञान केवल बाहरक छवि नहि,

ज्ञाता सेहो अपन स्वर पाबय;
बोध जखन भ्रमक धूल हटाबय,
चेतन अधिक निर्मल होइ जाय।
जीवक भीतर चेतन ज्योति,
कर्मक कण ओकरा आवरय;
राग-द्वेषक चिपकल धूलि
स्वतन्त्र प्रकाश केँ धीमा करय।
हिंसा पहिने विचारमे जन्मय,
'हमरे सत्य'क कठोर अभिमान;
दोसरा दृष्टि केँ शून्य कहिते
टूटय सह-अस्तित्वक विधान।
अहिंसा केवल हाथ रोकब नहि,
वाणी, मन, इच्छा धरि जाय;
जकर भीतर करुणा जागल,
ओ सत्य केँ हथियार नहि बनाय।
संयम चाहक बाढ़ि सम्हारय,
अपरिग्रह भार उतारि दय;
सत्य, अचौर्य, मर्यादित जीवन
चेतन केँ हलुक पाँखि दय।
कर्मक बन्धन धीरे-धीरे
सजग आचरणसँ क्षीण होय;
ज्ञान आ चरित्रक संगति बिनु
मुक्तिक बीज पूर्ण नहि होय।
अनेक दृष्टि अराजकता नहि,
नहि सभ कथन समान प्रमाण;
प्रसंग, हेतु, सीमा बुझिते
बुद्धि पाबय अनुशासित ज्ञान।
निश्चय जँ करुणा सँ जुड़ल,
मतभेद शत्रुता नहि बनय;
विचारक बीच खुलल स्थानमे
संवादक निर्मल नदी बहय।
सात भंगीक खिड़की सँ देखू,
एकहि जगक अनेक प्रकाश;
अहिंसक बुद्धिक विनम्र पथ पर
सत्य बने साझा आकाश।

विरोधक गर्भसँ पूर्णताक यात्रा

शून्य निस्तब्ध आरम्भ जकाँ
 ‘अछि’ अकेला ठाढ़ रहय;
 मुदा भेदहीन उज्जर खालीपन
 अपने भीतर विपरीत कहय।
 जे पूर्णतः अनिर्धारित अछि,
 ओ पकड़िते हाथसँ सरि जाय;
 सत्ता आ अभावक सीमा घुलि
 ‘बनैत रहब’क धारा बनाय।
 जगत तऽ जड़ि ठहरल चित्र नहि,
 ओ अपने भीतर बदलैत रूप;
 प्रत्येक निश्चित आकारक छातीमे
 ओकर सीमा रहय अनूप।
 सीमा बाहिरक शत्रु नहि,
 रूपक भीतर जन्मल प्रश्न;
 जे अपन अन्तर्विरोध चिन्हैत,
 ओहि सँ खुलय अगिला स्पन्दन।
 नकार केवल मिटेनाइ नहि,
 पुरानक सारो संग लय;
 जे रूप टूटय, तकर सत्यांश
 नव रूप भीतर जीवित रहय।
 सीढ़ीक पायदान छोड़ैत छी,
 मुदा पाछाँ पूर्णतः फेंकी नहि;
 ऊपर चढ़ल प्रत्येक पगमे
 नीचाँक दूरी समायल सही।
 सत्य एक ठंढा निष्कर्ष नहि,
 नहि पहिने सँ बन्द किताब;
 ओ अपन यात्रा स्वयं करैत,
 रूप-दर-रूप खोलय हिसाब।
 आँखिक तुरन्त भरोसा कहय—
 ‘ईएह निश्चित, ईएह सत्य’;
 क्षण बदलिते संकेत बदलय,
 सहज निश्चय पाबय चुनौती।
 वस्तु गुणक जालमे खुलैत,
 गुण फेर सम्बन्ध माँगय;
 बुद्धि नियमक पाछाँ दौड़ैत,
 नियम अपन सीमा देखाबय।
 एहि यात्रा बीच चेतना

एक दिन अपने दिस मुड़य;
'हम जानैत छी' सँ आगाँ बढ़ि
'हम के छी'क प्रश्न जुड़य।
अपने केँ केवल भीतर पाबब
पर्याप्त नहि, दोसर चाही;
दोसरा स्वतन्त्र दृष्टि समक्ष
हमर आत्मबोधक दर्पण आही।
मान्यता बिनु आत्म-सम्मान
एकाकी आवाज बनि जाय;
दू स्वतन्त्र चेतन जखन भेटय,
संघर्षक सम्भावना जागि जाय।
एक झुकय, एक शासन करय—
देखाइ जेनाँ विजय पूर्ण;
मुदा निर्भर मान्यताक सिंहासन
भीतरसँ रहि सकैत शून्य।
जे श्रम करय, वस्तु बदलाबय,
ओ बाहरी जगमे अपन छाप देखय;
हाथक अनुशासन, धैर्यक घाम
भीतरक चेतना फेर लेखय।
भय आ श्रमक कठिन पाठसँ
दास कहायल मनो बदलि सकय;
स्वामीक निष्क्रिय निर्भरता
अपन सीमा समक्ष रखय।
एहि उलटावक अर्थ ई नहि
जे इतिहास सरल रेखा चलय;
हरेक विजय भीतर नव प्रश्न,
हरेक व्यवस्था सीमा खोलय।
व्यक्ति अकेला स्वतन्त्र नहि
जँ दोसरा सभ केवल बाधा;
साँच स्वतन्त्रता नियमहीन
इच्छाक तुरन्त छलाँग नहि आधा।
परिवारक नेह, समाजक श्रम,
नियम, अधिकार, साझा मान;
एहि संस्थागत सम्बन्ध भीतर
स्वतन्त्रता पाबय ठोस स्थान।
कानून यदि पराया डंडा मात्र,
मन अपनहि जगसँ कटि जाय;
मुदा न्याययुक्त नियममे जखन

अपन विवेकक स्वर सुनाय—
 तखन 'हम' आ 'सभ'क दूरी
 पूर्ण विरोध नहि रहि जाय;
 निज इच्छा व्यापक हित भीतर
 अपन उच्चतर अर्थ पबाय।
 इतिहास राजाक गाथा मात्र नहि,
 स्वतन्त्रताक बोधक परिवर्तन;
 जे युग किछु अधिकार चिन्हय,
 अगिला युग पूछय शेष बन्धन।
 मुदा इतिहासक हरेक घाव केँ
 प्रगतिक फूल कहब अनुचित;
 पीड़ा अपन सत्यता राखय,
 विवेकक न्याय रहय सचेत।
 समग्रता यदि व्यक्ति निगलय,
 ओ पूर्णता नहि, नया कारा;
 पूर्ण कहल ओ जे भिन्न स्वर केँ
 सम्बन्धमे देत खुलल किनारा।
 कला रूपमे सत्य देखाबय,
 भाव, प्रतिमा, स्वरक प्रकाश;
 आस्था प्रतीक भीतर खोजय
 असीम अर्थक निकट निवास।
 विचार फेर अवधारणा भीतर
 एहि सत्य केँ स्वयं बुझय;
 जे अलग-अलग रूपमे चमकल,
 एक सम्बन्धित समग्र बनय।
 पूर्णता आरम्भक मौन बिन्दु नहि,
 यात्राक फल, स्मृतिक संगम;
 जे जे चरण पारि कएल गेल,
 सभक सत्य पाबय नव संगम।
 विरोध तऽ विनाशक आगि मात्र नहि,
 जँ विवेक ओकर मर्म पढ़य;
 अपूर्णता अपन सीमा कहिते
 अगिला पूर्णतर रूप गढ़य।
 मुदा कोनो अंतिम गर्वक छत पर
 प्रश्नक पवन रोकल नहि जाय;
 जीवित बुद्धि अपन उपलब्धि केँ
 फेर इतिहास भीतर जाँचि आय।
 विरोधक गर्भसँ पूर्णताक यात्रा,

नकार भीतर संरक्षणक बीज;
अपने केँ दोसरा बीच पहचानि
स्वतन्त्रता पाबय सामाजिक नीज।
जगत, चेतना, इतिहास, सम्बन्ध—
सभ चलैत संवादक धार;
सत्य जँ जीवित समग्र अछि,
ओ बनैत-बनैत खोलय द्वार।

खण्ड ८

सन्देह, अनुभव, इतिहास आ न्याय

सन्देहक दीप सँ निश्चयक आकाश धरि

पुरान विश्वासक देहरी पर प्रश्नक एकटा दीप जरल,
 “जे मानल गेल, से सत्ये हो”—ई सहज भरोस टूटि पड़ल।
 ज्ञानक घर फेर बनत, मुदा पहिने नींव जाँचल जाए,
 एक-एक ईंट पर बुद्धि अपन प्रकाशक अँगुरी धरि जाए।
 जटिल गाँठ केँ छोट-छोट सूत्रमे खोलबाक नेम बनल,
 सरल सँ कठिन दिस बढ़बाक अनुशासन मनमे पलल।
 गणनाक स्पष्टता, रेखाक नाप, क्रमक निर्मल चाल—
 चिन्तन चाहलक अपन बाट, धुँध सँ अलग उज्ज्वल भाल।
 आँखि कहै—“देखलहुँ”, कान कहै—“सुनलहुँ”—तइयो भ्रम होइ,
 दूरक आकार बदल, सपनामे जागल जीवनों सम होइ।
 इन्द्रिय यदि कतहु ठकबैत अछि, तकरा सम्पूर्ण न्याय नहि,
 सत्यक खोजी मन कहलक—“अहाँक साक्ष्य एखन पर्याप्त नहि।”
 सन्देह बढ़ल—देह, जगत, स्मृति, गणना धरि प्रश्न उठल,
 मिथ्या संभव मानि बुद्धिक सभ परिचित आसन हिलल।
 मुदा जखन सभ शंका भीतर एक बेर एकत्रित भेल,
 शंका करैत चेतन अस्तित्व स्वयं नकारल नहि गेल।
 एहि ठाम आत्मा देहक छाया नहि, सोचक ज्योति बनि उठल,
 जानब, नकारब, मानब, चाहब—सभ चेतनाक रूपमे जुटल।
 बाहरक संसार पाछाँ आए, पहिने भीतरक साक्ष्य ठाढ़,
 मन अपन उपस्थितिक चिन्ह स्वयंमे पाबि बनल अधिक गाढ़।
 विचार सभ एकहि बाट सँ नहि अबैत—किछु बाहरक आभास,
 किछु कल्पनाक गढ़ल आकृति, किछु मनमे गहिर प्रकाश।
 पूर्णता, अनन्तता, सत्यक एक असीम अवधारणा,
 सीमित चेतना पूछए—“कोन मूल सँ आयल ई सम्भावना?”
 जे अपूर्ण अछि, से पूर्णताक असीम बीज कतय सँ पाबै?
 सीमित कारण अनन्त चिन्हक सम्पूर्ण भार कोना उठाबै?
 एहि प्रश्नक पाँति सँ ईश्वरक सिद्धि दिस बुद्धि बढ़ल,
 पूर्ण सत्ता केँ सत्यक आधार मानि संशयक घेरा घटल।
 यदि परम सत्य छलिया नहि, स्पष्ट बोध व्यर्थ नहि होइ,
 जे बात निर्मल बुद्धिमे फूटै, ओकर विश्वसनीयता खोइ नहि।
 एहि भरोस पर गणित, प्रकृति, बाह्य जगत फेर ठाम पबैत,
 निश्चितताक टूटल पुल पर तर्क नव पटरी बिछबैत।
 पदार्थक मूल परिचय रंग-गन्ध नहि—विस्तार, आकार, गति,
 मापल जा सकैत जगतमे गणितक बनल नूतन संगति।

प्रकृति मानो नियमक घड़ी, पुर्जा-पुर्जा क्रममें चलैत,
कारणक अनुशासन भीतर घटना अपन रूप बदलैत।
मनक धर्म चिन्तन, देहक धर्म विस्तार—दू भिन्न आधार,
एकटा नहि घेरै स्थान, दोसर लेत आकार-प्रसार।
एतय दर्शन दू ध्रुव बनौलक—चेतना आ भौतिक देह,
मुदा प्रश्न बचल—दू अलग सत्ता कोना करैत परस्पर नेह?
पीड़ा देहमें उठै त मन कियैक तुरन्त व्याकुल होइत?
मन निर्णय लेत त हाथ-पयर कियैक ओकर आज्ञा ढोइत?
सम्बन्धक ई सूक्ष्म गाँठ सिद्धान्तक कठोर देवाल हिलबैत,
द्वैतक तेज उजासक संग एक गहिर छाया सेहो बनबैत।
त्रुटि ज्ञानक स्वभाव नहि—मानव निर्णयक असावधानी,
बुद्धि जतबा देखै, इच्छा ताहूँ सँ आगाँ दौड़ै अनजानी।
अस्पष्ट बात पर हँकार भरलहुँ त भूलक द्वार खुलैत,
संयमित स्वीकृति सत्यक बाट पर मन केँ दृढ़ रखैत।
स्वतन्त्र इच्छा गौरव सेहो, उत्तरदायित्वक भारो,
चुनबाक सामर्थ्य प्रकाश बने, यदि विवेक रहै संग सारो।
अधजल ज्ञानक तीव्र आग्रह सँ भ्रमक बादर घेरि सकै,
स्पष्टता धरि ठहरल निर्णय सत्यक नजदीक फेरि सकै।
एहि दर्शन विज्ञानक भाषा में रेखा, संख्या, नियम भरल,
पुरान अधिकारक बदला तर्कक स्वाधीन आसन गढ़ल।
मनुष्य केँ कहल—“स्वयं जाँचू, कारण माँगू, क्रम सँ चलू”
ज्ञानक सम्मान परम्परा मात्र नहि, विवेकक कसौटी पर तुलू।
तइयो सभ उत्तर अन्तिम नहि—ई विरासत प्रश्नो देलक,
मन-देहक फाँक, ईश्वरक तर्क, जन्मजात विचार पर विवाद फेलक।
आगाँक दार्शनिक सभ एहि उजास सँ सहमति-असहमति बुनल,
केओ अनुभव चुनलक, केओ बुद्धि—मुदा प्रश्न करबाक साहस सुनल।
एतेक भरि संदेश नहि जे शंका मात्र अपनाउ,
शंका केँ साधन बनाउ, मुदा अन्ध संशयमें नहि समाउ।
जाँचल विश्वास, अनुशासित बुद्धि, स्पष्ट विवेकक संग,
अज्ञानक राति चीरि उठै ज्ञान—प्रश्नहि सँ पाबै नूतन रंग।

अनुभवक धार पर कारणक प्रश्न

ज्ञानक अँगना प्रश्न उठल—“पहिल उजास कतय सँ अबैत?”
मन जे जानै, की सभ अनुभवक देहरी पार कऽ भीतर जाएत?
अमूर्त महल सँ नहि, जीवनक स्पर्श सँ विचारक बीज फूटै,
देखल-सुनल-अनुभूत क्षण सँ चेतनाक पाँखि धीरे-धीरे छूटै।

तीव्र जे अनुभूति उपस्थित—रंग, पीड़ा, सुख, तापक धार,
ओहि प्रथम प्रहारक छाया बनि विचार आबै पाछाँ बारम्बार।
स्मृति ओ कल्पना चित्र सँजोए, मुदा मूल तेज कमि जाइ,
छाप प्रखर, विचार मन्द—ज्ञानक ई भेद मनक भीतर समाइ।
सरल अनुभूति मिलि-मिलि कऽ जटिल रूपक घर बनबैत,
मन स्मृतिक कारीगर बनि अनेक खण्ड केँ संग-संग सजबैत।
जे कखनो सोझ भेटल नहि, तकर रूपो मन गढ़ि सकैत,
मुदा गढ़बाक सामग्री अन्ततः अनुभवक कोठरी सँ अबैत।
विचार एक-दोसरासँ जुड़ै—सादृश्य, समीपता, क्रमक डोर,
एक स्मृति दोसर केँ बजबैत, चेतना चलै अनदेखल ओर।
कारण-कार्यक परिचित जोड़ी सेहो एहि संगतिक बाट चलै,
मुदा 'कियैक अनिवार्य एहन हो'—एहि ठाम प्रश्नक अंकुर पलै।
आगि लगल त ताप भेटल, पाथर धकल त गति देखायल,
बारम्बार एक घटना पछिला घटनासँ संग-संग आयल।
हम देखलहुँ अनुक्रम, मुदा कोन अदृश्य बन्धन आँखि पकड़लक?
'आवश्यक सम्बन्ध' नामक गाँठ अनुभवक कोन रंगमे चमकलक?
मन अभ्यस्त भेल—काल्हि जे भेल, आइयो सेहेन होएत,
एहि आदतिक सहज भरोस पर भविष्यक अनुमान सोएत।
सूर्य उगैत रहल, तें फेर उगत—विश्वासक ई मानवी चाल,
तर्कक कठोर प्रमाण नहि, पुनरावृत्तिक दीर्घ परिचयक जाल।
प्रकृतिक एकरूपता मानि विज्ञान गणनाक पथ पर बढैत,
मुदा ओकर अंतिम औचित्य पूछिते तर्कक भूमि डगमग करैत।
भूत सँ भविष्य दिस छलाँग लगब मनक व्यवहारिक शक्ति,
जीवनक लेल अपरिहार्य, मुदा नहि पूर्ण तार्किक युक्ति।
चमत्कारक कथा जखन सामान्य अनुभवसँ दूर चलि जाए,
विवेक कहै—साक्ष्य केँ तौलू, विश्वास तुरन्त नहि बनि जाए।
जे नियमक विरुद्ध कथन अछि, ओकर प्रमाणो भारी चाही,
गवाही, संभावना, अनुभव—सभक तुलनामे बुद्धि राहि।
ईश्वर, आत्मा, जगत—सभ प्रश्न पर अनुभवक पहरा कठोर,
जे अवधारणा लेल मूल छाप नहि, तकरा पर उठै संशयक शोर।
असीम सत्ता, द्रव्य, आत्मस्वरूप—शब्द मात्र सँ सत्य नहि होइ,
विचारक वंशावली खोजू—कोन अनुभूति ओकर पाछाँ रोइ?
'हम' कहै छी जकरा, की से एक अटल दीप सदा जरैत?
भीतर ताकू—क्षण-क्षण अनुभूति, चाह, स्मृति, वेदना फेरैत।
स्थायी आत्मा हाथ नहि अबैत, भेटै अनुभवक बहैत समूह,
स्मृति आ सम्बन्ध सँ गूँथल व्यक्तित्वक बदलैत रूप-अनुरूप।

पहिचानक सूत्र समयक पार मन स्वयं जोड़ि बनबैत,
 अनेक दृश्यक प्रवाह केँ एक कथा मानि नाम एके दैत।
 जकाँ रंगमंच पर दृश्य बदलै, अभिनेता रूप बदलि जाए,
 तहिना चेतन-धारा चलैत—‘एक आत्मा’ प्रश्नक घेरे आए।
 स्वतन्त्रता पर कठोर विरोधक काठ नहि धरू,
 मानवी कर्म कारणसँ जुड़ल, तइयो इच्छा अपन गति करथि।
 बाहरी बाधा नहि हो त निर्णय अनुसार कर्म सम्भव होइ,
 कारणबद्ध संसारमे व्यवहारिक स्वतन्त्रता नष्ट नहि होइ।
 नैतिकता केवल शुष्क तर्कक उज्जर दीवाल नहि बनैत,
 मानव हृदयक संवेदना सदाचारक अर्थक रंग चढ़बैत।
 सहानुभूति, उपयोग, सुख-दुःखक साझा मानवी अनुभव,
 नीति केँ जीवित धरती दैत—भावना आ विवेकक संयुक्त स्वर।
 अत्यन्त संशय जीवनक गति रोकै—ई जीवन स्वयं बुझबैत,
 भोजन, मित्रता, व्यवहार, समाज—प्रकृति फेर मन केँ धरैत।
 दार्शनिक कक्षमे प्रश्न प्रखर, बाहर जीवन अपन चाल चलै,
 संशय उपचार बने, नहि एहन विष जे हरेक विश्वास निगलै।
 एहि दार्शनिक दृष्टि ज्ञानक सीमा केँ छोट करबाक नहि गीत,
 अपितु प्रमाणक भार बुझब, दम्भ छोड़ब, प्रश्न करबक रीति।
 जतय अनुभव पहुँचै ओतय ठाढ़ होउ, आगाँ अनुमान चिन्हाउ,
 निश्चितता आ संभावना बीच भेदक सूक्ष्म रेखा बचाउ।
 अनुभवक पथ कहै—मनुष्य ज्ञानक स्वामी कम, साधक बेसी,
 आदत, अनुभूति, स्मृति, भाषा—सभ मिलि रचैत बुद्धिक देशी।
 कारणक अदृश्य बन्धन नहि, ओकर अपेक्षा मनक अभ्यास,
 एहि विनम्र प्रश्न सँ आधुनिक चिन्तन पबैत नव उजास।

रूपक परदा सँ अखण्ड यथार्थ धरि

जे देखाइत अछि, से सभटा अन्तिम सत्य नहि,
 तइयो देखाइत जगत केँ केवल भ्रम कहब उचित नहि।
 रूपक परदा भीतर किछु यथार्थक धड़कन रहैत,
 तत्त्वमीमांसा ओहि धड़कनक अखण्ड स्वर खोजैत।
 वस्तु कहू, गुण कहू, सम्बन्धक डोरि बान्हू,
 बुद्धि नाम देत, भेद करैत, खण्ड-खण्ड संसार जानू।
 मुदा जखन एक गुण दोसरासँ सम्बन्धमे अर्थ पबैत,
 तखन स्वतन्त्र ठाढ़ प्रत्येक खण्ड अपन सीमा देखबैत।
 सम्बन्ध जोड़ै सेहो, अलग करै सेहो—ई दूहरी चाल,
 एक केँ दोसरासँ बाँधिते फेर उठै अनन्त प्रश्नक जाल।
 यदि सम्बन्धो एक वस्तु अछि, ओकर सम्बन्ध केकरा संग?
 विचारक सीढ़ी चढ़िते-चढ़िते फेर खुलै विरोधक रंग।

एहि विरोध सँ यथार्थ कै नहि करू अस्वीकार,
 मन कहै—हमर श्रेणी सीमित, अन्तिम सत्य अधिक विस्तार।
 जे अवधारणा अपन भीतर स्वयं कै काटि दैत अछि,
 से पूर्ण सत्य नहि; ओकर पाछाँ किछु समग्रता रहैत अछि।
 अवरोध मात्र सूखा नियम नहि, यथार्थक एक कसौटी,
 जतय अनुभवक भिन्न स्वर मिलि पाबथि सामंजस्यक ज्योति।
 अन्तिम सत्य एहन अखण्डता, जाहिमे किछु बाहर नहि,
 भेद रहैत रूप बदलि, मुदा विखण्डनक अन्तिम अधिकार नहि।
 तें ‘परम’ कोनो रिक्त आकाश वा जड़ एकरूपता नहि,
 अनुभवक सभ रंग समेटनिहार, जीवन-विरहित शून्यता नहि।
 जे सीमितमे टकराव बनैत, समग्रमे रूपान्तरित भऽ जाए,
 दुःख-सुख, विचार-अनुभूति उच्चतर मेलमे अर्थ पाबि जाए।
 तत्काल अनुभूतिक एक क्षणमे विषय-विषयी भेद कम,
 पहिने जीवन एकरस धारा, पाछाँ बुद्धि करै विभाजन क्रम।
 विचार सुविधा लेल सीमा खींचै, नामक चौखट ठाढ़ करै,
 मुदा सत्य चौखटसँ पैघ—प्रत्येक सीमा पारि बहै।
 विचार आवश्यक साधन अछि, अन्तिम घर नहि,
 ओ प्रश्नक दीप जरा सकै, मुदा पूर्ण अनुभवक स्वर नहि।
 अपन अपूर्णता पहचानि विचार स्वयं आगाँ संकेत करै,
 जे कहि नहि सकै सम्पूर्ण, ओकरा दिस चुप्पे बाट धरै।
 आत्मा कहिते की केवल देहक सीमामे ‘हम’ समाइ?
 की स्मृति, इच्छा, अनुभूति मिलि एक पहचान बनाइ?
 की प्रत्येक क्षण अलग होइतहुँ किछु सातत्य रहि जाए?
 एहि प्रश्न सँ मनुष्यक भीतर अनेक तह खुलि जाए।
 देह हमर अनुभवक एक रूप, मुदा ‘हम’ देहे धरि समाप्त नहि,
 भाव, स्मृति, सम्बन्ध, चाह—सभ बिनु आत्म-चित्र पूर्ण नहि।
 जकरा हम स्थायी ‘स्व’ मानि सहज एक नाम दैत छी,
 ओ बहु अनुभवक संगठन, बदलैत केन्द्र रूपेँ भेटैत छी।
 व्यक्तिगत आत्मा सत्यक अंश, मुदा परम सत्य स्वयं नहि,
 ओकर सीमा, ओकर विरोध, ओकर निजी दृष्टि सभ अन्तिम नहि।
 हम अपन केन्द्र सँ जग देखी, जग हमरा सँ पैघ रहैत,
 अनेक केन्द्रक अनुभव अन्ततः व्यापक समग्रतामे बहैत।
 स्मृति कालक टूटल मोती कै एक सूतमे फेरि पिरोए,
 इच्छा भविष्यक दिशा बनबैत, अनुभूति वर्तमान सँ जोड़े।
 एहि क्रममे आत्म-पहचान व्यवहारक दृढ़ आधार बनै,
 मुदा दार्शनिक दृष्टिमे ईहो परमक एक सीमित आकार बनै।

निर्णय आ विचार जखन जगत केँ विषय-विधेयमे बाँटै,
तखन सत्यक उपयोगी नक्शा बनै, पर पूर्ण प्रदेश नहि छाँटै।
शब्द आ तर्क संकेत करथि—जे कहबासँ बेसी किछु अछि,
यथार्थक जीवित समग्रता चिन्हक पाछाँ निरन्तर बचि अछि।
अपरिपूर्णता यथार्थसँ निर्वासित नहि, ओकर डिग्री कहल जाए,
किछु रूप बेसी संगत, किछु विरोधमे घेरल रहि जाए।
जे जतेक व्यापक सामंजस्य धरै, ततेक यथार्थक नजदीक,
सत्य एकहि झटके नहि, अनुभवमे गहिराइ पाबै अनेक रेख।
विरोधक बीच कठिन पुकार—देखि तुरन्त नहि भागू,
नहि रूप केँ परम मानू, नहि रूप केँ शून्य कहि त्यागू।
सीमित सत्यक सीमा बूझि ओकर अंशक मान रखू,
खण्डक भीतर समग्रक आहट सुनू, प्रश्नक दीप जाग्रत रखू।
ई बाट अन्ततः ‘हम’ केँ स्वयं सँ पैघ बनबैत,
निज आत्मा केँ अखण्ड अनुभवक विस्तृत धरातल पर देखबैत।
रूप बदलै, सम्बन्ध टूटै, विचार अपन सीमा स्वीकारै,
मुदा यथार्थक समग्र संगीत सभ विरोध केँ रूपान्तरित करै।

शब्दक गाँठ सँ तथ्यक उजास धरि

दर्शन जखन अमूर्त कुहासामे अपन बाट बिसरि जाइ,
विश्लेषण प्रश्नक पैघ छुरा नहि—सूक्ष्म सूत बनि गाँठ खोलाइ।
शब्द, विचार, तथ्य, अनुभव—केकर सीमा कतय ठाढ़?
प्रश्न फेर उठै—कथनक पाछाँ कोन आधार?
विश्लेषणक अर्थ केवल भाषाक टुकड़ा-टुकड़ा करब नहि,
नहि प्रत्येक दार्शनिक प्रश्न केँ शब्दक खेल कहब सही।
कखनो तथ्यक रचना जाँचब, कखनो अनुभवक रूप,
कखनो अवधारणाक भेद बुझब—एहि सँ खुलै अर्थक स्वरूप।
परमाणुवादी सपना—जगत अनेक तथ्यक मेल,
जतय मूल कथन स्वतन्त्र ठाढ़, नहि एक-दोसरक दास वा खेल।
सरल वस्तु, सरल सम्बन्ध, ताहि पर वाक्यक रूप बनै,
जटिल कथन छोट आधारक तार सँ क्रमशः गाँथि उठै।
नाम यदि साँचो नाम हो, तकर संकेत किछु ठोस चाही,
जकरा दिस ओ अँगुरी उठबैत, ओ अनुपस्थित हो त अर्थ कतय रही?
एहि कठोर शर्तक भीतर ‘परिचय’ पाबै विशेष मान,
जे प्रत्यक्ष रूपेँ भेटल चेतनाकेँ, ताहि सँ जुड़ै नामक प्राण।
मुदा सभ वस्तु प्रत्यक्ष नहि—बहुत किछु विवरण सँ जानल जाए,
दूरक लोक, अनदेखल वस्तु, संबंधक पथ सँ मन धरि आए।
नाम आ विवरण एक नहि—एहि भेदक सूक्ष्म विधान,
भाषाक सतह हटबिते देखाइ तर्कक भीतरी निर्माण।

‘वर्णन’ कहै—एकटा एहन वस्तु, जकर गुण सभ शर्त सम्पूर्ण करै,
 नाम बिनु सेहो कथन अर्थवान बनि सत्य-असत्यक बाट धरै।
 एहि उपाय सँ अनुपस्थित राजा, कल्पित पात्र, विवादक भार,
 तर्कक संरचना भीतर जाँचल जाए—नहि भ्रमक अन्हार।
 मुदा भाषा जीवनमे चलैत अछि पुस्तकक प्रयोगशाला सँ पैघ,
 सामान्य बोलचालक नाम, संकेत, प्रसंग—सभक चाल अलग-अलग ढंग।
 आलोचनात्मक प्रश्न उठै—जे सिद्धान्त बने अति कठोर,
 की ओ दैनिक भाषाक बहुरंगी प्रयोग सभ केँ समेटि सकत चहुँओर?
 ‘सरल’ की गुणक नाम, की रचनाक ढाँचा, की विश्लेषणक अन्त?
 एक विषय जकरा आइ सरल कही, काल्हि खुलि सकै ओकर भीतरक ग्रन्थ।
 तें सरलता केँ वस्तुक स्थायी छाप बनायब कठिन,
 विश्लेषण पद्धति सशक्त ठीक, मुदा अन्तिम सीमा सदियन अनिश्चित।
 संवेदनाक रंग, स्पर्श, ध्वनि—मनक निकटतम परिचय,
 कखनो एहि आधार सँ बाहरी जगक रचना करबाक निश्चय होइ।
 मानसिक आ भौतिकक सीमापर प्रश्न फेर जन्म लैत,
 अनुभूत अंश सँ पदार्थक व्यवस्था कोना बनत—तर्क ओहि दिस जाइत।
 ‘निष्पक्ष’ तत्वक कल्पना सँ मन-पदार्थक फाँक घटेबाक चाह,
 एकहि मूल सामग्री सँ अनुभव आ बाह्य जग पाबथि अलग-अलग राह।
 तइयो सम्बन्ध, क्रम, पहचानक कठिन प्रश्न नहि मरै,
 व्यवस्था बनबिते दर्शन फेर पूछै—कुन सूत्र सभ केँ संग धरै?
 सत्य पर विचार अनेक बेर अपन रूप बदलैत,
 कखनो प्रतिज्ञा आ तथ्यक मेल, कखनो सम्बन्धक गाँठ खोलथि।
 यदि कथन सत्य, तकर पाछाँ जगतमे किछु स्थिति अवश्य,
 मुदा कथन आ तथ्य एकहि वस्तु नहि—एहि भेदक प्रश्न विशेष।
 नकारात्मक कथनक सत्य जखन समक्ष आबि ठाढ़ होइ,
 की जगतमे ‘नकारात्मक तथ्य’ सेहो स्वतन्त्र रूपेँ कोनो वस्तु होइ?
 असत्य कथन, विकल्प, निषेध—तर्कक छोट शब्द पैघ भार,
 विश्लेषण देखबैत अछि—भाषाक सरल मुख पाछाँ गहिर संरचनाकार।
 सत्य केवल शब्दक भीतर नहि, नहि मनक इच्छा मात्र,
 जगतसँ ओकर किछु सम्बन्ध चाही—एहि धुरी पर चलै विचारक यात्रा।
 मुदा प्रतिबिम्ब जकाँ हूबहू समानता आवश्यक नहि,
 तथ्य-प्रतिज्ञात्मक सम्बन्ध बुझब—एहि ए ठाम दार्शनिक कठिनाई सही।
 कारणताक पुरान धारणा पर फेर प्रहार उठै,
 ‘कारण’ नामक अदृश्य डोर छोड़ि नियम-संबंध पर नजर धरथि।
 विज्ञान बहुत बेर कार्य-कारणक सरल कथा सँ बेसी कहै,
 परिमाणक परिवर्तन, नियमक सूत्र—घटनाक परस्पर चाल गहिर बहै।

आलोचना कहै—कारण केँ एकदम निष्कासित करब सेहो सरल नहि,
घटना-क्रमक व्याख्या, स्मृति, व्यक्तिक व्यवहार—सभमे प्रश्न बचल रही।
नियम आ सहसम्बन्ध उपयोगी, मुदा ‘कियैक’क प्यास समाप्त नहि,
विश्लेषणक विजय ओतहि, जतय सीमा स्वीकारल जाए—दावा असीम नहि।
अन्तर्निहित गुण आ सम्बन्धजन्य रूप—दूनू सँ वस्तु चिन्हाइ,
किछु गुण वस्तुक भीतरक, किछु दोसरासँ सम्बन्धमे अर्थ पबाइ।
एहि भेद सँ ‘यथार्थ’क मापदण्ड खोजबाक प्रयास होइ,
दर्शन वस्तु नहि गढ़ै, मुदा हम जे कहैत छी तकर आधार जाँचि लइ।
विश्लेषणक विरासत कोनो एक सिद्धान्तक बन्द कोठरी नहि,
ई प्रश्न करबाक अनुशासन—‘कथन स्पष्ट अछि?’ ‘आधार कतय?’—एहि सँ गहिरी।
तत्त्वमीमांसा, भाषा, विज्ञान, सत्य—सभ पर नूतन दृष्टि पड़ल,
विश्लेषणक दीप सँ आधुनिक दर्शनक अनेक नव बाट खुलल।
शब्दक गाँठ खोलू, मुदा शब्दे केँ जगत नहि मानू,
तथ्यक खोज करू, मुदा प्रत्येक रचना केँ अन्तिम सत्य नहि जानू।
परिचय, विवरण, प्रतिज्ञप्ति, कारण—सभक सीमा बूझि चलू,
स्पष्टता केँ साधन बनाउ—प्रश्नक स्वतन्त्र अग्नि सदखन जरि रहलू।

हाथक प्रमाण सँ विश्लेषणक सीमा धरि

विश्लेषणक इतिहासमे जरल एकटा निर्मल प्रश्नक दीप,
आलोचना फेर जाँचै तर्क—कतय दृढ़, कतय अधूर चित्र-रेख।
प्रत्ययवादक कुहासा हटब, लोक-बुद्धिक धरती बचाएब,
अमूर्त वस्तु आ विश्लेषणक सीमा—चारि बाट पर प्रश्न जगाएब।
“जे अनुभवमे अछि, से चेतनामे अछि”—एहि सूत्रक भीतर गाँठ,
प्रश्न उठै—अनुभूति आ विषय की एके? की दू अलग-अलग ठाठ?
नील रंगक अनुभवमे ‘नील’ आ ‘जाननाइ’ एक नहि होइ,
चेतना जकरा दिस खुलैत अछि, विषय ओकरा सँ भिन्न रहि सकै सोइ।
एक प्रत्ययवादी सूत्र जखन अस्तित्व केँ अनुभूतिसँ पूर्णतः बाँधि देत,
तर्क ओकर समताक पाछाँ लुकल छलाँगक लेखा लेत।
‘संवेदना’ कहिते चेतना आ विषयक भेद यदि मिटि जाए,
तखन देखल वस्तु, देखनिहार चेतना—दूनूक स्वतन्त्र अर्थ कतय पाबय?
लक्ष्य नहि प्रत्येक संशय केँ एक चोटिमे हराएब,
अपितु आदर्शवादी दावाक भीतर असिद्ध अनिवार्यता देखाएब।
जे अनुभवक विषय अछि, से चेतनासँ अभिन्न अवश्य नहि,
दृश्य जगत मनक मात्र प्रतिरूप—एहन निष्कर्ष स्वयं सिद्ध नहि।
आन्तरिक सम्बन्धक सिद्धान्तो पर उठल तीख प्रश्न,
की हरेक गुण दोसर गुणसँ एतेक बन्हल जे अलग सोचब असम्भव सर्वथा?
वस्तु जकर गुण बदलिए, ताहि सँ सम्पूर्ण वस्तु नष्ट हो—ई अनिवार्य नहि,
सम्बन्धक जाल महत्त्वपूर्ण, मुदा हरेक भेदक स्वतन्त्रता मिथ्या नहि।

विशिष्ट वस्तु गुणसँ पहिचानल जाए, तइयो गुणक सूची वस्तु नहि,
 पुस्तकक रंग, आकार, स्थान—सभ बदलि सकै; ‘पुस्तक’ केवल सूची नहि।
 वर्णनक सीमा बुझब आवश्यक—जे अछि, ओकरा शब्द सम्पूर्ण नहि घेरि सकै,
 विश्लेषण वस्तुक नक्शा बनाबै, वस्तु स्वयं नक्शामे समा नहि सकै।
 फेर लोक-बुद्धिक देहरी पर ठाढ़ संसारक सहज विश्वास,
 बहुत भौतिक वस्तु अछि, मन अछि, चेतन प्रक्रिया अछि—ई सामान्य आभास।
 मनुष्य, शरीर, पशु, पर्वत, पानी—व्यवहारक जग मे ठोस ठाम,
 दार्शनिक सिद्धान्त यदि सभटा नकारै, पहिने ओ सिद्ध करौ अपन दाम।
 सामान्य बुद्धि अन्ध परम्परा नहि—जीवनक दीर्घ परीक्षित धरातल,
 जकरा पर भाषा, स्मृति, काम-काज, दोसर मनक भरोसक बनल महल।
 संशय सम्भव अछि, मुदा प्रत्येक निश्चित विश्वास केँ एक संग डुबाएब,
 आलोचना देखै—एहि रक्षा भीतर साहस अछि, संगहि किछु कठिन प्रश्न बचाएब।
 दू हाथ उठैत—“ई एक हाथ, आ ई दोसर”—बाह्य जगक प्रमाण,
 अतीतमे सेहो हाथ छल, तें कम-सँ-कम दू बाह्य वस्तुक रहल स्थान।
 सरल इशारामे दार्शनिक घमासान—जगत केवल मनक सपना नहि,
 मुदा प्रमाणक शर्त की? सपनाक सम्भावना कतय धरि हटि गेल—प्रश्न एखन बचि।
 प्रश्न उठै—प्रमाणक शक्ति आ ज्ञानक निश्चय एक नहि रेखा,
 जागल छी की सपना देखैत छी—एहि आशंकाको चाही लेखा।
 लोक-बुद्धिक बल देखाइत, तर्कक कठोर अन्त नहि,
 व्यवहारक निश्चय आ दार्शनिक सिद्धि—दूनू सदिखन एक नहि।
 तइयो आग्रह गहिर—दार्शनिक प्रश्न केँ ‘बाह्य’ कहि बुझू,
 जगक अस्तित्वक सत्य-मूल्य सिद्धान्त सँ पहिने अनुभवक आधार पर तौलू।
 दर्शन केवल शब्द खोलबाक काज नहि, नहि सत्य-मूल्य तय करबाक हुकुम,
 ओ अवधारणाक सम्बन्ध स्पष्ट करै—एहि सँ बचै तर्कक अनुशासनक सुमन।
 अमूर्त वस्तु पर मत समयक संग बदलैत चलल,
 कखनो प्रत्यय, प्रतिज्ञाप्ति स्वतन्त्र अस्तित्वक रूपमे हुनका लग अटल।
 पाछाँ ओ अधिक सावधान भेलाह—‘अस्तित्व’ साधारण गुण जकाँ नहि,
 जे कहब ‘अस्तित्व अस्तित्ववान अछि’—तर्कक तह पर बात सरल नहि।
 वर्ग, सामान्य, सम्बन्ध—अमूर्त नाम सभ प्रश्नक नव द्वार,
 ‘लाल वस्तु’ अनेक, मुदा ‘लालपन’ केहन सत्ता? ‘वर्ग’क कोन आधार?
 वाक्य कहैत अछि “ई वर्ग अछि”—ताहि सँ वर्ग वस्तु जकाँ ठाढ़ होइत?
 भाषाक व्याकरण सँ अस्तित्वक फैसला करब—एहि छलाँग पर संशय उठैत।
 ‘सफेद वस्तु’ सभमे कोन एक समान तत्व सभ केँ एक बनबैत?
 समानता, मानक, सदस्यता—प्रत्येक उत्तर नव प्रश्न जगबैत।
 सामान्य शब्दक उपयोग स्पष्ट, मुदा अमूर्त सत्ताक मानचित्र कठिन,
 विश्लेषणक शक्ति एतय चमकै, तइयो अन्तिम समाधान रहै अनिश्चित।

प्रतिज्ञप्तिक सम्बन्धो सरल नहि—कथन आ तथ्यक बीच कोन डोर?
 एकहि वाक्य भिन्न काल-प्रसंगमें भिन्न प्रतिज्ञप्ति लए सकै चहुँओर।
 सन्दर्भ, समय, संकेत बदलिते सत्यक विषय बदलि जाए,
 तें वाक्यक आकृति मात्रसँ प्रतिज्ञप्तिक स्वतन्त्र सत्ता सिद्ध नहि होए।
 अन्तिम दिस 'विश्लेषणक फल'—पाँच शर्तक कसौटी धरल जाए,
 विश्लेषित पद उचित हो, कथन सत्य हो, अर्थ-समानता राहि पकड़िथि।
 अर्थ-संरचना स्पष्ट हो, घटक-प्रत्यय सभ समक्ष आबथि,
 मुदा प्रश्न उठै—एहि सभ शर्तक मापदण्ड स्वयं कोन धरती पाबथि?
 यदि विश्लेषण सफल, तकर आवश्यकता कियैक? यदि अर्थ पहिनेसँ ज्ञात,
 आ यदि ज्ञात नहि, समानार्थकता कोना तय हो—एहि विरोधक प्रश्न जाग्रत।
 एक विरोधाभास विश्लेषणक सहज सिद्धान्त केँ हिलबैत,
 'एके अर्थ' कहिते की नव ज्ञान भेटत? एही ठाम दार्शनिक गाँठ कसैत।
 शब्दक विश्लेषण मात्र पर्याप्त नहि—ई सीमा स्वयं समक्ष आबै,
 प्रत्यय, प्रतिज्ञप्ति, तथ्य—भाषासँ पैघ प्रश्नक धरातल जानथि।
 तइयो सूचना अन्ततः शब्दक माध्यमँ आबै—ई तनाव स्मरण कराबै,
 दर्शनक काम स्पष्टता, मुदा स्पष्टताक साधनो अपन सीमा बताबथि।
 ई यात्रा कोनो मतक सर्वत्र विजयक कथा नहि,
 नहि आलोचना सभ प्रश्नक अन्तिम उत्तर देलक।
 एहि उजासमें सहज विश्वासो जाँचू, अमूर्त सिद्धान्तो प्रमाण माँगू,
 विश्लेषण केँ औजार राखू, देवता नहि—तर्कक सीमा संग सत्य जागू।
 हाथक ठोस उपस्थिति सँ अमूर्त वर्गक धुँध धरि यात्रा,
 अनुभूति, जगत, कथन, सामान्य—सभ पर प्रश्नक सतर्क मात्रा।
 विश्लेषण जखन अपन सीमा पहचानै, तखने ओकर उजास निर्मल,
 संवाद कहै—स्पष्टता खोजू, मुदा जटिलता केँ नहि करू सरल।

प्रयोगक बाट पर अर्थक नगर

पहिने भाषा मानो जगतक चित्र—नामक कड़ी, तथ्यक रेख,
 सरल वाक्य वस्तु-स्थिति देखाबै, तर्क जोड़ै अनेक लेख।
 शब्द आ जग बीच ठोस नाता—एहन छल एक आणविक मान,
 मुदा जीवनक बोलचाल पुछलक—की भाषा एतेक भरि पहचान?
 परवर्ती चिन्तन कहलक—भाषा एकरूप यन्त्र नहि,
 एकटा पुरान नगर जकाँ, जाहिमें नव-पथ जुड़ै, पुरान गल्ली रहि।
 कतेको घर, चौक, मोड़, बाजार—सभक ढंग अलग-अलग,
 तहिना भाषा अनेक क्रियाक संग बढ़ैत, बदलैत, रहैत सजग।
 कहब, पुछब, आज्ञा देब, गिनब, वर्णन, कथा, विनोद,
 चित्र बनाब, हिसाब करब, धन्यवाद, प्रार्थना, शोकक बोध।
 प्रत्येक प्रयोग अपन प्रसंगमें अर्थक एकटा जीवित खेल,
 भाषा-क्रीड़ा कहै—शब्द अकेला नहि, जीवनक संग ओकर मेल।

भाषा क्रिया अछि, केवल ध्वनि वा लिखल चिह्नक पाँति नहि,
ओ मनुष्यक साझा जीवन-रूप सँ कटि स्वतन्त्र रहि सकैत नहि।
नियम पुस्तकमे मात्र नहि—व्यवहारमे ओकर चाल बुझाइ,
जेना औजार अपन काज सँ चिन्हाइ, शब्दो प्रयोगमे अर्थ पबाइ।
एके आकारक औजार अलग काज करै, अलग आकार एक काज,
तैं शब्दक अर्थ खोजिते उपयोगक धरती देखू आज।
कोनो गुप्त वस्तु शब्दक भीतर चुपचाप बैसल नहि,
‘अर्थ’ स्वयं कोनो पदार्थ नहि—प्रयोगक रीति सँ ओकर गति सही।
एक शब्दक अनेक उपयोग—तइयो सभ नितान्त बिखरल नहि,
किछु लक्षण एहि खेलमे, किछु ओहि खेलमे—एकहि मूल गुण सभमे नहि।
चेहरा जकाँ कुलक लोकमे आँखि, चाल, हँसी कतहु मिलि जाए,
‘परिवार-सादृश्य’ एहि जाल सँ विविध भाषिक रूप जुड़ि जाए।
‘खेल’ कहिते शतरंजो, दौड़ो, गेंदो—कोन एक गुण सभमे समान?
एकरे खोजमे यदि सार पकड़ी, हाथ सँ फिसलै बहुरंगी विधान।
समानताक ओझरायल रेशा एक-दोसरामे अतिक्रमित होइ,
सामान्य शब्दक शक्ति एतहि—एक सूत्रमे सभ केँ बाँधल आवश्यक नहि होइ।
नाम यदि वस्तु मात्रक टाँगनिहार पट्टी होइत, बात सरल छल,
मुदा लोक-भाषामे नामक उपयोग प्रसंग अनुसार अनेक पल बदलल।
इशारा कऽ ‘ई’ कहब सेहो पहिने सीखल नियमक आसरा लेत,
दिखेबाक क्रिया अर्थ नहि बनबैत, जँ भाषा-क्रीड़ाक धरती नहि भेटत।
शब्द सुनिते मनमे कोनो निजी प्रतिमा उठल—एतबे अर्थ नहि,
अर्थक कसौटी साझा प्रयोग, सार्वजनिक व्यवहार सँ दूर नहि।
चिह्न, वस्तु, मानसिक छवि—एहि तीनक जोड़ मात्र पर्याप्त कतय,
नियमित प्रयोगक सामाजिक पथ पर शब्द पबैत अपन ठाम।
अर्थ आ अर्थायित वस्तु केँ एक मानब—एहि भूल पर प्रश्न उठल,
कखनो नामक अर्थ वस्तु नहि, कखनो वस्तु बदलल त अर्थ नहि मिटल।
सामान्य पद वर्ग, जाति, रूपक जटिल व्यवस्था भीतर बसै,
शब्दक जीवन ओकर उपयोगमे—एक अदृश्य ‘अर्थ-वस्तु’ पकड़ब कठिन रसै।
प्लेटोक अलग आदर्श-वस्तु हो वा मनक भीतर निजी प्रतिरूप,
दूनू पर परवर्ती दृष्टि पूछै—अर्थक व्यवहारिक मानक कोन रूप?
चिह्न जहिया नियमसँ चलै, जहिया लोक ओकर प्रयोग बूझै,
तहिया अर्थ जीवित; अकेला मानसिक छाया अर्थक सम्पूर्ण आधार नहि सूझै।
‘प्रयोग’ आ ‘प्रयुक्ति’क सूक्ष्म भेदो चिन्तनमे ठाम पबैत,
साधनक माध्यमसँ क्रिया एक बात, रूढ़ अभ्यास दोसर अर्थ जनबैत।
कतेक नियम स्पष्ट लिखल, कतेक व्यवहारमे मौन समायल,
भाषा सीखब अर्थ नियमक संग जीवन-पद्धतिक चाल अपनायल।

सतह व्याकरण शब्दक रूप देखाबै—वाक्य कतेक समान लगै,
 गूढ़ व्याकरण ओकर काज, नियम, प्रसंगक भिन्नता खोलि कहै।
 दू वाक्य एके साँचा पहिरि सकै, मुदा काजमे दूर-दूर,
 दार्शनिक भ्रम तखन जन्मै जखन रूप देखिते अर्थ मानि लिअ भरपूर।
 व्याकरण केवल शुद्ध वाक्य लिखबाक पाठशाला भरि नहि,
 ओ अवधारणाक सीमा, प्रयोगक विधान, सम्बन्धक रूपक चिन्ह सही।
 किछु कथन जगतकेँ जाँचि सत्य-असत्य ठहरै, किछु नियम बनि राह देखाबै,
 दूनूक भेद नहि बूझल त तथ्यक प्रश्न नियमक घरमे जा अटकाइ।
 दार्शनिक समस्या कखनो भाषा केँ छुट्टी देतहि समाप्त नहि,
 मुदा भाषिक रूपक भ्रम अनेक बेर प्रश्न केँ अनावश्यक गाँठ बना दैत सही।
 काज सिद्धान्तक नव महल खड़ा करब नहि, अपितु चलन स्पष्ट देखायब,
 जे ठाम शब्द छुटल पटरी सँ, ओहि ठाम ओकर स्वाभाविक उपयोग फेर देखायब।
 दर्शन वर्णन करै—जीवनमे शब्द वास्तवमे कोना चलैत,
 नियम, प्रसंग, व्यवहार, साझा मान्यता कोना अर्थक देह गढ़ैत।
 उदाहरण एक बेर राह देखाबै, फेर उदाहरणक अन्त नहियो होइ,
 जीवित भाषा नित्य बदलैत—एक स्थिर सूत्र ओकर सम्पूर्ण मानचित्र नहि होइ।
 तें भाषिक मोड़ मौन सरलताक पक्षधर मात्र नहि,
 ओ कठिनाई केँ जीवनक जटिल प्रयोगमे फेर सँ रखै—एहि सँ प्रश्न गहिरी।
 कतेक समस्या भाषिक भ्रम, कतेक ओहिसँ पैघ अस्तित्वक छोर छुबै,
 भाषा, सत्ता, ज्ञान—तीनू एक-दोसरासँ जुड़ल राहमे चलै।
 स्पेक्टक विवेचन देखबैत—पूर्व आ परवर्ती चिन्तन पूर्ण विच्छेद नहि,
 चित्रक आग्रह सँ भाषा-क्रीड़ा धरि यात्रा अछि, मुदा प्रश्नक धारा मितल नहि।
 पुरान तर्कक किछु बीज नव रूपमे फेर अंकुरित भऽ उठै,
 विवरण, संरचना, प्रयोग आ जीवन—एक-दोसराक सीमा पर अर्थ फूटै।
 एहि दर्शनक सीख—अर्थ पूछिते शब्द केँ जीवनसँ अलग नहि करू,
 प्रयोग, नियम, प्रसंग, परिवार-सादृश्य—सभक संग ओकर चाल धरू।
 भाषा न दर्पण मात्र, न मनक छाया—ई मानवी क्रियाक विस्तृत संसार,
 अर्थ ओहि संसारक चलैत रस्ता—जतय प्रयोगे खोलै प्रत्येक द्वार।

एकाकी संकेत सँ साझा कसौटी धरि

मनक भीतर उठल अनुभूति—दर्द, क्रोध, स्वादक सूक्ष्म लहर,
 की ओकर लेल बनि सकैत अछि केवल हमर निजी शब्दक शहर?
 जे संकेत हमरे बुझाई, जे नियम हमरे स्मृतिमे बन्द,
 वैयक्तिक भाषाक प्रश्न एतहि खोलै दर्शनक कठिन प्रबन्ध।
 पुरान मत कहै—मन भीतर स्वतन्त्र, देह बाहरी एक आवरण,
 मानसिक अवस्था अपन जगत, शरीरक क्रिया दोसर प्रकारक वर्णन।
 मुदा अनुभूति आ व्यवहारक सम्बन्ध यदि सर्वथा टूटि जाए,
 ‘दर्द’ कहबाक अर्थ आखिर कोन धरती पर अपन कसौटी पाबय?

क्रोध कखनो मुख पर झलकि उठै, कखनो भीतर चुप्पे जरै,
हरेक अनुभूति बाहरी चिह्नमे हूबहू उतरै—ई नियम नहि धरै।
तइयो मानसिक शब्दक शिक्षा जीवनक व्यवहार बीच होइ,
शिशु रोअए, लोक ‘दर्द’ कहए—भाषा एहि साझा भूमि पर सोइ।
बाहरी वस्तुक नाम पर हम सभ मिलि जाँचि सकैत छी,
रंग, आकार, वस्तु, ठाम—दोसर नजरसँ फेरि परखि सकैत छी।
मुदा यदि संकेत केवल एक निजी अनुभूति पर ठाढ़ रहए,
तकर ठीक-बेठीक प्रयोगक निर्णय कोन सार्वजनिक कसौटी कहए?
मानू एक दिन अनोखा अनुभूति उठल, हम लिखलहुँ—‘स’,
फेर जे दिन सेहेन लगल, डायरीमे फेर दर्ज कएलहुँ ‘स’।
मुदा जेना पहिल अनुभूति छल, से स्मृति ठीक अछि की नहि,
जाँचक दोसर बाट नहिऐँ त ‘ठीक लगल’ आ ‘ठीक’ मे भेद रहै की नहि?
नियम यदि हम स्वयं बनाबी, स्वयं बुझी, स्वयं ओकर न्यायाधीश,
भूलक सम्भावना कोना ठाढ़ होयत, जखन नहि कोनो बाहरी साक्षी विशेष?
जे किछु हमरा ठीक लगै, सेहेन यदि ठीक मानल जाए,
नियमक अनुशासन ढहि पड़ै—भाषा केवल निजी छाया बनि जाए।
भाषा मात्र संकेतक सूची नहि, प्रयोगक अनुशासित चाल,
शब्दक अर्थ ओकर जीवन-रूपमे, ओकर व्यवहारक जाल।
नियम मानब तखन संभव, जखन ठीक-बेठीक केर भेद टिकै,
निज स्मृतिक गोल घेरामे ई भेद धीरे-धीरे ओझराइ झिकै।
एहि सँ प्रश्न उठै—दोसरक मन हम कोना बुझि पबैत छी?
की केवल ओकर देहक चेष्टा देखिकऽ अनुमान बनबैत छी?
विमर्श कहै—मानसिक शब्दक सार्वजनिक प्रयोगक परम्परा अछि,
दोसरक पीड़ा बुझब केवल अनुमान नहि, साझा मानवीय व्याकरणक भाषा अछि।
‘हम जानैत छी’—ई वाक्य कोनो निजी चमकक मात्र नाम नहि,
जानबाक प्रयोगो नियमबद्ध, सन्दर्भयुक्त, हरेक ठाम एक समान नहि।
कखनो प्रमाण, कखनो स्वीकृति, कखनो प्रत्यक्षता ओकर आधार,
शब्दक अर्थ बुझबाक लेल चाही ओकर प्रयोगक सम्पूर्ण व्यवहार।
वैयक्तिक अनुभव निश्चय निज अछि—हमर दर्द अहाँ नहि भोगू,
मुदा एतबे सँ निजी भाषा सिद्ध नहि—एहि भेदक सूक्ष्मता जोगू।
अनुभूतिक निजता आ शब्दक निज नियम दू अलग बात,
एकक सत्य दोसरक सम्भावना नहि देत स्वतः सौगात।
कोनो व्यक्ति अपन संकेतक नियम लिखि राखए, फेर स्वयं जाँचए,
मुदा नियमक अर्थ याद करबाक कसौटी यदि स्मृतिये सँ साँचे,
तखन भूलक पहचान फेर स्मृतिये पर निर्भर रहि जाए,
एकहि दर्पण सँ दर्पण जाँचब—एहि गोल चक्करमे कसौटी खोइ जाए।

साझा भाषा हमर अनुभूति मिटबैत नहि, ओकर नामकरण करैत,
दर्द, भय, स्वाद, स्मृति—व्यक्तिगत होइतहुँ सार्वजनिक शब्दमे उतरैत।
शब्द सभ अनुभव समान बनाबै—एहन दाबी सेहो ठीक नहि,
मुदा भिन्न अनुभवक चर्चा लेल साझा प्रयोगक बाट आवश्यक सही।
एहि विमर्श पर आपत्ति सेहो—की वैयक्तिक भाषाक असम्भवता सिद्ध?
की केवल ई देखाओल गेल जे निजी कसौटी रहै अत्यन्त संदिग्ध?
यदि अनुभवक बाहरी अभिव्यक्ति सर्वदा एक-एक संग मेल नहि खाइ,
तखन सार्वजनिक नियम आ निजी अनुभूति बीच सीमा कतय धराइ?
एक प्रतिपक्षी प्रश्न वैयक्तिक सम्भावना फेर उघारै,
जे शब्द सामान्य भाषा सँ आयल, व्यक्ति निजी प्रयोगमे ओकर अर्थ सँवारै।
लोक ओकर उपयोग नहि बुझए, तइयो की प्रत्येक प्रयोग निरर्थक होइ?
विमर्श एतय तर्कक एकहि राह नहि, अनेक विरोधी बाट सँ सोइ।
बाह्य वस्तुक नामो प्रथम बेर सन्दर्भक सहारे सीखल जाए,
फेर पाछाँ बिनु वस्तु समक्ष रहितो शब्द सफलतासँ चलि जाए।
तें स्मृति मात्र निरर्थक नहि, मुदा पहिल प्रशिक्षण सार्वजनिक चाही,
निज प्रयोगक पाछाँ साझा भाषाक पुरान धरती रहैत अछि ताही।
‘हम दुःखी छी’ कहिते की हम अपन भीतर कोनो वस्तु देखैत छी?
की ‘दुःख’ नामक निजी वस्तु केँ पहचानि ओकर रिपोर्ट लिखैत छी?
विमर्श कहै—एहन चित्र हमरा भ्रामक दिशा दिस लए जाए,
दुःखक व्याकरण जीवनमे अछि, आत्मनिरीक्षणक वस्तु-सूची मात्र नहि बनाए।
‘रक्त’ कहै छी रंग देखि, ‘दुःख’ कहै छी अनुभवक विशेष रूप,
दूनू शब्दक प्रयोगक व्याकरण एक नहि—एतय खोलै अन्तरक स्वरूप।
रक्तक वस्तु बाह्य परीक्षणमे, दुःखक अर्थ मानव व्यवहारमे पसरल,
नाम समान भासै, मुदा शब्दक काम अलग-अलग धरातल पर गढ़ल।
तइयो ‘दुःख’ शब्द निजी वाक्यमे व्यर्थ नहि होइत,
‘हमरा दुःख अछि’—एहि कथनमे अनुभूतिक प्रथम-पुरुष स्वर होइत।
मुदा निजी प्रयोगक सम्भावना सार्वजनिक शब्दक विरोध नहि,
साझा भाषाक व्याकरण भीतर व्यक्तिगत स्वर रहि सकैत अछि सही।
वैयक्तिक भाषाक प्रश्न अन्ततः मन आ भाषा दूनू केँ फेर देखबैत,
अर्थ केवल भीतरक चित्र नहि, केवल बाहरी चेष्टा नहि कहबैत।
नियम, स्मृति, व्यवहार, अभिव्यक्ति—सभ मिलि अर्थक क्षेत्र बनै,
व्यक्ति आ समाजक बीच भाषा अपन जटिल सेतु तखन गढ़ै।
निज अनुभूतिक गरिमा राखू, एकाकी काँचमे नहि हराउ,
‘निज’क जड़ि साझा भाषाक माटिमे अछि—ई बात नहि बिसराउ।
ठीक-बेठीक, नियम, स्मृति, संकेत—सभक कसौटी सोचि चलू,
एकाकी मनक मौन सँ साझा अर्थक देहरी धरि प्रश्नक दीप जरलू।

अनुभवक धरती सँ नियमक कसौटी धरि

विज्ञान केवल तथ्यक गठरी नहि, नहि सूत्रक निस्तब्ध पाँति,
 ओ प्रश्न करै—घटना कियैक भेल, कोन नियममे भेटै ओकर भ्रान्ति-शान्ति।
 दर्शन पूछै विज्ञानसँ—तोहर आधार, सीमा, विधि आ प्रमाण कतय?
 ज्ञानक ई दू धार मिलि खोजै—देखल जगक अर्थक बाट कतय।
 अनुभव पहिल धरती, मुदा अनुभव मात्रै विज्ञान पूर्ण नहि,
 दृष्ट तथ्यक संग व्याख्याक चाह—‘की भेल’ सँ ‘कियैक’ धरि गमन सही।
 सिद्धान्त घटना केँ क्रम देत, नियम अनेक प्रसंग जोड़ि दैत,
 विज्ञान अनुभव आ व्याख्या—दूनों पाँखि सँ अपन आकाश छुड़त।
 दर्शन विज्ञानक भीतर लुकल मान्यता सभक लेखा माँगै,
 कारण, नियम, सत्य, संभावना—जे शब्द सहज, तकर अर्थ फेर जागै।
 कोन प्रश्न वैज्ञानिक, कोन सीमा बाहर—ई भेद सदिखन साफ नहि,
 तें विज्ञान-दर्शन निर्णयक प्रहरी नहि, अपितु जाँचक सतत राहि।
 मानवी कर्मक अर्थ बुझबमे केवल बाहरी घटना पर्याप्त कतय?
 इच्छा, प्रयोजन, कारणक रूप—सभ विज्ञानक एके साँचा मानै कतय?
 अलौकिक हस्तक्षेपक दावासँ विज्ञान अपन विधि अलग रखै,
 प्रकृतिक भीतर उपलब्ध सम्बन्धक आधार पर व्याख्याक सूत्र लिखै।
 गणितक घर अनुभवक घर सन नहि—एतय चिन्ह, नियम, निष्कर्षक खेल,
 तर्कक अनुशासन भीतर स्वीकृत आधार सँ निकलै परिणामक मेल।
 गणित सत्य की अनुभवसँ? की परिभाषा, स्वयंसिद्ध, तार्किक रूप?
 एहि प्रश्नमे विज्ञान-दर्शन खोलै निश्चितताक अनेक स्वरूप।
 ‘तीन सौ पैसठ सँ एक घटाउ’—गणना देत उत्तर स्पष्ट,
 मुदा गणितक सत्य संसारक तथ्य सन परीक्षणसँ नहि होइत प्रत्यक्ष।
 औपचारिक भाषा, परिभाषा, स्वयंसिद्ध—सभ मिलि बनबैत संरचना,
 तर्कक वैधता देखै—कथन कोना निकलल, नहि केवल ओकर कल्पना।
 संगति चाही—एकहि तंत्रमे कथन आ निषेध दूनों सत्य नहि बनै,
 पूर्णता चाही—जे सिद्ध हो सकै, विधिक भीतर ओकर बाटो खुलि रहै।
 मुदा गणितक विस्तार देखबैत सीमा—सभ सत्य एके तंत्रमे बन्हाइत नहि,
 निश्चितताक महल दृढ़ ठीक, पर ओकरो भीतर दार्शनिक प्रश्न थमाइत नहि।
 गणित विज्ञानक भाषा बनै, पर विज्ञान गणितें मात्र नहि,
 संख्या, माप, समीकरण देत रूप, मुदा अनुभवक साक्ष्य बिनु अर्थ ठीक नहि।
 मॉडल संसार केँ सरल करै, वास्तविकता केँ सम्पूर्ण निगलि नहि सकै,
 सूत्र प्रकाश देत, मुदा प्रकृतिक प्रत्येक रंग ओकर भीतर समा नहि सकै।
 व्याख्या कहै—घटनाक व्यवस्थित बोध, नहि केवल पुनः वर्णन,
 कारणात्मक, नियमात्मक, कार्यात्मक—अनेक रूपमे होइ स्पष्टीकरण।
 ग्रहक गति हो, तापक बदलाव, जलक रचना—प्रश्नक रूप बदलै,
 एके साँचा सभठाम नहि चलै; विषय अनुसार व्याख्याक बाट निकलै।

नियमात्मक अनुशासन कहै—नियम आ पूर्ववर्ती दशा संग राखू,
तखन निष्कर्ष रूपेँ घटना केँ समझू, तर्कक सम्पूर्ण मार्ग देखू।
व्याख्या तखन केवल कथा नहि, प्रमाणित सम्बन्धक संरचना,
जतय 'कियैक'क उत्तर नियमसँ जुड़ि पाबै तार्किक अनुक्रमणा।
कारणक भाषा लोकप्रिय—'एहि कारणेँ ई घटना भेल',
मुदा कारण मात्र निकट स्पर्श नहि, नियमक पाछाँ व्यापक मेल।
कखनो संभावना शासन करै, निष्कर्ष निश्चित नहि, केवल अधिक संभव,
विज्ञान एहन स्थितियो स्वीकारै—अनिश्चितता भीतर अनुशासित अनुभव।
कार्यात्मक व्याख्या पूछै—ककरा लेल ई गुण, कोन भूमिका निभबैत?
जीवित तंत्रमे अंगक काम, व्यवस्था भीतर फल कोना आबैत?
मुदा उद्देश्यक भाषा सँ सावधानी—प्रकृति केँ मनुष्यक इच्छा नहि दियौ,
कार्य बताउ, पर अदृश्य प्रयोजनक दावाक स्थान स्वतः नहि बनियौ।
अवघटनात्मक व्याख्या जटिल वस्तु केँ अंशमे खोलि देखै,
जल अणुक बात, पदार्थक गुण—सूक्ष्म घटकसँ व्यापक रूप लेखै।
मुदा अंशक गुण मात्र जोड़िते समष्टिक सभ रूप सम्पूर्ण नहि भेटै,
स्तर बदलिते नूतन सम्बन्ध जन्मै—विज्ञान एहि जटिलता केँ चेतै।
पुष्टिकरण प्रश्न करै—साक्ष्य कोना सिद्धान्तक पक्षमे बोलै?
एक उदाहरण कतेक बल देत, विपरीत तथ्य कतेक भरोस तोड़ै?
नियम सार्वभौम कहब सहज, मुदा सीमित परीक्षण सँ अनन्त दाय,
तेँ विज्ञानक स्वीकृति निश्चित मुहर नहि—साक्ष्यसँ बढ़ैत संभाव्य न्याय।
अनुकूल उदाहरण महत्त्वपूर्ण, मुदा ओकर संख्या मात्र निर्णय नहि,
ककरा केँ परीक्षण मानब, कोन भविष्यवाणी जोखिमपूर्ण—ई प्रश्न सरल नहि।
असहज विरोधाभास देखबैत—पुष्टि भाषा आ तर्कक सूक्ष्म खेल,
एकहि साक्ष्य कखनो भिन्न कथनक संग बनबैत अप्रत्याशित मेल।
आगमनक समस्या फेर उठै—बीते घटना सँ भविष्यक भरोस कोना?
प्रकृति एकरूप रहत—ई मान्यता स्वयं अनुभवसँ सिद्ध करब कोना?
तइयो विज्ञान व्यवहारमे आगमन छोड़ि नहि सकै, परीक्षणक क्रम चलै,
नव साक्ष्य आबिते सिद्धान्त संशोधित—ज्ञान अपन विनम्र चाल चलै।
सिद्धान्त स्वीकारब केवल 'सत्य' कहि एक बेर ठप्पा मारब नहि,
संगति, सरलता, फलप्रदता, व्यापकता—सभ कसौटी एकहि भार धरै नहि।
दू सिद्धान्तमे तुलना संभव, मुदा अंतिम मापदण्ड एकरेखा नहि,
विज्ञानक चुनाव तर्क, साक्ष्य आ उपयोगक संयुक्त धरती पर रहि।
प्राकृतिक नियम केँ सत्य-असत्य कहबो प्रश्नक भीतर प्रश्न,
किछु नियम वर्णनात्मक, किछु विन्यासक सूत्र—सभक स्वरूप नहि एकसमान।
नियम सिद्धान्तक भीतर घटनाक सम्बन्ध व्यवस्थित करै,
ओ वस्तु नहि, पर ज्ञानक संरचनामे भविष्यवाणी आ व्याख्या धरै।

विज्ञानक परिभाषा खोजिते सीमाक कठिन प्रश्न समक्ष आए,
 एक स्वर कहै—व्याख्या नियम आ पूर्व-दशाक साम्यसँ बनि जाए।
 मुदा प्रत्येक घटना की एहन साँचा भीतर पूर्ण समा सकै?
 मानवी कर्म, संभावना, कार्य—भिन्न प्रसंग सरल परिभाषा सँ बचि जाए।
 नियतिवाद कहै—यदि नियम पूर्ण, भविष्य कारणसँ बन्हल होए,
 मुदा मानवक इच्छा, आन्तरिक कारण, सामाजिक प्रसंग कोन रूपमे सोए?
 कारणात्मक व्याख्या संभव हो, तइयो स्वतन्त्रताक प्रश्न समाप्त नहि,
 विज्ञानक वर्णन आ नैतिक उत्तरदायित्व एकहि स्तरक विषय नहि।
 अन्तर्भाव कहै—एक स्तरक घटना दोसर स्तरमे समा सकै,
 ताप यांत्रिकीमे, जीव विज्ञान भौतिकीमे—कतेक धरि ई राहि जा सकै?
 उच्चतर गुण केवल निम्नतर अंशक जोड़ नहि—उद्भवक प्रश्न उठै,
 ‘पूर्ण घटाउ’क स्वप्नक समक्ष स्तर-विशेषक नूतन नियम ठाढ़ रहै।
 वर्णन आ व्याख्या बीच सीमारेखा सेहो सदिखन कठोर नहि,
 विशेष गुणक चयन करिते व्याख्याकार बहुत किछु छोड़ैत सही।
 कोनो वस्तुक समग्र वर्णन असम्भव—अनन्त गुण, अनन्त सम्बन्ध,
 तें वैज्ञानिक व्याख्या स्वभावे चयनित, उद्देश्य-सापेक्ष, सीमित बन्ध।
 एहि सीमा कमजोरी नहि—ई विज्ञानक आत्मबोधक चिह्न,
 जे जानै अपन दावाक परिधि, ओही ज्ञान होइ अधिक प्रवीण।
 विज्ञान-दर्शन सिखबैत—प्रमाण माँगू, नियम जाँचू, भाषा स्पष्ट करू,
 मुदा एक सूत्रमे जगत समेटबाक अहंकार सँ सदिखन दूर रहू।
 अनुभवक धरती सँ गणितक आकाश, व्याख्यासँ पुष्टिकरण धरि,
 सिद्धान्तक स्वीकृति सँ सीमा-परिभाषा—प्रश्न चलै एक धारा भरि।
 विज्ञान अंतिम उत्तरक पुस्तक नहि, संशोधनशील खोजक विधान,
 दर्शन ओकर दर्पण—जाहिमे ज्ञान देखै अपन शक्ति, सीमा आ प्रमाण।

वस्तुक आभास सँ चेतनाक अन्तराल धरि

वस्तु जतेक देखाइत अछि, ओतेके भरि वस्तु नहि,
 देखनिहार चेतनाक दिशा बिनु ओकर अनुभूति पूर्ण नहि।
 फिनोमिनोलॉजी कहै—जगतक बात फेर आरम्भ सँ बूझू,
 पूर्वमान्यता कनेक देर कोष्ठकमे राखि, जे प्रकट होइ तकरा सूझू।
 आग्रह उठै—“वस्तु स्वयं दिस लौटू”, मुदा राहि भीतर सँ जाइ,
 कारण हम जे किछु पाबैत छी, चेतनाक क्षितिजमे प्रकट भऽ आइ।
 रंग, आकार, स्मृति, इच्छा, अर्थ—सभ अनुभवक रूप,
 चेतना सदिखन किछु दिस अभिमुख—एहि अभिमुखतामे ओकर स्वरूप।
 ई अभिमुखता केवल आँखिक देखब नहि, मनक प्रत्येक चाल,
 चाहब, डरब, स्मरण करब, निर्णय लेब—सभमे किछु विषयक जाल।
 चेतना रिक्त पात्र नहि, निस्संग जड़ प्रकाश नहि,
 ओ सदिखन “ककरो चेतना”—एहि सम्बन्ध बिनु ओकर परिभाषा नहि।

प्राकृतिक दृष्टिकोणमें जग सहज मानल—“ई अछि”, “ओ अछि”,
 दिनचर्या एहि भरोस पर चलै, प्रश्नक बाढ़ कतहु नहि बहि।
 मुदा दार्शनिक जाँच लेल एहि सहज मान्यताकें रोकि धरू,
 नकारू नहि जगत केँ, बस तत्काल निर्णयक मुहर कनेक देर परे करू।
 एहि विरामक नाम ‘कोष्ठकीकरण’, ‘एपोखे’क अनुशासन,
 जगत मिटल नहि, बदलल केवल ओकर प्रति हमर दार्शनिक आसन।
 “अस्तित्व अछि कि नहि”—एहि विवादक पहिने प्रश्न एहि बेर,
 “हमरा अनुभवमें ई कोना प्रकट?”—एहिँ सँ खुलै चेतनाक फेर।
 घटना भीतर आकस्मिक रंग आ आवश्यक रचना अलग-अलग होइ,
 एक घर अनेक कोण सँ देखू—आभास बदले, ‘घरपन’ कतहु नहि खोइ।
 जतय परिवर्तनक बीचो किछु संरचनात्मक एकरूपता टिकै,
 फिनोमिनोलॉजिकल खोज ओहि सारक दिशा पकड़ि धीरे-धीरे निकै।
 कल्पनामें रूप बदलू—रंग हटाउ, आकार फेरू, परिस्थिति आनू,
 जे गुण हटिते वस्तुक प्रकारें बदलि जाए, तकर गहिर आधार जानू।
 एहि मुक्त परिवर्तन सँ ‘सार’क संकेत समक्ष आबै,
 विशिष्ट घटना पार करैत सामान्य संरचना चेतनामें उजागर भऽ पाबै।
 मुदा सार कोनो आकाशी वस्तु नहि जे अनुभव सँ दूर बसै,
 ओ अनुभवक सम्भावित रूपसभमें स्थिर संरचनाक चिन्ह जकाँ रसै।
 सारग्रहण विवेकक सूक्ष्म काम—नहि मात्र शब्दक जाल,
 देखल अनुभवक अनेक रूपमें जे अपरिहार्य, ओहि पर पड़ै उजासक लाल।
 चेतनाक प्रत्येक कर्ममें दू दिशा—अनुभवक करनाइ आ अनुभूत अर्थ,
 नोएसिस आ नोएमा जकाँ दू धुरी, मुदा दूनू एके जीवित सम्बन्धक गर्भ।
 जेना देखबाक क्रिया अलग, देखल वस्तुक अर्थगत रूप अलग,
 एहि भेद सँ चेतना-विषय सम्बन्ध बनै अधिक सूक्ष्म, अधिक सजग।
 एके वृक्ष बिहान, साँझ, दूरी, स्मृतिमें अनेक रूप सँ प्रकट,
 तइयो चेतना ओकरा “एके वृक्ष” रूपमें जोड़ि राखै अविच्छिन्न पथ।
 प्रत्येक आभास अधूरा, मुदा क्षितिज भीतर बाकी सम्भावना रहै,
 दृश्य सँ अदृश्य पक्ष धरि अर्थक निरन्तर अपेक्षा चेतनामें बहै।
 समय सेहो केवल घड़ियाक काँटा नहि—अनुभवक अन्तर्धारा,
 बीते स्वरक प्रतिध्वनि, वर्तमानक स्पर्श, आगाँक अपेक्षाक किनारा।
 एक धुन सुनैत प्रत्येक सुर अकेला नहि रहैत,
 जे गेल ओकर अवशेष, जे आबि रहल ओकर आभास—एहि संग वर्तमान बहैत।
 स्मृति मृत चित्र नहि, वर्तमान चेतनामें अतीतक पुनः-प्रत्युत्थान,
 कल्पना झूठ मात्र नहि, सम्भावित रूपक स्वाधीन मैदान।
 अनुभवक ई विविधता मिलि चेतना केँ एक सतत जीवन बनबैत,
 फिनोमिनोलॉजी एहि प्रवाहक भीतर अर्थ-निर्माणक सूत्र खोजैत।

‘मैं’ केवल मनोवैज्ञानिक व्यक्तिक नाम धरि सीमित नहि,
 गहिर विश्लेषणमे भेटै अनुभवक एक पारलौकिक केन्द्र—सरल वस्तु नहि।
 जे प्रत्येक अनुभूतिक एकत्वक शर्त बनि पाछाँ काम करै,
 ओहि पारलौकिक आत्मक प्रश्न फिनोमिनोलॉजिकल राहि पर आगाँ धरै।
 मुदा यदि सभ अर्थ चेतनामे गठित, तखने संशय उठै भारी—
 की जगत केवल निज मनक निर्मिति? की दोसर चेतना सभ बेकारी?
 एतय ‘दोसर’क अनुभव, सह-अनुभूति, साझा जगक प्रश्न जागै,
 अपन देह सँ आन देहक अर्थ, आन चेतना दिस समझक बाट लागै।
 दोसर मन सोझे हमर भीतर नहि, तइयो ओकर देह संकेत बनै,
 हावभाव, क्रिया, संवाद, साझा संसार सँ पर-चेतना अनुभवमे धनै।
 एहि अन्तरविषयकता बिनु वस्तुनिष्ठ जगक आधार अधूर,
 कतेको दृष्टि मिलि “हम सभक जग” बनबैत—निजपन सँ पैघ, अधिक भरपूर।
 देह सेहो केवल बाहरी पदार्थ नहि, अनुभवक जीवित केन्द्र,
 हाथ उठब, चलब, छूबब—इच्छा आ स्थानक बीच देह बनै सेतु-रेख।
 जगत हमरा चारू कात केवल नापल दूरी नहि,
 देहधारी चेतनाकेँ निकट-दूर, सम्भव-असम्भवक जीवित भूगोल एहि में सही।
 दैनिक जीवनक पूर्ववर्ती संसार—जतय विज्ञानो जन्म लैत,
 माप, सिद्धान्त, सूत्र सँ पहिने जीवन-जगत अनुभवक धरती बनैत।
 यदि अमूर्त विज्ञान अपन जड़ि बिसरै, अर्थ सूखि सकै,
 फिनोमिनोलॉजी जीवन-जगत दिस फेरि लौटा कऽ ज्ञानक आधार देखै।
 मनोविज्ञान, तर्क, गणित, विज्ञान—सभक वस्तुनिष्ठ दावा,
 तकर पूर्वशर्त चेतनाक अर्थगठनमे कतय छिपल—ई खोजक ठावा।
 दर्शनक काम बाहरी तथ्य जोड़ब मात्र नहि,
 ज्ञान सम्भव कोना—एहि मूल प्रश्नक अनुभवगत संरचना पढ़ब सही।
 एहि पद्धति विश्लेषण अछि, मुदा जड़ विच्छेदन नहि,
 वर्णन अछि, मुदा सतही कथा नहि; आत्मनिरीक्षण मात्र सेहो नहि।
 पूर्वग्रह हटाइ अनुभवक रूपक धैर्यपूर्ण अन्वेषण,
 जेना धुन्ध भीतर धीरे प्रकट होइ अर्थक आन्तरिक संयोजन।
 तइयो अन्तिम उत्तर बंद मुट्ठीमे नहि—फिनोमिनोलॉजी स्वयं यात्रा,
 आगाँ अनेक चिन्तन-धारा बदलथि ओकर केन्द्र, भाषा, देह, सत्ता।
 मुदा मूल पुकार रहि जाइ—प्रकट होइत वस्तु केँ सजग दृष्टि सँ देखू,
 दावाक पहिने अनुभवक अर्थरचना बुझू, चेतनाक जीवित धरती लेखू।
 वस्तुक आभास सँ चेतनाक अन्तराल धरि जे बाट खुलल,
 ओहि बाट मनुष्यक अनुभव अपन गहिर संरचनासँ फेरि मिलल।
 जगत बाहर, चेतना भीतर—एहि कठोर दीवारक बदला सम्बन्धक सेतु,
 फिनोमिनोलॉजी कहै—अर्थ जन्मै भेटमे, जतय दृष्टि आ जगत होइ एक-दोसरक हेतु।

अभिमुख चेतना सँ स्वतन्त्र अस्तित्व धरि

मानसिक क्रिया रिक्त नहि—ककरो दिस ओकर दृष्टि जाइ,
 विचार, चाह, स्मृति, निर्णय—सभ किछु विषयक ओर झुकि आइ।
 अभिमुखता कहै—चेतना सदिखन “किछु”क चेतना,
 ई सम्बन्धक बीज सँ आगाँ खुलल अनुभव-दर्शनक नव रचना।
 मुदा विषय कहिते की बाहरक वस्तु सदिखन ठाढ़ रहै?
 यूनिकॉर्न पर सोचू त वास्तविक घोड़ा कतय भेटि कहै?
 मन जकरा दिस उन्मुख होइ, ओकर भौतिक अस्तित्व आवश्यक नहि,
 एहि कठिन गाँठक भीतर अभिमुखताक अर्थ एकरेखीय ठीक नहि।
 शब्द, वस्तु, विचारक बीच संबंधक अनेक रूप खुलल,
 कथनमे जे सूचित होइ, से सदिखन जगतमे वस्तुरूपेँ नहि मिलल।
 अर्थक दिशा आ अस्तित्वक प्रश्न अलग-अलग धरातल पाबै,
 फिनोमिनोलॉजी एहि भेदक भीतर चेतनाक रचना चिन्हाबै।
 स्वर उठै—अनुभव केँ पूर्वधारणा सँ मुक्त कऽ फेर देखू,
 विषय आ अर्थक सम्बन्धमे जे अनिवार्य अछि, तकर सूक्ष्म लेखू।
 चेतनाक प्रत्येक क्रिया अपन अर्थ-विषय दिस अभिमुख होइ,
 अर्थ वस्तु नहि, मुदा वस्तु-अनुभवक गठनमे ओकर भूमिका खोइ नहि।
 एके वस्तु अनेक दृष्टि सँ भिन्न-भिन्न रूप देखबैत,
 तइयो अनुभूति ओकर एकत्वक बोध भीतर सँ गढ़ैत।
 दृश्य बदलै, अर्थ-संबंध टिकै—एहि मध्यवर्ती क्षेत्रक खोज,
 अनुभव आ जगत केँ दू टुकड़ा नहि, सम्बन्धक रूपमे बूझबक ओज।
 ई प्रश्न इतिहाससँ बाहर नहि—आत्म-निश्चयक पुरान खोज,
 जगत-मनक द्वैत, अनुभूतिक अधिकार—सभ पाछाँ छोड़ल संशय।
 विषयता केँ शुद्ध करबाक प्रयत्नमे चेतना बनल केन्द्रीय स्थान,
 मुदा वस्तु सँ पूर्ण विच्छेद नहि—अभिमुखता बनल ओकर प्राण।
 एहि पथ पर ‘सत्ता’क प्रश्न फेर उठैत,
 वस्तु मात्र नहि, अस्तित्वक खुलनाइ—मानव-जगत सम्बन्धमे देखबैत।
 सत्य केवल कथनक मेल नहि, अनावृत होइत रूपक प्रकाश,
 कलाक अनुभवमे वस्तुक अस्तित्व खुलै, गहिर अर्थक आवास।
 चित्र केवल रंगक प्रतिलिपि नहि, कविता केवल वर्णन नहि,
 कलाक भीतर जे जग खुलैत, ओ नकलक पुनरावृत्ति नहि।
 धरती, श्रम, देह, संसार—कलाक रूपमे नव संबंध पबैत,
 सत्यक तात्त्विक अनुभव मनुष्यक अस्तित्व केँ भीतरसँ छुबैत।
 कवि आ विचारक दू अलग द्वीप नहि—भाषा दूनूक साँझा पथ,
 एक अनुभूतिक घनत्व खोलै, दोसर पूछै सत्ता आ अर्थक रथ।
 एहि दृष्टिमे भाषा केवल सूचना दऽ चुप नहि रहै,
 भाषा अस्तित्वक खुलनाइमे मनुष्यक निवास-जकाँ संग बहै।

एक दृष्टि भाषा केँ व्यवहारक क्षेत्रमे देखै,
 दोसर अर्थक आदर्शता आ चेतनाक अभिमुखतामे रेखा लेखै।
 भिन्न पद्धति, भिन्न दिशा—तइयो प्रश्न एकहि ओरि जाए,
 शब्द कोना अर्थ पाबै, अनुभव कोना जगतसँ सम्बन्ध बनाए।
 चेतना भरल पात्र नहि—ओ अपन सीमासँ बाहर झुकै,
 जकरा जानै, ओकरा सँ दूरी राखि “ना”क एक रिक्ति भीतर फूटै।
 अभावक अनुभव, अनुपस्थित मित्र, खाली आसनक संकेत,
 चेतना जे नहि अछि, ताहूसँ सम्बन्ध गढ़ि स्वतन्त्रताक खोलै द्वार-केत।
 चेतना “ई मात्र” नहि—ओ अपन वर्तमान सँ आगाँ बढ़ैत,
 निषेधक शक्ति सँ दत्त स्थितिक जकड़न भीतर दूरी गढ़ैत।
 एहि रिक्तिमे स्वतन्त्रता केवल विचार नहि, क्रियाक संभावना,
 मनुष्य अपन अर्थ केँ कर्ममे गढ़ै—भविष्य बनै ओकर परियोजना।
 जीवन पूर्वलिखित नक्शा नहि, निर्णयसभ चलैत कलम,
 आइक चुनाव काल्हिक रूप गढ़ै, जिम्मेदारी बनै संग चलनिहार दम।
 अतीत हमरा आकार दैत, मुदा पूर्ण निर्णय नहि करै,
 मनुष्य भविष्य दिस खुलल—अपन कर्म सँ स्वयं सँवरै।
 अचेतनक गुप्त कोठरी पर प्रश्नक ज्योति पढ़ै,
 निर्णयक जिम्मा कतहु लुका कऽ मनुष्य केँ मुक्त नहि करथि।
 स्वतन्त्रता ज्ञानमात्र नहि—व्यवहारमे अपन विकल्प स्वीकारब,
 दोष-अदोषक बीच स्वयं चुनल परियोजनाक भार उठाएब।
 देहधारी अनुभव कहै—प्रत्यक्ष केवल इन्द्रिय-टुकड़ा नहि,
 वस्तु, देह, परिस्थिति, संबंध—सभ मिलि अनुभवक जीवित गहिराई सही।
 शरीर जड़ वस्तु नहि, जगत दिस खुलल अनुभूतिक केन्द्र,
 दोसर मन सेहो केवल अनुमान नहि—देह, व्यवहार, सह-अनुभवक सेतु-रेख।
 वस्तुक प्रत्यक्ष एक क्षणक स्थिर फोटो नहि बनैत,
 अनुभव-क्रम, पूर्व संकेत, आगाँक अपेक्षा सभ ओकर अर्थ गढ़ैत।
 “वस्तु” कोनो एक दृश्य नहि—अनेक सम्भावित दर्शनक संयोजन,
 एहि दृष्टिसँ प्रत्यक्ष बनै समय, शरीर आ संसारक जीवित आयोजन।
 फिनोमिनोलॉजी मनोविज्ञानक प्रतिद्वन्द्वी मात्र नहि,
 शुद्ध अनुभवक वर्णन सँ मनोविज्ञानो अपन आधार देखै सही।
 व्यवहार, अनुभूति, चेतना, अर्थ—जतय सामान्य भाषा कम पढ़ै,
 अनुभवक संरचना वर्णित कऽ दर्शन मनोविज्ञानक प्रश्नक संग जुड़ै।
 मनुष्य केँ नियमक यन्त्र बुझब सरल, मुदा जीवन ओतेक सरल नहि,
 कर्मक अर्थ, परिस्थिति, देह, सम्बन्ध—सभ बिनु मनोविज्ञान पूर्ण नहि।
 फिनोमिनोलॉजी कहै—पहिने अनुभवक क्षेत्रक रूप स्पष्ट करू,
 फेर कारण, वर्ग, सिद्धान्त बनाउ—जीवित तथ्यक स्वर नहि हरू।

अलगावक इतिहासमे मनुष्य अपनहि जगतसँ दूर भऽ सकै,
 श्रम, समाज, संस्था, संबंध—अपन रचना फेर परायी शक्ति बनि सकै।
 ई दूरी सामाजिक संरचनामे गहिर रूप सँ देखाइ,
 मानव श्रम जखन साधन बनि जाए, व्यक्ति अपन मानवी अर्थ बिसरथि।
 समुदाय आ समाजक बीच अपनपनक क्षय चिन्हाइ,
 साझा संबंध ढीला पड़िते आधुनिक जीवन अलगावक छाया पाबथि।
 आत्म-विषयक विभाजनमे इतिहासक एक स्वर सुनाइ,
 अलगाव एके अर्थ नहि—अनेक दर्शनमे भिन्न-भिन्न ओकर घर।
 अलगाव व्यक्ति-स्वतन्त्रताक विफल चालमे देखाइ,
 आत्म-छल, जिम्मेदारी सँ पाछाँ हटब, अपन विकल्प केँ परक मानि जाइ।
 मनुष्य जखन अपन क्रिया केँ बाहरी नियतिक नाम दऽ छुटकारा चाहै,
 स्वतन्त्रता दबै नहि—ओ विकृत रूपमे फेर अलगाव बनि समक्ष आबै।
 “अन्य” सेहो मनुष्यक जगतक अंग,
 साझा जीवन बिनु अस्तित्वक अर्थ रहत अधूरा, निरंग।
 मुदा जखन भीड़क सामान्यता निज सम्भावना पर भारी पड़ै,
 मानव अपन अस्तित्व सँ दूर होइ—अलगावक नूतन छाया चढ़ै।
 संकट, सीमा, असुरक्षा बीच मनुष्यक आत्म-प्रश्न सुनाइ,
 एकान्त जखन सर्वस्व लगै, तखन विश्व आ अतिक्रमणक दिशा चुनथि।
 अलगाव केवल सामाजिक तथ्य नहि, न केवल मनक रोग,
 मानव-स्थिति बुझबाक एक कठिन संकेत—जतय सम्बन्ध आ अर्थक संयोग।
 फिनोमिनोलॉजी आ अस्तित्ववाद एकहि दर्शनक दू नाम नहि,
 एक अनुभवक संरचना खोलै, दोसर मनुष्यक चयन आ स्थिति पर थमि नहि।
 तइयो दूनूक भेट चेतना, संसार, देह, अर्थक सीमा रेखा पर होइ,
 मानव जेना जगतमे रहै, ओहि जीवनक प्रश्नमे दूनू स्वर संग होइ।
 अभिमुख चेतना सँ स्वतन्त्र अस्तित्व धरि यात्रा एहि बात कहै,
 मनुष्य केवल वस्तु नहि, मुदा जगतसँ काटल आत्मा सेहो नहि रहै।
 अर्थ सम्बन्धमे जन्मै, स्वतन्त्रता कर्ममे अपन मूल्य पाबै,
 अनुभवक गहिर वर्णन सँ मानव अपन स्थिति, दूरी, संभावना पहचानि पाबै।

वाक्यक अर्थ सँ तार्किक सत्य धरि

तर्कक घरमे पहिल प्रश्न उठल—अर्थ कतय निवास करै?
 की वाक्यक पाछाँ कोनो अमूर्त प्रतिज्ञाप्ति स्वतन्त्र बनि रहै?
 तार्किक संशय कहै—अर्थक नाम पर अदृश्य सत्ता सहज नहि मानू,
 भाषाक वास्तविक प्रयोग, वाक्य, सत्य आ संदर्भ सँ पहिले तौलू।
 “हिम उज्जर अछि” कहिते कथनक सत्य जगतसँ जुड़ि जाए,
 मुदा ओकर अर्थ केँ अलग अमूर्त वस्तु मानब प्रश्न बढ़ाए।
 विश्वास, अविश्वास, ज्ञान—सभमे वाक्यक भूमिका स्पष्ट,
 तइयो ‘प्रतिज्ञाप्ति’ नामक सत्ता बिनु काज चलि सकै—ई तर्कक पथ कठोर-सचेत।

दू वाक्य एके बात कहैत अछि—एहन हम प्रायः मानि लैत छी,
 मुदा समानार्थकता कोना मापब, ई पूछिते जमीन हिलैत देखी।
 विषयगत सूचना, प्रसंग, संकेत—अर्थक अनेक स्रोत,
 शब्दकोशक सरल जोड़ी सँ नहि खुलै समानताक सम्पूर्ण कोड।
 प्रतिज्ञाप्तिक अमूर्त लोक पर संशयक दीप जरैत,
 सत्तामीमांसाक भार घटेबाक लेल वाक्यकेँ आगाँ अनैत।
 अर्थ यदि उपयोगमे पकड़ाइ, तखने दर्शनक जमीन ठोस,
 अनावश्यक सत्ता कम करू—ई मितव्ययी तार्किक होश।
 सत्यक विषयमे सेहो भाषा अनिवार्य बनि समक्ष आबै,
 “ई वाक्य सत्य अछि” कहबो वाक्यक भीतरहि अर्थ पाबै।
 सत्य कोनो रहस्यमय द्रव्य नहि, कथन आ जगतक सम्बन्धक धार,
 जतय कहबाक ढंग, सामान्यीकरण, प्रमाण—सभ मिलि बनबै विचार।
 “सभ मनुष्य नश्वर छथि”—एहन सामान्य कथन एक वाक्येँ विशाल,
 नाम गिनि-गिनि नहि, परिमाणक भाषा खोलै असीम जाल।
 प्रत्येक व्यक्तिक नाम बिनु सेहो हम वर्गक बात कहि सकी,
 ‘सभ’, ‘किछु’, ‘कोनो नहि’ सँ तर्कक विस्तृत धरती नापि सकी।
 एहि ठाम व्याकरण केवल भाषा-विज्ञानक अलमारी नहि,
 तर्कक दृष्टिमे संरचना बतबैत—कोन पद विषय, कोन चाल सही।
 सामान्य बोलचालक ध्वनि-शृंखला भीतर रूपक अनेक परत,
 कृत्रिम भाषा खोलै वाक्यक तार्किक बनावट।
 भाषा-सापेक्ष संकेत, चर, विधेय—सभक भूमिका भिन्न,
 एक भाषा जे कहै, दोसरमे ओकर रूप होइ सकै नवीन।
 वस्तुभाषा आ अधिभाषाक सीमा यदि नहि राखब स्पष्ट,
 तखन सत्यक परिभाषा अपनहि वाक्यमे फँसि बनत विरोधाभासक कष्ट।
 परिभाषा सेहो केवल पर्याय देब नहि—कतेक बेर पुनर्रचना,
 पुरान पदक उपयोग निश्चय करि नूतन भाषामे तार्किक रचना।
 संतुष्टि, सम्बन्ध, चरक मूल्य—एहि सँ बनै सत्यक सूत्र,
 खुला वाक्य सँ बन्द वाक्य धरि क्रमशः स्पष्ट होइ तर्कक मूल सूत्र।
 एक सूत्र चरक मान पर निर्भर, दोसर सभ मानमे सत्य,
 किछु संयोग सँ सत्य, किछु संरचना भरि सँ पाबै नित्यत्व।
 एहि भेदमे तार्किक सत्यक रूप धीरे-धीरे समक्ष आय,
 जगतक विशेष तथ्य नहि, संरचनाक सम्भावित विन्यास ओकर ठाम बनाय।
 तार्किक सत्य कहै—विषय बदलू, संरचना जँ बचल रहै,
 तखन सत्यक बल विशेष वस्तुसँ नहि, तर्कक सम्बन्धमे रहै।
 निषेध, संयोजन, विकल्प, परिमाण—चिह्नक अनुशासित चाल,
 एहि भीतर सत्यक रूप देखब, दर्शनक लेल कठिन कमाल।

सेट-सिद्धान्तक देहरी पर वर्ग, सदस्यता, रिक्तता प्रश्न उठबै,
गणितक रूपरेखा तर्कसँ जुड़िते सत्तामीमांसा पुनः जागै।
ककरा हम 'अछि' कहैत छी—परिमाणित चर जकरा ऊपर फिरै,
ओही प्रतिबद्धतासँ दार्शनिक जगतक स्वीकृत वस्तु-सीमा धिरै।
एक संकेत—अस्तित्वक भार शब्द नहि, परिमाण ढोड़,
जकरा लेल 'किछु x अछि' कहब आवश्यक, ओहि पर प्रतिबद्धता होइ।
नाम हटि सकै, विवरण बदलि सकै, मुदा चरक परास नहि छलै,
तर्कक भाषा सत्तामीमांसा केँ चुप्पे-चाप अपन सीमा बतलै।
सेट सिद्धान्त उपयोगी, मुदा एके रूप अन्तिम सत्य नहि,
वैकल्पिक निर्माण देखबैत—इतिहासमे राहि एक नहि।
एक दृष्टि चाहै कम परिवर्तन, परिचित मान्यताक अधिक संरक्षण,
किएक तँ ज्ञानक जालमे एक सूत्र बदलिते दूर धरि उठै कम्पन।
फेर प्रश्न—परम्परागत तर्क सभ परिस्थिति धरिक नियम?
मध्याभावक नियम पर संशय उठल जखन सहजज्ञानवादक जन्म।
“वा ई, वा नहि ई”—ई द्वार सभ ठाम खुलल रहत?
विवेक कहै—बदल सकैत छी, मुदा मूल्य चुकाबै पड़त।
वैकल्पिक तर्क बनाबै छी त पुरान शब्दक अर्थो फेर जाँचू,
केवल निषेधक चिह्न बदलि कहब 'नव तर्क'—एतेक पर नहि थामू।
अनुवाद, प्रयोग, संरचना—सभ मिलि बतबैत कोन नियम बदलल,
अन्यथा नाम नव, पर भीतर पुरान अर्थे चुपचाप चलल।
ज्ञानक जालमे अनुभव किनारासँ चोट करै, केन्द्रमे तर्क रहै,
विरोधी अनुभव आय त अनेक संशोधनक विकल्प संग बहै।
एक नियम बचाउ, दोसर बदली; वा सम्पूर्ण सिद्धान्त फेर बनाउ,
व्यवहारक सुविधा कहै—कम फेरबदल सँ अधिक संगति पाउ।
एहि कारण तार्किक सत्यो अलग स्वर्गक अचल शिला नहि,
विश्वास-समूहमे ओकर स्थान केन्द्रीय, तइयो संशोधन असम्भव नहि।
विज्ञानक नियम, गणित, तर्क—सभ एक व्यापक जालक अंश,
अंतर केवल दूरी, दृढ़ता, उपयोग—नहि दू पृथक जगतक वंश।
विश्लेषणात्मक आ संश्लेषणात्मक कठोर सीमा सेहो धुँधल,
‘अर्थ मात्र सँ सत्य’ कहबासँ पहिने ‘अर्थ’क कसौटी पड़ल कुण्ठल।
पर्याय, परिभाषा, अनिवार्यता—एक-दोसर पर घुमैत आधार,
प्रश्न उठै—कोन स्वतन्त्र कसौटी करै एहि वृत्त केँ पार?
अनुभववाद बचल, मुदा परमाणु-वाक्यक एकाकी प्रमाण नहि,
एक अनुभव एक वाक्यकेँ अकेले सत्य-असत्य करै—एहन बात ठीक नहि।
हमर विश्वास सभ समूह रूपेँ अनुभवक सामना करैत,
विरोध आय त सम्पूर्ण जाल भीतर संशोधनक सम्भावना फरैत।

तैं तर्कक दर्शन केवल चिन्हक गणना नहि, भाषा मात्र नहि,
ई अर्थ, सत्य, व्याकरण, अस्तित्व, गणित—सभक गाँठ एक संग गहि।
जेना सूत्रक एक छोट रेखा सत्ताक प्रश्न उठबैत,
तहिना सामान्य वाक्य दार्शनिक जगक गहिर आधार देखबैत।
तार्किक सीख—कम सत्ता मानू, पर तर्कक मूल्य नहि घटाउ,
अर्थक कुहासा हटाउ, पर भाषाक वास्तविक जटिलता नहि बिसराउ।
सत्य केँ जगतसँ जोड़ू, संरचनाकेँ स्पष्ट रूपमे पहचानू,
ज्ञानक जाल बदलि सकैत अछि—ई विनम्रता संग तर्कक दीप जराउ।

विश्वासक प्रश्न सँ अशुभक अन्हार धरि

धर्मक देहरी पर प्रश्न उठै—जगतक मूल आधार कतय?
ईश्वर केवल आस्थाक नाम, कि बुद्धि खोजै हुनकर सत्य?
दर्शन कहै—न विश्वास केँ अन्हार कहू, न तर्क केँ एकमात्र राज,
दूनों बीचक सूक्ष्म धरातल पर जाँचू अनुभव, अर्थ आ समाज।
धर्म-दर्शनक काम उपदेश नहि, न पूजा-पद्धतिक विधान,
ओ पुछैत अछि—धार्मिक कथनक अर्थ, प्रमाण, सीमा आ ज्ञान।
“ईश्वर छथि” कहबाक अर्थ की? “आत्मा” कहिते कोन संकेत?
शब्दक पाछाँ अनुभव, विचार आ जीवनक कोन गहिरी रेख?
प्रारम्भिक प्रश्न विधिक अछि—कोन बाट सँ सत्य जाँचल जाए?
प्रत्यक्ष, अनुमान, अनुभूति, परम्परा—केकरा कतेक भार देल जाए?
एकहि कसौटी सभ क्षेत्र पर थोपब बुद्धिक न्याय नहि,
धार्मिक अनुभूतिक प्रकार अलग हो सकै—तइयो परीक्षणसँ मुक्त नहि।
आत्म-अनुभव जखन भीतर सँ कहै—“किछु हमसँ पैघ अछि,”
तर्क तुरन्त पुछै—“ई अनुभव वस्तुगत अछि कि मनक रचना मात्र अछि?”
अन्तःप्रेरणा महत्वपूर्ण ठीक, मुदा प्रमाणक प्रश्न बचल,
व्यक्तिगत निश्चय आ सार्वजनीन सत्यक बीचक सेतु एखन अधूरा रहल।
ईश्वरक स्वरूप कहबासँ गुणक प्रश्न एक-एक कऽ जागै,
अनन्त, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान—शब्द सभ अर्थक सीमा माँगै।
यदि गुण मानव भाषासँ देल, तखन ईश्वर मनुष्य-सन कियैक?
यदि सभ उपमा हटि जाए, तखन कहबो कोना—ई प्रश्न पुनः उठै अनेकार्थक।
मानवी गुणक विस्तार करि परम सत्ता बनायब सरल प्रतीत,
मुदा असीमक अर्थ सीमित अनुभवसँ कोना होएत पूर्ण प्रतीति?
हम जे ‘ज्ञान’, ‘शक्ति’, ‘भलाई’ बुझैत छी, ओ मानवी सन्दर्भक रूप,
परममे ओहि शब्दक उपयोग—समान, रूपक, कि सर्वथा भिन्न स्वरूप?
सामान्यता आ विशेषक प्रश्न धर्मक भाषामे सेहो घुमै,
एक गुण अनेक व्यक्तिमे देखाइ, तइयो प्रत्येक अनुभव अलग झुमै।
यदि ईश्वर पूर्ण शुभता, तकर अर्थ मानवी शुभतासँ कोना जुड़ै?
समान शब्दक भीतर समान अर्थ अछि कि केवल संकेत बदलि पड़ै?

धार्मिक कथन कखनो वर्णन जकाँ, कखनो प्रतिज्ञा जकाँ बोलै,
 कखनो प्रार्थना, कखनो विस्मय, कखनो नैतिक संकल्प खोलै।
 सभ वाक्यकेँ विज्ञानक तथ्य-जाँचमे नापब उचित नहि होइ,
 मुदा अर्थहीन कहि छोड़बो उचित नहि—जीवनक प्रयोग ओकर अर्थ संजोइ।
 अनुभवक पक्ष कहै—मनुष्य केवल तर्कक यन्त्र नहि,
 भय, आशा, अपराध-बोध, करुणा—धर्मक भूमि एहि सँ खाली नहि।
 कठिन क्षणमे परम आश्रयक अनुभूति मन केँ रूपान्तरित करै,
 दर्शन पुछै—रूपान्तरण सत्यक प्रमाण कि मनोवैज्ञानिक प्रभाव भरि रहै?
 अनुमान कहै—जगत अछि, क्रम अछि, कारणक श्रृंखला चलै,
 की एहि क्रमक पाछाँ कोनो परम कारणक आवश्यकता पलै?
 जतय कारण-कार्यक भाषा स्वयं जगत भीतर जन्मल,
 ततय सम्पूर्ण जगत पर ओकर लागू होएब—ई तर्कक प्रश्न बनल।
 व्यवस्था, सामंजस्य, नियम—ई सभ विश्वमे देखाइत चिन्ह,
 केओ एहि में नियोजक बुद्धि देखै, केओ प्रकृतिक स्वाभाविक लय भिन्न।
 सुन्दरता सँ ईश्वर धरि छलाँग लगब कि संकेत मानि ठहरू?
 दर्शन कहै—संभावना, व्याख्या, विकल्प—सभकेँ एक संग तौलू।
 नैतिक चेतना सेहो भीतर सँ कहै—किछु कर्तव्य हमपर भार,
 सत्य, न्याय, करुणा, उत्तरदायित्व—की एहि पाछाँ परम मूल्यक आधार?
 यदि नैतिक नियम मनुष्यक समाजें गढ़ल, तखनो ओकर गरिमा कतय?
 यदि परम आदेश सँ आयल, तखन भलाइ आदेशसँ भल कि स्वतः भल—प्रश्न ततय।
 आत्मा आ व्यक्तित्वक प्रश्न ईश्वर-विचारसँ दूर नहि,
 जँ मनुष्य केवल क्षणिक देह, त धार्मिक आशा कतेक स्थिर ठीक?
 स्मृति, चेतना, नैतिक उत्तरदायित्व—व्यक्ति केँ सातत्य दैत,
 मुदा अमर आत्माक दावा अलग प्रमाण आ अलग तर्क माँगैत।
 विश्वासक अर्थ अन्ध स्वीकृति नहि—कखनो भरोसक अस्तित्वगत चाल,
 जे पूर्ण प्रमाणक अभावमे सेहो जीवनक दिशा बनबैत काल।
 मुदा विश्वास आ हठमे भेद चाही—आलोचना लेल द्वार खुलल,
 नहि तँ आस्था सत्यक खोज छोड़ि केवल आत्मरक्षा बनि रहल।
 सामान्य अनुभवक जग आ धार्मिक अनुभवक जग पूर्ण पृथक नहि,
 एके मनुष्य भोजन करै, प्रेम करै, प्रार्थना करै—जीवन दू टुकड़ा नहि।
 तें धार्मिक अर्थ समझबाक लेल व्यवहार, भाषा, इतिहास, समुदाय,
 सभकेँ देखब आवश्यक—केवल निजी अनुभूति सँ सम्पूर्ण न बनै न्याय।
 मुदा सभसँ कठिन प्रश्न अन्हार जकाँ समक्ष आबि ठाढ़—
 यदि परम सत्ता शुभ आ सर्वशक्तिमान, त दुःखक ई विशाल पहाड़?
 रोग, मृत्यु, अन्याय, हिंसा—निर्दोषो कियैक पीड़ा सहै?
 अशुभक समस्या धर्म-दर्शनक हृदयमे काँटा जकाँ गहिरी रहै।

केओ कहै—स्वतन्त्रता बिनु नैतिक जीवनक अर्थ नहि,
 मनुष्य जँ मुक्त अछि, त बेठीक चुनावक सम्भावना हटत नहि।
 मुदा प्राकृतिक आपदा, जन्मजात पीड़ा—मानवी चयनसँ दूर,
 स्वेच्छा बहुत किछु समझबैत, सभ दुःखक उत्तर नहि भरपूर।
 केओ कहै—दुःख चरित्र गढ़ै, साहस-करुणा जाग्रत करै,
 कठिनाई बिनु नैतिक परिपक्वता सम्भव नहि—जीवन एहि सँ निखरै।
 मुदा अत्यधिक पीड़ा जखन जीवन तोड़ि दे, प्रश्न फेर लौटि आय,
 साधनरूप दुःखक सीमा कतय—मानवी विवेक सहज उत्तर नहि पाय।
 अशुभ केवल बाहरी घटना नहि, नैतिक बुराई भीतर सेहो,
 लोभ, क्रूरता, छल, दमन—मनुष्यक चुनावक अन्हार गहिर सेहो।
 यदि धर्म केवल ईश्वरक रक्षा करै, पीड़ितक आवाज अनसुनी होइ,
 त दर्शनक न्याय अधूरा; दुःखक तथ्यकेँ पूर्ण गंभीरता देब आवश्यक होइ।
 धर्म-दर्शन तें निष्कर्षक बन्द दरवाजा नहि, संवादक खुलल स्थान,
 जतय आस्था अपन कारण देत, संशय अपन प्रश्न, अनुभव अपन प्रमाण।
 ईश्वरक स्वरूप, गुण, आत्मा, नैतिकता, दुःख—सभ एकहि जाल,
 एक प्रश्नक उत्तर दोसर प्रश्न खोलै—एहि सँ चिन्तन रहै जीवित काल।
 विश्वास यदि सत्यक खोजी हो, त आलोचना सँ डर कियैक?
 तर्क यदि विनम्र हो, त अनुभवकेँ हँसीमे उड़ाबै कियैक?
 धर्म-दर्शनक पहिल पाठ—न निर्णय जल्दी, न प्रश्नक अपमान,
 अशुभक अन्हारमे सेहो सत्यक खोज राखू—एहिए मनुष्यक बौद्धिक सम्मान।

कालक धार सँ धर्मक सत्य धरि

जगत मूल्यक दिशामे बढ़ैत अछि—एहन मान्यतासँ प्रश्न उठल,
 काल की केवल घड़ियाक माप, कि यथार्थक भीतर बहैत जीवित जल?
 भूत, वर्तमान, भविष्य—तीनू की सचमुच अलग-अलग प्रदेश,
 कि चेतनाक क्रममे बनल नाम, जकरा पर चलै अनुभवक रेख?
 एक स्वर कहै—वस्तु अनेक कालमे भिन्न गुण धारण करि सकै,
 तइयो आत्म-अभिन्नता बचल रहै, परिवर्तन ओकर रूप बदलि सकै।
 दोसर प्रश्न उठै—यदि ‘पहिने’ आ ‘पाछाँ’ मात्र सम्बन्धक चिह्न,
 त वर्तमानक गति कोना बुझब, परिवर्तनक अनुभूति कोन ठाम चिन्ह?
 वर्तमान पकड़िते ओ भूत बनै, भविष्य वर्तमान भऽ आए,
 कालक प्रत्येक क्षण अपन नाम बदलि निरन्तर आगाँ जाए।
 यदि प्रत्येक क्षण तीनू रूप पाबै, त विरोधक प्रश्न जागै,
 अतः कालक यथार्थता पर दार्शनिक संशय गहिरी छाया छागै।
 फेर एक दृष्टि कहै—क्षणिक वर्तमान सँ भूत निरन्तर निकलैत,
 भविष्यक सम्भावना समक्ष, वर्तमान सीमापर चेतना चलैत।
 काल न केवल मापनक रेखा, इतिहासक अनुभवक शर्त,
 वस्तु, घटना, स्मृति, आशा—सभकेँ एक सूत्रमे बाँधै ओकर अर्थ।

मानवक भाग्यक प्रश्न तखन कालसँ सहज जुड़ि जाइ,
 जीवनक चरम लक्ष्य की? मृत्यु पर सभ कथा समाप्ति पाबि जाइ?
 धर्म अनेक उत्तर दैत—मोक्ष, शान्ति, आनन्द, ईश्वर-सन्निधि,
 दर्शन पूछै—कुन आधार पर मानब ई अंतिम मूल्यक सिद्धि?
 आत्मा यदि केवल क्षणिक घटना नहि, त सातत्यक प्रश्न उठै,
 मूल्य, अमूल्य, विमूल्यक निर्णय आत्मक जीवनमे अर्थ जुटै।
 कर्म, इच्छा, ज्ञान, प्रेम—सभ चरम दिशाक संकेत बनै,
 मनुष्यक भाग्य केवल दुर्घटना नहि, मूल्यक चयनसँ सेहो तनै।
 काल आ नित्यता बीच फेर एक नूतन द्वार खुलै,
 यदि अंतिम अवस्था कालक पार, त परिवर्तनक क्रम कतय रुकै?
 एक मूल्य-दृष्टिमे नित्यताक अर्थ केवल समयरहित शून्य नहि,
 आत्मिक पूर्तिक एहन दशा, जतय लक्ष्य पाबि यात्रा अपूर्ण नहि।
 अंतिम अवस्था प्रेमक रूपमे कल्पित—निज स्वार्थ सँ बहुत पैघ,
 नित्य प्रति समर्पण, करुणा, मुक्त चेतना—जीवनक उत्कर्षक मेघ।
 स्वतन्त्रता तखन मनमानी नहि, आत्म-अनुभूतिक प्रकाश,
 मूल्यक सत्य अनुभवमे जागै, बनै चरम जीवनक निवास।
 फेर ईश्वरक प्रश्न उठै—की धर्म लेल ईश्वर अनिवार्य?
 केओ कहै—हाँ, केओ कहै—पूर्ण सत्ता बिनु सेहो धर्म सम्भाव्य।
 धार्मिक जीवनक केन्द्र आत्मक मूल्य-चेतनामे खोजल जाए,
 ईश्वरक कल्पना महत्त्वपूर्ण, मुदा धर्मक सम्पूर्ण अर्थ ओकरामे नहि बाँधथि।
 धार्मिक अनुभूति जखन कहै—“हम परमसँ स्पर्शित भेलहुँ,”
 दर्शन पुछै—अनुभूतिक सत्य कोना सार्वजनीन प्रमाण बनलहुँ?
 रहस्यगम्य अनुभूति गहिरी, मुदा निजी अनुभूतिक भार,
 ओ स्वयं अनुभवी लेल प्रबल, दोसर लेल नहि अनिवार्य स्वीकार।
 सौन्दर्यक अनुभूति जकाँ धर्मो मन केँ सीमासँ ऊपर लए जाए,
 तइयो सौन्दर्य सँ अदृश्य सत्ता स्वतः सिद्ध नहि भऽ जाए।
 अर्थ रहै, रूपान्तरण रहै, जीवनक दिशा बदलि सकै,
 मुदा अनुभूति मात्रसँ ईश्वर-अस्तित्वक कठोर निष्कर्ष नहि निकलि सकै।
 ईश्वरक पक्षमे तात्त्विक युक्ति कहै—सर्वोच्च सत्ताक भाव,
 जतय सर्वोच्चता भीतर अस्तित्वक माँग, नहि केवल मानसिक प्रभाव।
 मुदा विचारमे अस्तित्व मानल सँ बाहरी सत्ता सिद्ध कियैक?
 कल्पनाक पूर्णता वास्तविक उपस्थिति बनि जाए—एहि छलाँग पर प्रश्न अनेकार्थक।
 कारणात्मक युक्ति जगतक शृंखला सँ प्रथम कारण दिस बढैत,
 यदि प्रत्येक घटना हेतु चाहै, अन्तमे स्वनिर्भर कारण खोजैत।
 मुदा जगतक समग्रताकेँ कारण चाही—ई धारणा स्वयं प्रमाण माँगै,
 पहिल कारण ईश्वर कियैक, जग स्वयं कियैक नहि—प्रश्न फेर जागै।

प्रयोजनवादी दृष्टि व्यवस्था, संगठन, सामंजस्य देखै,
जगतक सूक्ष्म बनावट भीतर बुद्धिमान योजनाकारक रेख।
पर व्यवस्था बहुत सम्भावनासँ उपजल हो सकै, नियमक स्वभावसँ बनि,
अतः योजना सँ नियोजक धरि तर्कक सेतु सदिखन अटूट नहि रहि।
एहि सभ युक्तिक जाँच सँ एक निष्कर्ष धीरे उभरै—
परम्परागत ईश्वरक प्रमाण धर्मक एकमात्र आधार नहि धरथि।
‘ईश्वर’ शब्दमे व्यक्तिकल्पना बहुत, पूर्ण सत्ता व्यापक विचार,
धर्मक क्षेत्रमे परम मूल्यक अनुभव कखनो अधिक समावेशी आधार।
धर्मक परिभाषा सेहो कठिन—आस्था, अनुष्ठान, समुदाय कि भावना?
किछु धर्ममे ईश्वर केन्द्र, किछुमे आत्मा, किछुमे नैतिक साधना।
एक परिभाषा सभ उदाहरण समेटत—एहन दाबी असम्भव प्राय,
धर्मक परिवार अनेक रूपक संगम, जकर आधार मनुष्यक अन्तर्जगत आय।
एक स्वर कहै—धार्मिक प्रतिक्रिया मूल्यक प्रति भावनात्मक वलय,
दोसर जोड़ै—विश्वास, भावना, आचरण मिलि बनबैत पूर्ण परिचय।
केवल भावना धर्म नहि, केवल कर्मो नहि, केवल सिद्धान्त अपूर्ण,
ज्ञान, भाव, क्रिया—तीनू पहिलूसँ धार्मिक जीवन होइ सम्पूर्ण।
धार्मिक रीति-रिवाज इतिहासमे संगठनक आधार बनल,
मुदा साधन जँ लक्ष्य बनि जाए, धर्मक नैतिक चेतना म्लान भऽ चल।
अनुष्ठान सामूहिक स्मृति राखै, पर स्वतन्त्र विवेकक स्थानो चाही,
धर्म जीवित तखने, जखन नियमसँ ऊपर मूल्यक चेतना जागल रहै सही।
पौराणिक कथा, मिथक, प्रतीक—धर्मक इतिहासक पुरान भाषा,
तर्कक शाब्दिक कसौटी पर सभ नहि टिकै, तइयो देत मानवी आशा।
कल्पना, भय, विस्मय, प्रकृति—सभ मिलि धर्मक रूप बनौल,
समयक संग बुद्धि बढ़ल, प्रतीकक अर्थ बदलल, नव व्याख्या समक्ष आयल।
धर्मक उत्पत्ति पर अनेक सिद्धान्त—जीववाद, पूर्वज-पूजा, सामाजिक बन्ध,
कोनो एक सूत्र सँ सभ धर्मक इतिहास नहि होइ पूर्णतः आबद्ध।
प्राचीन मनुष्यमे देहसँ अलग चेतनाक अनुभूति, सपना, मृत्यु-विचार,
एहि सँ आत्मा, प्रेत, देवता—अनेक कल्पना पाबथि सांस्कृतिक आकार।
समाजो धर्मक निर्माणमे भूमिका निभबैत—साझा भय, उत्सव, नियम,
समुदायक पवित्र चिह्न सँ व्यक्ति पाबै पहचानक गहिरी गरिम।
मुदा धर्म केवल समूहक दबाव नहि, निजी अन्तःप्रतिक्रिया सेहो,
आस्था समुदाय बनबैत, समुदाय आस्थाकेँ रूप दैत—दूनु दिशामे सेतु सेहो।
परम्परा बिनु धर्मक स्मृति टूटत, पर परम्परा जँ जड़ बनि जाए,
नव अनुभूति, नूतन विवेक, नैतिक प्रगति लेल द्वार बंद भऽ जाए।
जीवित धर्म पुरान जड़ि सँ रस लैत, मुदा प्रश्नक पात फेर खोलै,
अतीतकेँ सम्मान दैत वर्तमानक चेतना अनुसार अर्थ नव बोलै।

धर्म सदा विरोधी प्रवृत्तिक बीच यात्रा—बंधन आ मुक्ति, रीति आ नवता,
 समूहक अनुशासन आ व्यक्तिक अन्तरात्मा, भाव आ बौद्धिक स्पष्टता।
 एहि तनावमे धर्म जीवित रहै; एक पक्ष पूर्ण जीतल त संतुलन टूटै,
 प्रगति परम्पराक विनाश नहि, ओकर भीतर नूतन अर्थक अंकुर फूटै।
 धर्म आ दर्शन अन्तमे दुश्मन नहि—दूनु सत्यक दिशा ताकै,
 दर्शन तथ्यात्मक निर्णय करै, धर्म मूल्यगत जीवनक राहि देखाकै।
 मुदा मूल्य यदि वस्तुगत मानल, दूनुक क्षेत्र कतहु एक-दोसरासँ मिलै,
 विश्वासक बुद्धिसंगत परीक्षण सँ धर्म अन्ध नहि, दर्शन निर्जीव नहि रहै।
 श्रुति, परम्परा, अनुभूति—ककरो मान्यता केवल नामसँ नहि,
 जँ सत्य दावा अछि, त आलोचनात्मक जाँचक द्वार बंद रहब उचित नहि।
 बौद्धिकता विश्वासक शत्रु नहि; विश्वास जँ प्रमाणक प्रश्न सहि सकै,
 त धर्म अधिक गहिर, अधिक मानवी, अधिक सत्याभिमुख बनि सकै।
 कालक धार सँ मानवक भाग्य, भाग्य सँ नित्यता, नित्यता सँ परम,
 परम सँ धर्मक इतिहास धरि चलल प्रश्नक अनवरत क्रम।
 अन्तिम पाँतिमे सत्य धर्म जड़ विश्वास नहि, जागल विवेकक संग,
 मूल्य, अनुभव, तर्क, आचरण मिलि मानव जीवनकेँ दैत अर्थक रंग।

पवित्रताक आकाश सँ लौकिक जीवन धरि

इतिहासक चाक घुमल त विश्वासक रूपो फेरि बदलल,
 सुधार, नवजागरण, विज्ञानक उजास सँ पुरान केन्द्र हिलल।
 जे देवालयमे बन्द छल, जीवनक प्रश्न सड़क पर आबि ठाढ़,
 धर्म पुछलक—नूतन युगमे हमर अर्थ कोन, हमर आधार?
 ऐहिकतावाद केवल ईश्वर-निषेधक कठोर घोष नहि,
 कखनो ई मनुष्यक अपन सामर्थ्य पर भरोसक नूतन दिशा सही।
 रोगमे प्रार्थनाक संग चिकित्सक, संकटमे योजना आ श्रम,
 लौकिक साधन सँ जीवन सँवारब—एहि रूपमे बदलल कर्म।
 निरिश्चरवाद आ ऐहिकता एकहि वस्तु नहि सदिखन,
 एक सत्ता नकारि सकै, दोसर जीवनक केन्द्र बदलै प्रतिक्षण।
 सांस्कृतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक चेतना जखन स्वायत्त बनै,
 पारलौकिक आदेशक बदला मानवी निर्णय अधिक बल पबैत रहै।
 शहर बढ़ल, उद्योग बढ़ल, लोक निरन्तर स्थान बदलैत,
 अनाम भीड़मे व्यक्तिक पुरान पहचान धीरे-धीरे गलैत।
 गतिशीलता आ अनामता संग सम्बन्धक रूप बदलल,
 विश्वासक विरासत स्थिर नहि रहि, आधुनिक मन भीतर सँ हलल।
 व्यवहारिकता कहलक—समस्या अछि त उपाय खोजू,
 कार्य, परियोजना, तकनीक सँ परिणामक राहि रोजू।
 पवित्रक सीमित क्षेत्र सँ बाहर लौकिकता फैलि गेल,
 जीवनक साधारण क्षणो विचारक केन्द्रमे आबि भेल।

पवित्र आ लौकिक बीच जे पुरान ऊँच-नीच बनल छल,
नूतन चेतना ओकर सीमारेखा पर प्रश्नक दीप जरौल।
यदि ईश्वर दूर लगै, संसार स्वयं अपन चाल चलै,
त पूजा, विधि, आज्ञाक अर्थ नव सामाजिक सन्दर्भमे ढलै।
मुदा ऐहिकता संग सहिष्णुता आ अनेकत्वो आबि सकै,
अपन मत छोड़ि नहि, तइयो दोसर मत केँ स्थान देल जा सकै।
धार्मिक दृष्टि एक निष्ठा माँगै, नागरिक जीवन बहुधा विविध,
एहि द्वंद्वमे आधुनिक समाज खोजै सम्मानक संतुलित विधि।
कियो कहलक—परिवर्तनक मूल समाजक संरचना भीतर,
कियो देखलक विज्ञानक नूतन बौद्धिक क्रान्ति अधिक गहिर।
औद्योगीकरण, नगरीकरण, विभेदीकरण बदललक आचरण,
मुदा कारण-कार्यक वैज्ञानिक भाषा बदललक जगत-वर्णन।
प्रकृतिक घटना जखन प्रकृतिक नियमसँ बुझाओल जाए,
अदृश्य हस्तक्षेपक आवश्यकता व्याख्यामे कम होइत जाए।
ई विज्ञान ईश्वर केँ सिद्धो नहि करै, न पूर्ण नकार,
मुदा जगत बुझबाक ढंग बदलि दैत—एतय ऐतिहासिक विचार।
सत्यापनक कसौटी आगाँ आयल—जे जाँचि नहि सकी, तकर अर्थ की?
ईश्वरक कथन अनुभवक धरती पर कोना उतरै, प्रमाणक रीति की?
कियो कहलक—एहन कथन निरर्थक, तथ्यक दायरा पार,
कियो उत्तर देलक—धार्मिक भाषा केवल विज्ञानक भाषा नहि यार।
कियो धार्मिक कथन केँ नैतिक संकल्पक भाषा मानल,
कथा, दृष्टान्त, स्मृति सँ जीवन-नीति प्रेरित जानल।
कथा ऐतिहासिक सत्य हो वा कल्पनात्मक प्रतीकक रूप,
यदि आचरण बदलै, त धार्मिक कथनक एक व्यावहारिक स्वरूप।
मुदा आपत्ति उठल—ईश्वरकेँ केवल नैतिक कथा बनायब कियैक?
विश्वासी जे वास्तविक सत्ता मानै, ओकर दावाकेँ घटायब कियैक?
धर्मक भाषा यदि केवल प्रेरणा, त सत्य-दावाक की होएत ठाम?
एहिए प्रश्न पर अनेक मतबीच उठै गहिर संग्राम।
नूतन युगक भाषा में धार्मिक अर्थ फेर सँ खोजल जाए,
पारलौकिक शब्दक पाछाँ खोजथि मानवी जीवनक धरती-सत्य।
ईसा मुक्त जीवनक दृष्टि, पड़ोसी प्रति प्रेमक आह्वान,
धर्म जँ जीवित अछि त व्यवहारमे देखाउ ओकर मानवी प्रमाण।
मुक्ति तखन स्वर्गक दूर प्रदेश मात्र नहि रहै,
स्वार्थ सँ बाहर निकलि दोसरक लेल जीबामे अर्थ कहै।
मुदा पुनरुत्थान, चमत्कार, ईश्वरक वास्तविकता पर प्रश्न बचल,
इतिहासक ईसा आ विश्वासक ईसा बीचक सीमा फेर खुलल।

किछु चिन्तक कहलक—“ईश्वरक मृत्यु” आधुनिक युगक संकेत,
 न देवालयक भीतर पुरान सत्ता, न आकाश सँ उतरैत आदेशक रेख।
 मनुष्य आब जगत, पड़ोसी, इतिहासक दायित्व दिस मुड़ै,
 धर्म यदि बाँचत त नूतन रूपमे बाँचत, पुरान प्रतिमासँ बाहर जुड़ै।
 किछु उग्र स्वर एहि संकट केँ चरम धरि लागे ल,
 ईश्वरक अनुपस्थिति केँ सार्वजनिक अनुभवक भाषा देल।
 कियो एहि मृत्यु में निराशा नहि, नव उत्तरदायित्व देखलक,
 कियो पुरान अतिक्रमण टूटिते लौकिक प्रेमक नूतन धरती लेखलक।
 एक तुलनात्मक दृष्टिमे आस्तिक-नास्तिक एके जग देखैत,
 मुदा घटनासभक समग्र विन्यास अलग अर्थमे सजैत।
 जकाँ एके प्रमाण पर दू अधिवक्ता अलग निर्णय धरै,
 तहिना विश्वक एकरूप तथ्य पर अर्थक भिन्न नक्शा बनै।
 एक स्वर कहै—धार्मिक भाषा केँ जीवन-रूपसँ काटू नहि,
 एक संस्कृतिक कसौटी दोसर पर थोपि अर्थ मापू नहि।
 विज्ञान, कला, धर्म—सभक प्रयोग, नियम, प्रसंग अलग,
 तर्क चाही, मुदा प्रसंग बिसरि सभक एकहि कसौटी होएत छलक।
 ईसाई सन्देश प्रत्येक युगमे नूतन भाषामे बोलल जाए,
 मूल सत्य शाश्वत मानल जाए, अभिव्यक्ति समयसँ रूप बदलाए।
 मुदा कठिन प्रश्न—शाश्वत सार केँ ऐतिहासिक रूपसँ अलग कोना जानब?
 परम्परा बिनु सार अदृश्य, सार बिनु परम्परा जड़—कतेक दूर मानब?
 किछु नूतन प्रयास धर्म केँ सम्पूर्ण जीवनसँ जोड़ै,
 धर्म जीवनक एक कोना नहि, मानवक सम्पूर्ण अस्तित्वमे अर्थ खोजै।
 “स्वर्गक राज्य” यदि एहि धरतीक न्याय-प्रेममे प्रकट होइ,
 त धर्म पवित्रता बचबैत लौकिक उत्तरदायित्व सँ दूर नहि होइ।
 फेर प्रश्न उठल—पारलौकिक सत्ता बिनु जीवन सार्थक हो सकै?
 एक उत्तर—धार्मिक सदृश समर्पण मानवी जीवनमे जगि सकै।
 नैतिक प्रतिबद्धता, विस्मय, रहस्य, करुणा, समग्र जीवनक ध्यान,
 एहि सभमे धर्म-सदृश गहिराइ, चाहे न हो पारलौकिक विधान।
 आलोचना कहै—धर्मक परिभाषा एतेक चौड़ी नहि करू,
 जे प्रत्येक उच्च नैतिकता केँ धर्म कहि भेदक आधार हरू।
 जैन, बौद्ध सन परम्परामे ईश्वरक अनिवार्यता नहि सदिखन,
 तें धार्मिकता आ ईश्वरवादक सम्बन्ध इतिहासमे अनेक रूपक चिन्ह।
 जीवनक सार्थकता केकरा पर टिकै—दैवी योजना कि मानवी काम?
 यदि जगत बाहर कोनो अंतिम लक्ष्य नहि, त की जीवन होएत निष्काम?
 दर्शन कहै—व्यक्ति समाजक व्यापक सम्बन्धमे अर्थ पाबि सकै,
 ज्ञान, मित्रता, कला, करुणा, प्रकृति—स्वतः मूल्यवान बनि सकै।

सिसिफस पाथर ढोड़त रहै—यदि केवल पुनरावृत्ति, त अर्थ क्षीण,
मुदा जँ कर्म अपन स्वीकृत मूल्य सँ भरल, त जीवन होइ नवीन।
कामक अन्तिम फल नहि मात्र, कर्मक भीतरक मूल्य सेहो राहि,
मानवी गरिमा कखनो परिणामसँ बेसी चयन आ प्रतिबद्धतामे चाहि।
इतिहासक धारा केवल धर्मक घटबाक कथा नहि,
अपितु ई जे धर्म, विज्ञान, भाषा, समाज एक-दोसरासँ निरन्तर बदलल।
पवित्रताक आकाश सँ लौकिक जीवन धरि यात्रा सरल रेखा नहि,
प्रत्येक मोड़ पर प्रश्न—की बचल, की बदलल, की नूतन अर्थ सही।
धर्म जँ इतिहासमे जीबै, त इतिहाससँ संवाद करबाक पड़त,
विज्ञानक प्रश्न, भाषाक परिवर्तन, समाजक न्याय सँ आँखि नहि मोड़त।
आ ऐहिकता जँ मानवी हो, त मूल्यक गहराई केँ हलुक नहि मानत,
दून मिलि मनुष्यक अर्थक खोजमे प्रश्नक दीप सदखन आनत।

अनेक पथक संगममे एक सत्यक खोज

धर्म अनेक पथ जकाँ जगमे अपन-अपन दिशा धरैत,
कियो प्रेमक दीप जरबैत, कियो ज्ञानक बाट पर चलैत।
मुदा मानवक प्रश्न एक—दुःख, सत्य, मुक्ति, करुणाक अर्थ,
एहि साझा प्यासमे धर्मसभ भेटथि एक-दोसरक धरती-पार्थ।
यदि प्रत्येक परम्परा कहै—“सत्य केवल हमरहि घर,”
त संवादक द्वार बन्द भऽ जाए, मनुष्य बनि जाए परस्पर पर।
अन्योन्याश्रय कहै—भिन्नता मिटाउ नहि, ओकरा समझू,
दोसरक अनुभवक उजास सँ अपन विश्वासो फेरि गहिरे बुझू।
धर्म केवल सिद्धान्तक सूची नहि, जीवित अनुभवक संसार,
अनुष्ठान, प्रतीक, कथा, प्रार्थना, तप, प्रेमक असंख्य आकार।
एक परम्पराक शब्द दोसर भाषामे हूबहू नहि उतरै,
मुदा मानवी आकांक्षा, भय, आशा अनेक ठाम एक-दोसरासँ जुड़ै।
उपनिषद भीतर आत्मा-ब्रह्मक मौन प्रश्न गहिरे उतरै,
गीता कर्म, ज्ञान, भक्ति सँ जीवनक द्वंद्व पार करै।
बौद्ध पथ दुःखक मूल आ करुणाक साधना खोलै,
ईसाई प्रेम आ बलिदान मनुष्यक पड़ोसी दिस मुख मोड़ै।
इस्लामी समर्पण, यहूदी विधान, जैन अहिंसाक अनुशासन,
प्रत्येक परम्परामे सत्यक खोजक अलग-अलग स्पन्दन।
भिन्न नाम, भिन्न प्रतीक, भिन्न इतिहासक रंग,
मुदा नैतिक जागरण कतेको ठाम बनै साझा जीवन-संग।
तुलना करबाक अर्थ नहि जे सभ धर्म एके बात कहैत,
नहि जे अन्तर केवल बाहरी, भीतर सभ सर्वथा सम रहैत।
समानता जतेक आवश्यक, भिन्नता ततेक गम्भीर,
सत्यक संवाद तखने सम्भव जखन दूनोंक सम्मान रहै अधीर।

कियो निर्गुण परम कहै, कियो सगुण ईश्वरक नेह,
 कियो निर्वाणक शान्ति खोजै, कियो उद्धारक दिव्य गेह।
 यदि एक अवधारणा दोसर पर जबरन राखल जाए,
 त मूल परम्पराक स्वर दबि जाए, संवादक अर्थ हराए।
 धार्मिक अनुभवो एकरूप नहि—भक्ति, ध्यान, रहस्यक मौन,
 कखनो प्रेमक उन्मेष, कखनो शून्यताक निर्मल कोन।
 तुलनात्मक दृष्टि पुछै—अनुभवक प्रकार अलग कतेक?
 मिलनक भाषा एक कहब कि प्रत्येकक भीतर भिन्न भाव अनेक?
 अद्वैतक एकत्व कहै—भेदक पाछाँ अखण्ड आधार,
 ईसाई मिलनमे व्यक्ति आ ईश्वर बीच प्रेमक सम्बन्ध साकार।
 बौद्ध अनुभूति अनात्म, क्षणभंगुरता, निर्वाणक ओर,
 एके शब्द ‘रहस्य’ सँ सभकेँ बाँधब उचित नहि चहुँओर।
 तें तुलनात्मक दर्शनक पहिल नेम—परम्परा केँ भीतर सँ पढ़ू,
 ओकर मूल ग्रन्थ, साधना, प्रतीक, ऐतिहासिक अनुभव संग जुड़ू।
 बाहरक कसौटी सँ तुरन्त निर्णय देब बौद्धिक न्याय नहि,
 दोसरक भाषा सीखल बिनु ओकर सत्यक अर्थ पकड़ब सहज नहि।
 मुदा भीतर सँ बुझबो आलोचना छोड़ब नहि कहैत,
 विश्वास जँ सत्य-दावा करै, त प्रश्नक उजास ओकरा छूड़त।
 करुणा कहै—सम्मान राखू; विवेक कहै—तर्को आवश्यक,
 संवादक पुल दूनू सँ बनै, नहि केवल सहमति सँ पूरी।
 एक धर्म दोसरासँ केवल विचार नहि, आचरणो सीखि सकै,
 सामाजिक न्याय, सेवा, अहिंसा, आत्मसंयमक राहि देख सकै।
 इतिहासमे सम्पर्कसँ प्रतीक, भाषा, पूजा, दर्शन बदलल,
 परस्पर प्रभाव सँ अनेक धार्मिक रूप नव अर्थमे ढलल।
 कखनो संघर्ष भेल, धर्मक नाम पर हिंसाक अन्हार,
 कखनो साम्राज्य, राजनीति, जाति मिलि बनौल कठिन दीवार।
 एहि इतिहासकेँ ढाँकि समरसता कहब सत्यक अपमान,
 अन्योन्याश्रयक अर्थ—घाव स्वीकारि बनाउ नव नैतिक विधान।
 धर्म जँ मनुष्यक मुक्ति कहै, त मनुष्यक दुःख सँ दूर कियैक?
 भूख, अन्याय, दमन, अपमान पर मौन रहि पवित्रता कियैक?
 परस्पर संवाद अन्ततः धरतीक जीवनमे उतरबाक चाही,
 सत्यक कसौटी करुणा, न्याय, गरिमा संग जुड़बाक चाही।
 व्यक्तिगत मुक्ति आ सामाजिक उत्तरदायित्व अलग नहि सदिखन,
 आत्मशुद्धि जँ पड़ोसीक पीड़ा नहि बुझै, त साधना रहै अधूर चिन्ह।
 धर्मसभ एक-दोसरासँ एहि प्रश्न पर अधिक सीखि सकथि,
 भीतरक रूपान्तरण बाहरी न्याय संग कोना जुड़ै—ई बाट देखथि।

शास्त्र प्रत्येक परम्परामे स्मृतिक दीप, मुदा व्याख्या समयसँ बदलै,
पुरान शब्द नूतन युगक प्रश्न सँ भेटि नव अर्थमे ढलै।
दोसर धर्मक प्रश्न अपन शास्त्रकेँ नूतन ढंग सँ पढ़बैत,
एहि प्रकार परम्परा जीवित रहै, जड़ दोहरावसँ बचैत।
धर्मक सत्य यदि असीम, त मनुष्यक भाषा सीमित मानू,
अपन परिभाषा केँ सम्पूर्ण अन्तिम सत्य नहि जानू।
ई विनम्रता आत्मविश्वासक विरोध नहि, अपितु ओकर गहिरी रीति,
जे सत्य पैघ अछि, से एके पात्रमे सम्पूर्ण नहि समाए—एहि में प्रीति।
बहुलता कहै—अनेक मार्ग अछि; पर प्रश्न तखन उठै,
की सभ मार्ग समान? की असत्य, हिंसा, अन्यायो धर्म कहि छुटै?
सहिष्णुता विवेकहीन समता नहि—नैतिक मापदण्ड आवश्यक,
मानवी गरिमा जतय टूटै, ओतय आलोचना बनै धर्मक जिम्मेवारी।
संवादमे धर्म अपन पहचान गँवबैत नहि, अपितु स्पष्ट करैत,
दोसरक प्रश्न अपन विश्वासक भीतर लुकल गाँठ उघारैत।
जे बात परम्परा सहज मानि लेल छल, तुलना ओकर आधार पूछै,
एहि आत्मपरीक्षण सँ श्रद्धा अन्ध नहि, अधिक सचेत रूप सूझै।
संगमक अर्थ नदीसभ नाम छोड़ि समुद्रमे विलीन नहि,
प्रत्येक धारा अपन इतिहास, स्वाद, भूगोल सहित दीन नहि।
संगम ओतय जे जल भेटै, पर धाराक स्मृति बचल रहै,
धर्मसभक सह-अस्तित्व तखने सुंदर जखन भिन्न स्वर खुलल रहै।
अनेक पथक संगममे एक सत्यक खोज कदाचित् अन्तिम सूत्र नहि,
अपितु यात्रा—जतय प्रश्न जीवित, विनम्रता जागल, मन संकुचित नहि।
अपन धर्म सँ प्रेम करू, दोसरक धर्म सँ सीखबाक साहस राखू,
मानवता केँ साझा धरती मानि सत्यक दीप परस्पर बाँटू।

‘शुभ’क अर्थ सँ कर्तव्यक कसौटी धरि

नीतिशास्त्रक देहरी पर प्रश्न—“भल” कहिते हम की कहैत छी?
केवल वस्तुक वर्णन, कि जीवनक दिशा सेहो संग दैत छी?
“ई उचित”, “ई अनुचित”, “ई कर्तव्य”—शब्द नहि निष्प्राण,
एहि सभमे निर्णयक संग जुड़ल अछि आचरणक आह्वान।
विज्ञान कहै—“ई भेल”, इतिहास कहै—“एहन घटल”,
नीति पुछै—“की होयबाक चाही?”—एतय स्वर बदलल।
तथ्य आ मूल्य एकहि धरती पर भेटथि, मुदा एके नहि,
जे अछि, ताहि सँ जे होयबाक चाही—ई छलाँग सदखन सहज नहि।
‘शुभ’ केँ सरल मानि प्राकृतिक गुणमे बाँधब सँ सावधान रहू,
सुख, इच्छा, उपयोग—एकर संग सम्बन्ध हो, तइयो अर्थ नहि ओतहि रोकथि।
जे भल अछि से सुखद हो सकै, मुदा ‘भल’ केवल ‘सुखद’ नहि,
परिभाषा जँ गुणकेँ निगलि जाए, नैतिक प्रश्नक स्वतन्त्रता बचत नहि।

प्रकृतिवादी भूलक चेतावनी—नाम बदलि निष्कर्ष नहि बनाउ,
 वर्णनक तथ्यक ऊपर मूल्यक मुहर बिनु तर्कक नहि लगाउ।
 मानव चाहना, समाजक स्वीकृति, सुख—सभ साक्ष्य दऽ सकै,
 मुदा “कियैक भल?”क प्रश्न फेरो स्वतन्त्र रूपमे उठि सकै।
 अन्तःप्रज्ञावादी कहथि—किछु नैतिक सत्य सोझे पकड़ाइ,
 जकाँ रंगक पहचान, तहिना शुभ-अशुभ चेतना भीतर जगाइ।
 मुदा दू सजग मन विपरीत निर्णय दैत त कसौटी कतय?
 ‘हमरा स्पष्ट बुझाइत अछि’ सँ सार्वजनीन न्याय बनत कतेक दूर भय?
 भावनावादी स्वर कहै—नैतिक कथन भावक अभिव्यक्ति सेहो,
 “ई नीक”मे अनुमोदन, “ई बेठीक”मे अस्वीकृतिक वेग सेहो।
 मुदा यदि नीति केवल हर्ष-रोष, त विवाद समाधान कोना?
 तर्क, कारण, प्रमाणक भूमिका रहत कि सभ बनि जाए केवल भावना?
 नैतिक भाषा केवल भाव नहि—ओ मनुष्य केँ प्रेरित करै,
 आचरणक दिशा, चयनक आग्रह, साझा नियमक भार धरै।
 कथन सुनिते प्रश्न उठै—“अहाँ ई नियम सभपर लागू मानैत छी?”
 एहि सार्वत्रिकतामे नैतिक शब्दक एक गहिरी कसौटी देखैत छी।
 जँ हम कहूँ—“हम लेल अपवाद, दोसर लेल नियम कठोर,”
 त न्याय स्वयं पुछत—कियैक ई भेद, कोन कारणक जोर?
 परिस्थिति सचमुच भिन्न हो त निर्णय भिन्न भऽ सकै,
 मुदा समान परिस्थिति में समान कसौटी नैतिकता माँगि सकै।
 कर्तव्यक भाषा भीतर ‘चाही’क एक विशिष्ट दबाव,
 न बाहरी भय मात्र, न पुरस्कारक लोभक प्रभाव।
 कखनो हम अपन इच्छाक विरुद्धो कहैत छी—“ई करब आवश्यक,”
 एतय नैतिक प्रतिबद्धता बनै व्यक्तिगत पसन्द सँ अधिक गहिरी।
 मुदा कर्तव्य अनेक—सत्य, वचन, न्याय, करुणा, अहिंसा,
 एकहि क्षणमे टकरा सकथि, त निर्णयक बढै परीक्षा।
 एक नियमकेँ अन्ध रूपेँ सर्वोच्च मानल सरल उपाय,
 मुदा जीवनक जटिल प्रसंग पूछै—कुन कर्तव्य एतय पाबै न्याय?
 एक कर्तव्य-दृष्टि कहै—कर्तव्यक अनेक प्राथमिक दाव,
 वचन-पालन, उपकार, न्याय—प्रत्येकक अपन नैतिक भाव।
 स्थिति विशेषमे तौलि निर्णय करब पड़ै, गणित नहि पूर्ण,
 नैतिक बुद्धि प्रसंगक भार बुझि चुनै वास्तविक कर्तव्यक मूल।
 उपयोगितावाद कहै—परिणाम तौलू, अधिकतम कल्याण,
 कर्मक मूल्य जाँचू, कतेक सुख-दुःख पर पड़ल ओकर प्राण।
 एक व्यक्तिक लाभ नहि, सभ प्रभावित जीवनक हिसाब,
 नैतिक निर्णय निजी स्वार्थसँ ऊपर उठि खोजै व्यापक जवाब।

मुदा सुखक माप कोना? सभ सुख की एके तराजू पर चढ़त?
 ज्ञान, मित्रता, न्याय, गरिमा—की केवल आनन्दमे घटत?
 यदि निर्दोषक पीड़ा सँ बहुसंख्यक सुख बढ़ै, त की कर्म उचित?
 एहि आपत्तिसँ परिणामवादक सीमा पर प्रश्न होइ प्रखर निश्चित।
 नियम-उपयोगिता कहै—एक कर्म नहि, नियमक फल देखू,
 जे नियम समाज मानत, दीर्घकालमे ओकर परिणाम लेखू।
 विश्वास, सुरक्षा, न्याय बचबैत नियमक महत्त्व अधिक,
 तत्काल लाभ सँ ऊपर उठि नैतिक व्यवस्था बनै स्थिर, समुचित।
 तइयो नियम जँ कखनो कठोर परिणाम दे, अपवादक प्रश्न जागै,
 नियम बचाउ कि विशिष्ट पीड़ा घटाउ—नीति फेर राहि माँगै।
 जीवन न केवल सूत्रक पन्ना, न केवल क्षणिक गणना,
 आचरणक निर्णयमे विवेक, चरित्र, परिणाम—तीनूक रहै साधना।
 ‘शुभ’ आ ‘उचित’ एक नहि—किछु शुभ वस्तु लक्ष्य बनै,
 उचित कर्म ओहि लक्ष्य दिस उचित साधनक रेखा तनै।
 मुदा साधन स्वयं अनैतिक हो त लक्ष्यक उजास धूमिल,
 “भल परिणाम” कहि प्रत्येक कर्मक औचित्य नहि होइ निर्मल।
 चरित्रक प्रश्न सेहो उठै—केवल कर्म नहि, मनुष्य केहन बनै?
 सत्यवादी, न्यायप्रिय, उदार—गुणसभ व्यवहारक भीतर जनै।
 एकल निर्णयक पाछाँ आदत, प्रवृत्ति, जीवनक दीर्घ अभ्यास,
 नीति तें नियमक संग चरित्रमे सेहो खोजै नैतिक प्रकाश।
 गुण जन्मजात नहि मात्र—अभ्यास, शिक्षा, समाज सँ पनपै,
 मुदा समाज जे मानै से सभ नैतिक सत्य नहि स्वतः बनि जपै।
 परम्परा दिशा देत, आलोचना ओकर सीमा जाँचत,
 चरित्र बनबैत समय विवेक पुरान मूल्यसभक अर्थ फेरि नापत।
 नैतिक निर्णय लेल कारण देब आवश्यक—“हमरा एहन लगै” पर्याप्त नहि,
 प्रसंग, परिणाम, समानता, नियम—सभकेँ देखब आवश्यक सही।
 जे कारण हमरा लेल मान्य, समान स्थिति में दोसर लेल सेहो,
 एहि निष्पक्षताक चाह नैतिक विचारक मूल दायित्व सेहो।
 भावना बिनु नीति शुष्क, तर्क बिनु नीति अन्ध,
 करुणा कहै—पीड़ा देखू; विवेक कहै—कारणक बन्ध।
 दूनू मिलि आचरणक मानवी रूप बनबैत,
 केवल ठंडा गणना वा केवल आवेग—दूनूक सीमा देखबैत।
 नैतिक विवादक अर्थ तें केवल शब्दक लड़ाइ नहि,
 मूल्य, तथ्य, लक्ष्य, नियमक भिन्नता भीतर छिपल रहै सही।
 कखनो तथ्य स्पष्ट करिते विवाद स्वयं घटि जाए,
 कखनो मूल प्रतिबद्धता भिन्न—तखनो संवादक अनुशासन चाही आए।

दर्शन अंतिम आज्ञापत्र नहि, निर्णयक भाषा साफ करै,
 भ्रमित परिभाषा हटाइ विकल्पक वास्तविक भार उधारै।
 कर्म हमरे करबाक, उत्तरदायित्व हमरे स्वीकार,
 नीतिशास्त्र दर्पण जकाँ देखबैत—चयनक पाछाँ कोन आधार।
 ‘शुभ’क अर्थ सँ कर्तव्यक कसौटी धरि यात्रा एतय समाप्त नहि,
 हरेक नूतन परिस्थिति फेर पूछत—“न्याय की?”, “उचित की?”, “भल की?”
 कारणक दीप जारू, समानता मानू, परिणामक पीड़ा देखू,
 स्वार्थसँ ऊपर उठि मानव गरिमाक संग अपन निर्णय लेखू।

घटनाक क्रम सँ ऐतिहासिक बोध धरि

इतिहास केवल बीतल दिनक धूलि नहि, न तिथि-पत्रक पाँति,
 ओ मानव-कर्मक अर्थ खोजै, बदलैत समयक जीवित भ्रान्ति।
 प्रश्न उठै—घटना बुझब मात्र पर्याप्त, कि ओकर क्रमो जानू?
 अतीतक भीतर मनुष्यक लक्ष्य, विकल्प, आशा-भयक स्वर पहचानू।
 कल्पनात्मक इतिहास-दर्शन आ विवेचनात्मक राहि अलग,
 एक समग्र युगक दिशा खोजै, दोसर पुछै तर्कक ढंग।
 व्यापक ऐतिहासिक योजनासभ इतिहासकेँ अर्थ देबाक चाह,
 मुदा विश्लेषण पूछै—कतेक प्रमाणित, कतेक अनुमानक राह?
 कथा जकाँ इतिहास चलैत—आरम्भ, क्रम, मोड़ आ परिणाम,
 एक घटना दोसरासँ जुड़ि पाबै पाठकक चेतनामे नाम।
 विज्ञान जकाँ निष्कर्ष नियमसँ अनिवार्य नहि एतय आय,
 इतिहासमे घटना अपन पूर्ववर्ती घटनाकेँ बदलि अर्थ बुझाय।
 कथाक अन्त पहिने सँ पूर्ण ज्ञात हो त उत्कंठा कतय रहत?
 अतीत बुझितो इतिहासकार जानै—अभिकर्ता भविष्य नहि देखत।
 ओकर निर्णय ओहि क्षणक सम्भावना भीतर सँ बुझबाक चाही,
 पाछाँक ज्ञान थोपि देब अतीतक मनुष्य पर न्याय नहि सही।
 घटना-क्रम बोधगम्य बनै जखन उद्देश्यक सूत जुड़ै,
 अभिप्राय, उपाय, असफलता, आकस्मिकता—सभ कथा भीतर मुड़ै।
 परिणाम अन्तिम पाँति नहि मात्र, पूर्वक घटनाकेँ फेर प्रकाश,
 जे घटल ताहि सँ आरम्भक अर्थो बदलै—एतय इतिहासक विशेष आभास।
 वैज्ञानिक व्याख्या सामान्य नियमक छाँहमे कारण खोजै,
 इतिहास मनुष्यक कार्य, आशय, संस्थाक धरातल पर अर्थ सोजै।
 एक प्रयोग दोहराओल जा सकै, एक युद्ध फेर हूबहू नहि,
 एहि लेल ऐतिहासिक बोधक तर्क विज्ञानक प्रतिलिपि नहि।
 व्यक्ति अकेला इतिहास नहि, संस्था अकेली इतिहास नहि,
 दूनूक परस्पर क्रियामे समयक असली गति रहै सही।
 राज्य, नीति, सुधार, संविधान—संस्थागत तथ्यक भार,
 मुदा ओकर भीतर व्यक्तिक विचार, निर्णय, संघर्षक सेहो अधिकार।

अतिशय नामवाद कहै—केवल व्यक्ति वास्तविक सत्ता,
सामान्य शब्द बस भाषा-छाया, संस्था नहि स्वतन्त्र सत्ता।
एहि एकान्त दृष्टि पर प्रश्नक उजास पड़ै,
संस्थागत परिवर्तन बिनु अनेक ऐतिहासिक कड़ी अधूरी पड़थि।
उलटा सामान्यवाद यदि व्यक्ति केँ केवल प्रवाहक कण बनाय,
त निजी अभिप्राय, चुनाव, उत्तरदायित्वक स्वर कतय जाए?
इतिहासक न्याय दूनू छोरसँ दूरी राखि चलबाक चाही,
मानव-कार्य आ सामाजिक संरचना एक-दोसरक संग गुँथल सही।
कखनो संस्थाक आरम्भमे किछु व्यक्तिक भूमिका होइ प्रखर,
नूतन लक्ष्य, नूतन रीति, विरोधक बीच उठै एक नूतन स्वर।
मुदा संस्था दृढ़ भेलापर क्रमशः सामूहिक क्रिया बढ़ै,
एक व्यक्तिक जीवनसँ पैघ इतिहासक धारा आगाँ चढ़ै।
इतिहासकार चुनै तथ्य—सभ घटना समान महत्व नहि पाबै,
ककरा कथा-रेखामे राखब, ककरा पृष्ठभूमिमे छोड़ब—ई निर्णय आबै।
एहि चयनमे दृष्टि रहै, मुदा मनमानी होएब आवश्यक नहि,
प्रमाण, प्रसंग, संगति सँ व्याख्या बनै अधिक विश्वसनीय सही।
वस्तुनिष्ठता पत्थरक निस्पृहता नहि, अपितु अनुशासित न्याय,
अपन पूर्वमान्यता बुझि प्रमाणक विरोधो स्वीकारब चाही आय।
इतिहासकारक दृष्टिकोण अछि, तइयो तथ्यक प्रतिरोध रहै,
स्रोत जँ उलटा बोलै त सिद्धान्त बदलबाक बौद्धिक साहस चाही रहै।
आकस्मिकता इतिहासमे अवांछित शोर नहि, वास्तविक एक शक्ति,
योजना रहितो परिणाम बदलै रोग, दुर्घटना, अवसरक युक्ति।
मनुष्य चाहै एक दिशा, घटना मोड़ि देत दोसर बाट,
ऐतिहासिक बोध एहि अनिश्चितताकेँ राखै अपन कथा-संग साथ।
प्रतिलोम प्रश्न सेहो उपयोगी—“यदि ई घटना नहि घटिते?”
तखन कोन सम्भावना खुलिते, कोन दिशा कदाचित् नहि बनिते?
ई कल्पना इतिहासक तथ्यक बदला नहि, विश्लेषणक एक औजार,
कारणक वास्तविक महत्व तौलए वैकल्पिक सम्भावनाक आधार।
कारण एतय केवल धक्का नहि, न नियमक यान्त्रिक पाश,
मानवी प्रयोजन, परिस्थिति, संस्था—सभ मिलि बनबैत कारणक आभास।
एक घटना लेल अनेक स्तरक कारण एक संग रहि सकै,
इतिहासकारक काज ओकर भार आ सम्बन्धक सूक्ष्मता देख सकै।
व्याख्या एके इतिहासमे एकटा मात्र सम्भव होएत नहि,
राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक दृष्टि सभ व्यर्थ नहि।
प्रश्न जे पुछब ताहि अनुसार तथ्यक नया सम्बन्ध खुलै,
मुदा सभ व्याख्या समान नहि—प्रमाणक कसौटी फेरि तुलै।

अतीतक मनुष्य केँ वर्तमानक शब्दमे तुरन्त कैद नहि करू,
 ओकर समयक भाषा, संस्था, सम्भावनाक सीमा भीतर प्रवेश करू।
 तखने ओकर निर्णय मूर्खता वा महानता सँ बेसी मानवी बनत,
 इतिहास सहानुभूति नहि मात्र—सन्दर्भगत समझक अनुशासन बनत।
 दर्शनक इतिहासो एही नियमसँ बदलैत, मृत मतसभक सूची नहि,
 एक प्रश्न पर उत्तर, फेर उत्तर पर आपत्ति—चिन्तनक धारा सही।
 तर्कशास्त्र, ज्ञानमीमांसा, नीतिशास्त्र बदलल प्रश्नक संग,
 पुरान सीमा टूटिते नूतन समस्या उठल नूतन रूप-रंग।
 दार्शनिक मत शाश्वत काँचक मूर्ति नहि—आलोचनासँ घिसैत,
 एक युगक समाधान दोसर युगमे नूतन प्रश्नसँ फेरि जाँचाइत।
 एहि इतिहाससँ दर्शन अपन विनम्रता आ शक्ति दूनू जानै,
 ज्ञान बढ़ै त परिभाषा बदले, प्रश्नो अपन रूप नूतन मानै।
 विवेचनात्मक चिन्तन जखन शिखर पर, ताहूमे इतिहासक छाप,
 आइ जे स्वच्छ विधि मानल जाए, काल्हि भेटि सकै ओकर नूतन माप।
 कोनो पद्धति अंतिम नहि—ज्ञानक विकास फेर चुनौती देत,
 दर्शन जीवित तखने रहत जखन अपन आधारो प्रश्नक समक्ष लेत।
 अतीत केँ केवल संग्रहालयमे राखब ऐतिहासिक बोध नहि,
 वर्तमानक समझमे ओकर छाया, भविष्यक निर्णयमे ओकर सीख सही।
 राजनीति, विज्ञान, समाज—सभमे इतिहास दृष्टि देत चेतावनी,
 जे क्रम बुझै से परिवर्तनक अवसर आ सीमाक पहचान करै ज्ञानी।
 घटनाक क्रम सँ ऐतिहासिक बोध धरि यात्रा एतेक कहै,
 मनुष्य समयमे जीबै, मुदा समयकेँ अर्थो अपन कर्मसँ दै।
 न नियम मात्र, न इच्छा मात्र—संस्था, आकस्मिकता, लक्ष्यक संग,
 इतिहासक सत्य बनै बहुस्तरीय, विवेकपूर्ण, सतत खुलैत रंग।

कानूनक अक्षर सँ न्यायबोधक अन्तःस्वर धरि

न्याय कहिते एक शब्द, मुदा अर्थक अनेक धार,
 सत्य कहब, ऋण चुकाएब, देब प्रत्येक केँ ओकर अधिकार।
 कानून मानब, आत्मसंयम राखब—परिभाषा सभ भिन्न ठीक,
 सभक भीतर समाज, अनुमोदन, कर्तव्यक ध्वनि कतहु साझा रही।
 न्याय केवल निजी सद्गुण नहि, मनुष्य-मनुष्यक बीचक मान,
 हमर कर्म दोसर पर पड़ैत—एतय उठै उचित-अनुचितक ज्ञान।
 शिष्टाचार सँ अधिक गहिरी, कानूनसँ सेहो कखनो पैघ,
 भीतरक बाध्यता कहै—निष्पक्ष हो, नहि केवल दण्डक भय में रहेख।
 पहिल मत कहै—कानून जतय, ओतहि न्याय-अन्यायक रेख,
 राज्यक विधि कसौटी बनै, ओकर बाहर नहि नैतिक लेख।
 एक विधि-केन्द्रित दृष्टिमे व्यवस्था बिनु अधिकारक स्पष्ट ठाम कतय?
 विधि बनलापर ‘हमर’ आ ‘तोहर’क सीमा समाजमे पाबै लय।

मुदा प्रश्न उठै—कानून स्वयं अन्यायपूर्ण भऽ सकै कि नहि?
 यदि विधान भेदभाव करै, त केवल लागू भेलासँ न्याय होएत ठीक?
 कानूनक वैधता एक बात, ओकर नैतिक मूल्यांकन दोसर,
 एहि फाँकमे न्याय बनि ठाढ़ होइ विधिक अक्षरक ऊपरक प्रश्नकर।
 कानून शान्ति, सुरक्षा, सामाजिक सुखक साधन बनि सकै,
 मुदा साधन सफल होइतहुँ मनुष्यक गरिमा कतहु दबि सकै।
 न्यायालय कानून मानै, विधायक कानून रचै—भूमिका सभ अलग,
 तें न्यायक कसौटी कतय बसै—एहि प्रश्नसँ खुलै नूतन पग।
 दोसरा पथ कहै—मनुष्यक किछु अधिकार कानून सँ पहिने,
 सत्ता ओकर रक्षक हो, निर्माता नहि—मानव गरिमा भीतर चिन्है।
 स्वतन्त्रता आ अधिकारक स्वर मनुष्यक गरिमा केँ दे मान,
 अन्यायपूर्ण कानून पर नैसर्गिक अधिकार उठा सकै विरोधक गान।
 “जकर जे देय, ओकरा से दिअ”—पुरान सूत्र सहज बुझाइ,
 मुदा ‘देय’ केना तय होएत—अधिकार, पात्रता, दावा कोन ठाम सँ आइ?
 पुरान न्याय-परम्पराक अनेक ध्वनि आ विचार,
 एके सूत्र भीतर इतिहास भरि बदलैत रहल अधिकारक आधार।
 कियो कहै स्वतन्त्रता मूल अधिकार, कियो समानता केँ दे प्रधान,
 कियो अधिकारसभ आत्मसिद्ध मानै, कियो इतिहासमे देखै ओकर निर्माण।
 मानवाधिकारक सूची सदिखन एक नहि—युग संग रूप बदलैत,
 तइयो मनुष्यक अवमानना विरुद्ध एक गहिरी नैतिक माँग बचैत।
 तीसर दृष्टि समाजहितक—न्याय समाजक संगठित श्वास,
 लोक परस्पर समझौता करथि, स्वहित संग सामान्य हितक आस।
 अनुभव कहै—संसाधन सीमित, इच्छा अनेक, त नियम आवश्यक,
 परस्पर अपेक्षा बिनु सहयोगक नाव समाजक नदीमे होएत अधूरी।
 न्याय तखन कानून-मात्र नहि, कानूनक बाहरो व्यवहार जाँचै,
 पिता जँ पक्षपात करै, अधिकारी जँ अनुचित भेद राखै—विवेक तकरा नापै।
 निजी आ सार्वजनिक दूनू जीवनमे निष्पक्षताक प्रश्न उठै,
 कानून चुप रहितो न्यायबोध मनुष्यक आचरण पर दृष्टि रखै।
 समाजहित बढ़ब त न्यायसंगत, समाजहित घटब त प्रश्न प्रखर,
 मुदा ‘हित’ केवल बहुसंख्यक लाभ नहि, नहि कमजोरक अधिकारक दमन-नगर।
 वितरण, दायित्व, अवसर, दण्ड—सभमे समानता माँगै विचार,
 कखनो समान व्यवहार, कखनो प्रासंगिक भिन्नताक उचित आधार।
 निष्पक्षता कहै—हमरा लेल जे उचित, दोसर लेल नियम बदलै कियैक?
 समान परिस्थिति में समान निर्णय; भिन्नता हो त कारण दिअ स्पष्ट कियैक।
 कानून बनबिते, लागू करिते, न्यायाधीशक निर्णयमे एके माँग,
 मनमानी हटाउ, कारण देखाउ—एहि सँ न्याय पबैत नैतिक रंग।

आइक छोट लाभ खातिर काल्हिक पैघ हित नहि गमाउ,
 एक व्यक्तिक सुखकेँ सभक पीड़ा पर बेसी भार नहि चढ़ाउ।
 प्रत्येक हितक नैतिक गणना में सम्मानक उचित स्थान,
 स्वार्थक सीमा पार करैत समाजहित बनै न्यायबोधक प्राण।
 एक उपयोगितावादी दृष्टिमें नियम आ ओकर अनुमोदनक भाव दूनू संग,
 केवल गणना नहि, भीतरक प्रतिक्रिया सेहो दैत नैतिक रंग।
 न्यायोचित कर्म समाजक उपयोग बढ़ाए, पर प्रश्न एतय ठाढ़,
 कारण हम तकरा उपयोगी बुझैत छी कि पहिले न्यायोचित मानि करैत स्वीकार?
 सहज नैतिक प्रतिज्ञान कहै—किछु नियम मन स्वयं पहचानै,
 मनमानी भेद बेठीक, निष्पक्षता उचित—बुद्धि तत्काल अर्थ जानै।
 मुदा अन्तःबोध अकेला पर्याप्त नहि, कारणक साझा भाषा चाही,
 जे निर्णय सभपर लागू हो, ओकर औचित्य सार्वजनिक रूपेँ देखाएब चाही।
 न्याय आ उदारता एक नहि—उदारता अपन अधिक दऽ सकै,
 न्याय पहिने पूछै—ककर अधिकार, ककर दायित्व, कोन अंश उचित रहै।
 दान प्रशंसनीय, मुदा समान वितरणक प्रश्न अलग विधान,
 कर्तव्यक भार आ अतिरिक्त सद्भाव—दूनूक बीच राखू पहिचान।
 न्याय विशेष सद्गुण कि नैतिकताक व्यापक अन्तर-स्वर?
 क्षमा, साहस, संयम—सभ सद्गुण, मुदा सभ सामाजिक न्याय नहि हरपल।
 जखन एके दोष पर दू व्यक्ति केँ दू भिन्न दण्ड देल जाए,
 करुणा स्वयं न्याय-विरोधी बनि सकै, यदि समानता बिनु कारण टूटि जाए।
 मानव-केन्द्रित सीमा पर फेर एक प्रश्न उठैत,
 की न्याय केवल मनुष्य धरि, कि प्राणी-जगत धरि अर्थ बढ़बैत?
 पीड़ा, जीवन, निर्भरता जतय, नैतिक संवेदना ओतहु पहुँचै,
 भारतीय व्यापक दृष्टि न्याय-नीतिक क्षेत्र केँ जीव-जगत दिस सेहो खींचै।
 समाज बदलै, न्याय-बोध बदलै—एहि सँ सत्य शून्य नहि,
 अपितु अनुभव सँ कसौटी परिष्कृत, पुरान अन्धता स्थायी नहि।
 जे कखनो स्वीकारल छल, कालान्तरमें अन्याय बुझायल,
 नूतन चेतना कानूनक देहरी धरि पहुँचि संशोधनक दीप जरायल।
 कानून आ न्याय एक-दोसरक शत्रु नहि, न एके वस्तु,
 एक संस्थागत नियमक रूप, दोसर ओकर मूल्यांकनक गहिरी दृष्टि।
 समाजक न्यायकल्पना कानून रचै, कानूनक अनुभव न्याय सुधारै,
 दूनू परस्पर चलैत—एक-दोसरक सीमा, शक्ति, त्रुटि उजागर करै।
 सत्ता जँ समाजक न्यायबोधसँ बहुत दूर निकलि जाए,
 राजनीतिक चेतना कानूनसँ ऊपर उठि परिवर्तनक बाट बनाय।
 आ कखनो कानून स्वयं नूतन न्यायबोध समाजमें रोपै,
 एहि द्विमुखी सम्बन्धमें इतिहासक संस्था धीरे-धीरे रूप बदलै।

तें न्यायक एक अन्तिम सूत्र बन्द मुट्ठीमे नहि समाइ,
 विधि, अधिकार, समाजहित, निष्पक्षता—सभ मिलि ओकर रूप बनाइ।
 कोनो मत सम्पूर्ण अकेला नहि, प्रत्येक किछु सत्यक अंश धरै,
 तुलना आ आलोचना सँ न्यायबोध अधिक निर्मल होइत रहै।
 कानूनक अक्षर सँ न्यायबोधक अन्तःस्वर धरि यात्रा कहै,
 “देय दिअ, भेदक कारण दिअ, कमजोरक हितो समान महत्त्व लहै।”
 समाज बदलू, अधिकार बढ़ू, मुदा मनमानीक द्वार बंद रहू,
 न्याय तखने जीवित—जखन शक्ति पर प्रश्न आ विवेकक दीप प्रखर रहू।

अक्षरक पार जे उजास

कागज पर लिखल पाँति सभ
 जखन जीवनक देहरी पर उतरैत अछि,
 तखन स्याही मात्र नहि रहैत—
 ककरो छत बचबैत,
 ककरो बाट रोकैत,
 ककरो मौन केँ आवाज दैत अछि।
 नियमक घर ऊँच हो,
 मुदा ओकर खिड़की खुलल रहय;
 हवा भीतर आबय,
 मनुष्यक साँस सुनाइ,
 आ अक्षर बुझय—
 जीवन सदिखन एकहि आकारमे नहि बसैत।
 एके तराजू सभ हाथमे दऽ देब
 समानता नहि होइत;
 ककरो हथेली खाली,
 ककरो मुट्ठी पहिनेसँ भरल—
 न्याय तखने जागैत
 जखन भेदक कारणो उजागर होइत।
 अधिकार फूल नहि
 जे केवल अपन आँगनमे खिलय;
 ओकर सुगन्ध दोसरक दायित्व धरि पहुँचैत,
 एक हाथ कहैत—“हमर हक”,
 दोसर हाथ सुनैत—“हमर उत्तरदायित्व”,
 तखन समाजक देह पूर्ण होइत।
 कठिन घड़ीमे नियम चुप भऽ सकैत,
 मुदा निर्णय चुप नहि रहैत;
 ओहि मौनमे विवेक
 धीरे-धीरे दीप जरबैत,

पूर्व पगचिह्न देखैत,
 मुदा नूतन धरतीक कठोरता सेहो बुझैत।
 मिसाल बाट देखबैत अछि,
 बाट बनि बान्हि नहि दैत;
 काल्हिक पदचिह्न सँ आइक पयर सीखैत,
 तइयो हरेक मोड़ पर
 माटिक गन्ध नूतन,
 आ भारो कखनो अलग होइत।
 न्यायालयक देहरी पर
 करुणा अकेली पर्याप्त नहि,
 क्रोध अकेला उचित नहि;
 कारणक साफ जल चाही,
 जाहिमे निर्णयक चेहरा
 सभक समक्ष देखाइ।
 कानून यदि शक्ति मात्र हो,
 त भय ओकर भाषा बनि जाए;
 यदि न्याय मात्र सपना हो,
 त धरती ओकर पयर नहि धरे।
 दूनू भेटथि तखने
 व्यवस्था मनुष्यक योग्य बनैत।
 कखनो अक्षर ठीक,
 मुदा परिणाम अन्हार;
 कखनो व्यवस्था वैध,
 मुदा आत्मा भीतर विरोध।
 ओहि क्षण प्रश्न उठैत—
 मानब कि बदलबाक साहस करब?
 अन्तरात्मा
 हरेक नियमक ऊपर राजा नहि,
 मुदा दासो नहि;
 ओ प्रश्नक एक शान्त घंटी,
 जे अन्यायक भीड़मे
 बार-बार अपन ध्वनि सुनबैत।
 स्वतन्त्रता केवल
 दरवाजा खुलल होएब नहि;
 बाहर निकलबाक बाटो चाही,
 पयरमे शक्ति,

आ आगौँ चलबाक अवसर—

नहि तँ खुलल द्वार सेहो व्यंग्य बनि जाए।

समानता

सभ चेहरा केँ एक रंगमे रंगब नहि,

अपितु प्रत्येक चेहराक मान

एके उजासमे देखब;

भिन्नता रहय,

मुदा अपमानक छाया नहि।

दण्ड जखन देल जाए,

कर्मक संग मनोभावो सुनू;

जानि-बुझि कएल चोट

आ अनजाने भेल त्रुटि

एकहि अँकमे नापल जाए—

त तराजू स्वयं अन्याय करै।

कर्तव्य कखनो

दण्डक डर सँ जन्मैत नहि;

कतेको बेर भीतरक स्वीकृति

बिनु प्रहरीक आँखि सेहो

मनुष्य केँ रोकैत,

अथवा कठिन ठीक बाट दिस धकेलैत।

समाजक लाभ पैघ शब्द,

मुदा भीड़ सभटा मनुष्य नहि;

एकटा अकेल स्वर

संख्या में छोट भऽ सकैत,

तइयो ओकर गरिमा

गणनाक बाहरक मूल्य रखैत।

नियम बनैत अछि

जाहि दिन लोक एक संग जीबाक निश्चय करैत;

मुदा समय बदलैत,

घाव बदलैत,

आ न्याय फेर नियमक काठ पर

नूतन प्रश्न लिखैत।

कखनो कानून समाज केँ सुधरैत,

कखनो समाज कानून केँ;

दूनु एक-दोसरक दर्पण,

एकमे धब्बा देखाइ

त दोसर हाथ बढ़ा
 ओकरा पोंछबाक प्रयास करैत।
 अवज्ञा सेहो
 हरेक विरोधक नाम नहि;
 जखन मौन अपराधक साथी बनय,
 जखन नियम मनुष्यता केँ घायल करय,
 त सार्वजनिक साहस
 अपन दण्डो स्वीकारि प्रश्न बनि ठाढ़ होइत।
 न्याय अन्ध हो
 त चेहरा नहि देखय,
 मुदा बहिरो नहि हो—
 पीड़क आ पीड़ितक स्वर,
 इतिहासक असमान जमीन,
 सभ सुनबाक क्षमता ओकरा चाही।
 कानूनक असली गरिमा
 तखन नहि जखन सभ डरैत अछि,
 अपितु तखन
 जखन कमजोरो विश्वास करैत—
 हमर बात सुनल जाएत,
 हमर मान कम नहि।
 अक्षरक पार जे उजास अछि,
 ओहि उजासक नाम कदाचित् न्याय;
 जतय नियम कठोर होइतो मानवी,
 स्वतन्त्रता व्यापक होइतो उत्तरदायी,
 आ शक्ति अपन सीमाक भीतर
 विवेकक समक्ष माथ झुकबैत।

अनुलग्नक

अनुवाद खण्ड

अनुलग्नक १ — त्वज्याहज्य (गीत प्रबन्ध)

[वेदव्यासक १८ पर्वक संस्कृत महाभारतम् केर अति संक्षिप्त मैथिली अनुवाद]

त्वज्याहज्य

आन-आन पर्व

ई भारत ग्रंथ जयक जइमे गान
 तखन कहियासँ भेला एतुक्का लोक,
 कर्महीन, संकीर्ण, कोना हारैत गेला सैन्यबलसँ
 आ दर्शनहुसँ,
 के घोसियाबैत गेल असमानताक पाठ एकर बिच।
 के केलन्हि आरम्भ ई त्वज्याहज्य।
 गांधर्व, एकलव्यक वीरतासँ भरल,
 घृणा-प्रेम, सत्य-असत्यक धरातल,
 आह पाराशर पुत्र भगवान व्यास, नमन-नमन शत नमन।
 प्रसन्नवदनकें लिखबाक कहि बात,
 वाणी नै रुकय अहाँक
 गणेशक शर्त,
 कविक कल्पनाक ई उत्कर्ष,
 मुदा बनाओल किएक अहाँ हुअय जेना धर्मग्रंथ।
 व्यास लेखक होइतो छथि ऐमे एकटा पात्र,
 केहन नव रस, नव छल वाद !
 गणेशक गति अति तीव्र,
 देखि व्यास कएल श्लोक जटिल।
 श्लोकक भाष्य बूझि शीघ्र,
 विघ्नकर्ता लिखताह ई।
 श्लोकक जटिलताक लेल ई तर्क !
 पुत्र शुकदेव नारदमुनि देवगण गंधर्व राक्षस यक्ष
 व्यास शिष्य वैशंपायन आ परीक्षित पुत्र जनमेजयक निस्तार।
 पौराणिक सूतजी रहथि, तत मध्य।
 करि ऋषिसभा नैमिषारण्यमे, महर्षि शौनक अध्यक्ष।
 सूतजी कएल शुरु, संहिता सतसहस्र।
 आइ ई मन कहैए, ई सत्य देखी,
 कविक कल्पना मध्य छल की
 सीखि परखी।
 अर्थ केर अनर्थ क्षेपक सभ केलक जे,
 हर्ष आ श्रमसँ कनेक देखाबी देखी ।
 हस्तिनापुर सम्राट शांतनु,

गंग तट भ्रमण करि रहल।
युवती बनि देवि गंगा,
तट जकर छलि ठाढ़ निश्चल !
तैं पड़ल हुअय नाम हुनकर,
धार गंगाजीक नामपर
भऽ अभिभूत कहल हे सुन्दरि,
करु प्रेम स्वीकार हमर।
पत्नी बनि करु राज,
राज्य-धन-प्राण पर।
अछि समर्पण सभ अहाँ पर,
मुदा अछि किछु बंधन हमर।
क्यो पूछय नै परिचय हमर,
नै करय रोक-टोक हमर कार्य पर।
प्रेम-विह्वल शांतुनु,
करि स्वीकार बंधन सकल।
आनल महल मानव-गंगाकैं,
समय बितल बितिते रहल।
भेल बात विचित्र ई जे,
सात पुत्र शांतुनुकैं भेल।
युवती फेकल सभकैं गंगधारमे,
राजा नै किछु पुछि सकल।
कविक छल ई कल्पना
ई युवती के अछि,
बुझि पड़ैछ क्षण कोमल,
क्षण क्रूर-क्रूरतम जे,
अबोध बालक केर प्राणक हेतु विकल !
पूछल राजा शांतुनु,
आठम बेर अपनाकैं नै रोकि सकल।
देलक युवती परिचय सकल,
हम गंग आ ई आठ वसु छल।
देलन्हि महर्षि वशिष्ठ शाप तनिका,
मर्त्यलोकमे जन्म लेबाक।
आठम पुत्रकैं राखब हम किछु दिन,
देवव्रत देब सेवक स्वरूप।
महर्षि वशिष्ठक नन्दिनीकैं,
देखि पत्नी वसु प्रभासक,

मर्त्यलोकक सखी हेतु,
 प्रयास नन्दिनीक हरणक ।
 ऋषि ताकल गौ-देविकैँ,
 ज्ञान-चक्षुसँ।
 देलक शाप वसुगणकैँ भय-क्रोधित,
 कएल प्रार्थना वसु सभ शापित।
 हमर शाप नै घूरि सकत परञ्च,
 सात वसु भऽ जायत मुक्त तुरत।
 प्रभासकैँ रहय परत ततय,
 किछु दिन धरि मर्त्यलोकक शरण
 हएत यशस्वी ई बहुत,
 घुरि आयल वसुगण गंग लग।
 हे देवि बनू माता हमरा सभक,
 दिअ मुक्ति तखन आस अहींक।
 कवि-कल्पनाक डोरी देखल!
 मानव-गंग केर औचित्य लेल!
 शांतुनु भऽ गेल विरक्त,
 छूटि गेल गंगक सानिध्य।
 समय बीतल तँ गेल ओ एक दिन,
 तट, धारक समक्ष।
 दिव्य बालककैँ ओतऽ देखल,
 करि रहल केलि ओतय।
 रोकि रहल वाणक धारसँ,
 गंगधारकैँ जतय।
 प्रस्तुत भेलीह गंग तखन,
 सौँपि देल देवव्रतकैँ कहल।
 महर्षि वशिष्ठ सँ लय शिक्षा,
 वेद-वेदांगक निखिल।
 शास्त्र-ज्ञान शुक्राचार्य जकाँ,
 शस्त्रमे परशुराम सन।
 भेटि गेलन्हि पुत्र तेजस्वी घुरि एला शान्तुनु,
 देवव्रतकैँ बनाएल राजकुमार,
 आइ अछि ई सम्भव,
 अपन दोसर ठाम पोसलाहा पुत्रकैँ,
 स्वीकार करत ई संकीर्ण समाज!
 किए नै हुअय देवव्रत सन यशस्वी तखनो?

कैक वर्ष बीतल एना, पुनि एक दिन आएल,
शान्तनु देखलन्हि यमुना तट तर अद्भुत सुवास,
आबि रहल तरुणी सत्यवती मलाहक बेटी,
आइ जखन गोत्र-मूल, पाइ-कौड़ीक बान्ह,
तहिया राजासँ विवाहक लेल सेहो,
राखल शर्त मल्लाहक सरदार।
बनत हमर नातियेटा, हस्तिनापुरक राजा,
तखने हएत ई विवाह।
शान्तनु ई वचन दितथि कोना,
से घुरि एला नगर अपन ।
चिन्ता घून बनि काटय लागल शरीरक कान्तिकै।
देवव्रत पूछलन्हि पितासँ,
की भेल पिताश्री,
हे पुत्र की कहू,
अछि एकटा चिन्ता,
की हएत राज्यक
जे हएत
हएत युद्धमे किछु अहाँकै,
ककर आश,
के बढ़ाओत,
वंश हस्तिनापुरक ।
कुशाग्र बुद्धिक देवव्रत
बुझलन्हि जे बात किछु आर अछि,
पुछलन्हि सारथीसँ सभ गप, गेलथि केवटराज लग,
आ राजपाट त्यागि एला।
केवटराज परज्य राखल एकटा शंका,
की हएत जे अहाँक
पुत्र अहाँक जे छीनि लय,
हमर नातिसँ राज्य।
अप्रत्याशित प्रश्नक उत्तर,
सेहो अप्रत्याशित ।
इतिहास बनत, ई प्रतिज्ञा।
नै करब हम विवाह आजन्म,
गार्हस्थ्य आश्रम छोड़ब,
रहब आजन्म ब्रह्मचारी,
छोड़ब वानप्रस्थ आश्रम,

हस्तिनापुर सिंहासनक मात्र रक्षा,
 करब हम आजन्म।
 संन्यास आश्रम सेहो छोड़ब,
 संतान बूझब हस्तिनापुर सिंहासनकै।
 क्यो नै छूबि सकत तकरा,
 हमरा जिवैत-जीवैत।
 धन्य-धन्य दिगान्त बाजल,
 पुष्प वर्षा केलन्हि देवतागण,
 मंचसज्जाक लेल उपयुक्त
 कवि व्यासक कथन बुझु एतऽ।
 भीष्म-भीष्म धन्य-धन्य,
 बाजि उठल लोक सभ।
 केवटराज केलन्हि विदा,
 सत्यवतीकें सानन्द।
 कालांतरमे पुत्र दू, पाओल
 विचित्रवीर्य आ चित्रांगद।
 बालक दुनू छोट छल,
 शांतनुक प्रयाण भेल।
 भीष्म चित्रांगदक,
 तखन राज्याभिषेक कएल।
 घमंडी से छल एहन
 की देव की दानव बुझय,
 की गंधर्व की मानव ककरो नै टेरेय।
 आ देह छोड़ल, युद्ध संग गंधर्वसँ कय।
 विचित्रवीर्यक आयल राज्य,
 भीष्मकें पड़ल सम्हारय,
 सभटा भार कारण विचित्रवीर्य रहथि छोट।
 फेर जखन ओ भेला विवाह योग्य,
 काशीराजक कन्या सभक स्वयंवरमे,
 भीष्म विदा भेला काशी,
 जतऽ पहुँचल छला राजा शल्व,
 काशीराजक ज्येष्ठ पुत्री,
 अम्बा छली हुनकापर अनुरक्त।
 अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका,
 दृष्टि फेरल भीष्म दिशि।
 बढि गेली आगू तखन,

भीष्म क्रोधित भऽ दहोदिश,
ललकारिकेँ कहलन्हि तखन
औ समस्त राजा सुनि लिअ ई,
जे पराजित कऽ सकी तँ,
स्वयंवरक भागी बनू फेर।
सभकेँ हरा कऽ भीष्म जखन,
चललाह काशीराजक कन्या समेत।
शल्व रथक पाछू पड़ल आ,
ललकारलक युद्धक लेल।
धनुष-विद्या धनी भीष्मसँ,
काशीराजक कन्या सभ कएल प्रार्थना,
भीष्म छोड़ल प्राण शल्वक,
मुदा अम्बा कहलन्हि भीष्मसँ एकांतीमे,
हे गंगेय धर्मज्ञ,
हमरा मोनमे अछि एक गोट शंका,
मानि लेल सौभ देश राजाकेँ,
पति हम अपन हृदय-बिच,
धर्मात्मा, महात्मा, भीष्मक निर्णय,
जाथु अम्बा शल्व लग।
कराओल विवाह विचित्रवीर्यक,
अम्बा-अम्बालिकाक संग।
शाल्व छलाह वीर,
भीष्म हराओल लोक सभक बिच,
जीति लऽ गेल अहाँकेँ,
ऐ अपमानक पाछाँ की ई,
बात हमरा स्वीकार हो?
विचित्रवीर्य कहल सेहो
अम्बासँ विवाह अक्षत्रियोचित,
अम्बा कहलन्हि भीष्मकेँ
विवाह करू अहाँ हमरासँ।
हरि अनलौं,
बीतल छह वर्ष हस्तिनापुर-सौभक बीच,
भीष्मक प्रतिज्ञा
मुदा बीचमे ठाढ़,
गेली ओ युद्धदेव कार्तिकेय लग।
अम्बा भरि उठलीह प्रतिशोधसँ ।

देलन्हि ओ नै मौलायबला कमलक माला,
 हे अम्बे!
 लिअ ई शस्त्र,
 जकर गार पहिरायब
 सएह करत भीष्मकै नष्ट।
 भीष्मक भय परज्व छल ततेक,
 नै तैयार भेल पहिरय ई माला क्यो एक।
 सुनलन्हि छथि द्रुपद वीर पांचाल,
 सेहो तैयार नै भेला पहिरयले ई माल।
 घुरली अम्बा अंतमे हारि,
 निराश हताश लटकेलन्हि
 द्रुपदक महलक द्वारि।
 गेली ओ तपस्वीक शरण।
 सभ तपस्वी कऽ विचार कहलन्हि,
 जाउ अहाँ परशुरामक आश्रम।
 क्षत्रिय-दमन छथि
 ओ देखिन्ह दण्ड भीष्मकै,
 जे कष्ट देलन्हि अकारण।
 परशुराम लग पहुँचि केलन्हि प्रार्थना,
 सुना कऽ अपन अभ्यर्थना।
 परशुराम कहल शल्व अछि प्रिय हमर,
 बात नै काटत
 विवाह शल्वसँ करक लेल छी तैयार अहाँ ?
 अम्बा कहल हम आब विवाह नै करऽ चाहैत छी।
 अछि हमर आब ई इच्छा मात्र,
 करू भीष्मसँ युद्ध अहाँ।
 परशुराम कऽ स्वीकार ई प्रार्थना,
 देलन्हि भीष्मकै ललकारा,
 जितेन्द्रीय, ब्रह्मचारी छलाह दुनू,
 धनुर्धारी-योद्धा मध्य युद्धघोष बरु।
 हारि-जीतक प्रश्न नै छल ज्यों,
 अनिर्णायक युद्ध बनल,
 अम्बा हारि कैलाश दिस प्रयाण कएल,
 गेली शम्भूक शरण।
 पाबि वर,
 पुनर्जन्मक पाछाँ, भीष्मक मृत्यु मे हएत अहींक हाथ।

अम्बाक संयमक सेहो छल सीमा,
कूदलि चितामे पुनर्जन्मक लिलसामे।
मृत्यु पाबि जन्म लेल तखन,
कन्या बनि द्रुपदक महल।
खेल-खेलमे माला पहिरल अपन टांगल,
द्रुपद सोचल हएत एकटा फेर,
वैर भीष्मक ऐत गऽ झमेल।
निकालि राजमहलसँ कन्याकेँ,
मुदा जंगल दिस ओ गेलि तपस्या कएल,
पाओल पुरुष रूप धरल शिखण्डी नाम,
ओकरा छल सभटा मोन।
विचित्रवीर्यक राज सेहो चलल बड्ड थोड़ दिन।
क्षयक बीमारी छल, अल्पायु मे मृत्यु अदिन।
धृतराष्ट्रक आ पांडुक जन्मो नै भेल।
अंबिका पुत्र धृतराष्ट्र,
अंबालिका पुत्र पाण्डु।
विधिक विधान छल,
ज्येष्ठ पुत्र अंध भेल,
अम्बिका सँ पुत्र धृतराष्ट्र,
काल छिनलक आँखि,
आ काल बनओलक कहबीक पाँति
अम्बालिका पुत्र पाण्डु,
पौण्ड्र रोग ग्रसित तँ ब्यास देल नाम ई,
आकि हुनकेँ सँ रोगक पड़ल नाम ई।
पौण्ड्र ग्रस्त पाण्डुकेँ राज्य-काज गेल देल ।
अंबिकाक दासीसँ विदुरक भेल जन्म छल
शिक्षा होमय लागल सभक भीष्मक संरक्षणमे,
भीष्मकेँ चिंता भेल विवाह कोना हएत गऽ,
धृतराष्ट्रक हेतु ताकल एक कन्याकेँ।
शिवक वरदान छल गांधारीकेँ सय पुत्रक,
बढ़त वंश सोचल ई प्रयत्न से प्रारम्भ कएल।
गांधार नरेश सुबल भेलाह कथा लेल तैयार जखनि,
विवाह धृतराष्ट्रक भेल, छलीह ओ शकुनिक बहिन।
सुनि पतिक अंधताक गप्प पट्टी बान्हल,
आँखि रहितहु नेत्रहीनक जिनगी गुजारल।
सय पुत्रक माता छल दुःशला एक पुत्री,

सिंधु नरेश जयद्रथ भेल जिनकर पति।
 कृष्णक पिता वासुदेवक बहिन छलि पृथा,
 शूरसेनक पुत्री छलीह रहलीह जाय मुदा,
 पिताक पिसियौत कुंतीभोज छल संतानहीन,
 हुनके स्नेह भेटल पृथा भेलि कुंती पुनि।
 कृष्ण-सुदर्शन, बलरामक दीदी भेलीह,
 सत्कार विप्रवरक करैत छलीह।
 अहिना एक बेर दुर्वासा देल मंत्र एकटा,
 पढ़ब मोनसँ देव ऐत बजेबनि जिनका।
 व्यासक ई कवित्व मोनक बात कहलक,
 वर-मंत्र-पुनर्जन्म सबहक तत्त्व तकलक।
 नेनमति बुद्धि छल कुन्तीक, सूर्यकेँ बजाओल,
 पुत्र-प्राप्ति भेल से बाधक छल लोकलाज,
 बहा देल बच्चाकेँ बिच गंगधार।
 कौरवक सारथी अधीरथकेँ भेटल ओ,
 कर्ण राधेय माय राधा पोषित
 सूतपुत्र पराक्रमी, शरीर कवचयुक्त
 कान कुंडलसँ शोभित।
 पाण्डुक फेर कुंतीसँ विवाह भेल,
 मद्र नरेशक पुत्री माद्री दोसर पत्नी भेलि।
 पाण्डु युद्ध-कार्य मात्र कएल जीति राज,
 दूर रहि राज-काज भोगल सुख मात्र !
 कुंती-माद्रीक संग वन-विचरण मे रत।
 शिकार खेलाइत वनमे,
 एक मुनि श्राप देल संतान विहीनताक।
 पाण्डुक संतान प्राप्तिक इच्छा देखि कुंती,
 खोललन्हि दुर्वासाक देल मंत्रक भेद।
 यमसँ धर्मराज, भीमसेन वायुसँ,
 इंद्रसँ अर्जुन कुंतीक पुत्र तीन भेल।
 कुंतीक मंत्रसँ माद्रीकेँ भेल पुत्रक आश।
 अश्विन द्वय सँ भेल नकुल-सहदेव प्राप्त।
 पाण्डुक मृत्यु पंचपाण्डव जन्मक पाछाँ,
 भेलीह सती पतिक संग माद्री वनेमे।
 पाण्डव ओ कुंतीकेँ बोनसँ हस्तिनापुर,
 अनलन्हि नगरमे सभ वनक मुनिवर सभ।
 पंच पाण्डवक संग आयलि कुंती नगरमे।

जुमि गेल सभ नर नारी ठाम-ठामे।
ऋषि-मुनि वन प्राणीक संगतिमे शील।
मुग्धित सुशील पाण्डवकें मोन भरि देखि-गुणि।
कृपाचार्यक आचार्यत्वमे शिक्षा,
पाबि रहल दुर्योधन कौरव,
पाबि सकय छथि हुनके लग रहि,
पाण्डव जन सभ शिक्षा ई सभ ।
धृतराष्ट्र सोचि ई तखन कएल,
तइ तरहक व्यवस्था,
दुर्योधन-कौरवक संग रहताह
पंच पाण्डव भ्राता।
भीम छला बलशाली सभमे,
दुर्योधनमे छल इरखा बड़।
करय लागल दुर्योधन भीमक,
मृत्यु योजना गंगे तट !
जल क्रीड़ाक हेतु गेल लय,
तट दुर्योधन पाण्डवकें।
खाद्य मध्य मिलाओल विष,
खोआओल भोजन भीमकें।
सभ गेल नहाबय गंगमध्य,
नशा भीमकें आयल,
कात अबैत खसलाह ओतय भीम अरड़ा कय ।
दुर्योधन ओकरा लताकुञ्ज सँ बान्हल ।
फेकल धारमे ओकरा निश्चित,
त्रास मुक्त कौरव घुरि आयल।
गंग मध्य डँसलक एक नाग,
विष कटलक विषकें !
से देखू काटत के पाण्डवक भाग।
विषक प्रभाव भेल दूर,
भीम चलला घरकें,
उठला झुमैत होइत मदमस्त,
कथा सुनाबय भ्राताकें।
युधिष्ठिर घरमे सोचथि,
भीम पहुँचि गेल हेता।
नै देखल घर भीम,
माथ पर बल एलन्हि कनेटा।

तावत भीम झूमि एला,
 षडयंत्रक कथा सुनाओल।
 कुंती चिंतित भेलि विदुरसँ,
 पूछल ई उचित भेल!
 विदुर बुझाओल पाण्डव छथि बलशाली किञ्चित।
 हुनकर दुर्योधन करि पाओत, नै कोनो अहित।
 भीमकें जिबैत देखि दुर्योधन-भ्राता,
 मोन मसोसि रहि गेल ओ दुष्ट दुरात्मा।
 कौरव पाण्डव लीन कंदुक खेलि रहल।
 कंदुक खसल इनारमे नै निकलि रहल।
 सोझहि छल एक शिक्षक बाटे आबि रहल,
 तेज जकर ओकर महिमा छल गाबि रहल।
 बाणक वार पुनि पुनि कएल फेर ऊपरसँ,
 खेंचि कय निकालल गेंद धनुर्विद्या कौशलसँ।
 भीष्मकें सुनाओल बालवृन्द कलाकारी ओकर,
 द्रोण नाम्ना कृपाचार्यक छल जे बहिनिक वर।
 अश्वत्थामा पुत्र जनिक सहपाठी द्रुपद छल।
 द्रुपद देल एक वचन राज देब आध हम।
 देल वचन बिसरल से राजा बनला उत्तर।
 अपमानित कएल से फूट,
 राजा ओ दंभी।
 प्रतिशोधक बाट ताकि रहल द्रोण बनि प्रतिद्वन्दी।
 निर्धनताक जिनगी जिबैत छला घूमि रहल।
 अश्वत्थामाक संग आजीविकाक ताकिमे पड़ल।
 हस्तिनापुरक आग्रह छला नै टारि सकल।
 कृतज्ञताक भारसँ अश्वत्थामा-द्रोण हस्तिनापुरक।
 धनुर्विद्याक पाठ शुरू कएल कौरव आ पाण्डवक।
 पाठक उपरांत समय आयल छल लक्ष्य भेदक।
 परीक्षाक चातुर्यक संगहि कुशलताक रण-कौशलक।
 लक्ष्य बनल एकटा गोद-बेश ऊँच वृक्ष पर,
 राखल काठक चिड़ै आँखि जकर लक्ष्य छल।
 सभकें पूछल द्रोण बाजू की छी देखि रहल?
 सभ क्यो गाछ वृक्ष पक्षीक संग देखि रहल।
 पार्थकें पूछल अहाँ छी कथी देखि रहल सकल।
 माथ पक्षीक अतिरिक्त नै किछु छी देखैत।
 अर्जुनक बाण पक्षीक शिरोच्छेदन केलक।

अर्जुन भेला प्रिय-स्नेहिल द्रोणक हृदयक।
 बीतल समय शस्त्र-प्रदर्शनक छल आयल।
 समय बीतल प्रदर्शन-शस्त्रक छल आयल।
 भीष्म पूछल द्रोणसँ की-की सिखाओल,
 युद्ध-कौशल, व्यूह रचना आ शस्त्र कौशल।
 प्रदर्शनक व्यवस्था भेल जनक बीचहि,
 एकाएकी सभ भेला परीक्षित संगहि।
 भेल भीम-दुर्योधनक गदा-युद्धक प्रदर्शन।
 भीष्म-धृतराष्ट्रक हृदय-बिच वात्सल्यक,
 जखन छल द्वंद्वक बीच अर्जुनक बेर आयल।
 एकानेक बाण-विद्यासँ रंगस्थली छल गुंजित,
 घोष अर्जुनक भेल बीचहि कर्ण आयल।
 परशुराम शिष्य कर्ण केलक विनय,
 कऽ छी सकैत हम प्रदर्शन सभक जे,
 विद्या जनैत छथि अर्जुन सकल सभ,
 पाबि सह दुर्योधनक, ललकारा देलक,
 अर्जुन द्वंद्व हमरासँ लडू से प्रथमतः।
 कृपाचार्य कहल सारथीपुत्र छी अहाँ,
 राजकुमारसँ द्वंद्वक अधिकारी कतय?
 द्वंद्वता नै अहाँसँ फेर बात द्वंद्वक,
 द्वंद्व-युद्धक गप आयल ओना-केना?
 हा ! हा! हा! चित्कार हृदयक,
 कर्णक हृदयक चित्कार दुर्योधनेटा सुनलक।
 ई सुनि दुर्योधन केलक ई घोषणा,
 बात ई अछि तँ सभ सुनैत जाउ,
 अंग-देशक नृप कर्णकेँ बनबैत छी,
 योद्धाक परीक्षण करैत अछि बाहु,
 ई बाहु ! पकड़ि कर्णक बाहु कहलक।
 कर्णकेँ बनबैत छी नृप अंग देशक।
 कहि ई अभिषेक कएल सभागारेमे,
 अंकमे लेल कर्ण भेल कृतज्ञ ओकर।
 उठि अर्जुन तखन ई बात बाजल,
 हे कर्ण अहाँ जे क्यो छी, सुनू ई,
 हम द्रोण शिष्य अर्जुन ई कहै छी,
 बुझू नै जे ई वीरताक वरदान टा,
 नै भेटल अछि से अहींकेँ सभटा।

गुरु नै सिखओलन्हि हारि मानब,
 प्रतिद्वंदीसँ द्वंद्व करब जखन चाहब।
 करतल ध्वनिसँ सभागार भेल फेर गुंजित,
 भीष्म उठि कयल संध्याक आगमन सूचित।
 अर्जुनक गर्वोक्ति सुनि कर्णक हृदय छलनी छल,
 मोन मसोसि नृप अंगक गामपर पहुँचल।
 शिष्टताक हेतु पाण्डव भेला प्रशंसित।
 भेल ऐसँ दुर्योधनक मोन शंकित।
 शकुनि आ दुःशासन छल ओकर भक्त,
 कर्णसँ भँट उत्तर ओ भेल आश्वस्त,
 धृतराष्ट्रकें सभक कनफुसकीसँ कय त्रस्त।
 पिता छलौं अहाँ सिंहासनक अधिकारी,
 जन्म-अंधताक रोकल राजसँ अहाँकें,
 हमरा तँ नै अछि एहन लाचारी।
 युधिष्ठिरकें सभ मानय लागल,
 सिंहासनक अधिकारी किए?
 अहाँक सेहंता की भय पाओल,
 फलाभूत कोना अहुना ईएह।
 युधिष्ठिर ज्येष्ठ हमरासँ अछि,
 मुदा अछि अहाँक अनुजक पुत्र सएह।
 कएल आग्रह जेबाक मेला वारणावतक,
 पाण्डवसँ करू आग्रह जेबाक मेला वारणावतक।
 ता सुधारब व्यवस्था सभ, कल्याणकारी कार्य सभसँ,
 बिसरि जायत पुत्र कुंतीक, जन सकल हस्तिनापुरक।
 धृतराष्ट्र मानल सभटा बात,
 आदेश देल वारणावत जाथु,
 कुंति देखि मेला-ठेला आउ।
 विदुर भेल साकंक्ष भेद ई की,
 सचर रहब युधिष्ठिर, कहल ई।
 विदुरक नीति कएल साकांक्ष,
 दुर्योधनक काटल सदिखन प्रपंच।
 मंत्री पुरोचनसँ मिलि दुर्योधन,
 लाखक महल बनबओने छल,
 विदुर लगेलन्हि एकर पता,
 संवाद सेहो पठओने छल।
 वाहक संदेशक छल कारीगर,

निर्माण सुरंगक कएल।

लाखक महलक भीतर छल,

निर्माण से क्षणहिमे भएल।

पाण्डवकें निर्देश भेल छल, खोह सुरंगहिमे सूतइ जाउ,

आगिक पूर्ण शंका से छल, लगिते भीतरसँ बाहर अबै जाउ।

कृष्ण चतुर्दशीक छल ओ दिन, पुरोचन भेल से अतिशय चंचल,
आगि लगाओत आइ ओ छल सँ, युधिष्ठिर छल ई सभ बूझि रहल।

कऽ सचेत अपन माता-भ्राताकें, यज्ञ केलन्हि ओइ दिन से,
भात-भोज देलन्हि नगरवासीकें, पंचपुत्र छलि भीलनी सेहो एक।

आह बेचारी ! कालक मारल वा मारल,

दू गोटे द्वन्द्वतामे तेसर?

कालक सोझाँ ककर चलल जे, सूतलि राति ओतहि सभ तँ।

पुरोचन सेहो सुतल ओतहि, बाहर दिश छल कोठली एक,

आगि लगाओल भीम तखन, बीच रातिमे मौकाकें देखि।

लाक्षागृह छल बनल से ओतय, अग्नि देवताअहि केर लेल।

घरक सुझाह होइमे लागत, से एकहु क्षण किए?

नै बिलमि माता-भ्राता, प्रणाम अग्निदेवकें कय।

निकलि कुंति कालक गालसँ, बचलि दुर्योधनक कुचालिसँ।

पुरोचन अग्नि मध्य से उचिते भेल, मुदा भीलनि जरलि बेचारी,

पुत्र सहित से सूतल, ककरो बुझना छल नै ई छल गेल।

नगरवासी बुझलन्हि जे जरलि, कुंती पाँचो पुत्र सभहिक संगे।

नगर शोकसँ भेल शोकाकुल, खबरि हस्तिनापुर जे गेल।

दुर्योधन छल अति प्रसन्न आ, धृतराष्ट्र प्रसन्न छल मोने-मोन।

मुदा विदुर सभसँ बेशी प्रसन्न, किए तँ सत्य बूझि छल गेल।

से ओ कहल भीष्मकें सभटा,

बात रहस्यक जा कऽ ओतय।

भीष्मक चिंता दूर केलन्हि,

ई सभ गप जाय बुझा कय ।

अकाबोन पहुँचैत गेला गय,

पाण्डव-जन कष्ट उठा कय।

नाविक नावक संग प्रतीक्षा,

करि छल रहय विकल भय।

कहलन्हि विदुर पठेलन्हि हमरा,

आज्ञा दी गंगतट सेवा करबाक।

गंगा पार भेलथि पाण्डव जन,

पाछू छूटल कतेक भभटपन।

धृतराष्ट्रक, दुर्योधन आ शकुनीक,
 आ दुःशासन कर्ण सबहीक।
 संग मुदा लागल प्रतिशोध,
 हस्तिनापुरक छल ई दुर्योग।
 नै जानि जायत कतय ई पथ ई,
 पथ ने जतय छल ओइ वनमे,
 डेग दक्षिण दिशा दिश दी,
 गंतव्यक छल नै ज्ञान कोनो जे !
 दैत डेग बढ़ैत आगू,
 भूखल-पियासल थाकल ठेहिआयल,
 आह दुर्दशा देखू !
 कुंतीक ई दशा देखि,
 भीमसँ नै छल गेल रहल,
 वट-वृक्षक नीचाँ बैसा कय,
 चढ़ल देखल सजग भऽ।
 पक्षी किछु दूर छल ओतय,
 भीम जाय पहुँचल जलाशय,
 पानि पीब आनि पियाओल,
 सुतल सभ कुम्हलाय ओतय।
 भीमकेँ नै गेल देखल,
 करथि की
 हूसि मोन रहय।
 पोखरिक गाछक ऊपर छल राक्षस नाम हिडिंब जेकर।
 हिडिंबा बहिनक संग छल, ताकि अपन भोजन रहल।
 मनुक्ख-गंध पाबि कय,
 चलल नर-मांस ताकिमे ओ,
 हिडिंबे जो मौस-मनुक्खक,
 आन जल्दी ओतय जा कय।
 देखि कुंती-पुत्र संग सूतल,
 दुःखित हिडिंबा छल ताकैत,
 भीमक दृष्ट-पुष्ट शरीर देखि,
 ठाढ़ नेत्रे रहल ताकय।
 धरि धारण रूप सुन्दरीक,
 कहल भीम जाउ उठाउ,
 अपन माता बन्धुकेँ,
 दूर सुरक्षित हिनका पहुँचाउ।

मोहित छी हम अहाँ पर, चाह हमरा अछि विवाहक,
 मायासँ हम बचायब, बलवान कूर हिडिम्बक मारिक।
 भीम कहल हम किए उठायब, बंधु केँ सुतल अपन,
 बलवान अछि हिडिंब एहन, बल देखय हमरो तखन।
 हिडिम्ब पहुँचल ओतय, हिडिम्बा छलि सुन्दरीक रूप बनओने,
 भीमसँ करि रहलि छलि गप, क्रोधसँ क्रोधित हिडिम्बकेँ कयने।
 ओ दौड़ल हिडिम्बा पर मारक हेतु,
 भीम पकड़ल बिच्चहिमे,
 मल्लयुद्ध पसरल ओतय से,
 विकट द्वंद्वक हुंकार गूँजैत।
 वन्यप्राणी भागय लागल आ उठल कुंती-पांडव ओतय,
 पहुँचैत गेल दौगैत ओतय, रणभूमि साजल छल जतय।
 मारि देलक भीम तावत, भेल हिडिम्ब शवरूप यावत।
 भीमक वीरतासँ हिडिम्बा भेलि छलि आनंदित,
 वाकचातुर्यसँ केने छलि कुंतीकेँ प्रसन्न किंचित्।
 युधिष्ठिर सेहो देल स्वीकृति माता कुंतीक विचार जानि,
 विवाह करि कय रहय लागल, भीम हिडिम्बाकेँ आनि।
 घटोत्कच उत्पन्न भेल, पिता तुल्य पराक्रम जकर छल।
 दिन बीतल पाण्डव वन छोड़ि कय आगाँ जाय लागल,
 जायब हिमालय दिस पुत्रक संग ई हिडिम्बा बाजलि।
 घटोत्कच कहल पितु माताक हम सदिकाल संगे रहब,
 हएत कोनो कार्य अहाँक, बजाबयमे नै संकोच करब।
 जाइत काल व्यास भेटला कुंती कानलि हाक्रोस भऽ,
 भारतक लेखक ऐल बनि काव्यक पात्र भऽ !!
 व्यास कहल नै कानू दिन छोट पैघ हेबे करय।
 दुःख आकि सुखमे अपन पर नै छोड़ै अछि नियंत्रण,
 धर्मपथ पर जे चलय, तकरे कहै छी मनुष्य तखन।
 गर्वित सुखे नै हुअय, दुःखमे धैर्यक नै अवलंब छोड़य,
 कुंती आ अहाँक पुत्र छथि, तेहन जेहन मनुष्य होमय।
 व्यास काव्यक पात्रकेँ देखाय रस्ता सोझ मुदा,
 पात्रक चरित्रमे नै अड़ाओल अपन आकांक्षा एको रत्ती परन्तु।
 धन्य तँ ओ कवि आ ओकर कृति!!
 पाण्डवजन पाबि ई संबल, पहिरल मृगचर्म वल्कल,
 ब्रह्मचारी केर भेष बनाओल, एकचक्री नगर पहुँचल।
 रहल बनि अतिथि ओतय ब्राह्मणक आतिथ्य पाबथि।
 भाइ सभ जाथि आनथि सभ माताक समक्ष राखथि ।

कुंती देखि आध-भीमकेँ आधमे शेष सभ मिलि खाथि,
भीमक तैयो भूख मेटाइन्हि नै, भुखले ओ रहि जाथि।
भुखले छलाह भीम एक दिन गेला नै भिक्षाटनमे,
सुनल घोर कन्नारोहट घरमे, पूछल कारण जानल से।
बकासुर राक्षस ओतय छल नगर बाहर निवास जकर,
राजा असमर्थ छल, राक्षस करय अत्याचार बड़-बड़।
छल निकालल समाधान जे सभ परिवारसँ प्रतिदिन एक,
कटही गाड़ी भरि अन्न मदिरा मौस, जाथि बहलमान समेत।
बक खाइत छल सभटा भोजन संग बहलमानहुकेँ से,
कन्नारोहट मचल छल घर ब्राह्मण परिवारक मध्ये।
पार छल परिवारक आइ सभ परिवार दुःखित छल,
कुंती कहल पाँच पुत्र अछि, भीमक बल सुनाओल।
भीमक बलक चर्च सुनि कय ब्राह्मण मानल,
कृतज्ञ भेल भीमकेँ ओ गाड़ीक संग खोह पठाओल।
खोह राक्षसक ताकि भीम खेलक, छल ओ भुखायल,
तृप्त स्वयं भीम छल देरी सँ अतृप्त बकासुर आयल।
तामसे आक्रमण केलक मुदा लात-मुक्का मारि कऽ,
भीम प्राण लेलक ओकरा खींचि नगर द्वार आनि कऽ।
भेल प्रसन्न सभ जन मनओलक पूजा-पर्व ओतय,
कुंती चलली आर किछु दिन ओइ नगर रहि कय।
सुनल पांचालक स्वयंवरक, कथा पांचालीक द्रुपदक,
एकचक्रा नगरीसँ ढेरक-ढेर ब्राह्मण पहुँचैत ओतय।
पाण्डवजन लऽ रहल आज्ञा मातृ कुंतीसँ रहथि,
व्यास पहुँचि कहल, जाउ स्वयंवर ओतय देखय!
मार्गमे ऋषि धौम्य भेटला छला पंडित ज्ञानी,
बढ़ल आगू तखन मिलि संकल्पित भऽ सभ प्राणी।
सुनि कथा प्रशंसा यज्ञसँ निकललि याज्ञसेनीक,
मत्स्यभेद करत जे क्यो, द्रौपदी वरण करैत।
स्वयंवरक स्थानक रस्ता तकलन्हि पांचाल जा कऽ,
कुम्भकारक घर डेरा देलन्हि विचार कुंतीक मानि कऽ।
कर्ण आयल छल दुःशासन, दुर्योधनक संग सज्जित,
देश-देशक राजा आयल छल रंगभूमि वीरसँ खचित।
तखन आयलि द्रौपदी भाइ धृष्टद्युम्नक संग सुसज्जित,
पुष्पमाल लेने आयलि केलनि सभक नजरि आकृष्ट।
बीच स्वयंवरक भूमिक ऊपर मत्स्य एकटा लटकल,
ओकर नीचाँ चक्र एकटा तीव्र गतिये छल घूमि रहल।

नीचाँ पानिमे छाह देखि जे चक्रमध्य पातर भुरकी तर,
 दागि सकत मत्स्य आँखिकेँ पुष्पमाल पड़त तकरे गर।
 सभटा राजा हारि थाकि कऽ भेल विखिन्न थाकल छल,
 कर्ण देखि जन बाजि उठल सूत पुत्र किए आयल छल?
 द्रौपदी बाजलि गाँथियो देत ज्यों कर्ण मत्स्य-लोचनकेँ,
 नै पहिरायब वरमाला नै करब वरण ओकराकेँ।
 विवश कर्णकेँ बैसल देखि ऋषिवेश अर्जुन आयल छल,
 एकहि शर-संधानसँ बेधल मत्स्य सुयश पाओल छल।
 ब्राह्मण-मंडली कएने छल बुझि ओकरा ब्राह्मण जय-जयकार ओतय,
 क्षत्रिय राजा सभ कएल विरोध, तैयार अर्जुन पुनि संधान कय।
 बिद्ध मत्स्य भू खसल भूमि बलराम कृष्ण आगाँ आओल,
 सभ राजाकेँ बुझा-सुझा छल सहटाय ओतयसँ हटाओल।
 कृष्ण एकांतीमे कहल दाऊ सुनू ई,
 सुनल छल एक उरन्ती,
 वारणावत आगि बिच बचल पांडव, बचल छलि कुंती दीदी।
 भीम तखने उखाड़ि वृक्ष छल भेल ठाढ़ सहटि अर्जुन कय,
 कृष्ण कहल हे दाऊ कालचक्र अनलक एतऽ भीम अर्जुनकेँ।
 देखि पराक्रम हतोत्साहित भेल राजा सभ प्रयाण केने छल,
 पांडव लऽ चललाह द्रौपदीकेँ व्यग्र ऐ सभसँ ओ भेलि छलि।
 अर्जुन खोलि अपन रहस्य, खिस्सासँ द्रौपदीकेँ कएल विह्वल,
 धृष्टद्युम्न चुपचाप सुनै छल, घुरि पिताकेँ कथा ई कहलक।
 कुम्भकारक घर पहुँचि पांडव कहल देखू की हम सभ आनल,
 कुंती कहल आनल अछि जे सभ तकरा बाँटू पाँचू पाण्डव !!
 कहल अर्जुन हे माता हएत नै व्यर्थ अहाँक ई बात,
 द्रौपदीक संग हएत पाँचू-पाण्डवक विवाह।
 द्रुपद पठेलन्हि पुरहितकेँ धृष्टद्युम्नक संग ओतऽ,
 कुंतीकेँ नोतल आ सभकेँ लऽ गेल संग अपन ओतऽ।
 द्रुपद सुनल जे पाँचू-पाण्डव करत विवाह द्रौपदीसँ,
 तखनहि ई कथा पूर्वजन्महिक व्यास आबि सुनाओल!!
 भेटल छलन्हि वरदान शिवसँ जे पाँच पति अहाँ पायब,
 सुनि सभ, द्रौपदी विवाह द्रुपद, रीति वैदिक सँ कराओल।
 सभ किछु दिन रहल ओतय कुशलसँ द्रुपद केर महलमे,
 पसरल ई चर्चा सगरो धरि गेल गप हस्तिनापुर महलमे।
 लोकलाजसँ बाह्य प्रसन्नता धृतराष्ट्र छल ओतय देखओने,
 मानि भीष्म-द्रोणक विचार पठाओल समाद अगुतओने।
 आनी अनुज पत्नी पुतोहु ओ अनुज पुत्र सभकेँ आदरसँ,

दुर्योधनक कर्णक विरोध पर कएल विचार विदुरकेँ बजाकय,
 शास्त्रानुसार विचार देलन्हि आधा राज्य देबाक ओ जाकय।
 विदुरहिँ पठाओल धृतराष्ट्र आनय राजमहलसँ द्रुपदक,
 सभकेँ लऽ आनल पहुँचल ओ, जन ठाढ़ करय स्वागत।
 धृतराष्ट्र कहल हे युधिष्ठिर गृह कलहसँ ई नीक हएत,
 जाय खाण्डवप्रस्थ बसाउ नव नगर आध राज लऽ कय।
 खाण्डवप्रस्थ अछि बोन अखन पहिने छल राजाक नगरी,
 मानि युधिष्ठिर गेल ओतय बनाय नव घर द्वार सज्जित।
 इन्द्रप्रस्थ छल पड़ल नाम आ तेरह वर्ष धरि केलन्हि राज,
 जन-जीवन अति संपन्न आ सुशासनसँ छल यश।
 छल अहिना दिन बीति रहल एला नारद एकदिन जखन,
 स्वागत भेलन्हि खूब हुनकर ओहो रहथि आनंदित तखन।
 देखल शील-गुण पांडवक मुदा कहल द्रौपदीसँ सुनू बात ई,
 छी पत्नी पांडवक मुदा निवासक निअम किए नै बनेने छी?
 नारदक बात समीचीन छल से निअम बनेलथि पाँचो गोटे,
 एक-एक मास रहथु सभ संग द्रौपदी निअम नै भंग हुअय!
 बारह वर्ष पर्यंत छोड़य पड़त गृह त्रुटि भेल ज्यों,
 पालन निअमक होमय लागल ई किछु काल धरि।
 कनैत एला विप्र एक, अर्जुन पुछलन्हि बात की?
 चोर छल चोरेने गौकेँ हाक्रोस विप्र छल कऽ रहल,
 शस्त्र छल गृहमे द्रौपदी संग युधिष्ठिर जे रहि रहल।
 विप्रक शापसँ नीक सोचि मूड़ी झुकेने गेल अर्जुन,
 शस्त्र आनि छोड़ायल गौकेँ घुरि आयल गृह तखन।
 मांगल आज्ञा युधिष्ठिरसँ दिअ गृहत्यागक आज्ञा,
 निअम भंगक कएल अपराध, की बजलौं अहाँ ?
 अर्जुन ई अपराध लागत जखन पैघ करत,
 छोट भाय कखनो अछि आबि सकैत बड़ भाय घर।
 मुदा निकलि गेला अर्जुन आज्ञा लऽ माता भायसँ,
 भ्रमण देश-कोसक करैत पहुँचल हरिद्वार गंग तट,
 स्नान करैत काल, नजरि छल नाग कान्याक ज्यों,
 कोना बचि सकैत पहुँचि गेलाह पातालक निकट।
 विवाह प्रार्थना स्वीकारल अर्जुन ई छल वरदान भेटल,
 जलमे रस्ता बनत चलि सकब अहाँ व्यवधान बिन।
 मणिपुर पहुँचि जतऽ चित्रांगदा राजकन्या छलि रूपवती,
 विवाहक प्रस्ताव अर्जुनक स्वीकारल राजा सशर्त मानि,
 दौहित्र हएत हमर वंशज भेल ई विवाह तखन जा कय।

चित्रांगदाक पुत्र भेल बभ्रुवाहन नाम राखल गेल जकर ई,
 परम प्रतापी पराक्रमी योद्धा बनल बालक पाछू सुनै छी।
 फेर ओतऽसँ निकलि अर्जुन पहुँचल प्रभास तीर्थ द्वारका निकट,
 शस्त्र-प्रदर्शनक आयोजन केलन्हि कृष्ण निकट पर्वत रैवतक।
 प्रेम देखि सुभद्रासँ कृष्ण छला सुझओने नव उपाय ई,
 अपहरण करब जीतब युद्ध यादवसँ बनत तखने बात ई।
 बनलि सारथी वीर सुभद्रा संग्राम छल बजड़ल जखन,
 बुझा-सुझा मेल छल करओने कृष्ण जा कय तखन।
 विवाह भेल तदंतर अर्जुन संग सुभद्रा गेला पुष्कर,
 पुरल जखन ई वनवास कृष्णक संग पहुँचल इंद्रप्रस्थ।
 देखि नववधू प्रसन्न कुंती आनंद नै समटा रहल,
 द्रौपदीसँ पाँच पुत्र, आ अभिमन्यु सुभद्रासँ भेल छल।
 बीति छल रहल दिन जखन एला जीर्ण शरीर अग्नि,
 रोगक निदान छल खांडव वन रहै छल ओ सर्प तक्षक।
 इंद्रक अछि मित्र ओ जखन करैत छी जड़ेबाक हम सूरसार,
 नै जरबय दैत छथि इंद्र, करू कृपा अहाँ हे इंद्र अवतार।
 छी प्रस्तुत मुदा अस्त्र अछि नै हमरा लग ओतेक,
 इंद्र युद्धक हेतु चाही योग्य शस्त्रक मात्रा आवश्यक जतेक।
 देल गांडीव धनुष तूणीर अक्षय वरुणक रथ नंदिघोष,
 चलल डाहबाक हेतु अग्नि, पेलाक पाछाँ अर्जुनक तोष।
 इंद्र मेघकेँ पठओलन्हि कृष्ण कएल सचेत जे,
 वायव्यक प्रयोग कएल अर्जुन मेघ बिलाएल से।
 तक्षकक मृत्योपरान्त इंद्र भेला प्रकट ओतय,
 मांगल अर्जुन दिव्यास्त्र हुनकासँ अवसर देखि कय।
 जाउ शिवक उपासना करू दऽ सकैत छथि वरदान ओ,
 छल मय आयल अग्नि क कोपसँ बचि लग अर्जुनक ओ।
 सेवा करबाक बात छल मोनमे लेने कृतज्ञ छल ओ,
 बनाउ सभा भवन अनुपम नै बनल जे कतहु होऽ।

सभा पर्व

मय दानव छल कय रहल नव निर्माण,
 सभा भवनक दिन-राति लागि उत्थान।
 स्फटिकसँ युक्त शीसमहल सन कौशल,
 युधिष्ठिर ओतहि तखन सिंहासन बैसल।
 ऋषि नारदक आगमन भेल ओतय जाय,
 देलन्हि करबाक यज्ञ जे राजसूय कहाय।
 बजाओल द्वारकासँ कृष्णकेँ समाद पठाय,

कृष्ण कहलन्हि सभा भवनमे आबि कय,
 जरासंध मगधक नरेश रहत गय यावत,
 राजसूय सफल नै होमय देत तावत।
 बंदी बनेलक राजा लोकनि केँ ओ हराय,
 आक्रमण ओकर भेल मथुरा पर बड्ड,
 हारि द्वारका राजधानी बनाओल हम जाय।
 युधिष्ठिर बात सुनैत भेलथि हताश सन,
 भीम अर्जुन आशा बन्हेलन्हि भ्राता सुनु।
 क्षत्रिय-धर्म अछि शत्रु केँ वशमे करब,
 कृष्ण, अर्जुन-भीम संग राजगृह चलब?
 ऋषि वेशधारी राजगीरक प्राचीर नांघि,
 पहुँचल सभ सोझे सभा-भवन जी-जाँति।
 सत्कार करय चाहलक जरासंध बुझि विप्र,
 ललकारा देलक मुदा भीम द्वंद्व-युद्धक शीघ्र।
 दिन बीतल खत्मक नाम नै लैछ ई युद्ध,
 कृष्णक संकेत पाबि चीरल ओ शरीर संधिसँ,
 भीम तोड़ल शरीर जरासंधक उनटि फूर्तिसँ,
 शरीर फेंकल दुहु दिशि उनटि एम्हर-ओम्हर,
 मुक्त कएल कारागारसँ बंदी गण राजा सभ।
 दऽ मगध राजक गद्दी जरासंध-पुत्र सहदेवकेँ,
 आपस भेला इंद्रप्रस्थ घुरलाह तीनू गोटे।
 पूर्व दिस भीम उत्तर अर्जुन नकुल दक्षिण,
 सहदेव पश्चिम दिशा दिस दिग्विजय खातिर।
 विजय रथ नै क्यो रोकि सकल हुनकर,
 धन-धान्यसँ परिपूर्ण सभ आबि तैयारी कएल,
 राजसूय यज्ञक भेल राजा सभक इंद्रप्रस्थमे बजाही।
 राजा लोकनि केँ दऽ समुचित कार्यक भार,
 भीष्म-द्रोणकेँ यज्ञ-निरीक्षणक देल प्रभार।
 कृष्ण विप्र चरण-धोबाक लेलन्हि काज ।
 हस्तिनापुरसँ भीष्म, द्रोणक संग भेल आगमन,
 धृतराष्ट्र विदुर कृप अश्वत्थामा दुर्योधन दुःशासन।
 बीच यज्ञमे उठल छल प्रश्न अग्र-पूजाक,
 भीष्मक सम्मति युधिष्ठिर पुछलन्हि जाय,
 भीष्म कहल छथि श्रेष्ठ कृष्ण नृप बीच,
 सहदेव सुनि वचन चरण पखारय लाग।
 चेदिराज शिशुपालसँ सहल नै भेल,

अपशब्द कृष्ण-भीष्मकेँ देबय लागल,
 दुर्योधन-भ्राता प्रसन्न छल भेल,
 भीमक क्रोध बढ़ल छल ओ झपटल,
 भीष्म रोकि शांत छल ओकरा कएल।
 शिशुपालक गारि सुनियो छला कृष्ण प्रशांत,
 छल किए तँ ओ पिसियौत कृष्णक,
 दिन बीतल कृष्ण देलथि वचन दीदीकेँ एक,
 सय अपराध क्षमा हम करब ओकर।
 सय गारि सुनला धरि कृष्ण रहला शान्त
 चलल सुदर्शन मुदा तकर उपरांत,
 चक्र केलक चेदिराजक शिरोच्छेद तखन,
 सभा मध्य शांति पसरल छल जाय,
 शिशुपाल पुत्रकेँ चेदिक गद्दी पर बैसाय।
 यज्ञक क्रिया निर्विघ्न संपन्न छल भेल,
 सभ राजाकेँ ससम्मान विदा कएल गेल।
 सभा भवनक चामत्कृत्य भेल चर्चित,
 दुर्योधन-शकुनि भवनकेँ देखल भऽ चकित।
 नीचाँ देखि मृग-मरीचिका बान्हल फाँड़,
 पानि नै छल हसलि द्रौपदी ई जानि,
 अएना सोझाँ पारदर्शी नै ई देखल,
 ओ चोटिल, भीमक अट्टहाससँ विकल।
 आगाँ स्फटिक फर्श छल जकरा नै बुझल,
 पानि भरल भीजल छल सभ हँसल।
 अपमानित छल, लऽ युधिष्ठिरसँ आज्ञा,
 चलल हस्तिनापुर शीघ्रहि सभ भ्राता।
 क्रोधित हृदय ईर्ष्याक वशमे छल दुर्योधन,
 शकुनि संग मंत्रणा कय कऽ एकटा विचारल,
 सोझे युद्धमे पांडवकेँ हरेनाइ अछि मोशिकल,
 सोचि ई दोसर व्यूह रचलन्हि दुष्ट शकुनि।
 भव्य सभा भवन एकटा हम सभ बनायब,
 पाण्डव-जनकेँ देखबा लेल सेहो बजायब,
 द्यूत खेलक छी महारथी हम गांधारवासी,
 धृतराष्ट्रकेँ कहि आमंत्रित करायब बजायब।
 भवन बनि कऽ तैयार भेल एक्के निसासी।
 द्यूत खेलक आमंत्रणक हेतु धृतराष्ट्र विचारल।
 विदुर कहल राजन् खेल करत विनाश सभक,

दुर्योधनक अंधप्रेममे धृतराष्ट्र मुदा नै मानल।
 स्वयं विदुर गेला देमय निमंत्रण इंद्रप्रस्थ,
 पाण्डव जनकें एला पर भेल प्रेम-मिलन।
 मुदा हृदयक विष बहरायत जल्दी केना कऽ,
 दुर्योधन लऽ गेला युधिष्ठिरकें सभा भवन बजा कऽ।
 द्यूतक चर्च सगरे होमय लागल छल ओतय,
 शकुनि माटि फेकि कहल युधिष्ठिर भऽ जाय।
 सकुचाइत छी क्षत्रिय भऽ करै छी अनुचित।
 युधिष्ठिर तैयार जखने भेला, दुःशासन कहल,
 ई खेल हएत यधिष्ठिर आ दुर्योधनक बिच,
 मामा शकुनि लग फेकता दुर्योधन दिससँ,
 हुनक हारि-जीत मानल जायत दुर्योधनक,
 दोसर दिन खेल भेल सभा भवनमे भारतक हे!!
 सभा भवन दर्शकसँ छल भरल, छल ओतय स्थित,
 भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, विदुर, धृतराष्ट्र उपस्थित।
 पहिने रत्नक बाजी फेर चानी-सोनक लागल,
 फेर छल सभक अश्व-रथ लागल जुआ पर।
 मुदा जखन तीनू टा बाजी युधिष्ठिर हारल,
 सौँसे सेना लगाओल दाँव पर ओ अभागल।
 फेर बेर आयल राज्यक फेर चारू भाँय केर,
 युधिष्ठिर बाजल नै बचल लग किछु हमरा लग।
 शकुनि कहल छथि द्रौपदी अहाँक बिचमे।
 ऐबेर ज्यों जीतब अहाँ, दऽ देब हम सभ,
 भाइ, राज्यसेना, अश्व-रथ, रत्न चानी सोन सभ।
 युधिष्ठिर सुनि ई भऽ गेल छल तैयार जखने,
 हा। धिक्।
 पापकर्म की भऽ रहल अछि ई।
 सभा बिच उठि पड़ल सभक नाद ई।
 युधिष्ठिर सेहो कहल हम केलौं की ई?
 आनन्द मग्न कौरव छल, मुदा संतप्त एकेटा,
 दुर्योधन-भ्राता युयुत्सु छल शोकाकुल सएह टा,
 शकुनि आब ऐ सभक बीच, फेकलक पासा आर,
 ई बाजी हमर, हुंकारलक शकुनि हारल युधिष्ठिर !!
 द्रौपदीकें हारि, ठकायल ठाढ़ छल सभा बिच।
 भय मदान्ध दुर्योधन कहलक हे विदुर जी,
 जाउ समाचार ई द्रौपदीकें जा सुनाउ।

छथि ओ हमर दासी झाड़ू-बहारू करथि,
 महलमे आनि हमर ई आदेश सुनाउ।
 विदुर कहल, ओ दुर्योधन घमण्ड छोड़ू,
 स्त्रीक जुआरी अहाँ हमरा नै बुझु।
 देखि विदुरक ई रूप पठाओल विकर्णकै,
 जाउ दासी द्रौपदीकै जा आनू गय,
 विकर्ण ई द्रौपदी लग कहि सुनाओल।
 चकित द्रौपदी कहल स्वयंकै जे हारल,
 युधिष्ठिर केनाकै अधिकार ई पाओल?
 अपन हारिक पाछाँ हएत क्यो सक्षम,
 दोसरकै हेतु जुआमे लगाबय केहन।
 ई प्रश्न जखन राखल विकर्ण सभा बीच आबि,
 दुर्योधन कहल दुःशासन जाउ पकड़िकै लाउ।
 बुझाओल द्रौपदी दुःशासनकै, जखन ने मानल,
 भागलि गांधारीक भवन दिस, दौगल दुःशासन,
 खूजल केशकै पकड़ि घिसिअओने छल आनल।
 हा! भारत ! व्यास मुदा नहि अहाँ कोनो तथ्य नुकाओल।
 सम्बल उदार भावनाक देल, तुष्टि पाओल!!
 सभा भवन महापुरुष नै थोड़ जतय छल।
 भीष्म, विदुर, द्रोण, कृपा लाजक लेल गौँति,
 गाड़ि माथ देखि रहल द्रौपदीक अश्रुपात।
 सिंहनादमे भीम तखन ई बाजल,
 सूर्य देवतागण रहब साक्षी अहाँ सभ,
 हाथसँ दुःशासन केश द्रौपदीकै जे धेने दूनू,
 उखाड़ि फेंकब हाथ ओकर ओ दूनू।
 कौरव भय सँ भीत भेला नादसँ भीमक,
 दुर्योधन देखल मुदा देखि ई छल बाजल,
 जांघ पर दैत थोपड़ी करैत घृणित इशारा,
 द्रौपदीकै बैसबा लऽ ओतऽ कहैत छल।
 गरजि कहल भीम अधम दुर्योधनसँ,
 तोहर जांघकै तोडब प्रचण्ड गदाक चोटसँ।
 खिसिया कऽ दुर्योधन देलक आज्ञा पुनः ई,
 चीर-हरण करू दुःशासन द्रौपदी दासी छी।
 द्रौपदी केलन्हि नेहोरा हे श्रेष्ठ लोकनि
 विनय अछि लाज बचाउ करैत छी विनती।
 सभ क्यो झुका माथ अपन ओइ सभामे,

कृष्णा छोड़ल सभ आस सभ दिशासँ,
 भक्त वत्सल अहाँसँ टा अछि ई आशा,
 कोहुना राखू हमर ई लाज अछि प्रत्याशा।
 आर्द्र-स्वरसँ छलि रहलि पुकारि द्रौपदी,
 गोहाड़ि खसलि सभा-बिच, मूर्च्छित।
 लागल खीचय द्रौपदीक वस्त्र दुःशासन,
 सभासद देखल चमत्कार ई प्रतिपल,
 यावत रहल खिंचैत वस्त्रकें दुःशासन,
 बढ़ैत रहल वस्त्र द्रौपदीक तावत तखन।
 थाकि-हाँफि बैसल जखन दुःशासन,
 कहल भीम सुनू सभ ऐ भवनमे,
 यावत फाड़ि छाती दुःशासनक ऊष्म रुधिरकें,
 पीयब, नै पियास मेटत मृत्यु भेटत नै।
 सुनि प्रतिज्ञा ई सभ भयसँ थड़थड़ाय लागल।
 धृतराष्ट्र देखि दुर्घटना द्रौपदीकें लगमे बजाओल,
 सांतवना दऽ शांत कएल युधिष्ठिरसँ छल बाजल,
 बिसरि जाउ इन्द्रप्रस्थ सुख-शांतिसँ रहै जाउ,
 जे हारलौं, से बुझू देल हम ठामहि लौटायल।
 संतोष भेलन्हि पाण्डव-जनकें ई सुनि,
 कथा धृतराष्ट्रक सुनि घुरला इन्द्रप्रस्थ पुनि।
 दुर्योधन दुःखित मंत्रणा कएल शकुनिसँ,
 संग दुःशासन कर्णक मंत्रणा फेर जुआक,
 विनाशक हस्तिनापुरक छल बेर खराप।
 ऐबेरक निअम राखल हारत जे से करत,
 बारह वर्षक वनवास आ एक वर्ष अज्ञातवास।
 धृतराष्ट्र दूत पठाओल हस्तिनापुर फेर।
 युधिष्ठिर घुरला भायक संग फेर,
 सुनाओल गेल शर्त सभ,
 मुदा जुआ रोकल एक बेर।
 मुदा भाग्यराजक आगाँ ककर अछि चलल,
 नै मानल कएल युधिष्ठिर भाग्यक खेल!
 चलि फेर पासा दुर्योधनक, वएह खेरहा,
 फेंकि गोटी जिताओल शकुनि ओकरा।
 हारि हारल राज्य, पाओल छल वनवास,
 युधिष्ठिरक भाग्य चालि कुचालिक जीत,
 राज्यक निर्णय जुआक गोटीक संगीत,

की हएत से नै जानि सुन्न अकास।

वन पर्व

धर्मराज सभ हारि,
चलल फेर वएह पथ,
धर्मक आ शान्तिक,
छोड़ि सभ बिसारि।
माता कुन्ती छलि वृद्धा भेलि कहल,
कहल धर्मराज नै जा सकब अहाँ,
विदुर काक केर घर जा रहब,
जायब कर्म भोगय हम सभ।
द्रौपदीक पाँचू पुत्र आ पुत्र अभिमन्यु,
संग सुभद्रा जेती अपन नैहर द्वारकापुर।
धौम्य पुरहित संग द्रौपदी आ चारू भाय,
काटब हम संग तेरह वर्षक वनवास जाय।
नगरवासी सुनि गमनक ई समाचार,
केलन्हि दुर्-दुर दुर्योधनक अत्याचार।
जाएब हमहुँ सभ संग, धर्मराज आइ,
धर्मराज घुराओल सभकेँ बुझाय-सुझाय।
सभ घुरि गेल मुदा, नै घुरल विप्र जन,
पुरहित केलन्हि उपासना सूर्यक ऐ क्षण।
वएह दैत छथि अन्न-फल समग्र आर्य,
उपासनाक उपरान्त प्रगट भेला सूर्य।
देलन्हि अक्षय पात्र नै कम हएत अन्न,
द्रौपदी सभ विप्रकेँ आ पाण्डवकेँ खोआबथि,
फेर खाथि, सभ अघाथि, नै हुअय खतम,
जखन नै हुअय खतम पात्रसँ खाद्यान्न।
युधिष्ठिर पहुँचि सरस्वती धारक कात,
काम्यक वनमे केलन्हि निवास।
ऐ बीच सुनैत पाण्डव-प्रशंसा मुँहसँ विदुरक,
धृतराष्ट्र निकालि हटाओल विदुरकेँ दरबार-मध्य।
ओहो आबि लगला रहय काम्यकवनमे,
पुनि पठाओल धृतराष्ट्र ओतय संजयकेँ।
पाण्डव-जनक बुझओला उत्तर विदुर,
धृतराष्ट्र संग गेला पुनि दरबार घुरि।
ऋषि-मुनिक सत्संगसँ लैत शिक्षा आ दीक्षा,
अगस्त्यक, ऋषि श्रृंग, अष्टावक्रक, लोपामुद्राक,

सुनैत छला कथा-सरिता नल दमयन्तीक।
 कृष्ण आबि बुझाओल, व्यास एला!!
 व्यास कहल युद्धक हेतु करू तैय्यारी,
 बिनु इन्द्रक अमोघ शिवक पाशुपत्याह,
 कोना लड़ब संग भीष्म द्रोण महारथी?
 पाबि युधिष्ठिरक आज्ञा चलला अर्जुन,
 पर्वत कैलाश पर पार कय कऽ गंधमदन।
 तूणीर आ धनुष हुनकर संगमे छल,
 साधु जटाधारी तपस्वी अर्जुनसँ पुछल।
 ई छी तपोभूमि शस्त्रक काज नै कोनो,
 अर्जुन कहल हम क्षात्र धर्म कतय छोड़ल।
 तावत शस्त्र सेहो तइ द्वारे राखल अछि,
 प्रसन्न भऽ इन्द्र अपन असल रूप धरल।
 मांगू वत्स वर हमरासँ प्रसन्न छी हम,
 शिक्षाक संग दिव्यास्त्र भेटय अही क्षण।
 अर्जुन अहाँक ई लालसा पूर्ण हएत मुदा,
 जाय शिवकेँ प्रसन्न कऽ पाशुपत पायब अहाँ।
 फेर देवगण देताह दिव्यास्त्र अहाँकेँ,
 ई शस्त्र सभ मानव पर चलायब अछि वर्जित,
 कहू अहाँ पाबि करब की दिव्यास्त्र सभ ई।
 शक्ति-संचय अछि हमर उद्देश्य मात्र देव,
 कौरव छीनल अछि राज्य छलसँ परज्य,
 नै करब एकर कोनो कुप्रयोग हम।
 इन्द्रक अन्तर्धान भेलाक उत्तर अर्जुन,
 छल करय लागल शिव तपस्या कठोर।
 तखन पार्वती संग शिव चलला तपोभूमि,
 अर्जुन पुष्प बीछि रहल छला अबैत क्षण,
 वाराह वनसँ निकलि कऽ सम्मुख आयल।
 जखने तूणीर धनुष राखि संधान केलक,
 किरात वराहकेँ लक्ष्य केने दृष्टि आयल।
 दुनू गोटे चलाओल वाण वाराह मारल,
 ऐ बात पर दुहू गोटे झगड़ा बजारल।
 अर्जुनक गप पर जखन ठठाइत किरात,
 अर्जुन ओकरा पर तखन वाण चलाओल,
 परज्य देखि नै घाव कोनो प्रकारक,
 अर्जुन किरात पर छल तलवार भाँजल।

मुदा किरातक देहसँ टकाराइट देरी,
 भेल अर्जुनक खड्गक टुकड़ी छुबैत देरी।
 मल्ल युद्ध आरम्भ भेल, भेल अचेत अर्जुन,
 उठल जखन आरम्भ कएल पूजन कुलदेवक ओ,
 पुष्प पहिराय शिवकेँ उठल गर छल ओ माला,
 किरातक गरदनि मध्य, देखि साष्टांग कएल तहिखन।
 किरात वेशधारी शिव कहल वर मांग अर्जुन,
 पाशुपत अस्त्र मांगल, छोड़ब-रोकब एकरा सीखल पुनि।
 शिव कहल बुझू मुदा ई तथ्य अछि जे,
 मनुष्यक ऊपर एकर प्रयोग कखनहु करब नै।
 तखन अर्जुन निकलि गेल इन्द्रलोक दिशामे,
 पाबि दिव्य अस्त्रक शिक्षा मारल असुर ओइसँ।
 एक दिनुक गप उर्वशी आयलि करैत याचना प्रेमक,
 अर्जुन कहल अहाँ तँ छी अप्सरा गुरु इन्द्रक।
 माता तुल्य भेलौ ओइ संबंधसँ अहाँ हमर,
 आयल छी हम एतऽ शिक्षा प्राप्तिक लेल शस्त्रक,
 तपस्या नृत्यक आ संगीतक करय भोग नै,
 तइ दृष्टिये अहाँ भेलौ हमर माता गुरु किने?
 उर्वशी तखन देलक ओकरा शाप ई टा,
 कामिनीक अहाँ शाप सुनू निर्वीर्य रहब अहाँ।
 वर्ष भरि मुदा कारण अहाँ कहल माता,
 शाप ई पुनि बनत वरदान नुकाय सकब अहाँ।
 पाण्डव जन सेहो पाबि रहल ऋषि मुनिसँ शिक्षा,
 समाचार देलन्हि नारद अर्जुनक कहल अपेता,
 लोमश ऋषि आबि समाचार अर्जुनक सुनेता।
 किछु दिनमे लोमश ऋषि एला ओतऽ,
 कहल प्राप्त कऽ पाशुपत शिवसँ कैलाशमे,
 अर्जुन देवलोकमे प्राप्त केलक दिव्य शस्त्र,
 नृत्य संगीतक शिक्षा अप्सरा गंधर्वगणसँ लऽ रहल अछि
 लऽ रहल शिक्षा अर्जुन देवलोकमे सनजम सँ।
 तखन ऋषि तीर्थाटन कराउ हमरा लोकनिकेँ,
 लोमश तखन गेला नैमिषारण्य पाण्डव संग।
 प्रयाग गया गंगासागर पुनि टपि कलिंग पहुँचै जाइ गेला,
 पच्छिम दिस प्रभासतीर्थ यादवगण जतऽ छल।
 स्वागत भेल ओतऽ, सुभद्राक भेंट भेलनि द्रौपदीसँ,
 बलराम कृष्णक सांत्वना पाबि बढ़ला आगाँ,

सरस्वती पार कऽ कश्मीर आ गंधमादन पर्वत,
 पार कऽ चढ़ला पर्वत, वर्षा आ शिलापतन बिच।
 पहुँचि गेला बदरिकाश्रम विश्राम केलन्हि
 किछु काल ठहरि।
 ओतहि दुःशला पति जयद्रथ काम्यक बनसँ,
 छल जा रहल देखल द्रौपदीकेँ असगर ओतऽ,
 पाण्डवगण गेल छल शिकारक लेल तखन।
 बैसल कुटीमे विवाह प्रस्ताव देल द्रौपदीकेँ,
 नीचता देखि द्रौपदी कठोर वचन जखन कहल,
 रथमे लऽ भागल, अपहरण कऽ दुष्ट जयद्रथ।
 आश्रम आबि पाबि समाचार भीम ओकरा पर छुटल,
 तखने अर्जुन सेहो आयल ओ गेल पाछू जयद्रथक,
 युधिष्ठिर कहल प्राणदान देब पति दुःशलाक छी ओ तैं,
 जयद्रथ देखल अबैत दुनू भायकेँ द्रौपदीकेँ छोड़ि भागल,
 भीम पटक-बान्हि आनल ओकरा द्रौपदीक सोझाँ,
 द्रौपदी अपमानित कऽ छोड़बाओल ओकरा।
 शिवक तपस्या कएल जयद्रथ वरदान मांगल,
 जितबाक पाँचू पाण्डवसँ
 कहल शिव ई, नै हारब अहाँ कोनो भायसँ
 मुदा अर्जुनकेँ छोड़ि।
 व्यास परिश्रमकेँ तपस्याक नाम देल,
 आँखि मूनि मुदा ई पश्चात मञ्चित भेल !!
 कर्ण छल तपस्या कऽ रहल अर्जुनकेँ हरयबा लेल,
 इन्द्र सोचल शरीरक कवच कुण्डल अछैत ओ,
 हारत नै ककरोसँ दानवीर पराक्रमी छल ओ।
 सोचि ओकरासँ हम मांगब कवच कुण्डल,
 देखि ई सूर्य कहल होउ सचेत कर्ण,
 आबि रहल इन्द्र छद्म वेषमे याचना करत ई,
 कवच कुण्डल छोड़ि किछु मांगत नै ओ।
 कहल कर्ण याचककेँ हम नै नै कहब, प्रण,
 प्रण हमर नै टूटत चाहे जे परिणाम हुअय।
 तखने विप्र वेशमे इन्द्र आबि दुहु वस्तु मांगल,
 ठोढ़ पर मर्मक मुस्की कर्णक हाथ शस्त्र आयल,
 काटि देहसँ कवच कुण्डल समर्पित कएल तखने,
 इन्द्र देल वर मांगू छोड़ि ई वज्र हमर आर किछुओ,
 अमोघ शक्ति मांगल कर्ण इन्द्र देलन्हि कहि कय,

मारत जकरा पर चलत, पुनि घुरत लग हमर आओत।
 शनैः-शनैः छल बीति रहल बारह वर्ष अहिना,
 एक वर्षक अज्ञातवासक विषयमे विचारि रहल,
 विचारि युधिष्ठिर रहल भाय आ द्रौपदीक संग,
 तखने कनैत खिजैत एकटा विप्र आयल।
 कहल अरणीक लकुड़ी छल कुटीक बाहर टांगल,
 हरिण एक आबि कुरयाबय लागल ओइसँ,
 जाय काल ओझरायल अरिणी सिंहमे ओकर,
 विस्मित भागल ओ लय हमर लकुड़ी,
 कोना कय होमक अग्नि आनब चिन्तित छी।
 विप्रक संग पाँचो भाँय हरिणकें खेहारल,
 मुदा छल ओ चपल भय गेल ओझल।
 वरक गाछक नीचाँ ओ सभ लज्जित पिआसल,
 ठेहिआयल बैसल नकुल गेल सरोवर पानि आनय।
 एकटा ध्वनि आयल ई चभच्चा हमर छी,
 उत्तर हमर प्रश्नक बिनु देने पानि नै भेटत ई।
 नै कान देल ओइ गप पर हकासल पिआसल,
 पानि जखने पिअल अरड़ा कय मृत ओ खसल।
 सहदेवक संग सेहो एहने घटना घटल छल,
 अर्जुन जखन आयल फेर वएह ध्वनि सुनल।
 शब्दभेदी बाण छोड़ल मुदा नै कोनो प्रतिफल,
 पानि पीबैत देरी ओहो मृत भऽ खसल छल।
 युधिष्ठिर भय चिन्तित भीमकें पठाओल ताकय,
 पानि पीबि मृत भऽ नहि घुरल ओतय।
 युधिष्ठिर जखन वन बीच सरोवर पहुँचल,
 मृत भाय सभकें देखि व्याकुल पानिमे उतरल।
 वएह ध्वनि आयल उत्तरक बिनु प्यासल रहब,
 हएत एहि ढङ्गक परिणाम ज्यों धृष्टता करब।
 ई अछि कोनो यक्ष सोचि युधिष्ठिर बाजल,
 पुछू प्रश्न उत्तर सम्यक देब आरम्भ भेल यक्ष।
 मनुष्यक संग के अछि दैत? प्रथमतः ई बाजू,
 धैर्य टा दैछ संग मनुक्खक सदिखन सोकाजू।
 यशलाभक अछि कोन उपाय एकटा?
 दान बिनु यश नै भेटैछ कोनोटा।
 वायुसँ त्वरित अछि कोन वस्तु?
 मनक आगाँ वायुक गति नै कतहु।

प्रवासीक संगी अछि के एकेटा ?
 विद्याक इतर नै संगी एकोटा।
 ककरा त्यजि कऽ मनुक्खकें भेटैछ मुक्ति?
 अहं छोड़ल तखन भेटत विमुक्ति।
 कोन वस्तुक हरयलासँ नै होइछ मन दुःखित?
 क्रोधक हरयलासँ किए हुअय क्यो शोकित?
 कोन वस्तुक चोरिसँ होइछ मनुक्ख धनिक?
 लोभक क्षति बनबैछ पुष्ट सबहिँ।
 ब्राह्मण जन्म, विद्या, शील कोन गप पर अवलम्बित?
 शील स्वभाव बिनु ब्राह्मण रहत नै किछु।
 धर्मसँ बढ़ि अछि की जगतमे?
 उदार मनसि उच्च पदस्थ सभसँ।
 कोन मित्र नै होइत अछि पुरान?
 सज्जनसँ कएल गेल मित्रताक कोना अवसान।
 सभसँ पैघ अद्भुत की अछि ऐ जगमे?
 मृत्यु सभ दिनु देखनहु अछैतो जीवन लिलसा,
 ऐसँ बढ़ि अद्भुत आश्चर्य अछि की?
 प्रसन्नचित्त भऽ यक्ष कहल युधिष्ठिर कहू,
 कोनो एक भायकें हम जीवित कऽ सकब।
 तखन नकुलकें कऽ दिअ जीवित,
 सुनि यक्ष पूछल कहब तँ भीम अर्जुन कोनोकें,
 जीवित करब जकर रण कौशल करत रक्षा।
 धर्मराज कहल धर्मक बिनु नै होइछ रक्षा,
 कुन्ती पुत्र हम युधिष्ठिर जिबै छी,
 माद्री मातुक पुत्र जिबथु नकुल सएह उचित।
 सुनि कहल हिरण वेशधारी यमराज हे पुत्र,
 पक्षपात रहित छी अहाँ तँ सभ भाय जीबथु।
 पुत्रकें देखि मोन तृप्त भेलन्हि यमक,
 पाण्डव गण तखन घुरि गेला द्रौपदीक लग।

विराट पर्व

पूर्ण भेल वनवासक वर्ष बारह अतीत,
 एक वर्षक छल अज्ञातवास बड़ कठिन,
 दुर्योधनकें यदि हुनक संकेतक चलय पता,
 पुनि द्वादश वर्षक वनवासक छल प्रथा।
 प्रातःकाल सभ विदा भेला विराट नगर दिस,
 धर्मराज कंक नाम्ना ब्राह्मण वेश धारित मिलि।

कौड़ी आ चतुरंग गोटीसँ विराटराजक मोन लगायब,
 भीम बनि पाचक, नाम वल्लभ, पाकशाला सम्हारथि।
 विराटक पुत्रीकेँ संगीत नृत्य अर्जुन,
 नारी वृहन्नला बनि सिखाबथु,
 ग्रंथिक नामसँ नकुल अश्वक करय रखबारि,
 सहदेवक नाम तंत्रपाल भेल करथि चरबाहि।
 रानीकेँ सजाबथि द्रौपदी नाम धरि सैरन्ध्रीक।
 सभ ई सोचि नुकाओल अस्त्र-शस्त्र,
 शाखा बिच शमी-वृक्ष एकटा विशाल मध्य।
 जखन वेश-धऽ पहुँचला विराट राजा लग,
 स्वीकारलन्हि ओ सभटा प्रार्थना स्वतः।
 दिन छल बीति रहल मुदा रानी सुदेष्णाक,
 भाय छल कीचक दुष्ट देखि सैरन्ध्रीक भेल मुग्ध।
 बहिनसँ पूछल कोन देशक राजकुमारी छथि,
 कहल बहिन नै छी, छी निकृष्ट दासी ई।
 मुदा कीचक पहुँचि द्रौपदी लग बाजल,
 सुन्दरी दास बनाउ हम मुग्ध पागल।
 सैरन्ध्री कहलन्हि, हम विवाहिता एक दासी,
 अहाँक पालिता छी नै पुनि गप ई बाजी।
 मुदा कीचक बहिनिसँ पुनि अनुरोध केलक।
 पर्व दिन सुदेष्णा किछु वस्तु अनबा हेतु कहलक,
 सैरन्ध्रीकेँ कीचक लग जाय तकरा आनय पठेलक।
 मुदा ओतऽ देखि वासनाक आँखि भागलि,
 भीमसँ जाय बाजलि धिक कहलि पाण्डवकेँ ।
 भीम बाजल आब जे ओ भेंट हुअय,
 नाट्यशालामे बजाउ आध राति सोचब फेर ई,
 हमरा की करबाक अछि ओइ दुष्टकेँ ओतय।
 कीचक विराटक सेनाक प्रमुख सेहो छल,
 सैरन्ध्रीक आमंत्रणकेँ नै बूझि पहुँचल अभागल।
 स्त्री वेष धरने भीम ओतय प्रतीक्षित,
 केश पकड़ि पटकल, लात-हाथ मारल कीचककेँ ओतहि।
 भोर होइत ई गप पसरि गेल चारू दिस,
 कीचककेँ मारल गंधर्वपति सैरन्ध्रीक।
 सैरन्ध्रीक प्रति भय-श्रद्धा दुनू पसरल,
 दुर्योधन छल बुझल अज्ञातवासक कथा,
 छल ताकिमे तकबाक पाण्डवक पता,

छी ई द्रौपदी सैरन्ध्रीक भेषमे अभरल।
 पाण्डव छद्म-भेष बनओने छथि गांधर्वक,
 कीचकसँ अपमानित राजा त्रिगर्त देशक,
 मिलि दुर्योधनसँ कय गौ-हरणक विचार
 विराट राजसँ ओ लेत बदला आब।
 दुर्योधन लऽ संग भीष्म, द्रोण, कृप, कर्ण,
 आक्रमण विराट पर लऽ अश्वत्थामा संग।
 त्रिगर्त राज सुशर्मा घेरि गौ-विराटराजक,
 बान्हि विराटकें जखन ओ सोझाँ आयल।
 ललकारि कएल भीमकें सोर युधिष्ठिर-कंक,
 वल्लभ-भीम ग्रंथिक-नकुल तंत्रिपाल-सहदेव।
 खोलि बन्धन विराटक बान्हि देल सुशर्मन,
 वृहन्नला बनि सारथी पुत्र विराटराज उत्तमक।
 रथ आनल रणक्षेत्र उत्तमकुमार भेल घबरायल,
 गेल अर्जुन शमी गाछ लग उतारि शस्त्र आयल,
 गाण्डीव अक्षय तुणीर आनि परिचय सुनाओल।
 उत्तमकुमार बनल सारथी वृहन्नला-अर्जुनक संग,
 वेगशाली रथ देखि दुर्योधन पुछल हे भीष्म।
 अज्ञातवासक काल भेल पूर्ण वा नै वा कहू,
 भीष्म कहल पूर्ण तेरह वर्षक अवधि भेल औ।
 अर्जुन उतारल अपन रोष कर्ण पुत्र विकर्ण पर,
 मारि ओकरा बढ़ल आगाँ कर्णकें बेधल सेहो।
 द्रोण-भीष्मक धनुष काटल मूर्च्छित कएल सेना सकल,
 द्रोण-कृप-कर्ण-अश्वत्थामा-दुर्योधनक मुकुट वस्त्र सभ,
 उत्तमकुमार उतारल सभटा गौ लऽ नगर तखन घुरल।
 मूर्च्छा टूटल सभक जखन कहल करब युद्ध पुनः,
 भीष्म नै मानलाह दुर्योधन घुरु बहुत भेल आब अः।
 उत्तमकुमार नै करब प्रगट भेद हमर अर्जुन कहल,
 विराट भेल प्रसन्न वीरता सुनि उत्तमक आबि घर।
 पञ्च पाण्डव द्रौपदीक तखन परिचय हुनका भेटल,
 प्रस्ताव कएल पुत्री उत्तराक विवाह अर्जुनसँ करब।
 अर्जुन कहल पढ़ेने छी हमर शिष्या अछि ओ रहलि,
 पुत्र अभिमन्युसँ हएत विवाहित उत्तरा, ई प्रस्ताव छल।
 वाह व्यास वाह, बाल-अमेल विवाह विरोध,
 की चतुरता कौशल कवित्वक कएल औ।
 कृष्ण-बलराम द्वारकासँ बरियाती अभिमन्युक लऽ एला,

उत्तराक विवाह अभिमन्युक संग भेल बड़ टोप-टहंकारसँ।

उद्योग पर्व

छला आयल राजा वृन्द अभिमन्युक विवाह पर,
 भेल राजाक सभा जतऽ कृष्ण कएल विनती ओतय।
 द्यूत खेल शकुनीक, अपमान द्रौपदीक कएल जे,
 दुर्योधन छीनल राज्य युधिष्ठिरक अधर्मसँ से।
 बाजू प्रयत्न राज्य-प्राप्तिक कोना हएत वा,
 दुर्योधनक अत्याचार सहैत रहथु पाण्डव सतत।
 द्रुपद उठि कहल दुराचारी कौरवकेँ सभ जनै छथि,
 कर्तव्य हमरा सभक थिक सहाय बनी पाण्डव जनक।
 करय लगला पांडव युद्धक तैयारी विराट द्रुपदक संग पाबि
 लगाय कुरुक्षेत्र लग पांडव रुकला शिविर पसारि।
 दुर्योधनकेँ जखन लागल खबरि ओहो कएलक तैयारी,
 संदेश पठाओल राजा सभकेँ कौरव पांडव तखन,
 अपन पक्षमे करबा लेल युद्ध शुरू हएत जखन।
 कुरुक्षेत्रक स्थलीमे सभटा जुटान हुअय लागल आरम्भ,
 यादव गणकेँ पक्ष करबा लऽ दुर्योधन द्वारका गेल स्वयं।
 पहुँचि दुर्योधन गेल देखल कृष्ण छला सुतल ओतय,
 अर्जुन सेहो पहुँचल पएर दिस बैसि गेल ओ ओतय।
 कृष्ण जखन उठि देखल अर्जुन छल ओतय,
 कहू बत्स की चाही अहाँ आयल छी एतय।
 युद्धमे संग अहाँक हमरा चाही हे नारायण,
 अर्जुनकेँ बजिते दुर्योधन टोकल एलौं पहिने एतय।
 कृष्ण कहल हम शस्त्र नै उठायब युद्धमे,
 नारायणी सेना चाही वा हमरा करब अहाँ पक्षमे।
 दुर्योधन नारायणी सेना चुनि भेल संतुष्ट आ,
 अर्जुनकेँ नारायण भेटल छल प्रफुल्लित ओहो।
 पांडवक मामा छला शल्य माद्रीक भाय जे,
 आबि रहल युद्धक लेल, दुर्योधन सुनि गेल ओतय।
 रस्तामे व्यवस्था-बात कएल तेहन छल,
 शल्य कहल अछि मोन पुरस्कृत करी काज जकर।
 दुर्योधन भेख बना जाय रहल छल ओतय,
 प्रकट भऽ मांगल युद्धमे होउ साहाय्य हमर,
 ऐ सभ व्यवस्थाक छी हमहीं निर्माण कएल।
 शल्य दऽ स्वस्ति पहुँचला जखन कुरुक्षेत्र,
 युधिष्ठिर सुनू छल भेल हमरा संग एतय।

कौरवक पक्षमे युद्ध करब भऽ वचन बद्ध,
 कहू कोन विध होइ साहाय्य अहाँक वत्स।
 युधिष्ठिर कहल बनू सारथी कर्णक आ करू,
 हतोत्साहित कर्णकेँ गुणगान गाबि पांडवक।
 शल्य कौरवक शिविर दिस चलला तखन,
 युद्ध सन्निकट अछि कृष्ण एला जानि सेहो,
 एतऽ सुनल द्रुपदक पुरहित गेल छल धृतराष्ट्र लग।
 संधिक प्रस्ताव पर देलक क्यो नै टेर ओतय,
 दुर्योधन कहल राज्य छोड़ सुइयाक नोक देखने छी?
 नै भेटत पृथ्वी ओतबो राज्यक तँ छोड़ बात ई।
 ई सुइयाक नोक भरि पृथ्वीक नै देबाक बिम्ब छल,
 दुर्योधनक हठक ई आ धृतराष्ट्रक आकांक्षाक प्रतीक छल।
 युधिष्ठिर कहल श्रीकृष्णकेँ आध राज्य छोड़ैत छी,
 जाउ कृष्ण पाँच गाम दुर्योधन देत ज्यों राखू प्रस्ताव ई,
 ओतबेमे करब हम सभ भाँय मायक संग निर्वाह।
 सात्यकीक संग कृष्ण हस्तिनापुरक लेल चलला जखन,
 द्रौपदी कहलन्हि देखू केश फुजले अछि ओहिना धरि अखन,
 कानि कहल संधि हएत युद्ध बिन खुजले रहत वेणी तखन।
 कविक बिम्ब सुइया बरोबड़ि जे नै छोड़त हठ अपन,
 पाँच गामकेँ तँ बुझत ब्रह्माण्ड ओ हठी सदिखन।
 कृष्ण कहल मानत नै संधिक गप कखनो दुर्योधन,
 युद्ध अछि अनिवार्य मनोरथ पूर्ण हएत द्रौपदी अहाँक।
 कृष्ण जखन गेला हस्तिनापुर सभ प्रसन्न छल,
 धृतराष्ट्र, दुःशासन-दुर्योधनक संग स्वागत कएल।
 मुदा कृष्ण ओतऽ नै ठहरि दीदी गेला कुन्तीक लग,
 विदुरक गृहमे छली ओतय भेल आब विस्तृत गप।
 कहल कुन्ती दीदी अहाँ जा कऽ कर्णकेँ परिचय दिअ,
 आबि जायत भ्रातृ-पाण्डव लग सत्य ओ जानि कय।
 दोसर दिन सभामे पहुँचला कृष्ण, छल छल ओतय मुदा,
 दुर्योधन विचारल बान्हि राखब कृष्णकेँ ज्यों एताह ।
 भीष्म धृतराष्ट्र द्रोण कृप कर्ण शकुनि दुःशासन ओतय,
 कृष्ण कहल शकुनिक चौपड़ दुर्योधनक दिससँ फेकब,
 अन्यायपूर्ण छल ओहिना, द्रौपदीक अपमान छल करब।
 विराट पर आक्रमण पाण्डवकेँ सतेबाक उपक्रम बनल,
 आध राज्य ज्यों दऽ दी तखनो शान्तिसँ रहि सकैछ सभ।
 सभ कएल स्वागत एकर दुर्योधन मुदा क्रोधित बनल,

कृष्णकै बन्हबाक आज्ञा देलक भीष्म तमसयलाह बड़।
 तेज कृष्णक मुखक देखि कौरव भयसँ छल सिहरल।
 दुर्योधन कहल पिता ज्येष्ठ हमर अंध छला से राज्य नै भेटलन्हि,
 हुनक पुत्र ज्येष्ठ हम से अधिकार हस्तिनापुर पर अछि सुनलौं?
 पाण्डव अन्यायसँ लऽ राज्य करै छथि राज करैत तैय्यारी युद्धक,
 कृष्ण अछि पाछाँ ओकर हम तँ रक्षा करै छी राज्यक।
 कृष्ण कहलन्हि तखन पाँच गाम दिअ करबा लऽ निर्वाह,
 मुदा दुर्योधन कहल राज्यक भाग नै हएत गऽ आब।
 कृष्ण बाजि जे हे दुर्योधन मदान्ध छी बनल अहाँ,
 पाण्डवक शक्तिक सोझाँ नाश हएत निश्चित बुझू अहाँक।
 कुन्ती पाछाँ गेली कर्णकै कहल दुर्वासाक मंत्र भेटल,
 पढ़ल सूर्यकै स्मरण कऽ पुत्र हमर भेलौं अहाँ तखन।
 प्रणाम कएल माताकै कर्ण तखन बजली सुनू ई,
 ज्येष्ठ पाण्डव छी अहाँ, राज्य युधिष्ठिर देत अहीकै।
 जखन नै मानल कर्ण कुन्ती पुछल मातृऋणसँ,
 उबरब कोना, कर्ण बाजल हे माता तखन सुनू ई।
 अर्जुनकै छोड़ि चारू पाण्डवसँ नै लड़ब पूर्ण शक्तियँ,
 अर्जुनकै मारब तखन बनब पुत्र अहीकै।
 वा मरब हम पुत्र तैयो पाँच टा रहबे करत,
 ई प्रतिज्ञा हम करै छी माता कुन्ती एलीह घुरि।
 कृष्ण आबि घुरि पहुँचि शिविर पाण्डवक जखन,
 पाण्डव युद्धक कएल प्रक्रिया आरम्भ ओतय तखन।
 सात अक्षौहिणी सेना घोड़ा, रथ, हाथी, सैनिकक,
 अर्जुन भीम सात्विकी धृष्टद्युम्न द्रुपद विराट लग।
 कौरव सेहो एगारह अक्षौहिणी सेना कृपाचार्य शल्य भूरिश्रवा,
 भीष्म द्रोण कर्ण अश्वत्थामा जयद्रथ कृतवर्मा भगदत्त छल।
 धृष्टद्युम्न सेनापति पाण्डवक भीष्म कौरवक बनल,
 कर्ण शस्त्र नै उठेबाक कएल प्रतिज्ञा
 भीष्म यावत युद्धक्षेत्रमे रहताह गऽ।
 भीष्म कहल मारब नै पाण्डवकै एकोटा,
 सेनाक संहार करब यथा संभव हएत।
 व्यास धृतराष्ट्रक लग गेला, ओ कहल व्यासजी सुनू,
 अंधत्व भेल वर हमर कुल संहार देखब नै बुझू।
 मुदा वीरक गाथा सुनबाक अछि इच्छा बहुत,
 व्यास देल योगसँ दिव्यदृष्टि संजयकै, कहल,
 बैसले-बैसल देखि संजय वर्णन करताह युद्धक,

बाजि ई व्यास ओतयसँ भऽ गेला विदा।

भीष्म पर्व

भेल भोर रणभूमिमें कौरव-पाण्डव जुटल सेना सहित
 आगाँ भीष्म कौरवक आ पाण्डवक अर्जुन-कृष्ण रहथि।
 भीष्मक रथक दुहुओर दुःशासन दुर्योधन छला,
 पार्श्वमें अश्वत्थामा गुरु द्रोणक संग भाग्य आह।
 युद्ध कऽ कय राज्य पायब मारि भ्राता प्रियजनकें,
 सोचि विह्वल भेल अर्जुन गांडीव खसत कृष्ण हमर।
 कर्मयोग उपदेश देल कृष्ण दूर करू मोह-भ्रम,
 स्वजन प्रति मोह करि क्षात्रधर्मसँ विमुख न होउ।
 अधर्मसँ कौरवक अछि नाश भेल देखू ई दृश्य।
 विराटरूप देखि अर्जुन विशाल अग्नि ज्वालामे,
 जीव-जन्तु आबि खसथि भस्म होथि क्षणहि,
 कौरवगण सेहो भस्म भऽ रहल छला,
 चेतना जागल अर्जुनक स्तुति कएल सद्यः।
 फलक चिन्ता छोड़ि कर्म करबाक ज्ञानसँ,
 आत्मा अमर अछि शोक एकरा लेल करब नै उचित।
 युधिष्ठिर उतरि रथसँ भीष्मक रथक दिस गेल,
 गुरुजनक आशीर्वाद लऽ धर्मपालन मोन राखल।
 भीष्म द्रोण कृपाचार्य पुलकित विजयक आशीष देल,
 धृतराष्ट्र पुत्र युयुत्सु देखि रहल छल धर्मनीति
 छोड़ि कौरव मिलल पाण्डव पक्षमें तत्काल,
 युधिष्ठिर मिलाओल गर ओकरासँ भेल शंखनाद।
 अर्जुन शंख-देवदत्त फूकि कएल युद्धक घोषणा,
 आक्रमण कौरवपर कऽ रथ हस्ति घोटक पैदल,
 युद्धमें पहिल दिन मुइल उत्तर विराटक पुत्र छल।
 भीष्म कएल भीषण क्षति साँझमें अर्जुनक शंख,
 बाजि कएल युद्धक समाप्ति भीष्म सेहो बजाओल अपन।
 पहिल दिनक युद्धसँ पाण्डव शोकित दुर्योधन हर्षित।
 दोसर दिनक युद्ध जखन आरम्भ भीष्म आनल प्रलय।
 कृष्ण एना भऽ हमर सेना मरत चलू भीष्म लग,
 हँ धनञ्जय रथ लऽ जाइत छी भीष्मक समक्ष।
 दुहुक बीच जे युद्ध भेल विकराल छल थरथरायल सकल।
 भीम सेहो संहारक बनल भीष्म छोड़ि अर्जुनकें ओम्हर दौगल,
 सात्यकीक वाणसँ भीष्मक सहीसक अपघात भेल,
 खसल भूमि तखन ओ भीष्मक घोड़ा भागल वेगमान भऽ,

साँझ भेल शंख बाजल युद्ध दू दिनक समाप्त भेल।
 तेसर दिन सात्विकी अभिमन्यु कौरवपर छूटल,
 द्रोणपर सहदेव-नकुल युधिष्ठिर आक्रमण कएल,
 दुर्योधनपर टूटल भीम वाण मारि अचेत कएल,
 ओकर सहीस दुर्योधनकेँ लऽ चलल रणक्षेत्रसँ,
 कौरव सेना बुझल भागल छल ओ युद्ध छोड़ि कऽ।
 भागि रहल सेनापर भीम केलन्हि आक्रमण,
 साँझ बनि रक्षक आयल दुर्योधन कुपित भेल।
 भीष्मकेँ रात्रिमे कहल अहाँक हृदय अछि पक्षमे पांडवक,
 भीष्म कहल छथि ओ अजेय परज्य युद्ध भरि सक करब।
 सक भरि युद्ध करबाक बात कहल भीष्म दुर्योधनकेँ,
 चारिम दिन कएल आक्रमण प्रबल वेगें,
 अर्जुन कएल प्रयत्न रोकबाक हुनका व्यर्थ,
 पाँचम छठम आ सातम दिन एहिना सेहो बीतल।
 आठम दिनक युद्ध भेल घनघोर,
 अर्जुनक दोसर पत्नी उलूपीक पुत्र इरावान,
 युध्य मध्य मरल अर्जुन भेल अधैर्य।
 कएल युद्ध भयंकर भीष्मकेँ नै टेरल,
 दुर्योधन छल चिन्तित कर्णक ठाम गेल,
 घुरि भीष्मकेँ कहल अहाँ छी अन्हरे कएल।
 एहन रहत तखन बनायब कर्णकेँ सेनाध्यक्ष,
 भीष्म कहल बताह छी अहाँ भेल,
 कर्णक वीरता विराटयुद्धमे नै देखल?
 नवम दिनक युद्ध छल भयङ्कर,
 अर्जुनक रथकेँ भीष्म वाणसँ तोपल,
 कृष्ण-अर्जुन अपघात रथ क्षतिग्रस्त,
 घोटक रुकल अर्जुन शिथिल पस्त।
 कौरवक उत्साह छल देखबा जोगर,
 कृष्ण क्रोधित रथक पहिया लऽ छूटल,
 मारब भीष्म खतम करब ई युद्ध।
 अर्जुन पएर पकड़ि कऽ कहल हे कृष्ण
 शस्त्र नै उठयबाक केने प्रतिज्ञा छी
 लज्जित रथसँ कूदि छी हम आयल,
 भीष्म सेहो देखल भऽ भाव-विह्वल।
 रूप तेजमय शस्त्र लेने कृष्ण।
 कृष्णक क्रोध भेल जा कऽ शान्त,

साँझक शंख कएल दिनक युद्धांत।
 रातिमे युधिष्ठिर पुछलन्हि हे नन्दक नन्द,
 भीष्मक पराजयक अछि की रहस्य,
 भीम कहल अर्जुन नै जानि किए,
 नै प्रयोग कऽ रहल दिव्यास्त्र भीष्मपर।
 कृष्ण कहलन्हि चलू पाँचू भाँय,
 पूछि आबी हुनकेसँ हुनक उपाय।
 सभ पहुँचि पूछल बताउ हे भीष्म,
 अहाँक रहैत नै हारत कौरव कथमपि।
 सत्य धर्म दुहु भऽ जायत अलोपित,
 भीष्म कहल छी देखि रहल भऽ त्रस्त,
 अर्जुन नै कऽ रहल प्रयोग दिव्यास्त्र,
 मुदा हस्तिनापुरक सिंहासनसँ कटिबद्ध,
 हा दुर्भाग्य! असत्यक मर्यादाक रक्षार्थ !
 अछि शिखण्डी द्रुपदक पुत्र अहाँक पक्ष,
 पूर्वजन्मक स्त्री अछि शिवक कएल व्रत,
 हमर वधक लेल अछि सतत प्रतिपल उद्धत।
 द्रुपदक घरमे स्त्रीक रूप जन्म छल लेल,
 दानवक वरसँ पुरुष रूप बनि गेल।
 गुण स्त्रीत्वक अछि ओकरामे पार्थ,
 स्त्रीगण हमर वाणक नै छथि पात्र।
 शिखण्डीकेँ सोझाँ कऽ जे वाण अहाँ चलायब,
 पूर्ण विवश तखने हम पार्थ भऽ जायब।
 भऽ आश्वस्त प्रणाम कऽ भीष्म पांडवगण,
 घुरल दसम दिनुका युद्धक छल आयोजन।
 आइ सेहो भीष्मक वाणक भेल बरखा,
 मुदा शिखण्डी आयल सोझाँ हुनका।
 राखल अस्त्र भीष्म चलाओल वाण शिखण्डी,
 मुदा कोनो नै जोड़ ओकर वाणक छल मुदा,
 कृष्ण कहल लऽ अढ़ शिखण्डीक अर्जुन,
 भीष्मक देहकेँ गाँथू करू नै चिन्तन।
 अर्जुनक शंका सुनि कहल तखन कृष्ण,
 अस्त्र-शस्त्र संग जीतत क्यो नै भीष्म,
 अपने छथि ओ उपाय एहन बताओल,
 बिनु विलम्बक वाण अहाँ चलाउ।
 अर्जुनक वाणक आरम्भ भेल बरखा,

खसल भीष्म पृथ्वी छल वाणक शय्या,
 शरशय्यापर खसैत भीष्मक देरी छल,
 युद्ध खतम भेल ओइ दिनक तत्काल।
 कौरव पाण्डव जुमि एला समक्ष,
 भीष्म कहल दिअ गेरुआ माथतर। अह।
 महग गेरुआ लऽ प्रस्तुत दुर्योधन छल,
 ताकल भीष्म अर्जुन दिस अर्जुन भऽ साकांक्ष,
 तीन वाण चलाओल आधार माथक भेल।
 प्यासल भीष्म जलक लेल कहल पुनः ई,
 दुर्योधन स्वर्ण-पात्रमे जल अनबाओल,
 ताकल भीष्म अर्जुन दिस फेर पार्थ चलाओल,
 वाणसँ सोत निकलल जलक ऊपर दिस,
 पानि खसल मुख भीष्म भेला फेर तिरपित।
 सूर्य अछि अखन दक्षिणायणमे जाउ सभ क्यो,
 प्राण त्यागब हम उत्तरायणमे, पहुँचल कर्ण सेहो।
 करबद्ध प्रणाम कऽ लऽ आशीर्वाद ठाढ़ ओतऽ,
 भीष्म कहल हे कर्ण युद्धकें रोकू कुन्तीपुत्र अहाँ छी,
 अर्जुनकें नै हरा सकब अहँक तुच्छ इच्छा ई।
 कोन युद्धमे अर्जुनसँ छी बलशाली देलौं प्रमाण?
 अहाँ बुझायब दुर्योधन मानत छी हम जानि।
 कर्ण कहल हम सारथीपुत्र दुर्योधनक पाओल सम्मान,
 राजा भेलौं दुर्योधन ऊँच उठाओल हमरा,
 पाण्डव पौत्र अहाँक रहथि शस्त्र उठाओल किए?
 कौरवगणकें अहाँ किए नै बुझाओल,
 युद्ध बढ़ल अछि आगाँ, कोना हम छोड़ब दुर्योधन मजधार।

द्रोण पर्व

दस दिनक युद्ध भेल पाछाँ,
 द्रोण बनला सेनापति आब।
 दुर्योधन कहल करू एक काज,
 युधिष्ठिरकें पकड़ि करू युद्ध समाप्त।
 मुदा अर्जुन अछि ओतऽ सतत,
 दूर हटेबाक धराउ कोनो व्योत,
 दुर्योधन बजाओल राजा देश त्रिगर्त,
 राज सुशर्मा संसप्तक शक्ति संग चलत,
 लऽ अर्जुनकें दूर युधिष्ठिरक।
 ओम्हर पाण्डव कएल युधिष्ठिरक रक्ष उपाय,

रक्षक रहत अर्जुन-भीम दुहु ओर दुहु भाय।
 हएत कोनो कारणसँ कनिको दूर ज्यौं क्यो,
 नकुल सहदेव सात्यिकी लेत स्थान रिक्त ओ।
 द्रोणक संग छल कर्ण अश्वत्थामा,
 जयद्रथ कृप, कृतवर्मा, कर्लिंग नरेश।
 त्रिगर्तराज सुशर्मा देलक ललकारा,
 अर्जुन देखि सतर्क कएल सात्यिकी केँ।
 गुरुशिष्य बिच आब शुरु हएत युद्ध,
 तीर दुइ टा छोड़ि अर्जुन कएल आरम्भ,
 खसल पदपर द्रोणक अर्जुनक ई दुहु वाण।
 आह व्यास प्रणाम !!
 कऽ प्रणाम लऽ आशीष गुरुक आइ अर्जुन,
 भिन्न रीतिक प्रेम छल नुकायल कहाँ।
 कएल आक्रमण पाण्डवपर सोझाँसँ द्रोण पार्श्वसँ कर्ण,
 सुशर्माक पाछाँ अर्जुन शल्य, आबि गेल लड़बा लऽ भीमसँ,
 कर्ण कएल आक्रमण सात्यिकी छल त्वरित ओतय।
 सहदेवसँ भिड़ल शकुनि नकुल टा बाँचल ओतय,
 द्रोण बढ़ल सोर भेल, पकड़ल द्रोण युधिष्ठिरकेँ,
 अर्जुन छोड़ि त्रिगर्त नरेश घुरि आयल जे,
 द्रोण छोड़ल आशा पकड़बाक युधिष्ठिर,
 साँझ भेल युद्ध बन्दीक शंखनादक बिच।
 बारहम दिन सेहो त्रिगर्त सभ देलक ललकारा,
 मुदा वेगसँ आक्रमण कऽ अर्जुन कएल संहार,
 घुरि बढ़ल देखल भगदत्त छल हाथीपर सवार,
 हाथीक-अंकुश फेंकि कएल ओ अर्जुनपर प्रहार,
 कृष्ण रोकल अंकुश, अर्जुन लेलक ओकर प्राण,
 सँ अर्धचन्द्र वाण।
 द्रोण बढ़ल युधिष्ठिर दिस सत्यजित रक्षक छल आइ,
 मारि अश्वकेँ द्रोणक सत्यजित रथक पहिआ देल काटि।
 द्रोणक अर्धचन्द्रवाणसँ सत्यजितक गरदनि खसल अरड़ाय।
 युधिष्ठिर मरिते देखि सत्यजितकेँ घुरल रणसँ अविलम्ब,
 अर्जुन नै पाबि युधिष्ठिर भेल बताह मारल जन अथाह,
 द्रोण देखि अर्जुनक ई रूप भेला हताश संध्याक शंखक आस।
 दिन बितल दुर्योधन कहल हे गुरु द्रोण,
 स्नेह अछि अहाँक पाण्डवक प्रति तैं ई दोष,
 द्रोण भेल क्षोभित कहल बनायब चक्रव्यूह जकर तोड़,

अर्जुनक अतिरिक्त युधिष्ठिरक लग अछि नै व्योत।
 फेर तेरहम दिनक युद्ध भेल शुरु जखन,
 संसप्तक आ त्रिगर्तकेँ पछुआबैत गेल अर्जुन।
 तखने युधिष्ठिरकेँ पता चलल चक्रव्यूहक,
 अभिमन्यु देखि चिन्तित काकाकेँ कहल,
 गर्भमे सुनल, पिता माताकेँ वर्णन सुनबैत छल,
 चक्रव्यूहक छह द्वारकेँ तोड़बाक सभटा,
 स्मरण युद्धक वर्णनक विधि बचल नै कोनोटा।
 मुदा सातम द्वारक युद्धक वर्णन सुनल नै,
 माता सुतलि तखने बचल एकेटा द्वार सएह।
 कवि व्यासक पेटमे सीखि एबाक बिम्ब,
 शब्दार्थ नै वीरक अछि ई प्रतीक।
 सोझाँ तखन बढ़ल अभिमन्यु ककरो नै बुझायल,
 कतऽ अछि द्वार कतऽ प्रवेश जयद्रथ रक्षक जतय,
 आउ भीम काक ई अछि प्रवेश द्वार पैसब एतहि।
 अभिमन्यु कऽ प्रहार जयद्रथपर वाणसँ गेल भीतर,
 भीम आ दोसर सेनानीकेँ रोकि जयद्रथ ठाढ़ ओतहि।
 दोसर द्वारपर द्रोण ठाढ़ जखने वाण चलाबथि,
 काटल धनुष द्रोणक व्यूह भेदि बढ़लाह आगू।
 तेसर द्वारपर चकित कर्णपर कऽ वाण बरखा,
 बढ़ल चारिम द्वारपर अश्वत्थामा जतऽ छल,
 युद्ध भेल घनघोर एतऽ मुदा रोकि नै सकल,
 अभिमन्युक रथ बढ़ल दुर्योधन भेल चिन्तित,
 कर्ण आब करब की बाजू पराजय बुजाइछ निश्चित।
 कर्ण बाजल सभ मिलि सातो महारथी हम सभ,
 रोकि सकब ऐ बालककेँ नै क्यो सकत असगर।
 सभ रथी आ पुत्र दुर्योधनक नाम लक्ष्मण जेकर,
 पहुँचि गेल सातम द्वार पहुँचल अभिमन्यु तावत।
 अभिमन्युक सारथी देखि ई दृश्य ओतऽ कहल,
 ई सभ अधर्मी अछि जुटल, कहूँ तँ रथ घुराउ,
 अर्जुन पुत्र हम नै छोड़ब युद्ध एना देखू,
 पार्थ-पुत्रक शौर्य रथ घुमाउ चक्राकार कऽ अहँ।
 तखन लक्ष्मण आयल सोझाँ ओतय अभिमन्युक,
 वाणसँ काटल मस्तक लक्ष्मणक,
 द्रोण कहल, अछि एकर कवच अभेद्य
 करू प्रहार मस्तकपर आ

तखनहि सारथि अभिमन्युक खसल, टूटि गेल रथ ।
 नीचाँ आबि तरुआरि चक्र गदा लऽ ओतऽ ओ चलल,
 दुःशासनक पुत्रसँ गदा युद्ध भेल दुनू ओतै खसल ।
 पहिने उठि दुःशासनक पुत्र प्रहार केलक मस्तकपर,
 सप्तरथीक बीच खसि पड़ल सुभद्रापुत्र पति उत्तराक ।
 सुभद्रा उत्तरा पहुँचि गेली सातम द्वार विलखैत,
 उत्तरा कहलन्हि माता मृत्युक आज्ञा दिअ एतहि ।
 मुदा गर्भ छल उत्तराक पेटमे सुभद्रा बुझओलन्हि,
 ओम्हर त्रिगर्त संसप्तककें करि पूर्णरूपेँ संहार,
 अर्जुन घुरल सोचैत युधिष्ठिर होथि सुरक्षित ।
 सुनि मृत्युक समचार विचल कृष्ण कहल अर्जुन,
 कारण मृत्युक अछि मात्र बहनोइ-जयद्रथ,
 कऽ शिवक तपस्या भेटल वर ओकरा ई,
 अर्जुन छोड़ि आन पाण्डव नै जीतताह ओकरा ।
 प्रथम द्वारपर ठाढ़ ओ रोकल चारू भाँयकें ओतहि ।
 सुनतहि ई अर्जुन कएल प्रण वध करब काल्हि सूर्यास्तक पहिने,
 जयद्रथक वध करब नै तँ करब अग्निकें समर्पित ठामहि ।
 चौदहम दिनक युद्ध भेल प्रारम्भ,
 शकट-व्यूह द्रोणक झाँपल जयद्रथ ।
 द्वारपर व्यूहक प्रहरी द्रोण छला ठाढ़,
 विकट युद्ध कृष्ण लेल रथ कनछियाह ।
 द्रोण ललकारि कहल अर्जुन युद्धसँ रहल छी भागि,
 मुदा अर्जुनकें आइ छल दोसर धुनि सवारि ।
 कृष्ण रथ लऽ भीतर व्यूहमे पैसला,
 बेरू पहर चिन्तित युधिष्ठिर पठाओल सात्यिकी भीम,
 जाउ अर्जुनक सहायार्थ कहि दुनू बढल आगाँ ।
 भूरिश्रवा केलक आक्रमण सात्यिकीपर तखन,
 वाण अर्जुनक बढल ओकर दिस, दुहु हाथ कटल ओकर ।
 की कएल अर्जुन अहाँ हम लड़ि रहल छलौं सात्यिकीसँ,
 हमर हाथ काटल अहाँ अछि कोन न्याय बताउ फरिछाकें ।
 अर्जुन कहलन्हि अभिमन्युक वध कएल अहाँ सभ केना,
 न्यायक बात करै छी, रक्षा कएल हम सात्यिकीक जहन ।
 भूरिश्रवा खसल अचेत सात्यिकी काटल मूड़ी भूरिश्रवाक ।
 अर्जुन देखि भीम सात्यिकीकें भेल चिन्तित घुरल,
 युधिष्ठिरक मोन छलन्हि हुनका पड़ल ।
 तखने सूर्यास्त भेल अर्जुन उतारि देल गाण्डीव,

चिता छल सोझाँ आगि धहधह,
 करैत पाण्डवक आँखि झिलमिल।
 बढ़ल अर्जुन बिनु शस्त्र-अस्त्र चिता दिस,
 बाजल कृष्ण क्षत्रिय अर्जुन लऽ अस्त्र जाउ चितामे,
 मृत्यु संग जायत नै त्यागू अक्षय तूणीर गाण्डीव।
 मुदा जखने अस्त्र लेलन्हि अर्जुन सूर्य निकलल घटासँ,
 सोझाँ छल जयद्रथ अपटी खेतमे मरल ओतहि अर्जुनक हाथैं।
 मुदा कृष्ण कहलन्हि आब दुर्योधन करबाओत कर्णक अमोघ अस्त्रक प्रयोग,
 भीमपुत्र घटोत्कचकें बजाउ राक्षसी युद्ध रातिक करत ओ भयङ्कर,
 आयल रातिमे घटोत्कच कऽ बरखा पानि आँकड़-पाथरक तत्क्षण ।
 दुर्योधन देखि रूप ई विकराल भागैत कौरव सेनाकें देखल,
 कर्ण मारू एकरा नै तँ युद्ध निकलल जाइत अछि सकल।
 विवश भऽ कर्ण छोड़ल अमोघ मरल घटोत्कच तखन,
 पाण्डव दुखित भेल छल कर्ण सेहो चिन्तित।
 रातिक भेल आक्रमणसँ क्षुब्ध क्रुद्ध कौरव आ द्रोण एला,
 युधिष्ठिरक रक्षार्थ एक दिस द्रुपद छल दोसर दिस विराट तकरा।
 देखिते द्रुपदकें द्रोणक खून छल खौलि गेल दिव्यास्त्रसँ लेल प्राण,
 द्रुपद पुत्र धृष्टद्युम्न पांचाल सेनाक संग आयल बिच बरखाक वाण।
 प्रचंड रूप देखि द्रोणक कृष्ण कहल हे युधिष्ठिर अवन्तिराजक हस्ति,
 नाम अछि अश्वत्थामा ओकरा मारल अछि भीम सद्यः।
 पूछथि द्रोण जे अश्वत्थामा अछि मरि गेल तखन अहँ,
 कहूँ हँ, मरि गेल अछि भीम मारल अखन तुरत।
 तखने सोर भेल मरबाक अश्वत्थामाक साँसे,
 द्रोण अधीर रथ अगुआय पूछल युधिष्ठिर,
 की अछि बात सत्य मरल अश्वत्थामा रणक बिच?
 कहल युधिष्ठिर हँ मरल अछि ओ नर नै, छल ओ कुञ्जर,
 मुदा युधिष्ठिरक नर कहितहि बजल छल शंख कृष्णक।
 शोक-विह्वल द्रोण फेकि शस्त्र ध्यानमग्न बैसला रथपर,
 धृष्टद्युम्न काटल हुनक मस्तक खड्गसँ अश्वत्थामा भेल व्याकुल।
 छोड़य लागल दिव्यास्त्र पाण्डवपर अर्जुनकें छोड़ि नै छल क्यो सक्षम,
 साँझ धरि अर्जुन-अश्वत्थामा दुहु मध्य होइत रहल ई युद्ध निरन्तर।

कर्ण पर्व

रात्रिमे दुर्योधन केलक प्रण
 अर्जुनक मृत्युक भेल आवाहन,
 कर्णकें सेनापति बना केलन्हि
 कौरव गण सोलहम दिनक युद्धक प्रारम्भ।

कर्णक शंखध्वनिसेँ भेल युद्ध आरम्भ,
 कर्णक तापसेँ युद्धभूमि स्तब्ध,
 नकुल सोझाँ पाबि अपघात कऽ छोड़ल प्राण
 कुन्तीक देल कर्णक वर प्राणदान।
 कृष्णक आवाहन अर्जुन अहाँकेँ छोड़ि,
 क्यो नै कऽ सकत विजय कर्णक ऊपर,
 वेगसेँ जे बढ़ल अर्जुन आगाँ भेल शुरु बरखा,
 बरखा वाण कौरवगणक अर्जुनक समक्ष,
 मुदा अर्जुनक सोझाँ सभ भेला पस्त,
 मुदा तखने भेल सोलहम दिनक सूर्यास्त।
 रात्रिमे कर्ण कहलन्हि हे मित्र दुर्योधन,
 अर्जुनक रथमे होइछ ढेर-रास शस्त्रक अटावेश,
 गाण्डीव आ अक्षय तूणीरक नै कोनो जोड़,
 हुनकर अश्वक गति नै कोनो थोड़,
 आ कृष्ण सन सारथी।
 शल्य बनथि हमर सारथी यदि, हेता ओ कृष्णक तोड़,
 मुदा शल्य कहलन्हि अछि हमर मुँहपर नै जोड़,
 कर्णकेँ से हुअय स्वीकार तँ हमरा कोनो नै हर्ज।
 सत्रहम दिनुका युद्ध भेल आरम्भ कर्णक आक्रमण आरम्भ,
 अर्जुन बढ़ल आगू शल्य कहल भिरू महापराक्रमी अर्जुनसेँ,
 कर्ण देखलन्हि भीमकेँ करैत संहार चलू शल्य ओइ पार,
 भीमक रूप आइ प्रचण्ड छोड़ल वाण चीड़ि कवच कर्णक गाँथल देह,
 अचेत कर्णकेँ लऽ भगला शल्य रणभूमिक कात-करोट।
 देखि ई दृश्य भीम भेला आर तीव्र,
 दुर्योधन हुनकर सोझाँ पठाओल दुःशासन वीर।
 गदा युद्ध दुहुक मध्य छल भेल भयङ्कर,
 भीमक मस्तक प्रहार खसल मूर्छित दुःशासन।
 भीम हाथ उखाड़ि पीबय लागल छातीक रक्त,
 भागल कौरवसेना देखि दृश्य एहि ढङ्गक।
 आब सोझाँ-सोझी अर्जुन कर्णक युद्ध आइ आरम्भ,
 कर्ण काटल गांडीवक प्रत्यंचा यावत दोसर चढ़ाबथि,
 कएल वाणसेँ आक्रमण अर्जुन कोहुना कऽ प्रत्यंचा चढ़ाय,
 वाण-वर्षा अर्जुनक जखन भेल आरम्भ, कर्ण शल्य भेला चोटिल,
 कर्णक सहायक सेना भेल नष्ट कर्ण अति व्याकुल।
 छोड़ल कर्ण वाण दिव्य अर्जुनपर कृष्ण केलन्हि अश्वकेँ ठेहुनपर ठाढ़,
 अर्जुनक मुकुटकेँ छुबैत ओ अर्जुनक प्राणक संकट भेल पार।

तखने कर्णक रथक पहिया धँसल युद्ध मध्य,
 कर्णक पुकार कनेक काल वाण नै चलेबाक धर्मक ई युद्ध,
 विराटक गौअक चोरि अर्जुन कहलन्हि आ अभिमन्युकेँ मारैत काल,
 धर्म आ धर्मयुद्धक बिसरल छलौं अहाँ पाठ ।
 प्राणक भिक्षा मंगैत लगितो अछि नै लाज ।
 कर्ण उतरि लगला रथक पहिया निकालय,
 अर्जुनक वाण काटल मस्तक कौरवमे भारी हाहाकार ।
 दुर्योधनक सभ भाँयकेँ मारने छला भीम तावत,
 एगारह अक्षौहिणीमे सँ बड़ थोड़ कौरव छल बाँचल,
 कृपाचार्य बुझेलन्हि दुर्योधन आबो करू सन्धि,
 मुदा ओ कहल हम अहाँ कृतवर्मा, अश्वत्थामा आ शल्य अछैत,
 सन्धिक गप छी अहाँ करैत?
 शल्य बनथि सेनापति युद्ध अठारहम दिन रहत जारी ।

शल्य पर्व

शल्यक भेल उद्धोष ओकर बढ़ल पग युधिष्ठिर छल रोकल ।
 शल्य जखने काटल हुनकर एक धनुष,
 युधिष्ठिर उठा कऽ दोसर धनुष मारल शल्यक अश्व आ सहीस ।
 भेल तखन घमासान युधिष्ठिर लेलन्हि शल्यक प्राण,
 सहदेव छुटला शकुनि आ ओकर पुत्र उलूकपर,
 लेलन्हि बाप-बेटाक प्राण जुआरीक प्राणान्त ।
 गदा लऽ दुर्योधन निकलि गेला छोड़ि रण,
 एकटा सरोवर मध्य छल स्तंभ, नुकायल ओतय दुर्योधन,
 देखलन्हि जाइत हुनका किछु ग्रामीण ।
 ग्रामीणक चर्च व्यास, केलौं कृतार्थ ।
 पाण्डवक संग कृष्ण पहुँचला ओतय,
 किछु ग्रामीण जे देलन्हि पता ओतएक ।
 भीम देलक ललकारा दुर्योधन निकलि ऐल,
 तीर्थसँ घुरैत बलराम सेहो पहुँचला ओतय ।
 शिष्य दुर्योधनकेँ दऽ आशीर्वाद कएल गदा युद्धक आरम्भ,
 भीम दुर्योधनक बीच बाझल युद्ध घनघोर,
 कृष्ण देल जांघपर थपकी मोन पाड़ल भीमकेँ ओकर प्रतिज्ञाक,
 तोड़ि जांघक हड्डी कऽ मस्तकपर दुर्योधनक, गदा-पएरसँ प्रहार ।
 भीमक ई कृत्य! छुटला बलराम ओकरा पर मार-मार,
 कृष्ण रोकि दाऊकेँ मोन पाड़ल द्रौपदीक अपमान,
 भीमक प्रण ।
 छोड़ि दुर्योधनकेँ असहाय,

गेला सभ पाण्डव भाय।

सौप्तिक पर्व

संध्या समय कृतवर्मा, कृपाचार्य आ अश्वत्थामा
 पहुँचि देखल दुर्योधनक दुर्दशा आ प्रलाप ।
 भीमक पादसँ दुर्योधनक मस्तकपर प्रहार,
 सुनि ई कथ्य अश्वत्थामा लेल पाण्डवक वधक व्रत।
 दुर्योधन कएल अश्वत्थामाक सेनापति रूपमे अभिषेक,
 कृतवर्मा, कृपाचार्य आ अश्वत्थामा बढ़ला पाण्डव-शिविर समक्ष।
 कृष्ण लऽ पाँचू पांडवकेँ गेला कतौ अन्यत्र।
 पाण्डव-शिविरक समक्ष एकटा वृक्ष, नीचाँ सुतला कृपा आ कृत ।
 अश्वत्थामाक आँखिमे निन्नक नै लेस, देखल एकटा पक्षी अबैत,
 ओइ वृक्षपर कौआ सभ सुतल मारिते रास, केलक ओ पक्षी सभक ग्रास।
 देखि ई दृश्य अश्वत्थामा उठाओल कृपाचार्य ओ कृत,
 भोरक बाट ताकब नै सुबुद्धि, ई अधर्म कहल कृप ।
 मुदा अश्वत्थामा चलि पड़ल शिविर दिस,
 हारि पहुँचल पाछाँ-पाछाँ कृत-कृप,
 हम पैसैत छी भीतर शिविर ।
 बाहर होइत सभकेँ प्राण लिअ अहाँ दुनू गोटे,
 एतऽ ठाढ़ लग द्वार।
 सभ पांचाल धृष्टद्युम्न शिखण्डी समेत,
 द्रौपदीक पाँचू पुत्रकेँ बुझि पाण्डव देल मारि,
 अश्वत्थामा देल शिविरकेँ आगिसँ जराय।
 फेर पहुँचि लऽ द्रौपदीक पाँचू पुत्रक माथ,
 दुर्योधन मांगने छल भीमक मस्तक,
 ओकर मुष्टिकाक प्रहारसँ मस्तक भेल फाँक,
 नै ई नै भीमक माथ ।
 भोरमे देखल द्रौपदीक पाँचू पुत्रक माथ,
 कानैत हाक्रोश करैत भेल दुर्योधनक प्राणान्त।
 भोरमे कृष्ण पहुँचला पाण्डव-द्रौपदीक संग,
 देखि विनाश भीम चलल अश्वत्थामाक ताकिमे,
 छल ओ गंग तटपर व्यासक समक्ष ।
 युधिष्ठिर-अर्जुन संग कृष्ण पहुँचल जाय,
 पाण्डवक नाशक संकल्प संग अश्वत्थामा छोड़ल ब्रह्मशिरा अस्त्र,
 अर्जुनक छोड़ल पाशुपत महास्त्र अग्नि वृष्टि सँ सृष्टिक विनाश,
 मुदा अस्त्रक बीचमे एला नारद आ व्यास ।
 वाह व्यास । महाभारतक लिखनिहार ।

आग्रह करैत जे दुनू गोटे लिअ अपन-अपन अस्त्र सम्हारि,
अर्जुन लेलन्हि अपन अस्त्र सम्हारि मुदा,
अश्वत्थामा कहल नै घुरि सकत हमर अस्त्र आइ ।
ऋषिक प्रतिकार ब्रह्मशिरासँ हएत उत्तराक गर्भक नाश,
मुदा अश्वत्थामाकेँ देमय पड़त मस्तकक मणि,
भेल ओ निर्बल तपस्वी,
व्यासक आश्रममे बिताओल सकल जिनगी।

स्त्री पर्व

दुर्योधनक पत्नी भानुमति छलि अचेत, गांधारी करथि विलाप,
धृतराष्ट्र मूर्छित विदुरक हाक्रोश, पाण्डव घुरल अश्वत्थामाक मणि संग ।
कृष्ण लेलन्हि लौहक भीमक स्वांग
धृतराष्ट्र पहुँचल कुरुक्षेत्र वधू सभक संग।
भीमकेँ गर लगाय कएल ओकरा चूर्ण फेर भीम-भीम कहैत प्रलाप,
कृष्ण कहल नै कानू हे धृतराष्ट्र, छल ई लौहक भीम मात्र ।
गांधारी देल कृष्णकेँ शाप,
जेना कएल अहाँ हमर वंशक नाश,
हएत अहाँक कुल नष्ट।
मृतकक दाह संस्कारक संग एक पक्ष समाप्त।

शान्ति पर्व

युधिष्ठिरक मोन विखिन्न, छोड़ल राज-पाटक विचार,
व्यास आबि देलन्हि उपदेश, पलायन नै अहाँक मार्ग।
धौम्य कऽ वेद मंत्रक गान राजतिलक युधिष्ठिरकेँ लगाओल।
फेर पहुँचि भीष्मक समक्ष लेल अनुशासनक शिक्षा,
राजधर्म, लोकधर्म, मोक्षधर्मक ज्ञान, प्रजापालन,
उठि प्रदेश जातिक विचारसँ ऊपर, राजाक व्रतक करू परिपालन।

अनुशासन पर्व

आयल ओ काल जखन सूर्य भेला उत्तरायण,
पहुँचला युधिष्ठिर संग माता-गांधारी-कुन्ती, धृतराष्ट्र भ्राता मिलि,
अट्ठाओन दिनक शर-शय्याक अन्तिम उपदेश आ महाप्रयाण,
चाननक चितापर भीष्मकेँ युधिष्ठिर देल आगि, सभ आक्रान्त।

आश्वमेधिक पर्व

हस्तिनापुरक राज्यमे आयल सुख समृद्धि,
युधिष्ठिरक कौशल कएल आशाक वृद्धि,
उत्तराकेँ तखने भेल मृत-पुत्रक प्राप्ति,
सुभद्रा खसलि कृष्ण लग जाय।

कृष्ण उठा बालककेँ कहल हम नै कएल पलायन,
 सत्यसँ सम्बन्ध रहल बनल,
 पराजित कऽ शत्रु नै भेलौँ हिंसक,
 यदि ई सत्य तँ बालक जीबि उठथि।
 ई सुनिते शिशु भेल जीवित, नाम पड़ल परीक्षित।
 फेर कएल युधिष्ठिर यज्ञ अश्वमेध,
 सिलेबी अश्वक गरमे स्वर्णपत्र,
 जिनका युधिष्ठिरक राज्यसँ परहेज,
 से पकड़ि घोटक करथि एकर विरोध।
 मुदा घुरि आयल अश्व निष्कंटक,
 यज्ञ भेल समाप्त निर्विघ्न।

आश्रमवासिक पर्व

बरख पन्द्रह बीतल तखन एला व्यास,
 देल उपदेश धृतराष्ट्र लेल वानप्रस्थ धर्मक ज्ञान,
 गांधारी, कुन्ती, विदुर, संजयक संग हिमालय प्रयाण,
 विदुर लेलनि वनहिमे समाधि,
 दावाग्नि लेलक शेष सभक प्राण।

मौसल पर्व

कृष्ण युद्धक पाछाँ गेला द्वारका,
 छलथि प्राप्त केने सम्मान,
 मुदा यादव राजकुमार,
 करथि विद्वानक अपमान।
 मारि-काटि करथि आपसमे समाप्त,
 देखि दुखित बलराम प्रभासतीर्थ जाय,
 ओतै लेल दाऊ समाधि,
 कृष्ण पहुँचि देखि हुनकर प्राणान्त,
 गाछ पकड़ि रहथि ठेहिआय।
 ब्याध जकर छल जरा नाम,
 हरिण बुझि पैरक तलवामे मारल वाण,
 भेल कृष्णक प्राणान्त।
 सुनि ई समाचार वसुदेवक मृत्युक,
 पिता वसुदेव सेहो कएल जीवनक अन्त।

महाप्रास्थानिक पर्व

कृष्णक मृत्युक समाचार,
 पाण्डवराज युधिष्ठिर देल परीक्षितकेँ राज,

सुभद्रा केँ दऽ उपदेश,
संग द्रौपदी पहुँचल द्वारका पाँचू भाय।
ओतऽ डूबल समुद्रमे छल ओ नगरी,
घुमैत फिरैत चलला हिमालय सभ गोटे।
एक कुकुड़ छल संग चलैत ओतय,
हिमालय वृहदाकार हिमपातक मारि,
द्रौपदी खसलि मरलि, फेर सहदेव,
नकुल अर्जुन भीम खसि मरल फेर, फेर।
आगाँ देवलोकक रथ छल ठाढ़,
इन्द्र कहल चलू असगर सशरीर युधिष्ठिर,
ई कुकुड़ नै रहय संग।
युधिष्ठिर नै मानल घुरि जाउ इन्द्र,
बिन एकर नै जायब ओतय हुअय स्वर्ग अहि।
छल ओ कुकुड़ यमराज स्वयं,
प्रकट भऽ देल ओ आशीर्वाद ओतय।

स्वर्गारोहण पर्व

पहुँचि स्वर्ग देखल कौरव गण सभ ओतय,
इन्द्र हमर भ्राता छथि कतय।
तखन एकटा दूत लऽ गेल हुनका नर्कक द्वारपर,
द्रौपदी संग पाँचू भाय छला ओतय।
कहल युधिष्ठिर हम रहब एतै हे दूत,
छोड़ि हिनका जायब नै कत्तौ।
इन्द्र यम पहुँचि गेला ओतऽ।
यम कहल पहिल परीक्षा छल यक्ष प्रश्न
दोसर परीक्षा कुकुड़ बनि लेल हम,
आइ ऐ तेसर परीक्षामे सेहो अहाँकेँ उत्तीर्ण कएल।
ई अछि देवलोक मुदा सदेह राजाकेँ,
एतुक्का कष्ट देखक लेबाक चाही शिक्षा तँ,
किछु कालक कष्ट हम अहाँकेँ देल।
छोड़ू ई शरीर लिअ दैवी रूप आब,
कहैत यमक भेल ई परिवर्तन,
कर्ण सेहो ओतऽ बारह आदित्यक संग,
रत्नजटित सिंहासनपर छल विराजमान,
भारतक युद्धक काव्यक समापन।
त्वञ्चाहञ्च सभ आपसक लड़ाइ,
अछि अखनो पसरल ई महामारि।

जाति-धर्म परिवार पुत्र केर मोह,
यावत रहत प्रतिभा पिचायत आह।
धृतराष्ट्र जतऽ करत अराढ़ि,
त्वज्चाहज्य मचत
युधिष्ठिरक दोष की थोड़?
दुर्योधन प्रारम्भ करत।

अनुलग्नक २ — असज्जाति मन (गीत प्रबन्ध)

[अश्वघोषक २८ सर्गक संस्कृत बुद्धचरितम् विलुप्त भऽ गेल मुदा एकर तिब्बती अनुवादसँ पुनः संस्कृत रूपन्तर भेल, रूपान्तरकारक नाम अज्ञात। ओ अनुवाद अश्वघोषक मूल संस्कृत बुद्धचरितम् नामसँ ओइ अज्ञात अश्वघोष भक्त (आ बुद्धक भक्त) अनुवादक द्वारा जारी कएल गेल। ओइ अद्भुत अनुवादकक संस्कृत बुद्धचरितम् केर अति-संक्षिप्त मैथिली अनुवाद।]

असज्जाति मन

सर्ग १

ई पुरातन देश नाम भरत,
राज करथि जतऽ इक्ष्वाकु वंशज।
ऐ वंशक शाक्य कुलक राजा शुद्धोधन,
पत्नी माया छलि,
कपिलवस्तुमे राज करथि तखन।
अश्वघोषक वर्णन ई सकल,
दैत अछि सम्बल असज्जाति मनक।
माया देखलन्हि स्वप्न आबि रहल,
एकटा श्वेत हाथी आबि मायाक शरीरमे,
पैसि छल रहल हाथी मुदा,
मायाकेँ भऽ रहल छलन्हि ने कोनो कष्ट,
वरन् लगलन्हि जे ऐल अछि मध्य क्यो गर्भ।
गर्भक बात मुदा छल सत्ते,
भेल मोन वनगमनक,
लुम्बिनी जाय रहब, कहल शुद्धोधनकेँ।
दिन बीतल ओतै लुम्बिनीमे दिन एक,
बिनु प्रसव-पीड़ाक जन्म देलन्हि पुत्रक,
आकाशसँ शीतल आ गर्म पानिक दू टा धार,
कएल अभिषेक बालकक लाल-नील पुष्प कमल,
बरसि आकाश।
यक्षक राजा आ दिव्य लोकनिक भेल समागम,
पशु छोड़ल हिंसा पक्षी बाजल मधुरवाणी।
धारक अहंकारक शब्द बनल कलकल,
छोड़ि 'मार' आनन्दित छल विश्व सकल,
'मार' रुष्ट आगमसँ, बुद्धत्व प्राप्ति ई करत।
माया-शुद्धोधनक विह्वलताक प्रसन्नताक,
ब्राह्मण सभसँ सुनि अपूर्व लक्षण बच्चाक,
भय दूर भेल माता-पिताक तखन जा कऽ,
मनुष्यश्रेष्ठ पुत्र आश्वस्त दुनू गोटे पाबि कऽ।
महर्षि असितकेँ भेल भान शाक्य मुनि लेल जन्म,

चली कपिलवस्तु सुनि भविष्यवाणी बुद्धत्व करत प्राप्त,
 वायु मार्गे एला राज्य वन कपिलवस्तुक,
 बैसायल सिंहासन शुद्धोधन तुरत ।
 राजन् ऐल छी देखय बुद्धत्व प्राप्त करत जे बालक।
 बच्चाकेँ आनल गेल चक्र पएरमे छल जकर,
 देखि असित कहल, हा! मृत्यु समीप अछि हमर,
 बालकसँ शिक्षा प्राप्त करितौँ मुदा वृद्ध हम अथबल,
 उपदेश सुनऽ लेल शाक्य मुनिक, जीवित कतय रहब।
 वायुमार्गे घुरला असित कऽ दर्शन शाक्य मुनिक,
 भागिनकेँ बुझाओल पैघ भऽ बौद्धक अनुसरण करथि।
 दस दिन धरि केलन्हि जात-संस्कार,
 फेर ढेर रास होम जाप,
 करि गायक दान सिंघ स्वर्णसँ छारि,
 घुरि नगर प्रवेश केलन्हि माया,
 हाथी-दाँतक महफा चढ़ि।

सर्ग २

धन-धान्यसँ पूर्ण भेल राज्य,
 अरि छोड़ल शत्रुताक मार्ग,
 सिद्धि साधल नाम पड़ल सिद्धार्थ।
 मुदा माया नै सहि सकली प्रसन्नता,
 मृत्यु ऐल मौसी गौतमी कएल शुश्रूषा।
 उपनयन संस्कार भेल बालकक,
 शिक्षामे छल चतुर,
 अंतःपुरमे कय ढेर रास व्यवस्था विलासक,
 शुद्धोधनकेँ छल मोन असितक बात,
 बालकक योगी बनबाक।
 सुन्दरी यशोधरासँ फेर करबाओल सिद्धार्थक विवाह,
 समय बीतल सिद्धार्थक पुत्र राहुलक भेल जन्म।

सर्ग ३

उत्सवक संग बितैत रहल दिन पल,
 सुनलन्हि चर्च उद्यानक कमल सरोवरक,
 सिद्धार्थ इच्छा देखेलन्हि घुमक ।
 सौँसे रस्तामे आदेश भेल राजाक,
 क्यो वृद्ध दुखी रोगी रहथि बाट ने घाट।
 सुनि नगरवासी देखबा लेल व्यग्र,
 निकलि ऐल पथपर दर्शन लेल सिद्धार्थक ।

चारू कात छल मनोरम दृश्य,
मुदा तखने ऐल पथपर एक वृद्ध।
हे सारथी, सूतजी के अछि ई,
आँखि झाँपल भाँहसँ,
श्वेत केश,
हाथ लाठी,
झुकल की छै भेल?
कुमार अछि ई वृद्ध,
भोगि बाल युवा अवस्था जाय
अछि भेल वृद्ध आइ ।
की ई हएत सभक संग,
हमहूँ भऽ जायब वृद्ध एक दिन?
सभकेँ अछि बुझल ई खेल,
फेर चहुँदिस ई सभ करय किलोल ?
हर्षित मुदित बताह तँ नै ई भीड़?
घुरि चलू सूत जी आब,
उद्यानमे मोन कतऽ लाग !
महलमे घुरि-फिरि भऽ चिन्तामग्न,
पुनि लऽ आज्ञा राजासँ निकलल अग्र ।
मुदा ऐबेर भेटल एकटा लोक,
पेट बढल, झुकल लैत निसास,
रोगग्रस्त छल ओ पूछल सिद्धार्थ,
सूत जी छथि ई के, की भेल?
रोगग्रस्त ई कुमार अछि ई तँ खेल,
कखनो ककरो लैत अछि अपन अधीन ।
सूत जी घुरू भयभीत भेलौं हम आइ फेर।
घुरि घर विचरि-विचरि कय चिन्तन,
शुद्धोधन चिन्तित जानि ई घटनाक्रम।
आमोद प्रमोदक कऽ आर प्रबन्ध,
रथ सारथी दुनू नव कएल शुद्धोधन।
फेर एक दिन पठाओल राजकुमार,
युवक-युवती संग पठाओल करय विहार ।
मुदा तखने एकटा यात्रा मृत्युक,
हे सूतजी की अछि ई दृश्य,
सजा-धजा कऽ चारि गोटे धऽ कान्ह,
मुदा तैयो सभ कानि रहल किए नै जानि ?

हे कुमार आब ई सजाओल मनुक्ख,
 नै बाजि सकत, अछि ई काठ समान।
 कानि-खीजि जाथि समस्त ई लोक,
 छोड़ऽ ओकरा मृत्यु केलन्हि जे प्राप्त।
 घुरू सारथी नै हएत ई बर्दाश्त,
 भय नै अछि ऐबेर,
 मुदा बुझितो आमोद प्रमोदमे भेर,
 अज्ञानी सन केना घुमब उद्यान।

सर्ग ४

मुदा नव सारथी घुरल नै द्वार,
 पहुँचल उद्यान पद्म खण्ड जकर नाम।
 युवतीगणकें देलक आदेश उदायी, पुरोहित पुत्र,
 करू सिद्धार्थकें आमोद-प्रमोदमे लीन।
 मुदा देखि इन्द्रजीत सिद्धार्थक अनासक्ति,
 पुछल उदायी भेल अहाँकें ई की?
 हे मित्र क्षणिक ई आयु,
 बुझितो हम केना गमाउ?
 साँझ भेल घुरि युवती सभ गेल,
 सूर्यक अस्तक संग संसारक अनित्यताक बोध,
 पाबि सिद्धार्थ घुरल घर चिन्ता मग्न,
 शुद्धोधन विचलित मंत्रणामे लीन।

सर्ग ५

किछु दिनक उपरान्त,
 मांगि आज्ञा बोन जेबाक,
 संग किछु संगी निकलि बिच खेत-पथार,
 देखि चास देल खेत मरल कीट-पतंग।
 दुखित बैसि उतरल घोड़ासँ अधः सिद्धार्थ,
 बैसि जोमक गाछक नीचाँ धऽ ध्यान,
 पाओल शान्ति तखने भेटल एक साधु।
 छल ओ मोक्षक ताकिमे मग्न,
 सुनि ओकर गप, देखल होइत अन्तर्धान।
 गृह त्यागक ऐल मोनमे भाव,
 बोन जेबाक आब अखन नै काज।
 घुरि सभ चलल गृहक लेल,
 रस्तामे भेटलि कन्या एक,
 कहल अहाँ छी जनिक पति,

से छथि निश्चयेन निवृत्त।
 निवृत्त शब्दसँ निर्वाणक प्रसंग,
 सोचि मुदित सिद्धार्थ घुरल राज सभा,
 रहथि ओतऽ शुद्धोधन मंत्रीगणक बिच।
 कहल – लऽ संन्यास मोक्षक ज्ञानक लेल,
 करू आज्ञा प्रदान हे भूदेव।
 हे पुत्र कएल की गप,
 जाउ पहिने पालन करू भऽ गृहस्थ ।
 संन्यासक नै अछि ऐल बेर,
 तखन सिद्धार्थ कहल अछि ठीक,
 तखन दूर करू चारि टा हमर भय,
 नै मृत्यु, रोग, वृद्धावस्था आबि सकय,
 धन सेहो नै क्षीण हुअय।
 शुद्धोधन कहल अछि ई असंभव बात,
 तखन हमर वियोगक करू नै पश्चाताप।
 कहि सिद्धार्थ गेला महल बिच,
 चिन्तित एम्हर-ओम्हर घुमि निकलला बाह्य ।
 सूतल छंदककँ कहल श्वेत वेगमान,
 कंथक घोड़ा अश्वशालासँ लाउ।
 सभ भेल निन्नमे भेर कंथक ऐल,
 चढ़ा सिद्धार्थकँ लऽ गेल नगरसँ दूर ।
 नमस्कार कपिलवस्तु !
 घुरब जखन पायब जन्म-मृत्युक भेद !

सर्ग ६

सोझाँ ऐल भार्गव ऋषिक कुटी उतरि सिद्धार्थ,
 लेलन्हि रत्नजटित कृपाण, काटल केश ।
 मुकुट मणि आभूषण देल छंदककँ।
 अश्रुधर बहल छंदकक आँखि,
 जाउ छंदक घुरु नगर जाउ ।
 नै सिद्धार्थ हम नै छी सुमन्त,
 छोड़ि राम जे घुरल अयोध्या नग्न।
 घोटक कंथकक आँखिमे सेहो नोर,
 तखने एक व्याध छल ऐल,
 कषाय वस्त्र पहिरने रहय, कहल सिद्धार्थ,
 हमर शुभ्र वस्त्र लिअ दिअ ई वस्त्र,
 अदलि-बदलि दुनु गोटे वस्त्र पहीरि,

छंदक देखि केलक प्रणाम गेल घुरि।

सर्ग ७

सिद्धार्थ एला आश्रम सभ भेल चकित,
देखि नानाविध तपस्या कठोर,
नै संतुष्ट कष्ट भोगथि पाबय लेल स्वर्ग,
अग्निहोत्रक यज्ञ तपक विधि देखि ।
निकलि चलल किछु दिनमे सिद्धार्थ आश्रम छोड़ि,
स्वर्ग नै मोक्षक अछि हमरा खोज ।
जाउ तखन अराड मुनि लग विंध्यकोष्ठ,
नमस्कार मुनि प्रणाम घुरू सभ जाउ,
सिद्धार्थ निकलि बढ़ि पहुँचला आगु।

सर्ग ८

एम्हर कंथकक संग छंदक खसैत-पड़ैत,
एक दिनक मार्ग आठ दिनमे चलैत,
घरमुँहा रस्ता आइ कम नै, अछि भेल अनन्त।
घुरि सुनेलक खबरि कषाय वस्त्र पहिरबाक सिद्धार्थक,
गौतमी मूर्छित, यशोधरा कानथि बाजि-बाजि,
एहन कठोर हृदय सिद्धार्थक मुखेटा कोमल रहय,
ओकरो सँ कठोर अछि हृदय हमर जे फाटय अछि नै।
शुद्धोधन कहथि दशरथक छल भाग्य,
पुत्र वियोगमे प्राण हमर निकलय अछि नै।
पुरहित आ मंत्रीजी निकलि ताकू जाय,
भार्गव मुनिक आश्रममे देखू पुछू ओतय।

सर्ग ९

जाय जखन सभ ओतऽ पूछल भार्गव कहल,
गेलथि अराड मुनिक आश्रम दिस मोक्षक लेल बेकल।
दुनू गोटे बढ़ि आगाँ देखैत छथि की,
कुमार गाछक नीचाँ बैसल ओतय।
पुरोहित कहल हे कुमार पिताक ई गप सुनू,
गृहस्थ राजा विदेह, बलि, राम आ वज्रबाहु,
केलन्हि प्राप्त मोक्ष करू अहाँ सेहो।
मुदा सिद्धार्थ बोनसँ घुरता नै,
मोक्षक लेलन्हि अछि प्रण तोड़ता नै।
हे सिद्धार्थ पहिनहु घुरल छथि बोनसँ,
अयोध्याक राम, शाल्व देशक द्रुम आ राजा अंबरीष ।

हे पुरहित जी घुरु व्यर्थ समय नष्ट छी कऽ रहल,
राम आ कि आन नै उदाहरण समक्ष ।
नै बिनु तप कोनो क्यो बहटारि सकत,
ज्ञान स्वयं पायब नव रस्ता तैकैत ।
घुरल दुहु गोटे गुप्त-दूत नियुक्त कऽ ।

सर्ग १०

सिद्धार्थ बढ़ि आगाँ कएल गंगाकें पार,
राजगृह नगरी पहुँचि कऽ भिक्षा ग्रहण,
पहुँचि पाण्डव-पर्वत जखन बैसलथि,
राजा बिम्बसार आबि बुझाओल बहुत ।
सूर्यवंशी कुमार जाउ घुरि ।

सर्ग ११

सिद्धार्थ कहल हे राजा बिम्बसार, हर्यक वंशज,
मोहकें छोड़ल घुरि जाउ कतऽ ?
राजा सेहो होइछ कखनो काल दुखित,
दास वर्गकें सेहो कखनो काल भेटै छै खुशी ?
करू रक्षा प्रजाक संग अपन सेहो,
सिद्धार्थ वैश्वंतर आश्रम दिस बढ़लाह,
मगधराज चकित !

सर्ग १२

अराडक आश्रममे ज्ञान लेल,
गेला शाक्य,
कहल मुनि अविद्या अछि पाँचटा,
अकर्मण्यता आलस्यक अछि अन्हार,
अन्हारक अंग अछि क्रोध आ विषाद,
मोह अछि ई वासना जीवनक आ संगे मृत्युक,
कल्याणक मार्ग अछि मार्ग मोक्षक ।
मुदा सिद्धार्थ कहल हे मुनिवर!
आत्माक मानब तँ अछि मानब अहंकारकें,
अहाँ गप नै रुचल बढ़ल आश्रम उद्रकक से ।
नगरी गेला राजर्षिक जे आश्रम छल,
मुदा नै उत्तर भेटल ओतौ सिद्धार्थक ।
गेला तखन नैरंजना तट पाँचटा भिक्षुक भेटल,
छह बरख तप कएल मुदा प्रश्न अनुत्तरित छल ।
स्वस्थ तनमे भेटत मनसिक प्रश्नक उत्तर,

प्रण कएल ई निरंजनामे कएल स्नान ओ,
 बाहर बहराय एली तखने कन्या गोपराजक,
 श्वेत रंग नील वस्त्रमे नन्द बाला जकर नाम छल ।
 आयलि पायस पात्र लेने तृप्त भऽ सिद्धार्थ भोजन कएल ।
 पाँचू संगी देखि ई सिद्धार्थक संग छोड़ल ।
 मुदा ओ भेला सबल बोधिसत्त्वक प्राप्ति क लेल,
 दृढ़ प्रण लऽ पीपरक तर ओ आसन देलन्हि ।
 काल सर्प कहल देखू ऐ नीलकंठक झुण्डकै,
 घुमि रहल चारू दिस अहाँक,
 प्रमाण अछि जे बोधिसत्त्व प्राप्त करब अहाँ ।
 सुनि ई तृण उठा कएल प्रतिज्ञा तखन,
 सिद्धार्थ पाओत ज्ञान आ तखने उठत छोड़ि आसन ।

सर्ग १३

ब्रह्मांड छल प्रसन्न मुदा दुष्ट मार डरायल,
 कामदेव, चित्रायुध पुष्पसर नाम मारक,
 सिद्धार्थ प्राप्त कऽ ज्ञान जगकै बताओत ।
 हमर साम्राज्यक हएत की तखन,
 पुत्र विभ्रम, हर्ष, दर्प छल ओकर,
 पुत्री अरति, प्रीति, तृषाकै सेहो कऽ संग ।
 चलू ई लेने ढाल प्रतिज्ञाक,
 सत् धनुषपर बुद्धिक वाण चढ़ाय,
 जीतत से की जीतय देबै हमरा सभ आइ?
 हे सिद्धार्थ यज्ञ कऽ पढ़ि कऽ शास्त्र,
 करू इन्द्रपद प्राप्त भोगू भोग,
 छोड़ू आसन देब वाण चलाय ।
 नै देलन्हि सिद्धार्थ ऐपर ध्यान,
 मार तखन देलक वाण चलाय,
 मुदा भेल कोनो नै परिणाम ।
 शिवपर सेहो चलल रहय ई वाण,
 विचलित भेल रहथि ओ सेहो,
 के अछि ई से नै जानि!!
 हे सैनिक हमर विकराल-विचित्र,
 त्रिशूल घुमाय, गदा उठाय,
 साँढ़ सन दऽ हुंकार,
 आउ करू विजित अछि शत्रु विकराल ।
 राति घनघोर अन्हरियामे कतऽ अछि चन्द्र?

तरेगणक सेहो कोनो नै दर्श!
मुदा सभ गेल व्यर्थ पदार्पण भेल अदृश्य,
मार जाउ हएत नै ई विचलित।
देखू एकर क्षमा प्रतीक जटाक,
धैर्य अछि एकर जेना गाछक मूल,
चरित्र पुष्प बुद्धि शाखा धर्म फलक प्रतीक।
स्थान जतऽ अछि आसन पृथ्वीक थिक नाभि,
प्राप्त करत ई ज्ञान सहजहि आइ।
पराजित मार गेल ओतयसँ भागि।

सर्ग १४

रातिक पहिल पहरमे शाक्य मुनि,
पाओल वर्णन स्मरण पूर्व जन्मक सहजहि।
दोसर पहरमे दिव्य चक्षु पाबि,
देखल कर्मक फल वेदनाक अनुभूति।
गर्भ सरोवर नरक आ स्वर्ग दुहुक,
पाओल अनुभव देखल खसैत स्वर्गहुँ,
अतृप्त भोगी जन्म, जरा, मृत्यु।
बीतल तेसर पहर चारिममे जाय,
पाओल ज्ञान बुद्ध भऽ पाओल शान्ति।
शान्त मन शान्त छल पूर्ण जगत !!!
धर्म चारू दिस बिन मेघ अछार !!
सूचना देल दुन्दुभि बाजि अकास!
सकल दिशा सिद्धगणसँ दीप्तमय छल,
स्वर्गसँ वृष्टि पुष्पक इक्ष्वाकु वंशक ई मुनि छल।
बैसल ऐ अवस्थामे सात दिन धरि मुनि शाक्य,
विमान चढ़ि एला तखन देवता दू टा,
करू उद्धार जगतक दऽ मोक्षक शिक्षा।
आ भिक्षुपात्र लऽ एला फेर एक देव,
कएल स्मरण अराड आ उद्रकक बुद्ध,
मुदा दुहु छल छोड़ल जगत ई तुच्छ।
आब जायब वाराणसी भिक्षु पाँचो संगी जतऽ,
कहल देखि बोधिक गाछ दिस स्नेहसँ।

सर्ग १५

बुद्ध चलला असगरे रस्तामे भिक्षु एक भेटल,
तेजमय अहाँ के? गुरु के छथि अहाँक?
हे वत्स गुरु नै क्यो हमर

प्राप्त कएल निर्वाण हम,
 सभ किछु जानल जे अछि जनबा योग्य
 लोक कहै छथि हमरा बुद्ध!
 जा रहल छी काशी दुखित कल्याण लेल
 दूर सँ देखल वरुणा आ गंगाक मिलन
 आ गेला बुद्ध लगहिमे मृगदाव वन।
 पाँचू संगी हुनक रहथि ओतहि
 देखैत अबैत विचारल क्यो नै करत अभिवादन हुनक
 मुदा पहुँचि ते ई की गप भेल?
 सभ हुनक सत्कारमे छल लागि गेल?
 आसन दऽ जखन बैसेलन्हि हुनका सभ क्यो,
 उपदेश देब शुरु करितथि मुदा तखने बाजल कियो,
 अहाँ तँ तत्वकें नै छी बुझैत,
 तप छोड़ि बीचहि उठल छलौं किए?
 बुद्ध कहल घोर तप आ आसक्ति दुनुक हम त्याग कएल
 मध्य मार्गकें पकड़ि बोधत्व प्राप्त कएल।

सर्ग १६

बोधत्व सूर्य अछि सम्यक दृष्टि आ
 एकर सुन्दर रस्तापर चलैए सम्यक संकल्प।
 ई करैए विहार सम्यक आचरणक उपवनमे
 सम्यक आजीविका अछि भोजन एकर।
 सेवक अछि सम्यक व्यायाम,
 शान्ति भेटैए एकरा सम्यक स्मृति रूपी नगरीमे
 आ सुतैए सम्यक समाधिक बिछाओनपर ई।
 ऐ अष्टांग योगसँ अछि सम्भव ई
 जन्म, जरा, व्याधि आ मृत्युसँ मुक्ति।
 मध्य मार्ग चारिटा अछि ध्रुव सत्य
 दुख, अछि तकर कारण, दुखक निरोध
 आ अछि उपाय निरोधक।
 कौण्डिन्य आ ओकर चारू संगी सुनल ई,
 प्राप्त कएल सभ दिव्यज्ञान।
 हे नरमे उत्तम पाँचू गोटे
 भेल ज्ञान अहाँ लोकनि के?
 कौण्डिन्य कहलन्हि हँ, भेल भंते,
 कौण्डिन्य भेला तखन प्रमुख धर्मवेत्ता
 तखने यक्ष सभ पर्वतपरसँ केलक सिंहनाद,

शाक्यमुनि अछि केलक धर्मचक्र प्रवर्तित !!!!!
शील कील अछि क्षमा-विनय अछि धूरी,
बुद्धि-स्मृतिक पहिया अछि सत्य अहिंसासँ युक्त,
ऐमे बैसि भेटत शान्ति ई बाजल सभ यक्ष,
मृगदावमे भेल धर्मचक्र प्रवर्तित।
फेर अश्वजित आ ओकर चारि टा आन भिक्षु
कएल निर्वाण धर्ममे बुद्ध दीक्षित,
फेर कुलपुत्र यश प्राप्त कएल अर्हत पद
यश आ चौवन गृहस्थकें
कएल बुद्ध सद्धर्ममे प्रशिक्षित।
घरमे रहि कऽ भऽ सकै छी अनाशक्त
आ वनमे रहियो प्राप्त कऽ सकै छी आशक्ति।
ऐमे सँ आठ गोटा अर्हत प्राप्त शिष्यकें
विदा कऽ आठो दिशामे चलला बुद्ध।
पहुँचि गया जितबाक रहन्ति इच्छा
सिद्धि सभसँ युक्त काश्यप मुनिकें।
गयामे काश्यप मुनि केलन्हि स्वागत बुद्धक,
मुदा रहबा लेल देल अग्निशाला रहै छल महासर्प जतऽ।
रातिमे मुदा ओ सर्प प्रणाम कएल बुद्धकें
भोरमे काश्यप देखल सर्पकें बुद्धक भिक्षापात्रमे।
कऽ प्रणाम ओ आ हुनकर पाँच सय शिष्य
संग एला काश्यपक भाय गय आ नदी।
कएल स्वीकार धर्म बुद्धक
प्राप्त कएल गय उत्तुंगपर निर्वाणधर्मक शिक्षा
लऽ सभकें बुद्ध पहुँचल राजगृहक वेणुवण।

सर्ग १७

बिम्बसार सुनि ऐल ओतऽ देखल काश्यपकें बुद्धक शिष्य बनल
पूछल बुद्ध तखन काश्यपसँ,
छोड़ल अहाँ अग्निक उपासना किए भंते?
काश्यप कहल मोह जन्मक रहि जाइछ देने
आहुति अग्निमे केने पूजा पाठ ओकर।
बुद्धक आज्ञा पाबि कएल काश्यप दिव्य शक्तिक प्रदर्शन
आकाश मध्य उड़ि अग्निक समान जरि कऽ।
तखन बिम्बसारकें देल बुद्ध अनात्मवादक शिक्षा
विषय, बुद्धि आ इन्द्रिक संयोगसँ अबैछ चेतनता
शरीर इन्द्रिय आ चेतना अछि भिन्न

आ अभिन्न सेहो।

बिम्बसार भऽ प्रसन्न दान बुद्धकें वेणुवनक देल
तथागतक शिष्य अश्वजित नग्न गेल भिक्षाक लेल।
कपिल संप्रदायक लोक देखि तेज पूछल अहाँक गुरु के?
कहल अश्वजित सुगत बुद्ध छथि जे इक्ष्वाकु वंशक।
सएह हमर गुरु कहै छथि बिन कारणक नै होइछ किछुओ
उपतिष्य ब्राह्मणकें प्राप्त भेल ज्ञान कहलक ओ मौद्गल्यायनकें
मौद्गल्यायनकें सेहो प्राप्त भेलै सम्यक दृष्टि सुनिर्के।
सुनि वेणुवनमे उपदेश त्यागल जटा दंड
पहिरि काषाय कएल साधना, प्राप्त कएल परम पद
काश्यप वंशक एकटा धनिक ब्राह्मण छोड़ल पत्नी परिजन
प्रसिद्धि भेटल हिनका महाकाश्यप नामसँ।

सर्ग १८

कोसलक श्रावस्तीक धनिक सुदत्त ऐल वेणुवन
गृहस्थ रहितो प्राप्त भेल तत्त्वज्ञान ओकरा।
उपतिष्य संगे सुदत्त गेल श्रावस्ती नगर
जेट केर वनमे विहार बनेबाक कएल निश्चित।
जेटवनक मालिक रहय लोभी ढेर पाइ लेलक जेटवनक लेल
मुदा देखि दैत पाइ हृदय परिवर्तित भेल ओकर
सभटा वन देलक ओ विहारक लेल
विहार शीघ्र बनि गेल उपतिष्यक संरक्षकत्वमे
जेटवनमे।

सर्ग १९

बुद्ध फेर राजगृहसँ चलि देलन्हि कपिलवस्तु दिस
ओतऽ पिता शुद्धोधनकें देल अमृत बोधि
कोनो पुत्र पिताकें नै देने रहय ई।
कर्म धरैत अछि मृत्युक पाछाँ सेहो पछोड़
कर्मक स्वभाव, कारण, फल, आश्रयक रहस्य बुझू
जन्म, मृत्यु, श्रम, दुखसँ फराक पथ ताकू।
आनन्द, नन्द, कृमिल, अनुरुद्ध, कुण्डधान्य, देवदत्त, उदायि
कऽ ग्रहण दीक्षा छोड़ल गृह सभ।
अत्रिन्दन उपालि सेहो कएल ग्रहण दीक्षा
शुद्धोधन देल राजकाज भाय कें
रहय लगला राजर्षि जकाँ ओ।
फेर बुद्ध कएल प्रवेश नगरमे
न्यग्रोध वनमे बुद्ध पहुँचि

चिन्तन जीवक कल्याणक करय लगला।

सर्ग २०

फेर ओ ओतऽ सँ निकलि गेला प्रसेनजितक देस कोसल
श्रावस्तीक जेतवन छल श्वेत भवन आ अशोकक गाछसँ सज्जित
सुदत्त कएल स्वर्णमालासँ स्वागत बुद्धक
कएल जेतवन बुद्धक चरणमे समर्पित।
प्रसेनजित भेल धर्ममे दीक्षित
तीर्थक साधु सभक कऽ शंकाक समाधान
कएल बुद्ध हुनका सभकेँ दीक्षित।
जा कय स्वर्ग माताकेँ
केलन्हि सेहो दीक्षित

सर्ग २१

ओतऽसँ एला बुद्ध फेर राजगृह
ज्योतिष्क, जीवक, शूर, श्रोण, अंगदकेँ उपदेश दऽ,
कएल सभकेँ संघमे दीक्षित।
ओतऽ सँ गंधार जाय राजा पुष्करकेँ कएल दीक्षित
विपुल पर्वतपर हेमवत आ साताग्र दुनू यक्षकेँ उपदेश दऽ
एला जीवकक आम्रवन।
ओतऽ कऽ विश्राम घुमैत-फिरैत
पहुँचल आपण नगर,
ओतऽ अंगुलीमाल तस्करकेँ
कएल दीक्षित प्रेमक धर्ममे।
वाराणसीमे असितक भागिन कात्यायनकेँ कएल दीक्षित
देवदत्त मुदा भऽ ईर्ष्यालु संघमे चाहलक पसारय अराड़ि।
गृध्रकूट पर्वतपर खसाओल शिलाखंड बुद्धपर
राजगृह मार्गमे छोड़ल हुनकापर बताह हाथी
सभ भागल मुदा आनन्द संग रहल बुद्ध
लग आबि गजराज भऽ गेल स्वस्थ कएल प्रणाम झुकि
उपदेश देल गजराजकेँ बुद्ध।
देखल ई लीला राजमहलसँ अजातशत्रु
भऽ गेल ओहो तखन बुद्धक शिष्य।

सर्ग २२

राजगृहसँ बुद्ध एला पाटलिपुत्र
मगधक मंत्री वर्षाकार बना रहल छल दुर्ग,
बुद्ध कएल भविष्यवाणी हएत ई नगर प्रसिद्ध

तखन तथागत गेला गौतम द्वारसँ गंगा दिस।
 गंगापार कुटी गाममे
 देल उपदेश धर्मक
 फेर गेला नन्दिग्राम जतऽ भेल छल बहुत रास मृत्यु।
 दऽ सान्त्वना गेला वैशाली नगरी
 निवास कएल आम्रपालीक उद्यानमे।
 श्वेत वस्त्र धरि एली ओ
 बुद्ध चेताओल शिष्य सभकेँ,
 धरु संयम रहब स्थिरज्ञानमे लऽ बोधिक ओखध अमृत
 प्रज्ञाक वाणसँ शक्तिक धनुषसँ करु अपन रक्षा।
 आम्रपाली आबि पओलक उपदेश
 भेलै ओकरा घृणा अपन वृत्तिसँ
 मांगलक धर्मलाभक भिक्षा,
 बुद्ध केलन्हि प्रार्थना ओकर स्वीकार,
 आयब भिक्षाक लेल अहाँक द्वार।

सर्ग २३

सुनि ई गप जे ऐल छथि बुद्ध आम्रपालीक उद्यान
 लिच्छवीगण एला बुद्धक समीप
 बुद्ध देलन्हि शीलवान रहबाक सन्देश।
 लिच्छवीगण देलन्हि भिक्षाक लेल अपन-अपन घर एबाक आमन्त्रण,
 पाबि आमन्त्रण कहलन्हि बुद्ध
 मुदा जाएब हम आम्रपालीक द्वार
 कारण हुनका हम देलियन्हि अछि वचन।
 लिच्छवीगणकेँ लगलन्हि ई कनेक अनसोहाँत,
 मुदा पाबि उपदेश बुद्धक,
 घुरला अपन-अपन घर-द्वार।
 पराते आम्रपालीसँ ग्रहण कऽ भिक्षा
 बुद्ध गेला वेणुमती करय चारि मासक बस्सावास।
 चारि मास बितओला उत्तर,
 रहऽ लगला मर्कट सरोवरक तट।
 ओतै आयल मार,
 कहलक हे बुद्ध नैरंजना तटपर अहाँक संकल्प
 जे निर्वाणसँ पूर्व करब उद्धार देखायब रस्ता दोसरोकेँ,
 आब तँ कतेक छथि मुक्त, कतेक छथि मुक्ति पथक अनुगामी,
 आब कोनो टा नै बाँचल अछि कारण
 करु निर्वाण प्राप्त।

कहलन्हि बुद्ध, हे मार
नै करू चिन्ता,
आइसँ तीन मासक पाछाँ,
प्राप्त करब हम निर्वाण,
मार होइत प्रसन्न तृप्त
गेल घुरि।
बुद्ध धऽ आसन प्राणवायुकेँ लेलन्हि चित्तमे
आ चित्तकेँ प्राणसँ जोड़ि योग द्वारा समाधि कएल प्राप्त।
प्राणक जखने भेल निरोध,
भूमि विचलित, विचलित भेल अकास !!

सर्ग २४

आनन्द पूछल करू अनुग्रह लिच्छवी सभपर,
किए ई धरा आ आकास,
दलमलित मर्त्य आ दिव्यलोक !!!
बुद्ध कहलन्हि आबि गेल छी हम बाहर,
छोड़ि अपन प्रकोष्ठ,
मात्र तीन मास अनन्तर
छोड़ब ई देह,
निर्वाण मे रहबा लेल सतत !!!!!
आनन्द सुनि ई करऽ लागल हाक्रोस,
सुनि विलाप लिच्छवी गण जुटि सेहो,
विलापमे भऽ गेला संग जोड़।
बुद्ध सभकेँ बुझा-सुझा,
चलला वैशालीक उत्तर दिशा।

सर्ग २५

पहुँचि भोगवती नगरी,
देल शिक्षा जे विनय अछि हमर वचन,
जे बोल अछि विनयविहीन,
से अछि नै धर्म।
तखन मल्लक नगरी पापुर जाय,
अपन भक्त चुंद केर घरमे कएल भोजन बुद्ध,
दऽ ओकरा उपदेश बिदा भेला कुशीनगर दिस।
संगे चुन्द पार कएल इरावती धार
सरोवर तटपर कऽ विश्राम,
कऽ हिरण्यवती धारमे स्नान,
कहल हे आनन्द,

दुनू शालक गाछक बीच करब हम शयन।
 आइक रातिक उत्तर पहर,
 करब प्राप्त निर्वाण।
 हाथक बना गेरुआ,
 दऽ टांगपर टांग,
 लऽ दहिना करोट कहल हे आनन्द,
 बजा आनू मल्ल लोकनिक्कै,
 भेंट करबा लेल निर्वाण पूर्व।
 शान्त दिशा, शान्त व्याघ्र-भालु,
 शान्त चिड़इ शान्त सभटा जन्तु।
 आबि मल्ल लोकनि कएल विलाप,
 मुदा घुरेलन्हि सभकेँ दऽ सांत्वना बुद्ध।

सर्ग २६

ऐल सुभद्र त्रिदंडी संन्यासी तकर पाछाँ,
 पाबि अष्टांग मार्गक शिक्षा,
 कहल सुभद्र हे करुणावतार
 अहाँक मृत्युक दर्शनसँ पहिने हम करय
 चाहै छी निर्वाण प्राप्त।
 बैसल ओ पर्वत जकाँ
 आ जेना मिट्टा जाइत अछि दीप
 हवाक झोंकसँ,
 तहिना क्षणेमे केलक निर्वाण प्राप्त।
 छल ई हमर अन्तिम शिष्य!
 सुभद्रक करू अन्तिम संस्कार!
 बीतल आध राति,
 बुद्ध बजा सभ शिष्यकेँ,
 देल प्रातिमोक्षक उपदेश,
 कोनो शंका हुअय तँ पूछू आइ।
 अनिरुद्ध कहल नै अछि शंका आर्य सत्यमे ककरो।
 बुद्ध तखन ध्यान कऽ एकसँ चारिम तहमे पहुँचि,
 प्राप्त कएल शान्ति।

सर्ग २७

भेल ई महापरिनिर्वाण!
 मल्ल सभ आबि उठेलक बुद्धकेँ स्वर्णक शव-शिविकामे,
 नागद्वारसँ बाहर भऽ केलन्हि पार हिरण्यवती धार,
 मुदा शवकेँ चन्दनसँ सजाय,

जखन लगाओल आगि, नै उठल चिनगारि।
शिष्य काश्यप छल बिच मार्ग,
ओकरा अबिते लागल चितामे आगि!
मल्ल लोकनि बीछि अस्थि धऽ स्वर्णकलशमे,
आनल नगर मध्य,
पाछाँ कऽ पूजा भवनक निर्माण,
कएल अस्थिकलश ओतऽ विराजमान।

सर्ग २८

फेर सात देशक दूत,
आबि मांगलक बुद्धक अस्थि,
मुदा मल्लगण कएल अस्वीकार,
तँ बजड़ल युद्ध।
सभ आबि घेरल कुशीनगर,
मुदा द्रोण ब्राह्मण बुझाओल दुनू पक्ष।
बाँटि अस्थिकेँ आठ भाग,
द्रोण सेहो लेलक नौम घट जइमे छल सभटा अस्थि पहिले पहिल
आ दसम घट लेलक 'पिसल' जाति, जइमे छल छाउर बुद्धक शरीरक।
सभ घुरला अपन देश आब।
अस्थि कलश आ छाउर कलश पर बना कऽ दस स्तूप,
करै गेला पूजा अर्चना जाय,
दसटा स्तूप बनि भेल ठाढ़,
जतऽ अखण्ड ज्योति आ घण्टाक होइ छल निनाद।
फेर राजगृहसँ ऐल पाँच सय भिक्षु,
आनन्दकेँ देल गेल ई काज,
बुद्धक सभ शिक्षाकेँ कहि सुनाउ,
हएत ई सभ समग्र आब।
हम ई छलौं सुनने एहि ढङ्गें,
कएल सम्पूर्ण वर्णन नीके।
कालान्तरमे अशोक स्तूपसँ लऽ धातु
कऽ कय सय विभाग,
बनाओल कएक सय स्तूप,
श्रद्धाक प्रतीक।
जहिया धरि अछि जन्म, अछि दुख,
पुनर्जन्मसँ मुक्ति अछि मात्र सुख,
तकर मार्ग देखाओल जे महामुनि,
शाक्यमुनि सन दोसर के अछि शुद्ध।

असज्जाति मनक ई सम्बल,
देलीं अहाँ हे बुद्ध
हे बुद्ध
हे बुद्ध ।

अनुलग्नक ३ — “Second Person Singular” केर अंग्रेजी आमुखक मैथिली अनुवाद

[उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' क पद्य संग्रह 'मध्यमपुरुष एकवचन'क अंग्रेजी अनुवाद Second Person Singular क अंग्रेजी आमुखक मैथिली अनुवाद]

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' क पद्य संग्रह 'मध्यमपुरुष एकवचन' क अंग्रेजी अनुवाद Second Person Singular नामसँ कवि द्वारा स्वयं रिजियो योहानन राजक संग मिलि कऽ कएल गेल अछि। मैथिली पोथीमे कवि आमुख नै लिखने छथि मुदा एकर अंग्रेजी अनुवादमे आमुख लिखने छथि जकर हमरा द्वारा कएल मैथिली अनुवाद नीचाँ देल जा रहल अछि। मैथिली आ अंग्रेजी दुनू वर्सनमे कविता सभक बीचमे चित्र-रेखा देल गेल अछि, मुदा दुनू वर्सनक चित्ररेखा सभ अलग-अलग अछि (किछु छोड़ि कऽ), आ किछु चित्रक स्थान बदलल अछि, जखन कि चित्रकार एक्के (संजय भट्टाचार्य) छथि। संगे शुचिता-सुचरितासु क अंग्रेजी अनुवाद नै देल गेल अछि। कविक नामसँ अंग्रेजी अनुवादमे 'नचिकेता' उपनाम हटा लेल गेल अछि। -गजेन्द्र ठाकुर

आरम्भ करैत

१

जखन-कखनो हम भारत सन बहुलवादी वातावरणमे बाजै वा लिखै छी, श्रोतावर्गमे सँ कियो बुझऽ चाहै छथि: के बाजि रहल छथि, कृपा कऽ बुझाउ।

जखन अहाँ बहुभाषिक वातावरणमे कतेको प्रकारक पात्र बनै छी, तखन एकटा पारिभाषिक लक्ष्मण रेखा खेचनाइ आवश्यक भऽ जाइए। मुदा हमर वैय्याकरणिक सहज वृत्ति हमर भीतरक कविके कहियोकाल पराजित सेहो कऽ दैए। हमरा बुझल अछि जे जँ अवसर भेटय तँ ऐ पातर पोथीक पाठक वैय्याकरणक संग छोड़ऽ चाहता। हमरा अपन बाबा संग वाक्युद्ध मोन पड़ैए, जे- की ठीक छै आ की नै, आ शब्दसँ नीक काज केना लेल जाय- पर होइ छल। खौंझा कऽ ओ कहै छला- “कखनो वैय्याकरणक मार्गमे नै आउ!” जखन कखनो हम एकर कारण पुछै छलियन्हि ओ विशुद्ध मैथिलीमे एकटा पुरान मोहाबरा कहै छला जकर अर्थ अछि:

“वैय्याकरणसँ भजार लगाउ आ अहाँक सभटा अक्षर भूलक लाल रङसँ रङि जायत, ओकरासँ झगड़ा करू आ अहाँ क्रियाभावमे भूल करब, ओकरासँ बहस करू आ अहाँ सभटा देखबैबला विशेषण बिसरि जायब; वैय्याकरणकेँ मारू आ प्रेत कमजोर क्रियाक संग झूलत, ओकरा गारू आ ओइपर पुनरुक्ति क गाछ जनमत। अहाँ ओकरा दबा नै सकै छी, से अहाँक जँ एकटा वैय्याकरण आ साँपसँ भेंट हुअय, वैय्याकरणकेँ पहिने मारू। कोनो हालमे ओकरा मारू!”

व्याकरण आ भाषा विज्ञानकेँ पेशा बनेनाइक सम्बन्धमे जे किछु कहल जाय, ऐ मे संदेह नै अछि जे सुस्पष्ट विचार जेना ओ शब्द (वा फ्रेज) जकर अर्थ बिनु संदर्भक स्पष्ट नै होइए, पहिने बला शब्द जे अपन अर्थ बादबालकेँ दैए आ कोनो अक्षरसँ समाप्त होइबला शब्द सभ (पुरुष-वचन-लिङ) अखनो अनुवादकक/ द्वैभाषिकक लेल आवश्यक अछि। अखनो स्थान आ वाकशैली आवश्यक अछि (होमी भाभा- द लोकेशन ऑफ कल्चर, न्यूयॉर्क, रौटलेज, १९९४), कारण ककरो वाक समृद्धि वा खगता ओकर स्थान निर्धारित करैए। कछेरपर स्थित मैथिली सन भाषाक लेखकसँ बेशी नीक जकाँ के ई बुझि सकैए जे- जे भाषा कोनो कालमे, तेरहम शताब्दी सँ प्रारम्भ होइत, विद्यापति, लोचनदास, चन्दा झाक अविस्मरणीय गीत आ उमापति आ ३० टा आन नाटककारक अत्यधिक लोकप्रिय नाटक देखलक, अखनका कालमे अधिक कवि आ उपन्यास लेखक नै देखलक जे दोसर भाषायी आ सांस्कृतिक स्थलपर पाठक बना सकय। ओना नागार्जुन (यात्री) आ राजकमल चौधरी सन कवि आ हरिमोहन झा आ लिली रे दोसर भारतीय भाषामे अनूदित भेल छथि मुदा अन्तर्राष्ट्रिय पाठक धरि पहुँचबाक बड्डी क्षीण प्रयास भेल अछि।

ओना ई सत्य अछि जे पाश्चात्य उत्तर आधुनिकता सन फैशनेबल सिद्धांत छोट रूपमे उपस्थित रहल अछि, आदर्शक विखण्डन आ संकेतक विजातीयता (तकर परिणाम भेल सामाजिक प्रक्रियाक विखण्डन), ई सभ मैथिली साहित्यमे सेहो आन आधुनिक भारतीय भाषा जकाँ आयल अछि। ई सभ धारा एहन व्याख्या सभक जन्म देने अछि जे सभटा वास्तविक आ आभाषी सामाजिक समस्याक अपूर्ण वा सापेक्ष व्याख्या करैए, सम्पूर्ण व्याख्या नै। आ निश्चये ई सभ हमरा सभकेँ ओतऽ लऽ जाइए, जतऽ स्थान आ लौकिकता सभ संदर्भसँ रहित भऽ जाइए। मुदा आइयो जखन हम गतिमान क्रिया आ एतऽ सँ ओतऽ धरिक उत्तर स्थानिक गपक चर्च करै छी तखन स्थान आ ओ शब्द (वा फ्रेज) जकर अर्थ बिनु संदर्भक स्पष्ट नै होइए, संदर्भ सभ लेल लेखकक रूपमे महत्वपूर्ण अछिये।

हमर कविता जे कहत ओइमे पुरुषक भेद केन्द्रमे रहत, मुदा ओइसँ हमर लिङ आ वचनक प्रति भाव कम नै होइए, जे एतुक्का बहुत रास कवितासँ सिद्ध होइए, कारण ई सभ संकल्पना अनुवाद आ व्याख्या लेल आ दोसरक संकल्पना लेल अमूल्य अछि। ई दोसर गप अछि जे हमरा सभमे सँ किछु

गोटे ई अनुभव कऽ सकै छी जे ढेर रास मूलभूत पारिभाषिक शब्दावली संदर्भहीन भऽ गेल अछि, ई अपवाद रहत जे कवि आ ओकर संभाषण करैबला लेल, 'मध्यमपुरुष एकवचन' सदा एकटा वास्तविक दोसर रहत।

एतऽ हमरा लगैए जे हम आ ओ केर बहस/ वाद मे हम अपन पक्ष/ स्थान राखी, अपन पाठकक लेल, जइसँ ओ बहुसांस्कृतिक लेखकक पृष्ठभूमि बूझि सकथि। हम कविता आ नाटक मूल रूपमे मैथिली- जे उत्तर बिहार आ नेपालक तराइमे बाजल जाइए- मे लिखै छी आ बांग्लामे सेहो हम साहित्यिक निबन्ध आ गम्भीर कविता आ गीत लिखै छी। हिन्दीमे सेहो हम निबन्ध लिखने छी। हमर अंग्रेजीमे लेखन मुख्यतः साहित्य आ साहित्यिक अनुवादपर अछि। हम मारते रास भाषामे छी आ से हमर पृष्ठभूमिक कारण अछि, हमर माँ मेमनसिंह, बांग्लादेशसँ छथि आ पत्नी मानक कोलकाता बांग्ला भाषी छथि, ओना हमर पिता मैथिलीक देशज भाषा-भाषी छलथि आ मैथिलीक लेखक-सम्पादक छलथि। हमर माता-पिता दुनू गोटे विश्वविद्यालयमे हिन्दी साहित्य पढ़बै छलथि, आ तँ हमरा सभकेँ हिन्दी आ मैथिली साहित्यक कतेको पैघ लेखकसँ घरपर भेंट करबाक अवसर भेटल। ऐ सभक संग हमर स्कूल स्तर धरि शिक्षाक माध्यम बांग्ला छल, आ कॉलेज आ विश्वविद्यालयमे ई मात्र अंग्रेजी छल। ई बहुभाषिक पृष्ठभूमि हमर साहित्यिक प्रवृत्तिकेँ परिभाषित केलक। लेखकक रूपमे मैथिलीमे हमर किछु कविताक पोथी आ एगारहटा नाटक प्रकाशित अछि। हमर ई संग्रह मैथिलीमे २००५ मे प्रकाशित कविता संग्रह 'मध्यमपुरुष एकवचन' क अनुवाद छी।

बांग्लामे हमर एकटा कविता संग्रह, एकटा बाल-पद्यक पोथी आ सम्पादित साहित्यिक निबन्ध सभक संग्रह प्रकाशित अछि। साहित्यिक अनुवादकक रूपमे हमरा लेल सभसँ संतोषप्रद काज रहल अछि अनुकृति (१९९९)- जे मैथिलीमे १९५० सँ लिखल उत्कृष्ट कविता सभक बांग्लामे अनुवाद अछि; आ १९९७ मे प्रकाशित रवीन्द्रनाथक बाल साहित्य। हमर मैथिलीसँ बांग्ला-अंग्रेजी आ रस्तामे किछु डेगक हिन्दीक यात्रा हमर लेखनमे विषय-वस्तु आ शिल्पक अभिवृद्धि केने अछि। हम विभिन्न भाषामे विभिन्न विषयपर लिखै छी आ कविताकेँ छोड़ि ओ आन विधामे सेहो भिन्न अछि, मैथिलीमे नाटक, बांग्लामे साहित्यिक आलोचना, अंग्रेजीमे अनुवादपर निबन्ध आ हिन्दीमे भाषाक समाजशास्त्रपर सेहो लिखने छी।

२

से हम मोटामोटी तीनटा मूलभूत काज करै छी, आ अहिना हम अपनाकेँ ताकऽ चाहब: एकटा अमहत्वपूर्ण लेखक, कवितासँ निबन्ध धरि लिखैत, एकटा अनुवादक (ओतेक नीक नै, नै जानि आन कोना राखै छथि)- कइएकटा भाषासँ आ कइएकटा भाषामे अबैत जाइत रहनिहार, मुदा मुख्य रूपेँ अंग्रेजी, मैथिली, बांग्ला आ हिन्दी- अही क्रममे, आ एकटा भाषा विज्ञानी जे भाषाक संरचनात्मक आ सामाजिक दुनू क्षेत्रमे विशेषज्ञता प्राप्त केने अछि। ई ओना पाठक, शिक्षक आ नियोजकक रोल अछि।

लेखकक रूपमे हमर प्रारम्भिक काज लगैए जेना अपन व्यक्तित्वकेँ झाँपब रहल अछि। हम जखन कहियो ऐ मे सँ कोनो भाषामे लिखै छी तँ हम ओइ सभ चिन्हासीकेँ मेटेबाक प्रयास करै छी जे हमर पेशा वा बहुलतारूपी हमर उमेर वा शारीरिक चेन्हासी सेहो जे हमर खादीक रुचिक परिचय दिय वा उपस्थितिकेँ देखबैत हुअय। ई दोसर गप जे किछु चेन्हासी अखनो देखाइत हुअय वा ताकल जा सकैत हुअय। तँ ई आश्चर्यक गप नै जे हम एकटा उपनाम मैथिलीमे राखलौं। हम ओहेन लेखक सभकेँ देखने छी आ जने छी जे अपनाकेँ कियो आर वा किछु आर देखबै छथि, आ हम विश्वस्त छी जे हमरा सभमे सभक लग तकर कोनो ने कोनो कथा -लेखक सभक विषयमे- अछि, जिनकर खेल स्वयंकेँ दोसर केनाइ अछि। एकरा कइएक ढंगसँ कएल जाइए। किछु लोक कलछप्पन द्वारा अपन स्थान परिभाषित करै छथि। किछु गोटे फ्रेमक निर्धारणमे काँट-छाँट करै छथि, जइमे टेक्स्ट फिट कएल जाइत अछि। किछु चक्षु-युगलकेँ नुकेबाक प्रयास करै छथि (समर्थकक वा कोनो कविता वा वृत्तांतक लोकप्रसिद्ध 'हम'), जकर माध्यमसँ पाठकसँ घटना सभक अनावरणकेँ देखबाक अनुरोध कएल जाइत अछि। दोसर तरहक लोक सार्वजनिक बयान दै छथि, जकर माध्यमसँ समकालीन वा पुरानकेँ कूड़ा-करकट लेखक कहल जाइत अछि, आ सभ आलोचक आ शैक्षिक आलोचनाक हँसी उड़बै छथि। हम एकरा एकटा खेल बुझै छी जे सभ कियो खेलाइए। किछु गोटे ऐ खेलकेँ सोझाँ-सोझी खेलाइ छथि तँ किछु गोटे एकरा कइएक विधियेँ नुका कऽ खेलाइ छथि। लेखकक रूपमे अपन लेल हमर उत्तर अपन 'हम' केँ पृष्ठभूमिमे धकेलनाइ रहल अछि, आ मनोभाव, जोड़ आ तकर घर्षणाक सामाजिक भाष्यकेँ केन्द्रबिन्दुमे राखब रहल अछि। दोसर तरहें बुझू जे ई अपन व्यक्तिगत प्रत्यान्तकेँ प्रथम पुरुष एकवचनसँ तृतीय पुरुष एकवचन केनाइ अछि, 'तोरा' सँ गप करबा लेल- हमर मध्यम पुरुष एकवचन।

अनुवादकक रूपमे, हम स्वयंकेँ केन्द्रबिन्दुमे राखऽ चाहै छी, आ सभसँ आगाँ सीट लेबा लेल प्रयास करै छी आ लइ छी। ओना पाठ्यपुस्तक सन अनुवाद हमरा सभकेँ अपन गौण उपस्थिति रखनाइ सिखबैए, जइसँ रचनाक मूल लेखककेँ अपन द्वारा कएल प्रक्रियासँ रेखांकित कएल जा सकय, ऐ क्रियाकलापक प्रयोक्ताक रूपमे हमर व्यवहार बराबड़ीबला रहैए- स्वतन्त्रता लेनाइ जँ तकर पलखति छै, जतऽ आवश्यक होइ, कोन सभकेँ सीनाइ वा मरम्मत केनाइ, आ नीकसँ चुनल वस्त्रक नीचाँ चिप्पी लगेनाइ जतऽ से छोड़नाइ हमरासँ सम्भव नै होइए। ऐ क्रियाकलापमे लागल लोक, जे बहुत ज्ञानी छथि, सदियन हमरा चेतौनी दैत रहला जे हम मात्र कोनो पाठ केर बेसीसँ बेसी, प्राप्तकर्ता छी, पाठ केर लेखकक कथोपकथन करैबला।

लेखक, अपन स्पष्ट वा सचर पैरैय्या सन प्रयाससँ ओकर स्वरकें दबबैत- हमरा कहल गेल, केँ ओकर प्रथम पुरुषक भव्य उपस्थिति देखेबाक अवसर देबाक चाही, जे सभ शब्दपर अंकित अछि, जे ओकर पाठ केर चरित्र बाजैए वा सभटा मोड़ जे पाठ लइए।

ई सत्य अछि जे लेखक अपन पाठकसँ अपन पाठ द्वारा कथोपकथन करैए, तइसँ एक प्रकारक प्रथम आ द्वितीय पुरुषक युग्मीय सम्बन्ध बनैए। मुदा जखन हम अनुवादक क्षेत्रमे अपनाकेँ भिजेलाँ, हमरा कहल गेल जे लेखक वा ओकर उद्देश्यकेँ टोकबाक हमरा कोनो अधिकार नै, कारण हम मात्र एकटा पाठक छी। दुर्भाग्यसँ पाठक रूपेँ सेहो हम सभ लेखक द्वारा लेल निर्णयसँ आहत होइ छी, पाठ केर भीतर जा कऽ जखन कोनो पात्र हमर अपन भऽ जाइए, तखन ओकर अभिगम्यसँ हम अधीर भऽ जाइ छी। तँ ई आश्चर्यजनक नै अछि जे पाठक लेखकक ऐ निर्णय लेल ओकर समय-स्थानक ज्ञान, पढ़ाइ, पृष्ठभूमि आ विद्वतापर प्रश्न करत। रचनाक क्षणमे, जखन पाठक अपन निष्क्रिय भूमिका छोड़ि अनुवादक-दुभाषियाक रूपमे सक्रिय रचनात्मक भूमिकाक निर्वहण करैए, हम अनुवादक द्वारा निष्क्रिय गुंजायमान-बोर्ड नै रहबाक, असलमे रिपोर्ट भेल घटनासँ बेशी, सुस्पष्ट गुंजाइश देखै छी। ई, हमरा लगैए, एकटा शान्त क्रान्ति छिए, जे कइएकटा अनुवादक पैघ काजमे भेल अछि, जेना-जेना समय बीति रहल अछि। यएह छी जकरा हम द्वितीय पुरुषसँ पहिल पुरुषमे परिवर्तित होइत देखऽ चाहब।

भाषा विज्ञानीक रूपमे, हम किछु भाषायी स्थितिमे काज केलौं जकरा विषयमे काजसँ पूर्व हमरा बेशी नै बुझल छल (लदाखी, अदी वा तेलुगु सेहो), मुदा हमर बेशी काज ओइ भाषा सभपर अछि जकरा विषयमे हमरा बेशी जानकारी अछि, आ किछु परियोजनामे हमर देशज भाषा-भाषीक सहज ज्ञान ई निर्णय लेबामे मुख्य भूमिका निर्वहण करैए जे कोन उपलब्ध समाधान सर्वश्रेष्ठ रहत। जखन कखनो हम बांग्ला, मैथिली आ हिन्दी, तीनू भाषा जकरा हम प्राकृतिक रूपेँ प्राप्त केलौं, मे काज केलौं, सभसँ पैघ चुनौती जे भाषा विज्ञानक शास्त्रीय स्कूल कहलक, से छल जे हम पहिने ई जे हम ऐ भाषा सभकेँ बुझै छी, से बिसरि जाइ। ई चुनौती छल जे हमरा अपन व्यक्तिगत सापेक्षता छोड़बाक चाही, आ वस्तुनिष्ठ रूपेँ आ व्याकुलतासँ अपन भाषा दिस देखबाक चाही, से हमरा कहल गेल। भाषा विज्ञानी रूपमे दोसर बनब ऐ द्वारे आवश्यक बुझल गेल कारण कथनक पाछाँ कथन, जे बिनु मतलबक भऽ सकैए, किछु परिस्थितिमे सम्भावित कथन सभ भऽ सकैए। ओना ई बिनु अर्थक लगैए, हमरा सभकेँ प्राकृतिक भाषा लेल प्रशिक्षित कएल जाइत छल, हम एकटा आश्चर्यजनक निर्णय देखै छी जतऽ सत्य जीतैए आ असत्य हारैए। जँ हमर भाषायी सहज ज्ञान दोसर सांस्कृतिक स्थलसँ कइएकटा कथनकेँ मथित करैए, ऐ संरचनात्मक वा कवित्वक फ्रेमक वा रचनाक परिप्रेक्ष्यमे, लोक तृतीय पुरुष सँ प्रथम पुरुषमे बदलैए।

से, हम जइ कोनो रोलमे अबै छी, हमर अपन व्यक्तिगत प्रत्यान्त किछु परिवर्तन द्वारा बदलैए। हमरा बुझल अछि आ विश्वास अछि जे जखन हम अपनो कविताक अनुवाद करै छी, अनुवादकर्म मूल भाषा आ पाठ केर हिसाकेँ जारी रखैए, से सभटा क्रिया व्याकरणक विरुद्ध विद्रोह बुझाए, तैयो सभटा परिणामात्मक पाठ दोसर व्याकरणक निअम सभक परिणाम भऽ जाइए। एरिक चेफिट्ज (१९९७) द पोएटिक्स ऑफ इम्पीरिअलिज्म (फिलाडेल्फिया: यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिलवेनिया प्रेस) मे तर्क करै छथि, निअमानुसार अनुवाद ओइ मूल पाठ पर हिसापूर्ण शल्यचिकित्सा करैए जकरा परिवर्तित कएल जाइए, कारण ओ प्रयास मूल पाठमे अंतर्निहित विचारकेँ फेरसँ महत्वपूर्ण रूपमे कहैए जे पूरापूरी बराबड़ नै अछि। से जखन एकटा संस्कृति दोसराकेँ अनूदित करैए, ई मूलकेँ बदलि दइए।

कोन सीमा धरि ई परिवर्तन ऐ पोथीक पाठककेँ नीक लगतन्हि हमरा नै बुझल अछि। भाषा सभक बीच पुलक काज कऽ रहल संगठन सभमे कथा (प्रकाशक) मुख्य संस्था अछि, ओकरा ई सभ गप निश्चित रूपेँ बुझल छै। ई हमरा पुनः आश्चस्त करैए, जखन हम ई मोन पाड़ै छी जे हमर कलाकार मित्र संजय भट्टाचार्य, जे ऐ कविता सभकेँ मूल आ अनूदित दुनू रूपमे पढ़लन्हि, कइएक सप्ताह अपन स्टूडियोमे लगा कऽ आकर्षक चित्र सभ बनेलन्हि, जे ऐ पोथीकेँ मोन राखैबला दृश्य-अनुभव सेहो बनबैए।

-उदय नारायण सिंह अगस्त २००६



Swapn me Mijjar Hoit

An anthology of Original and translated
Maithili Verses by Gajendra Thakur

स्वप्नमे मिज्झर होइत

(पद्य संग्रह) • गजेन्द्र ठाकुर

हमर किछु रचना नेपालक गोरखापत्र, आंगन, धुआ धजा,
मिथिला डट कम आ आन मैथिली पत्र-पत्रिका/ स्तम्भमे
सेहो प्रकाशित अछि। विदेह, मैथिली ई-पत्रिका (since
2000) www.videha.co.in ISSN 2229-547X मे
मोटामोटी हमर सभटा मूल आ अनूदित रचना ई-प्रकाशित
अछि।

ऐ पोथीक पद्य सभकेँ ओइ पद्यक प्रामाणिक संस्करण घोषित
कएल जा रहल अछि — गजेन्द्र ठाकुर



ISBN: 978-93-340-3976-4

© 2026 संशोधित संस्करण प्रीति ठाकुर/ गजेन्द्र ठाकुर
आवरण चित्र: ओम गजेन्द्र ठाकुर

विदेह

ISSN 2229-547X • www.videha.co.in